इश्तहार रामायणगुटका का ॥

लखनयोग सबहीलखिलीजे ॥

विदित हो कि कलिकलुष बिध्वंसिनी काव्य भाषा में जैसी रामभक्त शिरोमणि महात्मा तुलसीदासजी कीहै तैसी आजतक किसी कवि कीहुई न होगी इसमें बहुतकथन कथनेकी आवश्यकताही नहीं अब ये गुटकारामायण जैसी कि इस यंत्रालयमें मुद्रितहुईहे उसकी उत्तमताका प्रभाव तो अवश्यही कथन करने का प्रयोजन है क्योंकि सम्पूर्ण भारत निवासी अथवा और कोई खण्ड के रहनेवाले जब तक किसी पदार्थका गुण न जानेंगे तब तक उनकी रुचि उस में होना सर्वथा असंभवही है इससे इस रामायण गुटका का गुण प्रथम तो एकयही बड़ाभारी है कि जैसी शुद्धता के साथ ये अबछपी है खरीददारों को ऐसी छोटी रामायण शुद्ध कभी प्राप्त न भई होगी कारण यह कि मालिक मतबा खुदही पहिले ही से अपने शोधकों को यह आज्ञा देरक्खी कि इसको यथारुचिसे चार और पांचबार जहांतक अशुद्धताकी सम्भावनाहो तहां तक शुद्धपढ़के छपवाइये दूसरे यह कि सातकाण्ड तो सबही रामायण में होतेहैं इस में आठवां लवकुशकाण्डभी युक्तहै तिसपर भी एक यंत्री क्या मानो रामायणकी मंत्रीही है जो कि श्री सच्चिदानन्द आनन्दकन्द दशरथनन्दन की आदि से अन्त तक मय तिथियों के सब रामायण ही को ज्ञात कराती है सो भी इसी में युक्तहै तिसपर भी कागज़ सचिक्कण श्वेत जैसी बंबई की पसन्दकी जातीहै इस रामायणगुटकामें वह सब मौजूदहैं लेकिन बहुतथोड़ी छापीगईहै अफ़सोस है कि जो शीघ्रता न करेंगे उनको यह प्राप्त होना बड़ाही दुष्कर है अथवा गुटका रामायण अब की छपी मिलहीगी क्यों कारण यहकि ऐसी मनोहर अल्प मोलपर बिकैगी तो जो एक खरीदैगा वोचार रख छोड़ने को जरूरही लैलेगा ॥

दृष्टान्तप्रदीपिनी प्रथम भाग सटीक ॥

इस पुस्तक में सैकड़ों दृष्टान्त बहुत उम्दा २ प्रमाणिक मय भाषाटीकाके वर्णितहैं जो लोग भाषा तथा संस्कृत की रामायण या पुराण आदि कथायें कहतेहैं उनके पास तो यह पुस्तक अवश्यही होना चाहिये इसके सिवाय अन्यभी महज्जन जिनकी अभिरुचि श्रीभगवत्सम्बन्धी कथाओंमें रहतीहै और परमेश्वरके परमभक्त कहातेहैं तथा होनेकी रुचिकरते हैं वहभी इसके पढ़नेसे कृतार्थ होंगे क्योंकि यह बहुतही अद्भुत ग्रंथहै इसमें एक और भी बड़ा गुणहै कि कैसाही आलस्यहोवे अथवा संसार जनित मोह भ्रम होवे और इस पुस्तकके पांच छः सफ़ापढ़े तो शीघ्रही आलस्य छूटकर ईश्वरकी ओर भक्ति उत्पन्न होतीहै और चित्त में अतीव मोद होताहै मूल्य भी इसका बहुत थोड़ा है ॥

सरित्सागर भाषाका सूचीपत्र ॥

अथ लावाणकनाम तृतीयलम्बक ॥

रत्नप्रभानाम सातवाँलम्बक ॥

सूर्यप्रभनामआठवाँलम्बक ॥

शशांकवतीनामबारहवॉलम्बक ॥

वेतालपच्चीसी ॥

मदिरावतीनामतेरहवालम्बक ॥

पद्मनामचौदहवालम्बक ॥

सरित्सागरभाषाकी भूमिका

यह वात प्रायः सर्वसाधारणको विदितहै कि इस संसारमें वहुधा जितने परोपकारी विषय प्रचलित हैं उनका आरम्भ यदि विचारपूर्व्वक सूक्ष्म दृष्टिसे देखाजाय तो वहुधा इस भारतवर्ष के प्राचीन आचार्य्योंकाही कियाहुआ पायाजाताहै यहांतक कि सदुपदेशसे भरीहुई सर्वसाधारणमें प्रचलित छोटी२ कथाएं भी उन आचार्य्यों के वनायेहुए ग्रन्थों से वहिर्भूत नहीं हैं इसी वात का यह कथा सरित्सागर नाम ग्रन्थ उदाहरणभूतहै यह ग्रन्थ पहले पिशाच भाषा में वृहत्कथा नामसे था जिसके निर्माण करने वाले महाकवि गुणाढ्य नामहैं यह महाकवि खृस्ताब्द के प्रथम शतक मे प्रतिष्ठानदेशके अधिपति महाराज सात वाहनकी सभा मे थे इन्होंने जिसप्रकारसे पिशाच भाषा मे एक लाख श्लोककी वृहत्कथानाम यह कथा वनाई सो इसके कथा पीठलम्बक मे प्रकटहै इसी वृहत्कथाको संक्षिप्तकरके श्रीमहाकवि सोमदेवभट्टने संस्कृत के २५००० हजार श्लोकों में यह वृहत्कथा नाम ग्रन्थ कश्मीरदेशके महाराज अनन्तराजकी परम पण्डितारानी सूर्य्यवती के कहने से निर्माण किया वृहत्कथाका सारांशरूप

महाकवि क्षेमेन्द्रका बनायाहुआ वृहत्कथा मंजरी नाम एक और ग्रन्थभी है परन्तु इस ग्रन्थमें ऐसा अधिक संक्षेप कियागयाहै कि ग्रन्थकी मनोहरता जातीरही आजकल महाकवि गुणाढ्यकी बनाईहुई पिशाच भाषामय यह वृहत्कथा नहीं मिलती परन्तु प्राचीन गोवर्द्धन सप्तशती कुवलयानन्द तथा कादंबरी आदि ग्रन्थों में इसका नाम पायाजाता है ॥

हिन्दी भाषा के परम हितैषी भार्गववंशावतंस मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) ने विद्वानों के मुखसे इस कथा सरित्सागर नाम ग्रन्थरत्नकी प्रशंसा तथा सदुपदेशभरी अत्यन्त मनोहर कथाओं को सुनकर अपनी मातृभाषा हिन्दीका गौरव बढ़ाने के लिये हमलोगोंको यथोचित धनदेकर इसका अनुवाद करवाया इस अनुवादमें हमलोगोंने यथाशक्ति यह उद्योग कियाहै कि श्लोक के किसी शब्द का अर्थ न रहनेपावे और यथा संभव भाषाका प्रबन्धभी न बिगड़नेपावे इसमें जहां २ नीतिके श्लोक आगये हैं वहभी अनुवाद सहित कोष्टकमें लिखदियेगये हैं ॥

हमलोग आशा करते हैं कि जैसे इस ग्रन्थकी कथाओं के आशयोंको लेकर संस्कृत के कवियों ने नागानन्द कादंबरी हितोपदेश मुद्राराक्षस तथा वेताल पञ्चविंशतिकाआदि अनेक ग्रन्थ बनायेहैं इसी प्रकार इस अनुवादको देखकर हिन्दी भाषाके सुलेखक गणभी इसकी कथाओं के आशयों को लेकर अनेक नवीन ग्रन्थ बनाके अपनी मातृभाषाके गौरवको बढ़ावेंगे हमलोगोंको यहभी दृढ़ विश्वास है कि यदि इस यंत्रालयाधिपतिकी आज्ञानुसार इस ग्रन्थकी छोटी २ कथाओंको लेकर दो चार छोटे २ ग्रन्थ बनवाकर पाठशालाओं के दशम नवम अष्टम तथा सप्तम आदि वर्गों के विद्यार्थियोंको पढ़ाने के लिये नियत कियेजायँ तो उनको बिनाप्रयासकेही सदुपदेशका लाभहोगा ॥

इस वृहद्ग्रन्थरूपी समुद्रमें मधुररसवती कथारूपी अनेक नदियोंका संगमहै इसीतात्पर्य्य से कवि ने इसकानाम कथासरित्सागर रक्खा इस सागरमें यह विशेष चमत्कारहै कि कथारूपी नदियोंका रस खारनहीं किन्तु विशेष मधुर होजाताहै इसबातका अनुभव वही सहृदय महात्मा करसकेंगे जो अपने मानस शरीरसे इसमें मज्जनकरेंगे ॥

इस वृहद्ग्रन्थके अनुवाद में हमलोगों से भाषाकी कल्पना तथा श्लोकार्थ में जो कुछ त्रुटि रहगई हो उसको गुणग्राही महात्मा सज्जनलोग क्षमाकरके शुद्धकरलें ॥

पण्डित कालीचरण शर्म्मा तथा उमापति शर्म्मा तारीख ११ सितम्बर सन् १८९६ ईसवी
मुताबिक भाद्रपद शुक्ला ४ भृगुवार संवत् १९५३

कथा सरित्सागरकी भाषा॥

महाकवि श्रीसोमदेव भट्ट विरचित॥

कथापीठ नाम प्रथम लम्बक॥

भवतुसदायुष्माकंसम्पद्धाम॥ भक्काननाब्जमधुपंगणपतिनाम १
श्रियंदिशतुवश्शम्भोः श्यामःकण्ठोमनोभुवा॥
अङ्कस्थपार्वतीदृष्टि पाशैरिवविवेष्टितः ॥ २ ॥
सन्ध्यानृत्योत्सवेताराः करेणूद्धूयविघ्नजित्॥
शीत्कारसीकरैरन्याः कल्पयन्निवपातुवः॥ ३ ॥
प्रणम्यवाचंनिश्शेष पदार्थोद्योतदीपिकाम्॥
बृहत्कथायासारस्य संग्रहंरचयाम्यहम्॥ ४ ॥

दोहा॥ विघ्नहरण गजवदनके चरणन में शिरनाय।
बृहत्कथा के सारकी भाषा रचौं बनाय १॥

महाकवि शिरोमणि श्रीसोमदेव भट्टजी इसकथा सरित्सागर नाम ग्रन्थके प्रारम्भमें शिष्टाचार के अनुसार यह मंगलाचरण करते हैं श्रीशिवजीका नीलकण्ठ आपलोगोंका कल्याणकरे जिसकण्ठको गोद में बैठीहुई पार्वतीजीकी दृष्टिरूपी बन्धनों से मनों कामदेवने बांधाहै सन्ध्यासमय नृत्यके महोत्सव में अपनी सूंड़से आकाशके नक्षत्रोंको मानो उड़ाकरके जो गणेश शीत्कारके जलकणों से मानों अन्य नक्षत्र बनाते हैं वह आपलोगों की रक्षाकरें—सम्पूर्ण पदार्थोंकी प्रकाशित करनेवाली श्री सरस्वती को नमस्कार करके मैं बृहत्कथाके सारका संग्रह बनाताहूं इस ग्रन्थ में कथीपीठ १ कथामुख २ लावाणक ३ नरवाहनदत्त जनन ४ चतुर्द्दारिका ५ मदनमञ्चुका ६ रत्नप्रभा ७ सूर्य्यप्रभ ८ अलङ्कारवती ९ शक्तियश १०

वेला ११ शशांकवती १२ मदिरावती १३ पञ्चलम्बक १४ महाभिषेक १५ सुरतमंजरी १६ पद्मावती १७ और विषमशील यह अठारह लम्बक हैं और इसमें मूलके सिवाय कुछ नहीं बढ़ाया गया है बड़े ग्रन्थ का संक्षेपमात्र करके भाषा बदल दीगई है और यथाशक्ति शब्दों का सम्बन्ध भी ठीक २ रक्खा गया है और कविता ऐसी कीगई है कि जिसमें कथाका रस न बिगड़े मैंने अपनी पण्डिताई की प्रशंसा के लिये यह परिश्रम नहीं कियाहै किन्तु अनेक प्रकारकी कथाओंके सरलतापूर्वक लोगोंके जाननेके लिये यहश्रम किया है १२॥

अथ कथा ॥

संपूर्ण पर्व्वतोंका राजा हिमालयनाम पर्व्वत जिसपर किन्नर गन्धर्व और विद्याधरादिक सुखपूर्व्वक निवास करते है जिसका माहात्म्य संपूर्ण पर्व्वतोंकी अपेक्षासे इसकारण अधिक प्रसिद्ध है कि तीनोंलोकों की माता साक्षात् पार्वतीजी जिसकी कन्याहैं जिसके उत्तर में उसी का शिखर रूप हजारों योजन के विस्तारवाला कैलास नाम पर्व्वत स्थित है यह कैलास पर्व्वत अपनी कांति से मंदराचलको इसकारण हँसताहै कि यह समुद्रके मथने से निकले हुए अमृतसे भी उज्ज्वल नहीं हुआ और मैं विनाही यत्न के ऐसा उज्ज्वल हुआहूं कि मेरे ऊपर सम्पूर्ण चराचर संसारके स्वामी श्रीमहादेवजी विद्याधर और सिद्ध गणोंसे सेवित किये हुए पार्वतीजी समेत निवास करके विहार करते हैं जिनकी पीली २ जटाओं के समूहों में प्राप्त चन्द्रमा सन्ध्याकालकी अरुणता से पीतवर्ण होकर उदयाचलके शृंगों के संगके सुखको अनुभव करताहै और जिन शिवजीने अन्धकासुरके हृदयमें त्रिशूल गाड़कर तीनोंलोकों के हृदयका शूल निकालडाला और मुकुटों पर जड़ीहुई मणियों में जिनके चरणों के नखों के प्रतिबिम्ब पड़ने से देवता तथा दैत्यलोग चन्द्रशेखरसे मालूम होते हैं ऐसे महादेवजी को पार्वतीजी ने एकान्तमें किसी समय प्रसन्न किया तब स्तुति से प्रसन्नहुए महादेवजी पार्वती को गोदमें बैठाकर बोले कि हे प्रिये तुम क्या चाहती हो वह हमकरें ऐसे वचन सुनकर पार्वतीजी बोलीं कि हे स्वामी यदि आप प्रसन्नहैं तो कोई अत्यन्त रमणीय नवीन कथा कहिये २३ यह सुनकर श्रीमहादेवजी बोले कि हे प्रिये भूत भविष्य और वर्त्तमान ऐसी कौनसी वस्तुहै जिसको तुम नहीं जानती हो तब पार्वतीजी के अत्यन्त हठ करने पर श्री महादेवजी एक छोटीसी कथा कहनेलगे कि एकसमय नारायण और ब्रह्माजी मेरे देखनेके लिये पृथ्वी में भ्रमण करते हुए हिमालय के नीचे आये वहां उन दोनों ने एक ज्वालारूप महाभारी लिङ्ग देखा उसके अन्तके देखने के लिये ब्रह्मा ऊपरको गये और नारायण नीचे को गये २८ जब दोनों ने उसका अन्त न पाया तब मेरी प्रसन्नता के लिये तप करनेलगे उससमय मैंने प्रकट होकर दोनों से कहा कि तुम कोई वरदान मांगो यह सुनतेही ब्रह्माने तो यह वरमांगा कि आप हमारे पुत्रहोंय इसी निन्दित वचन कहने से ब्रह्मा संसार में अपूज्य होगये और नारायण ने यह वरमांगा कि हे भगवन् मैं सदैव आपका सेवक बनारहूं इसी से वह नारायण तुम्हारे स्वरूप में होकर मेरे अर्द्धाङ्गी हुए और इसी से तुम्हीं मेरी शक्तिरूप नारायणहो और तुम्ही मेरी पूर्व्वजन्म में भी स्त्री थी शिवजी के इस वचनको सुनकर पार्वतीजी बोलीं कि मैं पूर्व्वजन्म में किसप्रकारसे आपकी स्त्री थी ३३ शिवजी बोले हे पार्वती पूर्व्वसमय में दक्षप्रजा-

पति के तुम और तुम्हारे सिवाय, अनेक कन्यार्थी दक्षप्रजापति ने तुम्हारा विवाह मेरेसाथ किया और अन्य कन्याओं का धर्मादिक देवताओं के साथ करदिया एकसमय दक्ष ने यज्ञ में सब जामाताओं को बुलाया परन्तु केवल मुझे नहीं बुलाया तब तुमने दक्षसे पूछा कि मेरे पतिको क्यों नहीं बुलाया दक्षने यह उत्तर दिया कि तुम्हारा पति मनुष्यों के कपाल आदिक अशुभ वेषको धारण करता है उसको मैं यज्ञ में कैसे बुलाऊं उसके ऐसे कठोर वचनोंको सुनकर हे पार्वतीजी तुमने यह शोचा कि यह बड़ापापी है और मेरा शरीर भी इसी से उत्पन्न हुआहै इसलिये तुमने उस अपने शरीर को योगसे त्याग दिया और मैंने क्रोधसे दक्षके यज्ञका नाश करदिया इसके उपरान्त जैसे समुद्रसे चन्द्रमाकी कला उत्पन्न हुई है उसी प्रकार हिमालय के घरमें तुम्हारा जन्महुआ ३६ इसके उपरान्त तुम्हें तो यादही होगा कि जब मैं तप करने के लिये हिमालयपर गया तब तुम्हारे पिताने मेरी सेवाके लिये तुमको आज्ञादी इसी बीचमें तारकासुरके मारने के निमित्त मेरेपुत्रहोने के लिये देवतालोगो के भेजेहुए कामदेव ने अवसर पाकर मेरेऊपर अपने वाण चलाये और मैंने उसे भस्म करदिया फिर बड़ा कठोर तपकरके तुमने मुझे प्रसन्न किया और मैंने भी तुम्हारे तपके बढाने के लिये बहुत देरलगाई इसप्रकारसे तुम मेरे पूर्व्वजन्मकी स्त्री हो बताओ अब मैं और क्याकहूं ऐसा कहकर महादेवजी के चुपहोजाने पर पार्वतीजी क्रोधकरके बोली कि तुम बड़े धूर्त्तहो मेरे प्रार्थना करनेपर भी कोई उत्तमकथा नहीं कहते गङ्गाको शिरपर धारण करतेहो सन्ध्याकी वन्दना करतेहो क्या मैं तुम्हें नहीं जानती यह वचन सुनकर जब शिवजी ने अपूर्व मनोहर कथा कहने की प्रतिज्ञाकी तब पार्वतीजी का क्रोध शान्तहुआ ४१ पार्वतीजी ने यहां कोई न आने पावे यह कहकर नन्दी को द्वारपर खड़ाकरदिया और शिवजी कथा प्रारम्भकरके कहनेलगे कि देवता लोग अत्यन्त सुखी होते हैं और मनुष्य अत्यन्त दुखीहोते हैं इसलिये देवता और मनुष्यों की कथा अत्यन्त मनोहर नहीं है इसहेतु से मैं विद्याधरों की कथा प्रारम्भ करताहूं इसप्रकार जब शिवजी कहने लगे तो उसीसमय शिवजी का अत्यन्त प्यारा पुष्पदन्तनाम गण आया और द्वारपर खड़ेहुए नन्दी ने उसे रोकदिया परन्तु मुझे निष्कारण रोकाहै ऐसा समझकर योगके बलसे अलक्षित होकर भीतर चलागया और जाकर महादेवजी की कहीहुई सात विद्याधरों की अपूर्व्व कथासुनी और वही सबकथा उसने अपने घर जाकर जयानाम अपनी स्त्री से कही क्योंकि कोई भी स्त्रियों से धन और गुप्त वार्त्ता को नहीं छुपासक्ता ५२ उसकथा के आश्चर्य्य से भरीहुई जयाने भी सम्पूर्ण कथा पार्वतीजी के सन्मुख कही क्योंकि (स्त्रियां किसी बातको छुपा नहीं सक्तीं) जयासे इस कथाको सुनकर बहुत क्रोधयुक्त हो पार्वतीजी ने शिवजी से कहा कि तुमने यह अपूर्व्व कथा नहीं कही इसे तो जयाभी जानतीहै तब महादेवजी ने ध्यानकर देखा और कहा कि पुष्पदन्त ने योगबल से यहां आकर सबकथा सुनी है और जयासे वर्णन की है नहीं तो इसको कौन जानसक्ताहै यह सुनकर पार्वतीजी ने बड़े क्रोधसे पुष्पदन्त को बुलाकर हे दुष्ट तू मनुष्यहोजा यह शापदिया और उसके लिये शिफ़ारस करनेवाले माल्यवान् को भी यही शाप दिया ५७ तब उनदोनों ने और जयाने पैरोंपैर गिरकर बहुत समझाया तब पार्वतीजी

ने शापका अन्त इसप्रकार से बतलाया कि जो विन्ध्याचल के वन में कुबेरके शापसे पिशाच हुआ सुप्रतीक नाम यक्ष काणभूत नामवाला स्थितहै उसके देखने से अपनी जातिको स्मरण करके जब उस से इसकथाको कहोगे तव हे पुष्पदन्त तुम इस शापसे छूटजावोगे और काणभूतकी कथाको जब माल्यवान् सुनेगा तव काणभूत के मुक्तहोजाने पर कथाको प्रकटकरके यह भी मुक्त होजायगा यह कहकर पार्वतीजी तो चुपकी होगई और वह दोनों गण भी देखतेही देखते बिजली के समान नष्ट होगये ६२ इसके उपरान्त कुछ समय व्यतीत होजाने पर पार्वती दयायुक्त होकर शिवजी से बोलीं कि हे स्वामी जिन दोनों गणोको मैंने शापदिया था वह पृथ्वी में कहां उत्पन्नहुए यह सुनकर महादेवजी बोले कि कौशाम्बी नाम नगरी में वररुचिनामसे पुष्पदन्त उत्पन्नहुआ है और सुप्रतिष्ठित नाम नगर में गुणाढ्य नामसे माल्यवान् भी उत्पन्नहुआ है यह उन दोनों का वृत्तांत है इसप्रकार कहकर श्रीमहादेवजी गणों को शाप देने से पश्चात्तापवाली पार्वती को कैलासपर्व्वत पर कल्पवृक्ष की लताओं में क्रीड़ा करके प्रसन्न करते भये ६६ ॥ इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांकथापीठलंबकेप्रथमस्तरङ्गः १ ॥

इसके उपरान्त मनुष्य के शरीरमें वररुचि अथवा कात्यायन नामसे प्रसिद्ध पुष्पदन्तनाम गण संपूर्ण विद्याओं को पढ़कर और राजा नन्दके यहां मन्त्री होकर एकसमय बहुत उदासहोके श्रीभगवती विन्ध्यवासिनी के दर्शन करनेको गया वहां तपसे प्रसन्नहुई भगवती ने स्वप्न में वररुचि से यह कहा कि तुम विन्ध्याचल के वनमें जाकर काणभूत से मिलो तब व्याघ्रादि अनेक हिंसकजीवों से भरेहुए निर्जल बड़े २ वृक्षवाले विन्ध्याचलके वनों में भ्रमण करते २ वररुचिने एक बहुतबड़ा बरगदका वृक्षदेखा और उसके निकट सैकड़ों पिशाचों से घिरेहुए शालवृक्षके समान ऊंचे डीलवाले काणभूत को देखा काणभूतने उसे देखकर पैरोंपर गिरकर बैठाया तब क्षणभर बैठकर वररुचिबोले कि हे काणभूत आप के तो आचार बहुत उत्तमहैं यह गति कैसेहुई यह बड़े प्रेमके बचन सुनकर काणभूत बोला कि मैं आप तो कुछ नहीं जानसक्ताहूं परन्तु उज्जयनी के श्मशान में महादेवजी के मुखारविन्दसे जो सुना है वह कहताहूं ६ एकसमय महादेवजी से पार्वती ने पूछा कि हे देवदेव आपकी प्रीति कपाल और श्मशान में क्यों है इसप्रकारसे पूछेहुए महादेवजी बोले कि पूर्व्वही कल्पके अन्त में सम्पूर्ण संसारके जलमय होजाने पर मैंने अपनी जंघा चीरकर एक रुधिरकी बूंदटपकादीनी वह रुधिरकी बूंद जलमें गिरकर अण्डासी होगई उस अण्डेको फाड़ने से एकपुरुष उत्पन्नहुआ उसी से मैंने संसारके बनाने के लिये प्रकृति उत्पन्नकी उन दोनोंने मिलकर प्रजापति उत्पन्नकिये और प्रजापतियों ने प्रजा उत्पन्नकी इसी से संसार में उस पुरुषको पितामह कहते हैं १२ इसप्रकार सब संसारको उत्पन्नकरके अभिमानयुक्त होनेवाले उस पुरुषका शिर मैंने काटडाला उसी के पश्चात्ताप से मैंने यह बड़ा व्रत ग्रहणकिया है इसीलिये मैं कपालों को हाथ में लिये रहताहूं और श्मशान मुझे बहुतप्यारा है और हे पार्वतीजी यह कपालरूप संसार मेरेहाथमें स्थितहै क्योंकि उसअण्डे के दोनों टुकड़े पृथ्वी और आकाश कहलाते हैं इसप्रकार महादेवजी के कहनेपर उनबातोंको सुनने के लिये मैं वहांपर खड़ाथा कि पार्वतीजी फिर महादेवजी से

बोलीं कि हे प्रिय वह पुष्पदन्त हमारे पास कितने दिनों में आवेगा यह सुनकर महादेवजी मेरी ओर देखकरबोले कि यह जो पिशाच दिखाई देताहै वह कुवेरका सेवक यक्षहै इसकी मित्रता स्थूलशिर नाम किसी राक्षससे थी उसपापी के साथ इसे देखकर कुवेरजी ने इसे यह शापदिया कि तू विन्ध्याचल के पर्व्वत में पिशाचहोजाय १६ तव दीर्घजंघनाम इसके भाई ने कुवेरके चरणोंपर गिरकर यह प्रार्थनाकी कि महाराज इसका शाप कवछूटेगा तव कुवेरने कहा कि शापसे छूटेहुए पुष्पदन्तसे वृहत्कथाको सुनकर और उसकथाको शापसे मनुष्यहुए माल्यवान्से कहकर उनदोनों गणोंकेसाथ यहभी शापसे छूटेगा हे पार्वतीजी कुवेरने इसप्रकारसे इसके शापका अन्त कहाहै तुमकोभी यही जाननाचाहिये महादेवजी के ऐसे वचन सुन मैं वहुत प्रसन्नहोकर यहां चलाआया इसप्रकार पुष्पदन्तके आनेतक मेरा यहशाप रहैगा इसप्रकारकहकर जव वह चुप होगया तव उसीसमय वररुचि अपनी जातिको याद करके मानों सोते से जगपड़ा और वोला कि मैं वही पुष्पदन्तहूं मुझसे उस कथाको सुनो यह कहकर वररुचि ने सातलाख श्लोकोंकी सात महाकथा कहीं २६ इसके उपरान्त काणभूत वोला हे पुष्पदन्त तुमतो शिवजीका अवतार हो तुम्हारे सिवाय इनकथाओं को कौन जानसक्ता है तुम्हारी कृपासे अव यह मेरा शाप गयाहीसा है अव आप जन्मसे लेकर अपना वृत्तान्त वर्णन करके मुझे पवित्रकरो जो मुझसे छिपाना न चाहो काणभूतके ऐसे कोमल वचनोंको सुनकर वररुचिने जन्मसे लेकर अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त विस्तार पूर्व्वक यहवर्णन किया २६ कि कौशाम्बी नाम नगरीमें सोमदत्तनाम ब्राह्मण रहताथा जिसका कि दूसरानाम अग्निशिख भी था उस ब्राह्मणकी स्त्री का नाम वसुदत्ता था वह किसी मुनि की कन्याथी और किसी शापसे ब्राह्मणकी स्त्री हुई उन्हीं दोनों से मेरा जन्म हुआ है जव कि मैं वहुत छोटा वालकथा तव मेरा पिता मरगया मेरी माता वड़े दुःखसे मेरा पालन करनेलगी ३२ एक समय वहुत दूरसे चलेहुए दो ब्राह्मण रात्रिभर रहने के लिये मेरे घरपर ठहरे वह दोनों मेरे घरपर टिकेही थे कि उसी समय मृदंग की आवाज सुनाईपड़ी उसको सुनकर मेरी माता मेरे पिताकी याद करके गद्गद वचनसे वोली कि हे पुत्र यह तुम्हारे पिताका मित्र नन्दनाम नट नाच रहाहै मैंने भी मातासे कहा कि मैं इसे देखनेको जाताहूं और देखकर तुझे भी सम्पूर्ण दिखाऊंगा मेरे यह वचन सुनकर उन ब्राह्मणों को वड़ा आश्चर्य हुआ ३६ तव मेरी माताने उन दोनो से कहा कि इसमें कोई सन्देह नहीं है यह वालक एकवारकी सुनी हुई सव वातों को हृदयमें धरलेता है तव मेरी परीक्षाके लिये उन्ह प्रीतिशाख्य का पाठ किया मैंने वह सुनकर उसीप्रकार उनको सुना दिया इसके उपरान्त उन दोनों के साथ नाच देखकर मैंने अपनी माता कोभी उसीप्रकार दिखा दिया इसप्रकार मुझे सकृत् श्रुतिधर (एकवार सुनकर याद रखनेवाला) जानकर उन दोनों में से एक व्याड़िनामक ब्राह्मणने मेरी माता को प्रणाम करके यह कथा कही ४० हे माता वेतसनाम पुरमें देवस्वामी और करम्भक नाम दो ब्राह्मण अत्यन्त परस्पर प्रेम करनेवाले भाई थे उनमें से देवस्वामी का पुत्र यह इन्द्रदत्त नामहै और करम्भकका पुत्र व्याड़ि नाम मैं हूं उनमें से प्रथम मेरा पिता मरा उसी के शोकसे इन्द्रदत्तका भी पिता मरगया और उन्हीं दोनों के शोकसे हमारी माता भी

मरगई ४३ इसी कारण से धन होनेपर भी अनाथ होकर विद्या की अभिलाषा से हम दोनों स्वामि कुमारकी तपस्या करनेलगे ४४ तप करते २ एक दिन स्वप्न में स्वामिकुमार ने यह कहा कि नन्दनाम राजाके पाटलिपुत्र नाम नगरमें वर्षनाम एक ब्राह्मण है उससे तुमको सम्पूर्ण विद्या मिलेंगी तुम वहीं जाओ इसके उपरान्त पाटलिपुत्र नाम नगरमें जाकर हम लोगों ने पूंछा तो लोगों ने कहा कि हाँ वर्ष नाम एक मूर्ख ब्राह्मण है ४७ तब सन्देह युक्त होकर हम दोनों वर्ष के घरमें गये और जाकर मूसों के बिलोंसे युक्त गिरी हुई दीवारवाले छाया तथा छप्परसे रहित आपत्तियों के स्थानके समान घरमें ध्यान लगाये बैठेहुए उस वर्ष ब्राह्मणको देखा हमलोगों को आया देखकर वर्षकी स्त्री जिसका कि शरीर अत्यन्त मलिन दुर्बल बाल खुलेहुए और वस्त्र मैले थे वह स्त्री क्याथी मानों वर्ष के गुणों को देखकर साक्षात् दुर्दशाही स्वरूप को धारण किये आईथी उसने बड़ा सत्कारकिया तब हमने प्रणाम करके अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा और यह भी कहा कि हमने सुनाहै किवर्ष बड़े मूर्खहैं यह सुनकर वह बोली कि तुम हमारे पुत्रके समानहो तुमसे क्या लज्जाहै सुनो मैं तुमसे यहकथा कहतीहूं ५३ इसनगरमें शंकरस्वामी नाम एक ब्राह्मण रहतेथे उनके दो पुत्रथे एक तो मेरापति और दूसरा उपवर्ष, मेरापति तो अत्यन्त मूर्ख तथा दरिद्रीहुआ और इसका भाई अत्यन्त धनवान् तथा विद्वान्हुआ उसने अपनी स्त्रीको हमारे घरके भी पालन करनेकी आज्ञा देदी थी पर यहां की यह बड़ी बुरी रीतिहै कि वर्षाऋतुमें गुड़ और पीठी को मिलाकर स्त्रियां गुप्तरूप से कोई बुरीचीज़ बनाकर मूर्ख ब्राह्मणको देती हैं ऐसा करनेसे जाड़ोंके दिनों में स्नानका क्लेश और गर्मियों में स्वेदका दुःख नहींहोता इसलिये मेरी देवरानीने भी दक्षिणासहित वह पदार्थ मेरेपतिको दिया उसे लेकर जब यह घरमेंआया तब मैंने इसेबहुतडांटा और यह भी अपनीमूर्खता के कारण अत्यन्त दुखीहोकर स्वामिकुमारकी सेवा करनेको चलेगये इनके तपसेप्रसन्नहुए स्वामिकुमार ने इनके हृदयमें सम्पूर्ण विद्याओंका प्रकाश करदिया और कहा कि जब सकृत् श्रुतिधारी ब्राह्मण तुम को मिले तब तुम इन विद्याओं का प्रकाशकरना इसप्रकार स्वामिकुमारकी आज्ञा पाकर बहुत प्रसन्नता पूर्व्वक घरमें आकर इन्होंने सम्पूर्ण वृत्तान्त मुझसे कहा तबसे यह बराबर रात्रि दिन जप और ध्यान में लगेरहते हैं इससे कोई सकृत् श्रुतिधारी (एकबार सुनकर याद रखनेवाला) ब्राह्मण लाओ तो तुम्हारा कार्य्य सिद्धहोय वर्षकी स्त्रीसे ऐसे वचन सुनकर और उसे १०० अशर्फी देकर सकृत् श्रुतिधरके ढूंढ़नेको हम सब पृथ्वीपर घूमे परन्तु वह कहीं नहींमिला आज थककर तुम्हारे यहां आये तो यह तुम्हारा बालक सकृत् श्रुतिधारी मिला सो तुम इसे विद्या पढ़नेके लिये हमको सुपुर्द्द करदो ६६ व्याड़ि के ऐसे वचन सुनकर हमारी माता बड़े आदर पूर्व्वक बोली कि तुम्हारा कहना बहुत ठीकहै क्योंकि जिस समय यह बालक उत्पन्न हुआथा तब यह आकाशवाणी हुईथी कि यह बालक सकृत् श्रुतिधारी होगा और वर्ष उपाध्यायसे विद्याको पढ़कर संसारमें व्याकरण शास्त्रकी प्रतिष्ठा बढ़ावेगा और इसका वररुचि नाम इस कारणसे होगा कि संसारमें वर अर्थात् उत्तम पदार्थही इसको अच्छे लगेंगे इसीसे इस बालक के बढ़ने पर मैं रात्रि दिन शोचतीथी कि वर्ष उपाध्याय कैसे मिलेंगे आज तुम्हारे मुखसे यह बात सुनकर मुझे

वड़ा संतोषहुआ तुम इसे लेजाओ कोई शोचकी वात नहींहै यह तो तुम्हारे भाई के समानहै मेरी माता के ऐसे वचन सुनकर वह दोनों वड़े प्रसन्नहुए और क्षणके समान वह रात्रि व्यतीत की ७२ इसके उपरान्त उन दोनों ने मेरी माताके प्रसन्न होनेके लिये अपना सम्पूर्ण धनदेकर मेरा यज्ञोपवीत किया फिर मेरे लेजानेके लिये आज्ञामांगी तव मेरी माताने भी वड़े दुःखसे किसीप्रकार अपने आंसुओंको रोककर मुझे जानेकी आज्ञादी वह मुझे साथमें लेकर वहांसे वड़ी प्रसन्नतापूर्व्वक चले और वर्षके घरमें पहुंचे वर्षने भी मुझे स्वामिकुमारके वरदानके समान मानकर दूसरेदिन हमलोगोंको सन्मुख वैठालकर अपनी दिव्यवाणीसे ॐकारका उच्चारणकिया उसीसमय सम्पूर्ण वेद अपने २ अंगोंसमेत उनको स्मरण हो आये और वह हमलोगोंको पढ़ानेलगे एकवार सुनकर मैंने दोवार सुनकर व्याड़िने और तीनवार सुन कर इन्द्रदत्त ने गुरूका पढ़ायाहुआ याद करलिया उस अपूर्व्व दिव्यध्वनिको सुनकर सम्पूर्ण नगर निवासी ब्राह्मणलोग देखनेको आये और प्रशंसाकरके वर्षउपाध्यायको प्रणाम करनेलगे ऐसे आश्चर्य्य को देखकर पाटलिपुत्र नगरनिवासी सम्पूर्णलोग उत्सवकरनेलगे परन्तु उसके भाई उपवर्षने अभिमान के कारण नहीं किया और नन्द नाम राजाने भी स्वामिकुमार के प्रभावको देखकर और वर्ष के ऊपर प्रसन्नहोकर उनका घर धन से भरवादिया ८३॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांकथापीठलम्बकेद्वितीयस्तरङ्गः २॥

यहकहकर वररुचि एकाग्रमनसे सुननेवाले काणभूतसे फिर बोला कि एकसमय अपने नित्यकार्य्यों को करके हमने वर्षनामउपाध्याय से पूछा कि हे उपाध्याय किस कारण से इस पाटलिपुत्र नामनगर के निवासी अत्यन्त धनवान् और विद्वान् होतेहैं सो आप कृपाकरके वर्णनकीजिये यह सुनकर उपाध्याय बोले कि हरद्वारमें जो कनखलनाम अत्यन्त पवित्रतीर्थ है जिसतीर्थमें कांचनपातनाम दिग्गज उशीनरगिरिको तोड़कर उसपरसे श्रीगङ्गाजीको उतारलायाहै उसमें एक दक्षिणी ब्राह्मण अपनी स्त्री समेत तप करताथा उसब्राह्मण के तीन पुत्रथे समय पाकर जव वह ब्राह्मण स्त्री समेत मृत्युको प्राप्तहुआ तव उसके पुत्र विद्यापढ़ने की इच्छा से राजगृह नाम स्थान में जाकर विद्या पढ़नेलगे और पढ़कर किसी स्वामी के न होने से दुखित होकर स्वामिकुमारके दर्शन करनेको दक्षिणकी ओरगये ८ वहांसमुद्रके तट पर चिंचिनी नाम नगरीमें भोजिक नाम ब्राह्मण के घरमें रहनेलगे उसब्राह्मणके तीन कन्याथीं उसने अपनी तीनों कन्याओंका विवाह इनतीनोंसे करके और अपना सव धनदेके तपकरनेके निमित्त गङ्गा जी को यात्राकी इसके उपरान्त ससुर के घर में रहते रहते उस देश में अवृष्टिके कारण वड़ाभारी दुर्भिक्ष पड़ा इससे वह तीनों ब्राह्मण अपनी अपनी स्त्रियों को छोड़कर देशान्तर को चलेगये (क्योंकि दुष्टों के हृदय में सम्बन्धका स्नेह नहीं होता) १२ और वह तीनों कन्या अपने पिता के मित्र किसी यज्ञदत्तनाम ब्राह्मणके घरमें रहीं उनमें से बीचवाली कन्याके गर्भभी था समयपाकर उसके एकपुत्र उत्पन्न हुआ उस वालकपर उन तीनोंका वड़ा स्नेहथा एकसमय आकाश मार्ग में विहार करतेहुये महादेवजीकी जंघापर वैठीहुई पार्व्वतीजी उस वालकको देखकर दयापूर्व्वक वोलीं कि हे स्वामी देखो इस वालकपर यह तीनों

स्त्रियां कैसा स्नेह करती हैं और इनको यह आशा है कि यह हमारा पालनकरेगा सो हे स्वामी ऐसा करो जिससे कि यह बालक इनकी पालनाकरे पार्वतीजी के ऐसे दयायुक्त वचनोंको सुनकर वरदाता भगवान् महादेवजी बोले कि इसपर मैं अवश्य अनुग्रहकरूंगा क्योंकि पूर्वजन्म में इसने अपनी स्त्री समेत मेरी बड़ी आराधनाकी है इसीलिये इसको यह जन्मभीदियाहै इसकी स्त्री महेन्द्र नाम राजाकी पुत्री पाटली नाम से उत्पन्नहुई है उसी से इसका विवाहभी होगा २० यह कहकर शिवजी ने उन पतिव्रता स्त्रियों को यह स्वप्न दिखाया कि तुम्हारे इस बालकका पुत्रक नाम है यह जब शयनकरके उठैगा तब इसके सिराने में एक लाख अशर्फी प्रतिदिन मिलैंगी और इसी से यह राजाहोगा इसके उपरान्त जब बालक सोतेसे उठा तब वह स्त्रियां उसअशर्फियों के ढेरकोपाकर अत्यन्त प्रसन्नहुईं इसप्रकार उन अशर्फियों से बड़ाभारी खजाना इकट्ठाहोगया इसीसे वह पुत्रकनाम लड़का राजाभी होगया किसीसमय उसके नानाका मित्र यज्ञदत्त एकान्तमें उसबालक से बोला कि हे राजन् आपके पिता दुर्भिक्षके कारण से देशान्तरको चलेगये हैं आप ब्राह्मणोंको सदैव कुछ दानदियाकीजिये जिसे सुनकर आपके पिताभी आवें और मैं आपसे इसीविषय में राजा ब्रह्मदत्तकी कथाको कहताहूं उसको सुनिये २६ पूर्व्वकाल में काशीजीमें ब्रह्मदत्तनाम एक राजाहुआ उसराजाने रात्रिके समय आकाशमें उड़तेहुये सैकड़ों राजहंसोंसे घिरेहुये दो सुवर्णके हंसोंकोदेखा उनकी ऐसी शोभाथी कि मानों बिजलीके समूह को श्वेतमेघों के समूह घेरेचलेजाते हैं राजाको उनके देखनेकी उत्कण्ठा ऐसीहुई कि राज्यके सबसुखोंको भूलगया और मन्त्रियोंकी सम्मतिसे एक बड़ा उत्तम तड़ागबनवाकर उसमें सब जीवोंके आनेकी बेरोक आज्ञादेदी फिर समयपाकर वह दोनो हंसभीआये राजाने उनको आयाहुआ देखकर विश्वासदेके उनसे पूँछा कि तुम्हारा शरीर सुवर्णका क्यो है यह सुनकर वह हंस प्रकटवाणी से बोले कि हे राजन् पूर्व्वजन्म में हम दोनों काक थे एकसमय किसी निर्जन पवित्र शिवालय में भोजनके निमित्त लड़ते लड़ते शिवालयकी जलाधारी में गिरकरमरगये और अब पूर्व्वजन्म के जाननेवाले सुवर्ण के हंस हैं उनके यह वचन सुन और उन्हें अच्छेप्रकारसे देखकर राजा अत्यन्त प्रसन्नहुआ २४ इसीसे मैं कहताहूं कि जो आप कोई अपूर्व्व दान दियाकरोगे तो आपके भी पिता उसके प्रभावसे आपको मिलैंगे इसप्रकार यज्ञदत्तसे सुनकर पुत्रकके उसीप्रकार दानदेनेसे दानकी प्रसिद्धीको सुनकर उसके पिताभी वहांआये और पहचान लियेगये तब पुत्रने उनको बड़े आदरपूर्व्वक धनदेकररक्खा (भाग्यसे आपत्तियोंका नाशहोजानेपरभी अविवेकसे अन्धबुद्धिवाले दुष्टोंका स्वभाव नहीं जाताहै यह आश्चर्य्य है) एकसमय उसके पितादिक राज्यपानेकी इच्छासे उस पुत्रक नाम अपने पुत्रको मारनेकी इच्छाकरके उसे विन्ध्यवासिनीके दर्शन के बहाने वहांलेगये और बधिकोंको देवीके मन्दिर में स्थापितकरके पुत्रसे बोले कि पहले तुम अकेलेही देवीके मन्दिर में दर्शनकरनेजाओ उसने उनके विश्वाससे भीतरजाकर मारनेको उद्युक्तहुये पुरुषोंसे पूंछा कि तुम लोग मुझे क्यों मारतेहो बधिक बोले कि तुम्हारे पिता और चाचाओं ने सुवर्ण देकर हमको तुम्हारे मारनेको यहां रक्खाहै इसके उपरान्त देवीकी कृपासे मोहितहुए बधिकोंसे पुत्रकने कहा कि यह

संपूर्ण रत्नजटित मेरे आभूषणलेकर मुझे छोड़दो मैं इस बातको किसीसे न कहूँगा और कहीं दूरचला जाऊँगा तव वधिकलोगों ने उसके सव भूषण लेलिये और उसके पितासे कहदिया कि हम पुत्रकको मारआये फिर वहां से लौटकर गयेहुए राज्य के चाहनेवाले उसके पितादिकों को मन्त्रियों ने द्रोही जानकर मारडाला (क्योंकि कृतघ्नियों का कल्याण कैसे होसक्ता है) ४४ इसीवीच में वह सत्यवक्ता राजा पुत्रकभी अपने वन्धुओं से विरक्तहोकर विन्ध्याचल के वन में चलागया और वहां जाकर घूमते २ पुत्रक ने मल्लयुद्ध करतेहुये दो पुरुषों को देखकर उनसे पूछा कि तुम कौन हो उन दोनों ने कहा कि हम दोनों मयासुरके पुत्रहैं और एक पात्र एक दंड तथा दो पादुका यही हमारे पिताका धनहै इसीधन के लिये हम दोनों लड़तेहैं जो अधिक वलवान् होगा वह छीनलेगा उनके यह वचन सुनकर पुत्रकने हँसकर कहा कि यह कितना धन है जिसके लिये तुम लड़तेहो तव वह वोले कि इन खड़ाओं के पहर-ने से आकाशमें उड़जाने की सामर्थ्य होतीहै इस दंडसे जो लिखदिया जाताहै वह सत्य होताहै और इस पात्र में जिस भोजनकी इच्छाकरो वही प्राप्त होजाताहै यह वचन सुनकर पुत्रक ने कहा कि युद्ध से क्या प्रयोजन है यह प्रतिज्ञा करो कि दौड़ने से जो आगे निकलजाय वही इस धनको पावे इस बात को मानकर वह दोनों मूर्ख दौड़े और पुत्रक भी खड़ाउँओंपर चढ़कर दंड और पात्रको लेकर आकाश को उड़गया ५२ इसके उपरान्त क्षणभरमें वहुतदूर जाकर आकर्षिका नाम सुन्दर नगरीको देखकर आ-काशसे पुत्रकउतरा और यह विचारनेलगा कि वेश्या वंचक होती हैं ब्राह्मण हमारे पिताके समान होतेहैं और वैश्य धनकेलोभी होतेहैं तो मुझे कहांरहना चाहिये ऐसा विचार करते २ किसी निर्जन टूटे फूटे घर में एक वृद्धा स्त्रीको उसने देखा तव उसे कुछ देकर प्रसन्न करके उसी टूटेफूटे घरमें गुप्त होकर रहनेलगा एक समय उस वृद्धा ने पुत्रकके स्वरूपको देख प्रसन्न होकर उससे कहा हे पुत्र मुझे यह वड़ी चिन्ता है कि तुम्हारे योग्य स्त्री कहीं नहीं है यहां के राजा की कन्या का नाम पाटलीहै वह तेरे योग्यहै परन्तु महलों में रत्न के समान उसकी चौकसी कीजाती है ५८ वृद्धाके ऐसे वचन सुनकर उसके चित्तमें काम-देव की वाधाहुई तो विचार किया कि आज उसको अवश्य देखूंगा यह निश्चय करके रात्रि के समय खड़ाऊं पहरकर आकाश मार्ग से वह चला और पर्व्वत के शिखर के समान ऊंचे झरोखे में से प्रवेश करके महल में सोतीहुई उस पाटलीको देखा उसकी ऐसी शोभाथी कि वह स्त्री नहीं है मानों सम्पूर्ण संसार को जीतकर थकीहुई कामदेवकी शक्ति शरीरमें लगीहुई चन्द्रिकासे सेवन कीजातीहै उसे सोती हुई देखकर पुत्रकने शोचा कि इसे कैसे जगाऊं उसीसमय अकस्मात् किसी पहरुएने यह दोहा पढ़ा॥

दो०। अलस दृष्टियुत कामिनी आलिंगन करिजौन। रहसि जगावे तरुण जन जन्मकेरिफल तौन॥

इसको सुनकर कांपतेहुए अंगोंसे उस परमसुन्दरी राजपुत्रीका उसने आलिंगन किया और वह जग पड़ी तव उस राजपुत्र को देखकर लज्जा तथा आश्चर्य से उस राजपुत्री की दृष्टि चकित होगई इसके उपरांत वार्त्तालाप करने पर इनका गन्धर्वविवाह होगया और उन दोनों की प्रीति परस्पर अत्यन्त वढ़ी फिर रात्रि के व्यतीत होजाने पर राजपुत्री से पूछकर पुत्रक उस वृद्धा के घरमें फिर लौटआया इस प्र-

कार वह हर रात्रि में वहां जाने आने लगा एकसमय रक्षकों ने पाटली के संभोग चिह्नोंको देखकर उस के पिता से कहा तब राजानेभी एक स्त्रीको छिपाकर उसके पहचाननेके लिये महल में रक्खा ७० उस स्त्रीने जब पुत्रक सोगया तब पहचानने के लिये उसके वस्त्र में महावर लगा दी प्रातःकाल उसके कहने से राजाने दूत भेजे और उसी पहचानसे दूत उसे पकड़कर राजाके निकट लेआये राजा को क्रोधित देखकर पुत्रक खड़ाऊं पहरकर आकाश में उड़ा और पाटली के महल में आकर बोला कि हमको राजा ने जानलियाहै तो चलो हम दोनों खड़ाउँओं के बलसे उड़चलें यह कहकर पाटली को गोद में लेकर उड़गया इसके उपरान्त गंगाजी के तटपर आकाशसे उतरकर थकीहुई प्रियाको उसीपात्र के द्वारा उत्पन्नहुए भोजनों के प्रकारों से प्रसन्न किया इसप्रकारके अद्भुत प्रभावको देखकर पाटली ने प्रार्थनाकी तब पुत्रकने उस दंडसे चतुरंगिणी सेना समेत एक नगर लिखा उस नगरके सत्य होजानेपर पुत्रक ने उसमें राज्य किया और अपने श्वशुरसे मिलकर धीरे २ वह सम्पूर्ण पृथ्वीभरे का राजा होगया इसी से यह नगर लक्ष्मी सरस्वती का क्षेत्र विख्यात होकर अत्यन्त धनवान् तथा विद्यावान् पुरवासियों समेत मायासे रचाहुआहै और पाटली रानीके कारणसे इसका नाम पाटलिपुत्र (पटना) रक्खागयाहै इसप्रकार उपाध्यायके मुखसे इस अपूर्व्वकथाको सुनकर हमारेचित्तमें बहुतकाल तक आश्चर्य और आनन्द बढ़ता रहा ७६॥ इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांकथापीठलम्बकेतृतीयस्तरङ्गः ३॥

इसप्रकार काणभूतसे बीच में इसकथाको कहकर वररुचि फिर अपनी कथा कहनेलगा इसरीति से व्याड़ि और इन्द्रदत्तके साथ धीरे २ सम्पूर्ण विद्याओंको पढ़कर मैं तरुण अवस्थाको प्राप्तहुआ एकसमय हम सबलोग इन्द्रोत्सव नाम मेलेको देखनेगयेथे वहां कामके शस्त्रके समान एककन्याको देखकर मैंने इन्द्रदत्तसे पूछा कि यह कौनहै उसने कहा कि यह उपवर्ष की लड़की उपकोशा नामहै इतनेही में उसकन्याने भी अपनी सखियों से मेरावृत्तान्त पूछा और मेरे मनको खैंचेहुए अपने घरको चलीगई उस का मुखारविन्द पूर्णचन्द्रमा के समान नेत्र नीलकमलके समान भुजा कमलकी दण्डी के समान स्तन बड़े ग्रीवा शंखके समान और ओष्ठ मूंगेके समानथे उसका कहांतक वर्णन कियाजाय मानों वह कामरूपी राजाकी सौन्दर्य्यरूपी मन्दिरकी दूसरी लक्ष्मीही थी ७ इसके उपरान्त कामके बाणों से मेराहृदय छिदनेलगा और उसरात्रिको उसके ध्यानमें मुझे अच्छेप्रकार निद्राभी न आई जब बड़ेकष्टसे कुछ निद्रा आई तो यह स्वप्न दिखाईपड़ा कि श्वेतवस्त्र धारण कियेहुए कोई स्त्री मुझसे यह कहरही है कि हे पुत्र यह उपकोशा तेरी पूर्व्वजन्म की स्त्री है तेरे सिवाय और किसीकी उसको कामनानहीं है इससे चिन्ता मत करो और मैं तेरेशरीरके भीतर रहनेवाली सरस्वतीहूं मुझसे तेरादुःख देखानहींजाता यह कहकर वह अंतर्द्धान होगई ११ तब मेरी निद्राखुलगई और मैं विश्वास युक्तहोकर अपनी प्रियाके घरके समीप एक छोटेसे आमके वृक्षके नीचे बैठा १२ इसके उपरान्त एकसखी ने मुझसे यहकहा कि उपकोशा भी तुम्हारे निमित्त कामसे पीड़ित होरही है तब मैंने उससे कहा कि उसके पिताकी आज्ञा विना मैं उपकोशा को कैसे स्वीकार करसक्ताहूं क्योंकि इससंसारमें अपयशसे मौत अच्छी है जो इसबातको उपकोशा के घर

वाले जानजायँ तो बहुत अच्छा है इसलिये तुम ऐसाही करो जिससे मेरे और तुम्हारीसखी के प्राणबचें यह सुनकर उसने सम्पूर्ण वृत्तान्त उपकोशाकी मातासे कहा उसनें अपने पति उपवर्ष से कहा उपवर्ष ने अपने भाई वर्ष से कहा और वर्ष ने उसवातको स्वीकार किया विवाहके ठहरजानें पर वर्ष उपाध्याय की आज्ञासे व्याड़ि मेरी मातांको कौशाम्वी नगरी से बुलालाया इसके उपरान्त उपवर्ष ने विधिपूर्वक उपकोशा नाम कन्यादानकरके मुझे देदी तव मैं सुख चैनसे अपनी माता और स्त्री समेत वहीं निवास करनेलगा १९ इसके पीछे समय पाकर वर्ष उपाध्यायके वहुत से शिष्य वढ़गये उनमें से एक पाणिनिनाम शिष्य वड़ामूर्खथा वहसेवा करनेसे वहुत घवराकर वर्षकी स्त्रीका भेजाहुआ विद्याकी कामनासे तप करनेको हिमालय पर्व्वतपर चलागया वहां वड़ेतपसे प्रसन्नहुए महादेवजीने सम्पूर्ण विद्याओंका मुखरूप नवीन व्याकरण उसे दिया उसविद्याकोपाकर लौटेहुए पाणिनिनें शास्त्रार्थ करने के लिये मुझे बुलाया तव हमलोगो के शास्त्रार्थ करते २ सात दिन व्यतीतहोगये आठवें दिन मैंने पाणिनिको जीतलिया तव अकाशमें स्थितहुए शिवजी ने वड़ा घोर हुंकार किया उससे हमलोग सम्पूर्ण ऐन्द्र व्याकरण भूलगये और पाणिनिने हमलोगोंको जीतलिया २५ तदनन्तर मैंने वहुत लज्जित होकर अपना सम्पूर्ण धन हिरण्यगुप्तनाम वणिये के यहां घरके खर्च के निर्वाह के लिये रखदिया और यह वात उपकोशा को वताकर मैं तपसे श्रीशिवजीके आराधन करनेको हिमालय परगया और उपकोशाभी मेरे कल्याणकी इच्छासे नित्य नियमपूर्व्वक श्रीगंगाजीका स्नानकरके अपने घरमें रहा करतीथी एकसमय वसन्तऋतुमें अत्यन्त दुर्वल शरीरवाली पांडुवर्ण युक्त चन्द्रमाकी कलाके समान मनुष्योंके नेत्रोंको आनन्द देनेवाली उपकोशा गंगाजीके स्नानकरनेकोचली जा रहीथी वीचमें राजाके पुरोहितने कोतवालने और मन्त्रीके पुत्रने इसको देखा तो उसी समयसें वह तीनों कामके वशीभूत होगये और उसनेभी उस दिन स्नान करनेमे अधिक देरलगाई ३१ जव वह लौटी तो सायंकालके समय मन्त्रीकेवेटे ने हठकरके उसको रोका उसनेभी अपनी हिकमतअमली से यह कहा कि मेरीभी पहलेहीसे यहइच्छाथी परन्तु मैं अच्छे कुलमें उत्पन्नहुईहूं और मेरापति परदेश गयाहै इस से मैं डरतीहूं कि जो कोई देखले तो मेरी और तेरी दोनों की बुराईहोगी इससे जव वसन्तका उत्सव देखनेको लोगचलेजायँ तव पहर रात्रिगये तुम मेरे घरआना यह कहकर जैसे कि वह आगेकोचली वैसेही पुरोहितने पकड़ा पुरोहितसे भी उसने वही वातकहकर रात्रिके दूसरे पहरका संकेत करदिया उससेभी जव किसी प्रकार छूटकर चली तो कोतवालनेरोका उससे भी उसने वही वात कहकर रात्रिके तीसरे पहरका वादाकरदिया इसप्रकार भाग्यवशसे उसके हाथसे भी छूटकर घरमें आई और अपनी सखी से सलाह करनेलगी कि रूपके लोभसे मतवाले पुरुषों के घूरनेके वनिस्वत पति के परदेश जाने पर कुलीन स्त्रीका मरजानाही वेहतरहै ४१ इसप्रकारसे शोचती और मेरा स्मरण करतीहुई उपकोशाने उसदिन न भोजन किया न रात्रिको सोई प्रातःकाल ब्राह्मणों के पूजन के निमित्त धनलेने के लिये हिरण्यगुप्त वणियें के यहां अपनी दासी भेजी तव उसवणिये ने उसके घरपर आकर उपकोशा से एकान्तमे यह कहा कि तुम मेरे साथ संगकरो तो मैं तुम्हारे पतिका

धराहुआ धन तुमकोदूं उसके वचन सुनकर और अपने पतिके रक्खेहुए धनका कोई गवाह न जानकर खेद तथा क्रोधमें भरीहुई उपकोशाने उसपापी वणियेसे भी वही बातकहकर रात्रिके चौथे पहरका संकेत करदिया यह सुनकर वह वणिया चलागया ४६ इसके उपरान्त उपकोशाने अपनी दासियों से कस्तूरी आदि अनेक सुगन्धियों से युक्त तेल मिलाहुआ काजल बनवाया और चार वस्त्रके टुकड़ों पर वह काजल लिहसवाया और एक बड़ी मजबूत संदूक बाहरीकुंडी लगवाकर बनवाई ४८ इसके उपरान्त रात्रिके पहले पहरमें बड़ी उत्तम पोशाक पहनकर मन्त्रीका पुत्र आया छिपकर आयेहुए उसे देखकर उपकोशाने कहा कि मैं तुझे बिनान्हाये को नही छुऊंगी इससे भीतरजाकर स्नानकरआ उसकी बात को मानकर वह मूर्ख दासियों के साथ बहुत गुप्त अन्धेरे घरमें गया वहां दासियों ने उसके वस्त्र तथा आभूषण लेकर उन वस्त्रों के टुकड़ों में से एक टुकड़ा लंगोटा बांधने को उसे देदिया और उबटन के बहानेसे शिरसे पैरोंतक वह काजल उसके शरीरमें मलदिया क्योंकि उसे वहां कुछ सूझता न था उसके अंगोंको दासियां मलहीरहीथीं कि दूसरे पहरमें पुरोहितजी आगये तब दासियों ने मन्त्री के बेटे से कहा कि यह वररुचिका मित्र कोई पुरोहित आयाहै इसलिये तुम इस सन्दूक में चलेजाओ ऐसा कहकर दासियों ने सन्दूककेभीतर उस नंगे मंत्री के बेटेको बैठाकर कुंडी बन्दकरदी ५६ फिर उस पुरोहितको भी स्नानके बहानेसे भीतर लेजाकर सब वस्त्रादिक लेलिये और वहीवस्त्रका टुकड़ा पहनाकर तेलका काजल उतनी देरतक मलतीरहीं कि तीसरेपहर में कोतवालभी आगये उसके आने के भयसे दासियों ने उसे भी सन्दूक में बैठाकर बाहरसे कुंडीलगादी फिर स्नानके बहाने से कोतवालको भी भीतर लेजाकर उसके वस्त्रादिक उतारलिये और उसीप्रकार से कालेवस्त्रका टुकड़ा पहराकर इतनी देरतक उबटनाकरती रहीं कि पिछले पहर में वणियाभी आगया तब दासियों ने उसके आनेका भय दिखाकर कोतवालको भी सन्दूक में बन्दकरके कुंडी बन्दकरदी सन्दूकके भीतर वह तीनों परस्पर स्पर्शहोनेपर भी मारे डरके नहीं बोले ६२ इसके उपरान्त उपकोशाने घरमें दीपकबालकर उस वणियेको बुलाया और बोली कि वह मेरे स्वामीका धन जो तुम्हारे रक्खाहै मुझे देदो यह सुनकर वणिये ने घरको सूनादेखकर कहा कि मैं तो कहीचुकाहूं कि जो तेरे स्वामीका धन रक्खाहै वह देदूंगा तब उपकोशा सन्दूकको सुनाकर बोली कि हे देवतालोगो हिरण्यगुप्तके यह वचन सुनो यह कहकर और दीपक बुझाकर उसे भी औरोंकेही समान स्नानके बहाने से भीतर भेजा दासियों ने उसके भी वस्त्रादिक लेकर और वही कालेवस्त्रका टुकड़ा पहनाकर काजलके उबटनलगाने में इतनी देरलगाई कि प्रातःकालहोगया तब दासियों ने चलेजाओ रात्रि व्यतीतहोगई यह कहकर जबरदस्ती उसे गर्दनादेकर निकालदिया ६८ इसके उपरान्त काजलसे लिपेहुए वस्त्रके टुकड़े को पहनेहुए वह वणिया लज्जितहोकर अपने घर पहुँचा घरमें काजलकी स्याहीको धोतेहुए सेवकों के सामने भी वह नहीं खड़ाहोसक्ता था (क्योंकि ठीक है अनीति में बड़ा कष्ट होताहै) ७० प्रातःकाल उपकोशा अपनी दासीको साथलेकर अपने घरवालों के बिनापूँछे राजा नन्दके महल में पहुँची और जाकर यह कहा कि हिरण्यगुप्त नाम वणिया मेरे पतिके धरेहुए धनको नहीं देता है

राजाने इसबातकी जांचकरनेके लिये उसेबुलाकर जोपूँछा तो उसनेकहा कि मेरेपास कुछभी इसकेपति का धननहीं है तब उपकोशानेकहा कि हेराजा मेरापति सन्दूकमें घरके देवताओंको वन्दकरगयाहै वहमेरे गवाहहैं उनकेआगे इसनेधनदेना मंजूरकियाहै उससन्दूकको मँगाकर आप पूँछलीजिये यहबचनसुन-कर राजाने बड़ेआश्चर्य्यपूर्वक बहुतसे आदमियोंको भेजकर वहसन्दूक मँगाली ७६ इसकेपीछेउपकोशा ने कहा कि हे देवतालोगो जोकुछ इसवणियेने कहाहै उसेसत्य सत्य कहकर अपने २ घरोंको जाओ नहीं तो मैं तुम्हें राजाको सौंपदूंगी या सभामें खोलदूंगी यह सुनकर सन्दूकमें बैठेहुए वहसबडरकर बोले कि ठीक है इसने हमलोगोंके सन्मुख धनदेनेको क़बूलकियाहै तबतो उसवणियेने निरुत्तरहोकर उसका सबधन देदिया ७९ इसके उपरान्त राजाने उपकोशासे पूछकर बड़े आश्चर्यकेसाथ वहसन्दूक खुलवाया तो उसमेंसे काजलकेसे पुतले तीन पुरुष निकले और राजातथा मंत्रियोंने उनको बड़ीकठिनतासे पहचाना जबहँसकर सबलोग आश्चर्य से पूछनेलगे कि यहक्याबातहै तबउपकोशाने सारावृत्तान्त साफ २ कहसु-नाया यहसुनकर सभासद लोगोंनेकहा कि शीलवती कुलवतीस्त्रियोंका अद्भुत चरित्रहै और उपकोशा की बड़ीप्रशंसाकी इसकेअनन्तर राजाने पराई स्त्रीके चाहनेवाले उनलोगोंका सर्वधन छीनलिया और अपने देशसे निकाल दिया (क्योंकि बुरेस्वभावसे किसीका कल्याण नहींहोता) ८४ तू मेरीबहिनहै यह कहकर राजाने उपकोशाको उसकेघर भेजदिया वर्ष तथा उपवर्षभी इसहालको सुनकर बड़ेखुशहुए और उसनगरके सम्पूर्ण निवासी बड़ेअचम्भेमें होगये इसी बीचमें हिमालय नाम पर्व्वतपर मैंने बड़ातपकरके शीघ्र वरदायी शिवजी महाराजको प्रसन्नकिया महादेवजी ने प्रसन्नहोकर उस पाणिनीयशास्त्रका मेरे हृदयमें भी प्रकाश करदिया और उन्हींकी कृपासे मैंने उसशास्त्रमें जो कमीथी उसेभी पूर्ण किया इसके उपरान्त महादेवजीके मस्तकपर विराजमान चन्द्रमाकी अमृतमय किरणोंसे सींचेहुए मैंने विनापरिश्रम घरमें आकर माता तथा गुरुओंकी बन्दनाकी और उपकोशाका अत्यन्त अपूर्व्व वृत्तान्त सुना यहसुन कर मुझे आश्चर्य पूर्व्वक बड़ाआनन्द हुआ और उपकोशापर मेरास्नेह तथा आदर बहुत बढगया ९१ इसके उपरान्त वर्ष उपाध्याय ने मेरेमुखसे नवीन पाणिनीय व्याकरण सुननेकी इच्छाकी तो स्वामिकु-मारने स्वयं उनके हृदय में उसका प्रकाश करदिया इसके पीछे व्याड़ि और इन्द्रदत्तने वर्षउपाध्याय से गुरुदक्षिणा मांगनेकोकहा तब उन्होने करोड़अशर्फी मांगी गुरूके वचनको अंगीकार करके उनदोनोंने हमसे कहा कि आओ नन्दराजाके यहां गुरुदक्षिणा मांगनेकोचलें उसके सिवाय और कोई इतना धन नहीं देसक्ता क्योंकि उसकेयहां ९९ करोड़अशर्फियोंकी आमदहै और उसने उपकोशाको अपनी धर्म की बहिन कहाथा इसलिये वहतुम्हारा सालाहै तो तुम्हारेगुणोंसेभी कुछ मिलैगा ९६ ऐसानिश्चय करके हमलोग अयोध्यामें पड़ेहुए राजानन्दके डेरे में गये जैसे कि हमलोग वहांपहुंचे वैसेही उसराजानन्दका देहत्याग होगया और राज्यमें कोलाहल मचगया इससे हमलोगोंको बड़ाखेदहुआ ९८ इसके उपरान्त योगकी सिद्धिसे युक्त इन्द्रदत्तनेकहा कि इस मरेहुए राजाके शरीरमें मैं प्रवेशकरूं तो वररुचि मेरेपास मांगनेकोआवे मैं एककरोड़ अशर्फीदेदूंगा और जबतक मैं लौटकर न आऊं तबतक व्याड़िमेरे शरीरकी

रक्षाकियाकरे यहकहकर इन्द्रदत्तने राजानन्दके मृतकशरीरमें प्रवेशकिया और राजा जीउठा फिर राजाके जीउठने पर वहां वड़ाउत्सव होनेलगा तव किसी शून्य देवमन्दिरमें इन्द्रदत्तके शरीरको व्याड़िके सुपुर्द करके मैं राजाके यहां चला वहां राजाकेपास जाके और स्वस्तिवचन कहकर राजासे एककरोड़ अशर्फी गुरुदक्षिणाके लियेमांगी उसने शकटाल नाम राजाके मंत्रीसेकहा कि इसेकरोड़ अशर्फीदिलादो मरेहुए का फिर जीवन देखके और शीघ्रही याचकका आना देखकर मंत्री तत्त्वको जानगया क्योंकि बुद्धिमानोंसे कोईवात छिपीनहीं रहती हे स्वामी दिवाय देताहूं यहकहकर मंत्री विचारनेलगा कि नन्द राजाका लड़का वहुतछोटाहे और राज्यमें भी वहुतसे शत्रुहैं तो इससमय इसप्रकारसे राजाके शरीरकी रक्षाकरनी चाहिये ऐसा निश्चयकरके उसने वहांके सवमुर्दे जलवादिये १०८ इसवीचमें दूतोंने शून्य देवमन्दिरमें इन्द्रदत्तकाभी शरीर पाया और व्याड़िसे छीनकर वहभी जलादिया इसीवीचमें राजाको अशर्फियोंके देनेमें जल्दीकरते देखकर शकटालने विचारकरकहा कि उत्सवसे सम्पूर्णलोगोंका चित्तअभी सावधान नहींहै क्षणभर यहब्राह्मणठहरे मैं अशर्फी दिवायदेताहूं इसकेउपरान्त व्याड़िने योगसे वनेहुए राजानन्दकेआगे चिल्लाकरकहा कि वड़ा अन्धेरहै कि नहीं मरेहुए योगमें स्थित ब्राह्मणका शरीर अनाथ मुर्दाकहकर आपके राज्यमें जलादिया यह सुनकर योगसे वनेहुए राजा नन्दकी शोकसे बुरीदशा होगई देहके जलजानेसे उस नन्दको स्थिर जानकर मंत्रीने वाहर आकर मुझे सव अशर्फी देदीं ११३ इसके अनन्तर योगसे वनेहुए नन्दने एकान्तमें शोकयुक्त होकर व्याड़िसे कहा कि मैं ब्राह्मणसे शूद्र होगया इसधनसे क्या लाभ होगा यह सुनकर व्याड़िने उसे समयके माफिक समझाकर कहा कि शकटाल तुझे जानगया तो अव शोचो कि यह तुम्हारा मुख्य मंत्री है थोड़े दिनोंमें तुम्हें मरवाकर नन्दके पुत्र चन्द्रगुप्तको यहां का राजा वनावेगा इसलिये वररुचिको अपना मुख्य मंत्री वनाओ उसकी वड़ी प्रभाववाली बुद्धिसे तुम्हारा राज्य स्थिर होजायगा यह कहकर व्याड़ि तो गुरुदक्षिणा देनेको चलागया और उसने मुझे बुलाकर अपना मंत्रीवनाया तव मैं ने उससे कहा कि तुम्हारा ब्राह्मणत्व तो चलाही गयाहै परन्तु शकटाल जवतक जीता है तव तक राज्यको भी स्थिर न समझो इसलिये इसका युक्ति पूर्व्वक नाश करनाचाहिये मेरे इस मन्त्रको सुनकर योगसे वनेहुए नन्दने शकटालको उसके सौ पुत्रों समेत अंधेकुएमें गिरवा दिया और जीतेहुए ब्राह्मणको इसने मरवाडाला इस वदनामीके डरसे एक प्यालेभर सत्तू और प्यालेभर पानी इन सवके लिये प्रतिदिन वँधवादिया तव शकटालने अपने पुत्रोंसे कहा कि इतनेमें एक का भी पेट नहीं भरेगा वहुतोंकी कौनकहे इसलिये एकही हममें से वह मनुष्य इसको रोज खायाकरे जोकि योगसे वनेहुए इस राजा नन्दसे अपना वदला लेसके १२४ तव उसके पुत्रोंने कहा कि आपही इस कामको करसकेंगे इससे आपही इसे खाइये क्योंकि धीर पुरुषोंको शत्रुओं से वदला लेना प्राणों सेभी वढ़करहै १२५ तव शकटाल उस सत्तू और जल से अपने प्राणोंकी रक्षाकरनेलगा क्योंकि जीतनेकी इच्छाकरनेवाले वड़ेक्रूर होते हैं अंधे कुएमें पड़ेहुए शकटालने अपने पुत्रोंको मरताहुआ देखकर यह शोचा कि कल्याणचाहनेवाला मनुष्य स्वामियोंके चित्तको विनाजाने और विश्वास होने विना उनके साथ कभी अपनी इच्छा

के अनुसार व्यवहार न करे इसके उपरान्त शकटालके देखतेही देखते उसके सब पुत्र मरगये और वह उनके हाड़ोंके पांजरोंसे घिराहुआ अकेला जीतारहा इतनेमें योगसे होनेवाले राजा नन्दका भी राज्य जमगया और गुरूको दक्षिणा देकर लौटेहुए व्याड़ि ने आकर उससे कहा कि हे मित्र तुमको राज्य में सुखहोय अब मैं तुमसे पूंछकर कहीं तपकरने जाताहूं यह सुनकर राजा गद्गद वचनकरके बोला कि तुम भी राज्यमे सुखका भोग करो और मुझे छोड़कर कहीं न जाओ तब व्याड़िनेकहा कि हे राजा इसक्षण-भंगुर शरीरमें और इसी प्रकारकी अन्य असार वस्तुओं में कौन बुद्धिमान् अपनेको डुवावे लक्ष्मीरूपी मृग तृष्णा बुद्धिमान् मनुष्यको नही मोहितकरती है यहकहकर व्याड़ि निश्चयकरके तपकरनेको चला गया १३४ इसकेउपरांत वह राजा सम्पूर्ण सेनाको लेकर मुझ समेत पाटलिपुत्र नाम अपने नगरमें आ-नन्द पूर्वक सुख भोगने के लिये चलाआया वहां राजाके मन्त्रियोंमें मुख्यहोकर और बहुतसी लक्ष्मी पाकर अपनी माता तथा गुरुओं के साथ उपकोशासे सेवन कियाहुआ मैं बहुत दिनतक रहा फिर तप से प्रसन्नहुई गंगाजी ने प्रति दिन मुझे बहुतसा सुवर्ण दिया और शरीर धारण कियेहुए श्रीसरस्वती जी ने मुझे साक्षात्दर्शन देकर मेरेकार्य्यों में उत्तम उपदेश दिया १३७ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांकथापीठलंबकेचतुर्थस्तरङ्गः ॥

इसप्रकारसे कहकर वररुचि ने फिर यह वर्णन किया कि समयपाकर योग से बनाहुआ राजा नन्द कामादि के वशीभूत होकर मतवाले हाथी के समान किसीकी अपेक्षा न करनेलगा एकाएकी आईहुई लक्ष्मी किसको नही मोहित करतीहै इसके उपरान्त मैंने विचार किया कि राजा तो उद्दंडहोगया और उसके कार्य्यों को विचारते २ मेरा धर्मभी नहीं सधता इसलिये सहायताके लिये शकटालको निकलवाऊं तो अच्छाहोय जो वह विरुद्ध करनाचाहैगा तो मेरेहोतेहुए वह कुछ नहीं करसक्ताहै ऐसा निश्चयकरके मैंने राजासे प्रार्थनाकरके शकटालको कुएमे से निकलवाया क्योकि ब्राह्मणलोग बड़े कोमलहोते हैं ५ कुएसे निकलेहुए शकटाल ने यह विचारा कि जबतक वररुचि है तबतक इसराजाको कोई नहीं जीत सक्ता इससे समयका इन्तज़ार करने के लिये वेतके समान नम्रवृत्ती को अख्तियार करूं ऐसा शोचकर बुद्धिमान् शकटाल फिर मन्त्री होकर मेरी इच्छाके अनुसार राज्यके कार्य्य करनेलगा एकसमय राजा नगरसे बाहर सैर करनेको गयाथा वहां उसने गंगाजी के भीतर से निकला हुआ एक ऐसा हाथ देखा जिसकी पांचो उंगली मिलीहुई थीं उसे देखकर उसने मुझे बुलाकर पूछा कि यह क्याहै मैंने उसहाथ की तरफ अपनी दो उंगली उठाई उन उंगलियोंको देखकर वह हाथ अन्तर्द्धान होगया फिर राजा ने मुझसे आश्चर्य्य पूर्वक पूछा कि बताओ यह क्या था तब मैंने कहा कि इस हाथ का यह अभिप्रायथा कि इस संसार में पांच आदमी मिलकर कौनसी बात नहीं सिद्ध करसक्ते हैं तब मैंने दो उंगली इस अभिप्राय से दिखलाई कि दोहीके एकचित्त होजाने पर कोई बात असाध्य नहीं है इस छिपेहुए वि-ज्ञानको सुनकर राजा बहुत प्रसन्नहुआ और शकटाल मेरी दुर्जय बुद्धिको देखकर अप्रसन्न हुआ १३ एकसमय राजाने देखा कि मेरी रानी झरोखेसे किसी ऊपर शिर उठानेवाले अतिथि ब्राह्मणको देखरही

है इतनीही बात से क्रोधित होकर राजा ने उसब्राह्मणके मारडालने का हुक्म दिया क्योंकि ईर्षा से विचार नहींरहताहै उस ब्राह्मणको मारने के लिये लियेजाते देखकर बाज़ार में रक्खीहुई मरी मछलीभी हँसनेलगी राजाने यह देखकर उस ब्राह्मणका मारना उस दिन बन्दकरवादिया और मुझे बुलाकर उस मछली के हँसने का कारण पूँछा १७ मैंने कहा कि शोचकर इसका उत्तरदूंगा यह कहकर एकान्त में ध्यानकरतेहुए सरस्वतीजी ने मुझसे कहा कि रात्रिकेसमय तुम इस ताड़के वृक्षकेऊपर छिपकरबैठो तो यहां तुम्हें निस्सन्देह इस मछली के हँसनेका कारण सुनाई पड़ैगा यह सुनकर मैं रात्रिके समय उस ताड़के वृक्षके ऊपर बैठा तो वहां अपने छोटे२ बालकोंको साथलिये एक बड़ी घोर राक्षसीआई भोजन मांगतेहुए अपने बालकों से उसने कहा कि ठहरजाओ मैं प्रातःकाल तुम्हें ब्राह्मणका मांसदूंगी क्योंकि आज वह मारानहीं गया है बालकों ने पूँछा वह क्यो नहीं मारागया तो उसने कहा कि उसे देखकर मरी हुई मछली हँसी थी लड़कों ने पूँछा कि वह मछली क्यों हँसी थी तब उस राक्षसी ने कहा कि राजाकी सब रानियां बिगड़गईं सब महलों में स्त्रियोंका वेष किये पुरुषरहते हैं और निरपराध ब्राह्मण माराजाता है इसलिये मछली हँसीथी राजाके अत्यन्त विचार रहितहोनेसे जब जीव हँसते हैं तब सब महलों के रहनेवालोंकी यहीदशाहोती हैं उसके यह वचन सुनकर वहांसे मैं चलाआया और प्रातःकाल राजाके पासआकर उस मछली के हँसनेका कारण बतलाया २६ तब राजा महलों में गया और स्त्री रूपधारी पुरुषोंको पाकर मेरे ऊपर बहुतप्रसन्न हुआ और ब्राह्मणको बधसे छुड़वादिया राजाकी ऐसी २ करतूत देखकर मैं बहुतखिन्न रहताथा एकसमय वहां कोई नवीन तसवीर बनानेवाला आया उसने राजा और राजाकी पटरानी इन दोनोंकी एकतसवीर बनाई वह तसवीर ऐसीउत्तमबनी कि वाणी और चेष्टा के न होनेपर भी जीवतीहुईसी मालूम होतीथी राजाने प्रसन्नहोकर उस तसवीरवाले को बहुतसा धन दिया और वह तसवीर अपने घरमें दीवारपर लगवाली ३० एकसमय राजाके घरमें जाकर मैंने तसवीर में लिखीहुई सब लक्षणोंसे भरीहुई राजाकी रानी देखी और उसके दूसरेलक्षणोंके सम्बन्धसे और अपनी समझसे उसकी कमरमें एकतिल बनादिया इससे उसके लक्षणोंको पूराकरके मैं वहांसे चलाआया इस के उपरान्त राजाने वहांजाकर वह तिलदेखा और सेवकों से पूछा कि यह किसने बनाया है उनलोगों ने तिलका बनानेवाला मुझे बतलाया राजाने शोचा कि रानीके गुप्तस्थानके इस तिलको मेरेसिवाय और कौन जानसक्ताहै इसको वररुचि कैसे जानगया मालूमहोताहै कि इसने छिपकरमेरे महलोंको बिगाड़ाहै इसीसे वहां उसने स्त्री रूपधारी पुरुषदेखे यह शोचकर राजाको बड़ाक्रोध हुआ (ठीक है मूर्खों के बिचार भी मूर्खताकेही होते हैं) २७ इसके उपरान्त राजाने एकान्तमें बुलाकर शकटालसे कहा कि तुम वररुचिको मरवाडालो क्योंकि इसने महलोंको बिगाड़ाहै शकटालने कहा कि जैसा आपका हुक्म है वैसाही करूंगा यह कहकर बाहर चलाआया और शोचने लगा कि मैं वररुचिको नहीं मारसक्ताहूं क्योंकि वह बड़ा बुद्धिमान् है और उसी ने मुझे आपत्तियों से छुड़ाया है और वहब्राह्मणभी है तो यह अच्छा होगा कि मैं उसे छिपाकर अपने यहां रक्खूं ऐसा विचारकर शकटालने राजाके कोपका कारण

और वधका हुक्म वररुचिसे कहा और फिर बोला कि मैं कहने सुननेके लिये और किसीको मारडाल-ताहूं तुम छिप कर मेरे यहांरहो नहीं तो राजा मेरे ऊपरभी खफाहोगा इसके यहवचन सुनकर मैं छिपकर उसके घरमे रहने लगा और उसने मेरे नामसे रात्रिके समय किसी और को मारडाला ४३ तवइसप्रकार नीति करनेवाले शकटालसे मैने कहा कि तुम वड़े योग्य मंत्री हो क्योंकि तुमने मेरे मारने की तदवीर नहीं की एकराक्षस मेरा परम मित्र है इससे कोई मुझे मार नहींसक्ता जो मैं ध्यानकरके उसेवुलाऊं और चाहूं तो वहसव संसारका नाशकरदेवे और राजाको मैं इसलिये नहीं मरवाताहूं कि वह मेरामित्रहै और ब्राह्मण है यह सुनकर शकटालने कहा कि मुझे उसराक्षसको दिखाओ तव मैंने ध्यानसे उसे वुलाया और वह शकटाल उसराक्षस को देखकरडरा और आश्चर्य्य युक्तहुआ राक्षसके चलेजानेपर शकटालने फिर मुझसे पूंछा कि तुम्हारी मित्रता राक्षसके साथ कैसेहुई तव मैने कहा कि एकसमय नगरकी रक्षा के लिये घूमताहुआ एकपुरुष हर रात्रि में मरजाताथा यहवात सुनकर राजाने मुझको नगरकी रक्षाके लिये भेजा मैंने घूमते २ रात्रिके समय एकराक्षसकोदेखा और उसने मुझसे पूंछा कि वताओ इसनगर में कौनसी स्त्री वड़ी रूपवती है तव मैंने हँसकरकहा कि हे मूर्ख जो जिसको अच्छी लगे वही उसको रूपवती है यह सुनकर राक्षसवोला कि केवल तुम ने मुझे जीतलिया प्रश्नका उत्तर देदेने के कारण वधसे वचेहुए मुझसे फिर वहराक्षस वोला कि मै तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहूं तुममेरे मित्रहोगये जव तुम मुझे याद करोगे तभी मैं आऊंगा ५३ यहकहकर राक्षसके अन्तर्द्धान होजानेपर मैं ज्योंकात्यों अपने घरको लौट आया इसप्रकारसे यह राक्षस मेरा मित्रहुआ है इसके उपरान्त शकटाल की प्रार्थनासे ध्यान से आईहुई श्रीगङ्गाजी का दर्शन मैंने शकटालको कराया और फिर स्तुतियों से गङ्गाजी को प्रसन्नकरके विदा किया मेरी इनवातोंको देखकर शकटालभी मेरा वड़ासहायक होगया ५६ एकसमय एकान्तमें उदासीन वैठेहुए मुझसे शकटालवोला कि तुम सर्वज्ञहोकर भी इतना खेद क्यों किया करते हो क्या तुम नहीं जा-नते हो कि राजालोगोंकी वुद्धिमें विचार नहींहोता थोड़े दिनों मे तुम्हारा यह कलंक छूटजायगा इस वातपर मैं तुम्हें एक कथासुनाताहूं पहले इसनगरमे आदित्यवर्म्मा नाम राजाथा और शिववर्म्मा नाम वड़ा वुद्धिमान् उसकामंत्री था एकसमय उसराजाकी एकरानी गर्भवती हुई यह सुनकर राजाने अपने महलके रक्षकोंसे पूछा कि दोवर्ष से मै महलों में नहीं गयाहूं यह गर्भ कहां से आया तव वहलोगवोले कि हे राजा शिववर्म्मा नाम मंत्री के सिवाय यहां और कोई पुरुष नहींआता यहसुनकर राजाने विचारा कि निस्सन्देह यह मंत्रीही मेरावैरी है परन्तु जो मै इसे जाहिरमें मरवाडालूंगा तो दुनियामें मेरी वदनामी होगी यह विचारकर उसराजाने शिववर्म्माको भोगवर्म्मा नाम एक अपने मित्र राजाके यहां भेजदिया और पीछे से एक हलकारे के हाथ एक चिट्ठी भेजी जिसमें कि शिववर्म्मा के मारडालने का संदेशा लिखाथा मंत्रीके चलेजानेके सात दिन पीछे वह रानी स्त्रीवेषधारी किसी पुरुषके साथ भागीचलीजारही थी वह राजाके आदमियोंकोमिली और वहउसे पकड़लाये राजाने यह देखसुनकर वड़ापश्चात्ताप किया और कहा कि देखो मैंने निष्कारण ऐसा वड़ा वुद्धिमान् मंत्री नाहकमरवाडाला ६७ इसीवीचमें शिव-

वर्म्मा और राजाका हलकारा राजा भोगवर्म्मा के यहां पहुंचे राजाने उस चिट्ठी को पढ़कर शिववर्म्मासे कहा कि तुम्हारे मारनेका हुक्म आयाहै यह सुनकर शिववर्म्मा बोला कि आप मुझे मरवा डालिये नहीं तो मैं खुद मरजाऊंगा तब राजा बड़े आश्चर्य्यपूर्व्वक शिववर्म्मा से बोला कि तुम्हें हमारी कसमहै तुम सत्य २ बताओ कि इसका क्या कारणहै मंत्रीने कहा कि हेराजा जिसराज्यमें मैं माराजाऊंगा उसराज्य में बारह वर्षतक पानी नहीं बरसेगा यह सुनकर भोगवर्म्मा ने अपने मंत्रियोंके साथ सलाहकी कि वह दुष्ट राजा हमारा राज्य नष्टकिया चाहताहै क्या उसके राज्य में छिपकर मारनेवाले न थे इससे इस मंत्री को मारना न चाहिये यह सलाहकरके भोगवर्म्मा ने शिववर्म्माको रक्षकोंके साथ अपने देश से उसी समय भेजदिया इसप्रकार वह मंत्री अपनी बुद्धिके बलसे लौटआया और उसका कलंक भी छुटगया (क्योंकि धर्म्म मिथ्या नहीं होता) ७६ इससे हे वररुचि इसीप्रकारसे तुम्हारा भी कलंक छुटजायगा तुम हमारे घरमे रहाकरो कुछ दिनमें तुम्हारे बिना भी इस राजाको पश्चात्ताप होगा शकटाल के ऐसे वचन सुनकर मैं उसके यहां रहकर समयकी बाट देखताहुआ दिन बितानेलगा ७८ इसके उपरान्त हेकाणभूत योगसे बनेहुए राजा नन्दका हिरण्यगुप्तनाम पुत्र शिकार खेलनेकोगया घोड़ेके वेगसे बहुतदूर निकल-जानेपर उस अकेले राजपुत्रको वनहीमे सायंकाल होगया तब रात्रि के व्यतीत करने को वह राजाका पुत्र किसी वृक्षपर चढ़गया उसी समय उस वृक्षपर किसी सिंहसे भगायाहुआ एक रीछभी चढ़आया उस रीछने अपनेसे डरेहुए राजपुत्रसे मनुष्य भाषामेंकहा कि तुम मतडरो तुमहमारे मित्रहो रीछके ऐसे वचनोंको सुनकर विश्वाससे जब राजाका पुत्र सोगया और रीछजागता रहा तब नीचे खड़ेहुए सिंह ने कहा कि हे रीछ तू इसमनुष्यको नीचे डालदे मैं इसेलेकर चलाजाऊं यह सुनकर रीछनेकहा कि मैं मित्र के साथ विश्वासघात नहीं करूंगा ८४ इसके उपरान्त जब रीछके सोनेकी और राजाके पुत्रके जागने की बारीआई तब फिर सिंहने राजाके पुत्रसेकहा कि हे मनुष्य इसरीछको नीचे डालदे यह सुनकर अपने डरसे और सिंहको प्रसन्नकरनेके लिये राजपुत्र उसे ढकेलनेलगा भाग्यवशसे रीछगिरा तो नहीं किन्तु जगपड़ा और जगकर यह शापदिया कि हे मित्रद्रोही तू सिड़ी होजायगा और शापकी यह अवधि कर दी कि जब तक तू इसवृत्तान्तको नहीं सुनेगा तब तक सिड़ीरहेगा इसके उपरान्त प्रातःकाल राजाका पुत्र अपने घरमें आकर सिड़ी होगया और राजानन्दको यह देखकर बड़ा दुःख होगया ८८ राजाने कहा कि इससमय जो वररुचि जीताहोता तो इसके सिड़ीहोनेका सम्पूर्णकारण मालूमहोजाता धिक्कारहै मेरी चतु-रतापर मैंने नाहक उसे मरवाया ८६ राजाके यहवचन सुनकर शकटालने यहविचारा कि वररुचिके प्रकट करनेका यहमौकाहै क्योंकि वररुचि तो अब यहांरहैगा नहीं और राजाका मेरे ऊपर विश्वास बढ़जायगा ऐसा शोचकर राजासे अभयमांगकर शकटालबोला कि हे राजा खेदमतकरो वररुचि अभी जीताहै यह सुनकर राजानेकहा कि जल्दी उसेलाओ तब शकटाल मुझे बड़े हठसे राजाके पासलेगया वहां जाकर राजाके पुत्रके सिड़ीहोनेका सब वृत्तान्त सरस्वतीजीकी कृपासे मैंने जानलिया और इसने मित्रके साथ द्रोहकियाहै यहकहकर वहसब वृत्तान्त राजासेभी कहदिया इसके अनन्तर शापके छूटजानेपर राजाकेपुत्र

ने मेरी बड़ी स्तुतिकी और राजाने मुझसेपूंछा कि तुमने यह वृत्तान्त कैसे जाना ६५ तब मैंने कहा कि हे राजा लक्षण अनुमान और सूझ बूझसे बुद्धिमान् लोग सबबातोंको जानलेते हैं जैसे कि मैंने तुम्हारी रानी की कमरका तिल जानलियाथा मेरे इसवचनसे राजा बहुत लज्जित होकर पछतानेलगा इसके उपरान्त राजाके आदरको छोड़कर और कलंकके छुटजानेसे अपनेको कृतकृत्य मानकर अपने स्थान पर चलाआया क्योंकि शुद्ध चरितही विद्वान् लोगोंकाधनहै मेरे वहां आजानेपर सबलोग रोनेलगे और उपवर्ष मेरे सुसरने मुझसे कहा तुझे राजासे मारागया सुनकर उपकोशा आगमें जलगई और तुम्हारी माताकाहृदय शोकसे फटगया १०० यहसुनकर एकाएकी हुए शोकके वेगसे मुझे मूर्च्छा आगई और वायु से टूटेहुए वृक्षके समान मैं पृथ्वीपर गिरपड़ा क्षणभरमें उठकर बड़ा विलाप करनेलगा क्योंकि प्यारे बन्धुओं के शोकसे उत्पन्नहुआ शोक किसको सन्तप्त नहींकरता तब वर्षउपाध्यायने आकर मुझे समझाया कि इस जगत्मे आवागमन पर्य्यन्त एकअनित्यता जोहै वहीनित्यहै तो तुमईश्वरकी इसमायाको जानकरभी क्यों मोहितहोतेहो तत्त्वके बोधकरानेवाले वर्षउपाध्यायके इनवचनोंसे मुझे कुछ धैर्य्यहुआ १०४इसके उपरान्त बैराग्यसे सम्पूर्ण संसारी बन्धनोंको छोड़कर मैं तपोवनको चलागया कुछ दिनो के व्यतीतहोनेपर उस तपोवनमें अयोध्यासे एकब्राह्मण आया उससे मैंने योगसे बनेहुए राजानन्दका वृत्तान्तपूंछा उसनेमुझे पहचानकर बड़े शोकसे कहा कि राजानन्दका वृत्तान्त सुनिये तुम्हारे वहांसे चलेआनेपर शकटाल को बहुत दिनकेबाद मौका मिला तब वहराजाके मारनेका उपाय शोचनेलगा एकदिन मन्त्री ने रास्ते में पृथ्वीको खोदतेहुए किसी चाणक्यनाम ब्राह्मणको देखकर उससेपूंछा कि क्यों पृथ्वीको खोदरहेहो तब उसनेकहा कि यहकुश मेरे पैरों मे लगगयाहै इससे इसको खोदरहाहूं यहसुनकर मन्त्रीने उसक्रोधी और क्रूर ब्राह्मणकोही राजाके मारनेका उपायसमझा १११ उसकानाम पूंछकर मन्त्री ने कहा कि हे ब्राह्मण राजानन्दके यहां मैं तुझे त्रयोदशीके दिन श्राद्ध भोजनकरवाऊंगा वहांतुझको एकलाख अशर्फी द-क्षिणामें दिलवाऊंगा और सब ब्राह्मणोंमें मुख्य तुमकोकरूंगा आओ तबतक हमारे घरमेंरहो यहकहकर शकटाल उसचाणक्यको अपने घरलिवालाया और श्राद्धवालेदिन राजासे उसकी मुलाक़ात करवाई इस के उपरान्त चाणक्य श्राद्धमेंजाकर सबके आगेबैठा और सुबन्धु नाम ब्राह्मणने भी चाहा कि मैं सबका अ-ग्रगण्यहोऊं तब शकटालने जाकर यहहाल राजासेकहा राजाने हुक्मदिया कि और कोई ब्राह्मण योग्य नहीं है सुबन्धुब्राह्मण आगे बैठे फिर शकटालने लौटकर बहुत भयपूर्व्वक चाणक्यसेकहा कि हे महाराज चाणक्यजी मेरा कोई अपराधनहीं है राजाकी ऐसी इच्छाहै यह सुनकर चाणक्यमारे क्रोधके जलने लगा और उसने अपनी शिखाखोलकर यह प्रतिज्ञाकरी कि मैं निस्संदेह सातदिनके भीतर इस राजाको मारडालूंगा और तभी क्रोध शान्तहोजानेपर शिखाबांधूंगा ११६ यहसुनकर राजानन्दके कुपितहोनेपर भागेहुए चाणक्यको शकटालने अपनेघरमें छिपाकररक्खा १२० इसकेपीछे शकटालसे सम्पूर्ण सामग्री को लेकर चाणक्य कहींजाकर कृत्या (मारणप्रयोग) करनेलगा उसके प्रभावसे राजाको ज्वरआया और सातवें दिन मरगया इसके उपरान्त शकटालने योगसे बनेहुए राजानन्दके हिरण्यगर्भ नाम पुत्र

को मारकर पहले राजा नन्दके पुत्र चन्द्रगुप्तको राज्यपर बैठादिया और बृहस्पति के समान बुद्धिवाले चाणक्यको चन्द्रगुप्तका मंत्री बनाया फिर योगसे बनेहुए राजानन्दसे वैरका बदलालेकर पुत्रों के शोक से उदासीनहोके शकटाल वनको चलागया १२५ उस ब्राह्मणके मुखसे इस वृत्तांतको सुनकर मुझे संसारकी चंचलतापर बड़ा खेदहुआ और उसी खेदसे मैं यहां विन्ध्यवासिनी के दर्शनोंको चलाआया यहां भगवती की कृपासे तुमको देखकर अपने पूर्व्वजन्मका स्मरणहोआया और वह दिव्य ज्ञान प्राप्तहुआ जिससे कि मैंने तुम्हारे आगे यह सम्पूर्ण महा कथा वर्णनकी अब मेरे शापका अन्तहोगया मैं इस शरीरके त्यागकरनेका यत्नकरूंगा तुम यहांअभी कुछदिनरहो तुम्हारेपास वह गुणाढ्यनाम ब्राह्मण अपने शिष्यों समेत आवेगा जिसने कि तीन भाषाओंका बोलना छोड़दिया वह महादेवजी का माल्यवान् नाम गणहै उसे भगवती पार्वतीजी ने मेरी शिफ़ारस करने के अपराधसे शापदिया था उससे तुम यह सम्पूर्ण कथा कहना जिससे कि तुम्हारा और उसका दोनों का शाप छूटजायगा १३१ काणभूत को इसप्रकार समझाकर वररुचि अपने शरीर के त्यागकरने के लिये महापवित्र बदरिकाश्रमको गया मार्ग मे जातेहुए वररुचिने केवल शाकखानेवाले मुनिको देखा और वररुचिके सामनेही उसमुनि के हाथमें एककुशा गड़गया तब उसके हाथसे रुधिर निकलता देखकर वररुचिने अपने तपके प्रभाव से उसके अहंकारकी परीक्षाकेलिये उसरुधिरको शाकके रसके समान करदिया उसे देखकर मुनिको यहअभिमानहुआ कि मैं सिद्धहोगया तब वररुचि ने कुछ मुसकुराके कहा कि मैंने तुम्हारी परीक्षा के लिये उसका रंग बदलदिया था तुमने अभीतक अहंकारको नहीं छोड़ा ज्ञानकेमार्गमें अहंकार बड़ाकठिन विड़ना (रोक) है ज्ञान के विना सैकड़ों व्रतकरने से भी मोक्षनहीं होती मोक्षकी इच्छा करनेवाले मनुष्य नाशहोनेवाले स्वर्गका लालचनहीं करते इससे हे मुनि अहंकारको छोड़कर ज्ञान में यत्नकरो इसप्रकार उसमुनि को समझाकर वररुचि उसबदरिकाश्रम में पहुंचा इसके उपरान्त बदरिकाश्रम में वररुचि अत्यन्त भक्तिसे भक्तोंकी रक्षाकरनेवाली भगवती की शरण में अपने शरीरके त्यागकरने की इच्छासेगया तब प्रसन्नहुई भगवतीने साक्षात् दर्शनदेकर अग्नि में शरीर भस्मकरनेका उपदेश दिया इसके उपरान्त अपने शरीरको भस्मकरके वररुचि अपने दिव्य शरीरको प्राप्तहुआ और विन्ध्याचल की पृथ्वीपर काणभूतभी गुणाढ्य के मिलने की इच्छा करताभया १४१ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायां कथापीठलंबकेपंचमस्तरंगः ॥

इसके उपरान्त वह माल्यवान् गुणाढ्यनामसे मनुष्य शरीर में विचरताहुआ राजा सात वाहनका सेवन करके और उसके आगे संस्कृतआदि तीनभाषाओं के त्यागनेकी प्रतिज्ञाकरके खेदसे विन्ध्यवासिनीके दर्शनोंकोआया विन्ध्यवासिनीकी आज्ञासे गुणाढ्यनेआकर काणभूति प्रेतकोदेखा तब उसकोभी अपने पूर्वजन्मका स्मरणहोगया त्यागकीहुई तीनोंभाषाओंको छोड़कर पिशाचीभाषामें काणभूतिसे अपना नामलेकर बोला कि तुम पुष्पदन्तसे सुनीहुई कथाको मुझसे वर्णनकरो जिससे कि हमारा और तुम्हारा दोनोंका शापसे उद्धारहोवे ५ यह सुनकर बहुत प्रसन्नहुए काणभूतिने प्रणामकरके कहा कि मैं कथा

तो कहताहूं पर प्रथम तुम अपना जन्मसे लेकर अवतकका वृत्तान्त मुझसे वर्णनकरो मुझे उसकेभी सुननेकी वड़ीइच्छाहै इसप्रकार उसकी प्रार्थनाकोसुनकर गुणाढ्यकहनेलगा कि प्रतिष्ठाननाम देशमें सुप्रतिष्ठितनाम एकनगरहै वहां एक वड़ासज्जन सोमशर्म्मा नाम ब्राह्मणरहताथा उसके वत्सक तथा गुल्मकनाम दो पुत्रथे और श्रुतार्थानाम एक कन्याथी समयपाकर वह ब्राह्मण स्त्री समेत मरगया उसके दोनों पुत्र अपनी छोटी वहिनकी पालनाकरनेलगे १० एकसमय वह कन्या अकस्मात् गर्भवतीहोगई यह देखकर उन दोनों भाइयोंको वहां अन्य पुरुषके न आनेसे आपसमें सन्देहहुआ तव उस श्रुतार्था ने अपने भाइयों से कहा कि तुम दोनों आपस में सन्देहमतकरो एकसमय मैं स्नानकरने को नदीपरगई थी वहां वासुकिसर्पों के राजाके भाई का कीर्त्तिसेननाम पुत्र मुझे देखकर कामवश हुआ और उसने अपना वंश तथा नामकहकर मेरे साथ गान्धर्व्व विवाहकिया इससे यह मेरा गर्भ ब्राह्मणही काहै तुम लोग सन्देह मतकरो यह सुनकर उन दोनोंने कहा कि इसमें कौन विश्वास है तव उसने एकान्त में स्मरण करके कीर्त्तिसेनको वुलाया उसने आकर उन दोनोंसे कहा कि इसके साथ मैंनेही विवाह कियाहै यह शापसे भ्रष्टहुई अप्सराहै और तुम दोनोंभी शापहीसे इस पृथ्वी पर आयेहो इसके निस्सन्देह पुत्र उत्पन्न होगा तव तुम तीनोंका शापछूटजायगा यह कहकर वह अन्तर्द्धान होगया इसके उपरान्त थोड़े दिन पीछे श्रुतार्थाके पुत्र उत्पन्नहुआ वहीमैंहूं जिससमय मेराजन्महुआ था उस समय यह आकाशवाणी हुईथी कि यह गुणाढ्यनाम ब्राह्मण शिवजी के गण माल्यवान्का अवतार है २० मेरे जन्मके उपरान्त शापके मोक्षहोजाने से मेरीमाता और दोनों मामा मरगये इससे मुझे वड़ाक्लेशहुआ इसके उपरान्त शोकको छोड़कर वालावस्थामेंही मैं अपने भरोसे से विद्यापढ़नेकेलिये दक्षिणदिशाको चलागया समय पाकर मैं विद्या पाकर वड़ाप्रसिद्ध पण्डितहुआ तव अपने गुणोंको दिखानेके लिये अपने देशमेंआया वहुत दिनोंके उपरान्त जो मैने अपने सुप्रतिष्ठित नाम नगरमें प्रवेशकिया तो अपने शिष्योंसमेत मैंने नगरकी अपूर्व्वशोभा देखी कहीं वैदिकब्राह्मण सामवेदका गान कररहे थे कहीं वेदज्ञ ब्राह्मण वेदकेअर्थका निर्णयकररहेथे कहीं ज्वारीलोग यह कहरहेथे कि जोयहां जुआखेलना जानता होगा वह धनपावेगा कही वणियेलोग अपने२ रोजगारोकी तारीफ कररहेथे उनमें से एक वणियावोला कि धनसे तो धनको सवही पैदाकरतेहैं इसमे कौनवड़ीवात है मैंने पहले विनाहीधनके लक्ष्मी उत्पन्नकी थी जवकि मैं गर्भमेंहीथा तव मेरापिता मरगया और पापी भाइयों ने मेरीमातासे सवधनछीनलिया २६ तव मेरी माताभयसे गर्भके वचानेकी इच्छाकरतीहुई मेरेपिताके मित्रकुमारदत्त नाम वणिये के यहां रही वहां जाकर मेराजन्महुआ और मेरी माता वड़े२ कठिनकार्य्योंको करके मेरा पालनकरनेलगी ३१ इसके उपरान्त उपाध्यायसे प्रार्थना करके मेरी माताने मुझे हिसाव किताव लिखना पढनाआदि सिखवाया फिर मेरी माताने मुझसेकहा कि वेटातुम वणियेकेपुत्रहो अव कुछ रोजगारकरो इसदेशमें विशाखिलनाम एक वड़ा धनवान् वणिया रहताहै वह कुलीन दरिद्रियोको रोजगार करनेको अपना धनदेताहै जाओ उससेजाकर धनमांगो तव मैं उसके यहांगया उससमय वह किसी वणिये के पुत्रसे क्रोध पूर्व्वक कहरहाथा कि यह

जो मराहुआ मूसापड़ाहै इससे भी चतुरमनुष्य धन पैदाकरसक्के हैं तुझेतो मैंने वहुतसी अशर्फीदी हैं उनका वढ़ाना तो अलगरहा तू उनको भी न रखसका ३७ यहसुनकर मैंने उस विशाखिलसे कहा कि मैं इस मूसेको तुमसे पूंजी वनाने के लिये लियेजाताहूं यह कहकर मैंने मूसालेलिया और उसकी वहीमें लिखवाकर चला तव वह वणिया हँसनेलगा इसके उपरान्त वह मूसा दोमुट्ठी चनेलेकर किसी वणियेके हाथ विल्ली के लिये वेचडाला फिर उन चनोंको भुनवाकर और पानी के घड़ेको लेकर शहरके वाहर किसी चवूतरेपर छायामें में जावैठा वहां थकेहुए काष्ठके वोझेवाले आते थे उनको मैं शीतलजल और चने वड़ी नम्रतासे देनेलगा तव हरएक वोझेवाले ने मुझे प्रसन्नहोकर दो २ लकड़ियांदीं वह लकड़ियां मैंने लाकर वाजारमें वेची उसमे जो धनमिला उससे फिर चनेखरीदे और उसीप्रकार फिर वोझेवालोंको दिये इसप्रकार थोड़े दिनकरके जव कुछ धन इकट्ठाहुआ तव मैंने तीनदिनतक सवलकड़ी आप खरीद लीं ४५ एक समय वहुत पानी के वरसने से वह लकड़ी विकनेको नहीआई तव मैंने वही लकड़ी कईसौ रुपये की वेचीं फिर उसधनसे दुकानकरली इसीप्रकार धीरे २ रोजगारकरते २ मैं वड़ाधनवान्होगया तव मैंने सोनेका मूसावनवाकर विशाखिलको जाकरदिया और उसनेभी अपनीकन्या मुझे व्याहदी इसीसे लोकमे मुझे मूसासाह करके वोलते हैं इसप्रकार मैंने निर्धनहोकर भी लक्ष्मीपाई है यह सुनकर उनसव वणियों को वड़ा आश्चर्य्यहुआ (चित्र अर्थात् विलक्षण कामों से वुद्धिहीं विनादीवारके चित्र वनाई जातीहै) ५० और कही किसी वैदिक ब्राह्मणने दानमें एक अशर्फीपाईथी उससे किसी छलीदिललगी-वाजनेकहा कि ब्राह्मणपनेसे तुम्हारा भोजन चलताहै तो तुम इस अशर्फी को खर्चकरके चतुरहोने के लिये दुनियांदारी की वातेंसीखो उसनेकहा कि मुझे कौन सिखावेगा तव वह दिललगीवाज वोला कि यह जो चतुरकानाम वेश्याहै इसके यहां तुमजाओ ब्राह्मणनेकहा कि मैं वहां जाकर क्याकरूं तवबह वोला कि अशर्फी देकर उसके प्रसन्नकरनेको साम (सामवेद अथवा मिलाप) का वर्त्ताव करना यह सुनकर वेदपाठी ब्राह्मण चतुरकाके मकानमें जाकर वैठगया और चतुरकाने उनका आदर किया फिर ब्राह्मणने चतुरकाको अशर्फी देकर कहा कि मुझे दुनियांदारी सिखाओ यह सुनकर जव वहां के लोग हँसने लगे तव वहब्राह्मण कुछ शोचकर हस्तस्वर समेत सामवेदका गान इतने जोरसे करने लगा कि वहां वहुत से दिललगीवाज देखने के लिये इकट्ठे होगये और वोले कि यह स्यार यहां कहां से घुसआया है जल्दी से इसके गले में अर्द्धचन्द्र (गर्द्दना) देकर इसे निकालदो ब्राह्मण अर्द्धचन्द्रका अर्थ एक प्रकार का वाण समझकर शिरकटने के भयसे मैंने सव दुनियांदारी सीखली यह कहताहुआ भागा ६० और उसके पास जाकर जिसने कि इसे भेजाथा सव वृत्तांतसुनाया तव उसनेकहा कि मैंने तो तुझ से साम अर्थात् मेलकी वात कहीथी वहां वेदपढ़नेका कौनसौकाथा क्या वेदपढ़नेवालों में गंदेव जड़ताही वनी रहती है इसप्रकार हँसकर वह वेश्या के यहांगया और वोला कि इस दो पैर के पशुका तुम सुवर्णरूपीचारादेदो यह सुनकर उसने भी हँसकर उसकी अशर्फी फेरदी अशर्फीकोपाकर ब्राह्मण अपना नयाजन्मसा मानकर घरलौटआया इसप्रकारकी आश्चर्य्य की वातों को देखताहुआ मैं

स्वर्ग के समान अपने देशके राजाके मकानपरपहुँचा ६५ इसके उपरान्त शिष्यों के द्वारा पहले अपनी इत्तिलाकरवाके मैंने भीतरजाकर सभामण्डल में बैठेहुए राजाको देखा शर्ववर्म्माआदिक मन्त्रियों से घिरेहुए रत्नके सिंहासनपर बैठेहुए राजाकी ऐसी शोभाहोरही थी कि मानो इन्द्रको घेरेहुए देवता बैठे हैं राजा के आदरकरने के उपरान्त स्वस्ति वचन कहकर मैं आसनपर बैठगया तब शर्ववर्म्माआदिक मंत्रीलोग यह कहनेलगे कि हे राजा यह संपूर्ण विद्याओं के जाननेवाले सब पृथ्वीपर विख्यातहैं इनका गुणाढ्यनाम अर्थ से भी बहुतठीकहै मंत्रियों से इसप्रकारकी मेरी प्रशंसा सुनकर राजाने प्रसन्नता पूर्वक मुझे अपना मंत्रीबनालिया ७० इसके पीछे राजाके कार्य्योंकोकरताहुआ मैं सुखसे अपने विद्यार्थियोंको भी पढ़ानेलगा और वहीं मैंने अपना विवाहभीकरलिया एकसमय गोदावरीनदीके किनारे पर अकेलेघूमतेहुए मैंने एक बगीचादेखा जिसे कि लोग देवीका बनायाहुआकहते थे उसे इन्द्रके नंदन वनकेसमान अत्यन्त रमणीयदेखकर मैंने बागवानसेपूँछा कि यह बगीचा किसनेबनवायाहै वह मुझसे बोला कि हे स्वामी जैसा मैंने बड़ों के मुखसेसुनाहै वह आपसे कहताहूं पहले एकसमय कोई निराहार मौनीब्राह्मण यहांआयाथा उसीने देवमंदिर समेत यह बगीचाबनवायाथा तब यहां बहुतसे ब्राह्मण इकट्ठेहुए और उस ब्राह्मणसे उसकाबृत्तान्त हठसेपूँछनेलगे तब वह ब्राह्मण मौनकोखोलकर बोला कि नर्मदानदी के किनारेपर भरुकच्छ नामदेशमें मैं उत्पन्नहुआथा मैं ऐसा आलस्यी और दरिद्रीथा कि मुझे कोई भिक्षातकनहींदेताथा एकसमय खेदसे घरकोछोड़कर और अपने प्राणों से भी निर्मोहीहोके मैं तीर्थोंपरघूमताहुआ भगवती विन्ध्यवासिनीके दर्शनोकोगया ७८ भगवतीके दर्शनकरके मैंने यह शोचा कि लोग यहांपशुओंका बलिदानदेकर देवीको प्रसन्नकरते हैं तोमैं अपनाही बलिदानकरूंगा क्योंकि मैं मूर्ख पशुके समान हूं ऐसा शोचकर जैसे कि मैंने अपने मारने को शस्त्रउठाया वैसेही प्रसन्नहोकर साक्षात् भगवती मुझसेबोलीं कि हे पुत्र तू सिद्धहोगया अपनेको मतमारे और मेरे निकटरहाकर भगवती के ऐसे वरदानकोपाकर मैं दिव्यरूपहोगया तबसे मुझे भूख और प्यास नहींलगती एकसमय वहीं रहतेहुए मुझसे साक्षात् भगवतीने कहा कि हे पुत्र प्रतिष्ठानदेशमें जाकर एक दिव्यबगीचालगाओ यह कहकर भगवती ने मुझे दिव्यबीजदिया तब मैंने यहांआकर भगवतीजी के प्रभावसे दिव्य बगीचाबनाया तुम लोग इसकी रक्षाकरो यह कहकर वह ब्राह्मण अन्तर्द्धानहोगया इसप्रकारसे यहां यह भगवतीका बनाया हुआ बगीचाहै ८५ बागवानसे उस देशमें ऐसी भगवतीकी कृपासुनकर मैं आश्चर्य से भराहुआ अपने घर को चलाआया गुणाढ्यके इसप्रकारके कहनेपर काणभूति बोला कि हे गुणाढ्य इस राजाका सातवाहन नाम कैसे पड़ा है तब गुणाढ्य बोला कि सुनो मैं कहताहूं कि पहले दीपकर्णिनाम एक बड़ा बलवान् राजा था उसके शक्तिमतीनाम बड़ीप्यारी रानीथी एकसमय भोगकरने के पीछे बगीचे में सोतीहुई रानी को सर्पनेकाटा और वह मरगई यद्यपि राजाके कोई पुत्रनहीथा तथापि राजाने उसके प्रेमसे दूसरा कोई विवाह नहीं किया ९० एकसमय राज्यके योग्य पुत्रके न होने से दुखितहुए राजाको स्वप्नमें श्रीशिवजीने यह आज्ञादी कि वनमें सिंहपरचढ़ेहुए किसी बालकको तुम देखोगे उसको घर ले

आना वही तुम्हारा पुत्र होगा इसके उपरान्त जगकर उस स्वप्नको स्मरणकरके वह राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ और एकसमय शिकार खेलनेकेलिये वनमें बहुतदूरचलागया वहां राजाको मध्याह्नके समय किसी तालाव के किनारे सूर्य्य के समान तेजवाला सिंहपर चढ़ा हुआ एकबालक दिखाई दिया वह सिंह वालकको उतारकर जल पीने के लिये तालावपरचला तव राजाने स्वप्नको स्मरणकरके उससिंह के एक बाणमारा बाणके लगने से वहसिंह पुरुषहोगया तव राजाने उससे पूछा कि बताओ यह क्या बातहै वह बोला हे राजा मैं कुवेरका मित्र सातनामयक्षहूं मैंने एक समय गंगामें स्नानकरती हुई एक ऋषिकी कन्यादेखी और उस कन्याने मुझे देखा परस्पर देखनेसे हमदोनोंको कामकावेग उत्पन्नहुआ तो मैंने उसकेसाथ गान्धर्व विवाह करलिया ९८ उसकेभाइयोंने यहवात सुनकर क्रोधसे शापदिया कि तुम दोनों बड़ेस्वेच्छाचारीहो इस्से सिंहहोजाओ मुनियोंने पुत्र जन्म पर्य्यन्त मेरीस्त्रीके शापकी अवधिकरदी और तुम्हारे वाणलगनेतक मेरेशापकी अवधिकरदी इसके उपरान्त हमदोनों इसवनमें आकर सिंह और सिंहनीहोगये समय पाकर सिंहनीगर्भिणीहुई और इसपुरुष वालकको उत्पन्नकरके मरगई मैंने अन्य सिंहिनियों के दूधसे इसवालककी पालनाकी आजतुम्हारे वाणके लगनेसे मैंभी शापसे छूटगया इस बड़े वलवान् वालकको मैं तुम्हेंदेताहूं इसेलेजाओ और मुनिलोगोंनेभी हमसे यहवात पहलेही कहदीथी यहकहकर उससिंहसे मनुष्यरूप होनेवाले यक्षके अन्तर्द्धान होजानेपर राजा उसवालकको लेकर अपने घरचलाआया सातनाम यक्ष उसका वाहनहुआ था इसहेतु से उसका सातवाहननाम रक्खा और उसे अपना राज्यदेकर राजादीपकर्णिवनको चलागया तव सातवाहन चक्रवर्त्ती राजाहुआ १०६ इसप्रकार काणभूतिके पूंछने से वीचमें इसकथाको कहकर वहगुणाढ्य फिर अपनी कथाको कहनेलगा एकसमय राजा सातवाहन वसन्तके उत्सवमे देवीजीके उसवगीचे में गया नन्दनवनमें इन्द्रके समान उसवगीचेमें विचरताहुआ राजा जलक्रीड़ा करनेके लिये स्त्रियों समेत वावड़ी में उतरा और वावड़ी में स्त्रियोंपर छींटें डालनेलगा हाथीपर हथिनियों के समान वह स्त्रियांभी उसपर जलडालनेलगीं स्त्रियोंके नेत्रोंका अंजन छुटगया और जलके पड़नेसे वस्त्रअंगोंमें ऐसे चिपटगये कि सवउनके अंग साफ २ दिखाई देनेलगे इस्से वह स्त्रियां राजाके मनको हरनेलगीं वायुकेसमान उसराजाने तिलकरूपी पत्रोंसेरहित और गिरेहुए आभूषण रूप पुष्पोंवाली लताओंके समान सव रानियां करदीं ११२ इसके उपरान्त उनमेंसे एकवड़े कोमल शरीरवाली रानी राजासे वोली कि हेनाथ मोदकैस्ताड़य (अर्थात् मेरेऊपर जल मतडालो) यह सुनकर राजाने बहुतसे लड्डू मँगवाये तव फिर वह रानी हँसकरवोली हेराजा यहां, जलक्रीड़ा में मोदकों का क्याकाम है मैंने तुमसे यह कहाथा कि मेरेऊपर जलमतडालो तुम मा शब्द और उदक शब्दकी संधिभी नहीं जानतेहो और मौकेकोभी नहीं समझते तुम वड़ेही मूर्खहो व्याकरणकी जाननेवाली रानीने जव इसप्रकारसे कहा और सव स्त्रियां हँसनेलगीं तो राजाको वड़ी लज्जाहुई तव जलक्रीड़ाको छोड़ कर और अभिमानरहितहोके राजा अपने अपमानसे दुखितहोकर अपने मकानको चलागया ११६ फिर भोजनको भी परित्याग करके चिन्तासे महाव्याकुल राजा चित्रमें लिखीहुई तसवीर के समान

पूछनेसे भी कुछ नहीं बोला तवत्रहराजा यातो मैं परिडतहूंगा या मरजाऊंगा ऐसा निश्चयकरके पलं-गपर पड़े २ महाक्लेशयुक्त होनेलगा एकाएकी राजाकी ऐसीहालत देखकर लोगोंको बड़ा सन्देहहुआ यह खवर धीरे २ मुझे और शर्ववर्म्माको भी मिली उससमय दिन वहुतथोड़ा रहाथा और राजाभी साव-धान न था यह विचारकर हम लोगोंने राजहंसनाम राजाके सेवकको बुलाकर राजाका हालपूछा तव वह बोला कि मैंने ऐसा व्याकुल राजाको कभीनहीं देखा जैसा कि इससमय होरहाहै और संपूर्णरानी यहकहती हैं कि विष्णुशक्तिकी कन्याने राजाको कुछकहकर व्याकुलकियाहै १२६ उसके यहवचनसुन कर हमदोनो सन्देह से शोचनेलगे कि जो कोई शारीरिक रोगहोता तो वैद्योंको भेजते और मानसी रोग राजाको हो नहीं सक्ता क्योंकि इस राजाका कोई शत्रु नही है और इसकी सवप्रजा इससे अत्यन्त स्नेहकरती है तो किस सववसे एकाएकी इसको ऐसाखेद उत्पन्नहुआहै इसप्रकार शोचने से बुद्धि-मान् शर्ववर्म्मा वोला कि मैं राजाके दुःखका कारण समझगया यह अपनी मूर्खता के दुःखसे व्याकुल होरहा है मैं पहलेही से उसके चित्तको जानता हूं कि वह सदैव अपनेको मूर्ख समझकर पंडितहोने की इच्छा कियाकरताहै और मूर्खताही के कारण रानीनेभी इसे डांटाहै यह मैंने सुनाहै इसप्रकार विचारकरके उसरात्रिके व्यतीत होजानेपर प्रातःकाल हम दोनों राजाके पासपहुंचे वहां यद्यपि कोईनहीं जाने पाता था तथापि मैं चलागया और मेरे पीछे २ शर्ववर्मा भी चलागया १३४ वहां राजाके निकट वैठकर मैंने कहा कि आज आप विनाकारणके उदासीन क्यों हैं यह सुनकरभी राजा कुछ नहीं बोला तव शर्ववर्म्मा ने यह अद्भुत वाक्यकहा कि हे स्वामी मैं आपसे पहले कहचुकाहूं कि मैंने स्वप्न माणवक नाम एकप्रयोग कहींसे पायाहै आज रात्रिको मैंने वह प्रयोगकियाथा उससे मुझे स्वप्नमें यह दिखाईपड़ा कि एक कमल का फूल आकाशसेगिरा उसे किसी दिव्य वालकने प्रकाशितकिया तव उसमें से एक श्वेतवस्त्र धारण किये स्त्रीनिकली वह स्त्री आपके मुखमें चलीगई इतना देखकर मेरीनिद्रा खुलगई मुझे मालूमहोताहै कि वह स्त्री साक्षात् सरस्वतीथी जो आपके मुखमें चलीगई १४० इसप्रकारस्वप्नको सुनकर राजा मुझसे बोला कि यत्नपूर्व्वक सिखानेसे मनुष्य कितने दिनोंमें पंडित होसक्ताहै मुझे पांडित्यके विना यह राजलक्ष्मी अच्छी नहीं मालूमहोती जैसे काठको आभूषण वैसेही मूर्खको ऐश्वर्य्यहै तव मैंनेकहा हे राजा सम्पूर्ण विद्याओंका मुखरूपी व्याकरण सवमनुष्योंको वारहवर्षमें आताहै मैं आपको छःवर्षमें ही सिखादूंगा यहसुन कर शर्ववर्म्मा ने ईर्षासेकहा कि सुखकरनेवाला मनुष्य इतनाश्रम कैसे करसक्ताहै हे राजा मैं आपको छैही महीनेमें व्याकरण सिखासक्ताहूं यह असम्भव वचन सुनकर मैंने क्रोधसेकहा कि जो तुम छः महीने में राजाको व्याकरण सिखादो तो मैं संस्कृत प्राकृत और अपने देशकी वोली यह तीनोंभाषा जिनको कि मनुष्य वोलसक्ते हैं वोलना छोड़दूं तव शर्ववर्म्मा ने कहा कि जो मैं छः महीनेमें इसे व्याकरण न पढादूं तो वारह वर्षतक तुम्हारी खड़ाऊं अपने शिरपर रक्खूं १४६ यह कहकर उसके चलेआनेपर मै भी अपने घर को चलाआया और राजाभी अपना दोनोतरफसे मतलव समझकर सावधान होगया शर्ववर्म्माने उस अपनी प्रतिज्ञाको दुस्तर समझकर पश्चात्तापयुक्त होके अपनी स्त्रीसे सववृत्तान्तकहा तव वह वोली कि हे

स्वामी ऐसे संकटकेसमयमें स्वामिकुमारके सिवाय और कोई उपायनहीं है उसके वचनको ठीकसमझकर शर्ववर्म्मा प्रातःकाल भोजनकिये विनाही घरसे चलागया फिर दूतके मुखसे शर्ववर्म्माके जानेके वृत्तान्त को सुनकर मैंने राजासेभीजाकर उसके स्वामिकुमारके यहांजानेका वृत्तान्तकहा राजानेभीकहा कि देखो क्याहोताहै १५४इसके उपरान्त सिंहगुप्तनाम किसी राजपुत्रने राजासेकहा कि हेराजा उससमय आपको दुखी देखकर मुझे अत्यन्त खेदहुआथा तव मैंने आपके कल्याणकेलिये नगरके बाहर जाकर चंडिका भगवतीके आगे अपनाशिर काटकर चढ़ानाचाहा उससमय यह आकाशबाणी हुई कि शिरमतकाटो तुम्हारे राजाकी इच्छा पूर्णहोगी इससे मैं जानताहूं कि आपका मनोरथ सिद्धहोगा यहकहकर और राजा से पूछकर उसने दोदूत शर्व्ववर्म्माके पीछेभेजे शर्व्वबर्म्माभी निराहार और मौन व्रतसाधकर स्वामिकुमार के निकटपहुंचा वहांउसने अपने शरीरको न समझकर ऐसा तपकिया कि जिससे प्रसन्नहोकर भगवान् स्वामिकुमारने उसका मनोरथ पूर्णकिया १६० यहबात सिंहगुप्तके भेजेहुए दूतों ने आकर राजासे पहलेही कहदी जैसेमेघको देखकर हंसकोखेद और चातकको प्रसन्नताहोती है उसीप्रकार उन दूतोंके वचन सुनकर मुझे खेदहुआ और राजाको आनन्दहुआ शर्व्वबर्म्मा ने आकर स्वामिकुमारकी कृपासे केवल ध्यान करनेही से प्राप्तहुई सम्पूर्ण विद्या राजाको देदी और उसीसमय राजाको सम्पूर्ण विद्याओं का ज्ञानहोगया (ईश्वरकी कृपासे क्या नहीं होताहै) इसके उपरान्त राजाके पण्डित होजानेकी खबरको सुनकर राज्यभर में बड़ा उत्सव होनेलगा उससमय नवीन लगाईगई और वायुसे हिलतीहुई पताका मानों नगरभरे में नृत्यकररहींथीं राजाने शर्व्वबर्म्माको अपना गुरु समझकर बड़े २ रत्नों से उनका पूजनकिया और नर्मदा नदीके किनारेपर बसेहुए भरुकच्छनाम देशका राज्य उसेदेदिया जिस सिंहगुप्त नाम राजपुत्रने दूतोंके मुखसे पहले स्वामिकुमारके बरदेनेकी खबर सुनाईथी उसेधनदेकर अपने समान करलिया और विष्णुशक्तिनाम राजाकी कन्या जिसरानीने विद्याके लिये उसे उत्साह दिलायाथा उसे सब रानियों में पटरानी बनाया १६७॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांकथापीठलम्बकेषष्ठस्तरङ्गः ६॥

इसके उपरान्त मैं मौनहोकर राजाकेनिकटगया वहाँ किसीब्राह्मणने अपना वनायाहुआ एकश्लोक पढ़ा और राजाने आपही उसश्लोक की व्याख्यासंस्कृतमें की यह देखकर वहाँ के संपूर्ण लोग बहुत प्रसन्नहुए फिर राजाने शर्व्वबर्म्मासे पूछा कि कहो तुम्हारे ऊपर स्वामिकुमारने किसप्रकारसे कृपाकी यह सुनकर शर्व्वबर्म्मा बोला कि हे राजा मैं यहांसेनिराहार और मौनहोकरचला तो कुछ थोड़ाही मार्गबाकी रहाथा कि मैं मारे क्लेशके मूर्च्छाखाकर पृथ्वीपर गिरपड़ा तब शक्तिको लिये हुए किसी पुरुष ने मुझसे आकरकहा कि हेपुत्र उठ तेरासबमनोरथ पूराहोगा उसके अमृतरूपी वचनोंसे सींचाहुआ मैं उसीसमय उठबैठा और मेरी भूखप्यास सबचलीगई इसके उपरान्त स्वामिकुमारके मंदिरमें पहुंचकर स्नानकरके मैं मन्दिरके भीतरगया तब साक्षात् स्वामिकुमारने मुझे दर्शनदिये और मेरेमुखमें साक्षात् सरस्वती का प्रवेशहुआ इसके उपरान्त भगवान् स्वामिकुमारजी छहों मुखोंसे सिद्धोवर्णसमाम्नायः यहसूत्रबोले १०

यह सुनकर मैंने भी चपलतासे इसके आगेका सूत्रबोलादिया यहसुनकर स्वामिकुमारने कहा कि जो तुमबीचमें न बोलते तो यहशास्त्र पाणिनीय शास्त्रसे भी बढ़करहोता अब छोटाहोने के कारण कातंत्र नामहोगा और कलापनाम मेरेवाहनकेनामसे इसका कालापकभी नामहोगा इसप्रकार छोटे से व्याकरणको कहकर फिर बोले कि तुम्हारा राजा पूर्व्वजन्ममें भरद्वाजमुनिका शिष्य कृष्णनाम मुनिथा एक समय किसी मुनिकी कन्याको देखकर इसे और उसेदोनोंको कामकी बाधाहुई तबऋषियों ने इनदोनो को शापदेदिया वह ऋषि तो तुम्हारा राजाहुआहै और ऋषिकी कन्या राजाकी रानीहुई है इसप्रकार से तुम्हारा राजा मुनिका अवतारहै तुम्हारे देखनेही से उसे संपूर्ण विद्या प्राप्तहोजायँगी (महात्मालोगो के मनोरथ जन्मान्तरमें इकट्ठेकियेहुए उत्तम संस्कारोंके द्वारा विनापरिश्रमही सिद्धहोजाते हैं) यहकहकर भगवान् स्वामिकुमार के अन्तर्द्धान होजानेपर मैं बाहर चलाआया तबवहाँके पंड्योंने मुझे थोड़े से चावलदिये रास्ते में रोज २ खानेपरभी वह चावल ज्योंके त्यों बनेरहे २१ इसप्रकार अपने वृत्तान्तको कहकर शर्व्ववर्माके निवृत्तहोनेपर राजा प्रसन्नहोकर स्नानकेलिये उठा तब मौनहोने के कारण संपूर्ण व्यवहारों से रहितहोकर मैंने नहीं इच्छा करतेहुए भी राजासे केवल प्रणाममात्रकेही द्वारा पूछकर दो शिष्यों समेत नगरके बाहर गमनकिया और तपकरने का निश्चय करके विन्ध्यवासिनी के दर्शनोंको आया स्वप्नमें भगवती की आज्ञासे तुम्हारे देखनेकेलिये इस विन्ध्याचल के वनमें आया तब किसी भीलके कहने से यात्रियों के समूहकेसाथ यहाँआकर मैंने बहुतसे यह पिशाच देखे दूरसे इनलोगोंकी परस्पर बातोंको सुनकर मैंने भी पिशाचभाषासीखली तब मेरामौनछूटा पिशाचभाषाको जानकर मैंने सुना कि तुम उज्जयिनीकोगये हो इससे अबतक तुम्हारे आनेकी बाट देखतारहा तुम्हें देखकर और पिशाची भाषामें तुम्हारा शिष्टाचारकरके मुझे अपने पूर्व्वजन्मका स्मरणआगया यहमेरा इसजन्मका वृत्तान्तहै गुणाढ्यके ऐसेवचन सुनकर काणभूति बोला कि आजरात्रिको मैंने जिसप्रकार तुम्हारेआने का वृत्तान्तजाना वहसुनो ३० भूतिवर्म्मानाम दिव्यदृष्टिवाला एकराक्षस मेरामित्रहै उससेमिलनेको मैं उज्जयिनीगयाथा वहाँ मैंने उससे पूंछा कि मेरेशापका अन्तकबहोगा तब उसनेकहा कि दिनको हमारी सामर्थ्यनहीं है रात्रिको हम तुम्हें बतावेंगे रात्रिहोनेपर भूतोंकोप्रसन्न देखकर मैंने उससे पूछा कि रात्रिमें भूतों के अधिकपराक्रमी और आनन्दहोने का क्या कारण है तब भूतिवर्म्मा राक्षस बोला कि पहले ब्रह्माजी से जैसा शिवजीने कहाहै वह मैं तुमसे कहताहूं दिनमें सूर्य्य के तेजसे ध्वंस्तहुए यक्ष राक्षस और पिशाचोंका प्रभावनहींहोता इस्से यहरात्रिमे प्रसन्नरहते हैं और बलीहोते हैं जहां देवता और ब्राह्मणोंका पूजन नहीं होताहै और जहां विधिपूर्व्वक भोजननहीं होताहै वहां इनका जोरहोताहै जहां मांसभक्षणनहीं किया जाताहै और साधूलोग रहतेहैं वहां यहनहींजाते पवित्रशूर और जागतेहुए मनुष्योंको यह कभी पीड़ानहींदेते यह कहकर भूतिवर्म्मा फिर बोला कि जाओ तुम्हारे शापके छूटने का कारण गुणाढ्य आगया यह सुनकर मैं यहां आया और तुम्हारे दर्शन मुझे मिले अब मैं तुमसे पुष्पदन्तकी कहीहुई कथा कहताहूं परन्तु एक बातसुननेकी मुझे और इच्छाहै कि किसकारण से तुम्हारा

और पुष्पदन्तका माल्यवान् और पुष्पदन्तनाम हुआ सो कहो ४० काणभूतिके यह वचन सुनकर गुणाढ्य बोला कि गंगाजीके तटपर बहुसुवर्णक नामगांवहै उसमें गोविन्ददत्तनाम एकबहुश्रुत ब्राह्मण रहताथा उसकी बड़ी पतिव्रता अग्निदत्तानामस्त्रीथी समय पाकर उस ब्राह्मण के पांच पुत्रहुए वहपांचों महामूर्ख बड़े स्वरूपवान् और महाअभिमानी थे एक समय गोविन्ददत्तके यहां एक वैश्वानरनाम ब्राह्मण अतिथि होकरआया उस समय गोविन्ददत्त घरमेंनहींथा इसलिये उस ब्राह्मणने उसके पुत्रोंको नमस्कार किया परन्तु उनमूर्खोंने उसको प्रणामतो नहीं किया किन्तु हास्यकरनेलगे इस्से वहअप्रसन्न और क्रोधितहोकर जैसे कि जानेलगा वैसेही गोविन्ददत्तने आकर उस्से संपूर्ण वृत्तान्त पूछकर उसकी बड़ी विनतीकरी इतने परभी वह ब्राह्मण क्रोधसेबोला कि तेरे पुत्र बड़ेमूर्ख और पतितहैं और इनके संपर्कसे तूभी ऐसाही होगयाहै इस्से मैं तुम्हारे यहां भोजननहीं करूंगा चाहै मुझे प्रायश्चित्तभी होजाय ४८ इसके उपरान्त गोविन्ददत्तनें शपथ खाकरकहा कि मैं इनदुष्टोंका कभी स्पर्शभी नहीं करताहूं और उसकी स्त्री ने भी आकर इसी प्रकारसे कहा तब वैश्वानरने उस के घरमें बड़ी कठिनतासे भोजन किया यह देखकर उसका देवदत्तनाम एकपुत्र अपने पिताकी अपने ऊपर ऐसी घृणा देखकर बड़ा दुखी हुआ माता पितासे त्याग कियेहुए का जीनाही व्यर्थ है ऐसा शोचकर वह तपकरनेको बदरिकाश्रम में चलागया ५२ फिर वहां देवदत्त बहुत दिनतक पत्ते खाकर और बहुतकालतक धूमपानकरके महादेवजी के प्रसन्नकरनेको तप करतारहा उसके बड़े कठिन तपसे प्रसन्नहोकर महादेवजी ने दर्शनदेकर कहा कि वरमांगो उसने यह वरमांगा कि मैं आपकादासरहूं तब शिवजी बोले कि पहले विद्याओंको पढ़ो और पृथ्वी में सब आनन्दोको भोगो तब तुम्हारामनोरथ पूर्णहोगा ५५ इसके उपरान्त वह देवदत्त विद्याके निमित्त पाटलिपुत्र नगरमें जाकर वेदकुंभनाम उपाध्यायका विधिपूर्वक सेवन करनेलगा एक दिन उपाध्यायकी स्त्री कामसे पीड़ितहोकर देवदत्तसे संभोग करने के लिये हठकरनेलगी क्योंकि (स्त्रियोंकी चित्तकी वृत्ति बड़ी चंचलहोती है) इसकारणसे उसदेशको छोड़कर कामदेवके विकारसे युक्त वह देवदत्त प्रतिष्ठान देशको चलाआया ५८ उसदेशमें वृद्धस्त्रीवाले मंत्र स्वामीनाम बृद्ध उपाध्यायसे अच्छे प्रकार विद्या पढनेलगा और बड़ा पण्डितहोगया विद्यापढ़नेके उपरान्त सुशर्म्मानाम राजाकी श्रीनाम कन्याने उसे देखा और उसनेभी उसे झरोखों में खड़ीहुई देखा वह कन्या न थी मानों विमानपर चढ़ीहुई चंद्रलोककी देवताथी कामदेवकी जंजीररूपी दृष्टिसे परस्पर बँधेहुए वहदोनों वहांसे हटनेको नहीं समर्थहुए तब राजाकी कन्याने अपनी एक उंगली से इशारहकिया कि यहांआओ वह उंगली नहींथी मानो मूर्त्ति धारण कियेहुए कामदेवकी आज्ञाथी जब देवदत्त महलके भीतर होकर उसके निकटगया तबउस कन्याने दांतसे फूलउठाकर उसकी तरफफेंका राजकन्याके इस छिपेहुए इशारेको न जानकर देवदत्त उपाध्यायके घरमें आकर पृथ्वी में लोटनेलगा और तापसे व्याकुलहोकर कुछभी न कहसका ६६ बुद्धिमान् उपाध्यायने कामसेहुए चिह्नोंको देखकर उससे युक्तिपूर्व्वक पूछा तो उसने सबहाल कहदिया यह सुनकर उपाध्याय तो चतुरथा और वह उस इशारेको समझकर इससेबोला कि दांतसे फूलको फेंककर

उसने यह इशारह कियाहै कि पुष्पदन्त नाम देवमन्दिरमें जाकर हमारी वाटदेखना अभी तुम यहां से जाओ इसप्रकार इशारेका मतलव समझकर उसने शोचको त्यागदिया और वहदेवमन्दिर में जावैठा ७० फिर अष्टमी के वहाने से राजकन्या भी अकेली देवमन्दिर के भीतरआई और देखा कि द्वारके पीछे अपना प्रियखड़ा है देवदत्तने भी उसे देखकर जल्दी से कण्ठमें लगालिया राजकन्याने देवदत्तसे पूछा कि उस गुप्त इशारेको तुमने कैसेजाना तव उसनेकहा कि मैं नहीं समझाथा परन्तु हमारे उपाध्याय ने उसे समझलिया तव मुझे छोड़दे तू मूर्ख है यहकहकर मंत्र भेदके डरसे वहकन्या वहां से चलीआई और देवदत्तभी एकान्तमें मिलकर चलीगई उस प्रियाका स्मरण करताहुआ वियोगकी अग्निसे मरगया महादेवजी ने उसे मरादेखकर पञ्चशिखनाम गणको आज्ञादी कि तू जाकर इसका मनोरथ पूर्णकर ७६ तव पञ्चशिखने उसे जिलाकर उससे कहा कि तुम स्त्रीकासा वेषवनाओ और पञ्चशिखने अपना वृद्ध ब्राह्मण कासा वेषवनाया तव देवदत्तको अपने साथ में लेकर सुशर्म्मा नाम राजा के यहां जाकर वोला कि हे राजा मेरा पुत्र कहीं चलागया है उसे ढूंढ़नेको मैं जाताहूं तुम मेरी वहूको अपने यहां रखलो यह सुनकर शापकेडरसे सुशर्मा ने स्त्री वेषधारी पुरुषको अपनी कन्याके महलमें रक्खा ८० इसके उपरान्त पञ्चशिख नाम गणके चले जाने पर देवदत्त स्त्री के वेष में अपनी प्रिया के यहां रहते २ उसका वड़ा विश्वासपात्र होगया एकसमय राजकन्याको वहुत उत्कण्ठित देखकर देवदत्त ने अपना स्वरूप प्रकट किया और उससे गान्धर्व विवाह करलिया फिर कुछ दिनके वाद राजकन्याके गर्भवती होने पर स्मरणमात्रसे आयाहुआ शिवजी का गण इसे गुप्तरीति से लेगया और देवदत्तको अपने साथमे लेकर सुशर्म्मा राजाके घरगया और वोला कि हे राजा आजमेरापुत्र आगया मेरीवहू मुझे देदो तव राजा ने यहसुनकर कि वह रात्रिको कहीं भागगई है और ब्राह्मण के शापसे डरकर मंत्रियों से यहकहा कि यह ब्राह्मण नहीं है मेरे ठगने के लिये कोई देवताआया है क्योंकि ऐसी वातें वहुधा हुआकरती हैं देखो पूर्व्वसमय में वड़ातपस्वी दयालु दाता और धीर राजाशिवि सम्पूर्ण प्राणियोंका रक्षाकरनेवाला हुआ था, उसको ठगनेकेलिये इन्द्र वाजके स्वरूपको धारणकरके कवूतरके रूपको धारणकिये धर्म्म के पीछेदौड़ा वह कवूतर मारेडरके राजा शिविकी गोदी में जापड़ा तव उस वाजने मनुष्योंकीसी वाणीमें राजा शिविसे कहा कि हे राजा मैं वहुत भूखाहूं तुम इस मेरे भक्ष्य कवूतरको छोड़दो नहीं तो मैं मरजाऊंगा तो तुम्हें क्या धर्म्महोगा ६१ तव राजा शिविनेकहा कि यह हमारी शरणमें आयाहै हम इसको नहींत्यागेंगे इसकेसमान अन्य किसी जीवका मांस तुम लेलो वाजने कहा अगर ऐसाही आप कहते है तो अपनाही मांस मुझे दो राजाने प्रसन्नहोकर यह वात स्वीकारकरली फिर जैसे२ राजा अपने मांसको तराजूमें उसके वरावर करनेको काट२ चढ़ाताजाताथा वैसेही वैसे वह कवूतर अधिकभारी होताचलाजाता था तव राजाने अपना सम्पूर्ण शरीर तराजूपररखदिया उससमय राजा धन्यहै २ यह आकाशवाणीहुई फिर इन्द्र और धर्म्म ने अपना २ स्वरूपधारणकरके राजाकी वड़ी स्तुतिपूर्व्वक उसका शरीर ज्योंकात्यों करदिया ६६ इसके उपरान्त और भी वहुतसे राजाको वरदानदेकर इन्द्र और धर्म दोनों अन्तर्द्धानहोगये

इसीप्रकार मेरीभी परीक्षाकरने को यह कोई देवताआयाहै मंत्रियों से यह बात कहकर डरताहुआ राजा ब्राह्मण से बोला कि क्षमाकीजिये आज रात्रिको आपकी बहू रात्रिदिन रक्षाकरनेपर भी कहींचलीगई तब वह ब्राह्मण दयाकरके बोला कि जो मेरी बहू कहीचलीगई है तो अपनी कन्या मेरे पुत्रको देदे यह सुनकर शापसेडरेहुए राजाने अपनी कन्याका विवाह देवदत्तसे करदिया देवदत्तभी उस अपनी प्रिया को पाकर अपने श्वशुरके राज्यका अधिकारीहुआ क्योंकि उसके और कोई सन्तान न थी समयपाकर राजा सुशर्मा देवदत्तके पुत्र महीधरनाम अपने दौहित्रको राज्य देकर वनको चलागया पुत्रके ऐश्वर्य को देखकर कृतार्थ होनेवाला देवदत्त भी राजकन्या समेत बनको चलागया और वन में शिवजीका आराधनकरके इसशरीरको त्यागकर श्रीशिवजीकी कृपासे उन्हींका गणहोगया १०५ प्रियाके दांतों से फेंकेगये पुष्पों के इशारेको वह नहींसमझा था इसीसे इसका नाम पुष्पदन्तहुआ और इसकी स्त्री जया नाम पार्व्वतीजी की दासीहुई इसप्रकार मैंने पुष्पदन्तके नामका कारणकहा अब मैं अपने नामका कारण कहताहूं उसको सुनो वह गोविन्ददत्त नाम ब्राह्मण जिसका कि पुत्र देवदत्तथा उसी के पुत्रों में से एक सोमदत्त नाम मैं भी था और जिस कारणसे देवदत्त चलागया था उसी कारणसे मैं भी घरमें से निकलकर हिमालयपर्वतपर बहुतसी मालाओं को पहिनाकर शिवजी महाराजका पूजनकरके तपकरने लगा तब प्रसन्नहोकर प्रकटहुए महादेवजी मुझसे बोले कि बरमांगो तब मैंने अन्य सब भोगों को छोड़कर आपका गणहोजाऊं यही बरमांगा यह सुनकर श्रीशिवजी बोले कि बड़ीकठिन पृथ्वी के उत्पन्नहुए पुष्पोंकी माला से जो तुमने मेरा पूजन किया है इसलिये तुम माल्यवान् नाम हमारे गणहोगे इसके उपरान्त मनुष्यके शरीरको छोड़कर मैं शीघ्रही शिवजीका गणहोगया इसप्रकार यह श्रीमहादेवजीने मेरा माल्यवान् नाम रक्खाहै हे काणभूति वही मैं पार्वतीजी के शापसे फिर मनुष्यहुआहूं तो अब पुष्पदन्तकी कहीहुई कथा मुझसेकहो जिससे कि हमारा और तुम्हारा दोनोंका शापछूटे ११३ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांकथापीठलम्बकेसप्तमस्तरङ्गः ७॥

इसप्रकार गुणाढ्य के कहनेसे काणभूति ने वहकथा अपनी भाषामें कही और गुणाढ्यनेभी उसी पिशाची भाषामें उसीकथाको सातलाख श्लोकों में सातवर्षों में पूर्णकिया इसकथाको विद्याधरोंके लेजाने के डरसे वनमे स्याही न मिलने के कारण गुणाढ्य ने अपने रुधिरसे वहकथालिखी उस दिव्य कथाके सुननेके लिये आयेहुए सिद्ध और विद्याधरोंकी ऐसीभीड़ इकट्ठीहोगई मानों आकाशमें शामयानाही होगया है गुणाढ्यकी बनाईहुई उसकथाको देखकर काणभूति अपने शापसे छूटकर अपनी सद्गतिको प्राप्तहोगया और जो २ पिशाच वहाँ उसदिव्य कथाको सुनरहेथे वहभी स्वर्गको प्राप्तहुए ६ इसके उपरान्त भगवतीने मुझसे यहबातभी कहीथी कि इसकथाको जबतुम पृथ्वी में प्रकाशित करोगे तब तुम्हारे शापका अन्तहोगा सोमैं इसकथाको किसके पासभेजूं यहशोचकर गुणाढ्य ने अपने साथ आयेहुए गुणदेव और नन्दिदेव नामशिष्यों ने कहा कि इसकाव्यके देनेके योग्य केवल राजा सातवाहनहै वह बड़ारसिकहै जैसे वायुपुष्पों की सुगन्धिको इधरउधर लेजाती है उसीप्रकार वहराजाभी इस

काव्यको पृथ्वी में प्रकाशित करेगा ऐसा विचार करके गुणाढ्यतो वहाँ से आकर देवीजी के बगीचे में ठहरे और अपने शिष्यों को पुस्तकलेकर राजाकेपास भेजा वहशिष्य इसकथा को लेकर राजाके यहां गये और बोले कि हे राजा यह गुणाढ्यका बनायाहुआ काव्यहै इसको आपलीजिये राजा उसपिशाची भाषाको सुनकर और उनशिष्यों की आकृति पिशाचोंकीसी देखकर विद्याके अभिमान से तिरस्कार पूर्व्वक बोला कि सातलाख श्लोकोंकी यह पिशाची भाषाका नीरसग्रन्थहै और रुधिरसे अक्षरलिखेहुए हैं इसपिशाचों की कथाको धिक्कारहै १५ तबवह दोनों शिष्य उसपुस्तक को लेकर गुणाढ्यके पासचले गये और राजाका सबवृत्तान्त वर्णन करतेभये यहसुनकर गुणाढ्यकोभी बड़ाखेदहुआ क्योंकि समझ-दारके अनादरसे किसको खेदनहीं होता इसके उपरान्त गुणाढ्यने अपने शिष्योको लेकर औरवहाँसे कुछ दूरजाकर किसीपहाड़ी के बड़े उत्तमस्थानपर एक अग्निका कुंडबनाया और उसकुंडमें अग्नि ज-लाकर गुणाढ्य पशु और पक्षियोंको सुना २ कर उसपुस्तकका एक २ पत्रा अग्निमे हवन करनेलगा संपूर्ण ग्रन्थको हवनकरदिया परन्तु अपने शिष्योंके लिये एकलाख श्लोकोंका ग्रन्थ नरवाहनदत्तका चरित बचारक्खा क्योकि वह शिष्योंको बहुतप्याराथा जिससमय गुणाढ्य उसकथाको पढ़ २ कर हवन करते थे उससमय अपने २ चाराघास आदिको छोड़ २ कर भैसा शूकर तथा सारंग आदिक पशुपक्षी उनके निकट आकर उनको घेरकर निश्चल बैठतेथे और उसकथाको सुन २ कर आंसूबहाते थे २२ इसी बीचमे राजा सातवाहन कुछ बीमारहुआ वैद्योंनेदेखकर कहा कि राजाको सूखेमांसखानेसे यहरोगहुआहै तब रसोईदार बुलायेगये तबवहबोले कि महाराज हमको बहेलिये ऐसाही मांस रोजदेते हैं इसकेउपरान्त जब बहेलियो से पूछागया तो उन्होने कहा कि यहांसे थोड़ीदूर एक पर्व्वतपर कोई ब्राह्मणपढ़२कर एक२ पुस्तकका पत्राअग्निमें हवनकरताहै उसके सुनने के लिये सबजंगल के पशुपक्षी अपने २ चारोंको भी छोड़कर वहाँ जाते हैं और वहाँसे हटतेनहीं है इसीसे भूखके मारे उनके मांस सूखरहे हैं बहेलियोंके ऐसे वचन सुनकर उन्हींकेसाथ राजा बड़ेआश्चर्य्य में भराहुआ गुणाढ्यके पासपहुंचा और वनके वासकरने से बड़ी २ जटावाले गुणाढ्यके दर्शनकिये वहजटायें नहीथी मानों बुझने से कुछ बचीहुई उसके शाप रूपी अग्नि का वहधुआं सब ओर फैलाथा २८ इसके उपरान्त रोतेहुए पशुपक्षियों के मध्य में बैठेहुए गुणाढ्यको पहचानकर उनको राजाने प्रणामकिया और सबवृत्तान्त पूछा २६ तब गुणाढ्य ने अपने और पुष्पदन्तके शापकी संपूर्णकथा जोकि इसकथा के उत्पन्नहोने की कारणथी वर्णनकी फिरगुणाढ्य को महादेवजी के गणका अवतार समझकर राजा पैरोंपर गिरपड़ा और महादेवजी के मुखसे निकली हुई इसदिव्य कथाको मांगने लगा उससमय गुणाढ्य बोले कि हे राजा छः लाख श्लोकोंकी छः कथा तो हमने हवनकरदीं अब एक लाखश्लोककी एककथा बाकी है इसेलेलो और यहदोनो हमारेशिष्य इसकथाको तुम्हें समझावेंगे इसप्रकार राजासे सबवृत्तान्त कहकर और योगसे अपनेशरीरको त्यागकर वहशापसे छूटेहुए गुणाढ्य अपनी पदवीपर पहुंचे इसके उपरान्त गुणाढ्यकी दीहुई बृहत्कथानाम नर-वाहनदत्तकी एकलाखश्लोको की कथाको लेकर राजा अपने नगरको चलाआया और गुणदेव तथा

नन्दिदेव नाम गुणाढ्यके शिष्योंको पृथ्वी सुवर्ण वाहन वस्त्र आदि अनेक पदार्थ देताभया फिरउन्हीं दोनों शिष्योंके साथ राजा सातवाहन उस कथाको प्रकाशित करने के लिये इसकथा का कथापीठ भी पिशाची भाषा में बनाताभया देवताओंकीभी कथाओंकी भुलानेवाली विचित्ररसोंसे भरीहुई यह दिव्यकथा संपूर्ण सुप्रतिष्ठितनामनगर में प्रसिद्ध होकर तीनोंलोकों में फैलगई ३८॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांकथापीठलंबकेअष्टमस्तरंगः ८॥

यहकथापीठनामप्रथमलंबकसमाप्तहुआ॥

अथ कथा मुखंनाम द्वितीयोलम्बकः॥

श्लोक। गौरीनवपरिष्वङ्गेविभोस्स्वेदाङ्गपातुवः॥
नेत्राग्निभीत्याकामेन वारुणास्त्रमिवाहितम् १

श्रीपार्वतीजी के प्रथम आलिङ्गनके समय जो महादेवजी के पसीना निकलाथा वह आपलोगों की रक्षाकरे वह पसीना क्या था मानों शिवजी के नेत्रोंको अग्निसे डरेहुए कामदेव नें वारुणास्त्र मारा था॥

कैलाशमें श्रीशिवजीके मुखसे जोकथा पुष्पदन्तको मिली पुष्पदन्तसे काणभूतिको मिली काणभूति से गुणाढ्यको मिली और गुणाढ्य से राजा सातवाहनको मिली वह विद्याधरोंकी अपूर्व कथा प्रारम्भ होती है २॥

वत्सनाम एक वड़ासुन्दर देशहै जिसे कि ब्रह्माने स्वर्गकी नक़लही करके मानों इसपृथ्वीपर वनाया है उसदेशके मध्य में कौशाम्बी नाम वड़ी उत्तमनगरी है वहनगरी नही है मानों पृथ्वीरूपी कमल की कर्णिका (भूमका) है उसनगरी में पाण्डवोंके वंशमें शतानीकनाम एकराजाहुआ जिसका कि पिता जनमेजय पितामह परीक्षित प्रपितामह अभिमन्यु और आदि पुरुष श्रीशिवजी के साथमें भी युद्ध करनेवाला अर्जुनथा उसराजा शतानीककी रानीका नाम विष्णुमतीथा यद्यपि पृथ्वी से राजाको अनेक२ प्रकारके रत्न प्राप्तहोते थे तथापि वह अपनी रानीके किसी पुत्रके न होने से अप्रसन्न रहताथा एकसमय राजा शिकार खेलने गयाथा वहां उसे शांडिल्य नाम मुनि मिले राजाने उनसे पुत्रकी प्रार्थनाकी तव शांडिल्य मुनिने राजाके साथ आकर मन्त्रसे पवित्रकी हुई खीर रानीको खिलाई तव राजाके सहसानीक नाम पुत्र उत्पन्नहुआ जैसे विनय से गुणकी शोभा होतीहै उसीप्रकार उस पुत्रसे राजाकी वहुत शोभाहुई थोड़ेही दिनों में राजाने सहस्रानीकको युवराज वनाकर उसे सम्पूर्ण पृथ्वीकाभार सौंपदिया और आप राज्यके सुख भोगनेलगा १२ इसके उपरान्त किसीसमय देवता और दैत्यों के युद्धमें इन्द्रने सहायताके लिये राजा के वुलाने को मातलि सारथी को रथलेकर भेजा तव राजा शतानीक युगन्धर

नाम मन्त्री और सुप्रतीक नाम मुख्य सेनापति को अपना राज्य तथा पुत्र सौंपकर मातलि के साथ दैत्यों के मारनेको स्वर्गको चलागया वहांजाकर राजाने इन्द्रके देखतेही देखते यमदंष्ट्र आदिक अनेक दैत्यों को मारा और आपभी युद्धमें मारागया इसमरेहुए राजाके शरीरको मातलि उसके पुत्र के पास ले आया तब उसराजाकी रानी उसके साथ सतीहोगई और उसकापुत्र सहस्रानीक राजाहुआ सहस्रानीकके सिंहासनपर बैठतेही सब उसकेशत्रु राजालोग दबगये इसके उपरान्त इन्द्रने दैत्यों के जीतने के लिये मातलिको रथ समेत भेजकर सहस्रानीक को बुलवाया स्वर्ग में जाकर नन्दनवन में अपनी २ स्त्रियोंके साथ बिहार करतेहुए देवताओंको देखकर राजा सहस्रानीकको अपने योग्य स्त्री के मिलने के लिये बड़ी चिन्ताहुई राजाके इसअभिप्राय को जानकर इन्द्र बोले कि हे राजा सन्देह मतकरो तुम्हारा मनोरथ पूर्णहोगा २१ तुम्हारे समान स्त्री पृथ्वी मे उत्पन्न होचुकी है उसका वृत्तान्त भी मै तुम्हारे आगे वर्णन करताहूं २२ एकसमय ब्रह्मासे मिलनेकेलिये मैं ब्रह्मलोकको गया था वहॉ विधूमनाम एकवसुभी मेरे पीछे २ चलागयाथा हमलोगवहॉ बैठेही थे कि ब्रह्मासे मिलनेको एकअलंबुसानाम अप्सराआई वायु से हिलतेहुए वस्त्रवाली उस अप्सराको देखकर वहवसु काम के बशीभूत होगया और उसवसुको देखकर वह अप्सराभी काम पीड़ितहोगई यह देखकर ब्रह्माने मेरीओरदेखा तब मैंने ब्रह्माका अभिप्राय समझकर उनदोनों को यहशापदिया कि तुमदोनों मृत्युलोकमें उत्पन्नहोजाओ और वहॉ तुमदोनों स्त्री पुरुषहोगे सो हे राजावहवसु तो चन्द्रवंशमें तुम उत्पन्नहुएहो और वह अप्सरा अयोध्यामें कृतवर्मानाम राजाकी कन्या मृगावतीनाम से उत्पन्नहुई है वही तुम्हारी स्त्री होगी इसप्रकार इन्द्रके वचन रूपी वायु से स्नेहयुक्त राजा के हृदयमें कामरूपी अग्निजलनेलगी इसकेउपरान्त इन्द्रने राजाको आदरपूर्वक अपने रथपर बैठालकर मातलिके साथ उसकीपुरीको भेजा चलते समय राजा से तिलोत्तमा नाम वेश्या बोली कि हे राजा जरा ठहरजाओ मैं तुमसे कुछ कहूंगी राजा मृगावती के ध्यान में उस के वचनको न सुनकर चलागया तब तिलोत्तमाने लज्जितहोकर उसे शाप दिया कि जिसके ध्यानमें तू मेरे वचनको नहीं सुनताहै उसकेसाथ तेराचौदहवर्ष तक वियोगरहैगा ३४ मातलिने यहशाप सुनलिया था प्रियाकेध्यानमें लगाहुआ राजारथकेद्वारा तो कौशाम्बीनगरीमेंपहुंचा और मनकेद्वारा अयोध्यामें पहुंचा ३५ इसकेउपरान्त राजाने इन्द्रसे सुनाहुआ मृगावतीकावृत्तान्त अपने युगन्धरादि मन्त्रियों को सुनाया और कृतवर्म्मा राजासे उसकलावती कन्याकेमांगनेको दूतभेजा कृतवर्म्माने दूतके मुखसे यह वृत्तान्त सुनकर अपनी कलावतीनाम रानीसे सबहालकहा तवकलावती बोली कि हे राजा सहस्रानीक को मृगावती अवश्यदेनीचाहिये यही बात मुझसे किसी ब्राह्मणने स्वप्नमेंकही है रानीकेवचन सुनकर राजाने प्रसन्नहोकर मृगावती का अत्यन्तसुन्दरस्वरूप और नृत्यगीतआदि की चतुरता दूतकोदिखाई ४० इसके उपरान्त सहस्रानीककेसाथ अत्यन्तसुन्दर चन्द्रमाकी किरणकेसमान रूपवान् अपनीमृगावती का विवाहकरदिया परस्पर समान गुणवाले सहस्रानीक और मृगावती इनदोनों का समागमहुआ इसके उपरान्त थोड़ेही दिनोंमें राजाकेमन्त्रियों के पुत्रहुए युगन्धरके यौगन्धरायण नाम पुत्रहुआ सुप्रतीक

के रुमरावान् नाम पुत्रहुआ और राजाकेमित्रके वसन्तकनाम पुत्र उत्पन्नहुआ फिर थोड़ेदिनों के उप-रान्त राजाकीरानी मृगावतीभी गर्भवतीहुई फिर गर्भवतीरानीका इसवातपर मनचला कि रुधिरसे भरी हुई बावड़ीमें मैं स्नानकरूं रानीकी इच्छाकोपूर्ण करनेकेलिये धार्मिकराजाने लाखआदि के रससे बा-वड़ी भरवादी उसबावड़ीमें स्नानकरतीहुई रानीको मांसकेधोखेसे गरुड़केवंशमें उत्पन्नहुआ कोई पक्षी उठालेगया पक्षीसेहरीगई रानीको मानोंढूंढ़नेकेलिये उसीसमय सहस्रानीक का धैर्य्यभी जातारहा अ-र्थात् राजाको धीरजनहींरहा प्रियमेलगेहुए राजाकेचित्तको भी मानों पक्षीहरलेगया जिससे कि रानी के जातेही राजा मूर्च्छितहोकर गिरपड़ा ५० क्षणभरमें राजाकी मूर्च्छाजगनेपर राजाके वृत्तांतको अपने प्रभावसे जानकर मातलिस्वर्गसे इसकेपासआया और उसने राजाकोसमझाकर तिलोत्तमाका १४ वर्ष का शापसुनाया और यहकहकर स्वर्गको चलागया हे प्रिये आज उसपापिनी तिलोत्तमाका मनोरथ पूर्णहुआ यहकहकर राजाबारंबार विलापकरनेलगा फिर शापकेवृत्तान्तको सुनकर मंत्रियोंने समझाया तब राजा फिर मिलनेकी आशासे किसी प्रकार सावधानहुआ इतने अन्तरमें वहपक्षी रानी मृगावती को लेकर उदयाचलपरगया और उसे जीतीहुई जानकर वहीं छोड़कर उड़गया उसपक्षी के चलेजाने पर और पर्व्वतपर अकेली अपनेको देखकर शोक और भयसे वहरानी अत्यन्त व्याकुलहुई फिर एक वस्त्र पहने हुए रोतीहुई अकेली रानीको कोई बड़ाभारी अजगरसर्प निगलनेलगा तब उस अजगरको मारकर और उसरानीको उससे छुड़ाकर कोई दिव्य पुरुष चलागया ५८ इसके उपरान्त रानी मरनेकी इच्छासे किसी मतवाले हाथीके सामने आप चलीगई उसने भी दयासे उसे छोड़दिया यहबड़े आश्चर्य की बातहै कि पशुभी अपने सन्मुख आईहुई रानीको छोड़कर चलागया अथवा कोई आश्चर्य नहीं है क्योंकि (ईश्वरकी इच्छासे क्या नहीं होसक्ता) इसके उपरान्त गर्भके भारसे व्याकुल पर्व्वतपरसे गिरती हुई रानी अपनेपतिका स्मरणकरके चिल्लाकररोनेलगी यह सुनकर कोई मुनिकाबालक जोकि वहां फल मूल लेनेके लिये आयाथा रानीके निकटआया वह रानीको देखकर और समझाकर दयासे जमदग्नि जी के आश्रमको लेआया ६३ वहांरानी ने अपने तेजसे सूर्य्य के समान विराजमान जमदग्निजी के दर्शनकिये और प्रणामकिया तब पैरोंपर गिरीहुई रानीको देखकर दिव्यदृष्टिवाले जमदग्निजी वियोग से महाव्याकुल होनेवाली रानीसे बोले कि हे पुत्री यहां तेरे वंशका चलानेवाला पुत्र उत्पन्नहोगा और तेरापतिभी तुझे मिलेगा शोकमतकरो मुनिजी के यह वचनसुनकर पति के मिलनेकी आशासे रानी वहीं रहनेलगी इसकेपीछे कुछ दिनों में रानी के एक बड़ासुन्दर पुत्र उत्पन्नहुआ उससमय आकाश से मृगावतीके चित्तकी प्रसन्नकरनेवाली यह आकाशवाणी हुई कि यह उदयन् नाम बड़ा यशस्वी राजा होगा और इसकापुत्र सम्पूर्ण विद्याधरोंका राजाहोगा ७० धीरे२ वह उदयन् नाम बालक जमदग्निजी के आश्रममें अपने गुणोंसमेत बढ़नेलगा जमदग्निजीने उसको क्षत्रियोंके योग्य सम्पूर्ण संस्कार करके सम्पूर्ण विद्याओं समेत धनुर्वेद सिखाया कभी प्रसन्नतासे मृगावतीने उस बालकके स्नेहसे राजासहस्रा-नीकके नामसे युक्त कड़ा अपने हाथसे उतारकर उसके हाथमें पहरादियाथा एकसमय उदयन् शिकार

के खेलनेको गयाथा तो वहां देखा कि कोई मदारी एक बड़े सुन्दर सर्पको जबरदस्ती पकड़े लियेजाता है उदयन्ने दया पूर्व्वक उससे कहा कि हमारे कहनेसे इस सर्पको छोड़दे ७५ तव मदारी वोला कि हे स्वामी यह तो मेरी जीविकाहै मैं वड़ा ग़रीबहूं सदैव सर्पोंका तमाशा दिखा २ कर अपने पेटको भरताहूं पुराने सर्पके मरजानेपर वहुत ढूंढते २ इस वनमें मन्त्र और औषधियोंके वलसे यह सर्प मैंने पायाहै उस के यहवचन सुनकर उदयन् ने माताका दियाहुआ कड़ा उसे देकर सर्प छुड़वादिया तव प्रणाम करके कड़ेको लेके मदारीके चलेजाने पर वह सर्प उदयन् पर प्रसन्नहो वीणाधारी मनुष्य होकर वोला कि मैं वासुकि का वड़ा भाई वसुनेमि नामहूं तुमने मेरी रक्षाकी है इसलिये तारोंसे वड़े सुन्दर शब्दवाली और सुन्दरीयों जड़ावसे वड़ी उत्तम यह वीणालो और तांबूल तथा कभी न मुरझानेवाली पुष्पोंकी माला लो यह देकर उस सर्पने कभी मैले न होनेवाले तिलककी युक्तिभी वताई इसके उपरान्त वह उदयन् उन सव पदार्थोंको लेकर जमदग्निके आश्रममें अपनी माताके निकटआया इसीवीचमें वह मदारी उदयन् के दियेहुए उस कड़ेको लेकर राजा सहस्रानीकके राज्यमें वेचनेको आया राजाके मनुष्य राजाकेनाम से युक्त उसकड़ेको देख कड़ेसमेत उस मदारीको राजाके समीप लेआये ८४ शोकसे विकल राजा सहस्रानीक ने उस मदारीसे अपने आप पूंछा कि तुम यहकड़ा कहांसेलाये तव उस मदारीने उदयन्सेकड़ा पानेका सम्पूर्ण वृत्तान्त राजाको कहसुनाया मदारीके वचनको सुनके और अपनी स्त्रीके कड़ेको पहचानके राजाके चित्तमें वड़ा सन्देहहुआ उसीसमय यह आकाशवाणी हुई कि हे राजा तुम्हाराशाप अव जातारहा पुत्रसमेत तुम्हारी मृगावती रानी उदयाचल पर्व्वतपर जमदग्निके आश्रममें है जैसे गरमी से व्याकुल मोरको जलकी वृष्टिसे प्रसन्नताहोती है उसीप्रकार वियोग से व्याकुल राजा आकाशवाणी से प्रसन्नहुआ इसके अनन्तर उस दिवसके किसीप्रकार व्यतीत होनेपर उस मदारीको साथमें लेकर राजा सहस्रानीक अपनी प्रियासे मिलनेके लिये सेनाओं समेत उदयाचलको चला ९० ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांकथामुखलम्बकेप्रथमस्तरङ्गः १ ॥

इसके उपरान्त राजा वहुत दूरजाकर उसदिन किसी जंगली तालाव के पास टिका वहां शयन के समय सेवाकरने के लिये आयेहुए संगतक नाम किसी कथक अर्थात् किस्सेवाजसे राजा वोला कि मृगावती के मुखरूपी कमलके दर्शनकरनेकी इच्छाकरनेवाले मुझसे कोई मनोहर कथाकहो तव संगतक वोला कि हे राजा आप वृथा सन्तापकरतेहो क्योंकि शापका अन्तहोचुका है अव आपसे रानीका समागमहुआही चाहताहै और संयोग वियोग तो मनुष्योंको हुआहीकरते हैं मैं इसी विषय में आपसे एक कथा कहताहूं उसे आप सुनिये ५ मालवदेशमें यज्ञसोम नाम ब्राह्मणके कालनेमि और विगतभय नाम दो पुत्रथे उन पुत्रोंपर वहां के निवासी वहुत प्रेमकरते थे पिताके मरजानेपर युवावस्थाको प्राप्त वह दोनों पुत्र विद्यापढ़ने के लिये पाटलिपुत्र नाम नगरमें गये वहां देवशर्म्मा नाम उपाध्यायसे वहुतसी विद्यापढ़ीं तव उपाध्यायने प्रसन्नहोकर अपनी दोनों कन्या उन दोनों को व्याहदीं इसके उपरान्त कालनेमि अन्य गृहस्थी लोगोंको वहुत धनाढ्यदेखकर ईर्षा से लक्ष्मी मिलनेके लिये अग्नि में हवन

करनेलगा हवनसे प्रसन्नहोके साक्षात् लक्ष्मीजी प्रकटहोकर बोलीं कि तुझे बहुतसाधन मिलैगा और तेरा पुत्र राजाहोगा परन्तु अन्तमें तू चोरके समान माराजायगा क्योंकि तैंने ईर्षा से हवन कियाहै यह कहकर लक्ष्मीजी तो अन्तर्द्धानहोगईं और कालनेमि धीरे २ बड़ा धनवान्‌होगया और कुछ दिन में उसके एक पुत्रभी उत्पन्नहुआ १३ उसकानाम उसने श्रीदत्त रक्खा क्योंकि वह लक्ष्मीजी की कृपासे हुआथा धीरे २ वह श्रीदत्त बड़ाहोकर ब्राह्मणहोनेपर भी अस्त्रविद्या और बाहुयुद्ध मे बड़ा प्रवीणहुआ इसके उपरान्त कालनेमि के भाई विगतभयकी स्त्री को सर्प ने काटखाया इसीसे वह तीर्थयात्राके लिये परदेशको चलागया फिर वहांके गुणग्राही वल्लभशक्ति नाम राजाने श्रीदत्तको विक्रमशक्ति नाम अपने पुत्रका मित्रबनाया इसके उपरान्त अवन्तीदेश के दो क्षत्री बाहुशाली और वज्रमुष्टि नाम उस श्रीदत्त के मित्रहुए फिर श्रीदत्तसे बाहुयुद्ध के द्वारा जीतेगये अन्य गुणज्ञ दक्षिणीलोग और महाबल, व्याघ्रभट, उपेन्द्रबल तथा निष्ठुरक नाम मंत्रियों के पुत्र इसके मित्रहुए एकसमय वर्षाऋतु में श्रीदत्त सब अपने मित्रों को साथलेकर राजपुत्र समेत गङ्गाके तटपर खेलनेकोगया वहांजाकर खेलमें राजाके सेवकों ने राजा के पुत्र को अपनी ओरका राजा बनाया और श्रीदत्त के मित्रों ने श्रीदत्त को अपनी ओरका राजा बनाया २३ यह देखकर क्रोधितहुए राजाके पुत्र ने श्रीदत्त को लड़ने के लिये बुलाया तब श्रीदत्तने मल्लयुद्धकरके राजाके लड़के को पछाड़दिया इसकारण राजाके पुत्रने अपने चित्तमें यह विचार किया कि मैं इसे मरवाडालूं राजा के पुत्रका अभिप्राय समझकर श्रीदत्त अपने मित्रों समेत वहांसे भागआया तब भागते २ मार्ग में यह देखा कि समुद्र में बहतीहुई लक्ष्मीजी के समान गङ्गाजी में बहतीहुई स्त्री जा रही है यह देख उसके निकालने के लिये अपने मित्रों को गंगाजी के किनारेपर छोड़कर श्रीदत्त पानी में घुसा जब उसस्त्री के निकटपहुंचा तो वहस्त्री पानी में डूबगई उसके लेने के लिये श्रीदत्तने भी गोतामारा पानी में गोतामारकर क्षणभरमेंही श्रीदत्तने देखा कि न कहीं पानी है और न वह स्त्री है केवल एकसुन्दर शिवजीका दिव्यमन्दिर बनाहुआ है यह देखकर बड़े आश्चर्य्यसे युक्त थकाहुआ श्रीदत्त श्रीशिवजी को नमस्कारकरके उसी मन्दिरमें रात्रिको रहा ३१ प्रातःकाल सम्पूर्ण गुणों से युक्त मूर्त्तिको धारणकिये लक्ष्मी के समान वहस्त्री शिवजीका पूजनकरने को वहां आई श्रीशिवजी का पूजनकरके वहस्त्री अपने घरकोचली और श्रीदत्त भी उसके पीछे २ चला तब वह स्त्री स्वर्ग के समान अपने स्थान में श्रीदत्त से कुछ विनाबोले चलीगई और भीतरजाके अपने कमरे में पलँगपर जाकर लेटगई वहां सैकड़ों स्त्रियां उसकी सेवाकरनेको मौजूदथी श्रीदत्तभी वहींजाकर उसके निकट बैठगया इसकेउपरान्त वहस्त्री एकाएकी रोदन कर २ आंसूबहानेलगी उससमय श्रीदत्तके चित्त में बड़ीदयाहुई और बोला कि तुमकौनहौ और क्यों रोतीहौ मुझसेकहौ मैं तुम्हारेदुःखको दूरकरूंगा ३८ तब वह बोली कि हम सब एकहज़ार दैत्योंके स्वामी बलिकीपोती हैं इनसबमें मैं बड़ीहूं और मेरा विद्युत्प्रभानामहै हमारे बाबा बलिकोतो विष्णुजी ने बहुतदिनसे बाँधरक्खाहै और पिताकोभी विष्णुही ने बाहुयुद्धमें मारकर हमें हमारेपुरसे निकालदियाहै और हमारे रोकने के लिये एकसिंह वहां बैठालदियाहै

इस से हम अपनेपुर में नहींजासक्ती हैं यहीहमको वड़ादुःख है जवहमने विष्णुसे अपने पुरमें जानेका उपायपूंछा तव उन्होंने यहकहाथा कि कुवेरके शापसे यक्ष सिंहहोगया है जवकोईमनुष्य इसेमारेगा तव इसका शापछूटेगा इससे तुम हमारे शत्रुरूप उससिंहकोमारो क्योंकि इसीलिये मैं तुमको यहांलाईहूं उस सिंहके मारनेसे तुमको मृगाङ्कनाम खड्गमिलैगा जिसकेप्रभावसे तुम सम्पूर्ण पृथ्वीको जीतकर राजा होजाओगे ४५ यहसुनकर श्रीदत्तने वह दिनतो वहीं व्यतीत किया और दूसरे दिन दैत्यकी सब कन्याओंको साथलेकर उसपुरकोचला ४६ वहांजाकर श्रीदत्तने वाहुयुद्ध से सिंहको जीतलिया तव उस सिंहकारूप पुरुषकासा होगया और वह प्रसन्नहोकर शापके छुटानेवाले श्रीदत्तको अपना खड्ग देकर अंतर्द्धानहोगया और दैत्यकी सवकन्याओंका दुःख दूरहोगया इसकेउपरान्त श्रीदत्त सब कन्याओंसमेत उसपुरके भीतरगया और वहां उस विद्युत्प्रभाने एक विषनाशक अंगूठी श्रीदत्तकोदी फिर वहां वैठे २ उस श्रीदत्तका अभिलाप उस विद्युत्प्रभा कन्यापरहुआ तव वह कन्या युक्तिपूर्व्वक श्रीदत्तसेवोली कि मगरके भयके दूरकरनेवाले इसखड्गको लेकर तुम वावड़ी में गोतामारो उसकेकहनेसे जवश्रीदत्तने गोता मारा तो गंगाजी के उसीतटपर जानिकला जहां से कि यहकूदाथा ५२ इसप्रकार दैत्यकीकन्यासे छला गया श्रीदत्त खड्ग और अंगूठीसमेत पातालसे निकलकर आश्चर्य्य और खेद दोनों से युक्तहोगया फिर अपने मित्रों के ढूंढ़ने के निमित्त अपने घरकीतरफचला रास्ते में कुछ दूर चलकर निष्ठुरकनाम मित्र उस को मिला निष्ठुरक उसको प्रणामकरके और एकान्तमे जाकर उससेवोला कि गंगामें डूवेहुए तुमको वहुतदिनोंतक ढूंढ़कर हमलोग अपना शिरकाटनेको तैयारहुएथे कि यह आकाशवाणीहुई कि हे पुत्रो अपना शिरमतकाटो तुम्हारा मित्र तुम्हें मिलजायगा उस आकाशवाणी को सुनकर हमलोग तुम्हारे पितासे यह वृत्तांत कहनेको चले थे कि मार्ग में किसी पुरुषने जल्दी से आकर यहकहा कि तुमलोग अभी इसनगर मे मतजाओ क्योंकि यहांका राजा वल्हभशक्ति मरगया और मन्त्रियोंने उसके पुत्र विक्रमशक्ति को राज्य देदिया राज्य मिलनेके दूसरे दिन विक्रमशक्तिने कालनेमिके घरपरजाकर पूंछा कि तेरापुत्र श्रीदत्त कहांगयाहै उसने कहा कि मैं नहीं जानता तव विक्रमशक्तिने यहकहकर कि इसने अपने पुत्रको छिपारक्खा है उस तुम्हारे पिताको शूलीपर चढादिया ६२ यह देखकर तुम्हारी माता का हृदय आपही फटगया ठीकहै कि दुष्टो के पाप वहुत अन्य २ पापों से और भी भारीहोजाते हैं ६३ अव वह विक्रमशक्ति श्रीदत्त और श्रीदत्तके मित्रोंकोभी मारनेको ढूंढ़ता है उसपुरुष के ऐसे वचन सुनकर वाहुशालि आदिक तुम्हारे पांच मित्र तो उज्जयिनीको चलगये और मुझे तुम्हारे लिये यहां छिपाकर छोड़गये हैं तो चलो जहांहमारे वह पांचोंमित्रहैं वहीं चलें निष्ठुरक के ऐसे वचन सुनकर और अपने माता पिताका वड़ा शोककरके वदलालेने के लिये श्रीदत्त अपने खड्गको देखने लगा फिर समयको विचारकर निष्ठुरकके साथ अपने मित्रों से मिलनेके लिये श्रीदत्त उज्जयिनीको चला ६८ फिर अपने सम्पूर्ण वृत्तान्तको मित्रसे कहतेहुए श्रीदत्तने मार्ग में रोतीहुई एक स्त्री देखी तवपूंछने से वह वोली कि मैं मालवदेशको जातीथी सो मार्ग भूलगईहूं उसके यहवचन सुनकर दयासे उनदोनोंने उसेभी अपने

साथमें लेकर उसदिन सायङ्कालके समय किसी उजड़ेहुए गांवमें निवासकिया वहां एकाएकी रात्रिमें जगेहुए श्रीदत्तने देखा कि वह स्त्री निष्ठुरकको मारकर उसकामांस बड़ीप्रसन्नतासे खारही है तब श्री- दत्त अपने मृगाङ्कक खड्गको लेकर उठा और वह स्त्री भी राक्षसी होगई जब श्रीदत्तने उसको मारने के लिये उसके शिरके बालपकड़े तब उसका दिव्य स्वरूपहोगया और बोली कि हे महाभाग मुझे मतमारो मैं राक्षसी नहींहूं मुझको विश्वामित्रका यहशापथा ७५ एकसमय कुबेरके अधिकारके लेनेके लिये तप करतेहुए विश्वामित्रके तपमें विघ्नकरनेके निमित्त कुबेरने मुझे भेजा वहां सुन्दररूपसे जब मैं विश्वामित्र को अपने वशमें न करसकी तब भयङ्कर रूपकरके मैं उनको डराने लगी यहदेखकर विश्वामित्रने मुझे शापदिया कि हे पापिन तू मनुष्योंकी मारनेवाली राक्षसीहोजाय फिर मेरे प्रार्थना करनेपर विश्वामित्रने यह भी कहा कि जब श्रीदत्त तेरे बालपकड़ेगा तब तेरा शापछूटेगा तभी से मैं राक्षसी होगईहूं और मैंने ही बहुतसे दिनों से इसनगरको ग्रसरक्खाथा अब तुम्हारी कृपासे मेरा यहशाप छूटगयाहै तुम जो चाहो सो मुझसे वरमांगो श्रीदत्तने यही वरमांगा कि मेरामित्र जी जावे उसने कहा ऐसाहीहोगा यह कहकर चलीगई और निष्ठुरक जी उठा ८२ इसके उपरान्त निष्ठुरकको साथलेकर श्रीदत्त धीरे २ उज्जयिनी को पहुंचा जैसे कि मेघको देखकर नीलकण्ठ प्रसन्नहोते हैं उसीप्रकार श्रीदत्त और निष्ठुरकको देखकर उसकेमित्र प्रसन्नहुएफिर बाहुशाली नाम मित्र श्रीदत्तको सत्कार पूर्व्वक अपने घरलेगया और श्रीदत्तने उससे अपना सम्पूर्ण वृत्तान्तकहा बाहुशालीके घरमें उसकेमाता और पितासे सेवनकियाहुआ श्रीदत्त अपने सम्पूर्ण मित्रोंसमेत प्रसन्नतापूर्व्वक रहनेलगा ८६ एकसमय वसन्तके उत्सवमें श्रीदत्तअपनेमित्रों समेत किसीबगीचेकी सैरकोगया वहां बिम्बकनाम राजाकी मृगांकवतीनाम कन्याकोसाक्षात् वसन्तऋतु की लक्ष्मीके समानदेखकर श्रीदत्त कामके वशीभूतहोगया और श्रीदत्तको देखकर वहकन्याभी उसपर आशक्त होगई उसकन्याको वृक्षोंकी आड़में चलीगई देखकर श्रीदत्त बहुतविकलहोगया श्रीदत्तकी यह दशा देखकरबाहुशाली बोला कि हे मित्र मैं तुम्हारे चित्तकाहालजानगया मुझसे मतछिपाओ चलोवहीं चलें जहां वह राजकन्यागई है बाहुशाली के यहवचन सुनकर श्रीदत्त बाहुशालीके साथ जहां वहराज कन्यागई थी वहींगया उससमय यहचिल्लाहट सुनाई पड़ी कि हाय२ राजकन्याको सर्पनेकाटखाया ९४ तब बाहुशाली ने उसके कंचुकी अर्थात् ख्वाजेसरायसे कहा कि हमारे मित्रकेपास विषनाशक अंगूठी और विद्याहै यहसुनकर वहकंचुकी श्रीदत्तके पैरोंपर गिरकर उसको राजकन्याकेपास लेगया श्रीदत्तने वहां जाकर अपनी अंगूठी राजकन्याकी उंगलीमें पहरादी और मन्त्रपढ़नेलगा इससे वह राजकन्या जीउठी और सबलोग श्रीदत्तकी प्रशंसा करनेलगे इसवृत्तान्तको सुनकर उसकन्याका पिता राजाबि- म्बकभी वहांआया इससे श्रीदत्त अपने मित्रों समेत अंगूठी को बिनालिये वहांसे चलाआया राजाने प्रसन्नहोकर जो कुछ सुवर्णादिक पदार्थ श्रीदत्तकोभेजे वहसब उसने बाहुशालीकेपिताको देदिये १०० इसके उपरान्त उसराजकन्याकी यादकरके श्रीदत्तको इतनाखेदहुआ कि जिसके देखने से उसकेमित्र लोगभी बहुत व्याकुलहुए तब भावनिकानाम राजकन्याकी एकप्यारीसखी अंगूठीदेनेके बहानेसेआई

और बोली कि हे श्रीदत्त हमारी राजकन्याका यहनिश्चय विचारहै कि यातो तुमसे विवाहकरेगी या शरीरको त्यागदेगी भावनिका के यहबचन सुनकर श्रीदत्त बाहुशाली, भावनिका और अन्यसम्पूर्ण मित्रमिलकर यह सलाहकरनेलगे कि राजकन्याको हम सबलोग यहांसे हरलेचलें और मथुरामें जाकर रहें १०५ ऐसी सलाहहोजानेपर भावनिका वहांसे चलीगई दूसरेदिन बाहुशाली अपने तीनमित्रोंसमेत रोजगारके बहाने से मथुराकोचलागया यहां श्रीदत्तने कन्यासमेत किसीस्त्रीको मद्यपिलवाकर राजकन्याकेघरमें रखदिया तब दीपक बालनेके बहानेसे उसघरमें आगलगाकर राजकन्या भावनिकासमेत बाहरनिकलआई ११० उसीसमय बाहरखड़ेहुए श्रीदत्तने अपने दोमित्रोंसमेत राजकन्याको आगेकरके गयेहुए बाहुशालीकेपास भेजदिया और राजकन्याके मकानमें वहकन्यासमेत स्त्रीजलगई लोग यह समझे कि राजकन्या अपनी सखीसमेतजलगई श्रीदत्त उसीप्रकार प्रातःकालतक वहांरहा और दूसरे दिन अपनेमृगांककनाम खड्गकोलेकर अपनी प्रियाकेपासचला रात्रिभरमें बहुतसेमार्गको उल्लंघनकरके श्रीदत्त पहरभर दिनचढ़े बिन्ध्याचलके वनमेंपहुंचा वहांउसेबहुतसे दुश्शकुनहुए और पीछेसेउसने देखा कि भावनिकासमेत उसकेसंपूर्णमित्र वहां घायलपड़ेहैं वहसब श्रीदत्तको देखकर बोले कि आज बहुतसे घुड़सवारों ने हमकोलूटलिया और हमलोगोंके घायलहोजानेपर एकघुड़सवार राजकन्याको अपने घोड़ेपर सवारकराकेलेगया जबतक वहउसेदूर न लेजाय तबतक तुमदौड़कर उसेपकड़लाओ और हमारे पास मतठहरो क्योंकि वही उन सबमें मुख्यहै ११६ उन मित्रोंके ऐसे वचन सुनकर श्रीदत्त वेग पूर्वक वहांसेचला और बहुत दूरजाकर उसने देखा कि एक घुड़सवारोंकी फौज चलीजातीहै और उस सेना के बीचमें कोई तरुण क्षत्री अपने घोड़ेपर राजकन्याको बैठाये हुए चलाजाताहै यह देखकर वह उस क्षत्रीके पास गया और समझाकर राजकन्याको मांगने लगा जब वह समझाने से भी न माना तब श्रीदत्तने उसका पैर पकड़कर घोड़ेपरसे खींचलिया और उसे मारडाला और उसी घोड़ेपर चढ़कर अन्य आनेवाले बहुत से घुड़सवारोंको मारनेलगा फिर जो कुछ कि मारने से बचे वह उसके दिव्य बलको देखकर भयखाकर भागगये १२५ फिर श्रीदत्त राजकन्या समेत घोड़ेपर सवारहोकर अपने मित्रोंके पासचला थोड़ी दूर चलकर लड़ाई में बहुत घायल होनेवाला वह घोड़ा श्रीदत्तके उतर आने पर गिरकर मरगया उससमय मृगांकवती डर और कामसे बहुत थकीहुई होके प्यासीहुई तब राजकन्या को वहीं बैठालकर श्रीदत्त पानी लेनेके लिये बहुतदूर चलागया पानी ढूंढतेही ढूंढते उसे शाम होगई फिर जलके मिलने पर भी मार्ग भूलजानेके कारण श्रीदत्त रात्रिभर उसी जंगलमें चिल्लाया किया प्रातःकाल जहां वह घोड़ा मरापड़ाथा वहां आया और राजकन्या को वहां न पाया तब वह अपने मृगांकक नाम खड्गको वृक्षके नीचे रखकर राजकन्याको देखने के लिये वृक्षपर चढ़गया १३२ उसी समय उस रास्ते से कोई लुटेरोंका राजा आया और आकर उसने वृक्षके नीचे रक्खाहुआ खड्ग उठा लिया उसे देखकर श्रीदत्त वृक्षके नीचे उतरकर उस्से यह बात पूंछने लगा कि तुमको कोई स्त्री तो नहीं मिलीहै तब वह बोला कि मेरेगांवको जाओ वही वहभी गईहै और वहीं आकर मैं तुझे यह खड्ग

भी दूंगा यह कहकर उसने श्रीदत्तको अपने आदमियों के साथ अपने गांवको भेजदिया १३६ उस गांवमें जाकर उन मनुष्योंने उससेकहा कि थोड़ीदेर सुस्तालो तब श्रीदत्त थकातोथाही लुटेरों के राजा के घरमें क्षणभर सोगया फिर जगकर क्यादेखता है कि उसके पैरोंमें वेड़ी पड़ीहुई हैं इसके उपरान्त क्षणभर सुख देनेवाली और क्षणभरमेंही दुख देनेवाली दैवकी गतिके समान अपनी प्रियाको शोचने लगा एकदिन मोचनिकानाम कोई दासी वहां आकर उससे बोली कि यहां तुम अपने प्राण देने के लिये क्यों आयेहो लुटेरों का राजा अभी किसी कामके लिये कहीं गयाहै लौटकर तुम्हें भगवतीको बलिदेदेगा इसीलिये तुमको यहां युक्तिपूर्व्वक भेजाहै और इसीसे तुम्हारे पैरों में वेड़ीभी डालीगई हैं उसने तुमको भगवती के बलिदानके लिये भेजाहै इसीसे यह लोग तुम्हारी खानेपीने की बड़ी खातिर करतेहैं १४३ तुम्हारे छूटनेका एक उपायहै जो तुम मानो तो इस लुटेरों के राजाकी लड़की सुन्दरीनाम है वह तुम्हें देखकर अत्यन्त कामातुर हुईहै अगर तुम उसके साथ संभोग करोगे तो तुम्हारे प्राण बच- जायँगे उसके यह वचन सुनकर श्रीदत्तने छुपकर उस सुन्दरी के साथ अपना गान्धर्व बिवाहकरलिया रोज रात्रिके समय उसकी वेड़ीको खोलकर वह सुन्दरी उसके साथ भोग किया करतीथी और फिर वेड़ी डाल देतीथी इसके उपरान्त थोड़ेही दिनोंमें सुन्दरी गर्भवती हुई और यह सम्पूर्ण वृत्तान्त उसकी माता मोचनिका नाम दासीके मुखसे सुनकर दामादके प्रेमसे एकान्तमें श्रीदत्तके पासगई और बोली कि हे पुत्र श्रीचंड नाम इस सुन्दरी का पिता जो इस वृत्तान्तको जानेगा तो तुम्हें मारे विना न छो- ड़ेगा इसलिये तुम यहां से चलेजाओ और सुन्दरी को न भूलना १४८ यह कहकर उसकी सासने उसे वहां से छुड़वादिया तब श्रीदत्त सुन्दरी से यहकहकर कि मेराखड्ग तेरे पिता के पास है वहां से चलाआया फिरमृगांकवती के ढूंढ़ने के लिये चिन्तासे व्याकुल उसीवनमें घुसा और वनमें घुसने के समय इसको अच्छे २ शकुनहुए उनउत्तम शकुनों को देखकर जहां इसका घोड़ामराथा और मृगांक- वती खोईथी वहां आया और उसजगह साम्हने आतेहुए एक वहेलिये से भी उसीमृगांकवतीको पूछा- तब उसने कहा कि क्यातुम्हारा श्रीदत्तनाम है फिर यह बोला कि अभागा श्रीदत्तमैंही हूं तबवह बोला कि सुनो मैंने यहां रो २ कर तुम्हें ढूंढ़तीहुई तुम्हारी स्त्री को देखकर और संपूर्ण वृत्तान्तभी उससे पूछ- कर उसेसावधान किया और फिर दयापूर्व्वक इसवनसे उसको अपने गांवमें लेगया फिरगांव में जवा- न २ वधिकोंको देखकर मथुराके निकट नागस्थल नामगांवमें विश्वदत्त नाम एक वृद्धब्राह्मण के यहां मैंने उसेसुपुर्द करदिया फिर तुम्हारी स्त्रीसे तुम्हारे नामको पूछकर मैं तुमको तलाशकरने यहां आयाहूं अब तुमशीघ्र नागस्थल में जाकर अपनी स्त्रीको लेलो १४९ उसके यह वचन सुनकर श्रीदत्तवहाँ से चला और दूसरेदिन नागस्थल में पहुंचा और विश्वदत्त ब्राह्मणके घरमेंजाकर श्रीदत्त यह वचनबोला कि वहेलिये की सुपुर्द कराईहुई हमारी स्त्रीको तुमदेदो यहसुनकर विश्वदत्त ने कहा कि मथुरा में राजा सूरसेन का उपाध्याय तथा मंत्री एकब्राह्मण मेरामित्रहै उसी के यहां मैंने तुम्हारी स्त्री को भेजदिया है, क्योंकि इसनिर्जन गांवमें उसकी रक्षा नहीं होसक्तीथी तो प्रातःकाल तुम वहींजाना आजयहाँही रहो

विश्वदत्त के कहने से श्रीदत्त रात्रिभर वहां रहा और प्रातःकाल मथुराकोचला फिर दूसरेदिन मथुरा के निकट पहुंचकर बहुत मार्गचलनेसे चेष्टा मैलीहोगईथी इसलिये निर्मलजलवाली एकवावड़ी में स्नान करनेलगा वहां जलके भीतर चोरोंका रक्खाहुआ एकवस्त्र मिला जिसके कि किनारों में रत्नोंकाहार बँधा हुआ था तब वह उस वस्त्रको लेकर हारको विनादेखे श्रीदत्त मथुरामें घुसा वहां उसवस्त्रको पहचानकर और उसमें रत्नोंकाहार बँधादेखकर राजाके सिपाही उसे चोर कहकर बाँधके कोतवाल के पास ले आये कोतवालने राजासे कहा और राजाने उसकेमारनेका हुक्मदेदिया १७० तब मारने के लिये बधकरनेके स्थानमें राजाके सिपाही ढंढोरा पीटतेहुए श्रीदत्तको लेचले इसप्रकारसे जातेहुए श्रीदत्तको मृगांकवती ने देखा और जिसके घरमें रहती थी उसमंत्री से बोली कि यहीमेरापति है जिसको मारनेकेलिये राजा के सिपाही लियेजाते हैं यहसुनकर मंत्रीने उन बधकरनेवालोंको रोकदिया और राजासे कहकर उसे बध से छुड़वादिया और अपने घरमे लेआया इसके उपरान्त श्रीदत्तमंत्रीको देखकर अपने चित्तमें शोचने लगा कि यह वही मेरा विगतभयनाम चचाहै जो कि परदेशको चलागयाथा और भाग्यवशसे यहाँ आकर मंत्रीहुआ इसप्रकार उसे पहचानके और पूछकर उसके पैरों मे गिरपड़ा १७५ विगतभयभी अपने भाईके पुत्रको पहचानकर और उसे कंठमेंलगाकर संपूर्णवृत्तान्त पूंछनेलगा तब श्रीदत्तने अपने पिता की मृत्युसे लेकर अपना सबवृत्तान्त अपनेचचाको सुनादिया उस श्रीदत्तका सम्पूर्णवृत्तान्त सुनकर विगतभयके आंसू निकलआये और एकान्तमें अपनेभतीजेसे बोला कि हेपुत्र धीरजधरो मुझे यक्षिणी सिद्धहै उसने मुझे पांचहजारघोड़े औरसातकरोड़अशर्फी दी हैं वह सब धन तुम्हाराहीहै क्योंकि मेरे कोई पुत्र नहीं है यहकहकर उसने श्रीदत्तकीस्त्री श्रीदत्तके सुपुर्द करदी और श्रीदत्तनेभी बहुतसा ऐश्वर्यपाकर उसके साथ अपनाविवाह करलिया जैसे कि रात्रिसे चन्द्रमाकी शोभाहोती है उसीप्रकार वहां रहतेहुए श्रीदत्तकी शोभा मृगांकवती से हुई यद्यपि श्रीदत्तको ऐसा ऐश्वर्य्य प्राप्तभी हुआथा तथापि उसके चित्तमें बाहुशालि आदिक मित्रोंकी चिन्ता बनीही रहतीथी एकसमय विगतभयने श्रीदत्तको एकान्तमें बुलाकर कहा कि हे पुत्र यहांके राजा शूरसेनकी कन्याको राजाकी आज्ञासे किसीके देनेके लिये उसे लेकर मैं अवन्ती देशको जाऊंगा तो इसी बहानेसे उसकन्याको मैं तुम्हे देदूंगा तब उस कन्याकेसाथ जो फौजहोगी वह और मेरी सब फौजको लेकर जो राज्य लक्ष्मीजीकी कृपासे तुम्हें मिलनेवालाहै वह शीघ्रही तुम्हे मिलजायगा १८५ यह निश्चय करके सेना और अपनी मृगांकवती आदि घरके लोगों के समेत वह दोनों चचा भतीजे उस कन्याको लेकर वहांको चले इसके उपरान्त जब विन्ध्याचल पर यह दोनो पहुंचे तब बहुतसी डांकुओंकी सेना वहां आई और इन्हें रोककर बाणोंसे मारनेलगी तब श्रीदत्तकी सम्पूर्ण सेना के भाग जानेपर प्रहारसे मूर्च्छितहुए श्रीदत्तको बांधकर और उसका सम्पूर्ण धनलेकर डांकू अपनेगांवों को चलेगये फिर सम्पूर्ण डांकू श्रीदत्तको बलिदान देनेके लिये भगवतीके मंदिरमें चलेगये और घंटा बजानेलगे फिर वहां अपने लड़के समेत आई हुई सुन्दरी नाम भीलों के राजा की कन्याने श्रीदत्तको देखा और सब डांकुओंको हटाकर श्रीदत्तको लेकर बड़े आनन्द पूर्व्वक देवीके मन्दिरमें गई इसके उप-

रान्त भीलोंका राजा जो मरतेसमय अपना सब राज्य अपनी कन्याको देगयाथा वह श्रीदत्तको मिला क्योंकि उसके कोई पुत्र न था और वह सम्पूर्ण डांकुओंका लियाहुआ धन भी बचा तथा मृगांकवती समेत श्रीदत्त को मिलगया फिर उस कन्यासे मृगाङ्कक नाम अपने खड्गकोपाकर और शूरसेन नाम राजाकी कन्यासे विवाहकरके श्रीदत्त वहांका बड़ाभारी राजाहोगया तब श्रीदत्तने अपने दोनों सुसर विंबक और शूरसेनके पास दूतभेजे तब वह दोनों यह सुनकर अपनी २ सेनालेकर अपनी २ कन्याओंके स्नेह से वहां आये फिर बाहुशाली आदिक मित्र भी घावों के अच्छेहोजानेपर श्रीदत्तके सब वृत्तांतको सुनकर वहां आये इसके उपरान्त ससुरों समेत श्रीदत्त ने पिता के मारनेवाले राजा विक्रमशक्ति को जाकरमारा और मृगाङ्कवती समेत सम्पूर्ण पृथ्वीका राज्यपाकर विरहके उपरान्त श्रीदत्त अत्यन्त प्रसन्न हुआ इस प्रकारसे हे राजा बड़ेवियोग और नाना आपत्तिरूपी समुद्रको पारहोकर धीरपुरुष आनन्दको पाते हैं संगतकक्कथकसे इस कथाको सुनकर राजा सहस्रानीकने वह रात्रि मार्ग में व्यतीतकी फिर प्रातःकाल पहले तो मनोरथोंपरचढ़कर राजाका चित्तचला और पीछे राजा सहस्रानीकचला थोड़ेदिनोंमें राजामहर्षि जमदग्निजी के आश्रममें पहुँचा वह ऐसा उत्तम आश्रमथा कि जिसमें पशु पक्षीभी अपनी चपलताको छोड़कर शान्तवृत्ती में रहते थे वहां अतिथियों के सम्पूर्ण सत्कारकरनेवाले जमदग्निजीको देखकर राजाने प्रणामकिया तब अपने दर्शन से मनुष्यों को पवित्र करनेवाले तपके समूह महर्षिजमद-ग्निजी ने बहुतदिनसे छुटीहुई पुत्र समेतरानी मृगावती राजाको देदी २०५ शापके अंतमेंपरस्पर देखने से उनदोनोंके जो आंसू आगयेथे वह आंसू न थे मानो अमृतकी वृष्टि थी राजाने अपने उदयन्नाम पुत्रको प्रथमही देखकर आलिङ्गन करके बहुतदेरमें छोड़ा इसके अनन्तर जमदग्निजी से पूंछकर उद-यन् समेत अपनी रानी मृगावतीको लेकर राजा आश्रमसे चला उससमय राजाके भेजनेको आंसूभरे हुए मृगभी तपोवनतक चलेआये २०६ रानीके विरहकी वातोंको सुनताहुआ और अपने विरहकी वातों को कहताहुआ राजा सहस्रानीक अपनी कौशाम्बी नगरी में पहुंचा रानी और पुत्र समेत राजा को आयाहुआ देखकर प्रजाके सम्पूर्ण लोग अत्यन्त प्रसन्नहुए राजाने अपने पुत्रके गुणोंको देखकर उसे युवराज पदवी देदी और अपने मंत्रियों के पुत्र जिनका कि वसन्तक रुमण्वान और यौगन्धरायणनाम था उनतीनोंको उसका मंत्री बनादिया उससमय पुष्पवृष्टि संयुक्त आकाशसे वाणीहुई कि इनमंत्रियों के साथ उदयन् सम्पूर्ण पृथ्वीका राजाहोगा इसके उपरान्त अपने पुत्रको राज्यकाभार सौंपकर राजा मृगावती समेत संसारका सुख भोगने लगा कुछ दिनके उपरान्त राजा कानके पासके बालों को श्वेत देखकर शान्तहोगया और विषय भोगकरनेकी सब इच्छा जातीरही तब उदयन्नाम अपने पुत्रको राज्य देकर अपने मंत्री और मृगावती समेत राजा सहस्रानीक तपकरने के लिये हिमालयको चलागया २१७॥

इति श्रीकथासरित्सागरभाषायांकथामुखलम्बकेद्वितीयस्तरङ्गः २ ॥

इसके उपरान्त राजाउदयन् वत्सदेशके राज्यकोपाकर अच्छेप्रकारसे प्रजाओं का पालनकरनेलगा फिर धीरे २ यौगन्धरायण आदिक मंत्रियोंपर राज्यकेभारको छोड़कर केवल सुखका भोगकरनेलगा स-

देव शिकार करताथा और ब्राह्मणकी दीहुई वीणाको रात्रि दिन बजाया करताथा वीणाके मधुरशब्दको सुनकर वशीभूतहुए मतवाले वनके हाथियोंको बँधवाकर लेआताथा और मंत्रियों के सन्मुख वेश्याओंके साथ मद्यपीताथा राजाको केवल यह चिन्तालगीरहती थी कि मेरे कुल और स्वरूपके अनुरूप स्त्री कहीं नहीं है एक वासवदत्तानाम कन्या सुनाई देती है सो वह कैसे मिलसक्ती है और उज्जयिनी में उसकन्या का पिता राजा चण्डमहासेनभी यह विचाराकरताथा कि मेरी कन्याके अनुरूप पति संसारभरमें कोई नहीं है एकउदयन्नाम है सो वह सदैवका हमाराशत्रु है तो किसप्रकारसे उदयन् हमारे वशीभूतहोकर इसकन्याको ग्रहणकरे एकउपायहै कि उदयन्वनमें अकेला शिकारके शौकसे सदैव हाथियोंको पकड़ा करताहै वहीं से युक्तिपूर्व्वक उसको बँधवा मँगवाऊं और उससे अपनी कन्याको गानसिखवाऊं तब वह आपही मेरी कन्याको देखकर मोहितहोगा इसप्रकारसे वशीभूतहोकर मेरादामाद होजायगा इसके सिवाय उसके वशकरनेका कोई दूसरा उपायनहीं है १२ यह शोचकर राजा भगवती के मंदिरकोगया और भगवतीकी पूजा तथा स्तुतिकरके अपनी कन्याके लिये वही राजा उदयन् वरमांगा तब उस मंदिरसे यह आवाजआई कि हे राजा तुम्हारा यहमनोरथ थोड़ेही दिनों मे पूराहोजायगा यहसुनकर प्रसन्नहुआ राजा बुद्धिदत्तनाम अपने मंत्री से भी यही विचार करनेलगा कि उदयन् बड़ामानी निर्लोभ तथा महाबलवान् है और उसकेमन्त्रीआदि सेवकभी उससे बड़ा अनुरागकरते हैं इससे यद्यपि उसके साथ कोई उपायनहीं चलसक्ताहै परन्तु पहले सामकरनाचाहिये यह सलाहकरके राजाने एकदूतसेकहा कि तुमवत्स देशके राजासे जाकर यहकहो कि हमारीकन्या तुम से गानविद्या सीखनाचाहती है जो तुम्हें हमलोगों पर स्नेह होय तो उसे यहांआनकर सिखाओ राजाके यहवचन सुनकर वहांसे चलाहुआ दूत कौशाम्बी में आया और संपूर्ण अपनेराजाका संदेशा उदयन्राजा से कहसुनाया दूतसे यह अनुचित वचन सुनकर उदयन् एकान्तमें अपनेमन्त्री यौगन्धरायण से बोला कि उसराजाने अभिमान पूर्व्वक हमारे पास यहक्या संदेशा भेजाहै और इससे उसका क्या अभिप्राय है २१ उदयन् के यहवचन सुनकर अपने स्वामीके हितका चाहनेवाला महामन्त्री यौगन्धरायण बोला कि हे महाराज संसारमे लताकेसमान जो आपके शौककी शोहरत फैलरही है उसी का यह बुराफलहै वह तुम्हें शौकीनसमझकर कन्याके लोभ से बुलाकर पकड़नाचाहताहै इसलिये तुम शौकोंको छोड़दो क्योंकि गड्ढेमें पड़ेहुए वनके हाथियो के समान शौकोंमें डूबेहुए राजाओंको शत्रुलोगपकड़लेते हैं मंत्रीके यह वचन सुनकर उदयन्ने राजा चंड महासेनकेपास अपने दूतकेद्वारा यहसंदेशाभेजा कि जो तुम्हारीकन्या हमसे गान विद्यासीखना चाहती है तो उसे यहांही भेजदो इसके उपरान्त उदयन्ने अपने मंत्रियों से यह कहा कि अब हमजाकर राजा चंडमहासेनको यहां बांधेलाते हैं यह सुनकर महामन्त्री यौगन्धरायण बोला कि यहनहीं किया जासक्ता और योग्यभी नहींहै क्योंकि उसराजाका बड़ाप्रभावहै तुमकोभी उससे मेल करना चाहिये सुनो मैं वहांका सब हाल तुमसे कहताहूं ३० अपने बड़े २ श्वेत मकानों से मानो स्वर्गको भी हँसतीहुई उज्जयिनीनाम नगरी है जिसमें श्रीशिवजी कैलाशके निवासको छोड़कर महाकाल के स्वरूपको धारणकरके निवास

करते हैं उस नगरी में महेन्द्रवर्म्मा नाम वड़ा श्रेष्ठ राजा हुआथा उसके जयसेन नाम पुत्र हुआ और उस के वड़ा वलवान् महासेननाम राजाहुआ उस राजाने अपने राज्य करते २ एकसमय यह शोचा कि मेरे पास न मेरे लायक कोई खड्गहै और न कोई मेरे योग्य कुलीन स्त्री है यह शोचकर राजा भगवती चंडिका जी के मन्दिरमें गया और निराहार होकर वहुत दिन भगवतीका भजन करतारहा और पीछेसे अपनेमांस को काट२ कर हवन करनेलगा तव प्रसन्नहोकर साक्षात् भगवती ने उससेकहा कि हे पुत्र तेरेऊपर मैं प्रसन्न हूं तू इस मेरे खड्गको ले इसके प्रभावसे कोई शत्रु तुझे जीत न सकेगा और अंगारकासुर की अत्यन्त सुन्दर अंगारवतीनाम कन्या तुझे शीघ्रही मिलैगी तूने यह वड़ा चण्ड अर्थात् घोरकर्म कियाहै इससे तेरा नाम चण्डमहासेन होगा ४० यह कहकर और खड्ग देकर भगवती अन्तर्द्धान होगई तब वह राजा अत्यन्त प्रसन्न होगया जैसे इन्द्रके पास वज्र और ऐरावत हाथी है उसीप्रकार उस राजाके पास भगवती का दियाहुआ खड्ग और नड़ागिरिनाम हाथी है इन दोनोंके प्रभावसे सुखपूर्व्वक राज्य करताहुआ वह राजा किसीसमय शिकारखेलनेको वनमेंगया वहां जाकर दिनके प्रभावसे इकट्ठेहुए अन्धकारके समान श्यामरंगवाला एक वड़ा भारी सूअर दिखाईपड़ा तव राजाने उसके वहुतसे वाणमारे तिसपरभी उसकी देहमें कोई घाव न हुआ और राजाके रथमें टक्करमारकर वह अपने भिटे में चलागया तव राजाभी रथको छोड़कर धनुषवाण लेकर उसके पीछेही उस भिटेमें घुसा वहुत दूरजाकर वहां एक वड़ा उत्तम पुर दिखाई पड़ा राजा वहां जाकर आश्चर्य्य करके किसी वावड़ीके किनारे पर वैठगया वहां राजाने सैकड़ों स्त्रियों से घिरिहुई और धीरोंकेभी धीरकी छुटानेवाली एक कन्यादेखी ४८ वह कन्याभी राजाको वड़े प्रेमपूर्व्वक देखकर धीरे से वोली कि हेसुन्दर तुम कौनहो और किसलिये यहां आयेहो तवराजाने अपना सम्पूर्ण हाल कहदिया यह सुनकर वह कन्या अधीरहोकर रोनेलगी तवराजाने उससे पूंछा कि तुम कौनहो और किसलिये रोतीहो यह सुनकर उसने काम के वशीभूत होकर कहा कि यह जो सूअर तुमने देखाथा वह अंगारक नाम दैत्यहै और मैं उसकी अंगारवती नाम कन्याहूं मेरे पिताका शरीर वज्रकाहै राजाओं के घरसे सौराजकन्या लाकर उसने मेरीदासी वनाई हैं शापके दोषसे राक्षस होनेवाले मेरे पिताने तृषा और परिश्रमसे व्याकुलहोकर तुम्हें पाकरभी छोड़दियाहै इससमय वह शूकरके रूपको त्यागकर सो रहाहै जव सोकर उठेगा तो अवश्य तुम्हें मारेगा इसीसे तुमको देख२कर मेरे वार२ आंसू आरहे हैं ५७ अंगारवती के यह वचनसुनकर राजा वोला कि जो हमारेऊपर तुम्हारा स्नेहहै तो तुम यह हमारा कहनाकरो कि जव तुम्हारा पिता सोकर उठे तव तुम उसके आगे रोनेलगना तव वह जरूर तुमसे दुःखकाकारण पूंछेगा उस समय तुम उससे कहना कि अगर तुमको कोई मारडाले तो मेरी कौनगतिहोगी यही मुझे दुःखहै ऐसा करने से हमारा और तुम्हारा दोनोंका कल्याणहोगा राजाके इनवचनोंको मानकर और राजाको छिपाकर अंगारवती जहां उसका पिता सोताथा वहां चलीगई जव वह दैत्य उठा तव वह रोनेलगी उसे रोतेदेखकर उसने पूँछा कि हे कन्या तू क्यों रोरही है उसनेकहा कि अगर तुमको कोई मारडाले तो मेरी क्यागति होगी इसी दुःखसे मैं रोरहीहूं तव वह हँसकरवोला कि मुझे कौन मारसक्ताहै मेराशरीर वज्रकाहै मेरे वायें

हाथ में एक छिद्रहै उसे मैं धनुपसे छिपायेरहताहूं इसप्रकार उस दैत्यने अपनी कन्याको समझाया और यह सब बातें इस छिपेहुए राजाने सब सुनलीं ६६ इसके उपरान्त वह दैत्य स्नानकरके मौनहोकर श्रीमहादेवजीका पूजनकरनेलगा उससमय प्रकटहोकर धनुषचढायेहुए राजाने उसे युद्धकरने के लिये बुलाया तब उस दैत्यने बायेंहाथको हटाकर यह इशाराकिया कि क्षणभरठहरजाओ राजाने उसीसमय उस दैत्य के उसीछिद्र में बाणमारा तब वर्म्मस्थान में चोटलगने से बड़ाघोर शब्दकरके वह दैत्य पृथ्वी मे गिरपड़ा और यह कहकर मरगया कि जिसने मुझ प्यासेको माराहै वह जो हरसाल मुझको जलसे तृप्त न करेगा तो उसके पांचमंत्री मरजायँगे तब राजा उस कन्याको लेकर उज्जयिनी अपनी नगरीको चलाआया और वहां आकर उसके साथ विवाह किया तब उसके दो पुत्र उत्पन्नहुए एक गोपालक और दूसरा पालक उनके उत्पन्नहोने मे राजाने बड़ा इन्द्रोत्सव किया तब स्वप्न में राजा से इन्द्रने कहा कि हमारी कृपासे तुम्हारे एक बड़ी अपूर्व्व कन्याहोगी फिर कुछकालके व्यतीतहोनेपर उस राजा के चन्द्रमाकी मूर्त्तिके समान एक अपूर्व्व कन्या उत्पन्न हुई और उससमय यह आकाशवाणी हुई कि कामदेवका अवतार इस कन्याका पुत्रहोगा और वह सम्पूर्ण विद्याधरोंका राजाहोगा फिर राजाने यह कन्या इन्द्रकी दीहुई है इसकारण उसका नाम वासवदत्तारक्खा ७९ अब समुद्र मे लक्ष्मीके समान उस राजाके यहां वह कन्या किसी के देने केही लिये है हे राजा इसप्रकारके प्रभाववाला वह चण्डमहासेन राजा जीतने के योग्य नहीं है परन्तु वह राजा अपनी कन्या तुम्हींको देनाचाहताहै और वह अभिमानी है इसलिये अपने पक्षकी श्रेष्ठताभीचाहताहै मुझे मालूमहोताहै कि वासवदत्ताका बिवाह अवश्य तुम्हारेही साथ होगा मंत्री के यह वचन सुनकर राजा उदयन्का चित्त वासवदत्ता में लगगया ८३॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांकथामुखलम्बकेतृतीयस्तरङ्गः ३॥

इस बीच में उदयन् के दूतने चण्डमहासेनसे सम्पूर्ण वृत्तान्त जाकरकहा यह सुनकर इसने शोचा कि उदयन् तो यहां आतानहीं है और कन्या वहां भेजनीनही है तो युक्तिसे उसे बँधवाकर यहां लाना चाहिये ऐसा विचारकर और मंत्रियों से सलाहकरके अपने हाथी के समान एक बड़ाभारी यंत्रका हाथी बनवाया और उस हाथी के भीतर बहुतसे वीरपुरुष बैठालकर वह हाथी विन्ध्याचलके वनमें रखवादिया फिर उस हाथीको हाथी पकड़ने के बड़ेशौकीन राजा उदयन्के गोयन्देलोगों ने देखा और राजासे आकर कहा कि हे राजा विन्ध्याचलके वनमें एक हाथी हमलोगों ने ऐसा देखाहै कि जैसा इस संसार भरमें और कहीं नहीं है वह इतनाबड़ाहै कि ऐसा मालूमहोताहै कि मानो चलनेवाला दूसरा विन्ध्याचलही है ८ उन गोयन्दों के ऐसे वचन सुनकर राजाने प्रसन्नहोकर उन्हे एकलाख अशर्फीदी फिर राजा यह शोचने लगा कि अगर नड़ागिरिके समान हाथी मुझे मिलजायगा तो राजा चण्डमहासेन मेरे वशहोजायगा और वासवदत्ताको अपने आपमुझे देदेगा ऐसा विचार करते २ वहरात्रि व्यतीत होगई प्रातःकाल मंत्रियोंके वचनों को न मानकर हाथी के लोभसे राजा गोयन्दों को साथलेकर विन्ध्याचलके वनको चला और ज्योतिषियोंने प्रस्थान की लग्न का फल यह कहाथा कि बन्धन होगा और

कन्या मिलैगी इसका भी राजाने कुछ विचार न किया विन्ध्याचलके वनमें पहुंचकर हाथीके भागजाने के डरसे राजाने अपनी सेनादूरपर छोड़दी और गोयन्दोंको साथले वीणालियेहुए राजाविन्ध्याचल के वनमेंघुसा १५ वहां विन्ध्याचलके दक्षिणकी ओर गोयन्दों के द्वारा दिखायेहुए उसनक़ली हाथी को राजाने सच्चे हाथीके समान देखा अकेला राजा वीणाको वजाकर मधुर २ शब्द गाताहुआ और उसके पकड़ने का उपाय शोचताहुआ उसके पासतक चलागया गानेके ध्यानसे और संध्याके अन्धकारसे राजा ने उसनकली हाथीको नही पहचाना वह हाथी भी मानोंगीत के रससे अपने कानों को उठाताहुआ राजाके पास आन २ कर विचकताहुआ वहुत दूरतक राजाको लेगया इसके उपरान्तउस हाथी में से एकाएकी वहुत से हथियारबन्द पुरुषों ने राजाको घेरलिया उनको देखकर राजा क्रोध से चक्कूनिकालकर जैसे कि अपने आगेवालोंसे लड़नेलगा वैसेहीं पीछे से और लोगोंने आकर उसेपकड़ लिया फिर इशारे से आयेहुए अन्य सेनाके लोगों के साथ उदयन्को पकड़कर चंडमहासेन के पास लेगये राजा चंडमहासेन वड़े आदरपूर्व्वक पुरके वाहरआकर उदयन् को अपने साथ उज्जयिनी पुरी में लेगया फिर अपमानसे कलंकित नवीन चन्द्रमाके समान उदयन्को पुरवासियोंने भी वड़े आनन्द से देखा उसके गुणसे प्रसन्नहुए पुरवासियों ने उस के मारेजाने के सन्देह से सबने मिलकर यह कहा कि जो यह माराजायगा तो हम सवभी अपना प्राणदेदेंगे २५ तव राजा चंडमहासेनने उनको यहकहकर समझाया कि हम इन्हें मारेंगे नहीं किन्तु इनसे सन्धिकरेंगे २६ इसके उपरान्त राजा चण्डमहासेन ने गान्धर्वविद्यासीखने के लिये वासवदत्ता नाम कन्या उसवत्सराज राजा उदयन्को सुपुर्द करदी और यहवात भी कहदी कि हेउदयन् तुम इसको गान्धर्वविद्या सिखलाओ तो तुम्हारा कल्याण होगा और खेदमतकरो वासवदत्ताको देखकर उदयन्के चित्तमें ऐसास्नेह उत्पन्नहुआ कि उसका संपूर्ण क्रोधजाता रहा उदयन्को देखकर वासवदत्ताके नेत्र और मन दोनों उदयन्में लगगये नेत्रतो लज्जासे हटगये परन्तु मन न हटासकी इसके उपरान्त वासवदत्ताको गानसिखाता हुआ वह वत्सराज गान्धर्वशालामें रहनेलगा ३१ उस चित्तकी प्रसन्न करनेवाली वासवदत्ता के सन्मुख वीणा वजा २ कर वत्सराज गाया करता था और वासवदत्ता भी वन्धन में पड़ेहुए वत्सराजकी वड़ी सेवा किया करतीथी इस वीच में जो उदयन् के साथीलोग लौटकर कौशाम्बीपुरी में आये तो वहांकी प्रजा उदयन् के प्रेमसे क्रोधितहोगई और उज्जयिनीपर चढ़ाई करनेकी इच्छाकरने लगी यह देखकर रुमण्वान मंत्रीने सवको समझाया कि चंड महासेन वलसे जीतनेके लायक नहीहै और वहांपर चढ़ाई करने से उदयन्केभी शरीरकी कुशल नहीं इसलिये वहां चढ़ाई न करनी चाहिये इसकामको वुद्धिसेही करनाचाहिये तव संपूर्ण प्रजाका राजापर ऐसा अनुराग देखकर यौगन्धरायणने रुमण्वान आदिक मंत्रियोंसेकहा कि तुम लोग यहांही रहो और इसराज्यकीरक्षाकरो समयपाकर अपना पराक्रमकरना मैं वसन्तकको साथमें लेकर यहांसेजाकर अपनी वुद्धिसे उदयन्को छुड़ालाऊंगा जैसे जलके लगनेसे विजलीकी आग ज्यादह चमकतीहै उसीप्रकार आपत्तिमें जिसकी वुद्धि अधिक तेजी दिखातीहै वही धीरपुरुष है ४१ और परकोटेका तोड़ना वेड़ियों

का खोलना और अदृष्ट होजाना इन सब बातोंकी सबरीति मुझे मालूमहै यह कहकर और संपूर्ण राज्यका कार्य्य रुमरावानको सौंपकर यौगन्धरायण दूसरे वसन्तकनाम मंत्रीको साथ लेकर कौशाम्बी सेचला और बड़े भयंकर प्राणियों से युक्त अत्यन्त दुर्गम विन्ध्याचलके वनमें घुसा वहां विन्ध्याचलके पूर्व्व दिशामें रहनेवाले उदयन्के मित्र पुलिन्दक नाम किसीम्लेच्छोंके राजाके यहांगया और उससे कहा कि तुम बहुतसी सेनाको अपने यहां तैयाररक्खो क्योंकि हम इसी मार्ग होकर उदयन्को लेकर आवेंगे फिर वहांसे चलकर वसन्तक समेत यौगन्धरायण उज्जयिनी में पहुंचा और वहांजाकर मुर्दोंकी गन्धिसे युक्त वेताल भूतादिकोंसे व्याप्त महाकालके श्मशानमें गया वहांके वेतालादि भूत ऐसेकालेथे कि दूरसे देखनेमें चिताके धुएंके ढेरसे मालूमहोते थे ४८ उस श्मशानमें यौगन्धरायणको देखकर प्रसन्न हुए योगेश्वर नाम ब्रह्मराक्षसने आकर यौगन्धरायणसे मित्रताकरली उस ब्रह्मराक्षसकी बताईहुई युक्ति से यौगन्धरायणने अपना स्वरूपबदलकर कुबड़ा बुड्ढा मतवाला तथा गंजा धारणकरलिया जिस्से कि सबलोग उसे देखकर हँसनेलगे और उसी युक्तिसे वसन्तकका भी रूपबदलदिया और उसका पेट ऐसा फूलाहुआ बनाया कि उसके पेटकी सबनसें दिखाई देनेलगीं और उसकामुख बिगाड़कर बड़े२ दांतबना-दिये इसके उपरान्त खाली वसन्तकको राजाके महलकेपास भेजकर नाचता गाताहुआ और लड़कोंसे घिराहुआ यौगन्धरायण उज्जयिनी में घूमता २ राजा के महलके पास पहुंचा वहां उसने अपने खेल तमाशे से रानियोंको बहुत खुश किया यहबात वासवदत्तानेभी सुनी और दासीभेजकर उसेअपनेपास बुलवाया ५६ क्योंकि लड़कपनमें खेल बहुत अच्छा मालूमहोताहै वहांजाकर बँधेहुए उदयन्कोदेखकर यौगन्धरायण के आंसू निकलआये और उसने राजासे कुछ इशाराकिया और राजाभी उसे छिपेहुए वेषमें पहचानगया इसके उपरान्त यौगन्धरायणने एक ऐसीयुक्तिकी कि वासवदत्ता और वासवदत्ताकी सब सखियां उसे न देखनेलगीं केवल राजाही उसको देखताथा तब वह सम्पूर्णबोलीं कि वहमतवाला एकाएकी कहींचलागया उनके यहवचन सुनकर और उसे आगे देखकर राजानेजाना कि इसनें यह बात योगबलसेकीहै यह जानकर उसने वासवदत्तासे कहा कि जायके सरस्वती के पूजनकी सामग्री लेआओ यहसुनकर वह अपनी सखियोंसमेत वहांसे चलीगई तबराजाको अकेलापाकर यौगन्धरायण ने बेड़ीकाटनेकी युक्ति और वीणाकेद्वारा वासवदत्ताके वशीकरणकीयुक्ति राजाको बताई ६४ औरकहा कि हे राजा द्वारेपर वसन्तक वेषबदलेहुए खड़ाहै उसेभी आप भीतर बुलवालीजिये जब वासवदत्ता आप पर विश्वास करनेलगेगी तब मैं जैसाकहूंगा वैसाकरना कुछ दिन ठहरनाओ यहकहकर यौगन्धरायण तो चलागया और वासवदत्ता सरस्वती के पूजनकी सब सामग्रीलाई तब राजा उदयन्ने उससेकहा कि दरवाजेपर कोई ब्राह्मण खड़ाहै उसेसरस्वती के पूजनकी दक्षिणाके लिये बुलवाओ उसके कहने से वा-सवदत्ताने उसेद्वारपरसे बुलवाया तब वसन्तक वहांआकर राजाको देखकर शोकसे रोनेलगा तब राजा ने भेदको छुपाने के लिये उससेकहा कि हे ब्राह्मण मैं तुम्हारे रोगसे बिगड़ेहुए सबशरीरको अच्छा करदूंगा मतरोओ तुमहमारेपास यहांही रहाकरो यहसुनकर वसन्तकने कहा कि यहआपकी बड़ीकृपाहै

उसके विगड़ेहुए स्वरूपको देखकर राजाको हँसीआगई तब राजाको हँसताहुआ देखकर और उसकेमत-लवको समझकर वसन्तकभी अपनेस्वरूपको वहुतविगाड़कर हँसनेलगा उसेहँसते देखकर और अपने एक खिलौने के समान समझकर वासवदत्ताभी हँसी और वहुतखुशहुई ७४ वासवदत्ताने खेलमेंही उस वसन्तकसे पूछा कि तू क्याकाम जानताहै उसनेकहा कि मैं कथाकहना जानताहूं तब वासवदत्तावोली कि अच्छा कोईकथाकहो तब वासवदत्ताको प्रसन्नकरने के लिये हँसी और आश्चर्य्यसेयुक्त एकरसीली कथा वसन्तक कहनेलगा कि मथुरामें रूपणिकानाम एक वड़ीसुन्दर वेश्यारहती थी और मकरदंष्ट्रा नाम एकवुढ़िया कुटनी उसकी माताथी जो तरुणलोग उस वेश्याकेपास आतेथे उनको उसकीमातासे वड़ी तकलीफ़ मिलती थी एकसमय रूपणिका पूजाकरने के लिये किसी मंदिरको जारहीथी वहां उसने दूरसे एकपुरुष देखा उसे देखकर उसका चित्त उसपर चलायमान होगया और अपने माताके सम्पूर्ण उपदेश भूलगई तव उसने अपनी दासी से कहा कि इस पुरुष से जाकर कहदो कि तुम हमारे मकान पर आना दासी ने उस्से उसी प्रकार से कहा तब वह पुरुष थोड़ा शोचकर बोला कि मैं लोहजंगनाम निर्धन ब्राह्मणहूं रूपणिकाके यहां तो धनवानों को आना चाहिये मैं आकर क्याकरूंगा ८४ यह सुन-कर दासी ने कहा कि वह तुमसे धननहीं लेनाचाहती है तब उसनेकहा कि बहुत अच्छा मैं आऊंगा दासीके मुखसे इस वातको सुनकर रूपणिका अपने घरमें जाकर उसका इन्तज़ार करने लगी क्षणभर में लोहजंगभी वहां आपहुँचा तब उसकी माता ने देखा कि यह आज निर्धन पुरुष कहां से आया है उसे आया देखकर रूपणिकाने वड़ी प्रसन्नतासे उसे अपने गले में लगालिया और वड़े आदरसे उसे भीतर लेगई लोहजंघके पुरुषार्थ से वशीभूतहुई रूपणिकाने अपने जन्मको धन्यजाना इसके उपरान्त रूपणिकाने और २ लोगोंका संग छोड़ दिया और सुखपूर्व्वक उसी तरुण पुरुषके साथ संभोग करने लगी यहदेखकर सब वेश्याओंकी शिक्षादेनेवाली मकरदंष्ट्रानाम उसकी माताने उससे एकान्तमें कहा कि हे पुत्री तुम इसनिर्धन पुरुषकी सेवा क्यों करतीहो सज्जनलोग चाहें मुर्देको तो छूभी लेते हैं परन्तु वेश्या निर्धनको कभी नहीं छूतीं क्या तुम इसवातको भूलगईहो कि कहां तो प्रेम और कहां वेश्यापन प्रेमयुक्त वेश्याका वहुतकालतक उरूज नहीं रहता वेश्याको चाहिये किनटनी के समान ऊपरी प्रेम दि-खावे इससे तुम इसकङ्गालको छोड़दो और अपनेको खराबमतकरो ६४ माताके यहवचन सुनकर रू-पणिका वड़े क्रोधसे वोली कि खबरदार ऐसा कभी मतकहो यह मुझे प्राणों से भी अधिक प्यारा है मेरे पास वहुतसाधनहै मैं और धनलेकर क्या करूंगी इससे हे माता अव ऐसे वचन कभी मुझसे मतकहना यहसुनकर वह मकरदंष्ट्रा उस लोहजंघके निकालने की तदवीर शोचनेलगी एकसमय मकरदंष्ट्रा ने किसी ऐसे राजपुत्रको देखा जिसका कि खजाना खालीहोगयाहै और शस्त्रधारी पुरुष उसके साथमें हैं उसको एकान्तमें ले जाकर मकरदंष्ट्राने कहा कि कोई निर्धन कामी पुरुष मेरे घरमें रहताहै आज तुम आकर उसे निकालदो और मेरी लड़कीको लो १०० यहसुनकर वह राजपुत्र उसके यहांगया उससमय रूपणिका किसी देवमन्दिरमें गई थी और लोहजंघ वाहर कहीं वैठाथा क्षणभरमें वेखटके लोहजंघ वहां

आया तब राजाके नौकरों ने उसे पकड़कर खूब लातों से पीटकर किसी विष्ठाके गढ़े में ढकेलदिया तब लोहजंघ किसी रीतिसे उसमें से निकलकर भागा इसके उपरान्त वहां आई हुई रूपणिका यहदशा देख कर बहुत व्याकुलहोगई और राजपुत्रभी वहांसे चलागया लोहजंघ भी उसकुटनी से ऐसा दुखीहोकर किसी तीर्थपर प्राणदेनेको चला १०६ चलते २ किसी वनमें धूपसे बहुत व्याकुलहोकर कहींछाया ढूंढ़ने लगा वहां उसको कोई वृक्ष तो नहीं मिला परन्तु किसीहाथीका मृतकशरीर पड़ाथा जिसको कि स्यारों ने नोच२ मांसखाकर भीतरसे खालीकरदियाथा उसमें वह घुसकर बहुत थकाहुआलोहजंघ सोगया क्योंकि उसमें बड़ी शीतल वायु आरहीथी इसके उपरान्त क्षणभरमें वहां बड़ा जल बरसनेलगा उससे उसचमड़े का मुखसुकड़करबन्दहोगया और क्षणभरही में वहां इतनापानी बढ़ा कि वहसबचमड़ा बहकर गंगाजी में चलागया और गंगामें बहताहुआ समुद्रमें पहुंचगया वहां उसचमड़ेको मांससमझकर गरुड़केवंशका कोई पक्षी उसेउठाकर समुद्रके पारलेगया वहां जाकर उसपक्षीने उसे अपनी चोंचों से फाड़ा और उसके भीतर मनुष्य बैठाहुआदेखकर वहांसे उड़गया ११४ तब लोहजंघने अपनेको समुद्रकेपार देखकर वह सब दशा उसनेजागतेहुए स्वप्नकी समानजानी इसके उपरान्त वहां दोबड़े भयङ्कर राक्षसोंकोदेखकर लोहजंघ बहुतडरा और उसे देखकर वहराक्षसभी बहुतचकितहुए फिर रामचन्द्रजी की कथाका स्मरणकरके और समुद्रकेपार आयाहुआ मनुष्य देखकर उनदोनोंराक्षसों के हृदयमें बड़ाडर उत्पन्नहुआ उनदोनोंमें से स-लाह करके एकनेजाकर विभीषणसे यहहालकहा विभीषणनेभी भयखाकर उसराक्षससे कहा कि जाकर उस मनुष्यसे कहो कि कृपाकरके हमारेपासआवे तब उसराक्षसने अपने स्वामीकी प्रार्थना लोहजंघको सुनाई उसकी बातकोमानकर लोहजंघ उसकेसाथ लंकाकोचला वहां अनेक२ प्रकारके सुवर्णके स्थानों कोदेखताहुआ विभीषण के समीपपहुंचा और विभीषणको देखा विभीषणने उसका अच्छेप्रकारसे अ-तिथि सत्कारकरके पूंछा कि हे ब्राह्मण तुमयहां किसरीतिसे आगयेहो १२५ तब उसछलीनेकहा कि मैं लोहजंघनाम ब्राह्मण मथुरामेंरहताहूं एकसमय दरिद्रसे व्याकुलहोकर मैंने किसीमन्दिरमें जाकर नारा-यणके सन्मुखनिराहारहोकर तपकिया तबस्वप्नमें मुझसे भगवान्नेकहा कि तुम विभीषणके पासजाओ वह मेरा बड़ाभक्तहै वह तुम्हें बहुतसाधनदेगा तब मैंनेकहा कि कहां तो विभीषण और कहांमैं वहांकैसे जाऊं यहसुनकर भगवान्नेकहा कि जाओ तुम आजही विभीषणको देखोगे भगवान् के यह कहनेपर शीघ्र मेरी नींद खुलगई और मैंने समुद्रकेपार अपनेको देखा १३० उसके यहवचन सुनकर और लंका में आना कठिनसमझकर विभीषणने जाना कि यहबड़ासिद्ध है और उससेकहा कि ठहरोहम तुमको धनदेंगे तबविभीषण ने यहशोचा कि मनुष्यों के मारनेवाले राक्षसोंकेसाथ इसकोनहीं भेजनाचाहिये ऐसाविचारकर राक्षसोंको भेजकर गरुड़केवंशमें उत्पन्नहुए किसीपक्षीके बच्चेको मंगवाया और वहपक्षी लोहजंघको बुलाकर इसलिये दिया कि वह अपने मथुराजानेकेलिये अपनेवशमें करके उसेवाहनबना के सधाले तब लोहजंघभी उसपर चढ़ताहुआ कुछ कालतक लंकामेंरहा एकदिन लोहजंघने विभीषण से पूंछा कि मथुराकीसंपूर्ण पृथ्वी काष्ठमय क्यों है यहसुनकर विभीषणनेकहा कि सुनो पहले एकसमय

कश्यपकेपुत्र गरुड़जी प्रतिज्ञासे, नागोंकी सेवाकरतीहुई अपनी माताको सेवकाई से छुड़ाने के लिये सेवकाई के मूलरूप अमृतको देवताओंसे लानेको तैयारहुए और इसीलिये अपने पिताकेसमीप कुछ बलकारी भोजनमांगनेकोगये १३६ तब कश्यपजीने गरुड़केवचन सुनकरकहा कि समुद्रमें एकबहुत बड़ाहाथी और कछुआहै वहदोनों अपने शापसे छूटचुकेहैं उनको तुमलाकर खाजाओ पिताके यहवचन सुनकर गरुड़जी उनदोनों जीवोंको लेकर कल्पवृक्षकी शाखापर बैठे तबगरुड़जी के भारसे वहशाखा टूटगई तबनीचे बैठेहुए तपस्वी बालखिल्यों के बचानेकेलिये गरुड़जी ने वहशाखाभी अपनी चोंचमें दवाली और पिताकी आज्ञा से जिससे कि लोग न मरनेपावें इसलिये वहशाखा यहां निर्जन स्थान में डाली इसीकारणसे मथुराकीसंपूर्ण पृथ्वी काष्ठमय है विभीषणसे इसकथाको सुनकर लोहजंघ बहुत खुश हुआ १४४ इसके उपरान्त जब लोहजंघ मथुराकोजानेलगा तब विभीषण ने उसेबहुतसे बहुमूल्य रत्न दिये और भक्तिसे मथुरा में विष्णु भगवान् के आयुधबनाने के निमित्त सुवर्ण के शंख चक्र गदा और पद्मदिये तबवह इन सबपदार्थोंको लेकर और लाख योजन चलनेवाले उस पक्षीपर चढ़कर लोहजंघ लंका से उड़ा, और समुद्र के पार आकर बिना परिश्रम मथुरा में आगया फिर मथुराके बाहर किसी शून्यस्थान में उतरकर उसने सम्पूर्ण रत्नरखदिये और वह पक्षी बांधदिया फिर उसने एक रत्न लेजाकर बाजारमें बेचा और उसीधनसे वस्त्र अलंकार और भोजन की सब सामग्री खरीदी १५१ फिर उन पदार्थों को लेकर जहां टिकाथा वहां आया और उसपक्षी को भोजन खिलाकर आपभी भोजन किया सायंकाल के समय लोहजंघ वस्त्र आभूषणादिको धारणकरके और शंख चक्र गदा पद्मको लेकरके उसी पक्षीपर चढ़कर रूपणिका के घरगया वहां जाकर आकाशमें ही उसके घरके ऊपर खड़ा होकर गंभीरवचनसे रूपणिकाको बुलाताभया उसके बचन सुनकर बाहर आईहुई रूपणिकाने आकाश में खड़ेहुए लोहजंघको नारायणके समानदेखा तब लोहजंघनेकहा कि मैं विष्णुहूं तेरे लिये आयाहूं यह सुनकर उसने कहा कि आइये कृपाकीजिये. तब लोहजंघ उस पक्षीको बांधकर उसके घर में गया और भोग करने के उपरान्त उसी पक्षीपर चढ़कर चलागया १५७ प्रातःकाल रूपणिका यह विचारकर मौनहोकरबैठी कि मैं विष्णुकी स्त्री देवताहोगईहूं अब किसी मनुष्यसे नहीं बोलूंगी तब मकरदंष्ट्रानेउस्से पूछा कि हे पुत्री आजतू मौन क्यों है इसप्रकार माताके बहुत हठकरने पर उसने बीचमें परदा डलवाकर रात्रिका सब वृत्तान्त कहा यह सुनकर उसे बड़ा सन्देह हुआ और रात्रिको उसने अपने आपही पक्षी पर चढ़कर आयेहुए विष्णुरूपी लोहजंघको देखा प्रातःकाल परदेमें बैठीहुई रूपणिकासे कुटनी मकरदंष्ट्राने प्रणाम करके कहा कि विष्णुभगवान् की कृपासे तुम देवी होगईहो मैं तुम्हारी माताहूं इसलिये मुझे कन्या होनेका कुछ फलदेदे तुम विष्णु भगवान्से दया करके यह कहो कि मेरी बुड्ढीमाता इसी देह से स्वर्गको चलीजाय रूपणिका ने उसका कहना मानकर रात्रिको जबलोहजंघ आया उस्से सब बातें कहीं तब उसने कहा कि तेरीमाता बड़ी पापिनी है वह प्रकटहोकर स्वर्ग में नहीं जासक्ती परन्तु एकादशी के दिन प्रातःकाल स्वर्गका द्वारखुलता है वहाँ पहले महादेवजी के गण घुसकर भीतरजाते

हैं उनके बीचमें तुम्हारी मांताकाभी उन्हीं कासा वेषकरके उसको भी मैं स्वर्ग के भीतर भेजदूंगा इस-लिये तुम इसका सव शिर मुड़वाकर पांच चोटी रखवादो इसके गले में मुंडोंकी मालापहरादो एकतरफ इसका मुखकाजलसे रंगदो और एकतरफ सिंदूरसे रंगदो और इसके सवकपड़े उतारकर इसेनंगीकरदो तव मैं इसको सुखसे स्वर्गको लेजाऊंगा यह कहकर लोहजंघतो चलागया और प्रातःकालही रूपणि-का ने अपनी माताका वैसाही स्वरूप बनादिया जैसा कि लोहजंघ कहगया था तववह भी स्वर्गजाने की तैयारी करकेवैठी १७१ रात्रिके समय फिरलोहजंघ वहां आया और रूपणिकाने अपनीमाता उसे सौंपदीनी तव उसनंगी कुटनीको लेकर लोहजंघ उसपक्षी परसवार होकर वहुतजोरसे उड़ा आकाश में जाकर लोहजंघने किसी देवमंदिरके आगे एक वहुत ऊंचा पत्थर का खंभा देखा उस खंभे में एक चक्र लगाथा उसीखंभेपर लोहजंघने उस कुटनीको वह चक्रपकड़ाकर वैठाल दिया और कहा कि तुम थोड़ी देर यहां ठहरो जवतकमैं पृथ्वीपर होआऊं यह कहकर लोहजंघ वहां से चला आया उससमय वह कुटनी ऐसी शोभित होती थी कि मानों लोहजंघ को क्लेश देने का वदलालेने की पताका है इस के उपरान्त रात्रि के समय उसी देवमन्दिरमें जागरण करनेको आये हुए लोगों को देखकर लोहजंघ आकाशसे वोला कि हे लोगो आज तुम्हारेऊपर सवका संहारकरनेवाली महामारीगिरेगी इसलिये तुम भगवान् विष्णुकी शरणमेंजाओ यह आकाशवाणी सुनकर डरेहुए सव मथुरावासी भगवान्के आगे स्वस्त्ययन पढ़नेलगे और लोहजंघभी आकाशसे उतरकर अपने उस सम्पूर्ण वेष को खोलकर सव लोगों के वीचमें छिपकरठहरा और वह कुटनी यह शोचनेलगी कि अभीतक विष्णु भगवान् नहींआये और मैं अभीतक स्वर्गको नहींगई यह शोचते २ जव ऊपर न ठहरसकी तव डरकर हाय ३ मैं गिरी यह कहकर चिल्लानेलगी यह सुनकर उस महामारी के गिरने के डरसे व्याकुलहुए विष्णु भगवान् के आगे खड़ेहुए लोग वोले कि हे देवि न गिरो २ इसके उपरान्त महामारी के गिरनेसे डरेहुए सम्पूर्ण मथुरानि-वासी वाल वृद्धों ने वहरात्रि वड़ीदिक्कतसे व्यतीतकी प्रातःकाल उस खम्भे में लटकीहुई कुटनी को देख कर राजा समेत सव पुरवासियों ने उसे पहचाना तव सवका भयदूरहोगया और हँसनेलगे यह वृत्तान्त सुनकर रूपणिका भी वहां आई और आश्चर्य्य पूर्व्वक अपनी माताकी यह दुर्द्दशा देखकर उसने उसे खम्भेपरसे उतरवाया १८७ तव सव लोगों ने कुटनी से यह हाल पूंछा और उसने सव वर्णनकिया इसके उपरान्त किसी सिद्धका यह काम समझकर राजा ब्राह्मण और वणिये सव वोले कि जिसने अनेक पुरुषोंकी चाहनेवाली इस कुटनीको छलाहै वह प्रकटहोवे उसका फैसलाकरदियाजावे यह सुनकर लो-हजंघ वहांआया और पूंछनेपर सव हाल पिछलाकहकर विभीषणके भेजेहुए वड़े मनोहर शङ्ख चक्र गदा पद्म देदिये इसके पीछे सम्पूर्ण मथुरा निवासियों ने उसका फैसलाकरके राजाकी आज्ञासे रूपणि-काको खुदमुख्तारकरदिया तव वहुतसे धन तथा स्त्रीकोलेकर अपनी प्रियाकेसाथ लोहजंघ उस कुटनी से अपना वदलालेकर सुखपूर्व्वक रहनेलगा इसप्रकार उस विगड़ेहुए स्वरूपवाले वसन्तकसे इस कथा को सुनकर वासवदत्ता वन्धनमें पड़ेहुए राजा उदयनके समीप आनन्दपूर्व्वक रहनेलगी १९५ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांकथामुखलम्वकेचतुर्थस्तरङ्गः ४ ॥

इसके उपरान्त वासवदत्ता अपने पिताके पक्षको छोड़कर उदयन् से बड़ा प्रेम करनेलगी यह बातजान कर यौगन्धरायण मंत्री अन्य सब लोगोंसे छिपकर उदयन् के पास आया और वसन्तकके सन्मुख एकान्तमें जाकर बोला कि हे राजा चण्ड महासेनने आपको मायासे पकड़ रक्खाहै अब अपनी कन्या देकर तुमको आदरपूर्व्वक छोड़ा चाहताहै तो इसकी कन्याही को हमलोग अपने आप हरले चलें इस प्रकारसे इस अभिमानीका वदला भी होजायगा और संसारमें भी हमलोगों का अपयश न होगा इस राजाने अपनी वासवदत्ता कन्याको एक भद्रवती नाम हथिनीदी है उस हथिनीकी चालके समान नड़ागिरि हाथीके सिवाय और किसी हाथीकी चाल नहीं है और उसे देखकर नड़ागिरिभी नहीं लड़ताहै उस हथिनीका आषाढ़क नाम महावतहै उसे मैंने बहुतसा धन देकर मिलालियाहै तो तुम उसी हथिनी पर वासवदत्ता समेत चढ़कर अपने हथियारोंको लेकर यहांसे भागजाओ और यहांका जो प्रधानहै वह हाथियोंकी चेष्टाओंको जानताहै उसे मद्य पिलाकर ऐसा मतवाला करदेना जिससे कि वह कुछभी न जाने और मैं मार्गकी रक्षाकेलिये तुम्हारे मित्र म्लेच्छोंके राजा पुलिन्दकके पास पहलेही से जाताहूं यह कह कर यौगन्धरायण चलागया ११ उदयन् ने भी यह सववातें मानलीं और जब वासवदत्ता उसके पास आई तब अनेकप्रकार की विश्वासकी बातोंको कहकर उसने यौगन्धरायणकी सब बातें वासवदत्ता से कहीं उसने भी इसकी सब बातोंको मानकर चलनेका निश्चयकरके आषाढ़कको बुलाकर हथिनीके तैयारकरने को कहा और देवताओंकी पूजाके बहानेसे वहांके प्रधानको उसके साथियों समेत मद्य पिलाकर मतवाला करदिया तब सायंकालके समय जब कि मेघ खूब गरज रहेथे उससमय आषाढ़क उस हथिनीको तैयारकरके लेआया तैयारहुई हथिनीने जो शब्द किया उसे सुनकर हाथियों के शब्दका जाननेवाला प्रधान मद्यके कारण गड़बड़ाते वचनों को बोला कि यह हथिनी कहती है कि आज मैं तरेसठ योजन जाऊंगी परन्तु मतवाले महावतोंने उसके यहवचन नहीं सुने और उस मतवालेके यह वचनभी विश्वास के योग्य न थे इसके उपरान्त उदयन् यौगन्धरायणकी बताईहुई युक्ति से अपने बन्धनको खोलके और अपनी वीणा तथा शस्त्रोंको लेके वासवदत्ताकी सखी कांचनमाला और वसन्तक समेत उस हथिनीपर चढ़ा इसके उपरान्त महावत समेत वह चारों रात्रिके समय मतवाले हाथीसे परकोटेको तुड़वाकर उज्जयिनी से बाहर निकले २३ उस स्थानके रक्षा करनेवाले वीरबाहु तथा तालभट नाम दो वीर राजपुत्रों को उदयन्ने मारडाला फिर वहांसे राजा उस हथिनीपर चढ़कर अपने सब साथियों समेत वेगपूर्व्वक चला उससमय उज्जयिनी में उन दोनों रक्षकोंको मरा देखकर अन्य रक्षकों ने राजा चण्ड महासेन से रात्रिहीके समय यहसब वृत्तान्तकहा यहसुनकर निश्चय करनेसे चण्ड महासेनको मालूमहुआ कि उदयन् वासवदत्ताको हरलेगया इस बातके शहरमें फैल जानेपर चण्ड महासेनका पालक नाम पुत्र नड़ागिरि पर चढ़कर उदयन् के पीछे दौड़ा पीछे आयेहुए पालकको देखकर उदयन् ने बाणोंके द्वारा उससे बड़ा युद्धकिया और नड़ागिरिने उस हथिनीको देखकर प्रहार नहीं किया उसीसमय पालकका भाई गोपालक अपने पिताकी आज्ञासे पीछे से आकर पालकको लौटा लेगया ३० तब उदयन् भी वहांसे धीरे २

सावधान होकरचली उस रात्रि के व्यतीत होजानेपर दो पहरके समय विन्ध्याचलके वनमें पहुंचकर तरे- सठ योजन आईहुई वह हथिनी प्यासीहुई तब अपने साथियों समेत राजाके उतर आनेपर उस हथिनी ने पानीपिया और पानी केही दोषसे उसीसमय मरगई हथिनीको मरा देखकर राजा और वासवदत्ता दोनोंको बड़ा खेदहुआ तब यह आकाशवाणी हुई कि हे राजा मैं मायावती नाम विद्याधरों की स्त्री हूं इतने समय तक मैं शापके दोषसे हथिनी रही आज मैंने तुम्हारे साथ इतना उपकार कियाहै अब आगे होनेवाले तुम्हारे पुत्रका भी उपकार करूंगी यह तुम्हारी स्त्री वासवदत्ता भी मानुषी नहीं है किन्तु देवी है किसीकारणसे पृथ्वीमें उत्पन्नहुईहै ३७ यहसुनकर प्रसन्न होनेवाले उदयन्ने वसन्तकको पुलिंदकनाम अपनेमित्रसे अपने आगमनका वृत्तान्त कहनेकेलिये आगे भेजा और आप स्त्री समेत धीरे २ चला उस समय वहुतसे लुटेरोंने उसे आकर घेरलिया तव राजाने अपना धनुषवाण लेकर १०५ लुटेरोंको वासवदत्ता के आगे मारडाला उसीसमय राजाकामित्र पुलिंदक यौगंधरायण और वसन्तकसमेत वहां आगया और उनलुटेरोंको रोककर प्रणामकरके वासवदत्तासमेत राजाउदयन्को अपनेगांवमें लेगया ४२ उस गांवमें वनके कुशाओंसे फटेहुए पैरवाली व वासवदत्ता और राजा रात्रिभररहे प्रातःकाल यौगन्धरायणसे वुलाया गया रुमण्वाननाम सेनापति सेनाकोलेकर राजाके लेनेको आया उसकेसंग इतनी सेना आई कि संपूर्ण विन्ध्याचलका वनभरगया इसके उपरान्त अपनी सेनाके डेरोंमें जाकर उसीवनमें उज्जयिनी की वार्त्ता जानने के लिये राजा ठहरारहा वहांपर ठहरेहुए राजासे यौगन्धरायणके एक मित्र वणिये ने उज्जयिनी से आकर कहा कि हे राजा आपपर राजा चण्डमहासेन वहुत प्रसन्नहै और उसने आपके पास अपना दूतभी भेजाहै वह आकर पीछे टिकाहै और मैं आपसे कहनेके लिये जल्दी छिपकर चलाआयाहूं यह सुनकर प्रसन्नहुए राजाने सम्पूर्ण वृत्तान्त वासवदत्ता से कहा और वह भी सुनकर वड़ी प्रसन्नहुई ५० अपने वन्धुजनोंको त्याग करनेवाली और विवाहको शीघ्र चाहनेवाली वासवदत्ता लज्जितभी होकर उत्कण्ठित हुई इसके उपरान्त अपने चित्तको वहलाने के लिये वासवदत्ताने अपने निकट वैठेहुए वस- न्तकसे कहा कि कोई कथा वर्णनकरो तव वड़ा वुद्धिमान् वसन्तक प्रतियों में वड़ी भक्तिकी वढ़ानेवाली यहकथा वासवदत्तासे कहनेलगा कि ताम्रलिप्ती नाम नगरी में धनदत्त नाम एक वड़ा धनवान् वणिया रहताथा उसके कोई पुत्र न था इसलिये वहुतसे ब्राह्मणोंको वुलाकर नम्रतापूर्व्वक उसने कहा कि आप लोग ऐसा यत्न कीजिये जिससे मेरे पुत्रहो तव ब्राह्मण बोले कि यहवात कुछ कठिन नहीं है क्योंकि ब्राह्मण लोग वैदिककर्मों से सव कार्य्योंको सिद्धकरसक्ते हैं ५६ पूर्व्वसमयमें किसी राजाके पुत्र नहींथा और एकसौपांच उसकी रानींथीं तव पुत्रेष्टी नाम यज्ञकरने से उसराजाके जन्तु नाम एकपुत्र उत्पन्नहुआ उससे सब रानियोंको वड़ी प्रसन्नताहुई एकसमय घुटनों से चलतेहुए उसवालकको जांघमें चींटीने काट खाया तव वह वालक वहुत चिल्लाकर रोनेलगा वालकके रोने से सम्पूर्ण रानियां वहुत घवरागईं और राजा भी हे पुत्र हे पुत्र कहकर साधारण पुरुषके समान चिल्लानेलगा क्षणभरमें पीछे वालकके सावधान होजानेपर राजाने वड़े दुःखके कारणरूप एकपुत्रके होनेकी वड़ी निन्दाकी और ब्राह्मणों से बुलाकर

पूंछा कि ऐसा कोई उपायहै जिससे मेरे बहुतसे पुत्रहोजायँ तब ब्राह्मणों ने कहा कि यहांपर यहउपाय है कि तुम्हारे इसलड़केको मारकर इसके सब मांसका अग्निमें हवन कियाजाय उसके सूंघने से तुम्हारी सब रानियोंके पुत्रहोंगे यहसुनकर राजाने वह सब उसीप्रकार से करवाया तब राजाके जितनी रानियां थीं उतनेही पुत्रहुए इसीप्रकार हवनकरने से तुम्हारे भी पुत्रहोगा ६५ यहकहकर और उससे दक्षिणालेकर ब्राह्मणों ने हवनकिया तब उस बणियेके गुहसेन नाम एक पुत्रहुआ धीरे २ उसपुत्रके बढ़नेपर धनदत्त उसके विवाहकी फिक्र करनेलगा इसके उपरान्त धनदत्त अपने पुत्रको लेकर रोजगारके बहाने से किसी अन्यद्वीपमें चलागया और वहांजाकर अपने पुत्रके लिये धर्मगुप्तनाम बणिये से देवस्मितानाम उसकी कन्याको मांगा परन्तु धर्मगुप्तको कन्या बहुत प्यारी थी और ताम्रलिप्ती वहांसे बहुत दूरथी इसलिये उस ने वह सम्बन्ध नहीं मंजूर किया परन्तु गुहसेन को देखकर देवस्मिताने उसके गुणों से वशीभूतहोकर अपने बन्धुओं के त्यागकरनेका निश्चय करलिया और सखीके द्वारा संकेत बदकर रात्रिके समय अपने श्वशुरसमेत उसद्वीपसे अपनेप्रियके साथनिकलगई ७२ फिर ताम्रलिप्ती में आकर उनदोनोंका विवाह होजानेपर परस्पर बड़ा स्नेहहोगया इसके उपरान्त धनदत्त के मरजानेपर गुहसेनके मित्रों ने उसको कटाहद्वीप जाने के लिये कहा और देवस्मिताने यह शोचा कि यह वहांजाकर अन्य स्त्रियों से संगकरेगा ऐसा जानकर वहांजाने से रोका तब स्त्री के रोकने से और भाइयों के भेजने से गुहसेन बहुत घबराया कि मैं क्याकरूं और घबराकर अपनी स्त्री समेत किसी देवमन्दिर में जाकर इसलिये व्रतकिया कि परमेश्वर हमको उपाय बतावें तब रात्रिके समय शिवजीने उनदोनोंको दर्शनदिया और दोनों के हाथमें एक २ लाल कमल देकर कहा कि तुम दोनों यहकमल अपने २ हाथमें लियेरहो दूरहोनेपर भी तुमदोनों मे से जो कोई एकभी अपना धर्म बिगाड़ेगा तो दूसरे के हाथका कमल मैला होजायगा और नहीं तो ज्योंका त्यों बनारहेगा यहसुनकर वह दोनों जगपड़े और दोनों ने अपने २ हाथों में एक २ लाल कमल देखा ८१ तब गुहसेन लाल कमलको लेकर कटाहद्वीपको चलागया और देवस्मिता कमलको देखती हुई अपने घरमें रही वहां गुहसेनभी शीघ्रही कटाहद्वीपमें पहुंचकर रत्नखरीदने और बेचनेलगा उसके हाथमें सदैव बिना कुंभलायेहुए कमलको देखकर कोई चार बणियों के पुत्र बड़ाआश्चर्य करनेलगे और उन्हों ने युक्तिपूर्व्वक उसे अपने घरमें लाके मद्य पिलाकर उससे कमलका सम्पूर्ण वृत्तान्त पूंछलिया तब बहुतकालतक गुहसेन रत्न खरीदेगा और बेचेगा यहजानकर वहचारों बणियों के पुत्र उसकी स्त्रीके धर्म के बिगाड़ने के लिये छिपकर शीघ्रही ताम्रलिप्ती नगरीको चलेआये वहां आकर किसी बुधके मन्दिर में बैठी हुई योगकरण्डिका नाम संन्यासिनी के पासगये और उससे बोले कि जो तुम हमारे मनोरथ को सिद्धकरदोगी तो हम तुमको बहुतसा धनदेंगे यह सुनकर उसने कहा कि युवापुरुषों को अवश्य किसी स्त्री की इच्छाहोती है सो तुम अपने कार्य्यको कहो मैं उसे सिद्धकरदूंगी और मुझे धनकी कांक्षा नहीं है क्योंकि सिद्धकरी नाम एक बड़ी बुद्धिमती मेरी चेली है उसके सम्बन्ध से मुझे बहुतसा धन मिलगया है ६१ यह सुनकर उन्होंने पूछा कि तुमको चेली के प्रभावसे कैसे धन मिलाहै तब उसने

कहा कि सुनो मैं वर्णन करती हूं इस नगरी में उत्तर की ओरसे आकर कोई वणियां रहा था उसके यहां हमारी चेली ने रूपबदलकर नौकरी करीथी और उस वणिये को अपनी सच्ची मातवरी उत्पन्न करके उसके घरमेंसे सब सुवर्ण चुराकर प्रातःकाल निकलभागी तब भयसे उसे नगरके बाहर जल्दी २ जाते हुए देखकर ढोल लियेहुए कोई डोम उसका धनलेने के लिये उसके पीछे चला उस समय किसी वर्गद के पेड़ के नीचे जाकर और उस डोम को अपने पास आता देखकर बहुत गरीब बनकर कहा कि आज मैं अपने पति से लड़कर मरने के लिये घरसे निकल आई हूं तो तुम हमारे लिये इस वृक्ष में फांसी लगादो तब उस डोमने यह शोचा कि जो यह फांसी लगाकर आपही मरजाय तो मैं इसे क्यों मारूं यहसमझकर उसने वृक्षमे फांसी लगादी ६६ इसके उपरान्त वह सिद्धकरी बड़ी भोली बनकर बोली कि फांसी गले में कैसे लगाई जाती है तुम मुझे दिखादो यहसुनकर उसडोमने पैरों के नीचे ढोलरखकर गलेमें फांसी लगाली और कहा कि इस तौर पर फांसी लगाई जाती है तब सिद्धकरी ने लातमारकर वह ढोल फोड़डाला और वह डोम फांसी में लटककर मरगया उसीसमय वह वणियां भी सिद्धकरी के ढूंढ़ने के लिये आता था उसने दूरही से वृक्षके नीचे सिद्धकरी को देखा और सिद्धकरी भी उसे दूरसे देखकर उस वृक्षपर चढ़कर पत्तों में छिपकर बैठरही उस वणिये ने वहां आकर फांसी में लटके हुए डोमको तो देखा परन्तु सिद्धकरीको न देखा तब यह खयालकरके कि सिद्धकरी कहीं वृक्ष पर न चढ़गईहो इसलिये उस वणियेका कोई नौकर उसपेड़पर चढ़गया तब उस्से सिद्धकरी बोली कि तुम मुझे बड़े प्यारेहो और तुम्हीं इसवृक्षपरभी चढ़ेहो सो हे सुन्दर यह सबधन तुम्हाराही है आओ मेरे साथ भोग करो यह कहकर सिद्धकरीने उस्से लिपटकर और मुखचूमकर दांतोंसे उसकी जिह्वाकाटली तब पीड़ासे व्याकुल होकर वह नीचे गिरपड़ा और उसके मुख से रुधिरवहनेलगा और अस्तव्यस्त वचन कहनेलगा यह देखकर उस वणियेने जाना कि इसके भूतलगाहै और डरकर अपने नौकरोंसमेत भागगया ११० तब सिद्धकरी उस वृक्षसे उतर सबधनलेकर अपने घरचली आई इसप्रकार से वह हमारीचेली बहुतसी छलविद्या जानती है और इसीकारण उसके संबंधसे मैंने बहुतसा धनपायाहै यह कहकर उन वणियोंको भी उसीसमय आई हुई अपनीचेली दिखादी और उनसे बोली कि तुम लोग किसस्त्रीको चाहतेहो मुझसे कहो मैं शीघ्रही उससे तुम्हें मिलादूंगी यह सुनकर वह बोले कि गुहसेन नाम वणियेकी देवस्मितानामस्त्रीसे तुम हमको मिलादो यहसुनकर उसने उनकेकाम करदेनेकीप्रतिज्ञाकरी और सबको अपने घररक्खा ११६ इसके उपरान्त भोजनादि पदार्थोंके बांटनेसे वहांके लोगोंको प्रसन्नकरके वह संन्यासिनी अपनी चेलीसमेत गुहसेनके मकानको गई जबवह दरवाजेपर पहुँची तब बाहर बँधीहुई कुतियाने उसे गैरजानकररोका फिर देवस्मिताने उसे देखकर दासी भेजकर यहसमझ के बुलवाली कि न जाने यह किसकामको आई है भीतरगईहुई वह पापिन संन्यासिनी ऊपरका आदर करनेवाली देवस्मिता से आशीर्वाद देकर बोली कि तेरे देखने को मेरा चित्त रोज चाहताथा और आज मैंने तुझे स्वप्नमें देखाथा इसीसे मैं तेरे देखनेको चलीआईहूं तुझे पतिसे रहितदेखकर मेरे

चित्त में बड़ा खेदहोताहै क्योंकि प्रियके भोग के बिना रूप और यौवन दोनों वृथा हैं इत्यादिक वचनों से देवस्मिताको सावधान करके वह संन्यासिनी उससे पूछकर अपने घरको चलीगई १२३ फिरदूसरे दिन बहुत मिर्चपड़ेहुए मांसके टुकड़े को लेकर देवस्मिताके घरगई और वहां द्वारपर बँधीहुई कुतिया को वह मांसका टुकड़ा खिलादिया उसके खानेसे बहुत चरपराहट से उस कुतियाकी आंखों से आंसू बहनेलगे और नाकसे पानी टपकनेलगा और वह संन्यासिनी घरके भीतरजाकर देवस्मिताके समीप बैठकर रोने लगी जब देवस्मिताने बहुत पूछा तबवह बोली कि देखो बाहर कुतिया रोरही है यह कुतिया मुझे दूसरे जन्मके पीछे मिलीहुई जानके रोनेलगी इसी से मेरेभी आंसू निकलआये यह सुनकर और बाहर रोतीहुई सी उसकुतिया को देखकर देवस्मिता शोचने लगी कि यह क्याबात है तब संन्यासिनी बोली कि पूर्व्व जन्ममें यह कुतिया और मैं किसी ब्राह्मण की दोस्री थीं वह ब्राह्मण राजाकी आज्ञासे बहुतदूर परदेश को जाया करताथा उसके परदेश चलेजाने पर मैं अन्य पुरुषों के साथ संभोग करके अपनी इन्द्रियों को क्लेश नहीं देतीथी क्योंकि इन्द्रियों को क्लेश न देना परमधर्म है उसी धर्म से मुझे उस जन्मकीभी इस जन्ममें याद बनी है और इस कुतियाने तो अज्ञानसे इन्द्रियोंको दुःख देकर केवल अपने शीलकी रक्षाकी इसीसे यह कुतियाहुई परन्तु अपनेजन्मका स्मरण इसेभी बनाहै १२५ यह सुन कर देवस्मिता ने शोचा कि यहकौनसाधर्म है मालूम होताहै कि इसने कोई धूर्त्तता (छल) कीरचनाकी है यह समझकर वह बोली कि अबतक मैं इसधर्मको नहीं जानती थी तो अबतुम किसी सुन्दर पुरुषके साथ मेरासमागम कराओ तब उससंन्यासिनीने कहा कि किसी अन्यद्वीपसे आयेहुए चार बणियेके पुत्र यहां ठहरे हैं उनको मैं तेरे पास लाऊंगी यहकहकर वह वहांसे बहुतप्रसन्नतापूर्व्वक चलीगई तब देवस्मिता ने अपनी दासियोंसे बुलाकरकहा कि मेरे पतिके हाथमें उस म्लानतारहित कमल के फूलको देखकर और मद्यपिलाकर उससे इसका सब वृत्तान्त पूछकर मेरे बिगाड़नेके लिये उसीद्वीपसे कोई बणिये के लड़के आये हैं और उन्होंनेही यह दुष्टतपस्विनी भेजी है तो तुमलोग जाकर धतूरामिलीहुई शराबले आओ और लोहेका एककुत्तेका पंजाबनवालाओ उसके यहवचनसुनकर दासी मद्यभी लाई और कुत्ते का पंजाभी बनवालाई और उसीके कहनेसे एकदासीने उसका वेषभी बनालिया फिर वह संन्यासिनी सायंकालके समय उनचारोंमें से एकको अपनी चेलीके वेषमें छिपाकर देवस्मिताकेघर लिवालाई और उसे भेजकर आप चलीगई १४५ तब उस बणिये के लड़केको देवस्मितारूप दासीने आदरपूर्व्वक धतूरामिलीहुई शराब पिलाई उसके पीनेसे वह बेहोशहोगया तब दासियों ने उसके सबवस्त्र उतार लिये और उसके माथेमें कुत्तेका पंजा दागकर उसे किसी मलसे भरेहुये गढ़े में ढकेल दिया पिछलीरात्रिको जबउसे होशआया तो उसने अपनेको गढ़ेमें पड़ाहुआ देखा तब वहां से उठकेस्नानकरके माथेके दाग को टटोलताहुआ नंगा बणियेका लड़का उससंन्यासिनीके यहांपहुँचा तब उसने यह शोचकर कि अकेले मेरीही हँसी क्योंहोय प्रातःकाल अपने साथियोंसे कहा कि रास्ते में मुझ से ठगोंने सब असबाब छीन लिया और जागरण तथा मद्यपीनेसे मेरे शिरमेंदर्दहोरहाहै इसबहाने से शिरमें कपड़ा लपेटलिया दूसरे

दिन दूसरा वणियेकापुत्र देवस्मिताके यहांगया और उसकीभी वहीदशाहुई तब नंगाहोकर वहां आया और उसनेभी वाक्यियोंसेकहा कि मैं अपने आभूषण तो वहीं छोड़आयाहूं परंतु मेरे कपड़े चोरोंने छीन लिये फिर प्रातःकाल शिरकी पीड़ाके वहानेसे उसनेभी अपनेमाथेके दागकोछिपाया इसीप्रकारसे वहसव वणियोंकेपुत्र उसीदशाकोपहुंचे सवकेमाथेमे एक २ कुत्तेका पंजादागदियागया और सवकाधन छीन लियागया फिर इससंन्यासिनीकी भी यहीदशाहो इसलिये वह अपने सववृत्तान्तको विनाकहे सुनेही वहांसे चलेगये १५७ इसकेउपरान्त किसी और दिनवह संन्यासिनी अपनी चेलीसमेत वहुतप्रसन्नहोकर उसकेघरगई देवस्मिताने उसेवहांआईहुई देखकर वड़े आदरपूर्व्वक उसे और उसकी चेलीको धतूरा मिलीहुई मदिरापिलाई जववहदोनों मतवालीहोगई तवनाक और कान कटवाकर उन्हेंभी उसीगढे मे डलवादिया इसके उपरान्त यह शोचकर कि ऐसा न हो कि यहवणियेकेपुत्र वहांजाकर मेरेपतिको मारडालें देवस्मिताने घवराकर यहसव वृत्तान्त अपनी साससेकहा तव सासवोली कि हे वहू यह तो तुमने वहुत अच्छाकिया परन्तु मुझे यह संदेहहोताहै कि यहदुष्ट मेरे पुत्रकेलिये कुछ वुराई न करें तव देवस्मिताने कहा कि जैसे शक्तिमतीने अपनी वुद्धिसे पतिकी रक्षाकीथी उसीप्रकार मैं भी अपने पतिको वचाऊंगी उसकीसासने पूंछा कि शक्तिमतीने अपनेपतिकी कैसे रक्षाकीथी तववह कहनेलगी कि मेरे देशमें शहरके भीतर वहुत कालकावड़ा प्रतिष्ठित एक महायक्षहै वहांके निवासी अपने २ मनोरथों के पूर्ण होनेकेलिये अनेक २ प्रकारकी भेट पूजाओंको लेजाकर उससे अपना २ मनोरथ मांगते हैं और वहां यहचालहै कि जो मनुष्य पराईस्त्रीकेसाथ पकड़ाजाताहै वह उसस्त्रीसमेत उसीयक्षकेमंदिर में रात्रि भर वंदकिया जाताहै और प्रात काल उसस्त्री समेत राजाकीसभामें वहपहुंचाये जाते है और वहींउनको दंडमिलताहै १६८ एक समय समुद्रदत्त नाम वणियेको किसीपराई स्त्रीके साथ कोतवालनेपकड़ा और उसको उसस्त्रीसमेत यक्षकेमंदिरमे वन्दकरदिया उससमय यहवृत्तान्त उसवणियेकी वड़ी वुद्धिमान् और महापतिव्रता शक्तिमतीनाम स्त्रीनेसुना और सुनकर भेसवदलकर अपनी सखियों समेत पूजनकी सामग्री लेकर यक्षके मंदिरकोगई वहां दक्षिणाके लोभसे पुजारी ने कोतवालसे पूछकर केवल शक्तिमती कोही भीतरजानेदिया भीतरजाकर स्त्रीसमेत लज्जितहुए अपनेपतिको देखकर शक्तिमती ने उस स्त्री का अपनासाभेस वनाकर उसे वाहरकरदिया वहस्त्री तो उसके वेपमे निकलकर रात्रिकेसमय वहां से चलीगई और शक्तिमती अपनेपतिकेपास रात्रिभर वहांरही प्रातःकाल जव राजाके नौकरों ने आकर देखा तो मालूमपड़ा कि वह वणियां अपनीही स्त्रीकेसाथ था यहजानकर राजाने मृत्युके मुखकेसमान उसयक्षके मंदिरसे स्त्रीसमेत वणियेको तो छोड़दिया और कोतवालको सजादी इसप्रकारसे शक्तिमती नें अपनेपतिकी रक्षाकीथी और मैं भी इसीप्रकारसे जाकर अपनेपतिकी युक्तिपूर्व्वक रक्षाकरूंगी १७८ इसप्रकार एकान्तमे अपनी साससेकहकर देवस्मिताने अपनीदासियो समेत वणियोंकासा रूपवनाया और जहाजपर चढ़कर रोजगारके वहानेसे कटाहद्वीपकोगई कटाहद्वीपमें जहां उसकापतिरहताथा वहां जाकर संपूर्ण वणियों मे वैठेहुए गुहसेननाम अपनेपतिको देखा और उसे देखकर गुहसेनने भी अपने

मनमें विचारा कि यह कौनसा पुरुष मेरी स्त्रीकेसमान यहांआया है इसके उपरान्त देवस्मिताने राजाके यहां जाकर कहा कि आपसब प्रजाके लोगोंको इकट्ठाकीजिये मैं कुछ प्रार्थनाकरूंगी तबराजानेसंपूर्ण पुरवासियों को बुलाकर उससे पूंछा कि तेरी क्याप्रार्थनाहै तबवह बोली कि मेरे चारदास यहांभागकर चलेआयेहैं उनको मुझेदेदीजिये तब राजा बोला कि यहसब पुरवासी बैठे हैं इनमें से तुम अपनेदासों को छांटलो तब शिरमें कपड़ालपेटेहुए वहचारों वणियोंकेपुत्र जिनको कि उसने अपने घरपरमाथे में दागाथा पकड़लिया तबसंपूर्ण वणिये क्रोधसे कहनेलगे कि यह तो वणियोंकेपुत्रहैं तेरेदास कैसेहोसक्ते हैं यह सुनकर वह बोली कि जो आपलोगोंको मेरा यकीननहीं है तो इनकेमाथे देखलीजिये मैंने कुत्ते के पंजेसे दागदिये हैं उसके कहने से जब उनके कपड़े खोलकर माथे देखेगये तो उनमें कुत्ते के पंजेका दागदिखाई दिया इसके उपरान्त संपूर्ण वणियों के लज्जितहोजानेपर राजाने बड़े आश्चर्य्यपूर्वक देवस्मितासे पूंछा कि क्याबातहै तबउसने उनकासंपूर्ण वृत्तान्तकहा यहसुनकर लोगहँसनेलगे और राजा ने भी कहा कि यह तेरेदास ठीक २ हैं १९२ तब और वणियों ने उनचारोंको उससे छुटानेके लिये उसे बहुतसा धनदिया और उनचारोंकी ओरसे राजाको जुरमानाभी दिया उसधनको और अपने पतिको लेकर संपूर्ण सज्जनोंसे प्रशंसाकीगई देवस्मिता अपनीपुरी को चलीआई और उसे फिर कभी अपने पतिका वियोगनहींहुआ इसीप्रकार बड़े उत्तम कुलोंमें उत्पन्नहोनेवाली स्त्रियां बड़े उत्तम आचरणों से सदैव अपनेपतिका सेवनकरती हैं क्योंकि पतिही उनका परमदेवहै वसन्तकके मुखसे इसमनोहरकथा को सुनकर पिता के घरको त्याग करने से लज्जित वासवदत्ताके मनमें उदयन् पर औरभी अधिक भक्तिबढ़ी १९६ ॥ इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायां कथामुखलंबकेपंचमस्तरंगः ५ ॥

इसके उपरान्त विन्ध्याचल के वनमें ठहरेहुए राजा उदयन् के पास चण्डमहासेन के भेजेहुए दूतने आकर प्रणाम करके यहवचन कहा कि राजा चण्डमहासेन ने आपके पास यह संदेशा भेजाहै कि आप जो वासवदत्ताको हरलेगये यह उचितही था क्योंकि इसीलिये मैं आपको युक्ति पूर्व्वक अपने घरलायाथा और बंधनमें पड़ेहुए आपको मैने वासवदत्ता इसलिये नहींदीथी कि मुझे यह सन्देह था कि शायद आप मेरे ऊपर स्नेह रखतेहोंय और कन्याको नहीं स्वीकारकरें तो अब मेरीकन्याका विवाह विना विधिके न होय इसलिये आप थोड़े दिन ठहरजाइयेगा कुछ दिनके उपरान्त गोपालक वहां आप के पास आवेगा और वह विधिपूर्व्वक अपनी बहनका विवाह आपकेसाथकरेगा ६ इसप्रकार उसदूतने उदयन्से यह संदेशा कहकर यहीसबबातें वासवदत्तासे भी कहीं इसके उपरान्त वासवदत्तासमेत उदयन्ने अपनी कौशाम्बी के चलनेकी तैयारीकी उदयन्ने पुलिन्दकनाम अपने मित्रको और उसदूतको वहां छोड़कर कहा कि तुम दोनों जबतक गोपालकआवे तबतक यहांरहो और फिर उसी के साथ कौशाम्बी को चलेआना इसके उपरान्त दूसरे दिन प्रातःकाल राजा वासवदत्तासमेत अपनी पुरीकोचला राजाकेसाथ मदबहतेहुए बहुतसे बड़े २ हाथीचले वह हाथी नहीं थे मानों बड़े प्रेमसे आयेहुए विन्ध्याचलके शिखरथे राजाके चलने के समय घोड़ोंकी सेनाके खुरों के शब्द ऐसे मालूमहोते थे मानों पृथ्वी

में वैठेहुए वन्दीजन राजाकी स्तुतिकरते हैं उससमय सेनाके चलने से आकाशतक पहुंचनेवाली धूल से इन्द्रको यक्षसहित पर्व्वतों के उत्पन्नहोनेका सन्देहहोताथा इसके उपरान्त दोतीनदिनमें राजा अपने देशमें पहुंचकर एकरात्रिभर रूमण्वान मंत्री के घरमेंरहा १५ फिर दूसरे दिन वासवदत्तासमेत कौशाम्बी पुरी में दाखिलहुआ प्रजाके सवछोटेवड़ेलोग राजाके आनेकी वाट देखरहेथे इसलिये उससमय सम्पूर्ण स्त्रियां अपने २ घरमें मंगलाचार करनेलगीं वहुत दिन के उपरान्त राजाकेआने से उसपुरीकी ऐसी शोभाहुई कि जैसे परदेशसे पतिकेआनेपर स्त्रीकी शोभाहोती है वासवदत्तासमेत उदयन्को पुरवासी लोग ऐसे प्रसन्नहोकर देखतेथे जैसे विजली समेत मेघको मोर प्रसन्नहोकर देखते हैं महलों के ऊपर खड़ी हुई स्त्रियोंके मुखसे आकाश छिपगया उससमय ऐसी शोभा दीखरहीथी कि मानों आकाश गंगा में सोनेके कमलफूले हैं इसके उपरान्त दूसरी राजलक्ष्मी के समान वासवदत्ता समेत राजाउदयन् अपने राजभवनमे गया २० उससमय वह राजमन्दिर सोने से जगे के समान शोभितहुआ क्योंकि राजाकी सेवाके लिये आयेहुए अनेक राजालोग उसमें वर्त्तमानथे और वन्दीजनलोग मंगलाचार पढ़रहे थे इसके उपरान्त वासवदत्ताका भाई गोपालक उसदूतको और राजा के मित्र पुलिन्दकको अपने साथ लेकर आया राजाने आगेचलकर वड़े सत्कारपूर्व्वक उसको लिया और वासवदत्ता वड़े आनन्दपूर्व्वक उससे मिली और फिर अपनेभाईको देखकर वासवदत्ता लज्जित न हो इसीलिये उसके नेत्रोंको मानों आंसुओं ने रोकदिया पिताके संदेशेको कहकर गोपालकने वासवदत्ताको वहुतसमझाया तववह अ-पनेको वहुत धन्यसमझनेलगी इसके उपरान्त दूसरे दिन गोपालकने वासवदत्ता और उदयन्का वि-वाह करदिया तव रतिरूपी लताके नवीन पत्तेकेसमान वासवदत्ताकेहाथको उदयन्ने ग्रहण किया और वासवदत्ताभी प्रियके हाथके स्पर्शसे आनन्दितहोके कम्प, स्वेद और रोमांच से संयुक्तहोगई उसे यह कम्पादिक नहींहुएथे मानो कामदेवने संमोहन वायव्य और वारुणास्त्रमारेथे और अग्निकी प्रदक्षिणा करने में वासवदत्ताके नेत्र मतवालों के समान लालहोगये ३० इसके उपरान्त गोपालकके लायेहुए रत्नों से और अन्य राजालोगोंकी भेटोंसे उस उदयन्का खजाना इतना वढगया जिससे कि वह राजा-धिराज कहाने लगा विवाह की विधि के समाप्त होजाने पर प्रजा के लोगों ने वहुत प्रसन्न होकर उन दोनों को देखा तव वह अपने महलों में गये राजाने अपने विवाहके उत्सवमें गोपालक और पुलिन्दक दोनोंको संधिपत्र लिखदिया और अन्य देशों से आयेहुए राजालोगोंकी तथा पुरवासियोंकी यथोचित खातिरदारीकरने के लिये राजा ने रूमण्वान तथा यौगन्धरायणको आज्ञादी तव यौगन्धरा-यणने रूमण्वानसे कहा कि राजाने हललोगों को यह वड़ाकठिन काम सुपुर्द कियाहै क्योंकि लोगों के चित्तका प्रसन्नकरना वड़ीकठिनवातहै अगर एक लड़काभी नाराज़होजाय तो वह भी वुराई करसक्ताहै इसीवातपर मैं तुझे वालविनष्टककी कथा सुनाताहूं ३६ कि रुद्रशर्म्मा नाम किसी व्राह्मणकी दो स्त्रियां थीं उनमें से एक स्त्री के पुत्र उत्पन्नहुआ और वह मरगई तव उस व्राह्मणने वह लड़का अपनी दूसरी स्त्री को सौंपदिया वह स्त्री उस लड़केको वहुत रूखा भोजनदेतीथी इससे उस वालक का शरीर वहुत

खरखुरा और पेट वहुत वड़ाहोगया वालककी यह दशादेखकर रुद्रशर्म्माने अपनी स्त्रीसेकहा कि माता से रहित मेरे वालककी तुमने क्या दशाकरडाली तव उस स्त्री ने कहा कि मै तो इसे वहुत घी खिला तीहूं परन्तु यह इसीप्रकार वनारहताहै मैं क्या करूं यह सुनकर ब्राह्मणने भी जाना कि इस वालकका ऐसा स्वभावहीहोगा क्योंकि स्त्रियों के झूठे भोले वचनोंको कौन सत्यनहीमानताहै ४२ तव वह वालक छोटीही अवस्थामें कुरूपहोगया इसलिये उसका नाम वालविनिष्टकहोगया वह वालविनिष्टक पांचवर्षकी ही अवस्थामें वड़ाबुद्धिमान् था इससे उसने अपने चित्तमें शोचा कि यह सौतेलीमाता मुझे बड़ाकष्टदे-तीहै इससे कुछ वदलालेना चाहिये यह विचारकर जव उसका पिता राजाके दरवारसे लौटा तव उसने एकान्तमें अपने पितासे तुतलाके कहा कि हे पिता मेरे दो पिताहैं इसीतरह वह रोज अपने पिता से कहनेलगा तव उस ब्राह्मणने अपनी स्त्री को व्यभिचारिणी समझकर उसका स्पर्शकरनाभी छोड़दिया तव उस स्त्री ने शोचा कि विना अपराधके मेरा पति मुझसे क्यों खफा है शायद इस वालविनष्टक ने कुछ उपद्रव कियाहोगा ४८ यह शोचकर उसने वालविनष्टकको आदरपुर्व्वक स्नानकराके और उत्तम भोजनकरवाकर गोदी में वैठालकर उससे पूँछा कि हे पुत्र तुमने अपने पिताको मेरेऊपर क्यों खफा करवादियाहै यह सुनकर वालविनष्टकने कहा कि जो तुम इतनेपर भी न मानोंगी तो मैं कुछ और भी अधिक खफाकरवादूंगा तू सदैव अपने वालकको अच्छीतरहरखती है और मुझे कष्टदियाकरती है यह सुनकर उस स्त्री ने कसम खाकर कहा कि अव मैं तुझे कभी दुःख न दूंगी तो अव तू अपने पिता को मेरेऊपर प्रसन्नकरवादे तव उस वालकने कहा कि जव मेरा पिता आवे तव कोई दासी उसे शीशा दि-खावै तव मैं जो चाहूंगा सो करूंगा उसके वचनमानकर उसने एक दासी मुकर्ररकरदी जव रुद्रशर्म्मा आया तव दासी ने उसे दर्पणदिखादिया उससमय वालविनष्टकने अपने पिताको उसीका प्रतिविम्ब दिखाकर कहा कि हे पिता यहही मेरा दूसरा पिता है यह सुनकर रुद्रशर्म्माका सन्देहदूरहोगया और विनाकारणके दूषितहुई अपनी स्त्री पर प्रसन्नहोगया इसीप्रकारसे एक वालकभी विगड़कर वड़ेदोषोंको उत्पन्नकरसक्ताहै इसलिये हमको उचितहै कि हम सवलोगोको प्रसन्नरक्खें ५७ तव रुमण्वान से इसप्रकार कहकर यौगन्धरायण आयेहुए महमान और पुरवासियों का सत्कारकरनेलगा इन दोनों मंत्रियों ने सम्पूर्ण लोगोंको ऐसा प्रसन्नकिया कि हरएकको यही विदितहुआ कि यह दोनों केवल हमारीही इतनी खातिरकरते हैं फिर राजाने रुमण्वान यौगन्धरायण तथा वसन्तक इन तीनों को वस्त्र आभूषण तथा गांव आदिकदिये इसके उपरान्त विवाहके उत्सव से छुट्टीपाकर वासवदत्तासे मिलेहुए राजाने अपने संपूर्ण मनोरथ सफलमाने वहुत कालके उपरान्त वड़े स्नेहसे मिलेहुए उन दोनोंका आनन्द रात्रिभर के क्लेशके उपरान्त चकवी चकवाके समानहुआ उनदोनों का संग जैसे २ वढ़ता जाताथा वैसेही वैसे उनका प्रेमभी वढ़ता जाताथा इसके उपरान्त गोपालक उदयनसे पूंछकर अपने घरकोगया एकसमय उदयनने विरचितानाम दासीके साथछिपकर भोगकिया इसीकारणसे वासवदत्ताके साथमें वातकरते २ उदयनके मुखसे विरचिताका नाम निकला यहसुनकर वासवदत्ता दुखीहुई तव उदयनने उसको पैरों

पड़के प्रसन्न किया ६६ इसके उपरान्त गोपालने वन्धुमती नाम एक राजकन्या जीतकर वासवदत्ता के पास भेज दी तव वासवदत्ता ने उसको उसका मंजुलिका दूसरा नाम रखकर छिपाकर अपने यहां रक्खा क्योंकि वह वड़ी रूपवतीथी एकदिन बसन्तक समेत राजाने उसे वगीचेमें देखा और उसकेसाथ गान्धर्व विवाह करलिया यह वात वासवदत्ताने छुपकर देखली और खफ़ा होकर वसन्तकको वांधलेगई तव राजा वासवदत्ताके यहांसे आई हुई एक सांकृत्यायिनी नाम वासवदत्ताकी सखी के पासगया और उससे कहा कि तू वासवदत्ताको समझादे उसके समझाने से वासवदत्ताने वंधुमती राजाको देदी यह वात उचितही है (क्योंकि सती स्त्रियोंका चित्त वड़ा कोमल होताहै) फिर वासवदत्ता ने वसन्तक को वन्धन से खोलदिया तव उसने रानीके आगें हँसकर कहा कि वन्धुमतीने तो तुम्हारा अपराध कियाथा मैंने क्याकिया तुम्हारी तो वह मसलहै कि सर्पोंपर तो गुस्साहोय और डुमुहे सर्पोंको मारो ७४ यह सुन-कर वासवदत्ताने कहा कि इस कहावतको तुम मुझे समझाकर कहो तव वसन्तक कहनेलगा कि पहले किसी रुरुनाम मुनिके पुत्रने एक वड़ी रूपवती कन्याको देखा वह कन्या किसी विद्याधरके संयोगसे मेनिका नाम अप्सराके गर्भसे उत्पन्न हुईथी और स्थूलकेश नाम मुनिके आश्रम में रहतीथी उसका नाम प्रमद्वरा था उसे देखकर मोहितहोनेवाले रुरुमुनिने स्थूलकेशसे वह कन्यामांगी और स्थूलकेश नेभी उनको देदीनी जव उन दोनोके विवाहका समय निकट आया तव एक सर्प उसकन्याको काट-गया उस समय मुनिके व्याकुल होनेपर यहआकाशवाणी हुई कि हेब्राह्मण तू अपनी आधी आयुर्दा देकर इसको जिवाले यह सुनकर रुरुने उसे अपनी आधी उमरदेकर जिवालिया और उसके साथ विवाह किया इसके उपरान्त रुरु जहां किसी सर्पको देखते थे वहीं उसको मारडालते थे कि इन्हींमें से किसीने हमारी स्त्रीको काटा है ८२ एक समय किसी डुमुहे सर्पको रुरुमुनि माररहे थे तव उससर्प ने मनुष्यकीसी भापामें रुरुमुनिसे कहा कि हे ब्राह्मण तुमसर्पोंपर खफाहोकर हमसरीके डुमुहे सर्पोंको क्यों मारतेहो किसी सर्प ने तुम्हारी स्त्रीको काटाथा और सर्प तथा डुमुहे सर्पों में वड़ा भेदहै क्योकि सर्प तो विपधर होते है और डुमुहे निर्विप होते हैं यहसुनकर रुरुने उस्सेकहा कि तुम कौनहो तव डुमुहे ने कहा कि मैं शापसे छूटाहुआ मुनिहूं तुम्हारेसाथ वोलने तकका मुझे यह शापथा यहकहकर वह तो अन्त-र्द्धान होगया और रुरुने डुमुहे सर्पोंका मारना छोड़दिया इसीसे हेरानी मैंने तुमसे कहाथा कि हेरानी तुम सर्पोंपर खफाहोकर डुंडुभ सर्पोंको मारतीहो यह कहकर वसन्तक के चुपहोजाने पर वासवदत्ता अत्यन्त प्रसन्नहुई इसप्रकारसे राजाउदयन् खफाहोनेवाली वासवदत्ताको पैरोंपर गिरकर सदैव मनाया करताथा और अत्यन्तसुखी राजाउदयन्की जिह्वा मदिराके रसका आनन्दलेतीथी उसके कान मनो-हर वीणाके शब्दमे लगेरहते थे और उसकी दृष्टि प्रियाओंके मुखारविन्दोंमें लगी रहतीथी ९०॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभापायांकथामुखलम्बकेपष्ठस्तरङ्गः ६॥

कथामुखनाम द्वितीयं लम्बकसमाप्तहुआ॥

अथ लावाणकनाम तृतीयोलम्बकः॥

निर्विघ्नविश्वनिर्म्माणं सिद्धयेयदनुग्रहम्॥
मन्येसवन्नेधातापि तस्मैविघ्नजितेनमः १
आश्लिष्यमाणःप्रियया शङ्करोपियदाज्ञया॥
उत्कम्पतेसुभवनं जयत्यसमशायकः २

निर्विघ्नतापूर्व्वक संसारको बनाने के लिये ब्रह्माजी भी जिन गणेशजीकी कृपाके अभिलाषी हुए थे उन गणेशजीको हम नमस्कारकरते हैं १ जिस कामदेवकी आज्ञाके द्वारा पार्व्वतीजीसे आलिङ्गन कियेहुए महादेवजी भी कांपते हैं उस कामदेवको सम्पूर्ण संसार में जयहोय २॥

इसप्रकारसे राजाउदयन् वासवदत्ताकोपाकर उसीके साथ सुखभोग में पड़गया और यौगन्धरायण तथा रुमरवान् यह दोनों मंत्री राज्यके कामको करनेलगे एकसमय यौगन्धरायण रुमरवान् को अपने घर में लाकर कहनेलगा कि यह राजा उदयन् पांडवों के वंश में उत्पन्नहुआहै इसके पुरखे सदैव से चक्रवर्त्ती होतेआये है और उन सबकी राजधानी देहलीथी वह सब बातें इसने छोड़दीं और इसका राज्य केवल वत्सदेशमात्रमेंही रहगयाहै स्त्री मद्य और शिकारके आनन्द में पड़कर इसने सम्पूर्ण राज्यका भार हमपर छोड़दियाहै और आप कुछभी नहीकरता इससे हमलोगों को अपनी बुद्धि से ऐसा उपाय करनाचाहिये जिससे सम्पूर्ण पृथ्वीकाराज्य इसे मिलजाय ऐसाकरने से हमलोगों की राजभक्ति और मंत्रीपन सफलहोंगे इसबात में ऐसा भी न शोचना चाहिये कि यह बात कैसे होसक्ती है क्योंकि बुद्धिसे सब होसक्ताहै इसी बातपर मैं तुम्हें एक कथाभी सुनाताहूं १० पूर्व्वसमय में एक महासेन नाम राजाथा उसपर किसी बलवान् शत्रुने चढ़ाईकी तब मंत्रियों ने राज्य बचानेकी इच्छासे उस अत्यन्त बलवान् शत्रुको राजासे कर दिलवादिया तब करदेकर राजा महासेनको यह समझकर कि मैंने शत्रुको कर दियाहै बड़ा शोचहुआ और इसी शोचसे राजाके हृदयके भीतर एक फोड़ाहोगया तब राजा उसकी पीड़ासे मरनेलगा राजाकी यह दशादेखकर किसी बुद्धिमान् वैद्यने इस फोड़ेको औषधियों से साध्य न समझकर राजासे कहा कि हेराजा तुम्हारी रानी मरगई यह सुनकर राजा एकाएकी पृथ्वी में गिरपड़ा और बड़े शोकसे वह फोड़ा आपही फूटगया तब रोगसे छूटेहुए राजाने अपनी रानीपाई और शत्रुओं को भी जीता १७ तो जैसे उस वैद्यने अपने राजाका हितकियाथा उसीप्रकार हमभी राजाके लिये सम्पूर्ण पृथ्वीके जीतनेका उपायकरें परन्तु हमारा शत्रु मगधदेशका राजाहै जब हम किसी अन्य देशके जीतनेको जायँगे तब वह पीछेसे आकर हमारे राज्यपर चढ़ाईकरेगा इससे उसके एक बड़ी सुन्दर पद्मावती नाम कन्याहै उसको उदयन् के लिये उस राजासे मांगें और वासवदत्ताको कहीं छुपाकर घर में आगलगाकर यह खबरउड़ादें कि वासवदत्ता जलगई क्योंकि इस खबरके बिनापाये मगधदेशका राजा अपनी कन्या राजा उदयन् को नहींदेगा और हमने पहले भी उदयन् के लिये उससे कन्या मांगीथी

तव उसने कहाथा कि मैं अपनी वड़ीप्यारी कन्याका विवाह उदयन्के साथ नहींकरूंगा क्योंकि उसको वासवदत्तापर वड़ा स्नेहहै और जवतक वासवदत्ता रहैगी तवतक उदयन् भी दूसरा विवाह नहींकरेगा इससे जव वासवदत्ताके जलनेकी खवरहोजायगी तव सव काम होजायगा २४ और राजा मगधकी कन्याका विवाह होजानेपर वह हमलोगोंपर चढ़ाई नहीं करेगा वल्कि सहायताकरेगा तव हम पूर्व्वादिक चारोदिशाओ को जीतकर उदयन् को सम्पूर्ण पृथ्वीका राजा वनावेगे और पहले यह आकाशवाणी भी होचुकी है कि यौगन्धरायण आदि मन्त्रियों के उद्योगसे उदयन् सम्पूर्ण पृथ्वी का राजा होगा यौगन्धरायणके यहवचन सुनकर और इनवातों को साहस समभकर रुमण्वान् ने कहा कि शायद मगध देशके राजाकी कन्या पद्मावती के लिये यहवहाना करने से कोई दोप हमी लोगों पर न आजाय इसीवातपर मै तुम्हे कथा सुनाताहूं कि २६ गंगाजी के किनारेपर माकन्दिका नाम पुरी में एक मौनी संन्यासी वहुतसे संन्यासियो समेत किसी देवमन्दिरके मठ मे रहताथा और भीख मांगकर अपना पेट पालताथा एकसमय वह मौनी किसी वणिये के घर भिक्षालेनेको गयाथा वहां उसने भिक्षा देने को निकलीहुई एक वहुत सुन्दर स्वरूपवाली कन्या देखी उसके अद्भुत स्वरूपको देखकर वह संन्यासी उसवणियेको सुनाकर हाय २ यहवड़ा गजवहै ऐसा कहनेलगा ३२ फिर वहांसे भिक्षालेकर अपने घरको चला आया तव एकान्तमें उस वणिये ने जाकर उससे पूंछा कि आज आप अपने मौन व्रतको छोड़कर किसकारणसे वोले यह सुनकर उस संन्यासी ने कहा कि तुम्हारी कन्याके लक्षण वहुत बुरे हैं जव इसका विवाहहोगा तो निस्सन्देह तुम्हारे सव कुटुम्वका नाशहोजायगा इसीसे इसकन्याको देखकर मुझको वड़ा दुःखहुआ और तुम मेरे वड़े भक्तहो इसलिये मैंने अपना मौनव्रत छोड़कर वह वचनकहेथे सो तुम अव ऐसा उपायकरो कि उसकन्याको किसी संदूकमे वन्दकरके रात्रिके समय उसपर एक दीपक जलाकर गंगामे वहादो तव उसवणिये ने उसके वचन मानकर भयसे अपनी कन्या उसीप्रकार गंगा मे वहादी ठीकहै डरपोक लोगोको विचार नहींहोता ३६ उससमय उससंन्यासी ने अपने सेवको से कहा कि तुम गंगाजी जाओ और वहां वहतीहुई एक संदूक आवेगी जिसपर कि एकदीपक जलताहोगा उसे छुपाकर लेआओ और उसमे से जो कोई शव्दभी सुनाईपड़े तोभी उसे मत खोलना जवतक वह लोग वहां पहुंचेभी नहीं तवतक किसी राजाके लड़के ने उससंदूकको देखकर अपने नौकरोको भेजकर मँगवालिया फिर उससंदूकको खोलके उसमे से निकलीहुई उस परमसुन्दर कन्याके साथ अपना गान्धर्व विवाह करलिया और उससंदूकमें वड़ा भयंकर वन्दर वैठालकर और उसके ऊपरदीपक रखवाकर फिरवही संदूक गंगाजी मे वहादिया उसकन्याको लेकर वह राजाका पुत्र तो चलागया और उससंन्यासीके चेले उससंदूकको संन्यासी के पास लेगये तव उससंन्यासी ने चेलों से कहा कि आज मैं अकेला इससंदूक को लेकर इसमठके ऊपर कोई मन्त्र सिद्धकरूंगा और तुम लोग चुपचाप नीचेरहना यहकहकर और उससंदूकको ऊपर लेजाकर उसने वहसंदूक खोला तव उसमे से एकवड़ा भयंकर वन्दर निकला और उसने दौड़कर उसके कान और नाक काटलिये ५१ इसप्रकार वन्दरके काटनेपर वह संन्यासी डरकरनीचे

उत्तर आया और उसे देखकर उसके चेलों ने वड़ी मुश्किलसे अपनी हँसीको रोंका प्रातःकाल इस वृ-त्तान्तको जानकर सम्पूर्ण लोग हँसनेलगे और वणियां तथा वणियेकी कन्या ऐसे वरकोपाकर अत्यन्त प्रसन्नहुए इसप्रकार जैसे उससंन्यासीकी हँसीहुईथी उसीप्रकार इसवहाने के खुलजाने से कहीं हमारीभी हँसी न होजाय और वासवदत्ताका राजासे विरहहोनेपर वहुतसे उपद्रव होनेका सन्देह है रुमण्वान्के यह वचन सुनकर यौगन्धरायणने कहा कि ऐसा न करने से हमारा उद्योग सिद्ध नहीं होसक्ता और उद्योग के विना राजाके व्यसनी होनेसे निस्सन्देह यहराज्य नष्टहोजायगा ५६ तव हम लोगोंकी जोमंत्रीपनेकी प्रशंसाहै वह सव धूलहोजायगी और हमलोग स्वामीके शुभचिन्तक भी न रहैंगे जहां सम्पूर्ण राज्यकाज राजाके आधीनहै वहांराजाकी वुद्धि मुख्य समझनी चाहिये और वनने से वा विगड़ने से मंत्रियोंका कोई दोप नही होता और जहां राजकाज मंत्रियोंके आधीनहै वहां मंत्रियोंकीही वुद्धिसे सव कार्य्यसिद्ध हो सक्ताहै और जो मंत्रीलोगही उत्साह से रहितहोजायँ तो अवश्यही राज्य नष्ट होजायगा और जो तुम वासवदत्ताके पिता चण्डमहासेनसे डरतेहो तो यह डरनेकी वात नही है क्योंकि चण्डमहासेन उस-के पुत्र और वासवदत्ता यह सव मेरे वचनोको मानतेही हैं यौगन्धरायणके इस कहनेपर वुराई होनेके सववसे रुमण्वान् मंत्री फिर वोला कि प्यारी स्त्रीके वियोगमें वड़े २ विचारवान्भी विकल होजाते हैं फिर उदयन्का क्या कहना इसी वातपर मैं तुमसे एक कथा कहताहूं सुनों ६२ श्रावस्ती नाम पुरी में देवसेन नाम वड़ा वुद्धिमान् एक राजाथा और उसीपुरी में एक वड़ा धनवान् कोई वणिया रहताथा उस वणियेके एक वड़ी सुन्दर कन्याथी उस कन्याका नाम उन्मादनीथा क्योंकि उसे देखकर सव लोग कामसेमतवाले होजातेथे उस वणियेने यहशोचा कि विना राजाके पूंछे मैं इसकन्याका विवाह किसीके साथ नहींकरूंगा नही तो शायद राजा मेरे ऊपर खफा होजायगा तव उसने जाकर राजा देवसेन से कहा कि हे राजा मेरी वड़ी सुन्दर कन्याहै जो आपकी इच्छाहोय तो आप लेलीजिये यह सुनकर राजाने ब्राह्मणोंको उस के घर इसलिये भेजा कि वह जाकर कन्या के लक्षण देखआवें कि अच्छे हैं या नहीं तव राजाके भेजे हुए ब्राह्मण वहांगये और उस उन्मादनीको देखकर कामके वशीभूत होगये फिर सावधान होकर उन ब्राह्मणो ने यह विचारा कि जो राजा इसके साथ विवाहकरेगा तो इसके वशीभूत होकर सव राज्य कार्य्योंकोछोड़-देगा और ऐसा करने से राज्य नष्ट होजायगा इसलिये ऐसा करनाचाहिये कि इस राजाका इसके साथ विवाह न होय यह शोचकर ब्राह्मणोने राजासे जाकर कहदिया कि उस कन्याके लक्षण वहुत वुरे हैं ७१ इसके उपरान्त राजासे त्यागीहुई उस कन्याका उस वणिये ने राजाके सेनापति के साथ विवाहकरदिया एक समय अपने पतिके घरमें उस उन्मादनी कन्याने राजाको उसी मार्गसे जाताहुआ जानकर महल केऊपर खड़ी होकर राजाको अपना रूपदिखाया उसके परम सुंदर रूपको देखकर कामसे व्याकुल हुआ राजा अपने महल में आकर और यह जानकर कि मैंने पहले इसीका त्याग कियाथा वहुत ज्वर सहित सन्तापसे युक्त होगया राजाकी यहदशा देखकर सेनापतिने कहा कि हे राजा वह पराई स्त्री नही है आप की दासी है आप उसे लेलीजिये और नही तो मैं उसे किसी देवमंदिरमें त्याग करदूं तो वहांसे आप उसे

लेलीजिये अपने सेनापतिके ऐसे वचनसुनकर राजा बोला कि मैं परस्त्रीको न लूंगा और जो तुम उसका त्याग करदोगे तो तुम्हारा धर्म नष्टहोगा और मैंभी तुमको दण्डदूंगा यह सुनकर सम्पूर्ण मंत्री चुप होगये और राजा उसी कामज्वर से सन्तप्त होकर कुछ कालमें मरगया इसप्रकारसे वह बड़ा धैर्य्यवान्भी राजा उन्मादनीके विरहसेमरगया तो वासवदत्ताके बिना उदयन्की क्या दशाहोगी ८० रुमण्वान् के यह वचन सुनकर यौगन्धरायण फिर यहवचन बोला कि कार्य्य के देखनेवाले राजालोग क्लेशको सहलेते हैं देखो रावणके मारनेके लिये देवतालोगोने युक्ति पूर्व्वक रामचन्द्र और सीताका वियोग,करादियाथा तब क्या रामचन्द्रजीने विरहको नहीं सहाथा यह सुनकर रुमण्वान् फिर बोला कि रामचन्द्रादिक तो देवता थे वह सब बातोंको सहसक्ते थे परन्तु मनुष्य लोग ऐसे क्लेशोंको नहीं सहसक्ते हैं इसबातपर मैं तुम्हें एक कथा सुनाताहूं मथुरानाम नगरी मे एक यइल्लकनाम वणियां रहताथा उसके एक बड़ी प्यारी स्त्री थी और वह स्त्री भी उससे बड़ा स्नेह करती थी एकसमय वह वणियां किसी बड़ेकामसे किसी दूसरे द्वीपको जाने लगा तब उसकी स्त्री भी उसके साथ चलने को तैयारहुई क्योंकि बहुत स्नेह करनेवाली स्त्रियां विरहको नहीं सहसक्ती हैं परन्तु वह वणियां उसस्त्रीको विनालियेही अपने घरसेचला तब उसकी स्त्री द्वारेके किवाड़को पकड़के रोतीहुई पीछेसे उसेदेखतीरही जब वह उसकीनजरसे बाहर निकलगया तब उसके वियोग को न सहकर उसस्त्री के प्राणनिकलगये यह खबर सुनकर उसीवक्त लौटेहुए उस बणियेने पृथ्वी पर मरीपड़ीहुई अपनीस्त्री देखी उससमय उसकी ऐसी शोभाहोरहीथी कि मानों आकाशसे सोतीहुई कोई चन्द्रलोक की देवता पृथ्वीपर गिरपड़ी है ९१ सुन्दर पीतवर्णवाली और बिखरेहुए बालवाली अपनी स्त्रीको गोदी में रखकर रोतेहुए उस वणिये के भी बड़ेशोकसे प्राण निकलगये इसप्रकार परस्परके विरह से वह दोनों मरगये इससे मैं इनदोनों के भी वियोग से डरताहूं यह कहकर रुमण्वान् के चुपहोजानेपर बड़ा धैर्य्यवान् यौगन्धरायण बोला कि मैंने इनसब बातों का निश्चय करलिया है और राजा लोगों के कार्य्य बहुधा इसीप्रकार के होते हैं ९६ इसीबातपर मैं तुम्हें एककथा सुनाताहूं कि उज्जयिनी में प्रथम एक पुण्यसेन नाम राजाथा उसपर किसी बड़ेबलवान् राजाने चढ़ाईकी तब उसके मंत्रियोंने उसशत्रुको दुर्जय समझकर पुण्यसेन मरगया यह झूठीखबर उड़ादी और पुण्यसेन को कहीं छिपाकर कोई अन्यमुर्दा राजा लोगोकी विधिसे जलवादिया इसके उपरान्त उनमंत्रियो ने दूतके द्वारा उसशत्रु के पास यह संदेशा भेजा कि अबकोई हमारा राजा नहीं हे तुम्हीं हमारे भी राजा होजाओ इसबातको सुनकर प्रसन्नहुए शत्रुके समीप सेनासमेत जाकर उनमंत्रियों ने उसकी सबसेनाको बिगाड़दिया फिर राजाकी सेनाके बिगड़ जानेपर अपने पुण्यसेन नाम राजाको प्रकटकरके उनमंत्रियो ने उसशत्रु को मारडाला इसीप्रकार के राजा लोगों के कार्य्य हुआकरते हैं इससे हमलोग भी वासवदत्ता के जलने के बहाने से सब कार्य्य को करेंगे १०३ यौगन्धरायण के ऐसे निश्चित वचनों को सुनकर रुमण्वान् बोला कि जो ऐसाहीनिश्चयहै तो वासवदत्ताकेभाई गोपालकको बुलाके उस्से सबसलाहकरके संपूर्णकार्यकरो तब यौगन्धरायणने यह उसकी बातमानली और यौगन्धरायणके विश्वाससे रुमण्वान्नेभी सब कार्य्य

का निश्चय करलिया दूसरेदिन उनदोनों मंत्रियोंने उत्कंठाके वहाने उस गोपालकके बुलाने के लिये दूत भेजा जो किसी कार्य्य के लिये पहले यहांसे चलागया था गोपालक उसदूतके वचनको सुनकर वहांसे चलाआया तव आयेहुए गोपालकको रात्रिके समय यौगन्धरायण रुमण्वान् समेत अपनेघरमें लेगया और वहाँ यौगन्धरायणने जो विचार रुमण्वान्के साथकिया था वह सवउससे कहदिया११० गोपालक ने अपनी वहनके दुखदायी भी उस कार्य्य को राजाकाहित समझकर स्वीकार करलिया ठीकहै सज्जन बुद्धिमान् लोगोके वचन अवश्य मानने चाहिये उससमय रुमण्वान् फिर वोला कि यह सववात तो ठीक होगई परन्तु रानीको जलीहुई सुनकर प्राणोंकोत्यागतेहुए उदयन्को कौन वचावेगा अच्छे उपाय आदि सामग्री के होनेपरभी अनर्थका रोकनाही मंत्र (सलाह) का मुख्यअंगहै यह वचनसुनकर सम्पूर्ण कार्य्यों को पहलेही से यौगन्धरायण विचारचुकाथा इसलिये यौगन्धरायण वोला कि इसवातका कुछ सन्देह नहीं है क्योकि गोपालकको वासवदत्ता प्राणोंसे भी अधिकप्यारी है यहवात राजा उदयन्भी जानताहै तो गोपालकको थोड़ा दुखी देखकर शायद वासवदत्ता फिर जीआवे ऐसा शोचकर उदयन् धीरजरक्खेगा और राजा वड़ागंभीरहै इससे कोई सन्देह न करनाचाहिये फिरशीघ्रही पद्मावतीका विवाहकरके वासवदत्ता थोड़ेही दिनों में उसे मिलजायगी ११७ यह निश्चयकरके यौगन्धरायण गोपालक और रुमण्वान्ने यहसलाहकी कि युक्तिपूर्व्वक राजा और वासवदत्ताको लावाणकदेशमें लेचलें वह लावाणकदेश हमारे राज्यके किनारेपरहै और मगधदेश के समीपहै वहां शिकारखेलने के लियेभी वड़ा उत्तम जंगलहै इससे राजा जव शिकारखेलनेको जायगा तव रानी के महलको जलाकर हम अपना प्रयोजन सिद्धकरलेंगे और वासवदत्ताको युक्तिपूर्व्वक लेजाकर पद्मावती के यहां छिपाकररक्खेंगे जिससे कि पद्मावतीही वासवदत्ताके धर्मकी साक्षिणी रहैगी रात्रिके समय इसप्रकार सलाहकरके दूसरे दिन राजाके यहां वह सव मिलकरगये तव रुमण्वान्ने राजासेकहा कि हेराजा हमलोग लावाणकदेश को चलें तो वहुतअच्छाहोय क्योंकि वहदेश वड़ारमणीकहै वहां वड़ीसुन्दर शिकारकीभी पृथ्वी है और उस पृथ्वीपर सुन्दर तृण तथा घासभी लगी है इससे वहां जाने में कोई क्लेशनहीं है और निकटहोने के कारण मगधदेशका राजा वहां प्रायः उपद्रव कियाकरता है इसलिये उसदेशकी रक्षाकरने के लिये और अपने चित्तको प्रसन्नकरने के निमित्त अवश्य चलना चाहिये १२५ यहसुनकर वासवदत्तासमेत उदयन्ने केवल क्रीड़ाकरनेकी इच्छासे लावाणकजानेका विचारकिया फिर दूसरे दिन यात्राकी लग्न ठीकहोजानेपर अकस्मात् नारदमुनि अपने तेजसे दिशाओंको प्रकाशित करतेहुए और आकाश से उतरतेहुए चन्द्रमाके समान चन्द्रवंशमें उत्पन्नहुए उदयन्पर प्रसन्नहोकर उसके पासआये १२८ उदयन् ने आदरपूर्व्वक नारदजीका वड़ा सत्कारकरके प्रणामकिया तव नारदजी ने प्रसन्नहोके एककल्पवृक्षके पुष्पों की माला उदयन्कोदी और वासवदत्ताको यह वरदानदिया कि कामदेवके अंशसे उत्पन्नहोकर तेरा पुत्र सम्पूर्ण विद्याधरोंका राजाहोगा इसकेपीछे नारदजी उदयन्से वोले कि हे राजा वासवदत्ताको देखकर मुझे तुम्हारे पितर पाण्डवलोगोंकी यादआगई पांचों पाण्डवोंकी एक द्रौपदी स्त्री थी और द्रौ-

पदी भी वासवदत्ताके समान महास्वरूपवती थी यह देखकर मैंने पाण्डवों से कहा कि तुमलोग स्त्री के वैरसे बचेरहना क्योंकि स्त्री के वैरसे बड़ी२आपत्तियां आजाती है इसी वातपर मैं, तुमसे एककथाकहताहूं कि पूर्व्वसमयमें बड़े वलवान् सुन्द और उपसुन्द नाम दो दैत्य भाई थे उनके मारनेकी इच्छासे ब्रह्मा ने बिश्वकर्म्मा से एक बड़ी उत्तम स्वरूपवाली तिलोत्तमानाम स्त्री वनवाई वह तिलोत्तमा ऐसीसुन्दरथी कि मानो उसी के देखने के लिये ब्रह्माने चारों दिशाओं में चारमुख धारणकिये और श्री शिवजी ने भी उसे चारोंओर देखने के निमित्त सबओर मुखधारणकिये वह तिलोत्तमा कैलाशपर्व्वतपर रहनेवाले सुंद और उपसुन्दके रिझानेको ब्रह्माकी आज्ञासे गई उसे निकटआई देखकर वह दोनों उसको पकड़नेलगे तव उसके लेनेको वह दोनों परस्पर लड़कर मरगये १४० इसप्रकार से स्त्रियो के पीछे सबको आपत्तियां भोगनी पड़ती है तुम पांचो भाइयोंकी एकस्त्री द्रौपदी है तो इस वैरको तुम लोग अवश्य वचाये रहना और हमारे कहने से यह निश्चय करलो कि जब बड़े भाईके पास द्रौपदी होवे तब उसे छोटे भाई माता करके मानें और जब छोटोंके पासहोय तो बड़े भाई उसको वहूकरके मानें हमारे इस वचनको अपने कल्याणके लिये सब पांडवोंने मानलिया पांडवलोग हमारे बड़े मित्रथे इसीसे मैं तुमकोदेखनेको आयाहूं और तुमसे यह कहेजाताहूं कि जैसे पांडवलोगोंने हमारेवचनोंको मानाथा उसीप्रकार तुम अपनेमंत्रियों के वचनोंको मानों इससे थोड़ेही कालमें तुम्हारा बड़ा ऐश्वर्य्य होगा वीचमें कुछ समय तक तुमको दुःखभीहोगा परन्तु उस दुःखमें बहुत मतघवराना इसप्रकारसे समझाकर उदयन्के आगे होनेवाले ऐश्वर्य्य को जतलातेहुए नारदजी वहीं अन्तर्द्धान होगये और नारद मुनिके इन वचनों से यौगन्धरायण आदिक मंत्रियोंने अपने विचारेहुए कार्य्यको सिद्ध समझकर उसमें वड़ा यत्न किया १४९ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांलावाणकलम्बकेप्रथमस्तरङ्गः १ ॥

इसके उपरान्त पहले कहीहुई युक्ति से यौगन्धरायण आदिक मंत्री वासवदत्ता समेत राजाकोलावाणक देशमें लेगये और राजा सम्पूर्ण सेनासमेत लावाणक देशमेंपहुँचा और उदयन्के लावाणकदेश में आनेकी खबर सुनकर इसकारणसे मगधदेशका राजा भयभीत हुआ कि कहीं मेरे ऊपर तो चढ़ाई करके नहीं आते हैं इसीसे उसने यौगन्धरायणके पास एकदूत भेजा और यौगन्धरायणने उसदूतको प्रसन्नकरके लौटादिया इसके उपरान्त लावाणकदेशमे रहताहुआ राजाउदयन् शिकार खेलने को रोज जायाकरताथा एकदिन राजा के चले जानेपर गोपालक यौगन्धरायण रुमरावान् और वसन्तक यह चारों सलाहकरके एकान्त में वासवदत्ता के पासगये और वहां जाके पहले कही हुई सम्पूर्ण वातों को समझाकर राजाके कार्य्य में उससे सहायता मांगनेलगे और यहवात गोपालक उसे पहलेभी समझा चुकाथा इसलिये उसने उस विरहके दुःखको स्वीकार करलिया ठीकहै पतिव्रता कुलीन स्त्रियां कौन २ क्लेश नहीं सहतीं ६ इसके उपरान्त यौगन्धरायण ने युक्ति से वासवदत्ताका रूप वदलकर उसकारूप ब्राह्मणी कासा वनादिया वसन्तकका रूप काणे बालक कासा वनादिया और अपनारूप वृद्धब्राह्मण कासा वनालिया फिर वासवदत्ता और वसन्तकको साथलेकर यौगन्धरायण मगधदेश को चलागया

वासवदत्ता अपने घरसे चली तो सही परन्तु उसका चित्त अपने पति में लगारहा उनसबके चलेजानेपर रुमरवान् ने वासवदत्ताका महल जलादिया और यहखबर उड़ाई कि वासवदत्ता समेत वसन्तक जल-गया लोगोंने धीरे २ आकर आग तो बुझाई परन्तु देशभरमें वासवदत्ताके जलनेकी खबरसे रोदनकी ध्वनि फैलगई इसके उपरान्त यौगन्धरायण वासवदत्ता और वसन्तकको लेकर मगधदेश में पहुंचा १६ वहांजाकर यहजानकर कि राजकन्या बगीचे में है यौगन्धरायण उनदोनोंको साथमें लेकर द्वारपालकों के रोकनेपरभी बगीचे में चलागया वहां ब्राह्मणी रूप धारणी वासवदत्ताको देखके पद्मावतीको बड़ा स्नेह उत्पन्नहुआ तब उसने रक्षकोंको रोककर यौगन्धरायणको अपनेपास बुलाकर पूछा कि हे ब्राह्मण यह स्त्री तुम्हारीकौनहै और यहांतुम किसलिये आयेहो तब यौगन्धरायणने कहा कि हे राजपुत्री यह मेरी कन्याहै इसका पति बड़ाकुचाली है इसलिये इसे छोड़कर कहीं चलागया है तो अब इसे तुम्हारे पास छोड़कर इसके पतिको ढूंढ़लाऊंगा और यह काणबालक इसकाभाई है इसेभी तुम अपनेही पास रहने दो जिससे कि इसको अकेलेरहने से दुःख न हो तबराजकन्याने उसके वचनोंको स्वीकार करलिया और यहभी कहदिया कि मैं इनदोनोंको बड़ीइज्जतसे सुखपूर्वक रक्खूंगी राजकन्याके यह वचन सुनकर और उससे आज्ञामांगकर यौगन्धरायण लावाणकको चलाआया २४ इसके उपरान्त अवन्तिकानाम उन ब्राह्मणीरूप वासवदत्ताको और काणेबालकरूप वसन्तकको साथलेकर पद्मावती अपनेघरको आई वहांजाकर दिवालों में सीताजीकी बनीहुई तसवीरोंको देखकर वासवदत्ता विरहकी व्यथाको सहतीभई फिर वासवदत्ताकी चेष्टासे सुकुमारतासे बैठने उठनेकी चतुरतासे और शरीरकी बड़ी उत्तम सुगन्धिसे पद्मावती उसे बड़ीउत्तम स्त्री जानके अपनेआभूषण तथा वस्त्रादिकोंसे उसकी खातिरकरतीथी और अपने चित्तमें शोचती थी कि यह कोई दिव्य स्त्री छिपकर मेरे यहां ऐसेरहती है जैसे कि विराटके यहां द्रौपदी रहतीथी एक दिन वासवदत्ताने नहीं म्लानहोनेवाली माला और नहीं म्लानहोनेवाला तिलक जिसकी कि युक्ति उसने उदयन्से सीखीथी वही पद्मावती के शरीरमें बनादिये पद्मावती के शरीरमें ऐसे माला और तिलकको देखके उसकी माताने उससे पूछा कि यह किसने बनायाहै यह सुनकर पद्मावती बोली कि मेरे यहां एक अवन्तिका नाम ब्राह्मणी रहती है उसने बनायाहै तब उसकी माता बोली कि हे पुत्री वह मानुषी नहीं है कोई देवी है क्योंकि मानुषीको ऐसी विद्याकहां से आसक्ती है देवता और मुनिलोग भी सज्जन लोगोंकी परीक्षा करने के लिये उनके घर रहा करते हैं इसी बातपर मैं तुझे एककथा सुना-तीहूं ३५ एक समय कुन्तिभोज नामराजाके यहां दुर्वासा मुनि उसकी परीक्षा के लिये आके रहे राजाने मुनिकी सेवाके लिये अपनी कन्या कुन्ती को आज्ञादेदी और वह कुन्ती भी यत्नपूर्वक मुनिकी सेवा करने लगी एक समय कुन्ती की परीक्षा करने के लिये दुर्वासा ऋषिने उससे कहा कि जल्दी से खीर-बनाओ मैं अभी स्नान करके आताहूं यह कहकर जल्दी से स्नानकरके दुर्वासा भोजन के लिये आ-गये तब कुन्तीने खीरसे भराहुआ पात्र दुर्वासाके आगे रखदिया बहुत गरमखीरसे उसपात्रको जलता हुआ जानकर और हाथ से छूने के योग्य न जानके दुर्वासाने कुन्तीकी पीठकी ओर दृष्टिकी दुर्वासा

के आशयको समझकर कुन्ती ने उस पात्रको अपनी पीठपर रखलिया और दुर्व्वासाने यथेष्ट भोजन किया पीठके जलजानेपरभी कुन्तीकी चेष्टामें कोई विकार न देखके दुर्व्वासाने प्रसन्नहोकर कुन्तीको वरदान दिया इसप्रकारसे दुर्व्वासा मुनिने कुन्तीकी परीक्षाकी थी तो यह अवन्तिकाभी कोई देवी है छिपकर तेरे पास रहती है इस्से तुम इसका वड़े यत्नसे सेवनकरो माताके ऐसे वचन सुनकर पद्मावती वासवदत्ताकी वड़ी सेवाकरने लगी और वासवदत्ताभी अपने पतिके वियोगसे ऐसी मलिनचित्त और उदासीन रहती थी कि जैसे रात्रिके समय कमलिनी उदास रहती है कभी२ वालकोंके समान वसंतककी क्रीड़ाको देखकर वियोगिनी वासवदत्ताको कुछहँसीभी आजातीथी ४६ इसीवीचमें राजाउदयन् वहुत दिनतक शिकारखेलकर रात्रिके समय अपने घरकोआया वहां आकर देखा कि वासवदत्ताका महल जलगयाहै और यहभी सुना कि वसन्तक समेत वासवदत्ता जलगई यहसुनतेही राजा मूर्च्छा खाकर पृथ्वीपर गिरपड़ा और क्षणभरमें मूर्च्छासे उठेहुए राजाका हृदय शोकसे जलनेलगा मानों उसमहल की जलानेवाली अग्नि राजाकेभी हृदयमें चलीगई इसके उपरान्त दुःखसे वहुत विलापकरके राजाने शरीर त्यागनेका निश्चयकिया फिर क्षणभरकेवाद राजाने यहशोचा कि नारदमुनि यह कहगये है कि वासवदत्ताका पुत्र सम्पूर्ण विद्याधरोंका राजाहोगा सो उनकाकहा मिथ्या नहींहोसक्ता और यहभी नारदनेही कहाथा कि कुछकालतक तुमकोदुःखहोगा और दूसरी वात यहहै कि इस गोपालककोभी वहुत शोचनहीं है और यौगन्धरायण आदिक मंत्री भी वहुत दुखीनहीं हैं इससे मालूमहोता है कि शायद किसीप्रकारसे वासवदत्ता जीआवे और यह मंत्रियों ने कोई चालकी है इससे मैं जानताहूं कि वासवदत्ता शायद मुझे फिरभी मिलजायगी इसलिये इसवातका अन्तदेखनाचाहिये यह विचारकर और मंत्रियों के समझाने से राजाउदयन्ने अपने चित्तमें धैर्य्य धारणकिया ५६ और गोपालकनेभी छिपाकरके किसी दूतकेद्वारा अपनेघर यह सँदेशा इसलिये भेजदिया कि जिससे राजा चण्डमहासेनको घवराहट न होवे इसप्रकार इस वृत्तांतके होजानेपर लावाणकसे गयेहुए मगधराजके गोयन्दों ने यहसववृत्तांत राजासेकहा यह वृत्तांत सुनकर मगधराजने उदयन्के साथ पद्मावती के विवाहकरदेनेका विचार किया और दूतोंके द्वारा यह संदेशा उदयन् तथा यौगन्धरायण मंत्री के पास कहलाभेजा तव यौगन्धरायणके कहने से उदयन् ने पद्मावती के साथ अपना विवाह करना इसलिये स्वीकार किया कि शायद इसीनिमित्त इनलोगों ने वासवदत्ता को छिपारक्खा होगा इसके उपरान्त लग्नका निश्चय करके यौगन्धरायणने उसदूतको यह वातकहकर लौटाया कि तुम्हारी इच्छा हमने स्वीकार करली इससे आजके सातवें दिन पद्मावती से विवाह करनेको राजा उदयन् वहाँ आवेंगे और लग्नकी जल्दी इसलिये की है जिससे उदयन् वासवदत्ता की यादभूलजाय ६४ उसदूतने जाकर सव संदेशा मगधराजसे कहा और मगधराजने भी वह सववातें स्वीकार करलीं इसके उपरान्त मगधराजने अपनी कन्याके स्नेहसे वड़ेउत्साह पूर्वक विवाहके उत्सवकी वड़ी तैयारी की इस खवरको सुनके अभीष्टवरके मिलनेसे पद्मावती वड़ीप्रसन्न हुई और वासवदत्ताको दुःख हुआ एक तो वासवदत्ता पतिकेवियोगसे पहलेही महा उदासीन थी दूसरे

इसबात को सुनकर और भी उदासीन होगई वासवदत्ता को उदासीन देखकर वसन्तकने उससे कहा कि उदयन् का स्नेह तुम्हारे ऊपर कमनहीं हुआहै किन्तु मगधराज शत्रुको अपना मित्रबनाने के लिये यह युक्तिकीगई है यह सुनकर वासवदत्ता को धैर्य हुआ जब पद्मावती के विवाहके दिन निकट आये तब फिर वासवदत्ताने नही म्लान होनेवाले हार और तिलक पद्मावती के बनादिये इसके उपरान्त सातवें दिन राजा उदयन् अपने मन्त्रियों समेत विवाह करने के लिये मगधदेशमें आया जो राजा उदयन् को फिर वासवदत्ताके मिलजानेकी आशा न होती तो वह मनसे भी इस उद्योगको कभी स्वीकार न करता उदयन् को आया हुआ सुनकर जैसें उदयहुए चन्द्रमाको देखकर समुद्र उमगताहै इसी प्रकार उदयन् के लिवालानेको मगधराज चला ७२ जिससमय राजा उदयन् ने मगधदेशकी राजधानी में प्रवेश किया उससमय सम्पूर्ण पुरवासी अपने २ घर में बड़ा उत्सवकरके उदयन् के देखने को चले विरहसे कृश शरीरवाले राजाउदयन् को देखके लोगों के चित्त में यह सन्देह होताथा कि यह रतिके विरहसे दुबला हुआ कामदेवही है इसके उपरान्त मगधराज के मन्दिर में जाकर अनेक स्त्रियों से भरे हुए विवाहके स्थानमें राजाउदयन् गया वहांजाकर उसने अपने मुखारविन्द से चन्द्रमाकी भी जीतने वाली पद्मावती देखी और पद्मावती के नहीं म्लानहोनेवाले माला और तिलकको देखकर उसके चित्तमें यह सन्देहहुआ कि यह इसके पास कहां से आये क्योंकि इसको मेरे और वासवदत्ताके सिवाय कोई दूसरा नहींजानता फिर उदयन् ने वेदीपर बैठके पद्मावतीका पाणिग्रहण किया वह पद्मावतीका हाथ नहीथा मानों सम्पूर्ण पृथ्वीकी राजलक्ष्मीका हाथ था उदयन् को वासवदत्ता बहुत प्यारी है इससे यह इस उत्सवको नहीं देखसक्ता इसीलिये मानों वेदीकेधुएँ ने आंसुओं से उसके नेत्र रोकदिये ८० अग्निकी प्रदक्षिणाकरने से लालहोजानेवाला पद्मावतीका मुख ऐसा शोभायमान होताथा कि मानों अपने पति के अभिप्राय को जानकर यह कुपितहोगई है फिर विवाहहोजाने के उपरान्त उदयन् ने पद्मावतीका हाथ छोड़दिया परन्तु वासवदत्ता को हृदयसे क्षणभरभी नही छोड़ा विवाहके उत्सव में मगधराज ने इतने रत्न उदयन् को दिये जिससे यह मालूमहोताथा कि सम्पूर्ण पृथ्वी रत्नों से खालीहोगई उससमय यौगन्धरायणने अग्निको साक्षीकरके राजा उदयन् और मगधराजका द्रोह छुटाकर सन्धिकरादी ८४ फिर उस उत्सव में अनेक प्रकारके वस्त्र तथा आभूषण बँटनेलगे नट डोम गानेलगे और वेश्या नाचनेलगीं उससमय अपने पतिके उदयहोनेकी इच्छासे वासवदत्ता दिनमे चन्द्रमाकी कांतिकेसमान छिपीरही इसके उपरान्त जब राजा उदयन् महलके भीतरगया तब यौगन्धरायणने इस सन्देह से कि ऐसा न होय कहीं राजा वासवदत्ताको देखले तो मंत्र खुलजायगा मगधराजसे कहा कि उदयन् को आप आजही विदा करदीजिये उसके वचनों को मानकर मगधराजने उदयन् से यह बातकही और उसने भी स्वीकारकरली तब उदयन् अपनी सम्पूर्ण सेनाको भोजनादिक से निवृत्तकरके पद्मावती और मंत्रियों समेत वहां से चला फिर पद्मावतीकी भेजीहुई सवारीपर चढ़कर और उसी के भेजेहुए सिपाहीआदि को साथलेकर वासवदत्ताभी वसन्तक समेत सेनाके पीछे २ छिपीहुईचली धीरे २ पद्मावती समेत राजा उदयन् ला-

वाणक में अपने घरको पहुँचा और वासवदत्ता सिपाहियोंको बैठालकर गोपालकके घरको चलीगई वहां गोपालकको देखके उसके कण्ठ में लिपटकर वासवदत्ता बहुत रोई यह बातजानकर यौगन्धरायण तथा रुमखान् भी अपने मंत्रको गुप्तसमझकर गोपालकके यहांगये ९६ जबतक यौगन्धरायण वासवदत्ताको यहां सावधानकरनेलगा तबतक सिपाहियों ने जाकर पद्मावती से कहा कि अवन्तिका हम लोगों को छोड़कर गोपालकके घर में चलीगई उदयन् के आगे उनलोगों के ऐसे वचन सुनकर पद्मावती कुछ सन्देहयुक्तहोकर उनसे बोली कि तुम अवन्तिकासे जाकरकहो कि वह ब्राह्मण तुमको हमारे सुपुर्दकरगयाथा इसलिये तुम वहां क्यों गईहो जहांहमरहैं वहांहीचलीआओ १०० यह सुनकर जब वह सिपाहीचलेगये तब राजाने पद्मावती से एकान्तमें पूँछा कि यह माला और तिलक किसनेवनाये हैं तब पद्मावतीबोली कि कोई ब्राह्मण अवन्तिकानाम अपनी कन्याको मेरे यहां रखगयाथा उसीकी यह कारीगरी है और उसीका यहहाल सिपाहीलोग कहतेथे यह सुनकर और शोचकर कि शायद वासवदत्ता गोपालकके घरहोगी उदयन् गोपालकके यहांचलागया वहांजाकर उदयन्ने देखा कि वाहरतो सिपाही वैठे हैं और भीतर गोपालक यौगन्धरायण रुमखान् तथा वसन्तकसमेत वासवदत्ता वैठी है ग्रहणसेछुटीहुई चन्द्रमाकी मूर्त्तिकेसमान परदेशसे आईहुई वासवदत्ताको देखकर राजाउदयन् शोकसे व्याकुलहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा और वासवदत्ताभी कंपायमानहोकर पृथ्वीपरगिरपड़ी और अपने चरित्रकी निन्दाकरके रोनेलगी उन दोनोंका ऐसा विलापदेखकर यौगन्धरायणके भी आंसूआगये और उससमय उस कोलाहलको सुनकर पद्मावती भी वहांआगई और राजा तथा वासवदत्ताकी यह दशा देखकर वह भी उन्हीं के समान रोदनकरनेलगी क्योंकि सतीस्त्रियां बड़े स्नेहयुक्त और भोली होती हैं ११० उससमय वासवदत्ताने रोकर यहकहा कि पतिको दुःखदेनेवाले इस मेरे जीवनसे क्या प्रयोजनहै तब यौगन्धरायण बोला कि मगधराजकी कन्याके मिलने से आप चक्रवर्त्ती होजाइयेगा इसलिये मैंनेही यह उपाय कियाहै इसमें वासवदत्ताका कोई अपराधनहीं है और यह पद्मावतीही इसके धर्म्मकी साक्षिणी है यौगन्धरायणके यह वचनसुनकर पद्मावती ईर्षारहितहोकरबोली कि वासवदत्ताकी शुद्धता प्रकटकरनेको मैं अग्निमें प्रवेशकरसक्तीहूं तब राजाने कहा कि इसमें मेराही अपराधहै जिसके कारण रानी वासवदत्ता को भी क्लेशसहनापड़ा यहसुनकर वासवदत्ताने कहा कि मैं राजाको अपनी शुद्धता प्रकटकरने के लिये अवश्य अग्निमें प्रवेशकरूंगी तब वड़ाबुद्धिमान् यौगन्धरायण आचमनकरके और पूर्व्वकी ओर मुख करके यह वचनबोला कि जो मैं राजाका हितकारीहूं और रानी वासवदत्ता शुद्धहै तो हे लोकपाललोगो तुमभी इसवातकोकहो नहीं तो मैं अपनाशरीर त्यागताहूं यहकहकर यौगन्धरायणके चुपहोजानेपर यह आकाशवाणीहुई कि हे राजा तुम धन्यहो जिसका ऐसा श्रेष्ठ यौगन्धरायण मंत्री है और वासवदत्ता सरीकी जो पूर्व्वजन्मकी देवी है वह तुम्हारी स्त्री है और वासवदत्तामें कोईदोष नहीं है यहकहकर आकाशवाणी वन्दहोगई १२० नवीन मेघों के गर्ज्जने के समान इस आकाशवाणीको सुनकर नीलकण्ठ पक्षियों के समान ऊपर गर्दनउठायेहुए वह सबलोग सन्तापसे रहितहोगये फिर गोपालकसमेत राजा

उदयन् ने यौगन्धरायणके कार्यकी बड़ीप्रशंसाकी और सम्पूर्ण पृथ्वी अपने हाथमें आईहुईजानी इसके उपरान्त राजाउदयन् वासवदत्ता और पद्मावती को पाकर नित्य २ उनके साथ क्रीड़ाकरताहुआ बड़े आनन्दको प्राप्तहुआ १२३॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांलावाणकलम्बकेद्वितीयस्तरङ्गः २॥

इसके उपरान्त एकदिन राजाउदयन् वासवदत्ता तथा पद्मावतीके साथ एकान्तमें मद्यपानादिक करके गोपालक रुमरवान् वसन्तक तथा यौगन्धरायणको बुलाकर विश्वासयुक्त बातें करनेलगा उससमय राजा अपने विरहके विषयमें यह कथा कहनेलगा कि पूर्वसमयमें पुरूरवा नाम एक ऐसा प्रतापी राजा था जिसका रथ पृथ्वी के समान स्वर्गमें भी चलताथा एक समय नन्दनवनमें विहारकरतेहुए राजाको देखकर उर्वशीनाम वेश्या कामसे ऐसी व्याकुलहुई कि उसकी विकलताको देखकर उसकी रंभादिक सखियां बहुत घबरागई और राजाभी उर्वशीको देखकर कामसे अत्यन्त पीड़ितहोकर मूर्च्छितहुआ इसके उपरान्त श्रीकृष्णभगवान्ने क्षीरसमुद्र में दर्शन करने के लिये आयेहुए नारदमुनिसे कहा कि हे नारद नन्दनवनमें राजापुरूरवा उर्वशीको देखकर बहुत व्याकुलहोरहाहै तो तुमजाकर हमारी आज्ञासे पुरूरवा को इन्द्रसे कहकर उर्वशी दिलवादो १० विष्णुभगवान्की यहआज्ञापाकर नारदजीने पुरूरवाको मूर्च्छा से जगाकर यह कहा कि हे राजा उठो तुम्हारे लिये विष्णुभगवान्ने हमको यहांभेजाहै क्योंकि वह अपने निष्कपटभक्तोंकी आपत्ति नहीं देखसक्तेहैं इसप्रकार पुरूरवाको समझाकर नारदमुनि पुरूरवाको साथलेकर इन्द्रकेपासगये और वहां इन्द्रसे विष्णुभगवान्का संदेशा कहकर पुरूरवाको उर्वशी दिलवादी उर्वशी के देनेसे स्वर्गतो निर्जीवसाहोगया परन्तु उर्वशीके मानोंशरीरमें प्राणआगये इसके उपरान्त उर्वशीको साथलेकर राजा पुरूरवा पृथ्वीपरआगया और उर्वशीको देखकर पृथ्वीके संपूर्ण लोगोंको बड़ा आश्चर्य्यहुआ पृथ्वी मे आकर राजा और उर्वशी दोनों बड़े स्नेहसे आनन्दका भोगकरनेलगे १७ एक समय इन्द्रने दैत्योंके युद्धमें सहायताके लिये पुरूरवाकोस्वर्गमें बुलवाया वहां जाकर जब राजाने मायाधरनाम दैत्योके स्वामीकोमारा तो स्वर्गमें बड़ा उत्सवहोनेलगा उस उत्सवमें संपूर्ण अप्सरा नृत्यकरनेलगी उन मेंसे जिससमय तुम्बुरनाम गंधर्वके आचार्य्य होकर स्थितहोनेपर रंभानाम उर्वशी नाचनेलगी तब भावके विगड़ जानेपर पुरूरवा हँसनेलगा उसेहँसता देखकर रंभाने ईर्षा से यहवचन कहा कि हे मनुष्य इसदिव्य नृत्यको मैं जानतीहूं पर तू क्या जानताहै तबपुरूरवाने कहा कि उर्वशीके संगसे मैं वहबातें जानताहूं जोतुम्हारा गुरुतुम्बुरभी न जानताहोगा यहसुनकर तुम्बुरने क्रोधसे राजाको यहशापदिया कि उर्वशीसे तुम्हारा वियोग तबतकरहैगा जबतक कि तुम श्रीकृष्णभगवान्का आराधन न करोगे२३ इसशापको सुनकर राजा ने पृथ्वीमेंजाके वज्रपातके समान कठोरशापका वृत्तांत उर्वशीको सुनाया इसके उपरांत एकसमय एकाएकी गन्धर्वलोग उर्वशीको हरलेगये और राजाउन्हें न देखसका तबराजाने शापकादोष जानकर बद्रिकाश्रममें जाकर श्रीकृष्णभगवान्का आराधनकिया और उर्वशी गन्धर्वोंके लोकमें वियोगसे व्याकुल होकर मरीहुईसी सोईहुईसी अथवा तसवीरमें लिखीहुईसी चेतनारहित होगई फिर रात्रिके समय चक्र-

वाकीकेसमान शापके अन्तकी आशासे उसकेप्राण नहीं निकलगये यहीआश्चर्यहै इसके उपरान्त पुरूरवाकेतपसे प्रसन्नहुए श्रीभगवान्की कृपासे गन्धर्वों ने इसे उर्वशी देदी फिर शापके अन्तमें उर्वशीको पाकर राजापुरूरवा पृथ्वीमें दिव्य आनंदोंको भोगनेलगा ३० यहकहकर राजाकेचुप होजानेपर वासवदत्ताको उर्वशीका अनुराग सुनकर यहलज्जाहुई कि हाय मैंने राजाका वियोग सहलिया युक्तिपूर्व्वक राजासे लज्जित कीहुई रानीको देखकर राजाको प्रसन्नकरने के लिये यौगन्धरायण बोला कि हे राजा जो आपने यहकथा न सुनीहोय तो सुनिये कि तिमिरानाम नगरी में विहितसेननाम एक राजाथा उसकी वड़ीसुन्दर तेजोवती नामरानीथी राजा उससे ऐसा स्नेह करताथा कि उसीके गले में हाथडाले हुए आलिंगनके लोभ से रानीको कंचुकी (आंगी) तक नहीं पहरने देताथा एकसमय उस राजा को जीर्णज्वर होगया तव वैद्योंने राजा और रानीका समागम वन्दकरवादिया रानी के न मिलने से राजाके हृदयमें एक ऐसा फोड़ाहोगया जो कि सम्पूर्ण औषधियो से असाध्यथा तव वैद्यों ने मंत्री से कहा कि भय शोक अथवा चोटसे यहफोड़ाफूटसक्ताहै तव मंत्रीवोले कि पीठपर वड़ेविषधरसर्पके गिरनेसे औरमहलतक शत्रुकीसेना के आजानेसेभी जिसेभयनहींहुआ उसराजाको अन्य किसरीति से भयहोसक्ताहै यहशोचकर मंत्रियोने रानीकेसाथ सलाहकरके औररानीको छिपाकर राजासेकहा कि रानी मरगई ४१ इसशोकसे अतिव्याकुल होजानेवाले राजाके हृदयका फोड़ाफूटगया तवरोगसेछूटेहुए राजाको वहरानीदेदी औरराजाभी रानीपर वहुतप्रसन्नहुआऔर उसपरछिपनेके अपराधसे खफाभी न हुआ पति काहितचाहनाही रानीहोनेका परमधर्महै केवल पतिको प्रसन्नरखनेसेही रानीनहींहोसक्तीहै राज्यकेकार्य्य के भारका चिन्ताकरनाही मंत्रीपनहै और स्वामीकी हॉमेहॉमिलाना मुसाहिवोंका लक्षणहै इसकारणसे शत्रु मगधराजकेसाथ मेलमिलापकरके संपूर्णपृथ्वी के विजयकरनेका हमनेयहयत्नकियाथा इससे हेराजा रानीने आपकीभक्तिसे असह्यआपके वियोगको सहकर कोई अपराधनहीं कियाहै बल्कि उपकार किया है ४८ मन्त्री के यह यथार्थ वचन सुनकर और अपनाही अपराध समझकर राजा प्रसन्नहोकर बोला कि मैं इसवातको जानताहूं कि आपकेही कहने से रानी ने यह उपाय करके साक्षात् नीति के समान मानों मुझे सम्पूर्णपृथ्वीका राज्यदिया और मैंने वड़ेप्रेमसे यहवात कहीथी क्योकि स्नेहसे अन्धे हृदय वालों को विचार नहीं होता है इसीप्रकार की अनेक वातों से राजाने रानीकी लज्जा दूरकरके वहदिन व्यतीत किया दूसरेदिन मगधराजका भेजाहुआ दूत उदयन् के पास आकर वोला कि हे राजा मगध राजने यह संदेशा कहाहै कि तुम्हारे मन्त्रियों ने हमारे साथ छलकिया तो अवऐसा यत्नकरना कि जिससे हमलोगोंको खेद न होवे यह सुनकर उदयन् ने वड़ेआदर पूर्व्वक उसदूतको पद्मावती के पास संदेशेका जवावलेनेके लिये भेजदिया वहॉ वासवदत्ता से वहुत नम्रता करनेवाली पद्मावती वासवदत्ताके निकट उसदूतसे मिली क्योंकि नम्रताही सतीस्त्रियों का परमधर्म है ५६ पद्मावती से उसदूतने कहा कि हे पुत्री छलसे यहलोग तुम्हारा विवाह करलाये और तुम्हारे पतिका चित्त अन्य स्त्री में लगाहै इसखेद से मुझे कन्याके जन्मका फलमिलगया दूतके मुखसे पिताके इस संदेशे को सुनकर पद्मावती वोली कि

तुम हमारे पिता और मातासे यह वचन कहना कि खेदकरने का कोई प्रयोजन नहीं है क्योंकि आर्य पुत्र (पति) मेरे ऊपर अन्यन्त स्नेह करते हैं और देवीवासवदत्ता भी मेरे ऊपर बहिनके समान स्नेह करती है इसकारण से मेरे पिताको अपने सत्य और मेरे प्राणोंकी जो पालना करनी होय तो आर्य पुत्र(पति) के साथ स्नेह सदैव बनायरक्खें पद्मावती के इस उचित सन्देशे को कहकर चुपहोजाने पर वासवदत्ताने उसदूतको बहुत सत्कारकरके विदाकिया ६१ दूतके चलेजानेपर पिताकेघरका स्मरणकरके पद्मावती कुछ उदासीन होगई तब उसको प्रसन्न करने के लिये वासवदत्ता ने बसन्तकको बुलवाकर यह कथा कहलाई कि पाटलिपुत्र नामनगरमें धर्मगुप्त नाम एकबड़ा धनवान् बणियां रहताथा उसके चन्द्र-प्रभानाम एकस्त्री थी एकसमय उस चन्द्रप्रभाके सर्वांग सुन्दरी एक कन्या उत्पन्नहुई वह कन्या उत्पन्नहो-तेही उठकेबैठगई और स्पष्ट (साफ २) बोलनेलगी यह देखकर संपूर्णस्त्रियां बहुतघबराईं और धर्मगुप्तभी डरकर वहाँआगया और प्रणामकरके उसकन्यासेबोला कि हेभगवती तुमकौनहो मेरेयहाँ अवतारलेकर आईहो तब वहकन्या बोली कि हे पिता तुम मेरा किसी के साथविवाह न करना मुझे अपने घरमेंही रखने से तुम्हारी भलाईहोगी और अन्यवृत्तान्त पूछनेसे तुमको क्या प्रयोजनहै उसके यह वचन सुनकर डरे हुए धर्मगुप्तने उस कन्याको छिपाकर अपनेघरमेंरक्खा और बाहर यहखबर उड़ादी कि कन्यामरगई ७० इसके उपरांत दिव्य स्वरूपवाली वह सोमप्रभा नाम कन्या उसकेघरमें बढ़नेलगी एकसमय वह कन्या अपने महल के ऊपर चढ़ीहुई बसन्तके उत्सवको देखरहीथी वहाँ कामदेवके भालेकेसमान उस कन्याको देखकर गुहचन्द्र नाम कोई बणियेका लड़का कामसे मूर्च्छितहोकर बड़ेदुःखसे अपनेघरको आया उसके माता पिताने बहुतहठसे जब उसके व्याकुलहोनेका कारण पूछा तब उसने मित्रोंके मुखसे यहहाल कह-लवादिया यहबात सुनकर गुहसेननाम उस लड़केका पिता पुत्रके स्नेहसे धर्मगुप्तके यहाँ कन्या मांगने कोगया और वहाँजाकर उसने कन्यामांगी तब धर्मगुप्तने उससेकहा कि हेमूर्ख मेरेयहाँ कन्याकहाँ है धर्म-गुप्तके यहवचन सुनकर गुहसेनने जाना कि इसने अपनी कन्या छिपारक्खी है और अपने घरमेंजाकर अपनेपुत्रको व्याकुलदेखके उसने शोचा कि मैं राजासे कहकर उससे वहकन्यालेलूं क्योंकि मैंने पहले राजाकी बड़ीसेवाकी है इससे राजा मेरे पुत्रको व्याकुलदेखकर उसकन्याको दिवादेगा ७८ ऐसानिश्चय करके गुहसेनने राजाके पासजाकर रत्नोंकी भेटदेकर राजासे अपना मनोरथ कहदिया राजातो उससे प्रसन्नहीथा इससे उसने सहायताकेलिये कोतवालको उसके साथकरदिया तबकोतवालने वहाँ जाकर धर्मगुप्तकाघर चारोंओरसे घेरलिया यहदेखकर धर्मगुप्तको इसलिये बड़ाखेदहुआ कि आजमेरा सबधन नाशहोजायगा तबसोमप्रभाने उससे कहा कि हेपिता मुझे तुम इसेदेदो इसमें मेरे लिये तुम्हारे यहाँ कोई उपद्रव न होय परन्तु अपने समर्थीसे यहनियम करलो कि मेरापति मुझे अपनी शय्यापर न बुलावे कन्या के यहवचन सुनकर धर्मगुप्तने शय्यापर न बुलाने का नियमकरके कन्यादेना स्वीकार करालिया और गुहसेनने भी अपने चित्तमें हँसकर किसीतरहसे पुत्रका विवाह तो होजाय इसलिये वहबात स्वीकार करलीनी ८५ इसके उपरान्त गुहसेनकापुत्र गुहचन्द्र सोमप्रभाको विवाहकरके अपने घरलेगया सायं-

कालके समय गुहसेनने अपनेपुत्र गुहचन्द्रसे कहा कि हे पुत्र इसेअपनी शय्यापरसुलाओ क्योंकि अपनी स्त्रीको कौन अपनी शय्यापरनहीं सुलाताहै यहवचन सुनकर सोमप्रभाने अपने श्वशुरको बड़ेक्रोध से देखकर यमराजकी आज्ञाके समान अपनी तर्जनी उंगलीघुमाई उसअंगुली को देखतेही गुहसेनके तो प्राण निकलगये और अन्यवणिये डरगये फिर गुहचन्द्रने भी अपने पिताको मरादेखकर यहजाना कि यहस्त्री महामारीरूप मेरेघरमें आई है ६० इसके उपरान्त गुहचन्द्रने उसकेसाथ भोगनहींकिया और असिधारा व्रतसा धारणकरलिया फिर इसदुःख से बहुत व्याकुल होकर सबभोगोंको त्यागकर गुहसेन नियम पूर्व्वक रोज ब्राह्मणोंको भोजन करानेलगा उसकी स्त्री भी मौन धारणकरके संपूर्ण ब्राह्मणोंको रोज दक्षिणादेतीथी एकसमय किसी वृद्धब्राह्मणने सोमप्रभाके बड़े विलक्षणरूपको देखकर एकान्त में गुहसेनसे कहा कि यहस्त्री तुम्हारी कौनहै हमसेबताओ तवबहुत पूछनेसे गुहसेनने सबवृत्तान्त उसका ब्राह्मणसे कहदिया यहबात सुनकर उस ब्राह्मणने दयापूर्व्वक गुहसेनका मनोरथ सिद्धहोनेके लिये उसे एक अग्निकामंत्र बतादिया उसमंत्रको एकान्तमें जपते २ गुहसेनके आगे एकपुरुष अग्निमें से निकला उसेदेखकर गुहचन्द्र उसके चरणोंपर गिरपड़ा तबब्राह्मण रूपधारी अग्निने उससे कहा कि आज हम तुम्हारे घरमें भोजनकरके रात्रिको तुम्हारेही यहाँरहेंगे और तुम्हें संपूर्णतत्त्वदिखाकर तुम्हारा मनोरथ पूर्णकरदेंगे यहकहकर वह ब्राह्मण गुहचन्द्रके घरको चलागया १०० और वहाँ जाके साधारण ब्राह्मणों के समान भोजनकरके रात्रि के समय गुहसेनके साथ सोगया प्रहरभर रात्रि व्यतीत होनेपर जबगुहचन्द्रके यहाँ सबलोग सोगये तब गुहचन्द्रकी स्त्री घरसे बाहर निकली उससमय उसब्राह्मणने गुहचन्द्रको जगाकरकहा कि आओ अपनी स्त्रीका चरित्रदेखो फिर उसब्राह्मणने अपने योगके बलसे गुहसेनका और अपना रूप भौरेकासा करलिया और वह दोनों गुहचन्द्रकी स्त्री के पीछे २ चले वह सोमप्रभा नगरसे बाहर निकलकर बहुतदूरतक चलीगई वहाँजाकर गुहचन्द्र और ब्राह्मणने यहदेखा कि वहाँपर बड़ी सघन छायावाला एकबड़का वृक्षहै उसके नीचे उसेबड़ीसुन्दर वीणाकी ध्वनि और अत्यन्त मधुर गीत सुनाई दिये उसवृक्ष की एकशाखा पर बड़ेउत्तम सिंहासनपर सोमप्रभा के समान एक बड़ी उत्तम कन्या बैठीदिखाई दी उसकन्या की कान्ति चांदनीसे भी निर्मलथी और सखियां उसके ऊपर श्वेतचमर ढुलारहीं थीं वह कन्या क्याथी मानो चन्द्रमाकी सुन्दरताके खजाने की देवताथी वहाँ सोमप्रभाभी उस वृक्षपर चढके उसकन्याके आधे सिंहासनपर बैठगई समान कान्तिवाली उनदोनोको देखकर गुहचन्द्र को यह मालूमहोताथा कि आजकी रात्रिको तीनचन्द्रमा निकले हैं यह देखकर बहुत आश्चर्य्य पूर्व्वक गुहचन्द्र शोचनेलगा कि क्या यहस्वप्नहै अथवा भ्रांतिहै या यहदोनो बातें नहीं हैं सन्मार्गरूपी वृक्षकी सत्संगतिरूपी मञ्जरीका यहफूलफूलाहै अबइससे उचितफल मुझको मिलेगा गुहचन्द्रके इस विचारके करने के समय उन दोनों कन्याओं ने दिव्य भोजन और दिव्यमद्यका पान किया तदनन्तर सोमप्रभ बोली कि आज हमारे यहां एकबड़ा तेजस्वी ब्राह्मण आयाहै उससे मेरा चित्त डररहाहै इसीसे मैं जातीहूं यहकहकर और उसकी आज्ञा लेकर सोमप्रभा उसवृक्षसे उतरी यहदेखकर वह दोनों

अपने घरमें आनकर पहले से सोगये और फिर गुहचन्द्रकी स्त्रीभी छिपकर आकर सोरही ११८ इसके उपरान्त उस ब्राह्मणने एकान्त में गुहचन्द्रसे कहा कि तुमने देखा कि यह सोमप्रभा दिव्यस्त्री है मानुषी स्त्री नहींहै और इसकी बहिनको भी तुमने देखा तो अब बताओ कि दिव्य स्त्री मनुष्य से कैसे समागमचाहेंगी अब तुम्हारे मनोरथ के सिद्ध करनेकेलिये मैं तुम्हें एक मंत्रबताताहूं उसे दरवाज़ेपर लिखदेना और उसके सिद्धकरनेकी युक्तिभी तुम्हेंबताताहूं जैसे केवल अग्निभीजलासक्तीहै तोवायुके संयोगमें तो अवश्यही जलावेगी इसमें क्या कहनाहै इसीप्रकार केवल मंत्रही मनोरथको सिद्धकरसक्ताहै और उसमें श्रेष्ठ युक्तिभी होय तो क्या कहनाहै यह कहकर और गुहचन्द्रको युक्ति समेत मंत्रको बताकर प्रातःकाल वह ब्राह्मण अन्तर्द्धान होगया और गुहचन्द्रने भी अपनी उसस्त्रीके घरके द्वारपर वह मंत्रलिखकर ब्राह्मणकी बताईहुई युक्तिकरदी फिर इसके उपरान्त गुहसेन बड़े उत्तमवस्त्र पहनकर अपनी स्त्रीके सन्मुख किसी अन्य स्त्रीसे कुछ बातकरनेलगा यह देखकर मंत्रसे खुलीहुई जिह्वावाली सोमप्रभाने उससे बुलाकर पूछा कि यह कौन स्त्री है तब गुहचन्द्र यह मिथ्यावचन बोला कि यह स्त्री मुझसे बड़ा स्नेह करती है इससे आज मैं इसके यहां जाताहूं यह सुनकर तिरछी नज़र से देखकर और बायें हाथ से उसे रोककर सोमप्रभाबोली कि क्यातुमने इसीलिये यह ठाटकिये हैं इसके यहां तुम मतजाओ उससे तुम्हें क्या प्रयोजनहै मेरे पासआओ क्योंकि मैं तुम्हारी स्त्रीहूं तब पुलकावली तथा कम्पसे युक्त और मन्त्रके प्रभावसे वशीभूतहुई सोमप्रभाके ऐसे वचन सुनकर गुहसेन उसे शयनस्थानमें लेजाकर उस दिव्य सुखको भोगनेलगा जिसका कि वह मनोरथभी नहीं करसक्ताथा १३१ इसप्रकार मंत्रके प्रतापसे अत्यन्त स्नेहयुक्त सोमप्रभाको पाकर गुहचन्द्र सुखपूर्व्वक रहनेलगा इसरीति से यज्ञादिक बड़े २ पुण्य करनेवालों के यहां शापसे आईहुई दिव्य स्त्रियांभी उनकी स्त्री होती हैं देवता तथा ब्राह्मणोंकी सेवा सज्जनोंके लिये कामधेनु के समान होती है उससे कौन २ पदार्थ नहीं पासक्ता है और साम आदिक उपाय तो ऊपरके दिखावेहैं पातक बड़े २ उच्चपदवाले दिव्यपुरुषोंको भी अपने पदसे नीचे ऐसे गिरा देते हैं जैसे कि वायु पुष्पोंको नीचे गिरादेती है यह कहकर वसन्तक पद्मावती से फिर कहनेलगा कि इस विषयमें मैं तुम्हें अहल्या की कथा सुनाताहूं कि पूर्व्वसमय में त्रिकालज्ञ महर्षि गौतम नाम मुनि की बड़ी रूपवती अहल्या नाम स्त्री थी एकसमय उसके रूपसे मोहित होकर इन्द्रने एकान्त में उससे प्रार्थनाकी ठीकहै कि स्वामीलोग धन ऐश्वर्य्य से मदान्ध होकर अनुचित कार्य्य भी करने लगते हैं अहल्यानेभी कामातुर होकर इन्द्रकी प्रार्थना स्वीकार करली इसबातको अपने प्रभावसे जानकर गौतममुनि वहांआये मुनिको आया जानकर इन्द्रने अपना बिल्लीका स्वरूप धारणकरलिया तब गौतमने अहल्यासे पूछा कि यहां अभी कौनथा उसने यह सत्यवचन कहा कि यह मेरायार और बिल्लीथा यहसुनकर गौतमने हँसकर कहा कि ठीकहै तेराजार यहां अभीथा और यह शापदिया कि हेपापिनि तू बहुत कालतक पत्थरकी शिलाबनी रहेगी फिर उसके सत्यवचनोंको समझकर यह भी कहदिया कि जब बनमें श्रीरामचन्द्रजी आवेंगे तब उनके दर्शनसे तुम्हारा शापछूटजायगा इसके उपरान्त गौतमने

इन्द्रको भी यह शापदिया कि तुमको भगका बड़ा लोभहै इससे तुम्हारे शरीरमें हज़ार भगहोजायँगी और जब विश्वकर्म्मा तिलोत्तमानाम अप्सराको बनावेंगे तब उसे देखकर यह सब तुम्हारे शरीरकी भग नेत्र होजायँगी १४५ इसप्रकार से शाप देके मुनि तपकरनेको चलेगये अहल्या शिलाहोगई और इन्द्रका संपूर्ण शरीर भगोंसे व्याप्तहोगया (ठीक है दुस्स्वभाव से किसको बुराई नहीं होती) इसप्रकार से जो कुकर्म कोई करताहै उसकाफल उसको अवश्य मिलताहै क्योंकि जो जैसा बीजबोता है उसको वैसाही फल मिलताहै इसीसे महात्मालोग पराया विरोध कभी नहीं करते हैं और यही अच्छेलोगोंका भी सदैव नियम रहताहै तुम दोनों रानी पूर्वजन्मकी बहिनहो और दिव्यस्त्रीहो और शापसे यहाँ आई हो इसीसे तुमदोनो आपसमें बड़ास्नेह करतीहो और आपसमें भेद नहीं रखतीहो १५० बसन्तकके मुख से इसकथा और बातोंको सुनकर वासवदत्ता और पद्मावतीके हृदयोंमें ईर्षाका लेशमात्रभी नहींरहा फिर वासवदत्ताने अपनेसमान पद्मावती में भी उदयन्का बड़ास्नेह बढ़ादिया पद्मावतीके भेजेहुए दूतोंसे वा-सवदत्ताके ऐसे उत्तम स्वभावको सुनकर मगधराज बहुत प्रसन्नहुआ इसकेपीछे एकदिन यौगन्धरायण ने रानी और अन्यलोगों के सन्मुख राजाउदयन्से यहवचनकहा कि हे राजा अब उद्योग करनेके लिये कौशाम्बीको चलिये छलेहुए भी उस मगधराजसे अबकुछ डरनहीं है क्योंकि कन्याके संबन्धसे वहखूब वशीभूतहोगयाहै आपसे लड़कर प्राणों से भी प्यारी अपनीकन्याको कैसे छोड़सकेगा इसकेसिवाय वह अपने सत्यकोभी नहीं त्यागेगा और आपने उसकेसाथ कुछछल भी नहीं कियाहै छलतो मैंने कियाहै पर उससे भी उसको कुछ दुःखनहीं हुआ मैंने दूतोंके मुखसे यह बातजानली है कि अब वह कुछ उपद्रव नहींकरेगा इसीबातके जाननेको मैं यहां इतने दिनतक ठहरारहाथा १५८ यौगन्धरायण यह सब बातें करहीरहाथा कि उसीसमय मगधराजका दूतआयाहै यहखबर द्वारपालने आकरकही राजाने उसे उसी समय भीतर बुलवालिया तो उस दूतने वहांआकर प्रणामकरकेकहा कि पद्मावती के सन्देशे से प्रसन्न हुए मगधराजने आपके पास यह सन्देशाभेजाहै कि बहुत कहने से क्या प्रयोजनहै सम्पूर्ण बातों को जानकर मैं तुम्हारेऊपर प्रसन्नहूं तो जिसलिये तुम्हारा यह उद्योगहै उसकोकरो हम तुमसे दबगये यौ-गन्धरायणकी नीतिरूपी वृक्षकेपुष्परूपी दूतके यह सुन्दर वचनसुनकर प्रसन्नहुए उदयन् ने पद्मावतीको बुलाकर उसके सन्मुख दूतको बहुतसा धनदेकर बिदाकिया १६४ इसके उपरान्त राजा चण्डमहासेनका दूतभी राजाके पासआके प्रणामपूर्व्वकबोला कि हे स्वामी कार्य्य के तत्त्वकोजाननेवाले राजा चण्डमहा-सेनने आपका वृत्तान्तजानकर प्रसन्नहोकर यह सन्देशाभेजाहै कि आपकी श्रेष्ठताकावर्णन तो इतनेहीं से होगया कि यौगन्धरायण आपका मंत्री हैं फिर अधिककहने से क्या है और वासवदत्ताभी धन्यहै जिसने कि तुम्हारी भक्तिसे यह कार्य्यकियाहै उसके यशसे सज्जनों के बीचमें मेराशिर ऊंचाहोगया मैं पद्मावती और वासवदत्तामें कोई भेदनहींसमझता क्योंकि स्नेहसे उनदोनोंकाचित्त एकहोगया इससे अब तुम शीघ्र अपना उद्योगकरो तब अपने श्वशुरके दूतके यह वचनसुनकर राजा उदयन् को बड़ा आनन्दहुआ और रानी वासवदत्ता तथा यौगन्धरायणपर राजाका अत्यन्त प्रेमहोगया इसके उपरान्त

वासवदत्ता और पद्मावती से बहुत खातिरकियेहुए उस दूतको विदाकरके राजा उदयन् मंत्रियों से स-लाहकरके उद्योगकरने के लिये कौशाम्बी चलनेकी इच्छाकरनेलगा १७१ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांलावाणकलम्बकेतृतीयस्तरङ्गः ३॥

इसके उपरान्त राजा उदयन् दूसरे दिन लावाणक से कौशाम्बी नगरीको चला विनासमयके कि-नारोंपर फैलेहुए समुद्रके जलके समान संपूर्ण पृथ्वीको व्याप्तकरनेवाली राजाकी सेना शब्दोंको कर-तीहुई चली उससमय हाथीपर चढ़ेहुए राजाकी ठीक २ उपमा तबहोसक्ती है जब कि सूर्य्य उदयाचल समेत आकाशमें चलें श्वेतछत्रसे राजाकी ऐसी शोभा होरहीथी कि मानों इसराजाने सूर्य्य के तेजको जीतलियाहै इससे प्रसन्नहुआ चन्द्रमा राजाकी सेवाकररहाहै अपनी कक्षाओं से सबके ऊपर विराज-मान तेजस्वी राजाके सबओर ऐसे छोटे२ राजालोग घूमरहेथे जैसे कि ध्रुवजीके चारोंओर सब ग्रहघूमते हैं और राजाके पीछे हथिनीपर चढ़ीहुई दोनोंरानियां ऐसीशोभित होतीथीं कि मानोंलक्ष्मी और पृथ्वी स्वरूप धारण कियेहुए राजाके स्नेहसे पीछे २ चली आती हैं और सेना के घोड़ों के खुरोंके चिह्नरूपी नखक्षतों से युक्त मार्ग की पृथ्वी भोगकीहुईसी मालूमहोती थी इसप्रकारसे चलताहुआ बन्दीजनों से स्तुति कियाहुआ राजाउदयन् थोड़ेही दिनमें कौशाम्बी में पहुंचा ८ ध्वजाके रक्तवस्त्रोंसे ढकी हुई झरोखे रूपी प्रफुल्लित नेत्रवाली द्वारमें रक्खेहुए पूर्णकुम्भ रूपी स्तनवाली मनुष्योंके कोलाहलरूपी शब्दवाली और श्वेतमहल रूप हास्यवाली वहपुरी परदेशसे अपने स्वामीके आजानेपर अत्यन्त शोभितहुई फिर राजाने दोनोंरानियों समेत उस पुरी में प्रवेशकिया तब पुरकी स्त्रियां राजाके देखनेको बड़ाउत्सव मान-नेलगीं उससमय महलोंपर चढ़ीहुई स्त्रियों के मुखोंसे आकाश पूर्णहोगया वहमुख क्याथे मानों रानि-योंके मुखोंसे जीतेगये चन्द्रमाकी सेना सेवाकरनेको आई झरोखोंसे बेपलक लगायेहुए स्त्रियोंको देख-कर यह भ्रम होताथा कि राजाके देखनेकेलिये विमानों पर चढ़ीहुई मानों अप्सराही आई हैं (क्योंकि अप्सराओंकेभी नेत्रनहीं बन्दहोते हैं) कोईस्त्रियां झरोखोंकी जालीमें नेत्रलगाये देखरहीथीं वह मानों कामदेवके पिंजरे बनारहीथीं १४ राजाके देखनेकेलिये प्रफुल्लित किसी स्त्रीकी उत्सुकदृष्टि राजाको नहीं देखतेहुए कानकेपास मानों राजाकाहाल कहनेको गई जल्दी से आईहुई किसीस्त्री के वारम्वार हिलते हुएस्तन राजाको देखनेकेलिये मानोंआंगी से बाहरनिकलना चाहतेथे किसीस्त्रीके घबराहट से टूटेहुए हारकेमोती गिररहेथे वहमानों प्रसन्नतासे हृदयमें निकलेहुए स्वेदजलके बिन्दुसे शोभित होते थे कोई स्त्रियां वासवदत्ताके जलनेकी खबरसे यह बातें कररहीथी कि जोलावाणकमें अग्नि इसेजलादेती तोवह प्रकाशक होकरभी जगत्में अन्धाकारकी फैलानेवाली होजाती पद्मावती को देखकर कोई स्त्री अपनी सखीसे कहतीथी कि सखीके तुल्य पद्मावतीसे वासवदत्तानहीं लज्जितहुई यह योग्यहै कोई स्त्रियां अपने नेत्ररूपी कमलोंसे उनदोनों रानियोंको देखकर परस्पर यह कहतीथीं कि विष्णु और शिवने इनदोनों रानियोंका रूप नहींदेखा नहीतो वह लक्ष्मी और पार्वतीजीका बड़ाआदर नहींकरते इसप्रकारसे अप-ना प्रजाओंके नेत्रोंको आनन्द देताहुआ उदयन् मंगलाचारकरके रानियों समेत अपने राजमंदिरमें

चला प्रातःकाल कमल सहित तड़ागकी जो शोभाहोती है और चन्द्रमाके उदयमें जो समुद्रकी शोभा होती है वहीशोभा उससमय उस राजभवनकीभी हुई उससमय करदेनेवाले राजाओंकी भेटोंसे वह संपूर्ण राजभवन भरगया उन भेटोंसे यह सूचित होताथा कि मानों संपूर्ण पृथ्वी के राजा लोगों की भी भेटें इसीप्रकारसे आवेंगी इसके उपरान्त संपूर्ण राजालोगोंका आदरकरके सबलोगोंके चित्तके समान अपने महलोमें राजा चलागया वहाँरति और प्रीतिकेमध्यमें बैठेहुए कामदेवके समान दोनों रानियोंके बीचमे बैठेहुए राजाने मद्यपानादि क्रीड़ाओंसे वहदिन व्यतीतकिया २७ दूसरेदिन अपने मंत्रियोंसमेत राजा सभामें बैठाथाकि उसीसमय किसीब्राह्मणनेद्वारसे चिल्लाकर कहा कि बड़ाअन्धेरहै कि हे राजा वनमेंपापी गोपालकोंने विनाकारणही मेरेपुत्रके पैरकाटलिये यहसुनकर राजाने उसीसमय दो तीन गोपालकोंको पकड़वाके पूछा तब वह कहनेलगे कि हे राजा हमगोपालक लोग निर्जन वनमे रहते हैं हममेंसे एकदेवसेन नाम गोपालकने वनके एक स्थानमें शिलापर बैठके हमलोगोंसे कहा कि हम तुम्हारे राजाहैं और वही हमलोगोंपर अब हुक्म चलाताहै हमलोगोंमेंसे उसकी आज्ञाको कोई नहीं टालता इसप्रकारसे देवसेन वनमें राज्य करताहै आज इस ब्राह्मणका लड़का उसी मार्गसे जारहाथा उस बालकने हमलोगोंके राजाकोप्रणाम नहीं किया राजाकी आज्ञासे हमलोगोंने उससेकहा भी कि तू विनाप्रणाम कियेहुए मत जा परन्तु वह हमारे वचनको न मानकर हँसताहुआ चलागया तब उसराजाने यह हुक्मदिया कि इस दुष्ट बालकके पैरकाटलो तब हमने दौड़कर बालकके पैर काटलिये क्योंकि हमलोग अपने प्रभुकी आज्ञाको नहीं टालसक्ते हैं ३७ गोपालको के यह वचन सुनकर यौगन्धरायणने विचारकर राजा उदयन्से एकान्तमें यहवचन कहा किमुझे मालूम होताहै कि जिस स्थानमें गोपालक राजा वनके बैठाहै वहांपर कोई निधि अवश्यहै जिसकेप्रभावसे गोपालकभी ऐसा प्रभुत्वकरताहै यौगन्धरायणके यह वचन सुनके राजा उन गोपालकोंको साथलेकर सेनासमेतचला और वहांजाकर परीक्षा करके जब पृथ्वी खुदवाईगई तो एक बड़ाभारी पर्व्वतके समान यक्ष उसमेंसे निकला और बोला कि हेराजा तुम्हारे पितामहकी गाड़ी हुई निधिकी मैंने बहुत कालतक रक्षाकी अब आ इसे संभालिये राजासे यह वचनकहकर और राजा के कियेहुए पूजनको ग्रहणकरके वह यक्ष अन्तर्द्धान होगया फिर उस गढे में बहुतसीनिधि मिली और एक बहुत बड़ा रत्नोंका सिंहासनमिला यह बातठीकहै कि उदय होनेके समयमें बहुतसी अच्छी २ शुभ बातें इकट्ठी होजाती हैं ४४ इसके उपरान्त सम्पूर्ण धनकोलेकर और उन गोपालकोंको दण्डदेकर राजा अपनी पुरीको चलाआया वहां माणिक्यकी किरणोंके समूहसे दिशाओंमें फैलनेवाले राजा उदयन्के प्रतापको प्रकट करतेहुए और चांदी के तारों मे पुरोहेहुए मोतियो के समूहों से मंत्रियोंकी बुद्धिके आश्चर्यको मानो हँसतेहुए उस सुवर्ण के सिंहासनको देखकर प्रजा के लोग बड़े प्रसन्नहुए और नगाड़े बजनेलगे मंत्रीलोगभी राजाकी जयका निश्चय करके बड़ा उत्सव करनेलगे क्योंकि प्रारम्भ मेही होनेवाले कल्याणसे कार्य्य की सिद्धि जानी जाती है इसके उपरान्त पताकारूपी बिजलियों से आकाशके व्याप्त होजानेपर वह राजारूपी मेघ सेवकोंपर सुवर्णकी वृष्टिकरनेलगा उत्सवकेद्वारा उसदिनके व्यतीत

होजाने पर दूसरे दिन राजाके चित्तकी परीक्षाके लिये यौगन्धरायण बोला कि हे राजा यह जो पुरखों का सिंहासन आपको मिला है उसपर बैठकर आपउसे शोभित कीजिये यह सुनकर राजाने कहा कि जिस सिंहासन पर हमारे पुरखे लोग संपूर्ण पृथ्वीको जीतकर बैठे थे उससिंहासन पर बिनादिशाओंको जीतेहुए बैठने से मेरी क्या शोभाहोगी इस्से समुद्र पर्य्यन्त संपूर्ण पृथ्वीको जीतकर इस रत्नजटित सिंहासनपर मैं बैठूंगा यह कहकर राजा उस सिंहासनपर नहीं बैठा ठीकहै क्योंकि कुलीन पुरुषोंका अभिमान बनावटका नहीं होता ५५ तब यौगन्धरायणने खुशहोकर राजासे कहा कि हे राजा आपने बहुत ठीक कहा तो अब आप प्रथम पूर्व दिशाके जीतनेका उपायकीजिये यह सुनकर राजा ने प्रसंगपाकर यौगन्धरायणसे पूंछा कि राजालोग पहले उत्तरादि दिशाओंको छोड़कर सबसे प्रथम पूर्व दिशामेंही क्यों चढ़ाईकरते हैं यहसुनकर यौगन्धरायण फिर बोला कि हे राजा यद्यपि उत्तरदिशा बहुत उत्तमहै तौभी म्लेच्छों के संसर्ग से बहुत दूषितहै पश्चिम दिशा सूर्य्यादि ग्रहों के अस्तहोनेका स्थान है इससे वहभी श्रेष्ठ नहीं है और दक्षिणदिशामें राक्षस तथा चाण्डाल रहते हैं इसलिये वहभी नहीं उत्तमहै पूर्व्व दिशामें सूर्य्यका उदयहोताहै उसी में इन्द्ररहतेहैं और गंगाजीभी उसीदिशाको जाती हैं इससे वही दिशा सब दिशाओं से बहुत श्रेष्ठहै विन्ध्याचल तथा हिमालयके बीचके देशों में भी जो देश गंगाजी के जलसे पवित्रहै वह बहुत उत्तम और पवित्र समझाजाताहै इसीसे मंगलके चाहनेवाले राजालोग प्रथम पूर्व्वदिशापर चढ़ाई करते हैं और गंगाजीसे युक्त देशों में रहते हैं तुम्हारे पुरखोंने भी प्रथम पूर्व्वही दिशापर चढ़ाईकीथी और गंगाजीके किनारे हस्तिनापुरमें रहतेथे ६३ तुम्हारा पितामह सतानीक यहशोचकर कि राज्यपुरुषार्थ से होताहै इसमें देशकारण नहींहै इसलिये कौशाम्बी नगरीको मनोहर समझकर उसमें रहाथा यहकहकर यौगन्धरायण के चुपहोजानेपर राजा उदयन् पुरुषार्थकोही मुख्य समझकर बोला कि ठीकहै चक्रवर्त्ती होनेमें देशका नियमकारण नहींहै क्योंकि बलवान् लोगोंका पुरुषार्थही सम्पत्तियोंका कारणहै एकभी और आश्रयसे रहितभी बलवान् पुरुषार्थी लक्ष्मीकोपाताहै क्या आपने इस विषयमें सत्ववान पुरुषकी कथानहीं सुनी है यह कहकर मन्त्रियों के पूछनेपर राजा उदयन् रानियों के सन्मुख इसकथा को कहने लगा कि ६८ संपूर्ण संसारमें विख्यात उज्जयिनी नाम पुरी में आदित्यसेन नाम एकराजा था उस राजाकारथ चक्रवर्त्ती होने के कारण सूर्य्यके रथके समान कहीं भी नहीं रुकता था उसराजाके श्वेत छत्रके आकाश में प्रकाशित होनेपर अन्यराजा लोगोंके छत्र बन्दहोजाते थे जैसे समुद्रमें संपूर्ण जल चलेजाते हैं उसीप्रकार से सम्पूर्ण पृथ्वी में उत्पन्न होनेवाले रत्नउस राजा के पास आजाते थे एकसमय वह राजा किसी कारणसे सेना समेत गंगाजी के किनारे टिकाथा वहाँ उसी राजा के राज्यमे रहनेवाले किसी गुणवर्म्मा नाम वणिये ने अपनी बड़ीउत्तम कन्या राजाको भेटदेने के लिये आकर प्रतीहार से कहा कि यह मेरी कन्या त्रैलोक्यमें रत्नके समान है राजाके सिवाय और कोई पुरुष इसके योग्यनहीं है प्रतीहारसे इसबातको भीतर राजाके पास कहलाकर गुणवर्म्माने भीतरजाके अपनी कन्या राजाको दिखादीनी ७६ अपनी कान्ति से संपूर्ण दिशाओं को प्रकाशित करनेवाली कामदेव

के घरके रत्नोंके दीपककी शिखाके समान उसतेजस्वती नाम कन्याको देखकर राजाको बड़ास्नेहउत्पन्न हुआ इसीसे उसकन्याकी कान्तिके तेजके पड़ने से कामाग्निसे संतप्तहुए राजाके पसीने क्या निकले मानों राजा पिघलगया उससमय उसकन्याको स्वीकारकरके राजाने प्रसन्नहोकर उस गुणवर्मावणियेको अपने समान बनालिया इसके उपरान्त उस तेजस्वतीके साथ विवाहकरके राजा अपनेको कृतार्थ समझ-कर उज्जयिनीनाम अपनी नगरीकोलौटआया वहाँआकर राजासदैव तेजस्वतीके मुखको देखाकरताथा इससे राज्यके बड़े २ भारीभी कार्य्योंको नहीं देखताथा फिर तेजस्वतीके मनोहर वचनोंसे मानों राजाके कानकीलदियेसे होगये इसीसे वह प्रजालोगोंके दुःखित शब्दोकोभी नहीं सुनाकरताथा बहुतकालसे महलो में गयाहुआ राजातो वाहरनहीं निकलताथा परन्तु शत्रुओंके हृदयसे भय निकलाजाताथा ८३ कुछ समयकेपीछे उस तेजस्वतीरानीके एकबड़ीसुन्दरकन्या उत्पन्नहुई और राजाकेहृदयमें दिग्विजयकी इच्छा उत्पन्नहुई अपनेस्वरूपसे तीनोंलोकोंको तुच्छकरनेवाली उसकन्याने राजाकाहर्ष और दिग्विजय की इच्छाने राजाका प्रतापबढ़ाया इसकेउपरान्त लड़नेकेलिये उद्यत किसी करदेनेवाले राजापर चढ़ाई करनेकेलिये राजा आदित्यसेन उज्जयिनीसे चले और तेजस्वती रानीकोभी हथिनीपर चढ़ाकर राजा अपने साथलेचला और राजा चलनेवाले पर्वतके समान ऊंचे शुभलक्षणोंसे युक्तआभूषण धारी और मदसे वहतेहुए पसीनेवाले घोड़ेपरचढा वहघोड़ा ओष्ठ पर्य्यन्त उठेहुए पैरों से अपने समान वेगवाले गरुड़की चालकोमानों अभ्यास करताथा और अपनी गर्दनको उठाकर मानों यह देखताथा कि क्या यह संपूर्ण पृथ्वी मेरी दौड़भरको होजायगी इसप्रकार कुछ दूरचलकर सम पृथ्वीमें आकर राजाने तेज-स्वतीके दिखाने को अपना घोड़ा तेजकिया राजाकी ऍड़के लगतेही वहघोड़ा धनुपसे निकले हुए वाणके समान बहुत वेगसे बहुतदूर जाकर लोगोकी दृष्टिसे वाहरचलागया ६२ यहदेखकर सेनाके लोग व्याकुल होगये और हजारोंसवार राजाके ढूंढनेको दौड़े परन्तु राजाकापता नहीं मिला तव मंत्रीलोग भयसे सेनासमेत रोतीहुई रानीको लेकर उज्जयिनीको लौटआये और वहाँआकर नगरके फाटकोंको वन्दकरके और परकोटेकी रक्षाकरके संपूर्ण प्रजाको समझाके राजाकी खबरलगाने लगे इस वीचमें वह घोड़ा राजाको विन्ध्याचलके बड़े घोरवनमें लेगया वहाँ जाकर भाग्यसे उस घोड़े के ठहरजानेपर राजा को उस वनमें व्याकुलता के कारण दिशाओ का भ्रम होगया तव घोड़ो की जाति के जाननेवाले उस राजाने उस श्रेष्ठघोड़ेपर से उतरके उससे प्रणाम करके कहा कि तुम देवताहो तुम सरीके उत्तम लोग अपने स्वामी का द्रोह नहीं करते हैं इससे मैं तुम्हारी शरण में आयाहूं तुम मुझको उत्तम मार्ग से घर लेचलो यहवचन सुनकर अपने पूर्व्व जन्मका स्मरण करनेवाले उस घोड़े ने पछताकर राजाके वचन अपने मनमें स्वीकारकरलिये क्योंकि श्रेष्ठ घोड़ा देवता होताहै १०० इसके उपरान्त राजाके च-ढ़नेपर वह घोड़ा सुन्दर शीतलजलसे युक्त श्रमके दूरकरनेवाले मार्ग से चला और सायंकालकेसमय सौ योजन पृथ्वी उल्लंघन करके उसने राजाको उज्जयिनी के समीप पहुँचादिया उस घोड़ेके वेगसे जीते गये अपने सातों घोड़ेको देखकर मानों लज्जितहुए सूर्य्य भगवान् के अस्ताचलकी कन्दरामें पहुंच-

जानेपर तथा अन्धकारके फैलजानेपर उज्जयिनी के फाटकों को वन्ददेखके और वाहरके श्मशान-
को वहुत भयंकर देखके वह बुद्धिमान् घोड़ा राजाको रात्रिभर रहने के लिये नगर के वाहर एकान्त
स्थान में बनेहुए ब्राह्मणों के मठमें लेगया राजाने उसमठको रात्रिभररहने के योग्य समझकर उसके
भीतर जानाचाहा तब उसमठके रहनेवाले ब्राह्मणों ने राजाको रोका और कहनेलगे कि यह कोई श्म-
शानका रक्षक है अथवा चोरहै यह कहतेहुए और लड़ाई करतेहुए मठसे वाहर निकले क्योंकि वैदिक
ब्राह्मण भय कोप तथा कठोरताके घरहोते हैं १०८ उनलोगों के इसप्रकार लड़ने पर उसमठ से वि-
दूषकनाम एक वड़ागुणवान् तथा वलवान् ब्राह्मण निकला उसयुवा ब्राह्मणने तपसे अग्निको प्रसन्न
करके एक ऐसा उत्तम खड्गपायाथा कि जिससमय वह उसखड्गको यादकरताथा उसीसमय वह उसके
पास आजाताथा उसब्राह्मणने आयेहुए राजाकी वड़ी मनोहर आकृति देखकरके यहजाना कि कोई
देवता छिपकर यहांआयाहै तब वह अन्यब्राह्मणोंको रोककर राजाको वड़ी नम्रतापूर्व्वक मठके भीतर
लेगया और थकेहुए राजाकीधूलको दासियों से सफाकरवाके उसने राजाके लिये वड़ा उत्तमभोजन
वनवाया फिर राजाको भोजनकराके उस थकेहुए घोड़ेकी काठीखुलवाके और दानाचारा आदिक
देकर उसेभी सावधान करदिया तव उस विदूषकने राजासेकहा कि आप इस विछेहुए पलँगपरसोइये
मैं आपके शरीरकी रक्षाकरूंगा फिर राजाके सोजानेपर स्मरणकरने से आयेहुए उस खड्गको लेकर वह
रात्रिभर द्वारेपर वैठारहा प्रातःकाल जव राजाजगा तव विदूषक विनाकहेहुएही घोड़ेको तैयारकरके ले-
आया राजाभी घोड़े परचढ़ और उससे पूछकर उज्जयिनी में चलाआया राजाको दूरसे आताहुआ
देखकर सम्पूर्ण प्रजाके लोग वड़ेप्रसन्नहुए और मंत्री आदिक सम्पूर्णलोग राजाके निकटगये उससमय
राजाके आनेसे आनन्दकी ध्वनि सम्पूर्ण शहरमें फैलगई और मंत्रियों समेत राजा अपने राजभवन
मे आया और रानी तेजस्वती के हृदयसे संताप चलागया १२० राजाके आने के उत्सवसे लगाई हुई
वायुसे हिलतीहुई पताकाओंसे मानों उससमय उस नगरका संपूर्ण शोक निकाल दियागया रानीने
उसदिन महोत्सवमें इतना गुलाल उड़ाया कि जिससे सूर्य्य समेत आकाश और प्रजाकेलोग रक्तवर्ण
होगये दूसरे दिन राजा आदित्यसेनने सम्पूर्ण ब्राह्मणो समेत विदूषकको उस मठसे बुलवाया और
रात्रिका सम्पूर्ण वृत्तान्त कहके विदूषकको हजार गांव दिये फिर राजाने विदूषकको छत्र और सवारी
देकर अपना पुरोहित वनालिया इसप्रकारसे वह विदूषक छोटे राजाओ के समान होगया ठीकहै वड़ों
के साथ कियाहुआ उपकार व्यर्थ कैसे होसक्ताहै १२६ विदूषकने जो गांव राजासे पाये वह सव उसने
मठमे रहनेवाले ब्राह्मणों के समुदायमें साधारण रक्खे फिर राजाका सेवन करताहुआ विदूषक उनगांवों
की सव आमदनीको उन ब्राह्मणों के साथ अपने भोग विलासमें लाताथा कुछ समयके व्यतीतहोने-
पर धनमे मतवाले वहसव ब्राह्मण अपनी २ प्रधानताकी इच्छासे विदूषकको कुछ भी नहीं गिननेलगे
एक स्थानमें रहनेवाले जुदे २ वह सातब्राह्मण परस्परमें लड़कर दुष्टग्रहों के समान उन ग्रामवासियोंको
दुःख देतेथे उन ब्राह्मणोंके उद्दंड होजानेपर विदूषक उदासीन वनारहा क्योंकि निर्वललोगोंपर धीरलोगों

का अनादरही शोभादेताहै एक समय उन ब्राह्मणोंको लड़तेहुए देखकर कोई चक्रधरनाम बड़ानिष्ठुर ब्राह्मण वहाँ आया क्योंकि पराये झगड़े के फैसले में कानेके भी बड़ी २ आंखें होजाती हैं और गूंगा भी बड़ा वाचाल होजाताहै वह ब्राह्मण उनसे बोलाकि हे मूर्खो तुम भिखारियों को भी इतना धनमिलगया तो आपसके झगडे से इनगांवों को क्यों नष्ट करतेहो परन्तु यहदोष विदूषककाहै जो कि तुम लोगोंको सज़ानहीं देताहै इससे निस्सन्देह तुमलोग थोडेही दिनोंमें फिर भीख मांगोगे झगड़ते हुए बहुत मालिकोंसे नष्टहुए सब धनवाले स्थानकी अपेक्षा भाग्यसे बढ़नेवाले बेस्वामीका स्थान अच्छाहै १३६ इससे जो तुम लोग अपने धनको नष्ट न किया चाहो तो मेरे कहनेसे कोई मुखिया तजवीज करो यह सुनकर जब वह लोग किसी मुखियाकी तजवीज करनेलगे तब उस चक्रधरने शोचकर फिर कहा कि आपसमें झगडनेवाले तुम लोगोंको मुखिया बनाने के लिये मैं एकशर्त्त तुमसे कहताहूं यहाँ श्मशान में तीन चोर शूलीपर चढाकर मारे गयेहैं और वह वहाँ ही लटकने हैं तुममें से जो कोई रात्रिके समय उन तीनोंकी नाक काटलावे वही तुम्हारा मुखिया होय क्योंकि वीरपुरुष ही स्वामी होसक्ताहै चक्रधरके ऐसे वचन सुनकर विदूषकने उन ब्राह्मणों से कहा कि ऐसाही करो इसमें क्या हर्ज है १४१ तब वह ब्राह्मण बोले कि हम लोग यह कामनहीं करसक्ते जो समर्थ होय वहकरे हमलोग इस शर्त्त से नहीं हटेंगे तब विदूषकने कहा कि मैं रात्रिके समय श्मशानमें जाकर चोरोंकी नाक काटलाऊंगा इसबातको बहुत कठिन समझकर वह बोले कि जो तुम ऐसा करोगे तो तुम्हीं हमारे स्वामी होगे उनलोगोंसे यह शर्त्त करके रात्रिके समय विदूषक उन ब्राह्मणोंसे पूछकर श्मशानको गया स्मरण करनेसे प्राप्तहोनेवाले अग्निके दियेहुए उस खड्गको लेकर वह उस बड़े भयकर श्मशानमें घुसा वहाँ डाकिनी गीध तथा कौए चिल्लारहेथे और अगिया बैतालोंकी मुखकी अग्निसे चिताकी अग्नि और भी बढरहीथी उस श्मशान के बीचमें शूलीपर चढ़ेहुए उनचोरोंको विदूषकने देखा वह तीनोंचोर मानो नाकोंके काटनेके डरसे ऊंचे को शिर कररहेथे जब विदूषक उनके निकटगया तो वह तीनों बैतालके आवेशसे विदूषकको घूंसे मारने लगे और वह भी निडर होकर खड्गसे उन्हें मारने लगा क्योंकि धीर लोगों के हृदयमें कभी भयनहीं होताहै १५० मारने से जब वह बैताल उनमेंसे निकलगया तब उसने उन तीनोंकी नाकें काटकर कपड़े में बांधलीं फिर वहाँसे लौटतेहुए विदूषकने उसी श्मशानमें मुर्देपर बैठाहुआ जपकरताहुआ एकसन्यासी देखा उसकी चेष्टा और क्रीड़ा देखनेके उत्साह से विदूषक छिपकर उसके पीछे जा बैठा क्षणभरमें ही जिस मुर्देपर संन्यासी बैठाथा वह अपने मुखसे फूत्कार करनेलगा उससमय उस मुर्देके मुखसे अग्नि निकलने लगी और नाभिसे सरसों निकली तब वह संन्यासी उन सरसों को लेकर उसपरसे उठा और हाथसे उसे मारनेलगा तब बैतालके पराक्रमसे वह मुर्दा खड़ाहोगया और वह सन्यासी उसके कन्धेपर चढगया १५६ और उसपर चढ़के वहाँसे चला और विदूषक भी चुपचाप उसके पीछे २ चला वहाँ से थोड़ीदूर चलकर विदूषकने कात्यायनीका एक निर्जन मन्दिर देखा वहाँ वह संन्यासी मुर्देके कन्धे से उतरकर मंदिरमें चलागया और वह मुर्दा गिरपड़ा विदूषक भी छिपकर उसकी इन सबबातोंको देखता

रहा तब वह संन्यासी भगवतीका पूजनकरके यहवचन बोलाकि हे देवीजी जो आप मेरे ऊपर प्रसन्नहैं तो मेरामनोरथ पूर्णकरो नहीं तो मैं अपना बलिदान देकर तुमको प्रसन्न करूंगा तीव्र मंत्रके सिद्धकरने से अभिमान युक्त उस संन्यासीके यह वचन सुनकर उस मंदिरसे यह आवाज आई कि आदित्यसेन राजाकी कन्याको लाकर भेटकरो तब तुम्हारा मनोरथ पूराहोगा यह आवाज़ सुनकर उस संन्यासीने मन्दिरसे निकलकर उस मुर्देको हाथ से मारकर उठाया फूत्कार करके उठे हुए मुखसे अग्निकी ज्वाला निकालनेवाले उस मुर्देपर चढ़कर वह राजकन्याके लेने के लिये आकाशमें उड़गया १६५ यह देखकर विदूषकने चित्तमें विचारा कि यह कैसे मेरे जीतेजी राजकन्याको मारसकेगा इससे जबतक यह दुष्ट लौटकर आजाय तबतक मैं यहीं ठहरारहूं यह शोचकर विदूषक छिपकर वहीं ठहरारहा और वह संन्यासी झरोखेके द्वारा राज कन्याके महलमें चलागया और अपनी कान्तिसे सब दिशाओं की प्रकाशित करनेवाली चन्द्रमाकी कलाको जैसे राहुग्रसता है उसीप्रकार रात्रिके समय सोतीहुई राजकन्याको पकड़कर श्यामवर्णवाला वह संन्यासी आकाशमार्ग से चला हापिता हामाता इसप्रकार से रोती हुई उस कन्याको लियेहुए वह संन्यासी उसी देवीके मंदिरमें उतरा १७० और उसमुर्देको छोड़कर उस कन्यारूपी रत्नको लेकर देवीके मंदिरमें गया वहां जाकर जैसे कि वह उसराजपुत्रीको मारना चाहताहीथा वैसेही विदूषकभी अपने खड्गको खींचकर मंदिरमें पहुंचा और बोला कि अरे पापी तू मालतीके फूलको पत्थरसे मारना चाहताहै क्योंकि तू ऐसी सुन्दर आकृतवाली पर शस्त्र चलानाचाहताहै यह कहकर और उसके बाल पकड़कर विदूषकने उसका शिर अपने खड्गसे काटडाला और कुछ पहचानकर उसके शरीरमें भयसे मानो घुसीसी जातीहुई राजकन्याको समझाकर सावधान किया उस समय विदूषकने यहशोचा कि इसराजकन्याको मैं इसकेमहलमें कैसे पहुंचाऊं इसके विचार करतेही यह आकाशवाणीहुई कि हे विदूषकसुन तुमने जिससंन्यासीको माराहै इसनेवेताल और सरसों बहुत सिद्ध कियेथे और यह संपूर्ण पृथ्वीका राज्य और संपूर्ण राजाओंकी कन्याओंको चाहताथा इसी से आज इसमूर्खकी यहदशाहुई इस्से हेवीर तुम इनसरसवोंको इसकेवस्त्रसे खोललो इनसे आजकी रात्रिभर तुम को आकाशमें चलनेकी सामर्थ्य होजायगी इस आकाशवाणीको सुनकर विदूषक बहुत प्रसन्नहुआ यहठीक है कि प्रायः देवतालोगभी ऐसे वीर पुरुषोंपर दया करते हैं १८० तब विदूषकने उस संन्यासी के कपड़ोंसे सरसों खोलली और उसराजकन्याको गोदमें लेकर जैसे वह देवीजीके मंदिरसे बाहर निकला उसीसमय फिर आकाशवाणीहुई कि हेवीर महीने भरकेपीछे तुम इसी देवीके मंदिरमें फिर आना और इसबातको भूलनानहीं इस आकाशवाणीको सुनकर और बहुत अच्छा आऊंगा यह कहकर विदूषक देवीजीकी कृपासे उसराजकन्याको लेकर आकाशमें उड़ा और आकाशमार्गसे राजकन्याको महल में पहुंचाकर और उसे समझाकर बोला कि प्रातःकाल में आकाशके मार्गसे नहीं जासकूंगा तो द्वारसे निकलतेहुए मुझेलोग देखेंगे इस्से मैं अभी जाताहूं उसके यह वचनसुनकर राजकन्या बोली कि तुम्हारे जानेसे मारेडरके मेरे प्राण निकलजायँगे इस्से हेमहाभाग तुमयहां रहकर मेरे प्राणबचाओ क्योंकि अपने

किये का निर्वाहकरना यह सज्जन लोगोंका स्वाभाविक धर्म्म है १८८ यह सुनकर बड़े वीर विदूषक ने यहशोचा कि चाहै जोहोय मैं अबनहीं जाऊंगा क्योंकि मेरे जानेपर भयसे यह मरजायगी फिर मेरी करी कराई राजाकी भक्ति सवर्व्यर्थ होजायगी यह शोचकर वह रात्रिभर उसीकन्याके महलमेंरहा और व्यायाम तथा जागरणके श्रमसे वहीं सोगया परन्तु राजाकी कन्या मारेभयके रात्रिभर नहीं सोई प्रातःकाल भी राजकन्याने सोतेहुए विदूषकको बड़े प्रेमसे इसलिये नहींजगाया कि यह थकाहुआ है इससे अभी थोड़ीदेर और आराम करले इसके उपरान्त वहां आईहुई दासियोने विदूषकको देखा और घबराकर यह वृत्तान्त राजासेकहा तव राजाने इसवातके निश्चय करने को कोई प्रतीहारभेजा उस खबरलेजानेवालेने भी वहां जाकर विदूषकको देखा और राजकन्याके मुखसे उसका संपूर्ण वृत्तान्त सुना फिर उसने वह सव वृत्तान्त राजासेकहा यह सुनकर विदूषकके पराक्रमके जाननेवाले राजाको कुछ घवराहटसीहुई कि यह क्यावातहै तव राजाने विदूपकको अपनी कन्याकेमहलसे बुलवाया उससमय स्नेहसे राजकन्याका चित्तभी उसके साथही मानो चलाआया आयेहुए विदूषकसे राजाने सववृत्तान्त पूछा तव विदूषकने भी आदिसे सव वृत्तान्त कहकर वस्त्रमे बँधीहुई चोरोंकीनाकें और संन्यासीकी पृथ्वीके भी भेदनकरनेवाली सरसों दिखाई १९९ तव इसवातको सत्यसमझकर राजाने चक्रधरसमेत सम्पूर्ण मठके ब्राह्मणोंको बुलाके उनसे सववातेंपूछीं और श्मशानमेभी जाकर नाककटेहुए तीन चोर और खिरकटाहुआ वहसंन्यासी देखा इसप्रकार अच्छेप्रकार निश्चय होजानेपर अपनी कन्याके प्राणवचानेवाले विदूपकको वह अपनी कन्यादेदी (। ठीक है उदारलोग उपकारी पुरुषोंको प्रसन्न होकर क्यानहीं देसक्ते हैं) उस राजकन्या के हाथमे मानो कमलके स्नेहसे लक्ष्मी रहती थी क्योंकि उसका पाणिग्रहण करतेही विदूषकको लक्ष्मी प्राप्तहुई तव वह विदूषक उस राजकन्या के साथ राजाकेही घरमें राजा लोगोंकेही समान भोगविलास करनेलगा इसके उपरान्त कुछदिन व्यतीतहोनेपर एकसमय भाग्यवशसे उस राजकन्या ने रात्रिमें विदूषकसे कहा कि हे नाथ आपको वह वातयाद है कि रात्रिकेसमय देवीकेमंदिरके वाहर आकाशवाणी ने कहाथा कि एकमहीने पीछे तुम फिर यहाँ आना वह महीना तो आज व्यतीतहुआ और आप उस वातको भूलगये अपनी प्रियाके यह वचन सुनकर विदूषक उस आकाशवाणी को स्मरण करके बड़ा प्रसन्नहुआ और वोला हे प्रिये तुमने खूव यादरक्खी मैंभूलगयाथा यह कहकर उसने अपनी प्रियाको आलिङ्गनरूप इनामदिया २०९ इसके उपरान्त राजकन्या के सोजानेपर विदूपक अपने खड्गको लेकर महलसे वाहरहोकर देवीजीके मंदिरकोचला वहाँजाकर उसने वाहरसेही यह कहा कि मैं विदूषक आयाहूं तवभीतरसे यह शब्दहुआ कि भीतर चलेआओ यह किसीके वचन उसने सुने तव भीतर जाकर विदूषकने एक दिव्यस्थानदेखा और उसस्थानमें दिव्यठाटवाली एक महासुन्दर कन्या देखी वह कन्या क्या थी मानो अपनेप्रकाशसे अन्धकारको नाशकरनेवाली रात्रिकेसमय प्रकाशमान शिवजीके कोपकी अग्निसे जलेहुए कामकी संजीवनी औषधहीथी यह देखकर आश्चर्य्य युक्तहोनेवाले विदूषकको उसने बड़े स्नेह और आदर सत्कारसे अत्यन्त प्रसन्नकिया तव उसके प्रेमको देखकर विदूषक विश्वास पूर्व्वक

वहाँ बैठा और उसे उसके वृत्तान्त जानने की इच्छाहुई तब वह कन्याबोली कि मैं विद्याधरों के कुलमें उत्पन्न हुईहूं और भद्रामेरानामहै अपनी इच्छापूर्व्वक घूमतीहुई मैंने उसदिन तुमको यहाँदेखाथा तुम्हारे गुणोंको देखकर मेरा चित्त तुमपर आसक्तहोगया तब मैंनेही तुमको बुलाने के लिये अदृश्य वाणी से कहाथा और आजभी मैंनेही मंत्रका प्रयोग करके उस कन्याकेद्वारा तुमको याद दिलाईथी २१८ अब तुम्हारेलिये मैं यहाँ स्थितहूं तो मैं यह अपना शरीर तुम्हारे अर्पण करतीहूं तुम मेरा पाणिग्रहणकरो उस भद्रानाम विद्याधरीके यहवचन सुनकर विदूषकने उस्से गान्धर्व विवाह करलिया और अपने पुरुषार्थकी फल सिद्धिरूपी उस विद्याधरी के साथ दिव्यभोगों को पाकर वहीं रहनेलगा इस बीचमें प्रातःकाल के समय वह राजकन्या जागी और वहाँ अपने पतिको न देखकर महाव्याकुल होगई फिर नेत्रों में आँसू भरीहुई विह्वल होकर गिरती परती वह राजपुत्री अपनी माताके पासगई और अपने अपराधसे डरकर तथा पश्चात्ताप करके मातासे बोली कि आज मेरापति रात्रिके समय कहीं चलागया तब उसकी माता स्नेहसे बहुत घबरागई और राजाभी वहाँ आकर इसबातको सुनके बहुत घबरागया २२५ इसके उपरान्त राजकन्याने यहकहा कि मुझे मालूम होताहै कि मेरापति श्मशानमें जो देवीका मंदिरहै वहाँ गयाहोगा यह सुनकर राजा आप वहाँगया परन्तु विद्याधरी की विद्या के प्रभाव से छिपाहुआ विदूषक राजा को बहुत ढूंढ़नेपरभी नहीं मिला तब राजाके लौट आनेपर निराशहोकर वह राजकन्या अपना शरीर त्याग करने को तैयारहुई उससमय किसी ज्ञानी ने आकर उस्से कहा कि तुम कोई बुराई का सन्देह मतकरो तुम्हारापति दिव्य आनन्दों को भोगताहुआ वर्त्तमानहै थोड़ेदिनों में तुमको मिलजायगा उसज्ञानी के यह वचन सुनकर अपने पतिके फिर मिलजाने की आशासे राजकन्याने अपना शरीर त्याग नहींकिया इसबीचमें उस विद्याधरीके पास रहतेहुए विदूषकके यहाँ उस भद्राकी कोई योगेश्वरीनाम सखीआई उसने भद्राको एकान्तमें लेजाकरकहा कि हे सखी मनुष्यके सत्संगसे विद्याधरलोग तुमपर नाराजहैं और तुम्हारे साथ कोई बुराईभी कियाचाहते हैं इसलिये तुमयहांसे चलीजाओ पूर्व समुद्रके पार कर्कोटकनाम शहर है उसशहर के आगे शीतोदानाम एकबड़ी पवित्रनदी है और उसनदी के पार सिद्धों के रहनेका स्थान एकउदयनाम पर्व्वतहै उसपर्व्वतपर विद्याधरलोग नहींजासक्ते हैं इससे तुम अभी वहींचलीजाओ और इसअपने प्यारे मनुष्यके लिये कोई चिन्तामतकरो २३५ अपना सब वृत्तान्त इसमनुष्य से तुमकह जाना जिससे कि पीछेसे यह वीर पुरुषभी तुम्हारे पास वहींचलाआवेगा अपनी सखीके यहवचनसुनकर भद्रा यद्यपि विदूषकसे बड़ा स्नेहकरतीथी तथापि भयभीतहोकर उसने अपनी सखीके वचनमानलिये फिर उसने विदूषकसे अपनी सबबातें कहकर उसे अपनी अंगूठीदेदी और रात्रिके व्यतीतहोनेपर वहअन्तर्द्धान होगई तब क्षणभरके बाद विदूषकने अपनेको उसशून्य देवीके मंदिरमें बैठाहुआपाया न वहां भद्राथी और न वह दिव्य मंदिरथा उसविद्या के जालको स्मरणकरताहुआ और उस अंगूठीको देखताहुआ विदूषक खेद तथा आश्चर्य्यको प्राप्तहुआ फिर उसने स्वप्नकेसमान उसविद्याधरी के वचनों को स्मरण करके अपने चित्तमें कहा कि वह मुझे उदयपर्व्वतपर बुलागई है इससे मुझे शीघ्रही उससे मिलने के लिये वहांजाना

चाहिये परन्तु लोगोंके देखनेसे जोराजा मुझे सुनपावेगा तो नहींछोड़ेगा इससे यहांपर मैं कोई युक्तिकरूं तो मेरा कार्य्यसिद्धहोय यहशोचकर उसने अपना वेषवदलडाला फटेकपड़े पहनकर और शरीरमें धूल लपेटकर विदूषक उसदेवी के मंदिरसे हायभद्रे २ यहकहताहुआ निकला २४४ उससमय विदूषक को देखकर उसदेशके रहनेवाले लोग यह वही विदूषकहै यहवही विदूषकहै ऐसा कोलाहल मचानेलगे यह खबरसुनकर राजाने खुद आकर सिड़ीकीसी चेष्टामें उस विदूषकको देखा और पकड़वाके उसे अपनेमहल में लेगया वहां स्नेहसे व्याकुल सेवक तथा वंधुओंने उससे जो कुछ कहा उसने उसका हा भद्रे हा भद्रे यही उत्तरदिया वैद्योंके वतायेहुए तैलोंके मर्द्दनकरनेपरभी वह उसीसमय अपने शरीरमें वहुतसी धूल लपेटलेताथा राजकन्या वड़ेस्नेहसे जो कुछ उत्तम भोजनलाती थी उसे विदूषक लातमारकर फेंकदेता था इसप्रकारसे अपनेवस्त्रों को फाड़ताहुआ विदूषक उन्मत्तोंकीसी चेष्टामें कुछ दिन वहांरहा तव राजा आदित्यसेनने यहशोचा कि यह अच्छाहोता मालूमनहींहोता क्योंकि इसके अच्छेहोनेका कोई यत्न नहीं है तो क्यों इसे व्यर्थ क्लेशदेनाचाहिये और शायद इसीतौरपर इसके प्राण निकलजायँ तो ब्रह्महत्याहोगी और स्वतन्त्रतापूर्वक घूमनेसे शायद कुछकालमें यहअच्छाभी होजाय यहशोचकर राजाने उसे छुड़वा दिया २५२ तव विदूषक अंगूठीलेकर दूसरे दिन स्वच्छन्दतासे भद्राके पास पहुँचने को चला रोज २ पूर्व दिशामें जाते २ एकदिन मार्ग में उसे पौण्ड्रवर्द्धननाम शहरमिला वहां किसी वृद्धाब्राह्मणी से इसने यहपूछा कि हे माता आज रात्रिभर मैं तुम्हारे यहाँ रहजाऊं यहकहकर उसके घरमेंगया तवउस ने भी उसका अतिथि सत्कारकरके उसकेरहनेको अपनेघरमें जगहदी फिर क्षणभरके उपरान्त दुःख से भरीहुई उसब्राह्मणी ने विदूषकसे आकरकहा कि हे पुत्र मैंने यह अपना सम्पूर्णघर तुमको देदिया तुम इसेलेलो क्योंकि मैं अवनही जीऊंगी तव विदूषकनेपूछा कि तुम ऐसा क्योंकहतीहो यहसुनकर वहवृद्धा वोली कि सुनो मैं तुमसे सववृत्तान्त कहतीहूं २५८ हे पुत्र इसनगरमें देवसेननामराजाहै इसराजाके एक वहुतसुन्दरकन्या उत्पन्नहुई तव राजाने वड़ेप्रेमसे वड़ेदुःखसे पानेकेकारण उसकन्याकानाम दुःखलब्धिकारक्खा समयपाकर जव वहकन्यातरुणहुई तवराजाने कच्छपनाथ राजाकोवुलाकर उसकेसाथ कन्या का विवाह करदिया वह कच्छपनाथ जिससमय उसकन्याके रहनेके स्थानमेंगया उसीसमय उसके प्राण निकलगये तव राजाने दुखीहोकर किसी अन्यराजाके साथ उसका विवाहकरदिया और वहभी उसीप्रकारसे मरगया इसभयसे जव अन्य राजालोग उसकेसाथ विवाहकरनेको नहीं इच्छाकरतेभये तव राजा ने अपने सेनापतिको यह आज्ञादी कि इसदेशसे क्रमपूर्वक एक २ आदमी एक २ घरसे ब्राह्मण अथवा क्षत्री रोजलाओ और लाकर उसे रात्रिमें मेरीकन्याके यहाँ भेजो मैं देखूं तो कितने आदमी यहां आकर मरते हैं जो पुरुष यहां वचजायगा वही इसकापतिहोगा क्योंकि अद्भुत कार्य्यवाले ब्रह्माकी गतिको कोई नहीं टालसक्ताहै २६७ राजाकी यह आज्ञापाकर सेनापति प्रतिदिन क्रमसे एक आदमीको घरोंसे लेजाताहै इसप्रकारसे सैकड़ोंआदमी वहां जा २ कर मरगये मुझ पापिनी के एकही पुत्रहै आज उसपुत्र की वहां मरनेजानेकी वारी है उसके मरजाने पर प्रातःकाल में आगमें जलजाऊंगी इसलिये अपने

जीतेजी मैं यह सब अपना घर तुम्हें इस निमित्त दियेदेती हूं जिससे कि मुझे दूसरेजन्ममें दुःख न होवे उसके यह वचनसुनकर बुद्धिमान्धीर विदूषकनेकहा कि हे माता जो ऐसाहै तो तुम मतघबराओ आज मैं वहां जाऊंगा जिससे तुम्हारा यह पुत्रजीतारहै और यहशोचकर कि मैं इसेक्योंमारवाऊं मेरेऊपर दया मतकरो क्योंकि सिद्धिके बलसे वहां जाने से मुझे कुछ भयनहीं है विदूषकके यह वचनसुनके वह ब्राह्मणी बोली कि तुम मेरेपुण्यसे आयेहुए कोई देवताहो तो हे पुत्र तुम हमारे प्राणोंकी रक्षाकरो और अपनेकोभी बचाना २७५ इसप्रकार उसवृद्धासे सलाहकर सायंकालके समय सेनापतिके नौकरकेसाथ वह विदूषक राजकन्याके घरकोगया वहां जाकर उसने पुष्पों के गुच्छोंके भारसे झुकीहुई लताकेसमान यौवनकेमदसे उन्मत्त राजकन्यादेखी तब रात्रिके समय राजकन्याके पलँगपर लेटजानेपर ध्यानकरनेसे आयेहुए खड्गको अपने हाथमें लेकर विदूषक उसमंदिरमें इसलिये जागतारहा कि मैं देखूं यहां मनुष्यों को कौन मारडालताहै सम्पूर्ण मनुष्यों के सोजानेपर एकबड़ाघोर राक्षस किवाड़े खोलकर दरवाजेपर दिखाईदिया उसराक्षसने दरवाजेपरही खड़े २ सैकड़ोंमनुष्योंके मारनेवाली अपनीभुजा उसघरके भीतर डाली तब विदूषकने दौड़कर क्रोधसे खड्गके एकहीप्रहारसे वह भुजाकाटडाली भुजाके कटजानेपर विदूषकके पराक्रमसे डराहुआ राक्षस फिर कभीनहींआनेका विचारकरके वहां से भागगया २८३ फिर राजकन्याने जगकर उसराक्षसकी कटीहुई और पृथ्वी में पड़ीहुई भुजादेखी तब उसे भय हर्ष तथा आश्चर्य यह तीनों एकसाथही हुए प्रातःकाल राजा देवसेनने अपनी कन्याके महलके दरवाजेपर वह कटीपड़ी हुई भुजादेखी वह भुजा क्याथी मानो विदूषकने बड़ाभारी बेलन इसलिये लगादियाथा कि अब आज से यहां कोई अन्यपुरुष न आवे तब राजाने दिव्यप्रभाववाले विदूषक के साथ प्रसन्नता पूर्वक बहुतसा धनदेकर अपनी कन्याका विवाहकरदिया विदूषक साक्षात् सम्पत्तिके समान उसकन्याके साथ कुछ दिन वहांरहा एकदिन सोईहुई राजकन्याको छोड़कर विदूषक भद्रासे मिलनेको वहांसे रात्रिके समय चला प्रातःकाल वह राजकन्या विदूषकको न देखकर बहुतदुखितहुई तब उसके पिताने विदूषकके फिर लौट आनेकी आशासे उसकन्याको सावधानकिया २९० विदूषकभी प्रति दिन चलताहुआ क्रमसे पूर्व समुद्रके निकट ताम्रलिप्तिकानाम नगरीमें पहुँचा वहांजाकर उसने समुद्रके पारजानेवाले किसी स्कन्ददासनाम वणियेसे मेलकिया और उसी वणिये के साथ बहुत धनसेभरेहुए जहाजपर चढ़कर समुद्रमें चला वह जहाज समुद्रकेबीचमें जाकर किसीचीजमें अटककर चलते २ रुकगया फिर रत्नादिसे समुद्रका पूजनकरनेपर भी जब वह जहाज न चला तब स्कन्ददास बहुतदुखीहोकर बोला कि जो इस मेरे जहाज को छुड़ाकर चलादेवे उसे मैं अपना आधाधन और अपनी कन्यादूं यहसुनकर धैर्य्यवान् विदूषकबोला कि मैं समुद्रके भीतरघुसकर समुद्रकेजलको देखकर तुम्हारे जहाजको अभी चलाय देताहूं तुमलोग मुझे रस्सी में बांधकर लटकादो और रस्सियां मजबूती से पकड़ेरहना जब जहाजचलनेलगे तब तुम मुझे पानी में से खैंचलेना वणिये ने विदूषकके वचन अंगीकारकरलिये और मल्लाहों ने विदूषककी कांख में रस्सीबांधी ३०० तब रस्सीसे बँधाहुआ विदूषक समुद्रके भीतरउतरा ठीकहै (पराक्रमी पुरुष समयपर कभी

नहीं चूकते हैं) समुद्रके भीतर ध्यानकरने से आयेहुए अपने खड्गको हाथमें लेकर वीरविदूषक जहाजके नीचेगया वहांजाकर उसनेदेखा कि एकवड़ाभारी पुरुषसोरहाहै और उसीकीजांघ में जहाजरुका हुआहै तवविदूषकने अपनेखड्गसे उसकी जांघकाटडाली और वहजहाज वेरोकके चलदिया जहाजको चलाहुआ देखकर उसपापीवणियेने धनकेदेनेके लोभसे वहरस्सीकटवादी तवछुटेहुए अपने चरित्रके समान उसजहाजसे वहवणिया अपने वहुत लोभके समान वहुतवड़े समुद्रकेपारगया ३०६ कटीहुई रस्सियोंको पकड़ेहुए विदूषकभी समुद्रकेऊपरतैरआया और अपनी यहदशादेखकर वहधीरपुरुषशोचने लगा कि इसवणियेने यहक्याकिया अथवा इसमें कहनाहीक्याहै क्योंकि धनकेलोभसे अन्धे कृतघ्नी पुपरुउपकारको नहीं देखसक्ते हैं तोयहसमय घवरानेकानहीं है क्योंकि घवरानेसे मनुष्य थोड़ीसी आपत्तिकोभी नहीं दूरकरसक्ता यह शोचकर उसने जोपानीके भीतर पुरुषकी टांगकाटीथी उसीपरचढा और अपने हाथों से समुद्रके जलको हटाताहुआ उसीजांघको नौकाके समान वनाकर समुद्रके पारपहुंचा ठीकहै (दिलेरपुरुषोंका भाग्यही सहायकहोताहै) महावीरजीके समान रामार्थ (रामके निमित्त और रामा अर्थात् स्त्री के निमित्त) समुद्रके पारआयेहुए वलवान् विदूषकको यहआकाशवाणीहुई कि स्यावास २ हेविदूषक तुझसेवढ़कर कौनादिलेर होसक्ताहै तुम्हारे इसधैर्य्य से मैं वहुतप्रसन्नहूं तो तुमसुनो कि इसनग्नदेशमें तुम आगयेहो और यहांसेचलकर सातदिनमे कर्कोटकनगरमें पहुंचोगे वहांसे धैर्य्यपूर्वक जाकर शीघ्रही तुम्हारा मनोरथ पूर्णहोजायगा और मैं पहले तुमसे आराधनकियाहुआ अग्निदेवताहूं अवहमारे वरदानसे तुम्हेंक्षुधा और तृषाकीवाधा न होगी तो तुम विश्वासपूर्वक अपने कार्य्य के सिद्ध करनेकोजाओ यहकहकर वहआकाशवाणी वन्दहोगई ३१६ यहसुनकर अग्निको प्रणामकरके विदूषक हर्षपूर्वक वहांसेचला और सातवेदिन कर्कोटकनगरमें पहुंचा वहांजाकर विदूषक एकमठमेंगया उसमठमें अनेक देशों से आयेहुए अभ्यागत श्रेष्ठ ब्राह्मणरहतेथे वहमठवहां के आर्य्यवर्म्मा नाम राजाने अनेक सुन्दर २ सुवर्णकी देवताओंकी मूर्त्तियोसमेत वनवायाथा उसमठमें संपूर्ण ब्राह्मणोंसे सत्कार कियेहुए विदूषकको एकब्राह्मणने घरके भीतरलेजाकर स्नानभोजन तथा वस्त्रसेसन्तुष्टकिया सायंकालके समय उसमठमे वैठेहुए विदूषकने उसनगरमें यहढंढोरा पिटताहुआसुना कि जोकोई ब्राह्मण अथवा क्षत्री प्रातःकाल राजकन्याकेसाथ विवाहकरनाचाहे वह आजरात्रिको उसके यहांरहै यह सुनकर विदूषकनेजाना कि इसमें कोईकारण है यहशोचकर उससाहसीने राजकन्याके यहां जानेकी इच्छाकरी ३२३ तवमठके ब्राह्मण विदूषकसेवोले कि हेब्राह्मण साहसमतकरो वहराजकन्याका घरनहीं है वहतो मृत्युका खुलाहुआ मुखहै जोरात्रिकेसमय वहांजाताहै वहनहींजीताइसप्रकारसे वहुतसेसाहसीपुरुषयहांमरचुकेहैं उनब्राह्मणों के कहनेपरभी उनकेवचन न मानकर विदूषकराजाके नौकरोंकेसाथ राजाकेयहांगया वहांआपराजाआर्यवर्माने विदूषकको देखकर उसकी वड़ीखातिरकी और रात्रिके समय जैसेसूर्य्य अग्निमेंजातेहैं उसीप्रकार विदूषक राजकन्याके महलमेगया यहां विदूषककी आकृतिको देखकर राजकन्याको वड़ाअनुरागहुआ और निराशहोकर दुःखसेनेत्रोमें आंसूभरके उसेदेखनेलगी राजकन्याकी यहदशादेखकर ध्यानकरनेसे

आयेहुए अपने खड्गको हाथमें लेकर विदूषकरात्रिमें इधर उधर देखताहुआ जागताहीरहा एकाएकी एकवड़ा घोरराक्षस द्वारपरदिखाईदिया उसराक्षसकी दाहिनीभुजाकटीथी इस्से उसने अपना बायां हाथ उसघरके भीतरफैलाया यहदेखकर विदूषकने शोचा कि यह वहीराक्षसहै जिसका दाहनाहाथ मैंने पौंड्रवर्द्धन नगरमेंकाटाथा तो मैं आजइसकी भुजानहीं काटूंगा नहींतो यहपहलेकी तरह फिरभागजायगा इस्से इसको अच्छेहीप्रकारसे मारूंगा यहशोचकर विदूपकने दौड़कर उसके बालपकड़कर उसका शिरकाटना चाहा तब उसराक्षसने डरकर उस्सेकहा कि मुझेमतमारो मुझेमतमारो तुमवड़े बलवान्हो मेरेऊपरदया करो ३३४ तब विदूपकने उसेछोड़कर उस्सेपूँछा कि तुम्हारा क्यानाम है और तुम्हारा यह कैसाकामहै तब राक्षसबोला कि मेरायमदंष्ट्रनामहै मेरेदोकन्याहुई एकतो यह और दूसरी पौण्ड्रवर्द्धननगरमें है मुझे महादेवजीकी यहआज्ञाथी कि इनदोनोंराजकन्याओंको वीरतारहितपुरुषके संगसेबचाना तोपहले पौंड्रवर्द्धननगरमें एकपुरुषने मेरीएकभुजाकाटडालीथी और आजयहां तुमने हमकोजीतलिया अबमेरा वह कामसमाप्त होगया यहसुनकर विदूपकने हँसकर उस्सेकहा कि मैंनेही पौण्ड्रवर्द्धन में तेराहाथकाटाथा तब राक्षसबोला कि तुम मनुष्यनहींहो किसीदेवताका अवतारहो मैंजानताहूं तुम्हारेहीलिये मुझेमहादेवजीने यहआज्ञादीथी तो अबतुम हमारेमित्रहोगये जबतुम मेराध्यानकरोगे तब मैं संकटमेंभी तुम्हारा कार्य्य सिद्धकरनेको आऊंगा विदूषकने यहउसकी बातस्वीकारकरली इसप्रकार वह राक्षस विदूपक से मित्रताकरके अन्तर्द्धानहोगया ३४२ तबराजकन्याने बहुतप्रसन्नहोकर विदूषकके बड़ेपराक्रमकी प्रशंसा की और विदूपकने भी आनन्दपूर्व्वक वहरात्रिउसकेसाथव्यतीतकी प्रातःकाल राजाने यह संपूर्णवृत्तांत जानकर बड़ीप्रसन्नतासे वीरताकी पताकाकेसमान धनसमेत अपनीकन्या विदूषककोदी विदूपककुछदिन उसराजकन्याकेसाथ वहांरहा विदूपककेगुणोंसे प्रसन्नहुई वहलक्ष्मीकेसमान कन्या उसको एककदमभर भी अकेला अलगनहींछोड़तीथी एकदिन रात्रिकेसमय उसकन्याकेसोजानेपर भद्राकी यादकरके विदूपक वहांसेभीचलाठीकहै दिव्यरसकास्वादलेकर अन्यरसोंमें किसकाचित्तलगताहै नगरसेबाहरनिकलकर विदूपकने उसराक्षसका स्मरणकिया स्मरणकरनेसे आयेहुए प्रणामकरतेहुए उसराक्षससेबोला कि मुझे भद्रानाम विद्याधरी के लिये उदयाचलपर सिद्धक्षेत्रमेंजानाहै इस्से हे मित्र तुममुझेवहींलेचलो उसने उसके वचनमानलिये और उसे अपने कन्धेपर बैठालकर रात्रिभरमें उसे दुर्गमसाठयोजनपरलेगया और प्रातःकाल मनुष्योंसे पारजाने के अयोग्य शीतोदानाम नदीसे पारहोकर वह राक्षसउदयाचलके पास विना परिश्रमकेपहुंचा और बोला कि यहउदयनामपर्व्वत तुम्हारे सन्मुखहै इसकेऊपर सिद्धक्षेत्रमें मेरी गतिनहीं है यहकहकर और आज्ञालेकर उसराक्षसके चलेजानेपर विदूपकने वहां एक बड़ीसुन्दरबावड़ी देखी ३५२ भ्रमरोंके गुंजारसे मानों स्वागतपूछतीहुई और प्रफुल्लितकमलरूपी मुखवाली उस बावड़ी के किनारेपर विदूपकबैठगया वहांपर विदूपकने स्त्रियोंकेचरणोंकी बड़ीलम्बीकतारदेखी वह पंक्ति मानों विदूपकसे कहतीथी कि तुम्हारी प्रियाके आनेका यहीमार्ग है तब विदूपकने वहांयहशोचा कि इसपर्व्वत पर मनुष्यतो जानहींसक्ते हैं इस्से यहठीकहै कि मैं थोड़ीदेरतक यहांठहरूं और देखूं कि यह किसके पैरों

की पंक्तिहै ३५५ उसके यह विचारकरतेही करते वहुतसी सुन्दर २ स्त्रियां सुवर्ण के घटले लेकर जलभरने को आईं जव वह जलभरचुकीं तव विदूपकने नम्रतापूर्व्वक उनसेपूछा कि यह जल किसके लिये तुम भर कर लियेजातीहो उनस्त्रियों ने कहा कि यहां पर्व्वतपर भद्रानाम विद्याधरी रहती है उसी के स्नानकेलिये यह जल हमलियेजाती हैं वड़ाआश्चर्य्य है कि वड़े कठिनकार्य्योंके करनेवाले धीरपुरुषोंपर प्रसन्नहोके ब्रह्माही उसकेयोग्य सामग्रियोंको इकट्ठाकरदेते हैं तव उन स्त्रियोंमें से एकस्त्रीविदूपकसेवोली कि हेमहाभाग यहघड़ा मेरेकन्धेपर रखवादो विदूपकने उसकेकहने से घड़ा उसके कन्धेपररखवादिया और भद्राकीदीहुई अंगूठीभी उसीघड़ेमेंडालदी फिर विदूपकतो उसीवावड़ी के किनारेपर वैठगया और वह स्त्रियां जललेकर भद्राकेयहांचलीगईं ३६२ वहांजाकर वहभद्राको स्नानकेलिये जवजलदेनेलगीं तववहअंगूठी भद्राकीगोद मेंघड़ेसेगिरपड़ी उसअंगूठीकोदेखके और पहचानकर भद्राने अपनीसखियोंसेपूछा कि आज क्या तुमने यहां कोई अपूर्व्वपुरुषदेखाहै तव उनस्त्रियोंनेकहा कि वावड़ीकेकिनारेपर एकतरुणपुरुषवैठाहै और उसीने यह मेराघड़ाभी कन्धेपर रखवादियाहै यहसुनकर भद्राने कहा कि शीघ्रहीउसको स्नानकराके और वस्त्राभूषणपहराके यहांलेआओ वह मेरापतिहै भद्राकी यह आज्ञापाकर उनस्त्रियोंने जाके विदूपकसे यह सव वृत्तांतकहा और वह सव स्नानकराके वस्त्रालंकारयुक्त उसे वहां लिवालेगईं विदूपकने वहांजाकर अपनी वीरतारूपीवृक्षकी साक्षात्पकीहुई फलीकेसमान वहुतकालसे इन्तजारकरनेवाली भद्राकोजाकरदेखा भद्रा भी उसेदेखकर उठकेहर्षकेआंसुओंसे मानों अर्घदेतीहुई उसकेगलेमें अपनीभुजारूपी मालाडालाकर चिपटगई उससमय उनदोनोंके परस्पर वहुत दवाकर आलिङ्गनकरनेसे स्वेदके वहानेसे मानों वहुतदिनोंका इकट्ठाहुआ स्नेह दवकर टपकपड़ा ३७० इसके उपरान्त वैठकर वह दोनों परस्पर देखने से तृप्त नहीं हुए और उनकी उत्कण्ठा पूर्व्वसेभी सौगुनी वढगई उससमय भद्राने विदूपक से पूंछा कि तुम इतनी दूर कैसे आयेहो तव विदूपकवोला कि तुम्हारे स्नेहके सहारेसे प्राणोंकेभी सन्देहोंमें फँसकर इतनीदूर चलाआयाहूं और मैं तुमसे क्याकहूं यह सुनकर और प्राणोंसेभी अधिक उसका स्नेह अपने ऊपर देखकर भद्राको उस पर वहुत स्नेहवढ़ा और वोली कि हेआर्य्यपुत्र मुझे अव इन सखियों से और सिद्धियों से कुछ काम नहीं है तुम्हीं मेरे प्राणहो और मैं तुम्हारी गुणोंसे खरीदीहुई दासीहूं तव विदूपकनेकहा कि अगर ऐसाहै तो तुम इस दिव्य ऐश्वर्य्यको छोड़कर हमारे साथ चलकर उज्जयिनी में रहौ भद्राने उसी समय उसके वचन मान लिये और ऐसा विचारकरनेसे नष्टहुई विद्याओंका तृणकेसमान त्यागकर दिया ३७७ विदूपक उस दिन तो रात्रिभर अपनी प्रियाके साथ वहींरहा और योगेश्वरी नाम भद्राकीसखीने उसकी वड़ीखातिरकरी फिर प्रातःकाल भद्रासमेत उस पर्व्वतसे उतरकर उसने यमदंष्ट्रनाम राक्षसका स्मरणकिया स्मरण करनेसेआये हुए राक्षससे अपने जानेका मार्ग वताके विदूपक भद्रासमेत उसराक्षसके कन्धेपरचढा और राक्षसपरचढ़ के वहांसे चलाहुआ भद्रासमेत कर्कोटकपुर मे पहुंचा वहांराक्षसको देखकर लोग वहुतडरे और विदूपकने आर्य्यवर्मा नाम राजासे उसकी कन्या अपनी स्त्री मांगी राजाने अपनीकन्या उसेदेदी और विदूपकभी अपने वाहुवलसे पाईहुई उसराजकन्याको लेकर उसीराक्षसपर चढ़के वहांसेभी चला समुद्रके किनारे पर

जाके विदूषकने उसपापी वणियेको पाया जिसने समुद्रमें पड़ेहुए इसकी रस्सी काटदीनीथी और धन समेत उस वणियेकी कन्यालेली क्योंकि पहले उसने समुद्रमें जहाजके छुटानेके निमित्त अपनेआधेधन समेत अपनीकन्या देनीकी थी और धनका छीनलेनाही विदूषकने उसका मारडालना समझा क्योंकि प्रायः नीचलोगोंको धन प्राणसेभी अधिक प्याराहोताहै ३८७ इसके उपरान्त विदूषक उसराक्षसपरभद्रा राजकन्या तथा वणियेकीकन्या समेत चढ़कर आकाश मार्गसेचला और अपनी स्त्रियोंको सत्त्वों (जीव तथा पराक्रम) के वेगसे युक्त अपने पराक्रमके समान समुद्रको दिखाताहुआ समुद्रके पारआया और वहांसे उस पौण्ड्रवर्द्धन नाम नगरमें पहुंचा वहां राक्षसपर चढ़ेहुए विदूषक को देखकर लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ फिर राक्षसकी भुजाकाटनेसे मिलीहुई वहुतदिनों से उत्कंठित राजादेवसेनकी कन्याको विदूषकने जाकर प्रसन्न किया और राजाके रोकनेपर भी अपने देशकी उत्कंठा से राजकन्याको लेकर उसी राक्षस पर चढ़करचला और थोड़ेहीं समयमें उसराक्षस के प्रभावसे उज्जयिनीपुरी में जापहुंचा वह पुरी क्याथी मानों वाहर निकलीहुई अपने देश के देखने की साक्षात् प्रसन्नताथी कन्धेपर बैठीहुई स्त्रियोंकी कान्तिसे प्रकाशित शरीरवाले राक्षसपर चढ़ेहुए विदूषकको लोगों ने जाज्वल्यमान ओष-धियों से युक्त उदयाचलके शिखरपर चन्द्रमाके समान देखा इसके उपरान्त उसे देखकर लोगों के डरनेपर उसकाश्वशुर राजा आदित्यसेन इसवातको सुनके वहांआया विदूषकने राजाको देखकर रा-क्षसपरसे उतरकर उसेप्रणामकिया और राजानेभी उसे अपने पासवुलाकर उसकीवड़ी खातिरकी ३९७ फिर विदूषकने अपनी सव स्त्रियोंको उतारकरउसराक्षससे कहा कि अब तुम्हारा जहांचित्तचाहे वहांजाओ उसराक्षसके चलेजानेपर विदूषक अपने श्वशुरके साथ राजमन्दिर में गया और वहांजाकर उसने वहुत दिनों से उत्कण्ठित अपनी पहली स्त्री राजाकी कन्याको प्रसन्नकिया इसकेउपरान्त राजाने विदूषकसे पूंछा कि यहस्त्रियां तुम्हें कहां से मिलीं और यहराक्षस कौनथा राजाके यहवचन सुनकर विदूषकने सव वृत्तान्त कहदिया तव राजाने उसपर अत्यन्त प्रसन्नहोकर अपना आधा राज्य उसेदेदिया तबसे वहवि-दूषक ब्राह्मणभी राजाहोगया और श्वेतछत्र समेत उसपर चमरढुलनेलगा उससमय मंगलके वाजे और गानोंसे उज्जयिनीपुरी ऐसीशोभितहुई कि मानों यहपुरीही आनन्दके शब्दकररही है इसप्रकार राज्य के ऐश्वर्य्यको पाकर विदूषकने धीरे२ संपूर्ण पृथ्वी जीतकर सव राजा अपने वशीभूतकरलिये और प-रस्पर ईर्षारहित भद्राआदिक संपूर्ण रानियों के साथ आनन्दका भोगकरने लगा इसप्रकार से भाग्यके अनुकूल होनेपर धीरलोगोंको अपना पराक्रमही लक्ष्मी के खैंचनेको सिद्धहुआ महामन्त्र होजाताहै उदयनके मुखसे इसप्रकार अद्भुत अर्थवाली विचित्रकथाको सुनकर पास बैठेहुए संपूर्ण मन्त्री वासव-दत्ता और पद्मावती समेत अत्यन्त प्रसन्नहुए ४०७ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांलावाणकलम्बकेचतुर्थस्तरङ्गः ४ ॥

इसकेउपरान्त यौगन्धरायण उदयनसे बोला कि हे राजा आपके भाग्य और पुरुषार्थ दोनों अनुकूल हैं और नीतिके मार्ग में हमलोगों ने भी कुछ श्रम कियाहै इससे अब आपशीघ्रही विचारके अनुसार

दिग्विजयकीजिये यौगन्धरायणके यहवचनसुनकर राजाबोला कि यहतो ठीकहै परन्तु कल्याणके सिद्ध होने में बहुतसे विघ्नहोते हैं इससे दिग्विजयके लिये मैं तपस्याकरके महादेवजीका आराधनकरूं क्योंकि विना शिवजीकी कृपाके मनोरथकी सिद्धिनहीं होसक्री है यहसुनकर जैसे समुद्रमें सेतुबांधने के समय रामचन्द्रजीके वचन कपीश्वरोंने मानेथे उसीप्रकार मंत्रियोंनेभी राजाके तपकरने के विचारको स्वीकार करलिया इसके उपरान्त दोनों रानी और मन्त्रियों समेत तपकरनेको बैठेहुए राजासे तीनदिनके व्रत के उपरान्त स्वप्नमे शिवजीने रात्रिके समय यहकहा कि तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्नहूं अब तुम तपछोड़दो तुम्हारी निर्विघ्नतासे जयहोगी और थोड़ेही दिनोंमे तुम्हारे पुत्रहोगा वहसम्पूर्ण विद्याधरोंका राजाहो- गा जब राजाकी निद्राउच्छटगई और सूर्य्यकी किरणों से तृप्तहुए प्रतिपदाके चन्द्रमाके समान शिवजी की कृपासे राजाव्रतके क्लेशसे निवृत्त होगया तब प्रातःकाल राजाने स्वप्नकहकर मन्त्रियोंको और व्रत करने से शिथिल होनेवाली पुष्प के समान कोमल दोनों रानियोंको प्रसन्न किया ६ सुनने के योग्य इसस्वप्नके वर्णन को सुनकर तृप्तहुई दोनों रानियों को वहव्रत आगे होनेवाले ऐश्वर्य्य की औषध के समान होगया और तपसे राजाका प्रभाव अपने पुरुषो के समान होगया तथा राजाकी रानियोंकी कीर्त्ति अन्य प्राचीन पतिव्रताओं के समान परमपवित्रहोगई जब राजाने उसव्रतका पारण किया तब पुरमे बड़ाउत्सवहुआ फिर उत्सव के दूसरेदिन यौगन्धरायणने राजासे कहा कि हे राजा तुम धन्यहो क्योंकि तुम्हारेऊपर श्रीशिवजी इसप्रकारसे प्रसन्नहुएहैं तो अब तुम शत्रुओंकोजीतकर अपने भुजाओ के बलसे उपार्ज्जितकीहुई लक्ष्मीका भोगकरो अपने धर्म से उपार्जनकीहुई लक्ष्मी राजालोगोंके वंशमे स्थिररहती है क्योकि अपने धर्म से उपार्ज्जितकीहुई लक्ष्मीकानाशनहींहोता और इसी से बहुत दिनसे नष्टहुई आपके पुरुषोंकी निधि पृथ्वी मे गड़ीहुई आपकोमिली इसीविषयपर मैं आपको एक कथा सु- नाताहूं १५ पाटलिपुत्रनाम नगरमे किसी महाधनवान् बणियेका एकदेवदासनाम पुत्रथा वह पौण्ड्रव- र्द्धननाम नगरसे किसी बड़ेधनवान् बणियेकी कन्या विवाहलायाथा पिताके मरजानेपर देवदास धीरे२ जुएमें सब धनहारगया तब उसका श्वशुर अपनीकन्याको दरिद्रसे बहुतदुखी देखकर वहांसे पौण्ड्रवर्द्ध- नमें अपने घरलेगया धीरे २ विपत्तिसे व्याकुल देवदासभी रोजगारकरनेकी इच्छासे अपने श्वशुरसे धनमांगनेकोचला सायकालकेसमय पौण्ड्रवर्द्धन नगरमे पहुँचकर अपनेको धूलमे लिप्त बुरेवस्त्रधारण कियेहुये देखकर देवदासने शोचा कि इसप्रकारसे मैं अपने श्वशुरकेयहां कैसेजाऊं क्योंकि कहाभी है कि (वरंहिमानिनोमृत्युर्नदैन्यंस्वजनाग्रतः) अर्थात् मानीपुरुषका मरजानाअच्छाहै परंतु अपने सम्बं- धियो के आगे दीनताकरना अच्छानहीं यह शोचकर बाजारमेंजाके किसी दुकानकेबाहर रात्रिकेसमय कमलकेसमान मुरझाकर वह बैठरहा २३ क्षणभरकेहीपीछे उसने देखा कि कोई जवानबणिया उसदुकान के किवाड़खोलकर भीतरचलागया और क्षण भरकेहीपीछे उसीदूकानमे एक स्त्री बहुत धीरे२ पैररखतीहुई जल्दी से उसीदूकानमेंचलीगई जब दीपकके उजयाले में देवदासने दूकानके भीतरदेखा तो उसे मालूम हुआ कि यह तो मेरीही स्त्री है तब किवाड़ेबन्दकरके अन्य पुरुषके साथ संभोगकरने के लिये गईहुई

अपनी स्त्री को देखकर उसकी छाती में दुःखरूपी वज्रसालगा और वह शोचनेलगा कि धनहीन पुरुषके शरीरको भी लोगहरलेते हैं तो स्त्रियोंका क्या कहनाहै क्योंकि स्त्रियां तो स्वभावही से बिजली के समान चंचलहोती हैं व्यसनरूपी समुद्रमें डूबेहुए मनुष्योंको यह विपत्तिहोती है और पिताकेघरमें रहनेसे स्वतंत्र स्त्रियोंकी यह गतिहोती है ऐसा विचार करते २ उसने बाहरसे रतिकेउपरान्त जारकेसाथ में लेटीहुई अपनी स्त्रीका वार्त्तालापकरनासासुना तब वह द्वारेमें कानलगाकरसुननेलगा उससमय उसकी स्त्री अपने यार बणियेसे बोली कि सुनो आज मैं तुमसे स्नेहकेवशहोकर अपने घरकी गुप्तबातकहतीहूं कि मेरे पतिके वीरवर्मानाम प्रपितामहने अपनेघरके आंगनके चारोकोनोंमें सुवर्णसेभरेहुए चारकलशेगाड़ेथे ३३ और उसने अपनीस्त्रीसे यहसब वृत्तांत कहदिया उसने मरतेसमय अपनीबहू अर्थात् मेरेपतिकीदादीसे कहा उसने अपनीबहू अर्थात् मेरीसाससे व मेरीसासने मुझसे कहदियाथा इसप्रकार मेरे पतिके यहां यहबात सासोंकेमुखसे क्रमपूर्वक सुनीजाती है मैंनेअपने पतिकेदरिद्री होजानेपर भी यहवृत्तांत उस्से नहींकहा क्योंकि उसज्वारीसे मुझे द्वेषथा और तुम मेरेपरमप्रियहो इस्सेयह मैंने तुमसेकहदिया तो तुममेरेपतिके पासजाकर उसे कुछ धनदेकर वहघरखरीदलो और वहसोना निकालकर यहांआकर मेरेसाथ आनन्द करो उसके यहवचनसुनकर उसकायार उसपर विनापरिश्रमकेही इतनाधन मिलजानेकीआशासे बहुत प्रसन्नहुआ फिरदेवदासभी उसदुष्टस्त्रीके वचनरूपीबाणोंसेअत्यन्त खेदितहुआ और धनमिलनेकीआशा उससमय उसकेहृदयमें कीलितसीहोगई इसकेउपरान्त वहशीघ्रही अपने पाटलपुत्रनगरमें चलाआया और घरमेंआकर उसने सबधन खोदलिया ४० इसके उपरान्त इसकीस्त्रीकायार वहीबणिया धनकेलोभ से रोजगारके बहानेवहांआया और देवदाससे उसने वहघरखरीदा देवदासनेभी उसमकानकी बहुतसी क़ीमतली इसके उपरान्त देवदास किसी और घरमें अपना कारखाना जमाकर शीघ्रही अपनी स्त्रीको युक्तिपूर्वक अपने श्वशुरकेघरसे अपनेघरलेआया ऐसाकरनेके उपरान्त उसकीस्त्रीके यारबणियेने वहां धन न पाकर देवदाससेआकर कहा कि यहतुम्हाराघर बहुतपुरानाहैइससेमुझे नही अच्छा मालूमहोता तो तुम हमाराधन हमेंदेदो और अपना मकानलेलो जब देवदासने उसकेकहनेको मंजूर न किया तबवह दोनों लड़तेहुए राजाकेयहां गये वहां जाकर देवदासने हृदयमें स्थितविषके समान दुस्सह अपनी स्त्री का सम्पूर्ण वृत्तान्त राजाकेआगे कहदिया तब राजाने उसकीस्त्रीको बुलाके और सब बातोंका निश्चय करके पराई स्त्रीके चाहनेवाले उस दुष्टबणियेका सबधन छीनलिया और देवदासभी उसदुष्ट अपनी स्त्री की नाककाटके और किसी अन्यस्त्री से विवाहकरके सुखपूर्वक भोगकरनेलगा ४६ इसप्रकार धर्म से उपार्जनकीहुई लक्ष्मी अनेकपुश्तोंतक नष्टनहींहोती और अधर्मसे उपार्जनकीहुई लक्ष्मी पालेकेजलके कणोंकीसमान शीघ्र नष्टहोनेवाली होती है इससे मनुष्यको धर्म से धनका उपार्जन करनाचाहिये और राजाको तो यहबात औरभी अधिकआवश्यकहै क्योंकि राज्यरूपीवृक्षका धनही मूलहै इससे कार्यको सिद्ध करनेकेलिये मंत्रियोंका यथायोग्य सन्मानकरके धर्मपूर्वकलक्ष्मीके उपार्जन करनेके निमित्त आप दिग्विजयकीजिये आपकेदोनोंश्वशुरोंके संबंधसे बहुतसेराजालोग आपसेलड़ेंगेनहीं किंतु बिनालड़ेही

मिलजायँगे और यहकाशीका ब्रह्मदत्तनामराजा आपकासदैवकावैरीहै तो पहिलेइसीकोजीतो फिरइसे जीतकर क्रमसे पूर्वादिचारो दिशाओंको जीतकर कुमुदके समान उज्ज्वल पांडुकेयशको अत्यन्त उन्नत करो ५५ मंत्रीकेयहवचनसुनकर विजयकेलिये उद्यतउदयन्नेयात्राके प्रारंभका हुक्मदेदिया इसकेउपरांत सहायताके लिये आयेहुये वासवदत्ताकेभाई गोपालकको राजाने सत्कार करनेके लिये विदेह देशका राज्यदेदिया और सेनाओंको साजकर सहायके लिये आयेहुए पद्मावतीकेभाई सिंहवर्माको चंदेलीका राज्य देदिया और फिरजैसे मेघोसे वर्षाऋतु दिशाओंको व्याप्तकरती है उसीप्रकार सेनाओंसे दिशाओंके व्याप्तकरनेवाले अपने मित्रम्लेच्छोंके राजा पुलिन्दकको बुलाया इसप्रकार वत्सदेशमे विजयके निमित्त यात्राकी तैयारी होनेपर सबशत्रुओंके हृदयमें व्याकुलता होनेलगी यौगन्धरायणने पहलेही से थोड़ेसे गोइन्देकाशीजी में इसलिये भेजे कि वहराजा ब्रह्मदत्तके कार्य्योंको जानकर यौगन्धरायणके पासखबर भेजतेरहैं ६१ इसके उपरान्त कोई अच्छादिन देखके राजा उदयन्ने ब्रह्मदत्तके जीतनेकेलिये पूर्वमेचढाईकी उससमय बहुतसे अच्छे२ शकुनहुए बड़ेऊंचेहाथीपर छत्र लगाकर चढ़ेहुए राजाकीऐसी शोभाहुई जैसी कि जिसपर्वतपर एकवृक्षफूलाहोय उसपरचढ़ेहुए मतवालेसिंहकी होतीहै जयकी सिद्धि को मानो कहतीहुई शरदऋतुसे दिग्विजयकाहर्ष और भी अधिक होगया क्योंकि नदियों मे जलके कम होजानेसे मार्गबहुत सुगमहोगया और अनेक प्रकारके शब्दों करके युक्तसेनासे संपूर्ण पृथ्वीतल पूर्ण होगयाउससमय अवसरकेविनाही मेघरहित वर्षाऋतुका भ्रमहोताथा सेनाके शब्दोंकेभाईशब्दोंसेव्याकुलहुई चारोंदिशा मानोपरस्पर राजाके आनेके भयकी वार्तेकरतीथीं सुवर्ण के वख्तरोंको धारणकरने से सूर्य्यकेसमान प्रभावाले घोड़ोंको चलतेहुए देखकर यहमालूम होताथा किनीराजनसे प्रसन्नहुई अग्नि घोड़ोके साथ२ चलीजातीहै सेनाके हाथीकानों में लगेहुए श्वेतचामरो से अत्यन्त शोभित होते थे और कपोलोंमे लगेहुए सिंदूरके बहनेसे हाथियो के मदकाजल लालहोगयाथा वहहाथी क्याथे मानोंपर्व्वतों ने डरकर शरदऋतुके श्वेतमेघोंसे युक्त और गेरुआदि धातुओं के प्रवाहसे युक्त अपने २ पुत्र राजाकी यात्रामे भेजे यहराजा किसी दूसरेके तेजकोनही सहसक्ताहै इसीसे मानोसेनाकी धूलने उड़कर सूर्य्य के तेजको ढकलिया उसयात्रामें दोनोरानीभी राजाके पीछे २ चलीजातीथीं वहरानी क्याथीं मानों राजाकी नीतिके गुणोसे वशीभूतहुई कीर्त्ति और जयरूपी लक्ष्मीथीं वायुके द्वारासुकड़ेहुए और फैलेहुएपताकाओके वस्त्रमानों शत्रुओसे कहतेथे कि यातोनम्रहोजाओ अथवा भागजाओ ७२ इसप्रकारसे वहराजा चारोंओर प्रफुल्लित श्वेत कमलोको देखताहुआ चला वह कमल क्याथे मानो पृथ्वीके दबनेके भयसेघबरायेहुए शेषने अपनेफणदेखनेको निकालेथे इसवीचमे यौगन्धरायणके भेजेहुए वहगोइन्दे कपालियो का स्वरूपधारणकरके काशीजीमें पहुंचे उनमेंसे एकपुरुषजो अच्छेप्रकारसे अनेक मायाओंको जानताथा वहतो अपनेकोबड़ाज्ञानी दर्शाकरगुरूबनगया और बाकीउसके शिष्यबनगये वहसबशिष्य इधर उधरजाकर यहकहतेथे कि यहभिक्षामांगनेवाला हमाराआचार्य्य त्रिकालज्ञहै जोकोई लोगउसपर श्रद्धा करके उससे पूछने आतेथे उनसे वहजोकुछ अग्नि दाहादिक फलबताताथा वहबात उसके शिष्यछिपकर

उसीप्रकारसेकरदेतेथे इसीसे वहकाशीजीमें बड़ाप्रसिद्धहोगया उसकी सिद्धिको देखकर राजाब्रह्मदत्तका परमप्रिय एकराजपुत्र उसपर बड़ाप्रसन्नहुआ तबउसने उसराजपुत्रको अपनासेवकबनालिया राजाब्रह्मदत्तउसी राजपुत्रके द्वाराजोकुछ पूछनाचाहताथा वहपूछताथा इससे वहराजाकी लड़ाईकी गुप्तबातोंकाभी जाननेवालाहोगया ७९ इसके उपरान्त ब्रह्मदत्तकेमंत्री योगकरण्डकने मार्गमें आतेहुए राजाउदयन्के लियेबहुतसे उपद्रवकिये अर्थात् उसने मार्गके वृक्षपुष्पलता जलतथा तृणयहसब विषआदि औषधियोंसे युक्तिपूर्व्वक दूषितकरदिये विषदेनेवाली स्त्रियां वेश्याबनाकर सेनामेंभेजी औररात्रिमें छुपकर मारडालनेवाले पुरुषभीभेजे इनसबबातोंकोजानकर उसबनेहुए ज्ञानीनेअपनेशिष्योंके द्वारासबबातें यौगन्धरायण से कहलाभेजीं ८३ इनबातोंको जानकर यौगन्धरायणने भी दूषितजलादि पदार्थ औषधियों से शुद्ध करवाये और बेजानीहुई स्त्रीका सेनाके भीतर आना बन्दकरवादिया और उसने रुमण्वानके साथघूम२ कर जितने घातक पुरुषपाये वहसबमरवाडाले इनसब बातोंको जानकर जबब्रह्मदत्तकी मायाकुछ नहीं चली तबउसने जाना कि सेनासे दिशाओंके पूरितकरनेवाले उदयन्को मैंनहीं जीतसकूंगा तबसलाह करके उसने पहलेतो दूतभेजा और जबउदयन् निकटआगया तबआपही हाथजोड़ताहुआ उसकेपास गया भेटलेकर आयेहुए राजाब्रह्मदत्तका उदयन्ने भी प्रीतिपूर्व्वक बड़ासत्कार किया क्योंकि शूरलोगों को नम्रता प्रियहोतीहै इसप्रकार ब्रह्मदत्तको जीतकर पूर्व्वदिशामें दबनेवाले नम्रराजाओंको अपनेआधीन करताहुआ और कठिन राजाओंको निर्मूल करताहुआ राजाउदयन् पूर्वसमुद्रपर कोमल वृक्षोंको झुकातीहुई और कठिन वृक्षोंको उखाड़तीहुई वायुके समान प्राप्तहुआ वहांसमुद्रमें जोबड़ी२ लहरेंआती थीं उनसे यहमालूमहोताथा कि मानों वंगदेशवासियों के पराजयसे डराहुआ समुद्र कांपरहाहै ९०समुद्रके किनारेपर राजाने जयस्तंभगाड़दिया वह जयस्तंभक्याथा मानों अभयमांगनेके लिये पातालसे शेषजी ही निकले थे इसके उपरान्त जबकलिङ्ग देशके निवासियोंने आगेआकर उसेकरदिया तब उसकायश महेन्द्रपर्व्वतपर फैलगया महेन्द्रकी पराजयसे मानों डरकर आयेहुए विन्ध्याचलके शिखरोंके समान हाथियोंसे संपूर्ण राजालोगोंको जीतकर उदयन् दक्षिण दिशाकोचला उसदक्षिण दिशामें जैसे शरदऋतु मेघोंको निस्सार पांडुवर्ण गर्जनारहित तथा पर्वतनिवासी करदेतीहै उसीप्रकार राजाउदयन्ने अपनेशत्रु लोग निस्सार पाण्डुवर्ण गर्जनारहित और पर्वतनिवासी करदिये उदयन्से उल्लंघनकीहुई कावेरीनदी और चोलकदेशके राजाकीकीर्त्ति दोनोंएकसाथही गंदलेपनेको प्राप्तहोगई उदयन्मुरलाके निवासियों के शिरोंकीही उन्नतिनहीं सहसका यह बात नहीं किंतु हाथोंसेपीटेहुए उनकी स्त्रियोंकेस्तनोंकीभी उन्नति नहीं सहसका उसके हाथियोंने सातधाराओं से बहनेवाली गोदावरी नदीके जलोंका जो पानीपिया इसीसे मानों उनके शरीरोंके सातस्थानोंसे मदबहनेलगा ९७ इसकेउपरान्त उदयन्रेवानदीको उतरकर उज्जयिनीमें पहुंचा और राजाचंडमहासेन उसेआगेआकर लेगया वहांउसेमालाकी शिथिलतासे खुले हुए चुट्टेवाली और इसीसे अधिक शोभावाली मालव देशकी स्त्रियोंनेदेखा फिर राजाचंडमहासेनने उदयन्का ऐसासत्कारकिया कि जिस्से प्रसन्नहुआ उदयन् अपने देशके संपूर्णउत्तम भोगोंकोभी भूल

गया १०९ अपने पिताके पासगईहुई वासवदत्ता वालावस्थाका स्मरणकरके संपूर्ण सुखोंके होने परभी उदासीनसीहोगई राजाचंडमहासेन जैसेवासवदत्तासे मिलकर प्रसन्नहुआ उसीप्रकार पद्मावतीसेभीमिल कर प्रसन्नहोगया इसप्रकार कुछदिन उज्जयिनी मे रहकर प्रसन्नहुआ राजाउदयन् अपने श्वशुरकीभी सेनालेकर पश्चिमदिशाके जीतनेकोचला उदयन्का खड्गमानो प्रतापरूपी अग्निका धुआंथा क्योंकि उसने लाटदेशकी स्त्रियोंकेनेत्र आंसुओंसे मैलेकरदीनेथे उदयन्के हाथियोंसे कंपायेहुए वनमाला मंदराचलपर्व्वत इसलिये मानों कांपताथा कि ऐसा न होय कि यहराजा कहीं समुद्रमथनकेलिये मुझेउखाड़े मालूमहोताहै कि यहराजाउदयन् सूर्य्यादिग्रहोंसेभी विलक्षण तेजस्वीथा क्योंकि पश्चिमदिशामें उसका औरभी अधिक उदयहुआ इसके उपरान्त अलकापुरीसेयुक्त और कैलाशरूपी हास्यवाली उत्तरदिशाको उदयन्चला वहांजाकर जैसे वानरोंकी सेनालेजाकर समुद्रबांधकर श्रीरामचन्द्रजीने राक्षसोंको माराथा उसीप्रकार सिन्धुदेशके राजाकोअपनेवशीभूत करके अपनी सेनाओंसे उदयन्ने म्लेच्छोंका नाशकिया जैसे चंचलसमुद्रकी लहरें किनारेके वनोंमें आकर नष्टहोजाती हैं उसीप्रकार म्लेच्छोंके घोड़े उदयन् के हाथियोंमे आकर नष्टहोगये जैसे हाथमें चक्रलेकर विष्णुभगवान्ने राहुका शिरकाटडालाथा उसीप्रकार संपूर्ण राजाओंसे करलेनेवाले उदयन्ने पारसदेशके महापापी राजाका शिरकाटडाला ११० हूणदेशके जीतनेवाले उदयन्कीकीर्त्ति दिशाओंको शब्दायमान करतीहुई दूसरी गंगाजीके समान हिमालयको चली उदयन्की सेनाओंके गर्जनेपर भयसे शत्रुओंके शान्तहोजानेके कारण केवलपर्व्वतोंकी गुहाओं सेही झाईशब्द सुनाई देताथा कामरूपदेशका राजाभीछत्रकी छायाको छोड़कर उदयन्के आगे नम्र होकर मिला कामरूपदेशके राजाके दियेहुये हाथियोंको लेकर उदयन् लौटा वहहाथी क्याथे मानो पर्व्वतोंने छोटे २ जंगम पहाड़राजाको भेंटकियेथे इसप्रकार संपूर्ण पृथ्वीको जीतकर राजाउदयन् सेना समेत पद्मावती के पिता मगधराज के यहांगया जैसे रात्रि के समय चन्द्रमा की उजयाली में कामका उत्सव होता है उसीप्रकार रानियों समेत राजाउदयन् के आने के समय मगध देशमें उत्सव होनेलगा पहले छिपकर आईहुई और दूसरीवार प्रकटहोके आईहुई वासवदत्ता से मगधराज बड़ेप्रेमपूर्व्वक मिला इसके उपरांत संपूर्ण नगर निवासियों समेत मगधराजके उत्तमसत्कारको अंगीकारकरके स्नेहसे सबके चित्तोंको अपने साथमे लेताहुआ और सेनाके भारसे पृथ्वीको दबाताहुआ राजा उदयन् लावाणक नाम अपने देशमें आया ११८ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांलावाणकलम्बके पंचमस्तरङ्गः ५ ॥

इसके उपरान्त सेनाके विश्राम करानेकेलिये लावाणकमेंठहरेहुए राजाउदयन्ने एकान्तमें यौगन्धरायणसेकहा कि तुम्हारीसलाहसे मैंनेपृथ्वीकेसंपूर्ण राजाजीतलिये और उपायसेवशीभूतहुए वहराजा लोग अवनहींविगड़ेंगे परन्तुकाशीका यहराजा ब्रह्मदत्तबड़ाकुटिलहै मैंजानताहूं कि शायदयही अकेला फिरकुछ उपद्रवकरेगा क्योंकि कुटिलमनुष्योंपर क्या विश्वासहोसक्ताहै उदयन्केयहवचन सुनकर यौगन्धरायणनेकहा कि हेराजा अवब्रह्मदत्तआपकेसाथ कोईउपद्रवनहींकरेगा क्योंकि जव आपनेउसपर

चढ़ाईकीथी और वहनम्रहोकर आपकेपासभेटलेकरआयाथा तव आपनेउसकावड़ा सत्कारकियाहै कौन बुद्धिमान्भलाई करनेवालेकेसाथ बुराईकरेगा और जोकोईबुराईकरेभी तो उलटकर उसीकेलिये बुराईहोती है इसीविषयपरमैंतुम्हें एककथासुनाताहूं ६ पद्मनामदेशमें अग्निदत्तनाम एकवड़ाप्रसिद्ध ब्राह्मणरहताथा राजानेउसेगांवदिये थे उसीसे उसका निर्वाहहोताथा उसब्राह्मणके दोपुत्रथे वड़ेकानाम सोमदत्तथा और छोटेका नाम वैश्वानरदत्तथा वड़ाभाई वहुत मूर्ख सुन्दर तथा महादुष्टथा और छोटाभाई विद्वान् नम्र तथा सदैवविद्यापढ़ने वालाथा अग्निदत्तके मरजानेपर उन दोनोंने विवाहकरके अपनेपिताका गांव आदिक धनआधा२वांटलिया उनमेंसे छोटेभाईका तो राजानेवड़ा आदरकिया और वड़ाभाई सोमदत्त चंचलता से क्षत्रियोंकेसे कर्म करनेलगाएकसमय शूद्रोंकेसाथ वैठेहुए सोमदत्तकोदेखकर उसके पिताके मित्रकिसी ब्राह्मणने कहा कि हेमूर्ख तू अग्निदत्तका पुत्र होकर शूद्रोंकेसे कर्म करताहै और राजाकेयहांअपने छोटे भाईकी ऐसी प्रतिष्ठा देखकर तुझे लज्जाभी नहीं आती १३ यहसुनकर सोमदत्तने क्रोधसे उसब्राह्मणका कुछ गौरव न मानकर एकलात उसके मारी तव लातमारनेसे क्रोधितहुआ ब्राह्मण अन्य दो तीनब्राह्मणों को गवाहकरके राजासे जाकर पुकारा राजाने ब्राह्मणके वचन सुनकर सोमदत्तके पकड़नेको अपनेसि-पाही भेजे उन सिपाहियोंको सोमदत्तके शस्त्रधारी मित्रोंने मारा तव राजाने वहुतसी सेना भेजकर सो-मदत्तको वँधवा मँगवाया और क्रोधसे सोमदत्तको शूली देनेका हुक्म दे दिया शूलीपर चढ़ाया गया सोमदत्त शूलीपर से पृथिवीपर ऐसेगिरपड़ा कि मानोंकिसीने उसे वहांसेउठाकर पटकदिया और उसेफिर शूलीपर चढ़ानेके लिये उद्यतहुए वधिकलोग आंखोंसे अंधे होगये ठीकहै जिसके लिये कुछ अच्छाहोने वाला होताहै उसका भाग्यही उसकी रक्षाकरताहै उससमय इस वृत्तान्तको सुनकर प्रसन्नहुए राजा ने सोमदत्तके छोटेभाईके कहनेसे उसेशूलीसे छुड़वा दिया इसके उपरान्त मृत्युसेवचाहुआ सोमदत्तराजा के अनादरसे अपने घरके लोगोंको लेकर अन्य देशमें जानेकी इच्छाकरनेलगा यहवात सुनकर उसके भाई वन्धोंने उसे परदेश जानेसे रोका तव सोमदत्त राजाके दियेहुए गांवों का हिस्साछोड़के वहीं रहने लगा २२ इसके उपरान्त किसी अन्य रोजगारके न होनेसे वह खेती करनेके विचारसे खेतीके योग्य पृथ्वी ढूंढ़नेकेलिये किसी अच्छे दिन वनकोगया वनमें जाकर उसे फलहोनेके योग्य वड़ी सुन्दर पृथ्वी मिली और उसपृथ्वीके वीचमें एकवड़ाभारी पीपलकावृक्ष उसको दिखाईपड़ा उसवृक्षकी ऐसी शीतलसघन छायाथी कि उसके नीचे सदैव वर्षाऋतुसी वनीरहतीथी उसवृक्षको देखकर वहुत प्रसन्नहुए सोमदत्तने कहा कि जोकोई देवता इसवृक्षका मालिकहै उसीका मैंभक्तहूं और प्रदक्षिणा करके उसवृक्षको प्रणाम किया इसके उपरान्त मंगलाचारकरके और उसवृक्षके नीचे वलिदानकरके सोमदत्त दो वैलोंको जोड़कर वहीं खेती करनेलगा सोमदत्त उसीवृक्षके नीचेरहा करताथा और उसकीस्त्री वहीं उसको भोजनले आया करतीथी समयपाकर जव उसका सव नाज पकआया तव किसी अन्यदेशके राजाने आकर उसपृथ्वीको उजाड़दिया फिर राजाकी सेनाके चलेजानेपर और नाजके नष्ट होजानेपर रोतीहुई अपनी स्त्रीको धीर सोमदत्तने समझाकर जो कुछ नाज वचाथा सोसव देदिया और पहलेके समान वलिदानकरके उसीवृक्ष

के नीचेरहा ठीकहै ऐसाही कहाहै (निसर्गः सहधीराणां पद्यापद्यधिकं दृढ़ाः) (आपत्तियों में अधिक दृढहोना धीरोंका स्वभावहै) ३१ इसके उपरांत रात्रिके समय उसी वृक्षके नीचे अकेले बैठेहुए और चिन्तासे जागतेहुए सोमदत्तको उसीवृक्षपरसे यह वचन सुनाईपड़े कि हेसोमदत्त तुम्हारेऊपर मैं प्रसन्नहूं तो तुम श्रीकंठदेशमे आदित्यप्रभनाम राजाके राज्यमें जाओ वहांजाकर राजाके द्वारपर संध्या और अग्निहोत्रके मंत्रोंको पढ़कर यहवचन कहना कि मैं फलभूति नाम ब्राह्मणहूं जो कुछ मैं कहताहूं वह सुनो (भद्रकृत्प्राप्नुयाद्भद्रमभद्रंचाप्य भद्रकृत) (नेकी करनेवालोंको नेकी और वदी करनेवालोंको वदी मिलती है) ऐसा कहनेसे वहां तुमको वड़ा ऐश्वर्य्य मिलैगा संध्या तथा अग्निहोत्रके मंत्र तुममुझीसे अभी पढ़लो मैं एक यक्षहूं यहकहकर अपने प्रभावसे सोमदत्तको वह मंत्रपढाकर उसवृक्ष से वह वाणी निवृत्त होगई प्रातःकाल सोमदत्त यक्षके कहनेसे अपना भलभूतिनाम रखकर स्त्रीसमेत वहांसे चला मार्गमें विषम और टेढे वेढेवनोंको दुर्दशाओं के समान उल्लंघनकरके वह श्रीकण्ठ देशमें पहुंचा वहां जाकर संध्या तथा अग्निहोत्रके मन्त्रपढ़कर राजाके द्वारपर अपना फलभूतिनाम कहकर (भद्रकृत्प्राप्नुयाद्भद्रमभद्रं चाप्यभद्रकृत) यहवचन कहनेलगा यहवचन सुनकर लोगोंको वड़ा आश्चर्य्य हुआ और वारंवार यही वचन कहतेहुए फलभूतिको जानकर राजा आदित्यप्रभने वड़ेआश्चर्य्य से वुलाया वहाँजाकर भी वह वारंवार राजाके साम्हनेवही वचन कहनेलगा यहसुनकर राजा अपनी समाज समेत हँसनेलगा और राजाने प्रसन्नहोके उसेवस्त्र आभूषणों समेत कुछगांवदिये ठीकहै (नतोषोमहतांनृपा) (वड़ेलोगों की प्रसन्नता व्यर्थनहीं होती है) इसप्रकारसे उससमय यक्षके अनुग्रहसे दुर्वल फलभूतिको राजाका दिया हुआ वहुतसा धनमिला ४५ सदैव वहीवचन कहताहुआ फलभूति राजाका वड़ा प्रियहोगया क्योंकि राजालोगोंका चित्तऐसी २ आनन्दकी वातोंका अत्यन्त रसिकहोता है क्रमसे राजाके यहां महलों में और संपूर्ण राज्यभरमे उसफलभूतिका वड़ाआदर इसलिये होनेलगा कि यह राजाका परमप्रियहै एक समय वनसे शिकार खेलकर आयाहुआ राजा आदित्यप्रभ अपने महलमेंगया और द्वारपालकों को घवरानेसे सन्देहयुक्त राजाने भीतर जाकर देखा कि रानीकुवलयावती नग्नवाल खोलेहुए नेत्रोंकोवन्द कियेहुए सिंदूरका वड़ातिलक लगायेहुए जपकरतीहुई विचित्ररंगोंसे वनीहुई चौकमें वैठीहुई और रुधिर मद्यतथा मांससे उग्रवलिदान करतीहुई किसी देवताका पूजनकररहीथी राजाके आनेपर घवराके रानीने वस्त्रपहनलिये और राजाके पूछनेपर अभयमांगकर रानीवोली कि आपही के उदयके वास्ते मैं यह पूजनकर रहीथी इसविषयमें शास्त्रका वृत्तान्त और अपनी सिद्धि आपको सुनातीहूं ५३ पहले मैं अपने पिताके यहां जवकन्याथी तववसन्तके उत्सवमें मेरीसखियोंने वगीचेमें मुझसे कहा कि इसवगीचे में वृक्षोंके मंडलके वीचमें देवताओंके भी देवता वरदायक गणेशजी रहतेहैं उनका प्रभावहम लोगोंने देखाहै उनवरदायक गणेशजी का जोतुम भक्तिपूर्व्वक पूजनकरो तोतुम्हें शीघ्रही निर्विघ्नतासे योग्य पतिमिलजाय यहसुनकर मैंनेभोलेपन से अपनी सखियोंसे पूछा क्यागणेशजीके पूजनसे कन्याओं को पतिमिलतेहैं तव वहवोलीं कि तुम इतनीही वातक्या कहतीहो इससंसार में गणेशजी के पूजनके

विना मनुष्यको कोईभी सिद्धिनहीं मिलसक्ती है सुनोहमतुम्हारे आगे गणेशजीका प्रभाव वर्णनकरती हैं यहकहकर वह सखियां यहकथा कहनेलगीं ५६ पूर्वकाल में जिससमय तारकासुरसे हारेहुए इन्द्रश्री शिवजीके पुत्रको अपना सेनापति वनायाचाहते थे और श्रीशिवजीकी दृष्टिसे कामदेव भस्महोगया था उससमय वड़ातपकरनेवाले ऊर्ध्वरेता महादेवजीको पार्वतीजीने वड़ाघोर तपकरके प्रसन्न किया था और प्रसन्नकरके उन्हींके साथ अपना विवाहकियाथा विवाहके उपरान्त पार्वतीजीने श्री महादेवजीसे यहचाहा किमेरे एकपुत्रहोय और कामदेव फिरजीआवे परन्तु पार्वतीजीने अपने कार्य्य के सिद्धहोने केलिये विघ्नराज गणेशजीका स्मरणनहीं कियाथा इसके उपरान्त इसमनोरथके मांगनेवाली पार्वती जीसे श्रीशिवजीने कहा कि हे प्रिये पहले ब्रह्माके मनसे कामदेव उत्पन्नहुआथा और उसने उत्पन्नहोते ही अहंकारसे यहवातकही कि (कंदर्पयामि) (किसको दलनकरूं) तव ब्रह्माने उसकानाम कंदर्प रखदिया और कहा कि हेपुत्र जोतुम वड़े अभिमानी हो तो केवलतुम श्रीशिवजी के चित्तके विगाड़ने का कभी उद्योगनकरना नहीं तो तुम्हारी मृत्युहोजायगी ब्रह्माजी के इसकहनेपरभी वह मूर्ख मेरे चित्त विगाड़ने को आया तवमैंने उसे भस्मकरदिया इसकारणसे अववह सदेह उत्पन्न नहीं होसक्ता और मैं तुम्हारे अपनी शक्तिसे पुत्रउत्पन्न करूंगा क्योंकि संसारीजीवोंके समान मेरे कामके उत्साहसे पुत्रनहीं होता ६७ पार्वतीसे महादेवजी के इसवचनको कहतेही इन्द्रसमेत ब्रह्मावहां आकर प्रकटहुए और स्तुति करके ब्रह्माने तारकासुरके मारनेकी प्रार्थनाकी तवशिवजीने पार्वतीजीमें अपना औरसपुत्र उत्पन्न करना स्वीकारकिया और ब्रह्माके कहनेसे सृष्टिके नाशहोनेकी रक्षाके लिये लोगोंके चित्तमें कामदेव का उत्पन्न होना स्वीकारकिया और अपने भी चित्तमें महादेवजीने कामको अवकाशदिया इसवातसे प्रसन्नहोकर ब्रह्माजी चलेगये और पार्वतीजी भी प्रसन्नहोगई इसके पीछे बहुतकाल व्यतीत होजाने पर एकसमय एकान्त में श्रीशिवजी पार्वतीजी से रतिकरनेलगे जव सैकड़ोंवर्ष के व्यतीत होजानेपर भी उनकी रतिनहीं समाप्तहुई तव भयसे तीनोंलोक कांपनेलगे उससमय संसारके नाशहोजाने के भयसे संपूर्ण देवतालोग ब्रह्माकी आज्ञासे श्रीशिवजी की रतिमें विघ्न करनेकेलिये अग्निका स्मरण करने लगे स्मरण करतेही अग्नि श्रीशिवजी को अधृष्य (दवानेके अयोग्य) समझकर देवतालोगों से भागकर जलमें छिपगये तव ढूंढ़तेहुए देवतालोगों को मेढकों ने जल में छिपेहुए अग्नि देवताको वतादिया क्योंकि वह उनके तेजसे जलेजाते थे तव मेढकों को यहशापदेकर कि तुम लोगों के वचन प्रकटनहीं होंगे अग्नि देवता मन्दराचल पर्व्वतपर चलेगये वहां किसी वृक्षके खोखले में घोंघे का स्वरूपरखकर वैठेहुए अग्निदेवको हाथी और तोतों ने देवतालोगों को वतादिया तव अग्नि ने देवता लोगोंको दर्शनदिये और शापसे हाथी तथा तोतोंकी जिह्वा विपरीतकरदी फिर देवतालोगों के स्तुति करनेपर उनकेकार्य्यको स्वीकारकरके अग्निदेवने कैलाशपर जाके अपनी गरमीसे श्रीशिवजीको रति से वन्दकरदिया और शापके भयसे प्रणामकरके देवतालोगों का कार्य्य श्री शिवजी से कहदिया तव महादेवजीने अपना वीर्य्य अग्निमें छोड़दिया उसवीर्य्यको न अग्नि धारणकरसके न पार्वतीजी धारण

करसकीं तब पार्वतीजीने खेदसे व्याकुलहोकर महादेवजीसे कहा कि आपसे मुझको पुत्रकी प्राप्तिनहीं हुई यहसुनकर श्रीशिवजी बोले कि तुमने विघ्नराज गणेशजीका पूजननहीं कियाथा इसीसे तुम्हारेगर्भ में विघ्नहोगया अब तुमगणेशजीका पूजनकरो तो अग्निमें पड़ेहुए वीर्य्यसे पुत्रहोजाय महादेवजी के यहकहनेसे पार्वतीजीने गणेशजीका पूजनकिया तब महादेवजी के वीर्य्य से अग्निकेभी गर्भरहा ८४ शिवजीके तेजको धारणकरतेहुए अग्निदेवकी दिनमेंभी ऐसीशोभाहोतीथी कि मानों इससमयमेंभी सूर्य्यने अग्निमे प्रवेशकियाहै अग्निने शिवजी के महाद्भुतसह तेजको गंगाजी में वमनकरदिया और गंगाने शिवजीकी आज्ञासे सुमेरुपर्व्वतपर अग्निकुण्डमे उसेछोड़दिया वहांमहादेवजीके गणोंसे रक्षा कियाहुआ वहगर्भ हजारवर्ष के उपरान्त छः मुखका कुमारहोकर उसकुण्डमे से निकला इसके उपरान्त पार्वतीजीकी भेजीहुई छःकृत्तिकाओंके स्तनोंके दुग्धको अपनेछओं मुखसे पानकरके थोड़ेही दिनोंमें वहबालक बड़ाहोगया इसी बीचमे ताड़कासुरसे हारेहुए इन्द्र युद्धछोड़कर दुर्गम सुमेरुपर्व्वतके शिखरों पर आकर रहनेलगे और ऋषियोसमेत सम्पूर्ण देवतालोग इन्हीं स्वामिकार्त्तिकजीकी शरणमें आये जब स्वामिकार्त्तिकने उनकीरक्षाकी तबसब उन्हीके पास उन्हेंघेरकर रहनेलगे यहबात जानकर इन्द्रनेसमझा कि अब तो यहहमारा राज्यही छीनलेगे यहसमझकर क्रोधसे इन्द्र स्वामिकार्त्तिक के पासजाकर उनसे लड़नेलगे इन्द्रकेवज्रके लगनेसे स्वामिकार्त्तिकके शरीरसे शाख और विशाखनाम महातेजस्वी दोपुत्र उत्पन्नहुए तब पुत्रोंसमेत स्वामिकार्त्तिकने इन्द्रकोजीतलिया यहबातजानकर श्रीशिवजी ने वहांआके स्वामिकार्त्तिकको युद्धसे निवृत्तकरके यहशिक्षाकी कि तुमताड़कासुरके मारनेको और इन्द्रके राज्यकी रक्षाकरनेको उत्पन्नहुएहो इससेअपने कार्य्यकोकरो ९४ इसकेउपरान्त प्रसन्नहुए इन्द्रने उससमय स्वामिकार्त्तिकको अपनी सेनाकासेनापति बनानेकेलिये अभिषेककरनेका प्रारम्भकिया जिससमय इन्द्रने अपने हाथसे अभिषेककरनेके निमित्त जलकाकलश उठाया उससमय उनकीभुजा स्तब्ध (जकड़गई) होगई इससेइन्द्रको बड़ा क्लेशहुआ तब श्रीशिवजी ने इन्द्रसे कहा कि तुमने सेनापति बनाने के समय गणेशजीका पूजननहीं किया इसीसे यहविघ्नहुआहै अब तुम गणेशजीका पूजनकरो यहसुनकर इन्द्र ने गणेशजीका पूजनकिया और पूजनकरतेही इन्द्रकी भुजा अच्छीहोगई और उन्होंने अच्छेप्रकारसे अपने सेनापति का अभिषेक किया इसके उपरान्त शीघ्रही ताड़कासुरको युद्ध करके मारडाला तब सम्पूर्ण देवता बड़े प्रसन्नहुए और श्रीपार्व्वतीजी को भी ऐसा वीर पुत्र प्राप्तहोने से बड़ी प्रसन्नताहुई इसप्रकारसे हे राजकन्या देवतालोगों को भी गणेशजी के पूजन विना कोई सिद्धिनहीं होती इससे तुम योग्य पति के मिलने के अर्थ गणेशजी का पूजन करो १०० सखियों के यहवचन सुनकर मैंने बगीचे के एकान्त स्थान में रहनेवाले विघ्नहर्त्ता श्रीगणेशजी का पूजन किया पूजन के उपरान्त मैंने देखा कि अकस्मात् मेरी सखियां अपनी सिद्धि से उड़कर आकाश में विहारकर रही हैं यह देखकर मैंने उनको आकाशसेबुलाकर पूंछा कि तुमको यह सिद्धिकैसेहुई तब वह बोली कि मनुष्यके मांसको खानेसे डाकिनी के मंत्रको जपकर यह सिद्धियांहोती है इसमंत्रकी उपदेशकरनेवाली एक कालरात्रि

नाम ब्राह्मणी हमारी गुरुहै सखियों के यह वचनसुनकर आकाश में चलनेकी सिद्धिके लोभसे और मनुष्यकेमांसके खानेकेभयसे मैं क्षणभर वहुत सन्देहयुक्तरही फिर सिद्धिके लोभसे मैंने अपनी सखियों सेकहा कि उस मंत्रका उपदेश मुझेभी दिलवादो मेरे यह कहने से सखियां उसीसमय बड़े भयङ्कररूप वाली कालरात्रिको वहीबुलालाई मिलीहुई भृकुटीवाली दीड़युक्तनेत्रवाली टेढ़ी और चपटी नाकवाली स्थूलकपोलवाली भयंकरओष्ठवाली बड़े २ दांतवाली बड़ीलम्बी गर्दनवाली लम्बेस्तनवाली बड़ेउदर वाली और फटेहुए तथा फूलेहुए पैरवाली उस कालरात्रिको देखकर यह मालूमहोताथा कि मानों ब्रह्माने बुरीचेष्टावनानेकी सम्पूर्णचतुरता इसी में खतमकरदीनी है १०६ उसे आईदेखकर मैं उसके पैरों में गिरी तव उसने स्नानकरवाके मुझसे प्रथमतो गणेशजीका पूजनकरवाया और वस्त्र उतरवाके मंडलके भीतर मुझेलेजाकर भैरवजीका पूजनकरवाया इसके उपरान्त मेरा अभिषेककरके उसने अपने मंत्रोंका उपदेश मुझेकरदिया और पूजनमें वलिदानकियाहुआ मनुष्यकामांस मुझेखानेको दिया मंत्रोंकोलेकर और मनुष्यके मांसकोखाकर उसीसमय मैं नग्नही अपनी सखियों समेत आकाशमें उड़गई फिर वहां थोड़ी देरतक विहारकरके अपनी गुरानीकीआज्ञासे उतरकर मैं अपने महलमें चलीगई हे राजा इसप्रकार से मैं वालावस्थामें भी डाकिनियों के साथरहाकरतीथी उससमय हमने मिल २ कर बहुतसे मनुष्य खायेथे हे महाराज इसीकथाके वीचमें मैं आपको एक दूसरी कथासुनातीहूं कि उस कालरात्रिनाम ब्राह्मणीका विष्णु स्वामीनाम पतिथा वह उसदेशभरमें वेदविद्याका बड़ाजाननेवालाथा इससे अनेक देशों से आये हुए विद्यार्थियोंको पढ़ायाकरताथा सम्पूर्णशिष्यों में से एक सुन्दरकनाम तरुणशिष्य बड़ारूपवान् तथा शीलवान्था एकसमय विष्णुस्वामी के कहींचलेजानेपर कालरात्रिने कामसे व्याकुलहोकर एकान्तमें सुन्दरकसे अपनेसाथ भोगकरनेकोकहा कामदेव मानों बुरेरूपवालोंको हँसीका खिलौनावनाकर उनके साथखेलताथा क्योंकि कालरात्रिने अपने स्वरूपको विना देखे सुन्दरककेसाथ भोगकरनेकी इच्छाकी ११९ सुन्दरकने कालरात्रिके बहुत हठकरनेपर भी ऐसे बुरेकामकरनेकी इच्छानहींकी ठीकहै स्त्रियांचाहें जैसी बुरीचेष्टाकरें परन्तु सज्जनपुरुषोंका चित्तकभी नहींडुलता इसके उपरान्त सुन्दरकके चलेजानेपर कालरात्रिने क्रोधितहोकर दांतों से और नखों से अपना सम्पूर्ण अंगघायलकरडाला और वालों को तथा वस्त्रोंको फैलायेहुएरोतीहुई तवतक वैठीरही जवतक कि विष्णुस्वामी घरकोआये जव वह घरमेंआये तो उनसे वोली कि हे स्वामी आज सुन्दरकने जवरदस्ती से मेरी क्या दशाकी है यह सुनकर उससमय उपाध्यायको बड़ाक्रोधहुआ ठीकहै (अत्ययस्त्रीपुमष्णाति विमर्पविदुषामपि) (स्त्रियोंपर विश्वासकरनेसे विद्वान्लोगोंका भी विचारनष्टहोजाताहै) सायंकालकेसमय जव सुन्दरकआया तव विष्णुस्वामीने अपने शिष्योंसमेत दौड़करघूंसोंसे लातोंसे और लाठियोंसे उसे खूवपीटा जव मारते २ वह वेहोशहोगया तव रात्रिकेसमय उसकोवेपरवाईसे अपनेशिष्यों के हाथों से पकड़वाके वाहरसड़कपर डलवादिया इसके उपरान्त उससमयकी वायुकेलगनेसे सुन्दरक धीरे२ होशमेंआगया और अपनी यहदशादेखकर विचारनेलगा कि अरे जैसे वहुततेजवायु वालूयुक्त तड़ागोंको गंदलाकरदेती है उसीप्रकारस्त्रियोंकीप्रेरणा अधि-

क रजोगुणवाले पुरुषोंके चित्तको विगाड़देती है क्योंकि बृद्ध तथा विद्वान्भी उपाध्यायने बिनाविचारेअ्-त्यंत क्रोधपूर्व्वक इतनाविरोध मुझसेकिया १२६ अथवा सृष्टिकीआदिसेही विद्वान् ब्राह्मणोंके भी काम और क्रोधमोक्षके द्वारके स्वाभाविकरोकनेवालेवेलनहे देखोपहले भी देवदारु वनमें अपनी स्त्रियों के वि-गड़ने के सन्देहसे मुनिलोग क्या शिवजीपर क्रुद्धनहीहुएहैं और उन ऋषिलोगोंने क्षपणक (यती) का रूपधरके पार्वतीजीकोऋषियोंकाभी शान्त न होनादिखातेहुए महादेवजीको नहींजानाफिर शापदेनेपर तीनोंलोकोके नाशकरनेवाले महादेवजी को पहचानकर उन्हींकी शरणमें गये तो इसप्रकारसे कामक्रो-धादि छः शत्रुओंके द्वारा मुनिलोगभी मोहितहोजाते हैं तो वेदपाठी ब्राह्मणोंका क्या कहनाहै रात्रिके समय इसप्रकार ध्यानकरताहुआ वहसुन्दरक चोरोंकेभयसेशून्य गोवाटनाम महलमें चढकरवैठरहा जव तक कि वहउसमहलमे छिपकरकहीं वैठनेहीकोथा तवतक उसीमहलमें वहकालरात्रि चक्रकोहाथमेंलिये हुए भयंकर फूत्कारोंको छोड़तीहुई नेत्रतथा मुखसे अग्निकी लपटें निकालतीहुई और बहुतसी डाक-नियोंको अपने साथमे लियेहुए आई उसप्रकारसे आईहुई कालरात्रिको देखकर सुन्दरकने भयसे राक्ष-सोंके नाशकरनेवाले मंत्रोंका स्मरणकिया उनमंत्रोंसे मोहितहुई कालरात्रिने एकान्तमें भयसे अंगों कोसकोड़ेहुए वैठेहुए सुन्दरकको नहींदेखा इसके उपरान्त कालरात्रि उड़नेके मंत्रकोजपकर महलस-मेत आकाशमें उड़गई सुन्दरकने वहमंत्रसुनकर यादकरलिया और कालरात्रि उसमहल समेत शीघ्रही उज्जयिनीको चलीगई १४१ उज्जयिनी में जाकर शाकवाट (शाककी मंडी) में उसमहलको मंत्रके द्वाराउतारकर कालरात्रि डाकिनियों समेत श्मशान भूमिमें क्रीड़ा करनेचली लगी और उससमय क्षुधा से व्याकुल सुन्दरकने महलसे शाकवाटमें जाकर उखाड़ी हुई मूलीखाई और मूलियोंके द्वारा अपनी क्षुधाको निवृत्तकरके वह गोवाटमें जाके उसीप्रकारसे वैठरहा इसके उपरान्त कालरात्रि उसश्मशानसे लौटी और उसीगोवाटपर चढके मंत्रोंकेद्वारा आकाशमार्ग मे उड़ी और अपने यहाँ आकर गोवाटको जहाँसे लियाथा वहीं रखकर और उनडाकिनियोंको विदाकरके शयनके स्थानमें चलीगई सुन्दरकभी आश्चर्य्य पूर्व्वक उसरात्रिको व्यतीत करके प्रातःकाल गोवाटसे उठकर अपने मित्रोंके पासचलागया वहाँ अपने मित्रोंसे संपूर्ण वृत्तान्तकहकर विदेशजानेकी इच्छा करनेलगा तवमित्रों ने समझाकर उसे अपनेही पासरक्खा उपाध्यायके घरको छोड़कर यज्ञगृहमें भोजन करताहुआ सुन्दरक अपने मित्रोंके साथ विहारकरताहुआ स्वच्छन्द रहनेलगा १४९ एकसमय घरकेलिये किसी चीजके खरीदनेके लिये बजारमेंगईहुई कालरात्रिने सुन्दरकको देखा उससमयभी वहकामसे पीड़ितहोकर उससेवोलीकि हे सु-न्दरक तू अवभी मेरेसाथ भोगकर क्योंकि मेरेप्राण तेरेही आधीनहैं उसके यहबचन सुनकर उससाधु सुन्दरकनेकहा कि तुमऐसा मतकहो मेरायह धर्मनहींहै क्योंकि तुमगुरुपत्नी होनेसे मेरीमाताके समान हो तवकालरात्रि बोली कि जो तुमधर्मको जानतेहो तोमेरेप्राण रक्खो क्योंकि प्राणदानसे बढ़कर कोई धर्मनहीं है यहसुनकर सुन्दरकने कहा हेमाता ऐसाविचार अपने हृदयमें कभीमतकरो भलागुरुकी स्त्री केसाथ भोगकरना भी कहीं धर्म होसक्ताहै इसप्रकार सुन्दरकसे निषेधकीहुई क्रोधसे सुन्दरकको डराती

हुई कालरात्रि अपनेही हाथसे अपने वस्त्रफाड़कर घरमें आई और घरमें अपने पतिको अपनावस्त्र दि-खाकरबोली कि देखोआज सुन्दरकने दौड़कर मेरावस्त्र फाड़डाला यहसुनकर उसकेपतिने यज्ञशालामें जाकर यहकहकर कि यहसुन्दरक भोजनकेदेने योग्यनहीहै वल्किमारनेके योग्यहै उसका भोजन वन्द करवादिया इसके उपरान्त सुन्दरक बड़े खेदसे परदेश जानेकेलिये फिर उद्यत हुआ और गोवाटनाम महलमे सीखाहुआ आकाशमें उड़नेका मंत्रतो उसेयादहीथा परन्तु उतरनेकामंत्र कुछभूलगयाथा उसी को सीखनेकेलिये वहउसी शून्यगोवाटमें फिरजाकर पहलेहीके समानवैठा तवकालरात्रि वहाँआकरम-हलसमेत उड़कर उज्जयिनीको चलीगई उज्जयिनीमें गोवाटको मंत्रकेद्वारा शाकवाटमें उतारकर क्रीड़ा करनेकेलिये श्मशानकोचलीगई १६१ सुन्दरकने उसमंत्रको दूसरीवारभी सुनकर नहींयादकिया क्योंकि गुरुकी आज्ञाकेविना संपूर्ण सिद्धिनही होसक्ती इसकेउपरांत सुन्दरकने कुछमूलीखाई और कुछ मूलीघर लानेकेलिये गोवाटमें उठाकररक्खली और वहीछिपकर बैठरहा तवकालरात्रि वहाँआकर गोवाटसमेतउड़ी और गोवाटको उसके ठीकस्थानमें रखकर अपने घरकोचलीगई प्रातःकाल सुन्दरकभी गोवाटसे निकल कर उनमूलियोको बाजारमें इसलिये वेचनेकोचला कि इनको वेचकर जोकुछ धनमिलेउससे भोजनको लाऊं उसेमूली वेचतेहुए देखकर मालवदेशके राजसेवकोंने विना मूल्यदियेही अपने देशकी उत्पन्नहुई मूलियां उससे छीनलीनी जबवह उनसे लड़नेलगा तो वहउसे वाँधकर राजाके यहाँ लेगये और उसके मित्रभी उसके पीछे २ उसकेसाथचलेगये वहाँजाकर उनमालवदेशवालोनेराजासे कहा कि हे राजा हम लोगइससेपूछतेहैं कि तूमालवदेशसे मूलीलाकर कान्यकुब्जदेशमें सदैव कैसेवेचाकरताहै इसकाउत्तरतो यहकुछनहीं देताहै परन्तुढेलेमारताहै यहअद्भुत बातसुनकर राजानेउससे पूछाकि यहकैसीबातहै तब उस के मित्रवोले कि हेराजा जो हमलोगोंसमेत इसेमहलपरचढ़ाइये तो यहसबबातकहैगा नहींतो नहींकहैगा १७० राजाने उसीसमय उसको मित्रोसमेत महलपरचढा दिया तबसुन्दरक महलसमेत राजाके देखतेही देखते आकाशमें उड़गया सुन्दरक अपनेमित्रोंसमेत धीरे २ प्रयागपहुँचा और वहांथककर उसनेकिसी राजाको गंगास्नानकरतेहुये देखा वहांमकानको आकाशमेंही रोककर वहगंगाजीमें कूदपड़ालोगोको उसके देखनेसे बड़ाआश्चर्य्य हुआ और वहउसी स्नानकरनेवाले राजाकेपासचलागया राजानेप्रणाम करके उससेपूछा कि तुमकौनहो और किसलिये आकाशसेउतरेहो तबउसनेकहा किमैं मुरजकनामम-हादेवजीका गणहूं मनुष्योंकेसे भोगकरनेको मैं महादेवजीकी आज्ञासे तुम्हारेपास आयाहूं यहसुनकर उसकेवचन सत्यजानकर राजाने संपूर्णअन्नोंसे युक्त रत्नोंसेपूर्ण एकपुरस्त्री तथाराज्यके सबअंगोसमेत उसेदेदिया वहउसपुरमें जाकर पुरसमेत आकाशमें उड़गया और अपनेसाथियोंसमेत अपनीइच्छासे विहारकरनेलगा सुवर्णके पलँगपरसोताहुआ चामरोसे मोरछलकियाहुआ और श्रेष्ठस्त्रियोंसे भोगकिया हुआ सुन्दरक आकाशहीमें इन्द्रकेसेसुख भोगनेलगा १७८ एकसमय कोईसिद्ध आकाशमार्गसेचला जाताथा उसकी इससुन्दरकने बड़ी स्तुतिकी तब उसनेप्रसन्नहोकर इसको आकाशसे उतरनेकामंत्रबता दिया आकाशसे उतरने का मन्त्रपाकर वह पुरसमेत अपने कान्यकुब्ज देशमें आकाशसे उतरा बड़े

धनाढ्य पुरसमेत आकाश से उतरेहुये उसे जानकर राजा बड़े आश्चर्य्य से आपही उसकेपास आया राजाने उसे पहचानकर जब उससे पूछा तो उसने अपना और कालरात्रिका सबवृत्तान्त ठीक २ राजा से कह दिया यहसुनकर राजाने कालरात्रिको बुलाकरपूछा तो उसने निर्भयहोकर अपना सम्पूर्ण दोष स्वीकार करलिया यह सुनकर जब राजा कुपित होकर उसके कानकाटने को उद्यत हुआ तो पकड़ने पर भी सबके देखते२ अन्तर्ध्यानहोगई राजाने तबसे कालरात्रिका अपने देशमें रहना निषेध करदिया और राजा के पूजन को ग्रहण करके सुन्दरकभी आकाश को चलागया १८५ रानी कुवलयावली इसप्रकार राजा आदित्य प्रभसे कहकर फिर कहनेलगी कि हे स्वामी डाकिनियों के मंत्रकी सिद्धियां इसी प्रकारकी होती हैं और यह वृत्तान्त मेरे पिताके देशभरमें प्रसिद्धहै मैंने यहतो आपसे कहा कि मैं कालरात्रिकी शिष्यहूं परन्तु पतिव्रता होने के कारण मेरीसिद्धि कालरात्रिसे भी बढ़ीहुई है आज आपने मुझे देखलिया मैं आपही के लिये यह पूजनकररहीथी और बलिदान देनेके निमित्त मंत्रसे किसी पुरुषको खैंचनेको उद्यतथी हे राजा अब आप भी इस हमारे मार्ग्ग मे आजाइये तो अपनी सिद्धि से सम्पूर्ण राजालोगोको जीतकर उनके शिरोमणि होजाइये यह सुनकर राजाने कहा कि कहां तो डाकिनियों के मार्ग मे मनुष्यके मांस का भोजनकरना और कहां राज्य करना इसमे बड़ा अन्तरहै और यह बात कहके राजा ने अपने संयुक्त होनेको निषेध करदिया परन्तु जबरानी प्राण देनेको तय्यारहुई तब राजा ने उसका कहना अंगीकार करलिया ठीकहै (विषयाकृष्यमानाहि तिष्ठन्तिस्वपथेकथम्) (विषयोंके वशीभूत मनुष्य अच्छेमार्गमे कैसे रहसक्ते हैं) १९२ इसकेउपरान्त रानी ने पहलेसे पूजन कियेहुए उसमण्डलमे राजाकोबुलालिया और उस्से संपूर्णबातोंका नियमकरनेका कौलकरारकहा कि यह जो फलभूति नाम ब्राह्मण आपके पासरहताहै उसीको आज मैंने भेटदेने के लिये खैंचनेका विचार कियाथा परन्तु मंत्रकेद्वारा खैंचने मे बड़ापरिश्रमहै इस्से किसी रसोइयेको भी इसमार्ग मे लेनाचाहिये जिस्से कि वह रसोइया उसेआपहीमारे और पकावे. हे राजा उसबलिदानके मांसकेखाने मे घृणा (नफरत) न करनाचाहिये क्योंकि पूजनके समाप्तहोजानेपर सिद्धिपूर्णहोजाती है इस्से वह मांसबड़ाउत्तमहै प्रियाके यहवचनसुनकर पापसेडरेहुए भी राजाने ब्राह्मणका बलिदानदेना स्वीकार करलिया (बड़ेकष्ट देनेवाली स्त्रियोंकी आज्ञाके पालनकरनेको धिक्कारहै) इसकेउपरान्त साहसिकनाम रसोइयेको बुलाकर और उसेभी विश्वासपूर्व्वक अपना शिष्यकरके राजा और रानी दोनोउस्सेबोले कि राजा और रानी आज साथही भोजनकरेंगे इस्से शीघ्रही भोजनबनाओ, यहबात तुमसे जो कोई आकरकहे उसेमारकर उसीकेमांससे प्रातःकाल एकान्तमे तुम स्वादिष्ट भोजन हमारेवास्तेबनाना राजाकी इसआज्ञाको स्वीकारकरके वह रसोइया अपने घरकोचलागया २०० प्रातःकाल राजाने फलभूतिसेकहा कि तुमसाहसिक नाम रसोइयेसे जाकरकहो कि रानीसमेत राजा आज स्वादिष्ट भोजनकरेंगे इस्से तुम शीघ्रही उत्तम भोजनबनाओ राजाकी आज्ञाकोलेकर बाहरगयेहुए फलभूतिसे चन्द्रप्रभनाम राजाके पुत्रने कहा कि यह सोनालेकर आज शीघ्रही तुमहमारेलिये वैसे कुण्डलबनवाओ जैसे कि पहले तुमने हमारे पिताके

लिये बनवायेथे जबराज़पुत्रने फलभूतिसे बहुतहठपूर्वक शीघ्रजानेकोकहा तो वह राजाका संदेसा उस राजपुत्रसे कहकर कुंडलवनवानेको चलागया और राजपुत्रभी फलभूतिकी बताईहुई राजाकी आज्ञाको कहनेकेलिये अकेलाही रसोईदारकेपासगया वहांजाकर जबराज़पुत्रनेरसोइये से राजाकीआज्ञाकही तब उस साहसिकने शीघ्रही राजपुत्रको छुरी से मारडाला और उसी के मांससेबनायेहुए भोजनको पूजनके उपरान्त राजा रानी ने विनाउसतत्त्वकेजाने खाया २०८ राजाने पश्चात्तापसहित वह रात्रिव्यतीतकरके प्रातःकाल कुंडलोंको हाथमेंलिये आयेहुए फलभूतिको देखा उसे देखकरराजाको बड़ा सन्देहहुआ और कुण्डलोंके बहानेसे राजाने उससमय उस्से पूछा कि तुम यह कैसे कुंडललेकर यहां आयेहो तब फलभूति ने कुण्डलोंका सबवृत्तान्त कहदिया उसवृत्तान्तको सुनतेही राजापृथ्वी में गिरकर हापुत्र२कहकरचिल्लानेलगा और अपनी तथा रानीकी निन्दाकरनेलगा जब मंत्रियोंनेपूछा कि यह क्या वृत्तांतहै तबराज़ाने सबवृत्तान्त सत्य २ कहदिया और बोला कि फलभूतितो नित्य कहताहीथा कि (भद्रकृत्प्राप्नुयाद्भद्रमभद्रं चाप्यभद्रकृत्) (नेकीकरनेवालेको नेकी और बदीकरनेवालेको बदी) जैसे दीवारपर फेंकीहुई गेंद फेंकनेवालेहीकीओर लौटकर आजाती है उसीप्रकार दूसरेकेलिये विचाराहुआ दोषअपनेही ऊपरआताहै देखो हमदोनों पापियोंने ब्रह्महत्या करनेका विचारकियाथा इस्से अपनेहीपुत्रको मरवाकर उसीका मांसखाना पड़ा यहकहकर और नीचेको मुखकियेहुए अपने मंत्रियोंको समझाकर राजाने अपने सबराज्य में उसीफलभूतिका राज्याभिषेक करदिया २१५ पुत्र रहितराजा इसप्रकार अपने पापसे छूटनेकेलिये संपूर्ण राज्यका दानकरके और पश्चात्ताप से बहुत संतप्तहोके रानी समेत अग्नि में जलगया फलभूति उस राज्यको पाकर सबपृथ्वीका पालनकरनेलगा इसीप्रकार भलाई या बुराई जो दूसरेपर कियाचाहौ वह अपनेही ऊपरआजाती है इसप्रकारइसकथाको कहकर यौगन्धरायणराजासे फिरकहनेलगा कि हेराजा आपने ब्रह्मदत्तको जीतकरके भी उसकेसाथ भलाईकी है अबवह जोकोईभी उपद्रवकरे तो आपउसको मारडालिये यौगन्धरायणके यह वचन सुनकर राजाउदयन्ने उसकी प्रशंसाकी और वहांसे उठकरअपना दिवसका नित्यकृत्यकिया दूसरेदिन संपूर्णदिग्विजयसे निवृत्तहुआ राजालावाणकसे अपनी कौशाम्बी पुरीकोचला और धीरे २ सेना समेत अपनी कौशाम्बीनगरीमें आया उससमय वहनगरी पताकारूपी भुजाओंको उठाकर मानोंबड़ेहर्षसे नाचरहीथी पुरवासियोंकी स्त्रियोंके नेत्ररूपीवनमें अधिकवायुकेवेग रोहोनेवाली शृंगाररसकी चेष्टाको उत्पन्नकरताहुआ नगरी के भीतरचला कवियोंके गानको बंदियोंकी स्तुतिको सुनताहुआ और राजालोगोंसे प्रणामकियाहुआ राजाउदयन् अपने राजमंदिरमें आया२१४ इसकेउपरांत हारेहुए संपूर्ण देशोंके राजालोगोंपर अपने शासनको जमाकर राजाउदयन् निधिमें मिले हुये अपनेपुरुखोंके प्राचीन रत्नसिंहासनपरवैठा उससमय मंगलके निमित्त बजायेगये नगाड़ों के शब्द तथाझाई शब्दों से आकाशभरगया वह नगाड़ोंका शब्दनहीथा मानो राजाके मंत्रियोंपर प्रसन्नहुए लोकपाल संपूर्ण दिशाओंमें धन्यवाद कररहेथे फिरलोभरहित राजाने पृथ्वीके जीतनेसे लायेहुए धनको दानकरके ब्राह्मणोंको दिया और बड़ाउत्सव करके संपूर्णहारेहुए राजालोगोंको तथा अपने मंत्रियोंको

वहुतसा धनदेकर निहालकिया फिरराजाने क्षेत्रोंमेंभी बहुतसा धनदिया उससमय मृदंगोंके शब्दों से भरीहुई पुरीमें प्रजालोग आगेहोनेवाले,अन्यउत्तम फलोंके विचारसे अपने २ घरोमें उत्सवकरनेलगे इस प्रकार संपूर्ण पृथ्वीको जीतकर निहालहुआ राजाउदयन रुमण्वान् और यौगन्धरायण दोनोंमंत्रियोंपर संपूर्ण राज्यका भाररखकर वासवदत्ता और पद्मावती के साथ आनन्द पूर्व्वक विराजमानहुआ कीर्त्ति और लक्ष्मीके समान उनदोनों रानियोंके वीचमें वैठाहुआ राजाउदयन् सुन्दर नटों के गानको सुनता हुआ अपने यशके समान स्वच्छ चांदनी में शत्रुओंके प्रतापके समान मद्यपानकरनेलगा २३० ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांलावाणकलम्बकेपष्ठस्तरंगःलावाणकनामतीसरालम्बकसमाप्तहुआ ॥

नर वाहनदत्त जननंनाम चतुर्थोलम्बकः ॥

कर्णनाल बलाघात सीमन्तितकुलाचलः ॥
पंथानमिवसिद्धीनांदिशंजयतिविघ्नजित् १ ॥

इसके उपरान्त राजाउदयन् कौशाम्बीमें रहकर जीतीहुई सम्पूर्ण पृथ्वीका भोग करनेलगा रुमण्वान् और यौगन्धरायण पर राज्यका सम्पूर्ण भाररखकर वसन्तक समेत राजा सुखपूर्व्वक विहार करनेलगा और रानी वासवदत्ता तथा पद्मावतीकोसंगमें लेकर वीणाको वजाकर संगीत गानका सुख अनुभवकरने लगा जिससमय राजावीणा वजाताथा और रानीकाकली अर्थात् धीरे २ गंभीर मधुरस्वरसे गानकरती थी उससमय दोनोंस्वरोंका ऐसा अभेद होजाताथा कि वीणा वजाने में राजाकी चलतीहुई उंगलीको देखकर मालूम होताथा किवीणाभीवजती है अपनीकीर्तिके समान चांदनीसे निर्मल महलोंपर शत्रुओं के मदके समान मद्यको राजापीताथा वेश्याजन सुवर्णके कलशोमें भरकर मद्य उसके लिये लातीथीं वह मद्य क्याथी मानों कामदेवके राज्यमें अभिषेककरनेका जलथा राजा कुछ रक्तवर्ण सुन्दर रसयुक्त निर्म्मल और रानियोंके मुखोके प्रतिविम्बसे युक्त मद्यको रानियोंके मध्यमें रखताथा वहमद्य न थी मानों राजाका मूर्त्तिमान चित्तही था ईर्पा और क्रोधके विनाभी टेढ़ी भृकुटीवाले रानियो के रक्तमुखारविन्दोंको देखकर राजाकी दृष्टि तृप्त नहीं होतीथी मद्यसेभरेहुए अनेक स्फटिकके प्यालोसेयुक्त मद्यपीनेकी पृथ्वी प्रातःकाल की धूपसे कुछ रक्तवर्णवाले श्वेत कमलोंसे युक्त पद्मिनीके समान शोभित होतीथी १० वीच २ में अनेक व्याधोंसे युक्त पलासरूपीकाले वख्तरको पहरेहुए और वाणासन (वाण तथा असनके वृक्ष पक्षान्तरमें धनुप) से युक्त अपने समानवनमें राजा शिकारखेलनेको गया जव राजाकीचसे भरेहुए शूकरोंको वाणों से मारताथा तव किरणोंसे अंधकारके समूहोंके नाश करनेवाले सूर्य्यके समान शोभित होताथा शिकार के लिये राजाके दौड़नेपर डरकर इधर उधर भागेहुए मृग पहले जीतीहुई दिशाओंके कटाक्षों के समान शोभितहुए फैलेहुए मुखोमें लगेहुए भालोंसे छिदजानेपर मरनेके समयमेंभी गर्जनेवाले सिंहोको देखकर राजा अत्यन्त प्रसन्न होताथा शिकारी कुत्ते पशुओ के मार्गों में गड्ढे और पशुओंके वांधनेकी डोरी

यह सब सामग्री केवल शस्त्रों के द्वाराही कार्य्य सिद्ध करनेवाले राजाके साथमेंथीं १६ इसप्रकार सुखका भोग करतेहुए राजाके स्थानपर एकसमय नारदमुनि आये आकाशके आभूषण स्वरूप और अपने शरीरकी प्रभाके मंडलसे युक्त नारदजी क्याथे मानों तेजस्वियोंके प्रेमसे उतरेहुए साक्षात् सूर्य्य भगवान् थे राजाने उनका बड़ा सत्कारकर बारम्बार प्रणामकरके आसनपर बैठाया क्षणभर बैठकर प्रसन्नहुए नारदजी ने राजासे कहा कि हेउदयन् सुनों तुमसे हम संक्षेप पूर्व्वक कहते हैं कि तुम्हारे पूर्व्व पुरुखों में पाण्डु नाम राजाहुए उनकेभी तुम्हारे समान दोरानियांथी एक कुन्ती और दूसरीमाद्री समुद्र पर्य्यन्त सम्पूर्ण पृथ्वीको जीतकर एकसमय राजापाण्डु शिकारखेलनेको वनमें गये वहांजाकर राजाने मृगरूपसे अपनी भार्य्याके साथ रतिकरतेहुए किन्दमनाम मुनिकोमारा बाणके लगतेही मुनिने मृगके स्वरूपको त्यागकर मरते समय यहशापदिया कि तुमने विना विचारकियेही एकांत में रतिकरतेहुए मुझकोमाराहै इससेतुमभी मेरेही समान अपनी स्त्री से भोगकरते हुए मृत्युको प्राप्तहोगे इसप्रकार शापपाकर भयसे भोगकी इच्छाको छोड़कर अपनी स्त्रियों समेत राजापाण्डु तपोवनमें रहनेलगावहांभी शापकी प्रेरणासे एकसमय राजाने माद्रीनाम अपनी स्त्रीकेसाथ भोगकिया तभी उनकी मृत्युहोगई इससे हे राजायहशिकारकरना राजालोगोंकेलिये बड़ा दुखदाईहै इसकेद्वारा और भी राजालोग मृगोंके समानमृत्युको प्राप्त हुएहैं भयङ्कर शब्दवाली मांससेभरीहुई रूखीधुमैले वर्णवाली उठेहुएकेशवाली और भालेरूपदांतवाली शिकारमृगया राक्षसीके समान कल्याणकरनेवाली कैसेहोसक्ती है इससे व्यर्थ श्रमवालेशिकारको त्याग दो इसमें शिकार खेलनेवाले उनके वाहन और वनके पशु इनतीनोंकेही प्राणोंका संशयरहताहै हे राजा तुम्हारे पुरखोंकी प्रीति से तुमभी मेरे बड़े प्यारेहो अब तुम्हारे कामदेवका अवतार पुत्रहोगा वहभी मैं तुम को सुनाताहूं ३१ एकसमयमें कामदेवके शरीर धारणकरनेके लिये रतिनेशिवजी महाराजकी बड़ीस्तुति की तब श्रीशिवजीने प्रसन्नहोकररतिसे यहसंक्षिप्त वचनकहे कि पार्व्वतीजी अपनेअंशसेपृथ्वी में अवतार लेकर और पुत्रकी इच्छासे मेरीआराधना करके कामदेवको उत्पन्नकरेंगी इससे चंडमहासेनके यहां वासवदत्तारूपसे पार्वतीजीने अवतारलिया और वहीतुम्हारी रानी हैं यह श्रीशिवजीका आराधन करके कामदेवके अंशरूप पुत्रको उत्पन्न करेंगी और वहसंपूर्ण विद्याधरोंका चक्रवर्तीहोगा इसप्रकार कहकर राजासे आदर कियेगये नारदजी अन्तर्ध्यान होगये ३७ इसकेउपरान्त दूसरेदिन सभामें बैठेहुएराजा से नित्योदितनाम प्रतीहारने आकर यह विज्ञापनकिया कि एकबड़ीदीन ब्राह्मणी दोबालकों को लियेहुए द्वारपर खड़ीहै और आपके दर्शनकरनेकी अभिलाषा करतीहै यहसुनकर राजाने उसको आने की आज्ञादेदी तब अत्यन्त दुर्बल और पाण्डु तथा धूसरवर्णवाली वह ब्राह्मणीमानके समान गलेहुए फटेवस्त्रोंसे व्याकुल और दुःख तथा दैन्यके समान दोनों बालकोंको लियेहुए सभामें आई वहां उसने यथायोग्य प्रणामकरके कहा कि हे महाराज मैं कुलीन ब्राह्मणी इसप्रकारकी दुर्दशाको प्राप्तहुईहूं और भाग्यवशसे यह दोपुत्र मेरे एकसाथहीहुए हैं भोजनके न मिलने से स्तनों में दूधभी नहीं पैदाहोताहै जो इन्हें पिलाकर पालनकरूं इससे दीनअनाथ तथाशरणागतोंकी रक्षाकरनेवाले आपकीशरणमें मैं आईहूं

आप जैसा उचित समझें कीजिये आपही मालिकहैं उसके दीनवचनों को सुनकर राजाने प्रतीहारसे कहाकि इसेलेजाकर वासवदत्ताको सौंपदो ४५ तब आगे २ जातेहुए शुभकर्म्मके समान उसप्रतीहारके साथ वहब्राह्मणी वासवदत्ताके समीप पहुंची तव रानी वासवदत्ताने प्रतीहार के द्वारा राजाकी भेजीहुई जानकर उसपर बड़ी श्रद्धाकी और उसके दोपुत्र देखकर अपनेचित्तमें शोचाकि (अहोवामैकवृत्तित्वंकिंमप्येतत्प्रजापतेः अहोवस्तुनिमात्सर्य्यं महोभक्तिरवस्तुनि) ब्रह्माकी कैसी कुटिलगतिहै कि योग्यस्थानों में ऐसी उदासीनता और अयोग्यस्थानमें ऐसी कृपा,देखो मेरे अवतक एकभी पुत्रनहीं उत्पन्नहुआ और इसदीनके दोपुत्र एकसाथही उत्पन्नहुए इसप्रकारसे शोचतीहुई रानी स्नानकरनेकोगई और दासियोंको उस ब्राह्मणी के भी स्नानादिकरावनेकी आज्ञादेगई दासियों से स्नानकराईगई वस्त्र पहनाईगई और भोजनकराईगई ब्राह्मणी जलसे सींचीहुई उष्ण पृथ्वी के समान प्रसन्नताको प्राप्तहुई ५१ इसके उपरान्त जब वह ब्राह्मणी सावधानहुई तब वासवदत्ताने कथाकेप्रसंगसे उसकी परीक्षाकरने के लिये उससे कहा कि हेब्राह्मणी कोई कथाकहो रानी के वचनसुनकर वह ब्राह्मणी यह कथाकहनेलगी कि पूर्वसमय में जयदत्तनाम किसी सामान्य राजाके देवदत्तनाम पुत्रहुआ समयपाकर देवदत्तके तरुणहोनेपर उसके विवाहकरनेकी इच्छासे उस बुद्धिमान् राजाने यह शोचा कि (वेश्येववलवद्भोग्या राजश्रीरतिचंचला वणिजांतुकुलस्त्रीव स्थिरालक्ष्मीरनन्यगा) अत्यन्त चंचल राजलक्ष्मी वेश्याके समान वलवान्ही से भोगकीजासक्ती है और वणियोंकीलक्ष्मी कुल स्त्री के समान अन्य गामिनीनहींहोती इससे मैं अपने पुत्रका विवाह वणियेकीपुत्री से करूंगा इसकारणसे अनेक उपाधियुक्त इसराज्यमें इसको क्लेश न होगा ऐसा निश्चयकरके राजा जयदत्तने अपने पुत्र के लिये पटनेकेरहनेवाले वसुदत्तनाम वणिये से अपने पुत्रकेलिये कन्यामांगी वसुदत्तने भी उत्तमसम्वन्धकी इच्छासे दूरदेशमें भी राजपुत्रकेलिये अपनी कन्या देनास्वीकारकरलिया और विवाहकेसमय जामाताको इतने रत्नदिये कि उसको अपने पिताके सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यका अभिमान दूरहोगया उस धनवान् वणियेकी कन्याके साथ अपने पुत्रका विवाहकरके वह जयदत्तराजा सुखपूर्व्वकरहनेलगा ६१ एकसमय वसुदत्त वहुत उत्कण्ठितहोकर अपने जमाई के घरआकर अपनी पुत्रीको लिवालेगया इसके उपरान्त अकस्मात् राजा जयदत्त तो स्वर्गवासीहुआ और उसके भाइयों ने देवदत्तसे सम्पूर्ण राज्यछीनलिया तव उनके डरसे उसकी माताछिपकर उसे किसी दूरदेशमें लेगई वहांजाकर देवदत्तसे उसकीमातानेकहा कि पूर्व्वदिशाकाराजा चक्रवर्त्ती है और वहीहमारा स्वामीहै उसकेपास तुमजाओ वह तुमको तुम्हाराराज्यदिलवादेगा माताके यह वचनसुनकर राजपुत्रने कहा कि परिकरके विना वहांमुझको कौन राजपुत्रसमझेगा यह सुनकर फिर मातावोली कि पहले तुम अपने श्वशुरके घरजाकर वहांसे धनलेकर परिकरवनाके उस चक्रवर्त्ती के पासजाओ मातासे इसप्रकार प्रेरणा कियाहुआ वह राजपुत्र लज्जितहोकर वहांसे धीरे २ चला और सायङ्कालकेसमय अपने श्वशुरके घर के समीपपहुंचा ६९ पिता और राजलक्ष्मी से रहित वह राजपुत्र रात्रिकेसमय लज्जासे अपने श्वशुरके घरमें न जासका श्वशुरके घरके निकट किसी यज्ञशालाके वाहरठहरा वहां रात्रिकेसमय उसनेदेखा कि

श्वशुरके कोठे से एकस्त्री रस्सी के सहारे नीचे उतररही है क्षणभरमें आकाश से गिरीहुई ज्वालाके स-मान रत्नजटित आभूषणों से देदीप्यमान उस स्त्रीको उसने पहचाना कि यह तो मेरीही स्त्री है और पहचानकर उसके चित्तमे बड़ाखेदहुआ उसस्त्री ने तो उसे देखकर भी मलिनता और दुर्बलताके कारण नहींपहचाना और उस्सेपूछा कि तू कौनहै उसनेकहा कि मै एकपथिकहूं इसकेउपरान्त वह यज्ञशाला के भीतरगई और राजपुत्रभी छिपकर देखने के लिये उसकेपीछे चलागया वहां वहस्त्री एकपुरुषके पास गई उसने उसे देखकरकहा कि तू आज बहुतदेरकरकेआई और लातोंसे उसे बहुतपीटा पीटने से और भी अधिक अनुरागयुक्तहोकर उसने उसे प्रसन्नकिया और इच्छाके अनुसार उसकेसाथरमणकिया यह संपूर्ण चरित्र देखकर राजपुत्रने अपने चित्तमें विचारकिया कि यह क्रोधका समयनहीं है अभी मुझे अन्य कार्य्यकरने हैं मेरा यह शत्रुओंके योग्य शस्त्र इसदीनस्त्रीपर और इसजड़पुरुषपर चलानेके योग्य नही है इसदुष्टस्त्री से मुझे क्या प्रयोजनहै यह सबकार्य्य मेरेही दुर्भाग्यका है जो कि मेरे धैर्य्यकी परीक्षा के लिये दुःखपैदुःखदिये चलाजाताहै और इसमें इसका अपराधही क्याहै यह तो समान कुलमें संबन्ध न करनेका फलहै ठीक कहा है कि (मुक्त्वावलिभुजंकाकी कोकिले रमते कथम्) काकी (कौए की स्त्री) कौए को छोड़कर कोकिलकेसाथ कैसे रमणकरे यह शोचकर उसने अपनीस्त्री और जार दोनोंको उपेक्षाकरके न मारा (सतांगुरुजिगीषेहिचेतासि स्त्री तृणंकियत्) बहुतजीतने की इच्छा करनेवाले स-ज्जनलोगोंके चित्तमें स्त्रीरूपी तृणक्याहै ८१ उससमय रतिके आनन्दमें मोतियों से जड़ाहुआ आभू-षण उसस्त्रीके कानमेंसे गिरपड़ा वहउसने रतिके अन्तमेंभी शीघ्रतासे नहीं सँभाला और जारसेपूछकर जिसमार्ग से आईथी उसी मार्गहोकर चलीगई और उसके जानेके बाद वह जार पुरुषभी चलागया इनदोनोंके चलेजानेके उपरान्त राजपुत्रने वह जड़ाऊ आभूषण उठालिया रत्नोंके प्रकाशसे देदीप्य-मान वहआभूषण क्या था मानो ब्रह्माने खोईहुई राज्य लक्ष्मीके ढूंढ़नेके लिये मोहरूपी अन्धकार का दूर करनेवाला दीपक उसके हाथमे दिया उस आभूषणको बहुमूल्यजानकर राजपुत्रने जाना कि मेरा कार्य्य सिद्धहुआ और उसे लेकर कान्यकुब्ज देशको चलागया वहां उसने वह आभूषण एक लाख अशर्फी में गिरवीरखकर हाथी और घोड़ेआदि सबपरिकर इकट्ठे किये और उससब परिकरकोलेकर च-क्रवर्त्तीकेपास जाके अपना वृत्तान्त वर्णनकिया और चक्रवर्त्तीकी दीहुई बहुतसी सेना अपने साथमें लेकर शत्रुओंको मार अपने पिताके राज्यको लेलिया देवदत्तको फिर अपने राज्यपर बैठा देखकर उस की माता बहुतप्रसन्नहुई ८८ इसके उपरान्त देवदत्तने उसआभूषणको छुड़ाकर अपनी स्त्री का सम्पूर्ण वृत्तान्त प्रकटकरनेके लिये अपने श्वशुरके पास भेज दिया उसनेभी अपनीकन्याके कानके आभूषण को देखकर घबराके अपनी कन्याको जाकर दिखाया पहले भ्रष्टहुये आचारके समान उसआभूषणको देखकर और उसे अपने पतिका भेजा जानकर वणियेकी पुत्री ने व्याकुलहोकर अपने चित्तमें स्मरण किया कि यहआभूषण उसरात्रिको यज्ञशालामें गिराथा जिसमें कि मैंने वहां एकपथिक देखाथा इससे यहज्ञानहोताहै कि वहमेरा पति मेरेआचरणकी परीक्षाकरनेको आयाथा परन्तु मैं उसेनहीं पहचानसकी

कदाचित् वही इसेलेगयाहोगा इसप्रकार शोचतीहुई उसवणियेकी पुत्रीका हृदय अपने दुराचारके प्रकट होजानेसे व्याकुलहोकर कातरतासे फटगया इसके मरजानेपर इसके पिताने पुत्री के वृत्तान्तके जानने वाली दासी से पूछके और सम्पूर्ण तत्त्व समझकर अपने शोकको त्याग करदिया और वह राजपुत्र राज्यकोपाकर अपने गुणोंसे प्रसन्नहुई चक्रवर्तीकी कन्याको दूसरी राज्य लक्ष्मी के समान प्राप्तहोकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ ९९ इससे यह निश्चयहोता है कि साहस के समय स्त्रियोका हृदय वज्रसे भी अधिक कठिन और भयतथा संभ्रम के समय पुष्पसे भी अधिक कोमल होताहै (तास्तुकाश्चनसद्वंश जाता मुक्ताइवाङ्गनाः याः सुवृत्ताच्छ हृदयायान्ति भूषणतांभुवि) श्रेष्ठवंशमें उत्पन्नहुई मोतियोंके समान ऐसीस्त्रियांतो कोई२होती हैं जो अपने निर्म्मल हृदय और सुन्दर आचरणों से पृथ्वीमें आभूषण रूपहोती हैं (हरिणीवच राजश्रीर्देवम्विप्रक्लिनीसदा धैर्य्यपाशेन वन्धुश्चतामेवं जानतेवुधाः) हरिनीके समान राज्यलक्ष्मी इसीप्रकारसे सदैव भागती है और पण्डितलोग धैर्य्यरूपी पाशसे इसीप्रकार उसका बांधना भी जानते हैं इससे आपत्तिमें भी सम्पत्तिके चाहनेवाले मनुष्योंको सत्त्वका त्याग नहीं करनाचाहिये यहीवृत्तान्त मेरेलिये भी उदाहरण रूपहुआथा जो मैंने अत्यन्त क्लेशमें भी अपने आचरणोंकी रक्षा कीथी वहतुम्हारे दर्शन होनेसे सफलहुई १०१ उसब्राह्मणीके मुखसे इसकथाको सुनकर वासवदत्ताने आदर पूर्व्वक अपने चित्तमें विचार कियाकि इसके प्रौढ़वचनों से और आचरणके रक्षाकी कहावतसे ज्ञातहोताहै कि निस्सन्देह यहकोई कुलीन ब्राह्मणी है और इसीसे इसे राजाकी सभामें प्रवेशकरनेकी चतुरताहुई यहविचारकर रानीने फिरउस ब्राह्मणीसे पूछाकि तुमकिसकी स्त्रीहो अपना सववृत्तान्त मुझ से वर्णनकरो वासवदत्ताकी आज्ञापाकर ब्राह्मणी कहनेलगी कि हे रानी मालवदेशमें बड़ाविद्वान् और धनवान् अग्निदत्तनाम एकब्राह्मणथा वहसदैव याचकोंको धनदिया करताथा उसके अपनेही समान दो पुत्र उत्पन्नहुए ज्येष्ठकानाम शङ्करदत्त और कनिष्ठकानाम शान्तिकर था उनमें से शान्तिकर विद्या पढ़नेके लिये वालावस्थामेंही पिताके घरसे निलकरकहीं चलागया और बड़ेभाईने यज्ञकरनेके निमित्त धनके इकट्ठे करनेवाले यज्ञदत्तनाम ब्राह्मणकी कन्याके साथ विवाहकिया वह मैंहूं समयपाकर मेरा श्वशुर स्वर्गवासीहुआ और मेरी सासभी उसीके साथ सतीहोगई ११०-इसकेउपरान्त मुझगर्भवतीको छोड़ कर मेरे पतिने तीर्थयात्राके वहाने जाकर सरस्वती नदी के प्रवाहमें शोकसे अन्धहोकर अपना शरीर त्यागकरदिया जवउसके साथियोंनेआकर उसका वृत्तान्तकहा तव मैं गर्भवती होनेकेकारण उसकेदुःखमें अपना शरीर नहींत्यागसकी इसकेउपरान्त अकस्मात् वहुतसे चोरोंनेआकर जिसगांवमें मैं रहतीथी वह सवगांव लूटलिया उससमय तीनब्राह्मणियोंके साथहोकर मैं अपने आचरणकी रक्षाकरने के लिये थोड़े से वस्त्रोंको लेकर वहांसे भागी देशभंगहोनेसे वहुतदूरआकर एकदेशमें महीनेभरतक वहुतकठिनकामों की जीविकाकरके निवास किया वहांलोगों से राजा उदयन्को अनाथोंकी रक्षाकरनेवाले सुनकरब्राह्मणियोकेसाथ केवल सदाचाररूपी पाथेय(सफरखर्च) को लेकर यहांआई इसदेशमें आतेही उनतीनों ब्राह्मणियोंके समीपहीमें एकसाथही यहदोनो पुत्र उत्पन्नहुए शोक विदेश दरिद्रता और एकसाथहीं दोनों

पुत्रोंका उत्पन्नहोना वाह ब्रह्मानेमानों मेरेलिये आपत्तियोंका द्वारही खोलदिया ११८ तव इनवालकोंके पालनकरने के लिये कोई गति न समझकर मैंने स्त्रियों के लज्जारूपी आभूषणको छोड़कर सभामें आकर महाराज उदयन्से प्रार्थनाकी और उनकी आज्ञासे तुम्हारे सन्निकट प्राप्तहुई ठीककहा है कि (क श्शक्तःसोढुमीपन्न वालापत्यार्तिदर्शनम्) आपत्तिमें पड़ेहुए बालकोंके दुःखको कौनदेखसकाहै तुम्हारे द्वारपर आतेही मेरी सम्पूर्ण विपत्तियां मानों किसीने मारकर भगादीं हे रानी यह मेरा सम्पूर्ण वृत्तान्तहै और वालकपनसेही अग्निहोत्रके धुएं से मेरेनेत्र पिङ्गलवर्णके होगये इसलिये मेरा पिङ्गलिकानाम है और मेरा शान्तिकरनाम देवर जो परदेश चलागयाथा सोकहां है यह अवतक नहींमालूमहुआ १२२ इस प्रकार अपने वृत्तान्तको कहनेवाली उसब्राह्मणीको कुलीनजानकर रानी विचारकर बोली कि यहांशान्तिकरनाम विदेशी ब्राह्मणरहताहै वहमेरा पुरोहितहै मैं जानतीहूं कि वहीतेरा देवरहोगा इसप्रकार उस ब्राह्मणी से कहकर और उस उत्कण्ठित ब्राह्मणी को रात्रिभर अपने समीप रखकर प्रातःकाल रानी ने शान्तिकरको बुलाके उसका वृत्तान्त पूंछा उस वृत्तान्तको सुनंकर रानीको निश्चय होगया कि यह पिंगलिकाका देवरहै फिर शान्तिकरसेकहा कि यह तुम्हारेवड़ेभाईकी स्त्री तुम्हारी भावी है तव जानपहचान हो जानेपर उसकेद्वारा अपने मातापिता तथा भाईकी मृत्यु जानकर शान्तिकर उसको अपने घरलेगया और वहां जाकर अपने मातापिता और भाईका शोककरके अपनी उस भावीको सावधान किया रानी वासवदत्तानेभी पिंगलिकाके दोनोंपुत्र होनेवाले अपने पुत्रके पुरोहित वनाये और वहुतसा धन देकर ज्येष्ठका नाम शांतिसोम और कनिष्ठका नाम वैश्वानर रक्खा (अन्धस्येवास्यलोकस्य फलभूमिंस्वकर्म्मभिः पुरोगैर्नीय मानस्य हेतुमात्रं स्वपौरुषम्) अन्धके समान यह लोक आगे चलतेहुए अपने कर्म्मों करके फलरूपी पृथ्वीपर पहुंचाया जाताहैउसमें अपना पुरुषार्थ हेतुमात्रहै क्योंकि पिंगलिका शान्तिकर और वह दोनों वालक सव अनायास एकस्थानमें आकर मिलगये १३३ इसके उपरान्त कुछ दिनोंके व्यतीत होजानेपर एकसमय एक कुम्हारी अपने पांच वालकोंको साथ लेकर सकोरेदेनेके लिये वासवदत्ता के घरआई उसे देखकर रानीने पास वैठीहुई पिंगलिकासे कहा कि हेसखी इसके तो पांचपुत्रहैं और मेरे अभी तक एकपुत्रभी नहींहुआ यह तो ऐसीपुण्यात्माहै और मैं इसकेभी समान पुण्यात्मा नहीं हूं यह सुनकर पिंगलिकाने कहा कि हेरानी दरिद्रियोंकेही यहां पापोंसे वहुतसी सन्तति दुःखभोगने और भुगाने को होती है और आप सरीके लोगोंके तो वहीहोगा जो कोई अत्यन्त उत्तम श्रेष्ठ पुरुषहोगा इस्से शीघ्रता न करो थोड़ेही कालमें अपने योग्य पुत्रको पाओगी पिंगलिकाके यहवचन सुनकरभी वासवदत्ता पुत्र के उत्पन्न होने के लिये वहुत उत्कण्ठितहोके चित्तमें चिन्तासे उसी का विचार करती रही १३६ इसके उपरान्त राजा उदयन्ने रानीकी चित्तकी वृत्तिको जानकर उससे कहा कि नारदमुनि तुम्हारे शिवजीकी आराधनासे पुत्रकाहोना वतागये हैं इससे वरदायक श्री शिवजी का आराधन अवश्य करना चाहिये राजाके यहवचन सुनकर रानीने शीघ्रही व्रतकरनेका निश्चयकिया जवरानीने व्रतकरना प्रारंभ किया तव सम्पूर्ण मन्त्रियों तथा प्रजा समेत राजानेभी श्री महादेवजीका व्रतकरना प्रारम्भ किया तीन

रात्रितक व्रतकरनेके उपरान्त रात्रिके समय स्वप्नमें श्रीशिवजीने प्रकटहोकर राजा और रानीसे कहा कि तुमउठो व्रतको त्यागकरो हमारी कृपासे तुम्हारे कामका अवतार पुत्रहोगा और वह सम्पूर्ण विद्याधरोंका राजाहोगा ऐसाकहकर श्रीशिवजीके अन्तर्द्धान होनेपर वहदोनों जगकर वरदानकी प्राप्ति से अत्यन्त प्रसन्नहुए और प्रातःकाल उठकर सम्पूर्ण प्रजाओंको बुलाकर वहस्वप्नसुनाया और सबने मिलकर पारण किया कुछ दिनके पीछे रानीको स्वप्नमें एकजटाधारी पुरुषने आकर फलदिया रानी ने प्रातःकाल उठकर यहस्वप्न राजाको सुनायाउसस्वप्नसे यहजानकर कि श्रीशिवजीने फलके व्याजसे पुत्रदियाहै राजामंत्रियों समेत अत्यन्त प्रसन्नहुआ और उसने यहजानलिया कि हमारा मनोरथ बहुत शीघ्रपूराहोगा ११६ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांनरवाहनदत्तजननलम्बकेप्रथमस्तरङ्गः १ ॥

इसकेउपरान्त वासवदत्ताने उदयनके हृदयका हर्षबढ़ानेवाला गर्भधारणकिया वह गर्भकामके अंश सेअत्यन्त देदीप्यमानथा चंचलनेत्र तथा पीलीकान्तिवालेमुखसे वासवदत्ताकी ऐसी शोभाहोतीथी कि मानों गर्भमें स्थितकामदेवके प्रेमसे चन्द्रमा उसके सेवनकोआयाहै जिससमय वासवदत्ता पलँगपर बैठतीथी और उसका प्रतिबिम्ब रत्नजटित पाटियोंपर पड़ताथा तो ऐसी शोभाहोतीथी कि मानोंकामदेवके प्रेमसे रति और प्रीति दोनों उसके पासआई हैं उसकी सेवाकरनेवाली सखियों को देखकर यहमालूम होताथा कि मानोंहोनेवाले विद्याधरोंके स्वामीके गर्भकी सेवाके निमित्त संपूर्ण विद्या मूर्त्तिधारणकरके आईहैं वासवदत्ताके नीले मुखवाले दोनोंस्तन ऐसे शोभित होतेथे कि मानों गर्भके अभिषेक करने के लिये वह दोकलशधारण करतीहै अत्यन्त दीप्तिवाली मणियोंकी चट्टानवाले मन्दिरके बीचमें शय्या पर बैठीहुई वासवदत्ता ऐसीशोभायमान होतीथी कि मानोंहोनेवाले उसकेबालकके भयसे संपूर्ण रत्नोंके समूह उसकी सेवाकररहेहैं ऊपर उड़तेहुए विमानों पर पड़ीहुई उसकी प्रतिमा ऐसी शोभितहोतीथी कि मानों विद्याधरोंकी राजलक्ष्मी उसे प्रणामकरनेकेलिये आकाशमार्गमें आई है मंत्रके सिद्धकरनेवाले साधक लोगोंकी कथाके सुननेकेलिये वासवदत्ताका चित्तचलताथा एकदिन वासवदत्ताने स्वप्नमेंदेखा कि सुन्दर मधुर गीतगातीहुई विद्याधरोंकी स्त्रियां उसेआकाशमें लेजाकर उसकी सेवाकरती हैं यहस्वप्न देखकर जब वह जगी तो उसे यहइच्छाहुई कि मैं आकाशमें विहारकरूं और वहांसे पृथ्वीके कौतुकदेखूं उसकेइस मनोरथको यौगन्धरायणने यन्त्र मंत्र औरइन्द्रजाल आदिकोंसे पूर्णकिया यौगन्धरायणकेयत्नों से जिससमय वहआकाशमें विहारकरतीथी उससमय पुरजनोंकीस्त्रियां अत्यन्त आश्चर्य्यकरके वारंवार शिर उठा २ कर उसे देखतीथीं १३ एकसमय बैठे२ वासवदत्ताके हृदयमें यह इच्छाहुई कि मैं विद्याधरों की कथासुनूं उसकी यह इच्छाजानकर यौगन्धरायणने सबको सुनाकर यहकथाकही कि श्रीपार्वतीजी का पिता हिमालयनाम पर्व्वत जो कि केवल पर्व्वतोंहीका नहीं किन्तु श्रीशिवजीकाभी गुरुहै उस पर्व्वतपर विद्याधरोंका राजा जीमूतकेतु रहताथा उसके घरमें एक कल्पवृक्ष पुरुषाओं के समयसेथा उस केही द्वारा राजाके संपूर्ण मनोरथ पूर्णहोते थे एकसमय राजा जीमूतकेतुने बगीचे में जाकर कल्पवृक्ष से यह प्रार्थनाकरी कि हे देव सदैव आप हमारे संपूर्ण मनोरथोंको पूर्णकरतेहो इससे मुझअपुत्रको एक

गुणवान् पुत्रदीजिये यह सुनकर कल्पवृक्षनेकहा कि तुम्हारे अत्यन्तदानी पूर्व्वजन्मका स्मरणकरने वालासंपूर्ण प्राणियोंका हितकारी पुत्रहोगा यहसुनकर प्रसन्नहुए राजाजी मूतकेतुने कल्पवृक्षकोप्रणाम किया और महलमें जाकर रानी से भी यहवृत्तान्तकहकर उसे अत्यन्त प्रसन्न किया २२ इसके उपरान्त थोड़ेही दिनोंमें राजाके पुत्रहुआ उसनेउसकानाम जीमूतवाहनरक्खा जैसे २ वह जीमूतवाहन बढ़ता था वैसेही वैसे उसके हृदयमें सम्पूर्ण प्राणियों पर दया भी बढ़ती जाती थी समय पाकर जब वह युव-राजहुआ तब उसने अपनी सेवासे प्रसन्नकरके पितासे एकान्तमें कहा कि हे महाराज इस संसार में जितनेभर पदार्थ हैं वह सब क्षणभंगुरहैं परन्तु महात्माओं का निर्म्मलयश कल्पपर्य्यन्त रहताहै यदि पराये उपकारसे ऐसासुन्दर यशप्राप्तहोता है तो धन प्राणों से भी अधिकप्यारा क्यों होनाचाहिये जिस सम्पत्तिसे पराया उपकारनहींहोताहै वह बिजली के समान लोगों के नेत्रोंको खेददेकर चंचलतासे नाश को प्राप्त होजाती है इससे यह जो कल्पवृक्ष संपूर्ण मनोरथोंका पूर्णकरनेवाला हमारे यहां है वह जो पराये उपकारके अर्थ रखदियाजाय तो उसकाहोना सफलहोजाय तो अब मैं ऐसाकरताहूं कि जिस्से कल्पवृक्ष की सम्पत्तियोंसे सम्पूर्ण याचकलोग दरिद्र रहितहोजायँ पिता से यहकहकर और उनकी आज्ञा पाके जीमूतवाहन कल्पवृक्षके पास जाकर बोला कि हेदेव आप सदैव हमारे मनोरथोंको पूर्ण करतेरहेहो इस्से अब हमारे इसमनोरथकोभी पूर्णकरो कि यहसम्पूर्ण पृथ्वी दरिद्र रहितहोजाय आपकाकल्याणहोय मैंने आपको सम्पूर्ण याचकोंके अर्थ देदिया उसके यहवचनसुनकर कल्पवृक्षने बहुतसी सुवर्णकी वृष्टिपृथ्वी परकी इससे सम्पूर्ण प्रजा आनन्दित होगई जीमूतवाहनकी इस उदारताको देखकर लोगों ने कहा कि जीमूतवाहनसे अधिक और कौन बौद्धावतारके समान दयालुहोगा जो कल्पवृक्षको भी याचकों के निमित्त देसके इसप्रकार जीमूतवाहनका यश सम्पूर्ण दिशाओंमें फैलगया ३६ इसके उपरान्त जीमूत केतुके राज्यको पुत्रके यशसे दृढ़होते जानकर उसके गोत्री भाई द्वेषकरनेलगे और कल्पवृक्षके देदेनेसे उसे प्रभाव रहित जानके उन्होंने यह जानलिया कि इसको हम शीघ्रही जीतलेंगे ऐसे समझकर वह सं-पूर्ण जब युद्धके लिये तैयारहुए तब जीमूतवाहनने अपने पितासेकहा कि जो यह शरीरही पानीके बुल-बुले के समानहै तो वायुमें रक्खेहुए दीपकके समान चंचल लक्ष्मीसे क्या प्रयोजनहै और उसेभी दूसरों को क्लेशदेकर कौन बुद्धिमान् लेनाचाहै इससे हेपिता मैं इनगोत्री भाइयोंके साथयुद्ध नहीं करूंगा और राज्य छोड़कर यहांसे किसी वनमें चला जाऊंगा यह लोभी राज्यको भोगकरें मैं अपने वंशका नाशनहीं करूंगा जीमूतवाहनके यह वचन सुनकर जीमूतकेतु निश्चयकरके बोला कि हेपुत्र जब तुम्हींने युवा होकर भी इसराज्यको तृणके समान त्यागदिया तो मैं वृद्धहोकर इसराज्यको क्याकरूंगा और मैंभी तुम्हारेही साथ वनको चलूंगा पिता के यहवचन सुनकर जीमूतवाहन पिता और माता दोनों लेकर मलयाचल पर चलागया मलयाचल में जहां अनेक चन्दनके वृक्ष लगेहुए हैं झरने झररहे हैं और अनेक सिद्ध लोग निवास करते हैं वहां एक आश्रममें रहकर अपने माता पिताकी सेवा करनेलगा वहां रहते २ सं-पूर्ण सिद्धों के राजाविश्वावसुके पुत्र मित्रावसुके साथ उसकी मित्रताहोगई किसीसमय जीमूतवाहनने

मित्रावसु की बहिनको एकान्तमें देखा और ज्ञानसे जानलिया कि यहमेरी पूर्व्वजन्मकीस्त्री है उससमय उनदोनोंका एकान्तमें परस्पर देखनाही मनरूपी मृगोंके बांधनेकीदृढ़ डोरीके समान होगया ४६ इसके उपरान्त एकदिन मित्रावसुने आकर एकाएकी जीमूतवाहनसे कहा कि मलयवतीनाम मेरी एक छोटी बहिन है उसे मैं तुमको दियाचाहताहूं तुम मेरी इच्छाको भंगनकरना यहसुनकर जीमूतवाहनबोला कि हेयुवराज यहतो पूर्व्वजन्ममें भी मेरी स्त्रीथी और तुमदूसरे हृदयके समान मेरे परममित्रथे मैं जातिस्मर हूं इससेमुझे पूर्व्वजन्मका स्मरण बनाहै उसके यहवचन सुनकर मित्रावसुबोला कि पूर्व्वजन्मकी सम्पूर्ण कथाकहो मुझे उसके सुननेकी परमइच्छाहै मित्रावसुके ऐसे कहनेपर पुण्यात्मा जीमूतवाहन अपने पूर्व्वजन्मकी कथा कहनेलगा कि मैं पूर्व्वजन्म में आकाशमार्ग से चलनेवाला विद्याधर था एक समय हिमालयके ऊपरके शिखरपरहोकर मैं जारहाथा और नीचे श्रीशिवजी पार्वतीजी के साथ क्रीड़ाकररहेथे मुझे ऊपरजाते देखकर उल्लङ्घनसे क्रोधितहोकर महादेवजी ने शापदिया कि तू मनुष्यहोजायगा वहां विद्याधरी स्त्रीकोपाकर और अपनेपुत्रको अपना अधिकार देकर फिर विद्याधरों के यहांउत्पन्नहोगा और तुझे अपने पूर्व्वजन्मोंका स्मरण बनारहेगा इसप्रकार शापदेके और शापका अन्तभी कहकर महादेव जीके अन्तर्द्धान होजानेपर थोड़ेही समयके उपरान्त मैं पृथ्वीपर वणियों के कुलमें उत्पन्नहुआ वलभी नाम नगरीमें महाधननाम वैश्यकेघरमें मेराजन्महुआ और वसुदत्त मेरा नामहुआ धीरे२ जबमेरी युवावस्थाहुई तब मेरे पिताने द्वीपान्तरजानेके लिये मेरी तय्यारीकरदी और मैंभी उनकी आज्ञालेकर रोज़गारकरनेको चलागया ६१ इसकेउपरान्त जब मैं वहांसे लौटा तो वनमें बहुतसे चोरोंने आकर मेरा सब धन छीनलिया और वहमुझे बांधकर अपने गांवकी चण्डिकाके मन्दिर में लेगये उसमन्दिरमें लाल वस्त्रकी लम्बी पताका ऐसी शोभित होतीथी कि मानों पशुओंकी मारनेकी इच्छासे यमराजने अपनी जिह्वा निकाली वहांदेवीका पूजनकरतेहुए पुलिन्दकनाम अपने स्वामीके निकट बलिदानके निमित्त मुझे लेगये वह पुलिन्दक मुझे देखतेही मुझपर अत्यन्त दयालुहोगया (वक्तिजन्मान्तर प्रीतिम्मन स्स्निग्धदकारणम्) कारणके विनाही मनमें स्नेह उत्पन्नहोनेसे जन्मान्तरकी प्रीति सूचितहोती है ६५ तबपुलिन्दकने मुझे छुड़वाकर अपने आपकोही बलिदानकरके पूजनको समाप्त करनाचाहा उसका यहसाहस देखकर यहआकाशवाणीहुई कि ऐसामतकर मैं तेरेऊपर प्रसन्नहूं तू वरमांग इसआकाशवाणी को सुनकर पुलिन्दक प्रसन्न होकर बोला कि हे भगवती यदि तुम प्रसन्नहो तो मुझे अन्य वरदानसे क्या प्रयोजनहै तथापि मैं यह वरमांगताहूं कि जन्मान्तरमे भी इसवणियेके साथ मेरी मित्रताहोवे तब एवमस्तु यहकहकर वाणीके निवृत्त होजानेपर पुलिन्दकने बहुत साधनदेकर मुझे मेरेघर भेजदिया परदेशसे और मृत्युके मुखसे बचकर मेरे लौटनेपर मेरे पिताने सबवृत्तान्त जानकर बड़ा उत्सव किया ७० इसके उपरान्त कुछसमयके व्यतीतहोनेपर मैंने देखा कि उसी पुलिन्दकको पथिकों के लूटनेके अपराधसे राजाने बंधवा मँगायाहै उसी समय अपने पितासे कहकर मैंने एकलाख रुपया खर्चकरके उस पुलिन्दकको राजाके यहाँसे फांसीसे बचाया इसप्रकार प्राणोंके बचानेका प्रत्युपकार करके अपने घरमें

लाकर बहुत प्रीति पूर्व्वक उसेरक्खा और कुछदिनके उपरान्त उसको बहुत सत्कार पूर्व्वक बिदाकिया वहभी अपना प्रेम युक्त हृदय मेरे पास रखकर अपने गांवको गया वहाँ मेरेप्रत्युपकारके निमित्त अपने पासकी कस्तूरी तथामोती आदिकको न्यूनसमझकर बहुतसे गजमुक्तालेनेके निमित्त हाथियों के मारने को हिमाचल पर्व्वतपर धनुषबाण लेकरगया हिमाचलपर घूमते २ उसे एकबड़ा सुन्दर तालाव मिला उसमें बहुत से अनेक २ प्रकारके कमल फूलरहेथे और किनारेपर एकमहासुन्दर मन्दिर बनाहुआ था वहाँ यहशोचकर कि यहाँ हाथीपानीपीने आवेंगे पुलिन्दक छिपकर एकान्तमें बैठगया उससमय वहाँ एकबड़ी सुन्दर कन्या सिंहपर चढ़ीहुई श्रीशिवजीका पूजन करनेको आई श्रीशिवजीका पूजनकरने-वाली कन्यकाभाव में वर्त्तमान दूसरी पार्वतीजीके समान उसकन्याको देखकर पुलिन्दकको बड़ा आ-श्चर्य्य हुआ और उसने शोचा कि यदि यहमनुष्यकी स्त्रीहोती तो सिंहपर कैसे सवारहोती और जो दिव्यस्त्रीहोती तो मुझसरीखों को दृष्टिगोचर कैसेहोती इससे यह निश्चयहोताहै कि मेरे नेत्रोंके प्राक्तन पुण्योंकी परिणति (फल) मूर्त्ति धारणकरके आई है यदि इसके साथमें मैं अपने उसमित्रका विवाहक-राऊं तो बड़ाही उत्तम प्रत्युपकार उसके साथमेंहोजाय इससे इसकेपास जाकर इसके मनोभिलषित वरके जाननेको उद्योगकरूं यहशोचकर पुलिन्दक उसके पासगया और वहकन्या भी छायामें बैठेहुए सिं-हपरसे उतरकर तालावमें से कमल तोड़नेलगी ८५ पुलिन्दकभी उसके पासजाकर प्रणामकरके खड़ा होगया तब कन्याने उसे अपूर्व्वअतिथिके स्नेहसे स्वागत पूछकर प्रसन्नकिया और पूछा कि तुमकौन हौ और किसनिमित्त इसदुर्गमभूमि में आयेहौ उसके यहमधुरवचन सुनकर पुलिन्दक बोला कि मैं श्रीपार्वतीजीके चरणोंकासेवक शबरोंकाराजाहूं यहाँ गजमुक्ता लेने के निमित्त आयाहूं इससमय तुम्हें देखकर अपने प्राणदायक मित्र साहूकारकेपुत्र वसुदत्तकी याद आगई हे सुन्दरी वहभी तुम्हारेही स-मानरूप और यौवनसे इससंसारके नेत्रोंका आनन्द देनेवाला अद्वितीय सुन्दरहै इससंसारमें वहकन्या धन्यहै जो मित्रता दान दया तथा धैर्य्यादि गुणोंके निधिरूप उसके पाणिको ग्रहणकरेगी जो यहतुम्हारी सुन्दर आकृति उससुन्दर पुरुषकेसाथ संयोगको न पावे तो कामका धनुष धारणकरनाही व्यर्थहै इसप्र-कार कामदेवके मोहनमन्त्रों के समान पुलिन्दकके वचनों को सुनकर उसका चित्तहरगया और काम-देवसे प्रेरितहोकर पुलिंदकसे बोली कि तुम्हारा वह मित्रकहाँ है मुझेलाकर दिखलाओ उसके यहवचन सुनकर और उससे आज्ञालेकर पुलिन्दक वहाँसे अपने घरको आया और वहांसे बहुत से मोती तथा कस्तूरी आदिक पदार्थोंको भारोंपर लदवाकर मेरे स्थानको आया मेरे यहाँ सबलोगों ने उसका बड़ा सत्कारकिया और जो २ पदार्थ लायाथा वहसब उसने मेरे पिताकी भेटकरदिया इसप्रकार उत्सवसे उस दिनके व्यतीत होजानेपर रात्रिके समय एकान्तमें पुलिन्दकने कन्याके देखनेका संपूर्ण वृत्तान्त मुझे सुनाकर मुझसे कहा कि हे मित्रचलो वहीं चलें यहसुनकर मैं उत्कण्ठित होकर उसी रात्रिको उसके संगचला प्रातःकाल मेरे पिताने मुझे पुलिन्दकके साथगयाहुआ सुनकर पुलिन्दकके प्रेमके विश्वास से धैर्य्य धारणकरलिया और पुलिन्दकने मार्गमें मेरे संपूर्ण कार्य्य करके क्रमसे मुझे हिमालयपर पहुं-

चाया वहाँ सायंकालके समय उसतालावपर पहुंचकर हमदोनोंने स्नानकिये और सुन्दर मधुरफलखाकर वहीं एकरात्रि व्यतीतकी लताओंके पुष्प जिसमें बिछेहुएहैं भौरे जहाँ सुन्दर गुंजार कररहेहैं शीतल मन्द सुगन्ध वायु जिसमें आरहीहै और औषधरूपी दीपक जिसमें जलरहेहैं ऐसा वहवन हमलोगोंको रात्रिके समय विश्राम करनेको रतिके निवासके समान मालूमहुआ १०४ इसके उपरान्त दूसरेदिन उस के देखनेकी इच्छासेमानों वारंवार फड़कतेहुए दक्षिण नेत्रसे सूचित आगमनवाली और वारंवारउत्कंठित होके उसी के मार्गमें जानेवाले मनसेमानो आगे चलकर लीगई वहकन्या वहाँ आई बड़ी २ जटावाले सिंहकी पीठपर बैठी हुई उसकन्याको शरदकालके मेघोंपर विराजमान चन्द्रमाकी कलाके समान मैंने देखा उससमय आश्चर्य उत्कंठा और भयसे उसेदेखकर मेराचित्तकैसाहुआ वह मैं नहींजानता इसके उपरान्त वह सिंहपरसे उतरकर फूलोंकोतोड़ तड़ागमें स्नानकरके तड़ागके किनारेपर वर्त्तमान श्रीशिवजीका पूजनकरनेलगी पूजनके अन्तमें पुलिन्दक उसकेपासगया और प्रणामकरके बोला कि हेसुन्दरी तुम्हारेयोग्य उस वरको मैंयहाँ लिवालायाहूं यदिआज्ञाहोय तो अभी बुलाकरदिखाऊं यहसुनकर उसने कहा कि दिखाओ तबपुलिन्दक मुझेवहाँसे बुलाकर उसके पासलेगया वहतिरछीदृष्टिसे प्रेमपूर्वक मुझे देखकर कामके वशीभूतहोकर पुलिन्दकसेबोली कि तुम्हारायहमित्र मनुष्यनहीहै मेरे ठगनेकेलिये कोई देवताआयाहै क्योंकि मनुष्यकी ऐसीआकृतिनहींहोसक्ती उसके यह वचनसुनकर उसे विश्वासदिलाने के लिये मैंनेकहा कि हेसुन्दरी मैं मनुष्यहीहूं सीधेजनकेसाथ छलकरनेसे क्याप्रयोजनहै मैं वलभीनगरमें रहनेवाले महाधननाम वैश्यका श्रीशिवजीके वरसेप्राप्तहुआ पुत्र हूं पुत्रके निमित्त श्रीशिवजीके प्रसन्न करने को तपकरतेहुए मेरे पितासे महादेवजीने प्रसन्नहोकर स्वप्नमें कहा कि उठोतुम्हारे कोई महात्मापुत्र होगा और इसकाबड़ावृत्तान्तहै उसकेकहनेसे कोईप्रयोजननहीं यहसुनकर मेरे पिताकी निद्राखुली तो समयपाकर मेराजन्महुआ और उन्होंने वसुदत्तमेरानाम रक्खा और शवरोंकास्वामी यह पुलिन्दक विपत्तिमें रक्षाकरनेवाला परममित्रमुझे विदेशमेंप्राप्तहुआथा यहमेरासंपूर्ण वृत्तान्तहै इसप्रकारकहकर जब मैं निवृत्तहुआ तबवहकन्यालज्जासे नीचेमुखकरके बोली कि तुम्हाराकहना बहुतठीकहै गतरात्रिमें मैंने स्वप्नमें देखा कि मैं श्रीशिवजीका पूजनकरचुकीथी कि उससमय शिवजीनेकहा कि तुझेप्रातःकाल पति मिलेगा इससेतुम्हीं मेरे पतिहो और तुम्हारामित्र मेराभाई है इसप्रकार वचनरूपी अमृतोंसे मुझेप्रसन्न करके वहचुपहोगई १२३ इसकेउपरान्त विधिपूर्वक विवाहकरनेके लिये उससेसलाहकरके मैंने अपनेघर जानेकी मित्रसमेतइच्छाकी तबउसने सिंहको इशारेसे बुलाकरमुझसे कहा कि हे आर्य्यपुत्र तुमइसपर सवारहोजाओ मैंनेभी सिंहपरचढके उसस्त्रीको गोदीमें उठालिया और मित्रसमेतवहाँसे प्रसन्नतापूर्वक चला पुलिन्दक के वाणों से मारेगये हिरणोंकेमांसको खातेहुए हमसर्व लोग क्रमसे वलभीपुरी में पहुंचे वहाँमुझे उस कन्यासमेत सिंहपरसवार देखकर लोगोंने बड़ेआश्चर्यपूर्वक मेरे पितासे जाकरकहा और मेरे पिताभीहर्षसे आगेआकरसिंहसे उतरकर प्रणामकरतेहुए मुझेदेखकर आश्चर्यसमेत अत्यन्त प्रसन्न हुए और अत्यन्तसुन्दरी उसकन्याको प्रणामकरते देखकरमेरेयोग्य स्त्रीजानकर आनन्द में मगनहोगये

इसके उपरान्त हम सब लोगों को घरमें लेजाकर और संपूर्ण वृत्तान्तपूछकर मेरेपिताने पुलिन्दककी मित्रताकी बड़ी प्रशंसा की और महाउत्सवकिया फिर ज्योतिषीकी आज्ञा से दूसरे दिन संपूर्ण बन्धुओं को बुलाकर उसकन्याकेसाथ मेराविवाहकिया में २ विवाहके होजानेपर वह सिंह सब के देखते २ दिव्य-वस्त्राभरणधारी दिव्यपुरुषहोगया यह देखकर लोगोंके अत्यन्त आश्चर्य्य युक्त होनेपर उसने प्रणामकर-के मुझ से कहा कि मैं चित्रांगदनाम विद्याधर हूं और यह प्राणोंसेभी अधिकप्यारी मनोवतीनाम मेरी कन्याहै इसकोसदैव गोदीमें लेकर वनमें घूमताहुआ मैं एक समय श्रीगंगाजी के तटपरपहुंचा वहांत-पस्वियोंके बहुतसे आश्रमोंको देखकर तपस्वियोंके उल्लंघनके भयसे गंगाजीके बीचमें होकर मैं चला भाग्यवशसे मेरीपुष्पोंकीमाला गंगाजीके जल में गिरपड़ी उसके गिरतेही जल के भीतरबैठेहुए नारद जीने एकाएकी उठकर उसमालाके पीठपर गिरने के अपराध से क्रोधकरके मुझे यह शापदिया कि हे पापीतू इस उद्दण्डता के कारण हिमालयपर्व्वत में जाकर सिंहहोगा और इसकन्याको पीठपरलिये २ घूमेगा फिर जिससमय मनुष्यके साथतेरी कन्याका विवाहहोगा तब तू उसे देखकर शापसे छूटजायगा इसप्रकार नारदमुनिसे शापदियागया मैं हिमाचल में सिंहहोकर सदैव श्रीशिवजीकी पूजाकरनेवाली इसकन्या को पीठपर धारण करतारहा इसके उपरान्त जिस प्रकार पुलिन्दक के यत्न से यह सम्पूर्ण कार्य्य सिद्धहुआ सो तो आपसब लोगोंको विदितही है अब मैं जाताहूं मेराशाप छूटगया आप सब लोगोंका कल्याणहोय यहकहकर वह विद्याधर आकाशको उड़गया १४४ तब इस आश्चर्य्य को देख-कर सम्पूर्ण बांधवलोग बड़े प्रसन्नहुए और इसश्रेष्ठसम्बन्ध से प्रसन्नहोकर मेरे पिताने बड़ामहोत्सव किया (कोहिनिर्व्याजमित्राणां चरितंचिन्तयिष्यति ॥ सुहृत्सुनैवतृप्यन्ति प्राणैरप्युपकृत्यये) निर्व्याज मित्रोंके चरित्रोंको कौनजानसक्ताहै जो मित्रोंकेसाथ प्राणोंसे भी उपकारकरके नहीतृप्तहोते हैं यह बात किसने पुलिन्दकके चरित्रको ध्यानकरके आश्चर्य्यपूर्व्वक नहींकही वहांकाराजा भी पुलिन्दकके उस वृत्तान्तको जानकर हमारे स्नेहसे उसपर अत्यन्त प्रसन्नहुआ और मेरे पिताने राजाको प्रसन्नजानकर बहुतसे रत्नोंकीभेट देकर पुलिन्दकको सम्पूर्णवनका राज्य दिलवादिया इसकेउपरान्त अपनी प्रिया म-नोवती और प्रियमित्र पुलिन्दकके साथमें कृतार्थहोकर सुखपूर्व्वक रहनेलगा और पुलिन्दकभी अपने देशकेस्नेहको छोड़कर बहुधा मेरेहीघरमें रहनेलगा परस्पर उपकार करनेसे नहींतृप्त होतेहुए हमदोनों मित्रोंकासमय व्यतीतहोताथा १५२ थोड़ेदिनोंके उपरान्त मनोवतीमें मेरे पुत्रउत्पन्नहुआ वह पुत्र क्या था मानों सम्पूर्ण कुलके हृदयका उत्सव रूप धारणकरके बाहरआगया हिरण्यदत्तनाम वह पुत्र धीरे २ बढ़ा और सम्पूर्ण विद्याओंकोपढ़कर योग्यहोगया तब मेरे पिताने उसका विधिपूर्व्वक व्याहकरवादिया यह सम्पूर्ण उत्सवकरके और जीवनके फलको परिपूर्ण जानके मेरे पिता मेरीमाता समेत श्रीभागीरथी गंगाजीके तटपर शरीर त्यागकरनेको चलेगये तब पिताके शोकसे अत्यन्त व्याकुल मुझेजानकर ब-न्धुओंने बहुतसमझाकर मुझे गृहस्थीकाभार धारण करवाया उससमय मनोवतीके मुग्ध (भोले) मुख-चन्द्रको देखकर और प्रियमित्र पुलिन्दकसे मिलकर मेराचित्त सावधानहुआ इसके उपरान्त सत्पुत्रसे

आनन्दयुक्त सुन्दरस्त्रीसे मनोहर और प्रियमित्रके समागमसे मेरे वह उत्तमदिन व्यतीतहुए समयपा॰ कर जब मैं वृद्धहुआ तो वृद्धावस्थाने प्रीतिपूर्व्वक मानों मुझसे यह कहकर कि हेपुत्र क्या अब भी घर में रहोगे मेरी ठोढ़ी पकड़ली तब मुझे शीघ्रही वैराग्य उत्पन्नहुआ और वनजानेकी इच्छासे मैंने कुटुम्ब का सम्पूर्णभार अपनेपुत्रपर रखदिया और स्त्रीसमेत मैं कालिंजर पर्व्वतपर चलागया मेरे स्नेहसे राज्य को त्यागकर मेरा प्रियमित्र पुलिन्दकभी मेरेपास चलाआया वहां जाकर मुझे अपने पूर्व्वजन्मकी और समाप्तहुए श्रीशिवजीके शापकी यादआगई वह सब मैंने पुलिन्दक और मनोवतीसे कहदिया इसके उपरान्त मनुष्य शरीरके त्यागकरनेकी इच्छासे मैंने यहीस्त्री और मित्र मुझको पूर्व्वजन्म में भी मिलें और स्मरणभी बनारहै यह कहकर और हृदयमें श्री शिवजी का ध्यानकरके उस पर्व्वतपरसे स्त्री तथा मित्र समेत गिरकर शरीरका त्यागकिया १६५ वही मैं इसविद्याधरके कुलमें अपने पूर्व्वजन्मको स्मरण करताहुआ जीमूतवाहननाम से उत्पन्नहुआहूं और वह पुलिन्दक श्रीशिवजीकी कृपासे सिद्धोंके राजा विश्वावसुके पुत्र मित्रावसुनाम तुमहो और वह मनोवतीनाम मेरीस्त्री तुम्हारी बहिन मलयवती नाम से उत्पन्नहुई इसप्रकार तुम हमारे पूर्व्वजन्मके मित्रहौ और तुम्हारी बहिन हमारी पूर्व्वजन्मकी स्त्री है इससे इसकेसाथमें विवाहकरना योग्यही है परन्तु पहिलेजाकर हमारेमातापितासे कहो जब वहस्वीकार करलेंगे तब यह कार्य्यसिद्धहोगा इसप्रकार जीमूतवाहनसे सुनकर मित्रावसुने उसके मातापितासे जा॰ कर अपना अभीष्टकहा जब उनलोगोने उसकीबात स्वीकार करलीनी तो उसने अपने माता पितासे सब वृत्तान्तकहा वह भी जब उसकेमनोरथको सुनकर प्रसन्नहुए तबउसनेजाकर अपनी बहिनकेविवाह की तैयारीकरी और मलयवतीका विवाह जीमूतवाहनके साथ विधिपूर्व्वक करदिया उससमय विद्या॰ धर सिद्ध और अनेक आकाशचारी देवयोनियोंका बड़ाउत्सवहुआ इसप्रकार विवाहकरके उस मल॰ याचलपर्व्वतपर जीमूतवाहन अपनी मलयवती स्त्रीसमेत बड़ेऐश्वर्य्यको भोगकरताहुआ रहनेलगा १७६ एकसमय जीमूतवाहन अपनेसाले मित्रावसुको साथलेकर समुद्रके किनारों की सैरकरनेको गया वहां जाकरदेखा कि एकयुवापुरुष उदासीन होकर आया है और हापुत्र २ हापुत्र कहकर रोतीहुई अपनी माताको लौटारहाहै उसीके साथमें एकदूसरापुरुष औरहै जिसने कि उसे एकबड़ीऊंची शिलाके पास जाकर छोड़दियाहै यह देखकर जीमूतवाहनने उसउदासीन पुरुषसेपूछा कि तुम कौनहो क्या चाहते हो और तुम्हारीमाता क्यों शोककररहीहै यह सुनकर उसनेकहा कि पूर्व्वसमय मे कश्यपमुनि की स्त्री कद्रू और विनताने आपसमें कथाप्रसंगसे परस्पर यह विवादकिया कि सूर्य्यके घोड़ेकाले हैं अथवा श्वेत तब कद्रूने कहा कालेहैं और विनताने कहा श्वेत और यह प्रणकिया कि जो हारे वह दासीहोय तब कद्रूने एकान्तमें अपनेपुत्र सर्पों से कहकर विषकेफूत्कारोंसे सूर्य्यके घोड़े काले करवादिये और विनता को उसीप्रकारके काले दिखलाकर छलसे उसेजीतकर अपनीदासी बनालिया ठीककहाहै स्त्रियोंकादाह बड़ाही कठिनहोताहै १८४ यह सब वृत्तान्त जानकर विनताकेपुत्र गरुड़ने कद्रूको समझाकर अपनी माताको दासपनेसे छुटानेकी प्रार्थनाकी तब कद्रूकेपुत्र सर्पोंनेशोचकर गरुड़सेकहा किहेवैनतेय देवता

लोगोंने समुद्रके मथनेका प्रारंभ कियाहै वहींसे अमृत लाकर जो हमको देतो अपनी माताको लेजाओ क्योंकि तुम बड़े बलवान्हो सर्पोंके यहवचन सुनकर गरुड़ने क्षीरसमुद्रमें जाकर अमृतके लिये बड़ाही पुरुषार्थ दिखाया गरुड़के पराक्रमको देखकर प्रसन्नहुए भगवान्विष्णुनेकहा कि तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्नहूं तुमकोई वरमांगो भगवान्के वचन सुनकर माताके दासीभाव सेक्रुद्धहुए गरुड़ने यहवरमांगा कि सर्प हमारे भक्ष्यहोजायँ भगवान्नेकहा ऐसाही होगा इसप्रकार भगवान्से वरपाकर और अपने पराक्रम से अमृतलेकर जब गरुड़चलनेलगे तब इन्द्रने सबवृत्तान्त जानकर उनसेकहा कि हेपक्षीन्द्र ऐसाउपायकरना जिससे मूर्ख सर्प अमृत न खासकें और मैं उनसे लेआऊं इन्द्रके वचनको स्वीकार करके विष्णुभगवान्के वरदानसे बड़े प्रचंड गरुड़जी अमृतके कलशको लेकर सर्पोंके पासआये और उसके प्रभाव से डरेहुए मूर्ख सर्पों से बोले कि यह अमृत हम लेआये हैं तुम हमारी माताको छोड़कर इसकोलो और जो तुम्हें सन्देहहोवे तो मैं इसे कुशोंपर रक्खे देताहूं और अपनी माताको छुड़ाकर लियेजाताहूं तुम इसेलेलेना सर्पों ने गरुड़की बात स्वीकार करलीनी तब गरुड़ ने पवित्र कुशासनपर अमृतका कलश रखदिया और सर्पोंने उनकी माताको छोड़दिया इसप्रकार अपनी माताको दासीभाव से छुटाकर गरुड़जीके चले जानेपर जैसेही सर्प निस्सन्देह होकर अमृतको लेने लगे वैसेही इन्द्र वहां आकर अपनी शक्ति से सर्पों को मोहित करके कुशासनपरसे अमृतके कलशको हरलेगया तब सर्प अत्यन्त दुःखित होके उन कुशोंको इसलोभसे चाटनेलगे कि कदाचित् कुछ अमृतइनमें लगगयाहोगा इससे जिह्वा के कटजानेसे वह नागकहीं द्विजिह्वताको प्राप्तहोगये ठीकहै (हास्यादृतेकिमन्यत्स्यादतिलौल्यवतांफलम्) अत्यन्त लोभियोंको हँसीकेसिवाय और क्या फलहोनाचाहिये २०० इसके उपरान्त सर्पोंको अमृत तो नहीमिला परन्तु गरुड़ने वैरमानकर विष्णुभगवान्के वरसे वहां आनकर उनका खानाप्रारम्भकरदिया गरुड़के आने से पातालमें द्विमुहे विषरहितसर्प तो निर्जीवहोजाते थे और गर्भिणीनागिनियों के गर्भ गिरपड़ते थे इसप्रकार सर्पोंको नष्टहोते देखकर वासुकीने विचारकरके बड़ेबलवान् गरुड़से प्रार्थनाकरके यहनियमकरके कहा कि हे पक्षीन्द्र एकसर्प हम तुम्हारेलिये समुद्रकेतटके पर्व्वतपर रोज भेजाकरेंगे आप पातालमें न आयाकरिये क्योंकि आपके यहांपर आनेसे बहुतसे सर्प एकसाथही नष्टहोजाते हैं इससे हमारे और आप दोनोंके स्वार्थकीहानिहोती है वासुकी के इसवचनको स्वीकारकरके वासुकीके भेजेहुए एकसर्पको रोजयहां गरुड़खानेलगे इसप्रकारसे यहां बहुतसेसर्प नाश हुएहैं मैं शङ्खचूड़नाम सर्पहूं और आज मेरीबारी है इसीसे मैं सर्पराजकी आज्ञासे गरुड़के भोजनकेलिये इस वध्यशिलापरआयाहूं और यहीकारणहै कि मेरी माता अत्यन्त शोककररही है उसके यह वचनसुनकर जीमूतवाहनने बहुत दुःखित होकर कहा कि सब परमेश्वर कुशलकरेंगे और यहभीकहा कि सर्पों के राजा वासुकीबड़ेहीनिस्सत्त्वहैं जो कि अपनेही हाथसे अपनी प्रजाको शत्रुकीभेटकरते हैं उस नपुंसकने पहले अपने आपकोही गरुड़को न देकर अपने वंशकानाशदेखना स्वीकारकिया कश्यपजी से उत्पन्नहोकर गरुड़भी कैसापापकरते हैं ठीकहै (देहमात्रकृतेमोहःकीदृशोमहतामपि) महात्मालोगोंको भी केवल शरीरही के निमित्त कैसा

मोहहोताहै तो आज मैं गरुड़को अपनाशरीरदेकर तुम्हें बचाऊंगा हे मित्र शोकमतकरो जीमूतवाहनके यह वचनसुनकर शङ्खचूड़ने धैर्य्यधारणकरके यह वचनकहा कि ईश्वर न करे ऐसाहोय हे वीर अब ऐसा मतकहना काचकेनिमित्त मोतीकीहानिकरना उचितनहीं मैं ऐसाकरके कुलकाकलंकी नहींहोऊंगा इस प्रकार जीमूतवाहनसेकहकर और क्षणभरमें गरुड़के आनेका समयजानकरके शङ्खचूड़ समुद्रके तटपर वर्तमान श्रीगोकर्णनाम शिवजीको अन्तसमयमें नमस्कारकरनेकोगया २१८ उसके चलेजानेपर अत्यन्तदयालु जीमूतवाहननेजाना कि उसके बचानेका अवसरमुझेमिला और शीघ्रही उसवातको विस्मृतसीकरके युक्तिपूर्व्वक किसी कार्य्य के बहानेसे मित्रावसुको अपनेघरभेजदिया उससमय निकटआये हुए गरुड़के पङ्खोंकी वायुकेवेगसे वहांकी पृथ्वी जीमूतवाहनके सत्वके देखनेके आश्चर्य्य से मानोंकांप उठी उस भूकम्पसे गरुड़को आतेहुएजानके परमदयालु जीमूतवाहन उस वध्यशिलापर चढ़गया उसी क्षणमें अपनीछायासे आकाशको आच्छादितकरतेहुए गरुड़जी चोंचमारकर जीमूतवाहनको उठालेगये और जिसके शरीरसे रुधिरटपकरहाहै जिसकी चूड़ामणि उखड़कर पृथ्वीपरगिरपड़ी है ऐसे जीमूतवाहन को पर्व्वतके शिखरपर लेजाकरखानेलगे उससमय आकाशसे पृथ्वीपर पुष्पोंकी वृष्टिहुई और उसेदेखकर गरुड़को आश्चर्य्यहुआ कि यहक्या वातहै यहां तो गरुड़जी जीमूतवाहनको खारहे थे और वहांगोकर्ण नाम शिवजीको नमस्कारकरके लौटेहुए शङ्खचूड़ने वध्यशिलापर पड़ाहुआ रुधिरदेखा यह देखकरकहा कि हाय मुझेधिक्कारहै मेरे लिये उस महात्माने शरीरदेदिया तो इससमय गरुड़ उसेकहांलेगयेहोंगे जल्दी से ढूंढूं कदाचित् मिलजाय यह शोचकर वहउसरुधिरकीधारको देखताहुआचला इसीवीचमें गरुड़ने जीमूतवाहनको प्रसन्नदेखकर भक्षणकरनात्यागकर आश्चर्य्य पूर्व्वक शोचा कि क्या यह कोई औरही है जो मुझसे भक्षणकियाजाता भी दुःखके सिवाय प्रसन्नहोरहाहै इसप्रकार शोचतेहुए गरुड़जी से जीमूतवाहन अपने अभीष्टको सिद्धकरने के लिये बोला कि हे पक्षिराज मेरे शरीरमें अभीरुधिर और मांस है तुमक्यों विनातृप्तहुएही भोजनसे निवृत्तहोगयेहो यहसुनकर गरुड़ने बहुत आश्चर्य्ययुक्तहोकर कहा कि साधो तुम सर्प तो नहींहो वताओ कौनहो यह सुनकर जीमूतवाहनने कहा कि सर्पहीहूं तुम अपने कामकोकरो (आरभ्याद्यसमाप्तैव, किंधीरैस्त्यज्यतेक्रिया) क्या धीरलोग कार्य्यको प्रारम्भकरके विना समाप्तकियेही छोड़देते हैं जिससमय जीमूतवाहन यह कहरहाथा उसीसमय शङ्खचूड़ने दूरसे पुकारकर कहा कि हे गरुड़ यह सर्पनहीं है तुम्हारा भक्ष्यसर्प मैं हूं तुम इसे छोड़दो यह तुमको कैसा अयोग्यभ्रम हुआहै यह सुनकर गरुड़को तो बड़ाभ्रमहुआ और जीमूतवाहनको अपने मनोरथ के न होनेसे खेदहुआ तब परस्परकी वातोंसे जीमूतवाहनको विद्याधरोंका स्वामीजानकर गरुड़जीको अज्ञानतासे उसकेखाने का बड़ासन्तापहुआ कि अरेमुझपापी ने यहबड़ाही अधमकार्य्यकिया अथवा कुमार्गमें चलनेवालोंको पापसुलभहीहोते हैं एकयही महात्मा प्रशंसाकरनेके योग्यहै जिसने परायेनिमित्त प्राणदेकर ममताके मोहमें पड़ेहुए सम्पूर्णको तुच्छकरदिया २४० इसप्रकार विचारकरके पापसेछूटने के लिये अग्निमें प्रवेश करनेकी इच्छाकरतेहुए गरुड़से जीमूतवाहनने कहा कि हे पक्षीन्द्र क्यों दुःखीहोतेहो जो तुम सत्य २ही

पापसे डरतेहो तो अब फिर कभी सर्पोंको न खाना और जिनको खाचुकेहौ उनके लिये पश्चात्तापकरो यही इसकाउपायहै और अन्य तुम्हारा शोचनाव्यर्थ है इसप्रकार उसदयालुके वचनोंको सुनकरगरुड़ने प्रसन्नहोकर गुरुके समान उसके वचन स्वीकारकरलिये और जीमूतवाहनके घायलअंगोंको पुष्टकरनेके लिये तथा अन्य मरेहुए सर्पों के जिलानेके लिये स्वर्ग में अमृतलेनेको गरुड़जी चलेगये इसकेउपरान्त मलयवतीकी भक्ति से प्रसन्नहुई भगवती ने साक्षात् वहांआकर जीमूतवाहनपर अमृतसींचा इस्से उस के अंग पहलेसे भी अधिक सुन्दरहोगये तब देवतालोगों ने आनन्दसे आकाशमें दुन्दुभीवजाई इसप्र-कार जीमूतवाहनके स्वस्थहोजानेपर गरुड़ने स्वर्ग से अमृतलाकर संपूर्ण समुद्रके तटपर बरसाया उस्से जिन सर्पोंका हाड़आदिक कोई भी अंगपड़ाथा वह सब जीउठे उससमय अनेकसर्पों से व्याप्त समुद्रका तट ऐसा शोभितहुआ कि मानों गरुड़के भयसे रहितहोकर संपूर्ण पाताल जीमूतवाहनके देखने को आयाहै २५० इसके उपरान्त अक्षय शरीर तथा यशसे विराजमान जीमूतवाहन को जानकर उसके ब-न्धुजन अत्यन्तप्रसन्नहुए और उसकी स्त्री तथा माता पिताभी अत्यन्त आनन्दितहुए ठीकहै (कोन प्रहृष्येद्दुःखेनसुखत्वपरिवर्त्तिना) सुखरूपसे अन्तमें परिणत (बदलने) होनेवाले दुःखसे कौन नहीं प्रसन्नहोताहै इसकेउपरान्त जीमूतवाहन से आज्ञालेकर शंखचूड़ पातालको चलागया और जीमूतवा-हनका यशतीनोंलोको में छागयाउससमय श्रीभगवतीकीकृपासे जीमूतवाहनके मतंगादिक बांधवजो कि प्रथम विरुद्धहोगये थे वह सब फिर भयभीतहोकर आप आकरउस्सेमिले और बहुतसी प्रार्थनाकरके जीमूतवाहनकोमलयाचलसेहिमालयपर लेगये वहांमित्रावसुमलयवती तथा अपने मातापिता समेत जी-मूतवाहन विद्याधरोंका चक्रवर्त्तीहोकर बहुतकालतक राज्यका भोगकरतारहा इसप्रकार तीनोंलोकों के हृदयमें चमत्कारकरनेवाले हैं चरित्र जिनके ऐसे सज्जनों के पासअनेकप्रकारकी सम्पत्तियांआजाती हैं यौगन्धरायणके मुख से इसकथाको सुनकर गर्भकेभार से उत्तममनोरथवाली रानी वासवदत्ता अत्यन्त प्रसन्नहुई इसके उपरान्त प्रसन्नहुए देवताओं की निरन्तर आज्ञाओं के विश्वाससे होनेवाले विद्याधरोंके स्वामी अपने पुत्रकी कथासे वह दिन वासवदत्ताने अपने पति के निकट बैठे २ व्यतीत किया २५१॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांनरवाहनदत्तजननलम्बकेद्वितीयस्तरङ्गः २॥

इसकेउपरान्त किसी दिन मंत्रियों समेत एकान्तमें बैठेहुए राजाउदयन्से वासवदत्तानेकहा हे आर्य पुत्र जबसे मैंने यह गर्भधारणकियाहै तबसे इसके रक्षाकरनेकी बड़ीचिन्ता मेरेहृदयमें रहती है गतरात्रि को उसीकी चिन्तामें जब मुझे कुछनिद्राआई तबस्वप्नमें भस्मको संपूर्णशरीरमें धारण कियेहुए मस्तकमें चन्द्रमाको धारणकिये त्रिशूलहाथमेंलिये और पीली २ जटाओं से युक्त एकपुरुषको मैंने देखा वह दया पूर्वक मेरेपासआकर मुझसेबोला कि हे पुत्री गर्भकेलिये कोईचिन्तामतकरो मैं सदैव इसकी रक्षाकरताहूं क्योंकि मैंनेही तुझे यहदियाहै और तेरे विश्वासकेलिये एकबात कहताहूं उसेसुन कल कोई स्त्री अपनेपति को मिथ्या दोषारोपणकरके उसे लेकर तुम्हारेयहां विज्ञापन करनेको आवेगी वह दुष्ट स्त्री अपने बांधवों के बलसेअपनेपतिको मरवानेके अभिप्रायसे जो कुछ कहेगी सबमिथ्याहोगा इस्से हे पुत्री तुम उदयन्से

पहलेही कहदेना जिस्से वह साधूवचजाय यहकहकर उसमहात्माके अन्तर्द्धान होजानेपर मैं एकाएकी जगपड़ी और प्रातःकाल होगया १० वासवदत्ताके यहवचनसुनकर सबों ने यह निश्चयकिया कि यह श्रीशिवजीकी कृपाथी और सबकेचित्तमें आश्चर्य्यपूर्व्वक उसवृत्तांतके देखनेकी इच्छाहुई उसीक्षणमें मुख्य प्रतीहारने उदयन्से आकर कहा कि एकस्त्री अपने बांधव और पांचो पुत्रों समेत कुछ विज्ञापन करनेको आई है और अपने विरसपतिको भी साथमें लियेहुएहै यहसुनकर रानी के स्वप्नके वृत्तांतसे विस्मितहुए राजानेकहा कि उसे यहांलेआओ और रानी वासवदत्ताको स्वप्नकीसत्यता देखकर सत्पुत्र प्राप्तहोने के निश्चयसे बड़ाही आनन्दहुआ इसकेउपरान्त सबलोगों से उत्कण्ठापूर्व्वक देखीगई वहस्त्री अपने पतिसमेत प्रतीहारकी आज्ञासे भीतरआई और भीतर आकर बड़ी दीनतापूर्व्वक सबको यथा-योग्य प्रणामकरके रानी समेत राजासेबोली कि यह मेरापतिहोकरभी मुझ निरपराध अनाथको भोजन वस्त्रादिक नहीं देताहे उसके यह कहनेपर उसकापतिबोला कि यह अपने बन्धुओं समेत मेरे मारनेकी इच्छासे मिथ्या बनाकर कहती है मैंने सालभर पहलेहीसे इसे भोजन वस्त्रादिकी संपूर्ण सामग्री देदी है इसविषयमे इसके बांधव और अन्यसाधारण लोगभी मेरेसाक्षी हैं उसका यह विज्ञापन सुनकर राजाने कहा कि रानीकेस्वप्नमें साक्षात् शिवजीही साक्षीहोचुके हैं तो अन्य साक्षियोंका क्याप्रयोजनहै इस्सेबन्धु-ओं समेत इसस्त्रीकोही दण्ड देनाचाहिये राजाके यहवचनसुनकर बुद्धिमान् यौगन्धरायणने कहा कि हे महाराज यद्यपि आपका वचनबहुतठीकहे तथापि साक्षियों के वचनसे जोयोग्यहोय सो करनाचाहिये क्यों-कि स्वप्नके वृत्तान्तकोनहीं जाननेवालेलोग आपके न्यायपर कैसे विश्वासकरेंगे यह सुनकर राजाने सा-क्षियोंको उसीसमय बुलवाकरपूछा तो उन्होंने उसस्त्रीको मिथ्यावादिनीकहा तब राजाउदयन्ने यहप्रकट करके कि इसने अपने सत्पतिसे द्रोहकियाहै उसेबांधव तथा पुत्रोंसमेत अपने देशसे निकलवादिया और उसके पतिको दूसरे विवाहके योग्य बहुतसा धनदेकर छोड़दिया २६ (पुमांसमाकुलंक्रूरा पतितंदुर्द्दशावटे जीवन्तमेवकृष्णाति काकीवकुकुटुम्बिनी) दुर्द्दशारूपी गढे में पड़ेहुए व्याकुल पुरुपको काकी के समान दुष्टस्त्री जीतेहीजीते मारनेकी इच्छाकरती है (स्निग्धाकुलीनामहतीगृहणीतापहारिणीतरुच्छायेवमार्गे स्थापुण्यैःकस्यापिजायते) स्निग्धा (घनी और स्नेहयुक्त) कुलीना (पृथ्वी मे व्याप्त और सत्कुलमेउत्प-न्नहुई) तापहारिणी (धूपसेबचानेवाली और दुःखकी दूरकरनेवाली) और महती (बड़ी और महत्वगुण युक्त) और मार्गस्था (मार्गमें स्थित और सन्मार्गमेंचलनेवाली) वृक्षकी छायाकेसमान स्त्रीपुण्यों से किसी कोमिलती है इसप्रकार इसप्रसंगसे कहतेहुए राजासे पासमें बैठाहुआ कथा कहने में चतुर वसन्तकबोला कि हेराजा इस संसारमें विरोध अथवा स्नेह प्रायः पूर्व्वजन्मके संस्कारके संयोगसे होताहै इसी विषय में मैं आपको एककथा सुनाताहूं आप सुनिये काशीजीमें विक्रमचण्डनाम एकराजाथा उसके अत्यन्त प्रिय सिंहपराक्रमनाम एकसेवकथा वहरणके सिवाय द्यूतमेंभी अद्वैत जीतनेवालाथा उससिंहपराक्रमके कल-हकारी हह यथार्थ नामकी स्त्रीथी वहजेसी कुरूपथी वेसीही चित्तसेभी कुटिलथी सिंहपराक्रम राजासे और द्यूतसे बहुतसा धनलाय २ कर उसको देताथा परन्तु वहदुष्टा स्त्री अपने तीन पुत्रोंसमेत क्षणभरभी विना

कलहकिये नहीं रहतीथी सिंहपराक्रमसे यह कहकर कि तू नित्य बाहरही मद्यपान और भोजन करता है और मुझेकुछ नहींदेता अपने पुत्रोंसमेत उससे यह कहकर अत्यन्तसताया करतीथी यद्यपि वह भोजन तथा वस्त्रोंसे उसे नित्य प्रसन्न करताथा तथापि वह दुरन्तभोग तृष्णाके समान सदैव जाज्वल्यमान बनी रहतीथी इसके उपरान्त धीरे २ उसके क्रोधसे बहुत खिन्नहोकर सिंहपराक्रम विन्ध्यवासिनीके दर्शनको चलागया और वहां निराहारहोकर पड़ारहा रात्रिके समय उससे भगवती ने स्वप्नमें कहा कि हेपुत्र उठो उसी काशीपुरीको जाओ वहां जो सबसे बड़ा बरगदकावृक्षहै उसकी जड़में खोदनेसे तुमको बहुतसाधन मिलैगा और उसी मे खड्गके समान निर्म्मल बड़ाभारी गरुड़ माणिक्यका एकपात्रमिलैगा और उसको देखनेसे उसके भीतर सम्पूर्ण प्राणियोंकी पूर्व्वजन्मकी जाति दिखाईदेगी जिसे कि तुम जाननाचाहते हो उसीसे अपनी और अपनी स्त्रीकी पूर्व्वजन्मकी जातिको जानकर खेदरहितहोकर सुखपूर्व्वक रहोगे इसप्रकार भगवतीसेकहा गया वह सिंहपराक्रम जगपड़ा और प्रातःकालही पारणकरके काशीपुरीको चलाआया वहां आकर बरगदकी जड़से बहुतसी निधि और मणिमय पात्र उसकोमिला और उसपात्र में जोउसने देखा तो उसकीस्त्री पूर्व्वजन्मकी रीछनीथी और वह सिंहथा इसप्रकार पूर्व्वजन्मके महावैरकी वासनासे अपने वैरको निश्चल जानकर उसने शोक और मोहछोड़दिया फिर उसपात्रके प्रभावसेबहुतसी भिन्नजातिवाली कन्याओंको छोड़कर पूर्व्वजन्मकी सिंहिनी सिंहश्रीनामवाली दूसरीस्त्रीके साथविवाह किया और उसकलहकारीको केवल भोजन देकर अलग करदिया और निधिको पाके नवीन स्त्रीसमेत सुखपूर्व्वक रहनेलगा ५० हेराजाइसप्रकार इससंसारमे प्राक्तन संस्कारके वशसे मनुष्योंकीस्त्री आदिक वैर तथा स्नेहसे युक्तहोती हैं वसन्तक के मुखसे इस विचित्र कथाको सुनकर राजा उदयन् वासवदत्ता समेत अत्यन्त प्रसन्नहुआ इसप्रकार गर्भवती वासवदत्ताके मुखचन्द्रको देखकर नहीं तृप्त होतेहुए राजाउदयन् के सब मन्त्रियोंके यहां होनेवाले कल्याणके सूचकपुत्र उत्पन्नहुए पहले मन्त्रियोंमें मुख्य यौगन्धरायण के मरुभूति नाम पुत्रहुआ रुमण्वान्के हरिशिख नाम पुत्रहुआ फिर वसन्तकके तपन्तक नाम पुत्रहुआ और सबके पीछे सम्पूर्ण प्रतीहारोंके अधिकारी नित्योदितके यहां गोमुख नाम पुत्रहुआ इसप्रकार मन्त्रियोंके पुत्र होनेसे महा उत्सवहोनेपर यह आकाशवाणीहुई कि होनेवाले राजा उदयन्के चक्रवर्तीपुत्र के यह बालक वैरियोंके नाश करनेवाले मन्त्रीहोंगे इसके उपरान्त कुछदिनोंके व्यतीत होनेपर रानीवासवदत्ता आसन्नप्रसवाहुई और सुन्दर बालक होनेके स्थानमें गई उसस्थानके झरोखे मदार तथा छोंकर के काष्ठसे बन्दकरदिये गये बहुतसे मणियोंके दीपक उसमें बालेगये अनेक प्रकारके शस्त्र उसस्थान में रखदियेगये दीपकोंकी ज्योति से वह शस्त्र ऐसे चमकतेथे मानों गर्भकी रक्षाकरनेके निमित्त अपनेतेज को प्रकटकररहेथे और मन्त्रियोने अनेक मन्त्र तन्त्रों से उसस्थानकी रक्षाकी वह स्थान उससमय ऐसा मालूम होताथा मानों मातृका देवियोंका पापका नाशकरनेवाला किलाहै ६३ ऐसे सुन्दर उसस्थान में सुन्दर समयके आजानेपर निर्म्मल चन्द्रमाको आकाशके समान वासवदत्ताने पुत्र उत्पन्नकिया उसपुत्र के उत्पन्न होनेसे केवल वह मंदिरही नहीं प्रकाशितहुआ किन्तु उसकी माता के हृदयका शोकरूपी

अन्धकारभी दूरहोगया इसके उपरांत अन्तःपुरके रहनेवालोंके आनन्दितहोनेपर राजा उदयनने भीतरसे आयेहुए किसी पुरुषसे पुत्रकाजन्म सुना उसे प्रसन्नहोकर राजाने राज्यभी नहींदेदिया इसमें लोभकारण नहीं है किन्तु लोग अनुचित समझेंगे यह समझकर नहीं दिया और शीघ्रही बड़ी उत्कण्ठासे अन्तःपुर में आकर वहुतादिनोंके पीछे अपने मनोरथको सफलजानकर पुत्रका मुखदेखा रक्तवर्ण के सुन्दर ओष्ठ पल्लवों से युक्त और चंचलमृदु ऊनके समान सुन्दरकेशवाला बालकका मुख राज्यलक्ष्मी के क्रीड़ा के कमल के समान शोभितहोताथा और भयसे पहलेही अन्य राजालोगों की राज्यलक्ष्मी से त्याग किये गये छत्र और चामरोंके चिह्नोंसे उस बालकके कोमलचरण अत्यन्तही शोभितहोतेथे और अत्यन्त हर्ष के कारण आंसुओं से भरी दृष्टिसे राजा जब उसे देखताथा तब मालूमहोताथा कि मानों पुत्रका स्नेह राजाकी दृष्टिसे टपकरहाहै उससमय यौगन्धरायण आदिक मन्त्रियोंके अत्यन्त प्रसन्नहोनेपर आकाश-वाणी हुई कि हे राजा यह तुम्हारापुत्र कामदेवका अवतारहै और नरवाहनदत्त इसका नामहै यहथोड़े-ही कालमें दिव्य कल्पभर विद्याधरों का चक्रवर्ती होगा यह कहकर आकाशवाणी तो बन्दहोगई और आकाशसे देवता लोगोंने पुष्पोंकीवृष्टि करके नगाड़ेबजाये तब देवतालोगों केभी आनन्दको देखकर राजानेभी बड़ाउत्सव किया उससमय मन्दिरसे निकलेहुए नगाड़ोंके शब्द सम्पूर्ण विद्याधरों से मानों राजाके जन्मके कहनेकेलिये फैले मन्दिरोंके ऊपरलगीहुई वायु से चंचल रक्तवर्णकी पताकाभी मानों परस्पर गुलालसा उड़ाती और मलतीथी पृथ्वी में अङ्गसमेत कामदेव उत्पन्नहुआ है इसप्रसन्नता से मानों आईहुई अप्सराओंके समान वेश्या पद २ पर नाचकरनेलगीं राजासे प्राप्तहुए नवीन वस्त्रतथा आभूषणोंकेद्वारा संपूर्णपुरमें समान ऐश्वर्य्य दीखनेलगा उससमय याचक तथा परिजनोंको राजाधन देनेलगा तबकोशके सिवाय और कोईभी वहांका निवासी खाली न रहा उससमय सबओरसे साक्षात् दिशाओं के समान मंगलोंको लेकर अपने २ अनुसार दक्षिणालेके और वहुतसे रक्षकोंको साथमें लेकर नृत्यकराती हुई तथा नगाड़े वजवाती हुई संपूर्ण आश्रित राजालोगों की रानियां भेटें लेलेकर आईं उससमय आनन्दसेभरेहुए पुरमें नृत्यमय चेष्टापूर्ण पात्रमय वचन त्यागमय व्यवहार नगाड़ोंकी ध्वनिभरे शब्द चीनकेवस्त्रयुक्त सबलोग और याचकमय सबपृथ्वीहोगई इसप्रकार वहुत दिनके उपरान्त पुरवासियोंके पूर्णहुए मनोरथोंसमेत वहउत्सव निवृत्तहुआ ८६ इसकेउपरान्त राजाने आकाशवाणीके अनुसार अपने पुत्रका नरवाहनदत्तनाम रक्खा और वहनरवाहनदत्त शुक्लपक्षकी द्वितीयाके चंद्रमाके समान वृद्धिको प्राप्तहोनेलगा जिससमय वहबालक चमकतेहुए नखवाले चरणों से दोतीन कदमचल-ताथा और दांतोंके अंकुरोंकी शोभासे मनोहर दोचारपदबोलताथा उससमय राजादेखकर और सुनकर अत्यन्तही प्रसन्नहोताथा इसके उपरान्त संपूर्ण मंत्रियोंने राजाके हृदयको आनन्ददेनेवाले अपने २ बालक राजपुत्रको लाकरदिये यौगन्धरायण मरुभूतिकोलाये रुमण्वान् हरिशिखकोलाये नित्योदित गोमुखकोलाये वसन्तक तपन्तककोलाये और शान्तिकर पुरोहित शान्तिसोमनाम तथा वैश्वानरनाम अपनेभाईके दोनों पुत्रोंकोलाया उससमय आकाशमें नगाड़ेबजे और फूलों की बरसाहुई और रानी

समेतराजाभी अपनेमंत्रियोंके पुत्रोंकोप्यारकरके अत्यन्त प्रसन्नहुआ बाल्यावस्थामेंही बड़ेउदयके कारण रूपगुणोंके समान मंत्रियोंके छःपुत्रोंके साथ नरवाहनदत्त सदैव बनारहताथा खेलनेमें अप्रकट सुन्दर अभिलाषोंको करतेहुए और प्रेमयुक्त राजालोगोंकी गोदियोंसे गोदियोंमें जातेहुए और कुछमुस्कुरातेहुए मुखारविन्दवाले पुत्रको देखतेहुए राजाउदयन्के वह दिन बड़ेआनन्दसे व्यतीतहोतेथे ९४॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांनरवाहनदत्तजननलम्बकेतृतीयस्तरंगः ३॥

नरवाहनदत्तजनननामचतुर्थलम्बकसमाप्तहुआ ४॥

चतुर्दारिकानामपंचमोलम्बकः

मदघूर्णितवक्त्रोत्थैः सिन्दूरैश्छुरयन्महीम् ॥
हेरंबः पातुवोविघ्नान्स्वतेजोभिर्दहन्निव १॥

इसप्रकार रानीसमेत राजाउदयन् नरवाहनदत्तनाम अपने पुत्रको पालनकरताहुआ रहनेलगा एक समय बालककी रक्षामें आतुरराजाको देखकर यौगन्धरायणने एकान्तमें उससेकहा कि हेराजा इसबालक की रक्षाकेलिये आप चिन्ता न कीजिये भगवान् श्रीशिवजी ने इसबालकको आपके यहां संपूर्ण विद्याधरोंका चक्रवर्ती होनेकेलिये उत्पन्नकियाहै इसबातको संपूर्ण विद्याधर अपनी विद्याओं के प्रभाव से जानकर ईर्षासे पापकरनेकेलिये हृदयमें क्षोभको प्राप्तहुए यह बातजानकर शशिशेखर श्रीशिवजी ने इसकी रक्षाकेलिये स्तंभकनाम गणेशको नियतकिया है वह सदैव अलक्ष्य होकर इसबालककी रक्षा किया करते हैं यहबात नारदजी आकर मुझसे कहगये हैं यौगन्धरायणके इसप्रकारसे कहतेहीं कहते आकाशके मध्य से किरीट कुण्डलोंको धारणकियेहुए और खड्गको लिये एक दिव्यपुरुष उतरा उसे प्रणाम करतेहुए देखकर राजाउदयन्ने अतिथि सत्कारकरके आश्चर्य्य पूर्व्वकपूछा कि तुमकौन हो और तुम्हारा यहां कौनकामहै उसनेकहा कि मैं मनुष्य योनिसे विद्याधरोंका स्वामीहोगयाहूं शक्तिवेग मेरा नामहै और बहुतसे मेरेशत्रुहैं मैं इससमय अपनी विद्याओंके प्रभावसे तुम्हारे पुत्रको अपना चक्रवर्ती होनेवाला जानकर देखनेको आयाहूं उसके यहवचन सुनकर राजाने नरवाहनदत्तको उसेदिखादिया और प्रसन्नहोकर उससे पूंछा कि हेमित्र विद्याधरत्व किसप्रकारसे मिलताहै वह कैसाहोताहै और तुमने कैसेपाया यहसबमुझसे कहो १४ राजाके यह वचनसुनकर उसने विनय पूर्व्वककहा कि हेराजा इस जन्ममें अथवा पूर्व्वजन्ममें श्रीशिवजीका आराधन करके उन्हींकी कृपासे धीरलोग विद्याधरीपदवीको पातेहैं विद्याखड्ग तथा मालाआदिके साधनसे विद्याधरपदवी कई प्रकारकीहोतीहै और मैंने जिसप्रकार से विद्याधरपदवी पाईहै उसेसुनो यह कहकर रानी वासवदत्ताके सन्मुख वह अपनी कथा कहने लगा कि पूर्व्वसमयमें पृथ्वीके आभूषणरूप वर्द्धमानपुरमें बड़ाप्रतापी परोपकारीनाम राजाथा मेघकी बिजली

के समान उसराजाके कनकप्रभानाम स्त्रीथी परन्तु उसमें चपलता नहींथी समयपाकर उसराजाके उसी रानीमें एक कन्या उत्पन्नहुई जिसे लक्ष्मीके रूपके अभिमानको दूरकरनेके लिये मानो ब्रह्माने बनायी थी राजाने रानीके नामके अनुसार उसका कनकरेखा नामरक्खा और वह कन्या संसारके नेत्रोंको आनन्द देतीहुई धीरे २ बढ़ी एकसमय उसकी युवावस्था देखकर राजाने रानीसे एकान्तमेंकहा कि हेरानी इसे युवा देखकर इसके विवाहकी चिन्ता मेरे हृदयमें बनी रहती है स्थानको (वर और स्वरोंके स्थान) नहीं प्राप्तहुई कन्यागीतके समान सुननेसे दूसरोंको भी क्लेशदेनेवाली होतीहै विद्याके समान कन्याको अपात्रमेंदेने से न यशहोताहै न धर्म होताहै परन्तु पश्चात्तापहोताहै इससे मैं किसराजाको यहकन्यादूं औरकौन इसके योग्यहै यहमुझे बहुतबड़ी चिन्ताबनी रहतीहै यहसुनकर कनकप्रभा हँसकर बोली कि तुमतो ऐसा कहतेहो और वह विवाहही करनानहीं चाहती आजही उसे गुड़िया खेलते देखकर मैंने कहाथा कि हे बेटी मैं तेरा विवाह कबदेखूंगी यहसुनकर वहबोली कि हे माता ऐसामतकहो मेराविवाह किसीके साथनकरना मेरावियोग तुमसे न होनाचाहिये मैं कन्याभावमें ही बहुत अच्छी हूं और जो तुम ऐसा न करोगी तो मेरी मृत्युहोजायगी इसमें कोई कारण है उसके यहवचन सुनकर मैं उदासीन होकर आपकेपास चलीआईहूं इससे जबवह विवाहही न करेगी तोवरढूंढनेसे क्या प्रयोजनहै ३२ रानी के यहवचन सुनकर राजा चकितहोकर कन्याके मन्दिरमें गया और उस्से बोला कि देवता तथा दैत्यों की भी कन्या तपकर २ के विवाहकी कामना करती हैं हे पुत्री तुमने उसका निषेध क्यो कियाहै यह सुनकर कनकरेखा नीचेको नेत्रकरके बोली कि हे तात इससमय मुझे विवाहकी कोई कामनानहीं है इस्से आपको भी उस्से क्या कामहै और आप क्यो आग्रह करते है यहसुनकर फिर बड़ाबुद्धिमान् राजा परोपकारी बोला कि हे पुत्री कन्यादानसे अधिक और कोई पुण्यपापोका नाशकरने वाला नहीं है और बन्धुओं से पराधीन कन्याभी स्वतन्त्रताको नहीं प्राप्तहोसक्ती कन्यापराये लिये ही उत्पन्नहोती है और रक्षा कीजातीहै बाल्यावस्थाके सिवाय पतिके विना उसका पिताके घरमें निवास कैसेहोसक्ताहै जो कन्या पिताके घरमें विवाहके विनाही ऋतुधर्मको प्राप्तहोती है तोउसके सबबांधवनरकको जाते हैं और शास्त्र में उसकन्याको वृषली और उसके पतिको वृषलीपति कहते हैं पिताके यहवचन सुनकर कनकरेखाने अपने मनकी बातकही कि हे तात जिसब्राह्मण अथवा क्षत्रीने कनकपुरी नामनगरी देखीहोय उसीके साथमेरा विवाह करना क्योंकि वही मेरापतिहोगा और नहीं तो व्यर्थ मुझे क्लेशदेनाहोगा उसके यह वचन सुनकर राजाने शोचा कि अच्छा इसने विवाहकी बाततो अंगीकारकरी मुझे मालूमहोताहै कि यहकोई देवी किसीकारणसे मेरे यहाँ उत्पन्नहुईहै और नहीं तो यहइस छोटीसी अवस्था में इतनी बात कैसेजानसक्ती यहशोचकर और उसके वचनो को स्वीकारकर राजाने वहाँ से उठकर अपना आह्निक किया ४६ दूसरेदिन राजाने सभामें आकर सबसे कहा कि तुमलोगो में से किसीने कनकपुरी देखी है जिसने देखीहोगी वहब्राह्मण हो अथवा क्षत्रीहो मैं उसे कनकरेखा और युवराज पदवी दूंगा यहसुनकर उनलोगोंने परस्पर एकदूसरे का मुखदेखकर कहा कि हेस्वामी हमलोगोंने कनकपुरीका नामभी नहीं

सुनाहै देखनेकी कौनक है तबराजाने प्रतीहारको बुलाकर कहा कि जाओ शहरभरे में ढँढोरा पिटवाओ किसीने कनकपुरी देखी है यानहीं राजाकी यह आज्ञापातेही प्रतीहारने बाहर जाकर राजपुरुषोंसे ढँढोरा पिटवाया संपूर्ण नगरभरमें ढँढोरापीट २ कर राजपुरुषोंने यहवचन कहा कि ब्राह्मण अथवा क्षत्री जिसने कनकपुरी देखीहोय वहकहै उसेराजा अपनी कन्या और युवराजपदवीदेगा इसढँढोरेको सुनकर संपूर्ण वृद्धपुरवासी कहतेथे कि आजयह क्या संपूर्ण नगरभरमें कनकपुरीके नामसे ढँढोरा पिटरहाहै यह तो हम वृद्धलोगोंने भी आजतक न कहींदेखी न सुनी यह बाततो सबने कही परन्तुयह बात किसीने भी नहीं कही कि मैंने कनकपुरी देखीहै उससमय उसनगरके निवासी बलदेवनाम ब्राह्मणके पुत्र व्यसनी तथा जुएसे निर्धन सत्यदेवनाम युवाब्राह्मणने वहढँढोरा सुना और शोचाकि मैं जुएमें संपूर्णधन हारगयाहूं इससे न पिताके यहां जासक्ताहूं और न वेश्याओंकेघर जासक्ताहूं तोअबमुझे कोईगतिनहीं है इससे ढँढोरियोंसे मिथ्या कहदूं कि मैंने कनकपुरी देखीहै कौनमुझे जानेगा कि इसनेनहीं देखीहै क्योंकि उसे किसी ने देखाही नहीं कदाचित् इसप्रकार से राजपुत्री के साथ मेरासमागम होजाय इसप्रकार शोचकर शक्तिदेवने राजपुरुषोंसे झूठमूठ कहदिया कि मैंने कनकपुरी देखी है तबराजपुरुषोंने कहा कि अच्छीबातहै तुमहमारे साथप्रतीहारके पासचलो वहउनकेसाथ प्रतीहारके पासगया और उस्सेभी जाकर कहा कि मैंने कनकपुरी देखी है वहभी सत्कारपूर्वक उसेराजाके पासलेगया राजाके आगेभी उसने निस्सन्देह होकर कहा कि मैंने कनकपुरी देखी है ठीककहाहै कि (द्यूततान्तस्यकिन्नाम कितवस्यहिदुष्करम्) जुएमें हाराहुआ धूर्त्तक्यानहींकरता ६५ राजानेभी निश्चयजाननेके लिये उसब्राह्मणको कनकरेखाकेपास भेजदिया कनकरेखाने प्रतीहारके द्वारा उसेकनकपुरी का देखनेवाला जानकर अपनेपास बैठाया और पूंछा कि क्यातुमने कनकपुरीदेखीहै उसनेकहाहां विद्यापढ़नेके समय सम्पूर्ण पृथ्वीपर घूमतेहुए मैंने कनकपुरी देखी है यहसुनकर उसकन्यानेकहा कि तुमवहां किसमार्गसे गयेथे और वह कैसीहै तबशक्तिदेवने कहा कि यहांसे मैंहरपुरनाम नगरकोगया वहांसे धीरे २ काशीजी पहुंचा काशीजीसे कुछ दिनों में पौण्ड्रवर्द्धननगरमें गया और वहांसे कनकपुरीनाम नगरीमें पहुंचा और वहांजाकर बिनापलकलगाये शोभादेखने के योग्य स्वर्गके समान बड़ेपुण्यात्माओंके भोगकरनेकी भूमि कनकपुरीदेखी और वहांविद्यापढ़कर कुछकालके पीछे मैंयहां चलाआया इसप्रकार जिसमार्गसे मैंगयाथा और जैसीवहपुरी है सोसबमैंने निवेदनकिया इसप्रकार उसधूर्त्त ब्राह्मणके कहचुकनेपर कनकरेखा हँसकरबोली कि हेब्राह्मण क्यासत्य २ तुमने वहनगरीदेखी है अच्छाफिरकहो कितुमकिसमार्गसे वहांगये थे यहसुनकर जबवह फिर धूर्त्तता करनेलगा तबउसने दासियोंसे उसेनिकलवादिया उसके चलेजानेपर वह उसीसमय अपनेपिताके पासगई और राजानेभी पूंछा कि क्यावहब्राह्मण सत्यकहताथा यहसुनकर राजकन्याने कहा किहेतात आप राजाहोकर भी विनाविचारे बातकरतेहो क्यानहीं जानते हो कि धूर्त्त लोग सीधे लोगोंको ठगते हैं वह ब्राह्मण झूठमूठमुझेठगना चाहताहै उसमिथ्यावादीने वहनगरीकभी नहीं देखी इससंसारमें धूर्त्तलोग अनेकप्रकारकी छलविद्याकरतेहैं सुनो इसीविषयमें मैं तुम्हें शिव और

माधवनाम दो धूर्त्तोंकी कथा सुनातीहूं यहकहकर वह कनकरेखा कथा कहनेलगी ९१ कि रत्नपुरनाम यथार्थ नामवाले नगर में शिव और माधव नाम दो धूर्त्त रहते थे उनदोनों ने बहुत से धूर्त्तोंको अपने साथ में लेकर अपनी माया के प्रयोग से नगर के सम्पूर्ण धनीलोग ठग लिये एकसमय उन दोनों ने आपसमें यह सलाहकरी कि यह नगर तो हमने सबठग लिया इससे अब उज्जयिनीपुरी में चलकररहैं वहां राजाका शंकरस्वामी नाम पुरोहित बड़ा धनवान् सुनाई देताहै युक्तिपूर्वक उससे धन लेकर मालव देशकी स्त्रियोंके रसको भोगकरेंगे उज्जयिनी के ब्राह्मण लोग उसे यमराज के समान कठिन कहते हैं क्योंकि वह उनसे आधी दक्षिणा लेलेता है और एक कन्याभी उसके है वह भी इसी प्रसंगसे हमें अवश्य मिलेगी इसप्रकार निश्चयकरके और अपने २ कर्त्तव्यको विचारकरके वह दोनों धूर्त्त उस पुरी से चले धीरे २ उज्जयिनी के निकट पहुंचकर माधवने राजपुत्रका भेष बनाकर सब सामान सहित नगर के बाहर डेरा किया और शिव पहलेही ब्रह्मचारी का भेष बनाकर अकेला उसनगरी में चलागया और वहां क्षिप्रा नदी के किनारेपर एक मठबनाकर उसमें मृत्तिकाकुशा भिक्षा के पात्र तथा मृगचर्मको सब के देखने के योग्य स्थान में रखकर रहनेलगा और प्रातःकाल बहुतसी मृत्तिका अपने शरीर में लपेटकर नदीके जलमें बहुतकालतक अधोमुख होकर रहताथा मानो कुकर्मसे होनेवाली अपनी अधोगतिका पहलेहीसे अभ्यास करताथा और स्नानकरके बहुतकालतक सूर्य्य के सन्मुख ऊपरको मुखकिये पड़ा रहताथा मानों अपनी शूली देनेकी योग्यताको प्रकटकरताथा फिर देवताके सन्मुख जाकर कुशों को हाथमें लेके पद्मासनसे बैठाहुआ दंभमें अत्यन्त चतुरहोकर जपकरताथा इसके अनन्तर साधु लोगों के हृदयोंके समान स्वच्छ पुष्पोंको लेकर श्रीशिवजीका पूजन करताथा और पूजनकरके फिरभी झूंठ मूंठ ध्यानदेकर जपकरताथा मानों आगे होनेवाले नरकोंका ध्यान करताथा और अपराह्नके समय मृगचर्मको पहनकर भिक्षाके निमित्त मायारूपी स्त्रीके कटाक्षके समान वह पुरमें घूमताथा ब्राह्मणोंके घरोंसे तीन भिक्षाओंको लेकर उसभिक्षाके तीनभाग करताथा एक भाग काकोंको देताथा एक भाग अभ्यागतोंको देताथा और एक भागसे अपना पेट भरताथा भोजनके उपरान्त मालाको लेकर फिर झूंठ मूंठ जप कियाकरताथा मानों अपने संपूर्णपापोंको गिनताथा और रात्रिके समय लोगोंकी सूक्ष्मतर्क करनेकी बातोंको विचारताहुआ अकेला उसीमठ में रहताथा इसप्रकार प्रतिदिन अत्यन्त कठिन कपटमें भरेहुये तपकोकरके उसने नगरीके निवासियों का चित्त अपने वशीभूत करलिया नगरभरे में उसकी यह प्रसिद्धिहोगई कि यह बड़ाशांत तथा तपस्वीहै और संपूर्णलोग उसके भक्तहोगये १०५ इसके उपरान्त उसकामित्र माधवभी दूतके मुखसे यहवृत्तान्त सुनकर नगरी में आया और वहांथोड़ीदूरपर किसी देवमन्दिरमें रहकर राजपुत्रके भेषसे क्षिप्रानदी में स्नानकरनेको गया और स्नानकरने के उपरान्त देवताके आगे अपने मित्रशिवको देखकर नम्रतापूर्वक उसकेपैरोंपर गिरपड़ा और सबलोगोंको सुनाकर बोला कि ऐसा और कोई तपस्वी नहीं है मैंने इसे बहुधा तीर्थोंपर घूमताहुआ देखाहै और शिव इसको देखकरभी उसीप्रकारसे खड़ारहा फिरमाधव अपने डेरोको चलागया रात्रिकेसमय दोनों ने एकस्थानमें

मिलकर भोजनतथा पानकरके आगे जोकुछ कर्त्तव्यथा उसकीसलाहकी पिछलेपहर शिवतो अपनी मठीमें चलाआया और माधवने प्रातःकाल उठकर एकधूर्त्त से कहा कि दो वस्त्रों की भेटलेकर राजा के पुरोहित शंकर स्वामीके यहांजाओ और उनसे जाकर विनयपूर्व्वक यहकहो कि माधवनाम राजपुत्र अपने गोत्री भाइयों के द्वारा राज्यसे निकाल दियागयाहै वह कई एक अन्य राजपुत्रोंको भी अपने साथ में लेकर और अपने पिताका बहुतसा धन लेकर दक्षिण दिशासे यहां आया है और आपके राजाकासेवन करना चाहताहै उसीने आपके दर्शन करने के लिये मुझको भेजाहै इसप्रकार कहकर माधवकाभेजाहुआ वहदूतभेटलेकर पुरोहितजी के यहां पहुंचा और एकान्त में भेट देकर उसने माधव का सब संदेशा उस्से कहदिया उसनेभी भेटके लोभसे और आगेको भी बहुतसा लाभसमझकर उन बातोंपर विश्वासकरलिया ठीकहै (उपप्रदानंलिप्सूनामेकंह्याकर्षणौषधम्) कुछ देना ही लोभियों के आकर्षण करनेकी परम औषधहै १२० इसके उपरान्त उसधूर्त्तके लौटआनेपर दूसरेदिन माधव अवकाश पाकर उसपुरोहितकेपास आपहीगया राजपुत्रोंके भेषको धारणकियेहुए बहुतसे धूर्तोंको साथमें लेकर पुरोहितके यहाँ पहुंचा पुरोहितनेभी पहलेहीसे उसका आगमन सुनकर आगे आकर उसेलिया और स्वागत पूछकर उसेबहुत प्रसन्न किया वहाँ थोड़ीदेर उसकेसाथ बैठकर माधव अपने डेरे पर चलाआया दूसरेदिन फिर दोवस्त्र भेजकर उसके पासगया और बोला कि कुटुम्बके अवरोधसे मैं सेवाकरनेकी इच्छा करताहूं इसीसे मैंने आपका आश्रय लियाहै और धनतो मेरेपास बहुतहै उसके यहवचन सुनकर पुरोहितने अधिक धनकेपानेकी इच्छासे कहा कि मैं तुम्हारा अभीष्ट सिद्धकरदूंगा और क्षणभरमें राजाके पास जाकर माधवकी जीविकाके लिये पुरोहितजीने विज्ञापनाकरी और राजाने भी उनके गौरवसे वह बात स्वीकार करली दूसरे दिन पुरोहित अन्यधूर्त्तों समेत माधवको राजाके निकट लेगया राजाने भी माधवकी आकृति राजपुत्रोंके समान देखकर आदर पूर्व्वक उसकी जीविका अपने यहाँ करदी इसके उपरांत माधव राजाकी सेवा करनेलगा रात्रिके समय वह अपने मित्र शिवके पास आकर सलाह कर जाया करताथा माधवसे उस पुरोहितने लोभसे कहा कि तुममेरेही घरमें आकर रहो तबवह अपने संपूर्ण साथियों समेत उसके घरमें जाकररहा और कृत्रिममाणिक्यों केबनेहुए भूषणोंसे भराहुआ पात्र उसी के यहाँ रखवाकर और अनेक बहानो से उसे बीच२ में भी खोलकर उन आभूषणोंसे उसने उस पुरोहित का चित्तहरलिया घासको देखकर पशुकेसमान लोभितहुए उस पुरोहितके विश्वासित होजानेपर माधव ने भोजन घटाकर अपना शरीर दुर्बलकरके मिथ्यारोग प्रगट किया कुछदिनोंके व्यतीत होनेपर शय्या के पास बैठेहुए पुरोहितसे धूर्त्तराज माधव धीमेस्वरसे बोला कि मेरे शरीरकीदशा अब अच्छी नहीं है इससे आप किसी उत्तम ब्राह्मणको बुलालाओ जिसे मैं संकल्प करके अपना सर्वधन देदूं इससे मेरे इसलोक और परलोक दोनोंमें उपकार होगा धीरलोग प्राणोको स्थिर न जानकर धनपर ममता नहीं करते हैं उसके यहवचन सुनकर दानकी जीविका करनेवाला पुरोहित बोला कि मैं ऐसाही करूंगा यह सुनकर माधव उसके पैरोंपर गिरपड़ा इसके उपरान्त पुरोहित जिन २ ब्राह्मणों को बुलाकर लाया

उन सबपर माधवने उत्तम न समझकर श्रद्धानकी यहदेखकर उसकेपास बैठाहुआ एक धूर्त्त बोला कि इसे प्रायः सामान्य ब्राह्मण अच्छो नहीं मालूमहोतो इससे यहजो क्षिप्रानदी के तटपर शिवनाम बड़ा तपस्वी ब्राह्मण रहताहै वह इसे अच्छामालूमहोताहै कि नहीं यहसुनकर माधवने उस पुरोहित से कहा कि आप मेरे ऊपर कृपाकरके उस ब्राह्मणको लेआइये क्योंकि उसके समान और कोई ब्राह्मण नहीं है १४३ उसके यहवचन सुनकर पुरोहित शिवके पासगया उससमय वह निश्चल ध्यानलगायेहुए बैठा था पुरोहित प्रदक्षिणा करके उसके सम्मुख बैठगया और उससमय शिवने धीरेसे नेत्रखोलकर देखा तब पुरोहित प्रणाम करके बोला कि हे प्रभो जो आप कोप न करें तो मैं एक प्रार्थनाकरूं यहसुनकर उसने इशाराकिया कि कहो तबवह बोला कि माधवनाम बड़ाधनवान् एकदक्षिणका राजपुत्र मेरेयहाँ रहताहै वह अपना सर्वस्वदानकरनेको तैयार है यदि आप स्वीकारकरें तो नानाप्रकारके रत्नोंसे जटित महामूल्य संपूर्ण आभूषण वह आपको देवे यहसुनकर शिवने धीरेसे कहा कि हे ब्राह्मण मुझभिक्षुक ब्रह्मचारीको धनसे क्या प्रयोजनहै तबपुरोहितने कहा कि आप ऐसा मतकहो क्या आश्रमके क्रमको आपनहीं जानतेहो विवाहकरके घरमें देवपितृ और अतिथियोंका पूजन करतेहुए गृहस्थ लोग धनसे धर्म अर्थ काम इनतीनोंको प्राप्तहोते हैं क्योंकि गृहस्थाश्रम सम्पूर्ण आश्रमों से श्रेष्ठहै यहसुनकर शिवने कहा कि मेरा विवाहही कहाँ हुआहै और विवाहमें कठिनता यहहै कि मैं ऐसे वैसे साधारण कुलसे कन्या नहीं लूंगा उसके यहवचन सुनतेही पुरोहितने अपने मनमें शोचा कि यदि इसका विवाह मेरी कन्यासे होजाय तो धन सुखपूर्वक भोगकरनेको मिले यहशोचकर उसने कहा कि मेरे विनयस्वामिनी नाम एक अति सुन्दर कन्या है वह मैं आपको देदूंगा इस्से आप गृहस्थाश्रमको स्वीकार करिये और जो कुछ धन आपको माधवसे मिलेगा उसकी रक्षा मैं करूंगा तब शिव अपने मनोरथको सिद्धजानकर यह वचन बोला कि हे ब्राह्मण यदि आपको ऐसाही आग्रहहै तो मैं ऐसाही करूंगा परन्तु मैं तपस्वी होनेके कारण सुवर्ण और रत्नको नहीं जानता और तुम्हारेही वचन से इसकार्य्य में प्रवृत्तहोताहूं इस्से तुम्हें जैसा योग्य समझपड़े वैसाकरो शिवके यहवचन सुनकर प्रसन्नहुआ पुरोहित उसे अपने घरको लेगया वहाँ उसे लेजाके माधवसे संपूर्ण वृत्तान्त कहदिया और वह भी सुनकर बड़ा प्रसन्नहुआ उससमय पुरोहितने मूर्खतासे हारीहुई सम्पत्तिके समान अपनी कन्या अशिवरूपशिवको देदीनी फिर विवाहकरनेके उपरांत तीसरेदिन पुरोहित शिवको दानदिलानेकेलिये माधवकेपास लेगया उसे देखतेही तुझ महातपस्वीको मैं वन्दना करताहूं यह मिथ्या वचनकहकर माधव उसके पैरोंपर गिरपड़ा और पुरोहितके यहाँ से वहकृत्रिममणिक्यों के बनेहुए आभूषण उसेदेदिये शिवने भी मैं इनकेमूल्यको नहीं जानताहूं तुम्हीं जानो यह कहकर पुरोहितको वहसब देदिये पुरोहितने भी मैं तो पहलेही स्वीकारकर चुकाहूं आपको क्या चिन्ताहै यहकहकर सब आभूषण लेलिये १६६ इसके उपरान्त शिवतो आशीर्वाद देकरअपनी स्त्रीके पास चला गया और पुरोहितनेवहसब रत्न अपनेभंडारमें रखदिये माधवभी दूसरे दिनसे महादानके प्रभावसे अपने रोगकाधीरे२ शान्तहोनाकहनेलगा और पुरोहितसे बोला कि तुम्हारी सहायतासे मैं इसमहा आपत्तिसे

पारहुआ और इसीकेप्रभावसे यहमेरा शरीरबचाहै यहकहकर शिवकेसाथ प्रत्यक्षमें भी मित्रता करनेलगा इसके उपरान्त कुछ दिनोंके व्यतीतहोनेपर शिवनेपुरोहितसे कहा कि इसप्रकारसे मैं तुम्हारे यहाँ कबतक भोजनकरूंगा इस्से तुम्हीं इनआभूषणोंको क्यों नहीं मोल लेलेतेहो और जो इनआभूषणोंको बहुमूल्य जानतेहो तो जो कुछ तुमसेहोसके वही मुझको देदो यहसुनकर पुरोहितने उनभूषणोंको बहुमूल्य समझकर अपना सर्वस्व उसे देदिया और अपने धनसे उन आभूषणोंको अधिक मूल्यका समझकर उसने एकलेख शिवसेलिखवालिया और आपभी उसेलिखदिया इसप्रकार उनदोनोंने एकदूसरेका लिखाहुआ कागज़लेलिया और अपनानिवासभी दोनोंनेअलग २ करलिया इसकेउपरान्त शिव और माधवदोनों पुरोहितके धनको भोगतेहुए सुखपूर्वकरहनेलगे कुछसमयके व्यतीतहोनेपर पुरोहित उनआभूषणोंमेंसे एक आभूषणलेकर बाज़ारमें बेचनेकोगया वहांउसआभूषणको देखकररत्नकेपहचाननेवाले बणिये बोले कि किसमें ऐसीचतुरताहै जिसनेयहकृत्रिमभूषणबनायाहै यह तो पीतलमेंजड़ेहुए अनेकरंगोंसे रंगेहुए काचतथा बिल्लौरकेटुकड़े हैं इसमें न रत्नहै न सुवर्णहै यहसुनकर पुरोहितने बहुत विह्वलहोकर सब आभूषणघरसे लाकर उन्हेंदिखाये उनलोगोंने देखकरकहा कि यहसब आभूषणकृत्रिमहै यहसुनतेही पुरोहितकी छातीमेंवज्रसालगा और उसनेउससमय शिवसे जाकरकहा कि तुम अपने आभूषणलेलो और मेराधनदेदो तबशिवने उत्तरदिया कि अब मेरेपासधनकहां है मैंने सबखर्चकरडाला तब लड़तेहुए वह दोनों राजाकेपासगये वहांमाधवभी राजाकेपास बैठाथा पुरोहितनेराजासेकहा कि शिवनेपीतलमें जड़ेहुए अनेकरंगोंसे रंगेहुए काचतथा बिल्लौरकेटुकड़ों से बनेहुए झूठे आभूषण मुझेदेकर मुझ न जाननेवाले का सर्वस्वखाडाला तबशिवनेकहा कि हे महाराज मैं तो बाल्यावस्थाही से तपस्वीथा इसीनेबहुत प्रार्थनाकरके मुझेदानदिलवाया और मैंने उसीसमय इस्सेकहदियाथा कि मैं रत्नादिक और सुवर्णनहीं पहचानताहूं तुम्हें जैसासमझपड़े वैसाकरो इसनेकहाथा कि मैं सबदेखलूंगा तुमको इस्से कुछकामनहीं और मैंने वहसबलेकर इसीकोदेभीदियाथा तब इसने अपनीइच्छाकेअनुसार मुझेमोलदेकर सबलेलिया इसविषयमें हमारी इनकीलिखापढ़ीभी होगई थी वहदोनोंकेपासहै अबआप जैसा उचितसमझिये वैसा कीजिये इसप्रकार कहकर शिवकेचुपहोजानेपर माधवपुरोहितसे बोला कि आपऐसा न कहिये इसमें मेरा भी कोई अपराधनहीं है मैंने आपसे और शिवसे कुछ लेनहींलिया मैंने अपने पिताकाधन किसी के पासरखदिया था बहुतदिनोंकेपीछे उससे लेकर यहांचलाआया और वही दानकरकेदेदिया यदिसत्य २ उसमें सुवर्णतथा रत्ननहीं हैं तो मुझेपीतल बिल्लौरतथा काचहीके देनेकाफलहोगा और निष्कपटहोने के कारणमुझे तो दानमें विश्वासहै इसीकेप्रभावसे मैं अत्यन्तमहाकठिनरोगसे निवृत्तहोगया यहसब कोई जानताहै इसप्रकार जबमाधवनेकहा और उसकेमुखपर किसीप्रकारका विकारनहींमालूमहुआ तब राजासंपूर्ण मंत्रियोंसमेत हँसा और माधवपरप्रसन्नहोगया उससमय संपूर्ण सभाकेलोगोंने हँसीको रोककर यहकहा कि इसमेंमाधव और शिव किसीकाभी कोईदोषनहीं है यहसुनकर पुरोहितलज्जितहोकर वहांसे चलागया ठीककहाहै कि (कासांहिनापदांहेतु रतिलोभान्धबुद्धिता) अत्यन्त लोभान्धहोनेसे

मनुष्योंपर कौन२सी विपत्तिनहीं आती इसप्रकारपुरोहित तो अपनाधनगवाँकरचलेगये और वहदोनो धूर्त्तप्रसन्नहुए राजासे बहुतसाधनपाकर सुखपूर्व्वकवहींरहनेलगे इसीप्रकारसे जालसाजीकरके जीविका करनेवाले धीवरोंकेसमान धूर्त्तसैकड़ोंप्रकारके ढंगोंकोरचकर संसारमेंजालफैलाते हैं २०० इससे हे पिता झूंठही कनकपुरीकादेखनाबताकर यहब्राह्मण तुम्हेंठगकर मुझेलेनाचाहता है इससे आप मेरे विवाहके लिये शीघ्रतानकरें मैं अभी कन्याहीरहूंगी देखूंक्याभवितव्यताहै कन्याकेयहवचनसुनकर वहपरोपकारी राजा बोला कि हे पुत्री युवावस्थामें बहुतकालतक कन्यारहना अच्छानहीं है गुणमें ईर्षाकरनेवाले दुष्ट लोग मिथ्यादोषलगाते हैं और उत्तमलोगोंमें लोगविशेषकरके कलंककोबनालेतेहैं इसीविषयमें मैं हर- स्वामीब्राह्मणकी एककथा कहताहूं गंगाजीकेनिकट जो कुसुमपुरनाम नगरहै वहां तीर्थका सेवनकरने वाला हरस्वामीनाम एकब्राह्मणरहताथा वहगङ्गाजी के किनारेकुटीबनाके भिक्षावृत्तिसे अपना पालन करताथा और तपकेप्रभावसे वहांकेनिवासियोंपर उसकाबड़ादबावहोगया था एकसमय उसब्राह्मणको भिक्षामांगनेको जाते देखकर उसकेगुणोंमें ईर्षाकरनेवाले एकदुष्टनेलोगोंसे कहा कि क्या तुमजानतेहो कि यहकैसाकपटी तपस्वी है इसीने इसनगरमें सबबालकखाये है यहसुनकर उसीकासाथी एकदूसरादुष्ट बोला कि तुमठीककहतेहो मैंनेभी लोगोंसेऐसाही सुनाहै तब एकतीसरादुष्ट और बोला कि हां यहबात बहुतठीकहै सत्यकहाहै कि (बध्नात्यार्य्यपरीवादं खलसंवादशृंखला) दुष्टलोगोंकी बातोंकीपरम्परा स- ज्जनलोगोंके अपयशकोकरतीहै २११ इसीक्रमसे एकसेदूसरेकेकानमेंजाताहुआ यहचवावसंपूर्णनगरमें फैलगया तब संपूर्णपुरवासी अपनेबालकोंको घरसे बाहरनहीं निकलनेदेते थे इसकारणसे कि हरस्वामी लड़कोंको लेजाकरखाडालताहै इसकेउपरान्त वहांकेसंपूर्ण ब्राह्मणोंने बालकोंके नाशकेभयसे उसको न- गरसे बाहरनिकालदेनेकी सलाहकी और सबलोगइसभयसे कि यहक्रोधकरके हमींलोगोंकोनखालेउसके पासनहींजासके तब उन्होंनेउसकेपास दूतभेजे दूतोंनेदूरहीसेजाकर उससेकहा कि ब्राह्मणलोगकहते हैं कि तुमइसनगरसेचलेजाओ उसनेआश्चर्य्ययुक्तहोकर उनसेपूंछा कि क्यों ऐसाकहतेहैं तबदूतोंनेउत्तरदिया कि तुमजिसबालकको देखपातेहो उसेखाडालतेहो यहसुनकर हरस्वामी ब्राह्मणोंको समझानेकेलिये आपही उनके पासचलाउसेआते देखकर लोग भागनेलगे और ब्राह्मणलोगभयसे अपने२ मठोंपर चढगयेठीकहै (प्रवादमोहितःप्रायोनविचारक्षमोजनः) प्रायःमिथ्या अपवादसे मोहितहुए लोग विचार नहीं करसके हैं इसके उपरान्त हरस्वामीने नीचे खड़ेहोकर मठोंपर खड़ेहुए ब्राह्मणोंसे एक२ का नामलेकरकहा कि हे ब्राह्मणलोगो तुम्हें आज यह क्या अज्ञानहुआहै अपनेआपसमें क्योंनहीं देखतेहो कि मैंने किसके कि- तनेबालक कबकहाँखायेहैं यह सुनकर सबब्राह्मणलोगोंने आपसमे विचारकिया तो मालूमहुआ कि सब के बालक जीते हैं क्रमसे सबपुरवासियों ने विचार कियातो सबको मालूमहुआ कि किसीकाभी बालक इसने नहींखाया यहदेखकर सम्पूर्ण ब्राह्मण तथा वणियोंने कहा कि अरेहमसबमूर्खलोगोंने इससाधूको मिथ्याही दोषलगाया सबकेबालकतो जीते हैं इसने किसके बालकखाये इसप्रकार सब लोगोंके कहने पर हरस्वामी अपनी शुद्धताको प्रकटकरके नगरसे जानेको तैयारहुआ ठीककहाहै कि (दुर्जनोत्पादि

तावद्व्यविरक्तीकृतचेतसः । अविवेकिनिदुर्द्देशेरतिःकाहिमनास्विनः) दुर्जनों के द्वारालगायेहुए दोषसे विरक्त चित्तवाले धीरलोगोंको विवेकरहित दुर्द्देशमें स्नेह नहींहोताहै २२६ इसकेउपरान्त व ब्राह्मण और वणियेंने चरणोंपर गिरकर हरस्वामीको बहुत समझाया तबउसने बड़ेआग्रहसे वहां रहनास्वीकारकिया इसप्रकार प्रायः दुष्टलोग उत्तम आचरणों के देखनेसे द्वेषयुक्त होकर मिथ्यादूषण सज्जनों को लगाया करतेहैं और उससमय जो कहीं उनको कुछ देखनेका अवकाश मिलजाय तो मानोंबढ़तीहुई अग्निमें घृतकी धारपड़गई इस्से हे पुत्री जो तुममुझे दुःखित नहीं करनाचाहती हो तो इसनवीन यौवनमें बहुत कालतक अपनी इच्छापूर्व्वक तुम्हें कन्यारहना उचितनहीं है क्योंकि इसअवस्थामें दुर्जनोंको कलंक लगादेना बहुतसुलभहै राजाके यहवचन सुनकर स्थिर निश्चयवाली राजपुत्री फिर बोली कि मैंतो आप से पहले ही कहचुकीहूं कि जिसब्राह्मण अथवा क्षत्रीने कनकपुरीदेखी है उसेशीघ्रढूंढ़कर मेरा विवाहकर दो यहसुनकर पूर्व्वजन्मके स्मरण करनेवाली अपनी कन्याके निश्चयको दृढ़जानकर और उसके विवाह करनेका कोई दूसरा उपाय न देखकर राजाने नवीन आनेवाले लोगों से पूछनेके निमित्त देश भरमें राजढँढोरा फेरनेकी आज्ञादेदी कि जिसब्राह्मण अथवा क्षत्रीने कनकपुरी देखी होय वह कहे उसे राजा अपनी कन्या और युवराजपदवी देगा यह बात सब देशभरमें ढँढोरापीट २ कर कहीगई परन्तु कनकपुरीका देखनेवाला एकभी नहीं मिला २३३ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांचतुर्द्दारिकालम्बकेप्रथमस्तरंगः १॥

इसबीचमें शक्तिदेवनाम उसयुवा ब्राह्मणने उदासीनहोकर शोचा कि झूंठमूठ कनकपुरीका देखना कहनेसे मेराअपमानभी हुआ और राजकन्या नहींमिली इस्से उसकन्याकी प्राप्तिके निमित्त पृथ्वीपर पर्य्यटनकरूंगा यातो उसनगरीको देखूंगा या मेरे प्राणजायँगे जो मैंने उसपुरीको देखकर यहां आकर राजकन्यासे विवाह न किया तो मेरेजीवनको धिक्कारहै इसप्रकार प्रतिज्ञाकरके वहवर्द्धमानपुरसे दक्षिण दिशाकोचला क्रमसे चलते २ विन्ध्याचलके वनमें पहुंचा और अपने मनोरथके समान बड़ेगहन वनमेंघुसा वह वन सूर्य्यकी किरणोंसे सन्तापको पाकर वायुके द्वाराकँपेहुए वृक्षोंके कोमलपत्रोंसे मानों अपने पंखाकररहाथा और रात्रिदिन अनेक चोरोंके उपद्रवों के दुःखसे मानोंकराल सिंहादिकोंके द्वारा मारेगये मृगोंके शब्दों से कोलाहल मचारहाथा और बड़ीकठिन मरुमरीचिका (दूरसे जो रेतपानीके समान चमकतीदीखती है) ओंसे अत्यन्तउग्रसूर्य्यकेभी तेजकोमानोंजीतनेकी इच्छाकररहाथा वहांकहीं भी जल नहींमिलताथा और आपत्तिकाभय हरएकस्थानों में होताथा निरन्तरचलते २ भी मालूमहोता था कि मानों पृथ्वी दूरहोतीजाती है ऐसेगहनवनमें कईदिनतक बहुतदूरमार्ग चलकर उसने एकान्तमें शीतल तथा निर्म्मलजल युक्त तालावदेखा वह तालाव कमलरूपी छत्रसे और हंसरूपी चामरोंसे सम्पूर्ण तालावोंका राजा मालूम होताथा उसतड़ागमें स्नानकरके उसने उसीके तटपरउत्तरकी ओर फल सहित घनेवृक्षोंसे युक्त एक आश्रमदेखा और उसीआश्रममें पीपलके वृक्षकेनीचे अनेक तपस्वियों समेत सूर्य्यतप नाम एक वृद्धमुनिको बैठेहुए देखा वह मुनि अपने कानमें मालापहनेहुए था वह माला क्या

थी मानों अपनी अवस्थाके सौवर्षोंकी संख्याथी उनमुनिको प्रणामकरके शक्तिदेव उनके पासगया और मुनिनेभी उसका अतिथिसत्कारकरके उससे पूछा कि तुमकहांसे आयेहो और कहां जानाचाहतेहो तब शक्तिदेवबोला कि मै वर्द्धमानपुरसे आयाहूं और कनकपुरीजाने की प्रतिज्ञाकरके चलाहूं न मालूम वह कनकपुरी कहाँहोगी जोआपको मालूमहोय तो वताइये तबमुनि बोले कि हे वत्स मुझे इसआश्रममें रहते हुए एकसौआठ १०८ वर्षहोचुकेहैं परन्तु अभीतक मैने उसकानामभीनहीं सुनाथा मुनिके यह वचनसुन करशक्तिदेव वहुतखेदसेबोला कि जो आपभी नहींजानते हैं तो मैंपृथ्वीपर घूमतेही घूमते मराइसकेउपरांत मुनिने सम्पूर्णवृत्तान्त जानकर कहा कि जोतुमनिश्चय कनकपुरी मे जानेकाविचार करते हो तो जैसा मैं कहूं वैसाकरो यहाँसे सौ योजनपरकांपिल्यनाम देशहै उसमें उत्तरनाम पर्व्वतहै उस पर्वतपर एक आश्रमहै उसमें दीर्घतपानाम मेरे बड़ेभाई रहते हैं उनकेपास जाओ कदाचित् वहवृद्ध होने के कारण उसपुरीको जानतेहोंगे यह सुनकर उसे भरोसाहुआ और उसरात्रिको वहींरहा प्रातःकाल वहाँसे शीघ्रही चला बड़े क्लेशसे अनेकवनोंकोलांघताहुआ वहुत कालमें कंपिल देशमेंपहुंचा और वहाँ उत्तरनामपर्व्वतपर चढ़ा वहाँ आश्रममें बैठेहुए दीर्घतपानाम मुनिको देखकर प्रसन्नता पूर्व्वक उसने प्रणाम किया और मुनिने भी उसका वड़ा सत्कारकिया इसकेउपरान्त उसने मुनिसे कहा कि महाराज राजकन्याकी वताईहुई कनकपुरीको देखनेके लिये मैं चलाहूं परन्तु मुझे नहीं मालूम कि वहपुरी कहाँ है और वहाँ जाना आवश्यक है इससे उसका पतालगानेके लिये सूर्य्य तपनाम ऋषिने मुझे आपके पासभेजाहै २६ शक्तिदेवके यह वचन सुनकर मुनिवोले कि हे पुत्र इतनी अवस्थामें मैंने उसका आज नामसुनाहै अनेक देशोंसे आये हुए न जाने कितने पुरुषों से मेरासमागम हुआहै परन्तु देखना तो दूररहा मैंने उसका नाम भी नहीं सुना मैं जानताहूं कि किसी अन्य द्वीपमें वहपुरी वहुत दूरपरहोगी उसके जाननेका उपाय मैं तुमको वतातांहूं समुद्रके बीचमें उत्स्थल नामद्वीप है वहाँ संपूर्ण निषादोंका स्वामी बड़ा धनवान् सत्यव्रतनाम निषाद रहताहै वहसंपूर्ण द्वीपोंमें जाया आया करताहै कदाचित् उसने वहनगरी देखी हो या सुनीहो इससे तुमपहले समुद्रके किनारेपर विटंकपुरनाम नगरहै उसमें जाओ वहाँ किसीवणियेके साथ जहाज पर चढ़कर अपने मनोरथ सिद्धकरनेके लिये उसनिषादके द्वीपको जाओ मुनिके यहवचन सुनकर शक्तिदेवउनके वचन स्वीकार करके उनसे पूछ वहाँसे चला मार्ग मे अनेक देशोंको उल्लंघनकरके सैकड़ों कोसके उपरान्त वहसमुद्रके किनारे विटंकपुरनाम नगरमें पहुंचा वहाँ उत्स्थल द्वीपके जानेवाले समुद्रदत्त वणियेको ढूंढ़कर उसकेसाथ उसने मित्रताकी और उसके जहाजमें उसकेसाथ चढ़कर उसके प्रेमरूपी राहखर्चको लेकर उसकेसाथ समुद्रमें चला थोड़ीदूर चलकर विजलीरूपी जिह्वाको निकालतेहुए मेघरूपी राक्षस गरजतेहुए आगये हलकी चीजोंको उठातीहुई और भारी चीजोंको भी गिरातीहुई महाप्रचंडवायु भाग्यके समान अपने प्रभावको दिखानेलगी वायुके लगनेसे जो समुद्रमें वड़ी २ लहरें उठतीथीं उनको देखनेसे मालूमहोता था कि मानों समुद्रमें चलनेके अपराधसे सपक्षपर्व्वतही क्रोधकरके निकले हैं वह जहाज क्षणभरमें ऊपर औरक्षणभरमें नीचे जाताहुआ धनीलोगोंकी वढ़ती और घटतीके क्रमको मानों

दिखाताथा क्षणभरमें वणियोंके कोलाहलोंसे भराहुआ वह जहाजमानों शब्दके भारको न सहकर टूट गया जहाजके टूटजानेपर समुद्रमे गिराहुआ जहाजका स्वामी काठके टुकड़ेके सहारे दूसरे जहाजमें पहुंचकर पारचलागया और शक्तिदेव जबगिरा तो उसे एकमछली समूचा निगलगई वह मछली भाग्याधीन समुद्रके बीचमें घूमतीहुई उस उत्स्थल द्वीपके किनारे पहुंची वहां निषादोंके स्वामी उस सत्यव्रतके मछली पकड़नेवाले नौकर उसबड़ीभारी मछलीको पकड़कर बड़े आश्चर्य्य से अपने स्वामीके निकटलेगये उसस्वामी ने भी उसप्रकारकी उसमछली को आश्चर्य्य पूर्व्वक देखकर अपने नौकरों को उसके काटनेकी आज्ञादेदी जबवह मछली काटीगई तो उसके पेटमेंसे आश्चर्य्य पूर्व्वक गर्भके वासका अनुभव करके जीताहुआ शक्तिदेव निकला और निकलकर तुम्हारा कल्याण होय इसप्रकार कहतेहुए तरुण शक्तिदेवको देखकर सत्यव्रत ने पूछा कि तुमकौनहो कैसे तुमने मछलीके पेटमें निवास किया और क्या तुम्हारा वृत्तान्त है वहसब कहौ ५४ यहसुनकर शक्तिदेव ने कहा कि मैं शक्तिदेवनाम ब्राह्मण वर्द्धमानपुरसे कनकपुरीके देखनेको निश्चयकरके चला उसको विनाजाने मैं बहुतकालतक पृथ्वी में घूमतारहा फिर दीर्घतपनाम मुनिके कहनेसे किसी द्वीपान्तरमें उसपुरीकाहोना अनुमान करके उसके जाननेके लिये उत्स्थलद्वीपके रहनेवाले निषादोंके स्वामी सत्यव्रतके पास जहाजपर चढ़कर चला बीचमेंही जहाजके टूटजानेसे मैं समुद्रमें गिरा और वहीं मुझे मछलीने निगललिया और उसी के द्वारा मे यहांआया उसके यहवचन सुनकर निषादोंका स्वामीबोला कि सत्यव्रत मैंहीहूं और यही उत्स्थलद्वीप है परन्तु बहुतद्वीपोंके मुझ देखनेवालेने भी वहपुरी नहीं देखी किन्तु द्वीपान्तरों में सुनी है यहकहनेसे शक्तिदेवको उदासीन देखकर सत्यव्रत अभ्यागतके स्नेहसे फिर बोला कि हे ब्राह्मण दुःख न करो आज रात्रिको यहींरहो प्रातःकाल में तुम्हारे मनोरथके सिद्धकरनेका कोई उपायकरूंगा इसप्रकार समझाकर उसने शक्तिदेवको ब्राह्मणोंके मठमें भेजदिया उसमठमें अतिथियोंका सत्कार बहुत सुलभथा वहां भोजनकरनेके उपरान्त उसीमठके रहनेवाले विष्णुदत्तनाम ब्राह्मणसे कुछ बातचीतकरने लगा उसीप्रसंग से उसने अपना देश कुल तथा सम्पूर्ण वृत्तान्त विष्णुदत्तसे कहा वह इसके सब वृत्तान्तको सुनकर और पहचानकर बड़ा प्रसन्नहुआ उससमय हर्ष से उसके आँसू बहनेलगे और उसेहृदयमें लगाकर गद्गदस्वर से बोला कि तुममेरे मामाके पुत्रहो हमारा तुम्हारा एकही देशमें जन्महुआथा मैं बाल्यावस्थाही में अपने देशसे यहांचलाआयाथा आज भाग्यसे हमारा तुम्हारा यहां संयोगहोगया इससे तुम अब यहींरहो थोड़ेही कालमें अनेकद्वीपों से आयेहुए वैश्यों के द्वारा तुम्हारा मनोरथ सिद्धहोजायगा यहकहकर और अपने वंशको बताकर विष्णुदत्तने शक्तिदेवका बड़ा सत्कारकिया और शक्तिदेवभी मार्गके सम्पूर्ण खेद को भूलकर अत्यन्त आनन्दको प्राप्तहुआ ठीक है (विदेशेबन्धुलाभोहि मरावमृतनिर्भरः) विदेश में बन्धुका मिलना मरुदेशमें अमृतकी वृष्टिके समानहै ७० शक्तिदेवने विष्णुदत्तके मिलनेसे अपनेकार्य्य को शीघ्रही सिद्धहोनेवाला माना क्योंकि बीचमें हुआ कल्याण कार्य्य की सिद्धिको सूचितकरता है इसके उपरान्त रात्रिके समय अपने मनोरथके विचारसे उसे निद्रा आते न देखकर विष्णुदत्तने उसके

चित्तको प्रसन्नकरनेके लिये यहकथाकही कि पूर्व्वसमयमें श्रीयमुनाजी के तटपर एक बड़ेग्राममें गोविंद स्वामीनाम ब्राह्मण रहताथा उसब्राह्मणके अशोकदत्त और विजयदत्तनाम दो पुत्रथे कुछकालमें वहां बड़ाभारी दुर्भिक्षपड़ा इससे गोविन्दस्वामी अपनी स्त्रीसे बोला कि यहदेश दुर्भिक्षके कारण नष्टहोगया है मैं यहांरहकर अपने मित्रबान्धव और कुटुम्बकी दुर्दशानहीं देखनाचाहताहूं और जो कुछ अन्न मेरे पासहै उसमेंसे कितना किसेदूं इससे जोकुछ मेरेपासहै वहसब मित्र और बन्धुओंको देकर इसदेशसे चलाजाऊं और कुटुम्ब सहित काशीजी में जाकररहूं उसब्राह्मणके यहवचन उसकी स्त्रीने भी स्वीकार करलिये फिर अपने मित्र तथा बन्धुओंको सम्पूर्ण अन्नदेकर गोविन्दस्वामी उसदेश से अपने कुटुम्ब सहितचला ठीककहाहै कि (उत्सहन्तेन हि द्रष्टुमुत्तमास्स्वजनापदम्) उत्तमपुरुष अपने मित्र बन्धुओं के क्लेश को नहीं देखनाचाहते हैं ॥१ मार्गमें चलते ॥२ उसब्राह्मणने जटाको धारण किये हुए सम्पूर्ण शरीर में भस्म धारण किये हुए और कपालों की मालाको धारण किये अर्द्धचन्द्रधारी श्रीशिवजी के समान एक महाव्रती को देखा और उसके पास जाकर गोविंदस्वामी ने उसे नमस्कार करके उससे अपने पुत्रोंका शुभाशुभ पूंछा तब उसने कहा कि तुम्हारे पुत्रों का आगे कल्याण होनेवाला है परन्तु यह जो तुम्हारा छोटा पुत्र विजयदत्त है उससे कुछ दिनोंतक तुम्हारा वियोग होगा तब इस अशोक-दत्तके प्रभावसे फिर विजयदत्तका समागम होगा उसके यहवचन सुनकर गोविन्दस्वामी सुख और दुःख दोनोंसे संयुक्त होके उसज्ञानीकी आज्ञालेकर वहां से चला और काशीजी के निकट पहुंचकर नगरके बाहर एक भगवतीके मन्दिरमे पूजनादिकरके वह दिन व्यतीत किया सायंकालके समय देवीजी के मन्दिरके बाहर वृक्षके नीचे जहां अनेक देशोंसे आयेहुए अनेक भिक्षुक टिकेथे वहीं वहभी अपने कुटुम्बसहित रहा रात्रि के समय जब सम्पूर्ण पथिकलोग वृक्षोंकेपत्ते आदिकों को बिछाकर सोगये तब गोविन्दस्वामीका छोटा पुत्र विजयदत्त एकाएकी जगपड़ा और बड़ेवेगसे उसके शीतज्वर चढ़ा मानों बन्धुओंसे होनेवाले वियोगके भयसे ज्वरकेद्वारा उसके रोमरोम खड़े होगये और सबशरीर कांपनेलगा शीतसे व्याकुलहोकर उसने अपने पिताको जगाकर कहा कि हेतात मुझे बड़ेवेगसे शीतज्वर चढ़ाहै इससे लकड़ीलाकर अग्निबालो और मुझेतपाओ जिससे मेराशीतजायगा नहीं तो शीतकी शान्ति न होगी और मैं इसरात्रिको नहीं व्यतीत करसकूंगा यह सुनकर गोविन्दस्वामी उसकी पीड़ाको देख-कर व्याकुलहोके बोला कि हेपुत्र इससमय यहां अग्नि कहां मिलसक्ती है तब उसने कहा कि देखो यहां पासही बहुतसी अग्नि बलरही है वहींजाकर मैं अपने अंगोंको क्यों न तपाऊं इससे आप मुझको ले-कर वहां शीघ्रचलिये पुत्रके यहवचन सुनकर वह ब्राह्मण फिर बोला कि हेपुत्र यह श्मशानमे चिताब-लरही है पिशाचादिकों से अत्यन्त भयंकर इसस्थान में कैसे चलें क्योंकि तुम अभी बालकहो पिता के यह बचन सुनकर बीर विजयदत्तने आक्षेपपूर्व्वक कहा कि यह बिचारे पिशाचादिक हमारा क्या करेंगे क्या मैं कोई अल्पवीर्य्यहूं आपमुझे निस्सन्देह वहां लेचलिये इसप्रकार उसके आग्रह करनेपर गोविन्दस्वामी उसको वहां लेगया और वह भी अपने अंगों को तपाताहुआ चिता के निकट चला

गया वह चिता अग्निकी ज्वालामें उठेहुए धूमरूपी केशवाली और मनुष्यों के मांसकी ग्रहणकरने वाली साक्षात् राक्षसों की देवी के समान शोभित होरही थी क्षणभरके पीछे विजयदत्तने सावधानहो के अपने पितासे पूछा कि चिताकेभीतर यह क्या दिखाई देताहै तब गोविन्दस्वामी ने कहा कि हेपुत्र यह मनुष्यका कपाल चितामें जलरहाहै तब उसने अपने साहस के समान जलतेहुए एक काष्ठसे वह कपाल फोड़डाला तब उस फूटेहुए कपाल से उछलकर चरबी उसके मुखमें चलीगई मानों उस श्मशानकी अग्निने राक्षसीसिद्धि उसके मुखमेंरखदी १०४ चरबीके मुखमें पड़ने से वह बालक राक्षसहोगया उसके शिरमें बहुतऊंचे २ बालनिकलआये मुखमेंबड़ी २ दाढ़ेंदीखनेलगीं और उसने अपनी शिखासे निकालकर खड्ग हाथमेंलेलिया चितामें से उसकपालको निकालकर सब चरबीको पीके अग्निकी ज्वालाकेसमान चंचल जिह्वासे उसेचाटनेलगा और फिर उसकपालको फेंककर खड्ग लेकर अपनेपिता कोभी मारनेचला उससमय श्मशानसे यहशब्दसुनाईदिया कि हे कपालस्फोटदेव अपनेपिताकोनमारो यहाँआओ यहवचनसुनकर और कपालस्फोट यहनामपाकर राक्षसरूप वहबालकअपने पिताकोछोड़कर वहाँसेचलागया और उसकापिता गोविन्दस्वामीभी हापुत्र हागुणिन् हा विजयदत्त यहकहकर रोताहुआ वहाँसेचलाआया और देवीकेमन्दिरमेंआकर प्रातःकाल अपनीस्त्रीतथा बड़ेपुत्र अशोकदत्तसे यहसबवृत्तान्तकहा विनामेघ के बिजलीकेसमान उसशोकसे गोविन्दस्वामी अपनीस्त्री और पुत्रसमेत ऐसाविकलहुआ कि काशीकेनिवासी जोकोई वहाँ देवीकेदर्शनकोआतेथे वहभी उसीकेसमान अत्यन्त दुखीहोजातेथे उससमय देवीके पूजनकेनिमित्त आयेहुए एकसमुद्रदत्तनाम वणियेने गोविन्दस्वामीकी यहदशादेखके उसेसमझाकर कुटुम्बसहित अपनेघरको लेगया और वहाँलेजाकर स्नानभोजनादिकसे उसकी बड़ीसेवाकीठीकहै (निसर्गोह्येषमहतां यदापन्नानुकम्पनम्) दुःखितोंपर दयाकरना महात्माओं का स्वाभाविकधर्म है ११६ इसके उपरान्त गोविन्दस्वामीभी उसमहाव्रतीके वचनको स्मरणकरके पुत्रके फिरमिलनेकी आशासे स्त्रीसमेत धैर्य्यको प्राप्तहुआ और उसवणियेकी प्रार्थनासे उसीकेघरमेंरहा काशीजीमेंरहकर उसकेबड़ेपुत्र अशोकदत्त ने सम्पूर्णविद्यापढ़ी और युवावस्थाके आनेपर वह बाहुयुद्ध सीखनेलगा धीरे२ बाहुयुद्धमें वहऐसाचतुरहोगया कि पृथ्वीतलमें कोईमल्लभी उसकोनहीं जीतसक्ताथा एकसमय देवयात्रा में अनेक मल्लों के समागम होनेपर दक्षिणदिशा से एक बड़ा प्रसिद्ध महामल्ल वहाँआया उसने काशीकेराजा प्रतापमुकुटकेसम्मुख संपूर्णमल्लजीतलिये तबराजानेउस समुद्रदत्तनाम वणिये के मुखसे अशोकदत्तकी प्रशंसासुनकर उसे बुलाके उसमल्लसे युद्धकरनेकीआज्ञादी वह मल्ल तालठोंककर अशोकदत्त से लड़नेलगा परन्तु अशोकदत्तने हाथमारकर उसे गिरादिया तब उसमल्लके गिरजानेपर उत्पन्नहुए शब्दसेयुद्धकीभूमिने मानोंप्रसन्नहोकर उसकीप्रशंसाकी १२५ राजानेअशोकदत्तके ऐसे पराक्रमको देखकर अत्यन्त प्रसन्नहोके उसे बहुतसे रत्नदिये और सदैव उसको अपने समीप रखनेलगा और वहभी राजाका प्रियहोकर थोड़ेही दिनों में बड़ाऐश्वर्य्यवानहोगया गुणग्राही राजा गुणीलोगोंके लिये निधिके समानहोताहै एकसमय वह राजा चतुर्दशी के दिन नगरकेबाहर कुछदूरपर

मन्दिरमें शिवजीका पूजनकरनेगया रात्रिके समय पूजनकरके श्मशानके निकटसे राजा आरहाथा, उस समय श्मशानमेंसे यहशब्द सुनाईदिया कि मुझको दण्डाधिकारीने द्वेषसे मिथ्या वधका अपराध लगा कर शूलीपर चढ़ायाथा आजतीनदिन होचुकेहैं कि मुझपापीके प्राण अभीतक नहीं निकलतेहैं इससे हे राजा मैं बड़ाप्यासाहूं मुझे जल दिलवादो यहसुनकर राजाने कृपापूर्व्वक अशोकदत्तसे कहा कि इसे जल भिजवादो इससमय रात्रिको और कौनजायगा मैंहीं जाताहूं यहकहकर अशोकदत्त जललेके वहां से चला राजाको अपनी पुरीमें चलेजानेपर वहवीर अत्यन्त अन्धकारसे सबओर व्याप्त सन्ध्याके समय शिवा अर्थात् शृगालोंके निमित्त दीगई बलिके मांससे युक्तकहीं२ चिताओंकी ज्योतिरूप दीपकों से प्रकाशित और बड़े उद्दण्ड वैतालोंके शब्दोंसे युक्त कृष्णपक्षकी रात्रिके निवासके स्थानके समान श्मशानमें गया वहांजाकर ज़ोरसे बोला कि राजासे किसने जलमांगाहै तब एकओरसे यहशब्द आया कि मैंने मांगाहै १३७ उसवचनको सुनकर उसीके अनुसार जाकर उसने देखा कि एक चिता बलरही है उसके पास एकपुरुष शूलीपर चढ़ाहुआहै और उसकेनीचे सुन्दर आभूषणोंको पहरेहुए एकपरमसुंदर स्त्री बैठीहुई रोरहीहै वह स्त्री क्याथी मानों कृष्णपक्ष में क्षीणहोकर चन्द्रमा के अस्तहोजाने पर उजेली रात्रिही चितामें भस्महोनेको आईथी उसेदेखकर अशोकदत्तनेपूछा कि हे अम्ब तुम कौनहो और यहां बैठकर क्यों रोरहीहो तब वह स्त्री बोली कि यह जो पुरुष शूलीपरचढ़ाहै इसकी मैं अभागिनी स्त्रीहूं इसके साथ चितामें निश्चयभस्महोने के लिये यहां बैठीहूं इसके प्राणनिकलनेकी आशादेखरहीहूं आज तीन दिन के व्यतीतहोजानेपर भी इसके प्राणनहीं निकलते हैं और यह बारम्बार जलमांगताहै मैं जल तो ले आईहूं परन्तु इस ऊँचेशूलपर इसके मुखतक मैं नहीं पहुंचतीहूं उसके यह वचनसुनकर बीर अशोकदत्त बोला कि राजाने भी मेरे हाथ इसके लिये जल भेजाहै इससे तुम मेरी पीठपर लातरखकर इसके मुखमें जल छोड़दो क्योंकि आपत्तिमें स्त्रियोंको परपुरुषका स्पर्शमात्र दूषितनहीं है उसके यह वचनसुनकर वह स्त्री शूलीके नीचेझुककर खड़ेहुए अशोकदत्तकी पीठपर जललेकर खड़ीहोगई क्षण भर में पृथ्वीपर और अपनी पीठपर रुधिरकी बूंदगिरती जानकर अशोकदत्तने जो शिर उठाकर देखा तो वह स्त्री शूलीपर चढ़ेहुए पुरुषके मांसको छुरी से काटकर खाती हुई दिखाईदी तब उसका ऐसा चरित्र देखकर अशोकदत्तने क्रोधसे नूपुरों समेत पैरको पकड़कर उसे पृथ्वी में पटकनेकी इच्छाकरी तब वह शीघ्रही माया से अपने पैरको छुड़ाकर आकाशमें जाकर कहीं गुप्तहोगई और अशोकद॰ के हाथमें पैरके खेंचनेसे ढीलाहोकर एकमणि जटित नूपुररहगया इसके उपरान्त आदि में सुन्दर॰ दूसरे में नीचे करनेवाली और अन्तमें विकारसे घोर दुर्जनोंकी संगति के समान उसस्त्रीको नष्टहुई॰ कमल और दिव्य नूपुरको हाथ में देखकर अशोकदत्तको आश्चर्य्य सन्ताप और हर्ष॰ ल लेकर उस तदनन्तर वह श्मशानसे नूपुर लेकर अपने घरको चला आया और प्रातःकाल॰ नमे उसेफिर पहुंचादिया आया राजाने पूछा कि उसशूलीवाले पुरुषको तुमने जलदियाथा तब अशो॰ त्रिमें सदैव यहाँ आती हूं को वह नूपुरदिखाया राजाने पूछा कि यह कहाँसे लाये ऐसा राजाकि पूछ॰ दके नीचे मुझेपाओगे २१६

वृत्तान्त कहदिया तब अशोकदत्तके असाधारण पराक्रमको बहुत अधिक जानकर राजा यद्यपि उसके अन्य गुणोंसे प्रसन्नथा तथापि उससमय और भी प्रसन्नहोगया और उस नूपुरको लेकर राजाने रानीको देकर बहुत प्रसन्नहोकर उसका सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णनकिया रानी भी उसवृत्तान्तको सुनके और मणि जटित दिव्य नूपुरको देखकर अशोकदत्तकी बहुत प्रशंसाकरके अत्यन्त प्रसन्नहुई १६० तब राजारानी से बोला कि हे प्रिये जातिके समान विद्यासे और सत्यके समान रूपसे बड़ोंमें भी बड़ा यह अशोक दत्त जो मदनरेखा नाममेरी अत्यन्त शुभलक्षण वाली कन्याका पति होवे तो बड़ी उत्तम बातहै वरके यहीगुण देखने चाहिये क्षणभंगुर लक्ष्मीकी अपेक्षा नहीं करनीचाहिये इससे मैं अपनी वहकन्या इसवीर को दूंगा पतिके यहवचन सुनकर रानी आदरपूर्वक बोली कि आप उचित कहतेहो यहवर मेरीकन्याके अनुरूपहै वहकन्याभी जबसे वसन्तोद्यानमें उसे देखआईहै तबसे उसकाचित्त उसीमें ऐसालगाहै कि न सुनतीहै न देखतीहै यहबात उसकी सखियों से जानकर मैं विचार करतीहुई कुछरात्रिरहे सोगई सोजाने पर एक दिव्यस्त्रीने मुझसे कहा कि हे पुत्री तुममदनलेखानाम अपनी कन्याको किसी दूसरेको न देना यह जन्मान्तरमें उपार्जनकीहुई अशोकदत्तकी स्त्री है यहसुनकर मैं जगपड़ी और प्रातःकाल मदनले खाके पासजाकर मैंने इसस्वप्नके विश्वाससे उसे समझादिया और इससमय आपने भी वहीबात मुझसे कही इससेवृक्षकेसाथ ऋतुकी लताके समान अशोकदत्तके साथ इसकाविवाहहोना योग्यहै प्रियाके यह वचनसुनकर प्रसन्नहुए राजाने बड़ा उत्सवकरके अशोकदत्तको बुलाके अपनी कन्याका विवाह उसके साथकरदिया उससमय राजपुत्री और अशोकदत्तका समागम लक्ष्मी और विनयके समागमके समान परस्पर शोभाकारीहुआ १७१ इसके उपरान्त एकसमय रानीने राजासे कहा कि अशोकदत्तका लाया हुआ वहनूपुर अकेला नहीं शोभित होताहै इससे उसीके समान एक दूसराभी बनवाओ तब राजाने सुनारोंको बुलाकर कहाकि इसनूपुरके समान दूसरा नूपुर बनाओ उसेदेखकर सुनारलोग बोले कि हे महाराज इसके समान दूसरा नहीं बनसक्ता यह दिव्य शिल्पहै मनुष्य इसके तुल्य नहीं बनासक्ते इस प्रकारके रत्नभी पृथ्वीमें नहींहोते हैं इससे जहां यह नूपुर मिलाहो वहांसे ही दूसराभी ढुंढ़वाइये यहसुनकर रानी समेत राजा उदास होगया तब राजाको उदास देखकर वहां बैठाहुआ अशोकदत्त बोला कि मैं

१७, ऐसाही दूसरानूपुरभी लादूंगा उसकी यह प्रतिज्ञासुनकर राजाने साहससे डरकर उसको स्नेहकरके नि षेध के शुभगण किया परन्तु वह अपने निश्चयसे नहीं हटा और उसनूपुरको लेकर कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके दिन लठोंकर उसी समय जहां वह श्मशानभूमिमें नूपुरमिलाथा वहींगया और वहांजाकर चिताकेधुएंसे मैले और रजानेपर उत्पन्नहुएहुए मनुष्योंसे युक्तवृक्षोंके समान राक्षसोंसे व्याप्त श्मशान में उसस्त्रीको न देखकर नूपुरकी के ऐसे पराक्रमको देखकर और महामांसका बेचनाही उपाय शोचा और वृक्षपरसे एकमुर्दे को लेकर महामांसलो नेलगा और वहभी राजाका मांसको बेचताहुआ वहीं घूमनेलगा उससमय दूरसे एकस्त्रीने पुकारकर कहा कि रलोगोंके लिये निधिके समानहो मेरेपास आओ यहवचन सुनकर उसकेपास जाके अशोकदत्तने वृक्षकेनीचे आ से घिरीहुई रत्नके आभूषणोंको पहरेहुई और मरुदेशमें कमलनी के समान

श्मशानमे असंभवहै स्थिति जिसकी ऐसी एकदिव्यस्त्री देखी उसके पास जाकर यह बोला कि मैं महा मांसवेचताहूं तुम लेलो तव वहदिव्यस्त्री वोली कि इसका क्यामूल्यहै यहसुनकर अशोकदत्त हाथमें रक्खे हुए उस मणिजटितनूपुरको और कंधेपर रक्खेहुए मृतकको दिखाकर वोला कि जो इसनूपुरके सदृश दूसरानूपुरदे उसे मैं यहमांसदूं जो तुम्हारे पासनूपुरहोय तो मांसलो यहसुनकर वहवोली कि मेरेपासदूसरा नूपुरहै और यहभी मेराही नूपुरहै जो तुम हरलेगयेथे औरमैं भी वहीहूं जिसेतुमने शूलीपर चढ़ेहुए पुरुष के पासवैठेहुए देखाथा इससमय तुमने मेरे रूपवदलनेकेकारण नहींपहचाना अव इसमांससे क्या प्रयोजनहै जो मैं तुमसेकहूं वह तुमकरो तो मैं दूसरा नूपुर तुमकोदेदूं उसके यह वचनसुनकर उसने कहा कि जो तुमकहो वह मैं क्षणभरमें करदूंगा १६४ तव उस स्त्री ने अपना सम्पूर्ण अभिलाप उससे कहना प्रारम्भकिया कि हे महासत्त्व हिमालय के शिखरपर त्रिघण्टनामपुरहै उसपुर मे सम्पूर्ण राक्षसों का स्वामी वड़ा वलवान् लम्वजिह्वनाम राक्षसथा उसकी विद्युच्छिखानाम मैं स्त्री हूं मुझे यह सामर्थ्य है कि जैसाचाहूं वैसारूप धारणकरलूं भाग्यवशसे मेरे एक कन्या के उत्पन्नहोनेपर मेरापति कपालस्फोटनाम राक्षसो के राजाके सन्मुख रणमेंमारागया तव राजाने प्रसन्नहोकर वह पुर मुझे देदिया इससे मैं सुख पूर्व्वक अपनी कन्या समेत वहांरहती हूं अव मेरी वह कन्या युवावस्थाको प्राप्तहुई है इससे मेरे चित्त में उसके वरकी वड़ी चिन्तावनीरहती है इसीकारणसे चतुर्द्दशी के दिन रात्रिकेसमय इसमार्ग से राजाके साथ तुमको जातेदेख कर मैंने यहां वैठे २ शोचा कि यह वीर युवापुरुष मेरीकन्याके पतिहोने के योग्य है इससे इसकी प्राप्तिके लिये कोई उपाय शोचनाचाहिये मनमें यह विचारकरके शूलीपरचढ़ेहुए पुरुष के वहाने से जलमांगकर तुमको श्मशानमें वुलाया और क्षणभर अपनी मायासे वह सम्पूर्ण मिथ्यारूप दिखाकर तुम्हे धोखादिया और फिर तुमको युक्तिसे वुलाने के लिये जंजीरके समान इस नूपुरको छोड़कर मैं यहाँसेचलीगई इसप्रकार से आजतुम मुझ को प्राप्तहुएहो इस्से मेरे घरपरचलके मेरीकन्याको ग्रहणकरो और दूसरानूपुरलो उसराक्षसीके इनवचनोंको स्वीकारकरके उसीकेसाथ उसकी सिद्धिसे आकाशमार्गहोकर उसकेपुरमेंपहुंचा और वहाँपहुंचकर सुवर्णमय उसपुरको आकाश मे चलते २ थककर विश्रामके लिये वैठेहुये सूर्य्यके विम्वकेसमान देखा उसपुरमें मूर्त्तिधारणकिये अपनेसाहसकी सिद्धि के समान विद्युत्प्रभानाम राक्षसोंकेस्वामीकी कन्या उसे वहाँ मिली वहअपनीसासके ऐश्वर्य्यसे प्रसन्नहोकर अपनी उसराक्षसी प्रियाकेसाथ कुछकालतक वहाँरहा २०६ फिर कुछकाल के उपरान्त अपनी माससे वोला कि वह नूपुर दो मुझे अभी काशीपुरीकोजानाहै वहाँ मैंने राजाकेसन्मुख इसीनूपुरकेसमान दूसरे नूपुरलाने की प्रतिज्ञाकीथी उसके यह वचन सुनकर उसराक्षसीने दूसरानूपुर और एकसुवर्णकाकमल उसे देकर विदाकिया अशोकदत्त फिर आनेका नियमकरके और नूपुरतथा सुवर्णका कमल लेकर उस पुरसेचला उसकीसासने अपनीसिद्धिकेप्रभावसे आकाशकेमार्गसे उसीश्मशानमे उसेफिर पहुंचादिया और उसीवृक्षकेनीचे खड़ीहोकर उस्सेकहा कि मैं कृष्णपक्षकी चतुर्द्दशीकी रात्रिमें सदैव यहाँ आती हूं इस्सेतुम जव कृष्णपक्षकी चतुर्द्दशीकीरात्रिको यहाँ आओगे तव इसीवरगदके नीचे मुझेपाओगे २१६

उसके वचनोंको स्वीकारकरके और उससेआज्ञामांगकर अशोकदत्त अपने पिताकेघरमेंआया छोटेपुत्रके वियोगके दुःखको दूनाकरनेवाले इसके बहुतकालतक परदेशमें निवासकरनेसे इसके मातापिता अत्यन्त दुःखितहोरहेथे उसेदेखकर वह अत्यन्तही प्रसन्नहुए और अशोकदत्त जबतक अपनेश्वशुरकेयहाँ जाने का विचारही करताथा कि वह उसका आनासुनकर वहीं आगया राजासाहसी के स्पर्श से मानोंडरेहुए रोमांचित अपने अंगोंसे प्रणामकरते हुए अशोकदत्तको आलिंगनकरके अत्यन्तही आनन्दितहुआ फिरराजाके साथही मूर्त्तिको धारणकियेहुए आनन्दके समान अशोकदत्त राजमन्दिरकोगया और वहाँ जाकरराजाको उसनेदोनों दिव्यनूपुरदिये वह नूपुर अपनीझन्कारसे मानोंअशोकदत्तके पराक्रमकी प्रशंसाकररहेथे फिर वह सुवर्णका कमलभी अशोकदत्त ने राजाको राक्षसोंकी राज्यलक्ष्मी के हाथसे हर लायेहुये लीला कमलके समान देदिया इसके उपरान्त रानी समेत राजाके आश्चर्य्यपूर्वक पूछने पर उसने अपनासंपूर्ण आनन्ददायक वृत्तान्त उनसेकहदिया विचित्रचरित्रों से चित्तमें चमत्कार करनेवाला निर्मल यश क्या विनासाहस किये प्राप्तहोसक्ताहै इसप्रकारकहते हुए राजाने और नूपुरको पाकर प्रसन्न हुई रानी ने उस जामातासे अपनेको कृतार्थ माना उससमय उत्सवसे बजायेगये बाजोंसे शब्दायमान राजभवन अशोकदत्तके गुणों को गाताहुआ सा मालूमहुआ २२७ इसके उपरान्त दूसरेदिन राजा ने अपने देवमन्दिरमें चांदी के कलशपर वह कमलरखवाया श्वेत तथा लाल वह कलश और कमल राजा तथा अशोकदत्तके यश और प्रतापके समान शोभितहुए उनदोनोंको इसप्रकार शोभितदेखकर अत्यंत प्रसन्नहुआ राजा श्रीशिवजीकी भक्तिकेरसमें मग्नहोकर बोला कि यह सुन्दर कलश इस कमलसे पिंगलवर्ण के जटाजूटको धारणकियेहुए भस्मसे श्वेत श्रीशिवजी के समान शोभितहोताहै यदि इसीप्रकार का एक और कमलहोता तो दूसरेकलश में भी मैं रखवादेता यहसुनकर अशोकदत्तबोला कि मैं दूसराभी कमलआपके निमित्तलाऊंगा तब राजानेकहा कि मुझेदूसरेकमलसे कोईप्रयोजननहीं है तुमसाहस मत करो राजाके ऐसाकहनेपर भी अशोकदत्त के चित्त में दूसरेसुवर्ण कमलके लानेकीइच्छाबनीरही इसके उपरान्त कुछदिनोंके व्यतीतहोनेपर कृष्णपक्षकी चतुर्दशीआई उसदिन अशोकदत्तकी सुवर्णके कमल के लाने की इच्छा को जानकरके मानों भय से आकाशरूपीतड़ाग के स्वर्णकमलरूपी भगवान्सूर्य्य के अस्तहोनेपर संध्यासे रक्तवर्ण को प्राप्तहुए मेघरूपी मांसको खाने के लिये मानों धुएं के समानधूम्रवर्णवाले अन्धकाररूपी राक्षसों के सब ओर दौड़नेपर और चमकते हुए दीपकोंकी पंक्तिरूपी दांतोंकी पंक्तिसे देदीप्यमान तथा भयंकर रात्रिरूपी राक्षसी के अत्यन्त भयंकर मुखके फैलनेपर अशोकदत्त राजपुत्रीको सोतीहुई जानकर मंदिर से निकलकर श्मशानको चलागया वहांजाकर बरगदके वृक्षके नीचेबैठीहुई उसराक्षसी को उसने देखा और उसने भी उसका बड़े आदरपूर्वक शिष्टाचार से स्वागत किया २४० इसके उपरान्त उसीराक्षसी के साथ हिमालयके शिखरपर त्रिघण्टनामपुरमें पहुँचा वहां विद्युच्छिखा अत्यन्त उत्कण्ठासे उसका मार्गहीदेखरहीथी कुछ कालतक उसके साथ वहांरहकर अशोकदत्तने अपनी साससेकहा कि एक दूसरा सोनेका कमलमुझे कहींसेलाकरदो यहसुनकर वह बोली कि

और कमल मेरे पास कहां है राक्षसों के स्वामी कपालस्फोटके तड़ागमें इसप्रकारके कमल उत्पन्नहोते हैं उस तड़ागमे से उसने प्रसन्नहोकर एक कमल मेरे पतिको दियाथा उसके यह वचनसुनकर अशोकदत्त बोला कि तुम मुझे वहां लेचलो मैं उसमें से कमल तोड़लाऊंगा तब वह बोली कि दारुणराक्षस उसकी रक्षाकरते है इससे वहांसे कमल तुम नहींलासक्के उसके नाहींकरने को न मानकर जब अशोकदत्त ने बहुतसा आग्रहकिया तो उसने उसे लेजाकर दूरसे पर्व्वतके ऊंचेशिखरपर वर्त्तमान वह दिव्यतड़ाग दिखाया वह तड़ाग अत्यन्त देदीप्यमान सुवर्ण के कमलो से ढकाहुआथा और वह कमलदीप्तिसे ऐसे शोभितहोरहेथे कि मानो सदैव उन्मुखरहने के कारण सूर्यकीप्रभा उनमें समागईथी तड़ागकी ऐसीशोभा देखकर अशोकदत्त जबवहाँजाकर कमलतोड़नेलगा तब रक्षाकरनेवाले घोरनिशाचरोने आकर इसे घेर लिया इसने शस्त्रसे बहुतो को मारडाला और बहुतो ने भागकर जाके कपालस्फोटनाम अपने स्वामी से निवेदन किया वह भी सुनतेही कुपित होकर आपही वहाँ चला आया और अशोकदत्तको कमल तोड़ते देखकर उसने आश्चर्य्य पूर्व्वक कहा कि यह मेराभाई अशोकदत्त यहाँ कैसे आगया इसप्रकार पहचानकर वहशस्त्रोंको छोड़कर हर्षके आंसुओंको अपने नेत्रो से बहाताहुआ दौड़कर उसके पैरोपर गिरा और बोला कि मैं विजयदत्तनाम तुम्हारा छोटाभाई हूं हम तुम दोनो विप्रवर गोविन्दस्वामी के पुत्रहैं भाग्यवशसे इतने कालतक मैं निशाचररहा चिताके कपालको फोड़ने से कपालस्फोट मेरानाम हुआ इससमय आपके दर्शनसे मुझे अपने ब्राह्मणपनेकी याद आगई और मोहसे बुद्धिका आच्छादित करनेवाला राक्षसपना मेरानष्ट होगया इसप्रकार विजयदत्तके कहनेपर अशोकदत्त जब उसे आलिङ्गनकरके प्रेमके आँसुओ से राक्षसभावसे दूषितहुए उसके शरीरको मानो धोनेलगा उसीसमय आकाशसे विद्याधरोंका विज्ञप्तिकौशिकनाम गुरूउतरा उसने उनदोनो के पास आकर कहा कि तुम सब विद्याधरहो शापमे तुम्हारी यह दशाहोगई थी इससमय तुम्हारा वह शाप शान्त होगया इससे अपनी विद्याओंको ग्रहणकरो और अपने बन्धुओंकोभी विद्यासिखाकर उन्हें साथलेकर अपने स्थान को चलेआओ इसप्रकार कहकर और विद्याओंको देकर प्रज्ञप्तिकौशिक आकाशको चलागया २६१ इसके उपरान्त वहदोनो विद्याधरहोकर वहां से बहुतसे सुवर्णके कमलोंको लेकर राक्षसों के स्वामीकी कन्या कनकरेखाके पास आये वहभी शापके क्षीणहोनेसे विद्याधरी होगई उसेसाथमे लेकर वहदोनो आकाशमार्गसे काशीपुरीको चले काशीजीमें पहुंचकर उनदोनोंने दर्शनरूपी अमृत बरसाकर वियोग रूपी अग्निसे संतप्त अपने माता पिताको शीतलता प्राप्तकराई देहके नहीं भिन्नहोनेपरभी विचित्र जन्मान्तरको प्राप्तहुए उनदोनों भाइयोंको देखकर केवल उनके माता पिताकोही नही किन्तु सब लोगोको बड़ाउत्सवहुआ बहुतकालके उपरान्त विजयदत्तको आलिङ्गनकरके गोविन्दस्वामीका मनोरथ विशाल वक्षस्थलके समान पूर्णहुआ उससमय इसवृत्तान्तको सुनकर अशोकदत्तका श्वशुर राजा प्रतापमुकुट भी हर्षसे वहींआगया और वहांआकर उसने अशोकदत्तके सम्पूर्ण वृत्तान्तको जानकर उसकाबड़ाही सत्कारकिया इसकेपीछे अशोकदत्त अपने सम्पूर्ण साथियों समेत राजभवनको गया वहां उसकी स्त्री

राजकन्या बड़ी उत्कण्ठा से उसपर ध्यानलगाये बैठी थी अपने दर्शन से उसके चित्तको प्रसन्नकरके अशोकदत्त ने बहुतसे सुवर्ण के कमल राजाको दिये और राजाभी मनोरथ से अधिक प्राप्तिहोने से अत्यन्त प्रसन्नहुआ २७० तदनन्तर सब लोगोंके सन्मुख गोविन्दस्वामी आश्चर्य्य और कौतुकसे युक्त होकर विजयदत्तसे बोला कि हे पुत्र श्मशानमें रात्रिके समय जब तुम राक्षसपने को प्राप्तहुए तब तुम्हारा क्या वृत्तान्तहुआ उसे वर्णनकरो तब विजयदत्तने कहा कि हे तात चपलतासे दैवाधीनहोकर चितामें जलने हुए कपालको फोड़कर उससे उछलकर मुखमें गईहुई चरबी से मैं राक्षसहोकर माया से मोहितहोगया यह तो आपने देखाही था इसके उपरान्त राक्षसों ने मुझे कपालस्फोटनामसे पुकारा और मैं उनमेजाकर मिलगया वहमुझे अपने साथ राक्षसों के स्वामी के पासलेगये उसनेभी मुझे देख कर प्रसन्नहोके मुझे अपना सेनापति बनालिया एकसमय वहराक्षसों का स्वामी अभिमानसे गन्धर्व्वों के साथ युद्धकरनेको गया वहां संग्राम में शत्रुओं ने उसे मारडाला उसके मरजानेपर सम्पूर्ण राक्षस मेरी आज्ञामाननेलगे तबसे मैं उसपुर में रहकर राक्षसों पर राज्य करनेलगा उसीपुर में अकस्मात् सुवर्ण के कमलोंको लेने के लिये गयेहुए ज्येष्ठभ्राता अशोकदत्त के दर्शनसे मेरी वह दशाजातीरही फिर जैसे हमलोगोंको शापके छूटजाने से अपनी विद्याप्राप्तहुई वह सम्पूर्ण वृत्तान्त आर्य्य अशोकदत्त आपलोगोंसे वर्णन करेंगे २८० इसप्रकार विजयदत्त के कहनेपर अशोकदत्त अपने शापका वृत्तान्त प्रारम्भसे कहनेलगा कि पूर्वसमयमें हम दोनों विद्याधरथे एकसमय आकाशमार्ग से उड़ते २ गालव मुनिके आश्रममें हम दोनोंने गंगाजी में स्नानकरतीहुई मुनिकी कन्यकाओंको देखा उन्हें देखकर हम दोनों के चित्तमें और हमेंदेखकर उन सबके चित्तोंमें कामकी चेष्टा उत्पन्नहुई जब हम दोनोंने एकान्तमें जाकर उनके प्राप्तकरनेकी इच्छाकरी तब दिव्यदृष्टिवाले उनके बन्धुओं ने सब वृत्तान्तजानकर हमको क्रोधसे शापदिया कि हे पापियो तुम दोनों मनुष्ययोनिमें उत्पन्नहोजाओ और वहां भी तुम्हारा विलक्षण वियोगहोगा मनुष्योंसे अगोचर अत्यन्त दूरदेशमे गयेहुए एकको देखकर जब दूसरेको ज्ञानहोगा तब विद्याधरों के गुरूसे विद्याओं को प्राप्तकरके तुम दोनों शापसे छूटकर फिर विद्याधरहोजाओगे इस प्रकार मुनियों के शापसे हम दोनों यहां उत्पन्नहुए और यहां जिसप्रकार हमारा वियोगहुआ वह तो आपलोगोंको विदितही है इससमय कमल के निमित्त अपनी सासकी सिद्धिके प्रभावसे राक्षसपति के पुरमे जाकर यह विजयदत्त मेरा छोटाभाई मुझे वहां मिला और वहीं प्रज्ञप्ति गुरूसे विद्याओं को पाकर हम दोनों विद्याधरहोगये और वहां से यहांचलेआये यहकहकर अशोकदत्तने अपने माता पिता और अपनी स्त्री राजकन्याको सम्पूर्ण विद्यासिखलादीं उन विद्याओंको पाकर वह सब भी विद्याधरहोगये और अत्यन्त विचित्रचरित्रवाला अशोकदत्त शापसे छूटकर बहुतप्रसन्नहुआ इसकेउपरान्त राजाप्रतापमुकुटसे आज्ञालेकर अशोकदत्त तथा विजयदत्त अपने माता पिता तथा स्त्रियों समेत वहां से उड़कर आकाशमार्ग से अपने चक्रवर्त्ती के स्थानकोचलेगये वहांजाके चक्रवर्त्ती के दर्शनकरके चक्रवर्त्तीकी आज्ञासे अशोकदत्त अशोकवेग और विजयदत्त विजयवेग इन अपने पुरानेनामोंको पाकर सम्पूर्ण

कुटुम्बसहित अपने स्थानकोचले और गोविन्दकूटनाम पर्वतपर अपनेस्थानमें पहुँचगये इसके उपरान्त काशीके स्वामी राजाप्रतापमुकुटनें भी अपने देवमन्दिरके दूसरे कलशमें भी सुवर्णका कमललगादिया और उसके दियेहुए अन्यकमलोंसे श्रीशिवजीका पूजनकरके और उसके सम्बन्धकी बड़ाई से प्रसन्न होकर अपने कुलको कृतार्थमाना इसप्रकार दिव्य जीव भी किसीकारणसे पृथ्वी में अवतारलेते हैं और वह अपने योग्यसत्त्व तथा उत्साह को धारणकरतेहुए दुर्लभकार्य्योंकी भी सिद्धिको प्राप्तहोते हैं इससे हेसत्त्वसागर तुमभी मेरे अनुमानसे कोई देवांशमालूम होतेहो तुम्हारा कार्य्य अवश्य सिद्धहोगा (प्रायः क्रियासुमहतामपिदुष्करासूत्साहिता कथयति प्रकृतेर्विशेषम्) प्रायः महात्माओंसे भी दुष्करकार्य्यों मे उत्साह युक्तहोनेसे प्रकृतिकी विशेषता प्रकटहोती है और यदितुम्हारा मनोरथ न सिद्धिहोने वालाहोता तो वहदिव्य राजकन्या कनकरेखा कनकपुरीके देखनेवाले दिव्य पतिकी इच्छा क्यों करती इसप्रकार एकान्तमें विष्णुदत्त से इससरसकथाको सुनकर हृदय में कनकपुरी के दर्शन करनेकी इच्छाकरनेवाले शक्तिदेवने धैर्य्य धारणकरके उसरात्रिको व्यतीतकिया २९८॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांचतुर्दारिकालम्बकेद्वितीयस्तरङ्गः २॥

इसके उपरान्त प्रातःकालके समय उत्स्थलद्वीपके मठमेंबैठेहुए शक्तिदेवके पास निषादोंका स्वामी आया और अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार बोला कि मैंने तुम्हारे मनोरथके सिद्धकरनेके लिये एक उपाय शोचाहै कि समुद्रके बीचमें रत्नकूटनाम एकद्वीपहै उसमें समुद्रसे प्रतिष्ठाकियेगये श्रीशिवजीका स्थानहै आषाढ़ शुदी १२ के दिन वहां बड़ा उत्सव होताहै उसमें संपूर्णद्वीपों से बहुतसे लोग दर्शन करनेको आतेहैं कदाचित् वहीं तुमको कनकपुरीका पतालगजाय इससेचलो वहींचलें क्योंकि वह तिथिभी निकट आगई है सत्यव्रतके यहवचन सुनकर शक्तिदेव विष्णुदत्त के दियेहुए पाथेय (राहखर्च) को लेकर सत्यव्रतके लायेहुए जहाजपरचढकर उसीकेसाथ वहांसेचला कुछदूर चलकर ऐसे अद्भुत स्थानमें जहांद्वीपों के समान बड़े २ मगरथे पहुंचकर उसने जहाजको खेवतेहुए सत्यव्रत से पूछा कि यहां से थोड़ीदूरपर समुद्रमें यहकौनसी बड़ीभारीवस्तु समुद्रसे निकलेहुए सपक्ष पर्वतके समान दिखाईदेरही है तब सत्यव्रतबोला कि यह वर्गदका वृक्षहै इसके नीचेबड़े २ भौंरोंसे युक्त बड़वानलहै इसस्थानको बचाकर यहां चलना पड़ताहै क्योंकि इसकेभँवरमें जाकर फिर लौटनाकठिनहै सत्यव्रतके ऐसा कहनेपर जलके वेगसे वहजहाज उसी ओरको जानेलगा यहदेखकर सत्यव्रत शक्तिदेवसे बोला कि हेविप्रवर निस्सन्देह हमलोगों के विनाशकासमय आगया क्योंकि अकस्मात् यहजहाज देखो उसीओरजारहाहै औरमैं इसेकिसीप्रकार सेभी नहींरोकसक्ता मृत्युके मुखकेसमान इसगंभीरभँवरमें बलवान्कर्मके समान जलने हमलोगोंको डाल दियाहै इसबातका मुझे कोईदुःख नहीं है क्योंकि किसकाशरीर स्थिररहसक्ताहै परन्तु दुःखयहहै कि इतना क्लेश सहकरभी तुम्हारा मनोरथ सिद्धनहींहुआ इस्से जबतक मैं धीरे २ इसजहाजको कुछ रोकताहूं तब तक तुम इस वर्गदकी शाखापर चढजाओ तुम्हारी सुन्दरआकृति से मालूमहोताहै कि कदाचित् तुम्हारे जीवनका कोईउपाय निकलआवे क्योंकि (विधेर्विलासानन्धेश्चतरंगान्कोहितर्कयेत) भाग्यके विलास

और समुद्रकी तरंगोंको कौन जानसक्ता है धैर्य्यवान् सत्यव्रतके ऐसा करनेपर वह जहाज उस वृक्षके निकट पहुंचगया उससमय शक्तिदेवने निर्भयहोकर उछलके उसवर्गदके वृक्षकी बड़ी मोटीशाखा प्रकड़लीनी और सत्यव्रत तो पराये निमित्त त्यागकियेगये वहतेहुए शरीर तथा जहाज दोनों समेत बड़वानलमें चलागया २१ इसके उपरान्त शाखाओंसे आशा (दिशा) ओंके पूर्ण करनेवाले उसवृक्षका आलम्वन करकेभी शक्तिदेवने निराश होकर शोचा कि मैंने वह कनकपुरी नाम नगरी तो नहीं देखी परंतु इसस्थानमें उसनिषादों के स्वामीको नष्टकरके मैं आपभी नष्टहोनेवालाहूं अथवा सदैव सबके शिरपर पैररखनेवाली भगवती भवितव्यताको कौनउल्लंघन करसक्ताहै अपनी दशाकेअनुसार इसप्रकार चिंता करते २ उसीवृक्षपर बैठे बैठे उसका वह दिन व्यतीतहुआ सायंकालके समय उसबर्गद के वृक्षपर सब ओरसे शब्दकरतेहुए वहुतसे पक्षी आकरबैठे बड़े २ पक्षोंकीवायुसे चलायमान समुद्रकी लहरोंसे मानों आगे चलकर लियेगये वहुतसे गिद्ध उसवृक्षपर आनकर बैठे उससमय पत्तों के भीतर छिपकर बैठेहुए शक्तिदेवने वृक्षकी शाखाओंपर बैठेहुए पक्षियोंकी परस्पर मनुष्यभाषामें बात चीत सुनी किसीने द्वीप किसीने पर्व्वत और किसीने देशान्तर अपने २ उसदिनके चुगनेका स्थानबताया उनमेंसे एक वृद्धपक्षीने कहा कि आज मैं कनकपुरीमें चुगनेके निमित्तगयाथा और प्रातःकालभी वहीं सुखपूर्व्वक चुगने के निमित्त जाऊंगा वहुतदूर जाकर बड़े श्रमकरने से मुझको क्यालाभ है उसपक्षी के अमृतकी वृष्टिके समान वचनोंसे शक्तिदेवका संपूर्णसन्ताप दूरहोगया और उसनेशोचा कि भाग्यवशसे आजउसनगरीका होना संभवहुआ और वहां पहुंचनेकेलिये बड़ेशरीरवाला यहपक्षीही वाहनरूपसे मेराउपायहोगा यह शोचकर शक्तिदेव धीरे २ उसपक्षीके पासजाकर सोतेहुए उसपक्षीकी पीठके पंखोंमें छुपरहा ३४ प्रातःकाल होजानेपर जब अन्य संपूर्णपक्षी इधर उधर उड़गये तब भाग्यके समान आश्चर्य्यकारी अपने पक्षपातोंको दिखाताहुआ वहपक्षी उसवृक्षपरसे उड़कर पीठमें छुपेहुए शक्तिदेव समेत क्षणभरमें कनकपुरी में पहुंचा वहां पहुंचकर जबवहपक्षी किसीवनमें उतरकर चुगनेलगा उससमय शक्तिदेवने धीरे २ उसकी पीठसे उतरकर और उसके पाससे दूरजाकर उसने देखा कि दो स्त्रियां पुष्प तोड़रही हैं धीरे २ उनके पासजाके उनसेपूंछा कि यह कौनदेशहै और तुम दोनोंकौनहो यहवचन सुनकर और उसके देखने से आश्चर्य्ययुक्तहोकर वहवोलीं कि यहकनकपुरीनाम नगरीहै इसमें विद्याधर लोगरहते हैं और चंद्रप्रभानाम विद्याधरी का यहवगीचाहै हमदोनों इसकी रक्षाके लिये यहाँ नौकरहैं और इससमय उसी चन्द्रप्रभा के निमित्त फूल तोड़रही हैं यहसुनकर शक्तिदेव वोला कि तुम ऐसा उपायकरो कि जिस्से मैं भी तुम्हारी स्वामिनीको देखूं शक्तिदेवके इनवचनोंको स्वीकार करके वहदोनों स्त्री उसे नगरीके भीतर राजमन्दिर में लेगईं उसने भी वहाँ जाकर सम्पत्तियों के निवासके समान माणिक्यके खंभोंसे युक्त और सुवर्णकी दीवारवाला वह राजमन्दिर देखा ४४ वहाँ गयेहुए शक्तिदेवको देखकर सम्पूर्ण सेवकों ने चन्द्रप्रभासे आश्चर्य्य पूर्व्वक कहा कि कोई मनुष्य यहाँ आया है यहसुनकर उसने शीघ्रही प्रतीहारको भेजकर शक्तिदेवको शीघ्रतासे अपने पास बुलवाया इसने भीतर जाकर नेत्रोंकी आनन्द देनेवाली ब्रह्माकी

अद्भुत रचनाकी रूपवती पराकाष्ठा (हद्द) के समान उस चन्द्रप्रभाको देखा वहभी शक्तिदेवको देख-तेही उसके वशीभूत होकर रत्नोंके पलंगपरसे उठी और आप आकर उसे भीतर लिवालेगई वहाँ उसका स्वागत करके और आदर पूर्वक उसे बैठालके बोली कि हे महाभाग तुमकौनहो और मनुष्योंसे दुर्गम इसस्थानमें कैसे आगयेहो उसके यहवचन सुनकर शक्तिदेवने अपना देशनाम तथा जातिकहकर कनकपुरीके देखनेके नियमसे कनकरेखानाम राजकन्याको पानेके लिये जिसप्रकार वहाँगयाथा वहसब वृत्तान्त वर्णनकिया इसवृत्तान्तको जानकर कुछध्यानकरके और दीर्घश्वास लेकर चन्द्रप्रभा एकान्तमें शक्तिदेवसे बोली कि हे सुभग इससमयमें तुमसे कोई गुप्तबात कहतीहूं उसे सुनो यहाँके सम्पूर्ण विद्याधरोंका स्वामी शशिखंड नाम विद्याधरहै उसके चारकन्याहुई सबसे बड़ी चन्द्रप्रभानाम मैं हूं दूसरी का नाम चन्द्ररेखा तीसरीका शशिरेखा और चौथीका शशिप्रभानामहै हम चारोंबहन अपने पिताके घरमें क्रमसे वृद्धिको प्राप्तहुई एकसमय मैं तो कन्याओंके व्रतमें स्थितथी और मेरी छोटी तीनों बहनें स्नान करनेकेलिये गंगाजीकोगई वहाँ जाकर यौवनके मदसे जलक्रीड़ा करतीहुई उनतीनोंने जलमें बैठेहुए अग्रतप नामसुनिको जलसे बहुत सींचा तब रोकनेपरभी बहुत हठकरनेवाली उनको देखकर मुनिने उन तीनोंको यहशाप दिया कि हे दुष्टकन्याओ तुम तीनों मृत्युलोकमें उत्पन्न होगी इसशापको जानकर हमारे पिताने वहाँ जाकर मुनिको बहुत प्रसन्नकिया तबमुनिने उनतीनोंके अलग२ शापका अन्तबतलाया और कहा कि मनुष्ययोनि मे भी इनको दिव्यज्ञानसे अपने इसजन्मका स्मरण बनारहैगा इसके उपरान्त जब वहतीनों मेरीबहन अपने२ शरीरों को त्यागकरके मृत्युलोकको गई तब मेरे पिता खेद से मुझे यहनगरी सौंपकर बनकोचलेगये यहाँ रहते २ एकसमय भगवती ने मुझ से स्वप्नमें कहा हे पुत्री मनुष्य तेरापति होगा भगवती की स्वप्नमेंदीहुई उसी आज्ञाको मानकर मैंने पिता के बताये हुए अनेकविद्याधरों को अपने पतिकरनेको नहीं स्वीकार किया और अबतक मैं कन्याही बनीहूं इससमय आश्चर्य्य भरेहुए तुम्हारे यहां आगमनसे और अत्यन्त श्रेष्ठ स्वरूपसे मैं तुम्हारे वशीभूत होगईहूं इससे आनेवाली चतुर्द्दशीके दिन ऋषभनाम पर्व्वतपर अपने पितासे तुम्हारे लिये विज्ञापनकरनेको जाऊंगी उसपर्व्वतपर प्रतिवर्ष इसचतुर्द्दशीके दिन श्रीशिवजीका पूजनकरनेके लिये सम्पूर्ण विद्याधर वहांइकट्ठे होतेहैं इससे मेरापिताभी वहां अवश्यआवेगा वहां उनसे आज्ञालेकर मैं शीघ्रआऊंगी तब तुम मेरेसाथ विवाहकरना अबउठो अपना नित्यनैमित्तिक कर्मकरो यहकहकर चन्द्रप्रभाने विद्याधरोंके योग्य उत्तम२ सुखदायी पदार्थोंसे शक्तिदेवकी सेवाकरी उससमय उनपदार्थोंका अनुभवकरके शक्तिदेवको ऐसा सुख हुआ कि जैसादावानलसे संतप्त मनुष्यको अमृतके तालाबमें गोतालगानेसे होताहै ६६ इसकेउपरान्त जब चतुर्द्दशीका दिनआया तब चन्द्रप्रभा शक्तिदेवसे बोली कि आज मैं अपने पिताके पास तुम्हारे लिये विज्ञापनकरनेको जाऊंगी और यहसम्पूर्ण परिकरभी मेरेही साथ जायगा तुम दोदिन यहां अकेले रहकर किसीप्रकारका चित्तमें खेद न करना और इसमन्दिरमें अकेले रहकरभी कभी बीचके खण्ड में न जाना यहकहकर चन्द्रप्रभा अपने चित्तको उसकेपास और उसके चित्तको अपनेसाथ लेकर चली

गई शक्तिदेवभी अकेला अपने चित्तको वहलाताहुआ बड़े २ उत्तम स्थानों में घूमनेलगा घूमते २ यह शोचकर कि चन्द्रप्रभाने मुझे बीचके खण्डमें जानेका क्यों निषेधकियाहै उसमन्दिरके उसीवीचके खंड में चढ़गया ठीकहै (प्रायोवारितवामाहि प्रवृत्तिर्मनसोनृणाम्) प्रायः मनुष्योंकी चित्तवृत्ति निषेधकरने से उलटीहोतीहै वहांजाकर उसने रत्नोंके तीन मण्डप देखे उनमेंसे दोके तो द्वारबन्दथे और एककाद्वार खुलाथा उसखुलेहुए द्वारमें जाके रत्नजटित पलँगपर सम्पूर्ण शरीरको लपेटेहुए किसी को सोताहुआ देखा जब इसने उसके वस्त्रको खोला तब परोपकारी राजाकी मरीहुई कनकरेखानाम कन्या दिखाईदी उसे देखकर उसने बड़े आश्चर्य्यसे शोचा कि क्या यह वही कन्या मरीहुई पड़ी है या मुझको भ्रान्ति है जिसके लिये मैं इतनीदूरआया वह यहां मरीहुई पड़ीहै और मेरेदेशमें जीतीहुई है यहां उसकी कान्ति में कुछ अन्तरभी नहींहुआहै मुझे मालूमहोताहै कि ब्रह्माने किसीकारणसे मेरे लिये यह इन्द्रजालरचाहै इसप्रकार शोचकर वह उस मंदिरसे निकलकर उन दूसरे बन्द दोनों मंदिरों में गया उनमें भी उसीप्रकार दो मरीहुई कन्या पलँगोंपर पड़ीहुई दिखाईदीं तब उन दोनों मन्दिरों से भी निकलकर आश्चर्य्यपूर्वक वह वहां बैठगया वहां बैठे उसनेदेखा कि एक बड़ीसुन्दर बावड़ी निर्म्मल जलसे भरीहुई है और बावड़ी के किनारेपर एकघोड़ाखड़ाहै जिसपर रत्नजटित काठीरक्खीहुईहै यह देखकर शक्तिदेव बावड़ी के किनारे परगया और उस घोड़े के पासजाके उसको शून्यजानकर उसपर चढ़ने का विचार किया तब उस घोड़ेने लातमारकर उसे बावड़ी में डालदिया उस बावड़ी में गोताखाकर शक्तिदेव अपने वर्द्धमानपुरके बगीचेकी बावड़ीमें जानिकला जन्मभूमिकी बावड़ीके जलमें स्थित उसने चन्द्रप्रभाके बिना कुमुदों के समान दीन अपनेको देखकर शोचा कि कहां यह वर्द्धमानपुर और कहां वह विद्याधरोंकी कनकपुरी नगरी यहकैसा आश्चर्य्यकारी मायाका आडम्बरहै बड़ेकष्टका विषयहै कि मुझमंदभागीको किसीने कैसा ठगाहै अथवा कौनजानताहै कि अभी क्याहोनेवालाहै इसप्रकार शोचताहुआ शक्तिदेव उसबावड़ीके जलसे निकलकर अपने पिताके घरमेंआया और वहां उसके पिता तथा अन्यसब बांधवलोग उसेदेख कर अत्यन्त प्रसन्नहुए और बड़ा उत्सवहुआ दूसरेदिन घरके बाहरजाकर उसने फिर यह ढंढोरा पिटता हुआसुना कि ब्राह्मण अथवा क्षत्री जिसने कनकपुरीदेखीहो वहकहे राजायुवराजपदवी समेत अपनी कन्या उसेदेगा उसढंढोरेको सुनकर उसने ढंढोरेपीटनेवालो से कहा कि मैंने कनकपुरी देखी है वह उसे राजाके निकट लेगये और राजाने उसेपहचानकर पहलेहीके समान उसको झूठाजाना तब उसने राजा से कहा कि जो मेरा कनकपुरीका देखना मिथ्यानिकले तो आप मुझे प्राणदंड दीजियेगा यह मैं नियम करताहूं आजराजकन्या मुझसे जोचाहै सोपूछे उसके यह वचनसुनकर राजाने सेवकोंको भेजकर राजकन्या वहीं बुलवाली उसने वहां शक्तिदेवको देखकर और पहचानकर राजासेकहा कि हे तात यह फिर भी कुछ मिथ्याही कहैगा राजकन्या के यहवचन सुनकर शक्तिदेव बोला कि मैं झूंठ अथवा सत्य जो कुछ बोलूंगा परन्तु मुझे यहआश्चर्य्यहै सोतोबताओ कि मैंने तुमको कनकपुरी में मरी पड़ीहुई पलँगपर देखाहै और यहां तुमको जीतीहुई देखताहूं यह क्या बात है उससे इसपतेकी बातको सुनकर कनकरेखा

शीघ्रही अपने पितासे बोली कि हेतात इसने सत्यही कनकपुरीदेखी है थोड़ेही कालमें यहकनकपुरी में मेरा पतिहोगा और अन्यमेरी तीनबहनोंके साथ विवाह करके उसीपुरीमें विद्याधरोंका राजाहोगा मैंअब उसीपुरीमे रक्खेहुए अपनेशरीरमे प्रवेशकरूंगी मुनिके शापसे आपके यहांमेरा जन्म हुआथा जिससमय मुनिने मुझको शापदियाथा उसीसमय मुनिने यह शापका अन्त कहदियाथा कि जब कनकपुरीमेंतेरे शरीरको देखकर कोईमनुष्य आनकर मनुष्य शरीरमे स्थित तुझसेकहैगा उससमय तेराशाप छूटजायगा और वही मनुष्य तेरापतिहोगा इसप्रकारसे मुनिने मुझे मेरेशापका अन्त बतायाथा मुझे मनुष्यभावमे भी ज्ञानसे अपने पूर्व्वजन्मका स्मरणबनाहै इस्से मैं सिद्धिकेलिये अपने विद्याधरोंके स्थानको जातीहूं यह कहकर राजकन्या उसशरीरको छोड़कर चलीगई और राजमन्दिरमे बड़ाभारी रोदनका कोलाहल मचगया १०६ शक्तिदेवभी दोनोओरसे भ्रष्टहोकर बड़े क्लेशोंसे मिलीहुई अपनी दोनो प्रियाओंका ध्यान करताहुआ मनोरथके सम्पूर्ण न होनेसे खिन्नहोकर अपने भाग्यकी निन्दाकरताहुआ राजभवनसे निकल करइसप्रकार शोचनेलगा कि कनकरेखाने तोमेरेमनोरथकासिद्धहोना कहाहीहै तोअब मैं खेदक्योंकरता हूं सम्पूर्णसिद्धियां सत्त्वके आधीनहै इस्से मैं उसीमार्गसे फिरकनकपुरीको जनताहूं निस्सन्देह भाग्यवश से कोईनकोई उपाय फिर होजायगा यह शोचकर शक्तिदेव वर्द्धमानपुरसे फिर चला ठीकहै (असिद्धार्था निवर्त्तन्ते नहिधीराः कृतोद्यमाः) धीरलोग उद्योगकरके कार्य्यसिद्धकियेविना नहीनिवृत्तहोतेहै चलते२ बहुतकालके उपरांत समुद्रकेतटपर उसीविटंकनाम नगरमे वह फिर पहुंचा वहॉसन्मुख आतेहुए उसवणिये को उसनेदेखा जिसकेसाथ जहाजमे जातेहुए जहाजटूटगयाथा उसेदेखकर शक्तिदेवने अपनेचित्तमेंकहा कि क्या यहवही समुद्रदत्तहै यह समुद्रमे गिरकर कैसेनिकलआया अथवाइसमे आश्चर्य्यहीक्याहै क्योंकि मैंही इसका दृष्टान्तहूं इसप्रकार शोचकर जबतक यह उसकेपास जाताहीथा तब तकवही इसेपहचानकर गलेमे लिपटगया और अपनेघरमें लेजाके सम्पूर्णअतिथि सत्कारकरके इस्सेपूछा कि जहाजके टूटजाने पर तुम कैसे२ समुद्रसेनिकलेथे तब उसने जैसेमछलीकेनिगलनेसे उत्स्थलद्वीपमें पहुंचाथा वहसब व्यौरे-वार वृत्तान्तकहदिया फिर शक्तिदेवने समुद्रदत्तसे भी पूछा कि उससमय तुम कैसे समुद्रकेपार हुए तब वह बोला कि उससमय मैंसमुद्रमे पड़ाहुआ एककाष्ठके सहारेसे तीन दिनतक पानीपरही इधर उधर बहाकिया इसके उपरान्त उसीमार्गसे एक जहाज जाताहुआ निकला जहाजवालोने मुझे चिल्लातेहुए देखकर अपने जहाजपर चढालिया जहाजपर चढकर मैंने वहॉ उससमय अपनेपिताको देखा जोकि बहुतकाल से द्वीपान्तरसे घरकोलौटेथे मेरेपिताने भी मुझेदेख और पहचानकर गलेसे लगालिया और रोदनकरके मुझसे सम्पूर्ण वृत्तान्तपूछा तबमैंने कहा कि हेतात जब आप बहुतकालसे जाकरनहींलौटे तब मैं व्यापार को अपनाधर्म जानकर उसमें प्रवृत्तहुआ फिर द्वीपान्तरमे जातेहुए जहाजके टूटनेसे समुद्रमेंगिरा तीन दिनतक समुद्रही में काष्ठकेसहारेसे घूमतारहा आज आपलोगोंने मुझेदेखकर यहॉ निकाला मेरे यहवचन सुनकर पितावोले कि तुमऐसेप्राणोके संदेहकारीकामोंको क्योंकरतेहो हेपुत्र मेरेपासधनहै और मैं अभी धनके उपार्जनकरनेमे स्थितहीहूं देखोसुवर्णसे भराहुआ यहजहाज मैं तुम्हारेलियेलायाहूं इसप्रकार सम-

झाकर वह मुझे उसीजहाजपर विटंकपुरमें लेआये १३० उसवणियेसे यह सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनकर और रात्रिभर उसीकेयहाँ रहकर दूसरेदिन शक्तिदेवने उससेकहा कि हेमित्र मुझे फिरभी उत्स्थलद्वीपको जाना है बताओ मैं वहाँ किस प्रकारसे जाऊं तब वह वणिया बोला कि मेरे व्यवहारी आजही उत्स्थलद्वीपको जानेवालेहैं उनके जहाजपर चढ़कर आपचलेजाइये उसके यह वचन सुनकर उसीके व्यवहारियोंके साथ शक्तिदेव उत्स्थलद्वीपकोगया वहाँ पहुंचकर उसने शोचा कि वह महात्मा विष्णुदत्त मेराभाई जो यहां रहताहै उसीके पासचलकर रहूं यह शोचकर वह बाजारके मार्गसे अपने भाईके घरकी ओर चला भाग्य वशसेमार्गमें निषादोंके स्वामी सत्यव्रतके पुत्रोंने उसेदूरसे देखकर पहचानलिया और बुलाकर कहा कि हे ब्राह्मण तुम यहां से कनकपुरीके ढूंढ़नेकेलिये हमारेपिताके साथगयेथे इससमय तुम अकेले कैसे आये यहसुनकर शक्तिदेव बोला कि जलोंके वेगसे जहाजके वड़वानलमें चलेजाने से तुम्हारा पिता समुद्रमें डूबगया शक्तिदेवके वचन सुनकर सत्यव्रतके पुत्रोंने क्रोधकरके अपने सेवकोंसे कहा कि इस दुष्टकोबां-धलो इसने हमारे पिताकोमाराहै नही तो कैसे सम्भवहै कि एकहीजहाजपर दोमनुष्य चढ़ेहोयँ उनमेंएक डूबजाय और एक बचे इस्से पिताके मारनेवाले इसदुष्टको प्रातःकाल चण्डिका देवीके आगेपशुके स-मान मारेंगे सेवकोंसे इसप्रकारकहकर सत्यव्रतके पुत्र आपही शक्तिदेवको बांधकर निरन्तर अनेक जीवों के भक्षणकरनेवाले बड़े उदरवाले बँधीहुई घंटाओंकी मालारूपी दांतवाले मृत्युके मुखके समान भयंकर चण्डिकाके मंदिरमें लेगये १४४ उस मंदिरमें रात्रिके समय बन्धनमें पड़ेहुए प्राणोंके बचने में सन्देहसे युक्तशक्तिदेवने भगवती चण्डिकाजी से यह विज्ञापनाकरी कि हे भगवति प्रातःकालके सूर्य्यके समान मानोंबहुत पियेगये और फैलेहुए रुरुनाम दैत्यके कण्ठके रुधिरवाली मूर्त्तिसे तुमने संसारकी रक्षाकी है इस्से हे वरदेभगवति प्रिय जनकी प्राप्तिकी तृष्णासे बहुतदूर आयेहुए और निष्कारण दुष्टलोगों के हाथमें पड़ेहुए मुझ सदैवनमस्कार करनेवालेकी रक्षाकरो इसप्रकार भगवती से विज्ञापन करके जबउसे किसी प्रकारसे निद्रापड़ी तो स्वप्नमें उसी मन्दिरसे निकलीहुई एकदिव्यस्त्री उसे दिखलाई दीनी उस दिव्यस्वरूपवाली स्त्री ने उसके पास आकर दयापूर्व्वक कहा कि हे शक्तिदेवडरोमत तुम्हारे लिये कोई अनिष्ट नही होगा सत्यव्रतके पुत्रोंकी एक विन्दुमतीनाम बहनहै वह प्रातःकाल तुम्हें देखकर तुमको अपना पतिबनाने की प्रार्थना करेगी तुमउसकी बातको स्वीकार करलेना वही तुमको छुटादेगी वह निषादकी कन्या नही है वहतो शापसे आईहुई कोई दिव्यस्त्री है यह सुनकर उसकी निद्राखुलगई और प्रातःकाल उसके नेत्रोंमें अमृतकीसी वृष्टिकरती हुई सत्यव्रतकी कन्या देवीजीके मन्दिरमें आई और इस्से बोली कि मैं निषादोंकेपति सत्यव्रतकी कन्याहूं यहांसे तुम्हें छुड़वादूंगी इस्से तुम मेरेमनोरथकोपूर्ण करो मैंने भाइयोंके बतायेहुए अनेकवरोंका निषेधकरदियाहै तुमको देखकर मेरे चित्तमें स्नेहउत्पन्नहुआ है इससे तुम मुझे स्वीकारकरो उसके यह वचनसुनकर शक्तिदेवने स्वप्नका स्मरणकरके प्रसन्नतापूर्व्वक उसे स्वीकारकिया और उस कन्याके भाइयोंको भी भगवती ने स्वप्नमें यही आज्ञादेदीथी इससे उन्होंने भी उसके मनोरथके पूर्णकरने के लिये उसके कहने से शक्तिदेवको बन्धनसे छुटवाकर उसीकेसाथ उसका

विवाहकरदिया विवाहहोजानेपर पुण्यसे प्राप्तहुई स्वरूपको धारणकियेहुए सुखकीसिद्धिके समान उस दिव्य स्त्री विन्दुमती के साथ शक्तिदेव वहां रहनेलगा १५७ एकसमय महलपर बैठे हुए शक्तिदेव ने गोमांसकोलेकर मार्ग में आयेहुए चाण्डालको देखकर अपनी विन्दुमतीनाम प्रियासेकहा कि हे कृशोदरि देखो कि तीनोलोकोंकी भी बन्दनीय गौओं के भी मांसकाखानेवाला यह कैसा पापी है यहसुनकर विन्दुमती वोली कि हे आर्य्यपुत्र यह पातक अचिन्त्यहै इसमे क्या कहूं मैं तो गौओं के थोड़ेही अपराधसे इस निषादकुलमें उत्पन्नहुईहूं और इसपापका तो उद्धारही नहीं है उसके यह वचनसुनकर शक्तिदेव बोला कि हे प्रिये मुझे वड़ा आश्चर्य्यहोताहै कि तुम कौनहो और तुम्हारा इस कुलमें कैसे जन्म हुआ उसके वहुत आग्रहसे पूछनेपरविन्दुमतीवोली कि यदि तुममेरावचनमानों तोमैं अपना गुप्तवृत्तांतभी तुमको वताऊं शक्तिदेवने शपथखाकर कहा कि मैं अवश्यही तेरेवचनको मानूंगा तववह पहले अपना मनोरथ कहनेलगी कि इसद्वीपमे अभीएक और स्त्री तुम्हारीहोगी और वहथोड़ेही कालमें गर्भवती होगी गर्भ के आठवें महीनेमें उसका पेटफाड़कर तुमगर्भ निकाल लेना और किसीप्रकारकी घृणा न करना उसके यहवचन सुनकर शक्तिदेवको वड़ा आश्चर्य्यहुआ और उसके चित्तमे घृणाहुई तव फिर विन्दुमती वोली कि यहमेरे वचन किसीकारणसे तुमको अवश्य करने चाहियें अवजोमैंहूं और जिसप्रकारसे मेरा जन्महुआहै वह सवसुनो मैं पूर्व्व जन्ममें विद्याधरीथी अव मैंशापसे मृत्युलोक में उत्पन्नहुईहूं जब मैं विद्याधरीथी उससमय मैंने वीणाकी तांतको दांतसे तोड़कर जोड़ाथा इसी से मेरा जन्म निषाद के कुलमें हुआ इस्से जो गौओंकी सूखी नसको दांतके छूनेसे ऐसी अधोगति होगई तो उनके मांसके खानेमें क्याही कहनाहै १७१ उसके इतनेकहनेही पर उसके एकभाईने वहां आकर घवराके शक्तिदेव से कहा कि उठो २ यहवड़ाभारी शूकर कही से आकर अनेकमनुष्योंको मारताहुआ क्रोधसे सन्मुख आरहा है यहसुनकर शक्तिदेवमहलपरसे उतरा और हाथमे शक्तिलेके और घोड़ेपर सवारहोकर उसशूकरके पीछे भागा और उसपर प्रहारभीकिया तवघायल शूकरउसे फिरभी अपनेपीछे आताहुआ देखकर भागके एक विलमें घुसगया शक्तिदेव भी उसके ढूंढनेको उसके पीछे २ उसी विलमे चलागया क्षणभरमें भीतरजाकर उसे वहां एक महल और एक वड़ा उत्तम वगीचा दिखाईदिया और वहीं अत्यन्त स्वरूपवती घवराकर आतीहुई एककन्या स्नेहसे आईहुई वनदेवीके समान दिखाईदी उसकन्याको देखकर शक्तिदेवने उससे पूछा कि हे सुन्दरी तुमकौनहो और तुमको किसकारणसे घवराहटहै उसके वचन सुनकर वह वोली कि दक्षिण देशका स्वामी चंडविक्रम नामराजाहै उसीकी मै विन्दुरेखानाम विनव्याही कन्याहूं अकस्मात् जाज्वल्य नेत्रवाला महापापी एकदैत्य आज पिताके घरसे छलकर मुझे यहाँ हरलायाहै और मांसके निमित्त इसीसमय शूकरके रूपको धरके वाहरगया था वहाँ किसी वीरने इसभूखे दैत्यको ऐसी शक्ति मारी कि जिससे घायलहोकर यहाँ आकर मृत्युको प्राप्तहोगया इस्से मेरा कन्यकाभाव अभी दूषित नहीं हुआहै मैं भागकर वाहर चलीआईहूं यहसुनकर शक्तिदेवने कहा कि तो घवराहटकी क्यावातहै मैंनेही शक्तिसे शूकरको माराथा तबवह वोली कि आपकौनहैं उसने कहा कि मैं शक्तिदेवनाम ब्राह्मणहूं यह

सुनकर कन्याने कहा तो आपही मेरेपतिहो उसके वचनोंको स्वीकार करके और उसे लेकर शक्तिदेव बाहर निकलआया और घरमेंआकर विन्दुमती से अपना सम्पूर्णवृत्तान्त कहदिया और उसीकी आज्ञा से उसविन्दुरेखाके साथ भी अपना विवाह किया इसके उपरान्त दोनों स्त्रियोंसमेत रहतेहुए शक्तिदेवकी दूसरी स्त्री विन्दुरेखा गर्भवतीहुई जबउसका आठवां महीना प्राप्तहुआ तबपहली स्त्री विन्दुमतीने एकान्तमें शक्तिदेवसे कहा कि हे वीर जो तुमने मुझसे प्रतिज्ञाकी थी उसे यादकरो तुम्हारी दूसरी स्त्रीके गर्भका आठवां महीना आगया इस्से तुमजाकर उसके पेटको फाड़कर उसगर्भको निकाललाओ क्योंकि तुमको अपने सत्यवचनको त्यागना नही चाहिये १६० उसके यहवचन सुनकर स्नेह तथा कृपासे व्याकुल और प्रतिज्ञाके आधीन शक्तिदेव क्षणभर विना कुछ उत्तरदिये वहाँठहरा और फिर घबराकर वहाँसे विन्दुरेखाके पासचलागया उसने भी उसे खेदसे आतेदेखकर कहा कि हे आर्यपुत्र आजतुम क्योंव्याकुलहो मैं जानतीहूं कि विन्दुमतीने मेरे गर्भको निकालनेके लिये तुमको भेजाहै तुमको यहअवश्य करना चाहिये क्योंकि इसमें कोई कारणहै और इसमें कोईपाप नही है इससे घृणामतकरो इसविषयमें मैं तुम्हें देवदत्तकी कथा सुनातीहूं पूर्व्व समय में कंबुकनाम पुरमें हरदत्तनाम एकधनवान् ब्राह्मण था उसके एकदेवदत्तनाम पुत्रथा वहविद्वान् होजानेपर भी बाल्यावस्थामें जुआ बहुत खेलताथा एकसमय जुएमें वस्त्रादिक हारकर पिताके घरमें न जासका और किसी शून्यमन्दिरमें चलागया वहाँ जाकर अनेक औषधियोंको सिद्धकरके जपकरतेहुए जालपादनाम महाव्रती को अकेला बैठाहुआ देखा उसके पास जाकर देवदत्तने उसे प्रणामकिया और उसने भी मौनताको छोड़कर स्वागतसे उसे प्रसन्नकिया क्षणभर वहाँ बैठनेके उपरान्त उसमहाव्रतीने देवदत्तसे दुःखका कारण पूछा और उसने भी अपना जुएसे धन नष्टहोनेका सबवृत्तान्त कहदिया तबमहाव्रती बोला कि हे वत्स इससंसारमें व्यसनी लोगोंकी इच्छापूर्ण करनेको पर्य्याप्त (काफी) धननहींहै जो विपत्तियोंके नाशकरनेकी तुमको इच्छा होय तो मेराकहना करो क्योंकि मैंने विद्याधर पदवीको पानेके लिये सामग्री इकट्ठीकी है इस्से हे सुलक्षण तुमभी हमारे साथ विद्याधरपनेको सिद्धकरो परन्तु तुमहमारी आज्ञाका उल्लंघन न करना इस्से तुम्हारी सम्पूर्ण विपत्तियां नष्टहोजायँगी २०३ उसमहाव्रतीके वचनों को स्वीकारकरके देवदत्त उसीके पास वहाँ रहनेलगा दूसरेदिन वहमहाव्रती रात्रिके समय श्मशानमें जाकर बरगदके नीचे पूजनकरके खीरकानैवेद्य लगाके दिशाओंमे वलिफेंककर और दिशाओंका पूजनकरके पासखड़ेहुए देवदत्तसे बोला कि तुमभी यहाँ प्रतिदिन हे विद्युत्प्रभे इसपूजनको ग्रहणकरो ऐसाकहकर इसीप्रकारसे पूजन कियाकरो इसके उपरान्त जो होगा वहमैं जानताहूं इस्सेहमारी और तुम्हारी निस्सन्देह सिद्धिहोगी यहकहकर उसे अपने साथलेकर वहमहाव्रती उसीमन्दिरमें चलागया फिर देवदत्त प्रतिदिन उसीवृक्षके नीचेजाकर उसी विधिसे पूजन करनेलगा एकसमय पूजनके अन्तमें वहवृक्ष फटगया और उसमेंसे अकस्मात् एकदिव्य स्त्री निकली और देवदत्तसे बोली कि चलो तुमको मेरी स्वामिनी बुलाती है यहकहकर वहस्त्री उसदेवदत्तको वृक्षके भीतर लेगई वहाँजाकर देवदत्तने दिव्यमणिमय स्थानमें पलँगपर बैठीहुई एकदिव्य स्त्री देखी उसेदेख

कर जब यह शोचनेलगा कि यह तो मेरी मूर्त्तिमती सिद्धिहीहोगी उससमय उस स्त्री ने अतिथिसत्कार करके पलँगपर से उठकर देवदत्तको पलँगपर बैठालिया उठने में जो उसके आभूषणबजे थे वह मानों देवदत्तसे स्वागत पूंछतेथे पलँगपर बैठालकर उसने देवदत्तसे कहा कि हे महाभाग मैं रत्नवर्षनाम यक्ष-पतिकी विद्युत्प्रभानाम पुत्रीहूं इसजालपादनाम महाव्रती ने मेराबहुतआराधनकियाहै इससे उसके तो केवल मनोरथकोही सिद्धकरूंगी परन्तु तुम मेरे प्राणोंकेभी स्वामीहौ इससे केवल दर्शनमात्रसे मुझस्नेह युक्तसे अपनाविवाहकरो उसके यहवचनसुनकर देवदत्तने उसकेसाथ विवाहकरलिया और कुछकालतक वहींरहा जब वह गर्भवतीहुई तब देवदत्त फिर आनेकी प्रतिज्ञाकरके वहां से चलकर उस महाव्रतीके पास आया और उससे सम्पूर्ण वृत्तान्तकहा उसनेभी सबवृत्तान्त सुनकर अपनी सिद्धिकेलिये देवदत्तसेकहा कि तुमने बहुत अच्छाकिया अब जाकर तुम उसयक्षिणीका पेटफाड़कर उसका गर्भ निकाललाओ यह कहकर और पुरानी प्रतिज्ञाकास्मरणकराके उसने फिर देवदत्तको उसयक्षिणीके पास भेजदिया २२१ वहां जाकर जबदेवदत्त उसबातको शोचकरखिन्नचित्तहोके बैठा उसीसमय विद्युत्प्रभा उससेआपहीबोली कि हे आर्य्यपुत्र तुम क्यों खिन्नहौ मैं जानगई कि जालपादने मेरागर्भनिकालनेको तुम्हें भेजाहै इससे तुममेरा पेटफाड़कर मेरागर्भनिकाललो और जोतुम नहींनिकालोगे तो मैं आपही निकालूंगी क्योंकि इसमें कोई हेतुहै उसके ऐसाकहनेपर भी जब देवदत्त गर्भको नहींनिकालसका तब उसने आपही अपना पेटफाड़ कर गर्भनिकालके देवदत्तके आगेरखदिया और उससे कहा कि विद्याधरत्वके भोगनेकाकारण यहगर्भ लो मैं शापसे विद्याधरों के घरसे भ्रष्टहोकर यक्षों के यहां उत्पन्नहुई थी और यही मेरे शापका अन्तथा मुझे अपने पूर्वजन्मका सम्पूर्ण स्मरणबनाहै अब मैं अपने स्थानकोजातीहूं वहीं आकर मुझसे तुम्हारा समागमहोगा यह कहकर विद्युत्प्रभा अन्तर्द्धानहोगई देवदत्तभी उस गर्भकोलेकर चित्तमें खेदकरताहुआ जालपादके निकटआया और सिद्धिदायक वह गर्भ उसे देदिया ठीककहाहै कि (भजंत्यात्मंभरित्वंहि दुर्लभेपिनसाधवः) दुर्लभ पदार्थों में भी सज्जनलोग अपस्वार्थी नहीं होतेहैं इसके उपरान्त महाव्रतीने गर्भके मांसका परिपाककरके देवदत्तको वनमें भैरवके पूजनकरनेको भेजा उससमय देवदत्त जब बलि-दानदेकर लौटा तो उसने देखा कि उस महाव्रतीने वह सम्पूर्ण मांसखाडाला और जैसे कि उसनेकहा कि तुमने सम्पूर्ण मांस क्यों खाडाला वैसेही वह कुटिल जालपाद विद्याधरहोकर आकाशको उड़गया तब आकाशकेसमान नीले खड्गकोलेकर और हार तथा बाजूकोपहरकर उस जालपादके उड़जानेपर देवदत्तने शोचा कि इस पापीने मुझे कैसाठगाहै अथवा बहुत सीधेपनसे किसका तिरस्कारनहींहोताहै अब मैं इसका बदलाकैसेलूं और विद्याधरहुए जालपादको कैसेपाऊं इसमें वेताल सिद्धकरनेकेसिवाय और मेरे लिये कोई दूसरा उपायनहीं है २३७ यह शोचकर वहां मनुष्यके शरीरमें वेतालको बुलाकर पूजनकरके देवदत्त मनुष्यके मांसकीबलिसे उसे तृप्तकरनेलगा वेतालको उतनेमांससे तृप्तहोता न देखकर और अन्य मांसलेनेतक उसकाठहरना असम्भवसमझकर उसको तृप्तकरने के लिये वह अपनाही मांस काटनेलगा उससमय वेताल उससे बोला कि तुम्हारे सत्वसे मैं प्रसन्नहूं साहसमतकरो तुम्हारी क्या इच्छाहै

बताओ मैं उसको सिद्धकरूं उसके यह वचनसुनकर वीर देवदत्त बोला कि जहां विश्वासघाती जालपाद है वहीं विद्याधरों के स्थानमें उसके मारनेकेलिये मुझे लेचलो तब वेताल उसके वचनोंको स्वीकारकर उसको अपनेकन्धेपरचढ़ाकर आकाशमार्गसे विद्याधरों के स्थानपर लेगया वहांजाकर देवदत्तने विद्याधरोंके राज्यपाने से अभिमानयुक्त रत्नसिंहासनपर बैठेहुए और नहीं इच्छाकरतीहुई विद्याधरी विद्युत्प्रभाको अपनीस्त्री बनानेकेलिये अनेकप्रकारकेवचनोंकरके समझातेहुए जालपादकोदेखा फिरउसेदेखकर प्रसन्नहुई विद्युत्प्रभाके नेत्ररूपी चकोरोंकेलिये चन्द्रमारूप वहदेवदत्त वेतालसमेत जालपादपरदौड़ा जालपादभी उसे वहां अकस्मात्आया देखकर घबराके आसनसे पृथ्वीपरगिरपड़ा और भयसेउसके हाथमेंसे खड्गभी छूटगया देवदत्तने वह खड्गतो उठालिया परन्तु उसे मारा नहींठीकहै (रिपुस्वपि हिभीतेषुस्वानुकम्पामहाशयाः) डरेहुएशत्रुओंपरभी महात्मालोगदयाकरते हैं और वेतालकोभी उसकेमारनेमें उद्युक्त देखकर उसने कहा कि इसदीनपाखंडी को मारने से क्याप्रयोजन है तुम इसे पृथ्वीमें लेजाकर अपने पास रक्खो यह पापी वहीं फिरभी भिक्षुक होकररहे उससमय देवदत्तके ऐसाकहते ही आकाशसे भगवती पार्वतीजी उतरकर देवदत्तके समीप प्रत्यक्ष आई और प्रणाम करनेवाले देवदत्तसे बोलीं किहेपुत्र तेरे असाधारण सत्वको देखकर मैं प्रसन्नहूं इस्से मैंने तुमको यहां के विद्याधरों का राज्यदिया यहकहकर और सम्पूर्ण विद्यादेकर भगवती अन्तर्द्धान होगईं और वेताल जालपादको लेकर पृथ्वीपर चला गया और उस महाव्रती की सम्पूर्ण सिद्धीनष्टहोगई ठीकहै (नाधर्म्मश्चिरमृद्धये) अधर्मसे बहुत काल तक सुखनहीं मिलता इसके उपरान्त देवदत्त विद्याधरोंके राज्यको पाकर विद्युत्प्रभाके साथवहाँ आनन्द पूर्वक रहनेलगा २५५ इसप्रकार शक्तिदेवसे सम्पूर्ण कथा कहकर मृदुभाषिणी विन्दुरेखा फिरबोली कि इसप्रकार से बहुधाकार्य्यहुआ करते हैं इस्से तुम विन्दुमती के कहने से शोकत्यागकर मेरागर्भ निकाललो विन्दुरेखाके इसप्रकार कहनेपर और शक्तिदेवके पापसे भयभीत होनेपर आकाशवाणी हुई कि हे शक्तिदेव निस्सन्देह तुम इसका पेटफाड़कर गर्भनिकाललो जबउसगर्भ का कण्ठ तुम पकड़ोगे तब बड़ेसुन्दर खड्गकी मूठ तुम्हारे हाथ आवेगी और वह गर्भखड्ग होजायगा इस आकाशवाणी को सुनकर शक्तिदेवने शीघ्रही विन्दुरेखाका पेटफाड़कर गर्भ निकाललिया और हाथसे उसका गला पकड़ा हाथमेंलेतेही वह गर्भसुन्दर खड्गरूप होगया वहखड्ग क्याथा मानोंसत्वसे खींचागया सिद्धिके बालोंका समूहथा इसके उपरान्त शक्तिदेव शीघ्रही विद्याधरहोगया और विन्दुरेखा उसीसमय अन्तर्द्धान होगई उसे गुप्तहुई देखकर उसने अपनी पहली स्त्री विन्दुमती से जाकर सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा तब वह बोली कि हे नाथ विद्याधरके स्वामी की पुत्री हमतीनों बहनें शापके द्वारा कनकपुरीसे च्युत (अपने अधिकारसे भ्रष्ट) हुईं उनमेंसे एक कनकरेखानामथी जिसको तुमने वर्द्धमानपुरमें देखाथा वहीं तुम्हारे आगे उसकेशापकाभी अन्तहोगयाथा वहअपनीपुरीको चलीगई भाग्यवशासे उसकेशापका अन्तऐसाही विचित्रथा *दूसरी विन्दुरेखा जिसके शापका अन्तगर्भके निकालने से हुआ है वह आपकोविदितही है*

* विन्दुरेखा का नाम यहां पर मूल पुस्तकमें छुटा हुआसा मालूम होताथा इसलिये अपनी ओरसे लिखा है।

और तीसरी मैं हूं इसीसमय मेरेभी शापका अन्त है हे प्रिय मैं आजही अपनी नगरी को जाऊंगी क्योंकि हमतीनों वहिनोंके विद्याधर शरीर वहीं हैं हमारी बड़ी वहिन चन्द्रप्रभाभी वहीं है इस्से तुमभी खड्गके प्रभावसे वहीं आओ वहां वनमें स्थित हमारे पिता हम चारों वहिनों का विवाह तुम्हारे साथ करदेंगे और तुम उसपुरीके राजा होजाओगे २६९ विन्दुमतीसे इससम्पूर्ण वृत्तान्त को सुनकर शक्तिदेव उसी के साथ आकाशमार्ग से कनकपुरीको गया वहां जाकर उसने जो तीनो मंडपों में पलँगोंपर तीन स्त्रियोंके तीन मृत शरीर देखेथे उनशरीरों में प्रविष्टहुई कनकरेखा आदि अपनी तीनो प्रियाप्रणाम करतीहुई उसने देखीं और उनतीनो की वड़ीवहिन मंगलाचार करतीहुई चौथी चन्द्रप्रभाको वहुतकाल तक दर्शन न होनेसे उत्कण्ठित दृष्टिकेद्वारा उसके रूपको मानों पानकरतीहुई सी को देखा अपने २ कार्य्यों मे लगीहुई सेवकोंकी स्त्रियां शक्तिदेवको भीतरगया हुआ देखकर वहुत प्रसन्नहुई और चन्द्रप्रभाने उस्से कहा कि हे सुभग जो तुमने वर्द्धमानपुरमे कनकरेखानाम कन्यादेखीथी वह यहीमेरी वहिन चन्द्रेरेखानाम है, उत्स्थल द्वीपमें जो निषादोंके स्वामी की विन्दुमती कन्या तुम्हारी स्त्री हुईथी वही यह मेरी वहिन शशिरेखा है और जो दैत्य से हरीगई विन्दुरेखानाम राजकन्या तुम्हारी दूसरी स्त्री हुई थी वही मेरी छोटी वहिन यह शशिप्रभाहै इस्से अवतुम हमारे साथ हमारे पिताके पास चलो वह हम सब को तुम्हें देदेंगे तव तुम हमारे साथ विवाह करलेना चन्द्रप्रभा के कामकी आज्ञा से प्रगल्भ यह वचन शीघ्रही कहनेपर उनचारों को साथलेकर शक्तिदेव वन में उनके पिता के पासगया २७९ वहाँ जाकर इनचारोंने प्रणामकरके अपने पितासे सव वृत्तान्तकहा उनके वचनों को सुनकर और उन्हीं के अनुकूल आकाशवाणी को भी सुनकर उसने प्रसन्नता पूर्व्वक अपनी चारोंकन्या शक्तिदेव को देदीं और उनके दहेज मे अपना कनकपुरीका सवराज्य तथा अपनी संपूर्ण विद्या भी अर्पण करदीं और अपने विद्याधरों में उसका योग्य शक्तिवेग नाम धरदिया और उसने शक्तिदेवसे कहा कि तुम्हे वड़े प्रभावसे कोई जीत न सकेगा परन्तु वत्सदेशके स्वामी राजा उदयन् का पुत्र नरवाहनदत्तनाम तुम्हारा चक्रवर्त्तीहोगा उस्से तुम सदैव नम्रताकरना इसप्रकार कहकर वड़े प्रभाववाले उस विद्याधरों के स्वामीशशिखण्डने जामाता को अपनी कन्याओं समेत आदरपूर्व्वक तपोवन से राजधानी में जाने के लिये विदाकिया इसके उपरान्त शक्तिवेग विद्याधरोंके लोककी वैजयंती पताकाके समान कनकपुरीमें राजा होकर अपनी स्त्रियों समेत गया सुवर्ण की रचना से जिसके मंदिर देदीप्यमान होरहे हैं और इसी से वहुत उन्नतहोने के कारण मानो सूर्य्यकी प्रभा सिमटकर इकट्ठी होगई है ऐसीसुन्दर उसपुरी में अपनी चारों स्त्रियों समेत शक्तिवेग रत्नजटित सिड्ढीवाली वावड़ियों से मनोहर वगीचों में अत्यन्त आनन्द को भोगकरनेलगा इसप्रकार अपनेही विचित्र चरित्र को कहकर शक्तिवेग राजाउदयन् से फिर वोला कि हे चन्द्रकुल भूषण वह शक्तिवेग मैंहीं हूं और इस समय उत्पन्न हुए भावी नवीन अपने चक्रवर्त्ती तुम्हारेपुत्रके चरणों के दर्शनकी अभिलाषा से आयाहूं हे राजा इसप्रकार मैंने मनुष्यहोकरभी श्री शिवजीकी कृपासे विद्याधरोका राज्यपाया मैंने अपने स्वामीको देख लिया अवमें अपने घरको जाताहूं

आपका सदैव कल्याणहोय इसप्रकार हाथ जोड़कर उसके कहनेपर और आज्ञालेकर चन्द्रमाके समान उसके उसीसमय आकाश में चले जानेपर दोनों रानी तथा सम्पूर्ण मंत्रियोंसमेत राजाउदयन् अपने बालक पुत्रको देखकर अपूर्व्व आनन्द को प्राप्तहुआ २८६ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांचतुर्दारिकालम्बकेतृतीयस्तरंगः ३ ॥
चतुर्दारिकानामपंचमलम्बकसमाप्तहुआ ॥

मदनमंचुकानामषष्ठोलम्बकः ॥

तर्जयन्निवविघ्नोघान्नमितोन्नमितेनयः ॥
मुहुर्विभातिशिरसासपायाद्वोगजाननः १
नमःकामाययद्बाणपातैरिवानिरन्तरम् ॥
भातिकण्टकितंशंभोरप्युमालिङ्गितंवपुः २

इत्यादि अनेक दिव्यचरितोंकोकरके अपनेको अन्यकेसमान दर्शितकराके और सम्पूर्ण विद्याधरोंके ऐश्वर्य्यको पाके नरवाहनदत्तने किसीप्रसंगमें पत्नियोंसमेत महर्षियों के पूंछनेपर अपने मुखसे जो चरित्र आदिसे वर्णनकियाहै उसको अब सुनो४इसकेउपरान्त महाराज उदयन्से पालनकियागया नरवाहनदत्त पूरेआठवर्षकाहुआ उससमय वहसम्पूर्णविद्याओंको सीखताहुआ मन्त्रिपुत्रोंकेसाथ उपवनोंमेंक्रीड़ाकरता था रानीवासवदत्ता औरपद्मावती यहदोनों अत्यन्तस्नेहसे रात्रिदिन नरवाहनदत्तकेही प्रेममें एकाग्ररहती थीं सद्वंशमें उत्पन्न और गुण(प्रत्यंचातथा शीलादिगुण)के आरोहणसे नम्र और धीरे२ पूर्णहोतेहुए धनुष तथा शरीरसे नरवाहनदत्त अत्यन्त शोभितहोताथा और उसकापिता राजा उदयन् फ़ल सम्पत्तिके निकट होनेसे मनोहर उसके विवाहादि मनोरथों से अपनेसमयकोव्यतीतकरताथा इसी कथाकेबीचमें और जो विचित्र कथाहुई है उसका वर्णनकरते हैं वितस्तानामनदी के तटपर तक्षशिलानाम एकपुरीथी नदी के जलमें उसपुरीका प्रतिबिम्ब ऐसा शोभितहोताथा कि मानों पातालपुरी नीचे से उसकी शोभादेखनेको आई है उसपुरी में कलिङ्गदत्तनाम बौद्धमतावलम्बी राजाथा और ताराके वरदानसे उसकी सम्पूर्ण प्रजा जिन देवकीपरमभक्तथी वहपुरी बड़ेसुन्दर रत्नजटित श्रेष्ठमंदिरों से ऐसी शोभितहोतीथी कि मानों उत्पन्न हुए मदके शृंगों से मेरे समान कोई दूसरी पुरीनहीं है यह कहतीथी राजा कलिंगदत्त पिताके समान प्रजाओंका केवल पालनही नहींकरताथा किन्तु गुरुकेसमान आपही ज्ञानकाभी उपदेशकरताथा १४ उसी नगरी में बौद्धमतावलंवी वितस्तादत्तनाम एकधनवान् वैश्य रहताथा वह सदैव भिक्षुकोंका पूजन किया करताथा उसबणियेका रत्नदत्तनाम तरुणपुत्र सदैव उसकी निन्दाकिया करताथा और उसेपापी कहाकरता था किसीसमय अपने पुत्रसे उसने कहा कि हे पुत्र तू मेरी निन्दा क्यों कियाकरता है तो

वह ईर्षासे वोला कि हेतात तुम वेदोंके मार्गको छोड़कर यह वड़ा अधर्म करतेहो जो ब्राह्मणों को छोड़कर सदैव श्रावकोंका पूजनकरते हो स्नानादिक नियमोंसेरहित अपनेसमयपर भोजनके लोभी शिखा समेत सम्पूर्ण केशों के मुड़ाने वाले और केवललँगोटी वांधनेवाले सम्पूर्ण अधम जातिके लोग विहार और स्थान के लोभसे जिस वौद्धधर्म का अवलम्बन करते हैं उससे तुम्हें क्या प्रयोजनहै यह सुनकर वह वणिया वोला कि हेपुत्र धर्मएकही प्रकारका नहीं है अलौकिकधर्म अन्यहै और संपूर्ण लोकों का धर्म अन्यहै देखोब्राह्मणत्व भी राग आदिके त्यागकरने को सत्यको और संपूर्ण प्राणियोंपर दयाकरने कोही कहते हैं व्यर्थजाति के झगड़े को ब्राह्मणत्व नहींकहते और संपूर्ण प्राणियों को अभय देने वाले इसधर्म्मकी निन्दा प्रायः पुरुषों के दोष से तुमको नहीं करनी चाहिये उपकार करना परमधर्म है इसविषयमें किसी शास्त्रकाभी विवाद नहींहै और मेरे मतसे प्राणियोंकी रक्षाकरनेसे वढकर कोई उपकार नहींहै इस्से अहिंसा प्रधान और मोक्षदायक इस वौद्धमतमें जो मेरा वड़ा अनुरागहै तोमेरा अधर्मही क्याहै अपने पिताके यहवचन सुनकरभी रत्नदत्तने वह वातें स्वीकारतो नहींकीं परन्तु उसमत की और भी अधिक निन्दाकी २६ तव उसके पिताने धर्मशिक्षक राजाकलिंगदत्तके पास जाकर खेद पूर्व्वक अपना संपूर्ण वृत्तान्त वर्णनकिया उसके वचन सुनकर राजाने युक्तिपूर्व्वक वणियेके पुत्र को सभामें वुलवाकर मिथ्या कोप दिखाकर द्वारपालसे कहाकि मैंने सुनाहै कि यह महापापी और कुकर्मी है इस्से देशके दूषित करनेवाले इसदुष्टको विना विचारे मारडालो राजा के ऐसा कहनेपर वितस्तादत्त ने जव विज्ञापना की तव राजाने धर्माचरणकी परीक्षा करनेकेलिये दोमहीनेतक उसकावध रोकरक्खा और दोमहीनेकेपीछे फिर आनेकी आज्ञादेके उसीकेपिता को उसे सौंपदिया राजासे आज्ञालेकर रत्नदत्त अपने पिताके साथ घरकोआया और भयसे व्याकुल होकर यह विचारने लगाकि मैंने राजाका क्या अपराधकियाहै दोमहीने के उपरान्त विना कारणकेही मेरीमृत्यु होगी यह शोचकर उसे रात्रि दिन निद्रानहीं आतीथी और भोजनके न्यूनहोजानेसे उसकीचेष्टा अत्यन्त म्लानहोगईथी जव इसी प्रकार दोमहीने व्यतीतहुए तव वितस्तादत्त कृश तथा पांडुवर्णवाले अपने पुत्रको फिर राजाके निकट लेगया राजाने उसे दुर्वल तथा दुखी देखकर कहा कि तुम ऐसे दुर्वल कृशशरीर क्यों होगयेहो क्यामैंने तुम्हारा भोजन रोंकदियाथा यह सुनकर रत्नदत्त वोला कि हे महाराज मैं तो अपने आपहीको भूलगयाथा भोजनकी क्या कथा है हे स्वामी जिस दिनसे आपने वधकी आज्ञादीथी उसी दिनसे अवमृत्यु आती है अवमृत्यु आतीहै यही रोज शोचाकरताहूं उसके यहवचन सुनकर राजा वोला कि हे पुत्र मैंने युक्ति पूर्व्वक तुम्हें मृत्युके भयकाज्ञान करवायाहै सव प्राणियोंको भी इसीप्रकार मृत्युका भयहोताहै तो वताओ कि मृत्युकी रक्षाके उपकार से अधिक और कौनसा धर्महै इससे मैने तुम्हें धर्मके लिये और मोक्षकी इच्छाके निमित्त यहभय दिखायाथा क्योंकि मृत्युसे डराहुआ मनुष्य मोक्षके लिये यत्नकरताहै इससे ऐसेधर्मके अवलंवन करनेवाले अपने पिताकी तुमनिन्दा मतकियाकरो राजाके यहवचन सुनकर रत्नदत्त वहुतनम्रहोकर वोला कि हे महाराज आपने धर्मका उपदेशदेकर मुझे कृतार्थ करदिया अव मेरी

मोक्षके लिये इच्छा उत्पन्न हुई है आप कृपाकरके उसको भी उपदेश कीजिये यहसुनकर राजाने किसी उत्सवके दिन रत्नदत्तके हाथमें एकतेलसे भरापात्र धरकर कहा कि इसपात्रको लेकर तुमसम्पूर्ण पुरीमें घूमआओ परन्तु इसमेंसे एक बिन्दुभी तेल न गिरनेपावे जो एकबिन्दुभी तेलका इसमें से गिरेगा तो यहपुरुष तुमको शीघ्रही मारडालेंगे इसप्रकार कहकर और खड्गधारी पुरुषोंको उसके साथमें करके पुरीमें घूमनेके लिये उसेभेजा ४६ वहभी भयसे तेलके गिरनेको बचाताहुआ सम्पूर्णपुरी में घूमकर बड़ेक्लेशसे राजाकेपास आया राजाने तेल नहीं गिराहुआ देखकर उससेकहा कि आज तुमने पुरीमें घूमतेहुए किसी को देखाहै यहसुनकर वहहाथजोड़कर बोला कि मैंने न किसीको देखाहै न कुछ सुनाहै मैं खड्गके भयसे बहुत सावधानता पूर्व्वक तेलके गिरनेको बचाताहुआ पुरीमें घूमा उसके इसप्रकार कहनेपर राजा बोला कि तुमने इसतेलकी रक्षामें केवल चित्तलगाकर कुछभी नहीं देखा इस्से इसीप्रकारकी एकाग्रतासे परमात्मा का ध्यानकरो क्योंकि बाहरकी वृत्तियोंसे निवृत्तहुआ पुरुष एकाग्र होकर तत्त्वको देखलाहै और तत्त्वको देखकर फिर कर्मजालमें नहीं बँधताहै यह मोक्षका उपदेश मैंने संक्षेपसे तुम्हारेआगे वर्णनकिया राजाके यह वचन सुनकर रत्नदत्त उसके पैरोंपर गिरपड़ा और फिर उससे आज्ञालेकर कृतार्थ होके बहुत प्रसन्नता पूर्व्वक अपने घरको चलाआया ५४ इसप्रकार प्रजाओंका पालन करतेहुए राजा कलिंगदत्त के तारादत्ता नाम योग्य महाकुलीन रानीथी सुन्दर रीति (मर्य्यादा और काव्योंके बनाने की प्रणाली) वाली अच्छे वृत्त (आचरण और छन्द) वाली उसरानीसे अनेक दृष्टान्तोंका रसिक राजा सरस्वतीसे सुकविके समान शोभितहुआ अमृतमय चन्द्रमासे प्रकाश गुणके द्वारा प्रशंसनीय चन्द्रिकाके समान राजाकलिंगदत्त से वहरानी अत्यन्त स्नेहके कारण अभिन्न मालूम पड़तीथी स्वर्ग में इन्द्राणीकेसाथ इन्द्रके समान उसनगरी में तारादत्तानाम रानीकेसाथरहतेहुए राजाकलिंगदत्तके दिनआनन्दपूर्व्वक व्यतीत होतेथे इसीबीचमें किसीकारण से स्वर्गमें इन्द्रकेयहांबड़ा उत्सवहुआ उसउत्सवमें नृत्यके निमित्तसम्पूर्ण वेश्याओंके आने परभी एक श्रेष्ठ सुरभिदत्तानाम वेश्या नहीं दिखाईदी तब इन्द्रने ध्यानधरके देखा कि वह किसी विद्याधरके साथ नन्दनवनमें एकान्तमेंस्थितहै यहदेखकर इन्द्रनेचित्तमें क्रोधपूर्व्वक शोचाकि यहदोनों कैसेदुराचारी और कैसेकामान्धहैं यहवेश्यातो हमलोगोंको भूलकर स्वतंत्रकेसमान कार्य्यकरतीहै और यहविद्याधर देवभूमिमें भी आकर कैसीअनीतिकरताहै अथवा इसविचारे विद्याधरकाक्यादोषहै इसेयही वेश्या अपनेरूपसे मोहितकरके यहांलेआई है उन्नतस्तनोंसेपूर्ण हृदयवाली लावण्यरूपी जलकीनदीरूपी स्त्रीसे आकर्षणकियेहुए अपनेचित्तको कौनरोकसक्ताहै पूर्व्वसमयमें सम्पूर्ण उत्तमपदार्थोंमेंसे तिल२भर लेकर ब्रह्मासे बनाईगई तिलोत्तमानाम अप्सराको देखकर क्याशिवजीके चित्तमें क्षोभनहींहुआ क्या मेनका को देखकर विश्वामित्रकाचित्त चलायमान नहींहुआ क्या शर्मिष्ठाकेरूपके लोभसे ययातिवृद्धावस्थाको नहींप्राप्तहुए इस्से तीनोंलोकोंके क्षोभकरनेमें समर्थरूपकेद्वारा अप्सरासे मोहितकियेगये इसविद्याधर का कोई अपराधनहीं है किन्तु यहीस्वर्गकी पापिनी अप्सरानीचकासंगकरनेसे अपराधिनी है क्योंकि यह देवताओं को छोड़कर इसविद्याधरको नन्दनवनमेंलेआई इसप्रकार शोचकर इन्द्रने उसविद्याधरको

छोड़कर उस अप्सराको शापदिया कि हेपापिनि तू मनुष्ययोनिमें उत्पन्नहोगी वहाँअयोनिज पुत्रीको पाकर और दिव्य कार्य्यकरके फिर स्वर्गकोआवेगी ७१ इसीबीचमें तक्षशिलापुरीमें राजाकलिंगदत्तकी स्त्री ऋतुधर्मको प्राप्तहुई उससमय रानीकेउदरमे इन्द्रकेशापसे भ्रष्टहुई सुरभिदत्तानाम अप्सराप्राप्तहुई उसकेगर्भमें आनेसे रानीकास्वरूप अत्यन्तही शोभितहोगया और रानीने स्वप्नमे आकाशसे गिरीहुई एक ज्वाला अपनेउदरमे प्रवेशकरतीहुई देखीप्रातःकाल रानीने आश्चर्य्यपूर्व्वक यहस्वप्न राजासे कहा स्वप्नको सुनकर राजाभी प्रसन्नहोकर बोला कि हे सुन्दरि शापसे भ्रष्टहुए दिव्यजीवभी मनुष्ययोनिमें आतेहैं इससे मैं जानताहूं कि कोई दिव्यजीव तुम्हारेगर्भमें आया है ठीककहा है (विचित्रसदसत्कर्मनिवद्धास्संचरंतिहि जंतवस्त्रिजगत्यस्मिन्शुभाशुभफलाप्तये) नानाप्रकारके उत्तमतथा निकृष्ट विलक्षण कर्मोंसेबँधेहुए प्राणी तीनोंलोकोंमें शुभाशुभकर्मोंके भोगनेकेलिये भ्रमणकियाकरते हैं राजाकेयहवचन सुनकर प्रसंगसे रानीबोली कि ठीकहै शुभाशुभभोगोंका देनेवाला कर्महीवलवान् है इसीविषयमें पूर्व्व सुनीहुई मैं कथा कहती हूं आप सुनिये कोशलदेश में धर्मदत्तनाम एकराजाथा उसराजाकी नागश्री नाम रानीथी सतियोंमें अग्रगण्य वह रानी ऐसीपतिव्रताथी कि सम्पूर्ण लोग उसेपृथ्वी मे अरुन्धती कहतेथे कुछ समय व्यतीतहोनेपर राजाधर्मदत्तके नागश्रीनाम रानीमे मेराजन्महुआ जब मैं अत्यंतही वालकथी उससमय मेरीमाताने अकस्मात् अपनेपूर्व्वजन्मका स्मरणकरके मेरे पितासेकहा कि हेराजा आज अकस्मात् मुझे अपनेपूर्व्वजन्मका स्मरणआयाहै जो उसेनहीं कहतीहूं तो चित्तनहीं मानताहै और कहदूंगी तो मेरीमृत्युहोजायगी क्योंकि अकस्मात् स्मरणमेंआयेहुए पूर्वजन्मके वृत्तान्तको कहने से मृत्युहोती है ऐसाप्राचीन लोगकहतेहैं इससे मेरे चित्तमेंवड़ा खेदहोरहाहै ८४ मेरी माताके यहवचन सुनकर मेरापिता बोला कि हेप्रिये मुझेभी अकस्मात् अपनेपूर्व्वजन्मका स्मरणआया है इससे तुमअपना वृत्तान्तमुझसेकहो औरमैंभी अपनावृत्तान्त तुमसेकहूंगा जो होनाहोय सोहोय क्योंकि भवितव्यताको कोईभी नहींमेटसक्ता है अपनेपतिसे इसप्रकार प्रेरणाकीगई रानी बोली कि हे राजा जो आपको आग्रहहै तो सुनिये मैं कहतीहूं इसीदेशमें मैं पूर्व्वजन्ममें माधवनाम किसीब्राह्मणके यहांदासीथी मेरा आचरण बहुतअच्छाथा और मेरेपतिकानाम देवदासथा वहविचाराभी किसी वणिये के यहांसेवकथा हमदोनों स्त्री पुरुष अपनेयोग्य चर्वाकर अपने २ मालिकोंके यहांसे लायेहुए पक्वान्नको खाकर रहते थे हमारेयहां वारिधानी (पलहड़ी) घड़ा वुहारी मचिया मैं और मेरापति इनछःकेसिवाय और कोई वस्तुनथी हमारेयहांकभी कलहनहींहोतीथी इससेवड़े सन्तोषपूर्व्वक हमारासमय व्यतीतहोताथा देवता पितर तथा अतिथियों को देकर जो शेष अन्नरहताथा वही अन्न हमदोनोंखाते थे हमदोनों के ओढ़ने से जो कुछ अधिक वस्त्रहोताथा वहभी किसीगरीब भिक्षुकको देदेते थे इसप्रकार सुखपूर्व्वक रहते २ इस देशमें वड़ा दुर्भिक्षपड़ा इससे हमदोनोंको सेवाकरने से जो अन्न मिलता था वहथोड़ाहीसा मिलने लगा तब क्षुधासे हमदोनोंका शरीरकृशहोगया और वड़ा क्लेश होनेलगा उन्हीं दिनों में एकसमय भोजनके अवसरमें एकथकाहुआ अतिथि ब्राह्मणआया यद्यपि उससमय प्राणोंकेभी रहने में सन्देह

था तथापि हम दोनों ने अपनासम्पूर्ण अन्न उस अतिथि को देदिया भोजन करके उसके चले जा-
ने पर इसने अतिथि का आदरकिया हमारा नहींकिया मानों इसक्रोध सें मेरेपति के प्राण निकलगये
तबमैं अच्छे प्रकारसे चितालेगाकर अपने पतिकेही साथ जलगई और मेरा संपूर्ण दुःखदूरहोगया इसी
से मैं राजाके यहाँ उत्पन्नहोकर तुम्हारी रानी हुई ठीक है (अचिन्त्यंहिफलंसूते सद्यःसुकृतपादपः) पु-
ण्यरूपीवृक्ष शीघ्रही अचिन्त्य फलको उत्पन्न करता है ९६ मेरीमाता के यह वचन सुनकर मेरा पिता
बोला कि हेप्रिये वहीमैं तुम्हारा पूर्व्वजन्मका पतिहूं वणियेकासेवक देवदास मैंहीथा मुझेभी अभीअपने
इसी पूर्व्वजन्मका स्मरणआयाहै यहकहकर और अपनी पहिचानि बताकर मेरापिता मेरीमाता समेत
कुछप्रसन्न और कुछ दुखीहोकर शीघ्रही स्वर्गको चलागया इसप्रकार जब मेरे माता पिता परलोकगा-
मीहुए तब मेरी मौसी मेरे पालन करनेको मुझेअपने घरलेगई जबमैं कन्याही थी उससमय मेरी मौसी
के घरपर एक अतिथिआया मेरीमौसीने उसकी सेवाकरनेको मुझे आज्ञादी जैसे कुन्तीने दुर्वासाजीका
सेवनकियाथा उसीप्रकार मैंनेभी उस अतिथिका सेवनकिया और उसीके वरदानसे मुझेआप धर्मात्मा
पतिमिलेहो इसीप्रकारसे धर्मकेद्वारा अनेक प्रकारके सुख प्राप्तहोते हैं देखोधर्महीके प्रतापसे हमारे माता
पिताको राज्यमिला और उन्हें अपने पूर्व्वजन्मका स्मरण आया रानीतारादत्तके मुखारविन्दसे यह
वचन सुनकर अत्यन्त धर्मात्मा राजा कलिंगदत्त बोला कि ठीकहै अच्छे प्रकार से साधन कियागया
थोड़ा धर्म्मभी बहुतफल दायकहोताहै इसीविषयमें तुमको मैं प्राचीन सात ब्राह्मणोंकी कथा सुनाताहूं
कुंडिनपुरमें किसी ब्राह्मण उपाध्यायके ब्राह्मणों के सातपुत्र शिष्यथे एक समय दुर्भिक्षके दोषसे उपा-
ध्यायने अपने सातोशिष्योंको अपने श्वशुरके यहाँ गौ मांगनेकोभेजा दुर्भिक्षसे दुर्बल वह सातोंशिष्य
अन्यदेशमें रहनेवाले उपाध्यायके श्वशुरके यहाँ गये और जाकर बोले कि उपाध्यायने एक गौ मांगी है
उस कृपणने अपने जामाताके जीविकाके निमित्त एक गौ तो देदी परन्तु उन भूखे ब्राह्मणों को भो-
जन नहीं दिया तब उस गौ को लेकर जब आधीदूर वह सातों पहुंचेतो क्षुधासे अत्यन्त व्याकुल हो-
कर मुरझाके पृथ्वी में गिरपड़े उससमय में उन सबोंने मिलकर यह विचारकिया कि उपाध्याय का घर
यहाँसे बहुत दूरहै और हम लोगोंको बड़ाभारी क्लेशहोरहाहै यहाँ अन्न मिलनाभी सर्वथा दुर्लभहै इस्से
हम लोगोंके अब प्राणही जातेहैं और हम लोगोंके विना यह गौभी जल तृण तथा मनुष्य रहित इस
वनमें अवश्य नष्ट होजायगी तब गुरूका कुछभी प्रयोजन सिद्ध न होगा इस्से इसगौके मांसको खाके
अपने प्राणबचावें और जो मांसबचे वह गुरूको जाकरदेवें क्योंकि यह आपत्तिका समयहै इस प्रकार
सलाहकरके उन सातों ने शास्त्रोक्त विधि से गौ को मारकर उसके मांस से देव पितरों का पूजनकरके
आप भोजनकिया और जो मांसबचा वहलेकर अपने उपाध्यायकेपासचले उपाध्यायके पास आकेप्र-
णामपूर्व्वक उनसबने अपनासम्पूर्ण वृत्तान्तकहदिया उपाध्यायभी उन अपराधी शिष्योंपर सत्यबोल
ने के कारण अत्यन्त प्रसन्नहुआ सातदिनके उपरान्त दुर्भिक्षके दोषसे वहसातोंमृत्युकोप्राप्तहोगये और
सत्यके प्रभावसे दूसरेजन्ममें भी जातिस्मरहुए १२० इसप्रकार किसानोंके समानपुरुषों का शुद्धसंकल्प

रूपी जलसे सींचागया स्वल्पभी पुण्यरूपी बीज फलदायकहोताहै और जो वही पुण्यरूपी बीज दुष्ट संकल्परूपी जलसे दूषितहुआ तो अनिष्टफलको देताहै इसवातपर भी मैं तुमसे एक दृष्टान्त कहताहूं उसे सुनो कि पूर्व्व समयमे गंगाजी के तटपर एक ब्राह्मण और एक चांडाल दोनों अनशन व्रत करके बैठे उनमें से क्षुधासे व्याकुल ब्राह्मणने वहां आकर मछलियां खातेहुए निषादोंको देखकर चित्तमें शोचा कि संसारमें यह निषादही धन्यहैं क्योंकि यह अपनी इच्छाके अनुसार नित्य मछलियोंका मांसखातेहैं और उस चाण्डालने उन निषादोंको देखकर यह शोचा कि जीवों के मारनेवाले मांसाशी इन निषादों को धिक्कारहै यहां इनका मुखभी मुझे नहीं देखनाचाहिये इसप्रकार शोचकर उसने अपने नेत्रवन्दकर लिये और अपने आत्माका ध्यानकरनेलगा क्रमसे थोड़ेहीदिनों में अनशनसे वह दोनों ब्राह्मण और चाण्डाल मृत्युको प्राप्तहुए तव ब्राह्मण के शरीर को तो कुत्तों ने खाडाला और चाण्डालका शरीर गंगा जी में गलगया इसके उपरान्त वह ब्राह्मण तो निषादों के यहां उत्पन्नहुआ परन्तु तीर्थ के प्रभावसे पूर्व्व जन्मका स्मरणवनारहा और वह धीरचाण्डाल गंगाजी के तटपर राजाके यहां उत्पन्नहुआ और उसे भी अपने पूर्व्व जन्मका स्मरणवनारहा इसप्रकार उत्पन्नहोकर अपने २ पूर्व्वजन्मका स्मरणकरतेहुए उन दोनोंमें से ब्राह्मण तो निषादहोकर पश्चात्तापको प्राप्तहुआ और चाण्डाल राजाहोकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ इससे धर्म्मरूपी वृक्षकामूल मन जिसका जैसा शुद्धहोताहै उसको वैसाही फल निस्संदेह मिलता है और अशुद्धको अशुद्धफल मिलताहै १३२ रानी तारादत्तासे इसप्रकार कहकर राजा कलिंगदत्त प्रसंगपाकर फिर बोला कि हे रानी जो कर्म्म जैसा अधिक सत्त्वयुक्तहोताहै उसमें वैसाही अधिक फल होताहै क्योंकि संपत्तियां सत्त्वके आधीनहैं इस विषयमें मैं तुमको एक विचित्र कथा सुनाताहूं अवन्ती नाम देशमें उज्जयिनीनाम पुरीहै श्वेतमहलों से वह पुरी ऐसी शोभितहोती है कि मानों महाकालनाम शिवकी सेवाके निमित्त कैलास के शिखरही आये हैं प्रवेशकरती हुई अनेकवाहिनि (सेना) ओं से युक्त और सपक्षी भूधरों (राजाओं) से व्याप्त उसपुरीकी भँवरदार जलसे भरीहुई परिखा समुद्रके समान गंभीरथी ऐसी सुन्दर उस पुरी में विक्रमसिंह नाम राजा था उसका यह नाम सार्थकथा क्योंकि वैरीरूपी मृगे उसके सम्मुख कभी नहीं आये शत्रुओं के न होने से कभी युद्धकरनेका अवसर उसे नहीं मिला इससे अपने अस्त्र शस्त्र और भुजवलको अनादरकरताहुआ वह राजा अन्तःकरणमें खिन्नरहताथा अमरगुप्तनाम मन्त्री ने राजा के अभिप्राय को जानकर प्रसंगपाकर कहा कि हे महाराज भुजवल और शस्त्र वलके अभिमान से शत्रुओं की अभिलाषा करतेहुए राजालोगों को दोषहोना दुर्लभनहीं है देखियेपूर्व्व समयमे वाणासुरने सहस्र भुजाओ के अभिमानसे श्रीशिवजीका पूजनकरके अपने योग्य शत्रुचाहा जव उसने अपनी इच्छा के अनुसार वरदानपाया तव उसके वैरी भगवान् श्रीकृष्णने युद्धमें उसकी सम्पूर्ण भुजाकाटडालीं इससे आपकोभी युद्धके विना असन्तोष नहीं करनाचाहिये और अनिष्टकारी शत्रुओं की इच्छा कभी नहीं करनीचाहिये जो शस्त्रशिक्षा और अपने पराक्रमके दिखाने की इच्छाहोय तो वनकी योग्य पृथ्वीमें शिकारखेलकर उसे दिखाइये राजालोगों को व्यायामादिके निमि-

च शिकारखेलना उचित है क्योंकि कदापि श्रम नहीं करनेवाले राजा युद्ध में प्रशंसा नहींपाते हैं और वनके दुष्टजीव चाहते हैं कि पृथ्वी शून्य होजाय इससे राजालोगों को उनका वधकरना चाहिये इस निमित्त भी शिकार खेलना उचितहै परन्तु इसकाभी अधिक सेवन नहीं करनाचाहिये क्योंकि इसीके व्यसन से पूर्व्वसमय में पाण्डवादिक राजा नाशको प्राप्तहुए हैं अमरगुप्तनाम अपने बुद्धिमान् मन्त्री के यहवचन सुनकर राजा विक्रमसिंह ने उसकी शिक्षा स्वीकार करली १६६ दूसरे दिन राजा संपूर्ण परिकरलेकर शिकार खेलनेको चला उससमय सम्पूर्ण पृथ्वी घोड़े पदाति तथा कुत्तों से भरगई पशुओं की बांधनेवाली डोरियोंसे सम्पूर्ण दिशाव्याप्तहोगईं और प्रसन्न व्याधों के शब्दों से आकाश छागया जब हाथीपर सवारहोकर राजाचला तब उससमय उसने पुरके बाहर किसी शून्य देवमन्दिर में परस्पर कुछ सलाह करतेहुए दो पुरुष एकान्तमें खड़ेहुए दूरसे देखे और उनको देखताहुआ राजावनमें शिकार खेलने को चलागया वहां खड्गों से न डरनेवाले वृद्धव्याघ्रोंको देखकर सिंहोंके शब्दोंको सुनकर और पर्व्वत तथा पृथ्वीके विचित्र स्थानों को देखकर राजा अत्यन्त प्रसन्नहुआ हाथियों के मारनेवाले सिंहों को मारकर उनके नखोंसे गिरेहुए पराक्रमके बीजके समान गजमोती सम्पूर्ण पृथ्वीमें राजाने बखेरदिये तिरछे चलनेवाले पक्षी तथा मृग वक्रहोकर राजाके निकटहोकर भागे उनको विनावक्रहुएही मारकर वह अत्यन्तही प्रसन्नहुआ इसप्रकार शिकारखेलकर सेवकोंके थकजाने और धनुषों के शिथिल होजानेपर राजा अपनी उज्जयिनी नगरीको लौटा फिर लौटते समय भी राजाने जातेसमय जिन दो पुरुषों को शून्य देवमन्दिर में सलाह करते देखाथा उन्हें उसी प्रकारसे उतने समयतक खड़ेहुए देखा उनको देखकर राजाने शोचा कि यह कौन हैं और इतनी देरतक क्या विचारकररहे हैं निस्सन्देह यह दोनों किसी बड़ी गुप्तबातके विचार करनेवाले चार हैं यह शोचकर राजाने प्रतीहारको भेजकर उनदोनों को बुलवाया और दोनों को बंधवालिया दूसरेदिन सभा में उनदोनों को बुलाकर राजाने पूछा कि तुम कौनहो और बहुत कालतक तुम क्या विचार कररहे थे राजाके यहवचन सुनकर उनमें से एक पुरुष अभय मांगकर बोला कि हे महाराज सुनिये मैं सम्पूर्ण यथार्थ वृत्तान्त वर्णन करताहूं आपकी इसीपुरी में वेदविद्याका जाननेवाला कर्मकनाम एक ब्राह्मणथा उसने वीरपुत्र होनेकी इच्छासे अग्नि का आराधन किया तब मेरा जन्महुआ समय पाकर जब मेरेपिता मरगये और मेरीमाता उन्हींके साथ सतीहोगई तब मैं बाल्यावस्थाही में विद्याओंको पढ़कर भी अनाथहोनेके कारण द्यूत खेलनेलगा और शस्त्रविद्या में अभ्यास करनेलगा ठीकहै (कस्यनोच्छृंखलंबाल्यं गुरुशासनवर्जितम्) बड़े लोगों की शिक्षाके बिना बाल्यावस्थामें कौनपुरुष कुमार्गी नहीं होजाताहै १६६ इसप्रकारसे बाल्यावस्थाके व्यतीत होजानेपर एकसमय में अपने भुजबलके अभिमानसे वनमें बाणफेंकनेको गया उससमय उसीमार्गसे नगरीके बाहर एकवधू बहुतसे बरातियों समेत गाड़ीपर चढ़ीहुई वहाँआई और अकस्मात् जंजीर तोड़कर कहींसे भागाहुआ एकमत्तवाला हाथी उसी वधूपर दौड़ा उसके भयसे उसकापति तथा अन्य सब लोग इधर उधर भागगये यहदेखकर मैंने घबराके एकाएकी शोचा कि हाय इनकातरोंने कैसे इस बिचारी

को अकेला छोड़दिया तो इसहाथी से मैं इसअनाथको बचाऊंगा क्योंकि (आपन्नत्राणविकलैः किं प्राणैः पौरुषेणवा) विपत्तिमें पड़ेहुएको न बचानेवाले व्यर्थप्राण और पुरुषार्थ से क्या प्रयोजन है यह सोचकर मैं गर्जकर उसहाथीकी ओरदौड़ा और वह हाथीभी उस स्त्री को छोड़कर मेरी ओरदौड़ा तब डरीहुई उसस्त्री से वारंवार देखागया मैं भागकर उस हाथीको बहुत दूरतक लेगया बीचमें घनेपत्रों से युक्त किसीवृक्षकी टूटीहुई शाखको लेकर उससे अपने को आच्छादितकरके मैं वृक्षोंके बीचमें चलागया और शीघ्रतासे वृक्षोंके बीचमें उसशाखाको धरकर मैंतो भागगया और हाथी ने वह शाखा तोड़डाली तब मैंने वहाँसे उसस्त्रीके पासआकर उससे शरीरकी कुशलपूछी वहभी मुझे देखकर दुःख तथा हर्षसेयुक्त होकर बोली कि मुझे कुशलही क्याहै जिसका ऐसे कुत्सित पुरुषके साथ विवाह हुआहै जो ऐसे संकट में भी मुझे छोड़कर कहीं भागगयाहै परन्तु यहकुशलहै जो तुम उसहाथीसे बचकर फिर दिखाईदियेहो इससे अब वह मेरा कौनहै तुम्हीं मेरे पतिहो जिसने शरीरकी आशा छोड़कर निपेक्षहोकर मृत्युके मुखसे मेरी रक्षाकी अब वह मेरापति अपने सेवकों समेत देखो आरहाहै इससे तुम पीछे २ छिपकर मेरे साथ चलेआओ अवसर मिलनेपर तुमसे मिलकर जहाँचाहोगे वहाँचलूंगी उसके यहवचन सुनकर मैंने स्वीकारकरलिये (सुरूपस्यर्पितात्मापि परस्त्रीयंकिमेतया ॥ इतिधैर्यस्यमार्गोयं नतारुण्यस्य संमितः) यद्यपि स्वरूपवती भी है और स्वयं अपनेको अर्पण भी करती है तथापि यहपरस्त्री होनेके कारण ग्रहण करनेके योग्यनहीं है इसधैर्यके मार्गपर युवापुरुष नहीं चलसक्ते १८२ क्षणभरमें उसके पतिने आकर उसे सावधानकिया और अपने भृत्यों समेत उसेलेकर वहाँसे चला और मैं भी गुप्तता पूर्वक उसके दिये हुए पाथेय (राहखर्चको) को भोजन करताहुआ उसकेसाथ बहुतदूरतक अन्य मार्गसे छिपकर पीछे२ चला और उस स्त्रीने हाथी के भयसे गिरपड़ने के कारण मिथ्या पीड़ाका बहाना करके अपने पतिको अपना स्पर्श भी नहीं करनेदिया ठीकहै (कस्यरक्तोन्मुखीगाढ रूढान्तरविषद्रुसहा ॥ तिष्ठेदनपकृत्यस्त्री भुजगीवविकारिता) विकार युक्त होगई रक्तोन्मुखी (रुधिर पीनेकी इच्छा करतीहुई और अनुराग युक्त पुरुषकी अभिलाषिणी) और अन्तःकरणमें उत्पन्नहुए घने विकाररूपी विषसे दुस्सह सर्पिणी के समान किसकी स्त्री विना अपकारकिये रहती है क्रमसे चलते २ हम उन्हीं के साथ पीछे २ लोहनगर में पहुँचे वहीं राजद्वारसे जीविकाकरनेवाले उस स्त्री के पतिका घर था पहले दिन वह लोग बाहर एक देव मन्दिर में रहे वहीं यह ब्राह्मण हमको मिला नवीन दर्शन में भी हम दोनों को परस्पर बड़ा हर्ष हुआ ठीकहै (चित्तंजानातिजन्तूनां प्रेमजन्मान्तरार्जितम्) प्राणियोंका चित्त जन्मान्तरके संचित प्रेमको जानताहै १९० तब मैंने अपना संपूर्ण रहस्य इससे कहदिया उसेजानकर इसने मुझसे एकान्तमें कहा कि तुमचुपरहो जिसलिये तुमयहाँ आयेहो उसका उपाय मेरे पासहै इसवणियेकी बहिन मेरे साथ यहाँ से निकल चलनेको उद्यतहै औरइसबातका सबठीकभी होचुकाहै इससे उसीकी सहायतासे मैंतुम्हाराभी अभीष्ट सिद्धकरूंगा मुझसे यहकहकर इसब्राह्मणने उसस्त्रीकी ननँदसे संपूर्ण वृत्तान्त कहदिया दूसरे दिन सलाह करके वह अपने भाईकी स्त्रीको लेकर उसी देवमन्दिरके एकगुप्तस्थानमें आई वहाँ हम

दोनोंमेंसे मेरे मित्र इसब्राह्मणंका वेष उसने अपने भाईकी स्त्रीकासा बनालिया और इसे लेकर अपने भाईके साथ नगरमें अपने घरकोगई और मैं पुरुष वेषधारिणी उस बणियेकी स्त्रीको साथलेकर धीरे २ उज्जयिनी में आया और उसकी नन्द रात्रिके समय उत्सव से उन्मत्तहोकर जब संपूर्णलोगसोगये तब मेरे इसमित्रको लेकर वहाँसे निकली तब यह उसे लेकर छिपकर इस उज्जयिनी नगरी में आया और यहाँ आकर मुझसे मिला २०० इसप्रकार हमदोनोंको वहदोनों नन्द और भावज अपने २ अनुरागसे मिलीं इस्से हे महाराज हमलोगोंको यहाँ सबकहीं निवासकरनेमें सन्देह होताहै क्योंकि साहसी चित्त किसीपर विश्वास नहींकरते इसीसे उनस्त्रियोंके निवासकेलिये और धनकेलिये हमदोनों कल एकान्तमें विचार कररहे थे उससमय आपने दूरसे देखकर चार (गोइन्दा) के सन्देहसे हम दोनोंको पकड़मँगवाया और आज आपके पूछनेपर मैंने अपना और अपने मित्रका सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया अब आप स्वामीहैं जैसा उचित समझिये वैसा कीजिये उसके यहवचन सुनकर राजाविक्रमसिंह उनदोनों ब्राह्मणों से बोला कि तुम दोनोंपर मैं प्रसन्नहूं डरोमत मैं तुमदोनों को निर्वाहके योग्य धनदूंगा इसीपुरी में रहो यहकहकर राजाने उनको यथेष्ट जीविका दी और वह अपनी स्त्रियों समेत सुखपूर्व्वक राजाके निकट रहे इसप्रकार प्रबलसत्त्वसे कियेगये सम्पूर्ण कार्य्योंमें सम्पत्तियोंका निवासहै और इसीप्रकारसे साहसी तथा बुद्धिमान् मनुष्योंपर प्रसन्नहोकर राजालोग उन्हें यथेष्ट धनदेते हैं इस्से हे रानी देवता तथा दैत्यादिक सम्पूर्ण सृष्टिके लोगोंको इसजन्ममें अथवा पूर्वजन्ममें अपनेही कियेहुए शुभाशुभकर्मके अनुसार नानाप्रकारके विचित्र भोग भोगने पड़ते हैं इस्सेस्वप्नके वृत्तान्तके बहानेसे आकाशसेगिरीहुई जोज्वाला तुमने अपनेउदरमें प्रवेश करतीहुई देखी है वह किसी कर्मवशसे निस्सन्देह कोई देवजाति तुम्हारेगर्भ में आई है इसप्रकार अपने पति राजाकलिंगदत्तसे सुनकर गर्भवती रानीतारादत्ता अत्यन्त प्रसन्नहुई॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांमदनमंचुकालम्बकेप्रथमस्तरंगः १॥

इसके उपरान्त तक्षशिला नाम पुरी में राजा कलिंगदत्तकी रानी तारादत्ता धीरे २ गर्भ के भारसे आलस्य युक्तहुई जब प्रसवका समय आया तब पांडुवर्ण मुखवाली और चंचल नेत्रों की पुतलीवाली रानीतारादत्ता उदयहोतेहुए चन्द्रमासे युक्त पूर्व्व दिशाके समान शोभितहुई और थोड़ेही समयमें उस के एक अत्यन्त सुन्दर और ब्रह्माकी सम्पूर्ण सुन्दरता बनाने के रंगकी कटोरीसी अपूर्व्व कन्या उत्पन्न हुई उससमय स्नेहयुक्त दीपक उसकी कान्ति से पराजित होके ऐसा पुत्र क्यों न हुआ इसलिये मानों कान्ति रहित होगये राजा कलिंगदत्तभी ऐसी सुन्दर कन्याको भी देखकर तद्रूपपुत्र होनेकी आशाके व्यर्थ होजाने से उदास होगया और उसकन्या को दिव्य जानकर भी उसके चित्तमें खेदहीहुआ क्यों हुआ क्योंकि उसे पुत्रहोनेकी आशाथी ठीकहै (शोककन्दः क्कन्याहि क्वानन्दः कायवान्सुतः) कहाँ तो शोककी मूलकन्या और कहाँ मूर्तिमान् आनन्दरूप पुत्र इसके उपरान्त राजा खिन्नहोकर मन्दिर से निकलकर चित्तको बहलानेके लिये जिनदेव के मन्दिरमें गया वहाँ जाकर राजाने बहुतसे मनुष्यों के बीचमें बैठे हुए धर्म्म के उपदेश करनेवाले एक भिक्षुकके मुख से यह व्याख्यान सुना कि संसार में

धनका देनाही परमतपहै धनका देनेवाला प्राणदाता कहलाताहै क्योंकि प्राण धनके आश्रितहैं देखो करुणासे व्याप्त चित्तवाले बुद्धने परायेनिमित्त अपना शरीरभी तृणकेसमान देदिया तो धनका क्या कहनाहै इसीप्रकारके ऐश्वर्य और तपसे इच्छारहित होकर दिव्यज्ञानको प्राप्तहुए बुद्ध बुद्ध होगये इससे शरीरपर्य्यन्त संपूर्ण अभिलाषोंको आशासे हटाकर बुद्धिमान् मनुष्य अच्छेप्रकार ज्ञानकी प्राप्तिके लिये प्राणियोंका हितकरे ३२ पूर्व्वसमयमें कृतलोम किसी राजाके अत्यन्त सुन्दर सातकन्याक्रमसेहुईं वह सातोंबाल्यावस्थामेंही वैराग्यसे पिताके घरकोछोड़कर श्मशानमें चलीगईं जबपरिवारके लोगोंने उनसे पूँछा कि तुमने गृहकात्यागक्योंकिया है तबवहबोलीं कि यह संपूर्ण संसारही असारहै संसारमें भी यह शरीर अधिकअसारहै और इसशरीरमें भी अभीष्टकी प्राप्तिआदिक सुखस्वप्नके समान अत्यन्तही असारहै परन्तु एकपरहितही इससंसारमें सारहै इससेइसशरीर से हमसब प्राणियोंका हितकरेंगी इसजीते हुएही शरीरको श्मशानमें राक्षसोंके भोजनकेनिमित्त डालदेंगी क्योंकि सुन्दरभी इसशरीरसे क्याप्रयोजनहै देखो पूर्वसमयमें एकसुन्दर राजपुत्र तरुणअवस्थामेंही विरक्तहोकर संन्यासीहोगया एकसमय वह किसीवैश्यके यहां भिक्षाके निमित्तगया वहां उसवैश्यकी स्त्रीकाचित्त कमलकेपत्रोंके समान बड़े २ उसके सुन्दरनेत्रोंकी शोभासे चलायमानहुआ तो वहबोली कि तुमने इसअवस्थामें इसकष्टदायी संन्यासका ग्रहणक्योंकिया वहस्त्रीधन्यहै जिसको तुम अपने नेत्रकमलसे देखतेहो उसके यहवचन सुनकर राजपुत्रने अपना एकनेत्र फाड़करहाथमें लेकरकहा कि हेमातादेखो यह ऐसानिन्दितमांस रुधिर से भराहुआ नेत्रहै जो आपको प्रिय लगताहोय तो लेलो और दूसरा नेत्र भी इसी प्रकारकाहै बताओ इनमें रमणीयता क्याहै उसके यहवचनसुनकर और उसे देखकर वहस्त्री बहुत दुःखितहोके बोली हाय२ मैं महादुष्टाहूं मुझपापिनीने यहबड़ापापकिया क्योंकि तुम्हारे नेत्रके निकालनेकाहेतु मैंहीहूं यहसुनकर राजपुत्र बोला कि हे माताखेदमतकरो तुमने मेरेसाथ उपकार कियाहै इसबातपर मैं तुम्हें एकदृष्टान्त सुनाताहूं पूर्वसमयमें गंगाजीके तटपर किसी उपवनमें एकयती वैराग्य के अधिक बढ़नेकी इच्छासे तपकरताथा वहाँ भाग्यवशसे कोईराजा अपनी रानियोंसमेत विहारकरनेको आया विहारकरनेके उपरान्त जबमद्यपानकरके राजासोगया तबसंपूर्णरानी उसके पाससेउठकर अपनी चपलतासे उसउपवनमें घूमनेलगीं और उसमुनिको एकस्थानमें समाधि लगायेहुए बैठादेखकर आश्चर्य से संपूर्णरानी उसे घेरकर बैठगईं जबवह बहुतकालतक वहाँबैठीरहीं तबराजाने जगकर रानियोंको अपनेपास न देखकर उन्हें ढूंढनेके लिये संपूर्ण वनमें भ्रमणकिया और देखा कि मुनिको घेरे हुए संपूर्णरानी बैठी हैं उन्हें देखकरईर्षासे कुपितहोकर राजाने मुनिपर खड्गकाप्रहार किया ठीकहै (ऐश्वर्य्यमीर्ष्या नैर्घृण्यंक्षीवत्त्वं निर्विवेकिता ॥ एकैकंकिन्नयत्कुर्य्यात् पंचाग्नित्वेनतुका कथा) ऐश्वर्य्य ईर्षा निर्दयता उन्मत्तता और विवेककानहोना इनमेंसे एकएकही कौनसे कुकर्मको नहींकरसक्ता और जहाँ यहअग्निके समान पांचों इकट्ठेहोवैं वहाँ क्याकहनाहै ३३ इसके उपरान्त जबवह राजाचलागया और शरीरके कटजानेपर भी मुनिको क्रोधनहींहुआ तबएकदेवी प्रकटहोकर मुनिसेबोली कि हे महात्मन् जिसपापीने क्रोधसे तु-

म्हारेऊपर प्रहारकियाहै उसे जो तुम्हारी आज्ञाहोयतो मैं मारडालूं देवी के वचनसुनकर मुनि बोला कि हे देवी ऐसामतकहो वहमेरेधर्मका सहायकहै अपकारीनहींहै उसकी कृपासे मेराक्षमारूपी धर्मबढ़ा यदि वहऐसानकरता तो मैं किसपर क्षमाकरता और जानसक्ता कि मैं अपने को वशीभूतकरचुका इसनश्वर शरीरकेलिये बुद्धिमान् क्रोधनहीं करते हैं प्रिय और अप्रियमें समताहोनेसे जो क्षमाहोतीहै वह मोक्षकापदहै मुनिके यहवचनसुनकर उसके तपसे प्रसन्नहुई देवी उसके अंगोंको घावोंसे रहित करके अन्तर्द्धानहोगई इससे हे माता जैसे वहराजा मुनिका उपकारीहुआ उसीप्रकार तुम भी मेरानेत्र निकलवाकरमेरी उपकारिणीहुई हो इसप्रकार उसवैश्यकी स्त्रीसे कहकर जितेन्द्री वहराजपुत्र अपने सुन्दर शरीरमें भी विश्वास न करके सिद्धिके लिये चलागया इससेबाल भी और रम्यभी इसनश्वर शरीरमे क्या विश्वासहै बुद्धिमान्को इसशरीर से केवल परोपकारही करनाउचितहै इससे हमसातों इसस्वाभाविक सुखदायी श्मशानमें प्राणियोंके निमित्त इसशरीरको रक्खेंगी अपने परिवारवालोंसे इसप्रकार कहकर उनराजकन्याओं ने वैसाही किया और परम सिद्धियों को प्राप्तहुई इसप्रकार बुद्धिमान् लोगों को अपने शरीरमे भी ममता नहीं होती है और पुत्र तथा स्त्री आदि परिवाररूपी तृणोंकी कौनगणना है इत्यादि अनेक उपदेशोंको उसजैन मन्दिरमें धर्मोपदेशक से सुनकर राजा कलिंगदत्त उसदिनको वहाँ व्यतीत करके अपने स्थानको चलाआया ४५ वहाँ आकर कन्या जन्मके शोकसे उसे व्याकुल देखकर राजगृह के किसीवृद्ध ब्राह्मण ने उससे कहा कि हे राजा कन्यारूपी रत्नके उत्पन्नहोने से तुम क्यों दुखी होतेहो ऐहिक और पारलौकिक सुख की देनेवाली कन्या पुत्रों से भी उत्तम होती है और राज्य के लोभीपुत्रों में राजालोगों को विश्वास न करना चाहिये क्योंकि वह मकड़ी के समान अपने पिता को भी नष्ट करदेता है कुन्ति भोजादिक राजा कुन्ती आदि कन्यकाओं के गुणों से दुस्सह दुर्वासाआदिके शापसे बचे हैं कन्यादानसे जो पारलौकिक फल मिलताहै वह पुत्रसे कैसेमिलसक्ताहै इस विषय में मैं सुलोचनाकीकथा आपको सुनाताहूं कि चित्रकूट पर्वतपर सुषेणनाम राजाथा जिसे ब्रह्माने शिवजीकी ईर्ष्यासे मानों द्वितीयकामके समान बनायाथा उसने चित्रकूटके तट में एकदिव्य उपवन बनवाया वह ऐसासुन्दर बनाथा जिसेदेखकर देवतालोगोंको नन्दनवनके विहारसे अनिच्छा होजातीथी और उसी उपवनके बीचमें प्रफुल्लितकमलों से युक्त एकबावड़ी बनवाईथी वहबावड़ीक्या थी मानोलक्ष्मीजीके क्रीड़ाके कमलोंकी नवीनखानथी उस बावड़ीकी रत्नजटितसीढ़ियोंपर अपनेयोग्य स्त्रियोंके न होनेसे अकेलाहीराजा सुषेणविहारकरताथा एक समय उसीमार्गसे आकाशमें भ्रमणकरती हुई रम्भानामअप्सरा इन्द्रके भवनसेआई उसने उस उपवन में प्रफुल्लितपुष्पों के वनमें साक्षात्वसन्तके समान विहारकरतेहुए राजाकोदेखा बावड़ीकेकमलों में वर्त्तमान लक्ष्मीकेलिये क्या यह चन्द्रमास्वर्गसे आयाहै परन्तु यह चन्द्रमानहींहै क्योंकि इसकी शोभास्थिरहै क्या यह कामदेवहै यहां पुष्पतोड़नेको वनमेंआयाहै परन्तु इसकेसाथ सदैवरहनेवाली रतिकहांगई इसप्रकारचित्त में सन्देहकरतीहुई रम्भा मनुष्य शरीरधारणकरके राजाकेपासगई उसे अपनेपासआईहुई देखकर राजाने आश्चर्यपूर्वकशोचा

कि यह अपूर्व्वसुन्दर रूपवालीकौनहै यह मानुषीतोनहींहै क्योंकि इसकेपैरोंमें धूलनहींलगी और इसके नेत्रोंमें पलकेंभीनहींलगती हैं इससे यह कोईदिव्यस्त्री मालूमहोतीहै परन्तुइससेपूछनानहींचाहिये पूछने से कदाचितचली न जाय क्योंकि किसीकारणसे मिलीहुईदिव्यस्त्री प्रायःअपने भेदको नहीं प्रकट कर सक्ती हैं इसप्रकार विचारतेहुए राजासे उसने आकर सम्भाषणकिया और क्रमसे उनदोनोंका उससमय समागमभीहुआ राजाउसअप्सराके साथ बहुतकालतक क्रीड़ाकरतारहा और उसनेभी स्वर्गका स्मरण नहींकिया ठीकहै (रम्यंप्रेमनजन्मभूः) प्रेमरमणीयहोताहै जन्म भूमि नहींरम्यहोती ६४ रम्भाकी सखी यक्षिणियों से वर्षायेगये सुवर्णके समूहसे राजाके राज्यकीपृथ्वी ऐसीव्याप्तहोगई जैसे कि सुमेरुके शिखरोंसे स्वर्गहोताहै इसकेउपरांत समयपाकर राजासुषेणकी वह श्रेष्ठअप्सरा रम्भागर्भवतीहुई और गर्भ केपूरेहो जानेपर एकअत्यन्त सुन्दरकन्या उत्पन्नहुई कन्याकेउत्पन्नहोतेही रम्भाराजासे बोलीकि हेराजा मुझे इतनेदिनका शापथा वह इससमय छूटगया मैं रम्भानामस्वर्गकी अप्सराहूं तुम्हें देखतेही मेरे चित्त में अनुरागउत्पन्नहुआ अब मैं इसकन्याको यहांछोड़करजातीहूं क्योंकि मेराऐसाही नियम है आपइस कन्याकी रक्षाकीजिये और इसकेविवाहसे स्वर्ग में हमारा तुम्हारा फिरसमागमहोगा इसप्रकार कहकर पराधीन वह अप्सरा अन्तर्द्धानहोगई और राजाउसके दुःख से प्राणदेनेको उद्यतहुआ राजाकी यह दशादेखकर मंत्रियोंने उससेकहा क्या शकुन्तलाको उत्पन्नकरके मेनका के चलेजानेपर विश्वामित्रने निराशहोकर शरीरत्यागदियाथा मंत्रियोंके इत्यादि अनेकवचनोंको सुनकर राजाको धीरे २ धैर्य्यहुआ और उसकन्याको देखकर उसके विवाहमें रम्भा के फिर मिलनेकी आशा हुई राजाने सर्वांगसुन्दरी उस कन्याकानाम लोचनोंके अत्यन्तसुन्दरहोने केकारण सुलोचनारक्खा समयपाकर जब सुलोचना युवती हुई तबउसे उपवनमें कश्यपजीके पुत्र वत्सनाम युवामुनिने देखा तपकेसमूह रूपभी वत्समुनि राजकन्या को देखकर अनुरागवशहोगये और शोचनेलगे कि इसकन्याका रूपपरमअद्भुतहै यदि यह मेरीस्त्री न होय तो इसकेसिवाय तपका क्या फलहोगा इसप्रकार शोचतेहुए धूमरहित अग्निके समान प्राज्वल्यतेजवाले वत्समुनिको सुलोचनाने भी देखा माला यज्ञोपवीत तथा कमण्डलधारी मुनिको देखकर उसके चित्त में भी प्रेम उत्पन्नहुआ और शोचनेलगी कि यह कौनहै इसकीआकृति कैसी शान्त और मनोहरहै इसप्रकार शोचकर मानों स्वयम्बरकेलिये नेत्रकमलोंकी माला उसपरफेंकतीहुई सुलोचनाने निकटजाकर उसे प्रणामकिया तबदेवता और दैत्यों सेभीनहीउल्लंघनकरनेके योग्य कामकी आज्ञाके वशीभूत मुनिनेतुझे पतिप्राप्तहोय यह आशीर्वाददिया उससमय मुनिके अपूर्व्वरूपके लोभसे निर्लज्जहोकरसुलोचना मुखको झुकाकरबोली किजो आपकी ऐसीही इच्छाहै और यह केवल हास्यनहींहैतो मेरेपितासे जाकरयाचना कीजिये वहीमुझे देसक्ताहै तब मुनिने उसकी सखियों से उसकासंपूर्णवृत्तान्त पूछकरउसके पिताराजा सुषेणके पासजाकर उसकी याचनाकी राजाने भी उसे तप और शरीर दोनोंसे अत्यन्त उत्कृष्ट जानकर अतिथिसत्कारकरके कहा कि हे भगवन् यहमेरी कन्यारंभाअप्सरासे उत्पन्नहुई है जबरंभास्वर्गको जाने लगीथी तबउसने कहाथा किइसकन्याके विवाहमें हमारातुम्हारा फिर समागमहोगा यहबातकैसे सि-

द्ध होगी इसको आप विचारलीजिये राजाके यहवचनसुनकरवत्समुनिने क्षणभरयह विचारकिया कि पूर्व्वसमयमें मेनकाकी कन्या प्रमद्वराको जबसर्पने काटाथा तबरुरुनाममुनिने अपनी आयुका अर्द्ध-भागदेकर क्या उसकेसाथविवाह नहीं किया था क्या विश्वामित्र भयभीत त्रिशंकुको स्वर्ग नहींलेगये थे इससेमैंभी अपनेतपके कुछ अंशको व्ययकरके इसके मनोरथको क्यों न सिद्धकरूं यह शोचकर और यहकुछ कठिन बातनहींहै ऐसा कहकर वह मुनिबोले कि हे देवतालोगो मेरे तपके अंशसे शरी-रसहित यह राजा रम्भा से सम्भोग करनेके निमित्त स्वर्ग को जाय मुनि के ऐसा कहने पर एवमस्तु यह आकाशवाणी राजसभामें सुनाईदी तबराजा सुषेण वत्समुनिकेसाथ सुलोचनाका विवाहकरके स्वर्ग को चलागया और स्वर्गमें जाकर दिव्य शरीरहोके इन्द्रकी आज्ञासे दिव्यप्रभाववाली रंभाकेसाथ आ-नन्दपूर्व्वक रमणकरनेलगा इसप्रकार कन्याके प्रभावसे राजासुषेण कृतार्थहुआ हे महाराज आपलोगों के यहाँ इसीप्रकारकी कन्या उत्पन्न होती हैं और यहकन्याभी शापसे भ्रष्टहुई कोई दिव्य स्त्री तुम्हारे यहाँ उत्पन्न हुईहै इससे आप इसके जन्मसे शोक न कीजिये उस वृद्धब्राह्मणके मुखसे इसकथाको सुनकर राजा कलिंगदत्तकी चिन्तादूरहोगई और उसके चित्तमें सन्तोषहोगया ९६ तदनन्तर चन्द्रमाकी कलाके समान नेत्रोंको आनन्ददेनेवाली अपनी कन्याकानाम राजाने कलिङ्गसेना रक्खा वह कन्या अपने पिताके घरमें धीरे २ बड़ीहुई और सखियोंके साथ क्रीड़ा करनेलगी क्रीड़ाके रससे भरेहुए बाल्यावस्थारूपी स-मुद्रकी तरंगके समान वह कलिंगसेना महलों में गृहों में और उपवनों में विहारकरनेलगी एक समय अपने महलपर खेलतीहुई कलिङ्गसेना को आकाशमार्ग से जातीहुई मयासुरकी पुत्री सोमप्रभाने देखा अपनेरूपसे मुनियों के मनोंको मोहनेवाली कलिङ्गसेना को देखकर सोमप्रभा के चित्तमें स्नेह उत्पन्न हुआ और उसने आकाशहीमें शोचा क्या यह चन्द्रमाकीमूर्त्ति है नहीं क्योंकि चन्द्रमाकी कान्ति तो दिनमें नष्टहोजाती है अथवारतिहै परन्तुइसके साथमें कामनहींहै इससेमैं रविचारसे यह शापसे च्युतहुई कोईदिव्यस्त्री यहां आकर राजकन्याहुई है इसेदेखकर मेरेचित्त में अत्यन्तस्नेह उत्पन्न होता है इससे मैं जानती हूं कि पूर्वजन्म में भी मेरी इसकेसाथ मित्रता थी इससे मैं आपहीजाकर इससे मित्रता करतीहूं इसप्रकार विचारकरके कलिङ्गसेनाको भय न होय इसलिये सोमप्रभा आकाशसे अलक्षितहोकर उतरी और विश्वासकेलिये मनुष्यकी कन्याका स्वरूपधारणकरके धीरे २ कलिङ्गसेनाके पासगई उसेदेखकर कलिङ्गसेनाने यह शोचाकि यह कोई अत्यन्त अद्भुतरूपवती कन्यामेरेपासआई है इससेमित्रताकरना मुझेयोग्य है इसप्रकार शोचकर और उठकर कलिङ्गसेना ने सोमप्रभाको आलिङ्गनकरके आदरपूर्वक अपने पास बैठाया और उससे पूछा कि तुम्हारा क्यानाम है और किस श्रेष्ठ कुलमें तुम्हारा जन्म है तब सोमप्रभाने कहा कि ठहरो सब वर्णन करूंगी इसके उपरान्त कुछ कालतक वार्त्तालाप करके उनदोनो ने आपसमें हाथमारकर मित्रताकी ११० तदनन्तर सोमप्रभा बोली कि हे सखी तुमराजकन्या हो और राजपुत्रोंके साथमित्रता निबाहना बहुतकठिनहै क्योंकि वहथोड़ेही अपराधमें अत्यन्त कुपित होजाते हैं इसपरमें एकराजपुत्र और वणिक्पुत्रकी कथासुनातीहूं पुष्करावतीनाम नगरी में गूढसेननाम राजा

थी उसके एकहीपुत्रथा वहराजपुत्र अभिमानसे जो कुछशुभाशुभ कार्य्य करताथा वहसब उसकापिता सहलेताथा एकसमय उपवनमें भ्रमणकरतेहुए राजपुत्रने ब्रह्मदत्तनाम वैश्यका अपने समानरूप और ऐश्वर्य्यवान् पुत्रदेखा देखतेही राजपुत्रने जाकर उससे मित्रताकरली उनदोनोंमें ऐसी मित्रतावढ़ी कि वहदोनों एकरूपसे होगये परस्पर विनादेखे वहक्षणभरभी नहीं ठहरसक्ते थे ठीकहै (आशुवध्नातिहिप्रेम प्राग्जन्मान्तरसंस्तवः) पूर्व्व जन्मका संस्कार शीघ्रही प्रेमको दृढ़करदेताहै राजपुत्र उससुखको कभी नहीं भोगकरताथा जो उस वणिक्पुत्रके लिये पहलेसेही नहीं कल्पित कियाजाताथा। एकसमय राजपुत्र अपने मित्र वणिक्पुत्रके विवाहका पहिलेहीसे निश्चयकरके अपने विवाहकेलिये अहिच्छत्र देशको जानेकेलिये अपने मित्रसमेत हाथीपरचढकर सवसेना सहितचला और सायंकालके समय इक्षुमती नदीके तीरपररहा वहाँ रात्रिकेसमय चांदनीमें मद्यपानकरके पलंगपरलेटा और अपनी उपमाताके कहने से कोई कथा कहनेलगा कथाके बीचहीमें श्रमसे और मदसे राजपुत्रको तो निद्राआगई और उसकी उपमाताभी सोगई परन्तु वहवणिक्पुत्रस्नेहसे जागतारहा उससमय आकाशमें स्त्रियों कीसी यह वातचीत उसवणिक्पुत्रको सुनाईदी कि यहपापी कथाको विनाकहे सोगया इस्से मैं इसे यहशाप देतीहूं कि प्रातःकाल इसे एकहार दिखाईदेगा यदि यह उसेलेलेगा तो उसके पहरतेही इसकी मृत्युहोजायगी यहकहकर जवएक चुपहुई तवदूसरी वोली कि जो इस्से यहवचजायगा तो मार्गमें एकआम्रका वृक्ष इसेदिखाईदेगा जो उसके फल यहखायगा तो इसकी मृत्युहोजायगी यहकहकर जववह चुपहुई तव तीसरीवोली कि जो यह इस्से भी वचजायगा तो विवाहकेलिये यह जिसघरमें जायगा वहीघर इसके ऊपरगिरेगा और उसीसे इसकी मृत्युहोजायगी यहकहकर जववह भी चुपहोगई तवचौथी वोली कि जो इस्से भी यहवचजायगा तो रात्रिके समय जवयह शयनके स्थानमें जायगा तवजातेही इसेसौवार सौ छींकेंआवेंगी जो हरछींकमें कोई मनुष्य इस्से जीव २ नहींकहेगा तो इसकी मृत्युहोजायगी और जिसने हमलोगोंकी यहवातचीत सुनीहोगी वह जो कदाचित् इसके वचानेके लिये इस्से कहेगा तो उसकी भी मृत्युहोजायगी यहकहकर वह भी चुपहोगई १३१ इससंपूर्ण दुखदायी वार्त्तालापको सुन कर वहवणिक्पुत्र राजपुत्रके स्नेहसे व्याकुलहोकर शोचनेलगा कि वड़े खेदकाविषय है कि प्रारंभकी हुई कथाको अलक्षित होकर देवतालोग भी सुनते हैं जो उसे पूरी न करो तो वहशाप देजातेहैं अच्छा होयसोहोय इस्से क्यालाभहै अवइस राजपुत्रके मरजानेपर मेराजीना भी व्यर्थहोजायगा इस्से प्राणोंके समान प्रिय इसमित्रकी युक्तिपूर्व्वक रक्षाकरनी चाहिये और यह वृत्तान्त भी उस्से नहीं कहनाचाहिये क्योंकि कहनेसे मुझे दोषहोगा इसप्रकार शोचकर वड़े खेदसे उसने वहरात्रि व्यतीतकी, प्रातःकाल वहाँसे चलकर राजपुत्रने एकहार मार्गमें पड़ाहुआदेखा और उसके लेनेकी इच्छाकी तववणियेके पुत्रनेकहा कि हे मित्र यहहारमतलो यहहारनहीं है मायाहै नहींतो सैनिकलोग इसे क्यों नहीं देखते अपने मित्रके यहवचनसुनकर उसे छोड़कर राजपुत्रने आगेचलकर एक आम्रका वृक्षदेखा और उसके फलखानेकी इच्छाकरी तव फिर वैश्यपुत्रने उसीप्रकारसे वहाँभी निषेधकरदिया इसके उपरान्त धीरे २

राजपुत्र अपने श्वशुरके यहाँ पहुंचा वहाँ जबविवाहके निमित्त घरमें जानेलगा तबवणिक्पुत्रने द्वारही से उसेरोका और उसीसमय वहघर गिरपड़ा इसप्रकार इनआपत्तियोंसे बचकर राजपुत्र रात्रिके समय वणिक्पुत्रकी उनबातोंमेंकुछ आश्चर्यपूर्वक विश्वास करताहुआ अपनी स्त्री समेत शयन स्थानमें गया वहाँ वणिक्पुत्र पहलेहीसे जाकर पलंगकेनीचे छिपकर बैठरहाथा वहांजाकर पलंगपर बैठतेही राजपुत्र को सौवार छीकेआई और प्रतिवार नीचेसे वणिक्पुत्रने धीरे २ जीव २ यहशब्दकहा फिर छिपाहुआ ही प्रसन्नहोकर वहाँसे निकलनेलगा निकलते समय उसे राजपुत्रने देखकर ईर्षा से उसके स्नेहको भूलकर कुपितहोके द्वारपालोंसे कहा कि यहपापी यहाँ एकान्तमे भी मेरे रणवासमें चलाआया इस्से इसे बाँधकर रक्खो प्रातःकाल इसे फांसीदीजायगी राजपुत्रके वचनसुनकर रक्षकोंने उसे रात्रिभर बाँध रक्खा और प्रातःकाल वध्यस्थानको लेचले उससमय वणिक्पुत्रने उनसेकहा कि पहले मुझेराजपुत्रके पासलेचलो क्योंकि मुझे उस्से कुछकहनाहै पीछे मेरावधकरना उसके यहवचनसुनकर उनलोगोंने राजासेजाकर यहीविज्ञापनाकी तबराजपुत्रने मंत्रियोंके कहनेसे उसे अपनेपास बुलवाया वहाँ आकर वणिक्पुत्रने राजपुत्रसे वहसंपूर्ण वृत्तान्त जो रात्रिके समय दिव्यस्त्रियो से सुनाथा कहदिया यह राजपुत्रने घरगिरनेके विश्वास से वहसबबातें निश्चयमानली और वधसे उसेछुड़ाकर अत्यन्त प्रसन्नहोकर उसीकेसाथ अपनी स्त्री समेत अपनी पुरीमेंआया और वहाँ आकर अपने मित्र वणिक्पुत्रका भी विवाहकरवाया विवाहके उपरान्त मार्गकी बातोंको सुनकर संपूर्ण लोगों से प्रशंसाकियागया वणिक्पुत्र सुखपूर्व्वक रहनेलगा हे सखी इसप्रकार उच्छृंखल (जंजीरसेछुटा और उद्दंड) होकर अपने नियन्ता (शिक्षक और महावत) को भी मारनेवाले उन्मत्तहाथीके समान राजपुत्र हितको नहीं मानते हैं और वेतालके समान हंसकर भी प्राणलेतेहैं ऐसेराजपुत्रोंसे मित्रता क्या करनीचाहिये इस्से हे राजपुत्री मेरी मित्रतामें कभी भेद न करना १५३ सोमप्रभाके मुखसे इसकथाको सुनकर कलिंगसेना स्नेहपूर्व्वक उससे बोली कि मेरी बुद्धिसे तो ऐसेस्वभाववाले राजपुत्रनहीं हैं पिशाच हैं इसविषयमें मैं तुमको ढुर्म्रहनाम पिशाचकी कथा सुनातीहूं यज्ञस्थलनाम किसीग्राममें एकदरिद्री ब्राह्मणरहता था वह एकसमय बनमें काष्ठ लेनेको गया वहाँ कुठारसे कटाहुआ एककाष्ठ भाग्यवशसे उसकी जंघामें घुसगया उसके लगने से वह मूर्च्छितहोकर गिरपड़ा और जंघासे रुधिर बहनेलगा उस समय किसी पुरुषने उसे पहचानकर घर पहुंचादिया वहाँ उसकी स्त्रीने पतिकी यह दशादेखकर रुधिरधोकर उसकी जंघा में पट्टी बांधदी इसके उपरान्त प्रतिदिन औषध करने पर भी वहघावपूरातो नहीं हुआ परन्तु नासूरहोगया उससे अत्यन्त दुखी होके वह ब्राह्मण मरने के लिये उद्यतहुआ उससमय उसके किसी मित्र ब्राह्मणने उससे एकान्तमें जाकर कहा कि मेरामित्र यज्ञदत्तनाम ब्राह्मण बड़ादरिद्री था पिशाचका साधन करने से उसको बहुतसाधन प्राप्तहुआ और अबवह सुखपूर्व्वक रहताहै उसने वह पिशाचसाधन मुझे भी बता दियाहै इस्से हेमित्र तुमभी पिशाचसिद्धकरो वहतुम्हारे इसघाव और नासूरको अच्छाकरदेगा यहकह कर और मंत्र बताकर उसने यह विधिभी बताई किरात्रिके पिछले पहर में उठकर बालोंको खोलकर न-

ग्न होके आचमन विनाकिये दोमुट्ठियोंमें जितने चांवलआसके उतने चांवललेकर मन्त्रको जपतेहुये तुमचौराहेपरजाना वहां दोनों मुट्ठी चांवलरखकर मौनहोकर चलेआना और पीछेफिरकर न देखना जबतक पिशाच प्रकट होकर यह न कहे कि मैं तुम्हारे रोगको खोदूंगा तबतकप्रतिदिन इसीरीतिकोकरे चलेजाना इसप्रकारसे पिशाच सिद्धहोकर तुम्हारे रोगको दूरकरदेगा अपने मित्रके यह वचन सुनकर उस ब्राह्मणने उसीरीतिपर किया तब पिशाचने सिद्धहोकर हिमाचलसे औषधीलाकर उसका नासूर खोदिया नासूरके अच्छे होजानेसे प्रसन्नहुए उस ब्राह्मणसे वह पिशाच बोला कि हेब्राह्मण मुझे कोई दूसराघाव और बताओ जिसको मैं पूराकरूं नहींतो मैं तुम्हारेलिये कोईअनर्थकरदूंगा या तुम्हारे शरीर कोहीनष्ट करदूंगा यह सुनकर ब्राह्मण भयभीतहोके अपनेको बचाने के लिये बोलाकि सातदिनके उपरान्त मैं तुमको दूसरा घावबतलाऊंगा तबपिशाच चलागया और वह ब्राह्मण अपने जीवनसे निराशहोगया इतनी कथा कहकर कलिंगसेना असभ्यवचनों के कहने की लज्जासे निवृत्त होकर सोमप्रभा के कहने से फिरबोली कि इसके उपरान्त उस ब्राह्मण की एकचतुर विधवापुत्री अपनेपिताको खिन्नदेखकर बोली कि आप क्यो उदासीनहो तबउसने उससे संपूर्ण वृत्तान्तकहदिया तब कन्याने व्रण के न मिलने से अपने पिताको खिन्नजानकर कहा कि मैं उस पिशाच को छललूंगी तुम उससे जाकरकहो कि मेरी पुत्री के नासूरहै उसे पूराकरो पुत्रीके वचन सुनकर ब्राह्मण प्रसन्नहोकर पिशाचके पासगया और उसको अपनी पुत्रीके पासलेआया तब लड़की ने पिशाचको एकान्तमें अपनी योनि दिखाकरकहाकि इसमेरेघावको तुमपूराकरो उसकेवचन सुनकर वहमूर्खपिशाच अनेक प्रकारके लेप और बत्तीआदि उसकी योनि में लगाने लगा परन्तुउसे पूर्ण न करसका कुछदिनोंके पीछे खिन्नहोकर पिशाच उस ब्राह्मणकी पुत्री की जंघा अपने कन्धोंपर रखकर उसकीयोनि को देखने लगा कि यहव्रण क्यों नहींपूर्णहोताहै उससमय कुछ नीचे दृष्टि पड़ने से उसेगुदा का छिद्रदिखाईदिया उसेदेखकर वह घबड़ा कर शोचनेलगा कि एकव्रण को तो पूराही नहीं करचुकाहूं दूसरा और उत्पन्नहोगया यह कहावतठीकहै कि (छिद्रेष्वनर्थाबहुलीभवन्ति) छिद्रोंमें अनर्थ बहुत होतेहैं (प्रभवन्तियतोलोकाः प्रलयंयान्तियेनच। संसारवर्त्मविवृतंकःपिधातुंतदीश्वरः) जिससे संपूर्ण लोग उत्पन्न होते हैं और जिसके द्वारा नाशकोप्राप्तहोतेहैं उसखुलेहुएसंसारके मार्गको कौन ढकसक्ताहै यह शोचकर उसेयहभयहुआ कि घाव तो नहीं अच्छाहुआ अबमुझको यहीं बन्धनमें पड़नापड़ेगा इसभयसे वहमूर्ख पिशाच वहांसे भागगया इसप्रकारसे उसमूर्खपिशाचको छलकरके ब्राह्मणकी पुत्रीने अपने पिताकी रक्षाकरी और ब्राह्मण भी पिशाचके चलेजाने पर नीरोगहोकर सुखपूर्वक रहनेलगा १८४ इसप्रकारके पिशाच और पिशाचोंकेतुल्य नवयुवक राजपुत्र होतेहैं वह सिद्धहोकर भी अनर्थही करतेहैं परबुद्धिमान् लोग उनसेभी अपनी रक्षा करते हैं परन्तु हेसखी कुलीन राजपुत्री तो तुमने ऐसी कभी न देखी होंगी और न सुनीहोंगी इससे तुम मेरी मित्रतामें कभी सन्देह मतकरो इसप्रकार कलिंगसेनासे हास्यकारी इस विचित्र कथाको सुनकर सोमप्रभा प्रसन्नहोकर बोली कि यहां से साठयोजन मेरा घरहै दिनथोड़ाही रहगयाहै और मुझे आये

बहुत देरहोचुकी इससे मैं जातीहूं तब सूर्य्य के अस्तहोनेपर फिर अनेक नियम कराने वाली कलिंग-सेनासेपूछकर सोमप्रभा आकाशमें उड़कर अपने स्थानको चली गई इसआश्चर्य्यको देखकर कलिंग-सेना अपने चित्तमें अनेक प्रकारके तर्क वितर्ककरके शोचने लगी कि क्या यह मेरीसखी सिद्धाङ्गना है अथवा अप्सराहै या विद्याधरीहै आकाशमार्गमें उड़नेसे इसके दिव्य स्त्री होनेमें तो कुछ संदेहनहीं है और दिव्यस्त्रियां भी स्नेहके वशीभूत होकर मानुषी स्त्रियों से संगत करती हैं देखो अरुन्धती ने राजापृथुकी कन्यासे स्नेहकियाथा उन्हीं की प्रीतिसे पृथुस्वर्ग से सुरभीगऊको लायेथे उसके दूधको पी-कर राजापृथु भ्रष्टहोकर भी स्वर्ग को गये और तभीसे इसपृथ्वीमें अनेक गौउत्पन्नहुईं मैंधन्यहूं क्योंकि किसीपुण्यके उदयसेयह दिव्यसखी मुझको मिलीहै प्रातःकाल जबवह आवेगी तबउससेनाम और वंश अवश्यपूछूंगी इसप्रकार अपने हृदयमें विचारतीहुई कलिंगसेनाने वहरात्रि व्यतीतकरी और सोमप्रभा ने भी अपने स्थानमें जाके कलिंगसेना के फिर दर्शनों की उत्कण्ठा से वहरात्रि व्यतीत करी—१६३॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांमदनमंचुकालम्बकेद्वितीयस्तरंगः २॥

इसके उपरान्त प्रातःकाल सोमप्रभा कलिंगसेनाको प्रसन्नकरनेके लिये एकपिटारीमें काष्ठमयअनेक मायाके यन्त्रों की पुतली रखकर उसपिटारीको लेकर आकाशमार्ग से फिर कलिंगसेनाके पास आई कलिंगसेना भीउसे देखतेही आनन्दके अश्रुओं को बहातीहुई उठकर उसके कंठमें लिपटगई और उसे अपने पास बैठाकरबोली कि हे सखी तुम्हारे मुखरूपी पूर्णचन्द्रके दर्शनके विना आज अन्धकार मय यह चारप्रहर रात्रि सैकड़ों प्रहरके समान होगई इससे तुम्हारे साथ मेरा पूर्व्व जन्मका कैसा सम्बन्ध है जिसका कि यहपरिणामहुआहै जो तुम जानतीहो तो कहो यहसुनकर सोमप्रभाबोली कि हेसखी मुझे ऐसा विज्ञान नहीं है मुझे तो अपनेही पूर्वजन्मकाभी स्मरणनहीं है इसविषयको तो मुनिलोगभी नहीं जानतेहैं और जो कोई २ जानतेहैं उन्होंने पूर्व जन्ममें कोई अत्यन्तउत्तमकर्म किये हैं और वह परतत्त्व कोभी जानते हैं उसके यहवचन सुनकर कलिङ्गसेना एकान्तमें प्रेमपूर्व्वक उससे बोली कि हेसखी तुमने देवताओंकी किसजातिमेंसे अपने पिताके वंशको अपने जन्मसे सुवृत्त(गोल और अच्छे आचरणवाली) मोतीकेसमान सुशोभित कियाहै और संसारमें मनुष्योंके कानोंकासुखदाई तुम्हारानाम क्या है और यह पिटारी तुम किसलिये लाईहो और इसमें क्या है कलिंगसेनाके इन प्रेमपूर्ण वचनोंको सुनकर सोमप्रभा क्रमसे सबबातोंका उत्तर कहनेलगी कि तीनोंलोकों में मयनामदैत्य विख्यातहै जो अपने आसुरीभावको छोड़कर श्रीकृष्ण भगवान्की शरणमेंगया फिर श्रीकृष्णजी से अभयपाकर उसने इन्द्रकी सभाबनाई तब दैत्योंने उसेदेवताओं का पक्षीजानकर उसपर अत्यन्त क्रोधकिया उनकेभयसे उसनेविन्ध्याचलके भीतर अनेकप्रकारके आश्चर्य्यों से युक्त एकमन्दिर अपने निवासकेलिये मायाके छिद्रों से युक्तकरकेबनाया उसमें दैत्यलोगनहीं जासक्ते हैं उस मयदैत्यकी दोकन्याहैं बड़ी स्वयंप्रभानाम कन्या ब्रह्मचारिणी है इससे वह कुमारी ही अपने पिताके गृहमें रहती है और छोटी सोमप्रभानाम में हूं पिताने कुबेरके पुत्र नलकूबर के साथ मेराविवाह करदियाहै और मुझे अनेक प्रकारके मायाके यन्त्र सिखाये हैं उन्हीं यन्त्रों से भरी

हुई यह पिटारी में स्नेहसे तुम्हारे पासलाई हूं १७ यह कहकर सोमप्रभाने काष्ठसे बनीहुई माया के यन्त्रो की पुतलियां उसे दिखाईं कीलके दवाने से ही कोई पुतली आकाशमें जाकर सोमप्रभाकी आज्ञासे पुष्पो की माल लेआई कोईपानी लेआई कोई नाचनेलगी और कोई बातचीत करनेलगी इत्यादिक आश्चर्य्यों से कुछ कालतक कलिंगसेनाको प्रसन्न करके सोमप्रभाने यन्त्रोंकी पिटारी बन्दकरके छिपाकर रखदीनी और कलिंगसेनासे पूछकर आकाशमार्गसे अपने स्थानको चलीगई कलिंगसेनाको उनआश्चर्य्यकारी यन्त्रोंके देखनेसे ऐसी प्रसन्नताहुई कि उसदिन उसने खुशीकेमारे भोजनभी नहींकिया तबउसकी माता ने रोगकेभयसे आनन्दनाम वैद्यको बुलाकर उसेदिखाया तो वैद्यने उसेदेखकरकहा कि इसके प्रफुल्लित नेत्र और मानो हँसतेहुए मुखसे मालूमहोताहै कि किसीकारणसे इसको बड़ा हर्षहुआहै इसीसे इसको भूखनहीं लगी है इसेकोई रोगनहीं है वैद्यके यहवचनसुनकर रानीके पूछनेपर कलिंगसेनाने वह संपूर्ण वृत्तान्त कहदिया उसे श्रेष्ठसखीके मिलने से अपनी कन्याको प्रसन्न जानकर रानीने बड़ी प्रशंसाकरके उसको उचित भोजन करवाया २७ इसके उपरान्त दूसरेदिन आकर एकान्तमें सोमप्रभाने कलिगसेना से कहा कि मैंने अपने ज्ञानीपतिसे तुम्हारी मित्रताका वृत्तान्त कहदियाहै और उससे तुम्हारेपास नित्य आनेकी आज्ञा लेलीनीहै इससे तुमभी अपने मातापितासे यहवृत्तान्त कहकर उनकी आज्ञालेलो तो हम तुम दोनों स्वच्छन्दहोकर निस्सन्देह विहारकरें सोमप्रभाके यहवचनसुनकर कलिंगसेना उसका हाथपकड़कर अपने मातापिताके पासलेगई औरउनसे जाकरबोली कि यही मेरीसखी सोमप्रभाहै उसे देखकर वह दोनों बहुत प्रसन्नहोकर बोले कि हे वत्से इस कलिंगसेनाको हमने तुम्हारे हाथसौंपाहै इसेलेकर तुम स्वच्छन्दहोकर क्रीड़ाकरो उनके यहवचनसुनकर कलिंगसेना और सोमप्रभा दोनों उसयन्त्रकी पिटारी को लेकर राजाके बनवायेहुए बुद्धके मंदिरमें क्रीड़ाकरनेको गईं वहाँ जाकर सोमप्रभाने एकयन्त्रके यक्षको बुद्धके पूजनकेलिये भेजा उसयक्षने आकाशमार्गसे बहुत दूरजाकर उत्तम मोती मणितथा सुवर्णके कमललाकर बुद्धका पूजनकिया और उनमणियोंसे संपूर्ण मन्दिर देदीप्यमानहोगया यहवृत्तान्त राजा कलिंगदत्तने भी सुना और रानी समेत वहाँ आकरदेखा उसविचित्र चमत्कारको देखकर राजाने सोमप्रभासे पूछा कि यहक्या बातहै तबसोमप्रभा बोली कि हे राजा यह अनेक प्रकारके माया यन्त्रादिक शिल्प (कारीगरी) पूर्व्व समयमें मेरेपिताने बनाये थे जैसे यहसंपूर्ण संसाररूपी यन्त्र पंचभूतात्मकहै इसीप्रकार यहसब यंत्रभी पंचभूतात्मकहैं सुनिये मैं आपको अलग २ बतातीहूं जिसयन्त्रमें पृथ्वी तत्त्व प्रधानहै वहद्वारआदि बन्दकरताहै और उसकेबन्दकियेहुए द्वारआदिको कोईभीनहीं खोलसक्ताहै जिस यन्त्रमें जलतत्त्व प्रधानहै वहसजीवसा मालूमहोताहै जिसयन्त्रमे अग्नितत्त्वप्रधानहै उसमेंसे ज्वाला निकलतीहैं जिसमें वायुप्रधानहै वहगमनागमन आदिकचेष्टा करताहै और जिसमेंआकाशतत्त्व प्रधानहै वहबोलता चालताहै मैंने यहसम्पूर्ण यन्त्र अपने पितासेपाये हैं परन्तु जोअमृत का रक्षकचक्रयन्त्रहै उसे मेरे पिताही जानते हैं और कोई नहीं जानता ४७ उसके इसप्रकार कहतेही कहते मानो उस के वचनपर श्रद्धा करतेहुए मध्याह्न समय के सूचक शंखबजनेलगे तब सोमप्रभाने राजा कलिंगदत्त से

कलिंगसेनाको अपने घरलेजानेके लिये आज्ञामांगी और कहा कि मैं इसको वहां इसके योग्यही भोजनदूंगी राजाने उसके वचनसुनकर कलिंगसेना के लेजानेकी आज्ञादेदी तब सोमप्रभा कलिंगसेना को यन्त्रसेबनेहुए विमानपर चढ़ाके आकाशमार्ग से अपनी बड़ी बहिनके घरकोचली और क्षणभरमें विन्ध्याचल पर्व्वतपर मयासुरके मन्दिरमें स्वयंप्रभाके निकट पहुँची वहां कलिंगसेनाने लम्बी २ जटा जिसके लटकरही हैं लंबी मालाधारण किये श्वेत वस्त्रपहने हँसतीहुई उग्रतपको करनेवाली पार्वतीजी के समान जिसकी आकृतिहै ऐसी ब्रह्मचारिणी स्वयंप्रभाको देखा स्वयंप्रभाने भी सोमप्रभाके कहनेसे प्रणाम करतीहुई कलिंगसेनाको अतिथिसत्कारकरके फलभोजनकरनेकेलिये दिये उससमय सोमप्रभा ने कलिंगसेनासे कहा कि हे सखीपद्मोके नाशकरनेवाले पालेके समान तुम्हारे स्वरूपकी नाशकर नेवाली वृद्धावस्था इनफलोंके खाने से तुमको नहींआवेगी इसीलिये तुमको मैं स्नेहसे यहां लाईथी उस के यहवचन सुनकर कलिंगसेनाने वह फलखाये और उसीसमय उसके सम्पूर्ण अंगों मे मानों अमृत सा सिंचगया वहां कौतुकसे भ्रमण करतीहुई कलिंगसेनाने उस नगरका उपवनदेखा उसकी बावड़ियोंमें सुवर्णके कमल खिलरहेथे वहांके वृक्षोमें अमृतकेसमान स्वादिष्टफल लटकरहेथे उनपर अनेक २ प्रकारके सुवर्णमय पक्षी बैठेथे दूरसे उनवृक्षोके देखनेसे मणिमय खंभोंकी भ्रान्तिहोतीथी और शून्यस्थानमें दीवारकीभ्रान्ति होतीथी और जहांदीवारबनीथी वहांशून्यकी भ्रान्तिहोतीथी जलमेंस्थलकी और स्थलमें जलकी भ्रान्तिहोतीथी वह उपवनक्याथा मानों मयासुरने अपनीमायासे कोई अपूर्व्वलोक बनायाथा पूर्व्वसमयमें सीताको ढूंढ़नेको जबवानरलोग उसमें चलेगयेथे तबवह बहुतदिनोंतक उसीमें पड़े २ स्वयंप्रभाकी कृपासे बाहरनिकले इसप्रकारके आश्चर्य्यदायी उसउपवन और पुरको अच्छेप्रकार से देखकर और स्वयंप्रभासे आज्ञालेकर वृद्धावस्थाके भयसेरहित कलिंग सेना सोमप्रभाके साथ उसी विमानपर चढ़के आकाशमार्गसे अपनेस्थानको आई और वहांआकर अपने मातापितासे वहांकासंपूर्ण वृत्तान्तकहा वहभीसुनकर बहुतप्रसन्नहुये ६४ इसप्रकार उनदोनों सखियों के कुछदिन स्नेहपूर्वक व्यतीतहोनेपर एकदिन सोमप्रभा कलिंगसेनासे बोली कि हेसखी जबतक तुम्हारा विवाह नहींहुआ है तभीतक मेरीमित्रताहै पीछे तुम्हारेपतिकेयहां मैं कैसेआसकूंगी क्योंकि अपनीसखीके पतिको न देखना उचितहै और न उसकेयहां जानाउचित है (अवेर्वृकीवस्तुपायाः स्वश्रूर्मांसानिखादति) जैसे भेड़ीके मांसको भेड़ियेकी भिड़नीखाती है उसीप्रकार वधूकेमांसको दुष्टसासखातीहै इससे औरभी तुम्हारे यहां मेराआना उचित न होगा इस विषयमें तुमको मैं एककथा सुनातीहूं पाटलिपुत्रनाम पुरमें धनपालित नाम एक बड़ाधनी बणियारहता था उसके कीर्त्तिसेनानाम अत्यन्तरूपवती प्राणोंसे भी अधिकप्यारी कन्याथी उसने उसकन्याका विवाह मगधदेशकेनिवासी देवसेननाम महाधनवान् बणियेकेसाथ किया उस सज्जनदेवसेनके यहां उसकी दुष्टमाता गृहकी स्वामिनीथी क्योंकि उसका पिता मरगयाथा वह अपनी वधूकीर्त्तिसेनाको अपनेपुत्रको प्यारीदेखकर क्रोधसे अत्यन्त जाज्वल्यहोतीथी और पुत्रकेपरोक्षमें उसे बहुतत्रास दियाकरतीथी परन्तुकीर्त्तिसेना अपनेपतिसे कुछभी नहींकहतीथी ठीक है (कष्टा-

हिकुटिलःश्वश्रू परतन्त्रवधूस्थितिः) कुटिलसासों के आधीन होकर सज्जन वधुओं का रहना बड़ा कष्ट-दायकहै एकसमय देवसेनवाणिज्यकेलिये बन्धुओंके कहनेसे वलभीपुरीके जानेकोउद्यतहुआ तबकीर्त्ति-सेनाउससेबोली कि हेआर्य्यपुत्र अबतकमैंने तुमसे कुछनहीं कहाथा परन्तु अबकहनापड़ता है तुम्हारी यहमाता मुझे तुम्हारे होनेपरभी अत्यन्त त्रासदेतीहै और तुम्हारे चलेजानेपर न जानिये क्याकरेगी सो मैं नहीं जानतीहूं यहसुनकर उसकेस्नेहसे घबराकर देवसेन डरताहुआ अपनीमाताके पासप्रणाम करके बोला किहे अम्ब मैं इसकीर्त्तिसेनाको तुम्हेंसौंपे जाताहूं इस्सेतुम्हें कठोरताकरनी नहीं उचितहै क्योंकि यहसत्कुलमें उत्पन्नहुई इससे इसका सरलस्वभाव है यहसुनकर उसकी माता कीर्त्तिसेनाको बुलाकर त्यौरीबदलकर देवसेनसेबोली कि इससे पूछो तो मैंने क्याकियाहै यहघरमे भेदडालने के लिये तुमको बहकाती है हेपुत्रमुझे तो तुमदोनो समानहीहो यहसुनकर देवसेनका चित्तसावधान होगया ठीकहै (व्याजसप्रणयैर्वाक्यै र्जनन्याकोनवंच्यते) अपनी माताके कपटभरे प्रेमके वचनोमे कौननहीं फँसता है ८२ कीर्त्तिसेनाभी उसके भयसे चकित होकर चुपखड़ीरही उसके दूसरेदिन देवसेन तो वलभीपुरीको चला गया और पतिके क्लेशसेव्याकुल उस कीर्त्तिसेनाके पास जोदासी नौकरथीं वहसब उसकी सास ने धीरे २ छुड़ादीं और एकदिन उसने अपनीदासीसे सलाहकरके कलिंगसेना को भीतर बुला कर नंगीकरके लातों से दांतोंसे और नखों से बड़ी ताड़नाकरी कौर कहा कि हेदुष्टे तूमेरे पुत्रको भड़काती है फिरएकतहखानेमें से सब असवाव निकलवाकर उसखाली तहखाने में उसेबन्दकरके जंजीर लगादी और प्रतिदिन सायंकालके समय वह पापिनी उसको आधासकोराभर भातदेने लगी तदनन्तर उस ने शोचा कि इससमय इसका पतितो बहुत दूरहै जो यहइसीमें पड़े २ मरजाय तो इसको फिकवाकर लोगोंसे कहदूगी कि वह निकलगई इसप्रकार पापिनी साससे तहखानेमें डाली गई सुखके योग्य कीर्त्तिसेना रोदनकरके शोचने लगी कि धनवान् पति सत्कुलमें जन्म सौभाग्य और अच्छे आचरण इनसब सुलक्षणों के होनेपरभी सासकी कृपा से मुझे यह विपत्ति भोगनी पड़ी है इसीसे बांधव लोग कन्याके जन्म की निन्दा करतेहैं सास औरननदोके आधीनहोकर कन्याओंको अनेक प्रकारके दुःख भोगने पड़तेहैं इसप्रकार शोचतीहुई कीर्त्तिसेनाको अकस्मात् उसी तहखाने में एककुदाली मिलगई वह कुदाली क्याथी मानों ब्रह्माने उसके चित्तसे दुःख रूपीशल्य निकालकर बाहरडाल दियाथा उसी कुदाली से उसने सुरंग खोदी वह सुरंग भाग्यवश से उसीके निवासस्थान में जा निकली वहां उसके पूर्व जन्म के पुण्यके समान दीपक का प्रकाश होरहाथा उस समय थोड़ीहीसी रात्रिबाकी रही थी इस्से कीर्त्तिसेना थोड़ेसे वस्त्र और सुवर्ण वहांसे लेकर छिपकर नगरके बाहर चलीगई वहांजाके उसने शोचा कि इसप्रकारसे मुझे अपने पिताके यहांजाना तो उचित नहीं है क्योंकि वहांजाकरमैंक्याकहूंगी और लोग मुझपर कैसे विश्वासकरेगे इस्सेअपनी युक्तिपूर्व्वक मुझको अपने पतिकेही पासजानाउचितहै क्योंकि (इहामुत्रचसाध्वीनांपतिरेकागतिर्यतः) साध्वीस्त्रियों को इसलोक और परलोकमें पतिके सिवाय और कोई गतिनहींहै यह शोचकर उसने तड़ाग मे स्नानकरके अपना भेपराजपुत्र का बनाया और बाजा-

रमें जाकर कुछ सुवर्ण वेचके उसदिन किसी वणियेके यहां निवास किया १०७ दूसरेदिन वलभीपुरी को जाने की इच्छा करते हुए समुद्रसेन वणिये के साथ परिचय करके उसी के साथ राजपुत्र का भेषवना कर वलभीपुरी को चली और उस वैश्य से उसने कहा कि मुझे गोत्री भाइयों ने यहां क्लेश दिया है इस्से मैं तुम्हारे साथ वलभीपुरी में अपने सुजन से मिलने को चलता हूं यह सुनकर उस वैश्य ने उसे राजपुत्र जानकर गौरवसे मार्ग में उसकी वड़ी सेवा करनेलगा कुछदूर चलकर वह वणिया अपने साथियों समेत साधारण मार्ग को छोड़कर वनके मार्ग की ओर चला क्योंकि साधारण मार्ग में वहुत माकर पड़ताथा कुछ दिनोंके उपरान्त वनके द्वारपर पहुंचकर जव सम्पूर्ण लोग वहां सायंकालके समय टिके उससमय यमराजकी दूती के समान शृगालीने भयंकर शव्द किया उस शव्दको सुनकर उसके जाननेवाले वैश्यलोग अपने२ शस्त्रोंको लेकर सवओरसे अपने सम्पूर्णपदार्थों को घेरकर सावधानी से वैठे उससमय चोरों की आगे चलनेवाली सेना के समान सव ओर से अन्धकार के आजानेपर पुरुष वेपधारी कीर्त्तिसेना शोचनेलगी कि पापियों का कर्म्म वंश के समान वढ़ताही जाताहै देखो मेरीसास के कर्म्मों का फल मुझे यहां भी मिला पहले मृत्युके समान सास के कोपने मुझे भक्षणकिया तव मैं द्वितीय गर्भवास के समान तहखाने में डालीगई भाग्यवश से उससे भी निकलकर मानों दूसरीवार जन्मलेकर धीरे२ यहां आई अव यहां आकर भी मुझे प्राणों का सन्देह होरहा है जो चोर मुझे यहां मारडालेंगे तो वह वैरिणी सास मेरेपतिसे कहैगी कि वह किसी के साथ भागगई और जो वस्त्रों के खुलजाने से मुझे कोई पुरुष स्त्री जानजायगा तो मुझे मृत्यु अच्छी है परन्तु अपने आचार का भ्रष्ट करना उचित नहीं है इस्सेमुझे अपनी रक्षा करनीचाहिये इसमित्र वणिये की अपेक्षा नहीं करनी चाहिये क्योंकि मित्रादिकों को छोड़कर स्त्रियो को अपने सतीधर्म्म की रक्षाकरनीहीं योग्य है यह निश्चयकरके उसने ढूँढ़कर वृक्षों के वीच में एकघर के समान वनाहुआ गढा देखा मानों पृथ्वी ने रहने के लिये उसेस्थानदियाथा उसने उसके भीतर जाकर और तृण तथा पत्ते आदिकों से अपने शरीरको ढककर पति के मिलने की आशा से चित्तको सावधान करके वहीं स्थिति करी इसके उपरान्त अर्द्ध रात्रिके समय शस्त्रधारणकिये हुए वहुत से चोरों की सेनाने आकर सम्पूर्ण साथियों समेत समुद्रदत्त को घेरलिया उससमय चोररूपी मेघगर्जनेलगे शस्त्रों की ज्वालारूपी विजली चमकनेलगी और रुधिररूपी जल वरसने लगा इसप्रकार उसयुद्धरूपी वर्षा में साथियों समेत समुद्रसेन को मारकर वह वलवान् चोर सम्पूर्ण धन को लेकर चलेगये उससमय चोरों के कोलाहल को सुनकर भी जो कीर्त्तिसेना के प्राणनहीं निकले इसमें केवल भाग्यही कारण है १२० तदनन्तर रात्रि के व्यतीत होजानेपर और सूर्य्य भगवान् के उदित होजाने पर वह कीर्त्तिसेना उस गढ़े से वाहर निकली निस्सन्देह अपने व्रत को नहीं भंगकरनेवाली पतिव्रतास्त्रियों को आपत्ति में देवतालोग आपही आकर वचाते हैं क्योंकि उस निर्ज्जनवन में सिंह ने उसे देखकर भी छोड़दिया और किसी ओर से किसी तपस्वी ने आकर सम्पूर्ण वृत्तान्त पूछकर अपने कमण्डल से जल पिलाकर उसे सावधान किया और मार्ग भी वता-

या उस फिर तपस्वी के अन्तर्द्धान होजानेपर मानों अमृतसे तृप्तहुई क्षुधा और तृषासेरहित वह कीर्त्ति-सेना तपस्वी के बतायेहुए मार्ग्ग से चली कुछदूर चलकर श्री सूर्य्य भगवान् को अस्त होते जानकर और किरणरूपी हाथोंको फैलाकर पक्षियोंके शब्दोंसे मानों एकरात्रि यहां ठहरजाओ ऐसा कहनेपर कीर्त्तिसेना किसी बड़े वृक्षकी जड़के गृहके समान खोलमें चलीगई और उसका द्वार किसी दूसरे काष्ठ से बन्दकरलिया सायंकालके समय उसने छिद्रोंमें से देखा कि एकबड़ी भयंकर राक्षसी अपने बालकों को लिये चलीआती है उसे देखकर इसको यह भयहुआ कि अन्य विपत्तियोंसे तो मैं बचआईहूं परन्तु यह राक्षसी आजमुझेखाडालेगी उसराक्षसी को तो यहवृत्तान्त विदितही न था इस हेतुसे वह अपने बालकों समेत वृक्षपरचढगई उससमय उसके बालकों ने अपनी माताराक्षसीसे कहा कि हे माता कुछ भोजन दो तब वह बोली कि आजमुझे श्मशानमें भी जाकरकुछ भोजन नहींमिला और डाकिनियों से भी मैंने मांगा परन्तु उन्होंने भी मुझेभाग नहींदिया इसी खेदसे मैंने भैरवनाथजी से प्रार्थनाकी तब वह मुझसे नाम तथा वंशको पूछकर बोले कि भयंकरी तू खरदूषणके वंशमें उत्पन्नहोने के कारण बड़ी कुलीनहै इससे यहाँसे थोड़ीदूर पर वसुदत्तपुर नाम नगरमें तूजा वहाँ वसुदत्तनाम बड़ा धर्मवान् राजा है वही इससंपूर्ण वनकी रक्षाकरता है और पथिकोंसे थोड़ासा कर लेकर चोरोंसे उनकी रक्षा करता है एकसमय वह राजा वनमें शिकार खेलनेके लिये आया और शिकार खेलकर थकके यहीं सोगया उससमय एक खनखजूरा उसके कानमें चलागया परन्तु उसे नहीं मालूमहुआ और कानके भीतर जाकर उसखनखजूरे ने बहुतसे बच्चेदिये हैं इसरोगसे राजावसुदत्त अत्यन्त दुर्बल होगया है वैद्यलोग उसके इस रोगको नहीं जानसके हैं जो दूसरा भी कोई न जानेगा तो कुछकालमें राजाकी मृत्युहो-जायगी राजाके मरजानेपर उसका मांस तुम अपनी मायासे हरकरखाना उसके खानेसे छःमहीनेतक तुम्हारी तृप्तिहोगी १२६ इसप्रकारसे भैरवजीने मुझसे यहसंदिग्ध वचन कहेहैं इससे हे बालको मैं क्या करूं उसराक्षसीके यह वचनसुनकर वह बोले कि हे माता जो इसरोगको जानकर कोई दूसरा पुरुष अच्छा करदे तो वह राजा जी सक्ताहै और जो जीसक्ताहै तो यहरोग किसप्रकारसे जा सक्ताहै अपने पुत्रोंके यह वचन सुनकर वह राक्षसी बोली कि इसरोगके दूर होजानेपर वहराजा अवश्य जी सक्ताहै मैं तुम्हें इसरोगके दूरहोने का उपायबताती हूं पहले राजाके शिर मे गर्मघृतलगाकर उसे मध्याह्न की अ-त्यन्त कड़ीधूपमें बैठावे फिरउसके कानमें एकबांसकी नली जिसमें बराबर छिद्रहोय लगादे और उस नलीको दूसरी ओरसे शीतलजलसे भरेहुए घड़ेपर छेददार सकोराबन्द करके उसछिद्र मे लगादे इस उपायसे स्वेद तथा धूपसे व्याकुलहोकर सम्पूर्ण खनखजूरे शिरसे निकलकर कानकेद्वारा नलीमेंहोकर शीतलताके लोभसे घड़ेमें गिरपड़ेंगे इसउपायसे राजा बड़ेरोगसे छूटजायगा इसप्रकार अपने पुत्रों से कहतीहुई उसराक्षसीसे इस संपूर्ण वृत्तान्तको सुनकर खोखले में खड़ीहुई कीर्त्तिसेना शोचनेलगी कि जो मैं यहांसे बचजाऊंगी तो इसी युक्तिसे राजा वसुदत्तको नीरोगकरूंगी यही राजाथोड़ासा करलेकर इसवनकी रक्षाकरता है इसीलोभसे सम्पूर्ण वणिये इसमार्ग से आते हैं यहबात समुद्रदत्तने भी मुझसे

कही थी इस्से मेरापतिभी इसी मार्ग से आवेगा तो मैं इसवनसे वसुदत्तपुर में जाकर राजाको नीरोग करके वहीं अपने पतिके आनेकी प्रतीक्षाकरूंगी इसप्रकार विचारतीहुई कीर्त्तिसेना बड़ेखेदसे उसरात्रि को व्यतीत करके प्रातःकाल राक्षसों के चलेजानेपर उसखोलमें से निकली और धीरे २ वहां से चली कुछदूरचलकर मध्याह्नके समय एक साधूगोपाल उसेमिला उसके पासजाकर कीर्त्तिसेना ने पूछा कि यह कौनसा प्रदेशहै यह सुनकर उसकी सुकुमारता और मार्ग गमनके क्लेशको देखकर वह गोपाल दयापूर्व्वक बोला कि देखो यह सन्मुख वसुदत्तनाम राजाका वसुदत्तपुर नामनगर है यह महात्माराजा रोगसे दो एकदिन में मरने चाहताहै यह सुनकर कीर्त्तिसेना उस्से बोली कि जो मुझे उसके पासकोई लेचले तो मैं उसके रोगको दूरकरदूंगा तव वह गोपाल बोला कि मैं इसीपुरमें जाताहूं तुम मेरे साथ चलो मैं तुम्हें राजाकेपास पहुँचानेका उद्योग करूंगा उसके वचनोंको स्वीकार करके कीर्त्तिसेना उसीके साथ वसुदत्तपुरको गई वहां जाकर उसगोपालने राजाके रोगको देखकर किसीदुखित प्रतीहारसे कहा कि यह वैद्यराजाके रोगको दूरकरनेको कहताहै यह सुनकर प्रतीहार राजासे विज्ञापनाकरके और आज्ञा लेकर कीर्त्तिसेनाको उसके पासलेगया रोगसे पीड़ित राजाभी उसके अद्भुत स्वरूपको देखतेही साव-धानहोगया ठीकहै (वेत्यात्मैवहिताहितम्) आत्माही हिताहित को पहचानताहै और बोला कि हेसु-लक्षण जोतुम मेरे इसरोगको दूरकरदोगे तो मैं तुम्हें अपना आधा राज्यदेदूंगा मैंने स्वप्नमें देखा था कि किसी स्त्री ने मेरीपीठपरसे काला कम्बल उतारलिया है इस्से मुझे निश्चय होताहै कि आप मेरे इस रोगको अवश्यदूर करियेगा राजाके यहवचन सुनकर कीर्त्तिसेना बोली कि हे महाराज आजतो दिन व्यतीतहोगयाहै कलमैं आपकेरोगको दूरकरदूंगा आपअपने धैर्य्यको न छोड़ियेगा यह कहकर उसने राजाके शिरपर गौका घृतमलवाया उस्से राजाकी पीड़ाकमहोगई और निद्राआगई तव सम्पूर्ण लोग कीर्त्तिसेनाकी बड़ाईकरके बोले कि यहकोई देवता हमलोगोंके पुण्यसे वैद्यकारूप धारणकरके आयाहै रानीनेभी राजाकेयोग्य सम्पूर्ण उत्तम२ सामग्रियोंसे उसका सेवनकरके रात्रिकेसमय दासियोंसमेत एक बड़ासुन्दर स्थान उसके शयनकरनेकोदिया १६६ इसकेउपरान्त दूसरेदिन मध्याह्नकेसमय सम्पूर्ण मंत्री और रानियोंके सन्मुख कीर्त्तिसेनाने राक्षसीकीवताई उस अपूर्व्वयुक्तिकेद्वारा राजाकेशिरसे डेढ़सौ खन-खजूरे कानकेमार्गसे निकाले उनखनखजूरोको घड़ेमेंरखकर दूध और घी आदि पुष्टपदार्थोंसे राजाकोतृप्त किया क्रमसेरोगके निवृत्तहोजानेपर राजा सावधानहोगया और घड़े में उनखनखजूरोंको देखकर संपूर्ण लोगोंको बड़ाआश्चर्यहुआराजानेभी उनकीड़ोंको देखकर भय तथा आनंदसे युक्तहोकर अपनापुनर्जन्म माना और स्नानकरनेकेपश्चात् उत्सवकरके कीर्त्तिसेनाको अपना आधाराज्य देनेका प्रस्तावकिया जव कीर्त्तिसेनाने आधाराज्य नहीं स्वीकारकिया तव गांव हाथी घोड़े तथा सुवर्ण देकर उसेप्रसन्नकिया सं-पूर्ण रानी तथा मंत्रियोंनेभीकहा कि इसने हमारे स्वामीके प्राणोंकीरक्षाकीहै इस्सेयहहमारा पूज्यहै और वहुतसे वस्त्र तथा सुवर्णके आभूषणउसेदिये कीर्त्तिसेना उनसंपूर्ण पदार्थोंको राजाके हाथमें सौंपकर और मैं यहां कुछदिन रहूंगा यहकहकर अपने पतिकी वाटदेखती हुई वहीं रहनेलगी इसके उपरान्त संपूर्ण

लोगोंसे आदरकीगई उसकीर्त्तिसेनाने पुरुष वेपसे वहां कुछदिन रहकर अपने पतिदेवसेनको वलभीसे वहां आयाहुआसुना और जिसवैश्य पथिक समाजमें उसका पतिथा उसे उसनगरी में आयाहुआ जानके नवीन मेघको मयूरीके समान उसने अपने पतिको वैश्यसमूहमें जाकरदेखा वहुतकाल उत्कण्ठा से व्याकुल चित्तसे आनन्दके आंसुओंका अर्घदेतीहुई कीर्त्तिसेनापतिके पैरोंपरगिरपड़ी वहभी दिनमें सूर्य्यकी किरणोंसे अलक्षित चन्द्रमाकी मूर्त्तिके समान पुरुषवेषमें छिपीहुई अपनी प्रियाको पहचानगया और उसके मुखरूपी चन्द्रमाको देखकर चन्द्रकान्त (चन्द्रमाके समान सुन्दर और चन्द्रकान्तमणि) उसे देवसेनका हृदय जोनहीं गलितहुआ यह वड़ा आश्चर्य्यहै तदनन्तर कीर्त्तिसेनाको अपने स्वरूप के प्रकट करनेपर देवसेनको वड़ा आश्चर्य्यहुआ कि यहक्यावातहै और उसके साथके संपूर्ण वणियों कोभी वड़ा आश्चर्य्य हुआ उससमय इसवृत्तान्त को सुनकर राजावसुदत्तभी वहां आश्चर्य्य पूर्व्वक आया और उसने कीर्त्तिसेनासे पूछा कि यह क्यावातहै तव उसने अपनी सासके दुराचारसेहुए अपने संपूर्ण वृत्तान्तका वर्णनकिया वहसव वृत्तान्त सुनकर उसका पति देवसेन अपनी मातासे विमुखहोगया और उसेक्रोधक्षमा आश्चर्य्य तथा हर्ष एकसाथहीहुए १८७ कीर्त्तिसेनाके इसअद्भुत चरित्रको सुनकर सम्पूर्ण लोग आनन्दपूर्व्वक कहतेथे कि पतिकी भक्तिरूपी रथपरचढ़कर शीलरूपी कवचको धारणकर और धर्मरूपी सारथीको साथले साध्वीपतिव्रतास्त्री बुद्धिरूपी शस्त्रसे विजयको प्राप्तहोती हैं राजाने भी कहा कि पतिके निमित्त इतनाक्लेशसहकर इसने श्रीरामचन्द्रके निमित्त क्लेशसहनेवाली सीतादेवीको भी जीतलिया इस्से प्राणोंकी रक्षाकरनेवाली यहमेरीधर्मकी वहनहै इसप्रकार प्रशंसाकरतेहुए राजासे कीर्त्तिसेनावोली कि हेमहाराज जो आपके दियेहुए ग्राम हाथी घोड़े तथा रत्नादिक पदार्थ मैंने आपको सौंपदिये थे वह मेरेपतिको देदीजिये उसके यह वचनसुनकर राजाने ग्रामादिक सम्पूर्ण पदार्थ देवसेनको देदिये और प्रसन्नहोके उसको पक्का लेखभी लिखदिया इसप्रकार राजाके दियेहुये और वाणिज्यमें उत्पन्नकियेहुए धनसे देवसेन वड़ा ऐश्वर्य्यवान् होकर अपनी माताको त्यागकरके कीर्त्तिसेनाकी प्रशंसा करताहुआ उसी वसुदत्तपुरमें रहनेलगा और कीर्त्तिसेनाभी अपने चरित्रके प्रभावसे वड़ेयशको पाकर और उसपापिनी सासको छोड़कर संपूर्ण ऐश्वर्य्यको सुखपूर्व्वकभोगतीहुई अपनेपतिकेपास मूर्त्तिमती पुण्योंके फलकी समृद्धिकेसमान रहनेलगी इसप्रकार दुर्दैवके योगसे दुःखको सहकरविपत्तिमेंभी अपने चरित्रकी रक्षाकरतीहुई साध्वीस्त्रियां अपने वड़े सत्वके प्रभावसे अपनी रक्षाकरके अपना और पतिका भी कल्याण करती हैं हेसखी वहुओंको प्रायः सास और नन्दोंकेद्वारा इसीप्रकारके दुःखभोगने पड़ते हैं इस्से मैं तुम्हारे लिये ऐसी सुसराल चाहती हूं जहां दुष्टसास और नन्द न होय सोमप्रभासे इसअद्भुत आनन्ददायिनी कथाको सुनकर कलिंगसेना अत्यन्त प्रसन्नहुई और मानो इसीविचित्र कथाको समाप्त जानकर सूर्य्य भगवान्के अस्ताचल पर जानेके समय सोमप्रभा कलिंगसेना से मिलकर अपने स्थानको चलीगई १८८ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांमदनमंचुकालम्वकेतृतीयस्तरंगः ३॥

इसके उपरान्त अपने स्थान को गईहुई सोमप्रभाके मार्गको स्नेहसे देखनेके लिये महलके ऊपरखड़ी हुई कलिंगसेनाको आकाश मार्गसे जातेहुए मदनवेग नाम युवाविद्याधरने भाग्य वशसे देखा कामरूपी इन्द्रजाल की पिच्छिका(छड़ी) के समान अपने रूपसे त्रिलोकी को मोहित करनेवाली उसकलिंगसेना को देखकर उस का चित्त काम से पीड़ित हुआ तब उसने विचारा कि विद्याधारी स्त्रियां क्या हैं और अप्सराओं की भी क्यागणनाहै इसमानुषी का कैसा अद्भुत स्वरूपहै जो यह मेरी स्त्री न हुई तो मेराजीवनही व्यर्थ है परन्तु मैं विद्याधरहोकर इसमानुषीसे कैसे संगकरूं यह शोचकर उसने प्रज्ञप्ति नाम विद्याकाध्यान किया ध्यानकरतेही वह विद्यासाक्षात् प्रकट होकर बोली कि यह मानुषी नहीं है राजा कलिङ्गदत्तके यहां यहकोई अप्सराशापसे भ्रष्टहोकर उत्पन्नहुई है विद्याके यह वचनसुनकर मदनवेगप्रसन्नहोके अपने स्थानको चलागया और वहां अन्य सम्पूर्ण कार्य्योंको छोड़कर कामसे पीड़ित होके यह विचारने लगा कि जो मैं हठकरके इसको हरलाऊं तो यहमुझे योग्यनहीं है क्योंकि हठपूर्व्वक स्त्रियोंके साथ भोगकरने से मेरी मृत्यु होजायगी यहमुझे शापहोचुकाहै इससे इसकी प्राप्ति के निमित्त मुझे तपकरके श्रीशिवजीका आराधन करनाचाहिये क्योंकि सम्पूर्ण कल्याण तपहीके आधीनहैं और मेरे लिये इससे अन्य कोई उपायही नहीं है यह निश्चय करके दूसरेदिन मदनवेग ऋषभ पर्व्वतपर जाकर एक पैरसे खड़ाहो निराहारहोके तप करनेलगा थोड़ेकालके उपरांत उसके तपसे प्रसन्नहुए पार्व्वतीपति शीघ्रप्रसाद श्री महादेवजी प्रकटहुए और प्रणाम करतेहुए मदनवेग से बोले कि इस कलिंगसेना नामकन्या का रूप सम्पूर्ण संसार में विख्यातहै इसके समान रूपवान् पति संसारमें नहीं है केवल वत्स देशकास्वामी राजाउदयन है और वह इसे चाहताभी है परन्तु वासवदत्ता के भयसे प्रकट होकर उस के पितासे मांगता नहीं है और कलिंगसेना भी सोमप्रभा के मुखसे उसके रूपकी प्रशंसा सुनके उसके रूप में लुब्धहोकर उसी के साथ स्वयम्वर करने की इच्छाकरती है इस से जब तक उसका विवाहहोय उसके बीचहीमें उदयनका रूपधारण करके तुम इसकेसाथ गान्धर्व विवाहकरो इसप्रकार श्रीशिवजी के वचन सुनकर और उनको प्रणाम करके मदनवेग कालकूट नामपर्व्वत के तटपर अपने स्थानको चलागया १८ इसबीचमें सोमप्रभा आकाशगामी विमानपर चढ़कर प्रतिदिन प्रातःकाल तक्षशिलापुरी मे कलिंगसेनाके पास आतीथी और सायंकालको चलीजाती थी एकदिन क्रीड़ा करतेकरते कलिंगसेनाने सोमप्रभासे एकान्तमें कहा कि हे सखी मैंजो तुमसे यह वातकहती हूं इसे किसी से मत कहना मैं जानती हूं कि मेरा विवाह होनेवाला है क्योंकि बहुतसे राजालोगों ने मेरे मांगने के लिये अपने अपने दूतभेजे थे उनको मेरे पिताने किसी वहाने से टालदिया परन्तु श्रावस्तीपुरी के स्वामी राजा प्रसेनजितके दूतका वड़ासत्कार कियाहै और मेरीमाता भी प्रसेनजितको बहुत श्रेष्ठ समझती है इससे मैं जानती हूं कि उसीके साथमेरा विवाहहोगा हमारे पिता उसे बड़ा कुलीन समझते हैं वह उसकुल में उत्पन्नहुआ है जिसमें कौरव और पांडवोंकी पितामही अम्बा अम्बालिकादिक उत्पन्नहुईथी इससेहेसखी श्रावस्तीके राजा प्रसेनजितके साथ मेरे विवाहका निश्चयहै कलिंगसेना के यह वचन सुनकर आंसु-

ओंकी धारसे मानो स्तनोंमें द्वितीयमाला पहरतीहुई सोमप्रभा रोनेलगी उसेरोतेदेखकर कलिंगसेना ने पूछा कि हे सखीतुम्हारे शोक का क्या कारणहै तब सम्पूर्ण भूलोक की देखनेवाली सोमप्रभा बोली कि अवस्था, रूप, कुल, शील, तथा धन यह सब बातें वरकी देखी जाती हैं इन में से अवस्था पहले देख लेनी चाहिये फिर वंशकुल आदिका विचार करना चाहिये राजाप्रसेनजित की अवस्था अधिकहै उसे मैंने देखाहै चमेली के मुरझाये हुए पुष्प के समान जीर्ण उसराजाकी केवल जातिसे क्या प्रयोजनहै हिमकेसमान श्वेतवर्णवाले उस राजासे युक्त कुम्हलायेहुए मुखारविन्दवाली तुम हेमन्तऋतुकी कमलनीके तुल्य शोचकरने के योग्यहोगी इसीसे मुझको दुःखहुआ है मुझको तो तभी प्रसन्नता होय जब वत्सराज राजाउदयन तुम्हारास्वामीहोय इस पृथ्वी मे रूपलावण्य कुल शूरता तथा ऐश्वर्य्य में उदयन के समान कोई दूसराराजा नहीं है जो उस सदृशपति के साथ तुम्हारा विवाहहोयतो ब्रह्मा का तुम्हारा रूपबनाना सफलहोय सोमप्रभाके यन्त्रों के समान इन वचनों से कलिंगसेना का चित्त उदयन की ओर चलागया और उसने सोमप्रभासे पूछा कि वह किस वंश में उत्पन्नहुआ है और वह वत्सराज क्यों कहाताहै और उसका उदयन नाम कैसे हुआहै तब सोमप्रभा बोली कि हे सखी सम्पूर्ण पृथ्वी का आभूषणरूप वत्सनाम देशहै उसमे दूसरी अमरावती के समान कौशाम्बी नाम पुरी है उसपुरी में वह राज्य करताहै इससे उसको वत्सराज कहते है अब उसका वंश में कहती हूं पाण्डुकेपुत्र अर्जुन के अभिमन्यु नाम पुत्रथा जिसने चक्रव्यूहको तोड़करके कौरवों का नाशकिया उसके परीक्षितनाम पुत्रहुआ परीक्षित के सर्पयज्ञ करनेवाला जन्मेजय पुत्रहुआ जन्मेजयके सतानीकनाम पुत्रहुआ जो कौशाम्वी में आकररहा और देवासुरों के युद्ध मे दैत्यों को मारकर आपभी मरा उससतानीक के संसार में प्रशंसनीय सहस्रानीकनाम पुत्रहुआ जो इन्द्रके भेजेहुए रथपर चढकर स्वर्ग में आया जाया करता था इस राजा सहस्रानीक के मृगावतीनाम रानी में यह उदयननाम राजाचन्द्रवंशका भूषण उत्पन्नहुआहै ४४ हे सखी अब इसका उदयननाम जैसे हुआहै सोसुनो इसकी माता मृगावती जब गर्भिणीहुई तो उसे यह अभिलाषाहुई कि मैं रुधिर में स्नानकरूं इस अभिलाषको जानकर राजा सहस्रानीक ने पाप से डरकर लाखके रसकी बावड़ी बनवाई उसमे रानीमृगावती स्नानकरनेलगी उसेस्नानकरतेहुए देखकर गरुड़के वंशमे उत्पन्नहुए किसीपक्षीने उसेमांसका पिण्डजानकर उठाके भाग्यवशसे उदयाचलमें डालदिया वहां जमदग्निऋषिने उसे अपने आश्रममे रखकर उससे कहा कि तेरापति तुझेमिलजायगा तू सावधानहोजा (अनादरसे ईर्ष्यायुक्त तिलोत्तमाने उसकेपति सहस्रानीकको कुछ कालतक रानीसे वियोगहोनेका ऐसाही शापदियाथा) इसके उपरान्त कुछ दिनोंके व्यतीतहोनेपर उसी उदयाचलपर जमदग्निजीके आश्रममे नवीनचन्द्रमाको आकाशके समानरानीने पुत्रउत्पन्नकिया पुत्रके उत्पन्नहोतेही यह आकाशवाणीहुई कि यह उदयन संपूर्ण पृथ्वीकाचक्रवर्ती राजाहोगा और इसकापुत्र सम्पूर्ण विद्याधरोंका चक्रवर्तीराजाहोगा इसप्रकार आकाशवाणीसे देवतालोगोने उदयाचलमें उत्पन्नहोनेसे इसका उदयननामरक्खा इसबीचमें राजासहस्रानीकने भी मातलिसारथीके कहनेसे शापके अन्तमे आशाल-

गाकर रानीमृगावती के विना वहकाल वड़े खेदसे व्यतीतकिया शापके व्यतीतहोजानेपर उदयाचल पर्व्वतसे आयेहुए किसी निषादसे अपनी पहचान पाकर और उसी समय हुई आकाशवाणी से सब वृत्तान्तजानकर राजासहस्रानीक उसीनिषादको साथलेकर उदयाचलपर्व्वतको गयावहां मनोरथ की सिद्धिके समान रानीमृगावती और मनके राज्यकेसमान अपनेपुत्र उदयनको पाकर दोनोंकोसाथलेके कौशाम्बीपुरी को चलाआया और वहां आकर उदयन के गुणोंसे प्रसन्नहुए राजासहस्रानीक ने उसे युवराजपदवी देदी और अपने मंत्रियोंके पुत्रयौगन्धरायण आदिक उसकेमंत्री वनादिये इसप्रकारउदयनपर संपूर्णपृथ्वीका भाररखकर रानीसमेत राजासहस्रानीक सुखपूर्व्वक राज्यका सुखभोगनेलगा कुछ कालके उपरान्त वृद्धावस्थाके आजाने पर संपूर्ण राज्य उदयनको देकर अपनीरानी तथा मंत्रियोंसमेत राजा सहस्रानीक इस संसारके आनन्दको त्यागकर हिमालय को चलागया इसप्रकार अपने पिता के राज्य को पाकर और संपूर्ण पृथ्वीकोजीतकर राजाउदयन यौगन्धरायणके मंत्रसे संपूर्ण पृथ्वीकाराज्य करताहै ६० इसभांति इस सववृत्तान्त को कहकर सोमप्रभाएकान्त में फिर कलिंगसेनासे कहनेलगी कि यह राजा पाण्डवों के वंशमें उत्पन्नहोने से चन्द्रवंशी वत्सदेशके राज्य करने से वत्सराज हुआ और उदयाचल में जन्महोने से देवतालोगों ने इसका उदयननाम रक्खाहै संसार में इसके समान रूपवान् कामदेवभीनहीं है हे त्रैलोक्यसुन्दरि इसत्रिलोकी में तुम्हारेयोग्यपति उदयनसे अन्यकोई नहीं है और वहभी तुम्हारी लावण्यताके लोभसे तुम्हारे निमित्त प्रार्थना करना चाहताहै परन्तु राजा चण्डमहासेन की पुत्री वासवदत्ता उसकीपटरानी है उसने अत्यन्त अनुरागसे अपने वन्धुओं को छोड़कर और ऊषा शकुन्तला आदि कन्याओंकी लज्जाको हरकर इसको स्वीकारकिया है उसके नरवाहनदत्तनाम पुत्र भी उत्पन्नहोचुकाहै उसेदेवतालोगोंने विद्याधरोंका चक्रवर्त्तीहोनेवाला वतायाहै इससे वासवदत्ताके भय से वह तुम्हारे लिये प्रार्थना नही करताहै मैंने वासवदत्ताको भी देखाहै उसका स्वरूप तुम्हारे समान नहीं है इसप्रकार सोमप्रभाके वचन सुनकर कलिंगसेना राजाउदयनकेलिये उत्सुकहोकर वोली कि यह मैं जानतीतोहूं परन्तु मैं मातापिताके आधीन होनेके कारणकुछनहीं करसक्ती इससे हे सखी तुमसर्व्वज्ञ और वड़ी प्रभाववाली हो तुम्हारेही उद्योग से मेरासवकार्य्य होसक्ता है तव सोमप्रभा वोली कि यह कार्य्य देवाधीन है इसमें मेरा कुछवश नहीं है इसविषयपर मैं तुझे एककथासुनाती हूं उज्जयिनीनाम पुरी में विक्रमसेननाम एकराजा पूर्व्व समय में था उसराजा के तेजस्वती नाम अत्यन्त सुन्दरी कन्या थी उसकन्याको प्रायः कोई भी राजा अपने विवाह के योग्य नही मालूमहोता था एकसमय उस ने अपने महलपर से किसी पुरुष को देखा उसे अपने समान सुन्दर जानकर उसके पास संदेशा लेकर अपनी सखीभेजी सखीने जाकर उससे राजपुत्रीका संदेशा कहा परन्तु उसने साहससे डरकर अंगीकार नही किया फिर सखी ने वहुत प्रार्थना करके उससे यह संकेत किया कि यहजोनिर्ज्जन देवमन्दिर तुम देखतेहो इसमेंरात्रिमें तुमआकर उसराजपुत्रीकी प्रतीक्षाकरना यहकहकर सखीने वहांसे आकर तेजस्वती से उसका सव वृत्तान्त कहदिया तव तेजस्वती तो सूर्य्यके अस्तहोनेकी प्रतीक्षाकरनेलगी और वहपुरुष

स्वीकारकरके भी भयसे और कहींचलागया,ठीकहै (नभेकः कोकनदिनी किंजल्कास्वादकोविदः) मेंढक रक्तकमलनीके किंजल्कके स्वादको नहीं जानता,७८,इसीबीचमें कोई कुलीनराजपुत्र अपने पिता के मरजानेपर,उसके मित्र इसराजाविक्रमसेन से मिलनेको उज्जयिनीमेंआया,गोत्री भाइयोंने उसका राज्यहरलियाथा इस्से वह अकेलाही सोमदत्तनाम सुन्दरराजपुत्र सायंकालके समय उसपुरी में पहुंच करभाग्यवशसे जिसदेवमन्दिरमें तेजस्वतीकी सखी उसपुरुषको बुलाआईथी,उसीमें रात्रिव्यतीत करने कोरहा रात्रिके समय राजपुत्री तेजस्वती ने अनुरागसे विनापहचाने उसीराजपुत्रको अपना पतिबना लिया वह बुद्धिमान् राजपुत्रभी भाग्यवशसे मिलीहुई,होनेवाली राज्यलक्ष्मीकी सूचित करनेवाली उस राजपुत्रीके साथ चुपचाप आनन्दको प्राप्तहोगया,क्षणभरके उपरान्त राजपुत्री ने उसे अपत्यसंकेतित वह पुरुष न जानकर और उसकी भव्यआकृति देखकर अपने चित्तमेंकहा कि ब्रह्माने मुझेठगानहीं है यह उस्सेभी सुन्दरहै तदनन्तर उस्से वार्त्तालापकरके और सलाहकरके राजपुत्री अपने मंदिरमें चलीआई और वह उसीमन्दिरमेंरहा प्रातःकाल राजद्वारमें जाकर और प्रतीहारकेद्वारा अपनानाम राजाको निवेदनकरके राजाकी आज्ञापाकर भीतरगया वहां उसने राजासे अपना संपूर्ण राज्यकेहरेजाने आदिका वृत्तान्तकहा राजाने उसके शत्रुओंके जीतनेमें सहायता करनेको अंगीकार करके उसकेसाथ अपनी कन्याके विवाह करनेका विचारकिया,और मंत्रियों से अपना अभिप्रायकहा फिर रानीने भी सखियोंके मुखसे कन्याका वृत्तान्त सुनकर राजासेकहा उसवृत्तान्तको सुनकर अनिष्टका न सिद्धहोना और इष्टका सिद्धहोजाना इस काकतालीय न्यायसे विस्मित राजासे उससमय एकमंत्रीबोला कि जैसे स्वामियों के सोजानेपर अच्छेभृत्य जागाकरते हैं,उसीप्रकार भव्यपुरुषों के कार्य्यों में उनका भाग्यही सहायक होताहै इसीविषय में आपको मैं एककथा सुनाताहूं,किसीग्राममें हरिशर्म्मा नाम एक मूर्खदरिद्री ब्राह्मणथा वह दीनब्राह्मण जीविकाके न होनेसे बहुत दुखी रहताथा और पूर्व्वजन्मके पापोंके भोगने केलिये उसके बहुतसे पुत्रभीहुएथे इस्से वह कुटुम्बसहित भिक्षामांगताहुआ,किसीनगरमें पहुंचा वहां स्थूलदत्त नाम किसी बड़ेधनवान् गृहस्थके यहां उसने चाकरी करली तब अपने पुत्रोंको उसके पशुओंकी रक्षाकेलिये नियुक्तकरदिया और आप अपनी स्त्री समेत उसकी सेवकाई करनेलगा,एकसमय स्थूलदत्तके यहां कन्याके विवाहका उत्सवहुआ उसउत्सवमें बहुतसे बराती तथा कुटुंबियों के आनेसे स्थूलदत्तका घरभरगया उससमय हरिशर्म्माने अपने कुटुम्ब समेत यह आशालगाई कि घी तथा मांस आदिक उत्तमभोजन हमें गलेतक खानेको मिलैगा और इसीसे वह भोजनकेसमयकी आशा देखतारहा परन्तु उससमय उसको किसीनेभी स्मरणनहीं किया तबभोजनको न पाकर महादुखीहोकर वह अपनी स्त्री से बोला कि दरिद्रता और मूर्खतासे मेरा यहां ऐसाअनादरहै इस्से मैं युक्तिपूर्व्वक कोई बनावट का ज्ञान प्रकटकरूंगा जिस्से यह स्थूलदत्त मेरा सत्कारकियाकरेगा तुम अवसरपाकर इस्सेकहदेना कि मेरा पतिबड़ाज्ञानी है यह कहकर और विचारकरके जब संपूर्ण लोग सोगये तब उसने स्थूलदत्तके घरसे दामादका घोड़ा खोलकर बहुत दूरजाकर कहीं छिपादिया प्रातःकाल बरातियों ने जब इधर उधरढूंढा

परन्तु घोड़ा नहीमिला तव स्थूलदत्तके चित्तमें सन्देहहुआ कि यह वड़ा अशकुनहै उससमय हरिशर्म्माकी स्त्रीने आकर स्थूलदत्तसे कहा कि मेरापति वड़ाज्ञानी है और ज्योतिष आदिक विद्या अच्छे प्रकार जानता है आपउससेक्यों नहीं पूछते उसके पूछने से आपका घोड़ा मिलजायगा यह सुनकर स्थूलदत्तने हरिशर्म्माको वुलवाया तव वह कल मुझे भूलगये आज घोड़ा खोनेपर मेरी यादआई है ऐसा कहताहुआ उसके पासआया तव स्थूलदत्त ने उससेकहा कि मैं भूलगया मेरे अपराधको क्षमा करो और वताओ घोड़ा किसने हराहै उसके वचन सुनकर हरिशर्म्मा वहुतसी झूठमूठकी रेखाखैंचकर वोला कि यहांसे दक्षिणकीओर कुछ दूरपर चोरोंने तुम्हारा घोड़ा लेजाकर वांधाहै वहांसे जाकर शीघ्र लेआओ नहींतो वह वहांसेभी लेजायँगे यह सुनकर वहुतसे लोग दौड़करगये और हरिशर्म्मा की प्रशंसा करतेहुए वहांसे घोड़ा लेआये उस समय सव लोगों ने हरिशर्म्माकी वड़ी प्रशंसाकी और वह सुखपूर्व्वक स्थूलदत्त के यहां रहनेलगा इसके उपरान्त कुछ दिनों के व्यतीत होजानेपर उस नगरके राजा के यहां से वहुत से रत्न तथा सुवर्ण कोई चुरालेगया जव वहुत खोज करने पर भी राजा को उसका पता नहीं मिला तव राजा ने हरिशर्म्मा की वहुत प्रशंसा सुनकर इसे वुलवाया वहां जाकर हरिशर्म्मा ने कुछ समय टालने के लिये कहा कि मैं प्रातःकाल वताऊंगा और वहीं राजा के यहां रात्रिको निवासकिया राजाके यहां जिह्वानाम एक चेरी थी उसीने अपने भाई से मिलकर वह धन चुरायाथा वह जिस स्थानमें हरिशर्म्मा सोरहाथा उसके द्वारपर कानलगाकर खड़ीहुई कि देखूं यह ज्ञानी क्या कररहाहै उससमय हरिशर्म्मा ने एकान्तजानकर अपनी मिथ्यावादिनी जिह्वाकी इसप्रकार निन्दा की कि हे जिह्वे तूने भोग में लम्पटहोकर यह क्या दुराचारकिया अव तुझे यहां मृत्युका क्लेश भोगना होगा यह सुनकर जिह्वाने जाना कि यह ज्ञानी मुझेजानगया और भयसे व्याकुलहोकर किसी युक्ति से भीतरजाके उसके पैरोंपर गिरकर कहा कि हे महाराज धनकी चुरानेवाली जिह्वा मैंही हूं आपनें अपने ज्ञानसे मुझे जानलिया अव आप मेरी रक्षाकीजिये यह थोड़ासा सुवर्ण उसमेंका मेरे पासहै सो आप लेलीजिये और शेष सम्पूर्णधन मैंने उपवनमें अनारके वृक्षकेनीचे गाड़दियाहै यह सुनकर हरिशर्म्मा वोला कि मैं भूत भविष्य वर्त्तमान इन तीनोंकालोंकी वातजानताहूं तू मेरी शरणमें आई है इससे मैं तेरानाम नहींवताऊंगा और यह जो सुवर्ण तेरे पासहै सो मुझे फिर देना उसके वचनसुनकर वह चेरी वहां से चलीगई और हरिशर्म्मा आश्चर्य्यपूर्व्वक शोचनेलगा कि (असाध्यंसाधयत्यर्थं हेलयाभिमुखो विधिः) अनुकूलभाग्य असाध्यकार्य्योंको भी सहजही में सिद्धकरताहै देखो यहां कैसे अनर्थ में फँस कर मैं अपनी जिह्वाकी निन्दाकररहाथा उससे जिह्वानाम चोट्टी मुझे मिलगई और मेरा प्रयोजन सिद्ध होगया ठीकहै (शङ्कयैवप्रकाशन्ते वतप्रच्छन्नपातकाः) छिपेहुये पातक शङ्कामात्रहीं से प्रकटहोजाते हैं इसप्रकार विचारकर उसने वह रात्रि प्रसन्नतापूर्व्वक व्यतीतकी प्रातःकाल झूठमूठ लकीरआदि खैंचकर उसने उपवनमें राजाको लेजाकर सवधन खुदवादिया और कहादिया कि इसमें से कुछधन चोरलेकर भागगयाहै हरिशर्म्मा के इसअपूर्व्व विज्ञानको देखकर राजा उसको ग्रामदेनेको उद्युक्तहुआ तव मंत्री

ने राजासे कानमें कहा कि शास्त्रकेविना ऐसाज्ञान नहीहोसक्ताहै और यह मूर्ख है तो निस्सन्देह इसने चोरोंके साथ मिलकर अपनी यह जीविका निकाली है इससे एकवार किसी युक्तिसे इसकी परीक्षा फिर करलीजिये तव राजाने एक नवीनघट में एक मेंढक वन्दकरवाके उसके सन्मुखरक्खा और कहा कि हे ब्राह्मण इसघटमे जो पदार्थ है उसे जानजाओ तो मैं आपकी वड़ीपूजाकरूंगा राजाके यह वचन सुनकर और अपने नाशका समयजानकर हरिशर्मा वाल्यावस्थामे पिताके रक्खेहुए मेंढक इस अपने नामको स्मरणकरताहुआ भाग्यवशहोदुःखसे कहनेलगा कि हे मेंढक तुझ साधूके विनाशकेलिये अकस्मात यह घटउपस्थितहुआ उसके यह वचन सुनकर सब लोग प्रशंसा करनेलगे कि यहवड़ा ज्ञानी है इसने इस मेंढकको भी जानलिया और राजाने उसको अत्यन्त ज्ञानी जानकर वहुत प्रसन्नहोके उसे सुवर्णछत्र तथा वाहनसहित वहुतसे ग्रामदिये इससे हरिशर्म्मा सामन्तके समान होगया इसप्रकार पुण्यात्मा मनुष्यों के कार्य्य भाग्यवशसे सिद्धहोजाते हैं इससे हे राजा भाग्यहीने आपकी पुत्री तेजस्वती को नीच पुरुषसे वचाकर इसे योग्य राजपुत्र सोमदत्त से मिलाया मंत्रीके यह वचन सुनकर राजाने लक्ष्मी के समान अपनी कन्या सोमदत्त को देदी तव सोमदत्त अपने श्वशुरसे सेनालेकर शत्रुओं को जीत के सुखपूर्व्वक स्त्रीसमेत राज्यका सुखभोगनेलगा हेसखी कलिंगसेना इसप्रकार भाग्यकी विशेषतासे सम्पूर्णकार्य्य सिद्धहोते हैं इससे भाग्यकेविना वत्सदेशके स्वामी राजाउदयनकेसाथ तुम्हारासंयोग कौन करासक्ताहै मैं इसमे क्या करसक्ती हूं इसप्रकार सोमप्रभाके मुखसे इसकथाको सुनकर कलिंगसेना अपने वंधुओं के भय तथा लज्जाको शिथिलकरके राजाउदयन के समागमकेलिये उत्कण्ठितहुई तदनन्तर त्रैलोक्यके दीपकरूप श्री सूर्य्यभगवान् को अस्तहोता देखकर सोमप्रभा प्रातःकाल फिर आनेका नियमकरके और अपने मनोरथ के उद्योगके निमित्त विचारकरतीहुई कलिंगसेनासे पूछकर आकाशमार्ग से अपने घरकोगई १४४॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांमदनमंचुकालम्बकेचतुर्थस्तरंगः ४॥

इसके उपरान्त दूसरेदिन प्रातःकाल जव सोमप्रभाआई तव कलिंगसेना ने उससे कहा कि मेरेपिता निस्सन्देह मेराविवाह राजाप्रसेनजितके साथ कियाचाहते हैं यह वात मैंने अपनीमातासे सुनी है परन्तु वह वृद्ध है यह तुमनें देखाही है और वत्सराज उदयनकी तुम्हारे मुखसे प्रशंसा सुनकर मेराचित्त उसमे लगाहै इससे पहले राजाप्रसेनजितको दिखाकर जहाँ राजाउदयन है वहाँ मुझे लेचलो मुझे माता पिता से कोई प्रयोजन नहीं है उस के यह वचन सुनकर सोमप्रभावोली कि जो चलनाहै तो इस आकाश गामी यन्त्रपर चढकरचलो परन्तु अपनासम्पूर्ण परिकरलेलो क्योंकि तुम राजाउदयन को देखकर फिर न आसकोगी तुम्हें अपने माता पिताका भी स्मरण नहीं आवेगा और प्रियपतिको पाकर मेराभी स्मरण नहीं आवेगा और हे सखी जैसें मैं यहाँ आती हूं वैसे मैं तुम्हारे पतिके यहाँ आऊंगी भी नहीं उस के यह वचन सुनकर कलिंगसेना रोतीहुई वोली कि हेसखी जो ऐसाही है तो तुम राजाउदयन को यहां लेआओ क्योंकि मैं तुम्हारेविना क्षणभरभी वहाँ नहीं ठहरसकूंगी क्या चित्ररेखा अनिरुद्धको नहीं

लेआई थी इसकथाको तुम जानतीहोगी परन्तु मैं भी तुमको सुनातीहूं वाणासुरके ऊषानाम कन्याथी उसको श्रीभगवती पार्वतीजीने सेवासे प्रसन्नहोकर यह वरदान दियाथा कि स्वप्नमें जिस्से तेरा समागमहोगा वहीतेरा पतिहोगा किसीदिन ऊषाने स्वप्नमें देवकुमारके समान एक पुरुष देखा और गान्धर्व विधिकेद्वारा उसकेसाथ अपना विवाहकिया और प्रातःकाल सम्भोग के चिन्हों से युक्तहोकर वह जगी उससमय स्वप्नमें देखेहुए उसपुरुषको न देखकर और संयोग चिन्होंको जानकर श्री पार्वतीजीके वरदानको स्मरण करके आश्चर्य्य भयतथा संतापसे ऊषा बहुत व्याकुलहुई तव स्वप्नमें देखेहुए उसपतिके विना अत्यन्त विकलऊषा से चित्ररेखाने पूछा कि हेसखी आजतुम्हें खेदक्यों है तव उसने सम्पूर्ण स्वप्न का वृत्तान्त कहदिया इसके वचनसुनकर योगेश्वरी चित्ररेखा उसपुरुषके कुछनाम आदि पहचानको न जानकर वोली कि हेसखी यहभगवती पार्वतीजीका प्रभावहै इसमें सन्देह क्याकरना है परन्तु विना किसी पहचानके मैं तुम्हारे प्रियको कैसे ढूंढ़लाऊं जो तुम उसेपहचानतीहो तो देवता दैत्य तथा मनुष्य आदि सम्पूर्ण जगत्काचित्र मैं तुमको दिखातीहूं उसमें उस अपने प्रियको मुझे दिखादो तो मैं उसको लेआऊं उसने कहा हां मैं पहचानतीहूं तुम चित्रलिखो तव चित्ररेखाने क्रमसे सम्पूर्ण संसारका चित्रलिखा उसमें ऊषा ने वहयही है यहकहकर हर्षसे कांपतीहुई उंगली के द्वारा द्वारिकामें यदुवंशियों में से अनिरुद्धको दिखाया उसे देखकर चित्ररेखा वोली हे सखी तू धन्यहै जिसे श्रीकृष्ण भगवान् के पौत्र अनिरुद्धपति मिले हैं परन्तु वह यहां से साठहजार योजनपर है यह सुनकर ऊषा और भी अत्यन्त उत्कण्ठित होकर वोली कि हेसखी जोआजही उस पुरुषकी चन्दन के समान शीतलगोदी में मैं नहीं वैठूंगी तो अत्यन्त प्रचण्ड कामाग्नि में जलकर मृत्युको प्राप्तहूंगी उसके यहवचन सुनकर चित्ररेखा उसको सावधान करके आकाश मार्गसे द्वारिका कोगई समुद्रके मध्यमें वड़े २ उन्नत मन्दिरों से दूसरी वारसमुद्रमें डालेगये मन्दराचल पर्वत के शिखरोंकी भ्रान्तिको उत्पन्न करती हुई उस द्वारिका पुरीमें जाकर चित्ररेखाने रात्रि के समय सोतेहुए अनिरुद्धको जगाके स्वप्नमें देखने से उत्पन्नहुए ऊषाके अनुरागका सव वृत्तान्त कहा और पूर्वही से स्वप्न के वृत्तान्तको जाननेवाले उत्कण्ठित अनिरुद्धको अपनी सिद्धिके प्रभावसे लेकर क्षणभरमें चित्ररेखा द्वारकासे लौटआई और मार्ग देखतीहुई ऊषाके महल में आकाश मार्ग से उनको छिपाकर लेगई अनिरुद्धको साक्षात् आयेहुए देखकर चन्द्रमा को देखकर समुद्रकी लहरों के समान ऊषाप्रसन्नतासे अपने अंगोंमें नहींसमाई और मूर्त्तिमान अपने जीवनके समान अनिरुद्धकेसाथ सुखपूर्व्वक क्रीड़ाकरनेलगी जव यहवृत्तान्त ऊषाके पिता वाणासुरको मालूमहुआ तो वह वहुत क्रोधितहुआ तव अनिरुद्ध अपने तथा अपने पितामहके पराक्रमसे उसको जीतकर ऊषाको लेकर द्वारिका चलेगये द्वारिकामें वह दोनों स्नेहसे पार्व्वती और शिवजी के समान अभिन्न शरीर होकर रहनेलगे इसप्रकार चित्ररेखाने ऊषाको एकही दिनमें अपनेप्रियसे मिलादिया है सखी मैं तुम्हें ऊषासे भी अधिकप्रभाववाली जानतीहूं इस्से तुमराजाउदयनको यहांलेआओ देर न करो कलिंगसेनाके यहवचनसुनकर सोमप्रभावोली कि चित्ररेखा तो दैत्यकीस्त्रीथी इस्से वहपर पुरुषको उठा

करलेआई परन्तु मुझसरीकी स्त्री जो परपुरुषका स्पर्शभी नही करती है वह इसविषयमें क्या करसक्की है इस्से मैं तुझे प्रथम राजाप्रसेनजित्को दिखाकर राजाउदयन्के यहॉ लिये चलतीहूं सोमप्रभाके इन वचनोंको स्वीकार करके कलिंगसेना मायायन्त्रके विमानपर चढकर अपने संपूर्णधन तथा परिकरको लेकर मातापितासे छिपकर वहॉसे चली ठीकहै (नहिपश्यतितुंगंवाश्वभ्रंवा स्त्रीजनोग्रतःस्मरेणनीत× परमांधारांवाजीवसादिना) कामसे प्रेरणकीगई स्त्री सवारसे तीव्रगति परलेजायेगये, घोड़े के समान आगे ऊंचा खाली कुछनही देखती है ३६ पहले श्रावस्तीपुरी में जाकर शिकार खेलनेके निमित्त निकलेहुए वृद्ध राजाप्रसेनजित्को कलिंगसेनाने देखा राजाके ऊपर जो चमरढुलाया जाताथा वहमानों यहकहताथा कि इसवृद्धके पाससे दूरचलीजा उसे देखकर सोमप्रभाने मुस्कुराकर कलिंगसेनासे कहा कि हे सखी यहवही राजाप्रसेनजित् है जिसकेसाथ तुम्हारे पिता तुम्हारा विवाहकिया चाहते हैं तबक-लिंगसेना बोली कि इसको तो वृद्धावस्थाने स्वीकारकर लियाहै अबकौनसी स्त्री इसे अंगीकार करेगी यहकहकर वहॉसे सोमप्रभाके साथ आकाश मार्गसे कौशाम्बी नगरीकोगई वहॉ उपवनमें सखी सो-मप्रभासे बतायेहुए राजाउदयन्को वह ऐसी उत्कण्ठासे देखनेलगी जैसे कि चकोरी चन्द्रमाको देखती है वह प्रफुल्लित दृष्टि और हृदयमें रक्खेहुए हाथसे मानों यहकहरहीथी कि यह इसीमार्गसे यहॉगया है इसप्रकार उसे देखकर उसने सोमप्रभासे कहा कि हे सखी आजही मुझे वत्सराज उदयन् से मिला-ओ इसे देखकर मैं क्षणभर भी नहीं ठहरसक्ती हूं उसके यहवचनसुनकर सोमप्रभा बोली कि आज मैंने कोई अशकुन देखाहै इस्से तुम आजकेदिन इसी उपवनमें छिपकर रहो कहींदूर न जाना प्रातःकाल आकर तुम्हारे समागमका उपाय करूंगी अबमैं इससमय अपने पतिकेपास जाया चाहतीहूं यहकह-कर और कलिंगसेनाको उसी उपवनमें छोड़कर सोमप्रभा अपने घरचलीगई और राजाउदयन्भी उ-पवनसे अपने मंदिरको चलागया तदनन्तर कलिंगसेनाने अपने एक प्रधान अधिकारी से अपना संपूर्ण तत्त्वकहा और शकुनके जाननेवाली अपनी सखीके निषेधको न मानकर संदेशा लेकर उस प्रधानको राजाउदयन्के पासभेजा ठीकहै (स्वतन्त्रोभिनवारूढो युवतीनांमनोभवः) युवतीस्त्रियोंका नवीन यौवनमे उत्पन्नहुआ काम स्वतन्त्रहोताहै अर्थात् किसीनिषेधको नहीमानताहै ५३ उसप्रधानने राजद्वारमें जाकर प्रतीहारकेद्वारा आज्ञा मंगवाकर राजाकेनिकटजाके यह विज्ञापनाकी कि हे राजावक्ष शिलापुरीके स्वामी राजाकलिंगदत्तकी कन्या कलिंगसेना आपकीप्रशंसाकोसुनकर आपकेसाथ स्वयंवर करनेकेलिये अपनेबांधवोंको छोड़कर यहॉं आई है उसेमयासुरकी पुत्री नलकूबरकी स्त्री सोमप्रभा नाम उसकी सखी आकाशगामी मायायन्त्र पर चढाकर परिकर समेत यहां लाई है इस प्रकार यहां आकर उसने मुझे विज्ञापन करनेके लिये आपके पास भेजा है आपउसे अंगीकार कीजिये चन्द्रमा और चन्द्रिकाके समान आपदोनोंका समागमहोय प्रधानके यह वचनसुनकर राजाउदयनने उसकी विज्ञा-पनाको स्वीकारकरके सुवर्ण तथा वस्त्रादिलेकर उसेविदाकिया और मुख्यमंत्री यौगन्धरायणको बुला-करकहा कि राजाकलिंगदत्तकी कलिंगसेनानामकन्या जिसके स्वरूपकी प्रशंसासम्पूर्ण पृथ्वीमे विख्या-

तहै वह आपहीमेरेसाथ विवाहकरनेकेलिये यहांआई है तोवताओ कि कैवउसकेसाथ विवाहकरूं क्योंकि वह त्यागकरनेके योग्यनहीं है वत्सराजके यहवचनसुनकर भविष्यमें उसकेहितका चाहनेवाला यौगन्धरायण शोचनेलगा कि कलिंगसेनाकारूप संसारमें विख्यातहै उसके समान त्रैलोक्यमेभी कोईस्त्री नहींहै देवतालोगभी उसकी इच्छाकरतेहैं उसकेसाथ विवाहहोनेसे यहराजाउदयन अन्यसम्पूर्ण कार्य्यों को छोड़देगा और रानीवासवदत्ता सपत्नीकेक्लेशसे अपने प्राणत्यागदेगी उसकेमरनेसे उसकापुत्रनरवाहनदत्तभी नष्टहोजायगा और वासवदत्ताके विना रानीपद्मावतीका जीनाभीस्नेहसे दुष्करहै जो यह दोनों रानीमरजांयगी तो इनकेपिता चण्डमहासेन और प्रद्योत यातो मरजांयगे या वत्सराजसेविरुद्ध होजांयगे इसप्रकार इसविवाहसे सवनष्टहोजानेका सन्देहहै परन्तु राजासे निषेधकरनाभी योग्यनही है क्योंकि निवारणकरनेसे इसराजाको व्यसनमे अत्यन्तरुचि होतीहै इससे विवाहकेहोनेमें कुछ समयका अन्तरमें डालूंगा इसप्रकार शोचकर यौगन्धरायण राजाउदयनसेवोला कि हेराजा आपधन्यहो जिसके यहाँ कलिंगसेना आपही आई है इसके विवाहसे राजाकलिंगदत्त आपके सेवक के समान होजायगा इससे आपज्योतिपियो से अच्छीलग्न पूछकर विधिपूर्व्वक इसके साथ विवाहकीजिये क्योंकि यह वड़े कुलीन महाराज कलिंगदत्त की कन्याहै और आजउसके रहने केलिये कोई योग्यस्थान दीजिये और दास दासी वस्त्र तथा आभूपणादिक भिजवादीजिये यौगन्धरायण के यह वचन सुनकर राजाउदयन ने सव उसका कहना प्रसन्नतापूर्व्वक किया और कलिंगसेना राजाकेदियेहुए अत्युत्तमगृह में जाकर अपने मनोरथ को शीघ्रही सिद्धहोनेवाला जानकर वड़ी प्रसन्नहुई ७३ इसके उपरान्त यौगन्धरायण राजमंदिरसे अपनेघरमें जाकरशोचनेलगा कि प्रायः अशुभकार्य्यकेलिये विलम्ब करनाही वड़ाउपायहै देखो पूर्वसमयमें जव इन्द्र व्रह्महत्याकेकारण भागगयेथे तव राजानहुपने इन्द्रहोकर इन्द्राणीकी चाहना कीथी उससमय वृहस्पतिजीने आजआवेगी कलआवेगी इसप्रकार कहकर कुछकालतक उसे टालाथा फिर टालते २ नहुपब्राह्मणके शापसे नष्टहोगया और इन्द्र फिर अपनी पदवीपरपहुंचगया इसप्रकार कलिंगसेनाके लिये मुझे भी इसराजाकोटालना चाहिये इसप्रकार शोचकर उसने सम्पूर्ण ज्योतिपियोंको वुलाके यह गुप्त आज्ञादेदी कि राजा जो विवाहकेलिये लग्नपूंछे तो बहुत कालके उपरान्तकी लग्नवताना इसके उपरान्त कलिंगसेना के वृत्तान्तको सुनकर रानी वासवदत्ता ने यौगन्धरायणको अपनेघर वुलवाया और वुलाकर रुदनकरकेकहा कि हेआर्य आपने मुझसे पहलेकहाथा कि हेरानी मेरे विद्यमान होने पर पद्मावतीके सिवाय अन्यसपत्नीक तुम्हारे नहीहोगी परन्तु अव कलिंगसेनाका विवाह आर्यपुत्र केसाथ होताहै और कलिंगसेना अत्यन्त रूपवनीहै इस्से वत्सराज उसीकेसाथ अनुरागकरेंगे तो अव आपतो मिथ्यावादीहुए और मेरी मृत्युआई रानीके यहवचन सुनकर यौगन्धरायणनेकहा कि हेरानी धैर्य्यधरो मेरेजीतेहुए यह कैसे होसक्ताहै तुम इसविपय मे राजासे कुछभी प्रतिकूलता न करना किन्तु धैर्य्यधरके पहलेसे भी अधिक अनुकूलता दिखाना रोगी प्रतिकूल वचनों से वैद्यके वशमें नहीं होता किन्तु अनुकूल वचन कहकर उसीके अनुसार चिकित्साकरके उसेवशीभूत करते हैं मनुष्य विपत्तिके

प्रतिकूल उद्योगकरके उससे उद्धारनहींपाता किन्तु उसीके अनुकूल उपाय करके उससे उद्धारको प्राप्त होताहै इससे जब राजाउदयन तुम्हारे निकटआवें तबतुम अपने चित्तके विकारको छिपाकरके अच्छी रीतिसे उनका सेवनकरना और कलिंगसेनाके विवाहमें यहकहकर अपनीभी सम्मतिदेना कि इसके स्थिर होजानेपर उसका पिताभी आपके राज्यका सहायक होजायगा ऐसाकरने से वत्सराज तुम्हारे महत्वको देखकर तुमपर अधिक स्नेह करेंगे और कलिंगसेनाको अपने आधीन जानकर अधिक उत्कण्ठित नहींहोंगे क्योंकि निवारण करने से विषयों पर अधिक अभिलाष बढ़ता है इससे तुम ऐसाही करना और रानीपद्मावतीकोभी यही सबबातें सिखलादेना इसप्रकार करनेसे राजाउदयन मुझसे युक्तिपूर्व्वक कियेहुए कालक्षेपको सहसकेगा और इसके उपरान्त जोकुछहोगा वहसब मैं ठीककरदूंगा अब तुममेरी युक्तिके बलकोदेखो क्योंकि (संकटेहिपरीक्ष्यन्ते प्राज्ञाश्शूराश्चसंगरे) संकट पड़नेमें बुद्धिमान् और युद्धमें शूरवीरोंकी परीक्षाहोतीहै इससे हेरानी तुमखेद न करो इसप्रकार वासवदत्ताको समझाकर यौगन्धरायण अपने मन्दिरको चलागया और रानी वासवदत्ताने अपने चित्तमें उसकी युक्तिकी बड़ी प्रशंसाकी उसदिन राजाउदयन स्वयंवरके निमित्तआईहुई कलिंगसेनाके नवीनसंगमके निमित्त उत्कण्ठितहोकर वासवदत्ता तथा पद्मावतीके यहां रात्रिको नहींगया उसदिनकी वहरात्रि रानीवासवदत्ता तथा यौगन्धरायणको अत्यन्त चिन्तामय राजाउदयनको दुर्लभरसकी उत्कण्ठामय और कलिंगसेनाको प्रियके मिलापकी आशासे महोत्सवमय व्यतीतहुई ६९॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांमदनमंचुकालम्बकेपंचमस्तरंगः ५॥

इसके उपरान्त प्रातःकाल उत्कण्ठित राजाउदयन् से यौगन्धरायणने आकरकहा कि कलिंगसेनाके विवाहकी लग्नआजही आप क्यों नहीं दिखवाते हैं यहसुनकर राजाने कहा कि मेरे हृदय में भी यही बातथी क्योंकि उसकेबिना क्षणभरभी मेराचित्त नहींमानताहै यह कहकर उसने उसीसमय प्रतीहारको भेजकर ज्योतिषीलोग बुलवाये तब यौगन्धरायण से प्रथमही शिक्षाकियेगये ज्योतिषीआकर बोले कि हे महाराज छः महीनेके उपरान्त अनुकूललग्नहै यह सुनकर यौगन्धरायणने मिथ्या कोप प्रकटकरके कहा कि यह ज्योतिषी अज्ञहैं हे महाराज जिस ज्योतिषी को आपने बड़ा ज्योतिषी बतायाहै वह आज नहींआयाहै उसेही बुलवाकर आप पूछिये उसके कहनेपर जैसा योग्य समझियेगा सो कीजियेगा मंत्री के यह वचनसुनकर सरलचित्तवाले राजा उदयन्ने उस ज्योतिषी को भी बुलवाया उसने भी आकर यौगन्धरायणकी शिक्षाके अनुसार कहा हे महाराज छः महीने के उपरान्त उत्तमलग्नहै तब यौगन्धरायण उद्विग्नसाहोकर राजासे कहनेलगा कि हे महाराज अब क्या करनाचाहिये आप बताइये उस समय उत्कण्ठा तथा अच्छीलग्न इच्छासे युक्त राजा भी विचारकरबोला कि अब कलिंगसेनासे पूछना चाहिये देखिये वह क्या कहतीहै राजाके यह वचनसुनकर यौगन्धरायण दो ज्योतिषियों को साथ में लेकर कलिंगसेना के निकटगया वहां कलिंगसेना ने उसे बड़े आदरपूर्व्वक बैठाया उसके स्वरूप को देखकर यौगन्धरायण ने शोचा कि राजा इसप्रकार व्यसनके आधीनहोकर सब राजकाज छोड़देगा

और कहा कि मैं ज्योतिषियों को लेकर तुम्हारे विवाहकी लग्नठीककरने को आयाहूं अपने जन्मका नक्षत्रवताओ यह सुनकर उसके सेवकोंने उसके जन्मकानक्षत्र वतादिया तव ज्योतिषियों ने वहां भी उसकी सलाहसे झूठाविचारकरके कहा कि छः महीने के उपरान्त उत्तमलग्नहै छः महीने के भीतर कोई भी उत्तमलग्न नहींमालूमपड़ती यह सुनकर लग्नको दूरजानके कलिंगसेना के चित्तको उद्विग्नदेखकर उसका प्रधान वोला कि पहले अनुकूललग्न देखनाचाहिये जिससे इन दोनोंका सदैव कल्याणहोय शीघ्रता और विलम्बसे क्याहै प्रधानके यह वचनसुनकर सबलोगबोले कि आप बहुत उचितकहते हैं और यौगन्धरायणने भी कहा कि कुलग्नमें विवाहकरने से राजा कलिंगदत्तको खेदहोगा उससमय कलिंगसेना भी विवशहोकर वोली कि जैसा आपलोग उचितसमझें और चुपहोगई उसके इसीबचनको मानकर और उस्सेआज्ञालेकर यौगन्धरायण ज्योतिषियों समेत राजाकेपासआया वहां राजासे संपूर्ण वृत्तान्त कहकर और युक्तिपूर्व्वक उसको छःमहीनेकेलिये रोककर अपने घरको चलाआया २३ अपने घरपर जाकर विवाहके विलम्बको सिद्धकरके शेषकार्य्यके सिद्धकरनेकेलिये उसने योगेश्वर नाम ब्रह्म राक्षसका स्मरणकिया स्मरण करतेही वहराक्षस आगया और नमस्कार करके वोला कि आपने किस लिये मेरा स्मरण किया है तब उस्से यौगन्धरायणने कलिंगसेनाका सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाकरकहा कि हे मित्र मैंने युक्तिसे विलम्ब तो करदियाहै अबतुम इतने अवसरमें छिपकर कलिंगसेनाके आचरणको देखो विद्याधरादिक देवगण इसकी निस्सन्देह अभिलाषा करते हैं क्योंकि त्रैलोक्यमें इसके समान सुन्दर और कोई स्त्री नहीं है इस्से जो किसी सिद्ध अथवा विद्याधरके साथ इसका संगमहोजाय और तुमदेखआओ तो बहुत अच्छाहोगा किसी अन्यरूपमें आयेहुए विद्याधरादिक दिव्यपुरुषोंको शयनके समयमें तुमदेखना क्योंकि दिव्यपुरुष सोनेके समय अपनेही स्वरूपमें होजाते हैं इसप्रकार तुम्हारे द्वारा कलिंगसेनाका दोषजो हमेंमालूमहोजाय तो राजाका अनुराग उसपरसे जातारहै और हमारा कार्य्य सिद्धहोजाय यौगन्धरायणके यहवचनसुनकर वहराक्षस वोला कि युक्ति पूर्व्वक मैंहीं कहिये तो इसके आचरणको न विगाड़दूं या इसेमारडालूं तब यौगन्धरायणने कहा कि ऐसा कदापि न करना यहमहा अधर्म है जो धर्मका पालनकरके अपने मार्गमें चलताहै उसके मनोरथों की सिद्धिमें धर्म्मही सहायक होताहै इस्से हे मित्र तुम छिपकर उसीके दोषको देखो इस्से मैं तुम्हारी मित्रताके वलसे अपने राजाका कार्य्य करूं उसके यहवचनसुनकर ब्रह्मराक्षस कलिंगसेनाके घरमें अपने योगसे छिपकर चलागया २६ इसवीचमें कलिंगसेनाके निकट सोमप्रभा आई वह कलिंगसेनासे रात्रिके सम्पूर्ण वृत्तान्तको पूछकर उसब्रह्मराक्षसके छिपकर वहाँ वैठेहोने के समय वोली कि आज प्रातःकालही मैं तुमको ढूंढतीहुई यहाँआई थी परन्तु यौगन्धरायणको तुम्हारेपास देखकर छिपरही मैं ने तुम्हारी सववातचीत सुनीथी उस्से मुझे सबमालूम होगया तुमने मेरे निषेध करनेपर भी कलही इसकार्य्यका आरंभकरदिया हेसखी दुश्शकुनको विनादूर किये जो कार्य्य कियाजाताहै उसमें अनिष्टफल होताहै इस विषयमें तुम को मैं एक कथासुनाती हूं पूर्व्वही अन्तरवेदमें वसुदत्तनाम एकब्राह्मण रहताथा उसके विष्णुदत्तनाम

पुत्रथा विष्णुदत्त १६ वर्षकी अवस्था में विद्यापढ़ने के लिये वलभीपुरी में जानेको उपस्थितहुआ उसे ब्राह्मणों के सातपुत्र वहां जानेकेलिये साथीमिले यह तो कुछपढ़ा और कुलीनभीथा परन्तु वह सातो मूर्खथे आपसमें एक दूसरेकेलिये परित्याग न करनेको शपथखाकर उनके साथ रात्रिके समय अपने माता पितासे छिपकर विष्णुदत्त चला ४५ घरसे चलतेही कुछ अशकुन देखकर उसने अपने साथी मित्रोंसे कहा कि आजअकस्मात यहअशकुन हुआहै इस्सेलौटचलना चाहिये फिरकभी जब अच्छा समय होगा तब चलेंगे यहसुनकर वह सातोंमूर्खबोले कि व्यर्थ शंकामतकरो हमइस्से नहींडरते जोतुम डरतेहो तो लौटजाओ हम तो अभीजाते हैं क्योंकि प्रातःकाल हमारे बांधवलोग जो जानजांयगे तो हमें नहींजानेदेंगे उनके यहवचन सुनकर विष्णुदत्त शपथके आधीनहोकर उन्हीकेसाथ विष्णुभगवान् को स्मरणकरके चलदिया चलते २ रात्रिके व्यतीत होजानेपर फिर कुछ अशकुन देखके विष्णुदत्तने उनसे लौटनेकोकहा तब वह बोले कि और तो कोईअशकुन नहीं है परन्तु बड़ा अशकुन यही हैं जो कौएके समान पद २ पर शंकाकरनेवाले तुम हमारेसाथ में आयेहो उनके यह वचनसुनकर विष्णुदत्त पराधीनहोकर उनकेसाथ चुपचापचला और शोचनेलगा (नोपदेशोविधातव्यो मूर्खस्यस्वाभिचारिणः संस्कारोवस्करस्येव तिरस्कारकरोहिसः १ एकोबहूनांमूर्खाणांमध्येनिपतितोबुधः पद्मपाथस्तरंगानामिव विप्लवतेध्रुवम्) अपनीही इच्छाके अनुसार करनेवाले मूर्खोंको उपदेश न करनाचाहिये क्योंकि मूर्खोंका उपदेश उपस्थ इन्द्रीके संस्कारके समानकेवल तिरस्कार का हेतुहोता है बहुतसे मूर्खों में पड़कर एकविद्वान् भी जलकी लहरों में पड़ेहुए कमलकेसमान नष्टहोताहै इस्से मुझे इनमूर्खोंसेहित अनहितकुछभी नहींकहना उचितहै और चुपचाप चलनाचाहिये परमेश्वरकी कृपासे सब कल्याण होगा इसप्रकार शोचताहुआ विष्णुदत्त उन्हीं मूर्खोंकेसाथ सायंकाल के समय निषादों के ग्राममें पहुंचा वहां रात्रिकेसमय उनको ठहरने के लिये किसी युवतीस्त्री का गृह मिला वहांजाकर वह सातों मूर्खतो क्षणभरमें सो गये परन्तु विष्णुदत्त उसघरमें किसी अन्यपुरुषके न होनेसे जागताही रहाठीक है (स्वपन्त्यज्ञाहिनिश्चेष्टा कुतोनिद्राविवेकिनाम्) मूर्खलोग निश्चेष्ट होकर सोते हैं परन्तु विवेकी लोगोंको निद्रा नहींआती ६० उससमय एक युवापुरुष उसघर में आकर उसयुवती स्त्रीके पासचलागया और उसकेसाथ रमणकिया फिर कुछकाल वार्त्तालाप करकेदोनों सोगये उनदोनोंका यहवृत्तान्त विष्णुदत्तने भीतर दीपक प्रकाशित होनेके कारण द्वारके छिद्रसे देखा और विचारा कि इस दुश्चारिणी स्त्री के यहां हमकैसे आगये मुझे मालूम होताहै कि यह इसका जारहै पतिनहीं है नहीं तो इसकी चाल सन्देह पूर्व्वक ऐसी धीरी न होती और मुझे पहलेही यह चपलचित्त मालूम हुईथी परन्तु कोई स्थान रहनेको नहीं मिला तब इस में लाचार होकर रहनापड़ा अच्छा कोई डर नहीं है हमकई आदमी हैं परस्पर साक्षीहोसक्ते हैं इसप्रकार विचार करते २ उसेबाहर मनुष्योंकासा शब्द सुनाईपड़ा और फिर एक तरुणपुरुष अनुचरों समेत खड्ग को लियेहुए वहां आया अनुचरतो अपने २ स्थान परजाबैठे और उसने विष्णुदत्तसे पूछा कि तुम लोग कौनहो उसने डरकरकहा कि हम पथिकहैं तबभीतरजाकर और अपनी स्त्रीको जारके साथ सोती

हुई देखके उसनेखड्गसे जारका शिरकाटलिया और स्त्रीको न मारा न जगाया और दूसरे पलँगपरखड्ग को अपने पासही रखकर शयनकिया विष्णुदत्तने यह वृत्तान्तभी द्वार की सन्धिसे देखकर शोचा कि इसने अपनी भार्याको स्त्रीजानकर उसे छोड़ जो जारहीकोमारा यह अच्छाकिया परन्तु ऐसाघोरकर्म करके यह निस्सन्देह होकर निर्भयसोरहाहै यह बड़े आश्चर्य्यकी बातहै विष्णुदत्तके इसप्रकार शोचतेही वह दुष्टस्त्री उठकर अपने जारको मराहुआ और अपने पतिको सोताहुआ देखकर जारके धड़को कन्धे पर रखकर और उसके शिरको हाथमें लेकर बाहर जाकर कहीं राखकेढेरमें धड़ समेत शिरको डालकर चुपचाप लौटआई विष्णुदत्तभी उसीके साथजाके दूरहीसे सबवृत्तान्त देखकर लौटकर अपने मित्रों के साथलेटरहा तब उसस्त्रीने लौटकर उसीखड्गसे अपने पतिका शिरकाटडाला और बहुत चिल्लाकर महा रोदन करकेकहा कि हाय २ इन पथिकों ने मेरे पतिको मारडाला उसके वचनसुनकर सम्पूर्ण सेवकलोग दौड़े और अपने स्वामीको मरादेखकर शस्त्रलेके उनसातों आठों निरपराध ब्राह्मणोंको मारनेलगे जब उनपर मारपड़नेलगी तब वह सबघबराकर उठबैठे और उनमेंसे विष्णुदत्त जल्दीसे बोला हेसेवकलोगो ब्रह्महत्या न करो हमलोगोंका कोई अपराधनहीं है इसी दुश्चारिणीस्त्रीका यहदुष्टकर्म है इसप्रकार उनको मारनेसे निवृत्त करके उसने रात्रिका सम्पूर्ण वृत्तान्त उनसे कहदिया और उन्हें अपने साथलेजाकर वह धड़ तथा शिरराखमें पड़ाहुआ दिखलादिया तब उसस्त्रीका मुख म्लानहोगया और उसकुचालनीकी निन्दा करके सबलोग कहनेलगे कि कामके आधीन होकर जो स्त्री निश्शंकहो साहस करती है वह पराये हाथमें गयेहुए खड्गके समान किसको नहीं मारती है यहकहकर उनलोगोंने विष्णुदत्त आदिक आठों ब्राह्मणोंको छोड़दिया तब वह सातोंब्राह्मण विष्णुदत्त से कहनेलगे कि आजरात्रिके समय सोते हुए हमलोगोंके निमित्त रक्षाकेलिये स्थापन कियेगये रत्नके दीपकके समान तुमहोगये तुम्हारी कृपासे हमलोग इसदुश्शकुनके प्रभावसे होनेवाली मृत्युसेबचे इसप्रकार विष्णुदत्तकी प्रशंसा करके और अपने दुष्ट वचनों के अपराधको क्षमाकरा के उसी के साथ अपने कार्य्योंको चले इसप्रकार सोमप्रभा कलिंग सेनासे कहकर फिरबोली कि हे सखी ऐसेही जो लोग कार्य्य के प्रारंभमें हुए दुश्शकुनको विलम्बादि के द्वारा दूरनहीं करते हैं उनके कार्य्यों में अशुभफल होताहै और बुद्धिमानों के वचनोंको न माननेवाले मूर्ख लोग हठसे कार्य्यमें प्रवृत्त होकर अन्त में पश्चात्तापको प्राप्तहोते हैं इससे तुमने कलके दिन दुश्शकुन केहोने परभी वत्सराज के पास दूत भेजा सो उचित नहीं किया परमेश्वर निर्विघ्नता से तुम्हारा विवाहकरदेवे तुमघरसे अच्छीलग्नमें नहींचलीहो इससे तुम्हारा विवाहदेरमेंहोगा तुम्हारेलिये देवतालोगभी अभिलाषाकरतेहैं इससे अच्छेप्रकारसे अपनी रक्षारखना और अत्यन्तनीतिनिपुण महामन्त्री यौगन्धरायणकाभी ध्यानरखना कदाचित् वहराज्यमें हानिहोती जानकर तुम्हारे कार्य्यमें विघ्नकरे अथवा विवाहहोजानेपरभी कोई दोष तुममें निकालदे अथवा वह धर्मात्माहै इससे कोई अधर्मनभीकरे परन्तु हेसखी सपत्नियोंका ध्यानसदैव रखनाचाहिये इसविषयमें तुमको मैं एककथा सुनातीहूं ६७ विश्वामित्रकी बनाईहुई इक्षुमतीनाम एकनदीहै उसीकेतटपर उसीनामकी एकपुरीभीहै

उसपुरीके समीप एकवड़ावनहै उसमें मंकणकनाम मुनिका आश्रमहै वहमुनि अपने आश्रममें ऊपर कोपैरकियेहुए तपकररहेथे एकसमयमुनिने तपकरते २ आकाशमार्ग में मेनकानाम अप्सरादेखी और वायुकेद्वारा वस्त्रोंके चलायमानहोनेसे उसकेअंगभी साफ २ उन्हें दिखाईदिये उसेदेखकर मुनिका चित्त कामसे चलायमानहुआ और एकनवीन केलेकेपत्तेपर उनकावीर्य्य निकलपड़ा वीर्य्यपातहोतेही एक वड़ी सुन्दरकन्या उसीसमय उत्पन्नहोगई ठीकहै (अमोघंहिमहर्षीणां वीर्य्यंफलतितत्क्षणम्) महर्षि लोगोंका अमोघवीर्य्य तत्क्षणही फलदायी होता है वह कन्या केले में उत्पन्नहुईथी इसहेतु से मुनिने उसकानाम कदलीगर्भारक्खा जैसे रंभाकेदेखनेसे गौतमकावीर्य्य च्युतहोके द्रोणाचार्य्य कीस्त्री कृपीका जन्महुआ था इसीप्रकार उत्पन्नहोनेवाली कदलीगर्भा मुनि के आश्रममे धीरे २ वड़ी हुई एकसमय मध्यदेशका स्वामी राजादृढवर्मा शिकार खेलने को गयाथा उसका घोड़ा किसी कारण से भागकर उसको मंकणकमुनिके आश्रममें लेगया वहां जाकर राजाने वल्कलोंको धारणकरेहुए मुनिकन्याओं के भेपसे अत्यन्त शोभित कदलीगर्भाको देखा उसे देखतेही राजाकाचित्त उसके वशीभूत होगया और उसे अपनी सम्पूर्ण रानियोंका स्मरणभी नहीं रहा तव जैसे राजादुष्यन्तने कण्वमुनिकी कन्या शकुन्तला पाईथी उसीप्रकार क्या यह ऋषिकी कन्या मुझेभी मिलैगी इसप्रकार शोचतेहुए राजादृढ़वर्माने कुशा तथा समिधोंकोलेकर आतेहुए मंकणकमुनिको देखा मुनिको देखतेही घोड़ेको छोड़कर राजाने अपना नाम कहकर प्रणामकिया तव मुनिने कदलीगर्भासेकहा कि हे वत्से इस अतिथि राजा केलिये अर्घलाओ इसप्रकार मुनिकी आज्ञापाकर कदलीगर्भाने राजाका अर्घादिक सम्पूर्ण सत्कार किया तदनन्तर राजाने मुनिसेपूछा कि यहकन्या आपके कैसेहुई तव मुनिने उसकी उत्पत्तिका वृत्तान्त और नाम सव राजासे कहदिया मुनिके वचन सुनकर राजाने कदलीगर्भाको मेनकाके स्मरण से उत्पन्नहोने के कारण अप्सरा जानकर मुनिसेकहा कि हे महाराज यह कन्या आप मुझे देदीजिये तव मुनिने राजाको सुन्दर योग्यवर जानकर कदलीगर्भाका उसके साथ विवाहकरदिया ठीकहै (दिव्यानुभावंपूर्वेपा मविचार्य्यहिचेष्टितम्) प्राचीन लोगोंके दिव्यप्रभावयुक्त कार्य्यों में विचारनहीकरना चाहिये ११५ कदलीगर्भाके विवाहको जानकर वहुतसी अप्सराओंने मेनकाके स्नेहसे उस आश्रममे आकर विवाहके योग्य सम्पूर्ण आभूपणादिक उसेपहरादिये और थोड़ीसी सरसों उसके हाथमे देकर कहा कि हे पुत्री जातेसमय इनसरसोंके दानोंको मार्गमें वोतीचलीजाना कदाचित् यहतुम्हारापति राजातुम्हें तिरस्कारकरे तो तुम इन्हीं सरसोंके वृक्षोंकी पहचानसे मार्ग जानकर यहां चलीआना उनके इसकहने के उपरान्त राजादृढवर्म्मा कदलीगर्भाको अपने घोड़ेपर सवारकरवाके वहांसेचला और मार्ग में छुटीहुई सेनाको फिर पाकर उन्हें साथमेंलेके राजधानीकोआया और कदलीगर्भा भी मार्ग में सरसों वोतीहुई चलीआई राजाराजधानीमें आकर अपने मंत्रियोंसे कदलीगर्भाका सव वृत्तान्तकहकर अन्यरानियोंसे विमुखहोके केवल उसीकेसाथ आनन्दपूर्वक विहार करनेलगा राजाकी यहदशा देखकर उसकी पटरानीने मंत्रीकोवुलाकर एकान्तमें अपनेप्राचीनउपकारोंको स्मरणकराके कहा कि राजाने नवीन स्त्रीमें आशक्त

होकर मेरा त्यागकरदिया इस्से ऐसा उपायकरो जिस्से यह मेरी सपत्नी अलगहोजाय यह सुनकर मंत्रीने कहा हे रानी हमलोगोंका यह कामनहीं है किं अपनेस्वामीका स्त्रीसे वियोगकराना अथवा स्त्रीकानाश करना यहकाम संन्यासिनी स्त्रियोंका है वह दंभकरनेमें वड़ी चतुर होतीहैं और बहुतसे दम्भी पुरुषों को वह जानती हैं और उन्हींकी संगतमें रहती हैं मंत्रीके यह वचनसुनकर रानी लज्जित होकर बोली कि अच्छा मैं इसनिन्दित कार्य्यको नहीं करानाचाहती उसके ऐसाकहनेपर जब मन्त्री चलागया तब उसने मंत्रीके वचनो को अपने हृदयमें ध्यानकरके सखीकेद्वारा एकसंन्यासिनी बुलवाई और उससे सब अपना वृत्तान्त कहकर कार्य्यसिद्ध होजानेपर उसे बहुतसाधन देनेकहा वह दुष्टतपस्विनी धनकेलोभसे बोली कि हे रानी यहकौन वड़ीवातहै मैं तुम्हारे कार्य्यको सिद्धकरदूंगी मुझे अनेक प्रकारके बहुतसे प्रयोग मालूमहैं इसप्रकार रानीको समझाकर वह अपनी मठीमें आकर भयभीत होकर शोचने लगी कि अत्यन्त भोगतृष्णा किसे क्लेशनहीं देती है देखो मैंने रानीके आगेसहसा यहप्रतिज्ञा तो करलीहै परन्तु मुझे इसविषयमें प्रवीणता बहुतकमहै और राजगृहमें अन्यस्थानों के समान छलभी न करना चाहिये क्योंकि कपटखुलनेपर राजालोग सर्वनाशकरदेते हैं इसविषयमें एकउपायहै कि वह जोमेरामित्र नाई इसविषयमें प्रवीणहै वह चाहैतो उद्योग करसक्ताहै यह शोचकर उसने उसनाईके पासजाके अपना सम्पूर्ण मनोरथ वर्णनकिया तब उसधूर्त्तनाई ने शोचा कि भाग्यवशसे यहलाभका योग उपस्थितहुआ है इस्से राजाकी नवीन स्त्री कदलीगर्भाका नाश तो न करनाचाहिये क्योंकि उसका पिता दिव्यदृष्टिहै वह सम्पूर्ण वृत्तान्त जानजायगा परन्तु राजाका उससे वियोगकराके इस रानीसे खूबधन लेनाचाहिये और कुछ कालके उपरान्त फिर राजाके साथ उस नवीन रानीका संयोग कराके राजाके सन्मुख ऐसी वात कहनीचाहिये जिससे राजा और रानी कदलीगर्भा दोनों प्रसन्नहोयँ ऐसा करने से बहुत पापतो होगा नहीं परन्तु जीविका अच्छी होजायगी यह शोचकर वह नाई उससे बोला कि हे अम्ब मैं यह सवकाम करसक्ताहूं परन्तु योगवलसे रानी कदलीगर्भाका मारना योग्य नहीं है क्योंकि जोराजाजान जायगा तो हम सबका नाशकरदेगा दूसरे स्त्रीकी हत्याहोगी और तीसरे उसके पिता मुनि शाप देंगे इससे मैं अपनी बुद्धिके वलसे उसके साथ राजाका वियोग करवादूंगा तो पटरानी को सुखहोगा और मुझे धन मिलेगा मेरे लिये यह कोई बड़ीवात नहीं हैमैं बुद्धिसे कौनकार्य्य सिद्धनहीं करसक्ताहूं सुनो मैं अपनी चतुरता सुनाताहूं १२५ इस दृढवर्म्मा राजाका पिता बड़ा दुराचारीथा और मैं उसका सेवकथा एकसमय राजा भ्रमणकरताहुआ मेरे घरकी ओर आया और मेरी स्वरूपवती स्त्रीका मुखदेखकर उसका चित्त चलायमानहुआ तब उसने अपने सेवकों से पूँछा कि यह कौनहै सेवकों ने कहा कि यह आपके नापितकी स्त्री है सेवकों के वचनसुनकर यह जानकर कि नापित मेरा क्या करेगा राजा मेरे घरमें आकर मेरी स्त्री से यथेष्टभोगकरके चलागया मैं उसदिन भाग्यवश से कहीं वाहरगयाथा दूसरेदिन घरमें आकर मैंने अपनी स्त्री के कुछ नयेही ढँग देखे जब मैंने पूँछा तबउसने अभिमानपूर्व्वक सबवृत्तान्त कहदिया तब से मुझ अशक्तकी स्त्री के साथ राजा नित्यआकर रमणकरनेलगा ठीकहै (कुतोगम्यमगम्यंवाकुश्री

लोन्मादिनःप्रभोः वातो द्धतस्यदावाग्नेःकिंतृणंकिंचकाननम्) दुराचारसे उन्मत्त राजाको गम्यागम्यका विचार नहीं रहता वायुसे प्रचंड अग्निको जैसेतृण वैसेही वन यहदशादेखकर राजाके निवारण करने का कोई उपाय न जानकर मैंने अपना भोजन घटाकर शरीरको दुर्वलकरदिया और दुर्वलतासे वहुत श्वासलेताहुआ राजाके यहां हजामत वनानेको गया राजाने मुझको दुर्वलदेखकर गुप्त अभिप्राय से पूंछा कि अरे तू ऐसा क्योंहोगयाहै तव मैंने कईवार टालकर राजाके वहुत पूंछनेपर एकान्त में अभय मांगकर कहा कि हे महाराज मेरीस्त्री डाकिनी है वह नित्यमेरी आंतें मेरीगुदासे निकालकर चूसती है और चूसके उसीमें फिर रखदेती है इसीसे मैं दुर्वलहोगयाहूं और मुझे पुष्ट तथा धातुवर्द्धक भोजनभी नहीं मिलते हैं जिनसे कुछ वलवनारहे मेरे यह वचनसुनकर राजाने सन्देह पूर्व्वक विचारकिया कि क्या सत्यही वह डाकिनी है इसी से मेराचित्त उसके आधीन होगया जव मैं सोजाताहूं तव मेरी भी आंतें वह चूसतीहोगी परन्तु मैं वलकारी भोजन करताहूं इससे दुर्वलनहीं हुआहूं तो आज मैं युक्ति पूर्व्वक रात्रि में उसकी परीक्षा करूंगा इसप्रकार शोचकर राजाने मुझे वलकारी भोजन दिलवादिया १६० तदनन्तर मैं वहांसे अपने घरआकर अपनीस्त्री के पासरोनेलगा जव उसने पूछा कि क्यों रोतेहो तवमैंनेकहा कि हे प्रिये किसीसे कहना नहीं मैं तुमसे कहताहूं इसराजाकी गुदामें वज्रकेसमान पुष्टदांत निकले हैं इससे आज वालवनाते में मेरा वड़ा उत्तम छुराटूटगया इसीप्रकारसे जो मेरारोज छुराटूटेगा तो मैं नित्यनया कहांसे लाऊंगा इसकारण रोताहूं हाय मेरी जीविकाही नष्टहुई जाती है मेरे यहवचन सुनकर मेरीस्त्रीने अपने चित्तमेंकहा कि आजजव राजा रात्रिको आकर सोजावेंगे तव उनकी गुदाके दांतदेखूंगी देखो सम्पूर्ण संसारभरमें कहींभी नहीं देखीगई मेरी इसअसंभव वातको वह सचजानगई ठीकहै (विदग्धाअपिवञ्च्यन्ते विदग्धर्णैनयास्त्रियः) चतुरस्त्रियांभी धूर्त्तोंके कहने में फँसजाती हैं इसके उपरान्त रात्रिके समय राजामेरे यहांआकर और मेरीस्त्रीकेसाथ भोगकरके मेरे कहनेकी परीक्षा करनेके लिये झूठमूठसोरहा और मेरीस्त्रीने उसेसोयाहुआ जानकर गुदाकेदांत देखनेके लिये उसकी गुदाकीओर धीरे २ हाथ वढाया गुदामें हाथकेलगतेही राजा एकाएकी उठवैठा और डाकिनी २ यह कहकर भय-भीतहोकर अपने घरकोचलागया और फिरउसदिनसे डरकेमारे मेरेघरकभी न आया तव मैं अपनीस्त्रीके साथ आनन्द पूर्व्वक स्वाधीनहोकर रहनेलगा इसप्रकार मैंने अपनी वुद्धिके वलसे राजासे अपनी स्त्री छुटाईथी उसतपस्विनीसे यह वचनकह कहकर फिर नाईवोला कि मैं तुम्हारा यहकार्य अपनी वुद्धिकेवल से सिद्धकरदूंगा और उसका उपायभी मैं तुमको वतायेदेताहूं कि किसी अन्तःपुरमें रहनेवाले वृद्धपुरुषको अपनी ओर मिलाकर गांठलो वह राजासे एकान्तमें कहदे कि तुम्हारी रानीकदलीगर्भा डाकिनी है और उसीरानीका कोई सेवक रात्रिके समय किसी जीवके कटेहुए हाथपैर आदिक मन्दिर ऐसे स्थानमें रखदे जिसे राजा देखसके इसप्रकार यत्नकरनेसे कटेहुए अंगोंको देखकर राजा उसवृद्धके कहनेको सत्यमानकर भयभीतहोकर कदलीगर्भाको छोड़देगा इसउपायसे सौतकेअलगहोजानेसे पटरानी सुखपूर्वकरहैगी और तेरा वड़ा सत्कारकरेगी तव मुझेभी कुछ मिलजायगा नाईके यह वचन सुनकर उसकपटनी तपस्विनी

ने जाकर पटरानी से सबउपाय कहदिया तब उसने उसकी बताईहुई युक्तिकी इससे राजाने कदलीगर्भा में यह महाअवगुण देखकर उसे त्यागकरदिया तब पटरानी ने प्रसन्नहोकर बहुतसा धन उसतपस्विनीको दिया और उसने उसमें से नाईको भी बहुतसा धनदेकर प्रसन्नकिया इसके उपरान्त राजासे त्यागकी हुई कदलीगर्भा मिथ्यादोपों से सन्तप्त होकर राजमन्दिरसे निकलकर पूर्व में बोईहुई सरसोंके वृक्षोंकी पहचान से जिसमार्ग से आईथी उसी मार्ग के द्वारा अपने पिता मंकणक ऋषि के पासचलीगई वहां मंकणकने उसेएकाएकी आईहुई देखके सन्देहसे क्षणभर ध्यानकिया और ध्यानहीसे सम्पूर्ण वृत्तान्त को जानकर स्नेहसे उसका बड़ा आदर किया और समझाकर सावधान किया फिर उसे अपने साथमें लेकर मुनिने आपही राजाके यहां आकर राजा से सब सपत्नियों का कियाहुआ दोष कह दिया उस समय उस नाईनेभी राजाको वह सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाकरकहा कि हे राजा मैंने इसभयसे कि ऐसा न होय कि पटरानी इस कदलीगर्भाको मारण करवाके मरवाडालें इसलिये युक्ति पूर्व्वक आपसे वियोगकरवा दिया उसके यह वचन सुनकर और मुनिके वचनोंका विश्वास करके राजाने कदलीगर्भाको स्वीकार करलिया फिर मुनिको विदाकरके उसनाईको अपना शुभचिन्तक जानकर बहुतसा पारितोषिकदिया और अपनी पटरानीसे विमुखहोकर उसी कदलीगर्भाके साथ सुखपूर्व्वक रहनेलगा हे कलिंगसेना इस प्रकारके बहुतसे मिथ्यादोष सौतैं शुद्धस्त्रियों में लगादेती हैं इससे तुम बड़े यत्न पूर्व्वक अपनी रक्षा करना क्योंकि तुम अभी कन्याहो तुम्हारे विवाह होनेमें अभी बहुत देरहै और देवता लोगभी तुम्हारे इस रत्नरूपी स्वरूपकी अभिलाषा रखतेहैं यह स्वरूपही तुम्हारा इस समय शत्रु होरहाहै हे सखी अब मैं तुम्हारे पास नहीं आऊंगी क्योंकि अब तुम अपने पतिके मन्दिरमेंहो श्रेष्ठस्त्रियां अपनी सखीके पति के यहां नहीं जाती और मेरेपतिने भी आजमुझे निषेध करदियाहै तुम्हारे स्नेहसे मैं अपने पतिसे छुपकर भी यहां नही आसक्ती क्योंकि वह दिव्यदृष्टि है आजभी मैं उन्ही से पूंछकर यहां आईहूं हे सखी अब मेरा यहां कुछ कामनहीं है इस्से घरको जातीहूं जोमेरा पति मुझे आज्ञादेगा तो फिर भी मैं तुम्हारे पास आऊंगी आंसूभरके इन वचनोंको कहकर सोमप्रभा रोतीहुई कलिंगसेनाको समझाकर आकाश मार्गसे अपने स्थानको चलीगई १९६॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांमदनमंचुकालम्बकेषष्ठस्तरंगः ६॥

इसके उपरान्त अपने देश तथा बन्धुओंसे रहित और विवाहहोने में विलम्बहोने के कारण उदासीन कलिंगसेना अपनी प्रियसखी सोमप्रभाको स्मरणकरतीहुई कौशाम्बी नगरीमें वनसे छूटीहुई मृगी के समानरही और राजाउदयनभी कलिंगसेनाके विवाहकी लग्नको बहुतदूर बतानेवाले ज्योतिषियों पर कुछ कुपित्सा होके अपने चित्तको बहलाने के लिये रानी वासवदत्ताके महलमेंगया वहां यौगन्धरायण की शिक्षाके अनुसार वासवदत्ताने निर्विकारहोकर उसका बड़ासत्कारकिया उससमय राजा ने कलिंगसेनाके वृत्तान्तके प्रसिद्धहोजानेपरभी यहखिन्न क्योंनहींहै यहशोचकर उसके अभिप्राय के जाननेके लिये कहा कि हे प्रिये क्यातुमको मालूम है कि कलिंगसेना नाम राजपुत्री मेरे साथवि-

वाह करनेको आई है यहसुनकर वासवदत्ता प्रसन्नतापूर्व्वक बोलीकि मैं जानतीहूं वहतोसाक्षात् लक्ष्मी ही आपके यहां आई है कलिंगसेनाके विवाहसे राजाकलिंगदत्त के आपके आधीनहोजानेपर यह सम्पूर्ण पृथ्वी आपके वशमें होजायगी मुझे तोआपहीके ऐश्वर्य्य तथा सुखसेसुखहै यहवात तो आप को पहलेहीसे विदितहै क्यामैं धन्यनहींहूं जिसके आपसरीके पतिहो जिनके लिये राजाओं की कन्या अन्यराजाओंको छोड़कर अभिलाष करती हैं वासवदत्ताके यहवचनसुनकर राजा उदयन् बड़ा प्रसन्नहुआ और उसीके साथ मद्यपान करके वहीं सोगया कुछ कालकेपीछे जवराजाकी निद्राखुली तव उसने शोचा कि रानी वासवदत्ताकैसी महानुभावहै और कैसीमेरी शुभा कांक्षिणी है जो कलिंगसेनाको अपनी सौतवनाने में भी निषेध नहींकरती अथवा इसने भाग्य वशसे पद्मावती के विवाहमें शरीर नहीं छोड़ाथा परन्तु कलिंगसेनाकेविवाहको यहनहीं सहसकेगी और जो इसकेलिये कोई अनिष्टहुआ तो मेरा सर्वनाशहोजायगा क्योंकि पुत्र श्वशुर सालेतथा पद्मावती और राज्यपर्य्यन्त सव इसीके अवलंवनसेहैं इससे मैं कलिंगसेनाकेसाथ कैसे बिवाहकरूं इसप्रकार शोचकर राजा प्रातःकाल वहांसे चलाआया और मध्यान्हके उपरान्त रानीपद्मावती के यहांगया वहां पद्मावतीने भी वासदत्ता की शिक्षाके अनुसार राजाका वड़ा सत्कारकिया और कलिंगसेनाके बिवाहकेविषयमें पूछनेपर रानी वासदत्ताही के समान उत्तरदिया दोनोंरानियों का चित्ततथा वचन एकहीसाजानकर राजाने दूसरे दिन यहवात यौगन्धरायण से कही यौगन्धरायण भी राजाको विचारमें पड़ाहुआ जानकर समय के अनुसार कहनेलगा कि मेरी बुद्धिसे रानियों का यही अभिप्राय नहींहै उन्होंने प्राणत्यागनेका विचार करके यहवचन कहा है पतिके अन्यमें आशक्तहोजाने पर अथवा मरजानेपर साध्वी स्त्रियांप्राणदेने का निश्चयकरके दीनताको नहीं प्राप्तहोती हैं और सम्पूर्ण विषयों से निष्पृहहोजाती हैं कुटुम्बिनी पतिव्रता स्त्रियों को वड़े प्रेमका अत्यन्ततोड़ना वहुत असह्यहोता है इस विषयमें मैं आपको राजा श्रुतसेनकी कथा सुनताहूं कि दक्षिण दिशामें गोकर्णनामपुर में श्रुतसेननाम एक विद्वान् राजा था राजाको सम्पूर्ण संपत्तियों के होनेपर भी एकयह वड़ी चिन्ताथी कि उसे कोई अपने अनुरूप स्त्री नहीं मिलती थी एकसमय चिन्ता करते हुए राजासे प्रसंगपाकर अग्नि शर्म्मानाम ब्राह्मण ने कहा कि हे महाराज मैंने दोआश्चर्य्य देखेहैं वह आपके आगे कहताहूं मैं एकसमय तीर्थ यात्राकरते २ उस पंचतीर्थी में पहुंचा जिसमें किसी ऋषिके शापसे पांच अप्सरा ग्राह होकर रहतीथीं जिनका तीर्थयात्रा के समय अर्जुनने उद्धार कियाथा उस तीर्थका यह माहात्म्य है कि जो मनुष्य वहांपांच दिन उपवास करके रहते हैं वह विष्णु भगवान्के पार्षद होजाते हैं ऐसे पवित्र उस तीर्थमें स्नानकरके जैसे मैं कुछ दूरचला वैसेही देखा कि किसी खेतमें एकखेती करनेवाला खेतजोतरहाहै और कुछ गारहाहै उसखेती करनेवाले से उसीमार्गमें आतेहुए किसी संन्यासीने कहींका मार्गपूंछा वह उसके वचनको न सुनकर गाताहीरहा तव वह संन्यासी क्रोधकरके उस्से कटुवचन कहनेलगा कटुवचनोंको सुनकर वह अपना गीत छोड़करवोला कि तू संन्यासी होकर भी धर्मके अंशको नहीं जानता मैंने तो मूर्ख होकरभी धर्मका

मारांश जानलिया यह सुनकर संन्यासीने कहा कि तुमने क्या जानलियाहै तब वह बोला कि यहांछाया में बैठजाओ मैं तुमसे कहताहूं सुनो इस प्रान्तमें ब्रह्मदत्त, सोमदत्त, और विष्णुदत्त यह तीनसगे भाई ब्राह्मण रहते हैं उनमें से दोका तो विवाह होगया है और छोटेका नहीं हुआ है वह विष्णुदत्त नाम छोटाभाई अपने बड़े भाइयोंकी आज्ञाको पालन करताहुआ मेरे साथ सेवकों के समान क्रोध रहित होकर रहताथा मैं उनके घरका खितियरहूं ब्रह्मदत्त और सोमदत्त दोनों बड़ेभाई साधू सन्मार्गी सीधे तथा निरालस्यी अपने छोटे भाई विष्णुदत्तको मूर्ख समझतेथे एक समय विष्णुदत्तकी भावीलोगोंने कामातुरहोके उससे रतिकरनेकेलिये कहा परन्तु उसने उनको माताके समान जानकर निषेधकरदिया तब उन दोनोंने अपने २ पतिसेकहा कि यह तुम्हारा छोटाभाई एकान्तमें हमाराधर्म भ्रष्टकरना चाहताहै स्त्रियोंके कहनेसे वह दोनों उसपर कुपितहोगये ठीकहै (सदसद्वानहिविदुःकुस्त्रीवचनमोहिताः) दुष्टस्त्रियोंके वचनोंसे मोहित पुरुषोंको अच्छेबुरे और सत्यासत्यकाज्ञान नहीं होता ४२ तब उनदोनों भाइयोंने विष्णुदत्तसे कहा कि तुम खेतमें जाकर वहाँ जो सर्पकीबामीहै उसे बराबरकर आओ उनकी आज्ञापाकर वह कुदालीलेके यहाँ आकरबामीको खोदनेलगा उसे खोदतेदेखकर मैंने निषेध किया कि अरेइसमें कालासर्प है इसको मतखोदो मेरेवचनोंको सुनकरभी जो होनाहोगा सो होगा ऐसा कहकर वह अपने पापी बड़ेभाइयोंकी आज्ञाको उल्लंघन न करके उसे खोदताहीरहा खोदते खोदते एक सुवर्णसे भराहुआ कलश उसमें उसकोमिला और सर्प नहीं दिखाईदिया ठीकहै (सदासर्वत्रधर्मोहि सान्निध्यंकुरुतेसताम्) धर्मसर्वत्र सज्जनलोगोंकी सदैव सहायताकरताहै तब उसने मेरे निषेधकरने परभी वह सब धन अपने भाइयोंकोलाकर देदिया उन दोनोंसे उसीधनमेंसे कुछधनघातकोंको देकर सब धनलेने की इच्छासे उसके हाथ पैर कटवाडाले इतने परभी उसने अपने भाइयोंपर क्रोध नहीं किया इसीधर्मके प्रभावसे उसके हाथ पैर फिर यथावस्थितहोगये इस वृत्तान्तको देखकर मैंने सम्पूर्ण क्रोध उसीदिनसे त्यागकरदिया और तुमने तपस्वीहोकर भी अब तक क्रोध नहीं छोड़ा इसीसमय देखलो कि मैंने क्रोधके जीतनेसे स्वर्गको जीतलिया यह कहकर वह खेतीकरनेवाला शरीरको त्याग करस्वर्गको चलागया एक आश्चर्य्य तो मैंने यह देखाहै अब दूसरासुनिये फिर वहाँसेभी चलकर तीर्थ यात्राकेनिमित्त समुद्रके तटपर भ्रमण करता २ मैं राजावसन्तसेनके राज्यमें पहुंचा वहाँ भोजन करनेकेलिये जब मैं राजाके सदावर्त्तमें जानेलगा तो वहाँ के ब्राह्मण मुझसेबोले कि हे ब्राह्मण इस मार्गसे मतजाओ यहाँ विद्युद्द्योतानाम राजकन्याबैठी है यदि कोई मुनिभी उसको देखलेवे तो वह कामसे व्याकुलहोके उन्मत्तहोकर मरजाय तब मैंने उनसे कहा कि यह कोई आश्चर्य्यकी बात नहीं है मैं सदैव कामके समान सुन्दर राजाश्रुतसेनको देखताहूं जब वह राजायात्रादिकोंमें निकलताहै तब रक्षकलोग सत्कुलकी स्त्रियोंको उनके धर्मके भंगहोजानेके भयसे मार्ग में से हटादेते हैं मेरे यह वचन सुनकर मुझे आपका ब्राह्मणजानके सदावर्त्तके अधिकारी पुरोहितलोग मुझे भोजनकरानेके लिये राजाके पासलेगये वहाँ जाकर मैंने कामदेवकी जगतको मोहित करनेवाली मूर्त्तिमतीविद्या के समान

राजपुत्री विद्युद्द्योतादेखी कुछ कालमें उसके दर्शन से होनेवाले वेगकोरोककर मैंने शोचा कि जो हमारे राजाकी यह स्त्री होय तो वह राज्यको भूलजाय तथापि यह वृत्तान्त राजा से अवश्य कहना चाहिये नहीं तो उन्मादनी और देवसेनकासा वृत्तान्त होजानेका भय है राजादेवसेनके राज्य में जगत्को उन्मत्त करनेवाली किसी वणियेकी उन्मादनी नाम कन्याथी उसवैश्यके प्रार्थना करने परभी राजाने उसे अंगीकार नहीं कियाथा क्योंकि ब्राह्मणोंने राज्यकी हानि समझकर राजासे कहदियाथा कि इसकन्याके लक्षण अच्छे नहीं हैं राजाके स्वीकार न करने पर राजाके प्रधान मंत्रीने उसके साथ विवाहकरलिया एक समय उस उन्मादनीने झरोखेमें खड़ेहोकर राजाको अपना स्वरूपदिखादिया उस उन्मादिनी रूप सर्पिणीकी दृष्टिरूपी विषसे मारागया राजा वारंवार मूर्च्छितहुआ और ऐसा विकलहो गया कि उसने भोजनभी नहीं किया राजाको विकल देखकर उन्मादिनी पति अपने प्रधान मन्त्रीके प्रार्थना करनेपर भी उस धार्मिक राजाने उन्मादनीको ग्रहण नहीं किया और विकलहोकर प्राणत्याग करदिये इससे जो मैं राजासे नहीं कहूंगा तो उपकारके बदले हानिहोगी यहशोचकर मैंने आपसे यहां आकर यह दूसरा आश्चर्य्य भी कहदिया ६७ उस ब्राह्मणसे कामकी आज्ञाके समान इन वचनोंको सुनकर राजा श्रुतसेनका चित्त विद्युद्द्योतामें आशक्तहोगया और उसीसमय उसने उसब्राह्मणको वहां भेजकरऐसा उपायकिया जिससे शीघ्रही वहराजपुत्री विद्युद्द्योता राजावसन्तसेन के यहां से आगई और उसकेसाथ राजाका विवाह होगया राजाको विद्युद्द्योता ऐसी प्रियहोगई कि सूर्य्यकी प्रभाके समान वह राजासे क्षणभर भी अलग नहीं हुई इसके उपरान्त एक महाधनवान् वैश्यकी मातृदत्तानाम कन्या अपने रूपके अभिमानसे राजासे स्वयंवर करनेकोआई राजाने अधर्मके भयसे उसवैश्य कन्याको अं-गीकार करलिया इसवृत्तान्तको जानकर विद्युद्द्योता हृदय फटकरमरगई और राजाभी अपनी प्रियाकी यहदशा देखकर उसे गोदीमेंही धरेहुए मरगया तब वह वैश्यकी लड़की मातृदत्ता भी राजाके साथ सतीहोगई इसप्रकार वह सम्पूर्ण राज्यही राजाकेमरनेसे नष्टहोगया इससे हेराजा घनेप्रेमकाटूटना बहुत ही असह्य और कठिन होताहै और इस धीरगंभीर वासवदत्ताको तो अत्यन्तही दुस्सहहोगा इनदोनों रानियोंके गंभीर वचनोंहीसे मालूम होताहै कि इनका चित्त प्राणदेनेके निश्चयसे सबबातोंसे निस्पृह होगया इससे हेराजा जो आपकलिंगसेनाके साथ विवाह करियेगा तो रानी वासवदत्ता अवश्य प्राण छोड़देगी और रानी पद्मावती भी मरजायगी क्योंकि इनदोनोंका एकही जीवनहै रानी वासवदत्ता के मरनेसे आपके पुत्र नरवाहनदत्तका भी जीना कठिन होजायगा और इनसब दुःखोंको आपभी मेरी बुद्धिसे न सहसकियेगा इसप्रकार यहसब बनाबनाया खेल एकसाथही नष्टहोजायगा इससे आपको स्वार्थकी रक्षाकरनी चाहिये पशुपक्षी भी अपनी रक्षा करना जानतेहैं फिर आपसरीके बुद्धिमान मनुष्योंका क्या कहना है यौगन्धरायणके यहवचन सुनकर राजा उदयन् अच्छे प्रकारसे विवेकयुक्त होके यहवचन बोला कि आपकाकहना निस्सन्देह बहुत ठीकहै जो मैं विवाह करूंगा तोअवश्य मेरा सर्व नाशहोजायगा इससे कलिंगसेनाके विवाह से मुझे क्या प्रयोजन है ज्योतिषियों ने जो मुझे

लग्नदूरवताई यहवहुतही अच्छा किया और स्वयंवरकेलिये आईहुई इसकलिंगसेनाके त्यागसे अधर्मही कितना होगा राजाके यहवचन सुनकर यौगन्धरायणने अपने चित्तमें शोचा कि मेरा कार्य्य अव सिद्धप्रायही है (उपायरससंसिक्तादेशकालोपवृंहिता सेयंनीतिमहावल्लीकिंनाम नफलेत्फलम्) उपाय रूपी जलसे सींचीहुई और देशतथा कालकोपाकरवढ़ीहुई नीतिरूपीलतामें कौन २ फलनही फलतेहैं इसप्रकार शोचकर देशतथा कालकाविचार करताहुआ यौगन्धरायण राजाको प्रणामकरके अपनेघर कोचलागया और राजाभी वासवदत्ताके यहांजाकर अपनेहृदयके अभिप्रायको छिपाकर सत्कारकरने वाली रानीवासवदत्तासे वोला कि हेमृगनयनीतुम मेरेवचनों के अभिप्रायको जानतीहो जैसे कमलका जीवनमूलजलहै उसीप्रकार मेरा जीवन तुम्हाराप्रेमहै मैं दूसरी स्त्रीकानाम भी नहीं लेनाचाहताहूं परन्तु कलिंगसेना हठकरके मेरेयहां आई है और यहवात प्रसिद्धहै कि रंभातपकरतेहुए अर्जुनकेपास हठ पूर्व्वकरमण करनेको आई जव अर्जुनने उसे स्वीकारनहींकिया तव नपुंसकहोने का शापदेकर चली गई वहशाप अर्जुनने विराटकेयहांरहकर स्त्रीवेशधारण करके भोगा इस्से मैंने उससमय कलिंगसेना का निषेधनहींकिया परन्तु तुम्हारी इच्छाकेविना मैं उस्से कुछ भी नहीं कहसक्ताहूं इसप्रकार उसेसमझाकर और उसके हृदयके क्रूर अभिप्रायको जानकर यौगन्धरायणकी वातोंपर विश्वास करताहुआ राजा उसरात्रिको वासवदत्ता के साथ उसीके मन्दिर में रहा ६४ इसवीचमें यौगन्धरायणने कलिंगसेनाके वृत्तान्तको जाननेकेलिये जिस योगेश्वर नाम ब्रह्मराक्षसको नियतकियाथा उसने आकर यौगन्धरायणसे कहा कि मैं कलिंगसेनाके यहॉ निरन्तर स्थितरहा परन्तु दिव्य अथवा मनुष्य किसीको भी वहाँ आतेहुए मैंने नहीं देखा आज सायंकालके समय मैंने अकस्मात् महलके ऊपर आकाशमें कोई अव्यक्त शव्दसुना उसशव्दके कारणको जाननेकेलिये मैंने अपनी विद्याचलाई परन्तु चली नहीं तव मैंने विचारा कि कलिंगसेनाकी सुन्दरताके लोभसे आकाशमें भ्रमण करतेहुए किसीदिव्य प्रभावशाली पुरुषका यहशव्दहै क्योंकि मेरीविद्या इसपर नहीं चलती इस्से कुछ औसर देखताहूं जागते हुए चतुर पुरुषों को पराया छिद्रजानना कठिन नहीं होताहै मन्त्रिवर यौगन्धरायणने मुझसे कहाहै कि दिव्यपुरुष भी कलिंगसेनाकी अभिलाषा करते हैं और इसकी सखी सोमप्रभाको भी मैंने यही वात कहतेहुए सुनाथा यहनिश्चय करके मै आपसे भी यही कहने को यहाँ चलाआयाहूं अव मैं एकवात आपसे प्रसंगपाकर पूछता हूं सो कहिये आपने राजाउदयन् से कहाथा कि पशुपक्षी भी अपने आत्मा की रक्षा करते हैं यहवात मैंने अलक्षितहोके योगके द्वारा सुनलीथी यदि इसविषय में आपको कोई दृष्टान्त मालूमहोय तो कहिये योगेश्वरके यहवचनसुनकर यौगन्धरायण वोला कि हे मित्र इस विषयपर एककथाहै वहमैं तुमको सुनाताहूं विदिशा नाम नगरी के वाहर एकवड़ा वर्गदका वृक्षथा उसमें नौला उल्लू विलार और मूसा यहचारों प्राणी अलग २ स्थानों में रहते थे जड़ में मूसा और नौला अलग२विलमें रहतेथे विलावृक्षके मध्यमें किसीवड़ेभारी खोलमें रहताथा और उल्लू वृक्षकी चोटी जहां कोई पहुंच नही सक्ताथा उसपर रहताथा इनमेंसे विलार नौला तथा उल्लू इनतीनों

का मूसा भोजनथा और बिलावके मूसा, नौला तथा उल्लू यह तीनों भोजनथे, बिल्लीके भयसे मूसा तथा नौला अपने आहार तथा भोजनकेलिये रात्रिमें बाहर निकलतेथे और उल्लू स्वभावहीसे रात्रिको अपने भोजनको निकलताथा और बिलाव रात्रि दिन निर्भय होकर जब चाहताथा तब निकलताथा उस वृक्षके निकट एक जौका खेतथा उसमें जब बिल्ली उल्लू तथा नौला अपने आहारके लिये जातेथे तब वह यहभी चाहाकरते थे कि मूसा मिलजाय तो हम उसेभी मारकर खाजायँ एकसमय कोई बहेलिया वहां आया उसने बिल्लीके पंजे खेतकी तरफ गयेहुए देखकर उसके मारनेकेलिये खेतके चारों ओर जालबिछादिया जब रात्रिके समय बिलाव मूसेके मारनेकी इच्छासे खेतमेंगया तो वहां जालमें फँसगया फिर अन्नके निमित्त वहां गयाहुआ मूसा बिलावको जालमें फँसा देखकर प्रसन्नहोकर उछलने कूदनेलगा और बिल्ली से दूरके मार्ग से खेतके भीतर चलागया उससमय उल्लू तथा नौला यह दोनों भी वहां गये और बिलावको बंधादेखकर मूसेको पकड़नेकी इच्छाकरनेलगे मूसेने दूरहीसे उन दोनोंको देखकर चित्तमेंशोचा कि जो नौला तथा उल्लूको भय देनेवाले बिलावकीशरणमें जाऊं तो जालमें बंधाहुआभी अपनेपंजेके एकही प्रहारसे मुझे मारडालेगा और जो उसकेपास न जाऊं तो यहदोनों मुझे मारडालेंगे तो अब इनशत्रुओंके बीचमें पड़कर मैं क्या करूं और कहांजाऊं इससमय इस बिलारहीकी शरणमें मुझे जानाचाहिये क्योंकि यह इससमय आपत्ति में पड़ाहै अपने बचानेके लिये मुझे जालके काटनेका उपयोगी समझकर अवश्य बचावेगा यह शोचकर मूसा धीरे बिलारके पास जाकर बोला कि तुम्हें बन्धनमें पड़े देखकर मुझे बड़ा खेदहोताहै इससे मैं तुम्हारे जालको काटे देताहूं सीधे जीवोंको साथमें रहनेसे शत्रुओं परभी स्नेह होजाताहै परन्तु तुम्हारे ऊपर मुझे विश्वास नहीं है क्योंकि मैं तुम्हारे चित्तकी बात नहीं जानता यहसुनकर बिलारबोला कि तुम मेरे ऊपर विश्वास करो आजसे तुमप्राणोंकीरक्षा करनेके कारण मेरे मित्रहोगये उसके इसप्रकार कहनेपर मूसा उसके पास जाकर बैठगया यह देखकर नौला और उल्लू निराशहोके वहांसे चलेगये तदनन्तर बिलारने मूसे से कहा कि हे मित्र रात्रि बहुत थोड़ी रहगई है इससे बहुतशीघ्र मेरेजालकोकाटदो तबमूसा धीरे २ पाशोंकोकाटता हुआ बहेलियेके आनेकी बाट देखताहुआ बहुतकालतक झूठमूठ दांत कटकटायाकिया जब रात्रिव्यतीत होगई और बहेलिया आगया तबबिलारकी प्रार्थनासे मूसेने सबजालकी फांसीकाटदीं पाशोंके कटजाने पर बिलार तो बहेलियेके भयसे भागगया और मूसा मृत्युके मुखसे बचकर भागकर अपने बिलमें घुस गया और फिर जब उसे बिलारने बुलाया तो उसने उसपर विश्वास न करकेकहा कि कालके संयोग से शत्रु भी मित्रहोजाताहै परन्तु वह सदैव मित्र नहीं बनारहता इसप्रकार मूसेने भी बहुतसे शत्रुओं में अपनी रक्षाकी तो मनुष्योंकेलिये क्या कहना चाहिये यही बात सोचकर मैंने राजा से कहाथा कि वह बुद्धिपूर्वक अपनी वासवदत्ता रानीकी रक्षाकरके अपने कार्य्यको संभाले सो तुमने भी सुनलिया होगा हे योगेश्वर बुद्धिही सर्वत्र सबकीमुख्य मित्रहै बुद्धिहीन पुरुषार्थ से कुछनहीं होता इस विषयमें भी मैं तुमको एक कथासुनाताहूं १५२ श्रावस्तीनाम नगरी में प्रसेनजित नाम एकराजाथा उसके पुर

में कोई अपूर्व्व ब्राह्मण आया वहशूद्रका अन्ननहीं खाताथा इससे किसी वैश्यने उसे किसी ब्राह्मणके घरमें टिकादिया और शुष्कअन्न तथादक्षिणा उसे रोजदेनेलगा कुछदिनमें अन्यवैश्य भी उसे पहचान कर शुष्कअन्न और दक्षिणा देनलगे इसप्रकार अधिक प्राप्तिहोने से उसने धीरे २ हजार अशर्फी इकट्ठीकी और वनमें जाकर वहसव अशर्फी कहीं पृथ्वीमें गाड़ दीं वह अकेला प्रतिदिन वनमें जाकर उसस्थानको देखआताथा एकदिन उस ने उस स्थानको खुदाहुआ देखा और अशर्फी वहां न देखीं उस गढ़ेको शून्य देखकर केवल उसका चित्तही शून्यनहीं होगया किन्तु उसको सवदिशाभी शून्य ही दिखाई देनेलगीं फिररोताहुआ उसब्राह्मणके यहाँआया जिसके यहाँ टिकाथा उसेरोते देखकर गृह के स्वामीने पूछा कि तुम क्यों रोतेहो तव उसने अपना सववृत्तान्त कहदिया और तीर्थपरजाके अनशन व्रतकरके अपने प्राणदेनेको उद्यतहुआ इसवृत्तान्तको सुनकर वह अन्नदाता वणिया भी अन्य वणियेंको साथलेकर आया और उससे कहनेलगा कि हे ब्राह्मण तुम धनके निमित्त क्यों प्राणदेना चाहतेहो धनतो अकालमेघके समान आया जाया करताहै अन्नदाता वैश्य के यह वचन सुनकरभी उसने शरीर त्याग करनेका हठनहीं छोड़ा ठीकहै (प्राणेभ्योप्यर्थमात्राहि कृपणस्यगरीयसी) लोभी को प्राणोंसे भी अधिक धन प्यारा होताहै तव मरनेके लिये तीर्थपरजातेहुए उसब्राह्मणके वृत्तान्तको जानकर राजा प्रसेनजित्ने आपही वहाँ आकर उससे पूछा कि हे ब्राह्मण जहाँ तुमने वह धनगाड़ाथा उसपृथ्वीकी कुछ पहचानभी मालूमहै उसने कहा कि हाँ महाराज वनमें एकछोटा सा वृक्षहै उसकी जड़में मैंने अपना धनगाड़ा था यहसुनकर राजाने कहा तुमप्राणमतदो तुम्हारा धन हमढुँढ़वादेंगे या अपने खजानेसेदेंगे इसप्रकार कहकर और ब्राह्मणको मरनेसे निवारणकरके राजा अपने मन्दिर को चलागया वहाँ प्रतीहारको बुलाकर यहआज्ञा दी कि मेरे शिरमें पीड़ाहै इससे ढंढोरा पीटकर नगर भरके वैद्योंको बुलाओ इसप्रकार सववैद्योंको बुलाकर एक २ वैद्यसे राजाने पूछा कि तुम्हारेपास कितने कौनरोगी हैं और तुमने किसको कौनसी दवादी है संपूर्ण वैद्योंने अपने २ रोगी तथा औषधियां वताईं उनमेंसे एकने कहा कि मातृदत्तनाम रोगी वणियेको मैंने दो दिन से नागवला औषध वताई है यहसुनकर राजाने उसवणियेको बुलाकर पूछा कि तुम्हारेलिये नागवला कौनलायाथा उसने कहा कि एकमेरा सेवक लायाथा तवराजाने उसके सेवकको बुलाकर कहा कि तुमने नागवलाके लिये वृक्षकी जड़ खोदनेमें जो अशर्फी पाई हैं वहदेदो यहब्राह्मणकी हैं राजाके इसप्रकार कहनेसे वहडरकर अशर्फीलाके उसीसमय देगया और राजाने उसीसमय उसब्राह्मणको बुलाकर उसके वाहर चलनेवाले प्राणोंके समान वहअशर्फी देदीं इसप्रकार राजाने उसवृक्षकी जड़में उसऔषधिको जानके बुद्धिवलसे ब्राह्मणकी अशर्फीपाई इससेसदैव पुरुषार्थकी अपेक्षा बुद्धिप्रधानहै ऐसेकार्य्योंमें पराक्रम क्याकरसक्ता है इससे हेयोगेश्वर तुमभी बुद्धिसे ऐसाकरो जिससे कि कलिंगसेनाका कोईदोष मालूमहोय क्योंकि किसी दोषके मिलजानेसे न उसकेलिये कोई वुराईहोगी न हमारे लियेहोगी राजा उसकेसाथ विवाह न करेगा और किसीप्रकारका अधर्म्म भी न होगा १८९ योगन्धरायणके यहवचनसुनकर योगेश्वर प्रसन्नहोकर

बोला कि वृहस्पतिजीको छोड़कर तुम्हारे समान नीतिका जाननेवाला और कौनहै राज्यरूपी वृक्षके लिये तुम्हारा मंत्र अमृत सींचनेके समानहै मैं अपनी बुद्धि तथा शक्तिके अनुसार कलिंगसेनाके आचरणजाननेको अहर्निश उद्योगकरूंगा यहकहकर योगेश्वरचलागया उनदिनों कलिंगसेना अपने महलपरसे वत्सराज उदयनको देखकर व्याकुलहुआ करतीथी कामसे व्याकुलहोके उसकाचित्त राजाही में लगारहताथा पुष्पों के आभूषण तथा हारों के पहरने से और चन्दनके लेपसे भी उसको शरीर में शीतलता नहीं मालूमहोतीथी इसबीचमें कलिंगसेनाको पहले देखकर मदनवेगनाम विद्याधरोंका स्वामी कामसे अत्यन्त पीड़ितरहा और कलिंगसेनाकी प्राप्तिकेलिये तपकरके श्रीशिवजी से वरपाकरभी कलिंगसेना अन्यदेशमें रहनेके कारण तथा अन्यपुरुषमें आशक्तहोनेके कारण उसको सुलभनहीहुई इसी से औसरपाने के लिये वह मदनवेग रात्रिके समय कलिंगसेनाके मन्दिरके ऊपर घूमाकरता था एक दिन रात्रिकेसमय उसने श्रीशिवजीकी आज्ञाको स्मरणकरके अपनी विद्याके प्रभावसे राजाउदयनका स्वरूप धारणकरलिया और उसीरूपसे कलिंगसेनाके मंदिरमें प्रवेश किया द्वारपालोंने उसकी वन्दनाकी और यह जाना कि राजा उदयन् लग्नके कालतक ठहरनहीसका है इसीसे मंत्रियों से छिपकर यहां रात्रिको आयाहै कलिंगसेनाभी उसे भीतरआया देखकर कंपायमान होकर उठी उठने में जो उसके आभूषण बजे वह मानों अपने शब्दोंसे उसेनिवारण करतेथे कि यहराजा उदयन् नहीं है तब उदयन के स्वरूपसे कलिंगसेना को विश्वासित करके मदनवेगने उसके साथ गान्धर्व विवाह करलिया उस समय योग से अलक्षित होकर वहां स्थित योगेश्वरनाम ब्रह्मराक्षसने राजाउदयन् को देखकर बहुत अप्रसन्नहोके उसीसमय योगन्धरायण से जाकर सबवृत्तान्त कहा फिर योगन्धरायणके कहने से युक्ति पूर्वक वासवदत्ताकेपास राजा उदयन्को सोताहुआ देखकर प्रसन्नहोके योगन्धरायणही के कहने से फिर कलिंगसेनाके यहां उस बनेहुए उदयनके सोजानेपर यथार्थ स्वरूपके देखनेको वहलौटगया वहाँ जाकर उसने सोईहुई कलिंगसेनाके पलंगपर सोयेहुए मदनवेगको उसके निजस्वरूपमें देखा छत्र तथा ध्वजाके चिन्होंसे युक्तशोभितहुए चरणवाले दिव्यपुरुष मदनवेगको शयनमें विद्याओंके अन्तर्द्धान होजाने से निजरूपमें स्थितदेखकर योगेश्वरने जाकर योगन्धरायण से निवेदन करदिया और बहुत प्रसन्नहोके कहा कि मंत्रिवर मैं कुछ नहीं जानताहूं तुम नीतिरूपीनेत्रोंसे सब जानतेहो तुम्हारे मन्त्रके बलसे यह दुस्साध्य कार्य्य भी सिद्धहोगया (किंव्योमविनार्केण किंतोयेनविनासरः किंमन्त्रेण विना राज्यंकिंसत्येनविनावचः) सूर्य्यके बिना आकाश क्याहै जलके बिना तड़ागही क्याहै मन्त्रके बिना राज्य क्याहै और सत्यके बिना वचन क्याहै योगेश्वरके इसप्रकार वचनसुनकर योगन्धरायण प्रसन्नहोके प्रातःकाल वत्सराजके पासगया वहाँ जाकर जब राजाने पूछा कि कलिंगसेनाके लिये क्याकरना उचितहै तब उसने कहा कि वह स्वच्छन्दहै इससे आपको उसका स्पर्शभी नहीं करनाचाहिये यह अपनीही इच्छासे राजा प्रसेनजितके देखनेको आईथी उसे वृद्धदेखकर विरक्तहोके रूपकेलोभसे आपके पास आई इससे यह अन्यपुरुषोंकी भी समागम स्वेच्छासे करती है यह सुनकर राजाने कहा कि वह

बड़ी कुलीनकन्याहै ऐसा कभी न करेगी और मैं रे अन्तःपुरमें जाही कौनसका है राजाके यह वचन सुनकर यौगन्धरायण बोला कि हे राजा मैं आजही आपको प्रत्यक्ष दिखादूंगा सिद्धादिक दिव्यपुरुष उसकी अभिलाषा करते हैं इससे मनुष्य तो वहां नहींजासक्तेहैं परन्तु दिव्यपुरुषों को कौनरोकसक्ताहै चलिये मैं आपको साक्षात दिखाइंगा तवराजाने रात्रिके समय उसके यहाँ जानेका निश्चयकिया राजा से ऐसा निश्चयकरके यौगन्धरायणने रानी वासवदत्ताकेयहाँ जाकर उससे कहा कि पद्मावतीके सिवाय और कोई तुम्हारी सपत्नी नहींहोगी यह जो मैंने तुमसे प्रतिज्ञाकी थी वह सब आज पूर्णहुई यह कहकर कलिंगसेनाका संपूर्ण वृत्तान्त कहदिया यहसुनकर वासवदत्ता बहुत प्रसन्नहोकर नम्रता पूर्वक बोली कि यह आपकी शिक्षाके अनुसार कार्य्य करनेका फलहै १९२ तदनन्तर अर्धरात्रि के समय यौगन्धरायण राजाको साथलेकर कलिंगसेनाके मन्दिरकोगया और वहां जाकर सोतीहुई कलिंगसेनाके साथ सोतेहुए मदनवेगको उसके निजस्वरूप में देखा राजाने उसे देखकर जैसे चाही कि इस साहसिकको मारडालूं वैसेही वह विद्याके प्रभावसे जगपड़ा और आकाशको उड़गया क्षणभर में कलिंगसेनाने भी जगकर सूनीशय्या देखकर कहा कि वत्सराज पहले जगा कर मुझे सोतीहुई छोड़कर चलेजाते हैं यहसुनकर यौगन्धरायणने राजासे कहा कि इसविचारीको इस पुरुषने तुम्हारा रूप धारण करके भ्रष्टकरदिया है मैंने यहवात योगवलसे जानके प्रत्यक्ष तुम्हें दिखादीहै यहपुरुष दिव्य प्रभावशालीहै इसको कोई मारनहींसक्ता यहकहकर यौगन्धरायण राजाको लेकर उसके पासगया उनदोनों को देखकर कलिंगसेनाने बड़ा आदरकरके कहा कि हे राजा अभी आप कहाँजाकर मंत्रीको साथ लेकर चलेआये उसके वचनसुनकर यौगन्धरायण बोला कि हे कलिंगसेना किसी ने मायासे उदयन का रूपवनाके तुमको मोहितकरके तुम्हारे साथ विवाह करलियाहै हमारे राजाके साथ तुम्हारा विवाह नहीं हुआहै यहसुनकर उसकी छाती में बाणसालगा और बहुत घबराकर आंसूभरके उदयनसे कहने लगी कि हे राजा गान्धर्व विधिसे भी मेरेसाथ आप विवाहकरके मुझे भूलेजातेहो जैसे कि शकुन्तला को राजादुष्यन्त भूलगया था तब राजाने नीचेको मुखकरके उससे कहा कि मैंने तुम्हारे साथ विवाह नहीं कियाहै मैं तो यहाँ आजही आयाहूं इसप्रकार कहतेहुए राजाको यौगन्धरायण यह कहकर कि चलोचलें राजमंदिरमें लिवालाया जबराजा मंत्री समेत चलागया तब विदेशमें प्राप्त अपने बंधुओं से रहित कलिंगसेना अपने यूथसे छूटीहुई मृगीके समान व्याकुलहुई संभोगसे दलेमले मुखरूपी कमल वाली और बिखरीहुई चोटीरूपी भ्रमरोंकी पंक्तिवाली हाथी से पीड़ित कमलनीके समान कलिंगसेना कन्यका भावके नष्टहोजानेसे उपाय रहित होकर आकाशकी ओरदेखकर यह वचन बोली कि जिसने उदयनका रूपधरके मेरे साथ विवाह कियाहो वह प्रकटहोजाय वही मेरा कुमार अवस्थाका पति है उसके ऐसा कहनेपर हार तथा बाजुओंको पहनेहुए दिव्य रूपधारी वह मदनवेग विद्याधर आकाशसे उतरा जब कलिंगसेना ने पूछा कि तुमकौनहो तब वह बोला कि मैं विद्याधरों का स्वामी मदनवेग नाम विद्याधर हूं मैंने पहले तुमको तुम्हारे पिताके घरदेखकर तुम्हारी प्राप्तिके लिये तपकरके श्री शिव

जीसे वरपाया तुमको उदयन् में अनुरक्त जानकर उसीका स्वरूप धारणकरके उसके साथ तुम्हारा विवाह होनेसे पूर्वही तुमसे विवाह करलिया कानोंके मार्गसे प्राप्तहुए उसके इस वचनरूपी अमृत से कलिंगसेनाका हृदयारविन्द डहडहा होगया तब मदनवेग कलिंगसेनाको समझाकर और बहुतसा सुवर्ण देकर फिर आनेकी प्रतिज्ञा करके आकाशको चलागया कलिंगसेनाने भी योग्यजानकर उसीमदनवेगको अपनापति निश्चितकरके उसपर अपने अन्तःकरणकी भक्तिबढ़ाई और मेरेपतिका स्थानदिव्यों के रहनेके योग्यहै वहाँ मनुष्य नहीं जासक्तेहैं यहजानकर और अपने पिताके स्थानको मैं अपनी इच्छा से छोड़आईहूं ऐसा शोचकर मदनवेगकी आज्ञालेकर वहीं अपने रहनेको निश्चय किया २१७॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांमदनमंचुकालम्बकेसप्तमस्तरंगः७॥

इसके उपरान्त एकसमय कलिंगसेनाके अनुपम शरीरको स्मरण करताहुआ कामसे पीड़ितराजा उदयन् रात्रिके समय खड्गलेकर अकेला कलिंगसेना के मन्दिरकोगया वहां कलिंगसेनाने उसका बड़ा सत्कार किया जब राजाने संभोगके लिये उससे प्रार्थनाकरी तब उसने कहा कि हेराजा मैं पराईस्त्रीहूं इसहेतुसे आपको मेरेसाथ संभोग नहींकरना चाहिये उसके यहवचनसुनकर राजानेकहा कि तुमतृतीय पुरुषको प्राप्तहोने के कारण पुंश्चलीहो परस्त्रीके साथ गमनकरने में दोषहै परन्तु तुम्हारे साथ भोग करने में दोषनहीं है राजाके यहवचनसुनकर उसने कहा कि तुम्हारे निमित्त मैं आईथी तुम्हारा रूपधरके विद्याधरने मुझसे विवाह करलिया और वहीमेरा एकपतिहै तो मैं पुंश्चली कैसेहूं बन्धुओंका उल्लंघनकरके स्वेच्छासे कार्य्य करतीहुई विवाहिता स्त्रियोंको भी ऐसी विपत्तियां भोगनी पड़ती हैं कुमारियोंका तो कहनाही क्याहै अशकुनको देखकर निषेध करनेवाली अपनी सखी के वचनोंको न मानकर जो मैंने आपके पास दूतभेजा उसका यह फलहुआ इससे जो आपहठसे मेरास्पर्शभी करियेगा तो मैंप्राणदेदूंगी कौनकुलीन स्त्री अपने पतिको त्यागकरके पराये पतिका संगकरेगी इसविषयमें मैं आपको एककथा सुनातीहूं उसे आप सुनिये पूर्व्वसमय में इन्द्रदत्तनाम चेदिदेशका राजा था उसने शरीरको क्षणभंगुर जानकर यशरूपी शरीरकी प्राप्तिकेलिये पापशोधननाम तीर्थपर एक बड़ा सुन्दर देवमन्दिर बनवाया राजा बड़ी भक्तिसे दर्शन करनेको वहां नित्यआताथा और सम्पूर्ण यहांकेमनुष्य तीर्थस्नानकरने के लिये उसस्थानपर आतेथे एकसमय तीर्थपर स्नानके निमित्त आईहुई किसी वैश्यकी स्त्री जिसकापति परदेशमें था राजाने देखी निर्मलकान्तिरूपी सुधासे सिचीहुई विचित्ररूप तथा आभूषणवाली वह स्त्री क्याथी मानो कामदेवकी मनोहरजंगम राजधानीथी तुम्हारे बलसे हम संसारको जीतेंगे इसीलिये मानों कामदेवके तरकसोंकी शोभा उसके पैरोंमें आलगीथी ऐसी सुन्दर उस स्त्रीको देखकर राजाका चित्त उसपर ऐसा आशक्तहुआ कि रात्रिके समय वह उसको ढूंढ़कर उसकेघर पहुंचा और उससे संभोग केलिये प्रार्थना करनेलगा तब उसने राजासे कहा कि आप तो धर्मकी रक्षा करनेवालेहो आपको परस्त्रियोंपर अधर्म्म करना उचित नहीं है जो आप हठसे मेरा स्पर्श करोगे तो बड़ा अधर्म्म होगा और मैं इस दोषको न सहकर शीघ्रही मरजाऊंगी उसके यह कहनेपरभी राजाके हठ करनेकी इच्छा करने

पर अपने आचरणके भ्रष्टहोनेके भयसे उस पतिव्रता स्त्रीका हृदय फटगया यहदेखकर राजा लज्जित होके अपने घरको चलागया और इसी पश्चात्तापसे कुछ दिनमें आपभी मरगया इसकथाको कहकर कलिंगसेना भयसे नम्रता पूर्वक उदयनसे कहनेलगी कि इस्से हेराजा अधर्म से मेरे प्राण नाशमत करो यहां अपने आश्रम में आपमुझे रहने न दीजिये नहीं तो मैं अन्यत्र कहीं चलीजाऊं कलिंगसेनाके यह वचन सुनकर धर्मज्ञ राजा उदयन् विचारकर उस अधर्म से निवृत्तहोके यह कहनेलगा कि हेराजपुत्री तुम अपनी इच्छाके अनुसार अपने पतिके साथ यहां निवासकरो अब मैं तुमसे कुछनहीं कहूंगा भयमतकरो यह कहकर राजाके चलेजानेपर मदनवेग कलिंगसेना और राजाके वार्त्तालापको सुनकर आकाशसे उतरा और बोला कि हे प्रिये तुमने बहुत अच्छाकिया जो तुम ऐसा न करती तो तुम्हारे लिये कल्याण न होता क्योंकि मैं तुम्हारे इस अपराधको न सहसक्ता इसप्रकार कहके और उसको समझाके रात्रिभर उसीके पासरहा और तबसे नित्य वहां आने जानेलगा कलिंगसेनाभी विद्याधरोंके स्वामीको अपना पतिपाकर मृत्युलोकमें भी दिव्य सुखोंको भोगनेलगी और राजा उदयन् भी कलिंगसेनाकी चिन्ताको छोड़कर यौगन्धरायणके वचनको स्मरण करके रानी वासवदत्ता तथा नरवाहनदत्तको मानों फिर मिलाहुआसामानकर बहुत प्रसन्नहुआ और रानी वासवदत्ता तथा यौगन्धरायण भी नीतिरूपी कल्पलताके सफल होजाने से अत्यन्त प्रसन्नहुए २० इसके उपरान्त कुछ दिनोंके व्यतीत होनेपर कलिंगसेना गर्भवतीहुई उसका मुखरूपी कमल पीत होगया उसके श्याम मुखवाले उन्नतस्तन मदकी मुद्रासे अंकित कामदेवकी निधिके कुंभोंके समान शोभित होनेलगे तबमदनवेगने कलिंगसेनासे आकरकहा कि हे प्रिये हमलोग दिव्यपुरुषों का यह नियम है कि जब मनुष्य गर्भ होताहै तब उसे छोड़कर चलेजाते हैं देखो मेनका कण्वमुनिके आश्रम में शकुन्तलाको छोड़कर चलीगई तुम यद्यपि अप्सराहो तथापि अपने अपराधसे इन्द्र के शापकेद्वारा मनुष्य योनिमें प्राप्तहुईहो और इसीसे तुमको लोगोंने निरपराधभी पुंश्चलीकहा इससे मैं अब अपने स्थानको जाताहूं तुम अपनी सन्तानकी अच्छे प्रकार रक्षाकरना जब तुम मुझे स्मरण करोगी तब मैं तुम्हारे पास आऊंगा इसप्रकार कहकर और अश्रुमुखी कलिंगसेनाको समझाकर और बहुतसे रत्नादिकदेके मदनवेग नियमसे पराधीन होकर चलागया परन्तु उसका चित्त कलिंगसेनामें लगारहा और कलिंगसेनाभी सन्ततिहोनेसे आसरालगाकर राजा उदयनके आश्रममें वहीं रही २६ इसबीचमें अंग सहित पतिके मिलनेकेलिये तप करतीहुई रतिसे श्री शिवजीने कहा कि वत्सराज राजाउदयन्के यहां तेरापति नरवाहनदत्तनामसे उत्पन्नहुआहै उसने मेरा अपराध कियाथा इसीसे उसकी उत्पत्ति योनिसेहुई है और तुमने मेरी आराधनाकी है इस्से तुम मृत्युलोक में भी अयोनिज होओगी और वहीं तुमको अंगसहित पति मिलेगा रति से इसप्रकार कहकर श्रीशिवजीने ब्रह्माको यह आज्ञादी कि कलिंगसेनाके पुत्रहोगा उसको तुम अपनी मायासे हरके इस रतिको दिव्य शरीरसे मानुषी कन्या बनाकर वहीं स्थापितकरना इसप्रकार श्रीशिवजीकी आज्ञाको मानकर ब्रह्माजीके चलेजानेपर समयपाकर कलिंगसेनाके पुत्रहुआ तबब्रह्माने उत्पन्नहोतेही

उसको मायासे हरकर उस के स्थान में रतिमानुषी कन्या बनाकर रखदी और सबों ने उस कन्याहीका उत्पन्न होना जाना दिनमें भी अकस्मात् उदित हुई द्वितीयाके चन्द्रमाकी कलाके समान उसकन्याकी कान्तिसे सम्पूर्ण घर देदीप्यमान होगया और रत्नोंके दीपकोंकी पंक्तियां मानों लज्जित होकर निस्तेज होगईं ऐसी सुन्दरी उस कन्याको देखकर कलिंगसेनाने प्रसन्न होकर पुत्रके जन्मसे भी अधिक उत्सव किया। ४६ इसके उपरान्त राजा उदयनने मंत्रियों तथा रानियोंके निकट बैठेहुए सुना कि कलिंगसेनाके महारूपवती कन्या उत्पन्नहुई है यहसुनकर राजाने अकस्मात् ईश्वरकी प्रेरणासे यौगन्धरायणके आगे रानी वासवदत्तासे कहा कि यह कलिंगसेना शापसे भ्रष्टहुई कोई दिव्यस्त्री है और इसकी यहभी पूर्व रूपवती कन्याभी कोई दिव्य स्त्री होगी इससे यहकन्या नरवाहनदत्तके समान रूपवती होनेके कारण इसकी पटरानी होनेके योग्यहै यहसुनकर वासवदत्ताने राजासे कहा कि हे महाराज यह क्याबात आप अकस्मात् कहरहेहैं कहाँतो दोनों कुलोंसे शुद्ध आपकापुत्र और कहाँ पुंश्चलीकेगर्भसे उत्पन्नहुई यहकन्या यहसुनकर राजानेकहा कि यहबात मैं अपने आप नहीं कहरहाहूं कोई मेरेअन्तःकरणमें प्रवेशकरकेमुझ्से कहलवारहाहै और मुझे आकाशवाणीसी सुनाईदेरही है कि यहकन्या नरवाहनदत्तकी पहलेही से स्त्री बनादीगईहै और सत्कुलमें उत्पन्नहुई यहकलिंगसेना बड़ीपतिव्रता है परन्तु पूर्वजन्मके कर्मके वशसे यहपुंश्चली कहाई है राजाके इसप्रकार कहनेपर बड़े बुद्धिमान् यौगन्धरायणनेकहा कि हेमहाराज मैंने सुनाहै कि कामके भस्महोजाने पर रतिने अपनेपतिके प्राप्तहोनेकेलिये तपकिया उसे श्री शिवजी ने प्रसन्नहोके यहवर दियाहै कि मृत्युलोकमें उत्पन्नहुए अपने शरीरवाले पति से तेरा समागमहोगा और जिससमय नरवाहनदत्तका जन्महुआथा उससमय आकाशवाणी हुईथी कि यहकामका अवतार है और रतिकोभी शिवजीकी आज्ञासे मृत्युलोकमें अवतार लेनाही है फिर दाईने आकर आजमुझसे एकान्तमें यहबात कहीथी कि मैंने आज पहले कलिंगसेनाका गर्भगर्भाशय (जेर) से युक्तदेखा और फिर उसीसमय गर्भाशयसे रहित अन्यसा दिखाईदिया इसआश्चर्यको देखकर मैं आपसे कहनेके लिये आईहूं यहबात उसदाईने मुझसे कहीथी और आपको इसबातका कुछ अनुभवभी हुआ है इससे मैं जानताहूं कि देवता लोगोंने मायासे कलिंगसेनाके गर्भको हरकेरतिको कलिंगसेनाकी अयोनिज कन्या बनादियाहै हे राजा यहकामके अवतार नरवाहनदत्तकी स्त्री अवश्यहोगी इसविषयमें मैं आपको एकयक्ष की कथा सुनाताहूं कि कुबेरका सेवक विरूपाक्षनाम एकयक्षथा वहलाखों निधानोंके रक्षकोंका प्रधानथा उसने मथुरा नगरीके बाहर जो एक निधानथा उसकीरक्षाके लिये एकऐसेयक्षको नियतकियाथा जोकि रात्रि दिन उसनिधानपरसे स्तम्भके समान नहीं हटताथा वहां मथुराका निवासी एकपाशुपत ब्राह्मण जो कि पृथ्वीमें निधिहोनेकी परीक्षाकरसक्ताथा मनुष्यकी चर्बीके दीपकको हाथमें लियेहुए स्थानों की परीक्षा करताहुआ आया वहां आतेही वह दीपक उसके हाथसे गिरपड़ा उसलक्षणसे उसने वहां निधिजानकर अपनेमित्रों समेत खोदनेका आरम्भकिया उससमय वहांका रक्षक जोयक्षथा उससेजाकर विरूपाक्षसे कहदिया यहसुनकर विरूपाक्षने क्रोधयुक्तहोकर कहा कि जाकर शीघ्रही उनखोदनेवालों

को मारडालो यहआज्ञापाकर उसयक्षने वहांजाके अपनी युक्तिसे निधिके खोदनेवाले वहसम्पूर्ण ब्राह्मण मारडाले जब यहवृत्तान्त कुबेरने सुनातव क्रोधकरके विरूपाक्षसे कहा कि हे पापी तूने सहसा ब्रह्महत्या क्योंकरवाई दुर्दशाग्रस्त निर्धनलोग लोभसे क्या नहींकरतेहैं उन्हें विघ्नों से डराकर भगादेना चाहिये मारना न चाहिये यहकहकर उसे शापदिया कि तू इसपापके प्रभावसे मृत्युलोकमें उत्पन्नहोजा शापके प्रभावसे वहयक्ष किसी जमींदार ब्राह्मणके यहां उत्पन्नहुआ तब उसयक्षकी स्त्री ने कुबेरसे कहा कि हे धनाध्यक्ष आपने जहाँ मेरे पतिको भेजाहै वहांही कृपा करके मुझेभी भेजदीजिये मैं उसके वियोगमें नहीं जीसक्ती उस पतिव्रता स्त्री के यह वचन सुनकर कुबेर ने कहा कि जिस ब्राह्मणके यहां वह उत्पन्नहुआहै उसकी दासीके यहां तू अयोनिज कन्याहोगी वहीं तेरापति तुझे मिलजायगा और तेरेहीप्रभाव से वह अपने शापसे उद्धार होकर तुझसमेत फिर मेरे पास आजायगा कुबेरके इस वचन से वह पतिव्रता मानुषी कन्या होकर उस ब्राह्मणकी दासीके द्वारपर आपड़ी दासीने अकस्मात् अपने द्वारपर उसकन्या को देखकर लेके अपने स्वामी उस ब्राह्मणको दिखाया उसे देखकर उस ब्राह्मणने कहा कि यह निस्सन्देह कोई अयोनिज दिव्य कन्याहै यही मेरा चित्तकहताहै इससे तू इसको मेरेही घरमें रख यही मेरे पुत्रकी स्त्रीहोगी अपने स्वामीकी यह आज्ञापाकर दासीने वह कन्या उसीके घरमें रक्खी क्रमसे वह कन्या और ब्राह्मणका पुत्र दोनों बढ़े और उनदोनोंमें परस्पर बड़ा स्नेहहोगया तब उसब्राह्मणने उनदोनोंका विवाहकरदिया यद्यपि उनदोनोंको अपने पूर्व जन्मका स्मरण नहीं था तथापि उनदोनोंको समागम होनेसे ऐसे आनन्दहुआ मानों बहुत कालके बिरहके उपरान्त मिलेहैं कुछकालमें वहयक्ष अपनी स्त्री के तपसे पापरहितहोके मृत्युके बशहोगया और वह उसके साथ सती होगई इसप्रकार वह दोनों अपने लोकको फिर चलेगये इस रीतिसे किसीकारणके द्वारा दिव्य स्त्रियां मृत्युलोकमें अयोनिज उत्पन्न होतीहैं इससे हे राजा कलिंगसेनाकी कन्या आपके पुत्र नरवाहनदत्तकी स्त्री होनेके योग्यहै और यहतो देवतालोगों की बनाई हुई अयोनिजहै इसका कुलही क्या होसक्ताहै यौगन्धरायण के यह वचन सुनकर रानी वासवदत्ता समेत राजा उदयन् ने यह बात स्वीकार करली इसके उपरान्त यौगन्धरायण के अपने घर चलेजानेपर राजा मद्यपानादि क्रियाकरके रानी वासवदत्ता केही यहाँ उसदिनरहा ६३. कुछ दिनों के व्यतीत होने पर कलिंगसेनाकी कन्या मोह से अपने पूर्व जन्मको भूलकर सौन्दर्य समेत बढ़नेलगी वह मदनवेगनाम विद्याधरकी कन्या थी इसहेतु से कलिंगसेनासमेत अन्य सबलोगोंने उसको मदनमंचुकानाम रक्खा मानों उसने संपूर्ण सुन्दर स्त्रियों का रूप लेलियाथा नहीं तो उसके सन्मुख वह सब विरूप क्यों होगई एकसमय रानी वासवदत्ता ने उसके स्वरूपकी बड़ी प्रशंसा सुनकर उसको अपनेपास बुलाया वहां धायकी गोदमें आईहुई मदनमंचुकाको दीपककी ज्योतिके समान वासवदत्ता राजा उदयन् तथा यौगन्धरायण इन तीनों ने देखा उसके अपूर्व नेत्रोंसमेत आनन्ददायी स्वरूपको देखकर सबको यही विश्वास होगया कि यहसाक्षात् रतिही उत्पन्नहुईहै उससमय वासवदत्ताने नेत्रोंको आनन्ददायी अपनेपुत्र नरवाहनदत्तको वहांबुलाया

प्रफुल्लित मुखारविन्दवाला नरवाहनदत्त वहाँआकर जैसे प्रभाकर सूर्यकी प्रभाको देखता है उसी प्रकार देदीप्यमान मदनमंचुकाको देखनेलगा वहभी जैसे चन्द्रमाको देखकर चकोरी नहीं तृप्तहोती है इसीप्रकार प्रफुल्लित नेत्रोंसे उसे देखकर तृप्त नहीं हुई तबसे वहदोनों बाल्यावस्थाही में मानों दृष्टि रूपी पाशोंसे बँधेहुए क्षणभरभी अलग २ नहीं रहसक्तेथे कुछ दिनोंके उपरान्त राजा उदयनने देवता लोगोंसे पहिलेही निश्चित कियेगये उनदोनों के विवाहका निश्चयकिया तब कलिंगसेना वत्सराज उदयनके इस विचारको जानकर बड़ी प्रसन्नहुई और नरवाहनदत्त को अपना होनेवाला जामाता जानकर उससे अत्यन्त स्नेह करनेलगी इसके अनन्तर राजाने मंत्रियोंसे सलाह करके नरवाहनदत्तके लिये अपनासा मंदिर अलग बनवादिया और उसे बहुत गुणवान् जानकर सम्पूर्ण सामग्री इकट्ठी करके युवराजपदवीपर उसका अभिषेक करदिया अभिषेकके समय नरवाहनदत्तके शिरपर पहले तो आनन्द देनेवाले माता पिताके अश्रुगिरे और पीछेसे श्रुतिकेमन्त्रोंसे पवित्र सम्पूर्ण तीर्थोंका जल अभिषेकके जलसे उसके मुखारविन्दके निर्मल होजानेसे सम्पूर्ण दिशाभी निर्म्मलहोगईं फिर माताओं के मंगलकारी पुष्पोंके बरसानेपर आकाश से भी दिव्य पुष्पोंकी वृष्टिहुई पृथ्वी तथा आकाशमें आनन्दके नगाड़ेबजे उससमय युवराज पदवीपर बैठेहुए नरवाहनदत्तके आगे ऐसाकोई न था जो नम्र न हुआ केवल उसका प्रभावही ऊंचेको बढ़ा उससमय राजाने नरवाहनदत्तके मित्र अपने मंत्रियों के पुत्रोंको बुलवाकर उसके मंत्रीबनाये उनमें से यौगन्धरायणके पुत्र मरुभूति को मंत्रीका रुमण्वान्के पुत्र हरिशिखको सेनापतिका वसन्तकके पुत्र तपंतकको क्रीड़ा सखाभावका इत्यक अर्थात् नित्योदितके पुत्र गोमुखको सम्पूर्ण प्रतीहारोंके स्वामीका और पिंगलिकाके पुत्र अपने पुरोहितके भतीजे वैश्वानर तथा शान्तिसोमको पुरोहितका अधिकार दिया इसप्रकारसे राजाके अधिकार देनेपर आकाशसे पुष्पों की वृष्टिहोकर यह आकाशवाणीहुई कि यह सबमंत्री नरवाहनदत्तके सम्पूर्ण कार्य्योंके साधकहोंगे और गोमुख तो इसके द्वितीय शरीरहीके समान होगा इस आकाशवाणी को सुनकर राजा उदयनने प्रसन्नहोके सम्पूर्ण मंत्रियोंके पुत्रोंका वस्त्र तथा आभूषणोंसे बड़ा सत्कारकिया उससमय राजाने सम्पूर्ण सेवकोंको इतनाधनदिया जिससे केवल दरिद्रशब्दही वहाँ अनर्थरहा वायुकेद्वारा हिलतीहुई पताकाओंके वस्त्रोंसे मानों बुलायेगये नट वेश्या तथा चारणादिकों से सम्पूर्ण नगरी भरगई उससमय कलिंगसेना भी अपने भविष्यत जामाताके उत्सव में होनेवाली साक्षात् विद्याधरोंकी लक्ष्मीके समान आई फिर वासवदत्ता और पद्मावती उसकलिंगसेना समेत प्रसन्नहोकर मिलीहुई उत्साह मन्त्र तथा प्रभाव इनतीनों शक्तियोंके समान नाचनेलगीं उसउत्सवमें वायुकेद्वारा कम्पित उपवनके लता समेत वृक्षभी नाचतेसे मालूमहोतेथे फिर चैतन्यपुरुषोंका तो क्याहीकहनाहै इसप्रकार अभिषेक होनेके उपरान्त नरवाहनदत्त हाथीपर चढ़कर नगरमें निकला तब पुरकी स्त्रियों ने नीलकमल खीले तथा रक्त कमलोंके समान अपने नील श्वेत तथा रक्तवर्ण नेत्रोंसे उसे आच्छादित करदिया इसरीति से सम्पूर्ण पुरमें घूमकर और पुरीके पूज्यदेवताओंका दर्शनकरके बन्दीगणों से स्तुति कियागया नरवाहनदत्त

अपने सब मन्त्रियों समेत अपने मन्दिरमें गया वहां कलिंगसेना पहलेहीसे दिव्य भोजन तथा पीने के पदार्थ लाईथी वह उसे मन्त्रियों समेत भोजन और पीनेके लिये दिये फिर भोजन कराके जामाता के स्नेहसे कातरहोके उसने अपने ऐश्वर्य्य सेभी अधिक वस्त्र तथा दिव्य आभूषण मन्त्री मित्र तथा उसके सेवकों समेत नरवाहनदत्तको दिये इसप्रकार बड़े उत्सवसे अमृतकी वृष्टिके समान आनन्ददायी वह दिवस राजा उदयन् आदि सबको व्यतीतहुआ १३० इसकेउपरान्त रात्रिके समय कलिंगसेनाने अपनी कन्याके विवाहका विचार करते २ अपनी सखी सोमप्रभाका स्मरण किया स्मरण करतेही उस के पति महाज्ञानी नलकूबरने उससे कहा कि हे प्रिये तुम्हारी सखी कलिंगसेना उत्कण्ठितहोके तुमको स्मरण करती है इससे वहां उसके पास जाकर उसकी कन्याके विवाहके लिये दिव्य उपवनबनादो यह कहकर और कलिंगसेनाका सम्पूर्ण भूत तथा भविष्य वृत्तान्त बताकर नलकूबरने सोमप्रभाको भेज दिया तब सोमप्रभा कलिंगसेना के निकट आकर बहुतकालकी उत्कण्ठासे उसके गलेमें लिपटकर और कुशल पूंछकर कहनेलगी कि हे सखी बड़े ऐश्वर्य्यवान् विद्याधरके साथ तुम्हारा विवाहहुआ है और साक्षात् रति अवतारलेकर श्रीशिवजीकी कृपासे तुम्हारी कन्याहुई है यह राजा उदयनके पुत्र कामके अवतार नरवाहनदत्तकी भार्य्या पहलेही से है नरवाहनदत्त दिव्य कल्प पर्य्यन्त विद्याधरोंका चक्रवर्त्ती राजाहोगा और यह तुम्हारी कन्या उसकी सब स्त्रियोंमें पटरानीहोगी और तुमभी पूर्वजन्म की अप्सराहो इन्द्रके शापसे भ्रष्टहोके इस पृथ्वीलोकमें आगईहो जब तुम्हारे सम्पूर्ण कार्य्य समाप्तहोंगे तब शापसे छूटकर स्वर्गको चलीजाओगी यह सम्पूर्ण बातें मेरे ज्ञानी पतिने मुझसे कहदीहैं इससे तुम चिन्ता न करो तुम्हारेलिये भविष्यतमें सब अच्छाहीहोगा मैं तुम्हारी कन्याके लिये एक दिव्य उपवन बनाये देतीहूं जैसा न पातालमें न स्वर्गमें न पृथ्वीमें है यहकहकर और अपनी मायासे दिव्य उपवन बनाकर जानेदेनेको नहीं इच्छा करनेवाली सखीकलिंगसेनासे किसीप्रकार आज्ञालेकर सोमप्रभा अपने स्थानको चलीगई १४२ प्रातःकाल अकस्मात् आकाश से पृथ्वीपर गिरेहुए नन्दनवनके समान उस उपवनको लोगोंने देखा और उसउपवनका वृत्तान्त सुनकर राजा उदयन्भी अपने मन्त्री तथा स्त्रियो समेत उसउपवनको देखनेके लिये आया और नरवाहनदत्तभी अपने साथियों समेत वहांआया उसउप वन में सदैव होनेवाले सब ऋतुके फलफूल वृक्षोंमें लगेथे और दीवारें तथा बावड़ी और पृथ्वी अनेक प्रकार की अपूर्व मणियों से जटितथीं सुवर्णमय सैकड़ों पक्षी उसमें उड़ते थे और दिव्य सुगन्धयुक्त वायुचलतीथी वह उपवन क्या था मानों देवता लोगोंकी आज्ञासे द्वितीय स्वर्गही पृथ्वी में उतरकर आयाथा ऐसे अति अद्भुत उपवनको देखकर राजाने अतिथि सत्कारमें व्यग्रचित्तवाली कलिंगसेना से पूंछा कि यह क्या आश्चर्य है उसने सबके आगे राजा उदयन् से कहा कि विश्वकर्माका अवतार मयनाम दैत्य है जिसने युधिष्ठिर और इन्द्रकेलिये रम्यपुरबनायाथा उसकी सोमप्रभानाम कन्या मेरी सखी है उसने रात्रिकेसमय मेरे पासआकर स्नेह से मेरी कन्याके लिये यह दिव्य उपवन बना दिया और मेरा सम्पूर्ण भूत भविष्य वृत्तान्त भी बतादिया यहकहकर उस ने सोमप्रभाका कहाहुआ सम्पूर्ण

वृत्तान्त राजासे कहदिया कलिंगसेना के इनवचनोंको यथार्थ जानकर सम्पूर्ण लोग निस्सन्देहहोकर अत्यन्तही प्रसन्नहुए वह दिन कलिंगसेना ने उन लोगों के सत्कारही में व्यतीतकिया और राजा उदयन भी अपनी स्त्रियों तथा पुत्र समेत उस दिन वहींरहा। दूसरेदिन राजा उदयन देवमन्दिर में देवताओं के दर्शनकरनेकोगयाथा वहां उसने सुन्दर वस्त्रालंकारयुक्त बहुतसी दिव्य स्त्रियां देखीं राजा ने उनसे पूंछा कि तुम कौनहो वह बोलीं कि हम सम्पूर्ण विद्या और कलाहैं तुम्हारे पुत्रकेलिये यहां आई हैं अब जाकर हम उसीके अन्तःकरण में प्रवेशकरती हैं यहकहकर वह अन्तर्द्धान होगई तब राजा उदयन ने आश्चर्यपूर्वक दर्शनकरके मन्दिर में जाकर रानी वासवदत्ता और सम्पूर्ण मंत्रियों से वह सब वृत्तान्तकहके सबको आनन्ददिया वह लोगभी सुनकर देवताकी कृपामानकर अत्यन्त प्रसन्न हुए इसके उपरान्त नरवाहनदत्त मन्दिर में आया तो राजा के कहने से वासवदत्ता वीणाबजानेलगी माताको वीणाबजाते देखकर नरवाहनदत्त ने नम्रतापूर्वक कहा कि वीणा स्थानसे च्युतहोगई उसके यह वचनसुनकर राजाने कहा कि अच्छा तुमतो इसेलेकर बजाओ तब पिताकी आज्ञासे उसने वीणा लेकर ऐसी सुन्दरतासे बजाई कि जिसे सुनकर गन्धर्वलोग भी विस्मितहोजायँ इसप्रकारसे सम्पूर्ण विद्याओं तथा कलाओं में उसकी परीक्षाकरके राजाने जानलिया कि सम्पूर्ण विद्यातथा कलाओं ने इसके अन्तःकरण में प्रवेशकियी है और पुत्रको गुणवान् जानकर कलिंगसेनाकी कन्या मदनमंचुका को नृत्यसिखवाया फिर जैसे २ चन्द्रमाकी कलाकेसमान मदनमंचुका सम्पूर्ण कलाओं से पूर्णहुई वैसेही वैसे नरवाहनदत्त रूपसमुद्र आनन्दकी तरंगयुक्तहुआ उनदिनों गातीहुई और भाववताकर नाचतीहुई मदनमंचुकाको मानों कामदेवकी आज्ञाको पढ़तीहुईसी देखकर वह नरवाहनदत्त अत्यन्त प्रसन्नहोताथा मदनमंचुका क्षणभर भी चन्द्रमा के समान सुन्दर नरवाहनदत्तको विनादेखे आंसूभरकर प्रातःकाल जल से आर्द्र कुमुदिनी के समान शोभितहोतीथी और नरवाहनदत्त भी उसके मुखारविन्द को विनादेखे क्षणभरभी नहीं ठहरसकताथा इससे उस उपवन में जाकर वह सदैव विहारकरताथा वहां कलिंगसेना उसे अपने पासबुलाके मदनमंचुका के साथ उसको क्रीड़ाकरवाकर प्रसन्नहोतीथी नरवाहनदत्तके चित्तकी वृत्तिका जाननेवाला गोमुख उसके वहीं वहुतकालतक ठहरने के लिये कलिंगसेनासे अनेक २ प्रकारकी कथा कहाकरता था और नरवाहनदत्त अपने चित्तके अनुसार उसके कार्य्य करने से उसपर अत्यन्त प्रसन्नहोता था ठीक है (हृदयानुप्रवेशोहि प्रभोस्सम्वननंपरम्) स्वामी के चित्तकाजानना स्वामी का बड़ा वशीकरण है १६६ उस उपवनकी संगीतशाला में नरवाहनदत्त आपही मदनमंचुकाको नृत्यआदिक सिखलाताथा और जब वह नाचती थी तब बड़े २ गन्धर्वों को भी लज्जित करताहुआ आपही उसके साथ मृदंगादिक बाजे बजाताथा उनदिनों वह हाथी घोड़े रथ शस्त्र अस्त्र चित्र तथा पुस्तकादि विद्याओं में ऐसा चतुरहोगया था कि अनेक २ देशों से आये हुए अनेक २ विषयों के जाननेवाले पंडितों को भी उसने जीतलिया इसप्रकार संपूर्ण विद्याओं से युक्त नरवाहनदत्त के कुमारावस्थाके दिन व्यतीतहुए १७२ एकसमय नरवाहनदत्त अपनेसम्पूर्ण मंत्री

तथा मदनमंचुका समेत किसी उत्सवमें नागवननाम उपवनमेंगया वहां किसी बणियेकी स्त्रीने गोमुखसे कामकी चेष्टाकरनेकी अभिलाषाकी परन्तु उसने उसका तिरस्कारकरदिया तब उसस्त्रीने सविष शर्बत पिलाकर गोमुखको मारनाचाहा परन्तु उसीकी सखीसे यहवृत्तान्तजानकर गोमुखने शर्बतनहीं पिया और इसप्रकार से स्त्रियोंकी निन्दा करनेलगा कि (अहोधात्रापुरस्सृष्टंसाहसंतदनुस्त्रियः नैतासांदुष्करंकिंचित्रिसर्गादिहविद्यते) ब्रह्माने पहले साहस बनाया फिर स्त्रियांबनाई क्योंकि इनको स्वभाव ही से कोई काम दुष्करनहीं है (नूनंस्त्रीनामसृष्टेयममृतेनविषेणच अनुरक्तामृतंसाहिविरक्ताविषमेवच) निस्सन्देह स्त्रीविष और अमृतसे मिलाकर बनाईगई है अनुरागयुक्तस्त्रीतो अमृतहैऔर विरक्तस्त्री विषरूप है (ज्ञायतेकान्तवदना केनप्रच्छन्नपातका कुस्त्रीप्रफुल्लकमलागूढनक्रेवपद्मिनी) जैसे किसी तड़ागमें सुन्दर कमल फूलरहे हों और उसकेभीतर छुपाहुआ मगर बैठाहो उसीप्रकार सुन्दर मुखवाली कुलटा स्त्रीके अन्तःकरण में छिपेहुए पातकको कौन जानसक्ता है (दिवःपततिकाचित्तुगुणचक्रप्रचोदिनीभर्तृरलंघासहासुस्त्रीप्रभाभानोरिवामला) (हन्त्येवाशुगृहीतान्याःपररक्तागतस्पृहा पापाविरागविषभृत्भर्तारंभुजगीवसा) कोई पापिनी स्त्री परपुरुष में अनुरक्तहोकर द्वेषरूप विषसेयुक्त सर्पिणी के समान अपने पतिको स्पर्शकरतेही शीघ्र मारडालती है देखो किसी ग्राममें शत्रुघ्ननाम कोई पुरुषरहताथा उसकीस्त्री बड़ी व्यभिचारिणी थी उसने एकदिन सायंकाल के समय अपनीस्त्रीको जारकेसाथ रमणकरते देखकर खड्ग से जारको मारडाला और उसदुष्टस्त्रीको भीतर रखकर द्वारपर इसनिमित्त जाबैठा कि अधिक रात्रि व्यतीत होजाय तो इसे बाहर फेंकआऊं उससमय कोई पथिक उसकेघर टिकनेकोआया उसने उसे टिकालिया और उसीको साथ लेकर उसजारकी लोथको लेकर वनमेंजाके जैसेही किसी अन्धे कुएमें फेंकनाचाहा वैसेही पीछेसे चुपके २ आईहुई उसकीस्त्रीने उसेभी कुएमें ढकेल दिया इसप्रकारसे कुलटा स्त्री कौन २ साहसनहीं करती हैं इसरीतिसे गोमुखने कुमारावस्थाही में स्त्रियोंकी बड़ी निन्दा की तदनन्तर नागवनमें सर्पोंका पूजनकरके नरवाहनदत्त अपने परिकर समेत अपने मन्दिरकोआया वहां आकर उसने दूसरेदिन जानकर भी परीक्षा करने के लिये गोमुखादि मंत्रियों से नीतिका तत्त्व पूछा तब वह लोग कहनेलगे कि यद्यपि आप सर्वज्ञहो तथापि आपके पूछनेपर हम लोग नीति के तत्त्वको कहते हैं राजापहले वशीभूत कियेहुए इन्द्रीरूपी घोड़ों पर चढ़कर काम क्रोधादिक भीतरे शत्रुओंको जीतकर अपनी आत्माको अन्य शत्रुओं के जीतनेके लिये प्रथमहीजीते क्योंकि जिसने अपने आत्माही को नहीं जीता है वह विवश होने के कारण दूसरे को क्या जीतसकेगा तदनन्तर सम्पूर्ण गुणयुक्त मन्त्रीकरे और अथर्व वेद का जाननेवाले चतुर तपस्वी ब्राह्मण को अपना पुरोहित बनावे और मंत्री तथा पुरोहितों की भय, लोभ, धर्म तथा काममें युक्तिपूर्वक परीक्षा करके कार्यों में नियुक्तकरे और उनके अन्तःकरण को भी देखता रहे कार्यों में परस्पर अपना अपना विचार कहतेहुए मंत्रियोंके वचनों में इसबातकी परीक्षाकरे कि यह वचन सत्यहै अथवा द्वेषयुक्त है और स्नेह से कहाहै अथवा स्वार्थ सिद्ध करनेको कहागया है जब वह सत्य कहैं तो उनपर प्रसन्नहोवे और जब

असत्यकहैं तो उनको योग्य दण्डदेवे और गोयन्दोंके द्वारा मंत्रियों के आचरणको सदैव गुप्तरीति से जानतारहै इसप्रकार सम्पूर्ण कार्योंपर दृष्टिकरताहुआ दुष्टलोगोंको राज्यकार्योंसे निकालकर और सेना तथा कोश (खजाना) को वढाकर अपने राज्यको पुष्टकरे तिसपीछे उत्साह प्रभुता तथा मन्त्र शक्तिसे युक्तहोकर अन्य राजालोगों के जीतनेकी इच्छाकरे परन्तु अपने और उनके बलावल को देखले प्रमाणिक तथा वहुश्रुत बुद्धिमान् लोगों के साथ विचारकरे और जब वह लोग निश्चय करचुकें तब अपनी बुद्धिसे भी सब प्रकार शोचले और साम दामादिक उपायों को जानकर योग क्षेम (प्राप्तकी रक्षा और अप्राप्तकी प्राप्तिका उपाय) को सिद्धकरे फिर संधि विग्रह आदिक छओं गुणोंको काममें लावे इसप्रकार निरालस्य होकर स्वदेश और परदेशकी चिन्ता करताहुआ राजा सदैव जयको प्राप्त होताहै और कभी पराजित नहीं होता और जो मूर्ख राजा काम तथा लोभसे अन्धे होते हैं उन्हें धूर्त्त लोग झूठे उपदेश करके आपत्ति में डालके उनसे खूबधन लेतेहैं १०२ जैसे खेतके स्वामी जब खेतके चारोंओर कांटोंकी मेंड़ लगादेतेहैं तब उसमें कोई नहीं जासक्ता है उसीप्रकार जिसराजाको वहुत से धूर्त्त लोग घेरेही रहतेहैं उसके पास किसी सज्जन का प्रवेश नहीं होने पाताहै धूर्त्तलोग सम्पूर्ण गुप्त वातोंको जानकर उसे ऐसा अपने वशकरते हैं कि राज्यलक्ष्मी दुखित होकर उसके पाससे चलीजाती है इससे राजा अपनी आत्माकोजीते और सम्पूर्ण विशेष वातोंको जाने और योग्य दण्डदेवे इससे उसपर प्रजाका अनुराग वढताहै और प्रजाहीके अनुरागसे वह राज्यलक्ष्मीका पात्र होताहै पूर्व समय में सूरसेन नाम एक राजा अपने मन्त्रियोंपर वड़ा विश्वास करताथा इससे मन्त्रीलोग आपसमें मिलकर उससे जो चाहतेथे सो लेतेथे राजा अपने जिस सेवकको कुछ देना चाहताथा उसे वह एक तिनकाभी नहीं देने देतेथे और अपने सेवकोंको जो चाहतेथे वह राजासे दिलवा देतेथे राजाने धीरे २ अपने मंत्रियों की यह परस्पर मिलावट जानकर युक्ति पूर्व्वक उनमें भेदकरादिया और उन धूर्त्तों में भेद होजानेसे राजा अच्छेप्रकार से अपने राज्यका कार्य्य करनेलगा और फिर उसे कोई न ठगसका पूर्व्वसमय में हरिसिंह नाम एक साधारण राजाथा उसने नीतिके तत्त्वको जानकर विद्वान् तथा भक्त मंत्रीकिये किलेको वहुत दृढ़ करलिया कोशखजाना वहुत इकट्ठा किया और योग्य कार्य्य करके सम्पूर्ण प्रजा अपने में ऐसी प्रीति युक्त करली कि चक्रवर्त्ती के साथभी लड़ने से वह नहीं पराजित हुआ इसप्रकार वहुत कहने से क्या प्रयोजन है विचार और चिन्तवन राज्य का सारांश है इत्यादि वातों को कहकर वह गोमुखादिक मन्त्री चुप होरहे मन्त्रियों के यह वचन सुनकर और उनके वचनों की प्रशंसा करके नरवाहनदत्त ने कहा कि पुरुषों को चिन्तवन करना तो उचितही है परन्तु भाग्य मुख्यहै यह कहकर अपने मंत्रियोंको साथ लेकर विलम्ब होनेके कारण महाउत्कण्ठित होकर अपनी प्रिया मदनमंचुकाके देखनेको गया वहांजाकर जब नरवाहनदत्त आसनपर वैठा तो कलिंगसेना ने विस्मितहोकर गोमुख से कहा कि आज नरवाहनदत्तको आया न देखकर मदनमंचुका उत्कण्ठितहोके इसके मार्गके देखनेके निमित्त मंदिरके ऊपर चढगई और मैंभी इसके पीछे २ चलीगई उससमय कि-

रीटको धारण किये हुए खड्गको लियेहुए एक दिव्यपुरुष आकाशसे उतरकर मुझसे बोला कि मैं विद्याधरोंका स्वामी मानसवेगनाम विद्याधरहूं और तुम शाप से भ्रष्टहुई सुरभिदत्तानाम अप्सराहो और तुम्हारी यह कन्याभी दिव्यहै यह मुझे मालूमहै इससे यह कन्या मुझे देदो यह सम्बन्ध बहुत योग्य है यह सुनकर मैंने हँसकरकहा कि देवतालोगोंने पहलेही से इसका पति नरवाहनदत्त बनायाहै जो तुम सबलोगोंका चक्रवर्त्ती होगा मेरे यह वचन सुनकर वह आकाशको चलागया और अकस्मात् बिजली चमकने के समान उस विद्याधरको देखकर मदनमंचुका के नेत्र चकचौंधी में होगये कलिंगसेनाके यह वचनसुनकर गोमुख बोला कि जिससमय नरवाहनदत्त का जन्म हुआथा तब आकाशवाणीके द्वारा इसको अपना चक्रवर्त्ती होनेवाला जानकर संपूर्ण विद्याधर इसके लिये कोई घातकरना विचारतेथे क्योंकि कोई उद्दण्ड पुरुष नहीं चाहताहै कि उसपर बलवान् स्वामीहोय विद्याधरों की यह दुष्ट इच्छाजानकर श्री शिवजीने अपने गण भेजकर इसकी रक्षाकी यह नारदमुनिका कहाहुआ मैंने अपने पिताके मुखसे सुनाहै इससे संपूर्ण विद्याधर लोग हमारे विरोधी हैं गोमुखके यहवचनसुनकर कलिंगसेना अपने वृत्तान्तको शोचकर कहनेलगी कि मेरे समान इसके साथभी कोई अपनी माया न करे इससे राजपुत्रके साथ इसका शीघ्रही विवाह होजाना चाहिये यह सुनके गोमुखादिकों ने कहा कि तुम्हींको इसकार्य्यमें राजा उदयन्‌से प्रेरणा करनी चाहिये २२६ इसके अनन्तर नरवाहनदत्त मदनमंचुका को देखताहुआ उसदिन उसी उपवनमें रहा और अपने चित्तमें उसकी इसप्रकार प्रशंसा करनेलगा कि प्रफुल्लित कमलके समान मुखवाली फूलीहुई कुमुदिनीके समान नेत्रवाली दुपहरिया पुष्पके सदृश सुन्दर ओठवाली पारजातके पुष्पों के गुच्छेके समान स्तनवाली और शिरसके फूलोके समान कोमल अंगवाली मदनमंचुकाको मानों कामदेवने जगत्को जीतनेके लिये पांचों बाणों को मिलाकर एक बाण बनाया है दूसरेदिन कलिंगसेनाने वत्सराजके पासजाकर अपना मनोरथ कहा तब राजा उदयन्‌ने उसे बिदाकरके रानी वासवदत्ता और मंत्रियोंको बुलाकर कहा कि कलिंगसेना अपनी कन्याके विवाहके निमित्त शीघ्रता करती है और कलिंगसेना यद्यपि शुद्धहै परन्तु तौभी लोग उसको पुंश्चली कहते हैं और लोकके अपवादसे सबको सदैव बचनाचाहिये देखो रामचन्द्रजीने लोकापवादसे डरकर अपनी सीतासरीकी पतिव्रतास्त्रीका भी त्याग करदिया और भीष्मजी ने अपने भाई के लिये अम्बाको हरकरभी उसे अन्यपुरुषमें आशक्तजानकर त्याग करदिया इसीप्रकार कलिंगसेना मेरे स्वयंवरके लिये आईथी परन्तु मदनवेगके साथ उसका विवाहहोगया इसी से सबलोग उसकी निन्दा करतेहैं इससे मदनमंचुकाके साथ नरवाहनदत्त आपही गान्धर्व्व विवाह करले तो अच्छाहै उदयन्‌के यह वचन सुनकर यौगन्धरायणने कहा कि हे महाराज कलिंगसेना इस अनुचित कार्य्य को कैसे अंगीकार करेगी यह सामान्यस्त्री नहींहै यह दिव्यस्त्री है और इसकी कन्याभी दिव्यहै यहबात मुझे आपभी मालूमहै और मेरे मित्र योगेश्वर ब्रह्मराक्षस ने भी कहाहै इसप्रकार वह लोग जिससमय विचार कररहेथे उससमय श्री शिवजी ने आकाशवाणी के द्वारा यह कहा कि मेरे नेत्रकी अग्निसे भस्महुए कामके अवतार न-

वाहनदत्त के लिये मैंनेही तप से प्रसन्न होकर रति को मदनमंचुका नाम से उत्पन्न कियाहै और यह इस नरवाहनदत्त की स्त्री होगी इसके साथ यह मेरी कृपासे सम्पूर्ण शत्रुओं को जीतकर एक दिव्य कल्प पर्य्यन्त सब विद्याधरोंका चक्रवर्ती होकर राज्य करेगा यह कहकर आकाशवाणी के निवृत्त हो जानेपर श्री शिवजीकी इस वाणीको सुनकर राजा उदयन् ने श्री शिवजीका स्मरण करके पुत्र के विवाह का निश्चय किया और पहलेही से सम्पूर्ण तत्त्वोंके जाननेवाले योगन्धरायणकी प्रशंसा करके ज्योतिषियों को बुलाके विवाहकी लग्न पूछी ज्योतिषियोंने थोड़ेही दिनोंमें होनेवाली वड़ी दिव्य सुन्दर लग्न वता दीनी और कहा कि हे महाराज हम सबको अपने शास्त्र से मालूम होताहै कि कुछ काल तक नरवाहन-दत्तका मदनमंचुकाके साथ वियोग होगा यह कहकर ज्योतिषी तो चलेगये और राजाने अपने पुत्रके विवाहके लिये इतनी सामग्री इकट्ठी की जिससे केवल उस की सब पुरीही नहीं किन्तु सम्पूर्ण पृथ्वी उसके उद्योग से उकला गई जब विवाहका दिन आया तब कलिंगसेनाने मदनवेगके दियेहुए दिव्य आभूषणों से और पतिकी आज्ञासे आईहुई सोमप्रभा ने अपने लाएहुए आभूषणोंसे मदनमंचुकाका शृंगार किया दिव्य शृंगारसे युक्त स्वाभाविक सुन्दर वह मदनमंचुका उससमय अत्यन्त शोभितहुई जैसे चन्द्रमाकी कला सदैव मनोहर होती है परन्तु कार्त्तिकमें तो क्याही कहनाहै उससमय श्रीशिवजी की आज्ञासे दिव्यस्त्रियां अलक्षितहोके मंगलकेगीत गानेलगीं मानों उसके रूपसे जीतलीगईथी इससे लज्जितहोकर नहीं प्रकटहुईं इसके अनन्तर नरवाहनदत्त विवाहकावेष बनाकर जिस गृहमें विवाहके निमित्त मदनमंचुका थी उसमें गया वहां विवाहविधिको समाप्त करके मदनमंचुका समेत जाज्वल्यमान अग्नियुक्त वेदीपरचढा वह निर्मल रत्नों के दीपकोंसे युक्त वेदी क्याथी मानों वड़े २ राजालोगों के मस्तक थे, जो एक साथही सूर्य और चन्द्रमा सुमेरुकी प्रदक्षिणा करें तो उससमय अग्निकी प्रदक्षिणा करतेहुए बधू और वरकी उपमा पूरीहोय जैसे विवाहके उत्सव में वजतेहुए नगाड़े के शब्दों को आकाशमें बजने वाले नगाड़ों के शब्दोंने छालिया उसीप्रकार वधूसे डालीगई होमकी खीलें देवतालोगोंके फेंकेहुए पुष्पों ने छालीं उससमय अत्यन्त उदार कलिंगसेनाने इतने रत्नोंके समूह और सुवर्णके ढेर अपने जामाता को दिये कि जिससे लोगोंने उसके आगे कुवेरको भी दरिद्री जाना और अन्य कृपण राजा लोगोंकी तो क्या गणना है इसप्रकार बहुत कालसे अभिलाषा कियेगये पाणिग्रहणके महोत्सवकी विधि के समाप्त होजानेपर वह दोनों बधू वर निर्मल चित्रोंसे युक्त दीवारवाले और स्त्रियों से व्याप्त गृह के भीतरगये उस समय राजा उदयन्ने अपने सेवकोंको इतना सुवर्ण दिया कि राज्यभरके सम्पूर्ण लोग सुवर्णमय होगये अनेक २ देशोंसे आयेहुए कथिक तथा वेश्याओं के समूहों से सम्पूर्ण लोग नृत्यगीत तथा वाद्यमय जगत्को जाननेलगे उस उत्सवमें वायुसे कम्पित पताकारूपी भुजावाली और पुरकीस्त्रियोंसे कियगये शृंगाररूपी आभरणवाली कौशाम्बीपुरी भी मानो नृत्यकरती थी उससमय बड़े २ तेजस्वी राजालोग अपनी २ सेनाओंको साथलेकर चारोओर से समुद्रोंके समान बड़े २ सुन्दर रत्नों की भेट लेकर वत्स-राज उदयन्के पास आये उससमय वह पुरी राजाओंसे ऐसीव्याप्त होरहीथी कि मानों उसपुरीमें केवल

राजा लोगही रहतेथे इसप्रकार से प्रति दिन बढ़ताहुआ वह महोत्सव बहुत दिनों में समाप्त हुआ उस उत्सवमें सम्पूर्ण सुहृद परिजन तथा अन्य सब जनोंके मनोरथ पूर्ण होगये और युवराज नरबाहनदत्त बहुतकाल से अभिलाषा कियेगये सुखको मदनमंचुका के साथ अनुभव करनेलगा २६५॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांमदनमंचुकालम्बकेअष्टमस्तरंगः ८॥
मदनमंचुकानामछठालम्बकसमाप्तहुआ॥

रत्नप्रभानाम सप्तमोलम्बकः ७॥

केलिकेशग्रहव्यग्र गौरीकरनखावृतम्॥
शिवायानेकचन्द्राढ्यमिवशार्वंशिवोस्तुवः १
करंदानाम्भसार्द्रंयः कुञ्चितार्ग्रंप्रसारयन्॥
ददात्सिद्धिमिवाभांति सपायाद्वोगजाननः २

इसप्रकार महाराज उदयन्का पुत्र नरबाहनदत्त मदनमञ्चुकाके साथ विवाहकरके अपने मन्त्री गोमुखादिके साथ सुखपूर्व्वक रहनेलगा एकसमय उन्मत्तकोकिलाओंके कूजनेपर मलयाचलकी वायु के द्वारा लताओंके कम्पनरूपी नृत्यके प्रवृत्त होनेपर और सुन्दरभ्रमरोंके गुञ्जार करनेपर नरबाहनदत्त अपने मन्त्रियों समेत वसन्तोत्सवमें बनविहार करनेगया वहां तपन्तकने उपवन में भ्रमणकरके बड़ी प्रसन्नता पूर्व्वक आकर नरवाहनदत्तसे कहा कि हे युवराज यहांसे थोड़ी दूरपर आकाशसे उतरकर एक दिव्य कन्या अशोकवृक्षके नीचे खड़ीहुईहै उसके साथमें बहुतसी सखी है और उसकी कान्तिसे वह स्थान देदीप्यमान होरहाहै उसीने आपको बुलानेके लिये मुझे भेजाहै तपन्तकके यहवचन सुनकर नरवाहनदत्त उसके देखनेके लिये अपने सब मंत्रियों समेत अशोकवृक्षके नीचेगया वहां उसने चंचल नेत्ररूपी भ्रमरवाली लाल ओष्ठरूपी पल्लववाली बड़ेस्तनरूपी पुष्पोंके गुच्छेवाली गौरवर्णरूपी पराग वाली और छाया (कान्ति) से तापहरनेवाली उचित स्वरूपको धारण कियेहुए साक्षात् बनदेवता के समान वहकन्यादेखी उससमय उसके स्वरूपसे इसकेनेत्र उसमें आशक्तहोगये और उसकन्याको प्रणाम करतीहुई देखकर उसके समीपजाके उसका बड़ा आश्वासनकिया १३ इसके उपरान्त यथायोग्य सबके बैठजानेपर गोमुखने उससेपूँछा कि हे शुभे तुम कौनहो और किस निमित्त कहां से यहां आईहो यहसुन- कर वह कामदेवकी दुर्लंघ्य आज्ञासे लज्जारहितहोके तिरछी दृष्टि से नरवाहनदत्त के मुखारबिन्द को वारम्वार देखतीहुई विस्तारपूर्व्वक अपना वृत्तान्त वर्णनकरनेलगी कि त्रैलोक्य में विख्यात हिमवान् नाम पर्वतहै जिसके बहुतसे शृंगों में से एक कैलास भी है देदीप्यमान मणियोंकी प्रभासेयुक्त और श्वेतहिम के समूहोंसेव्याप्त वह पर्व्वत इतनावड़ाहै कि आकाशके समान उसका कोई परिमाण नहीं करसक्ता है

जिसके शिखर वृद्धावस्था तथा मृत्युकी नाशकरनेवाली श्री शिवजीकी कृपासे मिलनेवाली सिद्धियों तथा औषधियोंकी खान है विद्याधरों के शरीरोंकी शोभासे मिलेहुए जिसके शिखर सुमेरुके शिखरोंकी भी शोभाको तिरस्कारकरते हैं ऐसे सुन्दर उस पर्व्वतपर काञ्चनशृंगनाम एक सुवर्णमयपुरहै जो अपनी प्रभाओं से प्रभाकर (सूर्य्य) का स्थानसा मालूमहोताहै अनेक योजन लम्बे उस पुर में श्रीशिवजी का परमभक्त हेमप्रभनाम विद्याधरोंका राजा है सम्पूर्ण रानियों में वहुत प्यारी उसकी अलंकार प्रभानाम पटरानी है वह राजा हेमप्रभ अलङ्कारप्रभा के साथ नित्य प्रातःकाल उठकर स्नानकरके विधिपूर्व्वक श्री शिवजीका पूजनकरके मृत्युलोक में आकर रत्नोंसमेत एकलाख अशर्फी दरिद्रीब्राह्मणों को देताहै और वहां से लौटकर धर्मपूर्व्वक राज्य के कार्योंको देखकर मुनियों के समान बड़ेनियम से आहार पानादिककरताहै इसप्रकारसे कुछदिनों के व्यतीतहोनेपर किसी कथाको स्मरणकरके राजा हेमप्रभको मेरे पुत्रनहीं है यहचिन्ता उत्पन्नहुई उस चिन्तासे अत्यंत खिन्न राजाको देखकर अलंकार प्रभाने नम्रता से पूंछा कि हे आर्य्यपुत्र आप उदास क्यों हैं तव राजा ने कहा कि मेरे यहां सम्पूर्ण सम्पत्तियां हैं परन्तु मेरेपुत्रनहीं है यही दुःख मुझको वड़ा होरहा है मैंने जो पहले सत्त्वशीलनाम एक अपुत्र पुरुपकी कथा सुनीथी उसीकेस्मरण से मुझको यह चिन्ता उत्पन्न हुई है यहसुनकर रानीने पूंछा कि वह कथा कौनसीहै मुझसे भी कहिये तव राजा संक्षेपसे कथा कहने लगा कि चित्रकूटनाम पर्व्वतपर सदैव ब्राह्मणों को पूजन करनेवाला ब्राह्मण वरनामराजाथा उसराजा के यहां सत्त्वशील नाम एक सेवक केवल युद्ध के ही लिये नौकरथा उसको राजाकेयहां से सौ अशर्फी मासिक मिलतीथीं परन्तु उतने में उसमहादान शील सत्त्व शीलका निर्वाहनहीं होताथा क्योंकि वह अपुत्रहोने के कारण केवलदानमें अपनाचित्त वहलाया करताथा वह यहशोचाकरताथा कि परमेश्वर ने मुझे चित्तकेप्रसन्न करनेकेलिये पुत्र तो नहीं दिया है और दान का व्यसनदेदिया है तिसपर भी धननहीं दिया संसारमें सूखेहुए जीर्ण वृक्ष तथा पाषाणका भी जन्म अच्छाहै परन्तु दानशीलका दरिद्री होना नहीं अच्छाहै इसप्रकार शोचते २ उसे एक समय उपवनमें वहुतसी निधि मिलगई वहुतसे सुवर्ण तथा रत्नमय उसनिधिको वह निजसेवकों के द्वारा वह अपने घर उठवालाया और उसधनसे ब्राह्मणोको तथा अपने मित्रोंको देताहुआ और यथेच्छ भोगकरता हुआ सुख पूर्व्वक रहनेलगा उसके गोत्रीभाइयों ने उसे सुखपूर्व्वक रहताजानकर यह अनुमान करके कि इसको निधिमिली है राजासे जाकर कहदिया राजाने उसे प्रतीहारके द्वारा वुलवाभेजा तव वह सत्त्वशील राजाकी आज्ञासे वहां गया और पहले क्षणभर भीतर जानेकी आज्ञा न पाकर राजाके आंगनमें एकान्त में वैठगया वहां शोकके कारण पृथ्वी खोदते २ उसे ताम्रके कलशे में और वहुतसी निधिमिली मानोंईश्वरने उसपर प्रसन्नहोके राजा को प्रसन्नकरने के लिये उपाय निकालदिया उसने उसनिधिको देखकर उसीप्रकार मिट्टीसेतोपदिया और प्रतीहारकेद्वारा आज्ञापाकर राजाके निकटजाके उसेप्रणामकिया तव राजाने उससे कहा कि मुझे मालूमहुआ है कि तुमने निधिपाई है वह मुझे देदो उसने कहा कि हे महाराज जो निधिपहले मिली है वह देऊं अथवा जो आजमिली है वह निधिदेऊं राजा

ने कहा कि आजकी मिलीहुई निधि मुझको देदे तब उसने राजाको लेजाकर वह निधि जो आँगनमें मिलीथी राजाको दिखलादी उस निधिको पाके राजाने प्रसन्नहोकर कहा कि हे सत्त्वशील तुम पहले की पाईहुई निधिको यथेच्छ भोगकरो राजाके यह वचनसुनकर सत्त्वशील अपने घरमें आकरदाने तथा भोगसे अपने नामको यथार्थ करताहुआ और अपुत्रताके दुःखको किसीप्रकार दूरकरता हुआ रहा ५० यह कथा सत्त्वशील की मैंने प्रथम सुनी थी उसीका स्मरण करके पुत्रनहोनेकी चिन्तासे मुझे दुःखहो रहाहै इसप्रकार अपने पतिके मुखसेकथाको सुनकर रानीअलंकारप्रभाबोली सत्यहै कि सत्त्ववान् पुरुषों का भाग्यही सहायकरता है देखो सत्त्वशीलको संकटमें दूसरी निधि मिलगई इससे आपका भी अपने सत्त्व के प्रभावसे मनोरथ सिद्धहोगा इसविषय पर मैं आपको विक्रमतुंगनाम राजाकी कथा सुनातीहूं सम्पूर्ण पृथ्वी का आभूषण रूप अनेकप्रकारकी मणियों से युक्त पाटल पुत्रनाम नगरहै उसमें विक्रम तुंगनाम सत्त्ववान् राजाथा जो दानमें अर्थियों से और युद्धमें शत्रुओं से कभी नहीं पराङ्मुखहुआ वह राजा एकसमय वनमें शिकार खेलनेकोगया वहां एकब्राह्मण बेलोंकाहवन कररहाथा उसे देखकर राजा ने पूछने की इच्छाभी की परन्तु शिकारमें तत्परहोने के कारण सेनासमेत वहांसे आगे चलागया बहुत कालतक उछलतेहुए और गिरतेहुए सिंहादि जीवोंको अपने हाथसेमारकर शिकार खेलके राजा लौटा लौटकर भी राजाने ब्राह्मणको उसीप्रकार हवनकरते देखा और उसकेपास जाके प्रणाम पूर्वक पूछा कि आपका क्यानामहै और आप यह किसनिमित्तकररहे हैं राजाके पूछनेपर ब्राह्मणने आशीर्वाद देकरकहा कि मैं नागशर्म्मानाम ब्राह्मणहूं और इसहोमका यहफलहै कि बिल्वोंका हवनकरते २ जब अग्नि भगवान् प्रसन्नहोते हैं तब कुण्डसे सुवर्ण के बेल निकलने लगते हैं और अग्नि भगवान् साक्षात् प्रकटहोकर वरदानदेते हैं मुझे बहुत काल बेलोंका हवनकरतेहुए व्यतीतहोचुकाहै परन्तु अभी तक मुझ मन्दभागी पर अग्निदेव प्रसन्न नहींहुए हैं उसब्राह्मण के यह वचन सुनकर बड़ा सत्त्ववान् राजा विक्रमतुङ्ग बोला कि हे ब्राह्मण मुझको एक बेलदो मैं अभी हवनकरके अग्निको प्रसन्न करता हूं तब ब्राह्मण ने कहा कि मैं व्रतमें बैठाहुआ महापवित्रहूं जब मेरे हवनसे नहीं प्रसन्नहुए तो तुम तो महाभ्रष्टहोरहे हो तुम्हारे हवनसे कैसे प्रसन्नहोंगे ब्राह्मण के वचन सुनकर राजाने फिरकहा कि ऐसा नहीं है तुम मुझको बिल्वदेदो तो अभी आश्चर्य्य देखलो तब ब्राह्मणने आश्चर्य्य देखनेकेलिये उसको बेलदेदिया औरराजाने अपने दृढ़सत्त्वयुक्त चित्तमें यहसंकल्पकरके कि इसबेलकेहवनसे अग्निदेवनहीं प्रसन्नहोंगे तो मैं अपना शिर हवनकरदूंगा बेलकाहवनकरदिया हवनकरतेही कुंडमेंसे साक्षात् अग्निदेव राजाके सत्त्वरूपीवृक्षके फलकेसमान सुवर्णके बेलको हाथमेलियेहुए प्रकटहुए और बोले कि हेराजा तुम्हारे सत्त्वसे मैं प्रसन्नहूं वरदानमांगो अग्निके यहवचन सुनकर राजाने प्रणामकरके कहा कि मुझे और कोई वरनचाहिये आपइस ब्राह्मणके मनोरथ को पूर्णकीजिये यह सुनकर अग्निदेव ने प्रसन्न होकर कहा कि हे राजा यह ब्राह्मण बड़ाधनवान्होगा और हमारी कृपासे तुम्हाराभी खजाना कभी क्षीण न होगा इस प्रकार वरदान देतेहुए अग्निदेव से उस ब्राह्मण ने कहा कि इस स्वेच्छाचारी राजाके एकहीबार हवन

करने से तो आपप्रकट होगये परन्तु मैं ने इतने दिनतक नियम पूर्व्वक हवन किया और आपनहीं प्रकटहुए इसका क्या कारणहै तव अग्निदेवने कहाकि जो हम इसेवर न देते तो यह शीघ्रही सत्त्ववान् होने के कारण अपना शिर हवनकरदेता हे ब्राह्मण तीव्रसत्त्ववाले लोगों को शीघ्रही सिद्धिहोती है और तुमसरीके मन्द सत्त्ववालों को देरमें सिद्धिहोतीहै यह कहकर अग्निके अन्तर्द्धान होजाने पर नागशर्म्मा राजासे पूछकर अपने घरकोगया और क्रमसे बड़ा धनवान् होगया और राजा भी बड़े सत्त्वके कारण संपूर्ण लोगो से अपनी प्रशंसा सुनताहुआ पाटलिपुत्र नगर को चलाआया ७८ वहां एकसमय अकस्मात् शत्रुञ्जय नाम प्रतीहार ने मंदिर में बैठेहुए राजा से विज्ञापन किया कि हे महाराज दत्तशर्म्मा नाम एक विद्यार्थी ब्राह्मण द्वारपर खड़ाहै और आपसे एकान्तमें कुछ विज्ञापन किया चाहताहै राजाने कहा अच्छा आनेदो तव राजाकी आज्ञासे वह ब्राह्मण भीतर आकर प्रणाम करके बैठगया और कहने लगा कि हे राजा मैं किसी चूर्ण की युक्तिसे तांवेका सुवर्ण वनासक्ताहूं यह युक्तिमेरे गुरूने मुझे वताई है और मेरे आगेही गुरूजीने इस युक्तिसे सुवर्ण वनाया था उसके यह वचन सुनकर राजाने तांवा मंगवाकर गलवाया और उसब्राह्मण ने उसमें चूर्णडाला उस चूर्णको कोई यक्ष अदृश्यहोकर डालतेही हर लेगया यहवात केवल राजाहीने अग्निकी कृपा से देखली चूर्णके न पड़ने से तांवा सुवर्ण नहीं हुआ इस प्रकार उसने तीनिवार अपना चूर्ण छोड़ा और तीनों वार यक्षके हरलेजानेसे उस का श्रम व्यर्थहो गया तव राजाने उसको खिन्न देखकर तांवा गलवाके उससे चूर्ण लेकर अपने हाथ से डाला और यक्ष राजा के तेजके प्रभाव से उसे हरनहींसका और लज्जितहोकर चलागया तवचूर्ण के पड़ने से तांवा सुवर्ण होगया राजा के हाथ से सुवर्ण वनता देखकर उसब्राह्मण ने वड़े आश्चर्य पूर्व्वक पूछा कि यह क्या वातहै उसके यह वचन सुनके राजाने यक्षका सव वृत्तान्त कहदिया और उस वालक ब्राह्मण से चूर्ण वनाने की युक्ति सीखकर उसे वहुतसा धन देकर कृतार्थकर दिया धनपाकर वह ब्राह्मण तो विवाह करके सुखपूर्व्वक रहने लगा और राजाभी उस युक्ति से वनायेहुए सुवर्ण से अपने खजाने को पूर्णकरके इतनादान करनेलगा कि कोई भी ब्राह्मण दरिद्री नहीरहा और सुखपूर्व्वक अपनी रानियों समेत रहने लगा इससे इस प्रकार मानो डराहुआ अथवा प्रसन्नहुआ ईश्वरही वड़े सत्त्ववालों के मनोरथ को पूर्ण करताहै और हे राजा तुम से अधिक धीर सत्त्ववान् तथादानी दूसरा कौन है श्री शिवजीकी आराधना करने से आपके अवश्य पुत्रहोगा शोक न कीजिये रानी अलंकारप्रभा के मुखसे इस उदारकथा को सुनकर राजाने प्रसन्नहोकर उसके कहने पर विश्वास किया और उत्साह युक्त अपने हृदयसे यहजाना कि श्रीशिवजी के आराधनसे मेरे अवश्य पुत्र होगा इसके उपरान्त दूसरे दिन रानी समेत स्नान करके श्रीशिवजी का पूजनकरके और नौकरोड़ अशर्फीब्राह्मणों को दानकरके पुत्रकी प्राप्ति के लिये श्रीशिवजी के सन्मुख निराहारहोकर राजा तपकरनेलगा और उसने मनमें यह निश्चय करलिया कि कै तो शिवजी प्रसन्नहोंगे या शरीरही नष्टहोगा फिर तपमें स्थितहोके राजाने उपमन्युको दुग्धसमुद्र के देनेवाले वरदायक श्रीशिवजीकी स्तुति इसप्रकारसे की कि हे गौरीश आकाशादिक भेदोंसे भिन्न २

अष्ट मूर्त्तिवाले और सम्पूर्ण संसारकी उत्पत्ति पालन तथा नाश करनेवाले आपको नमस्कारहै सदैव प्रफुल्लित हृदयरूपी कमलमें शयनकरनेवाले शुद्धमानसमें रहनेवाले राजहंसरूप आपको नमस्कार है हे शंभो दिव्यप्रकाशवाले निर्मल जलात्मक अद्भुत चन्द्रमारूप आपको दोषरहित पुरुष देखसक्ते हैं ऐसे आपको मेरानमस्कारहै अर्द्धशरीरमें स्त्रीके धारण करनेवाले केवल ब्रह्मचारी आपको नमस्कारहै अपनी इच्छासे सम्पूर्ण संसारको रचनेवाले विश्वात्मक आपको नमस्कार है इसप्रकार स्तुतिकरतेहुए राजाको तीनदिनके उपरांत श्रीशिवजीने स्वप्नमें साक्षात्कार दर्शनदेकरकहा कि हे राजा उठो तुम्हारे वंशका वर्द्धक वीर पुत्र उत्पन्नहोगा और पार्वतीजीकी कृपासे एकश्रेष्ठ कन्याभी तुम्हारे उत्पन्नहोगी जो कि तुम लोगोंके होनेवाले चक्रवर्त्ती महातेजस्वी नरवाहनदत्तकी रानीहोगी इसप्रकार कहकर श्रीशिवजी के अन्तर्द्धान होजानेपर प्रातःकाल हेमप्रभ प्रसन्नता पूर्वकजगा और उसने रानीअलंकारप्रभा से अपना स्वप्न कहकर उसको बहुत प्रसन्नकिया और रानीने भी कहा कि मुझसे भी श्रीपार्वतीजीने स्वप्नमें ऐसाहीकहाहै इसप्रकार परस्पर अपनेस्वप्नके वृत्तान्तको वर्णनकरके रानी तथा राजाने स्नानकरके श्रीशिवजीका पूजनकिया और बहुतसा दानदेके व्रतका पारणकर महाउत्सवकिया१०८इसके उपरांत कुछ दिनोंके व्यतीत होनेपर रानी अलंकारप्रभा गर्भवतीहुई चंचल नेत्ररूपी भ्रमरवाले पीत कमल के समान सुन्दर उसके मुखको देखकर राजा अत्यन्त प्रसन्नहुआ रानीके उदारगर्भके मनोरथोंसे राजाको पहलेहीसे यह अनुमान होगया कि बड़ा तेजस्वी पुत्र होगा समय पाकर सूर्य्यको आकाशके समान रानीने पुत्र उत्पन्न किया उसबालकके स्वाभाविक तेजसे सम्पूर्ण सूतिकागृह देदीप्यमान होगया तब राजा सोमप्रभने अपने पुत्रको शत्रुओं का भयदायी जानकर और आकाशवाणी सुनकर उसका नाम वज्रप्रभरक्खा शुक्लपक्ष के चन्द्रमा के समान वह बालक कुलरूपी समुद्रकी वृद्धिकेलिये धीरे२ कलाओं से पूर्ण होकर बढ़नेलगा तदनन्तर थोड़ेही कालमें रानी अलंकारप्रभा फिर गर्भवतीहुई वह गर्भवती रानी सुवर्णके सिंहासन पर बैठीहुई अन्तःपुरोंकेरत्नके समान शोभितहोतीथी उनदिनों रानी के चित्तमें यह मनोरथ उत्पन्नहुआथा कि मैं विमानपर चढ़कर आकाशमें घूमूं हेमप्रभने अपनी विद्याके प्रभाव से कमलों का विमान बनाके रानीको आकाशमें भ्रमण करवाया इसप्रकार गर्भके महीनों के व्यतीत होजानेपर रानीके एकबड़ी सुन्दर कन्या उत्पन्नहुई जिसका कि वर्णन इतना बहुतहै कि उसका जन्म श्रीपार्वतीजीकी कृपासे हुआथा कन्याके जन्मके समय यह आकाशवाणीहुई कि यह नरवाहन-दत्तकी स्त्री होगी इस आकाशवाणी को सुनकर राजाने पुत्रोत्सव के समानही उसका भी उत्सव किया और उसका नाम स्वप्नप्रभारक्खा वहरत्नप्रभा अपने पिताकी विद्याओंसे संस्कार युक्तहोकर दिशाओंमें प्रकाशित करतीहुई बढ़ी इसकेउपरान्त राजा अपने पुत्र वज्र प्रभका विवाहकरके उसे युवराजपदवी देकर और सम्पूर्ण राज्यकाभार उसपर रखकर सावधानहोकर रहनेलगा परन्तु केवल कन्याकेविवाहकी चिंता उसके हृदयमें बाकीरही एकसमय राजानेपास बैठीहुई रानी अलंकार प्रभासे अपनी कन्याको विवाह के योग्य देखकरकहा कि हे रानी कुलकी आभूषणरूपी कन्या महात्माओंको भी महादुखदायी होती

है देखो रत्नप्रभा विनीतभी है विद्यावतीभी है और रूप तथा युवावस्थासे युक्तभी है परन्तु इसकेविवाह के लिये मेरे चित्तमें खेदबनारहताहै यहसुनकर रानीनेकहा कि इसके जन्मकेसमय यह आकाश वाणी हुई थी कि यह नरवाहनदत्तकी स्त्रीहोगी जो कि विद्याधरोंका चक्रवर्तीहोगा उसीकेसाथ इसका विवाह क्यों नहींकरते रानी के यह वचनसुनकर राजाने कहा कि वह कन्या धन्यहै जिसका विवाह नरवाहनदत्त के साथहो क्योंकि वह कामका अवतारहै परन्तु अभीतक वह दिव्यता को नहीं प्राप्तहुआहै इससे मैं यह प्रतीक्षाकरताहूं कि जब उसे विद्याओं की प्राप्तिहोले तब मैं अपनी कन्यादूं कामदेव के मोहनमंत्रों के समान पिताके वचनों को सुनकर रत्नप्रभा भ्रांतसी भूतग्रस्तसी सुप्तसी और लिखितसी होगई उसकाचित्त उसी वरने हरलिया तब वह रत्नप्रभा माता पिताको नमस्कारकरके अपने महल में जाकर चिन्तासे व्याकुलहोकर सोगई स्वप्नमें पार्वतीजी ने कृपाकरके उससे यहकहा कि हे पुत्री प्रातःकाल शुभदिनहै इससे तुम कौशाम्बीनगरीमें जाकर वत्सराज उदयन्के पुत्र अपने वरको देखना तब तुम्हारा पिता तुमको और तुम्हारे वरको यहांलाकर तुम्हारा विवाहकरदेगा इसप्रकार स्वप्नमें श्रीपार्वती जी की आज्ञा को पाकर उसने प्रातःकालही उठकर वह स्वप्न अपनी माता से कहा और माता की आज्ञापाकर विद्याके प्रभावसे अपने वरको उपवनमें जानकर उसके देखनेके लिये अपने पुरसे गमन किया है आर्यपुत्र वह रत्नप्रभा मैंहीहूं क्षणभरमेंही वहां से चलकर यहां आगईहूं अब जो आप उचित समझिये सो कीजिये उसके यह वचनसुनकर और नेत्रों में अमृतकीसी वृष्टिकरनेवाले उसके स्वरूप को देखकर नरवाहनदत्त अपने अन्तःकरणमे ब्रह्माकी यह निन्दाकरके कि मेरासम्पूर्णशरीर कर्ण तथा नेत्रमय क्यों नहीं वनादिया बोला कि हे सुन्दरि मैं धन्यहूं मेरा जन्मसफलहै जिसके पास तुम आपही आईहो १२० इसप्रकार परस्पर उन दोनों के नवीन प्रेमसे वार्त्तालापकरने पर अकस्मात् आकाश में विद्याधरोंकी सेना दिखाईदी उस सेनाको देखकर रत्नप्रभा बोली कि यह तो यहीं आगये उसके ऐसा कहतेही राजा सोमप्रभ अपने पुत्रसमेत आकाशसे उतरा और नरवाहनदत्तके निकटआया नरवाहनदत्तने स्वागत पूंछकर उनका वड़ाआदर सत्कारकिया फिर परस्पर शिष्टाचारकरके जैसे वह वैठे वैसेही राजा उदयन् ने भी उस वृत्तान्तको सुनकर अपने मन्त्रियों समेत वहां आकर हेमप्रभका वड़ाआदर सत्कारकिया तब हेमप्रभने उदयन् से रत्नप्रभाका सम्पूर्ण वृत्तान्तकहकर कहा कि मैंने अपनी विद्याके प्रभावसे जानलिया कि मेरी कन्या यहांआई है और इसका सम्पूर्ण वृत्तान्त मैं जानताहूं हे राजा मैं अपनी विद्यासे विमानवनाकर यदि आपकी आज्ञाहोय तो नरवाहनदत्तको उसपरचढ़ाकर अपने पुरमें लेजाऊं थोड़ेहीकाल में यह रत्नप्रभाको लेकर आपकेपास आजायगा इसप्रकार वत्सराज से प्रार्थना करके और उनकी अनुमतिपाकर हेमप्रभने अपनी विद्याके वलसे उत्तम विमानवनाया और कहा कि ऐसाही विमान कुछकालके पीछे आपके पुत्रकेपास भी होजायगा फिर विमानको वनादेखकर राजाकी आज्ञासे लज्जासे अधोमुख नरवाहनदत्त अपने गोमुखादि मंत्रियों समेत उसपर बैठा और यौगन्धरायण भी राजाकी आज्ञासे उसकेसाथ बैठगया इसप्रकार उन सवलोगों के बैठजानेपर हेमप्रभ रत्नप्रभा

कोभी बैठालकर विमानको लेकर काञ्चनशृंगनाम अपने पुरकोगया वहां नरवाहनदत्तने अपने श्वशुर का सुवर्ण के परकोटे से देदीप्यमान सुवर्ण से बनाहुआ पुरदेखा वह पुर सब ओरसे निकलीहुई किरणों के समूहसे ऐसा शोभितहोताथा कि मानों जामाता के स्नेहसे उसने अनेक भुज फैलाई थीं ऐसे सुन्दर उस पुरमें नरवाहनदत्त को लेजाकर बड़ेउत्सव से हेमप्रभ ने रत्नप्रभाका विवाहकरदिया और दायज़में बहुतसे देदीप्यमान रत्नों के समूहदिये उन समूहोंको देखकर यह भ्रान्तिहोतीथी कि विवाहके निमित्त मानों कईस्थानों में अग्नि प्रज्वलितकीगयी है उससमय हेमप्रभने अपने सेवकोंको भी बहुतसा धन दिया उस उत्सव में पताकायुक्त गृहभी ऐसे शोभितहोते थे कि मानों इन्हों ने भी वस्त्रपाये हैं इसप्रकार विवाह के होजानेपर नरवाहनदत्त दिव्य ऐश्वर्य्य को भोगकरताहुआ वहां रत्नप्रभाके साथ रहा और रत्नप्रभाकी विद्याके बलसे आकाश में जाकर दिव्यउपवन बावड़ी तथा देवमंदिरों में उसने आनन्द से विहार किया इसप्रकार कुछदिन विद्याधरों के देश में रहकर नरवाहनदत्त यौगन्धरायण की अनुमतिसे वहां से चलनेको उद्यतहुआ तब अलंकारप्रभा ने उसका बड़ा मंगलाचार किया और हेमप्रभ फिरभी रत्नादिदेकर उसका बहुत सत्कार करके रत्नप्रभा तथामंत्रियों समेत उसे उसी विमान पर बैठालकर कौशाम्बीपुरीको लेआया अत्यन्त प्रसन्न राजा उदयन्से कियेगये महा महोत्सवसे युक्त कौशाम्बी में आकर नरवाहनदत्त हेमप्रभ रत्नप्रभा तथा मंत्रियों समेत राजमन्दिरमें गया और वासवदत्ता समेत अपने पिताके चरणोंपर गिरा वधूसमेत प्रणामकरतेहुए अपने पुत्र को देखकर राजा उदयन्के हृदयमें बड़ा हर्षहुआ और उसने अपने ऐश्वर्य्य के अनुसार अपने सम्बन्धी हेमप्रभका बड़ा सत्कारकिया इसके उपरान्त राजा उदयन् से आज्ञालेकर हेमप्रभके चलेजानेपर नरवाहनदत्त ने रत्नप्रभा मदनमंचुका तथा अपने मंत्रियोंके साथ वहदिन बड़ेहर्षसे व्यतीत किया ।६४॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांरत्नप्रभालंबकेप्रथमस्तरंगः १॥

इसप्रकार अत्यन्त रूपवती विद्याधरी रत्नप्रभाको पाकर उसी के मन्दिर में बैठेहुए नरवाहनदत्तके दर्शनके लियेदूसरे दिन प्रातःकाल गोमुखादिक मन्त्रीद्वारपर आये उससमय द्वारपालिकाने क्षणभर उनलोगों को रोककर भीतरसे आज्ञापाकर उन्हें आनेदिया तब उनलोगों का आदर करके रत्नप्रभाने द्वारपालिकासे कहा कि आर्य्यपुत्रके मित्र गोमुखादिकों को अबकभी न रोकना यहतो हमारे शरीरही के समान हैं और अन्तःपुरमें इतनी रक्षाकरनेमें भी मेरीअनुमति नहीं है द्वारपालिका से इसप्रकार कहकर उसने अपने पतिनरवाहनदत्तसे कहा कि हे आर्यपुत्र मैं प्रसंगपाकर आपसे कहतीहूं कि स्त्रियोंकी रक्षा केवल नीति है और ईर्षासे अधिक रक्षाकरना अज्ञानताहै क्योंकि उससे कोई प्रयोजन सिद्ध नहींहोता सत्कुल में उत्पन्न होनेवाली स्त्रियोंकी रक्षाकेवल उनकाशीलही करताहै (धातापिनप्रभुः प्रायश्चपला नांतुरक्षणे मत्तानदीचनारीचनियन्तुंकेनपार्य्यते) प्रायः चपलस्त्रियों की रक्षाकरने में ब्रह्माभी नहीं समर्थ हैं मत्तनारी और नदीको कौनरोकसक्ता है इस विषयपर मैं आपको एक कथासुनाती हूं कि समुद्रके बीचमें रत्नकूटनाम एक बड़ाद्वीप है उस द्वीपमें बड़ा उत्साही परमवैष्णव रत्नाधिपनाम यथार्थ

नामवाला राजाथा उसने सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतनेके लिये और पृथ्वीपरके सबराजाओंकी कन्याओं को अपनी स्त्री बनानेके लिये विष्णुभगवान् का तपकिया तपसे प्रसन्न होकर साक्षात् विष्णुभगवान् ने दर्शन देकर प्रणाम करतेहुए राजासे कहा कि हे राजा उठो जो मैं कहताहूं उसेसुनो कोई गन्धर्व मुनि के शापसे कलिंग देशमें श्वेतरश्मिनाम श्वेत हाथी होकर उत्पन्नहुआ है पूर्व्वजन्म में तप के प्रभावसे और मेरी भक्तिसे उसज्ञानी हाथीको पूर्व्वजन्मका स्मरणभी बनाहै और वह आकाशमें भी गमनकरसक्ताहै उसको मैंने स्वप्नमें तुम्हारेपास आनेकी आज्ञादेदी है वह आकाशमार्ग से आकर आपका वाहनबनेगा उसके ऊपर चढ़कर ऐरावतपरचढे इन्द्रके समान तुम आकाशमार्गसे जिसजिस राजाके पासजाओगे वह तुम्हारे दिव्य प्रभावको देखकर तुमको अपनी कन्या देदेगा और मैं उन राजालोगों को स्वप्नमें आज्ञाभी देतारहूंगा इसप्रकार तुम सम्पूर्ण पृथ्वीको जीतलोगे और अस्सी हजार राजकन्या तुम्हारी स्त्री होजायँगी यह कहकर विष्णुभगवान् के अन्तर्द्धान होजानेपर राजा ने व्रतका पारण किया और दूसरे दिन वह श्वेतरश्मि हाथी उसके पास आकाश मार्ग से आया उसपर चढकर विष्णु भगवान् की आज्ञानुसार वह राजा सम्पूर्ण पृथ्वी जीतकर अस्सी हजार राजकन्या ले आया और अपने रत्नकूट पुरमें सुख पूर्व्वक विहार करने लगा और उस श्वेतरश्मि हाथी की शान्तिकेलिये प्रति दिन पांचसौ ब्राह्मणों का भोजन करवाने लगा एक समय राजा रत्नाधिपति उसहाथी पर चढकर बहुत से द्वीपों में घूमकर अपने द्वीप में आया वहां आकर जब वह हाथी आकाशसे उतरनेलगा उस समय भाग्यवश से गरुड़वंशके किसी पक्षीने उसके शिरमें टोंटमारी वह पक्षी तो राजाके तीक्ष्ण अँकुशमारनेसे भागगया परन्तु हाथी मूर्च्छित होकर पृथ्वी में गिरपड़ा और राजाके उतर आनेपर मूर्च्छा जगने परभी वह उठाने से भी नहीं उठसका और न खासका पांचदिन तक इसीप्रकार उस हाथीके निराहार पड़ेरहनेपर राजानेभी कुछ आहार नहीं किया और पांचवेंदिन बहुत दुखीहोकर यह कहा कि हे लोकपालो इससंकट में मुझे कोई उपाय बताओ नहीं तो मैं अपना शिरकाटकर आप लोगोंकी भेंट करदूंगा यह कहकर राजा खड्ग लेकर अपना शिरकाटनेको उद्युक्त होगया राजाको ऐसा साहस करते जानकर उसी समय आकाश वाणीहुई कि हेराजा साहस मत-करो कोई सती स्त्री इस हाथीको अपने हाथसे स्पर्शकरे तो यह अच्छा होजाय नहीं तो नहीं अच्छा होगा इस आकाशवाणीको सुनकर राजाने उसी समय बहुत प्रसन्न होकर अपनी उसअमृतलता नाम रानीको जिसकी कि उसने बड़ी रक्षाकीथी बुलवाया उसने आकर हाथीका स्पर्शकिया परन्तु हाथी नहीं उठा तब राजाने अपनी सम्पूर्ण स्त्रियोंको बुलवाकर सबसे एक २ करके स्पर्शकरवाया पर हाथी नहींउठा क्योंकि उनमें एकभी सती न थी राजाने उनअस्सीहजार रानियोंको लज्जित देखकर अपने पुरकी सम्पूर्ण स्त्रियोंको बुलवाकर क्रमपूर्व्वक सबसे हाथीका स्पर्श करवाया जब इतनेपर भी वह हाथी न उठा तो राजाके चित्तमें लज्जाहुई कि हाय मेरे पुरमें एकभी सती स्त्री नहीं है उस समय हर्षगुप्त नाम एक वैश्यताम्रलिप्ती नाम नगरी से उसद्वीप में आयाथा वह भी इसवृत्तान्तको सुनकर कौतुक

देखनेकेलिये वहांपर गया उसबणियेंकी शीलवतीनाम स्त्रीभी उसके पीछे २ चलीगईथी उसने कहा कि जो मैंने चित्तसे भी अपनेमनमें किसी अन्य पतिका स्मरणभी न कियाहोय तो मेरेहाथके स्पर्श से यह हाथी उठे यहकहकर उसने उस हाथीका स्पर्शकिया उसके स्पर्श करतेही हाथी स्वस्थ होकर उठखड़ाहुआ और चारा खानेलगा हाथीको उठा देखकर सबलोग शीलवती की प्रशंसा करके कहने लगे कि ऐसी साध्वी स्त्रियां कहीं विरलीही होती हैं जो ईश्वर के समान इस सम्पूर्ण संसारकी उत्पत्ति पालन तथा संहार करसक्ती हैं राजा रत्नाधिपतिने भी प्रसन्नहोकर शीलवतीको असंख्य रत्नों से पूर्ण करदिया और उसके स्वामी हर्षगुप्तकोभी बड़ेसत्कार पूर्व्वक अपने घरके पासही मकान देकर टिकाया और उसदिनसे अपनी सम्पूर्ण स्त्रियोंका स्पर्शभी त्यागकरके उनको केवल भोजन और वस्त्रमात्रदेने मिलनेकी आज्ञादी इसके उपरान्त राजाने भोजन करके हर्षगुप्त समेत शीलवतीको एकान्तमें बुला कर कहा कि हेशीलवती तुम्हारे पिताके वंशमें कोई औरभी कन्याहै जो होय तोतुम उसका मेरेसाथ विवाह करवादो मैं जानताहूं कि वह भी तुम्हारेही समान होगी राजाके यह बचन सुनकर शीलवती बोली कि हे महाराज ताम्रलिप्तीपुरी में तारादत्तानाम एक मेरी बहिनहै वह बड़ी रूपवती है जो आपकी इच्छाहोय तो उसके साथ विवाह करलीजिये राजा ने उसके बचन स्वीकारकरलिये और दूसरे दिन ताम्रलिप्तीपुरी के चलने का निश्चय किया और हर्षगुप्त तथा शीलवती को उसी श्वेतरश्मि हाथीपर सवारकराके उस पुरीको गया और हर्षगुप्त के यहां पहुंचकर शीलवती की बहिनके विवाहके निमित्त ज्योतिषियों से लग्नपूछी ज्योतिषियों ने दोनों के जन्म नक्षत्र पूंछकर कहा कि आजसे तीनमहीने के उपरान्त शुद्धलग्नहै और एक लग्न आजभी है उसमें जो विवाहहोगा तो तारादत्ता अवश्य कुलटा होजायगी ज्योतिषियों के यह वचन सुनकर राजाने सुन्दर स्त्री के लिये उत्कण्ठितहोकर और बहुत कालतक स्त्री के विनारहनेको असमर्थहोकर शोचा कि विचारसे क्या प्रयोजनहै आजही राजदत्ता के साथ विवाहकरनाचाहिये यह शीलवतीकी बहिन है इससे यह निरभिमानहोने के कारण कुलटा न होगी और समुद्रके बीच में मनुष्यरहित एक द्वीपखण्डहै जिसमें कि मेरा चौखंनामहल बना है उसमें इसेरक्खूंगा और उस दुर्गमस्थान में केवल स्त्रीही इसकी सेवाके लिये रक्खूंगा इसप्रकार पुरुषके बिना देखेभाले यह कैसे पुंश्चली होजायगी यह निश्चयकरके राजा ने उसीदिन उसी लग्न में शीलवती के कहने से राजदत्ता के साथ अपना विवाहकरलिया और विवाहकरके हर्षगुप्त शीलवती तथा राजदत्ता को उसी श्वेतरश्मि हाथी पर बैठाकर क्षण भरमें आकाशमार्ग्ग के द्वारा रत्नकूट द्वीप जहां कि उस- का मार्ग सब लोग देखरहे थे आया और वहां आकर शीलवती को फिरभी इतना धन दिया कि जिससे वह अपने पतिव्रतपने का फल पाकर कृतकृत्य होगई ६२ तदनन्तर राजाने राजदत्ताको श्वे- तरश्मिपर बैठालकर पहलेहीसे विचारेहुए समुद्रके बीच मनुष्योंसे दुर्गम द्वीपमें लेजाकर अपने मंदिर में रक्खा और केवल स्त्रियांही उसकी सेवाकेलिये रक्खीं और जिन २ वस्तुओंकी वहां आवश्यकता थी वह सब वस्तुराजाने किसीपर विश्वासनकरके आपही आकाश मार्गसे वहां पहुंचाई राजा उसके

अनुरागसे रात्रिभर तो उसीकेपास रहताथा और दिनको राज्यके कार्य्य करनेको रत्नकूटपर चला आता था एकसमय राजाने कोई दुस्स्वप्न देखाथा इससे प्रातःकाल मंगलाचार करके आपभी मद्यपान किया और रानीको भी मद्यपान करवाया फिर किसी कार्य्यके लिये रत्नकूटमें आनेका विचार किया यद्यपि वह मदमें उन्मत्त होकर राजाको छोड़ना नहीं चाहती थी तथापि वह कार्य्यवशसे रत्नकूटको चलाही आया और चित्तमें शोचतारहा कि वह मदोन्मत्त वहां अकेली क्या करेगी इस बीचमें राजदत्ता उस दुर्गमद्वीपमें दासियों के अपने २ कार्यों में लगजानेपर अकेली द्वारपर चलीआई और वहाँ राजा की सबरक्षाओं के जीतने के लिये मानों आयेहुए भाग्यके समान एक आश्चर्य्यकारी पुरुषको देखकर उसमदोन्मत्तने पूछा कि तुमकौनहो और इस अगम्यस्थान में कैसे आयेहो रानीके यह वचनसुनकर अनेक क्लेशोंका भोगनेवाला वह पुरुष बोला कि मैं पवनसेननाम वैश्यहूं मथुरामें मेराघरहै मेरे गोत्री भाइयोंने पिताके मरनेपर मुझे अनाथ जानकर मेरा सब धनछीन लिया तब मैंने विदेशमें जाकर नौकरी करली वहा कुछधन इकट्ठा करके रोजगार करने के लिये अन्य देशको चला मार्ग में चोरोंने मेरा सब धन छीनलिया चोरों के हाथ सब धन गमाकर वहां से अपने समान अन्य साथियो के साथ कनकक्षेत्र नाम एक स्थानमें जहां रत्नोंकी खानि निकाली जाती थी गया वहां राजा से कुछ पृथ्वी लेकर सालभरतक खोदतारहा परन्तु एकभी रत्न नहीं मिला और मेरे साथियों को अनेक रत्न मिले तब मैं अपनी ऐसी मन्दभाग्यता देखकर समुद्रके तटपर जाकर बहुतसे काष्ठ इकट्ठे करके चिता बनाके जलने का विचार करनेलगा उस समय जीवदत्तनाम एक वैश्य वहां आया उसने मुझे चिन्ता से निवारण करके अपने पास नौकरकरलिया और मुझे अपने साथ जहाजपर बैठाकर स्वर्ण-द्वीपमें जानेका प्रस्थानकिया पांच दिनतक समुद्रमें चलते २ छठेदिन अकस्मात् मेघ बरसनेलगे और वायुसे वह जहाज मतवालेहाथीके शिरके समान घूमनेलगा और फटकर पानीमें डूबगया उसके डूबजाने पर भाग्यवश मैं मुझकोगोते खाते २ एककाष्ठका टुकड़ा मिलगया उसीपर चढकर मेघोंके शान्तहोजाने पर मैं इसद्वीपके तटपर पहुंचगया और उस काष्ठके टुकडे से उतर कर इसवनमें घूमते यह तुम्हारा मन्दिर मुझेमिला और यहां आकर नेत्रोंमें अमृतकी वृष्टिके समान सुखदेनेवाली तुमको देखा उसके यह वचनसुनकर रानी तारादत्ताने मदमें और कामदेवसे उन्मत्तहोकर उसको पलंगपर लेटाकर उसका आलिंगनकिया (स्त्रीत्वंक्षीवत्त्वमेकान्तः पुंसोलाभोऽनियंत्रणा। यत्रपञ्चाग्नयस्तत्रवार्त्ताशीलतृणस्यका) स्त्रीपना, उन्मत्तता, एकान्त, पुरुषका मिलना और स्वतन्त्रता इनपांच अग्नियों के सन्मुखशीलरूपी तृणकी क्यासामर्थ्यहै कामसे मोहितस्त्री विचारकरने मे समर्थनहीं होती देखो रानी राजदत्ताने उस विपत्तिमें पड़ेहुए अयोग्य पुरुषके साथभी रमणकी इच्छाकी उससमय राजा रत्नाधिपतिने उत्कण्ठित होकर उसी श्वेतरश्मिपर चढ़कर वहाँ आके मन्दिर में जाकर रानी राजदत्ता उस दीन पुरुषके साथरमण करतीहुई देखी और उसपुरुषको मारनेकी इच्छाकी परन्तु वह पैरोंपर गिरकर दीनवचन कहनेलगा इससे छोड़दिया और अपनी रानी तारादत्ताको उन्मत्त तथा भयभीत देखकर

विचार किया कि (मद्येमारैकसुहृदिप्रसक्तास्त्रीसतीकुतः। नियन्तुंचपलानारी रक्षयापिनशक्यते॥ किन्नो मोत्पातवातालीवाहुभ्यांजातुवध्यते) कामदेवके मुख्य मित्र मद्य में प्रसक्तस्त्री सती कैसे होसक्ती है च- पलस्त्री रक्षा करनेसेभी नहीरुकसक्ती है क्या आंधीकी हवाको कोई भुजाओंसे रोकसक्ताहै मैंने ज्योति- षियोंका कहा नहीं किया उसीका यह फलमुझको मिला (विपाककटुकंकस्यनासवाक्यावधीरणं) शिष्टलोगोंके वाक्यका तिरस्कार करना किसको अन्तमें अनिष्टकारी नही होताहै मैंने इसको शी- लवतीकी वहिनजानकर अमृतके साथ उत्पन्नहुए विषका स्मरण नहीं रक्खा अथवा अद्भुत कार्य्य करनेवाले ब्रह्माके अपूर्व कार्य्योंको कौनपुरुष अपने पुरुषार्थ से जीतसक्ताहै इसप्रकार शोचकर राजा ने किसीपर क्रोध नहीं किया और उसवैश्यसे सम्पूर्ण वृत्तान्त पूछकर उसेछोड़दिया तव उस वैश्यनेभी वहाँ जीविकाकी कोई गति न जानकर समुद्रके तटपर आकर एक जहाज उसमार्गसे जाताहुआदेखा और शीघ्रतासे उसीकाष्ठके टुकड़ेपर फिरचढ़कर समुद्रमें जाके पुकारकरकहा कि मुझे यहाँसे निकाललो उसके यह वचनसुनकर कोशवर्म्मानाम जहाजके स्वामीने उसे जहाजपर चढ़ालिया (यस्ययद्विहितं धात्राकर्मनाशायतस्यनत् । पदवीयत्रतत्रापिधावतोप्यनुधावति) ब्रह्माने जौनसा कर्म जिसके नाशहोने के लिये नियतकर दियाहै वह उसकेसाथ सर्वत्रजाता है देखो वह मूर्ख जहाजपरजाकर एकान्तमें क्रो- धवर्म्माकीस्त्री के साथ रतिमें आसक्तहुआ और क्रोधवर्म्मा ने उसेदेखकर समुद्रमें ढकेलदिया १०२ वहां राजा रत्नाधिपति अपने सम्पूर्णपरिकर समेत रानी राजदत्ताको श्वेतरश्मिपर चढ़ाकर रत्नकूटमें लेआया औरराजदत्ताको शीलवतीके सुपुर्दकरके शीलवतीसे और अपने मंत्रियोंसे उसकासम्पूर्ण वृत्तान्त कह दिया और वैराग्ययुक्तहोकर यहवचनकहे कि मैंने इनअसार विरस विषयोंमें चित्तलगाकर कितनादुःख उठाया इससे अब मैं वनमें जाकर श्रीकृष्णभगवान् का भजन करूंगा जिससे फिरऐसे दुख भोगने न पड़ें राजाके यह वचनसुनकर मंत्रियोंने तथा शीलवतीनेभी समझाया परन्तु उसका चित्त वैराग्यसे नहीं हटा तव उसने अपने खजाने में से आधाधन शीलवती को देकर आधा सम्पूर्ण ब्राह्मणोंको बांटदिया और सम्पूर्ण राज्य पापभंजननाम किसी गुणवान् ब्राह्मण को विधिपूर्व्वक दानकरदिया और सव राज्य संकल्पकरके राजाके स्नेहसे आंसुभरेहुए प्रजालोगोंके देखतेहुएही तपोवनजानेके लिये श्वेत- रश्मिको वुलवाया श्वेतरश्मि वहाँ आतेही अपने शरीरको त्यागकर हारआदिक दिव्य आभूषणों से युक्त दिव्यपुरुष होगया उसको यहदशादेखकर राजाने कहा कि तुम कौनहो और यहक्याबात है तव वहवोला कि मलयाचलके रहनेवाले हम दो गन्धर्व परस्परभाई हैं मेरासोमप्रभनामहै और मेरे वड़ेभाई का देवप्रभनाम है मेरे भाईके राजवतीनाम परमप्रिय एकही स्त्री है एकसमय देवप्रभराजवती को गोदमें लेकर मेरेसाथ सिद्धवासनाम स्थानको गया वहां जाकर श्री विष्णुभगवान् का पूजन करके भगवान्के आगे हम सवलोग गानेलगे उससमय वहां कोई सिद्धआकर अत्यन्त मनोहर गानकरती हुई राजवती को अनिमेष दृष्टिसे देखनेलगा उसे इसप्रकार देखताहुआ देखकर मेरे भाईने कुपित हो- कर उससे कहा तुमसिद्ध होकरभी परस्त्री को वुरी अभिलाषसे देखतेहो तव सिद्धने कुपित होकर कहा

कि हे मूर्ख मैंने इसको, अपूर्वगीतके कारण से देखाथा मेरी बुरी अभिलापा न थी तेरे चित्तमे बड़ी ईर्षा है इससे तू मृत्युलोकमे उत्पन्न होगा और वहां अपनी स्त्री को परपुरुपसे रमण करतीहुई देखेगा इस शापको सुनकर मैंने लड़कपनमे कुपित होकर उसको एक मृत्तिका के श्वेत हाथीसे जिसको कि मे खेलनेको लायाथा मारा तवउसने मुझेभी शापदिया कि तूने मुझे श्वेतहाथी से माराहै इससे तू भी पृथ्वी मे श्वेत हाथीके रूपसे उत्पन्न होगा सिद्धके इस शापको सुनकर मेरे भाईने उनसे बड़ी विनय करी तव उसकी अतिविनयको सुनकर सिद्धने कृपाकरके इसप्रकार हमदोनोके शापका अन्त वताया कि तुम मनुष्य योनिमे भी विष्णुभगवान् की कृपासे द्वीपभरके स्वामी होकर दिव्य हाथीरूप अपने भाई को अपना वाहनपाओगे और अस्सीहजार तुम्हारी रानीहोगी उन सवके दुराचारको जानकर मनुष्य योनिमे उत्पन्न होनेवाली इस अपनीस्त्री से भी विवाह करके इसे अपनी आंखोंसे पर पुरुषके साथ रमण करतीहुई देखोगे इसकी यह दशादेखकर तुम वैराग्ययुक्त होकर ब्राह्मण को अपना सव राज्यदेकर जव वनजाने को उद्युक्त होगे तव पहले तुम्हारा यह भाई हाथीपनेसे छूटजायगा और इसे देखकर तुमभी अपनी स्त्रीसमेत शापसेछूटजाओगे इसप्रकार उससिद्धके वचन के अनुसार पूर्वजन्म के कर्म के फलसे हम लोगोंका इससमय शापका अन्तहुआ सोमप्रभके यह वचन सुनकर राजा अपने पूर्व्व जन्मका स्मरणकरके वोला कि वह देवप्रभ मै हीहूं और राजदत्ता मेरी स्त्रीराजवतीहै यह कह कर राजा राजदत्ता समेत शरीरको त्यागकरके गन्धर्वहोगया फिर क्षणभरमें सवके देखतेही देखते वह तीनों आकाशमे उड़कर अपने स्थान मलयाचलपर चलेगये शीलवती भी अपनेशीलके माहात्म्य से वहुतसी सम्पत्ति पाके ताम्रलिप्तीपुरी में जाकर धर्मपूर्व्वक रहनेलगी इसप्रकार इस संसार मे कोई पुरुष भी स्त्रीकी रक्षा हठपूर्व्वक नहींकरसक्ता है कुलीन स्त्रियोंको केवल उनकेशुद्ध सत्त्वरूपी पाशका वन्धनही उनकी सदैव रक्षाकरता है और ईर्षा तो मनुष्यो को दुखदाई महादोपरूप है और अन्यपुरुषों से द्वेषकराने का कारण है इससे स्त्रियोंकी रक्षा तो नहीं होसक्ती है किन्तु इसके विपरीत उनके चित्तमें उत्कण्ठा अधिक वढजाती है रत्नप्रभाके मुखसे इससारांश से भरीहुई कथाको सुनकर नरवाहनदत्त अपने मंत्रियों समेत वड़ा प्रसन्नहुआ १३५ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभापायां रत्नप्रभालंवकेद्वितीयस्तरंगः २ ॥

इसप्रकार रत्नप्रभाकी कही हुई कथाके प्रसंगसे गोमुख नरवाहनदत्त से कहनेलगा कि हे युवराज ठीकहै सतीस्त्रियां तो वहुत कमहोती हैं और चपल अधिकहोतीहैं इस्से इनका विश्वास न करना चाहिये इस विपय पर में आपको एककथा सुनाताहूं सम्पूर्ण संसारमें विख्यात उज्जयिनी नाम नगरीमें निश्चयदत्तनाम एकवणिये का पुत्र अत्यन्त ज्वारीथा वह प्रतिदिन जुएमें धनजीतकर क्षिप्रा नदी मे स्नानकरके श्रीमहाकाल शिवजीका पूजनकरके और ब्राह्मण तथा दीन अनाथोंको धनदेके भोजनादिक कार्य्य करताथा और वह नित्यही स्नानादि के उपरान्त महाकाल के निकट श्मशानमें जाकर अपने शरीर मे चन्दनादिक लगाताथा और वहींएकपत्थरके खंभमें चन्दनलगाकर अपनी पीठरगड़-

ताथा बहुत दिनतक रगड़ने से वहखंभा एकओर बहुत चिक्कनाहोगया। एकसमय उसीमार्गसे कोई चित्रकार एक चितेरे समेत वहां आया उसने उसखंभेको बहुत चिक्कनादेखकर श्रीपार्वतीजीका चित्र उसमें बनादिया और उस चितेरेने अपने जंत्रों से वह चित्र खोददिया फिर उनदोनोंके चलेजानेपर श्रीमहाकाल शिवजीका पूजनकरनेको आईहुई एकविद्याधरकी कन्याने खंभेमें पार्वतीजीकी मूर्त्तिदेखी उसमूर्त्तिके बहुतशुभलक्षण देखकर उसमेंभगवतीका अंशजानकर भगवतीका पूजनकरके वह विश्रामकेलिये अदृश्यहोकर उसीखंभमें प्रवेशकरगई उससमय निश्चयदत्त भी वहांआया खंभेमे श्रीपार्वतीजीकी मूर्त्तिको आश्चर्य्य पूर्व्वक देखकर वह अपनेसम्पूर्ण शरीरमें चन्दनलगाकर उसखंभे की दूसरी ओर चन्दन लगाकर अपनीपीठरगड़नेलगा उसे पीठरगड़ते देखके और उसकेरूपसे मोहितहोकर उस विद्याधरीने शोचा कि ऐसेसुन्दर पुरुषकोभी कोई पीठमें चन्दनलगानेवाला नहीं है तो आज मैंही इसकी पीठ मे चन्दन मलेदेतीहूं यह शोचकर वहखंभेमेंसे हाथ निकालकर बड़ेस्नेहसे उसकी पीठमें चन्दनमलनेलगी उससमय हाथके स्पर्शको जानके और कंकणके शब्दको सुनकर निश्चयदत्तने फिरकर अपने हाथसे उसका हाथपकड़लिया तबउसने खंभेमेंसे कहा कि हेमहाभाग मैंने तुम्हाराक्याअपराधकियाहै मेरा हाथ छोड़दो इसअदृश्य वचनकोसुनकर निश्चयदत्तनेकहा कि तुमप्रत्यक्षहोकर कहो कि तुमकौनहो तभी तुम्हारा हाथ छोड़ूंगा उसने शपथ खाकरकहा कि मैं प्रत्यक्ष आकर आपसे सबवृत्तान्तकहूंगी आप मेरा हाथ छोड़दीजिये उसके इसप्रकार कहने से निश्चयदत्तके हाथछोड़नेपर वहखंभेसे निकलकर निश्चयदत्तके मुखको देखतीहुई बैठकर अपना वृत्तान्त कहनेलगी कि हिमालयके आगे पुष्करावती नाम एक नगरी है उसमें विद्याधरों का स्वामी विन्ध्यपर नाम विद्याधर रहताहै उसकी मैं अनुरागपरानाम कन्या हूं इससमय श्रीमहाकालजी के पूजनकेनिमित्त आकर विश्रामकेलिये यहां बैठीथी उतनेमें कामदेवके मोहनास्त्रके समान तुमभी यहां आकर अपनी पीठ इसमें रगड़नेलगे तबपहले तो आपके अनुराग से मेरा हृदय रागयुक्त हुआ और पीछे पीठके मलनेमें अंगराग के लगजाने से हाथभी रक्तहोगया इसके उपरान्त जो हुआ सो आप जानतेहैं अब मैं अपने पिताके स्थानको जातीहूं उसके यहवचन सुनकर निश्चयदत्त बोला कि हे सुन्दरि तुमने जो मेरा चित्तहरलिया है वह मैंने अभी नहीपाया सो पराई वस्तुलेकर विनादिये तुम कैसे चलीजाओगी निश्चयदत्तके इसकहनेपर वह अनुराग से वशीभूतहोकर बोली कि हे नाथ जो तुम मेरीपुरीमें आओगे तो मैं वहां आपसेमिलूंगी और वहपुरी तुमको कुछ दुर्गम भी नही है आपका मनोरथ सिद्धहोगा क्योंकि (नहिदुष्करमस्तीहाकिञ्चिदध्यवसायिनाम्) उत्साही मनुष्यों को इस संसारमें कुछ दुर्लभनहीं है यह कहकर वह अनुरागपरा विद्याधरी आकाशको चलीगई और निश्चयदत्त उसीकाध्यान करताहुआ अपनेघरको चलागया ३० घरमें जाकर वहशोचनेलगा कि खम्भेरूपीवृक्षसे निकलेहुए उसके पाणिपल्लवको पकड़करभीमैंने उसका पाणिग्रहण नहीं किया तो अब उसीपुष्करावती पुरीको चलनाचाहिये यातो मेरेप्राणहीजांयगे या भाग्यसहायता करेगा इसप्रकार शोचकर निश्चयदत्तने कामसे पीड़ितहोकर वह दिनव्यतीतकिया दूसरेदिन प्रातःकाल उठ

कर उत्तरदिशाको प्रस्थानकिया कुछदूर चलकर उत्तरदिशाकोही जानेवाले तीन वैश्यके लड़के उस को साथी मिलगये उनकेसाथ अनेक ग्राम नगर वन तथा नदियों का उल्लंघन करताहुआ निश्चय-दत्त उत्तरदिशामें म्लेच्छोंकी बस्तीमें पहुंचा वहां ताजिक जातिके म्लेच्छों ने इनचारोंको पकड़कर किसी अन्य ताजिक के हाथ कुछ धनलेकर बेचडाला उस मोललेनेवाले ने उनचारोंको अपने नौकरों के द्वारा मुरवार नाम म्लेच्छ के यहां भेटकेलिये भेजदिया वहांजाकर उनसेवकोंने मुरवारको मराजान कर उसके पुत्रको वहचारों भेटकरदिये उसनेकहा कि मेरे पिताकेलिये उसके मित्रने इनचारों को भेजा है इससे इनचारोंको भी उसी कबरमें अपने पिताकेपास डालकर तोपदेनाचाहिये यह कहकर उसने उनको जंजीरों में बंधवाकर रक्खा तब बन्धनमें पड़कर रात्रिकेसमय निश्चयदत्तने अपने तीनों मित्रों को मरने के भयसे व्याकुल देखकर कहा कि खेद करनेसे क्या लाभहोगा धैर्य्यधारण करो विपत्तियां धीर मनुष्योंकेपास से भयभीतसीहोकर भागजाती हैं इससमय आपत्तिकी नाश करनेवाली भगवती दुर्गाका ध्यानकरो इसप्रकार उन्हें धैर्य्यदेकर वह भगवती की स्तुतिकरनेलगा कि हे महादेवी तुमको नमस्कार है मारेगये दैत्यों के रुधिरसे मानोंभरेहुए महावरसे युक्त तुम्हारेचरणों में मैं नमस्कार करताहूं संसार में ऐश्वर्य्यको देनेवाली अपनी शक्तिसे तुमने शिवजीको भी जीतलिया है हे भगवती तुम्हारीही शक्तिसे यहसम्पूर्ण संसारजीताहै हे महिषासुरमर्द्दनी तुमने तीनोंलोकोंकी रक्षा करीहै हे भक्तवत्सले इस समय मुझ शरणागतकी रक्षाकरो इसप्रकार अपने मित्रोंसमेत भगवती की स्तुतिकरके वहनिद्राको प्राप्त होगयी उससमय भगवती ने उनचारों को स्वप्नमें दर्शन देकरकहा कि हे पुत्रो उठो अबजाओ तुम्हारा बन्धन खुलगया यहस्वप्न देखकर चारोंकी निद्राखुलगई और अपने २ बन्धन खुले हुए देखे और परस्पर अपने २ स्वप्नके वृत्तान्त को कहके अति प्रसन्नहोकर वहां से चले कुछदूर जाकर रात्रिके व्यतीतहोजाने पर निश्चयदत्त के वह तीनोंमित्र भयभीतहोकर बोले कि हे मित्र इस उत्तरदिशामें बहुत म्लेच्छहैं इससे हमलोग इसदिशाको त्यागकर अब दक्षिणको लौटजाते हैं तुम्हारी जैसी इच्छाहोय सो करो उनके यह बचन सुनकर उन्हें लौटने की आज्ञादेकर निश्चयदत्त अनुरागपराके प्रेमरूपी बन्धनसे बंधाहुआ अकेलाही उत्तरदिशाको चला कुछदूर चलकर चार महाव्रती उसेसाथी मिलगये उनकेसाथ वितस्ता नाम नदी के पार जाकर भोजनकरके श्री सूर्य्यभगवान्के अस्तहोतेसमय मार्गमें मिलेहुए एकवनमें उन्हीं चारोंकेसाथ वहचला वहां कुछ काष्ठके बोझेवाले मिले वह इनलोगोंको वनमें जातेहुए देखकर बोले कि इससमय दिन व्यतीतहोगया है तुम कहांजातेहो आगे कोई ग्राम निकट नहींहै एकसूना शिवालय इसवनमें है उसमें रात्रिकेसमय जो कोई मनुष्य भीतर अथवा बाहररहताहै उसे शृंगोत्पादनी नाम यक्षिणीसींग उत्पन्न करके पशुबनाकर मोहितकरके खाजाती है यहसुनकर वह महाव्रती उसबात पर उपेक्षाकरके बोले कि चलोचलो वह बिचारी यक्षिणी हमारा क्या करेगी हमलोग बड़े २ कठिन श्मशानों में भी रहे हैं इसप्रकार कहतेहुए उन चारोंके साथ निश्चयदत्त उसी सूने शिवालय में पहुंचा और रात्रि व्यतीतकरनेकेलिये उसी मन्दिरके भीतर अग्निवलाके एक बड़ाभारी भस्मका मण्डलबनाकर उसीमें

बैठकर सबलोग अपनी रक्षाकेलिये मन्त्रजपनेलगे ६३ उससमय शृंगोत्पादनीनाम यक्षिणी नाचतीहुई और हड्डियोंकी कींगिड़ीबजातीहुई वहांआई और एकमहाव्रतीकी ओर दृष्टिलगाकर नाच २ के मंडलके बाहर मंत्रपढ़नेलगी उस मन्त्रके प्रभावसे महाव्रतीके सींगनिकलआये और वह मोहितहोकर बलतीहुई अग्निमें गिरपड़ा उसे आधाजलाहुआ देखकर अग्निमें से निकालकर उस यक्षिणी ने बड़ी प्रसन्नता पूर्वक खाडाला फिर दूसरे महाव्रती की ओर दृष्टि लगाकर नाच २ कर मंत्र जपनेलगी मंत्रके प्रभावसे उसके भी सींग निकलआये और नाचकर मोहित होकर अग्निमें गिरपड़ा उसेभी उसने आधा जला हुआ देखके अग्निसे निकालकर खाडाला इसप्रकार उसने चारों महाव्रती मंत्रकेप्रभावसे मोहितकरके खाडाले भाग्यवशसे जवचौथेको खानेलगी तब अपनी कींगिड़ी पृथ्वीमें रखदी उसकींगिड़ीको पृथ्वीमें धरी देखकर निश्चयदत्तने वहआपउठालीनी और कईवार सुनने से यादहुए मंत्रकोपढ़कर उसयक्षिणी के मुखमें दृष्टिलगाकर नाच २ कर कींगिड़ी बजाई उस मंत्रके प्रभावसे विवश यक्षिणी भयभीतहोकर बोली कि हेमहासत्त्व तुममुझ विचारीस्त्रीको मतमारो अबमंत्रपाठको समाप्तकरो तुममुझ शरणागतकी रक्षाकरो मैं तुम्हारेसंपूर्ण मनोरथको जानतीहूं और उसेसिद्ध भी करदूंगी जहांवहअनुरागपराहै वहांतुम्हें पहुंचादूंगी उसके यह विश्वास योग्य वचन सुनकर निश्चयदत्त मंत्रपाठको बन्दकरके उसी यक्षिणीके कहनेसे उसीके कन्धेपर चढ़कर आकाशमार्गसेचला चलते २ जब रात्रि व्यतीत होगई तब उसयक्षिणी ने उसे एकपर्व्वत के वन मे पहुँचाकरकहा कि सूर्य्य के उदयहोजानेपर मुझे ऊपरजानेकी शक्तिनहीं है इससेआप इसीसुन्दरवनमें इसदिनको व्यतीतकरिये और सुन्दर मधुरफलखाकर झिरनोंका जलपीजिये मैं अपने स्थानकोजातीहूं रात्रिकेसमय फिरआकर आपको हिमालयकेऊपर पुष्करावतीनगरी में अनुरागपरा के पास पहुँचाऊंगी इसप्रकार कहकर और निश्चयदत्त से आज्ञालेकर सत्यबोलनेवाली वह यक्षिणी फिर आनेके लिये कहकर वहांसेचलीगई उसके चलेजानेपर निश्चयदत्त ने एक बड़ासुन्दर शीतल जलसे भराहुआ तड़ागदेखा उसके जल में विषमिलाहुआथा मानों सूर्यभगवान् अपनी किरणरूपी हाथों को फैलाकर कहते थे कि हे प्रेमी स्त्रियोंकाचित्त ऐसाहीहोताहै सुगन्धिसे उस जलमें विषमिलाहुआजानकर उसे छोड़कर वह प्याससे व्याकुलहोकर उसी दिव्यपर्व्वतपर घूमनेलगा घूमते २ एक बड़े ऊंचे स्थान में दोपद्मराग मणिसी चमकतीहुई देखकर उसने वहांकी मिट्टीहटाई मृत्तिका के हटाने से एक जीवतेहुए बन्दरकाशिर उसे दिखाईदिया जिसके कि नेत्र पद्मरागमणि से चमकरहे थे उसे देखकर जब इसे बड़ाआश्चर्य्यहुआ तब वह बन्दर मनुष्यवाणीसे बोला कि मैं ब्राह्मणहूं भाग्यवशसे बन्दरहोगयाहूं जो आप मुझे निकालिये तो मैं अपना सम्पूर्ण वृत्तान्तकहूं उसके यह वचनसुनकर निश्चयदत्त ने मृत्तिकाहटाके उसे निकाललिया तब वह वहांसे निकलके उसके चरणोंपरगिरकर बोला कि आपने मुझे इसक्लेश से निकालकर प्राणदानदिया तो आओ आप थकगयेहोंगे कुछ फलखाकर जलपानकरो और तुम्हारी कृपासे मैं भी बहुतदिनों के उपरान्त जलपानकरूं यह कहकर वह वानर उसे थोड़ीदूरपर पर्व्वतीनदीपर लेगया जहां बड़े २ सुन्दर मधुरफलों से युक्त सघनछायावालेवृक्ष लगेहुएथे

वहां स्नानकरके और फलादि भोजनपूर्व्वक जलपानकरके निश्चयदत्त भोजन से निवृत्तहुए उस वन्दर से बोला कि आप मनुष्य से वन्दर कैसे होगये सो कहिये तव वह वन्दर बोला कि सुनो काशीपुरी में चन्द्रस्वामीनाम एक ब्राह्मणरहताहै उसकी सुवृत्तानाम स्त्री में मेराजन्महुआ है सोमस्वामी मेरानामहै क्रमसे जब मैं बड़ाहुआ तव मद से निरंकुश कामरूपी मतवालेहाथीपर चढकर इधर उधर घूमनेलगा एकसमय काशीपुरी के रहनेवाले श्रीगर्भनाम वैश्यकी पुत्री और वराहदत्तनाम वैश्यकी स्त्री वन्धुदत्ता नाम तरुणी ने मुझे अपने पिताके घरके झरोखे से देखा देखतेही कामसे व्याकुलहोकर उसने अपनी सखीको मेरे पास संगमके लिये भेजा वह मुझ से उसका सम्पूर्ण वृत्तान्तकहकर मुझे अपनेघर लिवा लेगई और मुझको वहां छोड़कर कामकीव्यथासे निर्लज्ज उस वन्धुदत्ताको वहीं लिवालाई वह आतेही बड़े स्नेहसे मेरे गले में हाथडालकर लिपटगई ठीकहै (एकवीरोहिनारीणा मतिभूमिगतस्मरः) स्त्रियों का वहुतवढाहुआ कामदेव बड़ावीरहोताहै इसप्रकार से वन्धुदत्ता प्रतिदिन अपने पिताके घरसे अपनी सखी के घरमें आकर मुझ से रमणकरनेलगी एकसमय वहुतकालसे अपने पिताके ही घरमें रहनेवाली वन्धुदत्ता को उसकापति मथुरासे लेनेकेलियेआया और उसके पिताने उसकी विदाकी तैयारीकरदी तव वन्धुदत्ता अपने जानेका निश्चयजानकर अपनी सखी से बोली कि हे सखी निस्सन्देह मेरा पति मुझे मथुरालेजायगा और मैं वहांसोमस्वामीके विना जीनहींसक्तीहूं इससे कोई उपाय तुममुझको वताओ उसके यह वचनसुनकर योगकीज्ञाता वह सखी बोली कि मुझे दोमन्त्र मालूमहैं जिनमें से एक मंत्रको पढ़कर गले में सूत्रबांधनेसे मनुष्य शीघ्रही वन्दरहोजाता है और दूसरे मन्त्रको पढकर सूत्र खोललेने से वह फिर मनुष्यहोजाताहै और वन्दरहोने में उसकी वुद्धिनहींवदलती इससे जो तुम्हारा प्रिय सोमस्वामी इसवातको अंगीकारकरे तो मैं उसे शीघ्रही वन्दरका वच्चावनादूं तव तुम क्रीड़ाके वहानेसे इसकोमथुरा में लेजाना और मैं तुम्हें दोनों मन्त्र भी वतलाये देतीहूं उन मन्त्रों के प्रभावसे तुम इसको सदैव वन्दर बनारखना और एकान्तमें पुरुषवनाकर इसके साथ भोगविलासकरना अपनी सखीके यह वचनसुनकर उस वन्धुदत्ताने मुझे एकान्तमें वुलाकर यह सव वृत्तान्तकहा तव मैंने कामकेवशहोकर उसका कहना मानलिया और उसकी सखी ने मुझे वन्दरका वच्चावनादिया मुझे उसी रूपसे लेजाकर वन्धुदत्ता ने अपने पतिको दिखाकर कहा कि मेरी सखी ने मुझे खेलनेकेलिये यह वन्दर दिया है वह मुझे देखकर वहुत प्रसन्नहुआ और मैं ज्ञानवान् तथा बोलने को समर्थहोकर भी वन्दर के समान उसकी गोदी में जाकर वैठगया और अपने चित्तमें स्त्रियोंके विचित्र चरित्रको शोचकर हँसताहुआ भी वन्दरहीके समान वनारहा क्योंकि यह कामदेव किसको नहीं ठगताहै दूसरे दिन वन्धुदत्ता अपनी सखीसे उन मंत्रोंको सीखकर पतिके साथ मथुराको चली और उसके पतिने उसके स्नेहसे मुझे एक नौकरके कन्धे पर चढवादिया इसप्रकार हम सब लोग दोदिन चलकर एक बड़े वनमें पहुँचे जिस में बड़े २ भयंकर वहुतसे वन्दर रहतेथे वह सब मुझे देखकर किलकारी मार२ कर मुझे वुलातेहुए आकर जिस नौकरके कन्धेपर मैं वैठाथा उसे काटने लगे तब वह भयसे विह्वलहोकर मुझे पृथ्वी में छोड़कर भागगया और

वह बन्दर मुझे पकड़लेगये मेरे स्नेह से बन्धुदत्ता तथा उसका पति और उसके सब नौकर बन्दरों को पत्थर लाठी आदिके मारने से भी नहीं जीतसके और लाचारहोके वहां से चलेगये तब वह संपूर्ण बन्दर मानों मेरे कुकर्मसे कुपित होकर दांतोसे तथा नखोंसे मेरा रोयां रोयां नोचनेलगे उससमय गलेमें बँधेहुए सूत्रके प्रभावसे और श्रीशिवजीके स्मरणसे मैं बलवान् होकर उनसे अपने बंधन को छुटाकर वहांसे भागा और भागते २ उनकी दृष्टिसे अलक्ष्यहोकर अनेक वनोंमें घूमता हुआ इस वनमें आया यहां आकर मानों अज्ञानें दुःखरूपी अन्धकारसे अन्धे मुझ दीनपर इसलिये कुपितहोके कि बन्धुदत्तासे भ्रष्टहुए तुझ दुष्टको क्या परस्त्री संगमका यहवानर होनाही फलमिलैगा औरभी दुःख दिया कि अकस्मात् एक हथिनीने यहां आकर मुझे सूंड़से पकड़कर मेघों के जलसे वही हुई सर्पकी वामीकी कीचड़में डालदिया मैं जानताहूं कि वह हथिनीके रूपमें भाग्यसे प्रेरित कोई देवताथी क्योंकि मैं बहुत यत्न करने परभी उस कीचसे निकल नहींसका उसकीचड़के सूखजाने पर मेरी मृत्यु नहीं हुई और निरन्तर श्रीशिवजीका ध्यान करनेसे मेरी क्षुधातथा तृषाभी मिटगई और बहुतकालके पीछेआज तुमने मुझे इससूखी कीचड़ से निकाला हेमित्र श्रीशिवजीकी कृपासे ज्ञानके प्राप्तहोनेपरभी मुझे इतनी शक्तिनहीं है कि मैं बन्दर भावसे छूटकर फिर मनुष्य होसकूं जब कोई योगिनी उसी मंत्रको पढ़कर मेरे गलेका सूत्रखोलेगी तब मैं फिर मनुष्य होजाऊंगा यहमेरा सम्पूर्ण वृत्तान्तहै अब हे मित्र तुमभी बताओ कि इसऐसे अगम्यस्थानमें कैसे और किसनिमित्त आयेहो बन्दररूप उससोमस्वामी के इसप्रकारवचन सुनकर निश्चयदत्तने उज्जयिनीमे विद्याधरीके मिलनेसेलेकर अपने धैर्यके प्रभावसे जीतीहुई यक्षिणी के द्वारा वहां पहुंचनेतकका अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया १४० निश्चयदत्तके यहवचनसुनकर बंदर रूपधारी बुद्धिमान् सोमस्वामीबोला कि हे मित्र तुमनेभी हमारेही समानस्त्रीके निमित्त बड़ादुःख उठाया (नचश्रियःस्त्रियश्चेह कुदाचित्कस्यचित्स्थिराः) किसीकी लक्ष्मी और स्त्री कदापि स्थिर नहींहोसक्ती है (संध्यावत्क्षणरागिण्यो नदीवत्कुटिलाशयाः भुजंगीवदविश्वास्याविद्युद्वच्चपलाःस्त्रियः) स्त्रियां संध्या के समानक्षणमात्र रागयुक्तनदीके समान कुटिलचित्त सर्पिणीके समान विश्वास करनेके अयोग्य और बिजलीके समान चपल होतीहैं इससे वह अनुरागपरा विद्याधरी अभी तो तुमसे स्नेह करती है परन्तु अपने किसी सजातीयकोपाकर तुमको मनुष्य जानकर छोड़देगी इससेतुमस्त्रीके निमित्त अन्तमें नीरस किंपाकफलके समान परिश्रम मतकरो हे मित्र तुम पुष्करावती विद्याधरपुरी को मतजाओ उसी यक्षिणीके कन्धेपर चढ़कर अपनी उज्जयिनी पुरीको लौटजाओ मेरा कहनामानों देखो मैंने पहले प्रेमके वशीभूतहोकर अपने मित्रकाकहना नहींमानाथा उससे अबतक दुःखपारहाहूं जब मेरा बन्धुदत्तासे स्नेह होगया था तब भवशर्मानाम मेरेमित्र ब्राह्मणने मुझको निषेध करनेकेलिये यहबातें कहीथी कि हेमित्र स्त्रीके वशीभूतमतहो क्योंकि स्त्रियोंका चित्तबड़ा कठिनहोताहै देखो मैंतुमको अपनाही वृत्तान्तसुनाताहूं यहीं काशीपुरीमें सोमदानाम एक बड़ी चपलरूपवती ब्राह्मणी गुप्तयोगिनी थी उसके साथभाग्यवशसे मेरा समागमहोगया और धीरे २ उसपरमेरा बहुत स्नेह होगया एकदिन मैंने उसको ईर्षासे क्रोध युक्त

होकर पीटा उसदुष्टाने क्रोधको छिपाकर मेरी मारको सहलिया और दूसरेदिन क्रीड़ाकेवहानेसे मेरे गले में एकसूत्रबांधदिया सूत्रके बांधतेही मैं उसीसमय बधिया बैलहोगया तब उसनेमुझे एकऊंटवाले पुरुषसे यथेच्छ धनलेकर बेचडाला वहऊंटवाला मुझसे वोझा ढुलवानेलगा एकदिन बन्धमोचनिका नाम योगिनीने मुझे भारसे पीड़ित देखकर और ज्ञानसे यहजानकर कि सोमदाने इसेपशुबनायाहै मेरे स्वामी के परोक्षमें कृपाकरकेमेरे गलेका सूत्रखोलदिया मैं उसीसमय मनुष्यहोगया और मेरास्वामी मुझेभागा जानकर इधर उधर ढूंढनेलगा तदनन्तर भाग्यवशसे सोमदाने मुझको बन्धमोचनीकेसाथ जाताहुआ देखलिया और क्रोधसे जाज्वल्यमानहोकर बन्धमोचनी से कहा कि इसपापीको तुमने पशुपनेसे क्यों छुड़ादिया है पापिन तुझे इसकर्मका फलमिलेगा देख प्रातःकाल में तुझे और इसेदोनोंको मारडालूंगी उसके यहवचन कहकर चलेजानेपर बन्धमोचनीने उससे बचनेके लिये मुझसे कहा कि सोमदाकाली घोड़ीका स्वरूप धरकरमुझे मारनेकेलिये आवेगी और मैं लालघोड़ीका स्वरूप धारण करूंगी जबमेरा और उसका युद्ध होनेलगे तब तुम खड्गलेकर पीछेसे उसे मारना इसप्रकारसे हम तुम दोनों मिलकर उसे मारलेंगे इससे तुम प्रातःकाल मेरेघरपर आजाना यहकहकर उसने मुझे अपनाघर दिखलादिया और अपने घरमें चलीगई तबमैं एकही जन्ममें अनेकजन्मोंका अनुभव करके अपने घरको आया और प्रातःकाल खड्गलेकर बन्धमोचनीके मकानपर गया वहाँ उससमय सोमदा कालीघोड़ीका स्वरूप धारण करके आई और बन्धमोचनीने लाल घोड़ीका स्वरूप धारणकिया जब उनदोनोंका लत्तियों और दांतों से युद्धहोनेलगा तब मैं पीछेसे सोमदाके खड्गमारनेलगा और बन्ध मोचनी ने उससोमदाको मारडाला उसे मरीहुई देखकर मैं निर्भय होगया और पशुपनेका स्मरण करके फिर कभी मैंने परस्त्रीका मनसे भी ध्यान न किया चपलता, साहस और डाकिनी होना यहतीनों दोष स्त्रियों के प्रायः मनुष्यो को भयदायक हैं इससे डाकिनीकी सखी बन्धुदत्तासे तुमस्नेह न करो जिसे अपने पतिपरही स्नेह नहीं है उसे तुमपर कैसे स्नेह होसक्ताहै अपने मित्र भवशर्म्माके ऐसा कहनेपर भी मैंने उसका कहना नहीं किया इसीसे मैं इसगतिको प्राप्तहुआ हूं इससे अब मैं तुमको समझाताहूं कि अनुरागपरासे कभी स्नेह न करो यह अपने सजातीय पुरुषको पाकर तुमको अवश्य छोड़देगी जैसे भौंरीनवीन २ पुष्पो की वांछा करतीहै वैसेही स्त्रीभी नवीन २ पुरुषोंकी अभिलाष किया करतीहैं इससे हे मित्र जो तुम मेरा कहना नहीं मानोगे तो तुमको मेरेही समान पश्चात्ताप करना पड़ैगा कपिरूप सोमस्वामी के यहवचन निश्चयदत्तके अनुरागसे पूर्ण हृदयमें नहीं भाये और उसने सोमस्वामी से कहा कि विद्याधरोंके शुद्धकुलमें उत्पन्नहुई अनुरागपरा मुझे छोड़कर व्यभिचार नहींकरेगी इसप्रकार उनदोनों की वार्त्ता होतेहीहोते संध्यासे रक्त श्री सूर्य्यभगवान् मानों निश्चयदत्तकी प्रसन्नताके लिये अस्ताचलको चलेगये १७७ तदनन्तर अग्रदूतीके समान रात्रिके आजानेपर वह शृंगोत्पादनीनाम यक्षिणी निश्चयदत्तकेपास आई उसयक्षिणीको आया देखकर निश्चयदत्तने सोमस्वामीसे जानेके लिये आज्ञामांगी उसने कहा अच्छा जाओ परन्तु मेरास्मरण रखना इसप्रकार उससे आज्ञालेकर निश्चयदत्त उसयक्षि-

णी के कन्धेपर चढ़कर वहाँसे चला और अर्द्धरात्रिके समय हिमाचलपर पुष्करावती नगरीमें पहुंचा उससमय अनुरागपरा अपनी विद्याके प्रभावसे उसकेआगमनको जानकर उसेलिवालानेकेलिये नगरी के वाहर आई उसे आते देखकर यक्षिणीने निश्चयदत्तसे कहा कि नेत्रोंकी आनन्द देनेवाली चन्द्रमा की दूसरी मूर्तिके समान तुम्हारी कान्ताआरहीहै तो अवमैं जातीहूं यहकहकर और उसे अपने कन्धे से उतारकर यक्षिणी प्रणामकरके चलीगई तव अनुरागपराने वहुत कालसे उत्कण्ठितहोनेके कारण वहुत गाढ़ आलिंगन करके उसको प्रसन्नकिया और वह भी वहुत क्लेशोंको सहकर प्राप्त होनेवाली अनुरागपरासे यथेच्छ आलिंगनकरके मानों आनन्दके कारण अपने शरीरमें न समाकर उसकेहृदय में प्रविष्ट साहोगया तदनन्तर अनुरागपरा के साथ गान्धर्व विवाहकरके विद्याके वलसे उसी के वनाये हुए पुरमें रहनेलगा और उसीकी विद्याके प्रभावसे उसके माता पितानेंभी उसे नहीं देखा फिर निश्चय-दत्त ने उसके पूछने पर अपने मार्गके सव क्लेशोंका वर्णनकिया उनक्लेशोंको सुनकर अनुरागपरा उस पर अत्यन्त प्रसन्नहुई और दिव्य ऐश्वर्य्यों से उसका सेवन करनेलगी निश्चयदत्त ने अपने मार्ग के वृत्तान्त में वानररूपी सोमस्वामीकी भी कथा अनुरागपरा को सुनाकर कहा कि हे प्रिये जो तुम्हारे उपायसे मेरामित्र पशुयोनिसे छूटजाय तो वड़ा उपकारहोय उसके यहवचन सुनकर अनुरागपरानेकहा कि यह योगिनी स्त्रियों की वातें हैं मैं इनविषयों को क्याजानूं परन्तु भद्ररूपानाम सिद्ध योगिनी मेरी सखी है मैं उस्से कहकर तुम्हारा अभीष्ट सिद्धकरवादूंगी उसके यहवचन सुनकर निश्चयदत्त वहुतप्र-सन्नहोके वोला कि चलो अपने उसमित्रको तुम्हें दिखलाऊं तव अनुरागपरा उसे गोदी में लेकर आ-काश मार्ग से उसको उसवानररूप सोमस्वामी के पास लेआई वहां आकर निश्चयदत्तने अनुरागपरा समेत अपने मित्र वानरको प्रणामकरके कुशल क्षेम पूंछी सोमस्वामीने अनुरागपरा को आशीर्वाददे-कर निश्चयदत्त से कहा कि अव मुझको कुशलही है जो मैंने तुमको अनुरागपरा के साथ देखा तव वह सव एक मनोहर शिलापर वैठगये और सोमस्वामी को पशुपने से छुटाने का वार्त्तालाप करने लगे कुछ काल वार्त्तालाप करके निश्चयदत्त सोमस्वामी से आज्ञालेकर प्रियाकी गोदी में वैठकर पुष्करावती को गया दूसरे दिन उसने अनुरागपरा से फिर कहा कि हेप्रिये चलो उसी मित्र के पास फिरचलें तव वह वोली कि आज तुम्हींजाओ मैं तुम्हें आकाश में उड़ने की और आकाश से उतरने की विद्या वताये देतीहूं यह कहकर उसने उसे वह दोनों विद्या सिखादीं तव वह उन विद्याओं को पाकर आकाश मार्ग से अपने मित्रकेपास आया २०२ निश्चयदत्त तो यहां आकर अपनेमित्रसे वार्त्ता-लाप करनेलगा और अनुरागपरा अपने घरसे निकलकर उपवनमें विहार करनेकोगई वहां उपवनमें वैठी हुई अनुरागपरा को स्वेच्छा से आकाशमें भ्रमण करतेहुए किसी विद्याधर के कुमार ने देखकर अपनी विद्यासे जानलिया कि यह किसी मनुष्य से प्रेमकरती है यह जानकर वह उसकेपासगया उसे देखकर वह अपना नीचे मुखकरके वोली कि तुम कौनहो और यहां किसलिये आयेहो उसनेकहा कि मैं सम्पूर्ण विद्याओं का जाननेवाला रागभंजन नाम विद्याधरहूं तुम्हारे देखनेही से कामदेव ने मुझे

अपनेवशीभूत करके तुम्हारे अर्पणकरदिया है इससे हे सुन्दरी पृथ्वी के निवासी मनुष्य को छोड़कर तुम जबतक तुम्हारा पिता नहीं जानता है तबतक हमारेसाथ विवाहकरलो उसके यहवचन सुनकर अनुरागपराने उसे तिरछी दृष्टिसे देखकर अपने चित्तमें शोचा कि मेरे योग्य पति यही है तब अनुरागपराके आशयको जानकर उसरागभंजनने अनुरागपरा से विवाहकरलिया ठीक है (अपेक्षतेद्वयोरैकचित्त्येकिंरहसिस्मरः) एकान्त में स्त्री पुरुष के चित्त मिलजानेपर कामदेव किसी बातकी अपेक्षानहीं करता है तदनन्तर उस विद्याधरके चलेजानेपर निश्चयदत्त सोमस्वामी के पाससे अनुरागपरा के पास आया उससमय अनुरागपराने विरक्तहोकर शिरकी पीड़ाके बहाने से उसका आलिंगन भी नहींकिया परन्तु स्नेहसे मोहित सरलचित्त निश्चयदत्त उसबहाने को सच्चाही जानकर दुःख पूर्व्वक वहदिन व्यतीतकरके दूसरे दिन प्रातःकाल खेदसे अपने चित्तको बहलाने के लिये उसी की बताईहुई विद्या के बल से फिर अपने मित्र सोमस्वामीकेपास आया उसके चलेआनेपर वहरागभंजन विद्याधर अनुरागपरा के विना रात्रिभर जागकर उससमय अवकाशपाकर उसके गलेमे आकर लिपटगया और यथेच्छ रमणकरके श्रमसे सोगया और अनुरागपराभी गोदी में उस सोतेहुए विद्याधरको अपनी विद्याके बलसे छिपाकर रात्रिभरके जागनेसे सोगई इसबीच में निश्चयदत्त अपने मित्रके पासपहुँचा सोमस्वामीने उसका शिष्टाचारकरके उससे पूंछा कि हे मित्र आज तुम उदासीनसे क्यों मालूमहोतेहो निश्चयदत्त ने कहा कि अनुरागपरा आज बहुत पीड़ित है इससे मैं उदासीनहोरहाहूं क्योंकि वह मुझे प्राणों से भी अधिक प्रियहै यह सुनकर ज्ञानी वानररूप सोमस्वामी ने कहा कि जाओ इससमय अनुरागपरा सोरही है उसको उसीकीबताईहुई विद्या के बल से गोदी में लेकर मेरे पास चलेआओ मैं तुम्हे यहां बड़ा आश्चर्य्य दिखाऊंगा उसके इसप्रकार कहने से निश्चयदत्त ने आकाशमार्ग से जाकर अपनी प्रियाको सोतीहुई देखकर गोदी में उठालिया परन्तु उसकी गोदी में सोताहुआ वह विद्याधर उसे नहीं दिखाई दिया क्योंकि उसने उसे पहलेही विद्याके प्रभावसे अदृश्यकरदिया था उसे लेकर निश्चयदत्त शीघ्रही सोमस्वामी के पास आगया उससमय दिव्यदृष्टि सोमस्वामी ने उसे योगका उपदेशकिया जिसके प्रभावसे उसने अनुरागपराकी गोदी में सोतेहुए विद्याधर को देखलिया उसे देखकर हा धिक्कार यह क्या बात है इसप्रकार कहतेहुए निश्चयदत्तको सोमस्वामी ने उसका सम्पूर्ण वृत्तान्त अपने ज्ञान के बलसे जानकर बतलादिया यह सुनकर उसके कुपित होनेपर वह रागभंजन विद्याधर जगकर आकाशको चलागया और अनुरागपराभी जगकर अपने भेदको खुलगया जानकर लज्जासे अधोमुख होकरबैठी उससमय निश्चयदत्त आंसूभरकर उससेबोला कि हे पापिन तूने मुझ विश्वासीको इस प्रकारसे क्योंछला उसके यहकहनेपर अनुरागपरा धीरे २ रोतीहुई बिना कुछ उत्तरदिये आकाश में उड़कर अपने स्थानको चलीगई तब सोमस्वामीने निश्चयदत्तसेकहा कि तुमने मेरे निवारण करनेपरभी उसके पास गमनाकिया उसी तीव्र अनुरागरूपी अग्निका यह फलहै कि तुम इससमय पश्चात्ताप कररहेहो स्वभावही से चंचल स्त्रियों का और सम्पत्तियोंका क्या विश्वासहै इससे अब पश्चात्ताप न करो

अपने चित्तको शान्तकरो ब्रह्माभी होनहारको नहीं मेटसक्ते हैं सोमस्वामी के शोक तथा मोहनाशक यह वचन सुनकर निश्चयदत्त वैराग्य युक्तहोके श्रीशिवजीकी शरणमें गया इसके उपरान्त परममित्र कपिरूप सोमस्वामी के साथ वनमें रहतेहुए निश्चयदत्त के पास मोक्षदा नाम तपस्विनी भाग्यवशसे आई उसने प्रणाम करतेहुए निश्चयदत्तसे पूंछा कि तुम तो मनुष्यहो इसवन्दरकेसाथ तुम्हारी मित्रता कैसेहुई तव निश्चयदत्तने अपना और अपनेमित्रका सम्पूर्णवृत्तान्त सुनाकर उससे दीनतापूर्व्वक कहा कि जो तुम कोई प्रयोग अथवा मंत्र जानतीहो तो मेरे इस सुहृद सन्मित्रको पशुपने से छुटाओ यह सुनकर उसने बहुत अच्छा कहकर मन्त्रकी युक्तिसे सोमस्वामी के गलेसे वह सूत्र खोललिया सूत्रके खुलतेही वह वन्दर के स्वरूपको छोड़कर जैसा पहलेथा वैसाही मनुष्यहोगया सोमस्वामी को मनुष्य बनाकर उस तपस्विनी के अन्तर्द्धान होजानेपर निश्चयदत्त और सोमस्वामी बहुतकालतक बड़ातप करके परमगतिको प्राप्तहुए इसप्रकारसे स्त्रियां प्रायः स्वभावही से चपलहोती हैं उनके दुश्चरित प्रबंधों को देखकर सत्पुरुषोंको विवेक और वैराग्य उत्पन्नहोताहै कोई २ स्त्री पतिव्रताभी होती हैं जो आकाश को चन्द्रमाके समान अपने विशाल कुलको आभूषित करती हैं इसप्रकार गोमुखके मुखसे इस विचित्र कथाको सुनकर नरवाहनदत्त रत्नप्रभा समेत अत्यन्त प्रसन्नहुआ २४४॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांरत्नप्रभालंबकेतृतीयस्तरंगः ३॥

इसके उपरान्त गोमुखकी कथा से नरवाहनदत्तको प्रसन्न देखकर उसकी स्पर्द्धा से मरुभूति बोला कि प्रायः स्त्रियां चपलहोती हैं परन्तु सर्व साधारण यह बात नहीं है कहीं २ वेश्या भी सुशील होती हैं फिर अन्य सत्कुलोत्पन्न स्त्रियोंका तो क्याही कहनाहै इसविषयमें मैं आपको एककथा सुनाताहूं पाटलि-पुत्र नाम नगरमें विक्रमादित्य नाम एक राजाथा उसके बहुत से घोड़े तथा हाथियों से सम्पन्न हयपति और गजपति नाम दो बड़े राजा परममित्र थे और प्रतिष्ठान देशका स्वामी बहुतसी पदाती सेना से सम्पन्न नरसिंह नामराजा उसका शत्रुथा एकसमय राजा विक्रमादित्यने अपने मित्रोंके बलके अभि-मान से सहसा यह प्रतिज्ञाकी कि मैं राजा नृसिंहको इसप्रकार से जीतूंगा कि जब वह द्वारपर आवे तो वन्दी और मागध लोग सेवक के समान उसका निवेदन मेरे सन्मुखकरें इसप्रकार प्रतिज्ञाकरके अपने मित्र हयपति और गजपति को वुलाकर उनको साथमें लेकर हाथी और घोड़ों से पृथ्वीको व्याकुल करताहुआ राजाविक्रमादित्य अपनीसंपूर्ण सेनालेकर राजानरसिंहदत्तसे लड़नेकोगया जब प्रतिष्ठान के निकटपहुंचा तवराजा नरसिंहदत्त उसेआताहुआ जानके सब सेनाको तैयारकरके युद्धकेलिये वाहर निकला उससमय उनदोनों राजाओंकी सेनाओंका ऐसाघोर आश्चर्य्यकारी युद्धहुआ कि हाथी और घोड़ोंकेसाथ पैदललड़े युद्धहोते २ राजानरसिंहके एककरोड़ पैदलोंसे विक्रमादित्यकी सबसेना हारगई और विक्रमादित्य भागकर पाटलि पुत्र नगरको चलागया और उसके मित्र अपने २ देशकोभागगये तब राजानरसिंह वन्दीगणोंसे कीगई अपनी प्रशंसाको सुनताहुआ अपनेनगरके भीतरगया तदनन्तर राजा विक्रमादित्यने अपने कार्य्यको सिद्धहुआ न जानकर सोचा कि पराक्रमसे नहीं जीतनेके योग्य

शत्रुको बुद्धिसे जीतना चाहिये इसमें चाहे मेरी कोई निन्दाभी करे परन्तु प्रतिज्ञा झूठी न होय यह शोच कर और योग्य मंत्रियोंपर राज्यका भाररखकर बुद्धिवरनाम मुख्य मंत्री, सौ राजपुत्र तथा पांच कुलीन शूरोंको साथमेंलेकर राजा विक्रमादित्य भिक्षुकोंकासाभेष बनाकर प्रतिष्ठाननाम नगरकोगया वहांपहुँचकर मदनमालानाम वेश्याके राजमंदिरकेसमान सुन्दर भवनमें गया वह भवन शिखरों पर लगीहुई लताओंके वायुसेचंचल वस्त्रोंसेमानों राजाको बुलारहाथा उसभवनके मुख्यपूर्व्वदिशाके फाटकपर रात्रि दिन अनेक प्रकारके शस्त्रों को धारण कियेहुए वीस हजार पैदल रक्षकरहते थे अन्य तीनफाटकों पर दश २ हजार पैदल शूर रक्षकरहतेथे ऐसे वड़ेभारी उस भवनके द्वारपर जाकर विक्रमादित्य अपनेभीतर जानेके लिये निवेदन करवाकर और प्रतीहारकेद्वारा आज्ञापाकर अपने साथियोंसमेत भीतरचला उस मन्दिरमें कहीं वड़े २ सुन्दर सैकड़ों घोड़े वँधेथे कहीं वड़े २ उन्नतहाथी झूमतेथे कहींपर अनेक २ प्रकार देदीप्यमान शस्त्ररक्खेथे कहीं अनेक प्रकारके सुन्दर रत्नोंसे देदीप्यमान धनके समूहके समूह से भरेहुए खजाने इकट्ठेथे कहींपर सैकड़ो सेवकलोग अपना २ कार्य्यकररहेथे कहींपर सैकड़ों वन्दियों के समूह उच्चस्वरसे स्तुति कररहे थे और कहींपर मृदंगकी ध्वनिके अनुसार मधुरगान होरहाथा इसप्रकार शोभा देखताहुआ सात डेवढ़ियोंका उल्लंघन करके अपने सव साथियोंसमेत मदनमालाके रहने के वड़ेउन्नत दिव्य सुन्दरस्थानमें पहुँचा मदनमालाभी अपने सेवकोंकेद्वारा यह सुनकर कि यहसंपूर्ण घोड़े आदि पदार्थों को वड़े ध्यानसे देखताहुआ आयाहै उसे कोई छिपाहुआ उत्तमपुरुष जानकर कुछ दूर आगे चलकर प्रणामकरके लेगई और भीतरलेजाकर राजाके योग्य आसनपर वैठाकर वड़ासत्कार किया राजाभी उसकेरूप लावण्य तथा विनयसे वशीभूत होकर अपनेको नहीं प्रकटकरके उसकीवड़ी प्रशंसा करनेलगा उससमय मदनमालाने स्नान पुष्प अनुलेपन वस्त्र तथा वहुमूल्य आभूषणों से राजाका सन्मानकरके उसके संपूर्ण साथियों को रोजीना दिवाकर मंत्रीसमेत राजाको अतिउत्तम भोजनकरवाये और उसके साथ मद्यपानादि क्रीड़ासे दिन व्यतीत करके रात्रिके समय उसके सुन्दरस्वरूपसे वशीभूत होकर अपना शरीरभी उसके अर्पण करदिया इसप्रकार मदनमाला से सेवाकियागया राजा विक्रमादित्य अपनेको छिपाकर चक्रवर्त्तियोंके समान ऐश्वर्य्योंको भोग करता हुआ रहनेलगा वह नित्यही याचकोंको जितना धनदेताथा सो सव मदनमाला अपनेपाससे दिलवातीथी और उससे भोग कियेगये अपने शरीर तथा धनको धन्य मानतीथी वह राजाके ऐसी वशीभूत होगईथी कि अन्य पुरुषोंसे पराङ्मुखहोकर अत्यन्त अनुरक्त राजानरसिंहकोभी उसने युक्तिपूर्व्वक निवृत्तकरदिया इसप्रकार उसके सेवनको देखकर राजाने अपने वुद्धिवर मन्त्रीसे एकान्तमें कहा कि धनकी चाहनेवाली वेश्या काममेंभी धनके विना नहीं प्रसन्नहोतीहै महात्ते मानों संपूर्ण याचकोंका लोभ वेश्याओंकोही देदिया है परन्तु यह मदनमाला तो मुझे अपने धनको भोगकरतेहुए देखकर विरक्त तो नहीं होती किन्तु स्नेहसे अधिक प्रसन्नहोती है तो इससमय इसके साथ कैसे प्रत्युपकार करनाचाहिये जिससे मेरी प्रतिज्ञाभी पूरीहोजाय यह सुनकर वुद्धिवर मंत्रीने कहा कि जो आपके चित्तमें ऐसाही है तो प्रपंचवुद्धिनाम

भिक्षुकके दियेहुए अमूल्य रत्नोंमेंसे कुछ इसकोभी दीजिये मंत्रीके यह वचन सुनकर राजाबोला कि उन संपूर्ण रत्नोंके भी देनेसे इसका प्रत्युपकार नहींहोगा परन्तु इसी भिक्षुकके सम्बन्धमें एक और उपायहै जिससे इसका प्रत्युपकार होजायगा २४ यह सुनकर मंत्रीने कहा कि हे राजा उस भिक्षुकने आपकी क्या सेवाकीथी वहसबवृत्तान्त मुझसेभी कहिये तब राजाने कहा कि सुनो मैं तुमसे उसकी सब कथा कहताहूं पहले पाटलिपुत्र नगरमें प्रपंच बुद्धिनाम भिक्षुकने मेरीसभामें आकर एक संपुट (एक प्रकारका डिब्बा) मुझेदिया मैंने उसे लेकर बिना खोलेही खजानचीको देदिया इसीप्रकारसे वह वर्ष दिनतक रोजएक संपुटलातारहा और मैं बिनाखोलेही अपने खजानचीको देतारहा एकदिन भिक्षुकका दियाहुआ डिब्बा मेरे हाथसे गिरकर दैवयोगसे खुलगया और उसमें से अग्निके समान प्रज्वलित एक महारत्न निकला मानों उसने अपना हृदय खोलकर मुझे दिखलादिया उसरत्नको देखकर मैंने और सब डिब्बे भी मँगवाकर उनमें से सबरत्न निकलवालिये और उससमय प्रपंच बुद्धिसे कहा कि तुम इन बहुमूल्य रत्नोंसे मेरा नित्यसेवनक्योंकरते हो तब उसने एकान्तमें मुझसे कहा कि इसआनेवाली कृष्ण पक्षकी चतुर्दशीको रात्रिके समय श्मशानमें मुझे कोई विद्या सिद्धकरनी है हे वीर मैं चाहताहूं कि वहाँ मेरी सहायताके लिये आप आइये क्योंकि वीरोंकी सहायता से निर्विघ्नता पूर्वक सुगमता से सब सिद्धियां सुलभहोजाती हैं उस भिक्षुकके यहवचन मैंने स्वीकार करलिये इसके उपरान्त वह भिक्षुक तो प्रसन्नहोकर चलागया और कुछदिनोंके पीछे वह कृष्णपक्षकी चतुर्दशी आई और मुझे उस भिक्षुकके वचनोंका स्मरण आगया तब मैं संपूर्ण आह्निककरके सायंकालतक अपने संपूर्ण कार्य्य करतारहा और संध्यावन्दनके उपरान्त कुछ सोगया उससमय गरुड़पर चढ़ेहुए लक्ष्मी जी समेत भक्तवत्सल भगवान् विष्णुने स्वप्नमें मुझे दर्शन देकर कहा कि यहप्रपंचबुद्धिनाम भिक्षुक अपने नाम के अर्थ से युक्तहै यह तुमको श्मशानमें लेजाकर बलिदान करना चाहताहै इससे वह जो कुछ तुमसे कहै वही न करनेलगना तुम उससे कहना कि पहले तू ऐसाही कर फिर मैं भी उसे सीखकर करूंगा जबवह उसीप्रकारसे करनेलगे तब उसीक्षण तुम उसको मारडालना इसप्रकारसे जो सिद्धि उसको होनेवाली है वह तुमको होजायगी यहकहकर भगवान्के अन्तर्द्धान होजानेपर मैंने जगकर शोचा कि विष्णु भगवान्की कृपासे मुझे इसमायावीकी माया मालूम होगई इसप्रकार शोचकर दूसरेप्रहर में खड्ग लेकर मैं श्मशानको गया वहाँ वह भिक्षुक पूजन कररहा था वह मुझे देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर बोला कि हे राजा नेत्र बन्दकरके अंगोंको फैलाकर नीचेको मुखकरके पृथ्वी में लेटजाओ इसप्रकारसे हम तुम दोनोंको बड़ी सिद्धिहोजायगी तब मैंने उससे कहा कि तुम प्रथम इसरीतिसे लेटो उसे देखकर मैं भी उसीरीति से लेटूंगा यहसुनकर वहमूर्ख उसीप्रकारसे पृथ्वी में लेटगया तब मैंने खड्ग से उसका शिर काटडाला उससमय यह आकाशवाणी हुई कि हे राजा तुमने जो इस महापापी भिक्षुकको मारा यह बहुत अच्छा किया जो यह आकाशमें अपनी गति सिद्धकरना चाहताथा वह तुमको सिद्धहोगई और मैं कुबेरहूं तुम्हारे धैर्य्यसे तुमपर बड़ा प्रसन्न हूं इससे तुम जो चाहो सो वरमुझसे मांगो यहकहकर

प्रकटहुए कुबेरजीको प्रणाम करके मैंने कहा कि जिससमय मैं आपसे कोई अपने प्रयोजन का वर चाहूंगा तब आप प्रकट होकर मुझे वही वरदीजियेगा तब कुवेर एवमस्तु कहकर अन्तर्द्धान होगये और मैं अपने घरको चलाआया यह मेरा संपूर्ण वृत्तान्त है इससे मैं अब कुवेर के वरसे मदनमाला का प्रत्युपकार करूंगा तो हे बुद्धिवर तुम इनराजपुत्रों को अपने साथलेकर पाटलिपुत्र को जाओ और मैं भी मदनमाला का प्रत्युपकार करके वहीं चला आऊंगा और औसर पाकर फिर यहां आजाऊंगा यह कहकर राजाने अपने मंत्री को परिकर समेत बिदाकरदिया और उसके चले जाने पर उस दिनको व्यतीतकरके रात्रि के समय होनेवाले वियोग से उत्कण्ठितहोकर मदनमाला के साथ वहरात्रि व्यतीतकी और मदनमाला भी अपनी अन्तरात्मासे मानों राजाको दूरहुआसा जानकर वारम्वार आलिंगनकरके उत्कण्ठासे रात्रिभरसोई नहीं प्रातःकाल राजा सन्ध्यावन्दनादिक आवश्यक कार्य्यकरके अकेलाही देवमंदिर में जपकरने के वहाने से गया और वहांजाकर कुवेर देवता का आवाहनकरके प्रकटहुए कुवेरजीको प्रणामकरके वह वर जो उन्होने पहले देनेकोकहाथा उनसेमांगा कि हे देव सुवर्ण के पांच अक्षयपुरुष मुझे दीजिये जिनके अंगनिरन्तर काटनेपर भी पूरेही बनजाया करें तव कुवेर देवता एवमस्तु कहकर अन्तर्द्धान होगये और राजाको उसीसमय सुवर्ण के पांचपुरुष उसी मंदिर में दिखाई दिये तव राजा देवमंदिरसे निकलकर अपनी प्रतिज्ञाको स्मरण करताहुआ आकाश मार्ग से पाटलिपुत्रको चलाआया ८५ वहां आकर अपने मंत्री पुरवासी तथा सब रानियों को प्रसन्न करके राज्य कार्य्य करनेलगा परन्तु उसका चित्त प्रतिष्ठान देशमेंही लगारहा राजा तो यहांचला आया और वहां वह मदनमाला राजा के आनेकी वहुत कालतक वाट देखकर उसे ढूंढनेकेलिये देवमन्दिर में गई वहां उसे राजा तो नहीं दिखाईदिया परन्तु सुवर्णके पांचपुरुष वहुतवड़े दिखाईदिये उन को देखकर और राजाको न पाकर वह दुःखितहोकर शोचनेलगी कि मेराप्रिय कोईगन्धर्व अथवा विद्याधर था जो मुझे यह पांचपुरुष देकर आकाश को चलागया तो उसके विना भीरतुल्य इनपुरुषोंको मैं क्याकरूं यहशोचकर अपने सेवकोंसे पूछनेलगी कि तुमने मेरे प्यारेको कहीं देखा तो नहीं है और उस के ढूंढनेके लिये इधर उधर फिरनेलगी फिर राजाको कहीभी न पाकर विलाप करतीहुई मदनमालाको मंदिर उपवन तथा किसी स्थानमें चैन न पड़ा और वियोग से अत्यन्त व्याकुलहोकर वह अपना शरीर त्यागने को उद्यतहोगई उसकी यह दशा देखकर सम्पूर्ण लोगोंने उसे समझाया कि हे मदनमाले विषाद न करो तुम्हारा प्रिय कोई कामधारी देवताहै वह तुमको फिर प्राप्तहोजायगा इन वचनोंको सुन कर उसके चित्त में कुछ भरोसाहुआ और सावधान चित्तकरके उसने यह प्रतिज्ञाकी कि छः महीने के भीतर जो मुझे वह दर्शन नहींदेगा तो मैं सर्वस्वदान करके अग्निमें जलजाऊंगी इसप्रकारकी प्रतिज्ञासे अपनेको सावधान करके वह उसका ध्यानकरके नित्यदान करनेलगी एकदिन उस ने सुवर्ण के पुरुषोंमें से एकके हाथ काटकर ब्राह्मणोंको देदिये दूसरेदिन उसको उस पुरुषके हाथ फिर ज्योंके त्यों दिखाई दिये तव रात्रिभरमें उसके हाथोंको उत्पन्नहुआ जानकर उसने सब पुरुषोंके हाथ काटकर दान

कर दिये फिर उन सबकेभी उसीप्रकार सबहाथ निकलआये तब उनपुरुषोंको अक्षयजानकर वह वेद-पाठी ब्राह्मणोंको जो जितने वेद पढ़ाहो उनको उतनीही भुजा देनेलगी कुछ दिनों में दिशाओंमें फैलीहुई उस चरचाको सुनकर चारवेदका जाननेवाला गुणवान् दरिद्री संग्रामदत्त नाम ब्राह्मण पाटलिपुत्रसे दानलेनेको उसके यहां गया तब द्वारपालों के द्वारा उस ब्राह्मणको आया जानकर उसने उस ब्राह्मण को सुवर्णकी चार भुजा दानमें दीनीं उससमय मदनमाला के विरहसे कृश तथा पीले अंगों को देखकर और उसके दुखी परिजनों से सम्पूर्ण वृत्तान्त तथा घोर प्रतिज्ञा को सुनकर संग्रामदत्त दुखी तथा प्रसन्नहोकर दो ऊंटोंपर उन चारों भुजाओंको लादकर अपने पाटलिपुत्र नगरको चलाआया वहाँ आकर उसने राजाकी रक्षाके विना मेरा यहसुवर्ण कुशल पूर्व्वक नहीं रहसक्ता यह शोचकर सभामें जाकर राजा विक्रमादित्यसे यह विज्ञापनाकरी कि हे महाराज मैं इसीनगरका रहनेवाला ब्राह्मण हूं दरिद्रसे व्याकुल होकर मैं धन उपार्जन करनेको दक्षिण दिशामें गयाथा राजा नरसिंहके प्रतिष्ठान नामपुरमें पहुंचकर अत्यन्त यशस्विनी मदनमाला नाम वेश्याके यहाँ मैं दानलेनेकोगया कोई दिव्य पुरुष उसके पास बहुत कालतक रहकर उसे पांच सुवर्ण के अक्षयपुरुष देकर अन्तर्द्धान होगया है उसके विरह से महाव्याकुल होकर उस वेश्याने जीवनको विषकी पीड़ा शरीरको निष्फल भार और भोजनको चोरीके समान मानकर धैर्य्य रहित होके अपने परिजनोंके बहुत समझानेसे यह प्रतिज्ञाकी है कि जो छः महीनेके भीतर मेरा प्रिय मुझे नहीं मिलैगा तो मैं अपने इसअभागे शरीरको अग्निमें जलादूंगी इसप्रकार प्रतिज्ञा करके शरीर त्याग करनेके निश्चयसे युक्त मदनमाला धर्मकी इच्छा करके नित्य महादान करती है ११४ हे महाराज मैंने उसे देखाहै कि यद्यपि भोजन थोड़ाकरनेसे उसका शरीर कृशहोगयाहै परन्तु उसकी शोभा न्यून नहीं हुई है जिस सुन्दरपुरुष के पीछे सुन्दरी मदनमाला अपने शरीरको त्याग करनेकी इच्छा कररही है और जिसने विरक्त होकर उसका त्याग कियाहै वह पुरुष मेरेमतसे निन्द्यभी और वन्द्यभीहै उसी वेश्याने मुझको चार सुवर्णकी भुजा इस निमित्तदी है कि मैं चारों वेदपढ़ाहूं तो अब मैं अपनेघरमें सदावर्त्त जारीकरके स्वधर्म का सेवनकिया चाहताहूं इस में आप मेरे सहायक हूजिये उस ब्राह्मणके मुखसे इसप्रकार अपनी प्रियाकी वार्त्ताको सुनकर राजा का चित्त उसीसमय मदनमालाकी ओर चलागया तब प्रतिहारको उसब्राह्मणके मनोरथको सिद्धकरने की आज्ञादेकर और मदनमालाका प्राणों से भी अधिक अपने ऊपर अनुराग देखकर और अपनी प्रतिज्ञाके सिद्ध होनेके लिये उसकी सहायताके लिये उत्कण्ठित होकर और उसके शरीर त्याग करने की अवधिमें थोड़ाहीसा समय बाकी जानकर राजाविक्रमादित्य मंत्रियों को सम्पूर्णराज्य सौंपकर आकाश मार्गसे प्रतिष्ठान नगरमें अपनी प्रियाके यहां पहुंचा और वहां उसने चन्द्रिकाके समान उज्ज्वल वस्त्रवाली विबुध (पण्डित और देवता लोग) लोगों को अपने ऐश्वर्य्यकी देनेवाली अमावास्याके दिनकी चन्द्रमाकी कलाके समान अपनी कृशित प्रिया देखी वहभी नेत्रोंमें अमृतकी वृष्टि करनेवाले राजाको अकस्मात् देखकर कुछ भ्रान्ति युक्तहोकर मानों फिर भागजाने के भयसे उसके गलेमें दोनों

हाथ डालकर लिपटगई और बोली कि हे निर्दय मुझ निरपराधिनीको छोड़कर तुम क्यों चलेगये थे उसके यह वचनसुनकर राजाने कहा कि चलो एकान्तमें कहेंगे. यहकहकर उसे एकान्तमें लेजाकर राजाने नरसिंह राजाके जीतनेकी प्रतिज्ञासे लेकर अपना संपूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया और प्रपंचबुद्धि को मारकर आकाशमें उड़नेकी शक्तिका संपूर्ण वृत्तान्त तथा कुवेरके वरदानसे उन पांचों सुवर्ण पुरुषोंके मिलनेका वृत्तान्त और ब्राह्मण के द्वारा उसके अनुरागको सुनकर अपने वहाँ जानेका वृत्तान्त वर्णनकरके कहा कि हे प्रिये यह राजा नरसिंह बड़ा बलवान्है इससे मैं अपनी सेनाके बलसे तो इसको नहीं जीतसका और द्वन्द्वयुद्धमें आकाशमें उड़कर मैं उसे मारभीलेता परन्तु अधर्म्म से जीतना क्षत्री लोगोंको उचित नहीं है इससे मैंने जो यह प्रतिज्ञाकी है कि राजा नरसिंह मेरे द्वारपर आवेगा तो वन्दीलोग तथा प्रतीहारलोग उसका सेवकोंके समान मुझसे निवेदन करेंगे सो इसप्रतिज्ञाके पूर्णहोनेमें तुम सहायताकरो यहसुनकर उसने कहा कि मैं धन्यहूं और राजाके साथ सलाहकरके अपने वन्दियों को बुलाकर यह आज्ञादी कि जबराजा नरसिंह मेरे मकानपर आवे तब तुमलोग द्वारपर दृष्टिलगाये खड़ेरहना और द्वारमें प्रवेशकरने के समय यहकहना कि हे महाराज राजानरसिंह आपका बड़ाभक्त है और आपसे बहुत स्नेह करताहै इसप्रकार कहनेपर जब राजा पूछे कि यहाँ कौनहै तो कहदेना कि महाराज विक्रमादित्य भीतरहैं वन्दियों से इसप्रकार कहकर प्रतीहारीसे कहा कि राजानरसिंह जबआवे तब उसको रोकना नहीं इसप्रकार आज्ञादेकर मदनमाला दूसरीवार अपने प्रियको पाकर सुखपूर्व्वक बहुत सा दानकरतीहुई रहनेलगी इसके उपरान्त राजानरसिंह मदनमालाके अत्यन्त दानका वृत्तान्त सुनकर और पांच अक्षय सुवर्णके पुरुषोंका प्राप्तहोना सुनकर उसे देखनेके लिये उसके यहाँ आया उससमय प्रतीहारी ने उसे निषेध नहीं किया और वन्दीलोग उच्चस्वरसे यह कहनेलगे कि हे महाराज राजा नरसिंह आपका बड़ाभक्तहै और आपसे सदैव नम्ररहता है यहसुनकर भय तथा क्रोधसे युक्त होकर राजानरसिंहने पूछा कि भीतर कौनहै मंत्रियों ने कहा कि महाराज विक्रमादित्य हैं यहसुनकर उसने अपने चित्तमें शोचा कि विक्रमादित्यने जो प्रतिज्ञाकी थी वह पूर्ण करलीनी यह बड़ातेजस्वी है इसने आज मुझे जीतलिया इससमय यह अकेला हमारे यहाँ आयाहै इससे इसका मारना भी उचित नहीं है इसप्रकार शोचकर वन्दियोंसे निवेदन कियाहुआ राजानरसिंह भीतरगया उसको मुस्कुरानेहुए भीतर आते देखकर विक्रमादित्यने मुस्कुराकर उठकर उसे अपने गलेसे लगाकर अपने पास बैठालिया फिर परस्पर कुशलक्षेम पूछकर प्रसंगसे राजानरसिंहने विक्रमादित्यसे पूछा कि यहसुवर्णके पुरुष कहाँसे आपने पायेहैं उसके इसप्रकार पूछनेपर विक्रमादित्य ने प्रपंचबुद्धिनाम भिक्षुक के मारने से आकाशमें गमन करनेकी शक्तिका प्राप्तहोना और कुवेरकी कृपासे अक्षय सुवर्ण के पांचपुरुषोंका मिलना विस्तार पूर्व्वक वर्णनकिया यहसुनकर नरसिंहने उसको आकाशमें उड़ने के कारण महाशक्तिमान जानकर और उसकी बुद्धिको पापसे निवृत्त जानकर उसके साथ मित्रताकरली और मित्रताकरके उसे अपने घरमें लेजाकर राजालोगोंके योग्य उसका बड़ा सत्कार किया और फिर उसे मद-

नमालाकेही घर भेजदिया इसप्रकार राजा विक्रमादित्यने अपने पराक्रम और बुद्धिसे अपनी प्रतिज्ञा को पूर्णकरके वहाँसे अपने देशके चलनेका विचार किया उससमय मदनमालाभी विरहको सहने के लिये समर्थ न होकर अपने सम्पूर्ण गृहादिक ब्राह्मणोंको दानकरके राजा के साथ चलने को उद्यतहुई तब राजा विक्रमादित्य मदनमालाके हाथी घोड़े तथा सब सेनाको साथमें लेकर उस समेत अपने पाटलिपुत्र नगरमें आया और राजा नरसिंहसे मित्रताहोनेके कारण अपनेदेशमें भी अत्यन्त आनन्द पूर्वक मदनमालाके साथ रहनेलगा इसप्रकार हे युवराज कभी २ वेश्याभी रानियोंकेही समान राजा लोगोंपर दृढ़प्रेम करती हैं और सत्कुलमें उत्पन्नस्त्रियों का तो कहनाही क्याहै मरुभूति के मुखसे इस उत्तम कथाको सुनकर नरवाहनदत्त और विद्याधरोंके श्रेष्ठकुलमें उत्पन्न होनेवाली रानीरत्नप्रभा दोनो अत्यन्त आनन्द को प्राप्तहुए १६१॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायां रत्नप्रभालम्बकेचतुर्थस्तरंगः ४॥

इसप्रकार मरुभूतिके कहनेके उपरान्त सेनाका स्वामी हरिशिख नरवाहनदत्तके आगे बोला कि हे युवराज ठीकहै कि सती स्त्रियोंको पतिके सिवाय कोई प्रिय नहीहोता है इस विषयपरभी आप मुझ से एक बड़ी विचित्र कथासुनिये कि वर्धमान नाम पुरमें वीरभुजनाम एक बड़ा धर्मात्मा राजाथा उसरा जाके सौ रानियां थीं उनमें से एकगुणवरा नाम रानी राजा को अत्यन्त प्यारीथी उन सौ रानियों में किसीकेभी कोई पुत्रनथा एकसमय राजाने श्रुतवर्द्धननाम वैद्यसेपूछा कि कोई ऐसीभी औषधहैजिस से पुत्रहोसके यह सुनकर वैद्यने कहा कि हे महाराज आप वनका बकरा मँगाइये तो मैं ऐसी औषध बनासक्ताहूं वैद्यके इस वचनको सुनकर राजाने उसीसमय प्रतीहारको भेजकर बनका बकरा मँगादिया वैद्यने उसबकरेको रसोईदारों को देदिया कि इसके मांसका बड़ासुन्दर रस बनालाओ जब रस बनकर आगया तब उसने संपूर्ण रानियोंको बुलवाकर उसरसमें कोई चूर्ण मिलाकर थोड़ा२ सबको पिलादिया उस समय अन्य सबरानी तो आईथी परन्तु गुणवरा नहीं आईथी क्योंकि वह राजाके साथ परमेश्वर का पूजनकरनेगईथी क्षणभरके बाद राजा अपनीरानी गुणवरा समेत पूजनकरकेआया और उसरसमें से कुछभी बचा न देखकर उसवैद्यसे बोला कि तुमने गुणवराकेलिये कुछभी नहीरक्खा जिसके लिये यह संपूर्ण कार्य्य कियागयाथा उसीको तुम भूलगये राजाके यहवचनसुनकर वैद्यके उदासीन होजानेपर राजाने रसोईदारोंसे कहाक्या उस बकरेके मांसमेंसे अभी कुछबाक़ीहै उन्होंनेकहा कि मांस तो नहीं रहा परन्तु सींग बाकीहैं तबवैद्यने कहा कि यहबहुतही अच्छाहै। सींगोंके भीतरके गूदेका रस अति उत्तम होताहै यहकहकर सींगोंके गूदेकारस बनवाकर वही चूर्ण उसमेंभी मिलाकर गुणवराको पिलादिया तब राजाकी वहनिन्नानवे रानियां गर्भवतीहुईं और समयपाकर सबके पुत्र उत्पन्नहुए और रानी गुणवराने सबके पीछेगर्भवती होनेके कारण सबके पीछे पुत्र उत्पन्नकिया राजा वीरभुजने उसपुत्रको सींगों के रस से उत्पन्न होनेके कारण उसकानाम शृंगभुज रक्खा संपूर्ण भाइयोंसमेत बढ़ताहुआ शृंगभुज अवस्था में तो सबसे छोटाथा परन्तु गुणों में सबसे श्रेष्ठहुआ वह रूपमें कामके समान धनुर्वेद में अर्जुनके स-

मान और वल में भीमसेन के समान था इसप्रकार शृंगभुज को गुणवान् देखकर वीरभुजकी सम्पूर्ण रानियां गुणवरा से ईर्ष्या करनेलगीं उनमें से अयशोलेखा नाम रानीने सबसे सलाहकरके जबराजा उसके यहां आया तब उदासीन होकर राजासे कहा कि हे आर्यपुत्र आप तो दूसरों के दोषोंको मिटातेहो फिर अपने घरके दूषणोंको कैसेसहतेहो यह जो सुरक्षितनाम सम्पूर्ण अन्तःपुरोंका अधिकारी है उसके साथ आपकी गुणवरा रानी आशक्त है और उसके सिवाय अन्य पुरुष अन्तःपुरवालों को मिलभी नहीं सक्ता है क्योंकि अन्य सब रक्षक तो नपुंसक हैं यह वात आपकी सम्पूर्ण रानियों को विदित होगई है उसके यहवचन सुनकर राजाने बहुत विचारकरके अपनी सम्पूर्ण रानियों से जाकर पूछा उनसबने भी कपटसे वही वात राजासे कही तब बुद्धिमान् राजा वीरभुजने क्रोधको रोककर विचारा कि रानी गुणवरा और सुरक्षितपर ऐसे दोषका संभवनहीं होसक्ताहै परन्तु यह प्रवाद तो इसप्रकार से फैलाहीं है इससे विना निश्चयकिये इसवातका भेद किसीकेआगे नहीं खोलनाचाहिये और युक्तिपूर्वक इनदोनोंको पृथक् २ रखकर देखना चाहिये कि क्या होताहै यह निश्चय करके राजाने दूसरे दिन सुरक्षितको बुलाकर क्रोधपूर्व्वककहा कि हे पापी मैंने सुनाहै कि तुमने ब्रह्महत्याकी है इससे जबतक तुम सम्पूर्ण तीर्थयात्रा न कर आओगे तबतक मैं तुम्हारा स्वरूप नहीं देखूंगा यह सुनकर उसने घबराकर कहा कि हे महाराज मैंने ब्रह्महत्या कहांकी है तब राजाने उससे फिर कहा कि धृष्टता मतकरो पापके नाश करनेवाले उस कश्मीर देशको जाओ जहां विष्णु भगवान् से पवित्र किया गया विजय क्षेत्र नन्दि क्षेत्र तथा वाराह क्षेत्रहैं और जहां वहतीहुई भगवती गंगाका वितस्ता ऐसा नामहै ऐसे पवित्र और मंडव क्षेत्र तथा उत्तर मानसरोवरसे युक्त कश्मीर देशकी यात्रासे पवित्र होकर तुम मेरेपासआओ यह कहकर राजाने उस विचारे सुरक्षितको निरपराधही तीर्थयात्राके वहानेसे बहुत दूर भेजदिया ३६ तदनन्तर राजा स्नेह क्रोध तथा विचारसे युक्त होकर रानी गुणवराके मन्दिर में गया उसने राजाको उदासीन देखकर बहुत व्याकुल होकर कहा कि हे आर्यपुत्र आज अकस्मात् आपउदासीन क्यों हैं यह सुनकर राजाने वातवनाकर उससे कहा कि हेरानी आज कोई महाज्ञानी आकर मुझसे कहगया है कि रानी गुणवराको कुछकालतक तहखानेमें वंदरखिये और आप ब्रह्मचारी हूजिये नहीं तो आपके राज्यका नाशहोजायगा और गुणवरा मरजायगी उसज्ञानी के इन वचनोंसे मुझे बड़ा विषाद होरहाहै यह सुनकर पतिव्रता रानी गुणवरा भय तथा अनुराग से व्याकुल होकर बोली कि हे आर्य्यपुत्र तो आजही आप मुझको तहखाने में क्यों नहीं छोड़देते जो मेरे प्राणों से भी आपका हितहोय तो मैं धन्यहूं मेरी चाहे मृत्यु होजाय परन्तु आपकी कोई हानि न होय क्योंकि इसलोक और परलोक में स्त्रियोंको पतिही एक परमगतिहै यहसुनकर राजाने नेत्रों में आंसूभरकर अपने चित्तमें शोचा कि इस रानीपर और सुरक्षितपर मुझे कोई सन्देह नहीं होता मैंने उसको निस्सन्देह देखाहै और उसके मुखकी कान्तिभी नहीं म्लान हुईथी तथापि इसप्रवादका निश्चय करना अवश्य उचितहै यहशोचकर रानीसे राजानेकहा कि तो यहीं तहखाना वनवाकर तुमरहो उसनेकहा बहुत अच्छा जैसी महाराजकी आज्ञा

होय तब राजाने वही तहखाना बनवाकर उसेबंदकरदिया और उसके पुत्र शृंगभुजको उदासीन देखकर उससेभी वही कारण कहदिया रानी गुणवराने राजाका हितजानकर उसतहखानेको भी स्वर्गके तुल्य मान लिया ठीकहै (स्वसुखंनास्तिसाध्वीनां तासांभर्तृसुखंसुखं) सती स्त्रियों को अपना सुख सुख नहीं मालूम होता उनको तो पतिकाही सुख महासुखहै ५३ रानी गुणवराकी यहदशा देखकर रानी अयशोलेखाने एकांत में निर्वासभुज अपने पुत्रसे कहा कि रानी गुणवरा तो मेरे उद्योग से गढ़ेमें बन्दकरदी गई अब इसका पुत्रभी इस देशसे निकलजाय तो बहुत अच्छाहो इससे हे पुत्र तुम अपने अन्यभाइयों से भी सलाहकरके शीघ्रही इसके देशसे निकालनेकी युक्तिकरो माताके यह बचन सुनकर निर्वासभुज अपने अन्य भाइयोंसे सलाह करके शृंगभुजके निकालने का उपाय शोचनेलगा एकसमय सम्पूर्ण राजपुत्र अस्त्रों का अभ्यास कररहे थे उससमय उनको एक बड़ाभारी बगला महलपर दिखाई दिया उसे देखकर उन सबोंको बड़ा आश्चर्य्यहुआ उन सबको आश्चर्य्यित देखकर उसी मार्गसे आयेहुए किसी ज्ञानी क्षपणक (श्रावकजती) ने कहा कि हे राजपुत्रो यह बगला नहींहै यह अग्निशिखनाम राक्षस बगलेका रूप धरेहुए नगरोंका विनाश कियाकरता है तो इसहेतुसे इसको बाण मारकर भगादो क्षपणकके यह वचन सुनकर निन्नानबे राजपुत्रों ने अलग अलग बाणमारा और किसी का भी बाण उसके नहीं लगा तब वह क्षपणक फिर बोला कि तुम्हारा छोटाभाई शृंगभुज इस बगले को मारसक्ता है इससे वह योग्यधनुष लेकर इसकोमारे उसके यहवचन सुनकर निर्वासभुज अपनी माताके वचनोंको स्मरणकरके विचारनेलगा कि शृंगभुजके निकालनेका यहअवसर मुझे मालूम होताहै कि अपने पिता राजाका धनुषबाण लाकर शृंगभुजको दूं जो यह उससुवर्ण के बाणसे इसबगलेको मारेगा और बगला बाण समेत उड़जायगा तब बाणको ढूंढ़नेकेलिये इसेलेकर हम सब इधर उधरजायँगे तब ढूंढ़नेसे बक रूपधारी यहराक्षस तोमिलेगा नहीं और शृंगभुज बाण बिनालिये लौटेगा नहीं इसप्रकारसे हमारा कार्य्य सिद्धहोजायगा यह शोचकर उसने अपने पिताका धनुषबाण शृंगभुज को लादिया उसने वह धनुष बाण लेकर पराक्रम से धनुषको खैंचकर वह बाण उसकेमारा और बाणके लगतेही बगले के शरीर से रुधिरकी धार बहनेलगी और बाण समेत वह वहाँ से उड़गया तब शृंगभुजसे निर्वासभुज और उसकी प्रेरणासे अन्य सबभाई कहनेलगे कि वह सुवर्णमय बाणदेदो नहीं तो हमसब तुम्हारेहीआगे अपना २ शरीर त्यागदेंगे क्योंकि राजा उसबाणके बिना हमलोगोंको निकालदेगा और उसकेसमान न बनवाये से बनसक्ताहै और न मोल मिलसक्ताहै यहसुनकर शृंगभुजने अपने कुटिल भाइयों से कहा कि धैर्य्य धरो दीनहोकर भय मतकरो मैं जाकर उस राक्षसको मारकर बाण ला दूंगा यह कहकर और अपना धनुष बाण लेकर शृंगभुज पृथ्वी में रुधिरकी धारको देखताहुआ जिस दिशा में वह बगला गया था उसी दिशाको चल दिया उससमय अन्य सबभाई तो प्रसन्न होकर अपनी २ माताके पास चलेगये और शृंगभुज क्रमसे जाते २ एक बनमें बहुतदूर जाकरपहुँचा उस बनमें एक बड़ासुन्दर पुर उसे मिला वह पुर क्या था मानो पुण्यरूपी वृक्षकाफल समयपर भोगकरने के लिये प्राप्तहुआ था वहां उपवन मे

किसी वृक्षकेनीचे क्षणभर विश्राम करनेकेपीछे उसे एकबड़ी रूपवती कन्यादिखाईदी विरह में प्राणों के हरनेवाली और संगम मे प्राणों की देनेवाली उस कन्याको मानो ब्रह्माने अमृत और विष मिलाकर बनाया था धीरे २ प्रेमयुक्त दृष्टिसे देखतीहुई वह कन्या जब निकट आई तब शृंगभुजने उससे पूछा कि हे मृगनयनी इसपुरका क्यानाम है यहांका राजाकौनहै तुम कौनहो और यहां किसलिये आईहो तब वह नीचेको मुखकरके तिरछी दृष्टिसे देखकर मधुरवाणी से बोली कि यह संपूर्ण सम्पत्तियों से युक्त धूमपरनाम नगर है अग्निशिखनाम राक्षस यहां का राजाहै उसीकी रूपशिखा नाम मैं कन्याहूं और तुम्हारे असामान्य स्वरूपको देखनेकेलिये यहां आईहूं अब तुम बतलाओ कि तुम कौनहो और यहां किसलिये आएहो उसके यह वचन सुनकर शृंगभुजने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त बाणके निमित्त धूमपुर में आने तकका कहदिया उसके सम्पूर्ण वृत्तान्तको सुनकर रूपशिखाबोली कि तुम्हारे समान त्रैलोक्यमें कोई धनुर्द्धारी नहीं है जिसने बकरूपधारी मेरे पिताको भी बाणसेमारा वह बाण मैंने खेलनेके लिये लेलिया है और हमारे पिताको महादंष्ट्र नाम मन्त्री ने घावकी अच्छी करनेवाली औषध लगाकर उसके घावको आराम करदिया तो अब हे आर्य्यपुत्र अपने पिता से कहकर तुम्हे भीतर लेचलूंगी क्योंकि मैंने अपना शरीर तुम्हारे अर्पण करदियाहै यह कहकर रूपशिखा शृंगभुजको वहीं बैठालकर बोली कि हे तात असाधारणरूप कुलशील तथा अवस्था के गुणों से युक्त शृंगभुजनाम कोई राजपुत्र यहां आयाहै मैं जानतीहूं कि वह मनुष्य नहीं है किसी देवताका अवतारहै जो वह मेरा पति न होगा तो मैं अपना शरीर त्यागदूंगी उसके यहवचनसुनकर अग्निशिख बोला कि हे पुत्री मनुष्य तो हमारे आहार होतेहैं और जो इतनेपर भी तुम्हें आग्रहहै तो उसराजपुत्रको यहाँ लाकर मुझे दिखलाओ तब रूपशिखा शृंगभुजसे सबवृत्तान्त कहकर उसे अपने पिताकेपास बुलालाई अग्निशिखने प्रणाम करतेहुए शृंगभुजसे कहा कि हे राजपुत्र जो तुम मेरी आज्ञाको न उल्लंघनकरो तो मैं अपनी पुत्रीरूपशिखा तुमकोदेदूं उसके यहवचनसुनकर शृंगभुजने नम्रतापूर्व्वक कहा कि बहुत अच्छा मैं आप की आज्ञाका उल्लंघन कभी नही करूंगा तब प्रसन्नहोकर अग्निशिख बोला कि अच्छाजाओ स्नान स्थानसे स्नानकरके शीघ्र मेरे पास आओ उससे यहकहकर अग्निशिख रूपशिखा से बोला कि तुम जाओ और शीघ्रही अपनी सबबहनोंको साथलेकर चलीआओ उसके यहवचनसुनकर वहदोनों बाहर निकले १०२ तब शृंगभुजसे रूपशिखाने कहा कि हे आर्य्यपुत्र मेरे सो बहनेहैं सबका एकही समान स्वरूपहै सबके वस्त्र आभूषण एकसेही हैं और सबके गले में एकही प्रकारके हारहैं इससे हमारा पिता हमसबको मिलाकर तुम्हें मोहित करनेके लिये कहेगा कि इनमें से जिसको चाहो उसेलेलो मैं अपने पिताके कपटके अभिप्रायको जानतीहूं नही तो हम सबको वह क्यों बुलाता मैं उससमय गले से अपनाहार निकालकर अपने शिरमें लगाऊंगी इसीपरिचयसे तुम मेरे ऊपर बनमाला डालदेना मेरा पिता भूतोंके समानहै इसकी बुद्धिमें विवेक नहीं है इसीसे यह मेरे साथ भी छल करताहै क्योंकि जातिको स्वभाव कभी भी नष्टनहीं होताहै इससे यहजो कुछ तुमसे तुम्हारे छलनेको कहे सो सब स्वी-

कारकरके तुम मुझसे कहदेना तब जो उचित होगा सो मैं करूंगी यहकहकर रूपशिखा अपनी बह-
नोंके पासचलीगई और शृंगभुज स्नानकरने को चलदिया फिर रूपशिखा अपनी संपूर्ण बहनों को
साथ लेकर अग्निशिखके पासआई और शृंगभुज भी स्नानकर वहीं आया तब अग्निशिख शृंग-
भुजको एकवनमाला देकर बोला कि इनमेंसे जो तुम्हारी प्रियाहो उसके गले में इसवनमालाको डाल
दो उसने वनमाला लेकर पहले संकेतके अनुसार रूपशिखाके गलेमें पहरादीनी यह देखकर अग्नि-
शिखने कहा कि प्रातःकाल मैं तुमदोनों का विवाहकरदूंगा यहकहकर उसने उनसबको जानेकी आ-
ज्ञादी और क्षणभरमें शृंगभुजको बुलाकर फिर कहा कि इनदोनों बधिया बैलोंको लेकर नगरके बाहर
जो डेढ़ सौ मन तिल इकट्ठे रक्खे हैं उन्हें पृथ्वीमें बोआओ उसके वचनोंको स्वीकारकरके शृंगभुजने
उदासहोकर रूपशिखा से जाकर यहबात कही उसनेकहा हे आर्य्यपुत्र खेद न करो चलो मैं अपनीमाया
से संपूर्ण कार्य्य सिद्धकरदूंगी यहसुनकर शृंगभुज उसीको साथलेकर नगरके बाहरगया और तिलों के
ढेरमेंसे कुछ तिललेकर बोनेलगा यह तो बोताही रहा किन्तु रूपशिखाने अपनीमायाके बलसे शीघ्रही
पृथ्वीको जोतकर सम्पूर्णतिलबोदिये तिलोंको बोयाहुआ देखकर शृंगभुजने अग्निशिखसे आकर कहा
कि सबतिल मैंने बोदिये तब उसछलीने फिर कहा कि मुझे उन तिलोंके बोनेसे कुछप्रयोजन नहींहै जाओ
उनसबको इकट्ठाकर आओ यहसुनकर उसने रूपशिखासे जाकर कहदिया उसने उसीसमय अपनीमा-
यासे असंख्य चेंटी उत्पन्नकरके सबतिल इकट्ठाकरदिये यहदेखकर शृंगभुजने फिर जाकर अग्निशिख से
कहा कि सम्पूर्णतिल इकट्ठेहोगये यहसुनकर वह मूर्ख फिर बोला कि यहाँसे दक्षिणदिशा में दो योजन
पर वनमें एकशून्यशिवमन्दिर है उसमें धूमशिखनाम मेरा प्रियभाई रहताहै वहांजाकर तुम देवमन्दिरके
सन्मुख खड़ेहोकर कहना कि हे धूमशिख कुटुम्बसहित तुमको निमन्त्रणदेनेकेलिये अग्निशिखने मुझे
भेजाहै शीघ्रही आओ प्रातःकाल रूपशिखाका विवाह होनेवाला है यह कहकर शीघ्रही चलेआओ
और प्रातःकाल रूपशिखा के साथ विवाह करो उसपापी के इनवचनों को स्वीकार करके शृंगभुज ने
रूपशिखा से जाकर सब कहदिया तब रूपशिखा मृत्तिका जल कांटे तथा अग्नि उसे देकर बोली कि
हे आर्य्यपुत्र तुम मेरे इस घोड़ेपर चढ़कर शीघ्रही शिवालयको जाओ और शीघ्रही धूमशिखको
निमन्त्रण देकर इसी घोड़ेपर सवारहोके भगातेहुए चलेआओ और लौटते समय बारम्बार पीछे को
देखतेजाना जोपीछे धूमशिख को आता देखना तो अपने पीछे मार्ग में यह मृत्तिका छोड़देना तिस
पर भी जो धूमशिख पीछे ही आवे तो यह जल अपने पीछे मार्ग में छोड़देना और फिर भी जो वह
पीछे आवे तो यह कांटे छोड़ देना और जो इतने पर भी वह पीछे आवे तो यह अग्नि अपने पीछे
मार्ग में छोड़देना इसप्रकार करने से तुम निर्विघ्नतापूर्वक यहां आजाओगे सन्देह न करो जाओ
आजमेरी विद्याका बल देखना उसके यह वचनसुनकर शृंगभुज मृत्तिका आदिपदार्थों को लेकर उसी
के घोड़ेपर चढ़कर देवमन्दिरको गया वहां बाईं ओर पार्वती तथा दाहिनी ओर श्रीगणेशजी से युक्त
श्री शिवजी को नमस्कार करके और अग्निशिखका निमन्त्रण धूम शिखसे कहकर घोड़ा दौड़ाता

हुआ वहांसे चला क्षणभर के पीछेही जैसे उसने मुखमोड़कर पीछे को देखा तो धूमशिख पीछे चला आरहाथा तब उसने अपने पीछे मार्गमें मृत्तिका डालदी उस मृत्तिकासे बड़ाभारी पर्व्वत होगया उस पर्व्वत को किसी प्रकार उल्लंघन करके जब वह राक्षस फिर पीछे आया तो उसने अपने पीछे जल छोड़ा उससे मार्गमें बड़ी भारी नदीहोगई उस नदीको भी किसी प्रकार उल्लंघन करके जब वह फिर पीछे आया तो उसने वह कांटे अपने पीछे मार्गमें छोड़दिये उन कांटोंसे मार्ग में बड़ाभारी कांटों का वनहोगया उस वनको भी उल्लंघन करके वह राक्षस जब पीछेही आया तब वह अग्नि उसने अपने पीछे मार्ग में डालदी उससे वह सम्पूर्ण वन जलने लगा और खाण्डववन के समान जलते हुए उस वनको उल्लंघन करने में असमर्थ होकर खिन्न तथा भयभीत होकर वहराक्षस लौटगया उससमय रूप-शिखाकी मायासे मोहित होकर उसराक्षस को आकाशमार्ग से उड़ने की याद न रही उस राक्षसको लौटाहुआ देखकर शृंगभुज अपनी प्रियाकी मायाकी प्रशंसाकरता हुआ निर्भय होकर धूमपुरमें पहुंचा वहां पहले रूपशिखाके पासजाके उसका घोड़ादेके और सबवृत्तान्त कहके अग्निशिख के पासजाकर बोला कि मैं तुम्हारे भाई को निमन्त्रण देआया यह सुनकर अग्निशिख ने आश्चर्य्यितहोकर कहा कि जो तुम वहां गयेहो तो वहां की कुछ पहचान बताओ तब शृंगभुजने कहा कि वहां श्रीशिवके बाई ओर तो पार्वतीजी हैं और दक्षिणकी ओर विघ्नहर्त्ता श्रीगणेशजी हैं यही पहचानहै यहसुनकर अग्नि-शिख शोचनेलगा कि यह वहां गयाभी परन्तु मेरा भाई इसको नहीं खासका मैं जानताहूं यह मनुष्य नहीं है कोई देवता है इससे यह मेरी कन्या के योग्यही वरहै यह शोचकर उसने शृंगभुजको रूपशिखाके पासभेजदिया और यहभेद उसेकुछ नहीं मालूम हुआ शृंगभुजने रूपशिखाके पासजाकर भोजनादिकरके विवाहके लिये उत्कण्ठितहोके वह रात्रि किसीप्रकारसे व्यतीतकी प्रातःकाल अग्निशिखाने अग्निको प्रज्वलितकरके अपनी सम्पत्ति के अनुसार रूपशिखा उसकोदेदी कहां तो राक्षसकी पुत्री रूपशिखा कहां राजपुत्र शृंगभुज और कहां इनदोनोंका विवाह वाह प्राक्तन कर्मोंकी विचित्रगति है जैसे पंकसे उत्पन्नहुई कमलिनीको पाकर राजहंस शोभितहोता है उसीप्रकार राक्षसकी पुत्री रूपशिखाको पाकर शृंगभुज शो-भितहुआ विवाहके उपरान्त शृंगभुज अपनी प्रियाके साथवहीं अपने श्वशुरके ऐश्वर्यको भोगताहुआ रहा १६१इसके उपरान्त कुछदिनों के व्यतीतहोनेपर शृंगभुजने एकान्तमे अपनीप्रियासे कहा कि हे प्रिये चलो वर्द्धमानपुरको चलें वह हमारी राजधानीहै मेरे भाइयोंने मुझेयुक्तिपूर्व्वक वहाँसे निकालाहै यह बात मैं नहींसहसक्ताहूं क्योंकि हमसरीखेलोगों को मानहीप्राणहैं इससेतुम मेरे लिये इसअपनी जन्मभूमिको छोड़कर अपने पितासेकहके और उससुवर्णके बाणको लेकरचलो शृंगभुजके यहवचनसुनकर रूपशिखा बोली कि हे आर्यपुत्र जैसाआपकहोगे वैसाही मैं करूंगी जन्मभूमि और स्वजन क्या पदार्थ हैं मेरे तो आपही सब कुछहो क्योंकि सतीस्त्रियों को पतिकेसिवाय और कोईगतिनहीं है परन्तु यहजो आपनेकहा कि अपनेपितासे कहो सो योग्यनहीं है क्योंकि वह हमलोगों को छोड़नानहींचाहता इससे उसक्रोधीसे विनाहीकहे चलेचलिये जो पीछेसे परिजनों के कहनेसे वह आवेगा तो मैं अपनी मायासे उसे मोहित

करदूंगी उसके यह वचनसुनकर शृंगभुज बहुत प्रसन्नहोगया दूसरेदिन रूपशिखा रत्नों से भरेहुए डिब्बे को लेके और सुवर्ण के वाणकोभी लेकर शृंगभुजसमेत अपने शरवेगनाम घोड़ेपर चढ़कर उपवन के विहारके बहानेसे उसनगरके वाहरचलीआई वहाँसे वर्द्धमानपुरकी ओर कुछदूरचलेआनेपर अग्निशिख उनके गमनको जानकर क्रोधसे आकाशमार्ग में उड़कर उनकेपीछे आया उसके आगमनके वेगसे होनेवालेशब्दको सुनकर रूपशिखाने कहाकि हे आर्यपुत्र मेरापिता मेरे लौटाने के लिये पीछे से आरहाहै इससे तुम यहींठहरो देखो मैं इसको अपनी माया से कैसा मोहितकरतीहूं यह तुम को घोड़ेसमेत देखनहींसकेगा क्योंकि मैं अपनी विद्यासे तुम्हें ढकेदेती हूं यह कहकर उसने घोड़े से उतरकर अपना पुरुष कासाभेष वनालिया और एकलकड़ीवाले से कहाकि यहाँ एक बड़ाराक्षस आताहै तुम थोड़ीदेर ठहर जाओ इसप्रकार वनमेंसे लकड़ीलेने आयेहुए लकड़ीवालेसे कहकर उसीसे कुल्हाड़ी लेकर वह लकड़ी काटने लगी इतने में अग्निशिखने वहां आकर आकाशसे उतरकर उसे लकड़हारा जानकर पूछा कि यहां तुमने इस मार्ग से जातेहुए कोई स्त्री पुरुष देखे हैं उसने कहा नहीं हम परिश्रमसे दुखी होरहेहैं हमने कुछनहींदेखा आज राक्षसोंका स्वामी अग्निशिख मरगयाहै उसके जलानेकेलिये हमको वहुतसी लकड़ी काटनी हैं यह सुनकर वह मूर्ख राक्षस शोचनेलगा कि अरेक्या मैं मरगयाहूं अवमुझे उस कन्यासे क्या प्रयोजनहै पहले अपने घरमें जाकर पुरजनों से अपनी मृत्युका वृत्तान्त तो पूछलूं यह शोचकर वह शीघ्रतासे अपने घरको लौटगया और रूपशिखा अपने पति समेत हँसतीहुई वहांसे चली अग्निशिख घरमें जाकर हँसतेहुए अपने परिजनों से अपनेको जीताहुआ सुनकर प्रसन्नहोकर क्षणभरमेंही फिर उसीके पीछे आगया तव घोर शब्द से उसको फिर आयाहुआ जानकर रूपशिखा उसी प्रकार अपने पतिको छिपाकर मार्ग में आतेहुए किसी हलकारे के हाथसे पत्रलेकर पुरुषका वेष बनाकर खड़ी होगई इतनेमें उसराक्षसने वहां आकर आकाश से उतरकर उससे पूछा कि तुमने कोई स्त्री पुरुष इधरजातेहुए देखेहैं उसनेकहा नहीं मैंने जल्दीमें कुछ नहीं देखा अग्निशिखनाम राक्षसों के राजाको उसके शत्रुओंने माराहै अवकुछ प्राण उसके वाकीहैं इसलिये उसने मुझे चिट्ठी देकर अपने भाई धूमशिखको राज्यदेनेके लिये वुलाने को मुझे भेजाहै यह सुनकर अग्निशिख अपने मनमें क्या मुझे शत्रुओं ने मारडाला है इसलिये घवराकर अपने घरको लौटगया उसे यह ज्ञान नहीं हुआ कि मैंतो अभी भलाचंगाहूं मारा कौनगया ब्रह्माकी सृष्टिमें अपूर्व २ तामसी विचित्र जीवहैं घरमें जाकर हँसतेहुए अपने परिजनो से अपने मारेजाने के वृत्तान्त को मिथ्या भी जानकर वह मोहित होकर अपनी कन्याको भूलकर फिर नहीं आया रूपशिखाभी इसप्रकार अपने पिताको मोहित करके शृंगभुजके साथ उसी घोड़ेपर सवार होलीनी ठीकहै सतीस्त्रियां अपने पतिके हितके सिवाय और कुछनहीं जानतीं तव शृंगभुज अपनी प्रिया समेत उसी घोड़ेको दौड़ाकर वड़ी शीघ्रतासे वर्द्धमान पुरमें पहुँच गया १९५ वहां राजा वीरभुज उसे स्त्री समेत आया सुनकर प्रसन्नहोके मन्दिर से वाहर उसके देखने को आया सत्यभामा से युक्त श्रीकृष्णजी के समान रूपशिखा से युक्त शृंगभुजको देखकर राजाको

नवीन राज्य मिलनेकासा सुखहुआ और घोड़ेसे उतरकर रूपशिखा समेत पैरोंपर गिरतेहुए शृंगभुजको हृदयसे लगाकर राजाके नेत्रोंसे प्रेमके आंसू बहनेलगे और उन्हीं आंसुओं से मानो दुःखरूपी अमंगलको शान्त करके राजा बड़े उत्सवसे उसे भीतरलेगया और सुखपूर्वक बैठालकर बोला कि हे पुत्र तुम कहांगयेथे पिताके यह वचन सुन उसने अपना संपूर्णवृत्तान्त कहदिया और राजाकेसन्मुख अपने निर्वासभुज आदि सबभाइयोंको बुलवाकर वह सुवर्णका तीर रूपशिखासे उन्हे दिलवादिया राजावीरभुज सब वृत्तान्तको जानकर और अपने सन्मुखही बाणका देना देखकर अपने वीरभुजादिक पुत्रों से विरक्त होकर केवल शृंगभुजको ही अपना पुत्र मानकर उसपर अधिक स्नेह करनेलगा और उसने शोचा कि जैसे इनभाई रूपशत्रुओं ने निरपराध शृंगभुजको द्वेषसे निकाल दियाथा उसीप्रकार इनसब पुत्रोकी माताओ ने मेरीनिर्दोषप्रिया गुणवराको मिथ्याकलंक लगायाहोगा इससे आजही चलकर निश्चयकरना चाहिये इसप्रकार शोचकर राजारात्रि के समय अयशोलेखा रानीके यहाँ परीक्षाकरने को गया वहां राजाके आने से प्रसन्नहोकर मद्यपीके रतिके उपरांत श्रमसे कुछ ओंघकर रानी अयशोलेखा बकनेलगी कि जो मै गुणवराको मिथ्यादोष न लगाती तो आज राजा मेरेयहाँ इसप्रकार क्यों आता उस दुष्टरानी के यह वचन सुनकर राजा अपने विचारको पुष्टजानकर क्रोधयुक्तहोके वहाँ से चलाआया और अपने प्रधान पुरुषों को बुलाकर बोलाकि गुणवराको गढ़ेसे निकाल के और स्नानकराके शीघ्र मेरेपासलेआओ उसज्ञानीने इसी समयतक अनिष्टके शान्तकरने केलिये गुणवराको गढ़े में रखनेकी आज्ञादीथी यह सुनकर वह लोग उसीसमय गुणवराको निकालकर स्नानकराके और नवीन आभूषण वस्त्रपहराकर राजाके निकट लेआये तब राजा बहुतकालके विरहके उपरान्त उसेदेखकर उसके गले मे लिपटगया और परस्पर आलिंगन से तृप्तनहोकर वह रात्रिव्यतीतकी राजा ने उससमय गुणवरासे शृंगभुजकाभी सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया उसेसुनकर गुणवरा अत्यन्त प्रसन्नहुई राजातो यहाँ आकर गुणवरा से मिलकर अत्यन्त आनन्द को प्राप्तहुआ और वहाँ रानी अयशोलेखा होश में आकर अपने छल को प्रकटहुआ जानकर अत्यन्त खेदको प्राप्तहुई प्रातःकाल राजा वीरभुज ने रानी गुणवरा के पास शृंगभुज को रूपशिखा समेत बुलवाभेजा उसने वहां आकर अपनी माता को गढ़े से निकली हुई देखकर अत्यन्त प्रसन्नहोकर रूपशिखा समेत बड़े आनन्द पूर्वक प्रणाम किया गुणवरा भी बहुत दूरपरदेश से आयेहुये वधूसमेत अपने पुत्रको आलिंगन करके आनन्द की पराकाष्ठा को प्राप्तहुई उससमय राजाकी आज्ञा से शृंगभुज ने अपना सम्पूर्ण वृत्तांत औरजो२ रूपशिखाने विचित्र कार्य किये थे वह सब विस्तारपूर्वक कहे उस वृत्तान्त को सुनकर रानी गुणवरा बोली किहे पुत्र इस विचित्र चरित्र वाली रूपशिखाने तुम्हारेलिये क्या२ नहीं किया इसने अपनेप्राणोंकी आशा भाईबन्धु तथा स्वदेश छोड़कर तुम्हारे प्राण बचाये और तुम्हें स्वदेश तथा बन्धुओं से मिलाया भाग्य वशसे यह कोई देवी तुम्हारे लिये उत्पन्न हुई है इसने अपने आचरणों से संपूर्ण पतिव्रताओं को नीचे करदिया रानी के यह वचन सुनकर राजा ने कहा कि बहुत ठीकहै और रूपशिखा ने विनयसे अपना शिर झुकालिया उससमय अयशोलेखा से मिथ्या दोपलगाया

हुआ अन्तःपुरका रक्षक सुरक्षित संपूर्ण तीर्थोंका भ्रमण करके राजाके द्वारपर आया प्रतीहारके मुख से उसका आना सुनकर राजा ने उसेभीतर बुलाके प्रणाम करते हुए उस को बड़े आदर से अपने पास बैठाया और उसीके द्वारा संपूर्ण दुष्टरानियों को बुलवाकर उसी से कहा कि इनसबको तहखानों में बन्द करदो यह सुनकर उन सब रानियों को भयभीत देखकर रानी गुणवरा अत्यन्त कृपापूर्व्वक राजा के चरणों में गिरकर बोली कि हे आर्यपुत्र इनको तहखाने में बन्द न करवाइये मेरे ऊपर कृपा करिये मैं इन सबको भय भीत नहीं देखसक्ती हूं इस प्रकार प्रार्थना करके उसने राजा से उनसबका बन्धन छुड़वा दिया ठीक है (महतामनुकम्पाहिविरुद्धेष्वप्रतिक्रिया) विरोधियों पर दयाकरनाही महात्मा लोगों का बदला लेनाहै तब वह सम्पूर्ण रानी लज्जित होकर अपने २ घरको चलीगईं और राजाने रानी गुणवराको अत्यन्त सुशीलमानकर अपने को महाधन्यमाना कि जिसे ऐसी स्त्री मिली इसके उपरान्त राजाने निर्वास आदिक अपने सम्पूर्ण पुत्रोंको बुलवाकर युक्ति पूर्व्वक उनको निकालनेके लिये कहा कि मैंने सुनाहै कि तुम सबपापियोंने कोई पथिक वैश्यमारडालाहै इससे तुमलोग यहाँ मतरहो संपूर्ण तीर्थोंका पर्य्यटनकरो राजाके यहवचनसुनकर वह सब उसे समझ न सके क्योंकि स्वामीके हठकरने पर कौन विश्वास करासक्ताहै तब उनसब भाइयोंको जाते देखकर शृंगभुज कृपासे आंसूभरकर अपने पितासे बोला कि हे तात आप कृपाकरके इनके एक अपराधको क्षमाकरिये और यहकहकर चरणोंपर गिरपड़ा राजा भी उसके विनयको देखकर और बाल्यावस्थाहीमें व्रज में रहनेवाले श्रीकृष्ण भगवान् के समान सम्पूर्ण शत्रुओं के मारने में समर्थ जानकर उसके वचन स्वीकार करलिये और वह निर्वासभुज आदि सबभाईभी उसको अपने प्राणोंकारक्षक जाननेलगे सब प्रजालोगभी शृंगभुजके ऐसे२ उत्तम गुणों को देखकर उसपर बड़ा अनुराग करनेलगे तदनंतर राजाने शृंगभुजको गुणोंमें सबसे बड़ाजानकर उसके सम्पूर्ण बड़ेभाइयोंको छोड़कर उसीको युवराज पदवीदी तब युवराज पदवीकोपाकर शृंगभुज अपनेपिता से आज्ञा लेकर सम्पूर्ण सेनाको साजकर दिग्विजय करने को गया और अपनी भुजाओं के पराक्रमसे सम्पूर्ण पृथ्वी के राजा लोगोंको जीतकर उनको अपने साथ में लेकर और दिशाओं में अपनी कीर्त्तिको फैलाकर लौट आया इसप्रकार सम्पूर्ण पृथ्वीको अपने वशमें करके शृंगभुज अपने भाइयो समेत सम्पूर्ण राज्य के कार्य्यों को करके अपने मातापिताको प्रसन्न करनेलगा तब उसके पिता माता राजा रानी भी निश्चिन्त होकर आनन्द पूर्व्वक ऐश्वर्य्यका भोग करनेलगे और शृंगभुजभी सम्पूर्ण ब्राह्मणोंको दानादि से प्रसन्न करताहुआ रूपवती सम्पत्ति के समान रूपशिखा के साथ सुखपूर्व्वक रहनेलगा इसप्रकार से सतीस्त्रियां सब रीतियों से अपने पतिका सेवन करतीहैं जैसे कि गुणवरा और रूपशिखा दोनों सास बहूने कि हर शिखके मुखसे इस सुन्दर कथा को सुनकर रत्नप्रभासमेत नरवाहनदत्त अत्यन्त प्रसन्नहोके वहांसे उठकर अपने नित्य नियमको करके अपने पिता राजा उदयन्के निकट गया वहां भोजन करके गीत वाद्यादिकों मे दिनको व्यतीतकर रात्रिके समय अन्तःपुर मे अपनी प्रियाओं समेत रहा २४७॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांरत्नप्रभालम्बकेपंचमस्तरंगः ५॥

प्रातःकाल फिर रत्नप्रभा के मन्दिर में स्थित नरवाहनदत्तके पास गोमुखादिक मन्त्री आये परन्तु मरुभूति मद्य पीनेसे कुछ उन्मत्त होकर हारादि पहर के और चन्दनादिक लेपनकरके कुछ विलम्ब से आया उसके डगमगातेहुये पैरोंको देखकर गोमुख उसकी नीतिसे प्रसन्नहोकर उससे हँसी करनेकेलिये बोला कि तुम यौगन्धरायणके पुत्रहोकरभी नीति नहीं जानतेहो प्रातःकाल मद्यपीतेहो और उन्मत्तहोकर स्वामीके पास आतेहो यह सुनकर उन्मत्त मरुभूति क्रोधकरके बोला कि यह बाततो युवराजको कहना उचितथी अथवा कोई गुरू कहता हे इत्यकके पुत्र तू कौनहे जो मुझे सिखारहा है यह सुनकर गोमुख फिर हँसकर बोला कि क्या स्वामी उद्दंडको अपने मुख से थोड़ेही डाटते हैं वहां बैठने वाले लोगोंको यथोचित अवश्य कहदेना चाहिये और मैं तो इत्यकपुत्रहूं यह ठीकही है परन्तु तुम मन्त्रिवृषभ (श्रेष्ठ मन्त्री और मन्त्रियों में बैल) हो तुम्हारी जडताही से यह बात विदितहोती है परन्तु तुम्हारे सींग नहीं हैं यह सुनकर मरुभूतिने कहा कि तुम गोमुखकाही वृषभहोना सिद्ध (छजता) हे इतनेपर भी जो तुम दांत (बधिया) नहींहो सो तुम्हारा जातिसंकरत्वहे यह सुनकर सबलोगोंके हँसनेपर गोमुखबोला कि मरुभूति अवेध्यरत्नहे इसमें सैकड़ो यत्नों से भी कोई गुणोंका प्रवेशनहीं होसक्ताहे यह पुरुषरत्न तो जुदेही होते हैं जिनमें बिना यत्न के गुणोंका प्रवेशहोजाताहै इसबातपर मैं बालूके पुलका वृत्तान्त आपलोगोंको सुनाताहूं-प्रतिष्ठानदेशमें तपोदत्तनाम एक ब्राह्मणथा उसने बाल्यावस्थामें पिताके ताड़ना करनेपरभी विद्यानहींपढ़ी जब अवस्था अधिकहुई तब सबलोगों से अपनी निन्दा सुनकर पश्चात्तापकरके विद्या की प्राप्तिके लिये श्रीगंगाके तटपरजाके तपस्या करनेलगा वहां उसे उग्रतपकरताहुआ देखकर इन्द्र ब्राह्मणका स्वरूप धारणकर उसके निवारण करने के लिये उसके निकटआये और उसी के आगे कि-नारेपरकी बालूलेकर गंगाजी में फेंकनेलगे यह देखकर तपोदत्त मौन को त्यागकरके बोला कि हे ब्राह्मण यह तुम क्या कररहेहो उसके बहुत पूछनेपर इन्द्रनेकहा कि लोगों के पारजाने के लिये मैं गंगा में पुलबनारहाहूं यह सुनकर उसने कहा कि हे मूर्ख प्रवाहसे बहजानेवाली बालूसे कहीं गंगाजीका पुल बनसक्ताहै तब इन्द्रने उससेकहा कि जो तुम यह जानतेहो तो बिना पढने के व्रत उपवासादि करके विद्याके उपार्जन करनेको क्यों उद्युक्तहुएहो अक्षरों के बिना लिखना और अध्ययनके बिना विद्या खरगोशके सींग और आकाशके चित्रके समान हे इन्द्रके यह वचन सुनके तपोदत्त उनवचनों को यथार्थ जानकर तपको त्यागकर अपने घरचलागया इसप्रकार बुद्धिमान्लोग तो थोड़ेही में समझ जाते हैं परन्तु मरुभूति निर्बुद्धि है समझाने से समझता तो नहीं है किन्तु और क्रोधकरताहे गोमुखके यह वचन सुनकर बीचमें हरिशिखबोला कि ठीकहै बुद्धिमानलोग बहुतजल्दी समझजाते हैं काशीपुरी में विरूपशर्म्मानाम अत्यन्त निर्द्धन तथा कुरूप एक ब्राह्मणथा वह अपने कुरूप और दुर्दशासे खिन्न होकर तपोवनमें जाके रूप तथा धनकी अभिलाषासे तप करनेलगा तब इन्द्र एक कुरूप महारोगी स्यार का स्वरूप धारणकरके उसके आगे आकर बैठा उसशृगालको मक्खियों से लिपाहुआ तथा अत्यन्त पीड़ित देखकर विरूपशर्म्मा अपने चित्तमें शोचनेलगा कि इससंसारमें प्राक्तनकर्मों से ऐसे २ जीव भी

उत्पन्नहोते हैं तो ईश्वरकी मेरेऊपर यही बड़ीकृपाहै कि मुझे भी ऐसाही नहीं किया भाग्यके लिखेको कौन मेटसक्ताहै यह शोचकर विरूपशर्म्मा तपोवनसे अपने घरकोचलागया हरिशिखके इसप्रकार कहने पर और गोमुखके प्रशंसाकरनेपर मरुभूति उन्मत्ततासे क्रोधकरके बोला कि हे गोमुख तुमलोगों के वचनमेंही बलहै भुजाओं में नहीं तुमसरीके नपुंसक बकवादियों से कलहकरने में वीरपुरुषोंको लज्जा होती है यह कहकर लड़नेकी इच्छा करतेहुए मरुभूतिको नरवाहनदत्तने मुस्कुराकर आपही समझाया और स्नेहसे उसे उसी के घर भेजके अपना नित्यनैमित्तिककरके वह दिन सुखपूर्व्वक व्यतीतकिया ३६ प्रातःकाल फिर सम्पूर्ण मंत्रियों के आजानेपर मरुभूतिको लज्जित देखकर रत्नप्रभा नरवाहनदत्त से बोली कि हे आर्यपुत्र आप बड़े पुण्यात्माहो जिनको ऐसे शुद्धचित्त और बाल्यावस्थासे ही स्नेहरूपी जंजीरमें बँधेहुए यह मन्त्री मिले हैं और यह मन्त्री भी धन्यहैं जिनको आपसरीखे स्वामी मिलेहो निस्सन्देह आपलोगोंका पूर्वज संस्कारसे संयोगहुआहै रानी रत्नप्रभाके यह वचन सुनकर वसन्तकका पुत्र तपंतकबोला कि ठीकहै हमलोगोंको पूर्वजन्मकेही संयोगसे यह स्वामी मिलाहै और इससंसारके संपूर्ण कार्य्य पूर्व संस्कारही से होते हैं इस विषयपर मैं तुमको एककथासुनाताहूं विलासपुरनाम नगरमें विनयशीलनाम एक बड़ा सुशील राजाथा उसके प्राणों से भी प्यारी कमलप्रभारानीथी राजा बहुत कालतक सुखपूर्व्वक उसरानी के साथ विहार करताहुआ रहा समयपाकर सुन्दरताकी नष्टकरनेवाली वृद्धावस्था उसराजाके प्रकटहुई वृद्धावस्था को देखकर राजा शोचनेलगा कि पाले से मारेहुए कमल के समान अपना म्लानमुख मैं रानीको कैसे दिखाऊं हा धिक्कारहै मेरा तो मरनाही अच्छा है यह शोचकर उसने तरुणचन्द्रनाम वैद्यको सभामें बुलाकर कहा कि हे तरुणचन्द्र तुम हमारे बड़ेभक्तहो और बड़ेचतुरहो इस से मैं तुमसे पूछताहूं कि क्या कोई ऐसीभी युक्तिहै जिससे वृद्धावस्था निवृत्तहोजाय राजाके यहवचन सुनकर केवल कलाओं से ही युक्त वह कुटिल तरुणचन्द्र अपने को परिपूर्ण करनेकी इच्छासे शोचने लगा कि यह राजा मूर्ख है इससे प्रथम इसके पाससे खूबधनलेनाचाहिये फिर जैसाहोगा वैसा देखाजायगा यह शोचकर वह राजासे बोला कि हे स्वामी पृथ्वी में एकबड़ाभारी गढ़ाखुदवाकर आठमहीनेतक आप अकेले उसमें रहिये और मेरीदीहुई औषध खाइये तो आपकी वृद्धावस्था दूरहोजाय वैद्यके यह वचन सुनकर राजाने शीघ्रही पृथ्वी में एक बड़ाभारी गढ़ाबनवाया ठीकहै (क्षमन्तेनविचारंहिमूर्खा विषयलोलुपाः) विषयके लोभी मूर्खलोग विचार नहीं करसक्ते हैं राजाको वैद्यकी आज्ञामें उद्यत देखकर मन्त्रियों ने कहा कि हे महाराज प्राचीनलोगों के सत्त्व तप तथा दमसे और युगके प्रभावसे रसायन सिद्ध होती थी आजकलतो रसायन केवल सुनी है देखी नहीं हैं और जो कोई करताभी है तो सामग्री के न मिलने से विपरीत फल मिलता है इससे आपको इसके कहने में आना योग्य नहीं है क्योंकि धूर्त्तलोग बहुधा अज्ञानोंको ठग २ कर खायाकरते हैं आप विचारिये तो सही क्या गईहुई अवस्था भी फिर लौट सक्ती है मन्त्रियों के इत्यादिक अनेक वचन धनी भोग तृष्णा से भरेहुए राजाके हृदयमें नहीं समाये और वह उस वैद्यके कहनेसे अपने सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य को छोड़कर उस गढ़े में अकेलाहीगया केवल

वैद्य अपने नौकरके साथ औषधादि देनेको उसके पास जाताथा राजा उस अन्धकारमय गढ़ेमें अपने हृदयसे अधिक होनेके कारण निकलेहुए अज्ञान में मानों कुछ कालतक रहा उसमें रहते २ जब छः महीने व्यतीत होगये तब वह वैद्य राजा की वृद्धावस्थाको और भी अधिक देखकर राजा के समान आकृतिवाले किसी युवापुरुषको तुझे राजा बनाऊंगा यह कहकर सुरंगखोदकर रात्रिके समय उसीगढ़े में लेआया और सोतेहुए राजाको मारकर वहां से लेकर किसी अन्धेकुएँ में छोड़ आया और उस तरुणपुरुष को वहीं बैठालकर वह सुरंग बन्दकर दीनी ठीकहै (सम्प्राप्यमूढ़बुद्धीनामवकाशंनिरर्गलम् उच्छृंखलमतिःकुर्य्यात् प्राकृतःकिन्नसाहसं) मूर्खलोगों में निरर्गल अवकाश पाकर उद्दंड साधारण लोग कौनसा साहस नहीं करतेहैं तब उस वैद्यने दूसरे दिन राजाके सम्पूर्ण परिकरके लोगों से कहा कि मैंने छः महीने में राजाको युवाकरदिया और दो महीने में इसकारूपभी बदल जायगा इस्से तुमलोग कुछ दूसरे राजाकी चेष्टा देखो यह कहकर उसने सम्पूर्ण लोगों को बुलाकर उस युवापुरुष से सबके नाम और कार्य्य बतलाये इस युक्तिसे उसने दो महीने तक उस युवापुरुषको रानी पर्य्यन्त सम्पूर्ण परिकर पहचनवादिया और सुन्दर भोजनों से उसे पुष्टकरके आठमहीनों के बाद बाहर निकालकर सबसे कहा कि देखो राजा अजर होगया उससमय सम्पूर्ण लोग राजाको औषधसे अजरहुआ जानकर उसको सब ओरसे घेरकर खड़े होकर देखनेलगे तदनन्तर वह तरुण पुरुष स्नान करके बड़े उत्सव पूर्व्वक मंत्रियों के साथ सम्पूर्ण राज्य कार्य्य करनेलगा तबसे उसका नाम राजा अजरहोगया और सम्पूर्ण रानियों के साथ क्रीड़ा करताहुआ राज्यके सुखोंको भोगनेलगा वैद्यके छलको न जानकर सब लोगों ने यही जाना कि यह वही राजाहै रसायन के प्रभावसे इसका स्वरूप बदलगया है तब राजा अजर स्नेहसे सम्पूर्ण प्रजातथा रानी कमल प्रभाको अपने ऊपर अनुरक्त करके अपने मित्रों समेत राज्य सुख को भोगनेलगा उसने अपने परममित्र भेषजचन्द्र तथा पद्मदर्शन को इतने हाथी घोड़े और रत्न दिये कि वह राजाके समान ऐश्वर्य्यवान् होगये परन्तु तरुणचन्द्र नाम वैद्य को केवल औषधके लिये रक्खा और सत्य तथा धर्मसे उसको च्युतजानके उसपर विश्वास नहीं किया एकदिन उस वैद्यने एकान्तमें राजासे कहा कि तुम मुझे कुछ भी नहीं गिनतेहो स्वतन्त्रता से जो चाहतेहो सो करते हो क्या वहदिन भूलगया जो मैंने तुमको राजा बनायाथा यह सुनकर राजा अजरने वैद्यसे कहा कि अरे तुम बड़े मूर्खहो कौन किसको करताहै और कौन किसको देताहै अपने पूर्वजन्म के कर्मही सब करतेहैं और देते हैं इस्से तुम अभिमान न करो यह मुझे तपके प्रभावसे राज्य मिलाहै यह बात मैं तुमको थोड़ेही कालमें प्रत्यक्ष दिखादूंगा उसके यह वचन सुनकर उस वैद्यने भयभीतहोकर शोचा कि यह तो धृष्टता रहित बड़ाधीर ज्ञानी मालूम होताहै जो गुप्तबातका जानना राजा लोगोंको वशमें रखने का मुख्य कारण होताहै वह भी इसके सन्मुख नहीं चलता इस्से इसी के अनुकूल बनारहना चाहिये और देखूं यह क्या अपने तपका प्रभाव मुझे दिखावेगा इस प्रकार शोचकर वह वैद्य चुपहोगया ८२ दूसरेदिन राजा अजर तरुणचन्द्रादिकों को लेकर भ्रमण करने को निकला भ्रमण करते २ नदी के

तीरपर पहुँचा वहां नदीके प्रवाहमें बहतेहुए पांच सुवर्णके कमल उसने देखे सेवकोंके द्वारा वह कमल मँगवाकर और देखकर उसने अपनेपास खड़ेहुए तरुणचन्द्र वैद्यसे कहा कि तुम नदीके किनारे किनारे जाकर इन कमलों के उत्पन्न होनेका स्थान देख आओ और देखकर शीघ्रही मुझसे कहो मुझेइन अद्भुत कमलोंकेलिये बड़ा आश्चर्य होरहाहै तुम बड़े चतुरहो इसी से मैं तुमको भेजताहूं यह कहकर राजा तो अपनेघरको चलाआया और तरुणचन्द्रने विवसहोकर उसी नदीके किनारेकिनारे चलतेचलते नदी के तटपर एक शिवजी का मन्दिर और एक बड़ा भारी बरगदका वृक्ष जिसपर कि किसी मनुष्य के हाड़ों की पंजरी लटकरहीथी उसे देखा और वहां थकके स्नानकरके श्रीशिवजी का पूजन करके कुछ देरतक विश्राम किया उस समय अकस्मात् मेघ बरसनेलगा जलबरसने से बरगदकी शाखाओं में लटकेहुए मनुष्यके पंजरसे जो जलके बिन्दु नदी में गिरे वह सुवर्ण के कमल होगये यह आश्चर्य्य देखकर तरुणचन्द्र शोचने लगा कि यह क्या आश्चर्य्य है इस निर्जन वन में किससे पूछूं अथवा ईश्वर की अनेक आश्चर्य्योंसे भरी सृष्टिको कौन जानसक्ताहै मैंने सुवर्ण के कमलोंका उत्पत्ति स्थान तो देखही लियाहै अब इस पांजरको नदीके जलमें फेंकदूं तो एक तो धर्महोगा और इसकी पीठपर कमल उत्पन्न होंगे यह शोचकर उसने वह पंजर जल में फेंकदिया और वह दिन वहीं व्यतीत करके कई दिनों में वहां से धीरे धीरे चलकर विलासपुर पहुंचके राजद्वार में अपने आगमन का निवेदन करवाया फिर द्वारपाल से आज्ञापाकर राजा अजरके निकट पहुंचके तरुणचन्द्र जैसे कि कुशल पूछकर चाहताही था कि मैं सब वृत्तान्त कहूं वैसेही राजाने वहां से सब लोगोंको हटाकर उससे कहा कि हे मित्र तुमने सुवर्ण के कमलोंके उत्पत्ति स्थान को देखा और उस उत्तम क्षेत्रमें तुमने मनुष्य का पांजर लटकताहुआ भी देखा वह मेरा पूर्व्व जन्म का शरीरहै वहां मैंने पैरोंसे बरगदको पकड़के नीचे को मुखकरके तपकरते २ शरीर सुखाकर त्याग करदिया था उसी तपके माहात्म्य से पांजरसे गिरेहुए जलके बिन्दु सुवर्णके कमल होजाते हैं और तुमने जो वह पांजर जलमें फेंकदिया सो बहुत उचित किया तुम मेरे पूर्व्व जन्म के मित्रहो और यह भेषजचन्द्र तथा पद्मदर्शन भी मेरे पूर्व जन्म के बड़े मित्रहैं हेमित्र उसीतपके प्रभावसे मुझे ज्ञान तथा राज्य प्राप्तहुआहै और पूर्व्व जन्मका स्मरणभी बना है मैंने युक्ति पूर्व्वक यह तुमको प्रत्यक्ष दिखादिया और पांजर फेंकने की पहचान भी तुम्हारे निश्चय के लिये तुमसे कहदी इससे तुम यह अभिमान छोड़दो कि मैंने इसको राज्य दियाहै और अपने चित्तमें खेदभी मतकरो (विनाहिप्राक्तनंकर्म्मनदाताकोपिकस्यचित् आगर्भाज्जन्तुरश्नातिपूर्व्वकर्मतरोःफलम्) प्राक्तन कर्म्मके विना कोई किसीका दाता नहीं है मनुष्य जबसे गर्भ में आताहै तभी से अपने प्राक्तन कर्मरूपी वृक्षके फलको खाताहै राजा अजरके यह वचन सुनकर और यथार्थ जानकर तरुणचन्द्र उसी दिनसे सन्तोषपूर्व्वक उसका सेवन करनेलगा और राजा अजरभी आदर पूर्व्वक उसे बहुतसा धन देकर रानी तथा मित्रों समेत पुण्यके प्रभावसे मिलेहुए अकंटक राज्य का सुख पूर्व्वक भोग करनेलगा इस प्रकारसे हे युवराज इस संसारमें सदैव सब जन्तुओं को अपने पूर्वजन्मके कर्मके अनु-

सार शुभाशुभफल प्राप्त होताहै इससे आपभी हमारे प्राक्तन कर्म के अनुसार हमारे स्वामी हुएहो नहीं तो अन्य लोगोंके होतेहुए भी आपहमारेही ऊपर इतने प्रसन्न कैसे होसक्ते हो तपंतकके मुखसे इस विचित्र रमणीय कथा को सुनकर नरवाहनदत्त रत्नप्रभा समेत स्नान करनेको उठा और स्नान करके माता पिताके नेत्रोंमें अमृतकी वृष्टिके समान आनन्द देताहुआ उनके निकट गया वहां उन्हींके साथ भोजन करके मन्त्री तथा रानियों समेत सुख पूर्व्वक पानादि क्रियासे दिनको व्यतीत करके अन्तःपुरमें जाकर रात्रि व्यतीत की ११६ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांरत्नप्रभालम्बकेषष्ठस्तरंगः ६ ॥

इसके उपरान्त दूसरे दिन रत्नप्रभाके मन्दिरमें अपने मंत्रियों के साथ अनेक २ प्रकारकी वार्त्तालाप करतेहुए नरवाहनदत्तने मन्दिरके आंगनमें वाहरकी ओर अकस्मात् किसी पुरुषके रोनेका शब्दसुना यह क्याहै उसके इसप्रकार पूछनेपर चेरियों ने आकर कहा कि हे स्वामी यह धर्मगिरिनाम कंचुकीरोरहाहै यहां इसके किसी मूर्ख मित्रने उससे तीर्थमें गयेहुए उसके भाईके मरजानेका वृत्तान्त कहदियाहै इससे वह शोकसे व्याकुल होकर रोरहाहै और लोग उसको उसके घरपहुंचाये देतेहैं यह सुनकर युवराजको दयासे कुछ दुःखहुआ और रानी रत्नप्रभा उदासीन होकर वोली कि प्रिय वंधुओं के वियोगका दुःख वड़ा दुस्सह होताहै ब्रह्माने सवजीवोंको अजर तथा अमरही क्यों न करदिया रानीके यह वचन सुनकर मरुभूति वोला कि हे रानी मनुष्योंमे यह वात कैसे होसक्ती है इसविषय में एककथा मैं आपको सुनाताहूं कि चिरायु नाम नगर में चिरायुनाम एक वड़ाधनवान् चिरंजीवी राजाथा उसके बुद्धदेव का अवतार नागार्जुन नाम दयालुदानी तथा विज्ञानी एकमन्त्रीथा वह संपूर्ण औषधियोंकी युक्तिजानताथा इससे उसनें रसायन वनाकर अपनेको और राजाचिरायु को अजर तथा चिरजीवी करलियाथा एक समय नागार्जुन का एकपुत्र जोकि संपूर्ण पुत्रों में से उसे अधिक प्रियथा मरगया उसदुःखसे व्याकुल होकर नागार्जुनने मनुष्योंकी मृत्युकी शान्तिकेलिये अपने तप तथा दानके प्रभाव से वहुतसी औषधियां मिलाकर अमृत वनाया एकही औषध उसमें मिलानेको वाकीथी उसके मिलानेका समय आवेही था कि इन्द्र ने यह जानकर देवताओं से सलाह करके अश्विनीकुमार से कहा कि नागार्जुन से जाकर हमारे यह वचन कहो कि तुममंत्री होकर भी यह क्या अन्याय करतेहो क्या तुम ब्रह्माकेभी जीतनेको उद्यत हुएहो क्योंकि ब्रह्माने मनुष्य मृत्युके लिये उत्पन्नकिये हैं तुम अमृत वनाकर उन्हें भी अमर वनाया चाहतेहो ऐसा करने से देवता और मनुष्यों में भेदही क्या रहैगा और पूज्य पूजकके अभावसे संसार की मर्य्यादा नष्टहोजायगी इससे हमारे वचनको मानकर तुम अमृत मतवनाओ नहीं तो देवता लोग कुपितहोकर तुमको शापदेंगे और जिस पुत्रके शोकसे यहयत्न तुमनें कियाहै वह स्वर्गमें सुख पूर्व्वक रहताहै यह कहकर इन्द्रने अश्विनीकुमार को नागार्जुनकेपास भेजा तव अश्विनीकुमारने नागार्जुन केपास आकर अर्घपाद्यादि सत्कारके ग्रहण करनेके पीछे इन्द्रका संदेशा उसे सुनाया और यह भी कहा कि तुम्हारा पुत्र स्वर्ग में सुखपूर्व्वक वर्त्तमानहै इन्द्रके संदेशेको सुनकर नागार्जुन उदासीनहोकर

शोचनेलगा कि जो मैं इन्द्रका वचन नहीं मानूंगा तो देवता तो अलगरहे पहले यह अश्विनीकुमार ही मुझे शापदेंगे इससे अमृतको जानेदो मेरा मनोरथ सिद्धनहीं होगा और मेरापुत्र तो अपने पुण्यों से उत्तम गतिको पहुंचही गया इसप्रकार शोचकर उसने, अश्विनीकुमार से कहा कि मैंने इन्द्रकी आज्ञामानली अबमैं अमृत नहीं बनाऊंगा जो आप न आजाते तो मैं पृथ्वीके संपूर्ण जीवोंको पांचही दिन पीछे अजर अमर करदेता यह कहकर नागार्जुन ने अश्विनीकुमार के आगेही वह सिद्ध होने वाला अमृत पृथ्वीमें गाड़दिया तब अश्विनीकुमारने इससे आज्ञालेकर इन्द्रके पासजाके उनसे यह सब वृत्तान्त कहकर उनको प्रसन्नकिया इसके उपरान्त राजा चिरायुने जीवहर नाम अपने पुत्रको युवराज पदवीदी युवराज पदवीपाकर वह जीवहर प्रसन्नहोकर अपनी धनपरा नाम माताको प्रणामकरनेगया धनपराने पुत्रको प्रसन्न देखकर कहा कि हे पुत्र इस युवराज पदवी को पाकर तुम क्यों प्रसन्नहोते हो तुम्हारे पिता के न जानिये कितने पुत्र युवराज पदवी पाकर चलेगये परन्तु राज्य किसीको भी नहीं प्राप्तहुआ क्योंकि नागार्जुन ने इसको ऐसी रसायन बनाकरदी है कि जिससे यह आठसौ वर्षका पूरा होचुकाहै न जाने अभी कितने अल्पायु इसके राज्यमें युवराज होंगे यह सुनकर अपने पुत्रको उदासीन देखकर उसने कहा कि जो तुम राज्य लेनाचाहतेहो तो यह उपायकरो कि नागार्जुन प्रतिदिन सम्पूर्ण आह्निक करके भोजन के समय यह ढंढोरा पिटवाताहै कि कौन याचकहै किसे क्या दियाजाय और कौन क्या चाहता है उस समय तुम जाकर उससे कहो कि तुम अपना शिर मुझे देदो तब वह सत्यवक्ता अपना शिरकाटकर तुमको देदेगा इसप्रकार उसके मरजानेपर उसके शोकसे राजाभीतो मर जायगा या वनको चलाजायगा इसरीतिसे तुमको राज्यमिलैगा इसके सिवाय और कोई उपाय राज्य मिलनेका नहीं है माताके यह वचन सुनकर जीवहरने प्रसन्नहोकर यही उपाय करनेका निश्चय किया ठीकहै (कष्टोहिबान्धवस्नेहं राज्यलोभोतिवर्त्तते) खेदका विषयहै कि राज्यके लोभसे बन्धुताका स्नेहभी नष्ट होजाताहै इसके उपरान्त दूसरे दिन जीवहरने भोजनके समय कौन क्या मांगताहै इत्यादि वचन कहतेहुए नागार्जुन से उसका शिरमांगा युवराजकी यह याञ्चा सुनकर उसने कहा कि हे वत्स मेरे इस शिरको लेकर तुम क्याकरोगे मांस हड्डी तथा बालोंका समूहरूप यह शिर तुम्हारे किस काम आवेगा इतनेपर भी जो तुमको इससे कुछ प्रयोजनही है तो तुम काटलो यह कहकर उसने अपनी गर्द्दन उसके आगे रखदी रसायनसे दृढ़ उसकी ग्रीवाके काटने में राजपुत्रके बहुतसे खड्गों के टुकड़े २ होगये परन्तु ग्रीवा नहींकटी उससमय इस वृत्तान्तको सुनकर राजा चिरायुभी वहां आकर नागार्जुन को शिर देनेसे निवारण करनेलगा तब उसने कहा हे राजा मुझे अपने पूर्व्वजन्मों का स्मरणहै मेरे निन्नानवे जन्म होचुके हैं उनसबजन्मों में मैंने अपना शिर दियाहै यह सौवांजन्महै इसमेंभी मुझे शिर देना है इससे आप मुझे निषेध न कीजिये मेरे पाससे अर्थी कभी विमुखहोकर नहीं लौटताहै अब मैं अपना शिर तुम्हारे पुत्रको दियेदेताहूं तुम्हारे देखने के लिये मैंने इतनी देरलगाई है यह कहकर और राजासे मिलकर उसने अपने पाससे एक चूर्णलेकर राजपुत्रके खड्गमे लगादिया उसखड्गके प्रहारसे राजपुत्रने

नालसे कमलके समान नागार्जुनका शिर गर्द्दनसे अलग काटलिया उस समय सम्पूर्ण लोग रोदन करनेलगे और राजा चिरायुभी प्राणदेनेको उद्यतहुआ तव यह आकाशवाणीहुई कि हे राजा ऐसा अनर्थ न करो यह तुम्हारा मित्र नागार्जुन शोक करने के योग्यनहीं है यह मुक्तहोकर बुद्धके समान उत्तमगतिको प्राप्तहुआहै यह आकाशवाणी सुनकर राजाचिरायु वहुतसा दानकरके शोकसे राज्यको त्यागके वनको चलागया और वहां कुछकाल तपकरके परमगतिको प्राप्तहुआ और उसका पुत्र जीवहर राज्यपरवैठा उसके राज्यपर वैठतेही नागार्जुन के पुत्रों ने अपने पिताका वध स्मरणकरके राज्यमें भेद करवाके उसे मरवाडाला तव जीवहरके शोकसे उसकी माता धनपराकाभी हृदय फटगया ठीक है (अनार्य्यजुष्टेन पथाप्रवृत्तानांशिवंकुतः) अनुचित मार्गों से चलनेवालोंका कल्याण कैसे होसक्ता है जीवहरको माता समेत मराहुआ देखकर मंत्रियों ने राजा चिरायुके अन्य रानी से उत्पन्नहुए शतायु नाम पुत्रको राज्यपर वैठाया इसप्रकार नागार्जुन से मनुष्योंकी मृत्युके नाशके लिये वनायेहुए अमृत को देवतालोग न सहसके और नागार्जुन भी मृत्युको प्राप्तहुआ इससे ब्रह्माका वनायाहुआ यह अनित्य जीवलोक दुस्सहदुःखों से भराहुआहै जो ब्रह्मा नहीं चाहते हैं वह सैकड़ों यत्नों से भी कोई नहीं करसक्ताहै इसकथाको कहकर मरुभूति के निवृत्त होजानेपर नरवाहनदत्त ने अपने मंत्रियों समेत उठ कर अपने दिनका कृत्यकिया ६१॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांरत्नप्रभालम्बकेसप्तमस्तरंगः ७॥

इसके उपरान्त दूसरे दिन नरवाहनदत्त अपनी उत्कण्ठित रत्नप्रभा प्रिया से शीघ्रही लौट आने को कहकर अपने पिताके साथ मित्रों समेत वहुतसी सेनाको लेकर शिकारखेलनेकेलिये वनकोगया वहां हाथियोंके मारनेवाले मारेगये सिंहों के नखों से गिरेहुए मोतियों से मानों वोईगई भालेसेमारेगये व्याघ्रोंकी दाढ़ोंसे मानों अंकुरितहुई हिरनोंके रुधिरसे मानोंपल्लवयुक्तहुई वाणोंसे छिदेहुए शूकरोंसे मानों गुच्छेदारहुई और मारेगये अन्यपशुओं से मानों फलितहुई गिरतेहुए शिलीमुखों (वाण और भ्रमर) के शब्दोंसे युक्तवनको शोभितकरनेवाली शिकाररूपी लतासे उसको अत्यन्त प्रसन्नताहुई इस प्रकार शिकार खेलकर थोड़ीदेर विश्रामकरके नरवाहनदत्त घोड़े पर सवारहोकर और दूसरे घोड़े पर गोमुखको सवारकरवाके उसेसाथलेकर वनकी शोभादेखने को गया और वहां जाकरगेंद खेलनेलगा उससमय कोई तपस्विनी उसमार्गसे आनिकली और नरवाहनदत्तके हाथसे छूटकरगेंद उसके शिरपर जालगी तव वह तपस्विनी हँसकरवोली कि जो तुम्हें अभीसे इतनामदहै तो कदाचित्कर्पूरिका स्त्री जव तुम्हें मिलजायगी तो क्या तुम्हारी दशाहोगी यह सुनकर नरवाहनदत्तने घोड़ेसे उतर उसको प्रणामकरके कहा कि मैंने तुमको नहीं देखाथा अकस्मात् गेंद तुम्हारे लगगईहै इससे हे भगवती मेरे अपराधको क्षमाकरो नरवाहनदत्तके यह वचनसुनकर क्रोधकी जीतनेवाली उस तपस्विनीने मुझको क्रोध नहीं है ऐसा कहकर उसे आशीर्वाददिया तव नरवाहनदत्तने उसको सच्चीतपस्विनी तथा जितेन्द्रीजानकर वड़ी नम्रतापूर्व्वक पूछा कि हे भगवती वह कर्पूरिका कौनहै जिसका आपने नामलिया

था आप जो मेरे ऊपर प्रसन्नहैं तो उसे मुझे बताओ इस प्रकारनम्रतासे कहतेहुए नरवाहनदत्तसे वह तपस्विनीबोली कि समुद्रकेपार कर्पूरसंभव नाम पुरहै वहां कर्पूरकनाम यथार्थ नामवाला राजाहै उसके कर्पूरिकानाम एक अतिसुन्दर कन्याहै वह संपूर्ण पुरुषोंसे द्वेषसा करके विवाहकरना नहीं चाहती है तुमको देखकर विवाहकरलेगी इससे हे पुत्र तुम वहां जाओ तुमको वह सुन्दरी मिलैगी और मार्गमें जाते समय तुमको वनमें बड़ाक्लेशहोगा उससे तुम खिन्नमतहोना परिणाम शुभहै यह कहकर वह तपस्विनी आकाशमें जाकर अन्तर्द्धानहोगई २१ और नरवाहनदत्त कामकी आज्ञाके समान उस तपस्विनीके वचन सुनकर गोमुखसेबोला कि चलो कर्पूरिकाकेलिये कर्पूरसंभवपुर को चलें क्योंकि अब मुझे उसके देखेबिना क्षणभरभी चैन नहीं पड़ता नरवाहनदत्तके यह वचन सुनकर गोमुखबोला कि हे युवराज साहस नहीं करना चाहिये कहां तुम कहां समुद्र कहां वह पुर कहां उसपुरका मार्ग और कहां वह कन्या केवलनामही सुनकर अपनी दिव्यस्त्रियोंको छोड़कर जो कि विवाहभी नहीं करना चाहती है ऐसी मानुषीकेलिये आप अकेले जानाकहतेहो यह सुनकर नरवाहनदत्तने कहा कि उस सिद्ध तपस्विनी का वचनझूठ नहीं होसक्ता इससे मैं उस राजकन्याकेलिये अवश्य कर्पूरसंभवपुरको जाऊंगा यह कहकर वह उसीसमय घोड़ेपर चढ़करचला और गोमुखभी इच्छाके विनाभी उसके पीछे २ चला क्योंकि (अकुर्वन्वचनंभृत्यैरनुगम्य्ः परंप्रभुः) जो स्वामी सेवकोंके वचन नहीं भी माने तौ भी सेवको को उसीके अनुसार चलना चाहिये इसप्रकार यह दोनों तो चलेगये और राजाउदयन नरवाहनदत्तकोभी सेनाके साथजानकर संपूर्ण सेनाको साथमें लेकर अपनीपुरी को चलाआया और नरवाहनदत्त के मंत्री मरुभूति आदिकभी उसको सेनाके मध्यमें जानकर चलेआये पुरीमें आकर जब नरवाहनदत्तको किसी ने भी नहीं देखा तो उसे ढूंढ़तेहुए राजा उदयन आदि सब लोग रत्नप्रभाके पासगये उसने अपने पतिको न आया जानके व्याकुलहोकर अपनी विद्याके बलसे सब वृत्तान्त जानलिया और अपने श्वशुर उदयन से कहा कि वनमें किसी तपस्विनी के मुखसे कर्पूरिकानाम राजकन्याकी प्रशंसा सुनकर उसकी प्राप्तिके लिये कर्पूरसंभव पुरको आर्यपुत्रगये हैं और शीघ्रही अपने मनोरथको सफल करके गोमुखके साथ लौट आवेंगे इससे आप चिन्ता न करिये मैंने अपनी विद्याके बलसे सब जानलियाहै यह कहकर उसने सब परिकर समेत अपने श्वशुरको सावधान किया और मार्गमें नरवाहनदत्तके क्लेशको दूर करने के लिये एक विद्या उसकेपास भेजी (नेर्ष्यांग्भर्तृहितैषिण्यो गणयन्तिहिसुस्त्रियः) पतिका कल्याण चाहने वाली श्रेष्ठस्त्रियां ईर्षा नहीं करती हैं इतने बीचमें नरवाहनदत्त गोमुख समेत वनमें बहुतदूर निकलगया वहां अकस्मात् उसे एक कन्या देखपड़ी और बोली कि मैं रत्नप्रभाकी भेजीहुई मायावती नाम विद्याहूं अलक्षित होकर मार्गमें आपकी रक्षाकरूंगी इससे अब आप निस्सन्देह होकर चलिये यह कहकर वह अन्तर्द्धान होगई और उसके प्रभावसे नरवाहनदत्त की क्षुधातृषा शान्त होगई और वह अपनी प्रिया रत्नप्रभाकी प्रशंसा करताहुआ आगेचला सायंकालके समय मधुर फलवाले वृक्षों से युक्त एक निर्मल तड़ागपर पहुंचकर वहीं गोमुख समेत नरवाहनदत्त ने स्नान करके आहार पानादिक किया और रात्रिके

समय घोड़ोंको घासदेकर किसी बड़े वृक्षके नीचे बांधकर उसी वृक्षपर चढ़कर निवास किया उस वृक्ष की बड़ी शाखापर गोमुख समेत सोयाहुआ नरवाहनदत्त डरेहुए घोड़ोंकी हिनहिनाहट से जगपड़ा और उसे एकसिंह वृक्षके नीचे दिखाई पड़ा उसेदेखकर घोड़ेको बचानेके लिये उसने वृक्षपरसे उतरना चाहा तब गोमुखने कहा कि तुम अपनी देहकी कुछ अपेक्षा न करके बिनासलाहालिये ही जो चाहतेहो सो करतेहो राजा लोगोंके लिये शरीर ही मुख्यहै और राज्यके लिये मन्त्र मुख्यहै सो तुम बिना विचार किये नख तथा दंष्ट्रारूप शस्त्रवाले पशुओंके साथ युद्धकिया चाहते हो इस शरीरही की रक्षाके लिये वृक्ष पर चढे थे नहीं तो वृक्षपर चढनेका क्या प्रयोजन था गोमुखके यह वचनसुनकर नरवाहनदत्तने घोड़े को मारतेहुए सिंहको वृक्षपरसेही एक छुरीफेंककर मारी उसके लगनेपर भी उससिंहने एक घोड़ेको मारकर दूसरे को भी मारा तब नरवाहनदत्तने गोमुखसे खड्ग लेकर फेंककर उसे मारा उस खड्गके लगनेसे सिंहके बीचमें से दो टुकड़े होगये सिंहको मरादेखकर वह वृक्षसे उतरकर खड्गलेकर फिर वृक्षपरही चढगया और उसीपर रात्रिभर रहा प्रातःकाल उसवृक्षपरसे उतरकर गोमुख समेत नरवाहनदत्त पैदलही कर्पूरिकाके निमित्त चला मार्ग में गोमुखने उसे पैदल चलता देखकर चित्तबहलाने के लिये प्रसंगपाकर कहा कि हे युवराज मैं एक कथा आपसे कहताहूं कि अलकासे भी महासुन्दर एक ऐरावतीनाम नगरीहै उस में परित्यागसेन नाम राजाथा उसके प्राणों के समान दो रानीथीं एकतो उसी के मंत्रीकी पुत्री अधिक संगमानाम और दूसरी किसी राजाकी पुत्री काव्यालंकारा नाम उस राजा के कोई पुत्र न था इसीसे अपनी दोनों रानियों को साथ लेकर निराहारहोके कुशोंके आसनोंपर बैठकर उसने तपकरना प्रारम्भ किया उसके तपमें प्रसन्नहुई भगवती पार्वतीने दो दिव्य फल देकर उससे कहा कि हे राजा उठो यह दोनों फल अपनी रानियों को देदो तुम्हारे दो वीर पुत्रहोंगे यह कहकर पार्वतीजी अन्तर्द्धान होगई और राजाने उठकर अपने हाथमें दोनों फलोंको देखके रानियोंसे स्वप्नका वृत्तान्त कहा और प्रसन्नता पूर्वक श्रीभगवती पार्वतीजी का पूजन किया और पारण किया तदनन्तर मंत्रीके गौरवसे पहले अधिक संगमानाम रानीके यहां जाकर रात्रिके समय उसेएक फलखिलाके उसीके साथ निवासकिया और दूसरा फल दूसरी रानी के लिये अपने सिराने रखलिया जब राजा सोगया तो रानी अधिकसंगमा ने उठकर अपनेही दो पुत्रोंके होने की इच्छासे उस फलको भी खालिया क्योंकि (निसर्गसिद्धोनारीणां सपत्नीषु हिमत्सरः) स्त्रियोंको अपनी सौतों से स्वाभाविक वैरहोताहै प्रातःकाल उठकर उस फलको ढूंढते हुए राजा से रानी ने कहदिया कि वह फलभी मैंने ही खालिया तब राजा उदासीन होके दिन व्यतीत करके रात्रिके समय रानी काव्यालंकाराके यहां गया और जब उसने फलमांगा तब राजाने कहदिया कि मेरे सोजानेपर तुम्हारी सौत दूसराफल भी खागई राजा के यह वचन सुनकर और पुत्रोत्पत्ति के निमित्त उस फलको न पाकर वह रानी चित्तमें अत्यन्त दुखित होके चुपहो रही कुछ दिनोंके व्यतीत होनेपर रानी अधिकसंगमा गर्भवतीहुई और समय पूरेहोनेपर एकसाथही उसके दो पुत्रहुए राजा परित्यागसेनने पुत्रोंकी उत्पत्ति से अपने मनोरथको सफल जानके अत्यन्त प्रसन्नहोकर बड़ा उत्सव किया और कमलके समान नेत्र

वाले अद्भुत स्वरूपवान् अपने बड़े पुत्रका नाम इन्दीवरसेन रक्खा और छोटेका नाम अनिच्छासेन रक्खा क्योंकि उसकी माताने राजाकी अनिच्छासे वह फल खायाथा उन दोनों बालकोंको देखकर रानी काव्यालंकाराने क्रोधयुक्तहोकर शोचा कि देखो मेरी सौतने मुझेछलकर मेरे पुत्र नहींहोनेदिया इससे इसके साथ मुझे बदला अवश्य लेनाचाहिये कि किसी युक्तिसे इन दोनों बालकोंका नाश होजाय इसप्रकार शोचकर वह उसका उपाय ढूंढ़नेलगी जैसे २ वह दोनों बालक बढ़े तैसे २ उसरानी के हृदय में वैररूपी वृक्षभी बढ़तागया क्रमसे जब वह दोनों तरुणहुए तब दिग्विजय की इच्छासे अपने पिता से बोले कि हम दोनों अस्त्र विद्यासीखचुके और युवावस्थाभी आगई तो इन व्यर्थ भुजाओं को लेकर क्याकरें विजयकी इच्छासे रहित क्षत्रीकी भुजा तथा यौवनको धिक्कारहै इससे हे तात हमें दिग्विजय के लिये आज्ञादीजिये पुत्रों के यह वचन सुनकर राजा परित्यागसेनने प्रसन्नहोकर उनकी यात्राका आरम्भ करदिया और यहभी कहदिया कि जो तुम्हें मार्गमें कोई संकटपड़े तो भगवती पार्वतीजीका स्मरणकरना क्योंकि उन्हींकी कृपासे तुम दोनोंका जन्महुआहै यहकहकर बहुतसी सेना तथा जमींदार साथमें देकर उन्हें बिदाकिया और पीछे से अपने प्रधान मन्त्री उन बालकों के मातामह बुद्धिमान् प्रथम संगमको भेजा तब महाबलवान् उन दोनों राजपुत्रों ने जाकर पहले पूर्व दिशाको विजयकिया और वहां से अनेक जीतेहुए राजाओं को अपने साथ में लेकर दक्षिण दिशाके विजयको गमन किया अपने पुत्रों के इस वृत्तान्तको सुनकर राजा परित्यागसेन रानी अधिकसंगमा समेत बहुत प्रसन्नहुआ और रानी काव्यालंकारा द्वेषरूपी अग्नि से अत्यन्त संतप्तहुई तब उसने सन्धि विग्रहके अधिकारी कायस्थको बहुतसा धन देकर राजाकी ओरसे जमींदारोंको जो कि उसके साथमें थे यह पत्रलिखवाया कि यह दोनों मेरे पुत्र अपनी भुजाओं के बल से सम्पूर्ण पृथ्वीको जीतकर मुझे मारकर राज्यलेना चाहते हैं इससे जो तुमलोग मेरे भक्तहो तो बिना बिचारेही इन दोनोंको मारडालो यह लिखवाकर पत्र देकर हलकारेको भेज दिया उस हलकारे ने छिप कर सेनामें जाके वह पत्र उन छोटे राजाओंको जो उनराजपुत्रों के साथ उनकी रक्षाके लिये राजा ने भेजदिये थे देदिया उन लोगों ने वह पत्र बांचकर राजनीतिको अत्यन्त कठिन समझकर और राजा की आज्ञाका उल्लंघन करना उचित न जानकर रात्रिके समय सलाहकरके उन दोनों के मारने का निश्चय किया यद्यपि राजपुत्रों के गुणों से वह सब प्रसन्न थे तथापि राजाकी आज्ञासे विवशहोकर उन लोगों ने यह विचारकिया इस वार्त्ताको किसी मित्रके मुखसे जानकर उनराजपुत्रोंका मातामह प्रथम संगमनाम महामन्त्री उन्हें घोड़ोंपर सवारकराके उनको लेकर भागा रात्रिके समय मार्ग न जानने के कारण वह तीनों विन्ध्याचल के वनमें चलेगये वहां रात्रिके व्यतीतहोजानेपर चलते चलते मध्याह्न के समय घोड़े प्यासेहोकर जल न पाकर मरगये और वह वृद्ध मन्त्री भी क्षुधा तथा तृषासे तालूके सूखने के कारण अपने दौहित्रों के देखतेही देखते मरगया घोड़ोंको तथा अपने मातामहको मराहुआ देखकर वह दोनों शोचनेलगे कि देखो हमारे पिताने हमारी उसदुष्ट सौतेली माताके कहनेसे अपराध के विनाभी हमलोगों की यहदशाकी इसप्रकार शोचकर दुःखितहो के और पिताके उपदेशको स्मरण

करके उन्होंने भगवती पार्वतीजीका ध्यान किया भक्तवत्सल भगवती के ध्यानकरतेही क्षुधा तृषा तथा श्रम का नाशहोगया और उनके शरीरमें बलवढ़गया तब वह दोनों भगवतीकी कृपाके विश्वाससे सावधान होके भगवती विन्ध्यवासिनीके दर्शनकरनेकोचले और मार्गके श्रमकेविनाही वहां पहुंचकर भगवती के आगे निराहाररहोके भगवतीकी आराधनाकरनेकेलिये तप करनेलगे १०४ इस बीचमें वह संपूर्ण राजालोग सेनामें मिलके उन दोनों राजपुत्रोंके मारनेकेलिये उनके डेरेपरआये वहां मातामहके साथ उनको भागाहुआ जानकर मन्त्रके खुलजानेसे भयभीतहोके राजा परि(?)ागसेनके पास चलेआये और वहां राजाको संपूर्ण लेखदिखाकर सबवृत्तान्त वर्णनकिया राजा वह सब वृत्तान्त सुनकर घबराकर क्रोधपूर्व्वक बोला कि यह लेख मेरे भेजेहुए नहीं हैं यह तो कोई इन्द्रजालहै हे मूर्खों क्या तुम इतना भी नहीं जानतेहो कि मैं इतने कठिन तपसे प्राप्तहुए अपने पुत्रोंको मरवाडालता तुमने तो उन्हें मार हीडालाहोता परन्तु वह अपने पुण्यसे बचगये और उनके मातामहने मंत्रीहोनेका फलदिखाया उनसे इसप्रकार कहके राजाने भागेहुए मिथ्यालिखनेवाले उसकायस्थको बहुतदूरसे पकड़मँगवाकर सब हाल पूछकर मरवाडाला और उस दुष्टकार्य्य करनेवाली रानी काव्यालंकाराको पुत्रघातिनी जानकर तह-खानेमें बन्दकरवादिया (अविचार्य्यतुपर्य्यन्तमतिद्वेषान्धयाधिया सहसाहिकृतंपापंकथंमाभूद्विपत्तये) परिणामको विनाशोचे द्वेषसे अन्धेहोकर सहसा कियागया पाप विपत्तिका कारण क्यों न होगा जोराजा लोग राजपुत्रोंके साथमेंसे लौटआयेथे उनको राजाने उनके राज्योंसे निकालकरके उनके स्थानापन्न दूस-रोंको करदिया और रानी अधिकसंगमा समेत दुखितहोकर अपने पुत्रोंको ढुंढ़वाताहुआ राजाभगवती का स्मरण करनेलगा इसबीचमें राजपुत्र इन्दीवरसेनपर तपसेप्रसन्नहुई भगवती विन्ध्यवासिनीने स्वप्न में एकखड्ग देकर उससे कहा कि इसखड्गके प्रभावसे तुम दुर्जय शत्रुकोभीजीतोगे और जोकुछइच्छा करोगे वह सबभी इसखड्गके प्रभावसे मिलैगा और इसीसे तुम दोनोंके सब मनोरथ भी पूर्णहोंगे यह कहकर भगवतीके अन्तर्द्धान होजानेपर इन्दीवरसेनने जगकर अपने हाथमें खड्गदेखा और अपने भाईसे स्वप्नका वृत्तान्त कहके तथा खड्ग दिखाकर उस समेत प्रसन्नहोके वनके फल फूलोंसेही व्रतका पारण किया तदनन्तर भगवतीकी कृपासे श्रमरहित होकर वह दोनों भाई भगवतीको प्रणाम करके आनन्द पूर्व्वक खड्गको लेकर वहांसेचले बहुत दूरचलकर एकबड़ा सुन्दर नगरमिला जिसके सुवर्ण मयगृहोंको देखकर सुमेरु पर्व्वतकी भ्रान्ति होतीथी उस नगरके द्वारपर एक बड़ा भयंकर राक्षसखड़ाथा उससे इन्दीवरसेननेपूछा कि इसनगरका क्यानामहै औरइसका स्वामी कौनहै तब उस राक्षसनेकहा कि इस नगरका शैलपुरनामहै औरयमदंष्ट्र नाम हमारा स्वामी यहांकाराजाहै राक्षसके यहवचन सुनकर यमदंष्ट्रके मारनेकी इच्छासे इन्दीवरसेन अपने भाईसमेत उस नगरमें प्रवेश करनेलगा तब उस द्वार-पालनेरोका तो इन्दीवरसेनने अपने एकही खड्गकेप्रहारसे उसका शिरकाटकर नगरके भीतर राजभवन मे जाके सिंहासनपर बैठेहुए यमदंष्ट्रनाम राक्षसको देखा उसके बाईं ओर एकबड़ी स्वरूपवती स्त्री बैठी थी औरदहिनीओर एकदिव्य कुमारी बैठीथी इसप्रकार स्त्रियोंके बीचमें बैठेहुए बड़ी २ दाढों से भयंकर

मुखवाले उस यमदंष्ट्र को इन्दीवरसेन ने युद्ध करने को बुलाया वह भी खड्ग लेकर उठ खड़ाहुआ और उन दोनोंका युद्ध होनेलगा युद्ध में इन्दीवरसेन ने कईवार अपने खड्गसे उस राक्षसका शिरकाटा परन्तु वह वारंवार जम जम आया उसकी इस मायाको देखकर उस कुमारी स्त्री ने जो कि इन्दीवरको देखकर अनुरक्तहोगई थी यह संज्ञा (इशारा) की कि शिरको काटकर उसके दो टुकड़े करडालो इस संज्ञाको जानकर उसने शीघ्रही राक्षसका शिरकाटकर दोटुकड़े करडाले इससे उसकी माया नष्टहोगई और शिर फिर नहीं जमा इसीसे वह राक्षस मरगया राक्षसके मरजानेपर उस स्त्री तथा कुमारीको प्रसन्न देखके भाई समेत इन्दीवरसेनने वैठकर उनसे पूछा कि ऐसे सुन्दर पुरमें यह केवल एक द्वारपाल राक्षससे युक्त राक्षसोंका राजा कौन था और तुम दोनो कौनहो जो कि इसे मरा देखकर प्रसन्न होरही हो यह सुनकर उनमें से कुमारी बोली कि इस शैलपुर में वीरभुजनाम राजाथा उसकी यह मदनदंष्ट्रानाम रानी है इस यमदंष्ट्रनाम राक्षसने अपनी मायासे वीरभुजनाम राजाको उसके सब परिकर समेत खाकर इस मदनदंष्ट्राको अपनी स्त्री बनालिया और इसरम्यपुरमें सुवर्ण के घरबनाकर परिकरके विनाही इसके साथ रमणकरताहुआ रहनेलगा और मैं उसराक्षसकी खड्गदंष्ट्रानाम छोटी वहिनहूं अभी मेरा विवाह नहीं हुआहै तुम्हें देखकर मेरे चित्त मे अनुराग उत्पन्नहुआहै इससे हे आर्य्यपुत्र तुम मेरे साथ विवाहकरो इस राक्षसने हठपूर्वक इसमदनदंष्ट्राके साथ विवाह कियाथा इसीसे उसके मरनेसे इसको प्रसन्नताहुई है इसप्रकार उस खड्गदंष्ट्रा के वचन सुनकर इन्दीवरसेन उसके साथ गान्धर्व विवाहकरके उसीनगरमें भगवती के दिये हुए खड्गके प्रभाव से मनोवांछित भोगकरताहुआ अपने भाईसमेतरहा एकदिन खड्गके प्रभावसे आकाशगामी विमान बनाकर इन्दीवरसेनने अपने भाईको उसपर वैठालकर अपने माता पिता से अपना वृत्तान्त कहने के लिये भेजा वह विमानपर चढ़कर क्षणभरमें इरावतीनाम पुरी में पहुँचकर अपने माता पिता के निकट गया जैसे चन्द्रमाको देखकर तीव्र दुःखरूपी धूपसे व्याकुल चकोर प्रसन्नहोते हैं उसीप्रकार अनिच्छासेनको देखकर उसके माता पिता प्रसन्नहुए पैरोंपर पड़ेहुए अपने छोटेपुत्र अनिच्छासेन को आलिंगनकरके राजा और रानी ने सन्देहयुक्त होकर अपने बड़ेपुत्रका कुशल पूछा तब उसनेअपनी भाईकी कुशल कहकर आदिसे अन्ततकका सब वृत्तान्त वर्णन किया और अपने माता पितासे अपनी पापिन सौतेली माताका कियाहुआ वह कुकार्य्य सुना तदनंतर कुछदिन वहां रहकर दुस्स्वप्नोंके देखने से शंकितहोके उसने अपने माता पितासे कहा कि मैं अब जाकर आपकी उत्कण्ठा का वर्णनकरके आर्य्य इन्दीवरसेनको यहीं लिवायलाताहूं इससे आप मुझे जानेकी आज्ञादीजिये यह सुनकर राजा औररानी ने उसको जानेकेलिये आज्ञा देदी तब अनिच्छासेन विमान में चढ़के आकाशमार्गसे शैलपुरको गया और प्रातःकाल उसने अपने भाईके मंदिर में जाकर देखा कि इन्दीवरसेन पृथ्वीपर अचेतहुआ पड़ा है और खड्गदंष्ट्रा तथा मदनदंष्ट्रा उसकेपास बैठीहुई रोरही हैं यह देखकर घबराके उसने पूछा कि मेरे भाई की यह क्यादशाहोगई तब मदनदंष्ट्रा तो खड्गदंष्ट्राकी निन्दा करनेलगी और खड्गदंष्ट्रा नीचे को मुखकरके बोली कि तुम्हारे चलेजानेके उपरान्त एकदिन जब मैं स्नान करनेको गई तब तुम्हारा

भाई एकान्तमें इस मदनदंष्ट्राके साथ भोगकरनेलगा स्नानसे लौटकर मैंने साक्षात् इसको रमण करते देखकर बहुतसे कुवाच्य इससे कहे तदनन्तर तुम्हारेभाईके विनय करनेपरभी भाग्य के समान दुर्लंघ्य ईर्ष्यासे मोहितहोकर मैंने शोचा कि यह मेराकहना न मानकर अन्यस्त्रीके साथ रमणकरताहै मैं जानतीहूं कि इसे खड्गके माहात्म्यसे इतना अभिमानहै इससे यह खड्ग छिपादेना चाहिये यह शोचकर जब तुम्हाराभाई सोगया तब मैंने खड्गको उठाकर अग्नि में छोड़दिया खड्गके अग्नि में छोड़तेही इसकी तो यहदशा होगई और खड्ग कलंकित होगया तबमैंतो पश्चात्ताप करनेलगी और मदनदंष्ट्रा मेरी निन्दा करनेलगी फिर शोकसे व्याकुलहोके हम दोनोंके मरनेके लिये उद्यतहोनेपर तुम यहांआगये तो अब तुम इसखड्गको लेकर मुझहत्यारिन राक्षसीको इसी खड्गसे मारो उसके यह वचनसुन कर अनिच्छासेनने उसको अवध्यजानकर अपनाही शिर काटनाचाहा उससमय यह आकाशवाणी हुई कि हे राजपुत्र ऐसासाहस मतकरो तुम्हारा बड़ाभाई मरानहीं है खड्गके अपराधसे इसको देवीने मोहितकरदियाहै और इस खड्गदंष्ट्राकाभी कोई अपराधनहीं है क्योंकि शापसे उत्पन्नहोनेवाली स्त्रियोंके बहुधा ऐसेही काम हुआ करते हैं यह दोनो पूर्वजन्मकी तुम्हारे भाईकी स्त्रियां हैं इससे तुमजाकर उन्हीं भगवती पार्वतीजीको प्रसन्नकरो इस आकाशवाणीको सुनकर अनिच्छासेन मरणके उद्योग से निवृत्तहोकर विमानपर चढके और उस कलंकित खड्गकोलेकर विन्ध्यवासिनीको गया वहां पहुंच कर उपवास करके भगवतीको प्रसन्न करनेके अर्थ अपना शिरकाटनेको उद्यतहुआ उस समय यह आकाशवाणी हुई कि हे पुत्र साहस मतकरो मैं तुम्हारी भक्तिसे प्रसन्नहूं तुम्हाराभाई जीउठेगा औरयह खड्ग फिर निर्मलहोजायगा इसआकाशवाणीको सुनकर और खड्गको अपनेहाथमें निर्म्मल देखकर अनिच्छासेन भगवतीकी परिक्रमा करके और अपने विमानपर चढकर शैलपुरमें अपने भाई के निकट आया और उसे उसीसमय चैतन्यहुआ देखकर नेत्रों में अश्रुभरकर उसके पैरोंपर गिरपड़ा और उसने भी उसे पैरों से उठाकर अपने गले में लगालिया १७७ उससमय वह दोनों स्त्रियां भी अनिच्छासेनके पैरोंपर गिरकरबोलीं कि तुमने हमारेपतिके प्राण रखलिये इसके उपरान्त इन्दीवरसेनके पूछनेपर उसनेसब व्यौरेवार वृत्तान्त कहदिया उस संपूर्ण वृत्तान्तको सुनकर इन्दीवरसेन खड्गदंष्ट्रापर क्रोधित नहीहुआ और अपने भाईपर अत्यन्त प्रसन्नहुआ फिर अनिच्छासेनके मुखसे अपनी सौतेली माताकी माया से अपने मारनेकी आज्ञाको जानकर और माता पिताको उत्कण्ठित सुनकर इन्दीवरसेन अपने भाई से उस खड्गको लेकर उसीके प्रभावसे मिलेहुए विमानपर अपनेभाई तथा स्त्रियोंसमेत चढ़कर और सुवर्णके मंदिरोंकोभी उसीपर रखकर आकाशमार्गसे इरावतीनाम पुरीको चलाआया वहां आकाशसे उतरकर पुरवासियों के चित्तमें आश्चर्य्य कराताहुआ राजमन्दिरमें अपने मातापिताके पास भाई तथा स्त्रियों समेत गया और आंसूभरकर अपने माता पिताके चरणोंपर गिरा वहभी सहसा अपने पुत्रको देखकर और उसे हृदयसे लगाकर सन्तापरहित होगये और दिव्यरूप बहुओंकोभी वन्दना करतेदेख कर उनके चित्तमें परमानन्दहुआ तदनन्तर कथाके प्रसंगसे उन दोनों बहुओंको अपने पुत्रकी पूर्व-

जन्मकी क्रियांजानकर और विमान तथा सुवर्णके मन्दिरों को देखकर उन दोनोंरानी अधिकसंगमा तथा राजा परित्यागसेनके चित्तमें आश्चर्य्य पूर्वक प्रसन्नताहुई इसप्रकार अपने माता पिताको प्रसन्न करके इन्दीवरसेन अपने भाई और स्त्रियोंसमेत कुछ कालतक सुखपूर्वक रहा कुछसमयके उपरान्त अपने पितासे आज्ञालेकर अपनेभाई समेत दिग्विजय करनेको गया और खड्गके प्रभावसे संपूर्णपृथ्वी जीतकर राजालोगों से सुवर्ण हाथी घोड़े तथा रत्नलेकर लौटआया लौटकर आयेहुए इन्दीवरसेनके पीछे सेनाके चलनेसे जो धूल उड़रहीथी सो मानों संपूर्ण विजयकीहुई पृथ्वी उसके पीछे २ चलीआतीथी राजापरित्यागसेन अपने पुत्रको दिग्विजय करके लौटाहुआ जानकर राजधानीसे बाहर आगे से जाकर लेआया और जब मन्दिरमें आगया तब रानी अधिकसंगमा भी अपने पुत्रों से मिलकर अत्यन्त प्रसन्नहुई इसप्रकार अपने माता पिताको प्रसन्नकरके और संपूर्ण विजय कियेहुए राजालोगोंका सत्कार करके इन्दीवरसेन ने वह दिन अपनेभाई तथा स्त्रियों समेत बड़े आनन्दसे व्यतीत किया दूसरे दिन अपने पिताको वह सबकर जो राजालोगोंसे मिलाथा देकर उसे अकस्मात् अपने पूर्व्व जन्मका स्मरण आगया तब सोकर उठेहुएके समान वह अपने पितासे बोला कि हे तात मुझे अपने पूर्वजन्म का स्मरण आगयाहै वह मैं आपको सुनाताहूं हिमालयके शिखरपर मुक्तापुर नाम एक नगरहै उसमें मुक्तासेननाम विद्याधरों का राजाहै उसके कंबुमतीनाम रानी में पद्मसेन और रूपसेननाम दो पुत्रहुए उनमें से पद्मसेनके साथ आदित्यप्रभानाम विद्याधरीने स्वयंवर करलिया यह जानकर आदित्यप्रभा की सखी चन्द्रवतीनाम विद्याधरीनेभी कामार्त्तहोकर पद्मसेनके साथ विवाह किया तब दो स्त्रियोंसेयुक्त पद्मसेन सौतसे ईर्ष्या करनेवाली आदित्यप्रभा से बहुत खिन्नहोकर अपने पितासे बोला कि हे तात मैं प्रतिदिन ईर्ष्यायुक्त स्त्रियोंके कलहको नहीं सहसक्ताहूं इससे इस दुःखके दूरकरने के लिये मेरी तपोवन जानेकी इच्छाहै सो आप मुझे आज्ञादीजिये जब एकवार कहनेसे पिताने आज्ञा नहीं दी तब पद्मसेन ने बड़ा हठ किया उससमय उसके बहुत हठकरनेसे क्रुद्धहोकर मुक्तासेनने उसको यह शाप दिया कि तुम तपोवनमें जाकर क्याकरोगे मृत्युलोकमें जाओ वहां यह बड़ी आदित्यप्रभा नाम कलहकारिणी तुम्हारी स्त्री राक्षसयोनिमें उत्पन्नहोकर तुम्हारी स्त्री होगी और यह दूसरी तुम्हारी बहुतप्यारी चन्द्रवती किसी राजाकी रानीहोकर राक्षसकी स्त्री होगी फिर पीछेसे तुम्हारीस्त्रीहोगी और यहरूपसेनभी तुम्हारे साथ तपोवन जानेकी इच्छा करताथा इससे यहभी वहां तुम्हारा छोटाभाई होगा वहां दो स्त्रियोंके होने से कुछ दुःख अनुभव करके जब संपूर्ण पृथ्वी जीतकर अपने पिताको देदोगे तब इन सब समेत तुम अपनी जातिको स्मरणकरके शापसे छूटजाओगे इसप्रकार अपने पितासे अपने शापका उद्धार सुनकर पद्मसेन अपनेभाई तथा स्त्रियोंसमेत पृथ्वीमें उत्पन्नहुआ हे तात वह पद्मसेन मैंही हूं जिसका कि आपने इन्दीवरसेननाम रक्खाहै मैं अपना सब कर्त्तव्य करचुका और जो रूपसेननाम दूसरा विद्याधर कुमारथा वह यही अनिच्छासेन नाम मेराछोटाभाई है आदित्यप्रभानाम जो मेरीस्त्री थी वह यह खड्गदंष्ट्राहै और दूसरी चन्द्रावतीनाम मेरीस्त्री मदनदंष्ट्राहै इससमय हमारे शापकी अवधि आगई इससेहम

अपने स्थानको जातेहैं यह कहकर अपनेभाई तथा स्त्रियोंसमेत पद्मसेनने अपना मानुषी स्वरूपत्याग कर विद्याधरोंका स्वरूप धरलिया और अपनेपिताको प्रणामकरके स्त्रियोंको गोदमें लेकर अपने भाई समेत आकाशमार्ग से अपने मुक्तापुर नगरमें पहुँचकर अपने पिता मुक्तासेन तथा माता कम्बुमतीको प्रणाम किया कम्बुमती समेत मुक्तासेनभी अपने पुत्रों और बहुओंकोदेखकर उनकासत्कारकरके अत्यन्त प्रसन्नहुआ इसप्रकार शापसे छूटकर पद्मसेन ईर्ष्यारहित आदित्यप्रभा और चन्द्रप्रभा समेत सुखपूर्वक रहनेलगा नरवाहनदत्तसे इसरमणीय कथाको कहकर गोमुख फिर कहनेलगा कि हे युवराज महात्मालोगोंकोही इसप्रकारसे बड़ाक्लेश तथा बड़ा उदय प्राप्तहोताहै और साधारण लोगोंको जैसासाधारण दुःख वैसाही साधारण सुख प्राप्तहोताहै और आपतोराजपुत्री कर्पूरिकाको विनाक्लेशहीपाओगे क्योंकि रानी रत्नप्रभाकी विद्या आपकी रक्षाकरती है गोमुखके इन वचनोंको सुनताहुआ नरवाहनदत्त विना परिश्रम केही बहुत दूर चलागया चलते २ सायंकाल के समय अमृतके समान मधुर शीतल जलवाले तड़ाग पर पहुंचा उस तड़ागके किनारेपर आम कटहल तथा अनार आदिक फलोंके मनोहर वृक्ष लगेथे उस के जल में सुन्दर कमल प्रफुल्लितहोरहे थे और सुन्दर राजहंस मनोहर शब्दकररहेथे ऐसे सुन्दर उस तड़ाग में स्नानकरके और भक्तिपूर्वक श्रीशिवजी का पूजनकरके नरवाहनदत्त और गोमुख दोनों ने सुगन्धित मधुरफलतोड़कर खाये और रात्रिके समय कोमल २ पत्ते बिछाकर शयनकिया इसप्रकार सुखपूर्वक वह रात्रि उन दोनोंकी व्यतीत हुई २२५ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांरत्नप्रभालम्बकेअष्टमस्तरंगः ८ ॥

इसके उपरान्त प्रातःकाल उस तड़ाग के तटसे चलाहुआ नरवाहनदत्त गोमुखसे बोला कि हे मित्र आज कुछ थोड़ी रात्रिरहे स्वप्नमें एक श्वेतवस्त्र धारणकिये कुमारी ने मुझ से कहा कि हे पुत्र निश्चिन्त होजाओ यहां से कुछ दूर चलकर समुद्रके किनारेपर वनमें एक बड़ा आश्चर्यकारी नगर तुमको मिलेगा वहां विश्रामकरके क्लेश विनाही कर्पूरसम्भव नगर में पहुंचकर तुम्हें कर्पूरिकानाम राजपुत्री मिलेगी यह कहकर वह अन्तर्द्धान होगई और मेरी निद्राजातीरही उसके यह वचनसुनकर गोमुख प्रसन्न होकर बोला कि हे युवराज तुम्हारे ऊपर देवताओंकी कृपाहै तुमको कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है इससे निस्सन्देह तुम्हारा मनोरथ विनाश्रमके पूर्णहोजायगा इसप्रकार कहतेहुए गोमुख के साथ नरवाहनदत्त बहुत शीघ्रतासे मार्ग में चला और चलते २ समुद्रके तटपर पर्व्वतों के समान उन्नत चौबारे तथा फाटकों से युक्त सुमेरु के समान सुवर्णमय राजमन्दिर से शोभित और दूसरे भूमण्डलके समान विस्तार युक्त नगरके निकट प्राप्तहुआ और उस नगरके भीतर जाकर बजारमें उसने सम्पूर्ण जीव, काष्ठयन्त्र के देखे जोकि चैतन्यों के समान चेष्टाकररहेथे, केवल न बोलने के कारण निर्जीव मालूम होते वैश्य वेश्या तथा पुरजनों को आश्चर्य्यपूर्व्वक देखताहुआ गोमुख समेत नरवाहनदत्त राजमन्दिरके निकट पहुंचा वहां भी काष्ठकेही घोड़े तथा हाथी देखकर सुवर्ण से बनेहुए उस राजमन्दिर के भीतरगया वहां यन्त्रमय प्रतीहार वेश्या तथा सेवकादिकों से युक्त एकभव्यपुरुष सिंहासनपर बैठाहुआ उसेदीखा जैसे

जड़ इन्द्रियोंका चलानेवाला केवल अधिष्ठाता एकआत्माहै उसीप्रकार वहां उन सम्पूर्ण जड़ पदार्थों के चलानेका कारण एक वही चैतन्यपुरुषथा वह नरवाहनदत्तकी सुन्दर आकृतिको देखकर उठा और स्वागतकरके अपने आसनपर लिवालेगया और आदरपूर्वक अपने रत्नजटित सिंहासनपर बैठाकर पूछनेलगा कि आप कौनहैं और इस मनुष्यों से रहित स्थानमें किसलिये आये हैं तब नरवाहनदत्त ने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहकर उससे पूछा कि आप कौन हैं और यह कैसा आश्चर्य्यकारी आपका पुर है यह सुनकर वह अपना वृत्तान्त इसप्रकार कहने लगा कि पृथ्वी की आभूषण रूप बड़ी सुन्दर कांची नाम एक नगरी है उस नगरी में वाहुवल नाम राजा है जिसने अपनी भुजाओंके वलसे चंचल लक्ष्मीको भी अपने खजाने में बन्द कररक्खाहै उस राजाके राज्यमें मयासुरके बनायेहुए काष्ठादिके माया यन्त्रोंके जाननेवाले हम दो भाई जातके बढ़ई रहतेथे बड़े भाईका नाम प्राणधरहै वह अत्यन्त व्यभिचारी है और छोटा राज्यधर नाम अपने भाईका परमभक्त मैंहूं मेरे भाईने पिताका सम्पूर्ण धन खर्चकरके अपना पैदा किया हुआ भी सब धन खर्च करडाला और फिर मेरा उपार्जन कियाहुआ भी धन व्ययकरदिया परन्तु मैंने स्नेहसे उसेनिषेध नहीं किया इतनेपर भी उसव्यभिचारी ने वेश्याओं के निमित्त धनलाने की इच्छासे रस्सी के यन्त्रसे चलनेवाले दो हंस काष्ठके बनाये वह दोनों हंस रात्रि के समय रस्सीके हिलानेसे राजा वाहुवलके यहां झरोखे के द्वारा भीतरजाकर खजाने में से आभूषणों को अपनी चोंचमें दावलाते थे उन आभूषणों को वेचकर मेराभाई वेश्याके संग भोग करताथा इस प्रकारसे उसने वहुत दिनतक राजाके खजाने से धन लेलेकर उड़ाया और मेरे निवारण करनेपर भी उस कुकर्म से निवृत्त नहीहुआ ठीकहै (कोहिमार्गममार्गवाव्यसनान्धोनिरीक्षते) व्यसनसे अन्धा होकर कौन पुरुष कुमार्ग और सुमार्गका विचार करताहै तब खजानचीने कपाटोंके बन्द रहनेपर भी खजाने में से आभूषण जातेदेखकर कुछदिन तक तो भयसे राजासे नहीं कहा और रोज उसकी तलाशकरतारहा परन्तु जब तलाश करनेपर भी पता न लगा और नित्य आभूषण जानेलगे तब उसने व्याकुल होकर राजासे कहदिया राजाने भी वहुत से रक्षकोंको आज्ञादिया कि देखो रात्रिके समय कौन आभूषणों को लेजाताहै उन रक्षकोंने वहां जाकर अर्द्धरात्रिके समय झरोखे के द्वारा आयेहुए रस्सी में बँधेहुए दोकाष्ठके हंसदेखे जब वह हंस चोंचोंमें आभूषण लेकर यन्त्रकी प्रेरणासे घूमनेलगे तब उनरक्षकों ने राजाको दिखाने के लिये रस्सी काटकर वह दोनों हंसलेलिये उससमय हमारे बड़े भाई ने घबराकर मुझसे कहा कि हे भाई राजाके रक्षकोंने वह मेरे दोनों हंस पकड़लिये क्योंकि यन्त्रकी रस्सी शिथिल होगई है और कीलठोकने से भी यन्त्र नहीं चलताहै इससे हम दोनों को आजही यहां से भागजाना चाहिये नही तो प्रातःकाल राजा हमदोनोंको चोरजानकर मरवाडालेगा क्योंकि इस नगरमें हमही दोनों जने मायायन्त्रके जाननेवाले प्रसिद्धहैं इससे मेरे पास जो वायुका यन्त्रविमानहै उसपर चढ़कर परदेशमें वहुतदूर निकल चलो वह यन्त्र एकवार कीलठोकने से ८०० योजन वहुत शीघ्र चलाजाता है यद्यपि परदेशमें क्लेशहोगा तथापि लाचारी में क्याकरें (पापेकर्मणयंत्रज्ञातहिनत्राकृतेकुतस्सुखम्)

हितवादी पुरुषके वचनको न मानकर कियेगये पापमें सुख कैसे होसक्ता है जो मुझपापीने तुम्हारा कहना नहीं माना उसीका फल आज यह हुआहै जो कि तुमनिरपराधी को भी प्राप्त हुआहै यह कहकर मेराभाई प्राणधर उसीसमय कुटुम्ब समेत विमानपर चढा परन्तु मैं उसके कहनेपर भी बहुत भीड़देखकर उस पर न चढा तब वह उस विमानको उड़ाकर कहीं चलागया ४२ प्राणधरके चलेजाने पर मैंभी प्रातःकाल राजाके भयसे अपने बनायेहुए विमानपर चढ़कर वहांसे दोसौयोजन चलागया दोसौयोजनपर पहुचकर फिर वहांसे कीलठोककर और आगे दोसौयोजन चलागया इसप्रकार चारसौ योजनपृथ्वी उल्लंघनकरके समुद्रके निकट विमानको छोड़कर पेरों पेरों इसशून्यपुरमे पहुंचा और आश्चर्य्य पूर्वक इसराजमंदिर में आकर वस्त्र आभूषण तथा शय्या आदिक राजाओंके योग्य सामग्रीको देखकर मन्दिरके बाहर उद्यानकी बावड़ीमें स्नानकरके और मधुरफलखाके मन्दिरके भीतर उसी शय्या परसोरहा रात्रिकेसमय वहां अकेले लेटे २ मैंने शोचा कि इस निर्जन स्थानमे रहकर मैं क्याकरूंगा अब यहां राजावाहुबलसे तो कुछ भयहैहीनही इससे प्रातःकाल उठकर किसी अन्यस्थानको चलूंगा इसप्रकार शोचकर सोयेहुए मुझसे कुछ रात्रिरहे स्वप्नमे मोरपर सवार किसी दिव्यपुरुषने मुझसे कहा कि तुम यहींरहो अन्यत्रकहीं न जाओ भोजनके समय मध्यमपुरमें आकर ठहरना यह कहकर उसपुरुष के अन्तर्द्धान होजानेपर मैंने जगकर शोचा कि निस्सन्देह यह दिव्यस्थान श्रीस्वामकार्त्तिकजी का बनायाहुआहै और उन्होंनेही पूर्वपुण्योंके प्रभावसे मुझे दर्शनदेकर मेरे ऊपर कृपाकीहै इससे मुझे यहीं रहनेमें कल्याणहै इसप्रकार निश्चयकरके और शय्यापरसे उठके सब नित्यका आह्निक करके भोजन के समय में मध्यमपुर में जाकरबैठा वहां प्रथम तो अकस्मात् सुवर्ण के पात्र मेरे आगे आगये फिर आकाशसे घी दूध तथा चांवलआदिक भोजन उनपात्रों में आगया और मैं जैसा २ विचारकरतागया उसी २ प्रकारके भोजन मेरे आगे आतेगये उन सम्पूर्ण पदार्थोंको खाकरमैं अत्यन्त संतुष्टहुआ और तब से इसी पुरमें अपनी इच्छाके अनुसार प्रतिदिन प्राप्तहोनेवाले राज्यके सुखोंको अनुभव करतारहा केवल स्त्री तथा परिजन मुझे अभिलाषा करनेसे भी नहीं मिले इससे यन्त्रमय संपूर्ण परिकर मैंनेयहां बनालिये इसप्रकार भाग्यवश से यहां आकर मैं बढई होकर भी राजाओंके सुखका अनुभव करता हूं इससे हे राजा इस स्वामकार्त्तिकके पुरमें आपभी आजके दिन विश्रामकरकेयथाशक्ति कीहुई मेरीसेवा को ग्रहण कीजिये यह कहकर राज्यधर गोमुख समेत नरवाहनदत्तको उस पुरके उपवनमें लेगया वहां बावड़ी के जलमे स्नानकर कमलो से श्रीशिवजीका पूजन करके पुरके मध्यमभागमें भोजनकेनिमित्त लेगया वहां अपनी अभिलाषाके अनुसार प्राप्तहुए दिव्यपदार्थों का भोजन करके नरवाहनदत्त गोमुख समेत अत्यन्त प्रसन्नहुआ फिर किसी अदृश्य पुरुषके द्वारा भोजनस्थानके शुद्ध होजानेपर मद्यपान पूर्वक ताम्बूलखाकर सुखपूर्वक वहींरहा तदनन्तर रात्रि के समय राज्यधरके भी भोजन करचुकने पर चिन्तामणिकेसमान उसपुरके माहात्म्य से विस्मित नरवाहनदत्त और गोमुख दिव्य शय्याओंपर लेटे उससमय कर्पूरिका की उत्कण्ठासे नरवाहनदत्तको निद्रा न आतीदेखकर सुखसे लेटाहुआ राज्य-

धरबोला कि हे महाभाग सोते क्यों नहींहो तुमको कर्पूरिका अवश्य मिलैगी चिन्ता मतकरो क्योंकि (उदारसत्वंवृणुतेस्वयंहिश्रीरिवाङ्गना) लक्ष्मीके समान स्त्री सत्त्ववान् पुरुषोंको आपही स्वीकारकरती हैं इस विषयपर मैं अपनेनेत्रोंसे प्रत्यक्ष देखीहुई एक कथा आपको सुनाताहूं मैंने जो कांचीके स्वामी राजाबाहुबल का आपके सन्मुख वर्णन कियाथा उसके बड़ा धनवान् अर्थलोभनाम यथार्थ नामवाला एक प्रतीहारथा उस प्रतीहारके मानपरानाम महासुन्दर स्त्रीथी अर्थलोभ राजाके यहां। उपार्जन कियेहुए धनसे व्योपारभी करताथा और अत्यन्त लोभकेकारण सेवकोंपर विश्वास न करके रोजगारके व्यवहारोंमें अपनी स्त्रीसे काम कराताथा यद्यपि वह स्त्री इस कामको अपने चित्तसे अपने योग्य नहीं समझतीथी तथापि पतिके आधीनहोकर उसे वणियों के साथ व्यवहार करना पड़ताथा उसके सुन्दररूप तथा मधुर वचनोंके लोभसे बहुत से व्यापारी उसके पास खरीदने तथा बेचनेको आतेथे हाथी घोड़े रत्न तथा वस्त्रादिक जो २ पदार्थ वह मानपरा बेचतीथी उसमे बड़ी आमदनी देखकर अर्थलोभ अत्यन्त प्रसन्नहोता था एकसमय वहां किसीदूरदेशसे सुखधन नाम एकवैश्य बहुतसे घोड़े तथा हाथी आदिलेकर बेचनेको आया उसका आना सुनकर अर्थलोभ ने मानपरासे कहा कि हे प्रिये सुखधन नाम वैश्य किसी दूरदेश से यहां आया है उसके पास बीसहजार घोड़े और चीन देश के उत्तमवस्त्रों के असंख्य जोड़े हैं इससे तुम उसके पास जाकर पांचहजार घोड़े और दशहजार वस्त्रोंके जोड़े लेआओ उन पांचहजार घोड़ों में एकहजार अपने घोड़े मिलाकर मैं राजाके पास लेजाऊंगा और राजाके हाथ बेचूंगा यह कहकर अर्थलोभने मानपराको सुखधन वैश्य के पासभेजा मानपराने सुखधनसे पांच हजार घोड़े और दश हजार वस्त्रोंके जोड़े मोललेने को कहा सुखधन उसके रूपको देखकर कामके विवश होकर स्वागत करके उसे एकान्त में लेजाकर बोला कि मूल्य लेकर तो हम तुमको एक घोड़ा अथवा एक वस्त्रभी नहीं देंगे परन्तु जो तुम एकरात्रि मेरे साथ रहो तो पांचसौ घोड़े और पांचहजार वस्त्र मैं तुमकोदूंगा यह कहकर उसने मानपरासे अपनी अभिलाषा बहुत प्रकटकी ठीकहै (स्त्रीष्वनर्गलचेष्टासुकस्येच्छा नोपजायते) स्वच्छन्द व्यवहार करनेवाली स्त्रियोंपर किसकी इच्छा नहीं चलती है तब मानपराने उससे कहा कि मैं अपने पतिसे जाकरपूछतीहूं कदाचित् वह लोभके कारण मुझेइसबातकी भी प्रेरणा करदेगा यह कहकर उसने अपने घरमें आके अर्थलोभसे जो कुछ सुखधनने एकान्त में लेजाकर उस से कहाथा वह सब कहदिया यह सुनकर अर्थलोभने कहा कि हे प्रिये जो एकही रात्रिमें पांचहजार घोड़े और पांचहजार जोड़े मिलते हैं तोक्यादोषहै आजरात्रिभर जाकर तुम वहीं रहो कल प्रातःकाल चली आना अपने पतिके यह वचनसुनकर वह मानपरा उसपर घृणाकरके अपने मनमें यह शोचनेलगी कि स्त्रीके बेचनेवाले सत्त्वरहित अत्यन्त लोभयुक्त इस पतिको धिक्कारहै मेरेलिये अब वही पति अच्छा है जो पांचसौ घोड़े तथा पांचहजार जोड़े देकर मुझे एकरात्रिके लिये मोललेताहै यह शोचकर अर्थलोभसे यह कहकर कि मेरा इसमें कोई दोष नहीं है मानपरा उसे छोड़कर उस सुखधनके यहां चलीगई सुखधनने उसे आई देखकर सम्पूर्ण वृत्तान्त पूछके बड़े आश्चर्य्य पूर्व्वक उसके मिलनेसे अपने को

अन्यमानता और उसीसमय पांचसौ घोड़े तथा पांचहजार जोड़े अर्थलोभ को भेजदिये और अपनी सम्पत्तिकी मूर्त्तिमती फल श्रीकेसमान मानपराके साथ सुखपूर्व्वक रात्रिभररहा प्रातःकाल उस निर्लज्ज अर्थलोभके भेजेहुए बुलानेके लिये आयेहुए सेवकोंसे मानपरा बोली कि उसने मुझे बेचडालाहै मैं दूसरेकी स्त्री होगई अब मैं फिर उसके पास कैसे जाऊं क्या जैसा वह निर्लज्जहै वैसीही मैं भी निर्लज्ज होजाऊं तुम्हींलोग बताओ क्या मुझे यह बात शोभादेती है इससे तुमलोग जाओ जिसने मुझे मोल लियाहै वही मेरापति है मानपराके यह वचनसुनकर सेवकोंने जाके अधोमुख होकरके अर्थलोभ से मानपराका उत्तर कहदिया सेवकोंके वचन सुनकर उसनेचाहा कि मैं सुखधनके पाससे मानपराको जबरदस्ती लेआऊं तब उसके हरबलनाम एक मित्रने कहा कि तुम सुखधनके यहांसे उसे नहीं लासक्के हो उसवीरके आगे तुम्हारी धीरता नहीं चलेगी वह बड़ा बलवान्है बलवान्मित्र भी उसके साथमें है और मानपरा के मिलने से उसका उत्साह बढ़रहाहै और तुमतो कृपणताके कारण भेजीहुई स्त्री ने त्यागदिया है इससे निरुत्साह होरहेहो और तुम स्वतः बलवान् नहींहो न तुम्हारे साथ कोई बलवान् मित्रहै इससे तुम उसको जीतनहींसक्के और कदाचित राजा जानलेगा तो वह भी तुमको स्त्री का बेचनेवाला जान कर तुमसे क्रुद्धहोजायगा इससे चुपहोरहो अपनी हँसी मतकरवाओ इसप्रकार मित्रके समझानेपरभी अर्थलोभ ने क्रोधसे अपनी सेना लेकर जाके सुखधनका घर घेरलिया तब सुखधन तथा सुखधन के मित्रोंकी सेनाने निकलकर अर्थलोभको सेना समेत मारभगाया वहांसे भागकर अर्थलोभ ने राजासे जाकर कहा कि हे महाराज सुखधन नाम वैश्य ने मेरी स्त्री हरलीनी है उसके वचन सुनकर राजा ने क्रोधसे सुखधनको पकड़ मँगवानाचाहा तब संधाननाम मन्त्री ने राजासेकहा कि हे राजा साधारणता से वह पकड़ने में नहीं आवेगा क्योंकि ग्यारह मित्रों के साथमें आयेहुए सुखधन के पास सब मिला-कर एक लाखसे भी अधिक घोड़े हैं और इस विषयका अभी कुछ तत्त्व भी नहीं मालूमहुआ है ऐसा प्रसिद्ध पुरुष विना किसीकारण के ऐसा निन्दितकर्म्म कभी नहीं करसक्ता है इससे दूत भेजकर प्रथम पूछलेना चाहिये कि वह क्या कहताहै मन्त्री के यह वचन सुनकर राजा ने सुखधनके पास अपना दूत भेजा दूतने वहां जाकर जब उससेपूछा तो मानपराने आपही सब वृत्तान्त उससे कहदिया लौटे दूत के मुखसे उनसबबातोंको सुनकर राजा बाहुबल अर्थलोभ को साथ लेकर सुखधनके यहां मानपरा के देखने के लिये और उसके मुखसे उसके वृत्तान्तको सुनने के निमित्त उसके घरगया वहां आदरपू-र्व्वक सुखधनसे प्रणामकियेगये राजाने ब्रह्माकी भी सौन्दर्य्य लक्ष्मी को आश्चर्य्य करानेवाली मान-पराको देखा और उससे सब वृत्तान्त पूछा उसने नम्रतापूर्व्वक अर्थलोभ के आगेही राजा से अपना सब वृत्तान्त कहदिया सो सुनकर और सत्य २ जानकर और अर्थलोभको निरुत्तर देखके राजा ने मानपरा से कहा कि अब क्या होना चाहिये तब मानपरा बोली कि हे महाराज जिस लोभी ने आपत्ति के विनाही मुझे अन्य पुरुषके हाथ बेचडाला उस सत्त्वहीन निर्लज्ज लोभी के पास अब मैं कैसे जाऊं यह सुनकर राजाने कहा कि बहुत ठीकहै तब काम क्रोध तथा लज्जासे व्याकुलहोकर अर्थलोभ बोला

कि हे महाराज यह सुखधन और हम मित्रोंकी सहायताके विना अपनी २ सेना समेत युद्धकरें तब आप हमारा और इसका पराक्रम देखिये अर्थलोभ के यह वचन सुनकर सुखधनबोला कि सेना से क्या प्रयोजनहै आओ हम तुम दोई द्वन्द्व युद्धकरें दोमें से जो कोई जीतेगा उसीको मानपरा मिलैगी यह सुनकर राजा ने कहा कि ऐसाही होनाचाहिये तब सबलोगों के आगे घोड़ोंपर चढ़कर वह दोनों युद्धभूमि में उतरकर परस्पर युद्ध करनेलगे सुखधन ने घोड़े के ऐसा भालामारा कि जिससे घोड़ा उछला और अर्थलोभ नीचे गिरपड़ा इसीप्रकार और तीनवार घोड़ेको मार २ कर सुखधन ने अर्थलोभ को पृथ्वीपर गिराया परन्तु धर्म युद्ध जानकर पृथ्वीपर पड़ेहुए अर्थलोभको जीवसे न मारा पांचवींबार अर्थलोभ घोड़ेपर से गिरा और ऊपरसे घोड़ाभी उसपर गिरा इसी से वह मूर्च्छितहोगया तब उसके सेवक उसे उठालेगये उससमय सबलोगों ने सुखधनकी बड़ी प्रशंसाकी राजा बाहुबल ने भी उसका बड़ा सत्कारकरके उसकी लाईहुई भेट उसीको लौटादी और कुकर्म से पैदा कियाहुआ अर्थलोभ का सब धन छीनकर उसके स्थानमें दूसरा प्रतीहार रखकर प्रसन्न होकर अपने मंदिरको गमन किया ठीक है (निवृत्तपापसंपर्काः सन्तोषांतिहिनिर्वृतिम्) सज्जनलोग पापियोंका संपर्क छोड़कर प्रसन्न होते हैं सुखधन भी इसप्रकार मिलीहुई मानपरा के साथ विहार करताहुआ आनन्दपूर्वक रहनेलगा इसप्रकार सत्त्व रहित पुरुषों से धन तथा स्त्री निकलजाती हैं और सत्त्ववान् के पास आपही आती हैं इससे आप चिन्ता न करिये वह राजपुत्री कर्पूरिका आपको थोड़ेही कालमें अवश्य मिलैगी राज्यधरसे इस यथार्थ कथाको सुनकर गोमुख सहित नरवाहनदत्त निद्राको प्राप्तहुआ १२२ प्रातःकाल आह्निक तथा भोजन के उपरान्त क्षणभर बैठकर गोमुख राज्यधरसे बोला कि आप यन्त्रका विमान बनादीजिये जिसपर चढ़कर कर्पूरसम्भवपुर में पहुंचकर हमारे स्वामी को कर्पूरिकानाम राजकन्या मिले यह सुनकर राज्यधरने पहले बनायाहुआ अपना वातयन्त्र नरवाहनदत्तको देदिया उसमनके समान शीघ्रगामी विमानपर गोमुख समेत नरवाहनदत्त चढ़कर मानो उसके धैर्य के देखनेकी प्रसन्नतासे बहुत लहराते हुए समुद्रका उल्लंघनकरके कर्पूरसम्भवपुर में पहुंचा वहां आकाश से उतरेहुए विमानसे उतरकर गोमुख सहित नरवाहनदत्त पुरके भीतर घूमनेलगा और लोगो से पूछकर उसपुरको वही कर्पूरसम्भव जानके प्रसन्नतापूर्वक राजमन्दिरके निकटगया वहां एक वृद्धा स्त्री का सुन्दर स्थान देखकर उससे रहने के लिये आज्ञा लेकर उसमें गया युक्तिपूर्वक जाननेकी इच्छासे नरवाहनदत्त ने उस वृद्धा से पूछा कि हे आर्य्ये यहां के राजाका क्या नामहै उसके कौन २ सन्तति है और कैसा उनका रूप है हमसेकहो क्योंकि हम विदेशी हैं उसके यह वचन सुनकर वह वृद्धा उसके उत्तम स्वरूपको देखकर बोली कि हे महाभाग तुम सुनो मैं सब कहतीहूं इस कर्पूरसम्भवनाम नगर में कर्पूरकनाम राजा है इसके प्रथम कोई सन्तति न थी इसी से इसने बुद्धिकारी नाम अपनी रानीसमेत निराहारहोकर तपकिया तीन दिन व्रतकरने के उपरान्त श्रीशिवजी ने रात्रिके समय स्वप्नमें दर्शनदेकर कहा कि पुत्र उठो पुत्र से भी अधिक सुखदायिनी तुम्हारे ऐसी कन्या उत्पन्नहोगी कि जिसका पति विद्याधरोंका चक्रवर्ती

राजा होगा स्वप्नमें श्री शिवजीसे इसप्रकार वरदान पाकर राजा ने प्रातःकाल उठकर रानी से स्वप्नका वृत्तान्त कहा और रानी के साथ प्रसन्नतापूर्व्वक व्रतका पारण किया तदनन्तर थोड़ेही दिनों में रानी वृद्धिकारी गर्भवतीहुई और समयपाकर उसके एक अत्यन्त सुन्दरी कन्या उत्पन्नहुई उसकी कान्तिसे जीतेगये सूतिकागृहके दीपक काजलके वहाने से मानो शोककी श्वांसें छोड़ते थे, कन्याका जन्म सुनकर राजा कर्पूरक ने बड़ा उत्सवकरके अपने नामके अनुसार उसका नाम कर्पूरिका रक्खा लोगों के नेत्रो में चन्द्रिका के समान आनन्द देनेवाली कर्पूरिका धीरे धीरे वढकर अव युवतीहुई है राजा कर्पूरक उसका विवाह करना चाहता है परन्तु वह कर्पूरिका पुरुषों से द्वेपकरके अपना विवाह करना नहीं चाहती मेरी पुत्री उसकी सखी है उसने एक दिन उससे पूछा कि हे सखी कन्या जन्म का फल विवाह है तुम उसे क्यों नहीं चाहतीहो इसप्रकार पूछनेपर उसने कहा कि हे सखी मुझे अपने पूर्वजन्मका स्मरणहै वही विवाह न करनेका कारणहै सोसब मैं तुमको सुनातीहूं समुद्रके तटपर चन्दन का एक वड़ा वृक्षहै उस वृक्ष के निकट प्रफुल्लित कमलों सेयुक्त एक वड़ा सुन्दरतड़ागहै वही मैं पूर्व्व जन्ममें किसी कर्मके वशसे राजहंसिनीहुईथी एकसमय मैंने अपने पति राजहंसके साथ उसचन्दन के वृक्षमें अपना घोंसला बनाया उसमें रहते रहते मेरे बचेहुए वह अकस्मात् समुद्रकी लहर मे वहगये बच्चोंके वहजाने से रोतीहुई मैं विनाभोजन किये शोक से समुद्र के तटपर श्रीशिवजी के लिंगके आगे जाबैठी तव मेरे पति राजहंसने मुझसे आकर कहा कि उठो तुम मरेहुए बच्चोंको क्या शोचरहीहो और बचेहोंगे क्योंकि जीवतेहुए जीवों को सम्पूर्ण पदार्थ प्राप्त होते हैं उसके यह वचन मेरे हृदयमें वाणके समानलगे तव मैंने शोचा कि धिक्कार है पुरुष वड़ेपापी होतेहैं अपने छोटे छोटे बच्चोंपर भी कृपा तथा प्रेम नहीं करतेहैं परन्तु स्त्रियों के चित्तमे स्नेहहोताहै इससे इसपतिसे और इस दुखी शरीरसे मुझे क्या प्रयोजनहै इसप्रकार शोचकर मैंने श्रीशिवजीको नमस्कार करके और हृदयमें उनका ध्यानकरके उसी अपने पति राजहंसके आगे मैं भविष्य जन्ममें राजपुत्री होऊं और मुझे अपने पूर्वजन्मका स्मरणरहे यह कहकर अपने शरीरको त्यागदिया इसीसे मैं इस जन्म मे राजपुत्रीहुईहूं और मुझे पूर्व्वजन्मका स्मरणहै पूर्वजन्ममें अपनेपतिकी कठोरताको स्मरणकरके मेराचित्त किसी वरपर अनुरक्त नहीं होताहै इससे मैं विवाह नहीं करना चाहतीहूं आगे भाग्य के आधीन है यह वृत्तान्त कर्पूरिका ने मेरीपुत्री से कहाथा उसने मुझसे आकरकहा और मैंने पूछनेपर तुमसे कहाहै १६७ मुझे मालूम होताहै कि यह तुम्हारीही स्त्री होगी क्योंकि श्रीशिवजीने कहाथा कि यह संपूर्ण विद्याधरों के भावी चक्रवर्तीकी स्त्री होगी और उसके तिलक आदिक लक्षण तुममें हैं क्या जानें ब्रह्मा इसलिये तुमको यहां लायाहो अच्छा जो होगा सो देखाजायगा आप चलकर भोजनकरो यह कहकर उस वृद्धा ने गोमुख समेत नरवाहनदत्तको उत्तम २ भोजन करवाये फिर भोजन करके वह दोनों उसी वृद्धाके यहां रात्रिभर रहे प्रातःकाल गोमुखसे एकान्तमें सलाहकरके नरवाहनदत्त महाव्रतीका वेपवनाकर गोमुखको साथमेंलेके हा हंसि २ इसप्रकार वारंवार कहताहुआ राजद्वारके निकट घूमनेलगा उसे इसप्रकार कहते देखकर

चेरियोंने आश्चर्य पूर्वक जाकर राजपुत्री कर्पूरिकासे कहा कि हे राजपुत्री फाटकके पास कोई महात्मा जो कि द्वितीय सहित होकरभी सुन्दरता से अद्वितीय है स्त्रियों के चित्तको मोहित करनेवाले हा हंसि हा हंसि इसप्रकारके अद्भुत मंत्रको रात्रि दिन उच्चारण कियाकरता है यहसुनकर पूर्वजन्मकी हंसी राजपुत्रीने उसे अपनेपास बुलालिया और श्रीशिवजीकी आराधनाकेलिये व्रतको ग्रहण कियेहुए अत्यंत मनोहर स्वरूप वाले नवीनकामदेवके समान नरवाहनदत्तको आश्चर्यपूर्वक देखकर पूछा कि तुम हा हंसि हा हंसि क्यों वारंवार कहतेहो उसके पूछनेपरभी नरवाहनदत्त हा हंसि हा हंसि यहीकहतारहा तब साथमें गयेहुए गोमुख ने राजपुत्री से कहा कि हे राजपुत्री सुनो मैं तुमको इसका वृत्तान्त संक्षेपसे सुनाता हूं पूर्वजन्ममें यह कर्म योगसे राजहंसथा और समुद्रके तटपर किसी बड़े तड़ागके समीप चन्दनके वृक्षमें घोंसला वनाकर अपनी राजहंसिनी समेत रहताथा एकसमय भाग्यवश से इसके बच्चे समुद्रकी लहरमें बहगये तब इसकी राज हंसिनीने शोकसे व्याकुल होकर अपना शरीरत्याग करदिया तब इसने भी उसके बियोग से पक्षियों की योनिसे चित्तको हटाकर शरीर त्यागनेकी इच्छासे अपने चित्तमें यह संकल्प किया कि आगे होने वाले जन्ममे मै पूर्व्वजन्मका स्मरण करनेवाला राजपुत्र होजाऊं और अपने पूर्व्वजन्मकी स्मरण कर नेवाली यही राजहंसिनी मेरी स्त्रीहोय यह संकल्प करके और श्रीशिवजीका ध्यानकरके इसने विरहा ग्निमें संतप्तहोकर समुद्रमें गिरकर अपने प्राण त्यागकिये इसीसे यह कौशाम्वी नगरीमें राजा उदयनका पुत्र हुआहै और इसे अपने पूर्व्वजन्मका स्मरण बना है जिससमय इसका जन्म हुआथा तव यहआ काशवाणीहुईथी कि यह संपूर्ण विद्याधरोंका चक्रवर्ती राजाहोगा राजा उदयनने इसको युवराज पद्वी देकर किसी कारणसे उत्पन्नहुई दिव्यस्त्री मदनमंचुकाके साथ इसका विवाह करदिया तदनन्तर हेम प्रभनाम विद्याधरोंके स्वामीकी रत्नप्रभानाम कन्याने आकर इसकेसाथ आपही विवाहकिया इसप्रकार दो दिव्यस्त्रियों को पाकरभी यह प्रसन्न नहीं हुआहै और उसी अपनी हंसिनीको स्मरण करता है इस ने अपने संपूर्ण पूर्व्वजन्मकी कथा और अपने चित्तका संपूर्ण वृत्तान्त मुझ बाल्यावस्थाके मित्रसे कहा है भाग्यवशसे वनमें शिकार खेलनेको आयेहुए इसको मेरेआगेही एक वृद्ध तपस्विनी मिली उसने प्रसंगपाकर कृपापूर्व्वक इससे कहा कि हे पुत्र पूर्व्वही किसी कर्म्म के योगसे कामदेव हंसयोनि में उत्पन्नहोकर समुद्रके तटपर चन्दनके वृक्षमें रहताथा वहां कोई दिव्यस्त्री शापसे भ्रष्टहोकर हंसयोनि में उत्पन्नहोकर इसकी स्त्री थी समुद्रकी लहरसे बच्चोंके बहजानेपर शोक से उस हंसिनीने अपना शरीर त्याग दिया तब वह हंसभी व्याकुल होकर समुद्रमें डूबकर मरगया श्रीशिवजीकी कृपासे राजा उदयन के यहां वही हंस नरवाहनदत्तनामसे तुम उत्पन्न हुए हो हे वत्स तुमतो इन बातों को जानते क्योंकि तुमको अपने पूर्वजन्म का स्मरण है वह हंसीभी समुद्रकेपार कर्पूरसंभवनाम पुरमें नाम राजपुत्री हुई है इससे हे पुत्र तुम वहां जाओ तुम्हारी प्रिया स्त्री तुमको मिलजायगी यह कहकर तपस्विनी आकाशमें जाकर अन्तर्द्धान होगई और यह हमारास्वामी उस तपस्विनीके मुखसे तुम्हारा प्रवृत्तिपाकर मेरे साथ यहांको चला और तुम्हारे स्नेहसे वशीभूतहोकर अपने प्राणोंकोभी कुछ न सम

झकर सैकड़ों वनोंका उल्लंघन करके समुद्रके तटपर पहुंचा वहां हेमपुरका रहनेवाला राज्यधर नाम बढ़ई मिला उसने अपना बनायाहुआ यंत्रका विमान इसको दिया मूर्त्तिमान् साहसके समान भयदायी विमान पर चढ़कर समुद्रका उल्लंघन करके मुझसमेत यह इस नगर में आकर पहुँचा इसी से यह हा हंसी हा हंसी कहताहुआ भ्रमण कररहाथा अब तुम्हारे निकट पहुंचगया इससमय तुम्हारे मुखरूपी चन्द्रमाकेदर्शनसे असंख्य दुःखरूपी अंधकारका नाशहुआहै हे सुंदरी अपनी दृष्टिरूपी नील कमलकी मालासे इस अतिथि का पूजन करो इसप्रकार गोमुख के वचन सुनकर अपने पूर्व जन्मके वृत्तान्त से विश्वास युक्त होके कर्पूरिकाने देखो इस आर्यपुत्रका मेरे ऊपर बड़ा स्नेहहै मैं व्यर्थही विरक्तहोगईथी इसप्रकार प्रेमपूर्वक अपने अन्तःकरण में शोचकर कहा ठीकहै वह हंसी मैंही हूं मैं धन्यहूं जिसके लिये आर्यपुत्रने दोनों जन्मों में ऐसा दुःखसहा अब मैं प्रेमसे मोललीगई आपकी दासीहूं यह कहकर उसने गोमुख समेत नरवाहनदत्तको स्नानादि करवाये और सखियों के द्वारा अपने पितासे यह सब वृत्तान्त कहलाभेजा उस वृत्तान्तको सुनकर राजाकर्पूरक अपनी कन्याकी विवाहकी इच्छा जानकर वहीं चलाआया और वहां अपनी कन्याके वर नरवाहनदत्तको विद्याधरों के चक्रवर्त्तियों के लक्षणों से युक्त देखकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ उससमय राजाने अपनेको कृतार्थ जानकर अपनी पुत्री कर्पूरिकाका नरवाहनदत्तके साथ विवाह करदिया और तीन २ करोड़ अशर्फी तीन २ करोड़ पल कपूर दश २ करोड़ वस्त्र और तीन २ सौ आभूषित दासी प्रति प्रदक्षणा में उसको दीनी उससमय सुवर्ण और कपूरके समूह वहां ऐसे शोभित होतेथे कि मानों पार्वतीजी के विवाहके देखनेवाले सुमेरु और कैलासके शिखर विवाहकी शोभा देखनेको आयेहैं नरवाहनदत्त मूर्त्तिमती प्रीतिकेसमान कर्पूरिकाको पाकर अत्यन्त शोभितहुआ माधवी लता और वसन्तोत्सवकेसमान वधू और वरका संगम देखकर किसका चित्त प्रसन्न नहींहुआ २१६ इस प्रकार विवाहविधि के उत्सवके व्यतीत होजाने पर दूसरे दिन नरवाहनदत्तने कर्पूरिकासेकहा कि चलो कौशाम्बीकोचलें तो वह बोली कि अच्छा उसी अपने आकाशगामी विमानपर चढ़कर चलिये जिससे शीघ्रही पहुंचजायँ और जो वह छोटाहोय तो मैं बड़ा विमान बनवालूं यहां देशान्तर से आयाहुआ प्राणधर नाम बढ़ई रहताहै उससे मैं शीघ्रही विमान बनवालूंगी यह कहकर उसने प्रतीहारको बुलवाकर कहा कि तुम जाकर प्राणधर नाम बढईसे कहो कि मेरेजानेकेलिये आकाशगामी एकबड़ा विमान बनादे यहकहकर उसने प्रतीहारको भेजा और चेरीके हाथ अपने पितासे अपने जानेकी इच्छा कहला भेजी नरवाहनदत्तने प्राणधरका नाम सुनकर यह शोचा कि राज्यधरका भाई यह वही प्राणधर मालूम होताहै जो राजाके भयसे अपने देशको त्यागकर भागाथा उसके इसप्रकार विचारतेही विचारते राजा वहां आगया और प्रतीहार के साथ प्राणधरभी आकर बोला कि एक बड़ा विमान बनायाहुआ मेरे पास रक्खाहै जिसपर हजारों मनुष्य बैठकर सुखपूर्वक जासक्तेहैं प्राणधरके यहवचनसुनकर नरवाहनदत्तने बहुतअच्छा कहकर उससे पूंछा कि क्या तुम राज्यधरके बड़ेभाई अनेकप्रकारके यन्त्रों के जानने वाले प्राणधर हो उसने नम्रता पूर्वक कहा कि हां मै वही प्राणधरहूं परन्तु आप हम दोनोंभाइयोंको

कैसे जानते हैं तब नरवाहनदत्तने जिसप्रकार उसने राज्यधरको देखाथा और जो २ राज्यधरने कहाथा वह सबकहदिया तदनन्तर अपनेश्वशुर राजाकर्पूरककी आज्ञालेकर नरवाहनदत्त कर्पूरिका तथा गोमुख समेत प्राणधर के लायेहुए बड़े विमानपर बैठा और उसीपर कपूरवस्त्र तथा सुवर्णरखवाकर और दासियों कोभी उसीपर बैठालकर चलतेसमय नरवाहनदत्तने ब्राह्मणोंको बहुतसा दानदिया और उसकी सासने उससमय बड़ा मंगलाचारकिया फिर अपने श्वशुरकी आज्ञासे प्राणधरको तथा वहांके एकप्रतीहारकोभी साथलेकर अपने मनोरथके समान पूर्णविमानपर आकाशमार्ग से गमनकरतेहुए नरवाहनदत्तने प्राणधर से कहा कि प्रथम समुद्रके तटपर राज्यधरके पास चलो फिर वहां होकर कौशाम्बीको चलना क्षणभरमें ही समुद्रको लांघकर वह विमान हेमपुरमें राज्यधरके मन्दिरपर पहुंचा वहां राज्यधर अपने भाई को देखकर बड़ा प्रसन्नहुआ और उसके चरणोंपरगिरा फिर नरवाहनदत्त तथा गोमुखसे प्रीतिपूर्व्वक मिला इसप्रकार राज्यधरसे मिलकर और स्नेहसे अपने भाईको नहीं छोड़तेहुए राज्यधरसे किसीप्रकार पूछ-कर नरवाहनदत्त अपने सम्पूर्ण परिकर समेत कौशाम्बीपुरीकोचला और क्षणमात्रमेंही कौशाम्बीके निकट आगया वहां आकाशसे उतरेहुए उसविमानको और परिकर तथा नवीन स्त्री समेत नरवाहनदत्त को देखकर लोगोंको बड़ाआश्चर्य्य हुआ फिर पुरवासियोंके उत्साहसे नरवाहनदत्तको आया जान-कर वत्सराज उदयन् प्रसन्नहोके उसकोलेनेकेलिये रानी मन्त्री तथा बहुओंसमेत आगेआया चरणोंपर गिरतेहुए अपने पुत्रसे मिलकर और विमानसे होनेवाली विद्याधरोंकी चक्रवर्त्तिताकी सूचना जान-कर राजाउदयन् अत्यन्त प्रसन्नहुआ रानीवासवदत्ता तथा पद्मावतीके नरवाहनदत्तको आलिंगनकरके अश्रुपात होनेलगा मानों बहुत कालसे उसके न देखनेके कारण जो दुःखकी गांठपड़गईथी वह पिघ-लगई प्रेम से ईर्ष्यारहित मदनमंचुका तथा रत्नप्रभा ने आनन्दपूर्वक नरवाहनदत्त के चरणों में प्रणाम किया उनदोनोंको ईर्ष्यारहित देखकर नरवाहनदत्तके हृदयमें उनपर बड़ाही अनुराग उत्पन्नहुआ यौग-न्धरायण आदिक पिताके मन्त्रियोंसे और मरुभूति आदिक अपने मन्त्रियों से नरवाहनदत्त यथायोग्य सत्कार पूर्व्वकमिला दाशार्ह कुलके आभूषित करनेवाले अपने पतिसे समुद्रका उल्लंघन करके लाई गई अमृतकी बहिन लक्ष्मीजी के समान कर्पूरिकाको यथायोग्य प्रणामकरते देखकर और उसके साथ अनेक दासियों को देखकर राजा उदयन् आदिक सम्पूर्णलोग अत्यन्त प्रसन्नहुए तदनन्तर सुवर्ण कपूर तथा वस्त्रोंकोदेतेहुए राजाकर्पूरकके प्रतीहारका राजाउदयन्ने बड़ा सत्कारकिया और नरवाह-नदत्तसे बतायेगये विमानके बनानेवाले प्राणधरको उपकारी जानकर उसकाभी बड़ा आदरकिया इस प्रकार सबका आदर सत्कार करके राजाने बड़ा सन्मान करके गोमुखसे पूछा कि तुम किसप्रकारसे गये और कैसे यह राजकन्या मिली तब गोमुखने जैसे वनमें वह तपस्विनी मिलीथी जैसे राज्यधरके दियेहुए विमानपर चढ़के समुद्रके पार पहुंचेथे जैसे विवाहसे विमुखभी कर्पूरिकाको विवाहकेलिये उत्सुक कियाथा और जैसे प्राणधर के बनायेहुए विमानपर चढ़के कौशाम्बी में आये थे वह सम्पूर्ण वृत्तान्त मन्त्रियों तथा रानियों समेत राजाउदयन्से वर्णन किया २५५ गोमुखसे सब वृत्तान्त को सुनकर कहा

शिकार कहां तपस्विनी कहां समुद्रके तटपर राज्यधरनाम बढ़ईका मिलना कहां उसके विमानपर चढ़-कर समुद्रके पारजाना और कहां पहलेहीसे इस दूसरे विमानबनानेवालेका दैवयोगसे वहां पहुंचजाना परमेश्वर भाग्यवान् पुरुषों के कल्याणकी सिद्धिके उपायकी रचनाकी चिन्ता पहलेही से करताहै यह बात वहां सबलोगोंने आनन्दपूर्वक कही और गोमुखके स्वामिभक्तहोनेकी बड़ी प्रशंसाकरी और पतिव्रता धर्म से अत्यन्त संतुष्ट रानीरत्नप्रभाकीभी सब लोगों ने इसलिये बड़ी प्रशंसाकी कि उसनेमार्ग में विद्याको भेजकर अपने पतिकी रक्षाकीथी इसके उपरान्त नरवाहनदत्त अपने पिता माता मन्त्री तथा स्त्रियोंसमेत राजधानीमें गया और अपनेमन्दिरमें पहुँचकर उसने अपनेमित्र तथा बन्धुओंको बहुतसा सुवर्ण देकर प्राणधर तथा राजा कर्पूरकके प्रतीहारको धनसे पूर्ण करदिया तदनन्तर भोजनादिके उपरान्त प्राणधर ने नरवाहनदत्त से कहा कि हे स्वामी राजाकर्पूरकने चलते समय हमसे यह कहदिया है कि कर्पूरिका को कौशाम्बी में पहुँचाकर शीघ्रही लौटआना जिससे मुझे विदित होजाय कि वह आनन्दपूर्वक कौशाम्बीमें पहुँचगई इससे हमलोगों को अभी जानाहै आप कर्पूरिकासे राजाकर्पूरकके नाम एक पत्री लिखवा दीजिये पत्रके बिना अत्यन्त स्नेहयुक्त राजाके चित्तमें विश्वास नहींहोगा उसे यह सन्देह होगा कि कहीं विमानपरसे गिरतो नहीं पड़ी इससे चिट्ठीदेकर मुझको और जानेकेलिये उद्यत इस प्रतीहार को आज्ञादीजिये मैं वहां होकर अपने कुटुम्ब को लेके यहीं लौटआऊंगा क्योंकि आपके अमृतमय चरणकमलों को मैं नहीं छोड़सक्ताहूं प्राणधरके यह वचन सुनकर नरवाहनदत्तने कर्पूरिकाको पत्रलि-खनेकी आज्ञादी तब उसने हे तात श्रेष्ठपति के यहां स्थित मेरे लिये आप कोई चिन्ता न कीजियेगा क्या पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण भगवान्को प्राप्तहुई लक्ष्मी की चिन्ता समुद्रको करनी चाहिये इसप्रकार पत्र लिखकर प्रतीहार को देदिया तब नरवाहनदत्तने प्रतीहार तथा प्राणधरको सत्कारपूर्वक विदाकिया वह दोनों विमानपरचढ़के देखनेवालोको आश्चर्य्य करावतेहुए आकाशमार्ग से समुद्रके पार कर्पूरसम्भव नगरमें पहुँचे वहां उनदोनोंने कर्पूरिका की कुशलकहकर उसके हाथका पत्र राजाको देकर आनन्दित किया दूसरेदिन प्राणधर राजासे आज्ञालेकर अपने कुटुम्बसमेत वहांसे चलकर कौशाम्बी मे नरवाहन-दत्तके निकट आगया नरवाहनदत्तने शीघ्रही उसको अपने मन्दिरहीके पास रहनेको स्थान दिया और उसकी अपने यहांसे बड़ी जीविका करदीनी उसके बनायेहुए विमानोंपर रानियों समेत चढ़कर क्रीड़ा करताहुआ नरवाहनदत्त मानों होनेवाली विद्याधरों की आकाशगति का अभ्यासकरताथा इसप्रकार मित्र मन्त्री तथा रानियोंको आनन्ददेताहुआ नरवाहनदत्त रत्नप्रभा मदनमंचुका तथा तीसरीकर्पूरिका को पाकर सुखपूर्वक दिन व्यतीत करने लगा २७५॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांरत्नप्रभालम्बकेनवमस्तरंगः ९॥

रत्नप्रभानामसातवांलम्बकसमाप्तहुआ॥

सूर्य्यप्रभोनामअष्टमोलम्बकः॥

चलत्कर्णानिलोद्धूत सिन्दूरारुणिताम्बरः॥
जयत्यकालेपिसृजन्सन्ध्यामिवगजाननः १

इसप्रकार मदनमंचुका रत्नप्रभा तथा कर्पूरिकाको पाकर नरवाहनदत्त कौशाम्बी में सुखपूर्व्वक आनन्द करनेलगा, एकसमय सभा में अपने पिता के समीप बैठे हुए नरवाहनदत्त ने आकाश से आयेहुए एक दिव्य पुरुषको देखा और प्रणामकरतेहुए उस पुरुष से आदरपूर्व्वक पूछा कि तुम कौनहो और यहां किसलिये आयेहो तब वह कहनेलगा कि हिमाचल पर्व्वतपर वज्र के समान पुष्ट वज्रकूट नाम यथार्थ नामवाला नगर है उस पुर में सम्पूर्ण विद्याधरों का स्वामी वज्रप्रभ नाम मैं राजाहूं मेरा शरीर वज्र से बनाहुआहै इसीसे मेरानाम यथार्थ है मेरे तपसे प्रसन्नहुए श्रीशिवजीने मुझे यह वरदान दियाहै कि मेरे नियत कियेहुए अपने चक्रवर्त्तियोंके तुम भक्त बनेरहो इससे तुमको कोई शत्रु नहीं जीतसकेंगे इन दिनों अपनी विद्या के प्रभाव से यह जानकर कि वत्सराजका पुत्र कामका अवतार नरवाहनदत्त श्री शिवजीकी कृपा से मनुष्यहोकर भी वेदी के दोनों भागोंका चक्रवर्त्तीहोगा इससे मैं प्रणाम करने को यहां चलाआया हूं यद्यपि पहलेभी श्रीशिवजीकी कृपासे सूर्य्यप्रभ नाम मनुष्यही दिव्य कल्प पर्य्यन्त हमारा चक्रवर्त्ती रहाहै तथापि वह वेदी के दक्षिणभागही का स्वामी था और उत्तर भाग में श्रुतशर्मा नाम चक्रवर्त्ती था परन्तु उन दोनों भागोंके दिव्य कल्पपर्य्यन्त चक्रवर्त्ती होनेवाले अत्यन्त पुण्यवान् आपहीहो उसके यह वचन सुनकर राजाउदयन् और नरवाहनदत्तने कौतुक पूर्वक उससे पूछा कि सूर्य्यप्रभने मनुष्य होकर भी किसप्रकार से विद्याधरों का ऐश्वर्य्य पायाथा सो आप कहिये तब वह राजा वज्रप्रभ मन्त्री तथा रानियोंके आगे उदयन् और नरवाहनदत्त से उसकी कथा कहने लगा कि पूर्वही मद्रदेश में शाकल नाम एक नगरथा वहां अंगारप्रभका पुत्र चन्द्रप्रभ नाम राजाथा सम्पूर्ण संसारको आनन्द देने से उसका यह नाम यथार्थथा परन्तु उसके शत्रु उसको अग्नि के समान सन्तापकारी जाननेथे उसके कीर्त्तिमती नाम रानीमें अत्यन्त शुभलक्षणों से भावी उदयको सूचन करनेवाला पुत्र हुआ उससमय चन्द्रप्रभ के कर्णों में अमृत के समान आनन्द देनेवाली यह आकाशवाणी हुई कि यह सूर्य्यप्रभनाम बालक उत्पन्नहुआ है श्रीशिवजीकी कृपासे यह विद्याधरोंके राजाओं का चक्रवर्त्ती होगा इस आकाशवाणी को सुनकर राजाने बड़ा उत्सव किया, राजपुत्र सूर्य्यप्रभ धीरे २ बढ़ने लगा बाल्यावस्थामेंही वहगुरूके पास जाकर सम्पूर्ण विद्या तथा कलाओंमें पारङ्गत होगया जब वह सोलह वर्षका हुआ तब चन्द्रप्रभने उसके गुणोंसे अत्यन्त प्रजाको प्रसन्न देखकर उसे युवराजपदवी देदी और अपने मंत्रियोंके पुत्र भास, प्रभास, सिद्धार्थ तथा प्रहस्तादिक उसके मन्त्री बनादिये इसप्रकार भास प्रभासादिकों के साथ युवराजपदवी को पाकर सूर्य्यप्रभ के राज्य कार्य्य करनेपर एकसमय मयनाम दैत्य वहां आया और सभा में सूर्य्यप्रभके आगे चन्द्रप्रभ से बोला कि हे राजा यह तुम्हारा पुत्र श्रीशिवजी

की कृपासे विद्याधरों के स्वामियोंका चक्रवर्त्ती होनेवालाहै इससे यह विद्याधरत्वकी प्राप्त करानेवाली विद्याओंको क्यों नहीं सिद्ध करताहै इसीलिये श्रीशिवजीने मुझको यहां भेजाहै इससे जो आपआज्ञादीजिये तो मैं इसेलेजाकर विद्याधरोंके चक्रवर्त्ती होनेकी कारणरूप विद्याओ का साधन इसे सिखाऊं इसकार्य्यमें श्रुतशर्म्मानाम विद्याधर इसका प्रतिद्वन्दी है क्योंकि उसेइन्द्रने विद्याधरों का चक्रवर्त्तीकरने का विचार कियाहै इससे यह जो विद्याओं को सिद्ध करले तो हम लोगोंके साथजाकर उस श्रुतशर्म्माको जीतकर विद्याधरोंका चक्रवर्त्ती होजायगा मयदैत्यके यह वचन सुनकर राजाचन्द्रप्रभ ने कहा कि हम धन्यहैं और यहभी बड़ापुण्यात्माहै जिसपर श्रीशिवजीकी ऐसी कृपाहै आप इसे जहांचाहैं वहां अपनी इच्छाके अनुसार लेजाइये इस प्रकार राजासे आज्ञापाकर मयदैत्य मंत्रियों समेत सूर्य्यप्रभको पातालमें लेगया वहां उसने उसको ऐसे तपोंका उपदेश किया कि जिससे उसने अपने मन्त्रियोंसमेत शीघ्रही सब विद्या सीखली तब मयासुरने विमानका साधनभी उसे बतादिया जिससे उसने भूतासननाम विमान सिद्धकिया तब मयासुर उसी विमानपर मन्त्रियोसमेत सूर्य्यप्रभको चढ़ाकर राजाचन्द्रप्रभकेपास लेआया और बोला कि तुम तबतक इसीलोकमें सिद्धियों के सुखको भोगो जबतक कि मैं न आऊं यह कहकर और इसके कियेहुए पूजनको ग्रहण करके मयासुर चलागया और राजा चन्द्रप्रभ अपने पुत्रको विद्याओंसे संपन्न देखकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ ३६ सूर्य्यप्रभभी विद्याओं के प्रभाव से विमानपर चढ़कर अपने मन्त्रियों समेत नानादेशोंमें भ्रमण करनेलगा जहांजहां जिसजिस राजकन्याने उसे देखा उसउस ने काम से मोहितहोकर उसकेसाथ स्वयंवर किया ताम्रलिप्ती के राजा वीरभटकी अत्यन्त सुन्दरी मदनसेना नाम कन्या अपरान्त देशके स्वामी राजासुभटकी चन्द्रिकावतीनाम कन्या जिसे सिद्धलोगोंने लेजाकर अन्यस्थानमें रक्खाथा कांची नगरी के स्वामी राजाकुंभीरक की अत्यन्त रूपवती वरुणसेनानाम कन्या लावाणकदेशके स्वामी राजा पौरवकी अत्यन्त सुन्दरनेत्रवाली सुलोचनानाम कन्या चीनदेशके राजा सुरोहकी सुन्दरसुवर्ण के समान वर्णवाली विद्युन्मालानामकन्या श्रीकंठदेशके राजाकान्तिसेनकी कान्तिसे अप्सराओंको जीतनेवाली कान्तिमतीनाम कन्या और कौशाम्बी नगरीके राजा जनमेजयकी अत्यन्त मधुर बोलनेवाली परपुष्टानाम कन्या इनसातों कन्याओंको उनके पिताओंसे बिना कहेही सूर्य्यप्रभ हरलाया परन्तु उनलोगों ने जानकरभी विद्याके प्रभाव से भयभीत होकर क्रोध नहीं किया किन्तु नम्रही बनेरहे इन सातों अपनी प्रियोंको भी विद्या सिखाकर सूर्य्यप्रभ विद्याके प्रभावसे अनेक स्वरूप धरके उनसबोंके साथ एक साथही रमण करनेलगा और अपने मन्त्री तथा रानियों समेत आकाश में विहार संगीत तथा मद्यपानादिक क्रीड़ा करनेलगा वह दिव्य चित्र तथा कलाओंको जानताथा इससे कभी कभी विद्याधरी स्त्रियोंके चित्रबनाकर और क्रीड़ा में कुटिल वचनकहकर प्रियाओं को मनाने के लिये कुपित करताथा और टेढ़ी भृकुटी तथा लालनेत्र वाले उनके मुखोंको देखकर और कंपायमान ओठों से स्पष्टता पूर्व्वक नहीं निकलते हुए वचनो को सुनकर अत्यन्त प्रसन्नहोताथा एक समय सूर्य्यप्रभ अपने मंत्री तथा रानियों समेत आकाशमार्ग से

ताम्रलिप्ती में जाकर वहांके उपवनों में मदनसेना के साथ विहार करनेलगा एक दिन वहीं संपूर्णमंत्री तथा रानियोंको छोड़कर भूतासन विमानपर चढ़के प्रहस्तको अपनेसाथ लेकर वज्ररात्र नगरको गया और रम्भनाम राजाकी तारावली नाम कन्याको अपनेऊपर अनुरक्त तथा कामाग्निसे पीड़ितजानकर वहांसे हरकर ताम्रलिप्ती में लेआया और वहांआकर वहीं के राजाकी विलासिनीनाम एक दूसरीकन्या को भी हरलाया विलासिनी का भाई अपने मामा तथा सेवकोंको साथलेकर कुपितहोकर उससे लड़ने को आया उनसवको उसने अपनी विद्याके प्रभाव से स्तम्भित करदिया और उनके शिर मुड़वादिये परन्तु उन्हे अपनी प्रियाके बन्धु जानकर मारानहीं और उनके अभिमान को नष्ट देखकर उन्हें छोड़ दिया तदनन्तर अपने पिताकेबुलानेसे अपनी नवों प्रियाओंको साथलेके सूर्यप्रभ उसीविमानपर चढ़कर अपने शाकलपुरको चलाआया उसके पहुँचतेही ताम्रलिप्तीसे राजावीरभटने चन्द्रप्रभके पास दूत के द्वारा यह संदेसा भेजा कि तुम्हारे पुत्रने हमारी दो कन्या हरली हैं इसमें कोई अनुचित बात नहीं है क्योंकि यह उनके योग्य पति है जो आपलोगोंको हमपर स्नेह है तो यहां आइये मैं विवाहका संपूर्ण आचार पूर्णकरूं दूतके यह वचन सुनके उसका सत्कार करके राजाचन्द्रप्रभने दूसरेही दिन ताम्रलिप्ती के जाने का विचार किया और राजा वीरभटकी सत्यताको निश्चय करनेके लिये दूतके आने जानेमें देर होना जानके प्रहस्तको उसके पासभेजा प्रहस्त शीघ्रही आकाशमार्गसे राजा वीरभटके पासजाकर उससे वार्त्तालाप करके उसे विश्वासपात्र जानकर और उससे यह कहकर कि प्रातःकालही मेरे स्वामी आप के पास आवेंगे अपने राजाचन्द्रप्रभके पास लौट आया प्रहस्त से वीरभटको विश्वासपात्र जानकर और संपूर्ण सामग्री उसके यहां इकट्ठीहुई सुनकर चन्द्रप्रभ अपनीरानी कीर्त्तिमती सूर्य्यप्रभ विलासिनी तथा मदनसेना और अपने तथा सूर्य्यप्रभ के मन्त्री इन सबको अपने साथ लेके भूतासन विमान पर चढ़ प्रातःकालही चला और पहरभर दिनचढ़े ताम्रलिप्तीके निकट पहुँचगया वहां आकाशसे उतरकर पहलेही से लेनेके लिये आयेहुए राजा वीरभटके साथ उसपुरीके भीतर गया चन्दनके जलसे सिचीहुई उसपुरीके मार्गमें पुरकी स्त्रियां नीलकमलोंकेसमान अपनेकटाक्ष फेंकरहींथी वीरभटने अपनेसंबंधी तथा जामाताको मन्दिर में लेजाकर पूजनकिया और अपनी दोनों कन्याओंको विवाहका आचार सूर्य्यप्रभके साथ कर दिया और ढाई २ मनकी हजार बिंद्री सुवर्ण रत्नोंसे भरेहुए आभूषणोंके सौ ऊंट अनेक प्रकारके श्रेष्ठ वस्त्रों से लदेहुए पांचसौऊंट सातहजार घोड़े पांचहजार हाथी और रूपतथा आभूषणोंसे अलंकृत एक हजार दासी अपनी कन्याओंको वेदीपर संकल्पकरके दीं और सूर्य्यप्रभ तथा चन्द्रप्रभको अनेक प्रकारके रत्न तथा देश दिये और प्रहस्तादिक मन्त्रियोंको भी बहुतसा धन देकर तृप्त किया उस दिन सम्पूर्ण नगरी के जनों ने अपने २ गृहमें बड़ा उत्सवकिया और सूर्य्यप्रभ अपने माता पिता मन्त्री तथा स्त्रियों समेत बड़े २ उत्तम दिव्य भोजनकरके और मद्यपीके गान सुननेलगा उससमय वज्ररात्रपुर से राजा रम्भका भेजाहुआ दूत सभामें आकर सबके सन्मुख अपने स्वामी का वचन कहनेलगा कि विद्याओं के बल से बड़े अभिमानी सूर्य्यप्रभ ने मेरी कन्या को हरके मेरा बड़ा तिरस्कार किया अब मुझे मालूम हुआ

है कि राजा वीरभट जिसका कि हमारेही समान तुमने तिरस्कार किया था उसके साथ तुमने सन्धि करली है उसीप्रकार जो हमारे भी साथ सन्धि करनाचाहते हो तो यहां आओ नहीं तो मैं अपने प्राण त्याग करदूंगा दूत के वचन सुनकर राजा चन्द्रप्रभने उसका बड़ा सत्कारकिया और प्रहस्तसे कहा कि तुम राजारंभके यहां जाकर मेरे यह वचन कहो कि व्यर्थ क्यो सन्ताप करतेहो श्रीशिवजी ने सूर्य्यप्रभ को विद्याधरोंका भावी चक्रवर्ती नियत कियाहै और तुमलोगोंकी कन्या उसकी रानीहोंगी इससे तुम्हारी कन्या उचित स्थानमें प्राप्तहुई है तुमसे कन्या इसलिये नहींमांगी कि तुम्हारा स्वभाव बड़ा कठिन है इससे अब तुम सन्ताप न करो तुम हमारे मित्रहो हम तुम्हारे यहाँ अवश्य आवेंगे राजाका यह सन्देसा सुनकर प्रहस्तने पहरभरमें वज्ररात्र नगरमें पहुँचकर राजारम्भसे सबसंदेसा कहदिया और उसकी अनुमति लेकर लौटके राजा चन्द्रप्रभ से कहदिया कि वह आपके संदेसेसे प्रसन्नहै आप वहां चलिये तब राजा चन्द्रप्रभने प्रभासनाम मन्त्री से कहा कि तुम शाकलमे जाकर राजा रम्भकी कन्या तारावली को लेकर वज्ररात्रको चलो मैं भी वहीं आताहूं इसप्रकार उसे भेजके राजा चन्द्रप्रभ सूर्य्यप्रभ तथा वीरभट और अन्य अपने सब परिकरको साथमें लेके वज्ररात्र नगरमें पहुँचा वहां पहलेही से सबलोग उस का मार्ग देखरहे थे राजा रम्भ ने आगेआकर उनसबको अपनी राजधानी में लेजाकर प्रभास के साथ आईहुई अपनी तारावली कन्याके विवाह आचार सूर्य्यप्रभके साथ करदिया और असंख्य अशर्फी हाथी घोड़े तथा रत्नादिक अपनी कन्याको दहेजमें दिये और अपने जामाता सूर्य्यप्रभकी ऐसी सेवा किया कि जिससे उसे अपने यहां के सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य भूलगये जब यह सम्पूर्ण लोग उस उत्सव में आनन्दित होरहेथे उसीसमय कांची नगरी से राजा रम्भके पास दूतआया उससे सब संदेसेको सुनकर राजा रम्भने चन्द्रप्रभसे कहा कि कांची का राजा कुम्भीर मेरा बड़ाभाई है उसने मेरे पास इसलिये दूत भेजाहै कि सूर्य्यप्रभ पहले मेरी कन्या हरलेगया था उसके पीछे तुम्हारी मैंने सुनाहै कि तुमने उसके साथ मित्रता करलीनी है इससे उनके साथ मेरी भी मित्रता करवादो वह सब लोग मेरे यहां भी आवें मैं अपने हाथसे वरुणसेनाको संकल्पकरके सूर्य्यप्रभको दूं यहउसकी प्रार्थनाहै उसे आप पूर्ण कीजिये रम्भके यह वचन सुनकर राजा चन्द्रप्रभने विश्वासकरके प्रहस्तसे कहा कि शीघ्रही शाकल से वरुणसेनाको लेकर कांची मे आओ मैं भी वहीं आताहूं इसप्रकार उसे भेजकर दूसरे दिन राजा चन्द्रप्रभ सूर्य्यप्रभ रम्भ वीरभट तथा अन्य परिकरको लेकर विमानपर चढ़कर काञ्ची नगरी को गया अनेक प्रकार के रत्नों से जटित गुणों से गुंफित पृथ्वी की काञ्ची के समान काञ्चीपुरी में राजा कुम्भीर ने उसे राजमन्दिर में लेजाकर सूर्य्यप्रभ के साथ अपनी कन्या का विवाह कर दिया और बहुतसा धन जामाता तथा अपनी कन्याको दिया १०६ विवाह के उपरान्त भोजन करके जब सब लोग सुखपूर्वक बैठे तब प्रहस्त ने सबके आगे चन्द्रप्रभ से कहा कि हे स्वामी मैं घूमताघूमता श्रीकण्ठदेश में गया था वहां किसी प्रसंगसे मिलेहुए राजा क्रान्तिसेन ने मुझसे कहा था कि सूर्य्यप्रभ मेरी कान्तिमती नाम कन्याको हरलेगयाहै वह यहां आवे तो मैं अपनी कन्याका विवाह उसके साथ करदूं नहीं तो स्नेह से

मोहितहोकर मैं अपना शरीर त्यागदूंगा उसके यह वचन आज मैंने प्रसंगपाकर आप से कहे हैं प्रहस्तके यह वचन सुनकर राजा ने उससे कहा कि तुम शाकलसे कान्तिमती को लेकर राजा कान्तिसेन के पास जाओ मैंभी सबको लेकर आताहूं राजा के यह वचन सुनकर प्रहस्त शाकल में जाकर कान्तिमती को लेकर राजा कान्तिसेन के पास गया और प्रातःकाल राजा चन्द्रप्रभ, सूर्य्यप्रभ तथा कुंभीरादिक सम्पूर्ण परिकरको लेकर आकाशगामी विमान पर चढ़कर श्रीकण्ठदेश में पहुँचा वहां राजा कान्तिसेन ने आगे आकर सबको पुरी में लेजाकर सूर्य्यप्रभ के साथ अपनी कान्तिमती का विवाहकरदिया और इन पिता पुत्रों को अपरमित आश्चर्य्यकारी रत्न दिये तदनन्तर भोजनादि करके सबलोगों के सुखपूर्व्वक बैठनेपर कौशाम्बी नगरी के राजा का दूत आकर बोला कि राजा जनमेजय ने आपलोगो से यह कहा है कि मेरी परपुष्टानाम कन्याको कोई हरलेगया था आज मुझे मालूम हुआ है कि उसे सूर्य्यप्रभ लेगयाहै तो वह उसको साथ लेकर निर्भयहोकर मेरे यहां आवे मैं परपुष्टा के विवाह का आचार करके उसे विदाकरूंगा नहीं तो तुम हमारे शत्रु और हम तुम्हारे शत्रु इसप्रकार अपने स्वामी के वचन कहकर दूत के चुपहोजानेपर चन्द्रप्रभ ने एकान्त में सम्पूर्ण राजा तथा मन्त्रियों से कहा कि इसप्रकार अभिमानयुक्त वचन कहनेवाले राजा जनमेजय के यहां जाना कैसे योग्य है यह सुनकर सिद्धार्थनाम मन्त्री बोला कि हे स्वामी इसमें कुछ अनुचित नहीं है उसे ऐसाकहना योग्यही है राजा जनमेजय महादानी महापण्डित महा शूर कुलीन तथा अश्वमेध यज्ञकाकरनेवाला है वह कभी किसी से हारा नहीं है इससे उसके इस यथार्थ वचन में अनुचितही क्या है और जो उसने शत्रुताका नाम लियाहै सो इसमें कुछ इन्द्रका कारण है इससे उसके यहां अवश्य जानाचाहिये परन्तु यद्यपि वह राजा सत्यसन्ध है तथापि उसकी चित्तकी वृत्तिजानने के लिये प्रथम किसी को भेजदीजिये सिद्धार्थ के यह वचन सुनकर सबलोग बोले कि बहुतठीक है तब चन्द्रप्रभ ने दूतका सत्कारकरके प्रहस्त को जनमेजय के यहां भेजा प्रहस्त ने कौशाम्बी में जाकर राजा जनमेजय से वार्त्तालाप करके उसकी चित्तवृत्ति जानली और उससे एक लेख लिखवाकर राजा चन्द्रप्रभ को लाकरदिया लेख को देखकर प्रसन्नहोके चन्द्रप्रभ ने प्रहस्तकोही शाकल से परपुष्टा को लेकर कौशाम्बी जानेकी आज्ञादी प्रहस्त के चलेजानेपर दूसरे दिन सूर्य्यप्रभ कान्तिसेना तथा सम्पूर्ण परिकर को लेकर विमानपर चढ़के राजा चन्द्रप्रभ कौशाम्बी में पहुँचा वहां राजा जनमेजय ने नम्रतापूर्व्वक अगमानी आदि से सबका सत्कारकरके अपनी कन्याका विवाह सूर्य्यप्रभ के साथ करदिया और पांच हजार हाथी एक लाख श्रेष्ठ घोड़े और रत्न सुवर्ण वस्त्र कपूर तथा अगर से भरेहुए पांच हजार ऊंट दिये और ब्राह्मणों का तथा सब राजा लोगों का पूजनकरके इतना उत्सव किया कि जिससे सम्पूर्णनगर नृत्य तथा वाद्यमय ज्ञातहोनेलगा १३३ उससमय अकस्मात् आकाश पीतवर्ण होगया उससे यह सूचित होताथा कि मानों अभी आकाश रुधिरसे रक्तवर्ण होना चाहताहै दिशाओं में भयंकर शब्दहोनेलगे मानों शत्रुओं की सेनाको देखकर वह डरगई और बड़ी प्रचण्ड वायु चलनेलगी मानों देवतालोगों के साथ युद्ध करने के लिये पृथ्वी से

मनुष्योको ऊपर फेंकना चाहती थी उसी क्षणमें विद्याधरोंकी बड़ी सेना आकाशमें दिखाईदी उनकी कान्तिसे सम्पूर्ण दिशायें देदीप्यमानहोकर उनके गम्भीर शब्दोसे पूर्णहोगईं उस सेनाके बीचमें एक बड़ा सुन्दर विद्याधर कुमार सूर्य्यप्रभ आदिकोंको दिखाई दिया उससमय उस कुमारके आगे खड़ेहोकर विद्याधरोंका वन्दी उच्चस्वरसे बोला कि यह आषाढ़ेश्वरका पुत्र दामोदरनाम युवराजहै हे पृथ्वीके रहनेवाले मनुष्य सूर्य्यप्रभ इसके पैरोंपर आकर गिर हे जनमेजय तू भी आकर इसे प्रणामकर तूने अपनी कन्या अयोग्य पुरुषको देदी है इससे इसका सेवनकर नही तो यह तेरे अपराधको नहीं क्षमा करेगा वन्दी के यह वचन सुनकर और उनकी सेनाको देखकर सूर्य्यप्रभ अपने खड्ग तथा ढालको लेकर आकाशको चलागया उसकेपीछे प्रहस्त प्रभास भास सिद्धार्थ प्रज्ञाढ्य, सर्वदमन, वीतभीति, और शुभंकर यह सब मन्त्री अपने २ शस्त्रलेकर विद्याओंके प्रभावसे आकाशमें चलेगये और उनके साथ विद्याधरोका युद्धहोनेलगा और सूर्य्यप्रभ खड्गसे शत्रुओंको मारताहुआ और उनके शस्त्रोंको अपनी ढालपर रोकताहुआ दामोदरकी ओरचला दामोदरके साथ तो लाखोंपुरुषथे और सूर्यप्रभकेसाथ आठही थे परन्तु उन लाखोंको युद्धमें वह आठों अपने समानही मालूमहुए शूरोंके शरीर में लगतेहुए रुधिर से रक्तखड्ग यमराजकी दृष्टिके समान शोभितहुए युद्धमें मरेहुए विद्याधर भयसे मानों शरणके लिये पृथ्वीपर चन्द्रप्रभके आगे गिरने लगे उससमय सूर्य्यप्रभ शत्रुओं को मारकर सिंदूरके समान रुधिरसे आकाशको रक्तवर्ण करके सूर्य्य के समान अत्यन्त शोभित होताहुआ दामोदर के साथ जाके लड़ने लगा और अपनी खड्गसे उसकी ढालको काटके उसे पृथ्वी में गेरकर जैसेही सूर्य्यप्रभने उसका शिरकाटना चाहा वैसेही विष्णुभगवान्‌ने आकाश में आकर हुंकारशब्द किया हुंकारको सुनके और विष्णुभगवान्‌के दर्शन करके उसने विष्णुभगवान्‌के गौरवसे दामोदर को छोड़दिया उसेबचाकर और उसको अपने साथलेकर विष्णुभगवान् अन्तर्द्धान होगये ठीकहै विष्णुभगवान् अपने भक्तकी सदैव सर्वत्र रक्षाकरतेहैं तब दामोदरकी सेनातो इधर उधर भागगई और सूर्य्यप्रभ आकाश से उतरकर अपने पिताकेपास आया मंत्रियों समेत सूर्य्यप्रभको शत्रुओं को जीतकर आकाश से आया देखकर चन्द्रप्रभ तथा अन्य राजालोग उसपर अत्यन्त प्रसन्न होकर उसकी प्रशंसा करनेलगे तदनन्तर प्रसन्नता पूर्व्वक बैठेहुए सब लोगों के पास राजा सुभटके दूतने आकर चन्द्रप्रभ के आगे पत्ररखदिया उस लेखको सिद्धार्थने सभामें बांचा उसमें लिखाथा कि कौंकण देशसे राजासुभट आदर पूर्वक उन्नत वंशोंके मौक्तिकमणि श्रीमान् राजाचन्द्रप्रभसे यह विज्ञापन करताहै कि मेरी कन्याको रात्रिके समय कोई हरलेगयाथा मैंने सुनाहै कि वह आपकाही पुत्रथा इससे मुझे बड़ी प्रसन्नताहुई है सो आपकृपा करके सूर्य्यप्रभको साथ लेकर मेरे यहां भी आइये मैं यहां परलोकसे मानों लौटीहुई अपनी कन्याको देखूं और उसका विवाह आपके पुत्रसेकरूं इस पत्रको सुनकर राजाचन्द्रप्रभने दूतका बड़ा सत्कार किया और प्रहस्तसे कहा कि तुम शाकलसे चन्द्रिकावतीको लेकर कौंकण देशमें जाओ मैं भी वहीं आताहूं प्रातःकाल राजाचन्द्रप्रभ सूर्य्यप्रभ आदिकोंको साथ लेकर उसी विमानपर बैठकर कौंकण

देशमें पहुंचा वहां राजासुभटने उन सबका बड़ा सत्कार करके सूर्य्यप्रभके साथ अपनी कन्याका विवाहोत्सव किया और इतने रत्नादिक चन्द्रिकावतीको दिये जिन्हें देखकर वीरभटादिक सब राजालज्जितहोगये इसके उपरान्त लावाणकसे राजापौरवके दूतने आकर चन्द्रप्रभसे अपने स्वामीके यह वचन कहे कि सूर्य्यप्रभ मेरी सुलोचनानाम कन्याको हरलेगयाहै इसमें मुझे कोई सन्ताप नहीं है अब आप सूर्य्यप्रभको मेरी कन्यासमेत साथलेकर मेरे यहां आइये मैं विवाहका आचार और उत्सव करूं दूतके यह वचन सुनकर चन्द्रप्रभने उसका बड़ा सत्कारकिया और प्रहस्तको शाकलसे सुलोचनाको लेकर लावाणकजाने की आज्ञादी तदनन्तर चन्द्रादिक सम्पूर्णलोग विमानपर चढ़कर लावाणक देशकोगये वहां राजापौरवने प्रहस्तके साथ आईहुई सुलोचनाका सूर्य्यप्रभके साथ विवाहोत्सव किया और बहुतसे रत्न उन दोनोंको दिये इसप्रकार विवाहोत्सवके पीछे उन सम्पूर्ण लोगोंके सुख पूर्व्वक वहां रहनेपर चीन देशके स्वामी राजासुरोहकादूत आकर राजाचन्द्रप्रभसे कहनेलगा कि सूर्य्यप्रभ मेरी विद्युन्मालानाम कन्याको हरलेगया है इससे आपलोग उस कन्यासमेत सूर्य्यप्रभको साथलेकर यहां आइये मैं अपनी कन्याका विवाहोत्सव करूंगा दूतके यह वचन सुनके राजाचन्द्रप्रभने उसका बड़ा सत्कार करके प्रहस्तको विद्युन्मालालेकर चीनदेशमें जानेकी आज्ञादी दूसरे दिन राजाचन्द्रप्रभ सूर्य्यप्रभादिकोंको साथलेकर उसी विमानमें बैठके चीनदेशको गया वहां राजासुरोहने इन सब को अपने परकोटेमें लेजाकर अपनी कन्याका विवाहोत्सव किया और असंख्य सुवर्ण हाथी घोड़े रत्न तथा चीनके अमूल्यवस्त्र दिये सुरोहसे अत्यन्त आदर कियेगये चन्द्रप्रभादि सब लोग वहां सुखपूर्व्वक कई दिन रहे और सूर्य्यप्रभभी घनयौवनसे युक्तहोकर विद्युन्मालाके साथ वर्षाकालके समान शोभित होताहुआ और अपनी सम्पूर्णस्त्रियोंके साथ विहारकरताहुआ अपने श्वशुरके ऐश्वर्य्यको भोगताहुआरहा कुछ दिनों के उपरान्त मन्त्रियो से सलाहकरके राजाचन्द्रप्रभ अपने पुत्रवहू मन्त्री तथापरिकरको साथलेकर विमानपर चढ़करचला और वीरभटादिक सब राजालोगोंको वहीं से अपने २ देश जानेकेलिये विदाकरदिया फिर सूर्य्यप्रभ सहित राजाचन्द्रप्रभने शाकलमें पहुंचकर अत्यन्त उत्सव करके कहीं नृत्य कहीं संगीत कहीं पान क्रीड़ा कहीं स्त्रियोका शृंगारकरना और कहीं यथेष्टधनपाकर प्रसन्नहुए वन्दियों की प्रशंसायुक्त कोलाहल इत्यादिक आनन्द में शाकल देशको मग्न किया तदनन्तर सूर्यप्रभ अपने २ पिताओं के यहां स्थित अपनी प्रियाओंको हाथी घोड़े रथ सुवर्ण रत्न तथा ऊंट आदिक असंख्य ऐश्वर्य्य समेत शाकलमे लेआया उस ऐश्वर्य्यको देखकर सब प्रजाको निश्चयहोताथा कि यह सब दिग्विजयकर आयाहै उससमय बहुतसेवसु (धन और अष्टवसु) तथा निधान (खान) से युक्त वह शाकल नगर उस महाभोगी (बड़ा सर्प और बड़ा भोगकरनेवाला) सूर्यप्रभको पाकर स्वर्ग अलका तथा पाताल इन तीनों को मिलाकर बनायागयाहुआसा शोभितहुआ इसप्रकार विवाहो के होजानेपर सूर्यप्रभ मदनसेना आदिक अपनी सम्पूर्ण स्त्रियोंके साथ यथेष्टसुख अनुभवकरताहुआ फिर आनेको कह जानेवाले मयदैत्यके आनेकी बाट देखताहुआ अपने मन्त्रियों समेत सुखपूर्वक रहा १८७॥ इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांसूर्य्यप्रभलम्बकेप्रथमस्तरंगः १॥

इसके उपरान्त एकसमय सूर्य्यप्रभ तथा सम्पूर्णमन्त्रियोंसमेत राजाचन्द्रप्रभ सभामें बैठाहुआ सिद्धार्थ की कहीहुई कथाकेप्रसंगसे मयासुरका स्मरण करनेलगा उससमय अकस्मात्सभाके बीचहीमें पृथ्वी फट गई और उसमेंसे प्रथम तो शब्दसहित सुगन्धित वायुनिकली और पीछेसे मयासुर निकलआया उसके कृष्णवर्ण ऊंचेशिरमें सींगोंपर तथा केशोंपर दिव्यऔषधी देदीप्यमानहोरहीथीं और वह रक्तवर्ण के वस्त्र पहरेहुएथा इससे रात्रिमे पर्व्वतके समान उसकी शोभाहो रही थी मयासुर राजा चन्द्रप्रभ से योग्यपूजन को ग्रहणकरके रत्नके सिंहासनपर बैठकर बोला कि तुमलोग पृथ्वीके ऐश्वर्य तो भोगचुके अवदूसरा समय आगयाहै उसके लिये उद्योगकरो दूतोंको भेजकर अपने संबंधी तथा बांधव राजालोगोंको बुलवाओ तव मैं तुम्हें सुमेरुनाम विद्याधरों के स्वामीके पासलेचलूं उससे मिलकर श्रुतशर्म्मानाम विद्याधर को जीतलेंगे तव विद्याधरोंकाराज्य मिलैगा विद्याधरोंका राजासुमेरु हमलोगोंका सहायकहै क्योंकि श्री शिवजी ने उसे प्रथमही यह आज्ञादेरक्खी है कि तुम अपनी कन्याकी रक्षाकरो इसका विवाहसूर्य्यप्रभ से करना मयासुरके यह वचन सुनकर चन्द्रप्रभ ने प्रहस्तादिक आकाशमे चलनेवाले मंत्रियोंको संबंधीतथा बान्धवोंके पास बुलानेकेलिये भेजा और सूर्य्यप्रभ ने अपने संपूर्ण मंत्री तथा रानियोंको जिनको कि प्रथम विद्यानहीं वताईथी वतादीं उससमय आकाशसे नारदमुनि अपनी प्रभासे दिशाओं को प्रकाशित करते हुए उतरे और अर्घादिक पूजन ग्रहण करके बोले कि इन्द्रने मुझे तुम्हारे पास भेजाहै और यहकहाहै कि मैंने सुनाहै कि आपलोग श्रीशिवजीकी आज्ञासे मयासुर के साथ मित्रताकरके अज्ञानता से मोहितहोके इसमनुष्य सूर्य्यप्रभ के लिये संपूर्ण विद्याधरोंके राजाओं के चक्रवर्ती का अधिकारसिद्ध करना चाहतेहो यह अनुचितहै मैंने यह अधिकार विद्याधरोंके कुलचन्द्र श्रुतशर्म्माको दियाहै क्योंकि यह उसके पुरखों से चलाआताहै हमसेविरुद्ध होकर औरधर्मको छोड़कर तुम जो ऐसाकरोगे तो तुम्हारा नाशहोजायगा पहले जव तुम रुद्र यज्ञकररहे थे तव मैंने तुमसेकहाथा कि अश्वमेधयज्ञकरके अन्य यज्ञकरो परन्तु तुमने मेरा वह कहना तवभी नहींस्वीकार कियाथा इससे संपूर्ण देवतालोगोंको तिरस्कारकरके केवल शिवकी ही प्रत्याशासे जो अभिमानकरते हो इसमे तुम्हारा कल्याण नहीं है इन्द्रके इससन्देशको सुनकर मयासुर हँसकरबोला कि इन्द्रकाकहना उचितनहींहैजो उसने सूर्य्यप्रभ को मनुष्य कहाहै सो सत्यहै परन्तु क्या दामोदर के संग्राम में उसका प्रभाव इन्द्र ने नहीं जाना सत्त्वयुक्त मनुष्यहो संपूर्ण सिद्धियोंके अधिकारी होतेहैं देखोपूर्व्वही राजानहुष आदिकों ने क्या इन्द्रकी पदवी नहींपाई है और जो उसनेकहा कि हमने श्रुतशर्म्माको चक्रवर्त्ती की पदवीदीहै क्योंकि उसके वहपदवी कुलपरम्परासे चलीआती है सोभी उचितनहीं है जहां साक्षात् शिवजी देने वालेहैं वहां अन्यप्रमाण देने की क्या आवश्यकताहै इन्द्रने आपही वड़े भाई हिरण्याक्षसे इन्द्रपदवी क्यों लेली और जो उसने कहा कि तुमहमसे विरुद्धकरते हो और अधर्म्म करतेहो यहभी मिथ्या है क्योंकि वहआपही हठसे हमारेस्वार्थमें विरोधकरतेहैं और हमअपने शत्रुको जीतनाचाहतेहैं इसमें अधर्म्मही क्याहै हमनमुनिकी भार्य्याको हरते हैं और न ब्रह्महत्याकरते हैं और जो उसने कहा कि तुमने

अश्वमेध यज्ञ नहीं किया और देवतालोगों का तिरस्कार किया यहभी कहना उनका ठीकनही है क्योंकि रुद्रयज्ञकरने पर अन्ययज्ञोंसे क्याप्रयोजनहै और संपूर्ण देवताओंके स्वामी श्रीशिवजी के पूजनमें किस देवताका पूजननही होगया और जो उसने कहा कि केवल श्रीशिवजीकी प्रत्याशासे तुम्हारा कल्याण नहीं होगा यहभी महाही अनुचितहै जिसकार्य्य में साक्षात् श्रीशिवजीउद्यतहैं उसमें अन्य देवताओंका क्या प्रयोजनहै क्या सूर्य्य भगवान् के उदयहोनेपर और कोईभी तेज चमकताहै हे नारदजी आप इन्द्रसे यह सब हमारा उत्तर कह दीजिये हम अपने कार्य्यको करतेहैं उनको जैसा उचित समझपड़े सो करें मयासुर के यहवचन सुनकर नारदमुनि प्रतिसंदेश लेकर इन्द्रके पास चले गये नारदके चलेजानेपर इन्द्रके संदेशे से कुछ संदेह युक्त राजाचन्द्रप्रभ को देखकर मयासुर बोला कि इन्द्रसे आपलोगोंको भयनहीकरना चाहिये वहहमारे द्वेषसे संपूर्ण देवतालोगों को साथ में लाकर युद्ध में श्रुतशर्म्मा का पक्षकरेगा और आपके पक्षमें प्रह्लादकी आज्ञा से असंख्य दैत्य दानव होंगे और हमारे ऊपर श्री शिवजी कृपाकरेंगे इससे तीनों लोकों में ऐसा कौनहै जो बिचारा हमारे सन्मुख आवेगा इससे हे वीरलोगो इस कार्य्य में उद्योग करो मयके यह वचनसुनकर सम्पूर्ण लोग प्रसन्न होकर उसके कहने से युद्धकेलिये तैयारहोगये इसके उपरान्त मन्त्रियों के सन्देशे से सबवीर भटादि राजा लोग अपनी २ सेनासमेत वहां आये उन सबका यथायोग्य सत्कारकरके सावधान हुए चन्द्रप्रभसेमय दैत्य फिर बोला कि हे राजा आज तुम रुद्रकी महाबलि करो तदनन्तर जो मैं कहूंगा सो करना-मयासुरके यह वचनसुनकर चन्द्रप्रभने बलिकी सम्पूर्ण सामग्री इकट्ठी करवाई और रात्रिके समयवनमें जाकर मयदैत्यके उपदेश से बलिप्रदान किया और जब राजा भक्तिपूर्व्वक हवन करनेलगा तब साक्षात् नन्दीगण प्रकटहुआ और राजाके पूजनको ग्रहण करके बोला कि श्रीशिवजी ने कहा है कि हमारी कृपासे तुम सैकड़ों इन्द्रोंसे भी मतडरो सूर्य्यप्रभ अवश्य विद्याधरोंका चक्रवर्ती होगा इसप्रकार श्री शिवजीका सन्देशा कहकर और अपना बलिका भागलेकर नंदीश्वर अन्तर्द्धान होगया तब राजा चन्द्रप्रभ अपने पुत्रके उदयमें विश्वासयुक्त होकर बलिको समाप्त करके मयसमेत अपने पुरकोगया प्रातःकाल एकान्तमें रानी पुत्र मन्त्री तथा अपने मित्रराजा लोगों समेत बैठेहुए राजा चन्द्रप्रभ से मयने कहा कि हे राजा तुमसे आज मैं एक गुप्तबात कहताहूं तुम मेरे पुत्र महाबलवान् सुनीथनाम दैत्य हो और सूर्य्यप्रभ सुमुण्डीकनाम तुम्हारा छोटाभाई है तुम दोनों देवता लोगों के युद्धमें मारेगये थे मैंने तुम्हारा शरीर दिव्य औषधियों से लिप्तकर रक्खा है इससे बिवरमें घुसके पाताल में जाके मेरी बताईहुई युक्तिसे अपने पूर्व शरीरमें प्रवेश करो उस शरीरमे प्रवेश करनेसे तुम्हारा तेजवीर्य्य तथाबल इतना बढ़ेगा जिससे तुम देवता लोगोको जीतलोगे और सुमुण्डीकका अवतार यह सूर्य्यप्रभ इसी शरीरसे विद्याधरों का चक्रवर्ती होगा मयासुरके यह वचन चन्द्रप्रभने प्रसन्नता पूर्व्वक स्वीकार करलिये तब सिद्धार्थ ने कहा कि हे दानवोत्तम यह अन्य देहमें प्रविष्टहुआ अथवा मृत्युको प्राप्तहुआ हमारी इस भ्रान्तिको कौन मिटावेगा और यह देहान्तर में जाकर हम लोगोंको भूलजायगा जैसे मरकर फिर

उत्पन्न हुआ मनुष्य पहले सबको भूल जाता है तब हमको इससे क्या और इसे हमलोगों से क्या लाभ होगा सिद्धार्थ के यह वचन सुनकर मयासुर ने कहा कि योगकी युक्ति से स्वतन्त्र होकर अपने पूर्व्व शरीर में प्रवेश करतेहुए इसको तुमलोग भी वहां चलकर देखना यह तुमको भूलेगा नहीं इसमें यह कारण है कि जो अस्वतन्त्र होके मरकरके गर्भ से उत्पन्न होता है वह मरणादि क्लेशों से सब भूल जाता है और जो स्वतन्त्र होकर योगकी युक्ति से अन्तःकरण तथा इन्द्रियों में प्रवेशकरके द्वितीय शरीर में जाता है उसके मन तथा बुद्धि में कोई विकार नहीं होता वह एक घरसे दूसरे घरमें गयेहुए के समान कुछ भी नहीं भूलता है इससे तुम सन्देह न करो इसे वृद्धावस्था और रोगों से रहित दिव्य शरीर प्राप्त होगा तुम सबलोग भी पूर्वजन्म के दैत्य हो पाताल में चलकर अमृत पीने से तुम्हारे भी शरीर नीरोग तथा दिव्य होजायँगे मयके यह वचन सुनकर सबको विश्वास होगया और सबके सन्देह दूर होगये ६४ दूसरे दिन मय के कहने से राजा चन्द्रप्रभ अपने सम्पूर्ण परिकर समेत चन्द्रभागा तथा इरावती नदी के संगम पर गया वहां सम्पूर्ण राजालोगों को तटपर बैठालकर और उन्हीं को सूर्य्यप्रभ की सब रानियां सौंपकर जलमें मयके बतायेहुए विवर में चन्द्रप्रभ ने सूर्य्यप्रभ कीर्तिमती तथा सिद्धार्थ आदिक मंत्रियों समेत प्रवेश किया उस विवर के भीतर कुछ दूर चलकर एक देवमन्दिर उन्हें दिखाई दिया और उसमें वह सबलोग गये इस बीच में जो राजालोग बाहर रहगये थे उनके पास बहुतसी विद्याधरों की सेना ने आकर माया से उन्हें स्तंभित करदिया और सूर्य्यप्रभ की सम्पूर्ण रानियां हरलीनी उससमय यह आकाशवाणी हुई कि अरे पापी श्रुतशर्म्मा जो चक्रवर्त्ती की इन स्त्रियों का तू स्पर्श भी करेगा तो सेना समेत तेरी मृत्यु होजायगी इससे माताके समान गौरवसे इनकी रक्षाकरना अभी तुझे मारकर जो मैंने यह नहीं छुड़ालीनी इसमें कोई कारण है इससे कुछकाल यह तेरेही यहां रहें इस आकाशवाणी को सुनकर सम्पूर्ण विद्याधर अन्तर्द्धान होगये और वीर भटादिक राजा कन्याओं को हरीहुई देखकर परस्पर युद्धकरके शरीरत्याग करनेका विचार करनेलगे उससमय फिर आकाशवाणी हुई कि हे राजालोगो तुम साहस मतकरो इन कन्याओंका कोई बिगाड़ न होगा यह फिर तुमको मिलजायँगी और तुम्हारा कल्याण होगा इस आकाशवाणी को सुनकर सम्पूर्ण राजालोग मरनेका उद्योग त्यागकर वहीं उनकी प्रतीक्षा करनेलगे इस बीचमें उस देवमन्दिर में सबके साथ बैठेहुए राजा चन्द्रप्रभसे मयासुर ने कहा कि हे राजा तुम सावधान होकर सुनो इससमय अन्य शरीर में प्रवेश करनेका बड़ा श्रेष्ठ योग मैं तुमको बताता हूं यह कहकर उसने सांख्य तथा योगका उपदेश किया और योगसे अन्यशरीर में प्रवेश करने की युक्ति बताकर कहा कि यह वह सिद्धि और ज्ञान है जिससे स्वतन्त्रता ऐश्वर्य्य तथा अणिमादिक सिद्धियां प्राप्त होती हैं इस ऐश्वर्य्य को पाकर मोक्षकी भी अभिलाषा नहीं रहती है इसीकेलिये बड़े २ ऋषिमुनि जप तप आदिक क्लेशों को सहते हैं और इसके प्राप्त होनेके पीछे स्वर्गको भी नहीं चाहते हैं इसविषय पर मैं तुमको एककथा सुनाता हूं कि व्यतीतहुए कल्पमें कालनाम एक ब्राह्मण था वह पुष्कर तीर्थपर रात्रि दिन जप करनेलगा उसे जप करते २ दोसै दिव्य वर्ष व्यतीतहुए तब उसके शिरसे अखंड महा-

तेज निकलनेलगा दशहजार सूर्य्यके समान उस तेजसे आकाशमें सिद्धादि देवताओंकी गति रुक गई और तीनो लोक जलनेलगे तब ब्रह्मा तथा इन्द्रादिक देवताओंने उसकेपास आकरकहा कि हे विप्रवर जो तुमको अभीष्ट वरमांगनाहोय सो मांगो तुम्हारे तेजसे सबसंसार जल रहा है देवताओं के यह वचन सुनकर उसनेकहा कि जपके सिवाय मेरा चित्त किसी अन्यमें न लगे यही मुझे चाहिये इस के सिवाय और कुछ मैं नही मांगताहूं इतने पर भी जब देवताओं ने बड़ा हठकिया तब वह ब्राह्मण उसस्थान को छोड़कर हिमालय के उत्तरीय भागमें जाकर जप करनेलगा वहां जानेपर भी जब उसका तेज बहुत असह्यहुआ तब इन्द्रनेविघ्नकेलिये उसकेपास अप्सराभेजीं परन्तु उसधीरने अप्सराओंको तृण समान भी न समझा तब इन्द्रने लाचारहोकर मृत्युको उसकेपास भेजा मृत्युने उसकेपास जाकर कहा कि हे ब्राह्मण मनुष्य इतने दिनतक नहींजीते है इस्से तुम अपने शरीरको त्यागकरो मर्यादाका उल्लंघनकरना उचितनही है मृत्युके यह वचन सुनकर ब्राह्मण बोला कि जो मेरी आयुकी अवधि पूरी होगई होय तो मुझे क्यों नहीं लेचलतेहो किस बातकी प्रतीक्षा करतेहो मैं अपने आपशरीर नहीं त्याग करूंगा क्योंकि अपने आप शरीर त्यागकरने से आत्महत्या लगतीहै इसप्रकार कहतेहुए उसब्राह्मण को मृत्युनहीं लेजासके और पराङ्मुखहोकर लौटगये तब कालके भी जीतनेवाले उसकाल ब्राह्मणको इन्द्र अपने हाथों से स्वर्ग में उठालेगया वहां भी वह स्वर्ग के भोगोंको त्यागकर जपही करतारहा यह देखकर इन्द्रादिक देवता उसे फिर हिमालय पर लेआये और वरमांगनेकेलिये उसे समझानेलगे उस समय उसीमार्ग से राजा इक्ष्वाकुआया और उस वृत्तान्तको जानकर ब्राह्मण से बोला कि जो देवता लोगों से वर नहीं लेतेहो तो मुझसे मांगो उसके यहवचन सुनकर ब्राह्मण ने हँसकरकहा कि देवता लोगोंसे तो मैं वरलेताही नहीं तुम मुझे क्या दोगे यह सुनकर राजा इक्ष्वाकुनेकहा कि जो मैं तुम्हें वर नहीं देसक्ताहूं तो तुमही मुझे वर दो तब जापकनेकहा कि जो तुमको अभीष्ट होय सो मांगो मैं तुमको अवश्य दूंगा यह सुनकर राजाने अपने चित्तमें शोचा कि मैं इस ब्राह्मणकोदूं यह तो उचित है और यह ब्राह्मण मुझकोदे यह उलटी बात है इसप्रकार उसराजाके शोचतेही शोचते दो ब्राह्मण लड़तेहुए वहां आये और राजाको देखकर न्यायकरानेकेलिये अपना २ पक्ष कहनेलगे एकनेकहा कि इसने द क्षिणा सहित एक गौ मुझे संकल्पकरके दीनीथी अब मैं वही गौ इसे संकल्पकरके देताहूं सो यह नहीं लेताहै फिर दूसरेनेकहा कि मैने इसे पहले दानदिया और इस्से फिर कभी मांगानहीं तो यह क्यों मुझे हठपूर्व्वक वही मेरी वस्तुदेता है यह सुनकर राजानेकहा कि दीहुई गौको फिर लेलेनेवाला शुद्धनहीं होसक्ता है इस्से प्रथम गौलेके फिर उसीको देना उचित नहीं है राजाके यह वचन सुनकर इन्द्रने अव सर पाकर कहा कि हे राजा तुम इसप्रकार न्यायको जानकर भी इस ब्राह्मण से वरमांगकर मिलेहुए वरको क्यों नहीं ग्रहण करतेहो यहसुन राजाने निरुत्तरहोकर उस जापक ब्राह्मणसे कहा कि आपमुझे अपने जपका आधाफल देदीजिये यहसुनकर ब्राह्मणनेकहा कि तथास्तु मेरेजपका आधाफल आप को होय उसीसमय उसवरके प्रभाव से राजाकी सब लोकों में जानेकी गतिहोगई और वह जापकभी

देवता लोगोंके लोककोचलागया वहां कई कल्पोंतकरहकर फिर पृथ्वी में उत्पन्नहोके योगके प्रभाव से स्वतन्त्रहोकर निरन्तर सिद्धिको प्राप्तहुआ इसप्रकार विद्वान् लोग स्वर्गादिकों से विमुखहोकर सिद्धियों केहीलिये प्रार्थना किया करते हैं वहसिद्धि तुमको प्राप्त होगई मयदैत्यके यहवचन सुनकर और योग को पाकर राजा चन्द्रप्रभ अपने परिकर सहित बहुत प्रसन्न हुआ तब मयासुर उनसबको दूसरेपाताल में लेजाकर एक दिव्यगृहमें लगया वहाँ उन सबों ने भीतर जाकर एकबड़ी उत्तम शय्यापर किसी पुरुषका बड़ाभारी शरीरपड़ाहुआ देखा उसमें अनेकप्रकारकी महौषधियुक्त घृतलगा था आकृतिमें विकारहोनेसे उसकीचेष्टा भयंकर होरहीथी और बहुतसी उदासीन दैत्योंकी स्त्रिया उसेघेरेहुए बैठीथीं मयासुरने चन्द्रप्रभको वह शरीरदिखाकर कहाकि यहीतुम्हारा पूर्व्वका शरीरहै इसमें तुम प्रवेश करो और यहसम्पूर्ण तुम्हारी स्त्रियां हैं उसके यहवचन सुनकर चन्द्रप्रभ ने अपना मनुष्यशरीर त्यागकर उसमें प्रवेशकिया तब वह शरीर जो शय्यापरपड़ाथा वह जंभाई लेकर धीरेसे नेत्रखोलकर सोतेसे जगेहुएके समान उठखड़ाहुआ उससमय वह सब दैत्यस्त्रियां प्रसन्नहोके कहनेलगीं कि आज भाग्यवशसे हमारेपति सुनीथ जी उठे और सूर्य्यप्रभादिक चन्द्रप्रभ को पृथ्वी में निर्जीव देखकर उदासीन होगये और सुनीथ ने सुखपूर्व्वक सोकर जगेहुए के समान उठकर अपने पिता मयासुरकी चरणोंपर गिरकर वन्दनाकी मयासुरनेभी उसका आलिंगन करके सबकेसन्मुख उससेपूछा कि हेपुत्र तुम्हें अपने दोनोंजन्मोंका स्मरण इससमयहै उसनेकहा कि हां यहकहकर सुनीथ और चन्द्रप्रभ अपने दोनोंजन्मों का सबवृत्तान्त कहदिया औररानीकीर्त्तिमती तथा सूर्य्यप्रभादिकों को नामलेलेकर सावधानकरके अपने पूर्व्वजन्मकी स्त्री दैत्यसुताओं को भी सावधानकिया और अपने चन्द्रप्रभ शरीरको महौषधियुक्त घृत से लिप्तकराकर रखवादिया कि कदाचित् इसका भी उपयोगपड़े तब सूर्य्यप्रभआदि सम्पूर्ण लोग विश्वासयुक्त होकर उसके पैरोंमें गिरे और बहुत प्रसन्नहुए इसके उपरान्त मयासुर उन सबको वहाँ से सुवर्ण तथा रत्नोंसे जटित किसी अन्यपुरमें लगया वहांजाकर उन सबने एक वैडूर्य्यमणि की बनीहुई बावड़ीदेखी उसमें अमृत भराहुआथा उसके तटपर बैठकर विचित्र मणियोंके पात्रोंमें उस बावड़ी का अमृतमय जल सबनेपिया उसके पीनेही उनके शरीर महाबल पराक्रमसेयुक्त दिव्यहोगये तब मयासुर ने सुनीथ से कहा कि हेपुत्र अब अपनी माताके पासचलो उसके यहवचन सुनकर सुनीथ सूर्य्यप्रभादिकोंको साथलेकर मयासुरकेसाथ चौथे पातालमेंगया वहां अनेकप्रकारके बहुतसे धातुमयपुरोंकोदेखते हुएवहसबलोग एकसुवर्णमयपुरमें जिसमें कि रत्नोंकेखम्भेलगेथे पहुंचे वहाँ अनेकदैत्यकन्याओंसेयुक्त अपने स्वरूपसे अप्सराओंकाभी तिरस्कारकरनेवाली सम्पूर्ण आभूषणोंको धारणकियेहुए लीलावतीनाम सुनीथकी माता बैठीथी वह सुनीथ को देखतेही एकाएकी उठ खड़ीहुई और सुनीथ भी उसके पैरोंपर गिरपड़ा उसने बहुत काल के पीछे अपने पुत्रको हृदयसे लगाकर उसकी प्राप्तिके कारण अपने पति मयासुरकी प्रशंसाकरी तब मयासुर ने उससेकहा कि इसका छोटाभाई तुम्हारा दूसरापुत्र सुमुण्डीकभी यह सूर्य्यप्रभ नामसे इसी सुनीथकापुत्र हुआहै इनको श्रीशिवजी ने इसी शरीरसे विद्याधरों का चक्र-

वर्ती भावी नियत कियाहै यहसुनकर लीलावती उत्सुकतासे सूर्य्यप्रभको देखनेलगी और सूर्य्यप्रभ अपने मंत्रियों समेत उसके पैरों पर गिरा सूर्य्यप्रभको पैरोंपरगिरा देखकर लीलावती ने प्रसन्नहोकर कहा कि हे वत्स सुमुण्डीक शरीरसे क्याहै तुम इसीशरीर से शोभित होतेहो उससमय मयासुरने अपनी सुता मन्दोदरी और उसके पति विभीषणका स्मरण किया स्मरणकरतेही मन्दोदरीसमेत विभीषणने आकर सत्कार ग्रहण करके कहा कि हे दानवेन्द्र मेरा कहना मानो तो मैं कहूं सम्पूर्ण दैत्यों में तुम्हीं पुण्यात्मा तथा सुखी हो इससे देवताओं के साथ अकारण शत्रुता न करना देवताओंके साथ विरोध करने में हानिके सिवाय कुछ लाभ नहीं है देखो युद्धमें देवताओंने दैत्योंको माराहै परन्तु दैत्योंने देवताओंको कभी नहीं माराहै यह सुनकर मयासुर ने कहा कि मैं हठपूर्व्वक देवताओं से वैर नहीं करताहूं और जो हठपूर्व्वक इन्द्रही वैरकरे तो बताइये मैं कैसेसहूं और जिन दैत्यों को देवतालोगों ने युद्ध में माराहै वह प्रमादीथे परन्तु बलिआदिक जो प्रमादी न थे उनको वह नहीं मारसके मयासुरके इत्यादि अनेक वचन सुनकर उससे आज्ञा लेकर मन्दोदरी समेत विभीषण अपनी लङ्कापुरीको चलागया तदनन्तर मयासुर सुनीथको सूर्य्यप्रभादिकों समेत तृतीय पाताल में राजा बलिके दर्शन करानेको लेगया स्वर्गसेभी अधिक शोभायमान उसतीसरे पातालमें सबलोगोंने मोतीके हार तथा मुकुट धारण कियेहुए राजा बलिको अनेक दैत्योंके बीचमें बैठाहुआ देखा और क्रमसे उसे यथोचित प्रणामकिया राजाबलिने उनसबका यथोचित सत्कार करके और मयासुरसे सबवृत्तान्त सुनकर प्रह्लाद आदिक सब दैत्योंको शीघ्रही वहीं बुलवाया वहां आएहुए उन सबको भी सुनीथादिकों ने यथायोग्य प्रणाम किया और वह सम्पूर्ण लोग उन्हें देखकर प्रसन्नहुए उससमय सबको यथायोग्य बैठाकर राजाबलिने कहा कि सुनीथ पृथ्वी में राजाचन्द्रप्रभहोकर फिर अपने उसी शरीर में प्रवेश करके जीउठा है और सुमुण्डीक सूर्य्यप्रभनामसे इसीका पुत्र हुआहै इसे श्रीशिवजी ने इसी शरीरसे विद्याधरोंका होनेवाला चक्रवर्त्ती नियत कियाहै सुनीथकेही यज्ञके प्रभावसे मेरे बन्धन शिथिल होगयेहैं इससे इन दोनोंको पाकर अवश्य हमलोगों का उदय होगा बलिके यह वचन सुनकर दैत्योंके गुरु शुक्राचार्य्य बोले कि धर्म्मके अनुसार सत्यमार्ग में चलनेवाले पुरुषोंका सदैव सर्वत्र उदय होता है इससे अबभी हमारा कहना मानकर धर्मानुसार कार्य्यकरो शुक्राचार्य के यह वचन सुनकर सम्पूर्ण दैत्यों ने तबसे धर्म्माचरण करनेका निश्चय किया उस समय वहां सातों पातालों के स्वामी आयेथे उन सबने मिलकर सुनीथकी प्राप्ति के कारण बड़ा उत्सव किया इसी बीच में नारदमुनि वहां आये और अर्घपाद्यादि ग्रहणकर आसनपर सुखपूर्वक बैठके बोले कि इन्द्रने तुमलोगों के पास मुझे भेजाहै और कहाहै कि सुनीथका जीवन सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नताहुई इससे अब तुम हमलोगों के साथ अकारण बैर न करना और हमारे पक्षके श्रुतशर्म्मा से विरोध न करना नारदजी के मुखसे इन्द्रके यह वचन सुनकर प्रह्लादने कहा कि सुनीथ के जीवन से इन्द्रका प्रसन्न होना योग्यही है हमलोग उनसे अकारण विरोध कभी नहीं करते हैं आजही हमलोगों ने अपने गुरुके सन्मुख इस बातका नियम कियाहै और

श्रुतशर्मा इन्द्रका पक्षपाके जो हठ करके हमसे विरोध करताहै इसमें हमारा क्या दोषहै सूर्यप्रभके पक्ष से श्रीशिवजीने उसे विद्याधरोंका भावी चक्रवर्ती नियत किया है क्योंकि इसने प्रहिले उनकी बड़ी आराधनाकी थी इससे ईश्वरेच्छित कार्य्य में हम लोग क्या करसक्ते हैं इस विषय में इन्द्र निष्कारण अनीति करते हैं प्रह्लाद के यह वचन सुनकर नारदमुनि इन्द्रकी निन्दा करके अन्तर्द्धान होगये नारदमुनिके चलेजाने पर शुक्राचार्य्यने दैत्योंसे कहा कि ज्ञातहोताहै कि इसकार्य्य में इन्द्रसे वैरकरना पड़ेगा परन्तु हम लोगोंपर श्रीशिवजीकी कृपाहै इससे वह हमारा क्या करसक्ताहै और उसकी वैष्णवी उपासना भी हमारा क्या करेगी शुक्राचार्य्यके इन वचनों पर विश्वास करके सम्पूर्ण दैत्य प्रह्लाद तथा बलिसे आज्ञा लेकर अपने २ स्थानको गये और प्रह्लादके भी अपने स्थान चौथे पातालमें चलेजाने पर राजाबलि अपनी सभामे उठकर मन्दिर में चलेगये तब मयदैत्य भी बलिको प्रणाम करके सुनीथ तथा सूर्य्यप्रभादिकों को साथ लेकर अपने स्थानको आया वहां आकर उचित भोजन तथा पानके उपरान्त लीलावती ने सुनीथ से कहा कि हे पुत्र तुम जानते हो कि तुम्हारी यह तीन स्त्रियां बड़े २ लोगों की पुत्री हैं तेजस्वती कुबेर की पुत्री है मंगलावती तुम्बुरकी पुत्री है और कीर्त्तिमती जिसके साथ तुमने चन्द्रप्रभ नाम शरीर से विवाह किया था वह प्रभास नाम वसुकी पुत्री है हे पुत्र इन तीनों पर तुम समान दृष्टि रखना यह कहकर उसने उसकी तीनों मुख्य स्त्री उसे सौंपदीनी तदनन्तर उस दिन रात्रि के समय सुनीथ ने अपनी बड़ी पत्नी तेजस्वती के साथ शयन स्थान में जाकर अत्यन्त उत्कण्ठित उस तेजस्वती के साथ भोगविलास किया यद्यपि वह पहले भी इस सुख का अनुभव करचुका था तथापि बहुत काल व्यतीतहोने के कारण उससमय नवीनसा विदितहुआ और सूर्य्यप्रभ तो अपने मंत्रियोंको साथलेकर किसी स्त्री के बिना अकेलाही शय्यापर लेटा उससमय यह अपनी प्रियाओं को बाहरछोड़आया है इससे इस स्नेहरहित के पास न जानाचाहिये इसी कारण से मानों प्रियाओंके बिना उसके पास निद्रारूपी स्त्री भी नहींआई और कार्य्योंकी चिन्तासे शुक्र प्रहस्त के पास भी वह मानों ईर्ष्यासे नहीं आई इन दोनों के सिवाय अन्य सबलोग सुखपूर्वक सोगये १८४ तब सूर्य्यप्रभ और प्रहस्तने सखीसमेत एक बड़ी सुन्दरकन्या वहां आतेहुए देखी वह ऐसी सुन्दरथी कि मानों ब्रह्माने उसे बनाकर पातालमें इसलिये रखछोड़ा था कि इसके आगे मेरी बनाईहुई सम्पूर्ण देवाङ्गणा तुच्छ न होजांय सूर्य्यप्रभ उसे देखनेलगा कि यह कौनहै इतने में वह कन्या सूर्य्यप्रभके सम्पूर्ण मन्त्रियों को देखकर उनमें चक्रवर्त्ती के चिह्न न पाकर उन्हें छोड़कर बीचमें सोतेहुए सूर्य्यप्रभको चक्रवर्त्तियों के चिह्नयुक्त देखकर बोली कि हे सखी यह वही है इसे पैर हिलाकर जगाओ यह सुनकर उसकी सखी ने अपने शीतल हाथों से सूर्य्यप्रभ के कोमल चरणदाबे तब सूर्य्यप्रभने व्याज निद्रा को त्यागके नेत्रोंको खोलकर उन दोनोंको देखकर कहा कि तुम कौनहो और यहां कैसे आईहो यहसुनकर उसकी सखी बोली किसुनिये द्वितीय पातालमें हिरण्याक्षका पुत्र अमीलनाम बलवान् दैत्यराज है उसकी यह प्राणों से भी अधिक प्यारी कलावती नाम कन्या है आज राजाबलि के पाससे आकर

इसके पिताने कहा कि आज भाग्यवशसे फिरकर जियेहुए सुनीथको हमने देखा और सुमुण्डीक के अवतार युवावस्थासेयुक्त सूर्य्यप्रभको भी देखा जो शिवजीकी कृपासे विद्याधरोंका चक्रवर्त्ती होनेवाला है इसहर्षमें सुनीथका मुझे कुछसत्कारकरना चाहिये इससे मैं अपनी यहकन्या कलावती सूर्य्यप्रभको देदूं क्योंकि सुनीथका और मेरा गोत्र एकहै इससे सुनीथको देना योग्य नहीं है और सूर्य्यप्रभ इसका पुत्र तो है परन्तु राजजन्मकाहै इस जन्मका नहीं है इससे इसका और मेरा गोत्र भिन्न २ है और जो मैं इसका सत्कार करूंगा तो सुनीथही का सत्कार समझाजायगा अपने पिताके यह वचन सुनकर मेरी सखी का चित्त तुम्हारे गुणों से आकृष्टहोगयाहै इसी से यह आपके दर्शनको इस समय आई है उस के यह वचन सुनके सूर्य्यप्रभ उसके तात्पर्य्यको जानने के लिये झूठमूठ सोनेलगा तव वह कन्या जागतेहुए प्रहस्तके पास जाकर उससे सखीके द्वारा अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहकर बाहर चलीगई और प्रहस्त सूर्य्यप्रभके पास जाके बोला कि हे स्वामी जागतेहो कि नहीं यह सुनकर उसने नेत्र खोलकर कहा कि हे मित्र जागताहूं मुझे अकेले निद्रा नहीं पड़ती और विशेप बात यह है जो तुमसे कहताहूं क्योंकि तुमसे कोई दुरावनहीं है अभी सखी समेत एककन्या जिसके समान त्रैलोक्यमें भी कोई सुन्दर नहीं है यहां आईथी और क्षणभरमेंही मेरेमनको हरकर कहीं चलीगई उसे जाकर शीघ्रही ढूंढ़लाओ यहीं कहीं खड़ीहोगी सूर्य्यप्रभ के यह वचनसुनके प्रहस्तने बाहरजाके सखी समेत खड़ीहुई उसकन्या से कहा कि मैंने तुम्हारे कहनेसे अपने स्वामीको जगा दिया है तो तुमभी मेरे कहने से उसके पास चलकर नेत्रोंके सफल करनेवाले उसके स्वरूपको देखो और वह भी तुम्हारे स्वरूपको देखे उसने जागकर मुझसे कहाहै कि उसे ढूंढ़लाओ नहीं तो मेरे प्राण नहीं रहेंगे इससे मैं तुमको लिवाने के लिये आयाहूं तुम्हारे देखनेहीसे वह तुम्हारे वशीभूतहोगया है तुम आपही चलकर उसकी विकलता देखो प्रहस्त के यह वचन सुनकर वह लज्जितहोके नहीं जासकी तव प्रहस्त उसे हाथ पकड़कर सूर्य्यप्रभ के पास लेगया सूर्य्यप्रभने उसे देखकर उससे कहा कि हे सुन्दरी क्या तुमको यह उचितहै कि तुमने यहां आकर मुझ सोतेहुएका चित्त चुरालिया इससे तुम चोट्टीहो मैं आज तुमको नहीं छोड़ूंगा यह सुनकर उसकी चतुरसखीबोली कि इसके पिता ने इसे प्रथमही से चोट्टी जानकर तुमको सौंपनाचाहा है इससे आपको कौन निषेध करसक्ताहै आप इससे चोरीकरनेवाले कामदेवको दण्ड दीजिये यह सुनकर सूर्य्यप्रभने कलावतीका आलिंगन करनाचाहा यह देखकर उसने कहा कि हे आर्य्यपुत्र ऐसा न करो मैं कन्याहूं तव प्रहस्तने उससे कहा कि इसमें कोई अनुचित नहीं है गान्धर्व विवाह सब विवाहों में उत्तम कहाहै यह कहकर प्रहस्त उसकी सखीको लेकर बाहर चलाआया और सूर्य्यप्रभने कलावती के साथ गान्धर्व विवाहकरके मनुष्योंको जो दुर्लभ सुखहै सो उस पातालकन्या के साथ अनुभव किया इसप्रकार सुखसे रात्रिके व्यतीतहोजानेपर कलावती अपने स्थानको चलीगई और सूर्य्यप्रभ अपने सब साथियों समेत सुनीथ तथा मयासुर के पास गया वहां वह सब मिलकर प्रह्लादके पास गये उसने सबका यथायोग्य सत्कारकरके मयासुरसे कहा कि सुनीथके पुनर्जीवन से हमको प्रसन्नहोकर उत्सव

करना चाहिये इससे आज सर्व दैत्यराज मिलकर यहीं भोजनकरें मयासुरने कहा बहुतठीकहै ऐसाही करना चाहिये तब प्रह्लाद ने दूत भेजकर सब दैत्यराज बुलवाये और क्रमसे सम्पूर्ण पातालों से दैत्यों के राजालोग आनेलगे पहले राजा बलि असंख्यदैत्यों को अपने साथ लेकर आया तदनन्तर अमील फिर दुरोरोह इसीक्रमसे सुमाय, तन्तुकच्छ, विकटाक्ष, प्रकंपन, धूम्रकेतु, मायाकाय तथा अन्य २ दैत्यराज अपने २ साथ सहस्रों महादैत्यों के लेकर वहां आये दैत्यों से सम्पूर्ण सभा भरगई और वह परस्पर यथायोग्य वन्दना कर २ के बैठे उससमय प्रह्लादने सबका यथायोग्य सन्मानकिया तदनंतर भोजनका समय आजानेपर सम्पूर्ण दैत्यराज गंगाजी में स्नानकरके भोजन के निमित्त सौ योजन विस्तृत सुवर्ण तथा मणियों की चट्टानसे युक्त रत्नके खंभो से व्याप्त और विचित्र यथायोग्य स्थानों में रक्खेहुए रत्नके पात्रों से सुशोभित महासभामें गये वहां प्रह्लाद सुनीथ मयासुर और मंत्रियों सहित सूर्य्यप्रभके साथ सम्पूर्ण दैत्यराजों ने नानाप्रकारके भक्ष्यभोज्य लेह्यादिक षट्रसयुक्त दिव्य अन्न भोजन किया और उत्तम मद्यका पान किया इसप्रकार भोजनकरके वह सम्पूर्ण दैत्यराज दूसरी रत्नमय सभामें जाकर दैत्यों की कन्याओंका उत्तम नृत्य देखनेलगे इस प्रसंगसे सूर्य्यप्रभने वहां प्रह्लाद की कन्या महल्लिकाको पिताकी आज्ञासे नाचतेहुए देखा अपनी कान्तिसे दिशाओं को प्रकाशित करतीहुई और दृष्टिसे अमृतकी वृष्टिकरतीहुई वह कन्या क्या थी मानो चन्द्रमाकी मूर्त्तिही पाताल में आगईथी ललाट में तिलक पैरों में नूपुर तथा मनोहर दृष्टिसे वह नृत्यमें अत्यन्त शोभित होती थी घुंघरवालेबाल नुकीलेदांत तथा उन्नत गोलस्तनों से नृत्य में उसकी अपूर्व्वही शोभा होती थी उस महल्लिका को इसप्रकार नृत्य करतीहुई देखकर सूर्य्यप्रभका चित्त उसपर अत्यन्त आसक्त होगया और वह भी दैत्योंके बीच में श्रीशिवजीके द्वारा कामके भस्मकिये जानेपर ब्रह्मासे उत्पन्न कियेगये द्वितीय कामदेव के समान सूर्य्यप्रभको देखकर ऐसी उसके वशीभूत होगई कि उससे फिर न भाव बतातेबना और नाच बनाते सभासदों ने उन दोनों के भावको जानकर राजसुता अब थकगई है यह कहकर नृत्य बन्दकरवादिया तब महल्लिका सूर्य्यप्रभको तिरछी दृष्टिसे देखतीहुई पितासे आज्ञालेकर सम्पूर्ण दैत्यराजों को वन्दना करके अपने मन्दिर को गई और सम्पूर्ण दैत्यराज अपने २ स्थानको गये सूर्य्यप्रभभी अपने सब मंत्रियों समेत अपने स्थानको चला आया रात्रिके समय फिर आई हुई कलावतीके साथ सूर्य्यप्रभ तो मन्दिरके भीतर शयन स्थानमें सोरहा और सम्पूर्ण मन्त्रीशयन स्थानके बाहरसोये उस रात्रिमें महल्लिका भी अपनी दो सखियों को साथमें लेकर सूर्य्यप्रभसे मिलने को आई उसे शयन स्थानके भीतरजाते देखकर उसी समय जगेहुए प्रज्ञाढ्यनाम मन्त्रीने उससे कहा कि हे राजपुत्री क्षणभर ठहरजाओ मैं भीतर होआऊं तब जाना उसके यह वचनसुनकर महल्लिका ने सन्देह युक्त होकर पूछा कि तुम मुझे भीतर जाने से क्यों रोकतेहो उसने कहा कि हे राजपुत्री एकान्त में सोतेहुए के पास सहसा नहीं जाना चाहिये और यह हमारास्वामी व्रतके कारण अकेला सोरहाहै तब महल्लिकाने कहा अच्छा तुम्हींजाओ उसके यहवचनसुनकर प्रज्ञाढ्यने भीतर जाके कला-

वतीको सोते देखकर सूर्य्यप्रभको जगाकर कहा कि महल्लिका आई है यह सुनकर सूर्य्यप्रभ धीरे से उठकर बाहर आया और सखियों समेत महल्लिका को देखकर उससे बोला कि हे सुन्दरी तुमने इस अभ्यागतको कृतार्थ किया अब आसन ग्रहणकर बैठके इस स्थानको भी कृतार्थ करो यह सुनकर महल्लिका अपनी सखियो समेत बैठगई और सूर्य्यप्रभ भी प्रज्ञाढ्य समेत बैठकर बोला कि यद्यपि तुमने सभामें सबके समानही मुझे देखकर मेरा निरादरकिया तथापि हेचपलनेत्रे तुम्हारे दर्शन मात्रसेही तुम्हारे सौन्दर्य्यके समान नृत्यसे मेरे नेत्रसफल होगये सूर्य्यप्रभके यह वचनसुनकर महल्लिका बोली कि हे आर्यपुत्र इसमें मेरा अपराध नहीं है यह अपराध तो उसकाहै जिसने सभामें मेरा नृत्य बिगाड़कर मुझे लज्जित किया यह सुनकर सूर्य्यप्रभने मुस्कुराकर कहा कि मैं हारगया और उसका हाथ अपने हाथसे पकड़ा तब महल्लिकाने कहा कि हे आर्यपुत्र मैं पिताके वशीभूत कन्याहूं इससे मानो बलात्कारसे भयभीत मेरे स्वेद युक्त हाथको छोड़ दो यह सुनकर प्रज्ञाढ्य बोला कि हे राजपुत्री क्या कन्याओंका गान्धर्व विवाह नहीं होताहै तुम्हारेपिता तुम्हारा अभिप्राय जानचुकेहैं इससे वह तुमको इनके सिवाय किसी दूसरे को नहीं देंगे और इनका सत्कार भी उनको अवश्य करनाहै इससे भय न करो यह प्रथम समागम व्यर्थ न होना चाहिये २६० इसप्रकार प्रज्ञाढ्यके कहतेही कहते कलावती भीतर जगीऔर सूर्य्यप्रभको शय्यापर न देखके उद्विग्नहोकर बाहर चलीआई और महल्लिकाके साथ सूर्य्यप्रभको देखकर एकसाथही कुपित लज्जित तथा भयभीत होगई महल्लिका भी उसेदेखकर भीति युक्त होकर लज्जित होगई और सूर्य्यप्रभ चित्रमें लिखाहुआ सा रहगया उससमय कलावतीने यहशोचकर कि इसनेमुझे देखलियाहै अबजाना ठीकनहीं है महल्लिकाके पासजाके ईर्ष्यासे बोली कि हे सखीकुशल तो है आज तुम रात्रि को यहां कहां आईहो यह सुनकर महल्लिकाने कहा कि मेरा तो यह घरही है तुम अन्य पातालसे यहां आईहो इसलिये मेरी अतिथिहो यह सुनकर कलावतीने हँसकर कहा कि ठीक है यह तो मालूमही है कि यहां जो कोई आताहै उसका तुम अतिथि सत्कार करती हो कलावती के यह वचन सुनकर महल्लिका बोली कि मैंने तो प्रेम पूर्वक तुमसे कहा तुम द्वेषसे ऐसे निष्ठुर वचन क्यों कहतीहो हे निर्लज्जे क्या मैभी तुम्हारे समानहूं क्या मैंभी बन्धुओंकी आज्ञाके विना अकेली पराये स्थान में जाकर पराई शय्यापर सोती हूं मैं तो अपने ही स्थानमें अपने पिताके अतिथिको देखने के लिये दो सखियोंको साथ में लेकर अतिथि सत्कार करनेके लिये आईहूं जब यह मन्त्री मुझे धोखा देकर भीतरगयाथा तभी मैंने जान लियाथा तुमने आप आकर और भी प्रकट करदिया महल्लिकाके यह वचन सुनकर कलावती क्रोधयुक्त तिरछी दृष्टिसे प्रियको देखतीहुई अपने घरको चलीगई और महल्लिका भी हे बहुवल्लभ अब मैं जातीहूं ऐसा क्रोध पूर्वक कहकर चलीगई उससमय सूर्य्यप्रभ जो विमन हो गया सो तो उचितही है क्योंकि उसका मन प्रियाओंके साथही चलागया तदनन्तर सूर्य्यप्रभने प्रभास और प्रहस्तको जगाकर कलावती तथा महल्लिकाने यहां से जाकर क्या कियाहै यह वृत्तान्त जाननेको भेजा और आप प्रज्ञाढ्यके साथ बैठकर उनकी प्रतीक्षा करनेलगा कुछ कालके उपरान्त कलावती के

वृत्तान्तको जानकर प्रभास लौटकर आया और कहनेलगा कि यहांसे दूसरे पातालमें कलावतीके स्थान पर जाकर मैंने अपनी विद्यासे अपनेको छिपाकर वाहर दो चेरियोंकी यह वार्त्तालाप सुनी एकनेकहा हे सखी आज कलावती उद्विग्नचित्त क्यों है दूसरी ने उत्तरदिया कि हे सखी इसका यह कारणहै कि चौथे पातालमें सुमुण्डीक का अवतार अपने रूपसे कामदेवको भी जीतनेवाला सूर्य्यप्रभ स्थित है उसके पास इसनेजाकर अपना शरीर उसके अर्पण किया आजरात्रिको भी यह उसीके पासगई थी वहां प्रह्लाद की पुत्री महल्लिका भी कुछ रात्रिगये आई थी ईर्ष्यासे उसके साथ कलहकरके यह यहां आकर अपने प्राण देनेको उद्यत हुई तब इसकी सुखावती नाम वहिनने सम्पूर्ण वृत्तान्त पूछकर मृत्यु से इसको निवारण किया इसी से यह अपनी वहिन के साथ शय्या पर जाके लेटरही है चेरियों की इस वार्त्तालापको सुनकर मैंने भीतर जाके कलावती और सुखावतीको पलँग पर सोते देखा उन दोनोंकी एक समान आकृति है प्रभासके इसप्रकार कहनेही प्रहस्त भी आगया और पूछने पर कहनेलगा कि मैं जब यहां से महल्लिका के यहां पहुंचा तब वह अपनी दोनों सखियोंके साथ मन्दिर में गई मैंभी विद्या की युक्तिसे अलक्षित होकर उसीके साथ चलागया वहां मैंने उसीके समान उसकी बारह सखी देखीं वह बारहों रत्नके पलँगपर महल्लिका को घेरकर बैठगईं और उनमेंसे एक बोली कि हे सखी आज तुम अकस्मात् उदासीन क्यों होरही हो तुम्हारे विवाहकी तैयारी होरही है इससमय में भी विषादका क्या कारणहै यहसुनकर महल्लिकानेकहा कि कैसा मेराब्याह किसकेसाथ मेराब्याह होगा और तुमसेकिसने कहाहै यहसुनकरवह सब बोलीं कि प्रातःकाल सूर्य्यप्रभके साथ तुम्हारेविवाहके होनेका निश्चयहैतुम्हारी माताने तुम्हारे परोक्षमें हमसे यहकहाहै और तुम्हारे शृंगार करनेकी आज्ञादी है हेसखी तुमधन्यहो जिसे सूर्य्यप्रभ पति मिलेगा जिसके स्वरूप से मोहितहोकर स्त्रियां रात्रिको सोती नहीं हैं हम लोगोंको यह विषादहै कि अब कहांतुम और कहांहम ऐसे सुन्दर पतिको पाकर तुम हमारा स्मरणभी नहींकरोगी उनके यह वचन सुनकर महल्लिका बोली कि क्या तुमने उसे कहीं देखाहै और तुम्हाराचित्त उसपर चलायमान हुआहै तब उन्होंने कहा कि हमने महलपरसे उसे देखाहै और ऐसीकौनस्त्री है जिसकाचित्त उसेदेखकर चलायमान न होय यहसुनकर महल्लिकाबोली मैं अपने पितासेकहकर तुमसबका विवाहभी उसीकेसाथ करवाऊंगी तो हमारा तुम्हारा वियोग नहींहोगा यहसुनकर सखियोंनेकहा कि ऐसानकरना यहउचित नहीं है हमेंइसबातपर लज्जाहोती है उनके यहवचन सुनकर महल्लिकानेकहा कि इसमेंअयोग्य क्याहै केवलमेराही उसके साथ विवाह न होगा किन्तुसम्पूर्ण दैत्यराज अपनी२ कन्या उसे देंगे और बहुतसी राजकन्याओं के साथ उसका विवाह भी होचुकाहै जो अब पृथ्वीपर वर्त्तमान हैं और बहुतसी विद्याधरियों के साथ भी इसका विवाह होगा उनमें जो तुम लोगोंका भी विवाह उसके साथ होजाय तो मेरी क्या हानिहै प्रत्युत (बल्कि) सब सखियोंके साथ रहनेसे बड़ा सुखहोगा और जो अन्य सपत्नी होंगी वह मेरे विपरीतहोंगी क्योंकि उनसे मेरा किसी प्रकारका परिचय नहीं होगा और तुम लोगोंको इसमें लज्जाही क्याहै मैं सब यत्न करलूंगी उन सबकी यहवार्त्तालाप सुनकर मैं आपके पासचलाआया

प्रहस्तके वचन सुनकर सूर्य्यप्रभ आनन्द से उसरात्रिको सोयानहीं और प्रातःकाल अपने मन्त्रियों समेत सुनीथ तथा मयासुर के साथ दैत्यराज प्रह्लाद के दर्शनोंको सभामें गया वहां प्रह्लादने सबका आदर करके सुनीथ से कहा कि मैं अपनी महल्लिका कन्या सूर्य्यप्रभको दूंगा क्योंकि मुझे इसका अतिथि सत्कार करना और तुमको प्रसन्न करना उचितहै प्रह्लादके यह वचन सुनीथने अंगीकार कर लिये तब वेदी बनवाकर उसके मध्यमें अग्निजलाकर अग्निकी प्रभासे देदीप्यमान रत्नवाले खंभोंसे युक्त उस वेदीमें प्रह्लादने अपने बड़े ऐश्वर्य्य के अनुसार रत्नादि धनसमेत अपनी महल्लिका कन्या सूर्य्यप्रभको संकल्पकरदीनी और देवता लोगोंको जीतकर लायेगए सुमेरुके शिखरोंके समान बहुतसे बहु मूल्य रत्न अपनी कन्या तथा जामाताको दिये उससमय विवाह विधिके उपरान्त महल्लिकाने प्रह्लादसे एकान्तमें कहा कि हे तात मेरी उन बारह सखियोंका भी विवाह इसीके साथ करदीजिये क्यों कि वह सब मुझे अत्यन्त प्यारीहैं यह सुनकर प्रह्लादने कहा कि हेपुत्री वह मेरे भाईके आधीनहै क्योंकि वही उन्हें स्वर्गसे लायाथा इससे मुझे उनका देना योग्य नहीं है इसके उपरान्त विवाहके उत्सवसे उसदिन के व्यतीत होजानेपर रात्रिकेसमय सम्पूर्ण कामके उपचारोंसेयुक्त शयनस्थानमें सूर्य्यप्रभ महल्लिकाके साथगया और उसके साथ अपनी इच्छाकेअनुसार दिव्यभोगसे रात्रिको व्यतीतकरके प्रातःकाल सम्पूर्ण परिकर समेत प्रह्लादकी सभामें गया वहां अमीलनाम दैत्यने प्रह्लादादिकों से कहा कि आज आप सबलोग मेरे स्थानपर आइये वहां मैं सूर्य्यप्रभका अतिथि सत्कारकरूं और जो आप कहिये तो अपनी कन्याकलावतीका विवाहभी इसके साथकरदूं उसके यहवचन सबने स्वीकार करलिये और उसी समय सूर्य्यप्रभादिकोंको लेकर द्वितीयपातालकोगये वहां अमीलने सूर्य्यप्रभको अपनी कलावतीकन्या जिसने कि अपनाशरीर प्रथमहीसे उसके अर्पणकर रक्खाथादी विवाहकरके सूर्य्यप्रभ उसेलेकर भोजनादिकेपीछे प्रह्लादकेयहां जाकररहा औरभोग विलाससे वह रात्रिव्यतीतकी दूसरेदिन दुरारोहनामदैत्य इन सबको इसीप्रकार निमन्त्रणदेकर पंचमपातालमें बुलालेगया और वहाँ अपनी कुमुदावती नाम कन्याकाविवाहसूर्य्यप्रभके साथकरदिया क्योंकि उसेभी सूर्य्यप्रभका अतिथि सत्कारकरना उचित था विवाहकरकेसबके साथ सूर्य्यप्रभ उसदिनको व्यतीतकरके रात्रिकेसमय शयनस्थानमें गया वहाँत्रैलोक्यसुन्दरी नवीनसंगममें उत्कण्ठित प्रेमयुक्त मुग्धाकुमुदावतीकेसाथरात्रिभररहा प्रातःकाल तन्तुकच्छ नामदैत्यराजप्रह्लादादिकोंसमेत सूर्य्यप्रभको निमंत्रणदेकर सातवेंपातालमें अपनेस्थानपर लेगया वहाँ उसनेसूर्य्यप्रभको तप्तसुवर्णके समान कान्तिवाली रत्नोंकेआभूषणों से युक्त मनोवतीनामकन्या दी तब सूर्य्यप्रभ ने उत्सव से उसदिनको व्यतीत करके मनोवती के साथ नवीन संगमका सुखभोग करके वहरात्रिभी व्यतीत की दूसरेदिन सुमायनामदैत्य राजनिमन्त्रणकरके सूर्य्यप्रभसमेत सबको छठेपाताल में अपने स्थान में लेगया वहाँ उसनेभी दूर्वाके समान श्यामलाङ्गी कामदेवके बाणोंकी सूचिके समान अपनी सुभद्रानामकन्या सूर्य्यप्रभको दी सुरतके योग्य षोड़शवर्ष की अवस्थावाली सुभद्रा के साथ उसके पूर्णचन्द्रमारूपी मुखको पान करके सूर्य्यप्रभ ने उसदिन की रात्रिव्यतीत की २३४ दूसरे दिन

राजावलि सूर्य्यप्रभको परिकर समेत अपने तृतीयपातालको लेगया और वहाँ नवीन पल्लवो के समान कोमल अंगवाली माधवी मंजरी के समान शोभायमान अपनी सुन्दरी नाम कन्या सूर्य्यप्रभ को देदी फिर विवाहकरके सूर्य्यप्रभ ने सुन्दरी के साथ उसदिन की रात्रि बड़े आनन्दपूर्वक व्यतीतकी दूसरेदिन मयासुरने भी सूर्य्यप्रभको अपने चौथे पाताल मे अपनीमाया से बनाये हुए विचित्र रत्नों से जटित शोभासे प्रतिक्षण नवीन से मालूम होनेवाले अपने मन्दिर में लेजाकर अपनी मूर्तिमती शक्ति के समान सुमायानाम कन्या देदी यह मनुष्ययोनि में उत्पन्नहुआ था इसी हेतुसे इसने इसको कन्या देना अयोग्य नही समझा सूर्य्यप्रभ उस सुमायाके साथ विवाह करके विद्याके प्रभावसे अनेक स्वरूप धारण करके सम्पूर्ण अपनी स्त्रियोंके साथ एक साथही रमण करताहुआ सुखपूर्वक रहनेलगा परन्तु वह अपने मुख्यशरीर से अत्यन्तप्रिय प्रह्लादकी कन्या महल्लिकाके ही साथ रहता था एकदिन सूर्य्यप्रभ ने महल्लिका से पूछा कि हे प्रिये वे जो दोसखी तुम्हारेसाथ आई थी वह अब नहीं दिखाई देती हैं वह कौन थीं और अब कहाँगई यह सुनकर महल्लिकाने कहा कि आपने मुझे खूब याद दिलाई वह दोही नहीं है किन्तु बारह हैं मेरा पितृव्य स्वर्ग से उन्हे हरलाया था उनमें से अमृतप्रभा तथा केशिनी नाम दो मेरी सखी पर्व्वतमुनि की पुत्री है कालिन्दी, भद्रिका, तथा दर्पकमाला यह तीनों देवलमुनि की कन्याहैं सौदामिनी तथा उज्ज्वला यह दोनो हाहानाम गन्धर्वकी पुत्रियां हैं पीवरा हूहूनाम गन्धर्वकी पुत्रीहै अंजनिका काल की पुत्री है केसरावली पिंगल नाम गणकी पुत्रीहै मालिनी नाम एक सखी कंबलनाम देवता की पुत्रीहै और मन्दारमाला वसु देवता की पुत्रीहै यह बारहों मेरी सखियां अप्सराओंसे उत्पन्नहुई हैं मैं इनका विवाहभी तुम्हारेसाथ किया चाहतीहूं जिससे मेरा और इनसबका वियोग कभी न होय मै उनसे प्रतिज्ञा भी करचुकीहूं क्यों कि उनपर मेरा अत्यन्त स्नेह है मैंने अपने पिता से भी यहबात कही थी परन्तु उन्होने अपने भाईकी अपेक्षा से रोकरक्खा यह सुनकर सूर्य्यप्रभ ने आश्चर्य्यितहोकर कहा कि हेप्रिये तुमबड़ी महानुभावहो इससे ऐसाकहतीहो परन्तु मै इन्हेंकैसेस्वीकार करूंगा सूर्य्यप्रभ के यह वचन सुनकर महल्लिका क्रोधयुक्त होकर बोली कि मेरे सन्मुख ही अन्य स्त्रियो का ग्रहण करते हो और मेरी सखियों से अनिच्छा प्रकटकरतेहो जिनके बिना मुझे क्षणभर भी चैननहीं पड़ता यह सुनकर सूर्य्यप्रभ ने प्रसन्नहोके उसके वचन स्वीकार करलिये तब महल्लिका ने सूर्य्यप्रभ को अपने पहले पातालमें लेजाकर अपनी बारहोंसखी सूर्य्यप्रभको देदीनी उन अमृतप्रभा आदिक बारहों दिव्यस्त्रियोंकोपाकर वह रात्रिउसने उन्हींकेसाथ आनन्दपूर्वक व्यतीतकी प्रातःकालसूर्यप्रभने महल्लिका से पूछकर प्रभासके द्वारा उन बारहों को चौथे पाताल में लाकर छिपारक्खा तदनन्तर प्रह्लादसे मिलने को सभा में गया वहाँ प्रह्लाद ने मयासुर सुनीथ तथा सूर्य्यप्रभादिको से कहा कि तुम सबलोग दिति और दनुके दर्शन करने को जाओ प्रह्लादकी यहआज्ञा पाकर वह सम्पूर्ण लोग भूतासननाम विमान पर चढ़के सुमेरुपर्व्वत के शिखरपर कश्यप जी के आश्रम को गये वहाँ जाकर मुनिजनों से निवेदन कराके आज्ञापाकर उन सबोनें दिति तथा दनुके दर्शन किये और उनकेचरणोंपर गिरकर प्रणामकिया

वह दोनों उन्हें प्रणाम करते देखकर उनके मस्तकोंका चुम्बन करके आनन्दसे मयासुर को आशीर्वाद देनेलगीं और आशीर्वाद देकर कहनेलगीं कि हे पुत्र तुम बड़े पुण्यात्माहो तुम्हारे पुत्र सुनीथको आज पुनर्जीवित देखकर हमारे नेत्र सफलहुए और सूर्य्यप्रभके रूपमें उत्पन्न हुए दिव्य आकृतिधारी बड़े गुणवान् भावी कल्याणके सूचितकरनेवाले शुभलक्षणोंसेयुक्त सुमुण्डीक को देखकर हम आनन्दसे अपने चित्तमेंभी नहीं समाती हैं अब हे वत्स प्रजापति आर्य्यपुत्र कश्यपजीके देखनेकेलिये तुमलोग जाओ उनके दर्शनसे तुम्हारे मनोरथ सिद्ध होंगे और उनकी आज्ञा माननेसे तुम्हारा कल्याण होगा ३६६ उनके यह वचनसुनकर सब लोगों ने दिव्य आश्रम में जाकर कश्यपजीके दर्शन किये टिघलेहुए शुद्ध सुवर्ण के समान कान्तिवाले तेजोमय अग्निकी ज्वालाओं के समान पीलीजटाओं को धारण कियेहुए अग्निके समान दुराधर्ष कश्यप मुनिको दिव्य आश्रममें देखकर मयादिक सम्पूर्ण लोगोने उनके चरणोंपर गिरकर प्रणाम किया तब कश्यपजी ने उन सबको बैठालकर उचित आशीर्वाद देकर कहा कि मुझे बड़ाही आनन्दहै कि मैंने एक साथही तुम सबलोगोंको देखा हेमय तुम बड़े प्रशंसनीय हो क्योंकि तुमने सन्मार्ग का त्याग नहीं कियाहै इसीसे तुमको सम्पूर्ण विद्या प्राप्त हुई हैं हे मुनीथ तुम धन्यहो तुम्हारा भाग्यवशसे पुनर्जीवन हुआ है हे सूर्य्यप्रभ तुम बड़े पुण्यवान्हो क्योंकि तुम विद्याधरोंके चक्रवर्त्ती होगे अब हे दैत्यलोगो हमारे कहनेसे कभी धर्म्मका त्याग न करना इसीसे तुम परम सम्पत्तियों को पाकर अत्यन्त सुखका भोग करोगे और पहले के समान तुम्हारी शत्रुओं से पराजय नहीं होगी देखो अधर्म्मी दैत्य लोग विष्णुभगवान्के चक्रकेद्वारा नाशको प्राप्तहुए हैं हेसुनीथ जो दैत्य देवता लोगों के युद्धमें मारेगये थे वही सब मृत्यु लोकमें उत्पन्नहुए हैं सुमुण्डीक सूर्य्यप्रभ नामसे उत्पन्नहुआ और अन्य सबदैत्यलोग इसीकेबन्धु तथा मित्रहुए हैं देखो जो शम्बरनाम महादैत्य था वह प्रहस्तनाम इसका मन्त्रीहुआ है त्रिशिरानाम दैत्य इसका सिद्धार्थ नाम मन्त्रीहुआ है वातापी नाम दैत्य इसका प्रज्ञाढ्य नाम मन्त्रीहुआ है उलूकनाम दैत्य इसका मित्र शुभंकर नाम हुआहै शीतभीतनाम इसका मित्रकाल नाम दैत्य था इसका भासनाम मन्त्री वृषपर्व्वानाम दैत्य था इसका प्रभास नाम मन्त्री प्रबलनाम दैत्य था जिसमहात्माने विपक्षी देवता लोगोंके भी याञ्चा करनेपर अपना रत्नमय शरीर टुकड़े २ करके देदिया जिससे कि यह सम्पूर्ण रत्न उत्पन्नहुए हैं इसीबात से प्रसन्न होकर भगवती पार्वतीजी ने इसे यह वरदान दियाहै कि यह दूसरेजन्ममें अत्यन्तबलवान् तथा शत्रुओं को दुराधर्ष होगा इसीसे यह प्रभास ऐसा बलवान् हुआहै जो सुन्द उपसुन्द नाम दो दैत्य थे वही इसके सर्वदमन और भयंकर नाम मन्त्रीहुए हैं और हयग्रीव तथा विकटाक्ष नाम जो दो दैत्यथे वही इसके स्थिर बुद्धि तथा महाबुद्धिनाम मन्त्रीहुएहैं और जो इसके अन्यमन्त्री बन्धु तथा मित्रादिकहैं वह सब भी दैत्यों के अवतारहैं जिन्होंने पूर्व्वजन्ममें अनेकबार इन्द्रादि देवताओं को जीताहै इससे तुमलोगों का पक्ष फिर कर वृद्धिको प्राप्तहुआहै धैर्य्यधरो जो धर्मके अनुसार चलेजाओगे तो परम सम्पत्ति को पाओगे कश्यपमुनिके इसप्रकार कहनेपर उनकी अदिति आदिक स्त्रियां मध्याह्न कालिक सोमपानके

समय आई और प्रणाम करतेहुए मयासुरादिकोंको आशीर्वाद देकर पतिको आह्निकके समयका स्मरण दिवाकर वहीं उस समय लोकपालों समेत इन्द्र कश्यप मुनि के दर्शन को आया और कश्यप मुनि की वन्दना करके सूर्य्यप्रभको क्रोध सहित देखने लगा और मयासुर से बोला क्या यही बालक विद्याधरों का चक्रवर्त्ती होना चाहता है यह इतनेही में क्यों सन्तुष्ट होगया इन्द्र पदवी की क्यों नहीं इच्छा करता यह सुनकर मय दैत्यने कहा कि हे देवेश आपको परमेश्वर ने इन्द्र नियत किया है और इसे विद्याधरों का चक्रवर्त्ती होने के लिये उत्पन्न किया है मयासुर के यह वचन सुनकर इन्द्र ने हँसकर कहा कि इसकी ऐसी सुन्दर आकृति के लिये इतनी अभिलाषा बहुत थोड़ी है तब मयासुर ने उत्तर दिया कि जहां श्रुतशर्म्मा विद्याधरोंके चक्रवर्त्ती होने के योग्यहै वहां इसकी आकृति इन्द्र पदवी के योग्य अवश्यहै इसप्रकार कहते हुए मयासुरकेऊपर कोप करके इन्द्र वज्र मारनेके लिये खड़ा हुआ इन्द्रके साहस को देखकर कश्यप मुनिने हुंकार किया और उनकी दिति आदिक स्त्रियां धिक्कार२ कहने लगीं और उनके मुख भी क्रोधसे रक्त होगये तब इन्द्र शापके भयसे अपने शस्त्रको रोंककर बैठ गया और देवता तथा दैत्योंके उत्पन्न करनेवाले कश्यप मुनि तथा उनकी स्त्रियों के चरणों पर गिरकर हाथ जोड़कर यह विज्ञापना करने लगा कि हे भगवन् मैंने श्रुतशर्म्मा को जो विद्याधरोंका चक्रवर्त्ती बनायाहै उस अधिकार को यह सूर्य्यप्रभ लेना चाहता है और यह मयासुर उसके साधन में सब प्रकार का उद्योग करने को उद्यतहै इन्द्रके यह वचन सुनकर दिति तथा दनु सहित कश्यप मुनि बोले कि हे इन्द्र तुम श्रुतशर्म्माको विद्याधरोंका चक्रवर्त्ती बनाया चाहतेहो और श्रीशिवजी सूर्य्यप्रभ को बनाया चाहते हैं उनकी इच्छाको कौन मिथ्या करसक्ता है उन्हींकी आज्ञासे यह मयासुर भी उद्योग करता है इससे तुम इसके ऊपर क्यों क्रोध करतेहो इसमें इसका कौन अपराधहै यह बड़ा धर्मात्मा ज्ञानी गुणवान् तथा गुरुभक्तहै जो तुम इसको मारते तो हमारी क्रोधाग्नि तुमको भस्म कर देती तुम इसे नहीं मारसक्ते हो क्या तुम्हें इसका प्रभाव नहीं मालूमहै कश्यप मुनि के इसप्रकार कहनेसे इन्द्रके लज्जित तथा भयभीत होनेपर अदिति ने कहा कि वह श्रुतशर्म्मा कैसाहै उसे यहां लाकर दिखाओ यह सुनकर इन्द्रने मातलि को भेजकर श्रुतशर्म्माको बुला भेजा श्रुतशर्म्माको आकर विनय करते देखकर अदिति आदिक स्त्रियां ने कश्यपजीसे कहा कि सूर्य्यप्रभ तथा श्रुतशर्म्मा इन दोनो में कौन रूपवान् तथा अधिक शुभ लक्षणवान्है तब कश्यप मुनिने कहा कि श्रुतशर्म्मा सूर्य्यप्रभ के मन्त्री प्रभास के समान भी नहीं है फिर सूर्य्यप्रभका क्या कहनाहै क्योंकि यह ऐसे दिव्य रूप लक्षणोंसे युक्तहै कि जिनसे यह उद्योगकरे तो इन्द्र पदवी भी इसे मिल सक्ती है कश्यप मुनिके इन वचनोंपर सबको विश्वासहोगया तब कश्यपजी ने इन्द्रकेही आगे मयासुरको यह बरदान दिया कि हे पुत्र मारने के लिये इन्द्रके उद्यतहोनेपरभी तुम ने जो क्रोध नहीं किया इससे तुम अजर तथा अमरहोगे तुम्हारा सम्पूर्ण शरीर वज्रमय होजायगा उसमें किसी प्रकारका घाव न होगा और यहसुनीथ तथा सूर्य्यप्रभ भी तुम्हारेही समान बड़े सत्त्ववान् होंगे कोई शत्रु इनको जीत न सकेगा और आपत्तिके समय जब तुम स्मरण करोगे तब मेरा पुत्र श-

रत्कालके चन्द्रमा के समान सुन्दर यह सुवासकुमार तुम्हारी सहायताकरेगा मुनिके इसप्रकार कहनेके उपरांत दिति आदिक स्त्रियोंने लोकपालोंने तथा मुनिलोगोंने प्रसन्नहोके मयासुर आदिकोंको वरदानदिये तदनन्तर अदितिने इन्द्रसेकहा कि अविनय छोड़कर मयासुरको प्रसन्नकरो तुमने इससमय विनयका फल देखा कि इसको कैसे २ वर प्राप्तहुएहैं यह सुनकर इन्द्रने मयासुरका हाथ पकड़कर उसे प्रसन्नकिया और सूर्य्यप्रभके आगे श्रुतशर्म्मा दिनके चन्द्रमाके समान तेजरहित होगया इसके उपरान्त कश्यपमुनिको प्रणामकरके इन्द्र लोकपालोंसमेत अपने स्थानको गया और मयआदिक भी मुनिसे आज्ञालेके और प्रणामकरके वहां से अपने कार्य्य सिद्धकरनेको चले ४१२ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांसूर्य्यप्रभलम्बकेद्वितीयस्तरंगः २॥

कश्यपमुनिके आश्रम से चलकर मयमुनीश तथा सूर्य्यप्रभ अपने परिकर समेत चन्द्रभागा तथा इरावतीके संगमपरगये जहां सम्पूर्ण मित्र तथा बान्धव लोग उनके लिये प्रतीक्षा करतेथे सूर्य्यप्रभको आया देखकर वह सम्पूर्ण रोतेहुए उसके आगे खड़े होगये सूर्य्यप्रभने यह जानकर कि इन्होंने चन्द्रप्रभको नहीं देखाहै इससेही रोरहे हैं उनसे सब वृत्तान्त कहदिया इतनेपर भी जब वह सब उदासीनही बनेरहे तो उसने पूंछा कि अब उदासीनताका क्या प्रयोजनहै तब उन लोगोंने आपके जातेही श्रुतशर्म्मा आपकी स्त्रियोंको हरलेगया यह देखकर हमलोग दुःखसे अपना शरीर त्यागनेको उद्यतहुए तब आकाशवाणीने हमलोगोंको निवृत्तकिया इत्यादि सब वृत्तान्त कहदिया सो सुनकर सूर्य्यप्रभने क्रोध से यह प्रतिज्ञाकी कि जो ब्रह्मादिक सब देवता भी रक्षाकरें तौभी परस्त्रियोंके हरनेवाले महाछली मूर्ख श्रुतशर्म्माको मैं अवश्य निर्मूल करूंगा इसप्रकार प्रतिज्ञा करके उसने ज्योतिषियोंको बुलाकर विजय यात्राकेलिये लग्नपूछी ज्योतिषियोंने सातवें दिन लग्न बताई तब सूर्य्यप्रभको विजयकेलिये निश्चित जानकर और वचनों से फिर उसको दृढ़करके मयासुरने कहा कि जो तुम सत्य २ विजय करनेको उद्यत हो तो मैं कहताहूं कि मैंने मायासे तुम्हारी स्त्रियां हरकर पातालमें रखछोड़ीहैं इसलिये कि तुम शीघ्रतासे विजयकेलिये उद्योगकरो देखो जैसे वायुसे प्रेरणाकीहुई अग्निबलती है वैसी वायुके विनानहीं बलती तो चलो पातालमें मैं तुम्हारी प्रिया तुमको दिखादूं मयासुरके यह वचन सुनकर सब लोग बड़े प्रसन्न हुए और उसीके साथ उसी प्राचीन गढ़ेमें होकर पातालकोगये वहां मयासुरने शयन स्थानके पास एक मन्दिर से मदनसेनादिक सब स्त्रियां सूर्य्यप्रभको लाकरदीं उन सबको तथा उन सब स्त्रियोंको भी जिनके कि साथ पातालमें विवाहहुआथा लेकर सूर्य्यप्रभ मयासुरकी आज्ञासे प्रह्लादके निकटगया वहां मयासुरसे वरदानकी प्राप्ति सुनकर प्रह्लादने परीक्षा करनेके लिये शस्त्रलेकर मिथ्या क्रोध प्रकट करके सूर्य्यप्रभ से कहा कि हे दुराचार मैंने सुनाहै कि तू मेरे भाईकी लाईहुई बारहों कन्याओंको हरलेगया है इससे देख मैं तुझे मारताहूं यह सुनकर विकाररहित सूर्य्यप्रभने उनसे कहा कि मेरा शरीर आपके आधीन है मुझदुष्टको आप शिक्षा दीजिये सूर्य्यप्रभके यह वचन सुनकर प्रह्लादने हँसकर कहा कि मैंने देखलिया तुमको अभिमानका लेशभी नहीं है तुम मुझसे वरदानमांगो मैं तुमपर प्रसन्नहूं यह सु-

नेकर सूर्यप्रभ ने श्री शिवजी तथा गुरुओंके चरणों में अपनी परमभक्तिमांगी प्रह्लादने वरदानदेके, और अतिप्रसन्नहोकर उसको अपनी दूसरी यामिनी नाम कन्या भी देदी और अपने दोनोंपुत्र सहायताको दिये तदनन्तर सूर्य्यप्रभ सबको साथलेकर अमीलके यहां गया उसने भी वरकी प्राप्तिसुन अति प्रसन्नहोके अपनी सुखावती नाम दूसरी कन्याका भी विवाह उससे करदिया और दो पुत्र उसकी सहायताको दिये २४ तदनन्तर अन्य दैत्यराजों को अपनी सहायताकेलिये उद्यत करताहुआ सूर्य्यप्रभ अपनी प्रियाओं समेत वहीरहा उन दिनों में सुनीथकी तीनों रानी तथा सूर्य्यप्रभकी सम्पूर्ण रानी गर्भवतीहुई यह मयासुर आदिक दैत्यों ने सुना और उनसब रानियों ने गर्भवती होकर यह मनोरथ बताया कि महायुद्धदेखनेकी हमलोगो की इच्छाहै यह सुनकर मयासुरने बहुत प्रसन्नहोकर कहा कि जो दैत्यलोग पहले युद्धमें मारेगये थे वही इनके गर्भों में आये हैं इसी से इनसबको ऐसा अभिलाप हुआ है इसप्रकारसे जब छः दिन व्यतीतहुए तब सातवें दिन सूर्य्यप्रभ अपने सम्पूर्ण परिकरको साथ लेकर रसातलसे पृथ्वीपर आया उससमय उनके शत्रुओं ने जो विघ्नकरनेको मायासे उत्पातकिये सो सब स्मरण करने से आयेहुए सुवासकुमारने नष्टकरदिये तदनन्तर चन्द्रप्रभके पुत्र रत्नप्रभको राज्यदेकर सूर्य्यप्रभ अपने सम्पूर्ण मंत्रि मित्र तथा बन्धुआदिको को साथलेकर भूतासन विमानपर चढ़के मयकी आज्ञासे सुमेरु नाम विद्याधरके स्थानको गंगाजी के तटपर गये सुमेरुने मयासुरसे सब वृत्तान्त सुनकर और श्री शिवजीकी पहली आज्ञाको स्मरणकरके उनसबका बड़ासत्कारकिया वहां उनसबने अपनी२ सम्पूर्ण सेना बन्धु तथा मित्रोंसमेत बुलवाई पहले सूर्य्यप्रभके साले राजपुत्र मयकी बताईहुई सम्पूर्ण विद्याओंको सिद्धकरके आये उनसबके साथमें दश २ हजार रथ और बीस २ हजार पैदल सेना थी तदनन्तर सूर्य्यप्रभके श्वशुर साले मित्र तथा बान्धव हृष्टरोमा महाकाय सिंहदंष्ट्र, प्रकंपन, तन्तुकच्छ, दुरारोह, सुमाय, वज्रपंजर, धूम्रकेतु, प्रमथन और विकटाक्ष इत्यादिक अनेक दैत्य तथा दानव सम्पूर्ण रसातलों से आये किसी के साथमें सत्तर हजार किसी के साथ अस्सी हजार किसी के संग साठहजार और किसी के साथमें तीसहजार रथ थे जिसके साथ बहुतही कमथे उसके भी साथ दशहजार से कम रथ नहीं थे किसी के साथमें तीनलाख किसी के दोलाख किसी के एकलाख और कमसेकम किसी के साथ पचासहजार पैदलथे इसीकेही अनुसार हाथी तथा घोड़े भी सबके साथमें थे फिर मयासुर सुनीथ, सूर्य्यप्रभ, सुमेरु, तथा वसुदत्तादिक राजाओं की असंख्य सेना आई तब ध्यानकरने से आयेहुए सुवास कुमार से मयासुरने पूछाकि हे भगवन् यहां यह सम्पूर्ण सेना अच्छे प्रकार से एक साथ खड़ी नहीं होसक्ती है इससे आपकोई ऐसा विस्तीर्ण मैदान बताइये जहां यह सबसेना इकट्ठी करके देखी जाय उसने कहा यहां से योजनमात्रपर एक कलापकग्राम नाम बड़ा विस्तीर्ण स्थानहै वहां जाकर अपनी सबसेना इकट्ठी करके देखो सुवासकुमार मुनि के यह वचनसुनकर मयासुरादिक सम्पूर्ण लोग उस सम्पूर्ण सेनाको लेकर कलापकग्राम को गये वहां ऊंचे स्थानपर चढ़के दैत्य और राजाओंकी सबसेनाको इकट्ठी खड़ीकरके सुमेरुने देखी और कहा कि श्रुतशर्मा के पास बहुत सेना

है उसके पास एकसौ एक विद्याधराधिराजहैं उनमें से एक २ के पास बत्तीस २ विद्याधरराजा हैं उन मे से कुछेक लोगोंको तोड़कर मैं तुम्हारे साथ मिलाऊंगा इससे प्रातःकाल वल्मीक नाम स्थान को चलो कल फाल्गुणके कृष्णपक्षकी महा अष्टमी है कलके दिन वहां विद्याधरोंके चक्रवर्त्ती का चिह्न एक तरकस उत्पन्न होताहै उसके लिये बहुतसे विद्याधर वहां जातेहैं सुमेरुके यह वचनसुनकर सेनाके स जने में उस दिनको व्यतीत करके दूसरेदिन वह सबलोग रथोंपर चढ़के हिमालयके दक्षिण शिखरपर वल्मीक नाम स्थानमें गये वहां बहुत से अन्य विद्याधराधिराजभी आये थे उनमें से कोई तो कुंडों में अग्नि बालकर हवन करनेलगे और कोई जपकरने लगे तब सूर्य्यप्रभ भी एक बड़ा भारी कुंडबनाकर हवन करने बैठा उसकी विद्याके प्रभावसे उसके कुण्डमें अपने आप अग्निबल उठी यह देखकर सुमेरु बहुत प्रसन्न हुआ और सम्पूर्ण विद्याधरों को बड़ा डाहहुआ उनमें से एकने सुमेरु से कहा कि तुम विद्याधरों के राज्यको छोड़कर इस मनुष्य सूर्य्यप्रभ के पीछे अपने को सत्यानाश करते हो यह सुन कर सुमेरुने क्रोध से उसेडांटा तब सूर्य्यप्रभ ने सुमेरु से पूछा कि इसका क्यानाम है उसने कहा कि भीमनाम विद्याधरकी स्त्री के साथ ब्रह्माजीने एकान्त मे रमण किया था तब इस विद्याधरका जन्म हुआ था गुप्ततासे ब्रह्माजीसे उत्पन्न होनेके कारण इसका नाम ब्रह्मगुप्त हुआहै इसके यह वचन इसकी उत्पत्तिकेही अनुसार हैं यह कहकर सुमेरु भी एक अग्निकुंडबनाकर सूर्य्यप्रभके साथ हवन करनेलगा क्षणभरमें पृथ्वीके विवरसे एक बड़ाभारी महाभयंकर अजगर सर्प अकस्मात् निकला उसे पकड़नेके लिये विद्याधरोंका वह स्वामी ब्रह्मगुप्त जिसने सुमेरुकी निन्दाकरीथी दौड़ा उसे उसअजगरने फूत्कार सेही सोहाथपर सूखे पत्तेके समानफेंक दिया तदनन्तर तेजप्रभ नाम विद्याधरोंका स्वामी उसेपकड़ने केलिये चला उसे भी उसने इसीप्रकार फेंकदिया फिर दुष्टदमन नाम विद्याधरोंका राजा उसे पकड़ने गया उसे भी उसने श्वाससे बहुत दूर फेंकदिया फिर विरूपशक्ति अंगारक तथा विजृम्भक नाम विद्याधरोंके राजा उसे पकड़नेकोगये उन सबको भी उसने अपनी फुंकार से तृणके समान बहुतदूर फेंकदिया तब उन सब विद्याधरोंके राजा लोगोंके शरीर पाषाणोंपर गिरनेसे चूर्ण होगये और बड़ेक्लेश पूर्व्वक वह लोगउठे तदनन्तर अभिमानसे श्रुतशर्मा उससर्पके पकड़नेको चला उसे भी उसने अपने श्वासों से फेंकदिया कुछदूरपर गिरकर वह फिर उठके उसके पकड़नेकोदौड़ा तब उससर्प ने उसेबहुतही दूर फेंकदिया पृथ्वी में गिरकर शरीरके चूर्णहोजानेसे श्रुतशर्म्मा लज्जित होकर उठा तब सुमेरुने सूर्य्य प्रभको उससर्प के पकड़नेको भेजा उसे जातेदेखकर सम्पूर्ण विद्याधर यह कहकर हँसनेलगे कि देखो यह भी अजगरको पकड़ने चलाहै यह मनुष्य लोग कैसे निर्विचार बन्दरोंके समान होते हैं जो दूसरो को करते देखते हैं सो आपभी करने लगतेहैं इसप्रकार वह सब तो हँसतेही रहे परन्तु सूर्य्यप्रभके जाने मे उससर्पने अपना मुख दवालिया और सूर्य्यप्रभने उसे बिलमे निकालकर खेंचलिया उस समय वह सर्प सुन्दर तरकस होगया और सूर्य्यप्रभ के ऊपर आकाश से पुष्पों की वृष्टिहुई हे सूर्य्यप्रभ यह अक्षय तरकस तेरे लिये सिद्धहुआहै इसेतूले यह आकाशवाणीहुई इसे सुनकर सूर्य्यप्रभने वह तरकस

ले लिया तब सब विद्याधर म्लान होगये और मयासुर सुनीथ तथा सुमेरु यह तीनों आनन्दित हुये इसके उपरान्त सम्पूर्ण विद्याधरों समेत श्रुतशर्म्माने वहां से जाकर सूर्य्यप्रभके पास अपना दूत भेजा उसने सूर्य्यप्रभके पास आकर कहा कि श्रीमान् श्रुतशर्म्मा मेरे स्वामी तुमको यह आज्ञा देते हैं कि जो तुम अपने प्राण बचाया चाहतेहो तो यह तरकस हमें देदो यह सुनकर सूर्य्यप्रभने कहा कि हे दूत तुम उससे जाकर कहो कि तुम्हें तरकससे क्या प्रयोजन है तुम्हारा शरीरही मेरे बाणोंके लगनेसे तरकस होजा- यगा इस उत्तरको सुनकर दूतके चलेजानेपर सम्पूर्ण लोग श्रुतशर्म्माके असभ्य वचनोंपर हँसनेलगे तब सुमेरुने आनन्दसे सूर्य्यप्रभसे आलिंगनकरके कहा कि आज श्रीशिवजी का वचन सफल हुआ इस तरकसके सिद्धहोजानेसे तुम्हारा चक्रवर्त्तीपना सिद्धहोगया अब चलो धनुषभी सिद्धकरो सुमेरुके यह वचन सुनकर सूर्य्यप्रभादिक उसके साथ हेमकूटनाम पर्व्वतपर गये और उसके उत्तर ओर मानसरोवर पर पहुंचे वह तड़ाग ऐसा था मानो ब्रह्माके समुद्र बनाने का नमूना था जलमें क्रीड़ा करती हुई दिव्य स्त्रियोंके मुखोंको वहवायुसे चंचल सुवर्णमय कमलोंके पत्रोंसे मानो इनलोगोंको देखकर छुपारहाथा इसप्रकार यहलोग तो तड़ागकी शोभा देखरहेथे इतनेहीमें श्रुतशर्म्मा आदि विद्याधरभी वहां आगये और घृत तथा कमलोंसे हवन करने लगे और सूर्य्यप्रभभी हवनकरने लगा उसीसमय अकस्मात् उस तड़ागसे निकलकर घोर मेघ आकाशको घेरकर जलबरसनेलगे बरसते बरसते उनमेघोंमेंसे एक काला सर्प महागिरा सूर्य्यप्रभने सुमेरुके कहनेसे उसे उठालिया उठातेही वहधनुष होगया उससर्पके धनुष हो जानेपर एक औरसर्पभी वहीं मेघोंमें से आकरगिरा उसकी विषयुक्त कठिन श्वासोंसे सम्पूर्ण विद्या- धर भागनेलगे उसेभी सूर्य्यप्रभने सुमेरुके कहनेसे लेलिया वहलेतेही धनुषकी प्रत्यञ्चा होगया और और सब मेघ उसीसमय नष्टहोगये फिर यह आकाशवाणी हुई कि हे सूर्य्यप्रभ यह अत्यन्त बलिष्ठ धनुष तथा अभेद्य प्रत्यञ्चा सिद्ध हुई है तुम इनदोनोंको लेलो इस आकाशवाणीको सुनकर और आकाश से हुई पुष्पवृष्टिको देखकर सूर्य्यप्रभने वहप्रत्यञ्चा सहित धनुष लेलिया उससमय श्रुतशर्म्मा तो उदा- सीन होकर अपने परिकर समेत तपोवनको चलागया और सूर्य्यप्रभ तथा मयासुरादिक अत्यन्त प्रसन्न हुए इसके उपरान्त सबने उस धनुषकी उत्पत्तिका कारण सुमेरुसे पूछा उसने कहा कि यहां कीचकनाम बांसोंका बड़ा दिव्यबनहै उनमेंसे जो बांस बनाकर इसतड़ागमें छोड़दिये जाते हैं वह दिव्य धनुष बन जाते हैं उन्हींको देवता दैत्य गन्धर्व तथा विद्याधरोंने सिद्ध कियाहै उनको जुदे नाम हैं देवतालोगोंने प्रथम अप्रतिहत नाम अनुपम चक्रवर्तियोंके लिये इसमें छोड़े हैं वह बड़े पुण्यात्मा भावी चक्रवर्त्तियोंको बड़े क्लेशोंसे ईश्वरकी कृपासे सिद्धहोतेहैं उन्हींमेंसे यहधनुष सूर्य्यप्रभको सिद्ध होगया है इसके मित्रभी अपने अपने योग्य धनुष सिद्ध करेंगे यहलोग विद्याओंको सिद्धकरचुके हैं इसीसे इन्हें योग्यता है और यहां अबतक यथायोग्य धनुष सिद्धकरनेसे प्राप्तहोते हैं सुमेरुके यहवचन सुनकर सूर्य्यप्रभके मित्र प्रभासा- दिक कीचकवनको गये और विधिके साथ राजा नन्दीदण्डको जीतकर कीचकवनके विस्तसब लोगों ने उसी मानसरोवरमें स्नानकर और उसीके तटपर बैठकरके हवन तथा जप करनेलगे इसप्रकार करनेसे सात

दिनमें उनसबको यथायोग्य धनुष सिद्ध हुए उन धनुषोंको लेकर वहसब सूर्य्यप्रभके साथ सुमेरुके तपोवनमें गये १०८ वहां सुमेरुने सूर्य्यप्रभसे कहा कि तुम्हारे मित्रोंने कौनकननके स्वामी महाअजेय राजा चक्रदण्डको जीतलिया यहबड़ा आश्चर्य हुआ उसके पास मोहिनीनाम विद्या है इसीसे वहअजेय है मैं जानताहूं उसने वह अपनी विद्या अपने मुख्यशत्रुके लिये रक्खी है इसीसे इनकेऊपर उसने उसका प्रयोग नहीं किया वह विद्या उसे एकहीबार फल देसक्ती है बारम्बार नहीं क्योंकि उसने प्रथम अपने गुरुपर उसविद्याका प्रभाव जाननेको प्रयोगकियाथा इसीसे गुरुने उसको शापदियाथा कि यह विद्या तुझे एकही बार सफल होगी बारम्बार न होगी इन विद्याओंका प्रभाव बड़ा दुराधर्ष है इसका कारण तुम मयासुर से पूंछो मैं इसके आगे क्या कहसक्ताहूं सूर्य्य के आगे दीपककी क्या गणनाहै सुमेरुके इसप्रकार सूर्य्यप्रभके कहनेपर मयासुर बोला कि सुमेरुने आपसे बहुतही यथार्थ कहाहै मैंभी कुछ संक्षेप से कहताहूं कि अव्यक्तसे सम्पूर्ण शक्ति तथा अनुशक्ति उत्पन्न होती हैं उनमेंसे प्राणशक्तिसे उत्पन्नहुआ नाद बिन्दुमार्ग में जाकर तटतत्त्व तथा कलासमेत विद्या आदिक मन्त्रताको प्राप्तहोताहै ज्ञान तप अथवा सिद्धोंकी आज्ञासे सिद्ध हुई उनमन्त्र विद्याओंका प्रभाव दुर्लघ्यहोताहै हे पुत्र तुमको सब विद्या तो सिद्ध होगई हैं परन्तु मोहिनी तथा परिवर्त्तनी इनदोविद्याओं से हीनहो याज्ञवल्क्य महर्षि इन विद्याओंको जानते हैं उनके पास जाकर इनविद्याओं के लिये प्रार्थना करो मयासुरके यहवचन सुनकर सूर्य्यप्रभ महर्षि याज्ञवल्क्यके निकट जाकर प्रणामकरके उनदोनों विद्याओं के लिये प्रार्थनाकी तब याज्ञवल्क्यजी ने उसको सातदिनतक सर्पोंकी बामीमें रक्खा और जब वहसर्पों के विषको सहगया तब उसेमोहिनीनाम विद्यादी फिर तीन दिनतक उसेअग्नि में रक्खा जब वह अग्निकोभी सहगया तब परिवर्त्तनीनाम विद्या दी इसप्रकार विद्याओंको देकर याज्ञवल्क्यजीने उसे फिर अग्निकुण्डमें प्रवेश करनेकी आज्ञादी उसने उनकी आज्ञासे फिर भी अग्निकुण्डमें प्रवेश किया प्रवेशकरतेही उसीसमय सूर्य्यप्रभको आकाश में चलनेवाला कामचारी महापद्मनाम विमान प्राप्तहुआ उसमें एकसौआठ पत्रथे उनसबमें एक २ पुरथा और वहसब बड़े २ विचित्ररत्नोंसे बनाहुआथा उससमय यहआकाशवाणी हुई कि हे सूर्य्यप्रभ यहचक्रवर्त्तियोंका विमान तुम्हारे लिये सिद्धहुआहै इसके संपूर्ण पुरोंमें तुम अपनी सब रानियोंको बैठालदेना इससे उनको कोई तुम्हारा शत्रु नहीं पा सकेगा इस आकाशवाणी को सुनकर सूर्य्यप्रभने हाथ जोड़ कर याज्ञवल्क्यजी से यह विज्ञापनाकी कि हे महर्षिजी मैं आपको क्या गुरुदक्षिणा दूं आज्ञाकीजिये यह सुनकर याज्ञवल्क्यने कहा कि अपने अभिषेकके समय मेरा स्मरण करना यही मेरी दक्षिणाहै अब तुम अपनी सेनामेंजाओ मुनिसे इसप्रकार आज्ञापाके उसी विमानपरचढ़के सूर्य्यप्रभ सुमेरुके आश्रम में आया वहां उसके सम्पूर्ण वृत्तान्तको सुनकर और चक्रवर्त्ती विमानको देखकर मयआदिक सब लोग अत्यन्त प्रसन्नहुए उससमय सुनीथने सुवासकुमारका स्मरणकिया स्मरणकरतेही उसने आकर मयासुरादिकों से कहा कि सूर्य्यप्रभको सम्पूर्ण विद्याओंसमेत विमानभी सिद्धहोगया तो अब शत्रुओं के जीतनेमें उदासीन क्यों होरहेहो यह सुनकर मयासुर ने कहा कि आपने बहुत ठीक कहा परन्तु

पहले नीतिके अनुसार दूत भेजना चाहिये यह सुनकर सुवासकुमारने कहा क्या हानि है ऐसाहीकरो परन्तु प्रहस्तको दूत बनाकर भेजो यह बुद्धिमान् वार्त्तालाप करने में प्रवीण कार्य्य कालका जानने वाला कठोर तथा सहनशीलहै इसमे दूतो के सम्पूर्ण गुणहैं इससे इसीको भेजो उसके इनवचनों को मानकर सवलोगों ने प्रहस्तको दूतबनाकर भेजा प्रहस्तके चलेजानेपर सूर्य्यप्रभने सबके आगे कहा कि मैंने एक अपूर्व स्वप्न देखाहै उसको सुनो आज कुछ रात्रिरहे मुझे स्वप्न में यह मालूमहुआ कि जल का बड़ा समूह हम सबलोगोको बहायेलियेजाताहै परन्तु उसमे हमलोग नृत्यकररहे हैं डूबते नहीं हैं फिर वह जलका समूह उलटी वायुके योगसे लौटा तब किसी तेजस्वी पुरुषने हमलोगोंको निकालकर अग्निमें डालदिया उसमें भी हमलोग नहीं जले फिर बहुतसे मेघ इकट्ठेहोकर रुधिरकी वृष्टिकरनेलगे उस रुधिरसे सम्पूर्ण दिशा व्याप्तहोगई तब मेरी निद्रा खुलगई और रात्रिभी व्यतीतहोगई इस स्वप्नको सुनकर सुवासकुमारने कहा कि इस स्वप्नसे आपका श्रमपूर्वक उदय सूचितहोताहै आपने जो जल का समूह देखा वह युद्धहै जो आपलोग नहींडूवे वह आपलोगोंका धैर्य्य है जो वायु जलके समूह को लौटालाई वह कोई रक्षकहै जिस तेजस्वी पुरुषने आपलोगोंको जलसे निकाला वह साक्षात् शिवजी हैं जो उसपुरुषने अग्निमें फेंका वही महायुद्धहै मेघोंका आना भयहै रुधिरकी वृष्टि भयकानाशहै और जो दिशाओंका रुधिरसे व्याप्त होनाहै वह आपकी परमसमृद्धिहै स्वप्नकईप्रकारके होते हैं अन्यार्थ अपार्थ और यथार्थ जिस स्वप्नसे शीघ्रही तात्पर्य्य सूचितहोय वह स्वप्न अन्यार्थ कहलाता है प्रसन्न देवतादिकों की आज्ञारूप स्वप्न यथार्थ कहाताहै और जो दिनमें बहुत चिन्ताकरने से रात्रिमें दिखाई देता है उसे अपार्थ कहते हैं निद्राके वशीभूत मनुष्य बाह्य विषयों से विमुख रजोगुणयुक्त मनसे अनेक २ कारणों से अनेक स्वप्न देखताहै समयकी विशेषता से स्वप्न अतिकाल तथा शीघ्र फलदायक होता है आपने यहस्वप्न रात्रिकेअन्तमें देखाहै इससे शीघ्रही फलदायकहोगा सुवासकुमारके यह वचन सुनकर सूर्य्यप्रभादिकोंने स्नानकरके अपना २ दिनका कृत्यकिया जब सम्पूर्णलोग स्वस्थहोकरबैठे तब उसी समय प्रहस्त श्रुतशर्मा के पाससेआया और मयादिकोंके पूंछनेसे वहांका सबवृत्तांत कहनेलगा कि यहां से मैं शीघ्रही त्रिकूटाचलपर्वतपर त्रिकूटपताकानाम सुवर्णकी नगरी में जाकर निवेदनकराके राजसभामें गया वहां श्रुतशर्म्मा विद्याधरोंके अनेक राजा तथा विक्रमशक्ति धुरन्धर तथा दामोदरादिक अनेक शूर और अपने पिता त्रिकूटासेन समेत बैठाथा वहां बैठकर मैंने श्रुतशर्म्मा से कहा श्रीमान् सूर्य्यप्रभने मुझे तुम्हारे पास भेजाहै और यह संदेशा कहाहै कि श्रीशिवजीकी कृपासे विद्या, रत्न, सुन्दर स्त्रियां तथा बड़े २ सहायक मुझे प्राप्त होगयेहैं इससे तुमभी सम्पूर्ण विद्याधरों समेत मेरी सेनामें मिलजाओ मैं विरोधियोंका नाशकरताहूं परन्तु नम्रपुरुषों की रक्षा करताहूं और जो तुम मुनीथकी अज्ञानकाम चूड़ामणि नाम अगम्य कन्या हरलेगये हो उसे छोड़दो क्योंकि उससे तुम्हारा कल्याण न होगा यह सुन कर सब सभासद क्रोधयुक्त होकर बोले कि वह कौनहै जो अभिमानसे हमारे पास ऐसा संदेशा भेजताहै वह मनुष्यों से ऐसा वचन कहे विद्याधरो से उसेक्या प्रयोजन है मनुष्य होकर भी ऐसा अभिमान

करने से वह नष्ट होजायगा यह सुनकर मैंने कहा कि क्या कहतेहो कि वह कौनहै सुनो श्रीशिवजीने उसे विद्याधरों का चक्रवर्ती बनाया है जो वह मनुष्य भी है तो मनुष्य तो देवता भी होगये हैं और विद्याधरोंने तो उसका पराक्रम देखाही है मैं जानताहूं कि उसका तो नाश न होगा पर उसके यहां आने से तुम्हारा नाश अवश्य होजायगा मेरे इसकहने परसम्पूर्ण सभा कुपित होगई और श्रुतशर्म्मा तथा धुरन्धर मुझे मारनेको दौड़े उन्हें आते देखकर मैंने खड़े होकर कहा कि आओ मैं तुम्हारा पराक्रम तो देखूं तब दामोदरने उठकर उन दोनोंको रोका और कहा कि दूत तथा ब्राह्मण अवध्य होताहै तब विक्रमशक्तिने मुझसे कहा कि हे दूत जाओ तुम्हारे स्वामीके समान हम सब लोग भी ईश्वरके बनाये हुएहैं वह आवे तो हम उसका अतिथि सत्कार करसक्ते हैं देखा जायगा उसके यह अभिमान युक्त वचन सुनकर मैंने हँसकर कहा कि कमलोंके वनमें हंस तभीतक शब्द करते हैं जबतक मेघ आकर आकाशको नहीं आच्छादित करते हैं यह कहकर मैं वहां से चला आया प्रहस्तके यह वचन सुनकर मयासुरादिकों ने प्रसन्न होकर युद्धके उद्योगका निश्चय करके रणदुर्मद प्रभासको अपना सेनापति बनाया और सुवासकुमारसे रणकी दीक्षाकी आज्ञापाकर सब उसदिनसे नियम पूर्वक रहने लगे ३७२ तदनन्तर रात्रिके समय गृहकेभीतर नवशय्या में सोयेहुए सूर्य्यप्रभने वहां आई एक श्रेष्ठ कन्या देखी उसे देखकर यह झूंठ मूठको सोगया तब वह कन्या उसे और उसके सब मंत्रियोंको सोताहुआ जानकर निकट आकर उसका स्वरूप देखकर अपनी सखी से बोली कि जो सोनेपर भी इसकी ऐसी सुन्दर शोभाहै तो जागनेपर न जानिये कैसीहोगी अब नेत्रोंका कौतुक पूरा होगया इसको जगाओमत इसपर मुझे अपना चित्तभी बहुत न लगाना चाहिये श्रुतशर्म्मा के साथ इसका संग्राम होनेवाला है उसमें न जाने किसको क्या होगा शूरोंके प्राणों के व्ययके निमित्त युद्धका उत्सवहुआ करता है उसमें इसका कल्याण होय फिर जो कुछ होगा सो देखाजायगा और इससे विमानपर चढ़के कामचूड़ामणि को देखा है मुझ सरीखी स्त्रियोंपर इसको कैसे अनुराग होगा उसके यह वचन सुनकर उसकी सखी बोली कि तुम क्या कहतीहो क्या तुम्हारा हृदय इसपर अत्यन्त आसक्त नहीं होगया है ३८० जिसे देखकर कामचूड़ामणिका भी चित्तचलायमान हुआ उसे देखकर जो साक्षात् अरुन्धतीभी होय तो उनका भी चित्तचलायमान होजाय तो अन्य साधारण स्त्रियोंकी क्या गणना है और यह क्या तुमको नहीं मालूमहै कि इसे सब विद्या आगई हैं इससे यह युद्धमें अवश्य जीतेगा सिद्धलोगोंने प्रथमही कहाहै कि यह विद्याधरोंका चक्रवर्त्तीहोगा और तुम्हें इसकी स्त्रीहोना बतायाहै तो क्या सिद्धलोगोंका वचन मिथ्याहोसक्ताहै तुम्हारीबराबर चूड़ामणिके और सुप्रभाकाभी एकहीगोत्रहै इनमेंसे सुप्रभाकेसाथ तो इसका विवाहहोचुकाहै जिसका चित्त सुप्रभापर अनुरक्तहुआहै उसका तुमपर क्यों नहींहोगा क्योंकि तुम उससे अधिकरूपवतीहो और तुम्हारे बान्धव नहींमानेंगे इसबातकाभी सन्देह तुमको न ही करना चाहिये क्यों कि पतिकेसिवाय स्त्रियोंका कोईबान्धव नहीं है सखी के यह वचनसुनकर वहकन्या बोली कि हे सखी तुम सत्यकहतीहो मुझे अन्यबन्धुओंसे क्या प्रयोजनहै मैंने यद्यपि अपनी विद्यासे जानलियाहै कि इसकी

युद्धमें विजयहोगी क्योंकि इसे सम्पूर्णरत्न तथा विद्या तो सिद्धहोगई हैं परन्तु अभीतक औषधी नहीं सिद्ध हुई हैं इससे मेरे चित्तमे सन्देहहोताहै वह सम्पूर्ण औषधियां चन्द्रपादनाम पर्व्वतकीगुफामे हैं पुण्यात्मा चक्रवर्त्तियोंकोही सिद्धहोती हैं जो यह वहांजाकर औषधियोंकोभी सिद्धकरे तो बहुतअच्छाहै क्योंकि प्रातःकालही यहयुद्धकरनेको जायगा इनबातों को सुन सूर्य्यप्रभ झूठीनिद्राको छोड़कर उठबैठा और बोला कि हेसुन्दरी तुमने मेरे ऊपर बड़ापक्षपातदिखाया मैं वहांजाकर औषधियोको सिद्धकरताहूं और बताओ कि तुमकौनहो उसके यहवचनसुनकर वहकन्या जानगई कि इसने मेरीसबबातें सुनली हैं इसी से लज्जितहोगई और उसकी सखीबोली कि यह विद्याधरोंके स्वामी सुमेरुकी भतीजी है इसकाविलासिनीनामहै आपके दर्शनोंको यहां आईथी इसप्रकार कहतीहुई सखीको अपने साथलेकर विलासिनी चलीगई तब सूर्य्यप्रभने अपने प्रभासादिक सम्पूर्ण मंत्रियोंको जगाकर औषधियों को सिद्धकरनेके लिये सुनीथ सुमेरु तथा मयासुरको बुलाने के लिये प्रहस्तको भेजा प्रहस्तके साथ उन सब लोगोंने आकर कहा कि अच्छीबातहै चलो औषधि सिद्धकरें तब सूर्य्यप्रभ रात्रिहीके समय उन सब लोगोंको साथलेकर चन्द्रपाद पर्व्वतको औषधि सिद्धकरनेको चला मार्गमें अनेक यक्ष गुह्यक तथा कूष्माण्ड अनेक प्रकारके शस्त्रोंकोलेकर विघ्न करनेकोमिले उनमें से कुछोंको शस्त्रोंसे मारकर और कितनोंही को अपनी विद्यासे स्तंभित करके वह चन्द्रपाद पर्व्वतपर पहुंचा वहां जिस गुफा में औषधियीं उसके द्वारपर श्रीशिवजीके गणोंने उसेरोका तब सुवासकुमारने कहा कि इनके साथ युद्ध नहीं करना चाहिये नहीं तो श्रीशिवजी अप्रसन्नहोंगे इससे आठहजारनामों से श्रीशिवजी महाराजहीकी स्तुतिकरो उन्हींकी स्तुतिसे यह लोग भी प्रसन्नहोजांयगे सुवासकुमार के यह वचन सुनकर सूर्य्यप्रभादिकों ने वरदायक श्रीशिवजीकी स्तुतिकी स्तुतिको सुनकर वह गणप्रसन्न होकरबोले कि हम गुफाको छोड़े देते हैं तुम इसमें से महौषधियांलेलो परन्तु इसमें सूर्य्यप्रभको न जाना चाहिये प्रभासको जाना चाहिये क्योंकि यहगुफा इसको सुगम है गणों के यहवचन सुनकर सबने प्रभासको उसगुफामे भेजा प्रभास के जातेही महा अन्धकारसे युक्त वह गुफा प्रकाशित होगई और उसमें बैठे हुए चार घोर राक्षस उठकर प्रणामकरके बोले कि आइये महौषधियां लीजिये तब प्रभासने वहां से सातों दिव्य महौषधियां लेकर बाहर आकर सूर्य्यप्रभ को देदीं उससमय यह आकाशवाणी हुई कि हे सूर्य्यप्रभ यह सातों दिव्य महौषधी आजतुमको सिद्धहोगईं इनमें महा प्रभावहै इस आकाशवाणी को सुनकर सूर्य्यप्रभ अपने सब साथियों समेत सुमेरु के आश्रम को चलाआया वहाँ आकर सुनीथने सुवासकुमार से पूछा कि हे मुने सूर्य्यप्रभको छोड़कर गणों ने प्रभासहीको गुफामें जानेकी क्यों आज्ञादी और राक्षसो ने क्यों इसका सत्कार किया यह सुनकर सुवासकुमार ने सबके आगे कहा कि प्रभास सूर्य्यप्रभका बड़ा हितकारी है और आत्मरूपहै इनदोनों में कोई भेदनहीं है और प्रभास के समान यहाँ कोई शूर तथा प्रभाववान्भी नहींहै पूर्व्वजन्मके पुण्यों से यह गुफा इसीकी है यह पूर्व्वजन्ममें जोथा सो सब मैं तुमसे वर्णन करताहूं पूर्व्वही एक नमुचिनाम महादानी दैत्यथा जिसे अपने शत्रुओं को भी कोई पदार्थ अदेय न

था उसने दशहजारवर्ष तपकरके ब्रह्माजीसे यह वरपाया कि लोह काष्ठ तथा पाषाण से न मरे तब कई वार इन्द्र को जीत २ कर युद्धसे उसने भगाया इन्द्रकी यह दुर्दशा देखकर कश्यपमुनिने देवता और दैत्यों से सन्धिकरवादी तदनन्तर वैरके निवृत्तहोजाने से सम्पूर्ण देवता दैत्य मिलकर मन्दराचल की रई बनाकर क्षीरसमुद्र को मथने लगे समुद्र मेंसे अनेक पदार्थ निकले उनमेंसे उच्चैःश्रवा नमुचि के भाग में आया और अन्य सम्पूर्ण पदार्थ ब्रह्माकी आज्ञासे सब दैत्य और देवताओं के भागमें यथा-योग्य आये सम्पूर्ण पदार्थों के उपरान्त पीछे से निकलेहुए अमृतको लेकर देवतालोग भागगये इस मे उनका और दैत्य लोगोंका फिर वैरहोगया और परस्पर युद्धहोनेलगा युद्ध में जिस २ दैत्य को दे-वतालोग मारते थे उच्चैःश्रवा उस २ को सूंघ२ कर जिलादेताथा इससे देवतालोग दैत्य और दानवों को युद्ध में नहीं जीतसके तब इन्द्रको उदासीन देखकर बृहस्पतिने एकान्त में उससेकहा कि तुम्हारी जयका एक उपायहै उसको तुम बहुत शीघ्रता से करो कि तुम आपही नमुचि के पास जाकर उस से उच्चैःश्रवामांगो वहतुमको शत्रुजानकर भी उच्चैःश्रवा अवश्य देदेगा और जन्मभरके संचितकिये हुए अपने यशको कभी खंडित नहीं करेगा बृहस्पतिजीके यह वचन सुनकर इन्द्रने सब देवताओं को साथ लेजाकर नमुचिसे उच्चैःश्रवा घोड़ामांगा इन्द्र को मांगता देखकर नमुचिने शोचा कि मेरेपाससे कोई भी याचक विमुख नहीं जाताहै फिर इन्द्रको तो विमुख करना मुझे उचित नहीं है इससे इसे उ-च्चैःश्रवा घोड़ा अवश्य देना योग्य है मैंने संसारमें बहुतकाल से जोदानकी कीर्त्ति फैलारक्खी है वह जोनष्ट हो जायगी तो मेरे धन तथा प्राणोंसे भी क्या लाभहै इसप्रकार शोचकर उसने शुक्राचार्य्यके निषेधको भी न मानकर वह उच्चैःश्रवा घोड़ा इन्द्रको देदिया तब इन्द्रने घोड़ापाकर शस्त्रादिको से अवध्य नमुचिको वज्र में गंगाजीका फेन रखकर मारा उससे वह मरगया (अहोदुरन्तासंसारे भोग तृष्णाययाहताः। अनौचित्यादकीर्त्तिश्च देवाअपिनविभ्यति) इस संसारमें भोग तृष्णा बड़ी कठिनहै जिसके वशीभूतहोकर देवता लोग भी अपयश तथा अनुचित कार्य्यों से नहीं डरते हैं नमुचिको इस प्रकार मराहुआ जानकर उसकी माता दनु ने अपने तपोबल से शोक के दूरकरनेको यह संकल्प किया कि वही नमुचि मेरे गर्भ में आकर फिर उत्पन्नहोवे और युद्ध में देवताओं से न जीताजाय तब वही नमुचि दनु के गर्भ से सम्पूर्ण रत्नमय शरीरवाला उत्पन्नहुआ और उसका नाम प्रबलहुआ उसजन्म में भी उसने तपकरके सौवार युद्धमें इन्द्रको जीता और पूर्व्वजन्मकेही समान दान देकर याचक लोग सन्तुष्ट किये तब सम्पूर्ण देवतालोगों ने सलाह करके पुरुष यज्ञ करने के लिये जाकर उससे श-रीरमांगा उसने उन शत्रुओं को भी अपना शरीर देदिया ठीकहै (प्राणानुदाराविसृजन्त्यर्थिनोनपरा-ङ्मुखान्) उदारलोग अपने प्राणतलक देदेते हैं परन्तु याचकोंको विमुख नहीं फेरते तब देवतालोगों ने उसका शरीर लेकर उसके खण्ड २ करडाले वही प्रबल मनुष्यलोकमें प्रभासनामसे उत्पन्नहुआहै इसने नमुचि और प्रबलनाम दोनों जन्मों में बड़ेभारी पुण्यकिये हैं उन्हीं के प्रभावसे इसको कोई शत्रु इस जन्ममें नहीं जीतसकाहै इन औषधियोंकी गुफाका वह प्रबलही स्वामीथा इसी से यह गुफा प्रभास के

आधीन हैं इसी गुफाके नीचे पातालमें प्रवलका मंदिर है जहां इसकी वारह मुख्यस्त्री अनेक प्रकार के रत्न नानाप्रकारके शस्त्र चिन्तामणि एकलक्षयोद्धा और एकलक्षही घोड़े यह सब वस्तु हैं उन सब वस्तुओंका स्वामी अब प्रभासही है क्योंकि इसी ने पूर्व्वजन्ममें यह सब उपार्जन कीथी इससे प्रभास के किसी कार्य्य में भी आश्चर्य्य न करना चाहिये यह बड़ाही प्रतापी है सुवासकुमारके यह वचनसुनकर सूर्य्यप्रभ, मयासुर प्रभास सुमेरु तथा सुनीथादिकोंको साथ लेकर उन रत्नादिकों के लानेके निमित्त पातालमें उस मंदिरके जानेके बिलके द्वारपरगया वहां प्रभास अकेलाही बिलके द्वारा अपने मंदिरको गया और सम्पूर्ण धन चिन्तामणि घोड़े योद्धा तथा अपनी वारहों स्त्रियोंको लेकर वाहरआया तव सूर्य्यप्रभ वहुत प्रसन्नहोके उनको साथलेकर अपने सम्पूर्ण साथियों समेत सुमेरुके आश्रमपर अपनी सेनामें आया वहांआकर सम्पूर्ण राजा तथा दैत्यलोगोंको अपनेर डेरोंपर चले जानेपर उसने कुशासन पर लेटकर जो रात्रि शेषथी सो व्यतीतकी २२६॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांसूर्य्यप्रभलम्बकेतृतीयस्तरंगः ३॥

इसके उपरान्त प्रातःकाल सूर्य्यप्रभ अपनी सम्पूर्ण सेना समेत सुमेरुके तपोवनसे श्रुतशर्म्मा को जीतनेकेलिये त्रिकूटाचल के निकटगया और वहां से श्रुतशर्म्माकी सेनाको हटाकर वहीं अपनी सेना का डेराडालकर और वहीं सभाका स्थानवनवाकर सुमेरु मयासुर तथा सुनीथ आदिकोंकेसाथ सभामें वैठ उससमय श्रुतशर्मा के पिता त्रिकूटाचलके स्वामी के दूतने आकर सुमेरुसे कहा कि श्रुतशर्म्मा के पिताने आपसे यह संदेशा कहाहै कि मैंने दूरहोने के कारण तुम्हारा कभी सत्कार नहीं किया आज तुम अपने साथियों समेत मेरे देशमें आयेहो इससे अब मैं आपका अतिथि सत्कार यथायोग्य करूंगा शत्रुके इस संदेशेको सुनकर सुमेरुने दूतसे कहा कि वहुत ठीक है हमारे समान योग्य अतिथि उसको दूसरा नहीं मिलेगा क्योंकि अन्य अतिथियोंके सत्कारसे परलोकमें फल मिलताहै और हमारे सत्कार का फल इसीलोकमें मिलजायगा इससे हम लोग तैयारहैं वह आकर अतिथि सत्कार करे सुमेरुके यह वचन सुनकर वह दूत अपने स्वामी के पास चलागया इसके उपरान्त सूर्य्यप्रभादिक सबलोग किसी ऊंचे स्थानपर खड़े होके अपनी सम्पूर्ण सेनाको देखनेलगे तव सुनीथने अपने पिता मयासुर से कहा कि इससेनामें आपमुझे रथ महारथ और अतिरथ आदिकोंका विभागवताइये मयासुरने कहा कि सुनो यहकहकर वह अंगुलीसे वताकर कहनेलगा कि सुवाहु, निर्घात, मुष्टिक, गोहर प्रलंब, प्रमाथ, कंकट, पिंगल, तथा वसुदत्तादिक यह सब राजा अर्द्धरथ हैं अंकुटी, सुविशाल, दंडीभूषण, सोमिल, उन्मत्तक, देवशर्म्मा, पितृशर्म्मा, कुमारक तथा हरिदत्तादिक यह सब राजा पूर्णरथहैं, प्रकंपन, दर्पित, कुम्भीर, मातृपालित, महाभट, उग्रभट, वीरस्वामी, सुराधर, भंडीर, सिंहदत्त, गुणवर्मा, कीटक, भीम तथा भयंकर यह सब द्विरथहैं विरोचन, वीरसेन, यज्ञसेन, कुञ्जर, इन्द्रवर्म्मा, शवरक, क्रूरकर्मा, तथा निराशक, यह सब त्रिरथहैं सुशर्म्मा, वाहुशाली, विशाख, क्रोधन, तथा प्रचंड यह सब राजपुत्र चतुररथहैं, जिंजर, वीरवर्मा, प्रवीर, सुप्रतिज्ञ, अमराराम, चंडदत्त, जालिक, सिंहभट, व्याघ्रभट तथा शत्रुभट यह सब राजा

तथा राजपुत्र पंचरथहैं यह उग्रवर्मा नाम राजपुत्र षट्रथहै, विशाख, सुतन्तु, सुगम तथा नरेन्द्रशर्म्मा यह सब सप्तरथहैं यह राजा सहस्रायुका पुत्र महारथहै यह शतानीक महारथों के यूथका स्वामी है सूर्य्यप्रभ के मित्र सुभास, हर्ष, विमल, महाबुद्धि अचल, प्रियंकर, शुभंकर, यज्ञरुचि तथा धर्मरुचि यह सब महारथहैं सूर्य्यप्रभ के मंत्री विश्वरुचि, भास तथा सिद्धार्थ यह तीनों महारथों के यूथपति हैं प्रहस्त तथा महार्थ अतिरथों के यूथपति हैं मज्ञाव्य तथा स्थिरबुद्धि, पूर्णरथों के यूथपहैं सर्वदमन प्रमथन, धूमकेतु, प्रवहण, वज्रपञ्जर, कालचक्र तथा मरुद्वेग यह सब रथों के तथा अतिरथों के अधिपतिहैं प्रकंपन तथा सिंहनाद रथातिरथों के यूथपहैं महाकाय, काम्वलिक, कालकंपनक, तथा प्रहृष्टरोमा, यह चारों दैत्यराज अतिरथों के यूथपों के अधिपति हैं और सूर्य्यप्रभके समान बलवान् सेनाका स्वामी यह प्रभास तथा सुमेरुका पुत्र श्रीकुंजरकुमार यह दोनों महारथों के यूथपोंके यूथपहैं यह तथा अन्य बहुत से शूर हमारी सेनामें हैं परन्तु हमारे शत्रुओं की सेनामें इससे भी अधिक हैं तथापि श्री शिवजीकी कृपासे वह लोग हमारा कुछ भी नहीं करसकेंगे मयासुरके इसप्रकार कहतेही कहते श्रुतशर्म्मा के पिताका भेजाहुआ दूत आया और बोला कि त्रिकूटाधिपति ने आपसे कहाहै कि शूरलोगोंकेलिये संग्राम बड़ा उत्सवहै औरयहां की पृथ्वी सकेतहै इससे कलापकग्राम नाम स्थानमें चलो वहीं हमलोग भी जातेहैं क्योंकि वहां की पृथ्वी बहुत विस्तृतहै यह सुनकरसुनीथ तथा सूर्य्यप्रभादिक अपनी सम्पूर्ण सेनाको लेकर कलापग्रामको गये श्रुतशर्म्मा भी अपनी सम्पूर्ण विद्याधरोंकी सेनाको लेकर वहींआया श्रुतशर्माकी सेनामें हाथियोंको देखकर सूर्यप्रभनेभी विमानभेजकर अपने हाथी बुलवालिये तदनन्तर श्रुतशर्म्माकी सेनामें सेनाधिपति दामोदरने महाशुचिव्यूह बनाया उसव्यूहके किनारेपर अपने मंत्रियों समेत श्रुतशर्म्मारहा व्यूहके आगे दामोदररहा और अन्यस्थानों में अन्यान्य महारथरहे ४१ और सूर्य्यप्रभकी सेनामें सेनाधिपति प्रभासने अर्द्धचन्द्रव्यूह बनाया उसके मध्यमें वह आपही रहा दोनों कोनों पर कुंजरकुमार तथा प्रहस्तरहा और सूर्य्यप्रभ तथा सुनीथादिक यह सब उसके पीछेरहे और सुवासकुमार तथा सुमेरु उसके पास खड़ेरहे इसप्रकार व्यूहोंकी रचनाकरके दोनों सेनाओं में रणके बाजे बजने लगे उससमय सम्पूर्ण देवतालोग संग्राम देखने के लिये आकाश में आये उनसे सम्पूर्ण आकाशपूर्ण होगया अप्सराओं तथा लोकपालों समेत इन्द्र आये सम्पूर्ण भूतगण मातृकादेवी तथा पार्वती समेत श्रीशिवजी आये सम्पूर्ण महर्षि मूर्त्तिमान् वेदशास्त्र, तथा सावित्री आदि समेत भगवान् ब्रह्माजी आये लक्ष्मी कीर्त्ति तथा जयाआदि देवियोंसे युक्त शंख चक्र गदा पद्मधारी श्रीविष्णुभगवान् गरुड़पर चढ़करआये अपनी स्त्रियोंसमेत महर्षि कश्यपजीआये सूर्य्यआये, वसुआये और यक्ष राक्षस सर्प तथा प्रह्लादादिक दैत्य आये इनसबसे आकाशके व्याप्त होजानेपर दोनों सेनाओंका बड़ा संग्राम होनेलगा अनेक प्रकारके शस्त्र चलनेलगे जय जयकारका महाशब्द होनेलगा उससमय घनेबाणोंके समूहरूपी मेघोंसे सम्पूर्ण दिशा आच्छादित होगईं परस्पर बाणोंके चलनेसे अग्निरूपी बिजली चमकनेलगी और शस्त्रोंसे मारेगये हाथी घोड़ोंके रुधिरों से पूर्ण वीरों के शरीररूपी ग्राहों से युक्त रुधिरकी नदियां

बहनेलगीं उसनदीमें नाचतेहुए तैरतेहुए तथा नानाप्रकारके शब्द करतेहुए शूरलोगोंको शृगालोंको तथा भूतोंको महा आनन्दहुआ इसप्रकार बहुतसी सेनाके मरनेसे तुमुल युद्धके शान्त होजानेपर और धीरे २ अपनी तथा पराई सेनाके भेद मालूम होनेपर और लड़तेहुए प्रतिपक्षियोंके नाम सुमेरुकेद्वारा सूर्य्यप्रभादिकोंको विदित होनेपरपहले राजासुबाहु तथा विद्याधरोंके स्वामी अट्टहासका द्वन्द्वयुद्धहुआ बहुत कालतक युद्ध होनेपर अट्टहासने सुबाहुको बाणों से वेधकर उसका शिर अर्द्धचन्द्र बाणसे काट डाला सुबाहुको मरा देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होके मुष्टिक अट्टहाससे लड़नेलगा उसेभी अट्टहासने बाणोंसे गेरकर मारा मुष्टिकको इसप्रकार मराहुआ देखकर राजाप्रलंब क्रोधित होकर अट्टहाससे लड़ने लगा अट्टहासने उसेभी मर्मोंमें बाणमारकर यमपुरभेजा और उसकी सम्पूर्ण सेनाभी मारडाली उसेभी मरा देखकर मोहन नाम राजा अट्टहासके साथ द्वन्द्वयुद्ध करनेलगा तब अट्टहासने उसके सारथीको मार धनुषको काट बाणों के दृढ़प्रहारों से उसे भी मारगिराया अट्टहाससे चार योद्धाओं को मरा देख कर श्रुतशर्म्माकी सेना प्रसन्नता से गर्जनेलगी यह देखकर सूर्य्यप्रभका मित्रहर्ष अपनी सेना लेकर सेना समेत अट्टहाससे लड़नेलगा उसने अपने शरोंसे अट्टहासके बाणोंको काटकर सारथीको मार दो तीनबार धनुप काटकर ध्वजागिराकर उसका शिरकाटडाला इससे वह रथपरसे पृथ्वीपर गिरपड़ा अट्टहासके मरनेसे श्रुतशर्म्माकी सेनामें बड़ा क्षोभहुआ और सेना आधी दिखाई देनेलगी उससमय क्षणभरमेंही घोरयुद्धसे दोनों सेनाओंकेहाथी घोड़े तथा पैदल इतने मरे कि युद्धमे केवल कबन्धही कबन्ध दिखाई देनेलगे तब विकृतदंष्ट्र नाम विद्याधर क्रोधसे आकर हर्षसे लड़नेलगा हर्षने उसके सारथी ध्वजा रथ तथा घोड़ोंको मारकर अपने बाणोंसे कुंडल समेत उसका शिरभी काटकर पृथ्वीमें डालदिया विकृतदंष्ट्रके मरनेपर कुपित होकर चक्रवाल नाम विद्याधरोंके स्वामीने हर्षका धनुषकाटके और युद्धमें उसे थकाकर मारडाला तब क्रोधसे राजा प्रमाथ चक्रवालके साथ युद्ध करनेलगा उसे भी उसने मारडाला और फिर क्रोधकरके इकट्ठे आयेहुए कंकट विशाल प्रचंड तथा अंकुरी इनचारों राजाओंको भी मार डाला इन सबको मराहुआ देखकर निर्घातनाम राजा चक्रवाल के साथ युद्धकरनेलगा इन दोनों ने बहुत कालतक युद्धकरके परस्पर एक दूसरेका रथ बाणों से चूर्णकरडाला और पदातीहोकर खड्ग तथा चक्रलेकर परस्पर युद्धकरनेलगे युद्ध करते २ वह दोनों एक दूसरे के खड्ग से कटकर पृथ्वीपर गिरपड़े उन दोनों वीरों को मराहुआ देखकर दोनों सेनाओं में उदासीनताहुई फिर विद्याधरों का स्वामी कालकंपन युद्धकरनेको आया उसके साथ युद्धकरनेको प्रकंपननाम राजपुत्रगया कालकंपन ने क्षणभरही मे उसे बाणों से मारगिराया प्रकंपन को मरादेखकर जालिक चण्डदत्त गोपक सोमिल तथा पितृशर्म्मा यह पांचों एक साथही कालकंपन से युद्धकरनेलगे उसने इन सबको विरथकरके एक साथही पांच बाण मारकर यमपुरको भेजदिया यह देखकर विद्याधर तो प्रसन्नहुए परन्तु मनुष्य तथा दैत्य बहुत खिन्नहुए तब उन्मत्तक प्रशस्त विलंबक तथा धुरन्धर यह चारों रथी कालकंपन से युद्धकरनेलगे उसने इन चारों को भी शीघ्रता से मारकर फिर आयेहुए तेजिक गेइक वेगिल शाखिल भद्रंकर तथा दंडी यह रथी भी

मारडाले और इन्हें मारकर भीम भीषण कुम्भीर विकट तथा सविलोचन इन पांचों रथियों को भी मारा कालकंपनसे इसप्रकार बहुत से राजाओं को मारेगये देखकर सुगणनाम राजपुत्र उससे जाकर युद्ध करने लगा परस्पर युद्ध करते २ वह दोनों एक दूसरे के घोड़े तथा सारथियों को मार विरथहोगये उससमय वह परस्पर खड्ग युद्धकरनेलगे युद्धकरते २ कालकम्पनने सुगणको पृथ्वीपर गिराकर उसका शिरकाट डाला उससमय मनुष्योंके साथ मानों विद्याधरोंका युद्ध असम्भव जानकर सूर्य्य भगवान् खिन्नहोकर अस्ताचलकोगये तब रुधिरसे भरीहुई युद्धभूमिही रक्तनहींहुई किन्तु आकाशभी सन्ध्यासे रक्तताको प्राप्तहोगया और भूत तथा कवन्ध नृत्यकरने लगे इसप्रकार उसदिनके व्यतीतहोजानेपर दोनों सेना युद्ध वन्दकरके अपने २ डेरोंको चलीगई उसदिन श्रुतशर्म्माकी सेनामें तो तीन वीर और सूर्य्यप्रभकी सेनामे तेतीस वीर मारेगये इससे सूर्य्यप्रभ अपने बांधव तथा मित्रादिकों के बधसे उदासीन होकर मंत्रियों के साथ युद्धसम्बन्धी वार्त्तालाप करताहुआ रात्रिभर सोया नहीं और इसकी सम्पूर्ण रानियां वन्धुओंके दुःखसे विकलहोके एकदूसरेके समझानेके लिये इकट्ठीहुई वहां रोनेके अवसरमें भी वहअनेकप्रकारकी वार्त्तालाप करनेलगीं ठीकहै (स्त्रीणांनसक्षणोयत्रनकथास्वपराश्रया) स्त्रियोंका ऐसाकोई भी क्षणनहींहोताहै जिसमें वह अपनी या पराई बात न करें उससमय प्रसंगसे एकराजपुत्रीने कहा कि बड़ा आश्चर्य्य है आज आर्यपुत्र स्त्रियोंके विनाही सोगये यहसुनकर दूसरीने कहा कि युद्धमें बन्धुओं के नाशसे आर्यपुत्र दुःखितहोरहेहैं उनका चित्त स्त्रियों में कैसे लगे यहसुनकर किसी अन्यराजपुत्रीने कहा कि जो अबभी कोई नवीन श्रेष्ठ कन्या मिलजाय तो उन्हें दुःखभूलजाय यहसुनकर कोई और राजपुत्री बोली कि यद्यपि आर्यपुत्र स्त्रियोंमें बड़े अनुरक्तहै तथापि वह ऐसेदुःखमें स्त्रियोंपर चित्त नहीं चलावेंगे १०१ उनसबके ऐसे विचारकरनेपर फिर किसी राजपुत्रीने कहा कि बताओ आर्यपुत्र ऐसे स्त्रियोंमें अनुरक्त क्यों हैं बहुतसी स्त्रियोंके होनेपरभी वह निरन्तर नवीन २ स्त्रियोंका संग्रह किया करते है और सन्तुष्ट नहीं होतेहैं यहसुनकर बड़ीचतुर मनोवती नाम राजपुत्री बोली कि मैं तुमको इसबात का कारण बताती हूं कि राजालोग बहुतसी स्त्रियोंसे विवाह क्यों करते हैं, देश रूप अवस्था, चेष्टा तथा विज्ञान आदिक भेदोंसे श्रेष्ठ स्त्रियोंमें भिन्न २ गुणहोते हैं एकही में सबगुण नहीं होसक्ते हैं कर्णाट लाट सौराष्ट्र तथा मध्य देशोंमें उत्पन्नहुई स्त्रियां अपने २ देशोंके गुणोंसे पुरुषों के चित्त हरती हैं कोई शरत्कालके चन्द्रमाके समान अपने २ मुखों से कोई सुवर्ण के कुम्भोंकेसमान शोभायमान सटेहुए उन्नत स्तनोंसे कोई कामदेवके सिंहासनके समान सुन्दर जंघाओंसे और कोई अन्य २ सुन्दर अंगोंसे पुरुषों के चित्तोंको हरती है कोई सुवर्णके समान निर्मल अंगवाली कोई प्रियंगुके समान श्यामांगी और कोई रक्तवर्ण स्त्रियांहोती हैं उन्हें देखकर मनुष्योंके नेत्र लुभाते हैं कोई स्त्री यौवनके आगमन में कोई सम्पूर्ण यौवनमें और कोई प्रौढ़ावस्थामें अपनी सुन्दरतासे मनोहरहोती है कोई हँसनेमें शोभितहोती है कोई क्रोधमें मनोहर लगती है कोई हाथी के समान गंभीरतासे गमनकरती है कोई चलने में हंसके समान शोभितहोती है कोई अमृतके समान मधुर वचनों से कर्णोंको तृप्तकरती है कोई भृकुटियों को

चलाकर देखतीहुई स्वभावहीसे मनोहरहोतीहैं कोई नृत्यमें शोभित दीखतीहै कोई अपने मनोहर गान से मनुष्योंके चित्तको आकर्षण करतीहै और कोई वीणा आदिक बजाकर पुरुषोंको अपने ऊपर आशक्तकरती है कोई बाह्यरति जानती है कोई आभ्यन्तर रति में प्रवीण होती है कोई शृंगार से अत्यन्त शोभित होती है कोई चतुरता से चित्त को हरती है और कोई अपने पति को चित्त के अभिप्रायको जानकर उसी के अनुसार कार्य्य करके उसे अपने वशीभूत करती है कहांतक कहूं स्त्रियोंमें अलग २ अनेक२प्रकारके गुण होते हैं किसी में कोई गुण किसी में कोईगुण परन्तु एक स्त्री में सम्पूर्ण गुण नहीं होते हैं इसीसे श्रेष्ठ राजालोग अनेक प्रकार के स्वाद लेने की इच्छासे बहुतसी स्त्रियों के साथ विवाह करतेही जाते हैं और परस्त्रियोंसे संगम करना कभी नहीं चाहते हैं इससे आर्य्यपुत्रका यह दोष नहीं है और इसमें हमलोगों को ईर्षा भी न करना चाहिये मनोवती के यह वचनसुनकर मदनसेना आदिक अन्यरानी भी उसीप्रकार अनेक बातें कहनेलगीं उससमय अत्यन्त रससे लज्जा रहित होकर उन सब रानियों ने परस्पर सुरत क्रियाकी प्रवीणताका भी उपदेश किया ठीकहै (प्रसंगमिलिताःकथाप्रसरसक्तचित्ता मिथस्तदस्तिनकिमप्यहोयदिहनोद्वमन्तिस्त्रियः) प्रसंगसे मिलीहुई स्त्रियां कथाके प्रबन्धमे चित्त के लगजाने से ऐसी कौन बातहै जो नहीं कहती है इसप्रकार वार्त्तालाप करते २ उन सब रानियों ने जागकर वह रात्रि व्यतीत की और शत्रुवों के जीतने की इच्छासे सूर्य्योदयकी आकांक्षा करते हुए सूर्य्यप्रभको भी वह रात्रि जागतेही जागते व्यतीत हुई १२१ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांसूर्य्यप्रभलम्बकेचतुर्थस्तरङ्गः ४ ॥

इसके उपरान्त प्रातःकाल सूर्य्यप्रभ अपनी सम्पूर्ण सेनाको लेकर युद्धभूमि में गया और श्रुतशर्म्मा भी अपनी सबसेनाको साथलेकर आया और इन्द्र ब्रह्मा विष्णु तथा शिव आदिक देवता दैत्य यक्ष राक्षस सर्प तथा गन्धर्व युद्ध देखने को आये श्रुतशर्म्मा की सेनामे दामोदर ने चक्रव्यूह बनाया और सूर्य्यप्रभकी सेनामें प्रभासने वज्रव्यूह बनाया तब दोनों सेनाओ में युद्धके बाजे बजनेलगे सुभटगर्जनेलगे और युद्धका प्रारंभहुआ शस्त्रोंसे मरेहुए शूर मे२ मण्डलको भेदतेहैं इसीसे मानो भयभीत होकर सूर्य्यबाणों के जाल में छुपगये दामोदर के बनायेहुए चक्रव्यूहको कोई दूसरा नहीं भेदसक्ता था इससे सूर्य्यप्रभकी आज्ञासे प्रभासने उसेभेदकर उसमे प्रवेश किया दामोदरने वहीं आकर उसे रोककर उसव्यूहके छिद्रको बन्दकिया और उनदोनोंका युद्धहोनेलगा सूर्यप्रभने प्रभासको व्यूहके भीतर अकेलाही गया देखकर उसकेपीछे प्रकंपन धूमकेतु कालकंपन,महामाय,मरुद्वेग,प्रहस्त,वज्रपंजर,कालचक्र, प्रमथन,सिंहनाद,कंबल,विकटाक्ष,प्रवहण,कुंजरकुमार, और प्रहृष्टरोमा यह पन्द्रह महाराथी व्यूहकेद्वारपर भेजे उस समय दामोदरने अपूर्वही पुरुषार्थ दिखाया कि प्रभासको छोड़कर अकेलेही उन पन्द्रहो के साथमें युद्धकिया यहदेखकर इन्द्रने पास खड़ेहुए नारदमुनिसे कहा कि सूर्य्यप्रभादिक यह सबदैत्योंके अवतार हैं और श्रुतशर्मादिक विद्याधर देवताओ के अंशहै उनमें से श्रुतशर्मा मेराही अंशहै इससे यह युद्ध देवासुर संग्रामहै देखो विष्णुभगवान् देवताओं के सदैव सहायक होतेहैं इसीसे विष्णुभगवान्

का अंश यह दामोदर इस प्रकार से युद्ध कररहाहै इन्द्रके इस प्रकार कहतेही दामोदर की सहायता के लिये ब्रह्मगुप्त, वायुबल, यमदंष्ट्र, सुरोषण, रोषावरोह, अतिबल, तेजप्रभ, धुरन्धर, कुबेरदत्त, वरुणशर्मा कम्बलिक, दुष्टदमन दोहन, और आरोहण यह चौदह महारथआये और दामोदरकी सहायता करके सूर्यप्रभके वीरोंको व्यूहके द्वारपर रोककर युद्धकरनेलगे तब उनलोगोंके परस्पर द्वन्द्वयुद्ध होनेलगे दामोदरकेसाथ प्रकंपन, ब्रह्मदत्तकेसाथ धूमकेतु, महामायकेसाथ अतिबल, तेजप्रभकेसाथ कालकंपन, वायुबलकेसाथ मरुद्वेग, यमदंष्ट्रके साथ वज्रपंजर, सुरोषणकेसाथ कालचक्र, कुबेरदत्तकेसाथ प्रमथन, वरुण शर्माकेसाथ सिंहनाद, दुष्टदमनके साथ प्रवहण, रोषावरोहके साथ प्रहृष्टरोमा, धुरन्धरके साथ विकटाक्ष, काम्बलिककेसाथ काम्बलिक, आरोहणकेसाथ कुंजरकुमार, और दोहन जिसका कि दूसरानाम महोत्पात भी है उसके साथ प्रहस्त का परस्पर द्वन्द्वयुद्ध होनेलगा व्यूहके आगे इसप्रकार द्वन्द्व युद्धको देखके मुनीश्वने मयासुरसे कहा कि देखो हमारे नाना प्रकारके युद्धों के जाननेवाले इन शूर महारथियों को प्रतिपक्षियों ने व्यूहमें प्रवेश नहीं करने दियाहै द्वारहीपर रोकरक्खाहै और प्रभास अकेलाही व्यूह के भीतर चलागया इससे न जानिये किसके लिये क्या होनेवालाहै यह सुनकर सुवासकुमारने कहा कि त्रैलोक्य में सम्पूर्ण देवता दैत्य तथा मनुष्य प्रभास से युद्ध करने में नहीं समर्थ होसक्ते हैं फिर इन विद्याधरोंकी क्या गणनाहै इससे जानबूझकर भी तुमको ऐसा सन्देह नहीं करना चाहिये इसप्रकार सुवास कुमारके कहनेपर कालकंपन नाम विद्याधर युद्ध में प्रभासके सन्मुख आया तब प्रभास ने उससे कहा कि अरे तूनेमेरा बड़ा अपकार कियाहै आज मैं तेरे पुरुषार्थ को देखूंगा यह कहकर उसने उसके वाण मारे और वह भी प्रभासपर वाण चलाने लगा परस्पर वाणों से उन दोनों का बड़ा आश्चर्य्यकारी युद्ध बहुत काल तक होतारहा फिर प्रभास ने एक वाण से उसकी ध्वजा एक वाण से सारथी चार वाणों से चारों घोड़े एक वाण से धनुप दो वाणो से दोनों हाथ दो वाणों से दोनों कान और एक तीक्ष्ण वाण से उसका शिर काट के अपनी चतुरता दिखाई इसप्रकारसे अनेक वीरों के मारनेवाले कालकम्पन को मारके प्रभास ने अपना बदलालिया कालकम्पन को मरादेखके मनुष्य तथा दैत्य गर्जनेलगे और विद्याधर दुखितहुए तब कालिंजरगिरिका स्वामी विद्युत्प्रभनाम विद्याधर क्रोध करके प्रभास से युद्धकरनेलगा प्रभास ने उसकी भी ध्वजाकाटकर कईवार उसका धनुपकाटा और कई वार उसने नवीन धनुपलिया तब विद्युत्प्रभ लज्जितहोकर मायासे आकाश में उड़कर गुप्तहोके प्रभास के ऊपर खड्ग तथा गदाआदिक शस्त्रोंकी वृष्टिकरनेलगा प्रभास ने भी अपने वाणोंसे उसके शस्त्रोंको काटकर प्रकाशनास्त्र से उसे प्रकाशितकरके अग्निवाणमारा तब विद्युत्प्रभ उसके तेज से जलकर पृथ्वी पर गिरपड़ा यह देखकर श्रुतशर्म्मा ने अपने महारथियों से कहा कि देखो इसने महारथों के दो यूथप मारडाले इससे तुम सबलोग मिलकर इसेमारो यह सुनकर क्रोधितहोके वंकटकपर्व्वतका निवासी विद्याधरोंका स्वामी रथोंका यूथप ऊर्ध्वरोमा, धरणीधर पर्व्वतका निवासी विद्याधरोंका स्वामी महारथ विक्रोशननाम, लीलापर्वतका निवासी विद्याधरोंका स्वामी अतिरथोंका यूथप इन्दुमाली, मलयाचलका

निवासी, विद्याधरोंकास्वामी रथोंको यूथप काकांडक, निकेतपर्व्वतका निवासी विद्याधरोंकास्वामी अति-रथोंका यूथप दर्पवाह, अंजनगिरिका निवासी विद्याधरोंका स्वामी अतिरथोंका यूथप धूर्त्तपर्वन्न, कुमुद पर्व्वतका निवासी विद्याधरोंका स्वामी महारथोंका यूथप गधों के रथपर चलनेवाला वराहस्वामी और दुन्दुभि पर्व्वतका निवासी विद्याधरोंका स्वामी महारथों का यूथप मेघावर यह आठ वीर एकसाथही आकर प्रभासपर शस्त्रचलानेलगे, प्रभास ने एकसाथही अपने बाणों से इन सबको वेधा किसी के घोड़े मारे किसीका सारथीमारा किसीकी ध्वजाकाटी किसीका धनुषकाटा और मेघावरके हृदय में चार बाण मारे जिनके लगने से वह निर्जीवहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा फिर अन्य सातों महारथियों के ऐसे बाणमारे कि उनके बाल उन बाणों में लिपटगये और अंजलिकनाम बाणसे ऊर्ध्वरोमाका शिरकाटडाला और शेष छः विद्याधरों को भालों से शिर काट २ कर पृथ्वीपर गिरादिया और उनके सारथी तथा घोड़े भी मारडाले उन आठों महारथियों को मराहुआ देखकर आकाश से प्रभास के ऊपर पुष्पोंकी वृष्टि हुई उसे देखकर देवता तथा मनुष्य प्रसन्नहुए और विद्याधर उदासीन होगये तब श्रुतशर्म्मा ने कुंडरकपर्व्वत के स्वामी काचरक, पंचुकादि के स्वामी डिंडिमाली, जयपुराचलके स्वामी विभावसु और भूमितुण्डक गिरि के स्वामी धवल यह चारों महारथियों के यूथप प्रभास से युद्धकरने को भेजे इनसबने जाकर एक साथही प्रभास को पांच २ सौ बाणमारे प्रभास ने उन बाणों को काटकर एक २ बाण से ध्वजा एक २ से धनुष एक २ से सारथी चार २ से घोड़े और एक २ बाण से चारों का शिर काटडाला इस प्रकार आठ २ बाणों से उन चारों को मारकर वह युद्धभूमि में गर्जनेलगा तब श्रुतशर्म्मा की आज्ञा से विश्वावसु के क्षेत्र में बुध से उत्पन्नहुआ कुवलय श्याम भद्रकर, जृंभकके क्षेत्र में मंगल से उत्पन्न हुआ अग्नि के समान कान्तिवाला नियन्त्रिक, दामोदर के क्षेत्रमें शनैश्चर से उत्पन्न हुआ अत्यन्त कृष्णवर्ण कपिलमूर्धज, और चन्द्रमा के क्षेत्र में बृहस्पति से उत्पन्नहुआ सुवर्ण के समान कान्ति-वाला विक्रमशक्ति, यहचारों विद्याधर प्रभाससे युद्धकरने को गये इनमें से पहले तीन अतिरथियों के यूथपोंकेभी यूथपथे और चौथा इनतीनोंसेभी अधिक पराक्रमीथा यहचारों रणभूमि में जाकर दि-व्यास्त्रोंके द्वारा प्रभाससे युद्धकरनेलगे प्रभासने उनसब अस्त्रोंका नारायणास्त्र से निवारण करदिया और शीघ्रतासे उनचारोंके आठ२ बार धनुष काटकर उनको धनुषसे रहित करदिया तब वहगदा खड्ग तथा भाले शक्ति आदिक फेंक २ कर मारनेलगे प्रभासने उनसब शस्त्रोंकोभी काटकर घोड़े तथा सार-थियोंको मारकर उनचारोंको विरथकरदिया ७५ यह देखकर श्रुतशर्म्मा ने केतुमालेश्वरके क्षेत्रमें अ-श्विनीकुमारसे उत्पन्नहुए हेम तथा नियम और मकरन्दके क्षेत्र में आठों वसुओं से उत्पन्नहुए विक्रम संक्रम पराक्रम अक्रम सम्मर्द्दन मर्द्दन प्रमर्द्दन विमर्द्दननाम विद्याधर प्रभासके साथ युद्धकरनेको भेजे यहदशोंवीर रथियोंके यूथपोंके यूथपथे इनदशोंको सहायताके लिये आया देखकर वह छः विद्याधरभी रथोंपर चढ़े और इनको साथलेकर सबकेसब एकसाथही प्रभासपर बाणों की वृष्टि करनेलगे प्रभासने अकेलेही निर्भयहोकर उनसबके साथ युद्ध किया तब सूर्य्यप्रभकी आज्ञासे प्रहस्त और कुंजरकुमार

व्यूहके अग्रभागसे युद्धछोड़कर शस्त्रलेके गौर तथा श्याम मूर्तिधारी राम तथा कृष्णके समान आकाशमार्ग से प्रभासके पास उसकी सहायताकोगये और दम तथा नियमसे युद्धकरनेलगे यद्यपि दम नियम रथोंपर सवारथे और वह पैदलथे तथापि उन्होंने इन दोनोंको वाणों से व्याकुल करदिया और सारथियोंको मारकर उनके धनुष काटडाले तब दम और नियम दोनों भयभीतहोकर आकाशमें चले गये और प्रहस्त तथा कुंजरकुमारने भी अपने नेत्रों में दिव्य अंजनलगाके आकाशमें पहुंचकर दिव्यदृष्टिसे उन्हें देखकर इतने वाणमारे कि वह दोनों विद्याधर युद्धभूमिको छोड़कर भागगये उन्हें भगाकर वारह महारथियों से लड़तेहुए प्रभास के पास आकर प्रहस्तने उन बारहों के सारथी मारडाले और कुंजरकुमारने उनके घोड़े मारडाले तब वह बारहों विद्याधर विरथहोकर उन तीनों महारथियों से युद्ध न करसके और युद्धभूमिसे भागगये तब श्रुतशर्म्मा ने चन्द्रकुल पर्व्वतके स्वामी के क्षेत्रमें चंद्रमा से उत्पन्नहुए अतिरथों के यूथप चन्द्रमाके समान सुन्दर चन्द्रगुप्तनाम विद्याधरको और धुरंधराचल के क्षेत्रमें चन्द्रमासे उत्पन्नहुए अतिरथों के यूथप महातेजस्वी नगरंगमन्नाम अपने मंत्रीको युद्धके लिये भेजा इन दोनोंको भी प्रभासादिकोंने विरथकरके इतने बाणमारे कि यह भी युद्धछोड़कर भागगये तब मनुष्य तथा दैत्य प्रसन्नहोकर गर्जनेलगे प्रतिपक्षियों की इसप्रकार जयदेखकर श्रुतशर्म्मा मलयाचलादिकों के निवासी विद्याधरों के स्वामी चित्रपालआदि चार विद्याधरों के क्षेत्रों में त्वष्टा, भग, अर्य्यमा, तथा पूषासे उत्पन्नहुए महौघ, आरोहण, उत्पात, तथा वेत्रवान्नाम चार महारथियों को साथ लेकर युद्ध करनेको आया प्रभासादिक तीनों इन आयेहुए पांचों के साथ युद्धकरनेलगे तब परस्पर छोड़ेहुए वाणों के समूह आकाशमें ऐसे शोभितहुए कि मानों रणलक्ष्मी ने धूपके निवृत्तकरने के निमित्त चँदोआटांगाहै उस समय वह विद्याधर जो विरथहोकर भागगये थे सो भी लड़नेको आये तब सूर्य्यप्रभने श्रुतशर्म्मा के पास बहुतसे विद्याधरोंको देखकर प्रज्ञाढ्य, वीरसेन तथा शतानीक आदिक महारथी प्रभासकी सहायताके लिये भेजे और आकाशमार्ग से गयेहुए उन सबके लिये भूतासन विमानपर रखकर रथभेजे प्रभासादिक सम्पूर्ण वीर उनरथोंपर चढ़कर युद्धकरनेलगे उससमय श्रुतशर्म्मा के साथी अन्यबहुतसे विद्याधर भी आकर युद्धकरनेलगे तब प्रभासादिकों के साथ विद्याधरों का महाघोर संग्रामहुआ और द्वन्द्वयुद्धमें दोनों सेनाओं के बहुतसे महारथी मारेगये वीरसेन ने सेना समेत धूमलोचनको मारा वीरसेनको हरिशर्म्मा ने विरथकरकेमारा वीर विद्याधर हिरण्याक्षको अभिमन्युने मारा अभिमन्यु तथा हरिभटको सुनेत्रनेमारा और सुनेत्रको प्रभासनेमारा ज्वालामाली तथा महायु यह दोनों परस्पर लड़करमरे प्रवहननाम विद्याधरने कुंभीरक नीरसक खर्च सुशर्म्मा उग्रविक्रम, शत्रुभट, व्याघ्रभट, तथा सिंहभट इनसबकोमारा प्रवहणको सुरोह तथा विरोहने मिलकरमारा उनदोनों को श्मशानवासी सिंहबल ने मारा और सिंहबल कपिलक चित्रापीड़ जगज्वर, कान्तायति, सुवर्ण, कामधन, क्रोधपति, बलदेव तथा विचित्रापीड़ इन दश विद्याधरों को राजपुत्र शतानीक ने मारा इसप्रकार विद्याधरों को मारतेदेखकर श्रुतशर्म्मा क्रोधकरके शतानीकके साथ आपही युद्धकरनेलगा तब उन दोनोंका देवताओं

को भी आश्चर्य्यकरानेवाला युद्ध सायङ्कालतकहोतारहा और इस बीचमें बहुतसी सेना दोनों ओरकी मरी इसप्रकार दिन के व्यतीतहोजानेपर सायङ्कालकेसमय बहुत से भूत तथा कबन्ध उठ २ कर नाचने लगे तब बहुतसी सेना तथा बन्धुओंके मारेजानेसे दुःखितहुए विद्याधर और शत्रुओंके क्षयसे जयको प्राप्तहुए मनुष्य तथा दैत्य प्रसन्न होकर अपने २ कटकमें आये उससमय श्रुतशर्म्मा के पक्षको छोड़कर महारथियों के यूथपों के अधिपति दो विद्याधर सूर्य्यप्रभके पास आके और प्रणाम करके कहनेलगे कि हम दोनों महायान और सुमाय नाम विद्याधर हैं और हमारा तीसरासाथी सिंहबलथा हम लोग महा श्मशानोंके स्वामी होनेसे सिद्धहैं इससे कोई विद्याधर हमें नहीं जीत सक्ताहै एक समय श्मशान मे सुखपूर्व्वक बैठेहुए हमलोगोंके पास महादिव्यप्रभाववाली सदैव प्रसन्नमुखी शरभाननाम योगिनी आई उससे हम लोगोंने प्रणामकरके पूंछा कि तुम कहांथीं और वहां तुमनें क्या अपूर्व बातदेखी सो कहो तब उसने कहा कि मैं अपनी सम्पूर्ण योगिनियोंके साथ अपने स्वामी श्रीमहाकाल शिवजीके दर्शन को गईथी वहां मेरे साम्हने एक वेताल पतिने आकर श्रीशिवजीसे विज्ञापन करी कि हे स्वामी हमारी सेनाके महाअधिपति जिसे विद्याधरों ने मारडालाहै उसकी कन्याको तेजप्रभ नाम विद्याधर हरेलिये जाताहै उसे सिद्धलोगों ने विद्याधरोंके चक्रवर्त्तीकी स्त्री होना बताया था इससे आप कृपाकरके उसे छुड़वादीजिये वेतालके यह वचन सुनकर श्री शिवजी ने हमसेकहा कि उस कन्याको छुड़ालाओ उन की आज्ञासे हमलोगों ने आकाशमें जाकर तेजप्रभके पास उस कन्याको देखा और उसे हाथ पैरों से स्तंभितकरके कन्याछीनली उससमय उसनेकहा कि मै इस कन्याको चक्रवर्त्ती श्रुतशर्म्मा के लिये हरे लिये जाताथा इसप्रकार उससे छीनकर वह कन्या श्रीशिवजीको हमने लाकर सौंपदी फिर कुछ दिन वहां रहकर श्री शिवजीको प्रणामकरके यहां आईहूं उसके यह वचन सुनकर फिर हमने उससे पूंछा कि तुम सर्वज्ञहो इससे बताओ कि विद्याधरोंका चक्रवर्त्ती कौनहोगा उसनेकहा कि सूर्य्यप्रभहोगा तब सिंहबलने कहा कि ऐसानहींहोसक्ता है क्योंकि सम्पूर्ण इन्द्रादिक देवता श्रुतशर्म्मा के पक्षमे हैं यहसु-नकर वह फिरबोली जो तुम्हें विश्वासनहीं है तो सुनो कि थोड़ेही कालमें श्रुतशर्म्माका और सूर्य्यप्रभ का युद्धहोगा उसमें तुम्हारेही सन्मुख यह सिंहबल मनुष्यके हाथसे माराजायगा तब तुम इस परीक्षासे ही जानलेना कि मेरा वचन सत्यहै यह कहकर वह योगिनी चलीगई आज उस योगिनी के वचन के अनुसार हमनें अपने नेत्रों से देखलिया कि सिंहबलको मनुष्यने मारा इसी विश्वाससे हमको नि-श्चयहोगया कि आपही सब विद्याधरों के चक्रवर्त्तीहोंगे इसीसे हम आपके चरणकमलों के आश्रय में आये हैं अब आपकी आज्ञाके अनुसार सबकार्य्यकरेंगे उनके यहवचनसुनके सूर्य्यप्रभने विश्वास करके उन दोनोंका बड़ा सत्कारकिया और शत्रुकी सेनामें भेद देखकर तथा युद्धमें शत्रुओं के पक्षका नाश देखकर बहुत प्रसन्नहोके स्त्रियों के विना अपने मंत्रियों समेत शयनस्थान मे जाकर लेटा उन दोनों विद्याधरों के चलेजानेका वृत्तान्त सुनकर श्रुतशर्म्माको बहुत दुखित देखके इन्द्रने उसके पास विश्वावसु के द्वारा यहकहला भेजा कि तुम धैर्य्यधरो प्रातःकाल सम्पूर्ण देवताओं को साथ लेकर मैं

आप युद्धमें तुम्हारी सहायता करूंगा विश्वावसुके यहवचन सुनकर श्रुतशर्म्माका चित्त कुछ सावधान हुआ १३८॥ इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांसूर्य्यप्रभलम्बकेपंचमस्तरंगः५॥

रात्रिके समय स्त्रियोंके विनाही अकेला शय्यापर लेटाहुआ रणकेलिये उत्कण्ठित सूर्य्यप्रभ अपने मंत्री वीतभीतसे बोला कि हे मित्र मुझे निद्रा नहींआतीहै इससे किसीसत्त्ववान् वीरपुरुषकी कथा तुम मेरे आगेकहो जिससे कि चित्तवहले सूर्य्यप्रभके यहवचन सुनकर वहुत अच्छा जो आज्ञा ऐसाकहकर वीतभीत यहकथा कहनेलगा कि सम्पूर्ण पृथ्वीकी आभूषणरूप समस्तरत्नों से युक्त उज्जयिनी नाम नगरी है उसमें महासेननाम गुणज्ञ सम्पूर्ण कलाओंका जाननेवाला सूर्य्यके समान तेजस्वी और चन्द्रमा के समान कान्तिमान् राजाथा उसके अशोकवतीनाम रानी प्राणोंके समान प्रियथी क्योंकि उसके समान त्रैलोक्यमेंभी कोई सुन्दर स्त्री न थी उसरानी के साथ क्रीड़ाकरतेहुए और धर्म्मपूर्वक राज्यका पालन करतेहुए राजा महासेनको गुणशर्म्मानाम एकब्राह्मण अत्यन्तप्रिय तथा मान्यहोगया गुणशर्म्मा अत्यन्त रूपवान् शूर वेदविद्याका पारंगत और सम्पूर्ण कला अस्त्र तथा शस्त्रादि विद्याओं का जाननेवालाथा वहसदैव राजाकेही पास रहाकरताथा एकसमय अन्तःपुर में नृत्यकी वातचीत के प्रसंगसे राजा तथा रानीने गुणशर्म्मासे कहा कि तुम सर्वज्ञहो इससे जो तुम नाचनाभी जानतेहो तो कृपाकरके अपना नाचहमें दिखाओ यहसुनकर गुणशर्म्मा मुसकुराकरबोला कि मैं नाचना जानताहूं परन्तु सभामें नाचना उचित नहींहै हास्यका कारण नृत्यमूर्खोंका काम है इसीसे शास्त्रोंमें वहुधा नाचनेका निषेधहै और फिर राजा रानीके आगे नाचना तो वड़ी लज्जाकी वातहै गुणशर्म्माके यहवचन सुनकर रानीकी प्रेरणासे राजावोला कि यहसभा नहींहै जहां नाचनेसे पुरुषोंको लज्जाहोतीहै यह तो मित्रोंकी गोष्ठी है इसमें अपनी २ चतुरता अवश्य दिखावनी चाहिये मैं तुम्हारा राजा नहींहूं क्योंकि तुम मेरे परममित्रहो आज जवतक तुम नाचोगे नहीं तवतकमैं भोजन नहींकरूंगा राजाके इसप्रकार हठकरनेपर गुणशर्म्माने नाचना स्वीकारकिया ठीकहै (कथंहिलंघ्यतेभृत्यैर्ग्रहिकस्यप्रभोर्वचः) आग्रही स्वामीके वचनोंको सेवक कैसे टालसक्तेहैं तव गुणशर्म्माने ऐसा उत्तम नृत्यकिया कि राजा तथा रानी का चित्तभी उसके साथ नाचनेलगा नाचनेके उपरान्त राजाने उसको वीणा वजानेकोदी उसने उस वीणाको छेड़तेही राजासे कहा कि हे महाराज यहवीणा अच्छी नहीं है मुझे दूसरी वीणा मंगवादीजिये इसवीणाकी तांतके भीतर कुत्तेका वालहै इसके वजनेसे मुझे यहवात मालूमहोती है यहकहकर उसने राजाको वीणादेदी राजाने उसकी तांतको खुलवाकर जो देखा तो उसमें कुत्तेका वालनिकला तव राजाने उसकी वड़ी प्रशंसाकरके उसेदूसरी वीणा मँगादी उसवीणाको वजाकर गुणशर्म्माने मधुर स्वरसे गानकिया उसके मधुरगानको सुनकर तथा वीणामें अति प्रवीणताको देखकर राजा और रानी को वड़ा आश्चर्य्यहुआ तव गुणशर्म्माने राजाको अपनी शस्त्र और अस्त्र विद्याभी दिखाई यहदेखकर राजाने उससे कहा कि जो तुम युद्धविद्याभी जानते हो तो मुझे एकवन्धकर्ण दिखाओ उसने कहा आपशस्त्र लेकर मेरे ऊपरप्रहार कीजिये तव राजाने जो खड्गादिक शस्त्रलेकर गुणशर्म्मापर प्रहार

किये उन सबको बचा २ कर उसने राजाके हाथ पैर बांधदिये तब तो राजाने गुणशर्म्मा की अत्यन्त प्रशंसाकी और उसे राज्य के कार्य्यों में सहायता देने के योग्यजाना उससमय रानी अशोकवती उसके रूप तथा गुणों को देखकर मोहितहोगई और उसने यहशोचके कि जो यहयुवापुरुष मुझे नहीं मिला तो मेरा जीवन व्यर्थ है राजासे कहा कि हे आर्यपुत्र आप कृपाकरके गुणशर्म्मा को आज्ञा दीजिये कि यहमुझे वीणाबजाना सिखलादेवे आज इसे वीणा बजाते देखकर मेरा भी चित्त वीणा जाने को बहुत चाहता है यह सुनकर राजाने गुणशर्म्मा से कहा कि तुम रानी को वीणा बजाना सिखादो राजाकी आज्ञा पाकर उसने कहा कि बहुत अच्छा किसी दिन अच्छा मुहूर्त्त देख के सिखानेका प्रारम्भकरूंगा यह कहकर और राजा से पूंछकर वह अपने घरको चलागया ३५ तदनन्तर गुणशर्म्मा रानीकी दृष्टि विपरीत देखकर अधर्म की शंकासे बहुत दिनतक वीणा बजानेकी शिक्षा को टालतारहा एकदिन राजाके भोजन के समय गुणशर्म्मा भी बैठाथा उसने रसोइयेको दालपरोसतें देखकर कहा कि यह मतपरोसो यह सुनकर राजाने पूंछा कि तुमने इसे क्यों निषेध किया उसने कहा कि इसमें विषमिला है इस रसोइये ने परोसते समय भय तथा शंका से चकित होकर मेरा मुख देखाथा और अन्यलक्षणों से भी मुझे मालूम होगया है आप अभी किसी जीवको खिलाकर देख लीजिये अभी मालूम होजायगा मैं पीछेसे उसका विष दूरकरदूंगा उसके यह वचन सुनकर राजाने उसी रसोइयेको वह व्यंजन खिलाया खातेही उसे मूर्च्छा आगई तब गुणशर्म्मा ने मन्त्रसे उसका विषदूर कर दिया और राजाने उससे पूंछा कि यह क्याबातहै सत्य २ बतलाओ राजाके यह वचन सुनकर उसने भयभीत होकर कहा कि हे स्वामी गौड़देशके स्वामी राजा विक्रमशक्तिने आपको विष देने के लिये मुझको यहां भेजाथा मैंने यहां विदेशी बनकर आपसे मिलकर रसोईदारीमें नौकरी करली आजअवसर पाकर मैं इस व्यंजन मे मिलाकर आपको विषदेना चाहताथा परन्तु इसबुद्धिमान्ने पहचानलिया अब आप मालिक हैं जो चाहिये सो कीजिये इसप्रकार उस रसोइयेके वचन सुनकर राजाने उसेमरवाडाला और प्रसन्न होकर गुणशर्म्माको हजार गांवदिये दूसरेदिन राजाने रानी के बहुत हठ करनेपर गुणशर्म्मा से वीणाकी शिक्षाका प्रारंभ करवाया रानी अशोकवती वीणा बजानेके समय गुणशर्म्मा के साथ हास विलास करनेलगी एकदिन उसने एकान्तमे निवारण करतेहुए भी गुणशर्म्मासे नखक्षत देकर कामसे व्याकुल होकर कहा कि हे सुन्दर मैंने वीणा सीखनेके बहानेसे तुम्हे अपने पास एकान्त में बुलाना चाहाथा तेरे ऊपर मेरा बड़ाही अनुरागहै मेरेसाथ भोग विलासकरो रानीके यह वचन सुनकर गुणशर्म्मा ने उससे कहा कि ऐसा कभी न कहो तुम हमारे स्वामीकी स्त्रीहो मुझसरीके मनुष्य अपने स्वामियों से द्रोह नहीं करते हैं इससे इससाहस से तुम अपने चित्तको हटाओ यह सुनकर वह रानी बोली कि तुम्हारा यह रूप और कलाओंकी चतुरता व्यर्थ है हे नीरस प्रार्थना करतीहुई मुझ सुन्दरस्त्रीको तुम कैसे छोड़े देतेहो यहसुनकर गुणशर्म्मा हँसकर बोला (सुष्ठूक्तंतस्यरूपस्य वैदग्ध्यस्यचकिंफलम्। परदारापहारेण यन्नाकीर्त्तिमलीमसम्॥ इहामुत्रचयन्नस्यातामातायनरकार्णवे) तुमने बहुतठीककहा कि उस

रूप तथा चतुरताका क्या फलहै जो परस्त्रियों को हरकर इस लोकमें अयशसे कलंकित न होय और परलोकमें नरकमें न गिरावे यह सुनकर रानी कुपित होकर बोली कि जो तुम मेरा वचन नहीं मानोगे तो अवश्य मेरी मृत्यु होजायगी परन्तु मैं तुम्हे मारकर मरूंगी यह सुनकर गुणशर्म्माने कहा कि ऐसाही होय क्या हानिहै (वरंयद्धर्मपाशेन क्षणमेकंहिजीवितम् । परंनपदधर्मेण कल्पकोटिशतान्यपि.) धर्मके अनुसार एकक्षणभरका भी जीवन श्रेष्ठहै परन्तु अधर्म से सौकोटि कल्पतक जीनाभी अयोग्यहै पुण्य करने से मेरी अकलंकित मृत्यु अच्छी परन्तु पाप करने से राजाका निन्दित दंडनही अच्छा है यह सुनकर वह रानी फिर बोली कि देखो मैं तुम्हें समझातीहूं तुम अपनी और मेरी दोनोंकी हानिमतकरो यह राजा मेरे अशक्य वचनोंको भी नही टालताहै इससे कहकर मै तुमको बहुत से देश दिलवादूंगी और सम्पूर्ण छोटे २ राजा तुम्हारे आधीन करवादूंगी इससे तुम राजाहीके समानहोजाओगे तब तुमको किसीका भय नहीं रहैगा और कोई तुम्हे दवा नही सकेगा इससे तुम निस्सन्देह होकर मेरे वचन स्वीकारकरो मेरे वचनोंको कुछ मिथ्या मतजानो इसप्रकार हठ पूर्व्वक कहतीहुई रानीसे गुणशर्म्माने उस समय युक्ति पूर्व्वक टालनेकेलिये कहा कि जो तुम्हें बहुत आग्रहहै तो मैं तुम्हारा कहना करूंगा परन्तु भेदके भयसे ऐसे कार्य्य एकाएकी नही करने चाहियें कुछ दिन ठहरजाओ मेरे वचन सत्यजानो मुझे तुमसे विरोध करके अपना सर्वनाश करवाने से क्या प्रयोजनहै इसप्रकार उसे संतोष देकर गुणशर्म्मा वहां से किसीप्रकार बचकर चलाआया ६७ तदनन्तर कुछदिनोंके व्यतीत होनेपर राजामहासेनने चढ़ाई करके सोमदेशके राजाका किला घेरलिया तब गौड़देशके राजा विक्रमशक्तिने पीछेसे आकर राजा महासेनको घेरा राजा महासेनने अपने ऊपर दूसरे शत्रुको आया देखकर गुणशर्म्मासे कहा कि एकशत्रु पर तो हम चढ़ाई करके आयेथे दूसरेने हमको पीछेसे आकर घेरलिया अब इतनी सेना हमारे पास नहीं है जो इन दोनोंसे हम लड़सके और जो न लड़ें तो इनदोनोंके बीचमें कबतक पड़ेरहेंगे इससे इस संकट मे हमको क्या करना चाहिये सो बताओ यह सुनकर गुणशर्म्माने कहा कि धैर्य्य धरिये मैं ऐसा उपाय करूंगा जिससे सब संकट दूरहोजायगा इसप्रकार राजाको समझाकर गुणशर्म्मा रात्रिको अपने नेत्रोंमें लोपांजन लगाकर अलक्षितहोके राजा विक्रमशक्तिके कटकमेंगया और राजा के निकटजाके सोतेहुए राजाको जगाकर यह वचन बोला कि हे राजा मैं विष्णुभगवान्का दूतहूं तुम उनके भक्तहो और वह अपने भक्तोंका सदैव कल्याण करते हैं इसीसे उन्होंने मुझे तुम्हारे पास यह कहनेको भेजाहै कि राजा महासेनसे सन्धिकरके शीघ्रही लौटजाओ नहीं तो सेना समेत तुम्हारा नाशहोजायगा जो तुम उसके पास संधिकेलिये दूतभेजोगे तो वह स्वीकारकरलेगा यह कहकर वह चुपहोगया उससमय राजा विक्रमशक्तिने शोचा कि इसकठिन स्थानमें विष्णुदूतके सिवाय और कौन आसक्ताहै और इसकी आकृति भी मनुष्यों कीसी नहींहै यहसमझकर उसने कहा कि मैं धन्यहूं जिसके पास विष्णुभगवान्ने अपना दूतभेजाहै उनकी जो आज्ञाहै वही मैं करूंगा राजा के यह वचन सुनकर गुणशर्म्मा अलोपांजन लगाके राजाको विश्वास दिलाने के निमित्त वहीं अलक्षित होकर चलाआया और उसने राजा

महासेन से आकर सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा राजा महासेन उस वृत्तान्तको सुनकर बहुत प्रसन्नहुआ और प्राण तथा राज्यकी रक्षा करनेवाले गुणशर्माकी बहुत प्रशंसा करनेलगा प्रातःकाल राजा विक्रमशक्ति दूतभेजके राजा महासेनसे सन्धिकरके सेना समेत लौटगया और महासेनभी सोमदेशके राजा को जीतकर बहुत से हाथी घोड़े तथा रत्नादिको लेकर अपनी उज्जयिनीपुरी को चलाआया वहां आकर एकदिन गुणशर्माने नदी में स्नान करतेहुए राजा को ग्राहसे बचाया और एकदिन उपवन में सर्पसे बचाया इसके उपरान्त कुछ दिनों के व्यतीत होनेपर राजा महासेन बहुतसी सेना इकट्ठी करके अपने शत्रु गौड़देशके स्वामी राजा विक्रमशक्तिपर चढ़ाई करके गया वह भी अपनी सम्पूर्ण सेना लेकर लड़ने को नगरके बाहर निकला तब महाघोर युद्ध होनेलगा क्रमसे द्वन्द्व युद्ध होते २ दोनों राजा विरथ होकर खड्गलेके परस्पर युद्ध करनेको चले उससमय राजा महासेन व्याकुल होके पृथ्वी पर गिरपड़ा उसे गिरादेखकर विक्रमशक्तिने खड्ग से उसे मारडालना चाहा तब गुणशर्मा ने चक्रसे खड्ग समेत राजा विक्रमशक्तिका हाथ काटडाला और छाती में परिघमारकर उसे पृथ्वी में गिरादिया गुणशर्मा की इस शीघ्रताको देखकर राजा महासेन उठके बोला कि हे विप्रवर तुमने यह पांचवींवार मेरे प्राणोंकी रक्षाकी है तदनन्तर गुणशर्मा से मारेगये राजा विक्रमसेनके सम्पूर्ण राज्यको विध्वंस करके और वहां के सम्पूर्ण रत्नलेके राजा महासेन गुणशर्माकी सहायतासे सब अपने अन्य शत्रुओं को जीतकर उज्जयिनी में आकर सुख पूर्वक रहनेलगा ६४ इस बीचमें रानी अशोकवती निरन्तर गुणशर्मा से अपनी प्रार्थना करतीहीगई परन्तु वह उस कुकर्मको स्वीकार न करके उसकोटालताही रहाठीकहै (देहपातमपीच्छन्ति सन्तोनाविनयंपुनः) सज्जन लोग अपने शरीर तकको त्याग देते हैं परन्तु अधर्म नहीं करते तब बहुत दिनतक प्रार्थना कर २ के रानी अशोकवती गुणशर्माका निश्चय अभिप्राय कुकर्मसे बचनेही का जानकरके एकदिन शत्रुतासे उसको मरवाने के लिये राजा के आने के समय बैठकर मिथ्या रोदन करनेलगी राजाने मन्दिरमें आकर उसेरोतेहुए देखकर पूछा कि हे प्रिये यह क्याहै किसने तुम्हें कुपित कियाहै कहो किसके प्राण तथा धनहरूं राजाके यह वचनसुनकर रानी बोली कि जिसने मेरे साथ अपकार किया है उसका तुम कुछ नहीं करसक्ते वह ऐसा साधारण पुरुष नहीं है इससे उस बातको प्रकट करने से क्या प्रयोजनहै यह सुनकर राजाके बहुत आग्रह करनेपर रानीने कहा कि जो आपको हठही है तो सुनिये कि राजा विक्रमशक्तिसे सलाह करके धनके लोभसे गुणशर्मा आपको मारना चाहता था इसीसे इसने अपना दूत राजा विक्रमशक्ति के पास इसलिये भेजाथा कि वह अपना खजाना आदि इकट्ठा करे उसदूत के वचनसुनकर विश्वासपात्र रसोइये ने राजासे कहा कि आपव्यर्थधन न बिगाड़िये मैं आपका कार्य्य करदूंगा यह कहकर वह रसोइया उस दूतको वहीं बँधवाकर आपको विष देनेके लिये यहां आया और आपके रसोईदारों में नौकर होगया इसबीचमें वह दूतभी बंधनसे छूटगया उसने यहां आकर गुणशर्मा से रसोइयेका वृत्तान्त कहदिया और आपके रसोई में से उसको पहचनवादिया तब गुणशर्मा ने विषदेने को उद्यत उस रसोइये को आपसे

कहकर मरवाडाला इनदिनों उस रसोइयेकी माता स्त्री तथा भाई उसकी खबरलगानेके लिये यहां आये यह जानकर गुणशर्मा ने उसकी माता तथा स्त्रीको तो मरवाडाला परन्तु उसका भाई भागकर प्रारब्ध से मेरे यहां आगया और मुझसे अपनासम्पूर्णवृत्तान्त जैसेही कहचुका वैसेही गुणशर्माभी मेरे यहां आया उसे देखकर वह भयभीत होकर न मालूम कहां भागगया और गुणशर्माभी मेरे यहां उसे देखकर घबराकर कुछ शोचनेसालगा तब मैंने एकान्तमें सबवृत्तान्त जाननेकी इच्छाकरकेउससे पूछा कि आज तुम घबरायेहुए से क्यों हो मेरेपूछनेपर वह अपनेभेदके खुलने के भयसे मुझे गांठने की इच्छासे बोला कि हे रानी तुम्हारे अनुरागकी अग्नि से मैं भस्महोरहाहूं इससे तुम मेरेसाथ भोग विलास करो नहीं तो मेरेप्राण नही बचेंगे मेरीरक्षाकरो यह कहकर वह मेरेपैरोंपर गिरपड़ा मैंने अपनेपैर हटालिये तब जैसेही उठकर उसने जबरदस्ती से मेरा आलिंगनकिया वैसेही पल्लविका नाम मेरीचेरी यहां आगई उसेदेखकर गुणशर्मा यहांसे भागगया जोउससमय वह पल्लविका यहां न आजाती तो वह पापी मुझेभ्रष्टकरडालता इसप्रकार कहकर रानी रोनेलगी ठीकहै (आदावसत्यवचनं पश्चाज्जाताहिकुस्त्रियः) (पहले असत्य वचन उत्पन्नहुएहैं और पीछेसे दुष्ट स्त्रियां उत्पन्न हुईहैं) रानीके इसप्रकार वचन सुनकर राजामहासेन क्रोधसे व्याप्तहोगया ठीकहै (स्त्रीवचःप्रत्ययोहन्ति विचारंमहतामपि) (स्त्रियों के वचनोंपर विश्वास करने से महात्माओंका भी विचार नष्ट होजाताहै) और रानीसे बोला कि धीरजकरो मैं उस दुष्ट को अवश्यमरवाडालूंगा परन्तु युक्तिसे यह कामहोगा नहीं तो बड़ा अपयशहोगा क्योंकि सम्पूर्ण देशमें यहबात प्रसिद्धहै कि उसने पांचवार मेरेप्राणोंकी रक्षाकीहै और यह बात लोकमें प्रसिद्ध करने के योग्य नहीं है कि उसने तुम्हें भ्रष्टकरना चाहाथा राजाके यह वचन सुनकर रानीबोली कि यह दोषतो कहने लायकनहीं है परन्तु क्या यह भी कहने के योग्य नहीं है कि उसने विक्रमशक्ति से मिलकर आपको मरवाना चाहाथा रानीके यह वचन सुनकर राजामहासेन तुमने बहुत अच्छीयुक्ति बताई है यह कहकर अपनी सभामें चलाआया वहां सम्पूर्णमंत्री राजपुत्र तथा राजाआदिक राजासे मिलने को आये और गुणशर्मा भी अपने घरसे राजाके यहां को चला उसदिन मार्गमें उसको बहुत से दुश्शकुन हुए बाईं ओर कौआ मिला कुत्ता बाईं ओर से दाहिनी ओर चलागया सर्प दाहिनी ओर से बाईं ओर चला गया और कन्धे सहित उसकी बाईंभुजा फड़कनेलगी इन दुश्शकुनों को देखकर उसने अपने चित्त में कहा कि निस्सन्देह आजकुछ अशुभहोनेवालाहै जोकुछ होय सो मेरेहीलियेहोय राजाको न होय इसप्रकार राजभक्ति से शोचताहुआ गुणशर्मा सभामें जाकर राजाको प्रणामकरके बैठा उसदिन राजाने उसका सत्कार न करके क्रोधयुक्त दृष्टिसे उसको देखा राजाको क्रोधित देखकर गुणशर्मा शोचनेलगा कि यह क्या बातहै तब राजा अपने सिंहासनपरसे उठकर गुणशर्माके पासजाबैठा और सभासदों को विस्मित देखकर बोला कि यह सिंहासन मेरेयोग्य नहीं है इसपर गुणशर्माको बैठना चाहिये राजा के यह वचन सुनकर गुणशर्मा बोला कि मैं सेवकहूं और आप स्वामीहो मेरा आपका ऐसा व्यवहार नहीं होसक्ता आप आसनपर बैठकर जो चाहिये सो कहिये उस धीरके इसप्रकार कहने से और मंत्रियों के

समझाने से राजा सिंहासनपर बैठकर कहनेलगा कि यह वात आपलोगों को विदितहै कि मैंने अपने प्राचीन मंत्रियो को छोड़कर इस गुणशर्मा को अपने समान करलिया और देखिये इसने दूतोंको भेजकर गौड़देशके स्वामी विक्रमशक्ति से मिलकर मेरेसाथ कैसा द्रोहकरना चाहाथा यह कहकर उसने जो २ वाते रानी अशोकवतीने कहीथीं सो सब वर्णनकरीं और साधारण पुरुषो को हटाकर विश्वास पात्र लोगो के सन्मुख रानीके भ्रष्टकरने की इच्छा इसकी थी यह भी कहदिया राजा के वचन सुनकर गुणशर्माने कहा कि आपसे यह असत्यवात किसने कही है यह आकाश में चित्र किसने वनाया है तव राजाने कहा कि हे पापी जो यहवात सत्य न होती तो तुम उस दाल मे मिलाहुआ विप कैसे जान लेते यह सुनकर गुणशर्माने कहा कि बुद्धिसे सव जाना जासक्ताहै यह सुनकर अन्य मंत्रियोने उसके द्वेष से कहा कि यहवात जानना असम्भवहै मंत्रियो का वचन सुनकर गुणशर्मा फिर वोला कि हे स्वामी तत्त्व को विनाजाने आपको ऐसा न कहना चाहिये नीति के ज्ञातालोग विचार रहित राजा की प्रशंसा नहीं करते हैं गुणशर्माके यह वचन सुनकर राजाने क्रोधसे यह कहके कि तू वडा धृष्टहै दौडकर उसकी पीठपर छुरी मारनी चाही उसने वह प्रहार युक्तिसे वचालिया तव राजाके कहने से अन्य सवलोग उसके मारने को उद्युक्तहुए उसने उन सवके प्रहारो को वचाकर युक्ति से उन सव के वाल एकहीमें गूंददिये इसप्रकार युक्तिपूर्वक अपनेको वचाकर वहसभाके वाहर चलाआया और पीछेसे दौड़ेहुए सौ योद्धाओंको मारकर नेत्रोंमें लोपांजनलगाके अलक्षितहोके वहांसे दक्षिणदिशा को चला मार्गमें चलते २ उसने शोचा कि निस्संदेह इसकुटिल रानी अशोकवतीनेही इस मूर्खराजाको प्रेरणाकीहै (अहो विपादप्यधिकाःस्त्रियोरक्तविमानिताः। अहोह्यसेव्यास्साधूनांराजानोऽतत्त्वदर्शिनः) अनुराग युक्त स्त्रियां अनादर करनेपर विपसेभी अधिक घातकहोजाती हैं सज्जन पुरुषोंको मूर्ख राजाओंका सेवन न करनाचाहिये इसप्रकार विचारकरताहुआ गुणशर्म्मा किसी ग्राम मे पहुंचा वहां एक ब्राह्मण बरगदके वृक्षके नीचे अपने शिष्योंको पढारहेथे उसने उनब्राह्मण देवके पास जाकर उनको प्रणामकिया ब्राह्मणने अतिथि सत्कार करके उससे पूंछा कि तुम वेदकी कौनसी शाखा पढतेहो उसने कहा कि बारहशाखा पढताहूं दो सामवेदकी दो ऋग्वेदकी सात यजुर्वेदकी और एकअथर्ववेदकी यह सुनकर उसब्राह्मणने कहा कि तो तुम देवताहो और भव्य आकृति देखकर पूंछा कि तुम किस देशमें रहतेहो किसवंशमें तुम्हारा जन्महै क्या तुम्हारा नामहै और इतना तुमने कहांपढ़ाहै सो वताओ यह सुनकर गुणशर्म्मा वोला कि उज्जयिनीपुरीमें आदित्यशर्म्मा नाम कोई ब्राह्मणका वालकथा वाल्यावस्थाहीमें उसका पिता मरगया और उसकी माता अपने पतिके साथ सतीहोगई तव आदित्यशर्म्मा उसीपुरीमें अपने मामाके यहांरहकर वेद विद्या तथा कला सीखनेलगा १६१ कुछ दिनोंमें सम्पूर्ण विद्याओंको पढ़कर आदित्यशर्म्मा जप तथा व्रतोंमें अपना समय व्यतीत करनेलगा और उसकी एक तपस्वीसे मित्रताहोगई एकसमय वहतपस्वी उसको अपने साथ ले जाकर श्मशानमें यक्षिणी सिद्ध करनेके लिये हवन करनेलगा वहां सुवर्णके विमानपर चढ़ीहुई एक दिव्य कन्या आई उसके साथमें

बहुतसी उत्तम कन्याथी वह उसतपस्वी से बड़ी मधुरवाणी से बोली कि हे तपस्वी मैं विद्युन्मालानाम यक्षिणीहूं और यह जो मेरे साथहैं सो सबभी यक्षिणी हैं इनमेंसे जिसको तुम चाहो उसे लेलो इतनाही तुमको इसमन्त्र साधनसे सिद्धहुआहै तुम्हें मेरे मन्त्रका पूर्णसाधन नहीं मालूमथा इसीसे मैं तुमको सिद्ध नहींहुई अब व्यर्थ क्लेश मतकरो उसयक्षिणीके यहवचन सुनकर उसतपस्वीने उनमेंसे एकयक्षिणी लेली तब विद्युन्माला अन्तर्द्धानहोगई और वहयक्षिणीसे जो उसतपस्वीको सिद्धहोगईथी उससे आदित्यशर्म्माने पूंछा कि विद्युन्मालासेभी कोई उत्तम और यक्षिणी है उसनेकहा कि हाँ विद्युन्माला चन्द्रलेखा तथा सुलोचना यहतीन उत्तम यक्षिणी हैं इनमेंभी सुलोचना सबसे उत्तमहै यहकहकर वह यक्षिणी अपने समयपर आनेके लिये नियमकरके चलीगई और आदित्यशर्म्मा उसतपस्वी के साथ अपने घरको चलाआया वहयक्षिणी प्रतिदिन समयपर आकर तपस्वीको यथेष्ट ऐश्वर्य्य देकर और उसके साथ संभोगकरके उसको प्रसन्नकरनेलगी एकसमय आदित्यशर्म्माने तपस्वीके द्वारा यक्षिणीसे पूंछा कि सुलोचनानाम यक्षिणीकेमन्त्रकी विधिको कौन जानताहै उसने कहा कि दक्षिणदिशा में तुंगवन नाम एकस्थानहै वहां वेणा नदीके तटपर भदन्तनाम एकतपस्वी रहताहै वह उसकी सब विधि जानताहै यक्षिणीके वचनसे यहजानकर आदित्यशर्म्मा उत्कण्ठितहोके उसतपस्वीको साथलेके तुंगवनकोगया और वहां भदन्त नाम तपस्वीको ढूंढ़कर तीनवर्षतक उसका सेवन तपस्वीकी यक्षिणीकेद्वारा प्राप्तहुए ऐश्वर्य्य से करतारहा तीनवर्ष के उपरान्त भदन्तने प्रसन्न होकर आदित्यशर्म्मा को सुलोचनाका मन्त्र विधिपूर्वक बतादिया तब आदित्यशर्म्मा ने उसमंत्रका जप करके एकान्तमें जाकर विधिपूर्व्वक हवन किया उस समय अत्यन्त आश्चर्य्यकारी रूप से युक्त सुलोचना नाम यक्षिणी विमानपर बैठकर वहां आई और बोली हे ब्राह्मण आओ मैं तुमको सिद्धहोगईहूं जो तुम मुझसे समृद्धिमान सुलक्षण सर्वज्ञ तथा महावीर पुत्र प्राप्त करना चाहो तो छःमहीनेतक मेरा कन्यका भाव नहीं नष्टकरना उसने कहा बहुत अच्छा मैं ऐसाही करूंगा तब सुलोचना उसे विमानपर चढ़ाकर अलकाको लेगई वहां आदित्यशर्म्मा उसे देखकर अपने चित्तको रोकताहुआ छः महीनेतक असिधारा व्रत करतरहा जब छः महीने व्यतीत होगये तो कुबेरजी ने प्रसन्न होकर आदित्यशर्म्मा के साथ सुलोचनाका विधिपूर्व्वक विवाह करदिया फिर विवाहके उपरान्त कुछ कालमें उसी सुलोचना में मेरा जन्महुआ पिताने मेरे सद्गुणोंको देखकर मेरा गुणशर्म्मा नाम रक्खा मैंने वहीं अलकापुरी में अवस्थापाकर मणिधरनाम यक्षराजसे सम्पूर्ण वेद तथा विद्या पढ़ी और सम्पूर्ण कलासीखीं एकसमय अलकापुरी में कुबेरकेपास इन्द्रआये उनको देखकर जो लोग वहांबैठेथे वह सब उठे परन्तु मेरापिता आदित्यशर्म्मा उससमय चित्तके कहीं अन्य होनेकेकारण नहीं उठा तबइन्द्रने क्रोधकरके उसे यह शापदिया कि हे जड़ अपने मृत्युलोकको जा तू यहां रहने के योग्य नहीं है उस घोरशापको सुनकर सुलोचनाने हाथजोड़कर इन्द्रसे बड़ीविनती करी सुलोचनाकी विनती से प्रसन्नहोकर इन्द्रने कहा कि जो यह मृत्युलोकको न जाय तो इसका पुत्र जाय क्योंकि पुत्र आत्मा होताहै इससे मेरा वचन भी व्यर्थ नहीं होगा तब मेरे पिता मुझे अपने मामाकेयहां उज्जयिनीमें

छोड़गये उज्जयिनीमें रहते २ वहां के राजाके साथ मेरी मित्रता होगई यह कहकर उसने रानी अशोक-वती तथा राजा महासेनका सम्पूर्ण वृत्तान्त युद्ध पर्य्यंत कहके कहा कि वहांसे भागकर मैं देशान्तरको जाताथा कि बीचमें आपके दर्शन होगये गुणशर्म्मा के यह वचन सुनकर वह ब्राह्मण बोला कि आपके आगमन से मैं धन्यहूं मेरे घरपरचलो अग्निदत्त मेरा नामहै और यह ग्राम मेराही है २०० यह कहकर वह ब्राह्मण गुणशर्माको गोधनादि अनेक ऐश्वर्य्योंसे युक्त अपने घरमें लेगया वहां उसे स्नानकराके उत्तम वस्त्र तथा आभूषण पहराके आह्निकके उपरान्त अग्निदत्तने उसको अति उत्तम भोजन करवाये और अपनी सुन्दरी नाम अत्यन्त सुन्दर कन्या लक्षणोके देखनेके वहानेसे उसे दिखाई गुणशर्माने उसका वड़ा उत्तम स्वरूप देखकर अग्निदत्तसे कहा कि इसकी नासिकापर तिलहै इससे इसकी छाती पर भी एक तिलहोगा इन दोनों तिलोका यह फलहै कि इसके वहुतसी सौतें होंगी उसके यह वचन सुनकर उस सुन्दरीके भाई ने अपने पिताकी आज्ञासे सुन्दरीका हृदय खोलकर देखा तो दूसरा भी तिल दिखाई दिया तव आश्चर्य्य युक्त होकर अग्निदत्तने गुणशर्म्मा से कहा कि तुम सर्वज्ञहो इसके यह दोनों तिल अशुभ नही हैं प्रायःधनवान् पति मिलनेपर सौतें होती है क्योकि दरिद्री तो एककाभी पालन नहीं करसक्ताहै वहुतोका कैसेकरसकेगा यह सुनकर गुणशर्म्मानेकहा कि ऐसी सुन्दर आकृतिवा-लीको अशुभ कैसे होसक्ताहै इसी प्रसंगसे गुणशर्म्माने स्त्री पुरुषोंके सम्पूर्ण तिलकादि चिह्न अग्निदत्तसे कहे उससमय सुन्दरी गुणशर्मा को देखकर चन्द्रमाको चकोरीके समान उसकी शोभाका अपनीदृष्टि से पानकरने लगी तदनन्तर एकान्तमें अग्निदत्तने गुणशर्म्मा से कहा कि हे महाभाग आप परदेशको न जाओ मैं इस सुन्दरी कन्याका विवाह आपके साथ करेदेता हूं आप सुखपूर्व्वक यहां रहिये यह सुनकर गुणशर्माबोला कि आपका कहना वहुत ठीक है ऐसा करने से मुझे वड़ा सुखहोगा परन्तु राजाके मिथ्या अपमानसे संतप्तहुए मुझको कुछ अच्छा नही मालूमहोता (कान्ताचन्द्रोदयोवीणापं-चमध्वनिरित्यमी। येनन्दयन्तिसुखितान्दुःखितान्व्यथयन्तिते) प्रिया स्त्री चन्द्रोदय तथा वीणाकी पंचम ध्वनि यह जो सुखीलोगों को प्रसन्न करते हैं उन्हीं से दुःखितों को दुःखहोता है और देखिये अपने चित्तसे अनुराग युक्त होकर जो स्त्रियां विवाह करती हैं वह व्यभिचारिणी नहीं होतीं और जिन विवश कन्याओंका विवाह पिता किसी के साथ करदेताहै वह वहुधा व्यभिचारिणी होजाती हैं और यहां से उज्जयिनी निकट है जो राजा महासेन जान जायगा तो उपद्रव करेगा इससे मैं सम्पूर्ण तीर्थोंपर भ्रमणकरके सम्पूर्ण पातकोको दूरकरके इस शरीरका त्यागकरूंगा जिससे परमसुख की प्राप्तिहोगी २१८ गुणशर्मा के यह वचन सुनकर अग्निदत्तने हँसकर कहा कि जो तुमको भी ऐसा मोह है तो अन्य मूर्खों की क्या गणना है वताओ तो सही जब तुम्हारा हृदय शुद्धहै तो मूर्ख के अनादर करनेसे ग्लानि क्यों करतेहो जो कोई आकाशमें कीचफेंकताहै वह उसी के शिरपर गिरताहै थोड़े दिनों मे राजामहासेन को इसमूर्खताका फल मिलैगा क्योंकि विवेक रहित मूर्खके पास संपत्ति वहुतकाल तक नहीं रहती और जो अशोकवती को देखकर तुमको स्त्रियोंपर वैराग्यहुआहै तो सतीस्त्रियोंको देखकर

उनपर विश्वास क्यों नहीं होता और तुम तो उनके लक्षणभी जानतेहो और जो उज्जयिनीके निकट होनेका तुम्हें भयहोय तो मैं तुमको ऐसा स्थानरहने को दूंगा जिसमें तुमको कोई भी न जानसकेगा और जो तीर्थयात्रापर आपको श्रद्धाहै सो तीर्थयात्रा तो उसे करनी चाहिये जो वैदिक कर्म न कर सके क्योंकि देवता तथा पितरोंका पूजन अग्निहोत्र व्रत और जपादिकों से जो पुण्य घरमें होसक्काहै वह मार्गमें भ्रमण करनेसे नहीं होसक्काहै मुनियोंकेसमान भुजाओं का तकियाबनाके पृथ्वीमें शयन करके भिक्षासे उदरपूर्ति करके और अनेक क्लेशोंको सहकर भी यात्रीलोग दुःखोंसे नहीं छूटते हैं और जो तुम शरीरको त्यागकर परम सुख चाहतेहो यह भी तुम्हारा भ्रमहै क्योंकि आत्मघातकों को यहां से भी अधिक परलोकमें दुःखहोता है इससे विद्वान्होकर भी आपको ऐसा मोहकरना अनुचित है अपने मनसे विचार करके देखलो हमारा कहना आपको अवश्य माननाचाहिये मैं आपकेलिये बड़ा सुन्दर तहखाना बनवाये देताहूं आप सुन्दरीका विवाह करके उसी में गुप्तता पूर्वक रहियेगा अग्निदत्तके इसप्रकार समझानेसे गुणशर्मा उसके वचनोंको स्वीकार करके बोला कि मैं जैसा आप कहतेहैं वैसाही करूंगा क्योंकि सुन्दरी स्त्रीको पाकर कौनछोड़सक्का है परन्तु मैं अभी इसके साथ विवाह नहीं करूंगा पहले किसी देवता का आराधन करके राजामहासेन से बदलालेऊंगा फिर आप जैसा कहेंगे वैसाकरूंगा यह सुनकर अग्निदत्तने कहा बहुत अच्छा ऐसाही करना तदनन्तर गुणशर्मा ने सुखपूर्व्वक वह रात्रि व्यतीतकी दूसरे दिन अग्निदत्तने गुणशर्माके रहनेकेलिये बड़ा उत्तम तहखाना बनवादिया तब गुणशर्म्मा ने अग्निदत्तसे एकान्तमें कहा कि आपबताइये कि किसमन्त्रसे किसदेवताका आराधनकरूं यह सुनकर अग्निदत्तने कहा कि मुझे अपने गुरुका बतायाहुआ स्वामिकार्त्तिकका मंत्रयादहै वह मैं तुमको बतायेदेताहूं उसीसे स्वामिकार्त्तिकका आराधनकरो जिन स्वामिकार्त्तिककी उत्पत्तिकेलिये देवतालोगों की प्रार्थना से श्रीशिवजी ने भस्महुए भी कामको संकल्प से उत्पन्न किया था जिनकी उत्पत्ति प्रथम श्रीशिवजीसे फिर अग्निसे फिर शरवनसे और फिर कृत्तिकाओं से हुई जिन्होंने उत्पन्नहोतेही सम्पूर्ण संसारको अपने तेजसे व्याप्तकरके दुर्जय तारकासुरकोभी जीता उनका मन्त्र तुम मुझसे ग्रहणकरो यह कहकर वह मन्त्र उसे बतादिया तब उसी मन्त्र से गुणशर्मा ने तहखानेमें बैठकर श्रीस्वामिकार्त्तिकजीका आराधन किया और वह सुन्दरी उसका सेवनकरतीरही कुछ दिन आराधना करनेसे प्रसन्नहोकर श्रीस्वामिकार्त्तिकजीने प्रकटहोकर कहा कि हे पुत्र मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहूं तुम्हारे पास कभीधन नहींघटेगा और राजामहासेनको जीतकर तुमसम्पूर्ण पृथ्वीके राजाहोजाओगे यह वरदानदेकर श्रीस्वामिकार्त्तिकजी अन्तर्द्धानहोगये और उनकी कृपासे गुणशर्म्माको अक्षय कोश प्राप्तहुआ तब अग्निदत्तने अपने ऐश्वर्य्य के अनुसार बड़ा उत्सवकरके बहुतकालसे उत्कण्ठित अत्यन्तरूपवती अपनी सुन्दरीनाम कन्या प्राप्तहोनेवाली रूपवती सम्पत्तिके समान गुणशर्म्माको विधिपूर्वक दानकरदी इसप्रकार विवाहकरके गुणशर्म्मा अक्षयकोशके प्रभावसे बहुतसेहाथी घोड़े तथा पैदल इकट्ठेकरके और बहुतसाधनदेके अनेक राजालोगोंकीसेना साथलेकर उज्जयिनी नगरीपर चढ़गया वहां

सम्पूर्णलोगोंसे अशोकवतीके दुराचारको कहकर और राजामहासेनको जीतकर आपही राजाहोगया इसप्रकार उज्जयिनीका राज्यलेकर गुणशर्मा बहुतसे राजालोगोंकी अनेककन्याओंकेसाथ विवाहकरके समुद्र पर्यन्त सम्पूर्ण राजालोगों को विजयकरके चक्रवर्त्ती राजाहोके अपनी प्रिया सुन्दरी के साथ बहुतकालतक यथेष्ट राज्यसुखोंको भोगतारहा इसप्रकारसे देखो राजा महासेन मूर्खतासे विचार न करके विपत्तिको प्राप्तहुआ और गुणशर्म्मा केवल धैर्य्यकीही सहायतासे अत्यन्त ऐश्वर्य्यको प्राप्तहुआ इससे हे राजा आपभी धैर्य्यसे शत्रुओंको जीतकर समृद्धिको पाइयेगा वीतभीतके मुखसे इसउदार कथाको सुनकर वीर सूर्य्यप्रभ युद्धरूपी महासमुद्रके पारजानेके लिये अधिक उत्साहीहोकर सोगया २५२॥

इति श्रीकथासरित्सागरभाषायांसूर्य्यप्रभलम्बकेषष्ठस्तरंगः ६॥

प्रातःकाल सूर्य्यप्रभ अपनी सम्पूर्णमनुष्य तथा दैत्यों की सेनालेकर युद्धभूमिमे गया और श्रुतशर्म्मा भी अपनी सम्पूर्ण विद्याधरों की सेना लेकर आया और सम्पूर्ण देवता दैत्य राक्षस तथा सर्प युद्ध देखनेको आये उसदिन दोनों सेनाओ के अधिपतियोंने अर्द्धचन्द्र व्यूह बनाया और परस्पर युद्धका प्रारम्भहुआ उससमय शब्दायमान बाण परस्पर एक दूसरे को काटतेहुए योद्धाओं के समान शोभितहुए म्यानरूपी मुखसे निकलीहुई रुधिर से युक्त चंचल लम्बी खड्ग लतायें यमराजकी जिह्वाके समान शोभितहुई उस युद्धरूपी महातड़ाग मे शूरलोगों के प्रफुल्लित मुखारविन्दो पर अनेक चक्रगिरे और राजारूपी राजहंसों का नाशहुआ कटकर उछलतेहुए और गिरतेहुए शूरोंके मस्तकों से युद्धभूमि यमराजके गेंदखाने के समान शोभितहुई इस प्रकारके युद्धके द्वारा बहुतसी मरीहुई सेनाके रुधिर से धूलरूपी अन्धकारके निवृत्त होजानेपर बड़े पराक्रमी महारथियों के द्वन्द्व युद्धहोनेलगे श्रुतशर्माके साथ सूर्य्यप्रभका दामोदरके साथ प्रभासका महोत्पात के साथ सिद्धार्थका ब्रह्मगुप्तके साथ प्रहस्तका संगमकेसाथ वीतभीतका चन्द्रगुप्तकेसाथ प्रज्ञाढ्यका अक्रमकेसाथ प्रियंकरका अतिबलकेसाथ सर्वदमनका धुरन्धरकेसाथ कुंजरकुमारका तथा अन्य महारथियों के साथ अन्यमहारथियों का परस्पर द्वन्द्वयुद्ध होनेलगा वहां पहले महोत्पातने अपनेबाणो से सिद्धार्थ के बाण तथा धनुषकाटके सारथीसमेत घोड़ोंको मारके उसे विरथकरदिया तब सिद्धार्थने दौड़कर लोहेकेदंडेसे महोत्पातकाभी रथचूर्ण२करके सबघोड़े मारडाले और बाहुयुद्धकरके उसे पृथ्वी में गिराके जैसेही मारनाचाहा वैसेही भगनाम देवताने आकर उसे बचालिया प्रहस्त तथा ब्रह्मगुप्त भी दोनों लड़ते२विरथहोगये और खड्गलेकर परस्पर दाम पेचकरके युद्ध करने लगे प्रहस्तने युक्ति से ब्रह्मगुप्त की ढालकाटडाली और उसे पृथ्वीमे गिराकर जैसेही शिरकाटना चाहा वैसेही उसके पिता ब्रह्माने दूरही से निवारणकिया तब दैत्यलोग देवताओं से यह कहकर हँसने लगे कि तुमलोग अपने पुत्रोंकी रक्षा करनेको आयेहो या युद्ध देखनेको आये हो वीतभीतने संक्रमका धनुष काटके सारथी को मारकर उसके हृदयमें प्रद्युम्नास्त्रमारा जिसके लगतेही उसके प्राण निकलगये प्रज्ञाढ्य तथा चन्द्रगुप्त दोनों विरथहोकर खड्ग युद्ध करनेलगे और युद्धकरते२ प्रज्ञाढ्यने चन्द्रगुप्तका शिर अपने खड्गसे काटडाला तब चन्द्रमा अपने पुत्रको मरादेख महा कुपितहोके प्रज्ञाढ्य

के साथ आपयुद्ध करनेलगा, प्रियंकरने विरथहोके अक्रम को भी विरथ करके उसका एकही प्रहार से शिर काटडाला सर्वदमनने धनुष के कटजानेपर अंकुश फेंककर अतिबलकेमारा उसके लगतेही वह मरकर पृथ्वी में गिरपड़ा, कुंजरकुमारने बहुत कालतक युद्धकरके धुरन्धरको कईवार विरथ किया परन्तु विक्रमशक्ति उसकेलिये रथ भेजतागया और अपने अस्त्रों से कुंजरकुमारके अस्त्रों को काटकर उसकी रक्षा करतारहा तब कुंजरकुमारने दौड़कर एक बड़ी भारी शिला विक्रमशक्ति के रथपर फेंकी विक्रमशक्तितो निकलगया परन्तु उसका रथ चूर्णहोगया फिर कुंजरकुमारने उसी शिला से धुरन्धरका चूर्ण करडाला, सूर्य्यप्रभने श्रुतशर्मा से युद्धकरते २ दमसे विरोचन को मारागयादेखके एकही बाण फेंककर दमको मारडाला दमको मरादेखकर क्रोधकरके अश्विनीकुमार युद्धकरने को आये सुनीथ उन्हें बीचहीमें रोककर उनसे युद्धकरनेलगा स्थिरबुद्धि युद्धमें पराक्रम को मारकर उसके मरनेसे क्रोधित होकर आयेहुए अष्टवसुओं से युद्धकरनेलगा दामोदरके साथ युद्धकरतेहुए प्रभासनें मर्द्दनसे भासको विरथ कियाहुआ देखकर एकही बाणसे मर्द्दनको मारगिराया प्रकंपन अस्त्रयुद्धसे तेजप्रभको मारकर उसके मरनेसे कुपितहुए अग्नि से युद्धकरनेलगा धूमकेतु यमदंष्ट्रको युद्ध में मारकर कुपितहुए यमराज के साथ भयंकर युद्धकरनेलगा सिंहदंष्ट्र शिलासे सुरोषणको चूर्णकरके उसके बधसे कुपितहुए निर्ऋति के साथ युद्धकरनेलगा। कालचक्रने चक्रसे वायुबलका शिरकाटडाला तब कुपितहोकर वायुदेवता उससे युद्धकरनेलगे सर्प वृक्ष तथा पर्वतोंका रूप धारण करके युद्धकरनेवाले कुवेरदत्त को महामायने गरुड़ अग्नि तथा वज्रकारूप धारणकरके मारा तब कुवेर कुपितहोकर उसके साथ युद्धकरनेलगे इसप्रकारसे अन्यसब देवतालोगभी अपने २ अंशोंका बध देखकर कुपितहोके युद्धकरनेलगे और मनुष्य तथा दैत्यों ने बहुत से विद्याधरों के स्वामीमारे इसबीचमें दामोदर के साथ प्रहस्तका परस्पर अस्त्र प्रत्यस्त्रों से महा घोर युद्धहुआ दामोदरने धनुपके कटने और सारथीके मरजानेपर अन्य धनुषलेके और अपनेही हाथ से घोड़ोंकी बागडोर पकड़के युद्धकिया यहदेखकर ब्रह्माने उसकी बड़ी प्रशंसाकी तब इन्द्रने उनसेपूछा कि हे भगवन् आप हारेहुए की प्रशंसा क्यों करते हो ब्रह्माजी ने उत्तरदिया कि इसकी प्रशंसा क्यों न करें जो इतने कालतक प्रभास के साथ युद्ध कररहाहै विष्णुभगवान् के अंश दामोदरके विना यह काम कौन करसक्ता है इस अकेले प्रभासके साथ सम्पूर्ण देवता मिलकर भी युद्ध नहीं करसक्ते हैं नमुचि नाम जो बड़ा बलवान् दैत्यथा वही प्रबलनाम दैत्यथा जिसका कि शरीर रत्नमयथा वही प्रबलभासका पुत्र प्रभासहुआ है भासभी पहले कालनेमिनाम महादैत्य था फिर हिरण्यकशिपुहुआ और फिर कपिंजल हुआ और सुमुण्डीक नाम दैत्य सूर्य्यप्रभहुआ है और हिरण्यकश्यपका दूसरा भाई हिरण्याक्ष दूसरे जन्ममें सुनीथहुआ है और यह जितने प्रहस्तादिक हैं यह सबभी पूर्वजन्मके दैत्य हैं जिनको कि तुम ने युद्धमें माराथा वही फिर अब उत्पन्नहुए हैं इसीसे मयासुरआदि सबदैत्य उनके पक्षमें होगये हैं देखो सूर्य्यप्रभादिकोंने जो रुद्र यज्ञकियाहै उसीके प्रभावसे बलिके बन्धन शिथिल होगये हैं इसीसे वह भी युद्ध देखनेको आयाहै अपनेसत्य वचनोंकी पालना करनेकेलिये पातालही में रहता है जब तुम्हारे राज्यका

समय व्यतीत होगा तब यही इन्द्र होगा इससमय श्रीशिवजीने दैत्योंका पक्ष लियाहै इससे अब तुमलोगों की विजय नहीं होगी तुम आग्रह छोड़कर संधिकरलो ब्रह्माजीके इसप्रकार वार्त्तालाप करतेही करते प्रभासने पाशुपत अस्त्र दामोदरपर चलाया उस सर्वसंहारी महारौद्र अस्त्रको देखकर विष्णुभगवान्ने अपने पुत्र दामोदरको बचाने के लिये सुदर्शनचक्र चलाया तब उनदोनों अस्त्रोंकापरस्पर महाघोर युद्धहोनेलगा और उनदोनों अस्त्रोंके तेजसे सम्पूर्ण संसारको व्याकुल देखकर विष्णुभगवान् ने प्रभाससे कहा कि तुम अपने अस्त्रका संहारकरलो तो मैं भी अपने अस्त्रका संहारकरलूं यह सुनकर प्रभास ने कहा कि दामोदर युद्धको त्यागकर भागजाय तो मैं अपने अस्त्रका संहारकरलूं क्योंकि यह अस्त्र व्यर्थ नहीं होसक्ता तब भगवान् विष्णुने कहा कि तुम भी हमारे अस्त्रका मानकरो जिसमें दोनों अस्त्रव्यर्थ न होंय भगवान् के यह वचनसुनकर प्रभासने कहा तो आपकाचक्र मेरे रथको नष्टकरे तब विष्णुभगवान् ने दामोदरको रणसे भगादिया उसे भागादेखकर प्रभासने अपने अस्त्रका संहारकरलिया और सुदर्शनचक्रने उसके रथको भस्मकरदिया तब प्रभास दूसरे रथपर चढकर सूर्य्यप्रभके पासगया और दामोदर श्रुतशर्मा के निकटगया ६२ उससमय इन्द्रके अंश श्रुतशर्मा और सुमुण्डीक के अवतार सूर्य्यप्रभका वड़ा घोर युद्धहुआ श्रुतशर्माने जिस २ अस्त्रको चलाया सो सब सूर्य्यप्रभने अपने अस्त्रोंसे काटडाले और श्रुतशर्मा ने जौन२सी मायाकरी सूर्य्यप्रभ ने अपनी माया से वह सब नष्टकरदीं तब श्रुतशर्मा ने क्रोधकरके ब्रह्मास्त्रका प्रयोग किया सूर्य्यप्रभ ने उसके निवारण करने को पाशुपत अस्त्र चलाया उस अस्त्रने ब्रह्मास्त्रको नष्टकरके श्रुतशर्माको नष्टकरना चाहा यह देखकर इन्द्रादिक लोकपालों ने अपने२ वज्रादिक अस्त्रचलाये परन्तु वह सब अस्त्र उसके तेजसे नष्टहोगये और श्रुतशर्म्मा उसके तेजसे मरने लगा तब सूर्य्यप्रभ ने उस महाअस्त्र की स्तुति करके कहा कि श्रुतशर्म्मा को मारिये नहीं बांधकर मुझे देदीजिये उसकी प्रार्थनासे श्रुतशर्मा को बँधादेखकर सम्पूर्ण देवतालोग युद्ध करनेको उपस्थित होगये उससमय श्री शिवजी का भेजाहुआ वीरभद्रनाम गण देवताओं से आकर बोला कि तुमलोग युद्ध देखने के लिये आयेहो तुमको युद्ध करने से क्या प्रयोजनहै मर्यादाका उल्लंघन मतकरो नहीं तो और अधिक हानिहोगी यह सुनकर देवतालोग बोले कि हमलोगों के बहुतसे पुत्र मारेगये और बहुत मारेजारहे हैं तो हम कैसे न लड़ें पुत्रोंका स्नेह हमारे छोड़ने से नहीं छूटता जो कोई उन्हे मारेगा उन्हे हम लोग यथाशक्ति मारेंगे इसमें मर्यादाका उल्लंघनही क्याहै देवतालोगों के यह वचनसुनकर वीरभद्र के चलेजानेपर देवता तथा दैत्योंका महाघोर युद्धहोनेलगा अश्विनीकुमार के साथ सुनीथ, अष्टवसुकेसाथ स्थिरबुद्धि, वायुके साथ कालचक्र, अग्निके साथ प्रकंपन, निर्ऋतिके साथ सिंहदंष्ट्र, वरुणकेसाथ प्रमथन, यमकेसाथ धूमकेतु, और कुवेरकेसाथ महामाय अस्त्रप्रत्यस्त्रोंसेयुद्ध करनेलगे अन्तमें जो २ देवता जो२ महास्त्र छोड़ताथा श्रीशिवजी अपने हुंकारहीसे उसको नष्टकरदेतेथे महामायपर कुवेरको गदामारनेको उद्यतदेखकर श्रीशिवजीने अपना भक्तजानकर वचनहीसे उसे निवारण करदिया और अन्यसबदेवता अपने महास्त्रोंको नष्ट देखकर युद्ध छोड़ २ कर भागगये तब इन्द्रक्रोधकरके आपही सूर्य्यप्रभके साथ

युद्ध करनेलगा इन्द्रने बहुतसे अस्त्र शस्त्र और अनेक बाण सूर्य्यप्रभपर चलाये सूर्य्यप्रभ ने अपने बाणोंसे उन सबको काटकर सौबाण कानतक खेंचकर इन्द्रके मारे उन बाणोंके लगने से अत्यन्त कुपितहोके इन्द्रने अपना वज्र उठाया वज्रको देखकर श्रीशिवजी ने हुंकारकरकेही उसे नष्ट करदिया वज्रको नष्ट देखकर इन्द्र पराङ्मुखहोकर युद्ध से भागगये इस बीचमें विष्णु भगवान् आपही प्रभाससे युद्ध करनेलगे युद्ध करते २ प्रभासका रथ काटडाला घोड़े मारडाले तब वह दूसरा रथ लेकर अत्यन्त घोरयुद्ध करनेलगा तब भगवान् ने कुपितहोकर अपना सुदर्शनचक्र उसपर चलाया प्रभास ने उसे निवारण करनेके अर्थ अभिमन्त्रित करके खड्ग चलाया उन दोनोंका परस्पर युद्धहोते २ खड्गको हीनहोता देखकर श्रीशिवजीने हुंकार किया जिससे खड्ग और सुदर्शनचक्र दोनों अन्तर्द्धानहोगये तब सूर्य्यप्रभकी जयदेखकर और श्रुतशर्माको बँधादेखकर सम्पूर्ण दैत्य तथा मनुष्य अत्यन्त प्रसन्नहुए और देवतालोग महाविपादयुक्त होगये ९० तदनन्तर देवतालोगों ने स्तुति करके श्रीशिवजी को प्रसन्नकिया तब शीघ्रप्रसाद श्रीशिवजीने प्रसन्नहोकर कहा कि सूर्य्यप्रभके लिये जो मैंने प्रतिज्ञाकी है उसके सिवाय जो चाहो सोमांगो यह सुनकर देवतालोगोंने कहा कि आपकी प्रतिज्ञाको कौनमेट सक्ताहै परन्तु जो हमलोगोने श्रुतशर्माकेलिये प्रतिज्ञाकी है उसे भी मिथ्या न कीजिये जिसमें हमलोगोंका अंश नष्ट न होय देवताओंके यह वचन सुनकर श्रीशिवजीबोले कि सन्धिकरने से यह बात होसक्ती है और सन्धि इसप्रकारसे करो कि श्रुतशर्मा अपने परिकरसमेत सूर्य्यप्रभको प्रणामकरे तब मैं ऐसा करूंगा जिसमें सबका कल्याणहोगा शिवजीकी यह आज्ञापाकर देवतालोगों ने श्रुतशर्म्मा से परिकर समेत सूर्य्यप्रभको प्रणामकरवाया और बैरको शान्तकरके दोनों को गले मिलवाकर दोनों की सन्धिकरवादीनी तब श्रीशिवजी सब के आगे सूर्य्यप्रभ से बोले कि तुम वेदीके दक्षिणभाग में अपना चक्रवर्त्तीपनेका अधिकारकरो और उत्तरभाग श्रुतशर्म्माकोदेदो हेपुत्र थोड़ेहीकालमें किन्नरादिक आकाशचारियों के चक्रवर्त्तीहोकर तुम इससे चतुर्गुणित ऐश्वर्य्यको प्राप्तहोगे और उसके प्राप्त होनेपर तुम दक्षिणभाग भी कुंजरकुमारको देदेना यह कहकर फिर श्रीशिवजी बोले कि इस युद्धमें जो देवता दैत्य तथा मनुष्यमरे हैं वह सब अपने भलेचंगे शरीरोंसमेतजीउठें यह कहकर श्रीशिवजी तो अन्तर्द्धानहोगये और सम्पूर्ण योद्धा जो कि युद्धमें मरेथे सोकर जगेहुएके समान जीकर उठबैठे तदनन्तर श्रीशिवजीकी आज्ञाको शिरपर रखकर एक बड़े सुन्दर मैदान में जाकर सूर्य्यप्रभ बैठा और श्रुतशर्म्माभी वहीं आया उसे सूर्य्यप्रभने अपने सिंहासनपर बैठालिया तब सूर्य्यप्रभ के प्रभासादिक मन्त्री तथा श्रुतशर्म्मा के दामोदरादिक मन्त्री और मय सुनीथादिकदैत्य तथा सम्पूर्ण विद्याधर यथायोग्य आसनोंपर बैठे उससमय सातों पातालों के स्वामी प्रह्लादादिक दैत्य लोकपाल तथा बृहस्पति सहित इन्द्र सुमेरु, सुवासकुमार, दनु आदिक कश्यपजी की सबस्त्रियां सूर्य्यप्रभकी सपूर्ण रानियां और विद्याधरोंके संपूर्ण राजा यह सबलोग अपने २ स्थानों से वहांआये और परस्पर यथायोग्य शिष्टाचार करके बैठे तब दनुकी सिद्धिनाम सखी उनकी आज्ञा से यह वचन बोली कि हे

देवता तथा दैत्यलोगो देवीदनु तुमलोगों से कहती हैं कि इसप्रीति, समाजमें जैसासुख होरहाहै वैसा और भी कभी तुमलोगोंने अनुभव कियाहै इससे अब दुःखका कारण, परस्पर विरोध कभी मतकरना और जिन हिरण्याक्षादिकों ने ज्येष्ठ होनेके कारण स्वर्ग का राज्यलेनेके निमित्त विरोधकिया था वह अब नहीं रहे अब इन्द्रही ज्येष्ठहैं तो विरोधका क्या प्रयोजनहै इससे बैरको त्यागकरके परस्पर स्नेहसे सुखपूर्वक रहो जिससे हमलोगों को सुखहोय और संसारका कल्याणहोवे सिद्धिके मुखसे दनुके यह वचन सुनकर इन्द्रकी ओरसे बृहस्पति जी बोले कि देवतालोगों को दैत्योंसे कोई बैर नहीं है जो दैत्य लोगही देवतालोगों के साथ विनाकारणके विकार न करें तो बैर कभी न होय बृहस्पतिके यह वचन सुनकर मयासुर बोला कि जो दैत्यलोगही बैर करतेहोते तो नमुचि दैत्य इन्द्रको अपना उच्चैःश्रवा घोड़ा क्यों देदेता प्रवल अपना शरीर देवताओंको क्यों देता बलि विष्णुको त्रैलोक्य देकर बन्दीगृह में क्योंजाते और अयोदेह अपना शरीर विश्वकर्माको क्योंदेदेता और कहांतक कहैं दैत्यलोगों के चित्तमें बैर नहींहै जो उनके साथ छल न कियाजाय तो वह कभी उपद्रव न करें मयासुरके इसप्रकार कहनेपर सिद्धिने ऐसे वचन कहे जिनसे देवता लोगोंने तथा दैत्योंने गलेसे गलामिलाकर परस्पर प्रेमकरलिया इसबीचमें श्री पार्वतीजीकी भेजीहुई जयानाम प्रतिहारी वहाँ आई और सबके पूजनको ग्रहणकरके सुमेरुसे बोली कि श्री पार्वतीजीने तुमसे कहा है कि तुम्हारी कामचूड़ामणि जो कन्याहैवह मेरी परम भक्तहै इससे उसका विवाह तुम सूर्य्यप्रभ के साथ करदो जयाके यहवचन सुनकर सुमेरु नम्रहोकरबोला कि भगवतीने मेरेऊपर बड़ी दयाकी है जो उनकी आज्ञाहोगी सोई मैं करूंगा श्रीशिवजीभी मुझेप्रथम यही आज्ञादेचुके हैं सुमेरु के यह वचन सुनकर जया सूर्य्यप्रभ से बोली कि तुमसे भी श्रीपार्वतीजीने कहा है कि तुम इसे अपनी सबस्त्रियोंमें पटरानी करना और यह तुमको सबस्त्रियों से अधिक प्रियहोगी जयाके यहवचन सुनकर सूर्य्यप्रभने कहा कि भगवतीकी आज्ञा मेरे शिरपरहै तदनन्तर जयाके चले जानेपर सुमेरुने उसीदिन लग्नका निश्चयकरके रत्नजटित वेदीबनवाई और अपनी कामचूड़ामणि पुत्रीको वहींबुलवाया उसेदेखकर संपूर्ण देवता तथा दैत्य कहनेलगे कि श्रीपार्वतीजीका जन्म हिमालय से हुआहै और इसका सुमेरुसे हुआहै इसीसे यहपार्वतीजीके समान रूपवती है तब सुमेरुने उसेवेदीपर बैठालकर संकल्प करके उसका हाथ सूर्य्यप्रभके हाथमें देदिया दनुआदिक स्त्रियोंसे बाँधेहुए कंकण समेत कामचूड़ामणिका हाथ ग्रहणकरके सूर्य्यप्रभ अत्यन्त प्रसन्नहुआ उससमय पहलीबार लाजाहवनमें पार्वतीजीकी भेजीहुई जयाने आकर दिव्य कभी नाश न होनेवाली माला सूर्य्यप्रभको दी और सुमेरुने अमूल्यरत्नों समेत ऐरावतसे उत्पन्न दिव्यहाथी दिया दूसरीबार लाजाहवनमें जयाने रत्नावलीदी जिसे कंठमें धारण करने से मृत्यु क्षुधा तथा तृषा नहींबाधाकरसक्ती है और सुमेरुने द्विगुणरत्न तथा उच्चैःश्रवासे उत्पन्नश्रेष्ठघोड़ा और तीसरीबार लाजाहवनमें जयाने एक लड़ी मालादी जिसके पहरने से युवावस्थाही सदैव बनीरहती है और सुमेरुने त्रिगुण रत्न तथा एकदिव्यगोली दी जिससे सबप्रकारकी सिद्धियां प्राप्त होसक्तीं थीं इसप्रकार विवाह विधिके समाप्त होजानेपर सुमेरुने हाथजोड़कर देवता दैत्य विद्याधर तथा

देव मतादिक सबसे कहा कि मैं हाथजोड़कर सबसे प्रार्थना करता हूं कि आज कृपाकरके सब मेरेही यहां भोजनकरें सुमेरुकी इस प्रार्थनाको सबलोगों को ग्रहणकरते न देखकर नन्दीगण ने वहां आकर कहा कि श्री शिवजीकी यह आज्ञाहै कि आज तुम सब लोग सुमेरुकेही यहां भोजनकरो क्योंकि यह हमारा परमभक्त है इसके यहां भोजन करने से तुमलोगों को सदैव तृप्ति बनीरहैगी नन्दीश्वरके यह वचन सबने स्वीकारकरलिये तब शिवजी के भेजेहुए विनायक, महाकाल तथा वीरभद्रादिक गणों ने आकर भोजनकी सम्पूर्णसामग्री इकट्ठीकी और देवता दैत्य तथा मनुष्यों को बैठालकर सुमेरुकी विद्या से प्राप्तहुए तथा श्रीशिवजीकी आज्ञापाकर कामधेनुसे दियेगये भोजन सबके आगे परोसेगये एक२ गण एक२ पुरुषके पास खड़ारहा जिसमें ऐसा न होय कि किसीको कोई वस्तु मांगने पर न मिले और भोजन के समय दिव्य गान तथा दिव्य स्त्रियों का नृत्यभी होतारहा इसप्रकार जब सब भोजन करचुके तब नन्दीश्वरादिक सबको वस्त्र आभूषण तथा हारदेकर और यथायोग्य सबका सत्कारकरके चलेगये तदनन्तर सब देवता, दैत्य देवमाता तथा श्रुतशर्म्मा आदिकोंके भी अपने २ स्थानपर चले जानेपर सूर्य्यप्रभ अपने मंत्री तथा स्त्रियों समेत सुमेरुके तपोवनमें चलाआया वहां आकर उसने अपने मित्रहर्षको सम्पूर्ण राजा लोगोंसे तथा अपने छोटेभाई रत्नप्रभसे अपनी विजय का वृत्तान्त कहनेको भेजा और इसप्रकार उत्सवसे उसदिनके व्यतीत होजानेपर रात्रिकेसमय शयन स्थानमें जाकर नवीन वधू कामचूड़ामणि को आलिंगनादिकों से लज्जारहित करके उसके साथ नवीन संगमका अपूर्व्व सुख अनुभव किया और रतिके उपरान्त उससे यह कहा कि अब मेरी रानी तो बहुतसी हैं परन्तु हृदय में तुम्हाराही स्थानहै यह कहके उसे आलिंगन करके वह सोगया और रात्रि व्यतीत होगई ॥६०॥ प्रातः-काल उठकर सूर्य्यप्रभ अपनी अन्य स्त्रियोंको भी प्रसन्न करनेकेलिये उनके पासगया वह सब उसे नवीन वधूसे अनुरक्त जानकर कुटिलता भरेहुए मधुर वचनों से उसकी हँसी करनेलगीं इतने में प्रतीहार के द्वारा निवेदन कियेगए सुषेणनाम विद्याधरने आकर कहा कि हे स्वामी त्रिकूटनाथ नामादिक विद्याधरोंने मुझे आपके पास यह प्रार्थना करनेको भेजाहै कि आजके तीसरे दिन ऋषभ पर्व्वतपर आपके अभिषेककी लग्नहै इससे आप सम्पूर्ण लोगोंको निमंत्रण भिजवाइये और अभिषेककी सम्पूर्ण सामग्री इकट्ठी करवाइये यह सुनकर सूर्य्यप्रभने उस दूतसे कहा कि जाओ त्रिकूटनाथादिकोंसे कहो कि आपही लोग सबसामग्री इकट्ठी कीजिये मैं यहां तैयारहूं और निमंत्रणभी मैं सबके पास भिजवादूंगा इससंदेशेको लेकर सुषेण तो चलागया और सूर्य्यप्रभ अपने प्रभासादिक मंत्रियोंको देवताओंको याज्ञवल्क्यादिक मुनि राजालोग, विद्याधर तथा दैत्य लोगोंको निमंत्रण देनेकेलिये भेजकर आप श्रीपार्वतीजी तथा श्रीशिवजीको निमंत्रण देनेकोचला और देवता ऋषि तथा सिद्धलोगोंसे सेवित अत्यन्त श्वेतवर्ण द्वितीय शिवजीके समान कैलाशपर्व्वतपर पहुंचा वहां आधेसे अधिक दूरचढ़कर फिर आगे उसे चढ़ने का कोई मार्ग नहीं दिखाई दिया और एक मूंगेका बनाहुआ द्वारदिखाई दिया जब उस द्वारमें वह अपनी सिद्धिके द्वारा घुस न सका तब एकाग्रचित्त होकर श्रीशिवजीकी स्तुति करनेलगा स्तुतिको

सुनकर एकगजमुख पुरुष ने द्वार खोलकर कहा कि आओ तुम्हारे ऊपर भगवान् गणेशजी प्रसन्नहैं यह आज्ञापाके उसने भीतरजाके देखा कि एक बड़ीभारी मणिमय शिलापर बारहसूर्य्यों के समान तेजस्वी एकदन्त लम्बोदर त्रिनेत्र देदीप्यमान परशु तथा मुद्गरधारी भगवान् गणाधिपति बैठे हैं और अनेकगण उनके निकट खड़ेहुए हैं इसप्रकार भगवान् गणपतिके दर्शनकरके उनके चरणोंपर गिरकर उसने प्रणामकिया विघ्नहर्ता भगवान् गणेशजीने उसे प्रणाम करते देखके उससे आगमनका कारण पूछके कहा कि इसमार्गसे चलेजाओ यह आज्ञा पाकर उस मार्गसे पांचयोजन ऊंचेचढ़के सूर्य्यप्रभने एक पन्नेका बड़ाभारी द्वारदेखा और उसमें भी प्रवेश करनेको असमर्थ होकर सहस्रनाम से श्रीशिवजी की स्तुतिकी तब स्वामिकार्त्तिकके पुत्र विशाखने द्वारखोलकर उससेकहा कि भीतरआओ वहां जाकर उसने अग्निके समान तेजस्वी भगवान् स्वामिकार्त्तिकको बालग्रह रूप शाक विशाखादिक पांचपुत्रों से युक्तदेखा और प्रणाम किया स्वामिकार्त्तिकने भी प्रसन्नहोके उसे चढ़नेका मार्ग बतादिया इसक्रमसे भैरव महाकाली वीरभद्रनन्दी तथा भृङ्गीसेरक्षित पांचरत्नोंके अन्यद्वारोंको उल्लंघनकरके वहपर्व्वतके ऊपर स्फटिकके द्वारपर पहुंचा और द्वारको मुद्रित देखकर श्रीशिवजीकी स्तुति करनेलगा तब एकरुद्रने द्वारखोल कर उसेआदर पूर्व्वक बुलालिया भीतरजाकर उसने स्वर्गसेभी अधिक मनोहर श्री शिवजीका स्थानदेखा वहां दिव्य सुगन्धयुक्त वायुचलरही थी सदैव पुष्पफलों से युक्त अनेकवृक्ष लगरहेथे गन्धर्व गान करते और अप्सरा नृत्यकररहीं थीं ऐसे मनोहर शुभस्थान में स्फटिकके सिंहासनपर त्रिलोचन शूलपाणि स्फटिकके समान गौरवर्ण पीत जटाजूटधारी चन्द्रशेखर भगवान् श्रीशिवजी को पार्वतीजी समेत देखकर सूर्य्यप्रभने चरणो मे गिरकर उनको प्रणाम किया तब श्रीशिवजीने उसकी पीठपर हाथरखके और उठाके पूछा कि हे पुत्र, किसनिमित्त आयेहो यह सुनकर सूर्य्यप्रभ हाथ जोड़कर बोला हे स्वामी मेरे अभिषेक का समय निकट आयाहै इससे मैं यह प्रार्थना करने आयाहूं कि आपभी उस समय कृपाकीजिये यह सुनकर श्रीशिवजी ने कहा कि हे पुत्र इतनेही के लिये तुमने इतनाश्रम क्यों किया वहीं से मेरास्मरण क्यों नहीं किया मैं उस समय वहां अवश्य आऊंगा यह कहकर एकगणको बुलाकर कहा कि जाओ इसे अभिषेकके लिये ऋषभपर्व्वतपर पहुंचा आओ क्योंकि विद्याधरों के चक्रवर्त्तियों का अभिषेक वही होता है शिवजी की यह आज्ञापाके वह गण सूर्य्यप्रभको गोदी में उठाकर ऋषभपर्व्वतपर ले आया और उसीसमय अपनी सिद्धिसे अन्तर्द्धान होगया उससमय वहां सूर्य्यप्रभके पास प्रभासादिक सम्पूर्ण मन्त्री काम चूड़ामणि आदिक सम्पूर्ण रानियां इन्द्रादिक देवता मयादिक दैत्य याज्ञवल्क्यादि महर्षि श्रुतशर्मा, सुवासकुमार, और सुमेरु आदिक विद्याधरों के सब राजा आये सूर्य्यप्रभने उन सबका सत्कार किया और अपने मन्त्री तथा मित्रोंसे श्रीशिवजीके मिलनेका वृत्तान्त कहा तदनन्तर प्रभासादिक मन्त्री सम्पूर्ण औषध तथा सुवर्णके घटोंमें सबतीर्थोंके जललाये इतनेमें श्रीशिवजीभी पार्वतीजी समेत वहां आगये उन्हें देखकर सम्पूर्ण देवता दैत्य विद्याधर राजा तथा महर्षियोंने उठ २ कर प्रणाम किया तब श्रीशिवजीकी आज्ञासे सम्पूर्ण महर्षियोंने सूर्य्यप्रभको सिंहा-

सनपर बैठके सब तीर्थोंके जलोंसे अभिषेक किया और सम्पूर्ण देवता दैत्य तथा विद्याधरोंने मिलकर पुण्याहवाचन किया और मयासुरने उसके शिरपर मुकुट रखकरके पट्टबांधा उस समय सम्पूर्ण महर्षियोंने कामचूड़ामणिको अभिषेक करके उसकी पटरानी बनादी इसप्रकार अभिषेककी विधिके समाप्तहोजानेपर आकाशमें दुन्दुभी बजनेलगीं और वेश्यानृत्यकरनेलगीं तदनन्तर देवता तथा दैत्योंको अपनेअपने स्थानोंपर चलेजानेपर सूर्य्यप्रभ ने अपने बन्धु मित्र तथा मन्त्रियोंसमेत अभिषेकका बड़ा उत्सवकिया और श्रीशिवजीकी आज्ञानुसार वेदीका उत्तरभाग श्रुतशर्म्माको देदिया फिर अन्यबहुतसी विद्याधरी स्त्रियोंके साथ विवाह करके अपने मन्त्रियोंसमेत विद्याधरोंके चक्रवर्त्तीपनेका भोगकिया इसप्रकार श्रीशिवजीकी कृपासे सूर्य्यप्रभ मनुष्यहोकर भी विद्याधरोंका चक्रवर्त्तीहुआ था इसकथाको कहकर विद्याधरों का राजा वज्रप्रभ वत्सराज उदयन तथा नरवाहनदत्तको प्रणामकरके आकाश को चलागया उसके चलेजाने पर नरवाहनदत्त अपनी प्रिया मदनमंचुकासमेत अपने पिताके यहां विद्याधरों के पदकी प्राप्तिके लिये प्रतीक्षा करतारहा ३१२ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांसूर्य्यप्रभलम्बकेसप्तमस्तरंगः ७ ॥

सूर्य्यप्रभनामआठवांलम्बकसमाप्तहुआ ॥

अलंकारवती नाम नवमो लम्बकः

निशुंभभणनंभ्रोर्वी खर्विताःपर्वताअपि
यन्नमन्तीवनृत्यन्तं नमामस्तंविनायकम् ॥

इसप्रकार विद्याधरों के राजाओं से पहलेही सत्कार कियागया नरवाहनदत्त कौशाम्बी में अपने पिताके यहाँ निवास करताहुआ आनन्द से समय व्यतीत करताथा एकसमय नरवाहनदत्त अपनी सेनाको लेकर मंत्रियों समेत शिकार खेलनेको गया वहाँ किसी वनमें सम्पूर्ण सेनाको छोड़के गोमुखको साथ लेकर वनके आनन्द देखने को भ्रमण करताहुआ कुछदूर चलागया वहाँ उसकी शुभसूचक दाहिनी आंख फड़कनेलगी और दिव्यवीणाके बाजे समेत दिव्यगान सुनाईदिया उसीशब्द के अनुसार थोड़ीदूर जाकर एक शिवजी का मन्दिर उसने देखा और घोड़े बांधकर गोमुखको साथ लेकर उसके भीतर जाकर वीणा बजातीहुई एक दिव्यकन्या देखी उसकन्याके साथमें अन्य भी बहुत सी कन्या थीं चन्द्रमाके समान उसकन्याको देखकर समुद्रके समान नरवाहनदत्तका चित्त चलायमान हुआ और वहकन्या भी रसीले भोले नेत्रोंसे उसके स्वरूपको देखकर सम्पूर्ण गानादिको भूलकर उसी में आशक्तचित्त होगई तब नरवाहनदत्तके चित्तका जाननेवाला गोमुख जैसेही उसकी सखियोंसे पूछने लगा कि यहकौनहै और किसकी कन्याहै वैसेही आकाशसे एक अत्यन्त स्वरूपवती प्रौढ़ा विद्याधरी

उतरकर उसीकन्या के पास बैठगई और उसकन्याने उसे प्रणामकिया तब उस विद्याधरीने उसे यह आशीर्वाददिया कि तुझे निर्विघ्नतापूर्वक संपूर्ण विद्याधरोंका चक्रवर्त्ती पति मिले उसके इसआशीर्वादको सुनिकर नरवाहनदत्त ने निकटजाके प्रणामपूर्वक उससे पूछा कि हे अम्ब यह कन्या कौनहै और तुम्हारा इससे क्यासम्बन्धहै इन विनीत वचनोंको सुनकर वहबोली कि सुनो मैं तुमसे सबकथा कहतीहूं १४ हिमालयपर्व्वतपर श्रीसुन्दरपुरनाम नगरहै वहां विद्याधरोंका स्वामी अलंकारशील नाम राजाहै उसकी कांचनप्रभा नाम रानी है उसरानी में अलंकारशील राजाके एक पुत्रहुआ उस दिन स्वप्न में राजासे श्रीपार्वतीजीने कहा कि यह तुम्हारा पुत्र बड़ा धर्मात्मा होगा इससे अलंकारशीलने अपने पुत्रका नाम धर्मशील रक्खा क्रमसे धर्मशीलको युवावस्था में प्राप्तहुआ देखकर राजा अलंकारशीलने उसे सम्पूर्ण विद्या सिखाकर युवराजपदवी देदी तब धर्मशील धर्मसे सम्पूर्ण राज्य कार्य्य करके अपने पिता तथा सब प्रजामात्रको सुख देनेलगा इसबीच में कनकप्रभा फिर गर्भवती हुई और गर्भके दिन पूरे होनेपर एक बड़ी सुन्दर कन्या उत्पन्नहुई उससमय यह आकाशवाणीहुई कि यह कन्या सम्पूर्ण विद्याधरों के चक्रवर्ती नरवाहनदत्तकी स्त्री होगी तब अलंकारशीलने अत्यन्त प्रसन्न होकर बड़ा उत्सव किया और अपनी कन्याका नाम अलंकारवती रक्खा चन्द्रमाकी कलाके समान बढ़तीहुई वह अलंकारवती युवावस्थाको प्राप्त होकर और अपने पितासे सम्पूर्ण विद्याओंको पाकर भक्तिसे श्रीशिवजीके अनेक मन्दिरों में दर्शन करनेको जानेलगी इस बीच में धर्मशील ने युवावस्था में भी विरक्त होकर अपने पितासे कहा कि हेतात यह क्षणभंगुर विषय मुझे अच्छे नहीं मालूम होते हैं इससंसारमें ऐसी कौन वस्तुहै जो अन्तमें विरस नहीं होजाती क्या आपने व्यासमुनिका यह वचन नहीं सुनाहोगा (सर्वेक्षयान्तानिचयाः पतनान्ताःसमुच्छ्रयाःसंयोगाविप्रयोगान्तामरणान्तंहिजीवितम्) सम्पूर्ण समूहों का अन्तमें क्षयहोताहै सम्पूर्ण वृद्धियोंका अन्तमें पतनहोताहै सम्पूर्ण संयोगोंका अन्तमें वियोग होता है और सम्पूर्ण जीवनों के अन्तमें मृत्यु होती है इससे हे तात बुद्धिमान् लोग इन अनित्य विषयों में स्नेह नहीं करते हैं (परत्रचसहायान्ति नभोगानार्थसंचयाः। एकस्तुबान्धवोधर्म्मोनजहातिपदात्पदम्) सम्पूर्ण भोग तथा धन परलोकमें साथ नहीं जाते हैं केवल धर्मही ऐसा बान्धवहै जो पदभरभी मनुष्य का साथ नहीं छोड़ता इससे मैं वनमें जाकर उत्तम तपकरूं जिससे नित्य परमपदकी प्राप्ति होय धर्मशीलके यह वचन सुनकर राजाअलंकारशील नेत्रोंमें आंसूभरकर बोला कि हेपुत्र तुमको इसबाल्यावस्थाही में यह क्या बुद्धिभ्रम हुआहै युवावस्थाके उपरान्त सज्जन लोग तप करना उत्तम समझते हैं इससे विवाह करके धर्म के अनुसार राज्य पालन करनेका और सुख भोगनेका यह तुम्हारा समय है वैराग्यका नहीं है पिताके यह वचन सुनकर धर्मशील फिर बोला कि हेतात वैराग्यमें और विषय लोलुप होनेमें अवस्थाका कोई नियम नहीं है देखो ईश्वरकी कृपासे कोई बाल्यावस्थामें ही शान्त होजाते हैं और कोई विषयी पुरुष वृद्धावस्था में भी शान्तिको नहीं प्राप्त होते हैं न मेरी राज्यमें रुचिहै न विवाह करनेमें है मुझे अपने जीवनका फल यही मालूम होताहै कि तप करके श्रीशिवजीका आराधनकरूं

धर्मशील के यह वचन सुनकर और उसके वैराग्यको दृढ़ जानकर अलंकारशील आंसूबहाकर बोला कि हे पुत्र जो युवावस्थाही में तुमको इसप्रकार का वैराग्यहै तो मैं वृद्धावस्था में राज्य करके क्याकरूंगा मैंभी वनको चलूंगा यह कहकर अलंकारशीलने मृत्युलोकमें जाकर ब्राह्मणोंको तथा दीन लोगों को बहुतसी असर्फी तथा रत्नदिये और फिर अपने पुरमें जाकर अपनी स्त्री कांचनप्रभासे कहा कि तुम हमारी आज्ञा से इसी नगरमें रहो और इस अलंकारवती की रक्षाकरो आजके वर्षवें दिन इसी तिथि में इसके विवाहकी शुभलग्नहै उसदिन मैं यहां आकर इसकन्याका विवाह नरवाहनदत्तके साथ करूंगा वही मेरे इसपुरकी रक्षा करेगा यह कहके और शपथ दिलाकर राजा अलंकारशील विलाप करतीहुई अपनी स्त्रीको छोड़कर अपने पुत्र समेत वनको चलागया तब कांचनप्रभा अपनी कन्या समेत उसी नगरमें रही क्योंकि सतीस्त्रियां अपने पतिके वचनको उल्लंघन नहीं करसक्तीं तदनन्तर अलंकारवती श्रीशिवजीके अनेक मन्दिरोंमें जाजाकर दर्शन करनेलगी और उसकी माताभी उसीके साथ२ स्नेहसे घूमतीरही एक समय प्रज्ञप्तिनाम विद्याने अलंकारवती से कहा कि कश्मीर देशमें जाकर स्वयंभूक्षेत्रमें शिवजीका पूजनकरो उस विद्याके यह वचन सुनकर अलंकारवती अपनी माताके साथ कश्मीर में जाकर नन्दिक्षेत्र, महादेवगिरि, अमर पर्व्वत, सुरेश्वर्यादि, विजय तथा कपटेश्वर आदि महापवित्र क्षेत्रों में श्रीशिवजी का पूजन करके अपने घरको चलीआई हे सुभग वही अलंकारवती यह है और मैं इसकी माता कांचनप्रभाहूं आज यह मुझसे बिनाकहे इस शिवालय में चलीआई तब मैं प्रज्ञप्ति विद्या के द्वारा तुम्हारा और इसका दोनों का यहां आगमन जानकर आईहूं तुम मेरी इसकन्या के साथ विवाहकरो क्योंकि देवतालोग पहलेही से आज्ञा देचुके हैं प्रातःकाल वही दिनहै जिस दिनमें इसके पिताने विवाहकी लग्नबताई थी इससे हे पुत्र आज तुम अपनी कौशाम्बी नगरी को जाओ और मैं इसको लेकर अपने स्थानको जातीहूं प्रातःकाल राजा अलङ्कारशील वन से आकर इसका विवाह तुम्हारे साथ करदेंगे कांचनप्रभाके यहवचन सुनकर रात्रिभरभी एक दूसरे के वियोगके सहने में असमर्थ चकवाकोंके समान अलङ्कारवती तथा नरवाहनदत्त दोनों उदासीन होगये इनदोनों को उदासीन देखकर कांचनप्रभा बोली क्या एकरात्रि के वियोग में भी तुम लोगों को धैर्य्य नहीं होता धीर लोग तो अवधिरहित विरहको बहुत कालतक सहते हैं सुनो इसी बातपर मैं तुमको श्रीरामचन्द्र और सीताजी की कथा सुनाती हूं अयोध्यापुरी के स्वामी राजा दशरथ के राम भरत लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न यहचार पुत्रथे इनमेंसे रामचन्द्र सबसे बड़ेथे वहरावणके मारनेके लिये साक्षात् विष्णु भगवान् का अवतारथे राजा जनककी कन्या सीतानाम इनकी परमप्रिय स्त्री थी भाग्यवश से राजा दशरथ ने भरतको राज्यदेकर रामचन्द्रको सीता और लक्ष्मण समेत चौदहवर्ष का वनवास दिया वन में जाकर रामचन्द्रकी प्रिय स्त्री सीताजीको हरकर रावणमार्ग में जटायुको मारकर लङ्कापुरीको लेगया तब विरह से व्याकुल श्रीरामचन्द्रजी ने बालि को मार सुग्रीव से मित्रता करके हनुमान् को भेजकर सीताजी की खबर मंगवाई और समरपाके समुद्रमें सेतु बांधके रावणको मारके विभीषणको लङ्काका राज्यदेके सीता

जीको लेकर वहांसे गमनकिया जब वनसे लौटकर रामचन्द्रजी अयोध्यापुरीमें आये तब भरतने संपूर्ण राज्य उनको देदिया भरतसे मिलेहुए राज्यका पालन करतेहुए रामचन्द्रकी स्त्री सीताजी गर्भवती हुईं उन्हीं दिनोंमें श्रीरामचन्द्रजी अपनी प्रजाकी चेष्टा देखनेकेलिये अकेले छिपकर निकले घूमते२ उन्होंने एक ऐसे पुरुषको देखा जो अपनी स्त्रीको यहदोष लगाकर कि यहपराये घरमें रहीहै अपने घरसे निकाल रहाथा और वह उसकी स्त्री यहकहतीथी कि रामचन्द्रने राक्षसकेभी घरमें रहीहुई सीताको नहीं निकाला परन्तु यह उनसे भी बड़ाहै जो मुझे अपनी जातिवालेके भी घरमें रहनेसे घरसे निकालरहाहै उस स्त्री के यहवचन सुनके रामचन्द्रजीने अपने मन्दिरमें जाके लोकापवादसे डरकर सीताजीको वनको भिजवादिया ठीकहै (सहतेविरहक्लेशंयशस्वीनायशःपुनः) यशस्वी लोग विरहके क्लेशको सहलेते हैं परन्तु अपयशको नहीं सहसक्ते ७० तब लक्ष्मणके द्वारा वनमें त्यागीगई सीताजी गर्भसे व्याकुल होकर भ्रमण करतीहुई भाग्यवशसे वाल्मीकिजी के आश्रममें पहुंचीं वाल्मीकिजी ने उनको पवित्रजानकर अपने आश्रममें रखलिया तब उसआश्रमके रहनेवाले अन्य मुनिलोगो ने यह विचारकिया कि सीतामें कोई दोष अवश्यहै नहीं तो इनके पति इन्हें क्यों निकालदेते इससे इनके देखनेसेभी हमलोगों को पापहोताहै और वाल्मीकिजी दयाके कारण इनको अपने आश्रमसे नहीं निकालते हैं और इनके देखनेसेहुए पापको अपने तपके प्रभावसे नष्टकर देते हैं इससे हम लोगोंको किसी दूसरे आश्रममें चलकर रहना चाहिये मुनि लोगोंका यहविचार जानकर वाल्मीकिजीने उनसे कहा कि हे मुनि लोगो हमने अपने ध्यानसे देखलियाहै कि सीताजी परमशुद्धहैं जब वाल्मीकिजीकेभी इतने कहनेपर उनको विश्वास न हुआ तब सीताजी बोलीं कि आप लोग जैसे उचित समझे वैसे मेरी परीक्षा करलीजिये और जो मैं अशुद्ध निकलूं तो मेरा शिरकाट डालिये सीताजीके यहवचन सुनकर मुनि लोगोंके चित्त में दयाआई और सब मुनि बोले कि इसवनमें पूर्व्वही किसी टिट्टिभ ने अपनी स्त्रीको अन्यमें आसक्त जानकर उसपर मिथ्या दोष लगाया तब उसने अत्यन्त दुःखितहोकर सम्पूर्णलोकपालो से तथा पृथ्वी से पुकारकर अपने शुद्धकरनेको कहा उसके दीन वचनोंको सुनकर लोकपालोंने उसे शुद्धकरने के लिये एकतड़ाग इसीवनमें बनादिया उसमें वह टिट्टिभी शुद्धहुई उसी टिट्टिभसरनाम तीर्थपर चलकर सीताजी अपनी शुद्धताकी परीक्षादें उनलोगों के यहवचन सुनके श्री जानकीजी उन्हें साथ लेकर उसतीर्थपर आईं और बोलीं कि हे माता पृथ्वी जो मैंने आर्यपुत्र श्री रामचन्द्रजीके सिवाय कभी स्वप्न में भी किसी अन्य पुरुषपर चित्त न चलायाहोय तो मैं इसतड़ागके पार उतरजाऊं यहकहकर जलमें प्रविष्टहुईं जानकीजीको साक्षात् पृथ्वीने प्रकटहोके अपनी गोदीमें बैठालकर पार उतारदिया तब संपूर्ण मुनियोंने महापतिव्रता साध्वी श्री सीताजीको प्रणामकरके उनके त्यागके अपराधसे श्रीरामचन्द्रजी को शापदेनाचाहा तब सीताजी ने हाथ जोड़कर उनसे कहा कि आप आर्यपुत्रको शाप न दीजिये मुझ अभागिनीको शापदेना योग्य है परमपतिव्रता सीताजीके यहवचन सुनकर मुनि लोगोंने प्रसन्न होके यहवरदान दिया कि तेरे बड़ावीर सत्पुत्रहोगा इसप्रकार वरदानपाके सीताजीने आश्रममें आ-

कर गर्भमासोंके पूर्णहोनेपर एकसुलक्षण पुत्र उत्पन्नकिया वाल्मीकिजी ने उसकानाम लवरक्खा एक समय सीताजी लवको साथलेकर स्नानकरनेको गई थीं उससमय वाल्मीकिजीने उनकी कुटीको शून्य देखकर शोचा कि बालकको छोड़कर सीता स्नानकरनेको जाया करतीहैं तो वहबालक कहांगया ऐसा निश्चयहोताहै कि उसबालकको कोई पशु उठा लेगया इससे एकदूसरा बालक बनाना चाहिये नहीं तो जब सीता स्नानकरके लौटेंगी और बालकको न देखेंगी तो प्राण त्यागकरदेंगी यह शोचकर वाल्मीकिजी ने लवके समान एकदूसरा बालक कुशोंका बनाकर कुटी में सुला दिया तदनन्तर स्नानकरके लौटीहुई सीताजीने वाल्मीकिजीसे कहा कि हे मुने मेरा बालक तो मेरे साथ गयाथा यहदूसरा बालक किसकाहै यहसुनकर वाल्मीकिजी ने सम्पूर्ण वृत्तान्त बताकर कहा कि यहपुत्र बड़ाभाग्यवान् होगा इसे भी तुम्हीं लेलो मैंने इसेकुशोंसे बनायाहै इसीसे इसकानाम कुशहोगा यहकहकर वाल्मीकिजी ने उन दोनों बालकोंके संस्कार करदिये और सीताजी उनदोनोंका पालन करनेलगीं बाल्यावस्थामें भी उन दोनों बालकोंको वाल्मीकिजीसेही सम्पूर्ण विद्या तथा दिव्य अस्त्र प्राप्तहोगये एकसमय उनदोनों बालकोंने उसआश्रमके मृगको मारकर खाया और वाल्मीकिजी के पूजनका शिवलिंग लेके अपना खिलौना बनाया तब वाल्मीकिजीने खिन्नहोकर सीताजीकी प्रार्थनासे उनदोनोंको यहप्रायश्चित्त बताया कि लवकुबेरके तड़ागपर जाकर सुवर्णके कमल और उनके उपवनसे मन्दारके पुष्पलावे उन्हीं पुष्पों से यहदोनों भाई मिलकर इसीशिवलिंगका पूजनकरें तो इनकापाप शान्तहोगा यहसुनकर लव कैलाश में जाकर बहुतसे यक्षोंको मारकर कुबेरके तड़ाग तथा वनसे सुवर्ण के कमल तथा मन्दारके पुष्पों को तोड़कर लौटे और थककर मार्ग में किसी वृक्षके नीचे सोगये इसबीचमें रामचन्द्रजीकी आज्ञासे नरमेध केलिये लक्ष्मणजी किसी सुलक्षण पुरुषके ढूंढ़नेको उसीमार्ग होकर निकले उन्होंने लवको जगाकर और उससे युद्धकरके मोहनास्त्रसे मोहित करके उसे अयोध्याजीमें लेगये जब लव बहुत कालतक नहीं आए तब वाल्मीकिजीने सीताजीको समझाकर ध्यानसे सब वृत्तान्त जानके कुशसेकहा कि लक्ष्मण अयोध्यामें लवको पकड़लेगयेहैं तुम इन दिव्यास्त्रोंको मुझसे लेकर लक्ष्मणको जीतकर लवको छुड़ा लाओ इसप्रकार कहके और दिव्यास्त्रदेके वाल्मीकिजीने कुशको अयोध्या भेजा अयोध्यामें पहुंचकर कुशने अपने बाणोंसे यज्ञभूमिको छादिया और यज्ञभूमिकी रक्षाके निमित्त आयेहुए लक्ष्मणजीको अपने दिव्यास्त्रोंसे जीतलिया तब रामचन्द्रने आकर उससे युद्धकिया और जब वह भी वाल्मीकिजी के प्रभावसे उसे न जीतसके तब पूछनेलगे कि तुम कौनहो और यहां क्यों युद्धकर रहेहो उसने कहा कि लक्ष्मण मेरे बड़े भाईको पकड़ लायेहैं उसके छुटानेको मैं आयाहूं हम दोनोंका लवकुश नामहै और रामचन्द्र हमारे पिता हैं यह हमारी माता जानकीजीने कहा है यह कहकर उसने जानकीजीका सब वृत्तान्त कहदिया तब रामचन्द्रने कुशको गोदमें लेकर और लवकोभी बुलाकर गोदमें लेकर कहा कि वह पापी रामचन्द्र मैंहीं हूं तब सम्पूर्ण लोग उन वीर पुत्रोंको देखकर सीताजीकी प्रशंसा करनेलगे और श्रीरामचन्द्रजी सीताजीको वाल्मीकिजी के आश्रमसे बुलाकर और पुत्रों पर राज्यका भाररखकर सुखपूर्वक

रहनेलगे इसप्रकारसे धीरलोग बहुत कालतक विरहको सहते हैं तुमलोग एकरात्रि भी नहीं सहसके विवाहके लिये उत्कंठित नरवाहनदत्त और अलंकारवती से यहकथा कहकर कांचनप्रभा प्रातः२काल आनेकी प्रतिज्ञाकरके अलङ्कारवतीको लेके आकाशमार्गसे अपने पुरकोगई और नरवाहनदत्त उदासीनहोकर कौशाम्बीको गया ११५ कौशाम्बीमें जाकर रात्रि के समय नरवाहनदत्तको निद्रा न आते देखकर गोमुखने कहा कि हे युवराज आपके चित्तके वहलानेके लिये मैं राजा पृथ्वीरूपकी कथा आप से कहताहूं दक्षिण दिशा में प्रतिष्ठाननाम नगरहै उसनगरमे अत्यन्त रूपवान् पृथ्वीरूपनाम राजाथा एकसमय दो ज्ञानी क्षपणक उसकेपास आये और उसके अद्भुत स्वरूपको देखकर बोले कि हे राजा हमदोनों सम्पूर्ण पृथ्वीपर घूमेहैं परन्तु आपके समान पुरुष अथवा स्त्री रूपयुक्त नहीदेखी किन्तु मुक्तिपुर द्वीपमे राजा रूपधरकी हेमलतानाम रानी में उत्पन्नहुई रूपलतानाम कन्या आपके सदृशहै और आप उसके सदृशहै जो आपका उससे संयोगहोय तो बहुत अच्छाहोय क्षपणकोंके इसवचनके सुनतेही कामकेवाण राजाके हृदय में लगे तब राजाने कुमारिदत्तनाम अपने तसवीर उतारनेवालेको बुलाकर कहा कि मेरी तसवीर अच्छेप्रकारसे उतारकर इनदोनों भिक्षुकों के साथ मुक्तिपुरनाम द्वीपको जाओ वहां राजा रूपधरकी कन्या रूपलताको मेरी तसवीर युक्ति पूर्व्वक दिखाओ और यहजानकर कि वह राजा मुझे अपनी कन्यादेगा अथवा नहीं तुम रूपलताकी तसवीर उतारकर मेरे पास ले आओ यह कहकर और अपनी तसवीर उतरवाके राजाने उसचित्रकारको उनभिक्षुकोंके साथ भेजा वहतीनों क्रम से चलते २ समुद्रके तटपर पत्रपुरनाम नगरमें पहुंचे और वहांसे जहाजमें चढ़कर पांच दिनमें मुक्तिपुर में पहुंचे वहां उसचित्रकारने राजद्वारपर जाकर कहा कि सम्पूर्ण पृथ्वीमें मेरे समान और कोई चित्रकार नहींहै यहखबर पाकर राजा रूपधरने उसे अपने पास बुलाया वहां उसने राजाको प्रणाम करके कहा कि हे महाराज मैंने सम्पूर्ण पृथ्वी में भ्रमण किया परन्तु अपने समान कोई चित्रकार नहींपाया बताइये देवता मनुष्य अथवा दैत्योंमेंसे किसकी तसवीर बनाऊं यहसुनकर राजाने अपनी पुत्री रूपलताको बुलाकर चित्रकारसे कहा कि इसकी तसवीर बनाकर मुझे दिखाओ तब कुमारीदत्तने रूपलता की यथावत् तसवीर बनाकर राजाको दिखाई उसे यथावत् बनीहुई देखकर राजा रूपधरने उसचित्रकार को बड़ा चतुर जानके रूपवान् जामाता मिलनेकी इच्छासे उससे पूंछा कि तुमने सम्पूर्ण पृथ्वीपर भ्रमणकियाहै तो बताओ तुमने हमारी कन्याके समान कहीं पुरुष अथवा स्त्री देखी है यहसुनकर उसने कहा कि सम्पूर्ण संसारमें इसके समान स्त्री अथवा पुरुष नहींहै किन्तु प्रतिष्ठान नगरमें पृथ्वीरूप राजा इसीके समानहै उसके साथ इसका विवाहहोय तो बहुत अच्छाहै राजा पृथ्वीरूपने अपने समान कन्या कहीं न पाकर युवावस्थामें भी विवाह नहीं कियाहै और मैंने उसकी तसवीर उतारकर अपने पास रखली है यहसुनकर राजाने कहा कि क्या वहतसवीर यहां तुम्हारे पासहै तब उसचित्रकारने वहतसवीर राजाको निकालकर देदी तसवीरमें राजा पृथ्वीरूपके स्वरूपको देखकर राजा रूपधरको बड़ा आश्चर्य हुआ और बोला कि हम धन्यहैं जिन्होंने उसकी तसवीर देखी और जिन्होंने साक्षात् उसके दर्शन

कियेहोंगे वह महाधन्यहैं राजाके यहवचन सुनकर और तसवीरको देखकर रूपलता पृथ्वीरूपपर काम से अत्यन्त मोहितहोगई उसेकामसे मोहित देखकर राजाने उसचित्रकरसे कहा कि तुम्हारी उतारीहुई तसवीरमें जराभी अन्तर नहींहोताहै जिसकी यहतसवीर है वही राजा पृथ्वीरूप मेरी कन्याका पतिहै इससे तुम इसमेरी कन्याकी तसवीरको लेजाकर पृथ्वीरूपको दिखाओ जो यह उसे प्रियलगे तो वह यहांआकर शीघ्रही इससे अपना विवाहकरे यहकहकर राजाने भिक्षुक समेत चित्रकरको बहुतसाधन देकर एकअपना दूत साथ करके वहांसे बिदाकिया वह चारों पुरुष वहांसे चलकर समुद्रके पारहोकर प्रतिष्ठान नगरमें आये वहांआकर चित्रकरने राजाके पास जाकर राजा रूपधरका सब वृत्तान्त कहदिया और रूपलताकी तसवीर दिखाई तसवीरको देखतेही सुन्दरताकी नदी उसरूपलतामें राजा पृथ्वीरूप की दृष्टि ऐसी मग्नहोगई कि वह उसे निकाल न सका कान्तिरूपी अमृतकी बरसानेवाली चन्द्रिका के समान उसतसवीरको देखकर चकोरके समान राजा तृप्त नहीं हुआ इसप्रकार उसे देखकर राजाने चित्रकरसे कहा कि रूपलताको बनानेवाला ब्रह्मा और उसकी तसवीर उतारनेवाला तुम्हारा हाथ दोनों वन्दनाकरनेके योग्यहैं मैंने राजारूपधरके वचन स्वीकार करलिये मैं मुक्तिपुरद्वीपमें जाकर उसकी कन्या के साथ अवश्य विवाह करूंगा यहकहकर उसने चित्रकरको दूतको तथा भिक्षुकोंको बहुतसाधन देकर विरहसे व्याकुलहोकर वहदिन उपवन आदिकोंमें बिहारकरके व्यतीतकिया और दूसरे दिन लग्नका निश्चय करके बहुतसे हाथी घोड़े सेना तथा राजपुत्रोंको लेकर और चित्रकर क्षपणक तथा राजारूपधर के दूत को साथ लेकर मंगलघट नाम हाथीपर चढ़के यात्राकरी दिनभर में बहुतसा मार्ग उल्लंघन करके सायंकाल के समय विन्ध्याचलके वनके समीप पहुंचकर राजा अपनी सेनासमेत वहीं टिका और दूसरे दिन शत्रुमर्दन नाम हाथीपर चढ़के अपनी सब सेनासमेत विन्ध्याचलके वनमें चला कुछ दूर चलकर राजाने देखा कि मेरी आगे गईहुई सेना लौटी भागीआती है यह देखकर चकितहुए राजा से निर्भयनाम राजपुत्रने आकरकहा कि हे स्वामी आगे भिल्लोंकी बड़ी सेनाहै उन भिल्लों ने हमारे पचास हाथीमारे हजार पैदलमारे तथा तीनसौ घोड़ेमारे हैं और हमारी सेनावालों ने दोहजार भिल्ल मारे और फिर उन भिल्लोंके बाणोंसे पीड़ितहोके भागे यह सुनकर राजा पृथ्वीरूपने कुपितहोके दौड़कर बहुतसे भिल्लोंकोमारा और एकभाले से भिल्लों के स्वामीका शिरकाटडाला और उसके साथी निर्भयादिकोंने भी बहुतसे भीलोंको मारा उससमय बाणोंके लगने से बहतेहुए रुधिरसे युक्त राजाका शत्रुमर्दननाम हाथी धातुओं के झरनोंसे युक्त अंजनाचलके समान शोभितहुआ तब सम्पूर्ण भिल्ल भागगये और राजाकी सम्पूर्ण सेना अत्यन्त प्रसन्नहोकर लौटी इसप्रकार भीलों को जीतकर राजा पृथ्वीरूप थकीहुई सेनाके विश्रामके लिये उसी वनमें उसदिनरहा फिर प्रातःकाल वहांसे चलकर क्रम से कई दिनमें समुद्रके निकट पत्रपुरनाम नगरमें पहुंचा वहां उसनगरके राजा उदारचरितने उसे एक दिन अपने यहां बड़ेआदरपूर्व्वक टिकाकर दूसरे दिन अपनेही जहाजोंपर चढ़ाके वहांसे बिदाकिया तब आठदिनतक समुद्रमें चलकर नवें दिन राजापृथ्वीरूप जहाजोंपरसे उतरकर मुक्तिपुरद्वीपमें पहुंचा

वहां राजारूपधर आगेआकर वड़ेसत्कारपूर्वक उसे सबपुरमें घुमाकर अपने मन्दिरमें लेगया वहां रानी हेमलता अपनी कन्याकेही समान वरको देखकर वड़ीप्रसन्नहुई और बड़ेआदरपूर्वक अपने जामाता को मन्दिरके भीतरलेगई दूसरे दिन राजारूपधरने वेदी वनवाकर शुभलग्नमें रूपलताका विवाह विधि पूर्वक पृथ्वीरूप के साथ करदिया और लाजाहवनमें बहु मूल्य रत्नदिये फिर विवाह विधिको समाप्त करके उस चित्रकरको तथा क्षपणकोंको बहुतसा धनदेकर सम्पूर्ण परिजनोंको वस्त्र तथा आभूपणदिये तदनन्तर राजा पृथ्वीरूप उसी द्वीपके अनुसार भोजनादि व्यवहारकरके और नृत्य तथा गीतमंगलों से उस दिनको व्यतीतकरके रात्रिकेसमय शयनस्थानमें जाकर रत्नके पलंगपरलेटा उस स्थानमें रत्नके दीपक बलरहेथे रत्नजटित खम्भेलगे थे और रत्नोंसेही जटित पक्कीचट्टानथी वहां रूपलताकी सखी रूपलताको उसकेपास भेजगई तव उस रूपलताके साथ राजा पृथ्वीरूप बहुतकालसे अभिलाषा कियेगये सुखको अनुभवकरके सुरतके श्रमसे सोगया और प्रातःकाल वन्दी तथा मागधों के जगाने से उठा इसप्रकार दश दिन बड़े आनन्दसे वहां रहकर राजा पृथ्वीरूप ज्योतिपियों से पूछकर ग्यारहवें दिन मंगलाचारकरके रूपलताको साथलेकर अपने परिकरसमेत वहां से चला और समुद्रके तटपरआकर भेजने के लिये आयेहुए अपने श्वशुरको लौटालकर सम्पूर्ण परिकरसहित जहाजोंपर चढ़कर आठ दिन में समुद्रका उल्लंघनकरके पत्नपुरनगरमें आया और वहां राजा उदारचरितके बहुतआग्रहसे कुछदिन टिककर अपनी प्रिया रूपलताको जयमंगलनाम हाथीपर चढ़ाके और कल्याणगिरि नाम हाथीपर आप सवारहोकर वहांसे चला मार्ग में कई एक विश्रामोंको करके अपने प्रतिष्ठाननाम नगरमें पहुंचा वहां रूपलताको देखकर पुरकी रूपवती स्त्रियों ने अपने रूपका अभिमान त्यागदिया और राजा तथा रानी पर बहुतसे पुष्पों की वृष्टिकी इसप्रकार नगरमेंहोकर राजा पृथ्वीरूपने अपने मन्दिर में आकर उस चित्रकरको बहुतसे गांव तथा धनदेकर उन क्षपणकोंको धनसे पूर्णकरके अपने आधीन राजपुत्रों का और मन्त्रियोंका बहुतसा धनदेकर बड़ा सत्कारकिया इसप्रकार विवाहोत्सवको समाप्तकरके राजा पृथ्वीरूप अपनी प्रिया रूपलताके साथ मृत्युलोकके सुखको अनुभव करताहुआ बहुतकालतक राज्य करतारहा १६६ इसकथाको कहकर गोमुख नरवाहनदत्तको सावधान करने के लिये फिर बोला कि इस प्रकारसे धीरलोग क्लेश तथा विरहको बहुतकालतक सहते हैं आपसे एक रात्रिभरभी नहीं रहाजाताहै प्रातःकाल अलंकारवती के साथ आपका विवाह अवश्यहोगा क्योंकि उस विद्याधरी के वचन मिथ्या नहीं होसक्ते गोमुखके यह वचन सुनकर उसीसमय आयेहुए मरुभूतिने कहा कि तुम्हें कभी कामको सन्ताप सहना नहींपड़ाहै इसी से ऐसा कहरहेहो (तावद्धत्तेपुमान्धैर्य्यं विवेकंशीलमेवच। यावत्पततिकामस्यशायकानाम्नगोचरे ॥ धन्यास्सरस्वतीस्कन्दो जिनश्चजगतित्रयः। पटान्तलग्नतृणवत्त्यक्तोयाधुर्य्यैस्मरः) मनुष्यका धैर्य्य विवेक तथा शील तभीतक रहताहै जबतक कामदेव के बाण उसको नहीं बेधते हैं इससंसारमें सरस्वतीस्कन्द तथा जिन यह तीन धन्यहैं जिन्हों ने वस्त्रके कोने में लगेहुए तृण के समान कामदेवको झिटककर दूर फेंकदिया मरुभूतिके इसप्रकार कहने पर गोमुखको

उद्विग्न देखकर नरवाहनदत्त ने उसकी बात का समर्थन (ताईद) करने के लिये कहा कि मेरे बह-लाने के लिये गोमुख ने यह बात योग्यही कही थी क्या स्नेही लोग विरह से व्याकुल अपने मित्रको समझाने के सिवाय स्यावासी देते हैं मित्रलोगोंको उचित है कि विरहीलोगों को यथाशक्ति समझावें फिर कामदेव तो जैसा चाहैगा वैसा करेहीगा इत्यादि बातोंको कहकर और अपने मंत्रियोंसे अनेक कथाओं को सुनकर नरवाहनदत्त ने वह रात्रि व्यतीतकी प्रातःकाल उठकर सम्पूर्ण आवश्यक कार्य्य करके नरवाहनदत्त ने आकाश से काञ्चनप्रभा अलंकारशील धर्म्मशील तथा अलंकारवती को उतरते देखा वह सब उतरकर नरवाहनदत्त के समीपआये और उनके साथ अन्य बहुतसे विद्याधर सुवर्ण तथा रत्नों के भारके भारलेकर आये नरवाहनदत्त ने उन सबका बड़ासत्कार किया इतने में इस वृत्तान्तको सुनकर वत्सराज उदयन् भी अपने मंत्री तथा स्त्रियों समेत वहां आकर उन सबका यथायोग्य अतिथि सत्कारकरके बैठा तब राजा अलंकारशील ने उदयन् से कहा कि हे राजा यह अलंकारवती-कन्या मेरी पुत्री है जब इसका जन्महुआ था तब यह आकाशवाणीहुई थी कि यह कन्या सम्पूर्ण विद्याधरों के भावी चक्रवर्ती नरवाहनदत्तकी स्त्री होगी इससे मैं इस कन्याका विवाह नरवाहनदत्त के साथ कियेदेताहूं आज बड़ी शुभलग्न है इसीलिये मैं अपने परिकर समेत यहां आयाहूं अलंकारशीलके यह वचनसुनकर वत्सराज उदयन् ने कहा कि यह आपका परमअनुग्रह है उदयन् के यह वचन सुनकर अलंकारशीलने विद्याओं के प्रभावसे अपने हाथ में जल उत्पन्नकरके वहां की पृथ्वीपर छिड़का जल के पड़तेही बड़ी सुन्दर सुवर्णमयवेदी दिव्यवस्त्रों से ढकीहुई उत्पन्नहोगई और अनेक रत्नमय एक अद्भुत स्थानबनगया तब अलंकारशील ने नरवाहनदत्त से कहा कि उठो लग्नकासमय आगया स्नानकरो यह आज्ञापाकर स्नानकरके आयेहुए नरवाहनदत्त को वेदीपर बैठालकर अलंकारशील ने अपनी अलंकारवती कन्या देदी और लाजाहवन में बहुतसी मणि सुवर्ण दिव्य स्त्री वस्त्र तथा आभूषणदिये इसप्रकार विवाहकरके और आदरपूर्व्वक सबसे आज्ञालेके अलंकारशील अपने पुत्र तथा स्त्री समेत आकाशमार्ग में होकर अपने स्थानकोगया तब वत्सराज उदयन् ने विद्याधरों के राजाओं से इसप्रकार अपने पुत्र को सेवा कियागया देखकर बहुत प्रसन्नहोके अत्यन्त उत्सवकिया और रसिक नरवाहनदत्त सुन्दर आचरणवाली उदार गुणवती अलङ्कारवती प्रियाको पाकर अत्यन्त आनन्दितहोकर उसके साथ बड़े सुख से समय व्यतीत करने लगा २२७॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांअलंकारवतीलम्बकेप्रथमस्तरङ्गः १॥

इसप्रकार नरवाहनदत्त अलंकारवती के साथ विवाहकरके अपने पिताके यहां राज्यके सुखों को भोग करताहुआ और अपनी स्त्रीकी सखी विद्याधरियों के मनोहरगीतों को सुनताहुआ अपने मंत्रियों के साथ आनन्द से रहनेलगा एकसमय अलंकारवती की माता काञ्चनप्रभा ने वहां आकर नरवाहनदत्तसे कहा कि हे पुत्र हमारे सुन्दरपुर नाम नगरकोचलो और वहांके उपवनों में अलंकारवती के साथ विहार करो उसके यह वचनसुनके नरवाहनदत्त अपने पितासे आज्ञालेकर वसन्तक को तथा सब अपने मंत्रियों

को साथलेकर अलंकारवती समेत अपनी सासकी विद्याके प्रभावसे बनेहुए विमानपरचढ़कर आकाश मार्गहोकर चला विमानके ऊपरसे नीचे को मुखकरके देखने से मालूमहोताथा कि पृथ्वी एक नगर के समानहै और सम्पूर्ण समुद्रखाई से हैं इसप्रकार से बहार देखताहुआ नरवाहनदत्त अपने परिकर समेत क्रमसे हिमालयपर्व्वतपर पहुँचा और वहां किन्नरियों के मधुरगीतों को सुनताहुआ और अनेकप्रकारके आश्चर्यकारी पदार्थों को देखताहुआ सुन्दरपुर में पहुँचा उसके सुवर्णमय गृह हिमालयपर भी सुमेरुकी भ्रान्तिको उत्पन्नकरते थे चंचल पताकाओं से शोभित ऐसे उत्तम उस पुर में विमानपर से उतरकर अपने परिकर समेत अपने श्वशुर अलंकारशील के मन्दिर में गया वहां रानी काञ्चनप्रभा ने बहुत मंगलाचार करके अपनी विद्याके प्रभावसे उत्पन्नहुए दिव्य ऐश्वर्यों से उसे बड़ासुख दिया इसप्रकार एक दिनके व्यतीतहोजानेपर दूसरे दिन काञ्चनप्रभा ने नरवाहनदत्त से कहा कि इसनगर में श्रीभगवान् स्वयंभू शिवजीका मन्दिर है उनके दर्शन से मनुष्यों को चारोंपदार्थ प्राप्तहोतेहैं उन्हीं के मन्दिर के निकट तुम्हारे श्वशुर ने बड़ा सुन्दर उपवन लगायाहै और वहीं गंगासर नाम बड़ातीर्थ बनवाया है इससे तुम उस वन में जाकर श्रीशिवजीका पूजनकरो और वहीं विहारकरो अपनी सासके यह वचनसुनकर नरवाहनदत्त अलंकारवती तथा सब अपने परिकर को लेकर श्रीशिवजी के उस उपवन में गया उस वन के वृक्षों के बड़े २ गुद्दे सुवर्ण के शाखा रत्नोंकी पुष्पों के गुच्छे मोतियों के और पत्ते मूंगों के थे ऐसे सुन्दर उस उपवनको देखकर गंगासरनाम तीर्थ मे स्नानकर श्रीशिवजीका पूजनकरके रत्नोंकी सीढ़ियों से अलंकृत सुवर्ण के कमलों से युक्त बावड़ियों के तटपर भ्रमणकरताहुआ और कल्पलताओं के कुंजों में अलंकारवती के साथ विहारकरताहुआ विद्याधरों के मनोहरगान को श्रवणकरताहुआ और मरुभूतिके मनोहर हास्यकारी वचनो से प्रसन्नहोताहुआ नरवाहनदत्त एक महीने तक उस उपवनमें क्रीड़ा करता रहा तदनन्तर दिव्यवस्त्र तथा बहुतसे दिव्य आभूषण देकर कांचनप्रभा नरवाहनदत्त अलंकारवती तथा उसके सबपरिकर जनोंको विमानमें चढ़ाकर कौशाम्बी में उदयन्के निकटलेआई और वहां उनसबको विमान मे उतारकर वासवदत्ता तथा उदयन्के आगे अलंकारवती से यहवचन बोली कि हेपुत्री तुम ईर्षा से कोपकरके अपने पतिको कभी दुःख न देना क्योंकि जोस्त्री ऐसाकरती हैं उन्हें इस पापसे अत्यन्त दुखदाई विरहप्राप्त होताहै देखो मैं ने ईर्ष्या से अपने पतिको बड़ा दुःखदिया था उसी पापसे अब पतिके चलेजानेपर पश्चात्तापसे व्याकुलरहतीहूं यह कहकर और अलंकारवती का आलिंगनकरके कांचनप्रभा आंसूभरके आकाश मार्ग से अपने पुरको चलीगई तदनन्तर उत्सवसे उस दिन के व्यतीत हो जानेपर दूसरे दिन प्रातःकाल नरवाहनदत्त अपने नित्यकृत्यों को करके मंत्रियों समेत अलंकारवती के मंदिर में बैठा उससमय अकस्मात् एकस्त्री मन्दिरमें आकर अलंकारवती से बोली कि हे रानी मुझस्त्री की रक्षाकरो रक्षाकरो एक ब्राह्मण मुझे मारे डालताहै उसके भयसे मैं तुम्हारे भीतर भागआईहूं और वह बाहर खड़ाहै यह सुनकर अलंकारवतीनेकहा कि डरोमत कहो वह ब्राह्मण कौन है और क्यों तुमको मारना चाहता है तब वह बोली कि इसी पुरी के रहनेवाले बलसेन नाम क्षत्रीकी

अशोकमाला नाम मैं पुत्री हूं जब मैं कन्याथी तबरूपके लोभी हठशर्मानाम इस धनवान् ब्राह्मण ने मेरे पितासे मुझे मांगा हठशर्माकी प्रार्थना को सुनकर मैंने अपने पितासेकहा कि मैं इस घोर मुख वाले कुरूप ब्राह्मणकेसाथ अपना विवाहनहीं करूंगी और जो आप करदीजियेगा तो मैं इसके यहां नहीं रहूंगी मेरे इसप्रकार कहनेपर भी मेरे पिताने हठशर्माको धन्ने बैठे देखकर ब्रह्महत्याके भयसे मेरा विवाह इसकेसाथ करदिया और यह जब मेरी अनिच्छासे विवाहकरके अपनेघर मुझेलेगया तब मैं इसे छोड़कर एकक्षत्री के घर चलीगई इसने अपने धनके बलसे उसे बड़ा क्लेशदिया उसने महाक्लेशित होकर मुझे अपने घरसे निकालदिया और मैं एकदूसरे धनवान् क्षत्रीके यहां चलीगई इसने रात्रिके समय ईर्ष्यासे उसकेघरमें आगलगादी तब उसने भी मुझेनिकालदिया और मैं एकअन्य क्षत्रीके चली गई इसने उसकेयहां भी रात्रिकेसमय अग्निलगादी तब उसने भी मेरा त्यागकरदिया और मैं शृगाल से डरीहुई भेड़ी के समान इस हठशर्मा से डरकर आपके सेवक वीरशर्मा नाम बली राजपुत्रकी दासी होगई वीरशर्मा के यहां मुझे देखकर हठशर्मा निराशहोकर विरहसे व्याकुलहोके अत्यन्त दुर्बलहोगया और किसी प्रकार से मेरे मारनेकेलिये मुझे ढूंढ़नेलगा इसकी यह इच्छाजानकर वीरशर्मा ने मेरी रक्षा करने के अर्थ इसको बंधन में डलवाना चाहा परन्तु मैंने उसे ब्राह्मणजानकर वीरशर्माको इसके कैद करवाने से निषेध करदिया आज भाग्यवशसे मुझे बाहर निकलीहुई देखकर हठशर्मा छुरी निकालकर मेरे मारने को दौड़ा इसीसे मैं भागकर आपके यहां आनेलगी और प्रतीहारीने दयाकरके मुझे भीतर आनेदिया मैं जानती हूं कि हठशर्मा अभी द्वारपर खड़ाहोगा यह सुनकर नरवाहनदत्तने हठशर्मा को अपने आगे बुलवाया और क्रोधसे अशोकमालाको देखतेहुए छुरीको हाथमें लियेहुए तथा कोप से कांपतेहुए हठशर्मा से कहा कि हे ब्राह्मण तुम स्त्री को मारते हो और पराये घरोंको जलातेहो ऐसे घोर पाप तुम क्योंकरते हो ५० यह सुनकर हठशर्मा बोला कि यह मेरी धर्मकीस्त्री है जो यह मेरा त्याग करके अन्यकेपास चलीजाय तो बताइये मैं इसबातको कैसे सहसकूं उसके यहकहनेपर अशोकमाला व्याकुलहोकर बोली कि हे लोकपालो कहो क्या आप लोगोंकी साक्षी में मेरी इच्छाके विनाही इसने मेरे साथ विवाहनहीं कियाहै और क्या मैंने उससमय नहीं कहदियाथा कि मैं तुम्हारे यहां नहीं रहूंगी उसके इसप्रकार कहनेपर यह आकाश वाणीहुई कि अशोकमाला का कहना बहुत ठीकहै यह मानुषी नहीं है इसका तत्त्व सुनो अशोककर नाम एकवीर विद्याधरों का राजा है उसके कोई पुत्र न था एक अशोकमाला नाम कन्याही बहुत कालमें उत्पन्न हुईथी वह अशोकमाला तरुण अवस्था को पाकर रूपके अभिमानसे अपने पिताके बतायेहुए किसी पतिको न स्वीकारकरके विवाहसे विमुखरही उसके इस अभिमानको देखकर उसके पिता अशोककर ने क्रोधितहोके उसे यह शापदिया कि तू मनुष्य योनिमें इसीनामसे उत्पन्नहोगी वहां एक अत्यन्तकुरूप ब्राह्मण हठसे तेरेसाथ विवाहकरेगा और तू उसे त्यागकर उसीके भयसे तीनपतिकरेगी इतने पर भी जब वह नहीं निवृत्तहोगा तो किसी बलवान् राजपुत्र की दासीहोगी वहां भी वह ब्राह्मण तुझे मारनेकेलिये दौड़ेगा और तू भयभीतहोकर राजाके गृह

में चली जायगी वहां जातेही तेरा शापछूटजायगा इसप्रकार शाप पाकर अपनेही नामसे यह मानुषी हुई है इससमय इसके शापका अन्तहोगया अब यह विद्याधरों के स्थानमें जाके अपने शरीर मे प्रवेश करके शापके भयसे अपने पिताके बतायेहुए विद्याधरों के स्वामी अभिरुचितकेसाथ विवाहकरेगी यह कहकर आकाश वाणी निवृत्तहोगई और वह अशोकमाला उसीसमय निर्जीवहोकर पृथ्वी में गिरपड़ी यहदेखकर अलंकारवती तथा नरवाहनदत्त अत्यन्तचकित तथा खिन्नहुए और वह हठशर्मा दुःखसे क्रोध रहितहोके अत्यन्त विलाप करते २ अकस्मात् प्रसन्नसाहोगया यह देखकर सबने उससे पूछा कि तुम्हारी प्रसन्नता का क्या कारण है तब वह बोला कि मुझे अपने पूर्व्वजन्मका स्मरण आगया है सो मै आप को सुनाताहूं हिमालय पर्व्वतपर मदनपुर नाम नगर मे प्रलम्बभुजनाम विद्याधरो का राजा है उसके स्थूलभुजनाम पुत्रहुआ वह क्रमसे युवावस्था में प्राप्तहोकर अत्यन्त रूपवान् तथा गुणवान् हुआ तब विद्याधरों के स्वामी सुरभिवत्सनाम विद्याधरने अपनी सुरभिदत्ता नाम कन्यासमेत प्रलम्बभुजके पास आकर कहा कि मै अपनी यह सुरभिदत्ता नाम कन्या आपकेपुत्र स्थूलभुजको देना चाहताहूं क्योंकि वह बड़ा गुणवान्है सुरभिवत्सके यहवचन प्रलम्बभुजने स्वीकारकरलिये और अपने पुत्र स्थूलभुजको बुलाकर यहसब वृत्तान्तकहा यहसुनकर रूपके अभिमानसे स्थूलभुजबोला कि यहसुरभिदत्ता अत्यन्त रूपवती नहीं है इसहेतुसे मैं उसकेसाथ विवाह न करूंगा तब प्रलम्बभुजने कहा कि हे पुत्र अत्यन्त रूप सेक्याहै देखो यह महाश्रेष्ठवंशमें उत्पन्नहुई है और इसके पिताके कहनेसे मैं इसको स्वीकार भी करचुका हूं इससे तुम मेरा कहना मानकर इसे अंगीकार करो उसके इसप्रकार कहनेपर भी जब स्थूलभुज ने नहीं माना तब उसके पिताने क्रोधकरके उसको यहशापदिया कि तू अपनेरूपके अभिमानसे मनुष्य लोकमें उत्पन्न होगा वहां तू अत्यन्त कुरूप भयंकर चेष्टावालाहोगा और शापसे च्युतहुई अशोकमाला नाम स्त्रीको हठसे पाकर अत्यन्त विरहके क्लेशको प्राप्तहोगा क्योंकि वह तुझे छोड़कर अन्य पुरुषों के साथ विषय करेगी और उसीके लिये तू अत्यन्त दुखी तथा दुर्बलहोकर अग्निदाहादिक अनेकपापों को करेगा इसप्रकार शापदेके चुपहुए प्रलम्बभुजसे साध्वी सुरभिदत्ताने विनतीकरके कहा कि मुझे भी आप शाप दीजिये जिससे मेरे अपराधसे केवल इसीको क्लेश न होय मैं भी इसके साथमे क्लेश भोगूं उसके यह वचन सुनके प्रलम्बभुजने प्रसन्नहोके अपने पुत्रके शापका यहअन्त बताया कि जब अशोकमाला अपने शापसे छूटेगी उसीसमय यहभी अपने पूर्व्वजन्मका स्मरणकरके शापसे छूटजायगा और अपने विद्याधर शरीरको पाके अहंकार रहितहोकर तुम्हारे साथ विवाहकरके सुखको प्राप्तहोगा प्रलम्बभुजके यहवचन सुनकर साध्वीसुरभिदत्ता किसीप्रकारसे धैर्य्यको प्राप्तहुई और शापसे भ्रष्टहुआ वहस्थूलदत्त मैंहीहूं मैंने अहंकारके दोषसे बड़ादुःख पाया है राजा अहंकारी पुरुषोंका कभी कल्याण नहीहोता अब आपकी कृपासे मेरा शापछूटगया यहकहकर हठशर्म्मा मनुष्य शरीरको छोड़कर विद्याधरहोगया और अपने तथा अशोकमालाके शरीरको गंगाजीमें फेंककर विद्याके प्रभावसे प्राप्तहुए जलसे अलंकारवती के गृहको धोकर और अपने भावीचक्रवर्ती नरवाहनदत्तको प्रणामकरके आकाशमार्ग से अपने पुरको

चलागया ६०इसके उपरान्त आश्चर्य्यको प्राप्तहुए उनसबलोगोंके आगे गोमुख असंगपाकर यहकथा कहनेलगा कि सम्पूर्ण संसारमें विख्यात शूरपुरनाम नगरमें महावराहनाम राजाथा उसके पार्वतीजी के आराधनसे पद्मरतिनाम रानीमें अनंगरतिनाम एककन्या उत्पन्नहुई धीरे २ युवावस्थाको प्राप्तहुई अनंगरतिने रूपके अभिमान से बहुतसे राजालोगों के प्रार्थनाकरनेपर भी अपना विवाहनहीं किया और कहा कि जो अत्यन्त रूपवान् शूरपुरुष किसी एक विज्ञानको भलीभांति जानताहोगा उसके साथ में विवाहकरूंगी कुछकाल में उसकी इस प्रसिद्धिको सुनकर दक्षिणदिशा से बड़े गुणवान् चार वीर पुरुष वहांआये द्वारपालों से उनका आगमनसुनकर राजा महावराह ने उनको भीतरबुलवाकर अनंगरति के आगे उनसे पूछा कि तुमलोगों में किसका क्या नाम है क्या जाति है और क्या अपूर्वगुण है यह सुनकर उनमें से एक बोला कि मैं पंचपट्टिकनाम शूद्रहूं प्रतिदिन पांचजोड़े वस्त्रों के मैं बुनताहूं उनमें से एक ब्राह्मण को देताहूं दूसरा परमेश्वरके अर्पणकरताहूं तीसरा आप पहनताहूं चौथा जिस किसी स्त्री के साथ मेरा विवाहहोगा उसकेलिये रखताहूं और पांचवेंको बेचकर अपने शरीरका पोषणादिकरताहूं फिर दूसरा पुरुषबोला कि मैं भाषाज्ञनाम वैश्यहूं मुझे सम्पूर्ण पशु तथा पक्षियों के शब्द समझपड़ते हैं तीसरे ने कहा मैं खड्गधरनाम क्षत्रीहूं मैं केवल खड्गहीसे युद्धकरके अपने शत्रुओंको जीतताहूं फिर चौथे ने कहा कि मैं जीवदत्तनाम ब्राह्मणहूं मैं श्रीपार्वतीजीकी कृपासे प्राप्तहुई विद्याके द्वारा मरीहुई स्त्री को जिलाताहूं इसप्रकार कहकर उनचारों में से शूद्र वैश्य तथा क्षत्री ने अपने २ रूप बल तथा वीर्य्यकी प्रशंसाकी और ब्राह्मण ने केवल रूपके सिवाय बल तथा वीर्य्यहीकी प्रशंसाकी उनके वचनोंको सुनकर राजा ने अपने सारथी से कहा कि इन सबको तुम अपने घर में लेजाकररक्खो राजा की आज्ञापाकर सारथी उन चारोंको अपने घरलेगया तदनन्तर राजा ने अनंगरति से कहा कि हे पुत्री इनचारों वीरों में से तुम्हारी रुचि किसपर है उसने कहा हे तात इनचारों में से किसीपर भी मेरी रुचि नहीं है एक जो शूद्रहै वह जुलाहा है उसके गुणों से मुझे क्या दूसरावैश्यहै वह पशु पक्षियोंकी बोली जानताहै उसके भी गुणों से मुझे क्या प्रयोजनहै इन दोनों के साथ में क्षत्रियाहोकर कैसे विवाहकरूं तीसरा मेरे तुल्य वर्णवाला गुणवान् क्षत्री है परन्तु दरिद्रके कारण प्राणों का विक्रयकरके सेवाकी वृत्तिकरताहै मैं राजकन्याहोकर उसके साथ अपना विवाह कैसेकरूं और चौथा जीवदत्त ब्राह्मण भी मेरे योग्यनहीं है क्योंकि वह कुरूपहै और वेदोंको छोड़कर अपने कर्मों से पतितहोगयाहै उसे तो आपको दण्ड देना चाहिये क्योंकि आप वर्ण तथा आश्रमों के रक्षकहैं हे तात खड्गशूर राजासे धर्मशूर राजा अधिक प्रशंसनीयहोताहै क्योंकि हजारों खड्गशूरों का एक धर्मशूर स्वामीहोताहै अपनी पुत्री के यह वचन सुनकर राजा महावराह उसे अन्तःपुरमें भेजवाकर अपने नित्यकर्म्म करनेको चलागया दूसरे दिन वह चारों वीर सारथी के घरसे निकलकर नगरके भ्रमण करनेको निकले उससमय पद्मकमल नाम मतवाला हाथी गजशालासे जंजीरको तुड़ाकर लोगोंको मारताहुआ इन चारों वीरों के पास आया और इनको देखकर इनपरदोड़ा यह चारों भी अपने२शस्त्रलेकर उसके साम्हनेहुए तब खड्गधर नाम क्षत्रीने

उन तीनों अपने साथियोंको रोककर अकेलेही ने हाथी के पास जाकर खड्गके एकही प्रहारसे उस गरजतेहुए हाथीकी सूंड कमलकी डण्डी के समान काटडाली और शीघ्रतासे हाथी के पैरों के भीतर जाके उछलके एकप्रहार उसकी पीठमें देकर दूसरे प्रहारसे उसके पिछले पैर काटडाले तव वह हाथी चिंघाड़मारकर गिरकर मरगया खड्गधर के इस पराक्रमको देखकर सवलोग अत्यन्त आश्चर्य्यित हुए और इसवृत्तान्तको सुनकर राजा महावराह भी वहुत विस्मित हुआ १२४ दूसरे दिन राजा महावराह हाथीपर चढकर शिकार खेलनेको गया और खड्गधरादिक चारों वीर उसके साथगये वहां व्याघ्रोंको मृगो को तथा अन्य पशुओं को राजा के मारनेपर हाथियों के शब्द सुनके क्रोधित सिंह गुफाओं में से निकलके दौड़े उन आतेहुए सिंहों में से खड्गधर ने एक सिंहको एकही खड्गके प्रहारसे मारडाला दूसरेको वाये हाथसे पैर पकड़कर पृथ्वीमें पटककर मारडाला और भाषाज्ञ जीवदत्त तथा पंचपट्टिकने भी एक २ सिंहको पृथ्वी में पटक२ करमारा इसप्रकारसे उनचारों वीरो ने राजाके आगे वहुतसे सिंह व्याघ्रादिकजीव मारे तव राजा अत्यन्त आश्चर्य्ययुक्त होकर शिकार खेलके अपने पुरमें आया और वहचारों वीरभी उसके साथ लौट आकर सारथीके घरचलेगये फिर राजाने उसीसमय अन्तःपुरमें जाकर अनंगरतिको वुलवाके उनवीरोंका जो २ पराक्रम देखाथा वह सव उसके आगे वर्णनकिया और कहा कि पंचपट्टिक तथा भाषाज्ञ यहदोनो तो वर्णहीनहै और जीवदत्त ब्राह्मण रूपहीन तथा पतितहै परन्तु अत्यन्त रूपवान् और महापराक्रमी उसखड्गधरमें तो कोई दोपनहीं है जिसने ऐसे पराक्रमी हाथीको मारडाला और सिंहोको खड्गसे तथा पृथ्वी में वायें हाथसेही पटक २ करमारा ऐसे पराक्रमीको क्यों नहीं स्वीकार करतीहो और जोकहो कि वह दरिद्री तथा सेवकहै तो में उसेवहुतसे ग्राम तथा धनदेकर अपनेही समान करलूंगा इससे जोतुम्हारी रुचिहोय तो उसके साथ अवश्य विवाहकरो अपने पिताके यहवचन सुनकर अनंगरतिने कहा कि आप उनचारों वीरोंको वुलाकर ज्योतिपीसे पूंछिये कि किस के साथ मेरा योगहै उसके यहवचन सुनकर राजाने उनचारोंवीरोंको तथा ज्योतिपीको वहीं वुलाकर ज्योतिपीसे पूंछा कि आप विचारिये कि इनचारो मे से किसके साथ इसअनंगरतिकी विधि मिलतीहै और इसके विवाहकी लग्न कव शुद्धहोती है ज्योतिपी ने उनचारों के जन्म नक्षत्र पूंछकर वहुतकाल तक विचारके कहा कि हे राजा मेरे ऊपर क्रोध न करियेगा में विचारकर यथार्थ कहताहूं इनचारो में से किसी के साथभी अनंगरतिकी विधि नहीं मिलती हे और इसका यहां विवाहभी नही होगा क्योंकि यहशापसे भ्रष्टहुई विद्याधरी है तीन महीने के वाद इसका शाप निवृत्त होजायगा इससे तीन महीने तक इनचारों वीरोंको यहीं रखिये तीनमहीने के पीछे जो यह अपने लोकको न चलीजाय तो इसका विवाह कर दीजियेगा ज्योतिपी के इनवचनोंपर सवने विश्वास किया और वह चारोंवीर उसी सारथी के घरमें तीनमहीनेतक रहे तीनमहीने के व्यतीतहोजानेपर राजा उस ज्योतिपी को तथा चारों वीरों को अनंगरति के स्थान में वुलाकर और अकस्मात् उसको अधिक रूपवती देखकर वहुत प्रसन्न हुआ और ज्योतिपी जानगया कि इसके परलोक जाने का समय आगया फिर राजा ने ज्योतिपी से

पूंछा कि तीन महीने तो व्यतीत होगये अब क्या करना चाहिये इसबात के कहतेही अनंगरति ने अपने पूर्व्व जन्म का स्मरण करके डुपट्टे से अपना मुख ढककर मानुषी शरीर त्याग दिया १५० तब राजाने यह इसप्रकारसे क्यो बैठी है ऐसाशोचकर जो उसकामुखखोला तो जाना कि यहमरगई है पाले से मारीहुई कमलनी के समान उसके कान्तिरहित मुखारविन्दको देखकर राजा अत्यन्तशोकसे व्याकुलतापूर्व्वक मूर्च्छितहोके पृथ्वीपर गिरपड़ा और दुःखसे व्याकुल रानी पद्मरति भी मूर्च्छितहोके हाथीकी तोड़ीहुई लताके समान पृथ्वीपर गिरपड़ी और सम्पूर्ण परिजन रोदनकरनेलगे क्षणभरमेंही मूर्च्छा जगनेपर राजाने जीवदत्तसे कहा कि इससमय किसी दूसरेकी सामर्थ्य नहीं है तुम्हाराही अवसर है क्योंकि तुमने प्रतिज्ञाकीथी कि हममरीहुई स्त्रीको जिलातेहैं इससे जो तुममें कुछ विद्याका बलहोय तो तुम मेरी कन्याको जिलाओ इसके जीनेपर मैं तुम्हारे साथ इसका विवाहकरदूंगा राजाके यहवचन सुनकर जीवदत्तने जलका अभिमन्त्रण करके राजपुत्रीपर फेंका और कहा हे अट्टाट्टहाससे हँसनेवाली हे मनुष्योंके शिरोंकी मालापहरनेवाली हे चामुण्डे हे विकराले शीघ्रही आकर मेरी सहायताकरो इस प्रकार यत्नकरनेपरभी जब वहकन्या नहींउठी तब जीवदत्तने व्याकुलहोकर कहा कि विन्ध्यवासिनीकी दीहुईभी विद्या आज व्यर्थहोगई अब इसहास्यके योग्य मेरे जीवनसे क्या प्रयोजनहै यहकहकर जैसेही उसने अपना शिरकाटनाचाहा वैसेही यहआकाशवाणीहुई कि हेजीवदत्त साहस न करो यह अनंगप्रभा विद्याधरों की कन्या है माता पिताके शापसे भ्रष्टहोकर इतने दिन मनुष्यरही अब वह अपनेहीं लोकको चलीगईहै इससे तुम जाकर विन्ध्यवासिनीकाही आराधनकरो उन्हींकी कृपासे यह विद्याधरी भी तुमको मिलजायगी और इसके लिये राजाकोभी शोकनहीं करनाचाहिये क्योंकि वहदिव्य ऐश्वर्योंको भोगकररहीहै इसआकाशवाणीको सुनकर राजाने अपनी कन्याके शरीरका संस्कारकरके शोक का त्यागकरदिया और चारोंवीरोंमें से तीन तो अपने२ स्थानको चलेगये परन्तु जीवदत्त विन्ध्याचल पर जाकर तपस्यासे भगवतीका आराधन करनेलगा कुछदिनमें तपसे प्रसन्नहुई भगवती ने जीवदत्त से स्वप्नमें कहा कि हे जीवदत्त उठो तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्नहूं सुनो हिमालय पर्व्वतपर वीरपुरनाम एक नगरहै वहां विद्याधरों का समरनाम राजाहै उसके अनंगवती नाम रानी में अनंगप्रभानाम कन्या उत्पन्न हुई उसकन्या ने युवावस्था में प्राप्तहोकर अपने रूप तथा यौवन के अभिमानसे किसीपति को ग्रहण नही किया इसीसे उसके मातापिताने क्रोधसे उसको यहशापदिया कि तू मनुष्य जन्ममें उत्पन्नहोगी और वहांभी पतिके सुखको न पाकर सोलहवर्षकी अवस्थामें मानुषीशरीरको त्यागकरके यहां आजायगी और यहां आकर एक खड्गसे सिद्ध हुआ कुरूपपुरुष जो कि मुनिकन्याओं के अभिलाप से शापपाकर मनुष्यहुआहै वह तेरापतिहोगा और तुझे हठपूर्वक मनुष्यलोकमें लेजायगा वहां तुझे कोई हरलेजायगा इससे उसके साथ से तेरा वियोगहोगा उस पुरुषने पूर्वजन्म में आठ पराई स्त्रियां हरी हैं इससे आठजन्मके योग्य दुःखों को भोगकरेगा और तूभी अपनी विद्याओंको भूलकर मानुषी होकर एकही जन्ममें आठ जन्मों के समान दुःखों को भोगेगी ठीकहै (सत्रस्यैवहिपापिष्ठसम्पर्क:पाप

भागदःसमपापःपुनस्त्रीणां भर्त्रापापेनसंगमः)(पापियोंके संपर्कसे सबको कुछ२ पापका भाग मिलताहै और स्त्रियोंको तो पापीपतिके संगमसे समानही पाप होताहै) और अपने विद्याधरपनेको भूल कर बहुतसे मनुष्यों को अपने पति करेगी क्योंकि तैंने यहां हठकरके उचित वरसे द्वेष कियाहै अन्तमें जिस मदनप्रभनाम विद्याधरने तेरे लिये प्रार्थनाकी थी वही राजाहोकर तेरापति होगा तब तू शाप से छूटकर अपने लोकमें आके उसी मदनप्रभ विद्याधरको अपनापति करेगी इसप्रकार अपने पितासे शापित हुई अनंगप्रभा पृथ्वी में अनंगरति नामसे उत्पन्न होकर अपने माता पिताके निकटगई इससे तुम वीरपुरमें जाकर उसके पिताको जीतके उसे लो और यह खड्गलो इसके प्रभावसे तुम्हारीआकाशमें गति होजायगी और तुमको कोई जीत न सकेगा यह कहके और खड्गको देके भगवती अन्तर्द्धान होगई और वह जगकर अपने हाथमें खड्ग देखकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ और भगवतीकी कृपा से तपके क्लेशोंसे रहितहोकर हाथमें खड्गलेकर आकाशमार्गमें जाके हिमालयपर्वतपर वीरपुरनामनगर में समरनाम विद्याधरके पास पहुँचा और उसको युद्धमें जीत अनंगप्रभा के साथ अपना विवाह करके दिव्यसुखका भोग करनेलगा कुछ कालके पीछे जीवदत्तने अपने श्वशुर समरसे तथा अपनी प्रिया अनंगप्रभासे कहा कि अब मनुष्यलोकमें मेरी जानेकी इच्छा होतीहै क्योंकि (प्राणिनांहिनिकृष्टापिजन्मभूमिःपराप्रिया) प्राणियों को अपनी निकृष्टभी जन्मभूमि अत्यन्तप्यारी होती है उसके यह वचन उसके श्वशुर समरने तो स्वीकार करलिये परन्तु अनंगप्रभा बहुत हठकरनेपर मनुष्यलोक में आनेको उद्यतहुई क्योंकि वह अपने शापको जानतीथी तब जीवदत्त अनंगप्रभाको गोदमें लेकरआकाशमार्ग से मृत्युलोकमें आया वहां एक मनोहर पर्वत देखके अनंगप्रभाने जीवदत्तसे कहा कि क्षण भर यहां विश्रामकरो अनंगप्रभाके कहनेसे वह वहीं उतरपड़ा और अनंगप्रभाकी विद्याओं के प्रभाव से प्राप्तहुए दिव्य पदार्थोंको भोजन करके बोला कि हे प्रिये कोई मधुरगीतगाओ उसके कहनेसे अनंगप्रभा भक्तिसे श्रीशिवजीके भजन गानेलगी गीतोंको सुनते २ उसे निद्राआगई इसबीचमें शिकार से थकाहुआ झिरनेके जलको पीनेकी इच्छासे राजाहरिवर उसी मार्ग होकर निकला वह अनंगप्रभा के मनोहर गीतको सुनकर हरिणके समान मोहितहोकर रथको छोड़कर उसके पास आया और कामदेवकी प्रभाके समान अनंगप्रभाको देखकर कामके बाणोंसे उसका हृदय अत्यन्त जर्जरहोगया और उसे देखकर अनंगप्रभाभी कामके वशहोके शोचनेलगी कि क्या यह अपने पुष्पों के धनुषको छोड़ कर साक्षात् कामदेवही आयाहै अथवा गीतसे प्रसन्नहुए श्रीशिवजीका मूर्त्तिमान् अनुग्रह है इसप्रकार शोचकर उसने राजासे पूछा कि तुम कौनहो और इस वनमें क्यों आयेहो यह सुनकर राजाने अपने आगमनका कारण तथा अपना सब वृत्तान्त कहकर पूछा कि हेसुन्दरि तुम कौनहो और यह जो सो रहाहै सो तुम्हारा कौनहै उसके यह वचन सुनकर अनंगप्रभा बोली कि मैं विद्याधरीहूं और यहखड्ग के प्रभावसे सिद्धहुआ मेरा पतिहै अब तुम्हारे देखनेसे मुझे तुमपर अत्यन्त अनुराग होगया है इससे तुम शीघ्रही मुझे अपने नगरको लेचलो जब तक कि यह जगने न पावे उसके यह वचन सुनकर

राजा हरिवरको त्रैलोक्यके राज्य मिलनेकीसी प्रसन्नता हुई उससमय अनंगप्रभाने चाहा कि मैं राजा को गोदीमें लेकर आकाशमें उड़जाऊं परन्तु वह पतिके द्रोहसे अपनी संपूर्ण विद्या भूलगई और अपने पिताके शापका स्मरणकरके बड़ी खेदितहुई उसे खिन्नदेखकर और खिन्नताका कारण पूछकरराजा ने कहा कि यह विषादका समय नहींहै देर न करो नहीं तो तुम्हारापति जगउठेगा और यह भाग्याधीन बातहै इसके लिये शोककरना व्यर्थ है (कोहिस्वशिरसश्छायां विधेश्चोल्लंघयेद्गतिम्) कौन मनुष्य अपने शिरकी छाया तथा ब्रह्माके लिखेको उल्लंघन करसक्ता है इससे शीघ्रही चलो यह कहकर राजा हरिवर अनंगप्रभाको गोदमें लेकर निधिपाकर प्रसन्नहुये के समान शीघ्रता से अपनी सेना के निकटआके रथपरचढ़ा और बहुतशीघ्र अनंगप्रभाको लेकर अपने नगरमें आके अनंगप्रभाकेसाथ दिव्य सुखोंका अनुभव करनेलगा और वह अनंगप्रभा भी अपने संपूर्ण प्रभावको भूलकर राजाहरिवरसे स्नेह करतीहुई वहीं रही २१६ इसबीच में जीवदत्तभी उसपर्वतपर जगकर अनंगप्रभाको तथा खड्गको न देखकर शोचने लगा कि अनंगप्रभा कहांगई और खड्ग कहां गया क्या अनंगप्रभा तो खड्गको लेकर नहीं चलीगई अथवा उनदोनों कोही कोई हरलेगया इस प्रकार बहुतसे तर्क वितर्क करताहुआ और कामाग्निसे व्याकुल जीवदत्त तीनदिनतक उसपर्वतपर और पर्वतपरसे उतरकर दश दिनतक वनोंमें अनंगप्रभाको ढूंढ़तारहा परन्तु उसका कहींभी पता नहीं लगा तब हायदुर्जन दुष्टभाग्य तूने बड़े क्लेशसे मिलीहुई उस प्रियाको खड्ग समेत हरलिया इस प्रकार विलाप करताहुआ निराहार जीवदत्त भ्रमण करते २ एक ग्राम में किसी धनवान् ब्राह्मण के घरपर पहुँचा वहां उस घरकी स्वामिनी प्रियदत्तानाम ब्राह्मणीने उसे आसनपर बैठालकर अपनी चेरियोंसे कहा कि शीघ्रही जीवदत्तके पैरधोओ आज इसे विरहसे तेरहदिन निराहार करते २ व्यतीत हुए हैं यह सुनकर जीवदत्त ने आश्चर्य्यपूर्वक शोचा क्या यहां अनंगप्रभा आई है अथवा क्या यह योगिनी है इसप्रकार शोचकर अपने पैर धुलवाकर और उसके दियेहुए दिव्यपदार्थों को भोजन करके नम्रतापूर्वक उस प्रियदत्ता से बोला कि बताओ तुम हमारा वृत्तान्त कैसे जानतीहो और हमारीप्रिया तथा खड्ग कहांगया यह सुनकर पतिव्रता प्रियदत्ता बोली कि पतिके सिवाय स्वप्नमे भी किसी अन्यपुरुषपर मेरा चित्त चलायमान नहीं होता है अन्य पुरुषों को मैं अपने पुत्र तथा भाइयों के समान देखतीहूं और मेरे घरसे कभी अतिथि विमुख नहीं जाताहै इसीपुण्यके प्रतापसे मैं भूत भविष्य और वर्त्तमान इनतीनों कालों की बात जानतीहूं जब तुम सोगयेथे तब उसीमार्ग्ग से आया हुआ हरिवरपुर का रहनेवाला राजा हरिवर अनंगप्रभाके गीतको सुनकर उसके पास आया और उसे अपने रथपर चढ़ाकर अपने पुरको लेगया अब तुम उसे नहीं पासक्तेहो क्योंकि राजा हरिवर महाबलवान् है और वहकुलटा उसे भी छोड़कर किसी अन्य पुरुषके पास चलीजायगी और वहखड्ग तुमको भगवती ने केवल अनंगप्रभा की प्राप्तिके लियेही दियाथा वह अपना कार्य्य करके भगवती के पासही चलागया भगवती ने अनंगप्रभाके शापके वर्णनके समय स्वप्नमें जो तुमसे भावीबातें कहींथीं वह तुम क्यों भूल गये

इस अवश्य भवितव्य कार्य्य में तुम क्यों मोहकरतेहो हे भाई इसअत्यन्त दुःखदायी पापी कामदेव को त्यागो अब तुम्हें उसपापिन व्यभिचारिणी स्त्रीसे क्या प्रयोजनहै तुम्हारे द्रोहसे वह अपनी सम्पूर्ण विद्या भूलकर मानुषीहोगईहै उसके यहवचन सुनकर जीवदत्त अनंगप्रभाकी आशाको छोड़कर और उसकी चपलता जानके अत्यन्त विरक्तहोकर बोला कि हे अम्ब तुम्हारे इनसत्यवचनों से मेरा मोह शान्तहोगया ठीकहै (कामंनश्रेयसेकस्यसंगमःपुण्यकर्मभिः) पुण्यात्माओंकी संगति से किसका कल्याण नहींहोताहै पूर्वजन्मके पापों के वशसे मुझे यहदुःख भोगनापड़ा है इससे उनपापों के दूर करनेके लिये मैं तीर्थोंपर भ्रमणकरूंगा अब मुझे अनंगप्रभाके निमित्त दूसरों से वैरकरनेका क्या प्रयोजन है क्योंकि (जितक्रोधेनसर्वंहिजगदेतद्विजीयते) जिसमनुष्यने क्रोधको जीताहै उसने सब संसारको जीताहै उसके इसप्रकार कहतेही प्रियदत्ताका धर्मात्मा अतिथिवत्सल प्रियपतिभी आगया उसने भी जीवदत्तका अतिथि सत्कारकरके उसे बहुत समझाया तब जीवदत्त एकदिन वहां विश्राम करके उनदोनों से आज्ञालेकर तीर्थयात्राकरनेकोचला और क्रमसे मार्ग के अनेक कष्टोंको सहताहुआ कन्दमूलफलोंका भोजनकरताहुआ पृथ्वी के सम्पूर्ण तीर्थोंपर भ्रमणकरके विन्ध्यवासिनीजी के मंदिरमें गया और वहां कुशासनपर बैठकर निराहारहोके महाघोर तप करनेलगा तप से प्रसन्नहुई भगवती ने साक्षात् आकर उससे कहा कि हे पुत्र उठो पंचमूल, चतुर्वक्र, महोदर, तथा विकटवदन यह चारों एकसे एक उत्तम मेरे गणहैं इनमेंसे चौथे विकटवदन नाम तुमहो एकसमय तुम चारों विहारकरनेको गङ्गाजी के तटपरगये और वहां कपिलजट नाम मुनिकी चापलेखा नाम कन्या को स्नानकरते देखके कामसे पीड़ितहोके उससे संभोगकी प्रार्थनाकरनेलगे तब उसने कहा कि मैं कन्याहूं मुझ से ऐसा मतकहो उसके ऐसा कहनेपर तुम्हारे तीनों साथी तो मौनहोगये परन्तु तुमने हठकरके उसकी भुजापकड़लीनी तब वह हे तात मुझे बचाओ मुझे बचाओ ऐसा कहकर चिल्लानेलगी उसके शब्दको सुनकर कहीं निकटही तपकरतेहुए कपिलजटमुनि आगये उन्हें देखकर तुमने उस कन्याको छोड़दिया और मुनिने कुपितहोके तुमलोगोंको यह शापदिया कि हे पापियो तुम चारों, मनुष्ययोनि में उत्पन्नहोगे फिर तुम लोगोंके प्रार्थनाकरनेपर मुनि ने यह शापका अन्तबताया कि जब राजपुत्री अनंगप्रभा के लिये तुम लोग उद्योगकरोगे और वह अपने विद्याधरलोक को चलीजायगी तब इन तीनों का उद्धारहोजायगा परन्तु हे विकटवदन तुम उस अनंगप्रभा को विद्याधरीहोनेपर भी पाकर किसी राजा के द्वारा उसके हर लियेजानेपर विरहसे व्याकुलहोके अत्यन्त खेदको प्राप्तहोगे और बहुतकालतक श्रीभगवतीका आराधनकरके इस शापसे छूटोगे क्योंकि तुमने इस चापलेखाका हाथपकड़लियाहै और अन्यपरस्त्रियों के हरनेका भी तुम्हारा बहुतसा पापहै इसप्रकार उस मुनि से शापदियेगये तुम चारों पंचपट्टिक, भाषाज्ञ, खड्गधर और जीवदत्तनामसे उत्पन्नहुए वहतीनों तो जब अनंगरति अपने स्थानको गईथी तब यहां आकर मेरी कृपा से उस शाप से उद्धारहोगये और तुमने अब मेरी आराधनाकी है इससे तुम्हारे भी शापका अन्तहोगया अब अग्निसम्बन्धिनीधारणाको ग्रहणकरके अपने शरीरको त्यागकरो और आठ

जन्म के भोगने के योग्य दुःखोंको शीघ्रही भस्मकरो यह कहकर और धारणा बताकर भगवती अन्तःर्द्धानहोगई २६० भगवती से उस धारणाकोपाकर अपने पापोंसमेत शरीर को भस्मकरके जीवदत्त शाप से छूटकर फिर भगवतीका गणहोगया परस्त्री संगमसे उत्पन्नहुए पातक से जब देवताओंकी भी यह दशाहै तो अन्य प्राणियोंकी क्या गतिहोगी इस बीचमें वह अनंगप्रभा हरिवरपुर में राजा हरिवरकी सम्पूर्ण रानियों में मुख्य रानीहोगई और राजा हरिवर अपने सुमन्तनाम मंत्री को सब राज्यभार सौंप कर रात्रि दिन अनंगप्रभा के साथरहनेलगा एकसमय मध्यदेश से लब्धवरनाम नाट्याचार्य्य राजा हरिवरके पासआया राजा ने उसकी चतुरतादेखकर उसको अपनी रानियो का नाट्याचार्य्यबनादिया उसने अनंगप्रभाको ऐसा उत्तम नृत्यसिखाया जिसे देखकर उसकी सब सपत्नी ईर्ष्याकरतींथीं कुछ दिनो में अनंगप्रभा साथ रहते २ उस नाट्याचार्य्यपर स्नेहकरनेलगी और वह नाट्याचार्य्य भी उसके रूप तथा नृत्यसे ऐसा वशीभूतहुआ कि कामदेव उसके चित्तको नचानेलगा एकसमय नृत्यशाला के एकान्त स्थान में अनंगप्रभा ने नाट्याचार्य्य को अपने नृत्य से वशीभूतकरके उसके साथ रमणकिया और रति के अन्त में उससे कहा कि तुम्हारे विना मैं क्षणभर भी न रहसकूंगी परन्तु राजा हरिवर जो यह जानजायगा तो मुझे और तुम्हें दोनोको दण्डदेगा इससे जहां राजा न जानसके ऐसे स्थान में चलो तुम्हारेपास राजाका दियाहुआ बहुतसा धन है और मेरे पास भी बहुतसे आभूषणहैं इन सबको राजा के दियेहुए घोड़े तथा ऊंटोंपरलादके यहां से निकलचलो जिससे निर्भयहोकररहें उसके यह वचन नाट्याचार्य्य ने प्रसन्नहोकर स्वीकारकरलिये तब अनंगप्रभा पुरुषका भेषबनाकर अपनी एकचेरी के साथ नाट्याचार्य्य के घरकोगई वहां नाट्याचार्य्य अपने सम्पूर्ण धनको तथा अनंगप्रभा के सब आभूषणोंको ऊंटोंपरलादकर और अनंगप्रभा को घोड़ेपर सवारकराके वहां से चला (देखो विद्याधरोंकी लक्ष्मी को छोड़के अनंगप्रभा राज्यलक्ष्मीको प्राप्तहुई और उसका भी त्यागकरके नाट्याचार्य्यके साथगई स्त्रियोंके चपलमनको धिक्कार है) और वहां से बहुत दूर जाकर वियोगपुर नाम नगर में पहुँचकर अनंगप्रभा के साथ सुखपूर्व्वकरहा और अपने लब्धवर नाम को यथार्थहुवा मानके अत्यन्त प्रसन्नहुआ इस बीच में राजा हरिवर अनंगप्रभा को कहींचलीगई जानकर देहत्यागकरने को उद्यतहुआ तब सुमन्तनाम मंत्रीने उससे कहा कि हे राजा आप विचार तो कीजिये कि जिस स्त्री ने खड्गसिद्धपति को छोड़कर आप से अनुरागकिया उसका आपपर भी स्नेह कैसे दृढ़होसक्ता है मैं जानताहूं कि वह किसी तुच्छ पुरुषके साथ चलीगईहोगी क्योंकि उसको उत्तम अधम का कोई विवेकनहीं है आज वह नाट्याचार्य्य भी नहीं दिखाई देता है कदाचित् वही उसको हरलेगयाहोगा और मैंने सुनाभी है कि प्रातःकाल वहदोनों संगीतगृहमें गयेथे इसमें हे राजा उसके लिये आप जानबूझकर भी इतनाशोक क्यों करतेहो संध्याके समान दुष्ट स्त्रियां क्षणभर अनुराग युक्त रहतीहैं मन्त्रीके यहवचन सुनकर और सत्य जानकर राजाने सोचा कि(पर्य्यन्तविरसाकष्टाप्रतिक्षणविवर्त्तिनी। भवस्थितिरिवानित्यसम्बन्धाहिविलासिनी) (पतितं मज्जयन्तीषुदर्शितोत्कलिकासुच। प्राज्ञःपतत्यगाधासु नदीषुचनदीषुच॥ व्यसनेषुनिरुद्वेगा विभवेस-

प्यगर्विताः। कार्य्येष्वकातरायेचतेधीरास्तैर्जितंजगत्). अन्तमें विरसकष्ट देनेवाली क्षण २मे वदलनेवाली और नित्यसम्बन्ध नही रखनेवाली संसारकी स्थितिके समान स्त्रियां भी होती हैं पतितको डुवानेवाली और उत्कण्ठाको प्रकट करनेवाली स्त्रियोंसे तथा नदियो से बुद्धिमान् पुरुष सदैव वचता है व्यसनों में नहीं घवरानेवाले ऐश्वर्य्यमें अभिमान नही करनेवाले और समयमें नही भयभीत होनेवाले धीर पुरुष सम्पूर्ण संसारको जीततेहैं यहशोचकर राजा हरिवरने अपनीही रानियोंमें सन्तोषकिया और वहअनंगप्रभा उस वियोगपुरनाम नगरमें कुछकालतक उसनाट्याचार्य्य के पास रही भाग्यवशसे सुदर्शननाम किसी ज्वारीके साथ उसनाट्याचार्य्यकी संगति होगई उसने थोड़ेही कालमे अनंगप्रभाके सन्मुखही उसनाट्याचार्य्यका सव धन जीतलिया तव अनंगप्रभा उसनिर्धन नाट्याचार्य्यको छोड़कर उससुदर्शन ज्वारीके साथ भागगई उसके चले जानेपर नाट्याचार्य्य धन तथा स्त्रीसे रहितहोकर अपनेको निराश्रय जानके वैराग्यसे जटा वढाकर गंगाजीके तटपर तपकरनेलगा और अनंगप्रभा उसीद्यूतकार सुदर्शन के यहां रहनेलगी एकसमय सुदर्शनके घरमें सेंधलगाकर चोर उसका सव धन लेगये धनके अभावसे अनंगप्रभाको अत्यन्त दुखित देखकर सुदर्शनने कहा कि चलो हिरण्यगुप्तनाम एकवड़ा धनवान् मेरा मित्रहै उससे कुछ धन उधारमांगें यहकहकर अनंगप्रभाको साथ लेकर भाग्यका माराहुआ सुदर्शन ऋणलेने को हिरण्यगुप्तके यहांगया वहां अनंगप्रभाको देखकर वह वैश्य तथा उस वैश्यको देखकर अनंगप्रभा दोनों परस्पर अनुरक्त होगये और उसवैश्यने सुदर्शनसे आदर पूर्व्वककहा कि मैं प्रातःकाल तुमको धनदूंगा आज तुम हमारे यहांही रहकर भोजनकरो यहसुनकर सुदर्शनने उनदोनों का विपरीतभाव देखकर कहा कि आज मैं तुम्हारे यहां भोजन नहीं करसक्ताहू उसके यहवचन सुनकर हिरण्यगुप्तने कहा कि तुम चाहो भोजन न करो परन्तु यहतुम्हारी स्त्री अवश्य भोजनकरे क्योंकि यह पहलेही पहिल मेरे यहां आई है यहसुनकर सुदर्शन चुपहोरहा और हिरण्यगुप्त अनंगप्रभाको साथ लेके भीतर जाकर भोजन तथा मद्यपान करके उसके साथ आनन्द करनेलगा फिर हिरण्यगुप्तके सेवकोंने वाहर खड़ेहुए सुदर्शनसे कहा कि तुम्हारी स्त्री भोजन करकेगई अव तुम यहां क्यों खडेहो तुम भी जाओ क्या तुमने उसे निकलतेहुए नही देखाथा यहसुनकर उसने कहा कि वह भीतरहीहै मैं उसे लिये विना कभी न जाऊंगा तव सेवकोंने उसेमारकर वहांसे निकाल दिया वहांसे जाकरसुदर्शन महादुखीहोकर शोचनेलगा कि देखो इसवणियेने मित्रहोकर भी मेरी स्त्री हरलीनी अथवा मुझे इसीलोक में अपने पापका फल मिलगया जो मैंने एकके साथ कियाथा वही दूसरेने मेरे भी साथ किया इससे किसीपर क्रोध न करनाचाहिये मेरे कर्महीं क्रोधके योग्यहै उन्हीका नाश करनाचाहिये जिससे फिर ऐसा दुःख मुझे नहीं सहनापडे यहशोचकर सुदर्शनने क्रोध रहितहोके वदरिकाश्रममे जाकर दुखदाई संसारके नष्टकरनेके लिये महाघोर तप किया और वह अनंगप्रभा अनेक पुष्पोंपर भ्रमण करती हुई भौरीके समान हिरण्यगुप्तके साथ रमणकरनेलगी और उसको अत्यन्त प्रियहोगई वहां के राजा वीरवाहुने उसको अत्यन्त सुन्दर जानकर भी धर्मकी मर्य्यादा के रक्षाकरने के लिये उसका ग्रहण नहीं

किया कुछ दिनों में हिरण्यगुप्तका धन घटगया क्योंकि (म्लायतिश्रीःकुलस्त्रीवगृहेत्वन्धक्यधिष्ठिते) पुंश्चली युक्त गृहमें कुल स्त्रीके,समान लक्ष्मीभी म्लानहोजाती है धनकी न्यूनता देखकर वह वैश्य अनंगप्रभा को साथ लेकर रोज़गार करनेको चला और चलते २ समुद्र के तटपर सागरपुरनाम नगरमें पहुंचा वहां निषादों का स्वामी सागरवीरनाम एक निषाद वहीं का रहनेवालाथा उससे मिलकर हिरण्यगुप्त उसी के लायेहुए जहाजपर चढ़कर अपनी प्रिया समेत द्वीपान्तर को चला ३२१ कई दिन तक समुद्रमें चलते २ एकदिन अकस्मात् जाज्वल्यमान विजलीरूपी नेत्रों से युक्त भयंकर कालेमेघ आकर गर्जनेलगे और पानी बरसनेलगा और वायुके वेग से जहाज डूबनेलगा जहाजको डूबते देखकर सम्पूर्ण लोग हाहाकार शब्दकरनेलगे और वह हिरण्यगुप्त वैश्य अनंगप्रभाको न देखकर हे प्रिये तुम कहांगई ऐसा कहकर समुद्रमें कूदपड़ा और कुछदूर बहकर भाग्यवशसे एकडोंगी पाकर उसीपै चढ़गया उस अनंगप्रभाको भी निषादोंके स्वामी सागरवीरने एक काष्ठके टुकड़ेपर बैठालकर आप भी उसीपर बैठके समुद्र में वहचला क्षणभरमें जहाजके नष्टहोजानेपर मेघ अदृष्ट होगये और शान्तहुए कोपवाले साधूकेसमान समुद्रभी शान्तहोगया उसडोंगीपर चढ़ाहुआ हिरण्यगुप्त पांचदिनमें समुद्र के तटपरपहुंचा और तटपर उतरकर प्रियाकेविरहसे दुखितहोके ब्रह्माकेकाममें अपना कुछ वस न जानकर धैर्य्यधरके अपने नगरकोगया और वहां फिर धन उपार्जनकरके सुखपूर्वकरहनेलगा और वह अनंगप्रभा एकही दिनमें सागरवीरके साथ समुद्रकेतटपर पहुंचगई वहां वहसागरवीर उसको समझाकर सागरपुर नगरमें अपने स्थानपर लेआया अनंगप्रभा ने उसको धनवान् रूपवान् और युवावस्थावाला जानकर उसीको अपना पति बनालिया (नस्त्रीचलितचारित्र निम्नोन्नतमवेक्षते) (सदाचारसे भ्रष्ट हुई स्त्री ऊंचनीचका विचारनहीं करती है) और वह उसी निषाद पतिकेसाथ उसके ऐश्वर्य्यको भोग करतीहुई कुछ दिन वहांरही एकसमय उसने महलपरसे विजयवर्मानाम रूपवान् किसी क्षत्रीको जाते देखा और उसके रूपसे लोभितहोकर महलपरसे उतरकर उससेकहा कि तुम्हारे दर्शनसेही तुमपर मेरा अनुराग होगयाहै तुम मुझको स्वीकारकरो उसने भी उसको अत्यन्तरूपवती देखकर अपने घरमें लेजाके उसकेसाथ दिव्य सुखोंका अनुभवकिया फिर सागरवीरने उसको कहीगई जानकर अपना सर्वस्व त्यागकरके शरीर त्यागनेकी इच्छासे गंगाजीपर जाके तपकिया उसको इतना दुःखहोना उचितही था क्योंकि कहां तो निषाद और कहां परमसुन्दर विद्याधरी स्त्री इसके उपरान्त अनंगप्रभा विजयवर्म्मा के साथ सुखपूर्वक कुछ दिन तक उसके पासरही एकदिन वहांका राजा सागरवर्मा हथिनीपर चढ़के नगरके घूमनेको निकला और घूमते २ विजयवर्माके मकानके पासआया राजाको आताजानके उसके देखने के कौतुक से अनंगप्रभा महलपरचढ़ी और राजाको देखतेही उसपर ऐसी अनुरक्तहुई कि राजा की हथिनीके महावतसेबोली कि हे हाथीवान् मैं कभी हथिनीपर नहींचढ़ीहूं इससे मुझेभी इसपरचढ़ालो मैं देखूं कि इसपर चढ़ने से क्या सुखहोताहै उसके यहवचन सुनकर महावत राजाकी ओर देखनेलगा और राजा आकाशसे गिरीहुई चंद्रमाकी कांतिकेसमान उसेदेखकर और चकोरके समान टकटकी दृष्टि

से उसे पानकरके उसके पानेकी आशाकरके महावतसेबोला कि हथिनीको महलके निकटलेजाकर इसे चढाकर इसका मनोरथ पूर्णकरो राजाकी यह आज्ञा पाकर महावत ने उसके महलकेही नीचे हथिनी लगादी हथिनीको निकट देखकर अनंगप्रभा राजाकी गोदमें कूदपड़ी और गिरनेकेभयसे राजाके कंठ में लिपटगई देखो कहां तो पहले पतियों से ऐसाद्वेष और कहां इसप्रकार पुरुषों से न तृप्तहोना पिताके शापसे उसकास्वभाव अत्यन्त विपरीतहोगया राजाभी उसकेस्पर्शरूपी अमृतसे अपने शरीरके सिंचने से अत्यन्त आनन्दको प्राप्तहुआ और युक्तिसे अपने शरीरको अर्पण करके चुम्बन करनेकी इच्छाकरती हुई उसअनंगप्रभाको लेकर शीघ्रही अपने मंदिरको चलागया और वहां उससे संपूर्ण वृत्तांत पूछकर उसे अपनी पटरानी बनाकर अत्यन्त आनन्दको प्राप्तहुआ इतने में वह विजयवर्मा क्षत्री अपनी स्त्रीको राजासे हरीहुई जानकर राजद्वारमें आकर राजा के सेवकों से युद्धकरनेलगा और युद्धमेंही शरीर का त्यागकरके इसदुष्ट स्त्री से तुम्हें क्या प्रयोजनहै नंदनबन में हमारेसाथ चलकर हमसे रमणकरो इसप्रकार मानों कहतीहुई सुरांगनाओं के साथ स्वर्गकोगया उसको इसप्रकारसे शरीरका त्यागना उचितही था क्योंकि (नशूराविषहन्तेहिस्त्रीनिमित्तंपराभवम्) शूरलोग स्त्री के निमित्तहुए तिरस्कारको नहीं सहते हैं ३६१ अनंगप्रभाभी राजा सागरवर्म्मा के यहांजाकर समुद्रमें प्राप्तहुई नदी के समान स्थिरहोगई और भावी के बलसे उसीको पाकर अपनेको कृतार्थ माननेलगी और राजा सागरवर्म्मा ने भी उसे पाकर अपना जन्म सफलमाना कुछ दिनोंमें अनंगप्रभा गर्भवतीहुई और गर्भमासों के पूर्णहोनेपर सुन्दर पुत्र उत्पन्नहुआ राजाने पुत्रजन्मका बड़ा महोत्सवकरके पुत्रकानाम समुद्रवर्म्मारक्खा और क्रमसे संपूर्ण विद्याओंको पढकर युवावस्थाको प्राप्तहुए समुद्रवर्म्माको युवराजपदवी देदी और राजासमुद्रवर्म्मा की कमलवती नाम कन्या हरलाकर उसे व्याहदी फिर विवाहके उपरान्त उसके गुणो से अत्यन्त प्रसन्नहोकर अपना सम्पूर्ण राज्य उसे देदिया राज्यकोपाकर क्षत्रियों के धर्म के जाननेवाले पराक्रमी समुद्रवर्म्मा ने नम्रतापूर्व्वक अपने पितासेकहा कि हे तात मुझे दिग्विजयकरनेकी आज्ञादीजिये क्योंकि जैसे स्त्रीका नपुंसकपति उसीप्रकार विजयकी इच्छासे रहित पृथ्वीका पति राजा भी निंद्यहोताहै (धर्म्याकीर्त्तिकरीसाच लक्ष्मीरिहमहीभुजाम्। याजित्वापरराष्ट्राणिनिजबाहुबलार्ज्जिता॥ किंतेषांतातराज्य त्वंक्षुद्राणामभिभूतये। स्वप्रजामेवखादन्ति मार्जाराइवलोलुपाः) राजालोगोंकी वही लक्ष्मी यशकरनेवाली तथा धर्मानुसारिणी होनीहै जो अपनी भुजाओं के बलसे जीतकर अन्य राजालोगों के यहां से लाईजाती है हे तात उन क्षुद्रपुरुषोंका तिरस्कारका कारणरूप राज्य क्याहै जो मार्जारों के समान लोभी होकर अपनी प्रजाओंकोही खाते हैं अपने पुत्रके यह वचन सुनकर सागरवर्म्मा ने कहा कि हे पुत्र तुम्हारा राज्य नवीनहै अभी इसीको पुष्टकरो धर्मके अनुसार प्रजाओंका पालन करनेवाले राजाको न पापहोताहै न अपयशहोता है और अपनी शक्तिको बिनादेखे राजालोगोंको युद्ध करना उचित नहीं है हे वत्स यद्यपि तुम बड़ेवीरहो और तुम्हारे पास सेनाभी बहुतहै तथापि युद्धमे चंचल जयलक्ष्मी का क्या विश्वासहै पिताके इसप्रकार समझानेपर भी समुद्रवर्म्मा यत्नपूर्व्वक पितासे आज्ञालेकर दिग्वि-

जयको गया और क्रमसे पूर्वादिक चारों दिशाओंको जीतकर राजालोगोंको अपने वशमेंकरके बहुत से घोड़े हाथी तथा रत्नोंको लेकर अपने नगरमें आया ३७७ वहां उसने प्रसन्नहुए अपने माता पिता के चरणोंपर अनेक देशों से लायेहुए अमूल्य रत्नरक्खे और माता पिताकी आज्ञालेकर हाथी घोड़े सुवर्ण तथा रत्नों के दानब्राह्मणोंकोदेकर याचकोंको तथा सेवकोंको इतनाधनदिया कि जिससे वहांकेवल दरिद्र शब्दही अनर्थरहा अपनेपुत्रकी ऐसी उदारतादेखकर राजासागरवर्म्मा तथा अनंगप्रभा इनदोनों ने अपनेको कृतकृत्यमाना और कई दिनतक उत्सवकरके मंत्रियों के सन्मुख समुद्रवर्म्मा से कहा कि हे पुत्र मुझे इसजन्म में जो कुछ करनाथा सो सब मैं करचुका राज्यका सुखभोगा, शत्रुओं से तिरस्कार नहींपाया और तुमको चक्रवर्त्ती पदपर बैठे देखा इससे बढ़कर अवमुझे कौनसी बात प्राप्तहोनेकोबाकी रही है इससे अव मैं तीर्थपर जाकर निवासकरूंगा। देखो यहवृद्धावस्थाकानके पास आकर मुझसे मानों कहरही है कि यहशरीर नस्वरहै तुमअव घरमेंवैठेहुए क्याकररहेहो यहकहकर राजासागरवर्म्मा अनंगप्रभा को साथलेकर प्रयागको गया तव समुद्रवर्म्मा अपने पिताको प्रयागतक पहुंचाकर लौटके धर्मके अनुसार राज्यका पालन करनेलगा और राजा सागरवर्माभी प्रयाग में अनंगप्रभा के साथ श्री शिवजी को प्रसन्न करनेके लिये तपकरनेलगा कुछदिन तपकरनेसे प्रसन्नहुए श्री शिवजीने सागरवर्मा को यह स्वप्न दिया कि हे पुत्र तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्न हूं इससे सुनो यह अनंगप्रभा और तुम दोनों विद्याधरहो कल प्रातःकाल शापसे मोक्ष पाके अपने लोकको जाओगे शिवजी के यह वचनसुनकर सागरवर्मा जग पड़ा और अनंगप्रभा भी इसीप्रकार स्वप्न देखकर जगपड़ी फिर इस स्वप्नको परस्पर कहने के उपरान्त अनंगप्रभा प्रसन्नहोकर बोली कि हे आर्यपुत्र आजमुझे अपने पूर्वजन्म का स्मरण आयाहै मैं वीरपुरके स्वामी समरनाम विद्याधरकी पुत्री हूं पिताके शापसे मृत्युलोक में आकर सम्पूर्ण विद्याओं को भूलके मुझे अपना विद्याधरत्वभी भूलगया था इससमय एकाएकी स्मरण आया है उसके इसप्रकार कहतेही कहते समरनाम विद्याधर आकाश से उतरकर वहां आया और नमस्कार करतीहुई अनंग प्रभासे वोला कि हे पुत्री आओ अपनी विद्याओं को लो क्योंकि तुम्हारा शाप अव शान्तहोगया है तुमने एकही जन्ममे आठजन्मके समान दुखभोगा यह कहकर उसने उसे गोदमें लेकर सव विद्या वता दीं और राजा सागरवर्मा से कहा कि आप विद्याधरों के स्वामी मदनप्रभहो मैं समरनाम विद्याधरहूं और यह मेरीकन्या अनंगप्रभाहै इसने रूपके अभिमानसे किसीवरका स्वीकार नहीं किया था और तुम ने भी इसकेलिये प्रार्थना की थी परन्तु भाग्यवशसे इसने तुम्हारा भी ग्रहण नही किया था इसीसे मैंने क्रोधितहोके इसको मृत्युलोकमें उत्पन्न होनेका शापदिया था तव तुमने अपने चित्तमें श्रीशिवजी का ध्यानकरके यह संकल्पकरके कि मृत्युलोक में भी यही मेरी स्त्री हो अपने शरीरका त्याग कियाथा इसी से तुम मनुष्यहुए और यह तुम्हारी स्त्रीहुई अव तुमदोनों अपने लोकको चलो समरके यह वचनसुनकर राजा सागरवर्मा अपने पूर्वजन्मका स्मरण करके त्रिवेणीजी में अपने मनुष्य शरीरको त्याग करके शीघ्रही मदनप्रभ नाम विद्याधर होगया और वह अनंगप्रभा भी विद्याओंको पाके अत्यन्त दी-

स्मिती होके उसी शरीरसे अन्यसी मालूम होनेलगी तब मदनप्रभ तथा अनंगप्रभा दोनों परस्पर देखके अत्यन्त अनुरक्त होकर समरके साथ आकाशमार्ग से वीरपुरको गये वहां समरने विधिपूर्वक अपनी कन्या अनंगप्रभाका विवाह मदनप्रभके साथकरदिया और मदनप्रभ उसको साथलेके अपने पुरमें जाकर सुखपूर्वक रहा इसप्रकार अपने दुराचारके वशसे दिव्यस्त्रियां भी मनुष्य लोक में उत्पन्न होकर और अपने कर्म्मोंके अनुसार फलभोगके अपने लोकोंको चलीजाती हैं गोमुख से इस कथाको सुनकर राजा नरवाहनदत्त तथा अलंकारवती दोनो अत्यन्त प्रसन्नहुए और उठकर अपने नित्य नैमित्तिक कार्य्य करनेको गये ४१०॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांअलंकारवतीलम्बकेद्वितीयस्तरंगः २॥

इसके उपरान्त दूसरे दिन अलंकारवती के पास बैठे हुए नरवाहनदत्त से मरुभूति ने कहा कि हे स्वामी देखिये यह विचारा कार्पटिक एक चमड़े के टुकड़े को पहने हुए रात्रि दिन शीत में अथवा धूप में भी आप के फाटक पर से नहीं हटता है परन्तु आप अवतक इसपर नही प्रसन्न होते हो समय पर थोड़ा देना अच्छाहै परन्तु समय व्यतीत होजानेपर वहुतसा देना भी व्यर्थ है इससे जवतक यह मरता नहीं है तभीतक आप कृपा करके जो कुछ देना है सो इसे दीजिये यह सुनकर गोमुख ने कहा कि मरुभूतिका कहना वहुत उचितहै परन्तु इसमें आप का कोई अपराध नहीं है जवतक विघ्नकारी पापका नाश नही होता है तवतक स्वामी चाहै दान देने की इच्छा भी करे परन्तु दे नहीं सक्ताहै और पापों के क्षीण होजाने पर स्वामी नाहीं करनेपर भी देता है इससे यह वात कर्म्माधीन है इस विषय पर मैं आपको राजा लक्षदत्त तथा लब्धदत्तनाम कार्पटिक (चिथड़े ओढ़नेवाला) की कथा सुनाताहूं पूर्व्वही लक्षपुरनाम नगरमें लक्षदत्तनाम एक वड़ा दानी राजाथा वह लाखसे कम किसीको नहीं देताथा जिससे संभाषणकरता था उसे पांचलाख देताथा और जिसपर प्रसन्न होताथा उसको दरिद्रसे रहित करदेताथा इसीसे उसका लक्षदत्तनाम प्रसिद्धथा उस राजाके यहां फाटक पर लब्धदत्तनाम एक कार्पटिक चमड़ेके टुकड़ेको कमरमें वांधेहुए जटारखाये रात्रि दिन शीत वर्षा तथा धूममें भी क्षणभरको नहीं हटताथा और राजा नित्य उसे देखताथा वहुत कालतक राजा उसको क्लेशमे देखतारहा परन्तु कुछ देनेको नहीं उद्यतहुआ एक समय राजा अपनी सेनासमेत शिकारखेलने को वनमें गया और वह कार्पटिकभी उसके पीछे २ लाठीलेकर गया वहां राजाने तथा उसकी सेनावालोंने वाणोंसे वहुतसे व्याघ्र शूकर तथा हरिणादिक पशु पक्षी मारे और कार्पटिकने लाठीसेही वहुत से शूकर तथा हरिणमारे उसके पराक्रमको देखकर राजाने अपने मनमे जाना कि यह वड़ाशूरहै परन्तु कुछ दिया नहीं शिकार खेलकर राजा अपने नगरमें आकर मन्दिरमें चलागया और वह कार्पटिक फाटक पर वैठगया इसके उपरान्त एकसमय राजा लक्षदत्त अपने किसी गोत्री भाई के जीतने को गया और कार्पटिक भी उसके साथ २ पीछे २ चलागया वहां शस्त्रोंकेद्वारा योद्धाओंके युद्ध करनेपर कार्पटिकने लाठीकेही प्रहारसे वहुतसे शत्रुमारे तव शत्रुओंको जीतकर राजाने अपने नगरमें आके वड़ा उत्स-

व किया परन्तु उस कार्पटिकके पराक्रमको भी देखकर उसे कुछ न दिया इसप्रकार केवल लाठीसेही वड़े २ कार्य्य करनेवाले उस कार्पटिकको राजद्वार पर रहते २ पांचवर्ष व्यतीतहोगये जब छठावर्षलगा तो राजाने उसे देखकर दयापूर्वक विचार किया कि इसको बहुत काल क्लेशभोगते होचुके हैं परन्तु मैंने इसे कुछ नहीं दिया है इससे युक्तिपूर्व्वक इसको कुछ देकर देखूं कि इसका पाप अभी क्षीण हुआ है या नहीं लक्ष्मीजी अभी इसको दर्शन देती हैं या नहीं यह शोचकर राजाने खजाने में जाकर एक विजौरे नीवूमें बहुतसे रत्नभरलिये और उसको बन्दकरके बाहर सभामें आकर संपूर्णपुरवासी मन्त्री तथा छोटे २ राजाओंके सन्मुख उस कार्पटिकको अपने पास बुलवाकर बैठाया और वह कार्पटिक बहुत प्रसन्नहोके राजाके समीप बैठा तब राजाने उससे कहा कि कोई अच्छासा श्लोकपढ़ो राजाकी आज्ञापाके कार्पटिक ने यह आर्य्यापढ़ी कि (पूरयतिपूर्णमेषातरंगिणीसंहतिस्समुद्रमिवलक्ष्मीरधनस्य पुनर्लोचनमार्गेपिनायाति) जैसे अगाध समुद्रमें सैकड़ों नदियां जाकरगिरती है उसीप्रकार लक्ष्मीभी धनवान् मनुष्यके पास जाती हैं और निर्धनको दर्शन भी नहीं देती इस आर्या को सुनकर और फिर पढ़वाकर राजाने प्रसन्नहोके उसे रत्नोंसेभराहुआ विजौरा नीबूदेदिया यह देखकर सम्पूर्ण सभासदों ने परस्पर धीरे २ कहा कि जिसपर यह राजाप्रसन्नहोता है उसका दरिद्रदूर करदेताहै परन्तु यह कार्पटिक शोचकरनेके योग्यहै जिसे राजाने बुलाकर प्रसन्नहोकर भी एकनीबूदियाठीकहै (कल्पवृक्षोप्यभव्यानां प्रायोयातिपलाशताम्) प्रायःअभागियोंकेलिये कल्पवृक्षभी ढाक होजाताहै ३६ तब कार्पटिक उस बि-जौरेको लेकर अत्यन्त दुखीहोके बाहरगया उससमय राजवन्दिनाम एकभिक्षुकने वहांआकर एकधोती देके वह नीबू उससे बदले में मोललेलिया और सभामें जाकर राजाकी भेटकरदिया राजाने उसे पह-चानकर उससे पूछा कि यहफल तुम कहांसे लाये उसने कहा कि मैंने द्वारपर खड़ेहुए कार्पटिकसे यह फलपायाहै तब राजाने खेदसे अपने चित्तमें शोचा कि अभी उसका पाप क्षीणनही हुआहै इसप्रकार शोचकर सभाका विसर्जनकरके राजाने अपना नित्यनैमित्त कर्मकिया और उस कार्पटिकने भी धोती बेचकर भोजनादिका निर्वाहकरके अपने उसी स्थानपर निवासकिया दूसरेदिन राजाने फिर सम्पूर्ण सभा इकट्ठीकरके कार्पटिकको अपने पास बुलाके वही आर्या फिर पढ़वाके वहीनीबू देदिया तब सब लोगों ने आश्चर्य्य पूर्व्वक कहा कि देखो आजभी राजाने वहीनीबूइसको दिया और कार्पटिक उदासीनहोकर नीबूलेकर बाहर चलागया उससमय वहाँ आयेहुए किसी राज्याधिकारीने दो वस्त्रदेकर उससे वहनीबूले के सभा में जाकर राजाकी भेटकिया राजाने उसको पहचानकर उससे पूछा कि यहफल कहाँ से लायेहो उसनेकहा कि मैं कार्पटिकसे लायाहूं यहसुनकर खिन्नहोके उसको लक्ष्मी अबतक दर्शन नहींदेती हैं इस प्रकार शोचताहुआ राजा सभासे उठकर अपना नित्यकर्म करनेको चलागया और उसकार्पटिक ने उन दोनों वस्त्रोंमें से एकको बेचकर भोजनादिककी सामग्रीली और दूसरेको फाड़कर दो वस्त्र बनाये तीसरे दिन फिर राजाने सभाकरके कार्पटिकको अपने पास बुलाके और वही आर्यापढ़वा के वही नीबू फिर देदिया उसनीबूको देखकर सबसभासदोंके आश्चर्य्य युक्त होनेपर कार्पटिकने बाहरजाकर वह नीबू भावी

फलके सूचक पुष्पकेसमान कुछ सुवर्ण लेकर वेश्याकोदेदिया और सुवर्ण बेचकर उसदिन सुखसे भोजन किया और उस वेश्याने सभामें जाकर वह नीबूराजाकी भेटकिया राजा ने उसे पहचानकर उससे पूछा कि यहतुमने कहाँ से पाया उसने भी कहा कि मैने कार्पटिकसे पाया यहसुनकर राजाने शोचा कि लक्ष्मीजीने अभी इसके ऊपर कृपादृष्टि नहींकी यह बड़ा मन्दभागी है जो कि मेरी प्रसन्नताको इसप्रकारसे निष्फल जानताहै देखो यह महारत्न वारंवार मेरेहीपास लौटश्कर आरहे हैं इसप्रकार शोचकर राजाने उसनिबूको रखवाकर सभा समाप्तकरके अपना नित्यका आह्निककिया चौथेदिन फिर राजाने सभाकी और संपूर्ण सभासदोंके आगे कार्पटिकको अपनेपास बुलाके वही आर्यापढ़वाके वही नींबू देदिया उसदिन राजाके हाथसे कार्पटिकके हाथमे न पहुंचके गिरकर वहनींबू फटगया और उसमें से दिव्य महारत्न निकले जिनकी ज्योतिसे सम्पूर्ण सभा जगमगाउठी उनरत्नोंको देखकर सम्पूर्ण सभासदोंने कहा कि तत्वको विनाजाने हमलोगों को तीन दिनतक व्यर्थही भ्रान्ति हुई हमारे स्वामीकी कृपा तो ऐसी है यहसुनकर राजाने कहा कि मैंने युक्तिपूर्व्वक यह परीक्षाकी थी कि लक्ष्मी जी इसको दर्शन देना चाहती हैं कि नहीं तीन दिनतक इसके पापका नाशनहीं हुआ था इसीसे इसको लक्ष्मी जीके दर्शन नहींहुए और आज इसके पापका क्षयहोगया था इसीसे इसे लक्ष्मीजीने दर्शनदिये यह कहकर राजाने वह सम्पूर्ण रत्न गांव हाथी घोड़े तथा बहुतसा सुवर्णदेकर उसे छोटासा राजा बना दिया फिर सम्पूर्ण सभासदों से प्रशंसा होनेपर सभासे उठकर नित्यकृत्य किया और कार्पटिक कृतकृत्य होकर बड़ा आनन्दितहोके अपने स्थानको गया इसप्रकारसे जबतक पापका अन्त नहीं होताहै तबतक करोड़ोंयत्न करनेपरभी सेवकोंपर स्वामीकी कृपानहीहोती है इसकथाकोकहके गोमुखने नरवाहनदत्तसे फिर कहा कि मैं जानताहूं कि अभी इसकार्पटिकके पापोंका क्षयनहींहुआहै इसीसे आप इसपर प्रसन्न नहीं होते हो गोमुखके यहवचनसुनकर नरवाहनदत्तने कार्पटिकको बुलाके बहुतसेगांव हाथी घोड़े रत्न तथा सुवर्णसमेत वस्त्रादिकदिये उस धनको पाकर वह कार्पटिक राजा के समानहोके कृतार्थहोगया ठीक है (कृतज्ञे सत्परीवारे प्रभौसेवाफलाकुतः) सज्जनपरिवारसे युक्त कृतज्ञराजाकी सेवाकभी व्यर्थनहीहोती है इसप्रकारसे अनेक उत्तमकार्य्य करतेहुए नरवाहनदत्तके निकट प्रलम्बबाहुनाम एक दाक्षिणात्यवीर युवाद्विजआया और बोलाकि हेस्वामी आपकी कीर्त्तिको सुनकर मैं आपके चरणोकी सेवाको आया हूं हाथी घोड़े तथा रथआदिक वाहनोंपर पृथ्वीमे अथवा आकाश मे चलतेहुए आपकासाथमैं पैदलही चलकर एक क्षणभरभी नहींछोडूंगा क्योंकि आपविद्याधरों के चक्रवर्त्तीहोनेवालेहो और सौ असरफी रोज मेरावेतन होगा उसके यह वचन सुनकर नरवाहनदत्तने उसे बड़ातेजस्वी जानकर उसकावही वेतन नियतकरदिया ८४ इसीप्रसंगसे गोमुखने उससेकहाकि हे युवराज इसप्रकार के भी सेवक बहुधा होतेहैं इसबातपर मैं आपको एक कथा सुनाताहूं विक्रमपुर नामनगर में विक्रमतुंगनाम एकराजाथा वह राजा बड़ा वीर न्यायी, विचारपूर्व्वक दंडदेनेवाला, धर्मात्मा,स्त्री तथा शिकारआदिकों में नहीं आसक्तहोनेवाला और महादानीथा उस राजाके निकट मालवदेशका निवासी वीरवरनाम एक शूरवीर

ब्राह्मण सेवाकेनिमित्तआया उसकेसाथ में उसकी धर्मवतीनामस्त्री वीरवतीनामकन्या, और सत्त्ववर नामपुत्र, यहतीनकुटुम्बीथे इतनेही कुटुम्बकेलिये उसने राजासेपांचसौ असर्फीरोजवेतनमांगी राजा ने उसके विशेषगुण देखनेकी इच्छासे उतना वेतनदेना स्वीकारकरलिया और गुप्तदूतों को बुलाकर यह आज्ञादीकि देखोयह इतनेधनसे क्या काम करताहै वीरवरप्रतिदिन उनअसर्फियों में से सौअसर्फी तो अपनीस्त्रीको भोजनादिके निमित्त नित्यदेताथा, सौअसर्फियोंसे वस्त्रतथा आभूषणादिकलेताथा, सौ असर्फी विष्णुभगवान् तथा शिवजीके पूजनमें लगाताथा और दोसौ असर्फी ब्राह्मणों को तथा दीनों को बांटदेताथा इसप्रकारसे वह पांचसौ असर्फियोंका व्ययकिया करताथा और कमरमें खड्ग एकबगलमें ढालतथा एक दर्पण लेकर मध्याह्नतक राजद्वारपर रहताथा और फिर अपनेघरपर आकर आह्निकादिक करके रात्रिभरभी राजद्वारहीपर जाकर रहताथा उसकी यह दिनचर्या राजासे उन गुप्तदूतों ने आकर बतादी तब राजाने प्रसन्नहोकर दूतों को निवृत्तकरदिया और वह वीरवर शस्त्रको लेकर रात्रि दिन स्नानादिक समयको छोड़कर राजद्वारहीपर रहनेलगा १०० इसबीचमें वीरवरको मानोंजीतने के लिये सूर्य्य के प्रतापको न सहनेवाली वर्षाऋतुआई उनदिनों मेघोंके घोरधारारूप बाणोंकी वृष्टिकरनेपर भी वीरवर स्तंभके समान फाटकपरसे हटानहीं एकदिन राजा विक्रमतुंग उसकी परीक्षा करनेकेलिये रात्रिके समय महलपरसे बोला कि फाटकपरकौनहै यह सुनकर वीरवरने कहाकि मैं हूं वृष्टि के समय में भी फाटकपर खड़ेहुए वीरवर को जानकर राजाने शोचा कि यह बड़ासत्त्ववान्है इसको कोई बड़ा अधिकार मिलना चाहिये क्योंकि यहऐसीवृष्टिमें भी अपने स्थानपरसे नहीहटताहै राजाके इसप्रकार विचारकरतेही दूरसे किसी स्त्रीके रोनेकासा शब्दसुनाईदिया उसेसुनकर मेरेराज्यमें तो कोईदुखी नहीं है तो यहकौनरोरहीहै यह शोचकरराजाने वीरवरसेकहा कि कोई स्त्री दूरपररोरही है उसकेपासजाकरदेखोकि वहकौनहै औरक्यों रोरहीहै यह आज्ञापातेही वीरवर खड्ग लेकर वहांसेचला उसको पानीबरसते में जाते देखकर राजाभी खड्गलेके दयायुक्त होके उसीके पीछे २ चला वीरवर नगरके बाहरजाके कुछ दूरपर एकतालाबके पास पहुंचा वहां एक स्त्री हेनाथ हेकृपालो हेशूर तुम्हारे विना मैं कैसे रहूंगी यह कहकहकर रोरहीथी उससे जाके वीरवरने पूछा कि तू कौन है औरकौन तेरानाथहै और क्यों रोरही है उसनेकहा कि हे वीरवर मैं पृथ्वीहूं और बड़ा धर्मात्मा राजा विक्रमतुंग मेरा स्वामी है उसकी आजसे तीसरेदिन मृत्युहोगी और ऐसा पतिमुझे मिलेगा नही इससे मैं उसका और अपना दोनोंका शोक करतीहूं मैं दिव्यदृष्टि से सम्पूर्ण होनेवाली शुभाशुभ बातोंको जानतीहूं जैसे स्वर्ग में स्थित सुप्रभनाम देवपुत्रने जानलिया था उसे यह मालूम होगयाथा कि पुण्यों के क्षीणहोने से सातहीं दिनमें मेरा स्वर्गसे पतनहोगा और शूकरीके गर्भमें जन्म होगा यह जानकर वह शूकरीके गर्भवासके दुःखको शोचकर स्वर्गके दिव्य भोगों का शोच करनेलगा कि हास्वर्ग हाअप्सरा हानन्दन वन हाय मैं कैसे शूकरीके गर्भमें रहूंगा और गर्भसे निकलकर कैसे कीचमें पड़ूंगा उसके इस विलापको सुनकर इन्द्रने उसके पास आकर कहा कि तुम क्यों रोतेहो इन्द्रके यह वचनसुनकर उसने अपने दुःखका सब कारण कहदिया तब इन्द्रने उससे

कहा कि मैं तुमको एक उपायबताताहूं कि ॐ नमश्शिवाय इसमन्त्रका जपकरके श्री शिवजीकी श-रणमें प्राप्तहोजाओ इससे तुम्हारे सम्पूर्ण पापनष्ट होजायंगे और पुण्योकी वृद्धिसे शूकरी के गर्भ में नहीं जाओगे और स्वर्गही मे रहोगे इन्द्रके यह वचनसुनकर सुप्रभ ॐ नमश्शिवाय इस मन्त्रका छः दिनतक दत्तचित्तहोकर जपकरता रहा और जपके प्रभावसे वह स्वर्ग के ऊपरवाले लोकमें चलागया सातवेंदिन इन्द्रने उसेस्वर्ग में न देखकर ध्यानधरके देखा कि वह स्वर्ग से भी ऊपरके लोकमें है इस प्रकारसे जैसे सुप्रभने अपने भावी दुःखका शोचकिया था उसीप्रकार मैं भी राजाकी मृत्युका शोचकर रही हूं पृथ्वीके यह वचनसुनकर वीरवरने कहा कि हे अम्ब जैसे इन्द्रके वाक्य से सुप्रभको उपाय मिला था उसीप्रकार राजा के लिये भी कोई उपायहै जो होय तो बताओ तब पृथ्वी बोली कि इसका एकही उपाय है और वह तुम्हारे आधीनहै यह सुनकर वीरवरने प्रसन्न होकर कहा कि हेमाता शीघ्रही बता-ओ जो मेरे प्राणोंसे स्त्री से अथवा पुत्रसे भी राजाका उपकार होयतो मैं धन्यहूं यह सुनकर पृथ्वी बोली कि राजमंदिरके पास जो चंदिका देवी हैं उनके आगे अपने सत्त्ववरनाम पुत्रको भेट चढाओ इस उपायसे राजा जियेगा इसके सिवाय दूसरा उपाय नहीं है पृथ्वीके यह वचनसुनकर धीर वीरवरने कहा कि हे भगवती मैं अभीजाकर अपने पुत्रको भेटकरताहूं उसके यह वचनसुनकर पृथ्वी तुम्हारे स-मान स्वामीका हितकारी कौनहोगा यह कहकर अन्तर्द्धान होगई और वीरवर अपने घरकोचला तब राजा विक्रमतुंगभी इससम्पूर्ण वार्त्ताकोसुनकर उसके पीछे२चला वीरवरने अपने घरमें जाकर अपनी स्त्री से जगाकरकहा कि पृथ्वी के कहने से मुझे राजाकेनिमित्त अपनेपुत्रकी भेट भगवती को करनी है वीरवरके यहवचनसुनकर धर्मवती ने कहा कि स्वामीका हितकरना अवश्य उचितहै इससे तुम सत्त्व-वरको जगाकर उससे कहो तब वीरवरने सत्त्ववरको जगाकर उससे पृथ्वी के कहेहुए सम्पूर्ण वचन कह-दिये पिताके यह वचन सुनकर उसबालकनेकहा कि हेतात मैं बड़ा पुण्यवानहूं जिसके प्राण स्वामी के कार्य्य में आवेंगे मैंने उसका अन्नखायाहै इससे मुझको उसके ऋणसे अवश्य शुद्धहोना चाहिये अब आप मुझे शीघ्रही लेचलकर भगवती के आगे मेरा बलिदानकरो सत्त्ववरके यह वचन सुनकर वीरवरने कहा कि तुम निस्सन्देह हमारेही पुत्रहो उनसबों के इसप्रकारके वचनोंको सुनकर बाहरखड़ेहुए राजाने अपने मनमें कहा कि यहसब बडे सत्त्ववान्हैं तब वीरवर सत्त्ववरको गोदीमेंलेकर और धर्मवती सत्त्ववती कन्याको गोदी में लेकर दोनों वहांसे भगवती के मन्दिरको चले और राजाविक्रमतुंगभी छिपकर उनके पीछे२चला भगवती के मंदिरमें पहुंचकर वीरवरकी गोदी से उतरकर उस बालक सत्त्ववरने कहा कि हे भगवती मेरे मस्तकके बलिदानसे राजाविक्रमतुंग चिरंजीवीहोय और अकंटकराज्यका भोगकरे पुत्रके यह वचन सुनकर वीरवरने खड्गसे उसका शिर काटकर भगवती के अर्पणकरकेकहा कि इसबलिदानसे राजाकाकल्याणहोय (नास्त्यहोस्वामिभक्तानांपुत्रेवात्मनिवास्पृहा) स्वामिभक्तोंको पुत्रमें अथवा अपने शरीरमें स्पृहा नहीं होतीहै उससमय यह आकाशवाणी हुई कि हे वीरवर तू धन्यहै जिसने अपने पुत्र के प्राणों के व्ययसे अपने स्वामीकी रक्षाकी इसआकाशवाणीको सुनकर और वीरवरके सम्पूर्ण का-

य्योंको देखकर राजाको बड़ा आश्चर्य्यहुआ तब वीरवरकी पुत्री वीरवती अपने भाई के शिरको आलिंगनकरके और चूमकर हा भाई यहशब्द कहके हृदयके फटनेसे मरगई कन्याको भी मरीहुई देखकर धर्मवतीने दीनहोके हाथ जोड़कर वीरवर से कहा कि राजाका कल्याण तो आपकरचुके अबमुझे यह आज्ञादीजिये कि मैं इनदोनों मरेहुए बालकोंको लेकर अग्निमें भस्महोजाऊं जहाँ यह अज्ञान बालिका भी अपने भाईके शोकसे मरगई वहाँ दो सन्तानोंके नष्टहोजानेपर मेरेजीनेकी क्याशोभाहै उसके यहवचन सुनकर वीरवरने कहा कि ऐसाहीकरो पुत्रके शोकसे इसदुःखमय संसारमें तुमको कोई सुखनहीं है मैं तुम्हारे लिये चिताबनाये देताहूं यहकहकर उसने वहीं पड़ेहुए कुछकाष्ठसे चिताबनाकर और उसपर दोनों बालकोंके शरीर रखकर अग्नि बालदी तब धर्मवतीने वीरवरके चरणों में प्रणामकरके हे आर्यपुत्र दूसरे जन्ममें भी आपही मेरेपति हूजिये यहकहकर और राजाका कल्याण होय यह भी कहकर अग्निसे धकधकाती हुई उस चितामें शीतल तड़ाग के समान प्रवेश किया इस कृत्यको देख के राजा विक्रमतुंग ने विचारा कि मैं अब इनसे कैसे अनृण होसक्ताहूं तब वीरवर ने शोचा कि स्वामी का कार्य्य तो सिद्ध होगया क्योंकि साक्षात् आकाशवाणीही इसको प्रकट करगई और स्वामी के अन्नसे मेरा उद्धार भी होगया इससे मैं भी अपने बलिदान से भगवतीका पूजन करूं क्योंकि कुटुम्बके पोषणकेलिये सब प्रकारका उद्योगकरना अच्छा मालूमहोता है और अपनेही उदरभरने के लिये अकेलेकाजीना अशोभित मालूमहोता है इसप्रकार शोचकर उसने भगवतीकी यह स्तुति की कि हे भक्तों के अभयदेनेवाली भगवती तुमको नमस्कारहै संसाररूपी कीचमें फँसेहुए मुझ शरणागत का उद्धारकरो तुम सम्पूर्ण जीवोंकी प्राणशक्तिहो तुम्हारेही द्वारा यह सब संसार चेष्टा करताहै सृष्टिके आदिमें आपही उत्पन्नहुई आपको श्री शिवजीने इसस्वरूप में देखाथाकि करोड़ों सूर्य्य के समान देदीप्यमान तुम्हारातेजथा और खड्ग खेटक दंड बाण तथा त्रिशूलादिक शस्त्रधारी तुम्हारी भुजाओंसे सम्पूर्ण संसार व्याप्तहोरहाथा इसप्रकारसे तुम्हारे स्वरूपको देखकर श्री शिवजीने तुम्हारी यह स्तुति की थी कि हे चंडि हे चामुंडे हे मंगले हे त्रिपुरे हे जये हे अनंशे हे शिवे हे दुर्गे हे नारायणि हे सरस्वति हे भद्रकालि हे महालक्ष्मि हे सिद्धे हे रुरुविदारिणि तुमको नमस्कारहै तुम्हीगायत्री महाराज्ञी रेवती, विन्ध्यवासिनी, उमाकात्यायनी तथा शर्वपर्व्वतवासिनी हो इत्यादिकनामोंसे श्रीशिवजीको स्तुतिकरते देखकर स्कन्द वशिष्ठ तथा ब्रह्मादिकदेवताओंने भी तुम्हारीस्तुतिकी थी और देवता मनुष्य तथा ऋषियोंको तुम्हारी स्तुतिकरनेसे मनोरथसे अधिक फलप्राप्तहुएथे और प्राप्तहोतेहैं इससे हे भगवती मेरे ऊपर प्रसन्न होकर मेरेशरीर का बलिदानलेकर मेरेस्वामी राजा का कल्याणकरो यह कहकर जैसेही उसने अपना शिरकाटनाचाहा वैसेही यह आकाशवाणीहुई कि हे पुत्र साहस न करो मैं तुम्हारे सत्त्वसे प्रसन्नहूं जोचाहो सो वरमांगो यह सुनकर वीरवर बोला कि हेभगवती जो आपमेरे ऊपर प्रसन्नहो तो राजा विक्रम तुंग सौवर्षं अधिकजिये और मेरी स्त्री कन्या तथा पुत्रजी उठें उसके इसप्रकार कहनेपर एवमस्तु यह शब्द मन्दिरसे सुनाई दिया और धर्मवती वीरवती तथा सत्त्ववर यह तीनों जीउठे तबवीरवर अत्यन्त प्रसन्न

होके उनसबको भगवतीकी कृपा सुनाकर और उनसबकोघरपर पहुंचाकर राजद्वारपरआया और राजा विक्रमतुंग भी इस सम्पूर्ण वृत्तान्तको प्रत्यक्ष देखकर अत्यन्त आश्चर्ययुक्तहोके छिपकरै महलपर चढ़कर बोला कि फाटकपर कौनहै यह सुनकर वीरवरने कहा कि मैं हूं और आपकी आज्ञासे मैं उसस्त्रीके देखने को गयाथा परन्तु मुझे देखतेही वह किसी देवता के समान अन्तर्द्धानहोगयी उसके यहवचन सुनकर राजा विक्रमतुंगने अपने चित्तमें कहा कि यह कोई अपूर्व पुरुषहै जो ऐसे श्रेष्ठ अपूर्व कार्य्य को करके भी अपने मुखसे नही कहताहै इसने अपनी गंभीरतासे विशालतासे सत्त्वसे तथा स्थिरतासे समुद्रकोभी जीतलियाहै इसने परोक्षमे अपने पुत्रकेप्राणोंका व्ययकरके मेरे प्राणवचाये हैं अव मैं इस के साथ क्या प्रत्युपकारकरूं इसप्रकार से विचार करते २ राजाने वहरात्रि व्यतीतकी और प्रातःकाल सभामें सबके आगे वीरवरकासम्पूर्ण वृत्तान्तकहा और सम्पूर्ण सभासदों से प्रशंसाकियेगये वीरवरको बहुत से देश रत्न हाथी घोड़े तथा दशकरोड़ अशर्फीदेकर उसका रोजका वेतनछःगुणा करदिया और छत्र तथा चमर देकर उसे अपनेही समान राजा बनालिया तब वीरवर उस सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यको पाकर और छत्र तथा चमरसेयुक्तहोके अपने कुटुम्वसमेत कृतकृत्यहोगया यह कथा कहकर गोमुखने नरवाहनदत्तसे फिरकहा कि हे स्वामी राजालोगोंको पुण्यके योगसे ऐसे कोई २ सेवक मिलते हैं जो स्वामी के निमित्त शरीरादिककी अपेक्षा न करके अपने सत्त्वसे दोनों लोकों को जीतते हैं यह प्रलंबबाहु ब्राह्मणभी उसी प्रकारका मालूमहोता है क्योंकि इसकी चेष्टाही से सत्त्व तथा गुण लक्षितहोते हैं बुद्धिमान् गोमुखके यह उदारवचन सुनकर नरवाहनदत्त अपने चित्तमें अत्यन्त प्रसन्नहुआ १६७॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांअलंकारवतीलम्वकेतृतीयस्तरंगः ३॥

इसप्रकारसे अपने पिताके यहां रहताहुआ गोमुखादिकप्रेमी अपने मन्त्रियों से सेवनकिया गया और मानरूपी विघ्नको न सहनेवाली अत्यन्तप्रेम से ईर्ष्यारहित अलंकारवतीके साथ विहारकरता हुआ नरवाहनदत्त एक समय रथपरचढके गोमुखादि मंत्रियोंसमेत शिकारखेलनेको गया और वेगसे दौड़तेहुए रथके आगेही आगे पैदल दौड़ताहुआ प्रलंबबाहु भी उसके साथगया वनमें नरवाहनदत्त ने तो रथपरसे बाणोंके द्वारा सिंह व्याघ्रादिकोंको मारा परन्तु प्रलंबबाहुने पैदलही केवल खड्गहीसे अनेक सिंह व्याघ्रादिकमारे प्रलंबबाहुके इस कृत्यको देखकर नरवाहनदत्त उसके पराक्रमकी और जंघाओंकेवेगकी अत्यन्त प्रशंसा करतारहा इसप्रकार शिकारखेलनेके उपरान्त नरवाहनदत्त शिकार के परिश्रमसे प्यासाहोके रथपरचढ़कर जलके निमित्त गोमुखको साथलेकर वहां से बहुतदूर एक दूसरे वनमें गया और प्रलंबबाहुभी उसके साथही साथ दौड़ताहुआ चलागया वहां प्रफुल्लितसुवर्णके कमलोंसे युक्त एकदिव्य तड़ागमिला वह तड़ागक्याथा मानो सूर्य्यके अनेक विम्बोंसे युक्त द्वितीय आकाशही था उस तड़ाग मे स्नानकरके और जलपीके स्वस्थहुए नरवाहनदत्त को दिव्यवस्त्र तथा आभूषणपहरेहुए चारदिव्यपुरुष उसतड़ागमें कमलतोड़तेहुए दिखाईदिये और उनकेपास वहगया उन्होंने उसे देखकर प्रसन्नहोकर पूछा कि तुमकौनहो और क्या तुम्हारा नामहै उनके यह वचन सुनकर उसने

सब अपना वृत्तान्तकहदिया और उनके भी नाम तथा उनकासब वृत्तान्तपूछा तब वह बोले कि समुद्रके बीचमें नारिकेलिनाम एक महासुन्दरद्वीपहै उसमे मैनाक वृषभ वलाहक तथा चक्रनाम दिव्यपर्व्वत हैं उन्हींचारोंपर हमचारोंरहतेहैं हममें से एकका नाम रूपसिद्धि है जो अनेक प्रकारके रूपधारणकरसक्ताहै एकका नाम प्रमाण सिद्धिहै जो बड़े तथा सूक्ष्मप्रमाणोंको देखसक्ताहै एकका नाम ज्ञानसिद्धि है जो भूत भविष्य वर्त्तमान तीनों कालोंकी बात जानसक्ताहै और एकका नाम देवसिद्धि है जिसे सम्पूर्ण देवता सिद्धहैं इससमय हमचारों सुवर्ण के कमलोंको लेकर श्वेतद्वीपमें श्रीविष्णुभगवान्का पूजन करनेको जातेहैं हम उन्हीं के भक्तहैं उन्हींकी कृपासे अपने २ पर्व्वतोंपर हमारा राज्यहै और सम्पूर्ण सिद्धि तथा सम्पत्ति हमे प्राप्तहुईहैं हे मित्र तुम्हारी इच्छाहोय तो तुमभी चलकर श्वेतद्वीपमें विष्णुभगवान् के दर्शन करो हम तुमको आकाशमार्ग से वहां लेचलेंगे उनके यहवचन सुनकर नरवाहनदत्त उसीवन में गोमुखादिकोंको छोड़कर देवसिद्धिकी गोदीमें चढ़कर श्वेतद्वीपकोगया वहां आकाशसे उतरकर दूरहीसे नरवाहनदत्तने विष्णुभगवान्के दर्शन किये उनके निकट वामभागमें लक्ष्मीजी बैठीथी चरणों के निकट मूर्तिमती पृथ्वी विराजमानथी मूर्तिधारी शंख चक्र गदा तथा पद्म यहचारों उनका सेवन कररहे थे नारदादिक महर्षि तथा गन्धर्व भक्ति पूर्व्वक उनकी स्तुति गारहेथे देवता सिद्ध तथा विद्याधर लोग उन्हें प्रणाम कररहेथे और गरुड़ उनके आगे बैठे थे इसप्रकारसे शेष शय्यापर विराजमान विष्णुभगवान्के निकट नरवाहनदत्त उनचारों के साथगया ठीक है (कस्यनाभ्युदयेहेतुर्भवेत्साधुसमागमः) साधुओंके समागमसे किसका कल्याण नहींहोताहै २७ तत्र देवपुत्रों के पूजनकरनेके उपरान्त नरवाहनदत्त ने विष्णुभगवान्की यहस्तुतिकी कि हे भगवन् लक्ष्मीरूपी कल्पलतासे आलिंगन कियेगये भक्तोंके कल्पवृक्ष अभीष्ट वरदायी आपको नमस्कारहै सज्जनों के मनरूपी मानसमें निवासकरनेवाले पराकाशमें विहार करनेवाले आपको नमस्कारहै सबसे अलग और सबके अभ्यन्तरमें रहनेवाले सर्व गुणातीत और सर्वगुणाधार आपको नमस्कारहै आपके नाभिकमलमें मृदुध्वनि से स्वाध्याय करतेहुए ब्रह्माजी भ्रमरके समान शोभितहोते हैं विद्वान् लोग पृथ्वीको आपके चरण आकाशको शिर दिशाओं को कर्ण सूर्य्य चन्द्रमाको नेत्र और ब्रह्माण्डको उदर वर्णनकरते हैं तेजोमय आपही से जाज्वल्यमान अग्निसे पतंगोंके समान सम्पूर्ण भूत उत्पन्नहोते हैं और प्रलयके समय सायंकालमें जैसे सम्पूर्ण पक्षी बसेरेके वृक्षमें जातेहैं उसीप्रकार सम्पूर्ण भूत आपहीमें प्रवेश करते हैं जैसे समुद्रसे लहरें उठती हैं उसी प्रकार आपहीके अंशोंसे सम्पूर्ण भुवनों के स्वामी उत्पन्नहोते हैं आप विश्वरूपहोकर भी रूपसे रहितहो आप सम्पूर्ण संसारको उत्पन्नभी करतेहो परन्तु क्रियासे रहितहो आप सम्पूर्ण संसारके आधारहो परंतु आपका कोई आधार नहींहै आपके तत्त्वको कोई नही जानसक्ताहै आपहीकी कृपासे सम्पूर्ण देवताओंको अनेकप्रकारके ऐश्वर्य्य प्राप्तहोते हैं इससे प्रसन्नहोकर मुझ शरणागतको भी कृपादृष्टिसे देखिये इसप्रकार उसकी स्तुतिको सुनकर विष्णुभगवान् ने उसे कृपादृष्टिसे देखकर नारद से कहा कि जाओ जो क्षीरसमुद्रसे उत्पन्नहुई श्रेष्ठ अप्सरायें मैंने इन्द्रको सौंपीथीं उनसबको मेरे कहने से उसीके स्थप्र च-

ढ़ाकर मेरे पास लेआओ भगवान्‌की यहआज्ञा पाके नारदजी इन्द्रके पास जाकर सम्पूर्ण अप्सराओंको रथपर चढाकर मातली समेत आये रथसे उतरकर प्रणाम करती हुई उनअप्सराओंको देखकर विष्णु भगवान्‌ने नरवाहनदत्तसे कहा कि हे पुत्र इनअप्सराओंको तुमलो विद्याधरों के भावी चक्रवर्ती तुमको मैंने यहदीहैं तुम इनके योग्य पतिहो और यहतुम्हारे योग्य स्त्री हैं क्योंकि श्री शिवजीकी कृपा से उत्पन्न हुए तुम कामदेवके अवतारहो यहसुनकर प्रसन्नहो कर नरवाहनदत्तके प्रणामकरनेपर विष्णुभगवान् ने मातलिसे कहा कि तुम नरवाहनदत्तको इनसब अप्सराओं समेत जिसमार्गसे यहकहे उसी मार्गहोकर इसके स्थानपर भेजआओ भगवान्‌के इसप्रकार आज्ञा देनेपर नरवाहनदत्त उनको नमस्कारकरके और अप्सराओंको लेकर देवपुत्रोंके साथ इन्द्र के रथपरचढ़ा और उसकी आज्ञासे मातलि नारिकेलि द्वीपमे रथको लाया वहाँ रूप सिद्धादिक चारों देवपुत्रोंने नरवाहनदत्तका तथा मातलिका बड़ा सत्कार किया तदनन्तर मैनाक वृषभादि चारो पर्व्वतोंपर नरवाहनदत्तने उनअप्सराओं के साथ रमण किया और वसन्तके आगमनसे प्रफुल्लित पुष्पोंके उद्यानोमें विहारकिया उनसम्पूर्ण देवपुत्रोंने उसे अपने २ उपवन दिखाकर कहा कि देखिये यहवृक्षोंकी मंजरी प्रफुल्लित पुष्परूपी नेत्रोंसे मानो आतेहुए अपने कान्त वसन्तको देखरही हैं देखिये हमारे जन्म क्षेत्रमें सूर्य्यकी किरणोंका सन्ताप न पहुंचे इसीलिये मानो प्रफुल्लित कमलों ने तड़ागको आच्छादित किया है देखो जैसे नीचधनवान्‌को साधूलोग त्यागकर देते हैं उसीप्रकार सुगन्ध रहित कनेरके पास जाकरभी भ्रमर लौट आतेहैं देखिये किन्नरियोंके गीतों से कोकिलाओंके कूजनेसे और भ्रमरोंके गुंजार शब्दोंसे ऋतुराज वसन्तका संगीतगान होरहाहै इत्यादि वचन कहकर देवपुत्रों ने नरवाहनदत्तको अपने २ उपवन दिखाके पुरों में लेजाके वसन्तका उत्सव दिखाया और पुरस्त्रियों के चरचरी गीत सुनाये इसप्रकारसे नरवाहनदत्त ने अप्सराओं समेत वहा के दिव्य ऐश्वर्य्यों का भोगकिया ठीक है (सुकृतोयत्रगच्छन्तितत्रैपामृद्धयोग्रतः) पुण्यात्मा लोग जहां२ जाते हैं वहां २ उनके आगे २ समृद्धियांभी जाती हैं इसप्रकार वहाँ तीनि चार दिन रहकर नरवाहनदत्त ने अपने मित्र उनचारों देवपुत्रों से कहा कि अब मैं अपनी पुरीको जाऊंगा क्योंकि मुझे अपने पिता के देखनेकी बड़ी उत्कण्ठाहै आप लोगभी चलकर उसपुरी को कृतार्थ कीजिये यहसुन कर उन्होंने कहा कि उसपुरी के सारांशरूप आपकोही जब हमने देखलिया तब और वहाँ देखने को क्यारहा जब आपको विद्या प्राप्तहोय तब हमारा स्मरण कीजियेगा इसप्रकार उनके वचन सुनके और आज्ञालेकर नरवाहनदत्तने मातलिसे कहा कि जिस दिव्यतड़ाग के निकट गोमुखादिकहैं उसी मार्ग से मुझेलेचलो उसकी यह आज्ञापाकर मातलि अप्सराओं समेत नरवाहनदत्त को रथपरचढाकर उसी दिव्यतड़ागके निकट ले आया वहां नरवाहनदत्त ने गोमुख से कहा कि शीघ्रही रथपरचढके कौशाम्बी को आओ वहीं मैं तुम से सब वृत्तान्त कहूंगा उनसे यह कहकर नरवाहनदत्त वहां से शीघ्रही इन्द्रके रथके द्वारा कौशाम्बी में आया और वहां आकाश से उतरकर मातलिको विदाकरके अप्सराओं को साथलेकर अपने मंदिरमें गया और अप्सराओं को वहीं बैठालकर उसने राजमंदिर मे जाके अपने

पिता राजा उदयन् तथा अपनी माता वासवदत्ता और पद्मावती के चरणों में प्रणामकिया इतनेही में रथपरचढ़ाहुआ गोमुख भी प्रलंबबाहु समेत वहां आगया तब नरवाहनदत्त ने अपने पिताकी आज्ञा से सब मन्त्रियों के आगे श्वेतद्वीपका सब वृत्तान्त कहा उस वृत्तान्तको सुन कर सब ने कहा (ददातितस्य कल्याण मित्रसंयोगमीश्वरः इच्छत्यनुग्रहंयस्य कर्त्तुमुक्तकर्मणः) परमेश्वर जिस पुण्यात्मापर अनुग्रह कियाचाहताहै उसको सन्मित्रों से संयोगकरादेताहै इतने में गोमुख उन अप्सराओं को वत्सराजके आगे प्रणामकराने को लाया देवरूपा, देवरति, देवमाला तथा देवप्रियानाम उन चारों अप्सराओं को देख कर उदयन् ने बहुतप्रसन्नहोके नरवाहनदत्तपर विष्णुभगवान् की कृपाजानकर बड़ा उत्सवकिया उस समय कहाँ अप्सरा और कहाँ मैं नरवाहनदत्त ने मुझे पृथ्वी में ही स्वर्गबनादिया यह विचारकर मानो आनन्द से कौशाम्बीपुरी चंचल पताकारूपी अपने हाथों को फैला २ कर नाचनेलगी इसके उपरान्त नरवाहनदत्त अपने पिता के यहां से अपनी सम्पूर्ण रानियों के पास गया वह चारही दिन में अत्यन्त दुर्बलहोगई थीं उनकी विरहवेदना को सुनकर नरवाहनदत्त उनके प्रेमपर अत्यन्त प्रसन्नहुआ उससमय गोमुख ने वनवास में घोड़े तथा रथकी रक्षाकरनेवाले प्रलंबबाहुकी सिंहादि जीवों के मारनेकी बड़ी प्रशंसाकी इत्यादि अन्य अनेक वार्त्ताओं को सुनताहुआ अपनी रानियों के मनोहररूप को देखता हुआ मधुर वचनों से हास्यकरताहुआ और मद्यपान करताहुआ नरवाहनदत्त कुछ दिन सुखपूर्वक वहीरहा ८२ एकसमय अलंकारवती के मन्दिर में बैठे हुए नरवाहनदत्त ने बाहर नगाड़ेका शब्दसुन कर अपने सेनापति हरिशिख से पूछा कि यह अकस्मात् नगाड़ोंका शब्द क्यों होरहाहै यह सुनकर उसने बाहरजाके सम्पूर्ण वृत्तान्त जानके भीतरआकर कहा कि रुद्रनाम एक वैश्य इस नगरी में रहताहै वह यहां से रोजगारकरने के लिये सुवर्णद्वीप में गयाथा लौटतेसमय जहाज के टूटने से उसका सम्पूर्ण धन नष्टहोगया केवल वही अकेला बचकर समुद्र के किनारे बहकर आगया आज उसे छः दिन इस नगरी में आयेहुए व्यतीतहुए इन दिनों में भाग्यवश से अत्यन्त दुःखी रुद्र को अपनेही बाग में बहुतसी निधि मिलगयी यह बात उसके गोत्री भाइयों ने वत्सराज उदयन् से कहदीनी और आज उसने आपही राजद्वार में आकर महाराज से कहा कि मुझे बहुत से रत्नोंसमेत चार करोड़ अशर्फियां अपने बाग में मिली हैं यदि आपकी आज्ञाहोय तो लाकर आप के अर्पणकरूं उसके यह वचन सुनकर वत्सराज ने कहा कि परमेश्वर ने तेरा समुद्र में सब धन नष्टहुआ देखके तुझे दीनजानकर यह धन दियाहै इसे कौन मूर्ख लेनाचाहेगा जाओ यथेच्छभोगकरो महाराजकी यह आज्ञापाकर वह वैश्य उनको प्रणामकरके हर्ष मे नगाड़े बजवाताहुआ अपने घरको जा रहाहै हरिशिख के यह वचन सुनके नरवाहनदत्त ने अपने पिता के धर्मकी प्रशंसाकरके आश्चर्यपूर्वक अपने मन्त्रियों से कहा कि ब्रह्मा जब धनको हरता है तो पीछे से उसे देना क्यों है वह मानो मनुष्यों के उदय तथा हानि से क्रीड़ा किया करताहै यह सुनकर गोमुख ने कहा कि ब्रह्माकी ऐसीही गति है इसबातपर मैं आपको समुद्रशूरकी कथा सुनाताहूं राजा हर्षवर्म्मा के बड़े सुन्दर हर्षपुर नाम नगर में समुद्रशूर नाम बड़ा धनवान् कुलीन धर्मात्मा

धीर तथा सत्त्ववान् एक वैश्य रहताथा वह रोज़गार के लिये एकसमय जहाजपर चढ़कर सुवर्णद्वीप को चला, समुद्र में चलते २ जब सुवर्णद्वीप कुछ दूर बाक़ीरहा तब घोर मेघों से सम्पूर्ण आकाश आच्छादित होगया और प्रचण्डवायु चलनेलगी इससे समुद्रकी लहरों के द्वारा जहाज़ उछलनेलगा और समुद्रकी मछलियों की टक्करों से टूटगया जहाज के टूटजानेपर समुद्रशूर कमरबांध के समुद्र में कूदा और जैसेही भुजाओं के बलसे कुछ दूरतक पैरा वैसेही एक मृतक समुद्र में बहताहुआ उसे मिलगया उसपर चढकर वह अनुकूल वायु के द्वारा सुवर्णद्वीप में पहुँचगया वहां उतरकर उसने उस मरेहुए मनुष्य की कमर में बँधीहुई साढ़ी में एक गांठ देखी उस गांठ के खोलने से उसे एक रत्नजटित कण्ठा मिला उसे देखकर उसने अपने खोयेहुए धनको तुच्छ जाना और प्रसन्नतापूर्व्वक स्नान करके कलशपुर नाम नगर में पहुँचकर हाथ में उस कण्ठेको लियेहुए वह एक देवमन्दिर में गया वहां छाया में बैठने से थकेहुए उसको भाग्यवश से निद्रा आगई उस समय अकस्मात् पुर रक्षकों ने वहां आकर उसके हाथमें कण्ठा देखकरकहा कि राजपुत्रीका जो कण्ठाखोयाथा वह यहीहै और इस का चुरानेवाला भी यहीहै बहुत दिनमें ढूंढनेपर मिलाहै यहकहकर वहलोग उसे जगाके राजाकेपास लेगये वहां राजाके पूछनेपर उस समुद्रशूर वैश्यने सम्पूर्ण सत्य २ वृत्तान्त कहदिया उस वृत्तान्त को सुनकरराजानेकहा कि यह मिथ्याबोलताहै निस्सन्देह यहचोरहै देखो यह वही कण्ठाहै यहकहकर जैसेही राजा सभासदोंको वह कण्ठा दिखानेलगा वैसेही उसको चमकताहुआ देखकर एकगिद्ध आकाश से उतरकर उसे लेगया तब अत्यन्त दुखीहोके शिवजीको शरणके लिये पुकारतेहुए उस वैश्यको मारने के लिये क्रोधकरके राजाने आज्ञादेदी उससमय यह आकाशवाणीहुई कि हे राजा इसेमतमारो यह हर्षपुरसे साधु समुद्रशूर नाम वैश्य तुम्हारे देशमें आयाहै जिसचोरने कण्ठा चुरायाथा वह पुररक्षकों के भयसे समुद्रमें गिरकर रात्रिके समय मरगया जहाजके टूटजाने से यह वैश्य उसीपर चढ़कर यहांआया और उसीकी कमरमें बँधीहुई साढी में से यहकण्ठा इसको मिलाथा इससे आप इस धर्मात्मा वैश्य को कुछ धनदेकर छोड़दीजिये इस आकाशवाणीको सुनकर राजाने उसे धनदेकर छोड़दिया उसधनको पाकर समुद्रशूर कुछ अन्य वैश्यों के साथ जहाजमें चढ़के समुद्रके पारआया वहांसे कई दिन चलकर एक दिन सायंकालके समय वह सम्पूर्ण वणियों के साथ किसी वनमे टिका वहां रात्रिके समय सब के सोजानेपर केवल समुद्रशूरही जागतारहा उससमय बहुतसे डांकूचोर वहांआकर सबको लूटनेलगे तब समुद्रशूर भागकर छिपकर एक बर्गदके वृक्षपर चढ़गया और सब धन लेकर चोरों के चलेजानेपर वह भयसे रात्रिभर उसी वृक्षपर बैठारहा प्रातःकाल उसवृक्षके ऊपर उसे पत्तों के बीचमें दीपककीसी जोति दिखाईदी तब आश्चर्य्य से वहां चढकर एकगिद्धके घोंसले में बहुतसे रत्नजटित आभूषण उसको मिले उसमें वह कण्ठाभी था जो उसने सुवर्णद्वीपमें पायाथा और जिसे एक गिद्ध हरलेगयाथा उन सम्पूर्ण आभूषणोंको लेकर समुद्रशूर वृक्षसे उतरकर क्रमसे आनन्दपूर्व्वक अपने हर्षपुरमें पहुंचा और वहां उन आभूषणों के अमितधनसे अन्य धनकी अभिलाषा छोड़कर अपने मित्रों के साथ सुखपूर्व्वकरहा

पहले समुद्रमें गिरना, सबधनका नष्टहोजाना फिर मुर्देपर चढ़कर समुद्रके पार आकर कण्ठेका मिलना, फिर उसी के द्वारा निष्कारणवधकी आज्ञा फिर आकाशवाणी से प्रसन्नहुए राजासे धनका मिलना वहां से समुद्रपार आकर मार्ग में चोरों के द्वारा सबधनका नाश और अन्तमें वृक्षपरसे अमित धनका मिलना यह ब्रह्माकी विचित्रचेष्टाहै (सुकृतीचानुभूयैवदुःखमप्यश्नुतेसुखम्) पुण्यात्मालोग दुःख का अनुभवकरके भी सुखको प्राप्तहोतेहैं गोमुखसे इसकथाको सुनकर नरवाहनदत्त ने उठकर स्नानादिक आह्निक किया १३६ दूसरे दिन सभामें बैठेहुए नरवाहनदत्तके पास आकर बाल्यावस्थाके मित्र समरतुंगनाम राजपुत्रने कहा कि हे स्वामी संग्रामवर्षनाम मेरे गोत्रीभाईने वीरजितआदिक चार राजपुत्रोंको साथलेकर मेरादेश नष्टकरदिया अब मैं जाकर उनपांचों को पकड़ेलाताहूं आपको पहलेहीसे विदित करानेको मैं आयाथा यह कहकर वह चलागया तब नरवाहनदत्त ने उसके पास थोड़ी सेना जानके और उसके शत्रुओं के पास बहुतसी सेनाजानकर अपनी सेना उसकी सहायताके लिये दी उस सहायताको न लेकर वह अपनीही भुजाओं के बलसे उनपांचोंको जीतकर बांधके नरवाहनदत्तके पास लाया उस विजयीको देखके नरवाहनदत्तने उसका बड़ासत्कारकरकेकहा कि विषयों (देश और लौकिक भोग) के आक्रमण करनेवाली सबल इन्द्रियोंके समान पांच शत्रुओंको जीतकर इसने अपना पुरुषार्थ सिद्धकिया यह सुनकर गोमुख ने कहा कि जो आपने इसी प्रकारकी राजा चमरबालकी कथा न सुनीहोय तो सुनिये मैं कहताहूं हस्तिनापुर नाम नगरमें चमरबालनाम एक राजाथा उसके पास बहुतसा खजाना और अत्यन्त सेनाथी उसके समरबलादिक पांचगोत्री राजा शत्रुथे उन सबों ने मिलकर एकसमय यह विचार किया कि यह चमरबाल सदैव हमलोगोंमें से एक२को क्लेश दिया करताहै इससे हमपांचोंको मिलकर इसे जीतनाचाहिये यह सलाहकरके उन पांचों ने उस अकेले के जीतने के लिये ज्योतिषीको बुलाकर लग्नपूछी ज्योतिषी ने शुभ लग्न न पाकर और बहुतसे अशकुन देखकर उनसेकहा कि इस वर्षमें आपलोगोंके लिये कोई उत्तम लग्न नहीं है और जो साधारण लग्न में जाइयेगा तो आपकी विजयनहींहोगी और चमरबालकी समृद्धि देखकर आपलोगोंको ईर्ष्या क्यों होती है लक्ष्मीका फल भोगहै वह उससे भी अधिक आपलोगोंको प्राप्तहै इससे ईर्ष्या न कीजिये इस विषयपर मैं आपलोगोंको दो वैश्योंकी कथासुनाताहूं कौतुकपुरनाम नगरमें बहुसुवर्णनाम यथार्थ नाम वाला राजाथा उसके एकयशोवर्मानाममंत्री सेवकथा राजानेदानीहोकरभी उसेकभीकुछ नहींदिया और जब२वह राजासेमांगताथा तबतब राजासूर्य्यकीओर हाथकरके कहताथा कि मैं तो देनाचाहताहूं परन्तु यह भगवान् नहीं चाहते कि मैं तुमको कुछदेऊं राजाके यह वचन सुनकर यशोवर्मा अवसर ढूंढ़ताहुआ एक दिन सूर्य्यग्रहणके समय दान करतेहुए राजासे उसने कहा कि जो सूर्य्य आपमे मुझे कुछ नहीं लेनेदेते हैं उनको आज वैरीने पकड़ रक्खाहै इससे आप मुझे जोकुछ चाहिये सो दीजिये यह सुनकर राजाने हँसकर उसे बहुतसा सुवर्ण तथा अनेक वस्त्रादिये थोड़े दिनोंमें उस धनको खापीकर और फिर राजासे कुछ न पाकर खिन्नहुआ यशोवर्मा अपनी स्त्रीके मरजानेपर विन्ध्यवासिनीकोगया वहां जाके

उसने यह विचारकरके कि इसनिरर्थक जीतेहुए भी मरेहुएके समान मेरे शरीरसे क्या प्रयोजनहै यातो मैं इस शरीरको भगवतीके आगे त्यागदूंगा वा यथेच्छवरलूंगा यह निश्चय करके वह विन्ध्यवासिनी के आश्रम मे कुशाके आसनपर निराहारहोके घोरतप किया तपसे प्रसन्नहुई भगवती ने प्रसन्न होकर स्वप्नमें उससे कहा कि हे पुत्र मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहूं वताओ मैं तुमको अर्थश्रीदूं या भोगश्रीदूं यह सुनकर यशोवर्मा ने कहा कि मैं इन दोनोंका भेद अच्छीतरहसे नहीजानताहूं तव भगवतीने कहा कि तुम्हारे देशमें जो अर्थवर्मा और भोगवर्मानाम दो वैश्यहैं उनकीलक्ष्मी जाकर देखो उनमें से जिसकी लक्ष्मी तुम्हें अच्छीलगे वही आकर मुझसे मांगना यह सुनकर यशोवर्मा जगकर प्रातःकाल पारण करके कौतुकपुर नाम अपने देशमें आया १६७ वहां आकर वहपहले सुवर्ण तथा रत्नादिके व्यवहारसे असंख्यधनके उपार्जन करनेवाले अर्थवर्मा के घरमें जाकर उसकी सम्पूर्ण संपत्तिको देखताहुआ उसके पास गया अर्थवर्माने उसका वड़ा आदरसत्कार करके उसे घृत सहित मांसके वहुत उत्तम २ भोजन करवाये और आप दो तोले घी सत्तू थोड़ासा भात तथा थोड़ासा मांसका रसखाया उसके वहुत थोड़े भोजनको देखकर यशोवर्माने पूछा कि साहजी क्या तुम इतनाही खातेहौ यह सुनकर उसने कहा कि आज तुम्हारे साथके कारण थोड़ासा मांस तथा भात और दो तोले घी खालियाहै रोज तो मैं एक तोले घी तथा केवल सत्तू खाताहूं क्योंकि इससे अधिक मुझ मन्दाग्नि वालेको पचताही नहीं है यह सुनकर यशोवर्मा ने अपने चित्तमें अर्थवर्माकी व्यर्थ लक्ष्मीकी वड़ी निन्दाकी तदनन्तर रात्रिके समय अर्थवर्मा ने यशोवर्माको दूधभात खिलवाया और आप केवल चारपैसेभर दूधपिया इसके उपरान्त अर्थवर्मा और यशोवर्मा दोनों एकही स्थानमें जुदे २ पलँगोपर सोये अर्धरात्रिके समय यशोवर्मा ने स्वप्नमें देखा कि थोड़ेसे भयंकर पुरुप दंडों को हाथमे लियेहुए वहां आये और तूने एकतोले घी मांस भात तथा चार पैसेभर दूध रोजसे अधिक क्यों खाया यह कहके अर्थवर्माके पैरपकड़कर खींचके लाठियोसे मारनेलगें और जितना उसने अधिक भोजन कियाथा वह सव उसके उदरसे निकालकर लेगये यह स्वप्न देखकर जैसेही यशोवर्मा उठा वैसेही अर्थवर्माके पेटमें शूलउठा और सेवकोंके द्वारा उदर मलवानेसे उसको वमन होगया वमन से जव उसका शूल शान्त होगया तव यशोवर्माने शोचा कि इस अर्थश्रीको धिक्कारहै जिसका भोग ऐसा कठिनहै इसका तो न होनाही अच्छाहै यह शोचकर यशोवर्मा वह रात्रि वहीं व्यतीत करके प्रातःकाल अर्थवर्मा से पूछकर भोगवर्माके यहां गया भोगवर्मा ने उसका वड़ा अतिथि सत्कारकरके कहा कि आज आप हमारेही यहां भोजन करियेगा उसके यहां आभूषण वस्त्र तथा गृहके सिवाय और कुछ भी सम्पत्ति नथी उसने उसी समय किसी अन्यसे धन उधार लेकर किसी दूसरेको उधार देदिया उसी व्यवहारमे उसको थोड़ीसी अशर्फी मिली वह अशर्फियां उसनेअपने नौकरके हाथ अपनी स्त्रीके पास भोजनकी सामग्री इकट्ठी करनेको भेजी इतनेही में इच्छाभरणनाम उसके एक मित्रने आकर उससे कहा कि चलो भोजन तैयार है आज हमारेही यहां भोजन करना होगा सव मित्र वैठेहुए तुम्हारी प्रतीक्षा कररहे हैं यह सुनकर भोगवर्मा ने कहा कि आज हमारे यहां

एक महमानआएहैं इससे मैं नहीं आसक्ता यह सुनकर उसने कहा कि आप अपने साथ इनको भी लेचलिये क्या यह हमारे मित्र नहीं है उसके इसप्रकार आग्रह करनेपर भोगवर्मा ने यशोवर्माको साथ लेजाकर वहीं भोजन किया और वहां से आकर सायंकालके समय अपने यहां दिव्य भोजन यशोवर्माको करवाये और आपभी किये फिर रात्रिके समय उसने अपने सेवकोंसे पूछा कि आज रात्रिभर को हमारे यहां कोई वस्तु जलपानके लिये है कि नहीं सेवकोंने कहा कि नहीं है सेवकोंके वचन सुनकर भोगवर्मा आजपिछली रात्रिमें मैं जलकैसे पियूंगा यहकहकर सोरहा और यशोवर्माभी उसीके पाससोया अर्द्धरात्रि के समय यशोवर्माको यह स्वप्न दिखाईदिया कि कुछ पुरुष हाथोंमें डंडालियेहुए अन्य पुरुषो को मार २ कर यह कहरहे हैं कि तुम कहां रहे तुमने आजभोगवर्मा के लिये जलपानको कोई वस्तु क्यों नहीं लाए तव उनपुरुषोंने हाथ जोड़केकहा आजक्षमा कीजिये फिर ऐसाअपराध कभी न होगा यहसुन कर वह दंडधारी पुरुष उन्हें साथलेकर चलेगये यह स्वप्न देखकर यशोवर्माजगकर शोचनेलगा कि भोगवर्माकी यह भोगश्री वहुतश्रेष्ठहै परन्तु अर्थवर्मा की अत्यन्त वढ़ीहुई भी अर्थश्री भोगके विनाव्यर्थ है इसप्रकार विचारते २ उसने वह रात्रिव्यतीत करके प्रातःकाल भोगवर्मा से आज्ञा लेकर कुछदिन चल के विन्ध्यवासिनी जी के आश्रममें पहुंचकर कुशासनपर बैठकर फिर तपकिया तव भगवती ने उससे स्वप्न में कहा कि तुम भोगश्री लोगे अथवा अर्थश्री, भगवती के वचनसुनकर यशोवर्मा ने भोगश्री मांगी और भगवती उसे अभीष्टवर देकर अन्तर्द्धान होगई प्रातःकाल यशोवर्मा उठके पारण करके अपने घरको आया और भगवती की कृपासे प्राप्तहुई भोगश्री का सुखपूर्व्वक भोग करनेलगा इससे भोगके योग्य थोड़ी लक्ष्मी भी श्रेष्ठहै परन्तु भोगरहित वहुतभी सम्पत्ति व्यर्थ है तो आपलोग राजा चमरवालकी कृपण सम्पत्तिके लिये क्यों अभिलाषा करतेहो आपलोगों को दान भोग युक्त अपनीही सम्पत्तिमें सन्तोष करना चाहिये यात्राकी कोई शुभलग्न नहीं है इससे आप लोगोंको उसपर चढ़ाई करने से जय नहीं प्राप्त होगी उस ज्योतिषी के यह वचनसुनकर भी वह पांचों राजा ईर्षासे सेना समेत चमरवालसे युद्ध करनेको गये उन लोगोंको सीमापर आया हुआ सुनकर राजा चमरवालने स्नान करके पापनाशक वरदायक श्रीशिवजी की अड़सठ नामोंसे स्तुति करके और हे राजा तुम युद्धकरो तुम्हारी जयहोगी इस आकाशवाणी को सुनकर अपनी सेनालेके शत्रुओंको आगे जाके रोका शत्रुओंकी सेनामें तीसहजार हाथी तीनलाख घोड़े तथा एक करोड़ पैदलथे और इसकी सेना में दशहजारहाथी एकलाख घोड़े तथा वीसलाख पैदल थे दोनों सेनाओं के परस्पर महायुद्ध प्रवृत्तहोनेपर राजा चमरवाल ने आपही युद्धमें जाकर शत्रुओंकी इतनी सेनामारी कि जिससे हाथी घोड़े तथा सव पैदलोंके ढेरहोगये और इसप्रकारसेनाको मारकर राजा समरवरको शक्तिसेमारके अपने पाशसे बांध लिया फिर युद्ध करने को आयेहुए राजा समरशूरको भी वाणसे मारकर पाशमें वांधलिया और राजा समरजितको वीरनाम प्रतीहार जीतकर पाशमें वांधलाया और देववलनाम सेनापति प्रतापचन्द्रनाम राजा को वांधकर उसके पास लेआया इनचारों के वन्धनमें पड़जानेपर प्रतापसेन नाम पांचवां राजा

क्रोधकरके चमरवालके साथ युद्ध करनेलगा चमरवालने उसके बाणों को काटकर मस्तकमें तीनबाण मारके उसेभी बांधलिया इसप्रकार पांचों राजाओं को बांधकर उनसब की अन्यसेना के भागजानेपर राजा चमरवालने बहुतसे रत्न सुवर्ण तथा बहुतसी रानियां पाई उन रानियों में राजा प्रतापसेनकी पटरानी यशोलेखा बड़ी स्वरूपवती थी उसको उसने अपने नगरमें आके अपनीरानी बनालीनी क्योंकि उसने उसको युद्धधर्म में जीता था और उस यशोलेखा ने भी इसने मुझे युद्धमें जीतकर पायाहै इस विचारसे उसे स्वीकार करलिया ठीकहै (काममोहप्रवृत्तानां शबलाधर्मवासना) कामसे मोहको प्राप्त हुए प्राणियों की धर्म्मवासनाभी विचित्र होती है इसके उपरान्त राजाने वीरनाम प्रतीहारको तथा देवबलनाम सेनापति को रत्नोंसे पूर्ण करदिया और यशोलेखा के कहने से उनपांचों राजाओंको छोड़कर उन्हें उनका राज्य देदिया और वह सब नम्र होकर अपने २ देशको गये तब राजा चमरवाल बहुत कालतक अकंटक पृथ्वीका राज्य करतारहा और अप्सराओं से भी अधिक रूपवती शत्रुओं के जय की पताकारूप यशोलेखाके साथ राज्य सुखका भोग करतारहा इसप्रकारसे अपने तथा परायेस्वरूपके नहीं जाननेवाले द्वेषसे व्याकुल क्रोधसे युद्ध करतेहुए बहुतसे शत्रुओं को भी एकहीधीरवीर पुरुष युद्ध में विजय करलेताहै गोमुखसे इस यथार्थ कथाको सुनकर नरवाहनदत्तने बहुत प्रसन्नहोके सभासे जाकर अपना नित्यका आह्निक कर्मक्रिया और वह रात्रि अपनी प्रियाओं के साथ ऐसा मनोहर गान करके व्यतीत की कि जिसे सुनकर आकाशसे स्थित श्री सरस्वती जीने अत्यन्त प्रसन्न होके उसे यह वरदान दिया कि तुम्हारा इनप्रियाओं के साथ बहुत काल तक सम्बन्ध रहेगा २४१ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांअलंकारवतीलम्बकेचतुर्थस्तरंगः ४ ॥

इसके उपरान्त दूसरेदिन अलंकारवती के मन्दिर में बैठे हुए नरवाहनदत्त के पास सम्पूर्ण मन्त्रियों के आगे अन्तःपुरके कञ्चुकी (ख्वाजेसराह) का भाई मरुभूतिका सेवक आकर बोला कि हे महाराज मैंने दो वर्ष मरुभूतिकी सेवाकी है उसमें इन्हों ने मुझे तथा मेरी स्त्री को भोजनाच्छादन दिया परन्तु जो इन्होंने मुझे पचास अशर्फ़ी वर्षौड़ी देना कहा था वह अभी तक नहीं दिया और मैंने जो बहुत मांगा तो मेरे लातेमारीं इससे मैं आपके फाटकपर धन्ने बैठता हूं जो आप इस में कुछ विचार न कीजियेगा तो मैं अग्नि में जलजाऊंगा उसके यह वचन सुनकर मरुभूति ने कहा कि मुझे इसकी अशर्फीदेनी है परन्तु अभी मेरे पास नहीं हैं यहसुनकर सबके हँसनेपर नरवाहनदत्त ने मरुभूति से कहा कि यह क्या तुम्हारी मूर्खताहै यह बुद्धि तुम्हारी अच्छी नहीं है जाओ अभी इसे सौ अशर्फी देदो स्वामी के यहवचन सुनकर मरुभूति ने उसीसमय लज्जितहोके सौ अशर्फी लाकर उसे देदीनी तब गोमुख ने नरवाहनदत्तसे कहा कि इसमें मरुभूतिका कोई दोष नहीं है ब्रह्माकी सृष्टि में मनुष्यों की विचित्र चित्तकी वृत्तियां होती हैं क्या आपने चिरदाता नामराजा तथा उसके प्रसंगनाम सेवककी कथा नहीं सुनी है कि चिरपुरनाम नगरमें चिरदाता नाम एकराजाथा उस राजाके सम्पूर्ण परिकरवाले महादुष्टथे एकसमय किसीदेशसे आयाहुआ प्रसंगनाम शूद्र अपने दो मित्रोंकेसाथ राजाके

यहां नौकरहुआ उसे पांचवर्ष सेवा करते २ व्यतीतहुए परन्तु राजाने उत्सवादिक निमित्तों में भी उसे कुछ नहींदिया और उस सेवकने मित्रों के प्रेरणा करनेपरभी परिकरकी दुष्टतासे राजासे विज्ञापन करने का अवसर न पाया एकसमय उस राजाका बालक पुत्र मरगया तवसम्पूर्ण सेवक राजाको दुखीजानके उसके निकटगये उनमें से प्रसंगनाम सेवक अपने मित्रोंके निवारण करनेपर भी शोकसे व्याकुलहोकर राजासे बोला कि हे स्वामी हमने बहुत कालतक आपकी सेवाकरी और आपने हमें कुछ न दिया इतने पर भी,आपने नहीं दियाहै तो आपकापुत्रदेगा इस आशासे हमने आपकी सेवकाई नही छोड़ी अव भाग्यवशसे उसको भी परमेश्वरने हरलिया तो अव हमारा यहां कौन है हमजाते हैं यह कहकर और प्रणामकरके प्रसङ्ग अपने मित्रोंको साथ लेकर वहांसे चला तव राजाने यह बड़ेदृढ़ सेवकहैं क्योंकि पुत्रकी आशासे यह इतने दिनतक रहे इससे इनका त्यागनहीं करना चाहिये यह शोचकर उन्हें वुलवाकर इतना धनदिया कि वह दरिद्रसे निर्भयहोगये इसप्रकार से मनुष्यों के विचित्र स्वभावहोतेहैं देखिये राजाने समय पर तो नहीं दिया परन्तु असमयपर बहुतसा धनदिया २४ इस कथाको कहके गोमुख नरवाहनदत्तकी आज्ञासे फिर यह कथा कहनेलगा कि पूर्व्वकालमें श्रीगङ्गाजी के तटपर बड़ा सुन्दर पवित्र एककनकपुर नाम नगरथा उसनगरमें वासुकि नाम नागेन्द्र के प्रियदर्शन नाम पुत्रसे यशोधरानाम राजपुत्रीमें उत्पन्नहुआ महायशस्वी कनकवर्ष नाम राजाथा वह यशकालोभीथा धनका नहीं पापसे डरताथा परन्तु शत्रुओं से नहीं परापवादमें मूर्खथा पर शास्त्रोंमें नहीं,थोड़ा कोपकरनेवाले अधिक दयालु महादानी शूर तथा धीर उसराजाका ऐसा स्वरूपथा जिसे देखतेही स्त्रियां कामसे व्याकुलहोजाती थीं एकसमय शरदऋतु में बड़ा उत्सव करके राजा कनकवर्ष विहार करनेकेलिये कमलों की सुगन्धिसे सुगन्धित वायुसे शीतल चित्रमहलमेंगया और वहां के चित्रोंको देखकर प्रशंसा करने लगा उसीसमय प्रतीहारने आकरकहा कि हे स्वामी विदर्भ देशसे आयाहुआ रोलदेवनाम चित्रकर अपने को चित्रकर्म में सबसे श्रेष्ठ वताताहै और यही लिखकर उसने फाटकपर पत्र चिपकादियाहै यह सुनकर राजाने कहा कि उसे मेरेपास बुलालाओ राजाकी यह आज्ञापाकर प्रतीहार उसे लिवालाया रोलदेवने वहां आकर किसी सुन्दर स्त्रीके स्तनोंपर शरीर का भारदेकर लेटेहुए और एकहाथमें तांबूल लेतेहुए राजा कनकवर्षको देखा औरप्रणामकरके कहा कि हे स्वामीमैंने आपके चरणारविन्दों के दर्शनों की इच्छासे पत्र लिखकरलगाया था चतुरताके अभिमान से नहींलगाया था इससे मेरे अपराध को क्षमाकीजियेगा अव यह आज्ञाकीजिये कि चित्रमें कौनसा रूपलिखकर आपको दिखाऊं जिससे मेरी चित्रशिक्षा सफलहोय यहसुनकर राजानेकहा कि चाहौ सो लिखकर मेरे नेत्रोंको आनन्द दो तुम्हारी चतुरतामें मुझे संदेहनहीं है राजाके इसप्रकार कहनेपर उसकेपास बैठीहुई एकस्त्रीनेकहा कि राजा काही चित्रवनाओ अन्यकुरूपों से क्या प्रयोजनहै यहसुनकर चित्रकरने प्रसन्नहोकर राजाकाही चित्र लिखा और सबकोदिखाया उसचित्रमें उन्नतनासिका दीर्घ तथा रक्तनेत्र बड़ाललाट काले तथा घूंघरवाले बाल बाणोंके व्रणोंसे शोभित विस्तीर्ण वक्षस्थलदिग्गजोंकी सूंड़केसमान मनोहर भुजा पराक्रम

से जीतेगये सिंहों से मानों भेटकीगई मुट्ठी में समानेवाली सूक्ष्म कमर यौवनरूपी हाथी के बांधने के खंभ के समान सुंदर जंघा और अशोक के पल्लवों के समान सुंदरचरण इत्यादिक सम्पूर्ण अंगोंको यथायोग्य देखकर सब लोगों ने उस चित्रकरकी बड़ी प्रशंसाकी और कहा कि अकेले राजाकी शोभानहीं होती है इसमें आप इनचित्रोंमें लिखीहुई स्त्रियों में से जिसे योग्य समझिये उसेभी इन्हीं के साथ लिखिये तो हमलोगों के नेत्र तृप्तहोंय यहसुनकर उसने उसचित्रको देखकरकहा कि इन बहुतसी स्त्रियोंमें से कोई भी स्त्री राजाके तुल्यनही है मैं जानताहूं कि सम्पूर्ण पृथ्वी में इनके समान कोई स्त्री न होगी किन्तु एक राजपुत्री इनके समान है उसका वर्णन मैं आप लोगों से करताहूं विदर्भदेश में कुंडिन नाम नगरका देवशक्तिनाम बड़ा प्रतापी राजाहै उसके अनन्तवतीनाम रानी में मदनसुन्दरी नाम एक कन्याहुई जिसके रूपको वर्णन करने के लिये मुझसरीका एक जिह्वा से कैसे वर्णन करसक्ता है किन्तु इतना मैं कहसक्ताहूं कि ब्रह्मा उसे बनाकर उसके समान स्त्री अनेक युगों में भी न बनासकेंगे वही कन्यारूप लावण्य विनय अवस्था तथा कुलसे तुम्हारे राजाके सदृश है एक समय उसने चेरीकेद्वारा मुझे अपने मन्दिरपर बुलाभेजाथा वहां जाकर मैंने उसे कमलपत्रों की शय्या पर सम्पूर्ण शरीरमें चन्दनकालेपकियेहुए देखा उसके पांडु तथा दुर्बल शरीरसे कामज्वर लक्षितहोता था केलेके पत्तोंको डुलानेवाली अपनी सखियोंसे वह कहरहीथी कि हे सखियो चन्दनकेलेप तथा केले केपत्तोंके डुलानेसे कुछ प्रयोजन नहीं है व्यर्थ श्रम न करो यह शीतलहोकर भी मुझ अभागिनीको जलातेहैं इसप्रकारसे सखियोंको निवारण करतीहुई मदनसुन्दरीकी वह दशादेखकर मैं सन्देह युक्तहोकर प्रणाम करके उसके आगे बैठगया ६६ तब उसने कंपतेहुए हाथसे पृथ्वीमें एक मनुष्यकी आकृति बनाकर मुझसे कहा कि इसका चित्रबनादो उसकी आज्ञासे मैंने उसका चित्र लिखकर शोचा कि क्या यह साक्षात् कामकाचित्र इसने मुझसे लिखवायाहै अथवा इसके हाथमें पुष्पका धनुष नहीं है इससे कोई युवाराजाहै इसे इसने कहीं देखाहोगा या सुनाहोगा इसीकेलिये यह कामसे पीड़ितहोरही है अब मुझे यहां से भाग चलना चाहिये क्योंकि इसका पिता देवशक्ति बड़ा क्रोधी है ऐसा न होय कि मेरे ऊपर कोई अपराधलगादे यह विचारकर उस राजकन्याको प्रणाम करके मैंने बाहरआकर उसके परिजनोंसे सुना कि आपका यश सुनकर उसे अनुराग उत्पन्नहुआहै इससे मैं उस राजकन्याका चित्रलिख कर आपके पास शीघ्रही आयाहूं और आपका स्वरूपदेखकर मुझे निश्चयहोगयाहै कि उसने आपही का चित्र मुझसे बनवायाथा उसकाचित्र मैं बारम्बार नहीं लिखसक्ताहूं इससे मैं आपके चित्रके पास उसकाचित्र नहीं लिखताहूं रोलदेवके यह वचन सुनकर राजाने कहा कि अच्छाजानेदो जो चित्र तुम वहांसे लिखलायेहो वही मुझे दिखाओ तब रोलदेवने थैलीमेंसे वह चित्र निकालकर राजाको दिया चित्रमें उस मदनसुन्दरी के रूपको देखतेही राजाकनकवर्ष कामके वशीभूतहोगया और उस चित्रकर को बहुतसाधनदेकर चित्रलेकर अपने मन्दिरमें गया वहां कामदेव अपने रूपकेलेने की ईर्ष्यासे मानों उसको पीड़ादेनेलगा राजाने पहले अपने रूपसेलुब्धहुई स्त्रियोंको काम पीड़ादीथी उसीका उसको

मानों सौगुनाफलमिला तब राजाने विरहसे अत्यन्त पीड़ितहोके अपने मन्त्रियोंसे सलाहकरके राजा देवशक्तिके पास कन्या मांगनेकेलिये संगमस्वामीनाम समय तथा कार्य्यके जाननेवाले कुलीन ब्राह्मणको दूतताके निमित्तभेजा संगमस्वामी ने वहुतसा परिकरलेकर विदर्भदेशके कुंडिननाम नगरमें जाकर राजा देवशक्तिसे अपने स्वामीकेलिये उसकी कन्यामांगी संगमस्वामी के वचन सुनकर राजा देवशक्ति ने राजाकनकवर्ष वड़ा कुलीन तथा धनवान् है इससे वह हमारी कन्याके योग्यवरहै ऐसा विचारकर उसे अपनी कन्यादेना स्वीकार करलिया और मदनसुन्दरीको सभामें बुलाकर उसका नृत्य संगमस्वामीको दिखाकर आदर पूर्व्वक उसके साथ अपनादूत करके उसे विदाकिया उसदूतको साथ लेकर संगमस्वामीने राजाकनकवर्ष के पास आकर कहा कि हे स्वामी आपका कार्य्य सिद्धहोगया और उसदूतने कहा कि हेस्वामी लग्नका निश्चयकरके विवाहके निमित्त कुंडिननगरको चलिये दूतके यह वचन सुनकर राजा कनकवर्ष लग्नका निश्चयकरके विवाहकरनेकेलिये सम्पूर्ण परिकरसमेत कुंडिनपुरको चला और मार्गमें वनोंमें मिलेहुए वहुतसे हिंसकजीव, सिंहादिकोंको मारताहुआ विदर्भदेश के कुण्डिनपुर में पहुंचा वहां राजा देवशक्ति नगर के वाहर आकर वड़े आदर पूर्व्वक सम्पूर्ण नगर में भ्रमण कराताहुआ उसको विवाहकी सम्पूर्ण सामग्रियोंसे भरेहुए राजमन्दिर में लेगया वहां उसदिन राजा कनकवर्ष अपने सम्पूर्ण परिकर समेत राजा देवशक्तिके ऐश्वर्य्यको भोगताहुआ विश्रामकरता भया दूसरे दिन देवशक्तिने अपनी मदनसुन्दरीनाम कन्याका विवाह कनकवर्षके साथ करदिया और वहुतसा दहेजमें धनदिया विवाहके उपरान्त राजा कनकवर्ष सातदिन वहां रहकर अपनी नवीनस्त्री को लेकर अपने नगरमें आया जगदानन्ददायी कौमुदी सहित चन्द्रमाके समान नवीनवधू सहित राजाके पुरमें आनेपर उस नगरमें वड़ा उत्सवहुआ तब राजमन्दिरमें आकर राजा कनकवर्ष ने अपने सब सेवकोंको वहुतसाधनदिया और रात्रिके समय शयनस्थानमें जाकर मदनसुन्दरी के साथ अपूर्व आनन्दका अनुभवकिया और उसको अपनी सम्पूर्ण रानियों में मुख्यकरदिया वह दोनों राजा रानी परस्पर नेत्रों से मुखारविन्दों को देखकर कामदेव के बाणों से कीलितसे होगये इसप्रकारसे मदनसुंदरी राजा को प्राणों से भी अधिक प्यारीहोगई १०६ एकसमय मानिनी स्त्रियों के मानरूपी मातंगका मारने वाला केशरकी पंक्तियों से युक्त वसन्तरूपी सिंह प्रकटहुआ उपवनों के समान पथिकोंकी स्त्रियोंके काम की पीड़ा से युक्त चित्तोंको कँपातीहुई मलयाचलकी पवनचलनेलगी वसन्त ने प्रफुल्लित आम्रलता रूपी धनुष में भ्रमरोंकी पंक्तिरूपी प्रत्यञ्चालगाकर कामका धनुष तैयारकिया कोकिला अपने मधुर शब्दों से मानों यह कहनेलगीं कि नदियों के प्रवाह वृक्षों के पुष्प तथा चन्द्रमाकीकला क्षीणहोकर फिर आजाती हैं परन्तु मनुष्योंकी युवावस्था क्षीणहोकर फिर नहीं लौटती इससे मान तथा कलहको छोड़कर अपनी २ स्त्रियों के साथ विहारकरो उससमय राजा कनकवर्ष अपनी सम्पूर्ण रानियों को लेकर उपवन में विहार करने को गया और वहां रानी मदनसुन्दरी के साथ वहुतकालतक विहार करके परिजनों के [illegible]हुए [illegible] से अशोककी शोभाको और सुन्दर स्त्रियों के गानों में कोकिला तथा भ्रमरोंकी ध्वनिको

छीन पटसम्पूर्ण रानियोंकेसाथ गोदावरीमें जलक्रीड़ाकरनेकोगया उसकी रानियोंने अपनेमुखोंसे उस नदीकेकमलोंको नेत्रोंसे उत्पलोंको स्तनोंसे चक्रवाकोंको और नितंवोंसे तटोंको विजयकरके तरङ्गरूपी भृकुटियोंसे क्रोध को प्रकटकरनेवाली उसनदीको अत्यन्त पीड़ितकिया उससमय जलविहारसे वस्त्रोंमें भी झलकते अंगवाली उनसबरानियोंको देखकर राजाकनकवर्षका चित्त उनमें अत्यन्त आशक्तहुआ वस्त्रोंके गिरपड़ने के कारण किसी रानीके खुलेहुए सुवर्णकुंभोंकेसमान स्तनोंपर राजा जलकेछींटेमारने लगा यह देखकर मदनसुन्दरी ईर्ष्या से क्रोधयुक्तहोके बोली कि अभी नदीको कितना क्लेशदोगे और यह कहकर जलसे निकलकर द्वितीयवस्त्र पहनके सखियों से प्रियके अपराधको कहतीहुई अपने मंदिरको गई तव राजा कनकवर्षभी उसके आशयको जानकर जलक्रीड़ाको छोड़कर उसी के मंदिरको गया वहां पिंजरों में बैठेहुए तोते मैनाओ से भी क्रोधकरके निवारण कियागया राजा भीतर जाकर क्रोधसे पीड़ित बायें हाथमें मुख कमलको रखकर उदासीनतासे बैठीहुई और निर्मल मोतियों के समान अश्रुओंको वहातीहुई अपभ्रंश भाषा के यह दो श्लोक (जइविरहोणसहिज्जइमाणो परिवज्जणीओ तेविरहोहिंअसहिज्जइमाणोपरिवड्ढणीओतेइअजाणिऊणणिउणं चिट्ठसुओलंविऊणइक्कदरं उहअत ड़दिष्पपाओमज्झणिवड़िओधुवंविणिस्सिहसि) हे हृदय जो तुम विरह नहीं सहसक्तेहो तो मान का त्यागकरना चाहिये और जो विरहको सहसक्तेहो तो मानको वढ़ाना चाहिये यह अच्छे प्रकार जानकर दोमेंसे एकका अवलंवन करो नहीं तो दोनो किनारों पर पैररखनेसे वीचमें गिरकर अवश्य नष्टहोजाओगे इसप्रकार से कहती हुई और क्रोधमें भी मनोहर प्रियाको देखकर लज्जा तथा भय सहित उसके पासगया और उसे मुख मोड़ेहुए जानके आलिंगन करके मधुर २ विनय युक्त वचनो से समझाकर प्रसन्न करनेलगा और उसके परिजनों के मुखसे व्यंग वचनोंको सुनकर अपनी निन्दा करके उसके पैरोंपर गिरपड़ा राजाको पैरोपड़ते देखकर वह मानों गलकर वहेहुए क्रोधके समान अश्रुओंसे उसको सींचती हुई उसके गले में लिपटगई तव राजा उसे प्रसन्न जानकर अत्यन्त प्रसन्नहोके वह दिन वहीं व्यतीत करके रात्रिके समय उसके साथ रमण करके सोगया उससमय राजाको यहस्वप्न दिखाई दिया कि कोई भयंकर स्त्री मेरे गलेसे माला तथा शिरसे चूड़ारत्न लेगई फिर एकअपूर्व वेताल आकर मुझ से वाहुयुद्ध करनेलगा और मैंने उसे पृथ्वी में पटकदिया फिर उसवेतालने मुझको पकड़कर समुद्र में ले जाकर छोड़दिया वड़े कष्टसे समुद्रके पार जाकर मैं ने फिर अपने गले में माला तथा शिर में अपना चूड़ामणि पाया इसस्वप्नको देखकर राजाने प्रातःकाल किसी क्षपणक (जैनीसाधू) से इसस्वप्नका फल पूछा तव उसने कहा कि यद्यपि आपसे कहना तो नहीं योग्यहै तथापि मैं कहताहूं कि वह जो आपने माला तथा चूड़ारत्नका हरणदेखा है सो रानी तथा पुत्रके साथ आपका वियोग है और जो फिर माला तथा चूड़ारत्न का मिलनाहै वही रानी तथा पुत्रसे आपका समागम होनेवाला है क्षपणकसे यह सुनकर राजाने कहा कि अभी तो मेरे पुत्र नहीं है प्रथम पुत्र तो मेरे होय फिर जो होगा सो होगा उसीसमय राजाने पुत्रके निमित्त वड़े यत्नकरनेवाले राजा दशरथकी कथा किसी ब्राह्मणसे सुनी

उसकथाको सुनके पुत्रकी चिन्तासे दिनको व्यतीत करके रात्रि के समय एकान्त में शय्यापरलेटेहुए राजाने द्वारको विनाखोलेही भीतर आईहुई एक सौम्य विनीतस्त्री देखी और आश्चर्य्य पूर्व्वक उठकर उसे प्रणामकिया उसने राजाको आशीर्वाददेकर कहा कि हे पुत्र मैं नागराजवासुकि की पुत्री तुम्हारे पिताकी बड़ी वहिन रत्नप्रभाहूं तुम्हारी रक्षाके निमित्त सदैव तुम्हारे निकट अलक्षित होकर रहतीहूं आज तुम्हें खिन्नदेखकर मैंने दर्शनदिये हैं क्योंकि मैं तुम्हें दुःखित नहीं देखसक्ती हूं अव तुम अपने दुःखका कारणवताओ उसनागिनके यहवचन सुनकर राजानें कहा कि हे अम्ब मैं धन्यहूं जिसपर तुम इतनीदया करतीहो मुझे पुत्र न होनेकादुःखहै जिसकेलिये बड़े २ राजर्षि दशरथादिकोंनें स्वर्गकेअभिलापसे अत्यन्त यत्नकियाहै उसकेलिये मुझसरीका क्यों न इच्छाकरे कनकवर्षके यह वचन सुनकर रत्नप्रभा नागिनीने कहा किइसका यह उपायहै कि तुमजाकर पुत्रके निमित्त स्वामिकार्त्तिकजीका आराधनकरो विघ्नकेलिये तुम्हारेशिरपर कुमार जलधारागिरेगी उसको तुम मेरे प्रभावसे सहलोगी क्योंकि मैं तुम्हारे शरीरमें प्रवेश करूंगी इससे तुम अन्य विघ्नोंकोभी जीतकर तुम अपने मनोरथोंको पाओगे यह कहकर वह सर्पिणी अन्तर्द्धान होगई और राजा प्रसन्नता पूर्व्वक रात्रिको व्यतीत करके प्रातःकाल मंत्रियों पर राज्यका भार सौंपकर स्वामिकार्त्तिकजी के स्थानमें जाकर उनको प्रसन्न करने के लिये घोर तप करनेलगा तव विघ्नके लिये असह्यकुमार जलधाराउसके शिरपर गिरनेलगी उसको उसने शरीरमें प्रविष्टहुई नागिनी के प्रभाव से सहलिया तव स्वामिकार्त्तिकजी ने विघ्नके लिये गणेशजी को भेजा गणेशजी ने उस जलधारामें महाभयंकर अजगर सर्पउसके ऊपर छोड़ा उस सर्प्प से भी राजाको निर्भय देखकर गणेशजी आपही आकर उसकेहृदयमें दांत मारनेलगे तव राजा कनकवर्ष उनको देवताओं से भी अजेय जानकर उनकी यह स्तुति करनेलगा कि हे विघ्नेश सम्पूर्ण सिद्धियों की निधि के कुंभरूप आपको नमस्कारहै हे लम्बोदर सर्पोंके आभूषण पहरनेवाले आपको नमस्कारहै हे गजानन लीला पूर्व्वक सूंड़मार के कमलको हिलाकर ब्रह्माको भी कंपायमान करनेवाले आपकी जयहोय हे शंकर प्रिय हे शरणागत वत्सल आपको विना प्रसन्नकिये देवता दैत्य तथा मुनीश्वरोंकोभी सिद्धियां नहीं प्राप्त होतीहैं घटोदर सूर्पकर्ण गणाध्यक्ष मदोत्कट पाशहस्त अम्बरीष जम्वक तथा त्रिशिखायुध इत्यादिक पापनाशक छयासठनामों से देवता लोगोंने आपकी स्तुतिकी है हे दयानिधे आपका स्मरण करने तथा स्तुति करने से युद्ध राजा द्यूत चोर अग्नि तथा सिंहआदिकोंकाभी भय नष्टहोजाताहै इत्यादिक वहुतसी स्तुतियोंसे राजापर प्रसन्नहुए गणेशजी ने कहा कि हे पुत्र तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्न हूं अव विघ्न नहीं करुंगा तुम्हारे पुत्रहोगा यहकहकर श्रीगणेशजी अन्तर्द्धान होगये तव स्वामिकार्त्तिकजी ने प्रकटहोकर राजासे कहा कि मैं तुमपर प्रसन्नहूं वरमांगो यह सुनकर राजाने प्रसन्नहोके कहा कि हे महाराज आपकी कृपासे मेरे पुत्र उत्पन्नहो यह सुनकर स्वामिकार्त्तिकजी ने कहा कि मेरेगणके अंश से तुम्हारे पुत्रहोगा और उसका हिरण्यवर्ष नाम होगा यह कहकर स्वामिकार्त्तिकजी ने उसे मंदिर के भीतर अधिक वरदेनेको वुलाया उससमय वह सर्पिणी उसके शरीरसे निकलगई क्योंकि स्त्रियां शाप

के भयसे स्वामिकार्त्तिकके मंदिरमें नहींजाती हैं तब राजा सर्पिणी के प्रभावसे रहितहोकर स्वामिकार्त्तिकके मंदिरमें गया स्वामिकार्त्तिकजी ने उसको सर्पिणी के निकलजाने से हीन तेज जानकर विचार कर देखा कि यह क्या बातहै और यह जानकर कि इसने सर्पिणी के वलसे उग्रतपकिया है क्रोधकरके उसे यह शापदिया कि हे दुष्ट तैंने मुझसे छल कियाहै इससे जब तेरे पुत्रहोगा तब पुत्रसमेत रानी से तेरा वियोग होजायगा इस दारुणशापको सुनकर महाकवि राजा कनकवर्ष नें सुन्दरश्लोकों से स्वामिकार्त्तिकजी की स्तुतिको सुनकर प्रसन्नहुए स्वामिकार्त्तिकजी ने कहा कि स्त्री तथा पुत्रके साथ एक वर्षतक तुम्हारा वियोगरहैगा और फिर तीन अपमृत्युओं से बचकर उनको पाजाओगे यहकहकर स्वामिकार्त्तिकजी के मौनहोजानेपर राजा कनकवर्ष उनको प्रणाम करके और उनकी कृपारूपी अमृत से तृप्तहोकर अपने नगरकोआया वहां कुछ कालके उपरान्त चन्द्रिकामें चन्द्रमाको अमृत वृष्टि के समान राजा कनकवर्षके मदनसुन्दरी रानी में पुत्र उत्पन्नहुआ पुत्रके मुखको देखकर राजा कनकवर्ष ने अत्यन्त प्रसन्नहोकर पुत्रके जन्मोत्सव में इतना सुवर्ण दान किया कि जिससे उसका कनकवर्षनाम यथार्थ हुआ उत्सवसे पांच रात्रिके व्यतीतहोनेपर छठीरात्रिमे सम्पूर्ण रक्षा विधिके होनेपर जैसे प्रमादी राजाके राज्यको शत्रु घेरलेते हैं उसीप्रकारसे अकस्मात् मेघों ने आकर आकाश छा लिया और वायुरूपी मतवालाहाथी मदके समान वृष्टिकी धाराओंको छोड़ताहुआ वृक्षोंको उखाड़ताहुआ दौड़नेलगा उससमय कुंडी लगेहुए द्वारको भी खोलकर छुरी हाथमे लियेहुए कोई भयंकर स्त्री सूतिकागृहमें जाके मदनसुन्दरी के स्तनों को पान करते हुए बालकको छीनकर सम्पूर्ण परिजनों को मोहित करके भागी और मदनसुन्दरी विह्वल होके हाय २ मेरे बालकको यह राक्षसी हरेलियेजाती है यह कहतीहुई अन्धकारमें उसी के पीछेदौड़ी वह स्त्री जाकर बालकको लियेहुए एक तालावमें कूदपड़ी और मदनसुन्दरी भी अपने पुत्रकी चाहसे उसी तालाबमें कूदपड़ी १६२ तदनन्तर क्षणभरमें मेघ निवृत्तहोगये रात्रि व्यतीतहोगई और सूतिकागृहमे परिजनलोग हाहाकारकरनेलगे उस हाहाकारको सुनकर राजा कनकवर्ष वहांआकर सूतिकागृहमें स्त्री तथा पुत्रको न देखकर मोहितहोगया और मोहसे जगकर हा पुत्र हा देवी इसप्रकार विलाप करते २ उसे स्वामिकार्त्तिकजी के शापकी याद आगई तब शापको यादकरके राजा इसप्रकारसे विलापकरनेलगा कि हे भगवन् स्वामिकार्त्तिकजी आपने मुझ अभागेको विषसे मिलेहुए अमृतके समान शापयुक्त वरदिया प्राणों से भी अधिकप्यारी मदनसुन्दरी के विना हजार युगके समान एकवर्षमे कैसे व्यतीतकरूंगा इसप्रकार विलापकरताहुआ राजा मंत्रियों के समझानेपर भी रानीही के साथ गयेहुए धैर्य्यको नहीं प्राप्तहुआ और कामके वेगसे पीड़ितहोके अपने नगर से निकलकर विन्ध्याचलके वनमें भ्रमण करनेलगा वहां मृगी के नेत्रोंको देखकर प्रियाके नेत्रोंको सुरागायोंकी पूंछ देखकर प्रियाके केशोंको तथा हाथियों के मन्दगमनको देखकर प्रियाकी मन्द २ गतिको स्मरणकरके राजा कामाग्नि से और भी अधिक व्याकुलहुआ और भूख तथा तृषासे व्याकुलहोकर भ्रमण करते २ एकस्थानमें झरनेका जल पीकर किसी वृक्षके नीचे बैठगया वहां गुफासे निकलकर वि-

न्ध्याचलके अट्टहासके समान गर्जताहुआ सिंह राजाके मारनेकोदौड़ा उसीसमय आकाशमार्ग से जातेहुए किसी विद्याधरने देखकर शीघ्रही खड्गसे सिंहके दो टुकड़ेकरडाले और राजा के निकटजाकर पूछा कि हे राजा कनकवर्ष तुम यहां क्यों आयेहो विद्याधरके यह वचन सुनकर राजाने अपना स्मरण करके उससे कहा कि मुझ विरहाग्निसे व्याकुलको तुम क्याजानो तब उसने कहा कि मैं आपही के पुरका रहनेवाला बन्धुमित्रनाम परिव्राजक (संन्यासी) था मैंने सेवाकरके अत्यन्त प्रार्थनापूर्वक आपही से सहायताकराके वेतालको सिद्धकरके विद्याधर सिद्धिपाई है इसी से मैंने आपको पहचानकर आपके मारनेको उद्यत सिंहको प्रत्युपकार करनेके निमित्त खड्गसेमारडाला हे राजा अब मेरानाम बन्धुप्रभ होगयाहै उसके यहवचनसुनकर राजानेकहा कि हाँ मुझे तुम्हारी यादहै तुमने उसी मित्रताका आज यहां निर्वाहकियाहै अब हे मित्र बताओ मुझसे स्त्री और पुत्रकासमागम कबहोगा यहसुनकर उसने अपनी विद्याकेप्रभावसे जानकरकहा कि जबतुम भगवती विन्ध्यवासिनी के दर्शनकरोगे तबतुम्हारा अपनीस्त्री और पुत्र से समागमहोगा इससे तुम वहीं जाओ मैं अपने लोककोजाताहूं यह कहकर उसके आकाशमे चलेजानेपर राजा कनकवर्ष धैर्य्यको धारणकरके विन्ध्यवासिनी के दर्शनकोचला मार्ग में एक मतवाला हाथी मस्तककँपाके और सूंड़ फैलाकर उसके पीछेदौड़ा उसे देखकर राजा गड्ढों के मार्ग से इसरीतिपर भागा कि जिससे वह हाथी गढ़े मे गिरकरमरगया तब मार्ग के श्रम से थकाहुआ राजा चलते २ उद्दंड पुंडरीक नाम एक बड़े तालाबपर पहुँचा और वहां स्नानकरके और कमलकी डंडीखाजलपीकर किसी वृक्ष के नीचे विश्रामकरनेलगा और क्षणभर में ही उसे निद्राआगई २१८ उससमय उसीमार्ग से शिकार खेलकर लौटेहुए निषादों ने राजा को सोतेहुएदेखा और उसके सुन्दर लक्षणदेखकर उसे बांधकर अपने मुक्ताफलनाम स्वामी के पास लेगये मुक्ताफल उसे सुलक्षण पुरुषजानकर बलिदानदेने के लिये विन्ध्यवासिनी के मन्दिर में लेगया वहां भगवती के दर्शनकरके प्रणामकरतेहुए राजा के बन्धन स्वामिकार्त्तिकजीकी कृपा से शिथिलहोगये यह देखकर निषादों के स्वामी मुक्ताफलने राजापर भगवतीकीकृपा जानकर उसे बन्धनों से छुटादिया इसप्रकार तीसरी अपमृत्यु से बचेहुए राजा के शापकावर्ष पूराहोगया तब वह सर्पिणी राजाके पुत्र तथा स्त्रीको लेकर वहांप्रकटहुई और बोली कि हे राजा मैंने श्रीस्वामिकार्त्तिकजी के शापको जानकर युक्तिपूर्व्वक इन दोनों को लेजाकर अपने स्थानमें रक्षाकीथी अब तुम इन दोनों को लो और पृथ्वीका अकण्टकराज्य भोगकरो यहकहकर वह सर्पिणी अन्तर्द्धानहोगई और राजा भी स्त्री पुत्र के वियोग को स्वप्न के समानमानकर अत्यन्त आनन्दपूर्व्वक रानी से मिला और रानी भी बहुतकाल के वियोग से सन्तप्त अपने अङ्गोंको शीतलकरनेको राजा के गले में लिपटगई बहुतकालके उपरान्त उन दोनों के मिलने से विरह क्लेश आँसुओं के साथ बहगया तब मुक्ताफल उसे राजा जानकर पैरों में गिरकर अपने अपराध क्षमाकराके उसे अपने ग्राम में लेगया और अपने ऐश्वर्य्य के अनुसार सेवनकरके उसे अपने यहां टिकाया तब राजा ने वहीं से दूतभेजकर अपने श्वशुर देवशक्ति को तथा अपनी सम्पूर्ण सेना को वहीं बुलवाया और उन सब के वहां आजानेपर मदनसुन्दरी तथा अपने पुत्र

हिरण्यवर्मा को साथ लेकर हथिनीपर चढ़के विदर्भदेश में अपने श्वशुर के कुण्डिनपुर नाम नगर में प्रथम गया। वहां अपने श्वशुर के सत्कार से कई दिन रहकर वहां से चलकर कनकपुरी नाम अपने नगर में आया उस समय अप्सराओं के तुल्य तथा शोभा सहित मूर्तिमान उत्सव के समान मदनसुन्दरी तथा हिरण्यवर्मा समेत राजा कनकवर्ष को पुरी में प्रवेश करता जानकर पुरवासियों ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और राजा ने सम्पूर्ण नगर में भ्रमण करके अपने मन्दिर में आकर सम्पूर्ण परिजनों को बहुत सा धन बांटा और बड़ा उत्सव करके अपनी सब स्त्रियों को बड़ा आनन्द दिया इसप्रकार शाप से छूटकर राजा कनकवर्ष ने रानी मदनसुन्दरी तथा हिरण्यवती के साथ कभी वियुक्त न होकर निष्कण्टक राज्य का पालन किया गोमुख से इस विचित्र कथा को सुनकर अलंकारवती समेत नरवाहनदत्त अत्यन्त प्रसन्न हुआ ॥

इति श्रीकथासरित्सागरभाषायामलङ्कारवतीलम्बके पञ्चमस्तरङ्गः ॥

इसके उपरान्त गोमुख की कथा से प्रसन्न हुआ नरवाहनदत्त मरुभूति को ईर्ष्या से कुपित देखकर उसे प्रसन्न करने को बोला कि हे मरुभूति तुम भी कोई कथा कहो तब मरुभूति प्रसन्न होकर बहुत अच्छा कहता हूं यह कहकर कहने लगा कि राजा कमलवर्मा के कमलपुर नाम नगर में चन्द्रस्वामी नाम एक धनवान् सज्जन ब्राह्मण रहता था उस ब्राह्मण के बड़ी विनीत देवमति नाम स्त्री में एक ऐसा सुलक्षण पुत्र उत्पन्न हुआ जिसके उत्पन्न होतेही ऐसी आकाशवाणी हुई कि हे चन्द्रस्वामी इस पुत्र का नाम तुम महीपाल रखना क्योंकि यह राजा होकर बहुत काल तक पृथ्वी का पालन करेगा ऐसी आकाशवाणी को सुनकर चन्द्रस्वामी ने बड़ा उत्सव करके अपने पुत्र का नाम महीपाल रक्खा वह महीपाल थोड़ीही अवस्था में सम्पूर्ण शास्त्र शस्त्र अस्त्र तथा कलाओं में प्रवीण होगया इस बीच में चन्द्रस्वामी के उसी देवमति स्त्री में अत्यन्त सुन्दरी चन्द्रवती नाम एक कन्या उत्पन्न हुई वह महीपाल और चन्द्रवती दोनों अपने पिता के यहां वृद्धि को प्राप्त भए एक समय उस देश में सूर्य्य की किरणों के द्वारा सम्पूर्ण अनाजों के सूख जाने से बड़ा भारी दुर्भिक्ष पड़ा उस दोष से वहां का राजा सन्मार्ग छोड़कर अधर्म से प्रजाओं का धन लेनेलगा तब देश की दुर्दशा देखकर देवमति ने चन्द्रस्वामी से कहा कि इस देश को छोड़कर तुम हमारे पिता के यहां चलो यहां रहने से कदाचित् मेरे सन्तान नष्ट न होजायँ यह सुनकर चन्द्रस्वामी ने कहा कि दुर्भिक्ष में घर को छोड़ना महापाप है इससे मैं इन दोनों बालकों को लेजाकर तुम्हारे पिता के यहां छोड़ आता हूं तुम यहीं रहो मैं इनको पहुंचाकर लौट आऊंगा यह कहकर उसे वहीं छोड़कर दोनों बालकों को लेकर चन्द्रस्वामी वहीं से चला और आगे को चलते २ तीन चार दिन के उपरान्त सूर्य्य की किरणों से तपी बालुका वाले सूखे हुए एक महावन में पहुंचा वहां प्यासे हुए महीपाल तथा चन्द्रवती को किसी वृक्ष के नीचे बैठाल कर उनके लिये जल ढूंढ़ता हुआ बहुत दूर चला गया वहां उसे जल तो नहीं मिला परन्तु अकस्मात् नि-षादों का स्वामी सिंहदंष्ट्र नाम निषाद मिला उसने उससे सब वृत्तान्त पूछकर और उसको जलार्थी जान कर अपने सेवकों से इशारा करके कहा कि इसी लाकर जल पिलाओ यह वचन सुनकर सेवकों ने उस का आशय जानके चन्द्रस्वामी को अपने गांव में लेजाकर बंधन में डाला तब चन्द्रस्वामी अपने को

बलिदानके लिये ले आगये जानकर अपनी कन्या चन्द्रवती पुत्रका शोक करके विलाप करने लगा कि हे महीपाल हा चन्द्रवती मैंने तुमको भलेसेही वनमें छोड़कर सिंह व्याघ्रादिकों की भेट किया और इन चोरोंके हाथ अपने प्राण दिये यहां कोई मेरी रक्षा करनेवाला नहीं है इसप्रकार विलाप करते २ वह आकाशमें सूर्य्य भगवान्को देखकर यह सोचने लगा कि मोहको छोड़कर प्रभुकी शरण में जाना चाहिये उनकी यह स्तुति करने लगा हे सूर्य्य परब्रह्म आप आकाशमें शयन करनेवाले बाह्य तथा अभ्यन्तर अन्धकारके दूर करनेवाले तेजोमय आपको नमस्कार है तीनोंलोकों में व्याप्त विष्णु आपहीहो कल्या-णोंके निधि श्रीशिवजी आपहीहो सोतेहुए संसारको चेष्टा करानेवाले ब्रह्माजी भी आपहीहो प्रका-काश रहित चन्द्रमा तथा अग्नि प्रकाशित होवें इसलिये मानों आप रात्रिके समय अन्तर्ध्यान होजाते हो आपके उदयहोनेपर राक्षस भागजाते हैं चोर अपने कुकर्ममें असमर्थ होजाते हैं और गुणीलोग प्रस-न्न होते हैं इससे हे त्रैलोक्यके दीपकरूप सूर्य्य भगवान् मुझ शरणागतकी रक्षा करो दया करके इस दुःख रूपी अन्धकारको दूर करो उसके इस प्रकार स्तुति करनेपर यह आकाशवाणी हुई कि हे चन्द्रस्वामी मैं तु-म्हारे ऊपर प्रसन्न हूं तुम्हारा वध नहीं होगा मेरी कृपासे तुम्हारा पुत्र तथा कन्या मिलजायगी इस आकाश-वाणीको सुनकर धैर्य्ययुक्त हुए चन्द्रस्वामीको निषादराजके सेवकोंने स्नान कराके सुन्दर भोजन कराया इस बीचमें वनमें अकेले बैठे हुए पिताके न आनेसे रोतेहुए चन्द्रवती सहित महीपालको उसी मार्ग से आयाहुआ सार्थधर नाम वैश्य उन दोनोंसे संपूर्ण वृत्तान्त पूछकर दयायुक्त होकर उन दोनोंको अपने नगरमें लेगया और पुत्रके समान स्नेह करके उनका पालन करने लगा और वह महीपाल वहां बाल्या-वस्थाहीमें हवन तथा जपादिक धर्मकार्य्य करने लगा एकसमय तारापुर के राजा ताराधरका मंत्री अ-नन्तस्वामी नाम ब्राह्मण किसी कार्य्यवशसे उसी मार्गमें आकर अपने परिकरसमेत उसी वैश्यके यहां ठहरा वह उस महीपालको जप तथा हवनमें निरत देखकर संपूर्ण वृत्तान्त पूछके उसे ब्राह्मणका बालक जानकर आप अनपत्य होनेके कारण उस वैश्यसे चन्द्रवती समेत महीपालको मांगकर अपने तारापुर नगरको लेगया और वहां महीपालको अपना पुत्र और चन्द्रवतीको कन्याकर बड़े सुखसे दोनोंको रखने लगा इस बीचमें भिल्लोंके स्वामी सिंहदंष्ट्रने चन्द्रस्वामीके पास आकर कहा कि हे ब्राह्मण सूर्य्य भगवान् ने मुझसे स्वप्नमें कहा है कि इस ब्राह्मणको मारना नहीं केवल पूजन करके इसे छोड़देना इससे आपकी जहां इच्छा होय वहां जाइये यह कहकर उसने चन्द्रस्वामीको बहुतसे मोती तथा कस्तूरी देकर और वन में उसकी रक्षाको अपने सेवक देकर उसे विदा किया इसप्रकार वहांसे छूटाहुआ चन्द्रस्वामी वनमें अपने पुत्र तथा कन्याको न पाकर ढूंढताहुआ समुद्रके तटपर जलपुर नाम नगरमें किसी ब्राह्मणके यहां अ-तिथि होकर गया वहां भोजन करनेके उपरान्त प्रसंगसे इसका संपूर्ण वृत्तान्त जानकर उस गृहपति ब्रा-ह्मणने कहा कि कुछ दिन हुए कनकवर्षनाम एक वैश्य यहां आयाथा उसने वनमें एक ब्राह्मणका पुत्र तथा कन्या पाईथी वह उन दोनोंको लेकर यहांसे नारिकेलनाम महाद्वीपको गया परन्तु उनका नाम उसने नहीं बतायाथा यह सुनकर चन्द्रस्वामीने उनको अपनेही सन्तान जानके नारिकेलद्वीप में जाने

का विचार किया और रात्रिभर वहां रहकर दूसरेदिन नारिकेलद्वीपके जानेवाले विष्णुवर्मा नाम किसी वैश्यसे मिलकर उसीके साथ जहाजपर चढ़के पुत्रके स्नेहसे नारिकेलद्वीपको गया वहां उसे वहां के वैश्योंके द्वारा मालूमहुआ कि कनकवर्मा वनमें मिलेहुए ब्राह्मणके पुत्र तथा कन्याको लेकर यहींआयातोथा परन्तु अब वह यहांसे उनको लेकर कटाहद्वीपको गया यह सुनकर चन्द्रस्वामी कटाहद्वीपको जातेहुए दानवर्मानाम वैश्यकेसाथ जहाजपर चढ़कर कटाहद्वीपको गया वहां भी उसने सुना कि वह वैश्य यहांसे कर्पूरद्वीपको गया इसप्रकारसे वह कर्पूर सुवर्ण तथा सिंहलद्वीप में बणियों के साथ गया परन्तु वह वैश्य न मिला सिंहलद्वीप में उसे यह मालूमहुआ कि वह बणिया अपने देशमें चित्रकूट नाम नगरको गया यह समाचार जानकर चन्द्रस्वामीने कोटीश्वरनाम वैश्यकेसाथ जहाजपर चढ़के समुद्रके पार आकर चित्रकूटनाम नगरमें कनकवर्मानाम वैश्यको ढूंढ़कर उससे अपना सब वृत्तान्तकहा तब कनकवर्माने उसको दुखित देखकर वह दोनों कन्या तथा बालकलाकर दिखाये शोकका विषयहै कि वह बालक तथा कन्या दोनों उसी के न थे उन दोनोंको अपने कन्या और पुत्र न जानके चन्द्रस्वामी निराश होकर शोकसे व्याकुल होकर कहनेलगा कि हाय मैंने इतनी दूर भ्रमण करके भी न अपना पुत्र पाया और न कन्यापाई इष्टस्वामीके समान ब्रह्माने मुझे आशा दिखाई परन्तु पूर्ण न की औ व्यर्थ बहुत दूर भ्रमण कराया इत्यादि अनेक विलाप करतेहुए चन्द्रस्वामीको कनकवर्माने बहुत समझाकर सान्त्वन किया तब चन्द्रस्वामीने शोकयुक्त होकर कहा कि जो पृथ्वी में पर्य्यटन करने से एकवर्ष के भीतर मेरे कन्या और पुत्र न मिलेंगे तो गंगाजीके तटपर तप करके मैं अपने शरीरको त्याग दूंगा उसके यह वचन सुनकर वहां बैठेहुए किसी ज्ञानीने उससे कहा कि नारायणीकी कृपासे तुमको कन्या पुत्र दोनों मिलजायेंगे तुम जाओ यह सुनकर चन्द्रस्वामी प्रसन्नहोके श्रीसूर्य्य भगवान्‌की कृपाको स्मरण करके वैश्यों के पूजन सत्कारको ग्रहण करके वहां से चला और अनेक ग्राम तथा नगरोंको ढूंढ़ताहुआ भ्रमण करते २ एकदिन सायंकालके समय बहुतसे लम्बे २ वृक्षोंसे युक्त किसी बड़े घोर वनमें पहुंचा वहां फल खाकर जलपीके रात्रिको व्यतीत करनेकेलिये वह किसी वृक्षपर चढ़के बैठा ७५ अर्द्ध रात्रिके समय उसने उसी वृक्षके नीचे महानारायणी आदिक मातृका आईहुई देखीं वह सब अपनी २ भेटको लियेहुए भैरवनाथकी प्रतीक्षा करनेलगीं और थोड़ेही कालके पीछे भैरवजीको न आये देखकर सम्पूर्ण मातृका नारायणीजी से पूछनेलगीं कि आज भैरवने क्यों देरकरी है क्यों नहीं आये परन्तु नारायणी कुछ उत्तर न देकर हँसने लगीं फिर उन सबके बहुत हठकरनेपर नारायणीने कहा कि सखियो यद्यपि लज्जाकी बातहै तथापि मैं तुमसे कहतीहूं यहां सूरपुरनाम नगरमें सूरसेन नाम राजाहै उसके विद्याधरीनाम बड़ी रूपवती कन्या है राजाने उस कन्याको विमलनाम राजाके बड़े रूपवान् प्रभाकर नाम पुत्रको देनाचाहा और विमलने उस विद्याधरीकी प्रशंसा सुनके अपने पुत्रके लिये दूतभेजकर राजा सूरसेनसे विद्याधरी मांगी तब सूरसेनने बहुत प्रसन्नहोके प्रभाकरकेसाथ उस विद्याधरीका विवाह करदिया और उसीके साथ उसको बहुतसा धन देकर विदा करदिया तदनन्तर विद्याधरी अपने श्वशुर

के गृहमें पहुंचकर रात्रिके समय पतिके साथ शयनस्थानमें गई वहां संभोग विना कियेही सोयेहुए अपने पति प्रभाकरको नपुंसक जानकर हाय २ मुझ अभागिनीको नपुंसक पति मिलाहै यह शोच करतीहुई विद्याधरीने रात्रि व्यतीत करके दूसरे दिन अपने पिताको यह लेख लिखा कि आपने कैसे विना देखेभाले नपुंसकके साथ मेरा विवाह करदिया उस लेखको पढ़कर उसका पिता राजासूरसेन बहुत क्रोधित हुआ कि विमलने मुझको ठगाहै तब उसने विमलको यह चिट्ठी लिखी कि तुमने छल करके अपने नपुंसकपुत्रके साथ मेरी कन्या का विवाह करवालिया अब तुम इसका फल भोगो मैं आकर तुमको मारूंगा इसलेखको पाकर विमलने व्याकुलहोके अपने मंत्रियों से पूछा कि इस दुर्जय राजासे बचने का अब कौनसा उपायहै यह सुनकर पिंगदत्तनाम मंत्री ने कहा कि हे स्वामी इसमें एकही उपायहै वह मैं आपको बताताहूं स्थूलशिरायक्ष के आराधनका मंत्र मुझे मालूमहै उस मंत्रको जपकर स्थूलशिराको सिद्धकरके उससे अपने पुत्रके निमित्त लिंगमांगिये तो विग्रहशान्त होजाय मंत्री के यह वचन सुनकर राजाने मंत्र सीखकर जपके द्वारा उसयक्षको सिद्धकरके उससे अपने पुत्रके लिये लिंगमांगा उसने प्रभाकरको थोड़े दिनोंकेलिये लिंगदेदिया इससे प्रभाकर तो पुरुष होगया परन्तु यक्ष नपुंसक होगया और वह विद्याधरी प्रभाकरको पुरुष देखकर उसके साथ रमणकरके अपने चित्तमें शोचनेलगी कि मदके दोषसे मुझे भ्रान्ति होगईथी मेरा पति नपुंसक नहीं है यह शोचकर उसने पिताको इसी आशयका पत्र भेजदिया उस पत्रको पाकर राजासूरसेन क्रोधरहित होकर शान्त होगया तब इसी वृत्तान्तको जानकर भैरवजीने आज कोप करके स्थूलशिरायक्षको बुलाकर यह शापदिया कि तैंने अपना लिंग देकर नपुंसकत्व अंगीकार किया इससे तू जन्मभर नपुंसक रहैगा और वह प्रभाकर जन्मभर पुरुष रहैगा इसप्रकार से वह यक्ष तो नपुंसकहोके महादुखी होरहाहै और प्रभाकर पुरुष होकर सुख भोगरहाहै इसी कारण से आज भैरवजी के आने में देरहुई है अब वह आनेहीं चाहते हैं नारायणी देवी के इसप्रकार कहतेही कहते चक्रके स्वामी भैरवजी वहां आगये और सम्पूर्ण मातृकाओं के पूजन और बलिको ग्रहण करके योगिनियों के साथ ताण्डवनृत्य करने लगे यह सब वृत्तान्त चन्द्रस्वामी वृक्षके ऊपर से देखतारहा और नारायणीकी एक दासीको देखकर उसपर अनुरक्तहुआ और दासी भी उसे देखकर उसपर अनुरक्त होगई उन दोनों का यह परस्पर अनुराग नारायणीने जान लिया तब नारायणी के सिवाय सम्पूर्ण मातृकाओं समेत भैरवजी के चलेजानेपर नारायणी ने वृक्ष से चन्द्रस्वामी को नीचे बुलाकर उससे और दासी से पूछा कि क्या तुम दोनों को परस्पर अभिलाष है उन्होंने कहाकि हां है उनके यह सत्यवचन सुनकर नारायणी ने क्रोध रहितहोके चन्द्रस्वामी से कहा कि तुम्हारे सत्यवचनोंसे मैं प्रसन्नहूं इससे मैं तुमको शापनहींदूंगी और यहदासी तुम लेलो जिससे तुमदोनोंको सुखहोय यहसुनकर चन्द्रस्वामी ने कहा कि हे देवी यद्यपि यह चंचलमन रोकनेसे भी नहीं रुकताहै तथापि मैं परस्त्रीका स्पर्श नहीं करसक्ता मनकी तो यह प्रकृतिहै इससे कायिकपापसे बचना चाहियहै उस धीरके यह वचनसुनकर देवीने प्रसन्नहोकर कहा कि मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहोके यह कन्या

हूँ कि शीघ्रही तुमको पुत्र तथा कन्या मिलजायगी और यह नहीं म्लान होनेवाला विष आदि दोषों का दूरकरनेवाला कमल मुझसे लो यह कहकर और कमल देकर नारायणी अपनी दासियो समेत अन्तर्द्धान होगई और चन्द्रस्वामी उस कमलको लेकर रात्रिके व्यतीत होजानेपर भ्रमण करताहुआ तारापुर नगरमें अनन्तस्वामी नाम मन्त्रीकेघरपर जहां उसका महीपाल नाम पुत्र और चन्द्रवतीनाम कन्याथी पहुंचा वहां वह उस मन्त्रीको अतिथिवत्सल सुनकर भोजनके लोभसे उसके द्वारपर वेदका पाठकरनेलगा मन्त्रीने वेदाध्ययन सुनकर उसे प्रतीहारके द्वारा भीतर बुलवाके उसे अपने यहां भोजन का निमन्त्रण दिया निमन्त्रण पाकर चन्द्रस्वामी पापनाशक अनन्तह्रद नाम तड़ागको सुनकर वहीं स्नानकरने को गया स्नानकरके जव वह लौटा तो नगरमें बड़ा हाहाकार शब्द सुनाई दिया पूछने से लोगोंने उससे कहा कि सार्थधरनाम वैश्य किसी ब्राह्मणके महीपाल नाम पुत्रको उसकी वहिन समेत वनसे लेआयाथा उस वैश्यसे यहाँ के राजाके मन्त्री अपुत्र अनन्तस्वामी ने भगिनी समेत उसबालक को मांगलाकर पुत्रके समान उसका पालनकिया और वह महीपाल अपने सद्गुणों के कारण राजा तारावर्माका तथा सम्पूर्ण राज्यका अत्यन्त प्यारा होगया आज उसी महीपालको कालेसर्प ने काटाहै इसीसे सम्पूर्ण नगर मे हाहाकार होरहाहै यह सुनकर चन्द्रस्वामी ने यह जानकर कि यह मेराही पुत्रहै और भगवती के दियेहुए कमलको अपने हाथमे देखके अत्यन्त प्रसन्नहोके शीघ्रही अनन्तस्वामी के घरमें जाकर उस महीपालको वह कमलसुँघाया उसके सूंघतेही महीपाल निर्विषहोकर सोके जगेहुएके समान उठवैठा तव सम्पूर्णपुरमें बड़ाउत्सवहुआ और अनन्तस्वामी राजा तथा पुरवासियोंने चंद्रस्वामी को महात्मा जानकर उसे बहुतसा धनदिया उसधनकोपाकर चंद्रस्वामी अपनेपुत्र तथा कन्याको देख-ताहुआ उसी मंत्रीके यहां रहा और उन तीनोंने परस्पर पहचान करके भी अपना वृत्तान्त नही प्रकट किया ठीकहै (कुर्वन्त्यकालेभिव्यक्तिं नकार्य्यापेक्षिणोबुधाः) कार्य्यकी अपेक्षा करनेवाले विद्वान्लोग असमयमें अपने वृत्तान्तको प्रकट नहीं करते हैं इसके उपरान्त राजा तारावर्मा ने महीपालके गुणो से प्रसन्न होकर उसके साथ अपनी बन्धुमती नाम कन्याका विवाह करदिया और अपना आधा राज्य उसे देकर संपूर्ण राज्यका भार उसीके सुपुर्द करदिया इसप्रकारसे राज्यपाकर वह महीपाल चन्द्रस्वामी को अपना पिता प्रसिद्ध करके और अपनी बहिनका किसी योग्य पतिके साथ विवाह करके सुखपू-र्व्वक रहनेलगा एकसमय चन्द्रस्वामीने एकान्तमे उससे कहा कि हे पुत्र अपने देशमे चलकर अपनी माताको लेआओ नहीं तो ऐसा न होय कि वह तुम्हे राज्यमे स्थित जानकर वियोग से कुपितहोके शापदेदे और जिसको क्रोधकरके माता पिता शापदेतेहैं उसे कभी सुख नहीं होता इस विषयमे तुम को मैं एक वैश्यके पुत्रकी कथा सुनाताहूं धवलनाम पुरमे चक्रनाम एक वैश्यका पुत्र अपने माता पिताकी विना आज्ञालिये स्वर्णद्वीपको व्यवहार करनेको गया वहां पांचवर्ष मे बहुतसाधन उपार्जन करके वह अपने देशमे आनेके लिये रत्नोंसे भरेहुए जहाजपर चढकरचला जव किनारा कुछही दूर वा-कीरहा तव आकाशसे जलकी वृष्टि और महाप्रचण्ड वायुचलनेलगी उसीसे वह जहाज टूटगया तव

जहाज के कुछ लोग तो पानी में वहगये और कितनोही को मगर मच्छों ने खाडाला और चक्रको आयुर्व्वल शेष होने के कारण समुद्र ने लहरों से किनारेपर फेंकदिया वहां उसे एककाले वर्णवाला भयंकर पुरुष हाथ में पाश लियेहुए दिखाईदिया वह पुरुष उस चक्रको अपने पाशमें बाँधकर सभा में सिंहासन पर बैठे हुए किसी पुरुष के पास लेगया और उसी सिंहासनपर बैठेहुए पुरुष की आज्ञा से उसीने उस वैश्यको लोहमय गृह में लेकर बन्द करदिया वहां चक्रने एक दूसरे पुरुषको देखा जिसके शिरपर तपाहुआ लोहेका चक्र निरन्तर भ्रमण कररहा था उससे चक्रने पूछा कि तुम कौनहो किस कारण से तुमको यह कष्ट दियागयाहै और तुम कैसे जीतेहो यह सुनकर उसने कहा कि मैं खड्ग नाम वैश्यपुत्रहूं मैंने अपने माता पिताके वचन नहीं माने इसीसे उन्होंने कुपित होके मुझे यह शाप दिया कि हे दुष्ट तू हमको शिरमें लगेहुए संतप्त लोहेके चक्रके समान दुःखदेताहै इससे तुझे भी ऐसी ही पीड़ाहोगी यहकहकर उन्होंने मुझे रोते देखकर कहा कि रोओ मत एकही महीने तुमको ऐसी पीड़ाहोगी यहसुनकर मैंने शोकसे वहदिन व्यतीतकरके रात्रिके समय स्वप्नसादेखा कि एकघोर भयंकर पुरुष मेरे पास आया उसीने मुझको यहांलाकर बन्दकिया और मेरे शिरपर यहचक्ररक्खा पिताके शापके प्रभावसे मेरे प्राण नही निकलतेहैं आज मुझे यहांआये महीनाभर व्यतीतहोगया परन्तु अब भी मैं शापसे नहीं छूटाहूं खड्गवैश्यके यहवचन सुनकर चक्रने कहा कि परदेश जाने के समय मैंने भी अपने पिताके वचन नहीमानेथे और उन्होंने क्रोधकरके मुझे शापदियाथा कि जो तुझे धनमिलैगा वहसब नष्टहोजायगा इसीसे जोकुछ मैंने धन उपार्जन कियाथा वहसब समुद्रमें नष्टहोगया और यहां किसी पुरुषने मुझे लाकर बन्दकरदिया इससे अब मेरे जीवनसे क्या प्रयोजन है तुम इसचक्रको मेरे शिरपर रखकर अपने शापसे छूटो चक्रके इसप्रकार कहतेही यह आकाशवाणी हुई कि हे खड्ग तू शापसे छूटगया अपने शिरसे इसचक्रको लेकर इसचक्रवैश्य के शिरपर रखदे इसआकाशवाणी को सुनकर खड्गने वहतप्तचक्र उसचक्रनाम वणिक्पुत्रके शिरपर रखदिया और खड्गवैश्यको कोई अदृश्य पुरुष उसके घरको लेगया वहां वह भक्तिसे अपने माता पिताकी आज्ञानुसार सब कार्य्य करता हुआ सुखपूर्व्वक रहनेलगा और वहचक्रवैश्य अपने शिरपर उसतप्तचक्रको धारण करके बोला कि पृथ्वीमे जितने पापीहोयं वहसब इसपापसे छूटजायँ और जबतक सबके सम्पूर्ण पाप क्षीण न होजायँ तबतक यहचक्र मेरे शिरपर घूमतारहै उसके यहवचन सुनकर आकाशवासी देवतालोगोंने प्रसन्नहोके पुष्पोंकी वृष्टिकरके कहा कि हे महासत्त्व तू धन्यहै तेरी इसकरुणासे तेरा सब पाप नष्टहोगया तुझे अक्षय धनमिलैगा देवता लोगों के इसप्रकार कहतेही चक्रवैश्यके शिरसे वहतप्तचक्र नष्टहोगया और प्रसन्न हुए इन्द्रका भेजाहुआ एकविद्याधर उसे बहुमूल्य रत्नदेके गोदी में लेकर धवलनाम नगरमें पहुँचाकर अन्तर्द्धानहोगया और वहचक्रवैश्य अपने माता पिताके पास जाकर उन्हें सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाके उनको आनन्दित करके सुखसे उनका सेवन करताहुआ आनन्दसे रहनेलगा १६८ इसकथाको कह चन्द्रस्वामी ने महीपालसे फिर कहा कि हे पुत्र माता पितासे विरोधकरने से ऐसाही अरिष्ट प्राप्तहोताहै

और माता पिताकी भक्ति कामधेनुके समान फलदायकहोती है इसपरभी मैं तुमको एककथा सुनाताहूं पूर्व्वसमय किसी वनमें कोई महातपस्वी मुनिथा एकसमय वृक्षकी छायामें बैठेहुए उसमुनिके ऊपर किसी पक्षीने बीठकरदीनी तब मुनिने क्रोधकरके उसे देखा देखतेही वहपक्षी भस्महोगया और मुनि को अपने तपके प्रभावका अहंकारहोगया एकदिन किसी नगरमें उसमुनि ने किसी ब्राह्मणके यहां जाकर उसकी स्त्री से भिक्षामांगी उसने कहा कि कुछ समय ठहरजाइये मैं पतिकी सेवाकरके आपको भिक्षादूंगी उसके यहवचन सुनकर मुनि उसको क्रोधित दृष्टिसे देखनेलगे तब उसने हँसकर कहा कि हे मुने मैं वनकी चिड़िया नहींहूं जो आपकी क्रोधदृष्टि से भस्महोगई यहसुनकर मुनिने आश्चर्य्य से शोचा कि इसने यहवृत्तान्त कैसे जाना तदनन्तर अपने पति के सम्पूर्ण कार्य्योंको करके भिक्षालेकर आईहुई उसपतिव्रतासे मुनिने हाथ जोड़कर पूंछा कि तुमने वनके पक्षीका वृत्तान्त कैसे जानलिया पहले यहबतादो तब मैं भिक्षालूंगा मुनि के वचन सुनकर उसने कहा कि मैं पतिकी भक्तिके सिवाय और कुछ नहीं जानतीहूं उसीके प्रभावसे मुझे इतनाज्ञान है तुम इसीनगरके रहनेवाले धर्म्मव्याधके पास जाओ उसके पास जाकर तुम्हारा अहंकार दूरहोजायगा उसके यहवचन सुनकर और भिक्षा लेकर वहमुनि उसे प्रणामकरके वहांसे चलेआये और दूसरे दिन बजारमें मांस बेचनेवाले उसधर्मव्याध के पासगये धर्मव्याधने मुनिको देखकर कहा कि क्या तुमको उसपतिव्रताने भेजाहै यहसुनकर मुनि ने आश्चर्य्य युक्तहोकर कहा कि मांसके बेचनेवाले तुमको ऐसाज्ञान कैसेहुआ तब धर्मव्याधने कहा कि मैं अपने माता पिताका भक्तहूं वही मेरे मुख्य देवता हैं उनको स्नानकराके मैं स्नान करताहूं भोजन कराके भोजन करताहूं और शयनकराके शयनकरताहूं इसीसे मुझको ऐसा ज्ञानप्राप्तहै मैं किसी अन्य व्याधके मारेहुए मृगादिजीवोंका मांसलाकर अपना धर्म जानकर बेचताहूं धनके लोभसे नहीं बेचता हे मुने मुझको और उसपतिव्रताको ज्ञानमें विघ्नकरनेवाला अहंकार नहीं है इसीसे यहज्ञान हमदोनो को प्राप्तहुआ है इसमें तुमभी इसअहंकार को छोड़के स्वधर्म का आचरण करो तो तुमको भी परम तेजोमयज्ञान प्राप्तहोगा उसके यहवचन सुनकर और उसके घर में जाकर उसके सम्पूर्ण कार्य्यों को देखकर वह मुनि प्रसन्नहोके वनकोगये और उसपतिव्रता तथा धर्म्मव्याधके समान सिद्धिको प्राप्तहुए यह पति तथा पिता माता के भक्तों का प्रभाव है इससे तुम अपनी मातासे चलकर मिलो चन्द्रस्वामी के यहवचन सुनकर महीपाल स्वदेश जानेका विचार करके अपने धर्म्म के पिता अनन्त स्वामी से सम्पूर्ण वृत्तान्तकहके और उसीपर सम्पूर्ण राज्यका भाररखकर रात्रिकेसमय अपने पिताके साथ वहां से चला और कुछदिनों में अपने नगरमें अपनी माताके निकटपहुंचा जैसे कोकिला वसन्तको देख कर प्रसन्नहोती है उसीप्रकार महीपालको देखकर उसकी माता देवमति प्रसन्नहुई वहां महीपाल अपने बन्धुओं को आनन्द देताहुआ कुछ कालतक अपने पिताकेसाथ रहा १६७ इस बीच में तारापुर में महीपालकी रानी राजपुत्री बन्धुमती प्रातःकाल उठकर उसको कहींगया जानकर विरहसे अत्यन्त व्याकुलहुई और महल तथा उपवनादिकों में कहीं भी चैनन पाकर अश्रुओं से अपने हारको द्विगुण

करती हुई रोरोकर प्राण देनेको उद्यतहुई उसकी यह दशा देखकर अनन्तस्वामी ने कहा हे पुत्री शोक न करो वह मुझसेकहगयाहै कि मैं किसीविशेष कार्य्यके निमित्तजाताहूं और शीघ्रही आजाऊंगा अनन्तस्वामीके यहवचन सुनकर बन्धुमतीने किसीप्रकारसे धैर्य्यधारण किया और तभी से वह अपने पतिका पतालगानेकेलिये देशान्तरसे आयेहुए ब्राह्मणों का सदैव पूजनकर दान देनेलगी एकदिन इसी प्रसङ्गसे आयेहुए संगमदत्त नामदीन ब्राह्मण से अपने पतिकानाम तथा पहचान बताकर बन्धुमती ने पूछा कि आपने ऐसापुरुष कहीं देखा तो नहीं है तब उसने कहा कि मैंने ऐसा पुरुष देखा तो नहीं है परन्तु तुमको ऐसे कार्य्य में अधैर्य्य न करना चाहिये पुण्यात्मालोगोंको बहुतकाल में भी अभीष्ट वस्तुका संयोगहोताहै इस बातपर जो मैंने आश्चर्य्य अपनी दृष्टिमें देखाहै वह तुमको सुनाताहूं एकसमय तीर्थोंकापर्य्यटन करताहुआ मैं हिमालय में मानसरोवर नाम तड़ागपर पहुंचा उसतड़ागमें मैंने दर्पण के समान एकमणिमय गृहदेखा उसगृहसे अकस्मात् एकखड्गधारी पुरुष निकलकर दिव्य स्त्रियों को साथमें लियेहुए तड़ागके तटपरआया और उपवनमें उनस्त्रियोंकेसाथ विहार करनेलगा इस वृत्तान्तको मैं अलक्षितहोकर दूरसे देखतारहा इतनेही में एकसुन्दर पुरुष कहीं से आकर मुझको वहां मिला मैंने उससे वह आश्चर्य्यकारी सबवृत्तान्त कहकर उसे वह पुरुष स्त्रियोंसहित दिखाया उसे देखकर उसने अपना वृत्तान्त यह मुझसेकहा कि त्रिभुवननाम पुरका त्रिभुवननाम मैं राजाहूं वहां एकपाशुपत (शैवविशेष) ने बहुत कालतक मेरा सेवनकिया और कारण पूछनेपर उसने मुझसेकहा कि मैं विवरमें खड्ग सिद्ध करना चाहता हूं उसमें आप मेरी सहायता कीजिये मैंने उसके यह वचन स्वीकार करलिये तब उसने मुझे बनमें लेजाकर रात्रिके समय हवनादिकसे विवर प्रकटकरके मुझसे कहा कि हे वीर इस विवरमें पहले तुमजाओ वहां तुमको एकखड्ग मिलैगा और इसबात की तुम मुझसे प्रतिज्ञा कर जाओ कि खड्ग पाकर तुम मुझेभी विवर के भीतर लेजाना उसके यह वचन सुनकर मैं उससे प्रतिज्ञाकरके उस विवर में गया वहां एकरत्नमय गृह मुझे मिला उसघरसे एक असुरकन्या निकलकर मुझे घरके भीतर लेगई और प्रेम से एक खड्ग मुझे देकर यह वचनबोली कि सर्व्वसिद्धिदायी तथा आकाश में गमनकी शक्ति देनेवाले इस खड्ग की तुम रक्षा करते रहना उसके यह वचन सुन के मैं उस खड्गको लेके उसी के साथ वहां रहा और कुछ कालके उपरान्त अपनी प्रतिज्ञाको स्मरण करके बाहर आकर उस पाशुपतको भी भीतरलेगया वहां मैं तो उस पहली असुरकन्याके साथ सुखपूर्व्वक रहनेलगा और वह पाशुपत द्वितीय असुर कन्याके साथ आनन्दसे रहनेलगा एक समय मद्यपानमें उन्मत्तहुए मुझसे उस पाशुपत ने छलसे मेरा वह खड्गलेलिया और उस खड्गके प्रभावसे मुझे उस विवरके बाहर निकालके वह मेरी असुरकन्याभी लेली तबसे बारहवर्ष मुझे उस पाशुपतको विवरोंमें ढूढ़ते २ व्यतीतहुए हैं आज भाग्यवशसे यह मेरीदृष्टिमें पड़ाहै और मेरीही असुर कन्याके साथ क्रीड़ा कररहाहै उसके इसप्रकार कहतेही कहते वह पाशुपत मद्यपान करके वहीं सोगया उसेसोया जानकर राजाने वह खड्गलेकर दिव्य प्रभावको प्राप्तहोकर लातमारकर उस पाशुपतको जगाया और उसेबहुत

धमकाया परन्तु दीनजानके मारा नहीं इसप्रकार उस खड्गको पाकर वहराजा मूर्तिमती सिद्धिकेसमान उस असुरकन्याको लेकर उसी मणिमय मन्दिरमें चलागया और वह पाशुपत सिद्धिसे रहितहोकर अत्यन्त कष्टको प्राप्तहुआ ठीकहै (कृतघ्नाश्चिरसिद्धार्था अपिभ्रश्यन्तिहिध्रुवम्) कृतघ्नलोग बहुत कालतक सिद्धहोकर भी भ्रष्टहोजाते हैं यह साक्षात् देखकर में भ्रमणकरताहुआ यहां आयाहूं इससे हेरानी जैसे बहुत कालके पीछे उस राजाको वह असुरकी कन्या मिलगई ऐसेही तुमकोभी तुम्हारापति मिलजायगा उस ब्राह्मणसे यह उत्तमकथा सुनकर वन्धुमतीने प्रसन्नहोकर उसे बहुतसा धनदेकर विदाकिया २३२ दूसरे दिन किसी दूरदेशसे एक अपूर्व ब्राह्मण वन्धुमतीके यहां आया उससे भी उसने अपने पतिकानाम तथा पहचान बताकर पूछा कि तुमने कहीं ऐसा पुरुषदेखाहै यहसुनकर उस ब्राह्मणने कहा कि हेराजपुत्री मैंने तुम्हारेपतिको कहीं नहीं देखाहै किन्तु आज मैं तुम्हारे यहां आयाहूं और सुगनमेरानामहै इससे मुझे मालूमहोताहै कि शीघ्रही तुमको सौमनस्य (प्रसन्नता) होगा और इसमें तुमको सन्देह न करना चाहिये बहुतकालकेभी वियोगियोंका संयोग अवश्य होताही है इस विषयपर मैं तुमको एक कथा सुनाताहूं पूर्वसमयमें निषधदेशमें एक नलनाम राजाथा जिस के रूपसे मानों जीतेगये कामदेवने अपमानको न सहकर शिवजीकी नेत्राग्निमें अपना शरीर भस्म करदिया उस राजानलने विदर्भदेशके स्वामी राजाभीमकी कन्या दमयन्तीको अपनेसमान रूपवती सुना और राजा भीमनेभी संपूर्ण पृथ्वीमें ढूंढकर राजानलके सिवाय अपनी कन्याके सदृश कोई वर न पाया इसवीच में दमयन्ती ने जलक्रीड़ाके निमित्त तड़ागमें जाकर एक राजहंस दुपट्टाफेंककर पकड़ा तब बन्धनमें पड़ाहुआ वह दिव्यहंस मनुष्यवाणीसे बोला कि हेराजपुत्री तुम मुझे छोड़दो मैं तुम्हारा उपकार करूंगा निषधदेशका नलनाम राजा जिसे गुणोंसे मोहितहोके दिव्याङ्गनाभी पतिपानेकी अभिलाषा करती हैं उसके योग्य स्त्री तुमहो और तुम्हारे योग्यपति वहहै तुम दोनोंके इसतुल्य संयोगमें मैं कामदूत बनूंगा उसके यह वचन सुनकर दमयन्तीने उसे सत्यभाषी दिव्यहंस जानकर छोड़दिया और कहा कि नलकी प्रशंसा सुननेही उसपर मेराचित्त अनुरक्त होगया इससे मैं उसके सिवाय किसी अन्यके साथ विवाह नहीं करूंगी दमयन्ती के यह वचन सुनकर वह राजहंस निषधदेशमें जलक्रीड़ा करतेहुए राजा नलके निकटगया उस मनोहर हंसको देखकर राजानलने अपना दुपट्टाफेंककर उसे कौतुकसे पकड़लिया तब उस हंसने उससे कहा कि हेराजा मुझे छोड़दो मैं तुम्हारे उपकारके लिये आयाहूं सुनिये विदर्भदेशके राजाभीमकी दमयन्तीनाम कन्या जिसकी देवतालोग भी अभिलाषाकरतेहैं उसने मुझसे तुम्हारे गुणों को सुनकर तुमपर अनुरक्तहोकर तुम्हारे साथही अपना विवाहकरना स्वीकार किया है यही मैं आपसे कहनेको आयाहूं उस हंसके यह वचन सुनकर राजानल कामके वशीभूत होकर बोला कि हे पक्षिश्वर मैं धन्यहूं जिसे मूर्तिमती मनोरथ सम्पत्ति के समान दमयन्ती ने स्वीकार किया है यह कहकर उसने उसे छोड़दिया तब वह हंस वहां से दमयन्ती के पास जाके और सम्पूर्ण वृत्तान्त उस से कहके अपने मानसरोवरको चलागया २३५ इसके उपरान्त दमयन्ती ने उत्कण्ठितहोके अ-

पनी माताके द्वारा अपने पिता से स्वयम्बर करने को कहा राजा भीम ने उसका अभिप्राय जानकर पृथ्वी के सम्पूर्ण राजाओं के पास स्वयम्बरके निमित्त दूत भेजे दूतों से स्वयम्बर का समाचार पाके राजालोग रथोंपर चढ़के विदर्भदेश को गये और राजानल भी स्वयंवर के लिये चला इस बीच में नारदमुनि से सम्पूर्ण लोकपालों ने दमयन्ती का स्वयंवर तथा उसका नलपर प्रेम सुना उनमें से इन्द्र वायु यम अग्नि तथा वरुण यह पांच लोकपाल स्वयंवरके लिये जातेहुए राजानलसे मार्ग में आकर मिले और बोले कि हे राजा आप दमयन्ती से जाकर हमारा यह सँदेशा कहो कि हम पांचोंलोकपालोंमें से किसी एकके साथ वह अपना स्वयंवरकरे, मनुष्य नलकेसाथ विवाहकरके वह क्या करेगी क्योंकि देवतालोग अमरहोते हैं और मनुष्य मरणशील होते हैं हेराजा हमारे इस संदेसेको लेकर तुम जाओ हमारे वरदानसे तुमको वहां जानेमें कोई देखेगा नहीं देवतालोगों की यह आज्ञा मानकर नल ने विदर्भदेश में दमयन्ती के यहां जाकर उससे देवतालोगों का सँदेसा कहा उस सँदेसे को सुनकर दमयन्ती बोली कि यद्यपि देवतालोगों में अनेक गुण हैं तथापि मेरापति नलहीहोगा मुझे देवताओं से कुछ प्रयोजन नहीं है उसके इसप्रकार कहनेपर नलने अपनास्वरूप उसकेआगे प्रकट करके वहां से आकर इन्द्रादिकोंसे उसका सब बृत्तान्त कहदिया इस प्रतिसन्देसको सुनकर देवतालोगोंने उससे कहा कि हे सत्यवादी तुम्हारे सत्यवचनोंसे तुम पर हम सब प्रसन्न हैं अब तुम जब हमारा स्मरण करोगे तभी हम तुम्हारे पास आवेंगे देवतालोगों से यह वरपाकर नल प्रसन्नहोके विदर्भदेश में स्वयंवरकी सभा में गया और इन्द्रादिक देवताभी दमयन्ती को छलने के लिये राजा नलकास्वरूप धारणकरके स्वयंवर में नलही के पासजाकर बैठे उससमय दमयन्ती अपने भाई के साथ स्वयंवर की सभा में आई और अपने भाई से बतायेगये सम्पूर्ण राजाओं को छोड़तीहुई नलके निकट पहुँची वहां एक साथही बैठे हुए एकसेही स्वरूपवाले छः नलों को देखकर उसका भाई तो भ्रम में पड़गया और वह व्याकुलहोके शोचनेलगी कि लोकपालोंने मुझे ठगनेके लिये यह मायाकीहै इन छः में पांचतो लोकपालहैं और एक नलहै यह शोचकर उसने सूर्य्य के सन्मुख खड़ेहोकर कहा कि हे लोकपालो जो स्वप्नमें भी मेरा चित्त नल से न हटाहोय तो इस सत्य से प्रसन्नहोकर आपलोग अपना २ स्वरूप मुझे दिखाइये और मैं तो नलका प्रथमही स्वीकारकरचुकीहूं इससे मैं अब परस्त्री होगई आपलोग मेरे लेने का क्यों उद्योगकरते हैं उसके यह वचन सुनकर पांचों लोकपाल अपने २ स्वरूप में होगये और नल अपनेही स्वरूप में बनारहा यह देखकर दमयन्ती ने प्रसन्नहोके प्रफुल्लित नेत्रों से नलको देखकर उसके गले में जयमाल पहरादी और आकाश से पुष्पोंकीवृष्टिहुई तब राजा भीम ने नलकेसाथ दमयन्तीका विवाह करदिया और इन्द्रादिक देवता तथा सम्पूर्ण राजालोगों को सत्कारकरके बिदाकिया तदनन्तर इन्द्रादिक देवताओं ने वहां से मार्ग में जातेसमय में कलियुग तथा द्वापरको आतेदेखा और उनको दमयन्ती के स्वयम्बर के निमित्त आया जानकर कहा कि तुम अब वहां मतजाओ हम सब वहीं से आरहे हैं राजा नल के साथ दमयन्ती का स्वयम्बर होगया यह सुनकर उन दोनों ने क्रोध करके

कहा कि आप सरीखे देवताओं को छोड़कर दमयन्ती ने मनुष्य का ग्रहणकिया है इससे हम उन दोनों का वियोग अवश्य करवावेंगे इसप्रकार प्रतिज्ञा करके वह दोनों उन्हीं के साथ लौटगये और राजा नल सात दिन अपने श्वशुर के घर रहकर दमयन्ती को साथलेकर अपने निषध देशको आया वहाँ उनदोनों का परस्पर प्रेम श्रीशिव तथा पार्वतीजी से भी अधिक होगया क्योंकि शिवजी के तो पार्वतीजी अर्द्धाङ्गीही हैं परन्तु दमयन्ती राजानलकी आत्माही होगई कुछकाल के उपरान्त राजानलका दमयन्ती रानी में चन्द्रसेन नाम एक पुत्र तथा इन्द्रसेना नाम एक कन्या उत्पन्नहुई २८६ इस बीच मे कलियुग शास्त्रके अनुसार चलनेवाले राजानलका छिद्र बहुत कालतक ढूंढ़तारहा एक समय राजानल मद्यसे उन्मत्त होकर संध्योपासन विना कियेही पैर न धोकर सोगया इस छिद्रको पाकर कलियुगने उसके शरीरमें प्रवेश किया उसके शरीरमें प्रविष्ट होजाने से राजानल धर्मको छोड़कर यथारुचि कार्य्य करने लगा द्यूत खेलनेलगा मिथ्या बोलनेलगा दासियों से सम्भोग करनेलगा दिनको सोनेलगा रात्रिको जागनेलगा अकारण कोपकरनेलगा अन्यायसे धन उपार्जन करनेलगा और सज्जनों का अनादर तथा असज्जनों का आदर करनेलगा इसीप्रकार से द्वापरने भी छिद्रपाकर नलकेभाई पुष्कर के शरीर में प्रवेश करके उसे भी अधर्मी करदिया एक समय नलने अपने छोटेभाई पुष्करके यहां दान्त नाम एक सुन्दर श्वेत बैल देखकर लोभ युक्त होकर उससे वह बैल मांगा पुष्करने द्वापरसे मोहितहोकर उसे वह बैल नहीं दिया और कहा कि जो तुम यह बैल लेना चाहते हो तो जुएमें जीतकर लेलो यह सुनकर नलने मोहसे उसकेसाथ द्यूतखेलना प्रारंभकिया तब उनदोनों भाइयों के परस्पर द्यूतमें नलने उस बैलकेलिये हाथी आदिक बड़े उत्तम २ वाहन पणमें लगाये पुष्करने वह सब जीतलिये दो तीन दिन में जब राजानल सेना तथा कोशादिक सबहारगया और निषेध करनेपर भी कलियुगके प्रभावसे द्यूत से नहीं निवृत्तहुआ तब दमयन्ती ने अपने राज्यको नष्टजानकर अपने पुत्र तथा कन्याको रथपर बैठलकर अपने पिताके यहां भेज दिया इतने मे राजानल अपनासम्पूर्ण राज्यहारगया और पुष्करने उससे कहा कि तुम और तो सब वस्तुहारगये अब इस बैलके लिये दमयन्ती को पणमें रक्खो उसके यहद्वेषयुक्त अप्रिय वचन सुनकर राजानलने कुसमय जानकर कुछ नहींकहा और दामभी नहीं बदा तब पुष्कर ने उससे कहा कि जो तुम दमयन्ती को पणमें नहीं रखतेहो तो तुम इसे लेकर मेरे राज्यसे निकल जाओ यह सुनकर नल दमयन्ती को साथ लेकर देशसे बाहर चलागया और राज्यके पुरुष उसे अपनी सीमा से बाहरकरआये हाय जब कलियुगने नलकी भी यह दुर्दशाकी तो क्रिमियों के समान अन्यपुरुषों की क्या गणना है धर्म तथा स्नेह रहित इस द्यूतको धिक्कारहै जिसके द्वारा कलियुग तथा द्वापरने ऐसे २ राजर्षियोंको भी ऐसी महा आपत्तियों में डाला इसके उपरान्त राजानल दमयन्ती के साथ वनमें भ्रमण करताहुआ क्षुधा से व्याकुल होकर एक तड़ाग के तटपर पहुंचा और कुशों से फटे हुए पैरवाली दमयंती को विश्राम कराने के लिये वहीं ठहरगया उससमय उसे दो हंस चरते हुए दिखाई दिये उसने भोजनके निमित्त उनको पकड़ने के लिये उनपर अपना दुपट्टाफेंका वह उस दु-

पट्टेको भी लेकर उड़गये और यह आकाशवाणीहुई कि हे राजा हंसरूपसे आकर वह दोनों पाशे तुम्हारा वस्त्र हरलेगये इस आकाशवाणी को सुनकर नलने उदासीनहोके युक्तिपूर्व्वक दमयन्ती को राजा भीमके नगरका मार्गबताने के निमित्त कहा कि हे प्रिये यहमार्ग अंगदेशकाहै वह दूसरा मार्ग कोशलदेशका है और यह तीसरा मार्ग विदर्भदेश में तुम्हारे पिताके यहां का है यहसुनकर दमयन्ती अपने चित्तमें कुछ शंकितसीहुई कि आर्यपुत्र मुझे त्यागकरने के लिये तो मार्ग नहीं बतारहे हैं तद-नन्तर रात्रिहोजानेपर कन्दमूल तथा फलखाकर थकेहुए वह दोनों स्त्री पुरुष कुशकी शैयापरलेटे उस समय थकीहुई दमयन्ती तो क्षणहीभरमें सोगई परन्तु कलियुगसे ठगाहुआ राजानल जागताहीरहा और दमयन्तीको सोईहुई जानकर उसका आधा वस्त्रफाड़कर धारणकरके वहां से चलदिया तब कुछ रात्रिरहे जगीहुई दमयन्ती अपने पति नलको न देखकर यह विलापकरनेलगी कि हा आर्यपुत्र हा महासत्त्व हे शत्रुओंपरभी कृपाकरनेवाले हे प्राणों से भी अधिक मुझे चाहनेवाले किसने मेरे ऊपर तुमको कृपारहित करदिया वनमें अकेले तुम कैसे पैदल २ चलोगे श्रमको दूरकरनेको वहां कौन तु-म्हारी सेवाकरेगा जो तुम्हारे चरण राजालोगों के शिरोंकी मालाओं के परागसे रंजितहोते थे उनको मार्ग्गकी धूल मलिन करेगी जो तुम्हारे कोमल अंग चन्दनके लेपको भी नहीं सहसक्ते थे वह अंग मध्याह्न के समय सूर्य्य के सन्तापको कैसे सहेंगे मुझे उस बालक पुत्रसे कन्यासे तथा अपने शरीर से भी कुछ प्रयोजन नहीं है यदि मैं सतीहूं तो देवतालोग सदैव तुम्हाराही कल्याण करें इस प्रकारसे विलाप करतीहुई दमयन्ती नलकेही बतायेहुए मार्ग्ग से चली मार्ग्ग में बहुतसी नदी अनेक पर्व्वत तथा वनोंका उसने उल्लंघनकिया परन्तु पतिकी भक्तिका उल्लंघन उसने मनसे भी नहीं किया इसी से सतीत्वका तेजहीमार्गमें उसकी रक्षाकरतारहा क्योंकि कोई लुब्धक उसके धर्मको नष्ट करना चाहताथा परन्तु उसको किसी सर्पने नष्ट करदिया उस लुब्धकसे बचकर दमयन्ती भाग्यवशसे मार्गमें मिलेहुए वैश्योंके साथ राजा सुबाहुके नगरको गई वहां राजसुताने महलपर से उसेदेखकर उसके रूपसे प्रसन्न होकर उसको अपने पास बुलाके अपनी मातासे जाकर मिलाया और दमयन्ती यह कहकर कि मेरा पतिमुझे छोड़गया है उसी राजपुत्रीके पासरही इस बीचमें राजा भीमने नलका वृत्तान्त सुनकर नल तथा दमयन्तीके ढूंढ़नेके निमित्त अपने दूत चारोंओरको भेजे उनमेंसे राजाका सुषेणनाम मंत्री ब्राह्मण का रूपधरके सुबाहुकी राजधानी में आया उसने आगन्तुक लोगोंको ढूंढ़तीहुई दमयन्ती को देखा और दमयन्तीने उसे देखा परस्पर पहचानकर वह दोनों ऐसा रोदन करनेलगे कि जिसरोदनको सु-नकर सुबाहुकी रानीने उन्हें बुलाकर रोदनका कारणपूछा और पूछनेसे मालूमहुआ कि यह मेरी बहिन की पुत्री दमयन्ती है तब उसने अपने पतिसे कहकर दमयन्तीको सुषेण समेत रथपर चढ़ाकर विदर्भ देशको भेजदिया वहां दमयन्ती अपने पिता माता पुत्र तथा कन्याको पाकर अपने पतिके ढुंढ़वानेका उद्योग करनेलगी तब राजाभीमने दूतोंको नलके ढूंढ़नेकेलिये भेजा और उनसे यहकहदिया कि जहां रसोई तथा स्यन्दनोंकी विद्याके जाननेवाले नलके होनेका सन्देह तुमलोगोंको होय वहां यह श्लोक

पढ़ना (वालाम्बनेप्रसुप्तांनृशंससन्तज्यकुमुदिनीकान्ताम् आप्यैवाम्बरखण्डंचन्द्राद्दश्यङ्क्यातोसि) हे निर्दय चन्द्रवन में सोतीहुई कुमुदिनी रूपी कान्ताको छोड़कर एक अम्बर (वस्त्र तथा आकाश) का खण्डपाकर कहाँ अदृश्य होरहेहो ३२६ इसबीच में रात्रिके समय वनमें उस आधे वस्त्रको पहने हुए राजानल को कुछ दूर जाकर दावाग्नि दिखाईदी और यह शब्द सुनाई दिया कि हे महासत्त्व मुझ निर्बल को यह दावाग्नि भस्मकिये देती है मुझे शीघ्रही इससे निकालो यह सुनकर राजानल ने दावाग्निमें दृष्टि करके देखा कि मणिकी प्रभाके समूहसे व्याप्त एक सर्प दावाग्निके शस्त्रके समान मण्डलबांधे बैठाहुआ है उसे देखकर राजा नलने अपने कन्धेपर उसे चढ़ा के उस दावाग्नि से कुछ दूर लेजाकर छोड़नाचाहा तब सर्प ने कहा कि यहांसे गिनकर दशपैर मुझे औरलेचलो उसके यहवचन सुनकर राजानल एक दो तीन आदि गिनता हुआ दशपैरतक उसे और लेगया वहां उस सर्प ने उसके माथेपर काटा इससे उसकी भुजा छोटी होगई वर्ण काला होगया और चेष्टा बिगड़गई अपनी यह दशा देखकर राजानलने उसे कन्धेपरसे उतारकर पूछा कि तुम कौनहो और यह क्या तुमने प्रत्युपकार मेरेसाथ किया यह सुनकर उस सर्पने कहा कि हेराजा मैं कर्कोटकनाम नागराज हूं मैंने तुम्हारे उपकारके लिये तुमको काटाहै इसका गुण तुम्हें पीछे से मालूम होगा गुप्त निवासमें विरूप होनेसे ही महात्माओंके कार्य सिद्धहोते हैं यहअग्निशौचनाम दो वस्त्र मैं तुमको देताहूं इनके पहरतेही तुम्हारा रूप पूर्वकासाही होजायगा यहकहकर और वस्त्र देकर कर्कोटकके चलेजानेपर राजा नल उसवनसे चलकर कोशलदेशमें पहुंचा वहां राजा ऋतुपर्णके यहां ह्रस्वबाहुनाम रसोइया होकररहा वह बड़ेदिव्य भोजन राजाके निमित्त बनाताथा इससे और रथ विद्यासे उसका बड़ाभारी यश उसदेशभरमें फैलगया इसबीचमें राजाभीमका एकदूत वहांभीगया औरउसने सुना कि यहां एकह्रस्वबाहुनाम रसोइया नलके समान रथविद्या तथाभोजनविद्याका जाननेवालाहै यहसुनके उसने उसेनलजानके युक्तिपूर्वक उसके पासजाके अपनेस्वामीका बतायाहुआ श्लोकपढ़ा उसश्लोकको सुनकर अन्यलोगतो कुछ नहींसमझे परन्तु रसोइयेकेरूपमें स्थित नलने कहा (क्षीणोम्बरैकदेशंचन्द्रआप्यान्यमण्डलं प्रविशन्कुमुदिन्यायंदहृश्योजातस्तत्कानृशंसतातस्य) अम्बरके एकखण्डको लेकर अन्य मण्डल में प्रवेशकरताहुआ क्षीण चन्द्रमा कुमुदिनीसे अदृश्यहोगया इसमें उसकी क्या निर्दयताहै इसउत्तरको सुनकर उसदूतने उसे निस्सन्देह नलही जानकर और विपत्तिसे उसका बिगड़ाहुआ रूप समझकर विदर्भदेश में जाकर राजाभीम तथा दमयन्ती से सब वृत्तान्त कहा तब दमयन्ती ने यहवृत्तान्त जानकर एकान्त में अपने पितासे कहा कि निस्सन्देह वहरसोइयेके रूपमें आर्यपुत्रही हैं इससे उनके बुलानेके लिये मेरी बताई हुई यहयुक्ति कीजिये कि राजा ऋतुपर्णके यहांदूत भेजिये वहदूत पहुंचतेही राजासे कहै कि राजा नल कहीं चलागयाहै उसकापता नहीं लगता इससे दमयन्ती प्रातःकाल फिर स्वयंबरकरेगी इसलिये आपभी शीघ्रही विदर्भदेशको चलिये इसबातको सुनकर राजा ऋतुपर्ण आर्यपुत्रके साथ एकही दिनमें अवश्य आवेगा दमयन्तीका यह विचार सुनकर भीमने यही संदेशा कहकर एकदूत ऋतुपर्णके यहां

भेजा उसदूतने राजा ऋतुपर्णके पास जाकर राजा भीमका संदेशा कहदिया दूतके यहवचन सुनकर ऋतुपर्णने पास खड़ेहुए ह्रस्ववाहुरूपी नलसे कहा कि हे ह्रस्ववाहु तुमने हमसे कहाथा कि मैं रथकी विद्याजानताहूं इससे जोहोसके तो मुझे आजही विदर्भदेशमें पहुंचाओ यहसुनकर नल बहुतअच्छा पहुंचादूंगा यहकहकर और दमयन्तीने मेरीही प्राप्तिके लिये यह स्वयंवर रचाहै नहीं तो उसकी चित्त वृत्ति स्वप्नमेंभी ऐसी नहींहोसक्ती है अच्छा वहांजाकर देखूं क्याहोताहै यहशोचकर श्रेष्ठ घोड़े जोतकर रथ तय्यार करलाया और राजा ऋतुपर्णको चढ़ाकर गरुड़के समान वेगसे रथकोलेचला मार्ग में रथ के वेगसे गिरेहुए वस्त्रको लेनेके लिये ऋतुपर्ण ने उससे कहा कि रथ रोकलो मैं अपना वस्त्रलेआऊं यह सुनकर नलने कहा कि आपका वस्त्र न जाने कहांरहा यहरथ इतनेही क्षण में न जानिये के योजन पृथ्वी लांघआया यहसुनकर ऋतुपर्ण ने कहा कि हे ह्रस्ववाहु तुम मुझे यह अपनी रथ विद्या देदो तो मैं तुमको अक्ष विद्या देदूं जिसके जानने से पाशे वशीभूत होजाते हैं और संख्याका शीघ्र ज्ञान होजाता है अभी मैं तुमको इसका निश्चय कराये देताहूं यहजो आगे वृक्ष दिखाई देरहाहै उस के फल तथा पत्तों की संख्या मैं तुमसे कहताहूं तुम गिनकर इसेदेखलो यहकहकर उसने जितने फल तथा पत्ते वतलाये उतनेही नलके गिने से भी उसमें निकले तब नल ने राजा ऋतुपर्ण को रथ विद्या बतादी और ऋतुपर्णने उसको अक्षविद्यावतादी फिर नलने दूसरे वृक्षमें जाकर उसकी परीक्षाकी तो परीक्षामें उसे वह विद्या यथार्थ मालूमहुई इसप्रकार अक्षविद्याको पाकर प्रसन्नहुए राजा नलके शरीर से एक कृष्णवर्णका पुरुष निकला उससे नलनेपूछा कि तुम कौनहो उसनेकहा कि मैं कलियुगहूं दम यन्ती के साथ तुम्हारा स्वयंवर देखकर मैंने ईर्ष्या से तुम्हारे शरीर में प्रवेशकरके तुमको द्यूत खिलाकर तुम्हारी सम्पूर्ण लक्ष्मी नष्टकरदी इसी से तुमको काटतेहुए उस कर्कोटक सर्प ने तुम्हारा अपकार नहीं किया देखो मेराही शरीर सब भस्मकरदियाहै ठीकहै (मिथ्यापरापकारोहि कृतःस्यात्कस्यशर्मणे) व्यर्थ पराया अपकार करने से किसका कल्याणहोताहै इससे अब मैं जाताहूं अब मुझे तुम्हारे शरीर में रहने का अवकाश नहीं है यहकहकर कलियुगके अन्तर्द्धान होजानेपर राजा नल पहलेही के समान ध र्मात्मा तथा तेजस्वी होगया और राजा ऋतुपर्णके पासआके उसे रथपर चढ़ाकर उसी दिन विदर्भ देशमें पहुंचगया वहां आगमनका कारण पूछनेवाले लोगों से हँसेगये राजा ऋतुपर्णको राजाभीमने आदरपूर्वक राजमंदिरकेही निकटटिकाया और दमयन्तीने रथके आश्चर्य्यकारीशब्दको सुनकर नल के आगमनका सम्भव जानकर प्रसन्नतासे अपनी चेरी को उसे देखने के लिये भेजा चेरी ने उसे देख कर लौटकर दमयन्तीसे कहा कि हे राजपुत्री तुम्हारे स्वयंवरके मिथ्याप्रवादको सुनकर यह जो राजा ऋतुपर्णआयाहै इसे ह्रस्ववाहुनाम एक रसोइया एकही दिनमें अपनी रथविद्याके प्रभावसे यहांलायाहै मैंने उसरसोइयेको रसोईमेंजाकर देखाहै उसका वर्णकालाहै और चेष्टाकुरूपहै परन्तु उसकाप्रभाव महा- आश्चर्य्यकारीहै क्योंकि उसरसोईमें भोजनकेपात्रोंमें विनाडालेही जलउत्पन्नहोगया अग्निके विनाही इंधनकीलकड़ी आपसेआप जलनेलगी औरक्षणहीभरमें दिव्यभोजन तैयारहोगयेइस महाआश्चर्य्यको

देखकर मैं तुम्हारेपास आईहूं चेरीके यहवचनसुनकर दमयन्ती ने यहसोचाकि अग्नितथा वरुणको वशी भूत करनेवाले यहआर्यपुत्रही हैं मेरे वियोगके क्लेशसे इनकारूप बिगड़गयाहै तथापि परीक्षा करनी चाहियेयहनिश्चयकरके उसने युक्तिपूर्व्वक चेरी के साथ अपनेपुत्र तथा कन्याको उसकेपासभेजा वह अपने उन दोनों बालकोंको देखकर गोदी में बैठालके अश्रुओंकेप्रवाहों को वहाताहुआ चुपचाप बहुत कालतक रोतारहा चेरी ने उसे रोते देखकर पूछा कि आप क्यों रोतेहो उसनेकहा कि ऐसेही मेरेबालक अपने नानाके यहां हैं उन्हीं का स्मरणकरके मुझे इससमय दुःखहुआहै उसके यह वचन सुनके चेरीने दोनों बालकोंको लेकर दमयन्ती से आकर सबवृत्तांतकहा और दमयन्तीको इनसववातों से निश्चय होगया कि यहनलही है ४०४ इसीसे दूसरे दिन दमयन्ती ने प्रातःकाल अपनी चेरी से कहा कि तुम राजा ऋतुपर्णके रसोइये से मेरीओरसे यहकहो कि मैंने सुनाहै कि आपके समान कोई पृथ्वीभरमें रसोई करनेवाला नहीं है इससे आप यहांआकर मुझे भोजनबनाके खिलाइये दमयन्तीकी यह आज्ञा पाकर चेरी ने जाकर इसीप्रकार नलसेकहा तब राजा नल ऋतुपर्णसे आज्ञालेकर दमयन्ती के पास गया वहां दमयन्ती ने उससेकहा कि सत्य २ कहिये कि जो आप रसोइये के रूपधारी राजा नलहैं तो चिन्तारूपी समुद्रमें डूबतीहुई मुझदीनको पारलगाइये यहसुनकर स्नेह हर्ष दुःख तथा लज्जासे व्याकुल राजा नल नीचेको मुखकरके गद्गद वचनबोला कि वज्रसे भी अधिक कठोर हृदयवाला वह पापी नल मैंहीहूं जिसने मोहसे तुमको सन्तापदेकर अपने को अनलकिया उसके यह वचन सुनकर दमयन्तीने फिरपूछा कि जो आप नलहैं तो आपका यह रूप कैसे बिगड़गया तब नलने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कर्कोटककी मित्रतासे लेकर कलियुगके शरीरसे निकलनेतकका कहा और उसी समय कर्कोटक के दियेहुए अग्निशौचनाम वस्त्रपहरे उनके धारण करतेही नलका रूप पूर्व्वकासाहोगया तब नलको अपने पूर्व्व रूपमें देखकर प्रफुल्लित मुख कमलवाली दमयन्ती अश्रुओं से दुःखरूपी दावानलको शान्त करके अपूर्व्व अनुपम सुखको प्राप्तहुई उससमय राजा भीमने भी अपने परिजनों से यह सब वृत्तान्त सुनकर वहांआके नलको देखकर आनन्दसे बड़ा उत्सवकिया और राजा ऋतुपर्ण हृदयमें हँसतेहुए राजा भीमसे कियेगये सत्कारको ग्रहणकरके और नलका पूजनकर तथा अपने सब अपराध क्षमाकराके अपने कोशलदेशकोगया उसके चलेजाने पर राजानल अपने स्वसुर से कलियुगकी सम्पूर्ण दुरात्मता कहकर दमयन्ती के साथ कुछ दिन सुखपूर्व्वक वहां रहकर अपने स्वसुर की सेनालेकर निषधदेशको गया वहां अपने भाई पुष्करको अक्षविद्याके प्रभावसे जुएमें जीतकर शरीरसे द्वापरके निकलजाने से फिर धर्मकी प्राप्तहुए पुष्करको आधा राज्य देकर दमयन्ती के साथ सुखको भोगताहुआ अपने राज्यका पालनकरनेलगा इस सुन्दर नलकी पवित्रकथाको कहकर सुमना ब्राह्मणने राजपुत्री बन्धुमतीसे फिर कहा कि हे राजपुत्री इसप्रकारसे महात्मालोग दुःखका अनुभवकरके सुखको भोगते हैं और सूर्य्यादिक देवता भी अस्तको प्राप्तहोकर फिर उदयको प्राप्तहोते हैं इससे तुम्हारा पति भी तुम को मिलजायगा धैर्य्यकरो दुःखको त्यागो उस ब्राह्मणके यह उचित वचन सुनकर बन्धुमती उसे बहु-

तसा धनदेके और विदाकरके अपने पतिकी प्रतीक्षा करनेलगी इसके उपरान्त थोड़ेही दिनोंमें महीपाल अपनी माताको लेकर अपने पिताके साथ आगया उसे देखकर जैसे पूर्णमासी के चन्द्रमा को देखकर समुद्र प्रसन्नहोताहै उसीप्रकार वह चन्द्रमती भी प्रसन्नहोतीभई तब महीपाल उससे मिलकर अपने बिनाकहेहुए चलेजाने के अपराधको क्षमाकराके अपने स्वसुरके दियेहुए राज्यको सुखपूर्वक चन्द्रमती के साथ भोगनेलगा मरुभूतिके मुखसे इस विचित्र मनोहर तथा अनुपम कथाको सुनकर अलंकारवती समेत नरवाहनदत्त अत्यन्त प्रसन्नहुआ १२४॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांअलंकारवतीलम्बकेषष्ठस्तरंगः ६॥
अलंकारवती नाम नवां लम्बक समाप्तहुआ॥९॥

शक्तियशोनामदशमोलम्बकः॥

अवारणीयंकृष्णमिवारणीयंनरत्नुमः॥
हेरम्बस्यससिन्दूरमासिंदूरमघच्छिदम् १
पायाद्वःपुरदाहाय शम्भोस्संदधतःशरम्॥
समंव्यग्रेषुनेत्रेषु तृतीयमधिकंस्फुरत् २
रक्तारुणान्नृसिंहस्य कुटिलाविद्विषोवधे॥
नखश्रेणीचदृष्टिश्च निहन्तुदुरितानिवः ३

इसप्रकार कौशाम्बीमें नरवाहनदत्त अपने मन्त्री तथा स्त्रियोंके साथ सुखपूर्वक रहताथा एक समय उसके आगेही सभामें बैठेहुए वत्सराज उदयनको विज्ञापनकरनेकेलिये उसी पुरीकारहनेवाला रत्नदत्त नाम वैश्यआया और प्रतीहारसे आज्ञापाकर सभाके मध्यमें आके हाथजोड़केबोला कि हे राजा वसुंधरनाम एक दरिद्रीभार उठानेवाला इसीपुरी में रहताहै उसको अकस्मात् ऐश्वर्य्यवान् देखकर मैंने उसे अपने घरलेजाके यथेच्छ मद्यपिलाकर उससे ऐश्वर्य्यका कारण पूछा उसने उन्मत्तहोकर मुझसे कहा कि मैंने राजद्वारपर एक जड़ाऊ कंकण पाके उसमेंसे एक रत्न उखाड़कर हिरण्यगुप्त वैश्यके हाथ एक लक्षअशर्फी को बेचा इसीमें मैं अब ऐश्वर्य्यवान् होगया हूं यह कहकर उसने आपके नामसे चिह्नित वह कंकण मुझे दिखाया यही विज्ञापन करनेके निमित्त मैं आपके निकट आयाहूं यह सुनकर वत्सराजने वसुंधरको तथा हिरण्यगुप्तको बुलवाया राजाकी आज्ञासे कंकणको लेकर वसुंधर तथा उसरत्नको लेकर हिरण्यगुप्त यह दोनों सभामें आये राजाने वसुंधरके हाथमें वह कंकण देखकर कहा कि पुर भ्रमणके समय यह कंकण मेरेहाथसे गिरपड़ाथा आज इसकी सुधयादआई है राजाके यह

वचन सुनकर सभासदोंने वसुधरसे पूछा कि तुमने राजाके नामसे अंकित कंकणको पाकर क्यों छिपा रक्खा यह सुनकर उसनें कहा कि भारका उठानेवाला मैं राजाके नामके अक्षरोंको क्याजानूं मैंने राज द्वारपर यह कंकण पड़ाहुआदेखा और दरिद्रसे दुखीहोनेके कारण उठालिया यह सुनकर सभासदोंनें हिरण्यगुप्तसे भी यहीवात पूछी उसने कहा कि मैंने वाज़ारमें मूल्यदेकर यह रत्नलियाहै जवरदस्ती से नहीं लिया और इसरत्नमें राजाकी कोई पहचान नहीं है जो मूल्य मैंने इसरत्नका दियाहै उसमेंसे पांच हजार अशर्फी तो यह लेगयाहै और वाकी सव मेरे यहां जमाहैं हिरण्यगुप्तके यह वचन सुनकर वहां वैठेहुए यौगन्धरायण ने कहा कि इसमें किसीकाभी अपराध नहीं है लिखनेपढने के ज्ञानसेरहित दरिद्री इस वसुधरका इसमें क्या दोपहै दरिद्रसे तो लोग चोरीभी करतेहैं और फिर पाईहुई वस्तुको कौनछोड़ताहै और मूल्यदेकर रत्नमोललेनेवाले इसवैश्य हिरण्यगुप्तकाभी कोई दोषमालूम नहींहोताहै महामन्त्री यौगन्धरायणके यहवचनसुनकर वत्सराजने हिरण्यगुप्तको पांचहजार अशर्फीदेकर अपना रत्नलेलिया और अपना कंकणलेकर उसवसुधरकोभी छोड़दिया तव पहलेमिलीहुई पांचहजार अशर्फियोंको पाकर वसुधर निर्भयहोकर अपनेघरकोगया और हिरण्यगुप्तभी राजाको प्रणामकरके अपनेघरकोगया उनदोनोंके चलेजानेपर महाराज उदयन ने अपने चित्तमें उस रत्नदत्त वैश्यको विश्वासघाती तथा पापी जानकर भी ऊपरसें कार्य्यकेनिमित्त सत्कारकरके उसको विदाकिया तव वसुधरका यहवृत्तान्तदेखकर वसन्तकनें कहा कि जिसपर ईश्वरकाकोपहोताहै उसकेपास मिलाहुआभी धन नहींरहताहै इस विचारे वसुधरकी भद्रघटकीसी दशाहोगई पाटलिपुत्रनामनगरमें एकशुभदत्तनाम दरिद्री रहताथा वह प्रतिदिन वनसे काष्ठलाके और वेचकर अपने कुटुंबका पालनकिया करताथा एक दिन वनमें काष्ठकेलिये वहुतदूरजाकर शुभदत्त ने दिव्यआभूषण तथा वस्त्रधारी चारयक्षदेखे उनयक्षोंने उसे भयभीत देखकर और उसे दरिद्री जानकर कृपापूर्व्वक कहा कि हे शुभदत्त तुम यहां हमारे पासरहो और हमारी सेवाकरो हम विना क्लेशही के तुम्हारे घरका निर्वाह करेंगे उनके वचनको स्वीकारकरके शुभदत्तने वहीं रहकर उनको स्नानादिक करवाये, भोजनके समय उनयक्षोंने शुभदत्तसे कहा कि हेशुभदत्त इसभद्रघटसे तुम भोजन निकाल२ कर हमको देतेजाओ शुभदत्त उसघटको शून्य देखकर भोजन देनेमें विलम्ब करनेलगा तव उनयक्षोंने मुस्कुराकर उससे कहा कि हे शुभदत्त तुम इसके माहात्म्यको नहीं जानतेहो इसके भीतर हाथडालकर जो तुम चाहोगे सो सव मिलेगा क्योंकि यह घटकामप्रदहै उनके यह वचन सुनकर जैसेही उसने घड़ेमे हाथडाला वैसेही उसको यथेच्छ सम्पूर्ण पदार्थमिले उससे उसने उनयक्षोंको भोजन कराया और उनके तृप्तहोनेके पीछे आपभी भोजन किया इसप्रकार भक्तिसे तथा भयसे यक्षोंका नित्य सेवन करताहुआ कुटुम्बकी चिन्तासे व्याकुल शुभदत्त वहां रहा और दुःखसे पीड़ित उसके कुटुम्बको यक्षोंने स्वप्नमें कुछ धन देकर और शुभदत्तका वृत्तान्त कहकर सावधान करदिया तदनन्तर एक महीनेके व्यतीत होजाने पर यक्षों ने शुभदत्तसे प्रसन्न होकर कहा कि हे शुभदत्त हम तुम्हारी भक्तिसे तुमपर प्रसन्नहैं जोचाहो सो मांगो यह सुनकर उसने कहा कि जो आप सत्य २ मुझपर प्रसन्न हैं तो यह भद्रघट मुझको देदीजिये

यह सुनकर यक्षोंने कहा कि इसकी तुमरक्षा नहीं करसकोगे क्योंकि यह टूटजानेपर भागजाताहै इससे अन्य कोई वरमांगो यक्षों के इसप्रकार समझानेपर भी शुभदत्तने अन्यवर नहीं लेनाचाहा तब उन्होंने वह घट उसे देदिया उस भद्रघटकोलेके और यक्षों को प्रणाम करके शुभदत्त अपने घरमें आया और वहां उसघटसे प्राप्तहुए भोजनादि पदार्थोंको अन्यपात्रों में रखकर अपने कुटुम्ब सहित सुखपूर्वक रहनेलगा एक समय उसके बन्धुओंने उसे भारढोने से रहित तथा अत्यन्त ऐश्वर्य्यवान् देखकर मद्य पिलाकर उससे पूछा कि तुम्हारे पास यह ऐश्वर्य्य कहां से आया उनके यह वचन सुनकर वह मूर्ख कुछ उत्तर न देकर अभिमान से उस घड़ेको कन्धेपर रखकर नाचनेलगा नाचने में वह घड़ा पृथ्वीमें गिरके फूटके उसीसमय अपने स्थानको चलागया और शुभदत्त अपनी पूर्वदशाको प्राप्त होगया इस प्रकारसे मद्यपानादिक दोषोंके प्रमादसे नष्टहुई बुद्धिवाले अभागीलोग प्राप्तहुए धनकी भी रक्षानहीं करसकेहैं वसंतकसे भद्रघटके इसहास्यकारी वृत्तान्तको सुनकर राजाउदयनने सभासे उठकर स्नानादिक नित्यकर्मकिया और नरवाहनदत्तभी अपने पिताकेही मंदिरमें स्नान तथा भोजनादिककरके सायंकाल के समय अपने मित्रोंसमेत अपने निजमंदिरमेंगया ५० वहां रात्रिके समय पलँगपर लेटेहुए नरवाहनदत्तको निद्रा न आते देखकर मरुभूतिने सम्पूर्ण मंत्रियोंके आगे उससे कहा कि हे स्वामी मैं जानताहूं आपने दासीकेसाथ रमणकरनेकी इच्छासे आज रानियोंको नहीं बुलवाया और दासीको भी नहीं बुलवाया इसीसे आपको निद्रानहीआती है आप जानबूझकर भी अबतक वेश्याओंसे अनुराग क्यों करते हैं उनके चित्तमें कभी भी सद्भाव नहीं होताहै इसविषयपर मैं आपको एककथा सुनाताहूं चित्रकूटनाम बड़े समृद्धिमान् नगरमें रत्नवर्मा नाम बड़ा धनवान् वैश्य रहताथा उसके श्रीशिवजी के आराधनसे ईश्वरवर्मा नाम एक पुत्र उत्पन्नहुआ उस ईश्वरवर्मा को उसने सम्पूर्ण विद्यापढ़ाकर युवाहोने वाला जानकर अपने चित्तमें शोचा कि (रूपिणीकुसृतिःसृष्टाधनप्राणापहारिणी आढ्यानांयौवनान्धानांवेश्यानामेहवेधसा) ब्रह्माने यौवनसे अन्धेहुए धनवानों के लिये धन तथा प्राणोंका हरनेवाला वेश्यानाम मूर्त्तिमानकपटबनायाहै इससे मैं अपने इस पुत्रको वेश्याओं का कपट सिखाने के लिये किसी कुटनी के सुपुर्दकरूं जिससे वेश्यालोग फिर इसे ठग न सकें यह शोचकर रत्नवर्मा ईश्वरवर्मा को साथलेकर यमजिह्वानाम कुटनी के घरगया वहां मोटी ठोड़ीवाली लम्बे दाँतवाली तथा टेढ़ी नाकवाली यमजिह्वा अपनी कन्याको यह शिक्षा देरही थी कि हे पुत्री धनसे सबकी प्रतिष्ठा होती है परन्तु वेश्याओं की विशेष करके और स्नेह करनेसे धनमिल नहींसक्ता इससेवेश्याको किसीसे स्नेह न करना चाहिये सन्ध्या के समान वेश्याओं का रागदोषरूपी अन्धकारका बढ़ानेवाला होताहै इसमें वेश्यासुशिक्षित नटी के समान मिथ्या रागदिखावे वेश्याको चाहिये कि पुरुषके साथ अनुराग प्रकट करके उससे सब धनलेले और धनलेकर निकालदे और जो उसे फिर धन मिले तो उसको स्वीकारकरले मुनि के समान जो वेश्या बालक में युवामें वृद्धमें रूपवान् में तथा कुरूपमें समभाव रखती हैं उनको परमार्थप्राप्तहोताहै इस प्रकार अपनी पुत्रीको शिक्षादेतीहुई यमजिह्वाके पास रत्नवर्मा अपने पुत्रको लेकरगया और बैठकर

उससे बोला हे आर्य्ये तुम मेरे पुत्रको वेश्याओंकी सम्पूर्णकला सिखा दो जिससे यह चतुर होकर वेश्याओंके जालमें न फसे इस कार्य्यके लिये मैं तुमको एकहज़ार अशर्फ़ीदूंगा यह सुनकर उस कुटिनी ने वह कार्य्य अंगीकार करलिया तब रत्नवर्मा उसे अशर्फ़ी देकर तथा अपने पुत्रको सौंपकर अपने घर चला आया और ईश्वरवर्मा यमजिह्वा के यहां रहा और एकही वर्ष में सम्पूर्ण वेश्याओं की कला सीखकर अपने पिताके यहां चला आया और सोलहवर्षका होकर अपने पितासे बोला कि हे तात धनसेही धर्म तथा कामकी प्राप्तिहोती है और धनही से प्रतिष्ठा तथा यशकी प्राप्ति होती है इससे आप मुझे परदेश जानेकी आज्ञा दीजिये उसके यह वचनसुनकर रत्नवर्माने उसे पांच करोड़ अशर्फ़ी रोज़गार करनेको दीं उन्हेंलेकर ईश्वरवर्मा अपने कुछ सजाती मित्रोंको साथ लेकर स्वर्णद्वीपको चला मार्ग मे चलते २ क्रमसे मिलेएहु कांचनपुरनाम नगरके बाहर किसी उपवनमें टिका और उसी उद्यानमें स्नान तथा भोजन करके नगर देखनेको गया उस नगरके किसी देवमन्दिर में जाकर उसने देखा कि युवावस्थारूपी वायुसे उछलीहुई रूपके समुद्रकी लहरके समान सुन्दरीनाम एक वेश्या नृत्य कररही है उसे देखतेही वह उसके वशीभूत ऐसाहुआ कि जिससे कुट्टिनीकी सम्पूर्णशिक्षा मानो कुपित होकर उसकेपाससे भागगई नृत्यकेअन्तमें उसने अपनेएकमित्रको भेजकर सुन्दरी से अपना प्रयोजन कहलवाया सुन्दरी ने मैं धन्यहूं ऐसाकहकर स्वीकारकरलिया तब ईश्वरवर्मा अपनेडेरे पर चतुररक्षकोंको छोड़कर सुन्दरीके मकान पर गया वहाँसुन्दरीकी माता मकरकटीने उसका बड़ासत्कारकिया औररात्रिके समय रत्नोंसे देदीप्यमान जड़ाऊ पलँगसे युक्त शयनस्थानमें सुन्दरीकेसाथ उसको भेजा वहां नृत्यमें में तथा सुरतिमें अत्यन्त निपुण उस सुन्दरीके साथ रमणकरके वह दूसरे दिनभी पाससे नहीं हटतीहुई बड़े प्रेमको प्रकट करतीहुई सुन्दरीको अत्यन्त अनुरागयुक्त देखकर वहां से नहीं आसका और दोदिन के लिये पच्चीसलाख अशर्फ़ी उसे देनेलगा सुन्दरी ने उससे कहा कि धन तो मुझे बहुत मिलचुका है परन्तु आपसरीखा पुरुष नहीं मिलाथा जो आपही मुझे मिलगये तो मैं धनलेकर क्या करूंगी सुन्दरी के इसप्रकार कहनेपर उसकी माताने कहा कि अब जो कुछ हमारे पासका धनहै सो भी इन्हींका है इससे यह भी लेकर उसी में रखदो तो क्या हानिहै माता के बड़े कहने सुनने से सुन्दरी ने बड़े आग्रहसे वह अशर्फ़ी लीं उसके इस आग्रहको देखमूर्ख ईश्वरवर्मा ने उसके अनुरागको सत्यही जाना और उसके रूपसे नृत्यसे तथा गीतसे वशीभूत होकर दोमहीने वहां व्यतीत किये और इतने दिनोंमें दो करोड़ अशर्फ़ी उसे दीं ईश्वरवर्मा को इसप्रकारसे मोहित देखकर उसकेमित्र अर्थदत्तने उससे आकर एकान्त में कहा कि हे मित्रकातरकी अस्त्रविद्याके समान तुम्हारी वह सम्पूर्ण कुट्टिनी शिक्षा क्या समयपर व्यर्थ होगई यह जो तुम वेश्याके प्रेम में सत्यता समझ रहेहो सो क्याकभी मरुमरीचिकाओं में भी जल मिलताहै इससे जब तक यह तुम्हारा सम्पूर्ण धन नहीं क्षीणहोता है तभीतक यहां से निकल चलो तुम्हारे पिता जो सुनेंगे तो बहुत कुपितहोंगे उसके यह वचनसुनकर ईश्वरवर्मा ने कहा कि वेश्याओंमें विश्वास न करना चाहिये यह तुम्हारा कहना बहुतठीकहै परन्तु यह सुन्दरी ऐसी नहींहै यह

क्षणभरभी मेरे देखेबिना अपने प्राण त्यागदेगी इससे जो सर्वथा चलनाही है तो उसे जाकर समझाओ उसके यह वचन सुनकर अर्थदत्त उसीके साथ उस सुन्दरी वेश्याके पासगया और उससे बोला कि तुम्हारी प्रीति ईश्वरवर्मापर बहुत अधिकहै परन्तु इसे रोजगारकेलिये स्वर्णद्वीपको अवश्यजानाहै वहां से बहुतसाधन उपार्जन करके लौटकर तुम्हारेही पास सदैव यह सुख पूर्वकरहैगा इससे हेसखी इसे जानेकी आज्ञादेदो यह सुनकर आंसूभरके ईश्वरवर्माके मुखको देखती हुई सुन्दरी मिथ्याविषाद करके बोली कि आप जानिये मैं इसमें क्याकहूं परिणामको विनादेखे कोई किसी पर विश्वास नहीं करताहै मुझे कुछ कहना सुनना नहीं है मेरे भाग्यमें जो बदाहोगा सोहोगा यह सुनकर उसकी मातानें कहा कि हे सुन्दरी दुःख न करो धैर्य्यधारणकरो तुम्हारा प्यारालौटकर तुम्हारे पास अवश्य आवेगा इसप्रकार उसे समझाकर उस कुट्टिनीने उससे सलाहकरके ईश्वरवर्माके जानेकेमार्गमें एक कुएमें जालल-गवादिया तब सुन्दरीशोक प्रकटकरके भोजन बहुतकम करनेलगी और गीत तथा नृत्यादिकोंसे विरक्तरही तदनन्तर ईश्वरवर्मा अपने मित्रके बतायेहुए दिनमें सुन्दरीके घरसे परदेशकोचला और वह कुट्टिनी तथा सुन्दरीभी मंगलाचार करके उसे भेजनेकोचली नगरके बाहर जहां कुएमें उसने जालबँ-धवारक्खाथा वहीं से ईश्वरवर्माको विदाकिया और जैसेही ईश्वरवर्मा वहांसे कुछ दूरचला वैसेही सुन्दरी उस कुएमें कूदपड़ी तब हापुत्री हासखी यह उसकी माताका तथा सखियोंका घोरशब्द ईश्वरवर्मा सुनकर अपने मित्रोंसमेत लौटकर अपनी प्यारीको कुएमें गिरीदेखकर शोकसे विह्वलहोगया और उस मकरकटीने बहुत रोकर जालके जाननेवाले अपनेही नौकरोंको सुन्दरीके निकालनेकोउसकुएमें उतारा उन्होंने कुएमें जाकर सुन्दरीजीती है जीती है यह कहकर उसे कुएमेंसे निकाला कुएमेंसे निकलकर सुन्दरी अपनेको मूर्च्छितसा बनाकर उसलौटेहुए ईश्वरवर्मासे बहुत पुकारने पर धीरेसेबोली तब ईश्व-रवर्मा बहुत प्रसन्नहोके उसे स्वस्थकरके उसीके साथ उसके घरको लौटआया और सुन्दरीके प्रेमको यथार्थ जानकर इतनेहीमें अपने जन्मको सफलमानकर यात्राका उद्योग छोड़कर वहींरहा ११३ तब अर्थदत्तने उसे यात्रासे निवृत्तहुआ जानकर उससे कहा कि हेमित्र मोहसे तुम अपनेको क्योंनष्टकिये देतेहो कुएमें गिरनेसे इस सुन्दरीके स्नेहमें विश्वासनकरो क्योंकि ब्रह्माभी कुट्टिनियोंकी कूटरचनाको नहीं जानसक्तेहैं तुम अपना सबधन नष्ट करके पितासे जाकर क्याकहोगे और कहां जाओगे इससे जो तुम अपना भलाचाहो तो अब भी इससे बचो अर्थदत्तके इन वचनोंपर ध्यान न देकर महीनेभरमें वह तीनकरोड़ अशर्फीभी उसने खर्चकरडाली तब सुन्दरीनें तथा उसकी माता मकरकटीने उसेनिर्धन जानकर अर्द्धचन्द्र (गर्दनी) देकर घरसे बाहर निकालदिया उसकी यह दशादेखकर अर्थदत्तादिकों ने अपने नगरमें आकर उसके पितासे सब वृत्तान्त कहा अपने पुत्रके वृत्तान्तको सुनकर रत्नवर्मा दुःखित होके उसी यमजिह्वा कुट्टिनी के पास जाकर बोला कि तुमने एक हजार अशर्फी लेकर मेरे पुत्रको अच्छी शिक्षादी कि मकरकटीने थोड़ेही कालमें उसका सर्वस्व हरलिया यह कहकर उसने अपने पुत्र का सबवृत्तान्त उससेकहा तब यमजिह्वाने कहा कि तुम अपने पुत्रको यहां बुलाओ अब मैं उसे ऐसा

उपाय बताऊंगी जिससे वह उसमकरकटीका सर्वस्व हरलावेगा उसकी यह प्रतिज्ञा सुनकर रत्नवर्म्मा ने शीघ्रही ईश्वरवर्म्मा के बुलानेको अर्थदत्तको भेजा अर्थदत्त ने कांचनपुरमें जाके ईश्वरवर्म्मा से उसके पिताका संदेशाकहकर कहा कि हे मित्र तुमने मेरा कहना नहीं माना इसीसे वेश्याओंकी सत्यता तुम को प्रत्यक्ष देखनीपड़ी तुमने पांचकरोड़ अशर्फी देकर अर्द्धचन्द्रपाया (कःप्राज्ञोवांछतिस्नेहं वेश्यासु सिकतासुच) कौन बुद्धिमान् वेश्याओंमें तथा वालूमेंसे स्नेहपानेकी इच्छाकरताहै अथवा इसमें तुम्हारा क्या अपराधहै संसारका धर्महीं ऐसाहै तभीतक मनुष्यवीर चतुर तथा कल्याणका भागी रहताहै जबतक कि स्त्रियोंकी चेष्टाओंमें नहीं फंसताहै इससे अब तुम अपने पिताकेपासचलकर इसवेश्यासे बदलालेने का यत्नकरो इसप्रकार समझाकर अर्थदत्त ईश्वरवर्म्माको उसके पिताके पास ले आया वहां रत्नवर्म्मा उसे बहुत समझाकर यमजिह्वा कुट्टिनीके पास लेगया और अर्थदत्त से सुन्दरीके कुएमें गिरने आदि का सब वृत्तान्त उसकुट्टिनीके सन्मुख कहलवाया सुन्दरीका कुएमें गिरना सुनकर यमजिह्वा ने कहा इसमें मेराही अपराधहै कि मैंने इसको यहमाया पहलेही नहीं सिखादीथी मकरकटी ने कुए में जाल वँधवादियाहोगा इसीसे वह सुन्दरी उसमें गिरकर नहीं मरी अच्छा कोई हानि नहीं है इसकाभी प्रतीकार मेरे पासहै यह कहकर उसने अपनी दासियों से कहा कि मेरे आलनाम बन्दरको लेआओ उसकी आज्ञापाकर एक दासी उस आलको लेआई यमजिह्वाने उस आलको हजार अशर्फी देकर कहा कि हे पुत्र इन अशर्फियोंको निगलजाओ जब वह उसके कहनेसे उनअशर्फियों को निगलगया तब यमजिह्वाने उससे कहा दश इसको दो पचास इसको दो पांच इसको दो इसप्रकार अनेक खर्चों में उसने उस बन्दर से वह अशर्फी दिलवाई और वह बन्दर उगल २ करदेतागया बन्दरकी इस युक्ति को दिखाकर यमजिह्वाने ईश्वरवर्मा से कहा कि तुम इस बन्दरको लेकर फिर उस सुन्दरी के पासजाओ और इस बन्दरको कहीं एकान्त में अशर्फी निगलवाकर उसके साम्हने इससे अशर्फी खर्च करवाओ तब सुन्दरी इस बन्दरको चिन्तामणिके समान देखकर तुम्हें अपना सर्व्वस्वदेकर यह बन्दर मांगेगी उसके मांगनेपर तुम बड़ा आग्रह करके उसका सर्व्वस्व लेके इसबन्दरको दो दिन के खर्च के माफ़िक अशर्फी निगलवाके उसे देकर शीघ्रही वहां से बहुत दूरपर चलेजाना यह कहकर यमजिह्वा ने वह बन्दर ईश्वरवर्म्माको देदिया और रत्नवर्म्मा ने उसे दो करोड़ अशर्फी देकर सुन्दरी के यहां भेजा वह उन अशर्फियों को तथा बन्दर को लेकर अपने परिकर समेत सुन्दरी के यहां गया सुन्दरी ने उसे फिर बहुतसा धन लायाहुआ जानकर बड़े आदरपूर्व्वक अपने यहां रक्खा वहां उसने आदर सत्कार के उपरान्त अर्थदत्त से उस आल नाम बन्दर को मँगवाकर उससे कहा कि हे पुत्र तीनसौ अशर्फी भोजनादि के खर्च के निमित्त दोसौ ताम्बूलादि के खर्चको दो और सौ मकरकटी को दो सौ ब्राह्मणों को देने के लिये मुझे दो और हजारसे जो कुछ बाकी हो वह सब सुन्दरी को देदो इसप्रकार ईश्वर-वर्म्मा के कहने से आल ने प्रथम निगलीहुई असर्फियां उगल २ कर सबको दीं इसी युक्तिसे एक पक्ष तक ईश्वरवर्म्मा को उस बन्दरके द्वारा अशर्फियो का व्यय करवाते देखकर सुन्दरी तथा मकरकटी ने

शोचा कि यह वन्दररूपधारी चिन्तामणि इसे सिद्धहुई है जो कि प्रतिदिन एक हजार अशर्फी देताहै जो यह वन्दर इससे मुझे मिलजाय तो वहुत अच्छाहोय यह शोचकर सुन्दरीने भोजनकरके एकान्त में बैठेहुए ईश्वरवर्मासे कहा कि जो सत्य २ आप मुझपर स्नेह करतेहो तो यह आल मुझको देदो यह सुनकर ईश्वरवर्मा हँसकर वोला कि यह तो मेरे पिताका सर्वस्वहै मैं इसे कैसे देसक्ताहूं यह सुनकर सुन्दरीने कहा कि मैं तुम्हारी पांचों करोड़ अशर्फियां फेरदूंगी तुम इसको मुझेदेदो तव ईश्वरवर्माने कहा कि चाहै तुम अपना सर्वस्व अथवा यह नगर भी मुझे देदो तौभी मैं तुमको यह वन्दरनहीं देसक्ता यह सुनकर सुन्दरी ने कहा कि मैं अपना सर्वस्व तुमको देतीहूं तुम मुझे यह वन्दरदेदो अपने पिताको नाराज होनेदो यह कहकर वह उसके पैरोंपर गिरपड़ी तव अर्थदत्तादिकों ने ईश्वरवर्मा से कहा कि अच्छा यह वन्दर इसे देदो जो कुछ होगा सो देखाजायगा मित्रोंके कहनेसे ईश्वरवर्मा ने उसका सर्वस्व लेनेपर वह वन्दरदेना स्वीकारकिया और वंदरपानेकी आशासे प्रसन्नहुई सुन्दरीके साथ वह दिन आनन्दसे व्यतीतकिया दूसरे दिन प्रातःकाल फिर प्रार्थना करती हुई सुन्दरीको ईश्वरवर्मा दोहजार अशर्फी निगलवाकर वहवन्दर देकर और उसका सर्वस्व लेकर शीघ्रही वहांसे अपने परिकरसमेत स्वर्णद्वीपको रोजगार करनेकेलियेगया उसके चलेजानेपर दो दिनतक उसवंदरने हजार२ अशर्फी सुंदरीकोदी और तीसरे दिन वहुत मांगनेपरभी सुन्दरीको कुछ नहींदिया तव सुन्दरीने क्रोधकरके उसके एकघूंसामारा इससे उसवन्दरने भी क्रोधितहोकर सुन्दरीका मुख अपने दांतोंसे और नखोंसे फाड़डाला तव मकरकटीने लाठियोंसे उसवन्दरको ऐसापीटा कि वहमरगया उसे मराजानके सुन्दरी अपने सर्वस्वको नष्ट हुआ जानकर प्राणदेनेको उद्यतहुई और लोगों के वहुत समझानेपर मृत्युसे निवृत्तहुई इस वृत्तान्त को सुनकर वहां के सव नगरनिवासियों ने हँसकरकहा कि मकरकटी ने जालकरके जिसका धन हर लिया था उसी ने आलकरके इसका सर्वस्व हरलिया इसने दूसरे के लिये तो जालकिया परन्तु अपने लिये कियेगये आलको नहीं पहचाना इसवीचमें वह ईश्वरवर्म्मा वहुतसा धन उपार्जनकरके चित्रकूट नगरमें अपने पिताके पास आया रत्नवर्म्मा ने उसे वहुतसा धन उपार्जनकरके आया देखकर वहुतप्रसन्नहोके उस यमजिह्वाको यथेच्छ धनदिया तवसे वह ईश्वरवर्म्मा कुटिनियों की अपार माया जानकर वेश्या प्रसंगको त्यागकर विवाहकरके सुखपूर्व्वक रहनेलगा इसप्रकारसे हे राजा वेश्याओं के हृदय में छलके सिवाय स्नेहका लेशभी नहीं होता है इससे सदैव धनकी अभिलाषा करनेवाली वेश्याओं से अपने शुभाकांक्षी लोगोंको सदैव वचना चाहिये मरुभूति के मुखसे इस आलजालकी कथाको सुनकर गोमुखादि मंत्रियों समेत नरवाहनदत्त वहुत प्रसन्नहोकर हँसा १७७ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशक्तियशोलम्बकेप्रथमस्तरंगः १ ॥

मरुभूतिके इसप्रकार वेश्याओंकी निन्दाकरनेपर बुद्धिमान् गोमुखने भी इसी विषयमें कुमुदिका की कथाकही वह यहहै कि प्रतिष्ठानदेशमें सिंहके समान पराक्रमी एक विक्रमसिंह नाम राजाथा उस राजाके अत्यन्त सुन्दर शशिलेखानाम रानीथी एकसमय राजाके पांचमहाभट—वीरवाहु, सुवाहु, सुभट

तथा प्रतापादित्य नाम गोत्री भाइयों ने मिलकर उसके राज्यको घेरलिया उनकेसाथ सन्धिका विचार करतेहुए, अपने मंत्रीका कहना न मानकर राजा विक्रमसिंह उनके साथ युद्धकरनेको गया और अपनी सेनाके साथ शत्रुओं की सेनाका युद्ध देखकर वीरताके अभिमानसे हाथीपर चढकर आपही युद्धमें जाकर शत्रुओंकी सेनापर बाणोंकी वृष्टिकरनेलगा युद्धमें उसेआयादेखकर महाभटादिक पांचों राजा अपनी सब सेनालेकर एकसाथही युद्धकरनेकोआये उनलोगोंकी बहुत बड़ी सेनासे राजा विक्रमसिंहकी सेना हारकर भागी तब पासही बैठेहुए अनन्तगुणनाम मंत्री ने राजा से कहा कि हमारी सेना सबहारगई है इससे अब जयकी सम्भावना नहीं है आपने हमारा कहना न मानकर बलवानों के साथ विरोधकियाहै उसीका यह फलहुआ है अच्छा जो हुआ सो हुआ अबभी जो हमारा कहना मानियेगा तो कल्याणहै इसहाथीपरसे उतरकर घोड़ेपर चढकर किसीअन्यदेशको भागचलिये जो प्राण बचेंगे तो फिर शत्रुओंको जीतलेंगे मंत्री के इनवचनोंसे राजाविक्रमसिंह हाथीपरसे उतरकर घोड़ेपर चढ़के उसी मंत्री के साथ उज्जयिनी नगरी में पहुंचकर प्रसिद्धधनवती कुमुदिकानाम वेश्याकेयहांगया कुमुदिकाने अकस्मात् उसको अपनेघरमें आयाहुआ देखकरशोचा कि यहकोई बड़ाप्रतापीपुरुष मेरे घर पर आयाहै यह तेज तथा लक्षणोंसे कोई महाराज मालूमहोताहै जो यह मेरे वशीभूत होजाय तो मेरा प्रयोजन सिद्धहोजायगा यह शोचकर उसने उठकर उसका स्वागतकरके बड़ा अतिथिसत्कार किया और क्षणभर विश्रामकरके स्वस्थहुए राजासे कहा किमैं धन्यहूं आज मेरा कोई प्राक्तनपुण्य उदयहुआ है क्योंकि आपने अपने आप आकर मेरे घरको पवित्र किया आप की इसकृपासे मैं विना मोलकी आपकी दासीहूं मेरे जो दोसैहाथी वीसहजार घोड़े और रत्नोंसे पूर्ण जो मन्दिरहै वह सब आपहीका है यह कहकर उस कुमुदिकाने मंत्री सहित राजाको स्नानकरवाके बहुमूल्य रत्नजटित आभूषण तथा वस्त्र पहराये तब राजा अपने मंत्रीसमेत उसके मंदिरमे उसीके ऐश्वर्य्यको भोग करताहुआ रहनेलगा और उसीके साथ भोग करनेलगा कुमुदिकाका जो कुछ धन राजाविक्रमसिंह अपने सुखकेलिये तथा याचकादिकोंके देनेमें व्ययकरताथा उसे देखकर कुमुदिका अप्रसन्ननहीं किन्तु अत्यन्त प्रसन्न होतीथी कुमुदिकाकी यह भक्ति देखकर उसे अपने ऊपर अनुरक्तहुई जानतेहुए राजासे एकान्तमें अनन्तगुण मंत्रीने कहा कि हे स्वामी वेश्याओंके चित्तमे सद्भाव नहींहोता और यह जो कुमुदिका आप से प्रीति करतीहै इसमे कोई कारण अवश्य है उसके यह वचनसुनकर राजाने कहा कि ऐसा नहीं है कुमुदिका मेरे लिये अपने प्राणभी देदेगी जो तुमको विश्वास नहीं है तो मैं तुमको विश्वासकरादूंगा यह कहकर राजाने बहानेसे भोजन घटाकर कुछ दिनोंमें अपना शरीर दुर्बल तथा कृशकिया और एक दिन निश्चेष्टहोकर अपने को मृतकसा बनालिया तब संपूर्णलोग अर्थीबनाकर राजाको श्मशानभूमिमे लेगये और वह कुमुदिका शोकसे व्याकुलहोकर अपने भाई वन्धुओंके निषेधको भी न मानकर उसके साथ सतीहोनेके लिये चितापर बैठगई उसे सतीहोने के लिये उद्यतदेखकर जैसेही अग्निलगाने का समय हुआ वैसेही राजाजँभाईलेकर उठबैठा राजाको फिर जियाहुआ देखकर संपूर्णलोग उसे कुमुदिका स-

मेत कुमुदिका के यहां लेआये वहां आकर कुमुदिकाने बड़ा उत्सव किया और राजाने एकान्तमें मंत्री से कहा कि तुमने इसका अनुराग देखलिया यह सुनकर मन्त्रीने कहा कि मुझे इतनेपर भी विश्वास नही आता इसमें कोई कारण अवश्यहै अच्छा अब इससे अपनेको प्रकटकरके इसकी सेना तथा अपने मित्र राजाओंकी सेनालेकर अपने शत्रुओंको मारना चाहिये मंत्रीके इसप्रकार कहतेही गुप्तदूतने आकर राजासे कहा कि शत्रुओंने सब देश अपनेआधीन करलिया और रानी शशिलेखा आपकी मिथ्या मृत्युसुनकर अग्निमें जलकर मरगई दूतके यह वचनसुनकर शोकरूपी वज्र से हृदयमें पीड़ित हुआ राजा हादेवी हासती यह कहकर विलापकरनेलगा राजाके विलापको सुनकर कुमुदिका ने वहां आकर सब वृत्तान्त पूछकर राजाको समझाकर कहा कि आपने पहलेही मुझसे क्यों नहीं कहा मेरे धन तथा सेनाको लेकर आप अपने शत्रुओंको जीतिये उसके यहवचन सुनकर राजाविक्रमसिंह उसके धनसे बहुतसी सेना इकट्ठी करके अपने मित्र राजाबलवानके यहां गया और उसकीभी सेनालेकर अपने पांचों शत्रुओंको जीतके उनके देशोंका तथा अपने देशोंका स्वामी होगया तब उसने कुमुदिका से कहा कि बताओ तुम्हारा क्या अभीष्टहै वह मैं पूराकरूं उसने कहा कि जो सत्य २ आप मेरेऊपर प्रसन्नहैं तो एक दुःखरूपी बाण मेरे हृदयसे आप निकालदीजिये कि उज्जयिनी में मेरे प्रिय श्रीधरनाम ब्राह्मणको राजाने थेड़ेहीसे अपराधमें बांधरक्खाहै उसेआप छुड़ादीजिये उत्तम लक्षणोंसे मैंने आपको बड़ा तेजस्वी जान के इतने दिनतक इसीलिये आपका सेवन किया है और मैं जो आपकी चिताके ऊपर भस्महोनेको चढ़ीथी उसका यह कारणथा कि आपकी मृत्युसे मैंने अपने अभिलाषको सिद्धहोना न जानकर उस श्रीधरके विना जीवनको व्यर्थ जानकर चितामें भस्महोना चाहाथा उसके यह वचन सुनकर राजा ने कहा कि धैर्य्य धरो मैं तुम्हारा कार्य्य सिद्ध करदूंगा और अपने चित्त में मन्त्री के वचन स्मरण करके शोचा कि अनन्तगुणने मुझसे ठीक २ यथार्थ वचन कहे थे अच्छा अब इसका मनोरथ तो अवश्य पूर्णकरना चाहिये यहनिश्चय करके उसने अपनी सेना समेत उज्जयिनी में जाकर श्रीधरको छुड़ाके तथा कुमुदिका को बहुतसा धन देके प्रसन्न करादिया और अपने नगर में आकर मन्त्री अनन्तगुण के वचनों के अनुसार राज्यका पालन किया इसप्रकार से वेश्याओं का हृदय अगाध तथा अज्ञेय होताहै ५४ इस कथाको कहकर गोमुख के निवृत्त होजाने पर तपन्तकने नरवाहनदत्त के आगे कहा कि हे युवराज वेश्याओं के समान घरकी स्त्रियों में भी विश्वास न करना चाहिये क्योंकि सम्पूर्ण स्त्रियां चपल होती हैं मैंने इसी नगरी में जो आश्चर्य्य देखाहै वह मैं आपसे कहताहूं इसीनगरी में बलवर्म्मा नाम वैश्यकी चन्द्रश्री नाम स्त्री थी उसने एकसमय झरोखे के द्वारा शीलहरनाम युवा वैश्यको देखा और मोहितहोके उसे अपनी सखी के द्वारा सखी के यहां बुलवाकर उससे रमण किया और उसी दिन से उसपर अत्यन्त स्नेहयुक्त होके उसे नित्य वहीं बुलाकर भोग करवानेलगी उसका यह दुराचार सम्पूर्ण भृत्य और बांधव लोग जानगये परन्तु उसके पति बलवर्म्मा ने नहीं जाना ठीकहै (प्रायेणभार्य्यादौशील्यं स्नेहान्धोनेक्षतेजनः) प्रायः स्नेहान्ध लोग अपनी

स्त्री के दुराचारको नहीं जानते हैं इसके उपरान्त वलवर्माको ज्वर आया और उसीज्वर से वह अन्तिम अवस्था को प्राप्तहुआ उसकी इस दशामे भी चन्द्रश्री नित्य अपनी सखी के यहां जाकर शीलहर के साथ भोगकरतीरही एकदिन वह अपनी सखीकेही यहां थी कि वलवर्माका ज्वरसे देहान्त होगया इस समाचारको पाकर वह अपनी सखीके मकानसे आकर दुराचारके जाननेवाले बन्धुओं के निषेध करने पर भी शोकसे अपने पति के साथ सतीहोगई इसप्रकारसे स्त्रियोंकी चित्तवृत्ति अत्यन्त दुर्ज्ञेय होती है अन्य पुरुषके साथ भोगकरती है और अपने पति के साथ सतीहोती हैं इस कथाको कहकर तपन्तक के निवृत्त होजानेपर हरिशिखने कहा कि आपने इस विषयपर क्या देवदासका वृत्तान्त नहीं सुनाहै किसी ग्राम में देवदास नाम एक कुटुम्बी वैश्य रहताथा उसकी दुश्शीलानाम वड़ी दुराचारिणी स्त्री थी उसके दुराचार को वहुधा लोग जानगये थे एकसमय देवदास किसी कार्य्यसे राजाके यहां गयाथा उससमय दुश्शीला ने उसके मरवाने की इच्छा से अपने किसी जारको बुलाकर छत्तपर छुपा रक्खा और रात्रि के समय आकर भोजन करके सोगये देवदासको उसके हाथ से मरवाडाला और उस के चले जानेपर कुछ रात्रिरहे यहहाहाकार किया कि चोरों ने मेरे पतिको मारडाला उस के रोवनेको सुनकर भाई बन्धुओंने आकर घरकी सव वस्तु यथास्थित देखकर और जो इसेचोरों ने मारा है तो वहचोर तेरी कोई वस्तु क्यों नहीं लेगये यहकहकर उसके पुत्रसे पूंछा कि तुम्हारे तातको किसने माराहै उसने कहा कि कल दिनमें कोई युवापुरुष मेरे यहां आकर छत्तपर वैठरहाथा उसीने ऊपरसे उतर कर रात्रिके समय मेरे पिताको मारा उसवालकके यहवचन सुनकर उनलोगोने यहजानकर कि इसके जारने देवदासको माराहै उसजारको ढूंढकर उसीसमय मारडाला और उसवालकको लेकर दुश्शीला को निकाल दिया इसप्रकारसे स्त्रियां परपुरुषपर अनुरक्तहोकर अपने पुरुषको मारडालती हैं इसकथा को कहकर हरिशिखके चुपहोजानेपर गोमुखने फिर कहा कि औरोंसे क्याप्रयोजनहै वत्सराज के सेवक वज्रसारकाही हास्यकारी वृत्तान्त सुनिये वत्सराजके सेवक वड़े शूरवीर सुन्दर वज्रसारके मालवदेश में उत्पन्नहुई एकवड़ी स्वरूपवती प्यारी स्त्री थी एकसमय उसस्त्री का पिता तथा भाई उसको लिवाने के लिये मालवदेशसे आये वज्रसारने उनका वड़ासत्कार करके राजासे आज्ञा लेकर अपनी स्त्री समेत उनके साथ जाकर मालवदेशमे निवासकिया और एकमहीनेके वाद अपनी स्त्रीको वहींछोड़कर राजा के सेवनकेलिये वह यहां चलाआया कुछ दिनोंके उपरान्त अकस्मात् उसके क्रोधननाम मित्रने आकर उससे कहा कि तुमने अपनी स्त्रीको पिताके यहां छोडकर अपना घर सत्यानाश करदिया वहां उस पापिनने अन्यपुरुषके साथ स्नेहकरलियाहै आज वहांसे आयेहुये किसी प्रामाणिक पुरुषसे मैंने यह वात सुनी है इससे तुम उसे छोड़कर दूसरा विवाहकरलो यहकहकर क्रोधन के चलेजाने पर वज्रसारने शोचा कि यहवात सत्य मालूमहोतीहै नहीं तो मैंने जो पुरुषबुलाने को भेजाथा उसके साथ वह क्यों नहीं आई इससे मैं आपही उसेबुलाने जाऊंगा देखिये वहां क्याहोताहै यहनिश्चयकरके वज्रसार मालवदेशमें जाकर अपने सास श्वशुरकी आज्ञासे अपनी स्त्रीको विदाकराके वहांसे चला और वहां से

कुछदूर आकर मार्गमे मिलेहुए किसीवनमें एकान्त स्थानमें जाकर उसने अपनी स्त्रीसे पूंछा कि मैंने सुनाहै कि तू परपुरुषसे स्नेहकरती है और मुझे निश्चयभी होता है कि जब मैंने तुझे बुलवायाथा तब तू नहींआई इससे सत्य २ कह नहीं तो मैं तुझे मारडालूंगा यहसुनकर उसने कहा कि जो तुम्हारा ऐसाही निश्चयहै तो मुझसे क्यों पूंछतेहो जोचाहो सोकरो उसके यहवचन सुनकर वज्रसारने उसे वृक्ष में बांधकर बहुत पीटा और उसके सब वस्त्र खोललिये वस्त्र खोलनेसे उसेनग्न देखकर वहमूर्ख कामके वशीभूतहोकर रमणकरनेके लिये उसे आलिंगन करनेलगा और रतिके लिये उससे प्रार्थना करनेलगा तब उसकुलटाने कहा कि जैसे तुमने मुझे वृक्षमें बांधकर पीटाहै वैसेही मैंभी तुमको वृक्षमें बांधकर पीटूं तो तुम्हें रतिकरनेदूंगी नहीं तो नहीं करनेदूंगी उसने कामसे मोहितहोकर उसका कहना मानलिया तब उसकुलटाने उसके हाथ पैर बड़ी दृढ़तासे बांधकर उसीके शस्त्रसे उसके नाक कान काटलिये और पुरुषकासा भेषबनाके वहीशस्त्र आपलेके वह कहींचलीगई उसके चलेजानेके उपरान्त औषधलेनेके लिये आयाहुआ कोई वैद्य वज्रसारको बँधाहुआ देखकर कृपापूर्व्वक खोलकर उसे अपने घरलेगया वहां उस वैद्यकी औषध से कान नाकके अच्छेहोजानेपर वह अपने घरको आया यहां क्रोधनने उससे सब वृत्तान्त पूंछकर सभामें महाराज उदयन् के आगे उसका सब वृत्तान्त कहा उसके इसवृत्तान्तको सुनकर सब सभाके लोग बहुत हँसे वह वज्रसार अभीतक यहीं महाराजके मंदिरमें सेवकाई करता है इससे हे स्वामी स्त्रियोंपर किसीको विश्वास न करना चाहिये गोमुखके इसप्रकार कहकर निवृत्तहोजाने पर मरुभूतिने कहा कि हे युवराज स्त्रियोंका चित्तस्थिर नहीं रहताहै इसविषयपर भी मैं आपको एककथा सुनाता हूं दक्षिण देशमें सिंहबलनाम राजाकी मालव देशके राजाकी कल्याणवती नामपुत्री पटरानीथी एक समय उस राजाके गोत्री भाइयों ने मिलकर उसको उसके देशसे निकालदिया तब वह अपनी रानी कल्याणवतीको साथलेकर अपने श्वशुर के यहां मालव देशकोचला उसने मार्ग में मिलेहुए वनमें अकस्मात् आयेहुए सिंहको एकही खड्गके प्रहारसे मारडाला चिंहाड़ करते वनके हाथीकी सूंड़ खड्गसे काटडाली और बीचमें मिलीहुई चोरोंकी सेनाको अकेलेही मारकर भगादिया इसप्रकार मार्गका उल्लंघनकरके मालव देशमें पहुंचकर उसने रानीसे कहदिया कि मार्गका वृत्तान्त अपने पिताके घरमें किसी से मत कहना क्योंकि शत्रुओंसे हारकर मुझको यह सब बातें लज्जाकारीहोंगी यह कहकर वह अपने श्वशुरके मन्दिरमें गया और उससे सम्पूर्ण वृत्तान्त कहकर उसकी सेनालेके और रानीको वहीं छोड़कर गजानीक नाम अपने मित्रसे भी प्रथम कुछ सेनालेनेकोगया उसके चलेजानेपर एकदिन कल्याणवतीने महलके ऊपर से किसी सुन्दर पुरुषको देखके कामके वशीभूत होकर शोचा कि यद्यपि मैं जानतीहूं कि आर्य्यपुत्रसे अधिक स्वरूपवान् और बलवान् दूसरा कोई पुरुष नहीं है तथापि इसपुरुषपर मेरी चित्तकी वृत्तिचलायमान होती है अच्छा जो चाहे सो होय इसकेसाथ अवश्य रमणकरूंगीयह शोचकर उसने अपनी प्रिय सखीकेद्वारा अपना अभिप्राय उससे कहकर रात्रिके समय उसको रस्सी के द्वारा अपने महलपर चढ़ालिया वह पुरुष वहां आकर भयसे उसके पलँगपर नहीं बैठसका यह देखकर रानी

को यह जानकर कि यह नीचहै बड़ा खेदहुआ उससमय एक भयंकर सर्प महलके ऊपर आकर उड़ने लगा उसे देखकर उस पुरुषने भयभीत होकर धनुषमें वाण चढाकर उसे मारा वाणके लगनेसे वह सर्प मरकर महलपर गिरपड़ा तब वह पुरुष उस सर्पको झरोखेमें से बाहर फेककर प्रसन्नहोके नाचनेलगा उसकी इसतुच्छताको देखकर कल्याणवतीने अपने चित्तमें कहा कि इस अधम निस्सत्त्वको लेकर मैं क्याकरूंगी उसके इसअभिप्रायको जानकर उसकी सखीने बाहरजाके और फिर भीतरआके कहा कि हे राजपुत्री तुम्हारा पिताआताहै इससे इसपुरुषको शीघ्रही रस्सी पकड़ाकर उतरवादो उसके इसप्रकार कहतेही वह भयसे व्याकुलहोके शीघ्रही रस्सी पकड़कर उतरगया और भयसे व्याकुलहोके गिरकर मरानहीं यही कुशल होगई उसके चलेजानेपर कल्याणवतीने अपनी सखीसे कहा हेसखी तुमने बहुत अच्छा किया जो इस नीचको युक्तिपूर्वक निकाल दिया तुमने मेरे चित्तका अभिप्राय जानलिया देखो मेरापति व्याघ्र सिंहादिकोंको भी मारकर लज्जित होताहै और यह सर्पकोही मारकर नाचताहै इससे ऐसे पराक्रमीको छोड़कर इसनिस्सत्त्वपर मेरा प्रेम कैसे होय मेरी स्थिरतारहित इसबुद्धिको धिक्कारहै अथवा कपूरको छोड़कर अशुचि वस्तुओंपर जानेवाली मक्षिकाओंके समान सबस्त्रियोंको धिक्कारहै इसप्रकार पश्चात्ताप करके कल्याणवती अपने पतिकी प्रतीक्षा करनेलगी इसबीचमें सिंहवल रा जागजानीक से बहुतसी सेनालेकर अपने गोत्री भाइयोंको जीतके अपना राज्यपाके कल्याणवती को अपने श्वशुरके यहांसे लेगया और प्रसन्नतापूर्वक बहुतसा दानकरके निष्कंटक राज्य करनेलगा हे स्वामी इसप्रकार से चतुरस्त्रियोंका भी चित्त वीर सुन्दर पतिके होनेपर भी परपुरुष पर चलायमान होताहै इससे शुद्धस्त्रियां बहुतही कम होती हैं मरुभूतिसे इसकथाको सुनकर नरवाहनदत्तने सुखपूर्वक शयन करके वह रात्रि व्यतीतकी १४१ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशक्तियशोलम्बकेद्वितीयस्तरङ्गः २ ॥

इसके उपरान्त प्रातःकाल अपना आवश्यक कार्य्य करके नरवाहनदत्त मंत्रियों समेत उसवनमें विहारकरनेकोगया वहां उसने पहले आकाशसे उतरताहुआ तेजका पुंजसादेखा और पीछेसे बहुतसी विद्याधरी उतरीं देखीं नक्षत्रोंके बीचमें चन्द्रमाकी कलाके समान मनोहर उन विद्याधरियों में एक अत्यन्त सुन्दर कन्याथी प्रफुल्लित मुखरूपी कमलवाली चंचलनेत्ररूपी भ्रमरवाली हंसोंके समान मन्द गमन करनेवाली कमलके समान शरीरकी गन्धवाली लहरों के समान मनोहर त्रिवली से युक्त उदर वाली वह कन्या क्याथी मानों कामके उपवनकी बावड़ीकी शोभाकी साक्षात् देवीथी कामकी संजीविनी उस कन्याको देखकर नरवाहनदत्तका चित्त चन्द्रमाकी कलाको देखकर समुद्रके समान चलायमानहुआ वाह ब्रह्माकी क्याही विलक्षण कारीगरी है यह अपने मंत्रियोंसे कहताहुआ वह उसके पास गया और प्रेमयुक्त दृष्टिसे देखतीहुई उस कन्यासे बोला कि हे सुन्दरी तुमकौनहो और किस निमित्त यहां आईहो यह सुनकर उसने कहा कि सुनिये मैं कहतीहूं कि हिमालय पर्व्वतपर कांचनशृंग नाम एक सुवर्णमयपुर है उस पुरमें विद्याधरों का स्वामी शरणागतवत्सल धर्मात्मा दीनदयाल स्फटिकय-

शानाम राजा है उससे हेमप्रभानाम रानी में पार्वतीजी की कृपा से उत्पन्न हुई शक्तियशा नाम मैं कन्याहूं मेरे पांचमुझसे बड़ेभाई हैं परन्तु मेरे पिता मुझको अपने प्राणोंसे भी अधिक चाहते हैं उन्हीं की आज्ञा से मैंने व्रतों से और स्तोत्रों से श्री पार्व्वतीजी को प्रसन्न किया इससे प्रसन्न हुई भगवती श्रीपार्व्वतीजी ने सम्पूर्ण विद्या देकर मुझसे कहा कि हे पुत्री तुझे अपने पिता से भी दशगुना विद्याओं का बलहोगा और सम्पूर्ण विद्याधरों का भावी चक्रवर्त्ती नरवाहनदत्त तेरा पति होगा यह कह कर श्री पार्वतीजी अन्तर्द्धान होगई और उनकी कृपासे सम्पूर्ण विद्याओं को पाकर मैं क्रम से युवती हुई आज रात्रिके समय भगवतीने स्वप्नमें दर्शन देकर मुझसे कहा कि हे पुत्री प्रातःकाल तुम जाकर अपने पतिको देखना और उसे देखकर यहीं लौटआना एक महीने के उपरान्त तुम्हारे पिता तुम्हारा विवाह उसी के साथ करदेंगे यह कहकर भगवती अन्तर्द्धान होगई और रात्रिके व्यतीत होजाने से मेरी निद्रा भी खुलगई हे आर्यपुत्र भगवतीकी उसी आज्ञासे तुम्हारे दर्शनको मैं यहां आज आईहूं और अभीजातीहूं यह कहकर वह अपनी सखियों समेत आकाशमार्गसे अपने पुरको चलीगई और नरवाहनदत्त उसके विवाहके लिये उत्कण्ठित होकर एकमहीने को युगके समान देखताहुआ खिन्न होकर मंत्रियों समेत अपने मन्दिरमें गया २० वहां उसेखिन्न देखकर गोमुखने कहा कि हेयुवराज आपके चित्तके बहलाने के लिये मैं एक कथा कहताहूं पूर्वसमयमें कांचनपुरी नाम नगरीमें सम्पूर्ण शत्रुओंका जीतनेवाला बड़ा प्रतापी सुमनानाम राजा था एक समय सभा में बैठेहुए राजा सुमना से प्रतीहारने यह विज्ञापन किया कि हे स्वामी निषादाधिपकी मुक्तालतानाम कन्या पिंजरे में एक तोतेको लेकर अपने भाई वीरप्रभ के साथ आकर द्वारपर खड़ी है और आपके पादारविन्दों का दर्शन किया चाहती है यह सुनकर राजाने कहा कि आने दो तब प्रतीहारसे आज्ञा पाकर वह मुक्तालता सभा में आई उसके अद्भुत रूपको देखकर सम्पूर्ण सभासदोंने अपने चित्तमें कहा कि यह मानुषी नहीं है कोई दिव्य स्त्री है उसने राजाको प्रणाम करके कहा कि हे राजा यह शास्त्रगंज नाम तोता चारोंवेदों का जाननेवाला और सम्पूर्ण कला तथा विद्याओं में परम प्रवीणहै मैं इसे आपके योग्य जानकर यहां लाईहूं आप इसे ग्रहण कीजिये यहकहकर उसने वह तोता प्रतीहारको देदिया प्रतीहार उसे राजाके पास लेगया वहां उस तोतेने यह श्लोक पढ़ा कि (राजन्युक्तमिदंसदैवयदयंदेवस्यसंधुक्ष्यते धूमश्यामसुखोद्विषद्विरहिणीनिश्वाससवातोद्गमैः। एतत्त्वद्भुतमेवयत्परिभवाद्बाष्पाम्बुपूरप्लवैरासांप्रज्वलतीहदिक्षुदशसु प्राज्यप्रतापानलः) हे राजा यह तो योग्यहीहै जो दशोंदिशाओं में आपका प्रतापानल शत्रुओंकी विरहणी स्त्रियों के श्वासरूपी वायुसे धौंका जाकर प्रचण्ड होताहै परन्तु यह अद्भुत बातहै कि जो शत्रुओंकी स्त्रियों के अश्रुओं के प्रवाहोंसे व्याप्त भी आपका प्रतापानल जाज्वल्यमान होताहै यह श्लोक पढकर और इसकी व्याख्याकरके फिर तोते ने कहा कि किसशास्त्र से कौनसा प्रमेयकहूं सो आप आज्ञा कीजिये यह सुनकर राजाके अत्यन्त विस्मित होनेपर उसके मन्त्री ने कहा कि यह पूर्व्वजन्म का कोई ऋषि शाप से तोता होगयाहै पुण्य के प्रतापसे इसे अपने पूर्व्वजन्म के सब शास्त्र स्मरणहैं

मंत्री के यह वचनसुनकर राजाने उससे पूछा कि हे शास्त्रगंज तुम्हारा कहां जन्महुआहै पक्षी योनि में भी यह शास्त्रका ज्ञान तुमको कैसे प्राप्तहुआहै और तुम कौनहो यह सब अपना वृत्तान्त मुझसे कहो मुझे बड़ा आश्चर्य्य होरहाहै यह सुनकर उस तोतेने आंसूबहाकर कहा कि यद्यपि यह वृत्तान्त कहने के योग्य नहीं है तथापि मैं आपकी आज्ञाको अनुल्लंघनीय मानकर कहताहूं आप सुनिये हे राजा हिमालय के निकट एक बड़ाभारी कुटकी का वृक्षहै उसकी बड़ी २ शाखाओंपर अनेक पक्षी रहते हैं उसी वृक्षपर एकतोता अपनी तोती समेत घोंसलाबनाकर रहताथा उसी तोतीमें उसतोते से भाग्यवश से मेरा जन्महुआ है मेराजन्महोतेही मेरीमातामरगई इससे अत्यन्त दुखीहोकर मेरा वृद्धपिता निकट रहनेवाले अन्यतोतों के जूंठे बचेहुए फलो को आपखाकर तथा मुझे भी खिलाकर अपने पंखों में मुझे रखकर मेरा पालन करनेलगा एकसमय वहां बहुतसे भील शिकारखेलने को आये और दिनभर अनेक प्रकारके पशुतथा पक्षियों को मारतेरहे सायंकालके समय एक वृद्धभील कोई पशुपक्षी न पाकर मेरे निवास के वृक्षके समीप आया और उसमे पक्षियोंका शब्द सुनके उसपर चढ़के तोतोंको तथा अन्य पक्षियों को घोसलों में से निकालकर मार २ कर पृथ्वीपर डालनेलगा इसी क्रम से उसे अपने निकट आया देखकर मै भयभीतहोकर अपने पिताके पंखोंमें छिपरहा इतने में उसने मेरे घोंसलेमें भी अपना हाथ डालकर मेरे पिताको निकालके मारकर पृथ्वीपर डालदिया और मैं अपने पिताके पंखों में ही लिपटाहुआ पृथ्वीपर गिरकर उनके पंखोंमें से निकलकर सूखे पत्तों में घुसगया और वह भील सब पक्षियों को मार पृथ्वीपर उतरकर कुछ पक्षियोंको अग्निमें भून २ कर खाकर शेष पक्षियोंकोलेके अपने साथियों के साथ अपने गांवको चलागया तब मैं निर्भय होकर बड़े दुःखसे उस रात्रिको व्यतीत करके प्रातःकाल जगन्नेत्र भगवान् सूर्य्यके उदयहोने पर तृषासे व्याकुल होकर अपने पंखोंको फैलायेहुए धीरे २ निकटवर्त्ती पद्मसर नाम तड़ाग के पासगया वहां मेरे मूर्त्तिमान पूर्व्वजन्मके पुण्योंके समान मरीचिनाम मुनि स्नान करनेको आयेथे वह मुझे देखकर कृपासे मेरे मुखमें जलबिन्दु डालकर मुझे दोने में रखकर अपने आश्रममें लेगये वहां मुझे देखकर हँसतेहुए महर्षि कुलपति पुलस्त्यजी से अन्य महर्षियों ने पूछा कि हे महाराज इस तोते को देखकर आपके हास्य करने का क्या कारणहै यह सुनकर महर्षिजी ने कहा कि शापसे उत्पन्नहुए इस तोते को देखकर मुझे हँसी आगई आह्निक के उपरान्त मैं इसकी कथा तुमलोगों से कहूंगा उस कथाको सुनतेही इस तोते को अपने पूर्व्वजन्मका स्मरण आजायगा यहकहकर वह आह्निक करनेकोगये फिर २ आह्निक करने के उपरान्त उनसब मुनियों के प्रार्थना करनेपर त्रिकालदर्शी पुलस्त्यजीने मेरी यहकथा सब मुनियोंसे वर्णनकी कि रत्नाकरनाम नगरमें ज्योतिष्प्रभनाम एक बड़ा प्रतापी चक्रवर्त्ती राजाथा उसके बड़ेतपसे प्रसन्नहुए श्री शिवजीकी कृपासे हर्षवती रानीमें एकपुत्र उत्पन्नहुआ रानीने गर्भके दिनों स्वप्नमें चन्द्रमाको अपने मुख मे प्रविष्टहोते हुए देखाथा इसी से राजाने अपने पुत्रकानाम सोमप्रभ रक्खा वहसोमप्रभ अपनी प्रजाके नेत्रोंको अत्यन्त आनन्द देताहुआ क्रमसे सम्पूर्ण विद्या तथा कलाओंको सीखताहुआ युवा-

वस्थाको प्राप्तहुआ ज्योतिष्प्रभने उसे युवाशूर तथा प्रजाओंका प्यारा देखकर उसे युवराजपदवी देदीनी और अपने प्रभाकरनाम मन्त्री के पुत्र प्रियङ्करको उसका मन्त्रीबना दिया उसीसमय एकघोड़ा लेकर आकाशसे उतरेहुए मातलिने निकटआकर सोमप्रभसे कहा कि तुम पूर्व्वजन्ममें इन्द्रके मित्र विद्याधर थे उसी स्नेहसे इन्द्रने उच्चैश्श्रवाका पुत्र यह अश्वश्रवानाम घोड़ा तुम्हारे निमित्त भेजाहै इसपर चढ़े हुए तुमको कोई शत्रु जीत न सकेंगे यहकहकर और घोड़ादेकर मातलि के चलेजानेपर बड़े उत्सवसे वह दिन व्यतीतकरके दूसरे दिन सोमप्रभने अपने पितासे कहा कि हे तात क्षत्रियोंका यहधर्म नहीं है कि विजयकी इच्छासे रहितहोकर स्वस्थहोकर घरहीमें बैठे रहें इससे मुझे आज्ञादीजिये कि मैं दिग्विजयकरनेको जाऊं यहसुनकर ज्योतिष्प्रभने प्रसन्नहोकर दिग्विजयकी सम्पूर्ण तैयारी करके अच्छादिन देखके उसे दिग्विजयके निमित्त भेजा पिताकी आज्ञासे गयेहुए सोमप्रभने उसदिव्य घोड़ेके प्रभाव से चारोंदिशाओंकेसम्पूर्ण राजा लोगोंको जीतलिया और उनसे बहुतसे रत्नपाये फिर दिग्विजय करके लौटते समय वह हिमालयके निकट सेना समेत टिककर उसीदिव्य घोड़ेपर चढ़कर किसीवनमें शिकार खेलने को गया वहां भाग्यवशसे एक रत्नजटित किन्नरको देखकर उसे पकड़ने के लिये उसने अपना घोड़ा दौड़ाया वह किन्नर तो पर्व्वतकी कन्दरामें छिपगया परन्तु सोमप्रभको वहघोड़ा बहुतदूर वनमें लेगया इतनेमें सूर्य्य भगवान्भी अस्ताचलको प्राप्तहुए तब थककर लौटनेकी इच्छा करतेहुए सोमप्रभ ने एकबड़ाभारी तड़ाग देखकर उसीके तटपर रात्रिको व्यतीत करनेका विचार करके घोड़ेपरसे उतरकर घोड़ेको दाना चारा और जलसे सन्तुष्ट करके आपभी मधुरफल समेत उसतड़ागका जल पीकर तड़ाग के तटपरही कोमल२पत्ते बिछाकर विश्रामकिया उससमय अकस्मात् मधुरगीतोंकी ध्वनि उसे सुनाईदी उसशब्दको सुनकर उठके उसी शब्दके अनुसार उसने कुछ दूरजाकर एकमंदिरमें शिवजी के लिंगके आगे गानकरतीहुई एकादिव्य कन्यादेखी और आश्चर्य्यपूर्व्वक अपने चित्तमें कहा कि यहअद्भुत स्वरूपवाली कौन यहां बैठी है उसकन्यानेभी इसकी उदार चेष्टाको देखकर अतिथि सत्कारकरके इससे पूंछा कि तुमकौनहो और किसप्रकारसे तथा किस प्रयोजनसे इसदुर्गम पृथ्वीमें आयेहो यहसुनकर सोमप्रभ ने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहकर उससे पूंछा कि अब तुमभी बताओ कि तुम कौनहो और इसवनमें अकेली क्यों रहतीहो यहसुनकर उसकन्याने अश्रुओंकी धारा बहाकर कहा कि हे महाभाग जोआपकी इच्छाहै तो मेरा सब वृत्तान्त सुनिये कि हिमालय पर्व्वतपर कांचनाभनाम नगरमें विद्याधरोंका पद्मकूट नाम राजाहै उसपद्मकूटसे हेमप्रभानाम रानीमें उत्पन्नहुई पुत्रों से भी अधिक उसेप्यारी मनोरथप्रभानाम मैं कन्याहूं विद्याओंके प्रभावसे मैं अपनी सखियों के साथ आश्रमों में द्वीपों में पर्व्वतों में वनों में तथा उपवनों में क्रीड़ाकरके भोजनके समय अपने पिताके पास आजातीथी एकसमय मैं इसतड़ागके तटपर विहार करनेको आई उससमय एकमुनिका पुत्र अपने मित्र सहित मुझे यहां दिखाई दिया उसके रूप की शोभाको देखकर उसी के वशीभूतहोकर मैं उसके पासगई और उसनेभी मुझे प्रेम सहित दृष्टिसे देखा तब मेरी सखी ने मेरे तथा उसके दोनों के अभिप्रायको जानकर मुनिपुत्र के मित्रसे पूंछा कि हे

महाभाग तुम कौनहो उसने कहा हे सखी यहांसे थोड़ीदूरपर तपोवनमें दीधितनाम मुनि रहते हैं एक समय इसीतड़ागमें स्नानकरनेको आयेहुए ब्रह्मचारी दीधितमुनिको उसीसमय आईहुई लक्ष्मीजीने देखकर अपने मनमें संभोग करनेकी इच्छाकरी इसीसे उनको मानसपुत्र प्राप्तहुआ वहबालक लक्ष्मी जी उनदीधितमुनिको देकर और यहकहकर कि आपहीके दर्शनसे यहउत्पन्नहुआहै अन्तर्द्धानहोगई मुनिने भी अनायास मिलेहुए उसपुत्रको लेकर उसका नाम रश्मिमान रखकर क्रमसे पालनपूर्व्वक यज्ञोपवीतादि कर्मकरके उसे सम्पूर्ण विद्या सिखलाई वहीरश्मिमान यह मुनिका पुत्रहै मेरे साथ यहां विहारकरनेको आया है यहकहकर उसने मेरी सखी से मेरानाम तथा वंश पूंछा और मेरी सखी ने सब बतादिया १०० तब परस्पर वृत्तान्त जानकर अत्यन्त अनुरागयुक्तहुए उस मुनिपुत्रके पास बैठीहुई मेरे घरसे एकदूसरी सखी ने आकर मुझसे कहा कि हे सखी जल्दी चलो तुम्हारे पिता भोजन के निमित्त तुम्हारी प्रतीक्षाकर रहे हैं यहसुनकर उसमुनिके पुत्रसे शीघ्र आऊंगी यहकहकर और उसे वहीं छोड़कर मैं भयभीतहोकर अपने पिताके पास चलीगई वहां कुछ भोजन करके जैसेही मैं बाहर निकली वैसेही मेरी पहली सखी ने मुझसे कहा कि हे सखी उस मुनिपुत्रका मित्र आया हुआ द्वारपर खड़ा है उसने मुझसे कहाहै कि मुझे रश्मिमानने अपने पिताकी बताई हुई आकाशगामिनी विद्या देकर मनोरथ-प्रभाके पास यहकहनेको भेजाहै कि प्राणेश्वरीके विना कामदेवने मेरी ऐसी दारुणदशाकीहै कि उसके विना अब मैं क्षणभरभी नहीं जीसक्ताहूं यहसुनकर मैं अपनी सखीको लेकर उसके साथ यहां आई परन्तु यहां मेरे आनेसे पहलेही मुनिपुत्र मेरे वियोगसे चन्द्रोदय होतेही इस संसार को त्यागकर पर-लोकको चलागयाथा उसे मृतकदेखकर मैंने उसका शरीरलेकर अपनेको भस्म करनाचाहा उस समय कोई अत्यन्त तेजस्वीपुरुष आकाशसे उतरके वहशरीर लेकर चलागया उसके शरीरसे भी रहितहोकर मैं अकेलीही अग्निमे भस्महोनेको उद्यतहुई तब यह आकाशवाणीहुई कि हे मनोरथप्रभे ऐसा साहस मतकरो कुछ कालके पीछे इस मुनिपुत्रके साथ तुम्हारा फिर संगमहोगा इस आकाशवाणीको सुनकर मै मृत्युसे निवृत्तहोकर उसीकी प्रतीक्षा करतीहुई श्री शिवजी के पूजनमें तत्परहोकर यहीं रहतीहूं और मुनिपुत्रका वह मित्र भी न मालूम कहांचलागया उसके वृत्तान्तको सुनकर सोमप्रभने उससेपूछा कि तुम्हें अकेली छोड़कर तुम्हारी वह सखी कहां चलीगई यह सुनकर उसने कहा कि विद्याधरों के स्वामी राजा सिंहविक्रमके मकरन्दिका नाम बड़ीसुन्दर रूपवतीकन्याहै वह प्राणों से भी अधिक मेरीप्रियसखी है और मेरे ही दुःखसेदुखित होकर उसने अबतक अपना विवाह किसी से नहीं कियाहै उसने अपनी सखी मेरे पास कुशल पूछनेको भेजीथी इससे मैंने भी उसीकी सखी के साथ उसे देखनेको अपनी सखी भेजी है इसीसे मैं आज यहां अकेलीहूं इसप्रकार कहतीहुई उस मनोरथप्रभानें उसीसमय आकाश से उतरीहुई अपनी सखी सोमप्रभको दिखाई और उससे मकरन्दिकाका सम्पूर्ण वृत्तान्त पूछकर सोमप्रभ के लिये कोमल २ पत्तों से शय्या बिछवाई और उसके घोड़ेको घास दिलवाई तब उन सबलोगों ने वहीं देवमन्दिरमें शयनकर रात्रिव्यतीतकरके प्रातःकाल आयेहुए एक विद्याधरको देखा उस देवजयनाम

विद्याधरने प्रणामकरके मनोरथप्रभासे कहा कि हे राजपुत्री राजासिंहविक्रमने तुमसे कहा है कि जब तक तुम्हारा विवाह न होगा तबतक तुम्हारी प्रियसखी मकरन्दिका भी अपना विवाह नहीं करना चाहती है इससे तुम यहां आकर इसे समझाओ कि यह अपना विवाहकरलेवे यह सुनकर जानेको उद्यत हुई मनोरथप्रभासे सोमप्रभने कहा कि हे सखी मैं भी विद्याधरोंका लोक देखना चाहताहूं इससे मुझे भी वहां लेचलो घोड़े के आगे मैं घास डालेदेताहूं यह यहांही बँधारहैगा यह सुनकर मनोरथप्रभा देवजयकी गोदी में उसे बैठालकर अपने साथ लेकर विद्याधरलोकमें गई और वहां मकरन्दिकानें मनोरथप्रभाका अतिथि सत्कारकरके सोमप्रभको देखकर मनोरथप्रभा से पूछा कि हे सखी यह कौनहै यह सुनकर उसने सोमप्रभका सब वृत्तांन्त कहदिया उसके वृत्तान्तको सुनकर मकरन्दिकाका चित्त उसपर आसक्तहोगया और सोमप्रभने भी रूपवती लक्ष्मी के समान उसे देखकर अपने चित्तमेंकहा कि किस पुण्यात्माके साथ इसका पाणिग्रहणहोगा इसके उपरान्त एकान्तमें मनोरथप्रभा ने मकरन्दिकासे कहा कि हे सखी तुम विवाह क्यों नहीं करतीहो यह सुनकर उसनेकहा कि जो अभी तुमने वरका स्वीकार नही किया तो मैं कैसेकरूं तुम मुझे प्राणों से भी अधिकप्यारीहो मकरन्दिकाके यह प्रेमयुक्त वचनसुनके मनोरथप्रभाबोली कि हे मुग्धे मैंने तो वरका स्वीकार करलियाहै अब उसकी प्रतीक्षा कररही हूं इससे तुमको विवाह करलेना चाहिये यह सुनकर मकरन्दिका ने कहा कि जैसा तुमकहोगी वैसाही करूंगी। तब मनोरथप्रभाने उसके अभिप्रायको जानकर कहा कि हे सखी पृथ्वी में भ्रमणकरके यहराजपुत्र सोमप्रभ तुम्हारे यहां अतिथि प्राप्तहुआहै इसका तुम सत्कारकरो यह सुनतेही उसनेकहा कि मैंने शरीर पर्य्यन्त अपनी सम्पूर्ण वस्तु इसके अर्पण करदीनी है यह जो चाहै सो लेले उसके यहवचनसुनकर मनोरथप्रभाने राजा सिंहविक्रमसे कहकर सोमप्रभके साथ उसके विवाहका निश्चय किया तब सोमप्रभभी इस वृत्तान्तको जानके अतिप्रसन्नहोकर मनोरथप्रभासे बोला कि अब मैं तुम्हारे आश्रमको जाताहूं क्योंकि ऐसा न होय कि मेरा मंत्री सेनासमेत वहां आकर केवल घोड़ेहीको देखकर मेरे लिये कुछ अहितशोचके पराङ्मुखहोकर लौटजाय इससे मैं वहां जाकर अपनी सेनाके वृत्तान्तको जानकर लौटके शुभलग्नमें मकरन्दिका के साथ अपना विवाहकरूंगा उसके यह वचन सुनकर मनोरथप्रभा देवजय विद्याधरकी गोदी में चढ़ाके अपने आश्रममें उसे लेआई इतनेही में उसका मंत्री प्रियंकर भी उसकी सम्पूर्ण सेनालियेहुए वहींआया उससे मिलकर सोमप्रभ जैसेही अपना वृत्तान्त उससे कहनेलगा वैसेही उसके पिताका एक दूतआकर कहनेलगा कि चलिये आपको बहुत शीघ्र महाराज ज्योतिष्प्रभने बुलायाहै पिताके संदेशेको सुनकर सोमप्रभ मनोरथप्रभासे तथा देवजयसे यह कहकर कि मैं पिताके दर्शनकरके शीघ्रही लौटआऊंगा, अपनी सेना लेकर अपने नगरको गया तदनन्तर लौटकर गये हुए देवजयके द्वारा इसवृत्तान्तको सुनकर मकरन्दिका विरह से व्याकुलहोकर उपवन में सखियों के साथ क्रीड़ा में गानमें तथा तोते आदि पक्षियों के मनोहर शब्दों में भी अपने चित्त को न बहला सकी उस दिन से उसने भोजन भी नहीं किया फिर शृंगार आदिकों की क्या गिनती है वह

कमल के पत्तोंकी शय्याको छोड़कर उन्मत्त के समान इधर उधर घूमनेलगी उसकी यहदशा देखकर माता पिताने उसे बहुत समझाया पर समझाने से भी जब उसने धैर्य्य नहीं धारण किया तो उन्होंने क्रोध करके उसे यह शापदिया कि तू कुछ कालतक इसी शरीर से अपनी जातिको भूलकर निषादों के यहां रहैगी माता पिता के इस शाप से मकरन्दिका निषादके यहां जाकर निषादकी कन्या होगई और उसके मातापिता भी शोकसे मरगये उसका पिता मरकर पहले तो सकलशास्त्रोंका ज्ञाता ऋषि हुआ और फिर किसी पूर्वजपापसे तोताहोगया और उसकी स्त्री वनकी शूकरी होगई यह वही तोता है पूर्व जन्मके तपोबलसे इसे अपनी संपूर्ण पढ़ीहुई विद्या यादहै इसकी विचित्र कर्मगति को देखकर मुझे हँसी आगईथी यह इसकथाको राजसभामें कहकर अपने पापोंसे छूटजायगा और सोमप्रभ इस की कन्याको अवश्य पावेगा और मनोरथप्रभा इस समय राजाहुए रश्मिमान नाम मुनिपुत्रको मुनि रूपमें पावेगी इससमय सोमप्रभभी अपने पिताके दर्शन करके लौटकर उसी आश्रममें अपनी मकरन्दिका प्रियाकी प्राप्तिके लिये श्रीशिवजी की आराधना कररहाहै इस कथाको कहकर पुलस्त्य मुनिके निवृत्तहोजानेपर मैं अपने पूर्वजन्मका स्मरण करके हर्ष तथा शोकसे व्याप्तहोगया तदनन्तर जो मरीचमुनि मुझको आश्रममें लेगयेथे वही मेरापालन करतेरहे कुछकालमें जब मेरे पंख निकलआये तो मैं चपलताके कारण वहांसे उड़कर इधर उधर भ्रमण करके अपनी विद्याओंका आश्चर्य्य दिखाताहुआ निषादोंके हाथ पड़गया और क्रमसे आपके यहां प्राप्तहुआ इससमय मेरा संपूर्णपाप क्षीणहोगया इस कथाको कहकर उस विद्वान् तोतेके चुपहोजानेपर राजा सुमना अत्यन्त आनन्दित हुआ इस बीचमें श्रीशिवजीने प्रसन्नहोकर सोमप्रभको यह आज्ञादी कि हे पुत्र उठो राजा सुमनाके निकटजाओ वहांमकरन्दिका तुमको मिलजायगी वह मकरन्दिका अपने पिताके शापसे मुक्तालतानाम निषादकन्याहोकर तोतेके रूपमें उत्पन्नहुए अपने पिताको लेके राजा सुमनाके निकटगई है तुम्हें देखकर वह अपनी जातिका स्मरण करके अपने शापसे छूटजायगी तब परस्पर पहचानकर तुम दोनों का अत्यन्त आनन्ददायी समागमहोगा इसप्रकार सोमप्रभसे कहकर भगवान् भक्तवत्सल श्रीशिवजी ने मनोरथप्रभा से कहा कि तुम्हारा प्रियरश्मिमाननाम मुनिपुत्र सुमनानाम राजाहुआहै इससे तुम उसकेपासजाओ वह तुमको देखकर अपने पूर्वजन्मका स्मरणकरके अपने शरीरको पावेगा इस प्रकार स्वप्न में श्रीशिव जीसे आज्ञापाकर सोमप्रभ तथा मनोरथप्रभा दोनों राजासुमनाकी सभामें आये वहां सोमप्रभको देख कर मकरन्दिका अपनी जाति का स्मरण करके शीघ्रही विद्याधरी होकर उसकेगले में लिपटगई और सोमप्रभभी श्रीशिवजी की कृपा से प्राप्त हुई मूर्त्तिमती दिव्यभोगों की लक्ष्मी के समान मकरन्दिका का आलिंगन करके कृतकृत्य हुआ और राजा सुमना भी मनोरथप्रभा को देखकर अपने पूर्व्वजन्म का स्मरण करके आकाश से गिरेहुए अपने पूर्व्व शरीर में प्रवेश करके मुनि पुत्र रश्मिमान होकर अपनी प्रिया मनोरथप्रभा को साथलेकर अपने आश्रमकोगया और सोमप्रभ भी अपनी प्रिया मकरन्दिका को लेकर अपने पुरकोगया और वह तोता भी तोते के शरीरकोत्यागकर तप के प्रभाव से प्राप्त

हुए उच्चस्थानकोगया इसप्रकार से इस संसार में बहुत काल के उपरान्त भी प्राणियोंकाभावी समागम अवश्यहोताहै गोमुख से इस अद्भुत विचित्र रुचिरकथा को सुनकर शक्तियशा के लिये उत्कण्ठित भी नरवाहनदत्त बहुतप्रसन्नहुआ १७६॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायां शक्तियशोलम्बके तृतीयस्तरङ्गः ३॥

इसके उपरान्त गोमुखने फिर कहा कि हे स्वामी बुद्धिमान् सामान्यलोग भी दोनों लोकोंके हितके लिये कामादि के वेगको सहते हैं इसबातपर मैं आप को एक कथा सुनाताहूं राजा कुलधरका सेवक शूरवर्मा नाम एक कुलीनपुरुष बहुत प्रसिद्ध पराक्रमीथा एकसमय शूरवर्मा ने कुछदिन किसी कार्य्य के लिये एक ग्राम में रहकर लौटकर अपने घर में आकर अपनी स्त्री को अपने किसी मित्रकेसाथ एकान्त में रमणकरतेदेखा यह देखकर उसने अपना क्रोधरोककर शोचा कि इस मित्रद्रोही पशुके मारनेसे अथवा इस दुश्चारिणी पापिनी स्त्री को मारने से अथवा अपनेही मरजाने से क्या प्रयोजन सिद्धहोगा यह शोच कर उसने उन दोनों से कहा कि तुम दोनों में से अब जिस किसी को देखूंगा उसे मारडालूंगा इससे मेरे साम्हने अब कभी न आना यह कहकर और उन दोनों को निकालकर वह अन्य विवाह करके सुख पूर्वकरहा इसप्रकारसे हे स्वामी जो कोई अपने क्रोधको जीततेहैं और बुद्धि से कार्य्यकरते हैं उनको कभी भी विपत्तियों से दुखभोगनानहीं पड़ताहै पशुओंका भी कल्याण बुद्धिसेही होताहै पराक्रमसे नहीं होता इस विषयपर मैं आपको सिंह तथा बैलआदिक पशुओंकी कथा सुनाताहूं किसी नगर में एक बड़ा धनवान् वैश्यरहता था एकसमय व्यवहार के लिये मथुरा को जातेहुए उस वैश्य के भारका लेचलने वाला संजीवक बैल कीच में फिसलकर गिरपड़ा और उसके पैर टूटसेगये गिरने से उस बैलको निश्चेष्ट तथा उठने के लिये असमर्थ देखकर वह वैश्य निराशाहोकर चलागया उसके चलेजानेपर भाग्यवश से वह संजीवक बैल धीरे २ कुछ सावधानहोकर उठके कोमल २ दूबचरके अच्छाहोगया और यमुनाजीके तटपरजाकर स्वच्छन्दता से हरेहरे तृणों को चरताहुआ बहुत बलवान्होके श्रीशिवजीके नन्दी के समान गर्जना कर २ के इधर उधर फिरनेलगा उन दिनों वहां से कुछदूरपर पिंगलकनाम सिंह वनका राजारहता था उसके दमनक और करटकनाम दो मन्त्री थे एकदिन उस सिंह ने यमुनाजी के तटपर जलपीनेको आतेसमय कुछदूरसे संजीवकका गंभीरशब्दसुना उस अपूर्वशब्द को सुनकर सिंह ने शोचा कि यह किसकाशब्दहै मैं जानताहूं कि कोई बड़ा भयंकर प्राणी इस वनमें आयाहै ऐसा न होय कि वह मुझे देख कर मारडाले या वनसे निकालदेवै यह शोचकर वह पानी बिनापियेही लौटआया और सेवकों से अपने अभिप्रायको छिपाकर उदासीनहोके बैठा सिंह को उदासीन देखकर दमनकने करटकसे कहा कि आज यह हमारा स्वामी सिंहपानी पीनेकोगया था परन्तु किसीकारण से यहपानी बिनापियेही शीघ्रता से लौटआयाहै इससे पूछना चाहिये कि यह क्या बातहै यह सुनकर करटकनेकहा कि इससे हमें क्या कामहै क्या तुमने कीलोत्पाटी वानरका वृत्तान्त नहींसुनाहै कि किसीनगरमें किसी वैश्यने देवमंदिर बनवानेकेलिये बहुतसे काष्ठ इकट्ठेकिये बढ़ई लोग उनकाष्ठों को आधा २ चीरकर उनमेंकील ठोककर

अपने २ घरको चलेगये इतने में कोईबन्दर वहां आकर कीलीकेद्वारा फटेहुए काष्ठपर बैठके चपलतासे निष्प्रयोजन उसकीलको उखाड़नेलगा एकाएकी कीलके उखड़ने से उसबन्दरके अंडकोश उसकाष्ठ में दवगये और उसी पीड़ासे उसकेप्राण निकलगये इसप्रकार जिसका जो काम नहीं है वह करने से उसका नाशहोताहै इससे सिंहके अभिप्रायके जानने से हमको क्या प्रयोजनहै करटकके यहवचन सुनकर धीरदमनकने कहा कि स्वामीके अभिप्रायको जानकर बुद्धिमान् लोगोंको विशेष लाभहोता है और केवल उदर तो सवही पूर्णकरलेते हैं यह सुनकर करटकने कहा कि स्वेच्छासे बहुत घुसपैठ करना सेवक का धर्म नहीं है यह सुनकर दमनकने कहा कि ऐसा मतकहो अपने २ अनुरूप फल सब लोग चाहते हैं देखो कुत्ता केवल हड्डीही पाकर प्रसन्न होजाताहै परन्तु सिंह हाथीही को मारना चाहता है यह सुनकर करटकने कहा कि जो ऐसा करने से स्वामी कुपितहोय तो विशेष फल कैसे मिले क्योंकि अत्यन्त कठोर राजा लोग पर्व्वतों के समान दुर्गम होते हैं यह सुनकर दमनकनेकहा कि यह ठीकहै परन्तु बुद्धिमान् मनुष्य स्वामी के स्वभाव को जानकर उसीके अनुसार कार्य्यकरके उसे अपने वशीभूत करलेते हैं तब करटकनेकहा कि अच्छा जैसा उचित समझो सो करो यह सुनकर दमनक सिंहके पास जाकर प्रणामकरके क्षणभर बैठके बोला कि हे स्वामी मैं आपका बहुत प्राचीन तथा हितकारी सेवकहूं (हित २ परोपिस्वीकार्य्योहियस्वोप्यहित २ पुनः क्रीत्वान्यतोपिमूल्येन मार्जारःपोष्यतेहितः अहितो हन्यतेयत्नाद्गृहजातोपिमूषकः श्रोतव्यंचहितैषिभ्यो भृत्येभ्योभूतिमिच्छता अपृष्टैरपिकर्त्तव्यं तैश्चकाले हितंप्रभो॥) हितकारी अन्यको भी स्वीकार करलेना चाहिये और अहितकारी अपनेको भी त्यागदेना चाहिये देखो बिल्ली हितकारी होती है इससे मोललेकर पाली जाती है और गृहमें उत्पन्नहुआ भी अहितकारी मूषा यत्नसे माराजाताहै कल्याण चाहनेवाले स्वामीको हिताभिलाषी सेवकों के वचन सदैव सुनने चाहिये और सेवकों को चाहिये कि समयपर स्वामीके विनापूछेभी उसकाहितकरें इससे हे स्वामी जो मेरेऊपर आप विश्वास करते हो और कुछ छिपाना नहीं चाहतेहो और क्रोध न करो तो मैं आपसे कुछपूछूं दमनकके यहवचन सुनकर उस पिंगलक सिंहने कहा कि तुम मेरे विश्वासपात्र और परमभक्तहो इससे निस्सन्देह होकर जो चाहो सो कहो पिंगलककी यहआज्ञापाकर दमनकनेकहा कि हे स्वामी आप प्यासेहोकर जल पीनेकोगये थे सो क्या कारणहुआ कि आप विना जलपियेही उदासीनहोकर लौटआये उसके यहवचन सुनकर सिंहने यह शोचा कि यह मेरे अभिप्रायको जानगया इससे अव कुछ छुपाना न चाहिये यह शोचकर उसने दमनकसेकहा सुनो मैं तुमसे कुछ छुपाना नहीं चाहताहूं मैं जव जलपीनेको गयाथा तो मार्गमें मुझे एक अपूर्व शब्द सुनाईदिया उस शब्दसे मुझे मालूम होताहै कि जिस प्राणी का यह शब्दहै वह मुझसे भी अधिक बलवान्है ब्रह्माकी सृष्टिमें एक से एक अधिक बलवान् जीवहैं जो वह प्राणी यहां आजायगा तो मुझे यहां से निकालदेगा अथवा मारडालेगा इससे मैं इस वनको छोड़कर दूसरे वनको चलाजाऊंगा सिंहके यह वचन सुनकर दमनक ने कहा कि आप इतने बड़े शूर वीरहोकर वनको क्यों त्यागकरना चाहतेहो जलसे सेतु पिशुनसे स्नेह गुप्त न रखनेसे मन्त्र और शब्द

मात्रसे कातर नष्ट होजाताहै यन्त्रादिकोंके शब्द बड़े भयंकर होतेहैं इससे तत्त्वको विनाजाने भय न करना चाहिये इसबातपर मैं आपको नगाड़े और शृगालकी कथा सुनाताहूं किसी वनमें एक शृगाल रहताथा वह भोजन ढूंढ़नेकेलिये भ्रमण करताहुआ एक ऐसी पृथ्वी में पहुंचा जहां युद्धहोकर समाप्तहोचुकाथा वहां उसे नगाड़ेका बड़ा गंभीर शब्द सुनाई दिया उस शब्दको सुनके भयभीतहोकर उसने इधर उधर देखा तो एक अपूर्व नगाड़ा उसे दिखाईदिया तब उसने शोचा कि क्या यह कोई इस प्रकारका जीव है यह शोचकर और उसके पास जाके उसे निश्चल देखकर वह जानगया कि यह प्राणी नही है वायुसे कंपितहुए नरकुलके लगनेसे इसमें शब्द होरहाहै ऐसा जानकर उसने निर्भय होकर भोजनके लोभसे उसे फाड़ा और उसके भीतर घुसके जो उसे देखा तो उसमें चमड़े तथा काष्ठ के सिवाय कुछ न पाया इससे केवल शब्दहीं सुनकर आपसरीखे वीरोंकोडरना न चाहिये जो आप आज्ञादें तो मैं इस शब्द का पता लगानेकोजाऊं यह सुनकर पिंगलकने कहा कि अच्छी बातहै तुम जासक्तेहो तो जाओ उसकी यह आज्ञा पाकर दमनकने शब्द के अनुसार जाकर यमुनाके तट पर चरतेहुए संजीवक बैलकोदेखा और उसके निकटजाकर उससे सब वृत्तान्त पूछकर सिंहसे सब उसका वृत्तान्त कहा उसके वृत्तान्त को सुनके पिंगलकने कहा कि जो तुमने उस बैलको देखाहै और उससे वार्त्तालापभी करीहै तो उसको युक्ति पूर्व्वक यहां लेआओ मैं भी तो देखूं कि वह कैसा बैलहै यह कह कर उसने दमनकको संजीवकके पास भेजा दमनकने उसके पास जाकर उससे कहा कि चलो हमारा स्वामीसिंह प्रसन्नहोकर तुमको बुलारहाहै दमनकके यह वचन सुनकर संजीवकने भयभीत होकर उसके पास जाना स्वीकार नहीं किया तब दमनकने फिर सिंहके पास जाकर और उससे संजीवकके लिये अभयमांगकर लौटकर उसे अभयदान देकर सिंहके पास बुलालाया पिंगलकने आयेहुए उस संजीवकको प्रणाम करते देखकर आदर पूर्व्वक उससे कहा कि तुम निर्भयहोकर मेरे पासरहो सिंहके इन वचनोंको स्वीकार करके संजीवक वहीं रहनेलगा और उसने सिंहको ऐसा प्रसन्नकिया कि वह अपने अन्यसेवकों को छोड़कर केवल उसीके वशीभूतहोगया ७२ तब दमनकने खिन्नहोकर एकान्तमें करटकसे कहा कि देखो यह सिंह संजीवकके वशीभूतहोकर हमसे विमुखहोरहाहै अब अकेलेही मांस भोजनकरताहै हम लोगोंका नहीं देता और इसी बैलहीकी शिक्षामानताहै यह मेराही दोषहै जो मैं इस बैलको यहां ले आया अब मैं ऐसा करूंगा जिससे यह बैल नष्ट होजाय और यह सिंह अनुचित व्यवहारसे निवृत्तहोजाय यह सुनकर करटकने कहा कि हे मित्र अब तुम भी इस कामको नहीं करसक्तेहो यह सुनकर दमनकने कहा कि मैं बुद्धिके बलसे सब कुछ करसक्ताहूं आपत्ति में जिसकी बुद्धि सावधान रहती है वह क्या नहीं करसक्ताहै इस विषयमें मैं तुमको बगलेके मारनेवाले गेंगटेकी कथा सुनाताहूं पूर्व समयमें अनेक मछलियों से भरेहुए किसी तालावपर एक बगलारहताथा उसे देखकर सम्पूर्ण मछलियां भयभीत होकर भागजातीथीं उन मछलियोंको न पाकर उस बगलेने उनसे झूठमूठ बनाकर कहा कि इस तड़ागपर कोई मछुआ जाल लेकरआयाहै वहजालडालकर तुम लोगोंको पकड़ लेजायगा

इससे जो तुम्हारा मेरे ऊपर विश्वास होय तो तुम मेरा कहनाकरो यहां से कुछही दूरपर एक निर्मल तालावहै उसे मछुए लोग नही जानते हैं चलो मैं वहां तुम सवको एक २ लेजाकर पहुंचाआऊं यह सुनकर सम्पूर्ण मूर्ख मछलियोंने कहा कि ऐसाहीकरो हमारा तुमपर विश्वासहै तव उस वगलेने एक २ मछली लेजाके और शिलापर रखके खाना प्रारंभकिया और इसीक्रमसे वहुतसी मछलीखाडालीं उसे मछलियोंको लेजाते देखकर उसी तड़ागके निवासी गेंगटेने उससे पूछा कि तुम इन मछलियोंको कहां लेजातेहो उसने जो मछलियोंसे कहाथा वही उससे भी कहदिया यह सुनकर उसने भी भयभीत होकर उससे कहा कि मुझेभी वहां लेचलो तो वह वगला उसके मांसके लोभसे उसे भी उसी शिलापर लेगया वहां उस गेंगटेने मछलियोंकी वहुतसी हड्डियोंको देखकर जानलिया कि यह वगला मछलियों पर विश्वास घात करताहै यहजानकर शीघ्रही वगलेके गलेमें लिपटकर उसका शिर उसचतुर गेंगटेने काटडाला और तड़ागमें आकर सम्पूर्ण मछलियोंसे उसका सव वृत्तान्त कहा इस वृत्तान्तको सुनकर सम्पूर्ण मछलियां अत्यन्त प्रसन्नहुई इससे वुद्धिही जीवोंका मुख्यवलहै और निर्वुद्धि केवल होना भी व्यर्थहै इसी विषयपर मैं तुमको सिंह तथा खरगोशकी एक और कथा सुनाताहूं किसी वनमे एकवड़ा वलवान् सिंह रहताथा वह जिस प्राणीको देखताथा उसीको मारडालताथा इससे व्याकुल होके वनके सम्पूर्ण पशुओंने उससे कहा कि हे मृगराज आपके भोजनके निमित्त हम एक पशु नित्य भेजेंगे हम सवको एक साथही मारकर आप अपने स्वार्थकी हानि क्यों करतेहो उनके यह वचन उस सिंहने स्वीकार करलिये और उसीदिन से वह सम्पूर्ण पशु उसके निमित्त वारी २ से नित्य एक पशु भेजने लगे एकदिन एक वुड्ढे खरगोशकी वारी आई उसने मार्गमें जाते २ यह शोचा कि (सधीरोयोनसंमोहमापत्कालेपिगच्छति) वही धीरहै जो आपत्तिकालमे भी मोहको नही प्राप्त होताहै इससे मृत्युके भी आजानेपर युक्तिका विचार करना चाहिये यह शोचकर वह विलम्व लगाकर उस सिंहके पासगया उसे देरमे आया देखकर सिंहने कहा कि अरे तैंने मेरे भोजनकी वड़ी देरकरदी वधसे भी अधिक मैं तुझको क्या दंडदूं सिहके यहवचन सुनकर खरगोशने नम्रतापूर्वककहा कि हे स्वामी इसमें मेरा कोई अपराध नहीं है एक दूसरे सिंहने मुझे मार्गमें पकड़रक्खाथा उसने लौट आनेकी प्रतिज्ञा कराके वहुत देरमे मुझको छोड़ा यहसुनकर उस मूर्ख सिहने क्रोधसे पूंछफटकारकर कहा कि वह दूसरा सिह कहांहै मुझे तो चलकर दिखाओ तव वह खरगोश उसेसाथ लियेहुए दूरपर किसी कुएके तटपर जाकर वोला कि हे स्वामी इसीके भीतर वहहै आप देखलीजिये उसके यह वचन सुनके सिहने क्रोधकरके गरजकर जो कुएमें देखा तो उसे निर्म्मलजलमें अपनाही प्रतिविम्व दीखा और अपनीही गर्जनाका प्रतिशब्द भी सुनाईदिया इससे वहकुएमें दूसरे सिंहकोजानकर क्रोधकरके उसके मारनेको उसीमेंकूदा और उस में जाकर मरगया और वह खरगोश वुद्धिके वलसे अपनेको तथा सम्पूर्ण पशुओंको मृत्युसे वचाकर संपूर्ण पशुओंसे वहसववृत्तांत कहकर सवकाप्याराहोगया इससे वुद्धिही सवका परमवलहै जिसके प्रभाव से खरगोशने भी ऐसे पराक्रमी सिंहको मारडाला इसीसे मैं अपनीवुद्धिके वलसे अपना मनोरथ सिद्ध

करलूंगा दमनकके यह वचन सुनकर करटक चुपहोरहा तब दमनक पिंगलकके पासजाके उदासीनसा होकर बैठा और जब सिंहने उसकी उदासीनताका कारण पूछा तब बोला कि हे स्वामी जानबूझकर न कहना उचित नहीं है इससे मैं कहताहूं विनापूछे भी स्वामीका हितकहनाचाहिये यहजानकर मैं जो विज्ञापनकरताहूं सो आप विश्वासयुक्त होकर सुनिये यहसंजीवक आपको मारकर आपही राज्यकरनाचाहताहै क्योंकि इसने आपको बड़ाभीरु जानलियाहै यहवनमें जाकर संपूर्ण पशुओंसे कहताहै कि जब इस मांसाशी सिंहको मारकर मैं राजा होजाऊंगा तब तुमलोग निर्भयहोके सुखपूर्वक रहना और यहकहकर आपके मारनेकी इच्छासे अपने पैने सींगोंको हिलाताहै इससें आप इसबैलका ध्यानरखिये इसके यहां रहनेमें आपका कल्याण नहीं है दमनकके यह वचनसुनकर पिंगलकनें कहा कि यह तृणका खानेवाला बैल मेरा क्याकरसकेगा और मैं इसे अभय देचुकाहूं इससे इसका मारना उचित नहींहै यह सुनकर दमनकने कहा कि आपको ऐसा न कहनाचाहिये राजा जब किसीको अपने तुल्य बनालेता है तब चंचल राजलक्ष्मी बहुतकालतक दो में स्थित न रहकर दोनोंमें से एकको छोड़देती है (प्रभुर्यो हितंद्वेष्टिसेवतेचाहितंसदा।सवर्जनीयोविद्वद्भिर्वैद्यैर्दुष्टातुरोयथा॥ अप्रियस्यप्रथमतःपरिणामेहितस्यच। वक्ताश्रोताचयत्रस्यात्तत्रश्रीःकुरुतेपदम्॥ नशृणोतिसतांमन्त्रमसतांचशृणोतियः। अचिरेणससंप्राप्यविपदंपरितप्यते.) जैसे दुष्टरोगीको वैद्य छोड़देते हैं उसीप्रकार हितसे द्वेष करनेवाले और अहितका सेवन करनेवाले स्वामीका त्यागकरना विद्वान्लोगोंको उचितहै जहां प्रथम अप्रिय तथा परिणाम में हित वचनोंके कहनेवाले और सुननेवाले होते हैं वहीं लक्ष्मी निवास करती है जो सज्जनोंके मंत्रको नहीं सुनताहै और दुष्टोंके मन्त्रको सुनताहै वह थोड़ेहीकालमें विपत्तिमें पड़कर दुःखभोगताहै तो इसबैलसे आपको क्या स्नेहहै और इस द्रोहीको अभयदानका पात्र तथा शरणागत माननेसे क्याप्रयोजनहै देखिये यह सदैव आपकेपास रहताहै और इसके मूत्रपुरीषमें कीट उत्पन्नहोते हैं वहकीट जो मतवालेहाथियों के दांतोंके लगनेसे उत्पन्नहुए आपके शरीरके व्रणों में घुसजायँ तो युक्तिपूर्वक आपका वध सिद्धहोजाय कि नहीं देखिये जो दुष्टमनुष्य चाहें आप कोई दोष न भीकरे तो उसकेसंगसे दोषउत्पन्न होजाता है इसविषयमें आपको मैं एककथा सुनाताहूं किसी राजाकी शय्यामें मंदविसर्पीनाम एकजुआं बहुत कालसे रहताथा एकदिन अकस्मात् एकटिटिभनाम खटमलवहांआया उससे मन्दविसर्पीनेकहा कि तू मेरे स्थानपर क्योंआयाहै यहांसेचलाजा मन्दविसर्पी के यहवचन सुनकर खटमलनेकहा कि मैंने राजा का रुधिर कभी नहीं पियाहै इससे तुम कृपाकरके मुझे भी यहां रहने दो तो मैं भी इसका स्वाद देखूं यह सुनकर मन्दविसर्पी ने फिरकहा कि अच्छा जो यही विचारहै तो तुमरहो परन्तु असमयमें राजाको न काटना जब राजा सोताहोय अथवा रति करताहोय तब धीरे से उसे काटना यह सुनकर और बहुत अच्छा कहकर वहखटमल वहींरहा रात्रिकेसमय जैसेही राजा शय्यापर आकरलेटा वैसेही उसदुष्ट खटमलने उसे वेगसेकाटा तब राजा यह कहकर उठबैठा कि मुझे किसीने काटाहै और उसके सेवकोंने उस खटमल के काटकर भागजानेपर उस मन्दविसर्पी को ढूंढ़कर मारडाला इसप्रकार खटमल के संसर्ग से

वह मंदविसर्पी नष्टहुआ इससे संजीवक के साथ में आपका कल्याण नहीं है जो मेरे ऊपर आपको विश्वासनहीं है तो आप स्वयं देखलीजियेगा, कि जब वह शूलकेसमान तीक्ष्णसींगवाले अपनेशिरको अभिमान से आपके आगे हिलावेगा इसप्रकार कहके दमनकने पिंगलक के चित्तमें ऐसा विकार उत्पन्न कराया कि उसने संजीवकके मारनेका निश्चय करलिया ।१३६ तब दमनक क्षणभरमें उसका यह आशय जानकर उदासीनसा होकर संजीवक के पासगया संजीवकने उसे उदासीन देखकर पूछा कि हे मित्र तुम्हारे शरीर में कुशलतो है आज तुम उदासीनसे क्यों हो रहेहो यह सुनकर उसने कहा कि (किसेवकस्यकुशलंकश्चराज्ञांसदाप्रियः। कोर्थीनलाघवंयातःकःकालस्यनगोचरः) सेवकको कुशल क्याहै राजाओंको कौन सदैव प्रियरहाहै याचक होकर कौनलघुता को प्राप्त नहीं हुआ काल किसकाभक्षक नहीं है उसके यह वचनसुनके संजीवकने फिर कहा कि हे मित्र तुम बताओ तो कि तुम्हारी उदासीनता का क्या कारण है दमनकने कहा सुनो मैं स्नेहके कारण तुमसे कहताहूं कि यह मृगराज पिंगलक तुमसे विरुद्ध होगयाहै यह स्नेहको छोड़कर अब तुमको मारकर खाना चाहताहै और इसके साथी हिंसकजीव सदैव इसको इसी बातकी प्रेरणा करतेहैं दमनक के यह वचनसुनकर संजीवक पहलेके विश्वास से उसके वचनों को सत्यजानकर बोला कि क्षुद्रस्वामी क्षुद्रपरिकर से युक्त होकर भलीभांतिसेवा करनेपरभी सेवकोंसे शत्रुता करने लगताहै इसविषयपर मैं तुमको एक कथा सुनाताहूं कि किसीवनमें मदोत्कट नाम एक सिंहथा और एक कौआ व्याघ्र तथा शृगाल यह तीन उसके मन्त्रीथे एक समय उसवनमें कहीं से आयेहुए एकऊंटको देखकर उस सिंहने कौएसे पूछा कि यह कौनजीवहै उसने कहा यह ऊंटहै तब सिंहने ऊंटको अभय देकर सेवक बनाके अपने पास रक्खा एक समय हाथियोंके साथ युद्ध करनेसे घायल होकर सिंहने अपने स्वस्थसेवकों समेत कई उपवास किये और फिर एकदिन क्षुधासे व्याकुल होकर सम्पूर्ण वनमें कुछ भोजनके योग्य पदार्थ न पाकर कौआ शृगाल तथा व्याघ्रसे एकान्तमें कहा कि क्या करें कुछ भोजन नहीं मिलता और क्षुधासे बड़ी व्याकुलता होरही है यहसुनकर वहबोले कि हे स्वामी इसआपत्तिमें जो योग्य और उचितहै वह हम आपसे कहते हैं ऊंटकेसाथ हमलोगोंकी क्या मित्रताहै इससे आप इसीको मारकर खाइये क्योंकि तृणों के चरनेवाले जीव मांसाशी जीवों के सदैव भक्ष्यहोते हैं और इसके प्राणजाने से बहुतों के प्राण बचेंगे इससे इसके मारने में कोई हानि नहीं है और जो आप यह कहें कि हम इसे अभय देचुके हैं कैसे मारें तो हमलोग ऐसा उपायकरेंगे जिससे यह अपने आपही अपना शरीर आपको भेटकरे यह सुनकर उसने कहा कि अच्छा जैसा उचित समझो सो करो उसकी यह आज्ञा पाकर आपसमें सलाहकरके कौए ने ऊंटसे कहा कि यह स्वामी क्षुधासे अत्यन्त व्याकुलहै और हमलोगों से कुछ नहीं कहता है इससे इसके पास चलकर इसे प्रसन्न करने के लिये हम सबलोग यहकहें कि आप हमेंही खालीजिये उसके यह वचन उस ऊंट ने स्वीकार करलिये तब वह चारों मिलकर सिंहके पास गये उनमें से पहले कौए ने कहा कि हे स्वामी आप मुझे खाकर अपनी क्षुधाको मिटाइये यहसुनके सिंहने कहा कि तु-

म्हारे शरीरमें कितना मांसहै जिसको खाकर मेरी तृप्तिहोगी फिर शृगाल तथा व्याघ्रने भी इसीप्रकार कहा और सिंह ने उनसे भी निषेध करदिया इन सबके पीछे ऊंट ने कहा कि हे स्वामी मुझे खाइये उसके यह वचन सुनतेही सिंह ने उसे मारा और अपने मन्त्रियों समेत उसे खाडाला इसी प्रकार से किसी पिशुन ने व्यर्थही इस सिंह को मेरे ऊपर क्रोधित करदिया है अच्छा जो भाग्य में बदा होगा सो होगा (गृध्रोपिहिवरंराजा सेव्योहंसपरिच्छदः॥ नगृध्रपरिवारस्तु हंसोपिकिमुतापरः॥) चाहे राजा गृध्र भी होय परन्तु उसके परिकरमें हंस होंय तो उसका सेवन करना चाहिये परन्तु जब परिकर में गृध्र होंय तो चाहे राजा हंस भी होय तो उसका सेवनकरना न चाहिये अन्यका तो कहनाही क्या है संजीवकके यह वचन सुनकर दमनक ने कहा कि घबराओमत धैर्यधरो धैर्य से सब कार्य सिद्धहोते हैं इस विषयपर मैं तुमको एक कथा सुनाताहूं कि समुद्र के तटपर कोई टिट्टिभपक्षी अपनी स्त्री समेत रहताथा एकसमय टिट्टिभी ने गर्भवतीहोकर टिट्टिभ से कहा कि अब यहां से और कहींकोचलो नहीं तो यहां रहनेसे जो मेरे बच्चेहोंगे उनको समुद्र अपनी लहरों से बहालेजायगा टिट्टिभी के यह वचन सुनकर उस टिट्टिभ ने कहा कि समुद्र मेरे साथ विरोध नहींकरसक्ता है यह सुनकर टिट्टिभी फिर बोली कि ऐसा तुम क्या कहतेहो समुद्रकी और तुम्हारी क्या बरोबरी है जो कोई हितकीबातकहै वह मानलेना योग्यहै नहीं तो विनाशहोजाता है इसीबातपर मैं तुम्हें एक कथा सुनातीहूं कि किसी तड़ाग में एक कंबुग्रीव नाम कछुआरहताथा उसके विकट तथा संकटनाम दो हंस परममित्र थे एकसमय वृष्टिके न होने से तड़ागमें जल के न्यूनहोजाने के कारण उन दोनों हंसों को किसी दूसरेतड़ागपर जातेदेखकर वह कछुआ उनसे बोला कि तुम दोनों जहांजानाचाहतेहो वहां मुझे भी लेचलो यह सुनकर हंसो ने कहा कि जिसतड़ाग पर हम दोनों जानाचाहते हैं वह यहां से बहुतदूरहै जो वहां तुम चलनाचाहतेहो तो हमारा कहनाकरो कि एक लकड़ी हम दोनों अपनी चोंचों में पकड़लेंगे उसे बीच में से तुम भी अपने दांतों से पकड़कर लटके रहना परन्तु किसीसे कुछ बोलना नही नहीं तो आकाशसे गिरकर मरजाओगे उसकछुएने उनके यह वचन स्वीकार करलिये तब वह दोनों हंस एक लकड़ीके दोनों छोरोंको दोनों तरफ पकड़कर बीचमें दांतोंसे पकड़कर लटकेहुए उस कछुए समेत लेचले वह जब तड़ाग थोड़ी दूरबाकीरहा तो मार्गमें चलते हुए किसी नगरके निवासी लोगोंने उसप्रकारसे जातेहुए कछुएको देखकर कहा कि बड़े आश्चर्यकी बातहै कि हंस इस कछुएको क्यों लियेजारहे हैं इसकोलाहलको सुनके यह कोलाहल क्यों होताहै यह पूछनेकी इच्छा करताहुआ वह कछुआ उस लकड़ीको छोड़कर जैसेही बोलनेकोहुआ वैसेही लकड़ी से छूटकर पृथ्वीपरगिरा और लोगोंने उसे भूनकर खालिया इसप्रकार से जैसे वह कछुआ नष्टहुआथा ऐसेही निर्बुद्धी मनुष्य नष्टहुआ करते हैं टिट्टिभीके यह वचन सुनकर टिट्टिभने कहा कि हे प्रिये यह तुम्हारा कहना बहुत ठीकहै परन्तु तुमभी एक कथा मुझसे सुनो किसी नदीके भीतर एकगड्ढेमें अनागत विधाता, प्रत्युत्पन्नमति तथा यद्भविष्य नाम तीन मछलियां रहतीथीं इनतीनों में परस्पर बड़ा स्नेह था एकसमय उसीमार्गमें जातेहुए मछलीमारों ने उसगड्ढेको देखकरकहा कि इसमें बहुतसी मछलियां

हैं उनके यहवचन सुनकर अनागत विधाता सन्देहयुक्तहोके नदी के श्रोतके द्वारा अन्य स्थानको चली गई और प्रत्युत्पन्नमति यहशोचकर कि जब आपत्ति आवेगी तब यत्न कियाजायगा वहींरही और यद्भविष्य भी यह शोचकर कि जो बदाहोगा सो होगा वहींरही इसके उपरान्त मछुओं ने आकर वहांजाल लगाया तब बुद्धिमान् प्रत्युत्पन्नमति जालमें फँसकर अपने को मृतकके समान दिखाकर जालमें ठहरी मछुओं ने उसे मरीहुई जानकर जालसे निकालकर बाहर रखदिया तब वह शीघ्रतासे वहां से उछल नदी के सोते में जाकर बहगई और मूर्ख यद्भविष्यजालमें फड़फड़ाकर मारीगई इससे मैं यहां से जाऊंगा नहीं और समय पड़नेपर प्रत्युत्पन्नमति के समान यत्नकरूंगा यह कहकर वह टिट्टिभ वहींरहा समुद्र ने उसके यह अहंकारयुक्त वचन सुनके जब टिट्टिभी ने अण्डेरक्खे तब अपनी लहरों से बहालिये और अपने चित्तमें कहा कि देखूं यह टिट्टिभ मेरा क्या करताहै तब टिट्टिभीने रोकर टिट्टिभसे कहा कि तुमने मेरा कहना नहींमाना उसीका यह फलहुआ उसके यहवचनसुनकर वह धीर टिट्टिभबोला देखो मैं इसपापी समुद्रकी क्या दशा करताहूं यहकहकर उसने सम्पूर्ण पक्षियों को इकट्ठाकरके उनसे अपनादुःख कहकर उनसबको साथलेकर गरुड़जी के पासजाके रुदनकरके कहा कि आप ऐसे नाथहोनेपरभी समुद्र ने अनाथके समान हमलोगो के अण्डे हरलिये यहसुनकर कुपितहुए गरुड़ने विष्णुभगवान्से कहकर आग्नेयास्त्र से समुद्रको सुखवाकर टिट्टिभकेअंडे दिलवादिये इससे बुद्धिमान्को विपत्तिमें धैर्य न छोड़ना चाहिये अब पिंगलकके साथ तुम्हारा युद्ध उपस्थितहै इससे जब पूंछउठाकर वह चारोंपैरोंसे खड़ाहोवे तब तुम जानना कि यहप्रहार करनाचाहताहै उसके अभिप्रायको जानकर तुमभी शिरझुकाकर उसके पेटमें सींगोंका ऐसा प्रहार करना जिससे उसके पेटकी सब आतें निकलपड़ें संजीवकसे यह कहकर दमनकने जाकर करटकसे कहदिया कि मैंने उन दोनों मे भेदकरा दिया तदनन्तर संजीवक पिंगलकके अभिप्रायके जाननेकेलिये धीरे २ उसके पास गया और उसे पूंछ उठाकर चारोपैरोंसे बराबर खड़ाहुआ देखकर भयसे अपना शिर हिलानेलगा उसे शिरहलाते देखकर पिंगलकने उस पर नखोंका प्रहार किया और उसने भी सींगोंसे प्रहार किया इसप्रकार उन दोनोंका युद्ध देखकर साधुकरटकने दमनक से कहा कि तुमने स्वार्थ सिद्धकरनेके लिये स्वामीके साथ यह क्या छलकिया (सम्पत्प्रजानुतापेनमैत्रीशाठ्येनकामिनी। पारुष्येणाहृता मित्रनचिरस्थायिनीभवेत्) हे मित्र प्रजाको क्लेश देकर प्राप्तहुई संपत्ति शठतासे हुई मित्रता और कठोरतासे लाईगई कामिनी चिरस्थायिनी नहीं होती जो हितकारी वाक्यके न माननेवाले को बहुत उपदेशकिया करताहै वह उसीसे दोषको प्राप्तहोताहै जैसे कि बन्दर से सूचीमुखको दोषप्राप्तहुआ पूर्वसमय किसीवनमें बहुतसे बन्दर शीतकालमें जुगनूको देखके और उसे अग्निमानके उसपर बहुतसी घास तथा पत्तेरखकर तापनेलगे और उनमेंसे एकबन्दर अपने मुखसे उस जुगनूको फूंकनेलगा यह देखकर एक सूचीमुख नाम पक्षीने उससे कहा कि यह अग्नि नहीं है जुगनू है इसमें व्यर्थ श्रममतकरो यहसुनकरभी वह बन्दर अग्निको फूंकताहीरहा तो उसपक्षीने निकटआकरबड़ी हठसे उसे निषेधकिया उसके हठसे कुपितहोकर उसबन्दरने शिला फेंककर उसपक्षीको मारडाला इससे

जोहितकेवचनोंको न माने उससे हितकारी बातकभी न कहै तुमने जो इनदोनोंमें भेदकरवायाहै यहश्रेष्ठ नहीं है क्योंकि (दुष्टयाक्रियतेयबवुध्यातन्नशुभंसवेत) जो कार्य्यदुष्टबुद्धिसे किया जाताहै वह शुभ नहीं होता ११० इसविषयपरभी मैं तुमसे एककथा कहताहूं पूर्वसमयके बीच किसीनगरमें धर्मबुद्धि और दुष्ट बुद्धिनाम दोभाई रहतेथे वह दोनों परदेशमें जाकर दोहजारअशर्फी कमालाये और अपने देशमें आके किसीवृक्षके नीचे वह अशर्फी गाड़कर अपनेघरोंको चलेगये और सौ अशर्फी जो उसमेंसे बचारक्खीथीं वहबराबर बांटके अपना २ खर्चकरनेलगे एकसमय दुष्टबुद्धिने अकेलेही उस वृक्षके नीचे जाकर वह सब अशर्फीखोदलीं और घरमें आकर धर्मबुद्धिसेकहा कि हे भाई चलो वहांसे वह सबअशर्फीलेआवें क्योंकि मुझे कुछ आवश्यकताहै यह सुनकर धर्मबुद्धि ने उसकेसाथ वहांजाकर वहस्थान जहां अशर्फी गाड़ीथीं खोदा परन्तु अशर्फी नहीमिलीं तब दुष्टबुद्धिने उससेकहा कि तूनेही अशर्फियांली हैं मेराहिस्सा मुझेदेदे यह सुनकर धर्मबुद्धिने कहा कि तैंनेही ली हैं मैंने नहीलीं इसप्रकार कलहहोने पर दुष्टबुद्धि पत्थर से अपना शिर पीटताहुआ धर्मबुद्धिको न्यायालय (कचहरी) में लेगया वहां उनदोनोंने अपना २ पक्ष अधिकारियोंके आगेकहा उन दोनों के पक्षको सुनकर राजाके अधिकारियों ने कुछ निर्णय न करके उन्हें दिनभर कचहरी में बैठालरक्खा सायंकालके समय दुष्टबुद्धिने उनसे कहा कि जिसवृक्षके नीचे अशर्फी गाड़ीथीं वही वृक्ष मेरा साक्षी है वह कहताहै कि धर्मबुद्धि अशर्फी खोदलेगया उसके यह वचनसुनकर उनलोगोंने बहुत आश्चर्य्ययुक्तहोकर कहा कि प्रातःकाल चलकर हम उसे देखेंगे और जामनीलेकर उन दोनोंको छोड़दिया दुष्टबुद्धिने अपने घरमें आकर अपने मित्र किसी छलीपुरुषको कुछ धनदेकर रात्रिको जाकर उसीवृक्षके खोलमें बैठालदिया और उससे कहदिया कि तुम राजाके अधिकारियोंसे कहदेना कि धर्मबुद्धि अशर्फी लेगया और यह कहकर अपने घरचलाआया प्रातः-काल राजाके अधिकारियों ने उन दोनों को अपने साथ लेजाकर उसवृक्षसे पूछा कि अशर्फी कौन लेगया तब उसमें से यह शब्दआया कि धर्मबुद्धि अशर्फी लेगया है उस शब्दको सुनकर उन अधिकारियोंने जानलिया कि दुष्टबुद्धिने इस वृक्षमें किसीको बैठायाहै यह समझकर उन्होंने उस वृक्ष में आगलगानेका विचारकिया तो वह पुरुष भयभीतहोकर उसमेंसे निकलआया और बोला कि इसदुष्टबुद्धिने मुझे कुछ धनदेकर इस वृक्षमें बैठायाथा यह सुनकर उन लोगों ने धर्मबुद्धिको दुष्टबुद्धिसे अशर्फी दिलवादी और उसके हाथ काटकर देशसे बाहर निकालदिया और धर्मबुद्धि का बड़ा सत्कार किया इसप्रकार अन्यायसे कियागया काम अशुभफलदायी होता है इससे न्यायपूर्वक कार्य्य करना श्रेष्ठहै जैसे कि बगलेने सर्पकेलिये कियाथा वह मैं तुमसे कहताहूं पूर्व्व समयमें कोईसर्प किसी बगलेके बच्चोंको खाजायाकरताथा इससे उसबगलेने बहुत दुःखीहोकर किसी गेंगटेके उपदेशसे मछलियोंका मांसलेकर किसीनौलेके बिलसे सर्पके बिलतक बिछादिया तब वहनौला अपने बिलसे निकलकर उसी बिछेहुए मांसको खाताहुआ सर्प के बिलपरपहुंचा और वहां उसने सर्पके बिलमें घुसकर उसकेबालबच्चों समेत सर्पको मारडाला इसप्रकार उपायसे सब कार्य्य सिद्धहोते हैं इस विषयपर मैं एक और कथा तुम

को सुनाताहूं किसी बणियेके पुत्र केपास अपनेपिताके धनमेंसे केवल एकसवामन लोहेकी तराजू बची थी वह उसतराजूको किसी वैश्यके यहांरखकर परदेशको चलागया जबलौटकर उसनेउसवैश्यसे तराजू मांगी तो उसनेकहा कि उसे मूसेखागये यहसुनकर वह अपनेहृदयमें हँसकर बोला कि ठीकहै वह लोहा बड़ा स्वादिष्टथा इसीसे अवश्य मूसेखागयेहोंगे अच्छा आजमुझे खानेभरका कुछभोजन दीजियेगा यह सुनकर उसवणियेने प्रसन्नहोकर उसेभोजनदेना स्वीकारकरलिया तब वहवणियेकापुत्र उसवैश्यके बालक को साथलेकर स्नानकरनेकोगया औरबालकको किसी मित्रके घरमें छिपाकर अकेलाही उसवणिये के पास लौटकरगया उसे अकेला देखकर उसने पूंछा कि वहबालक कहांरहा उसने कहा कि उसे तो बाज उठालेगया यहसुनकर वहवैश्य क्रोधितहोके बोला कि तूने मेरेपुत्रको कहीं छुपादिया और यहकहकर उसने उसे राजके यहां लेजाकर अपने बालकका वृत्तान्त कहा यहसुनकर सभासद लोग बोले कि यहअसम्भव बातहै बाज बालकको कैसे ले जासक्ता है यहसुनकर वहवणिक्पुत्र बोला कि जिसदेशमे लोहेकी तराजूको मूसे खाजातेहैं उसदेसमें हाथीको भी बाज लेजासकताहै लड़केकी क्या गिनती है यहसुनकर सभासदोंने कौतुकसे सब वृत्तान्तको पूंछकर उसवैश्यसे उसकी तराजू दिलवादी और उसने उसका लड़का लादिया इसप्रकार उपायोंसे बुद्धिमान् लोग अपने कार्य्योंको सिद्धकरते हैं तुमने तो साहसकरके स्वामीको सन्देहमें डालदिया करटकके यहवचन सुनकर दमनक हँसकरबोला कि बैलके साथ सिंहके युद्धमें क्या सन्देहहै कहां तो मतवाले हाथियोंके दांतोंके घावोंसे विभूषित सिंह और कहां वधिया बैल उनदोनोंके इसप्रकार वार्ताकरते २ सिंहने बैलको मारडाला उसके नष्टहोजानेपर दमनक और करटक पिंगलकके पास सुखपूर्वक रहनेलगे गोमुखसे इसविचित्र बुद्धिवर्द्धिनी कथाको सुनकर नरवाहनदत्त बहुत प्रसन्नहुआ २५४॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशक्तियशोलम्बकेचतुर्थस्तरंगः ४॥

इसके उपरान्त शक्तियशा के निमित्त उत्कण्ठित नरवाहनदत्त से गोमुख फिर बोला कि हे स्वामी आपने बुद्धिमानोंकी कथा सुनी अब मूर्खोंकी कथा सुनिये किसी धनवान् वैश्य के मुक्तबुद्धिनाम एक पुत्र था वह एकसमय बहुतसी वस्तु बेचने के लिये कटाहद्वीपकोगया उसके पास बहुत अगरभीथा वहां जाकर उसकी और सब वस्तु तो बिकगई परन्तु अगर नहीं बिका क्योंकि वहां के निवासी अगरकागुण नहीं जानते थे तब उसने वहां कोयले बिकतेदेखकर उस अगर को जलाके कोयलेकरके बेचडाले और घर में आकर अपनी यह चतुरता सबसे कही इस से उसकी बड़ी हँसीहुई यह आपने अगर जलाने वालेकी कथासुनी अब तिलबोनेवालेकी कथासुनिये एकसमय किसी ग्रामीण खेतीकरनेवाले ने भुने हुए तिलखाये वह उसे बहुत स्वादिष्टमालूमहुए इससे उसने पृथ्वी से वैसेही तिल उपजनेके लिये भुने हुए तिलबोये तो उनतिलों मेंसे कुछ उत्पन्ननहींहुआ तब लोगों ने उसकी बड़ीहँसीकी यह तिलबोने वालेकी कथाहुई अब जलमें अग्निडालनेवालेकी कथासुनिये एकसमय किसी मूर्ख ने प्रातःकाल देव पूजनकेसमय शोचा कि मुझे स्नान तथा धूपआदि देने के निमित्त अग्नि और जल दोनोंका नित्य

कामपड़ताहै इससे इन दोनोंको एकसाथ रखदियाकरूं तो बहुत शीघ्रतासे मिलजायाकरेंगे यह शोच कर वहरात्रिकेसमय पानी के घड़े में अग्निडालकर सोरहा प्रातः काल जब उठकर उसनें देखा तो आग बुझगईथी और जल कोयलोंसे कालाहोगया था यह देखकर वह उदासहोगया और सबलोग उसकी मूर्खतापर हँसनेलगे यह जल में आगडालनेवालेकी कथाहुई अब नाकवढ़ानेवालेकी कथासुनिये कहीं एक वड़ाही मूर्खपुरुषरहताथा उसकी स्त्रीकी नाक बहुत चपटीथी और गुरुकी नाक बहुत ऊंचीथी एक दिन उसने अपने गुरुको सोते देखकर उनकी नाककाटली और अपनी स्त्रीकी नाककाटकर उसकी जगह गुरुकी लम्बीनाक लगानीचाही परन्तु वह नहीं लगी इसप्रकारसें उसने उन दोनों को नकटा करडाला अब आप एक वनवासी पशुपालकी कथासुनिये कि कहीं किसी वन में एक बड़ा धनवान् महामूर्ख पशुपालरहता था उसके साथ कितनेही दगाबाजों ने मित्रताकरके उससे कहा कि किसी नगर- वासी धनवान् ने अपनी कन्याका विवाह तुम्हारेसाथ करनेकहाहै यह सुनकर उसने प्रसन्नहोकर उनको थोड़ासा धनदिया कुछदिनोंके पीछे उन्हों ने उससे कहा कि तुम्हारा बिवाहहोगया यह सुनकर उसने प्रसन्नहोकर उनको बहुतसा धनदिया फिर कुछदिनों के पीछे उन्हों ने उससे कहा कि तुम्हारे पुत्रहुआ है यह सुनकर उसने अत्यन्त प्रसन्नहोके अपना सब धन उनको देदिया और दोदिनके उपरान्त हाय पुत्र कहां है यह कहकर रोनेलगा धूर्त्तों से ठगेगये पशुओं के समानजड़ उस पशुपाल के रोदनको सुनकर सबलोग हँसनेलगे ऐसे पशुपालकी आपने कथासुनी अब आभूषण पहरनेवालेकी कथासुनिये एक समय चोरों ने रात्रिकेसमय राजमन्दिर से कुछ आभूषणचुराकर कहींगाड़े थे एक मूर्खग्रामीणने पृथ्वी खोदते २ उन आभूषणोंकोपाकर अपनी स्त्री को जाकर इसप्रकारसे पहराये कि करधनी उसके शिर में बांधी, हार कमर में, बिछुए हाथों में और कानों में कंकन पहराये यह देखकर हँसतेहुए लोगों से प्रसिद्ध हुए आभूषणोंको जानके राजा ने उससे अपने आभूषणछीनलिये और उसे पशुके समान महामूर्ख जानकर छोड़दिया यह आभूषणवाले की कथा आपने सुनी अब रुईवाले की कथा सुनिये कोई मूर्ख पुरुष अपनी रुई बेचनेको बाजारमें गया वहां लोगों ने रुई बुरी और बिना साफ कहकर नहीं ली तो उस मूर्ख ने किसी सुनारको अग्नि में सुवर्ण तपाकर बेंचते हुए देखकर अपनी रुई भी साफ करने के लिये अग्नि में डालदी इससे रुई जलगई और लोग उसकी मूर्खतापर हँसनेलगे यह रुईवालेकी कथा हुई अब आप खजूर काटनेवालोंकी कथासुनिये राजा के सेवकों ने कुछ ग्रामीणों को बुलाकर खजूर के फल लाने की आज्ञादी उन लोगों ने किसी खजूर के वृक्ष में से अपने आप गिरेहुए कुछ खजूर के फल पाकर सब खजूर के वृक्ष काटडाले और उनमें से फल तोड़कर उन्हें फिर लगाना चाहा परन्तु वह नहीं लगे तब वह सम्पूर्ण खजूरलेकर राजाके पासआये राजाने खजूरोंका काटनाजानकर उन्हें बहुतसा दण्डदिया यह खजूरकाटनेवालोंकीकथा आपनेसुनी अब पृथ्वीमें गड़ेहुए धनदेखनेवालेकी कथासुनिये किसीराजाने कहीं से एक पृथ्वीको धनका देखनेवाला बुलवाया राजाके मूर्खमन्त्रीने ऐसा न होय यह भागजाय इससे उसके नेत्र निकलवालिये इससे वह पृथ्वीके लक्षणों के देखने में असमर्थ

होगया और सबलोग उसमूर्खमन्त्रीका उपहासकरनेलगे अब आप लवणखानेवालेकी कथासुनिये कि किसी ग्राममें गद्दरनाम एक महामूर्ख पुरुष रहताथा एकदिन उसके किसी नगरनिवासी मित्र ने उसे अपने यहां लेजाकर वहुतस्वादिष्ट निमकीन भोजनकरवाये भोजनके उपरान्त गद्दरने अपनेमित्रसे पूछा कि अन्नमें यह किसवस्तुका स्वादथा उसने कहा कि विशेषकरके लवणका स्वादथा यह सुनकर उसने नोनको बड़ा स्वादिष्टजानके मुट्ठीभरपिसाहुआ नोनफांकलिया इससे उसकेहोठ तथा मूछें श्वेत होगई और लोग उसे देखकर बहुतहँसे नोनखानेवालेकी कथा आपनेसुनी अब गौदुहनेवालेकी कथा सुनिये किसीग्रामीणकेपास एकगौथी वह पांचसेरदूध रोजदेतीथी एकसमय उसके यहां कुछउत्सवहोनेकोथा इससे उसने महीनेभर पहलेगौका दोहना इसलिये बन्दकरदिया कि इकट्ठाही सबदुहलूंगा जब उत्सवकादिनआया तो वह उसगौको दोहनेलगा और गौनेपैसाभरभी दूधनहींदिया इससे वह महादुःखीहुआ और लोग उसके वृत्तान्तको सुनकर बहुतहँसे यह गौदुहनेवालेकी कथा आपनेसुनी अब अन्यदोमूर्खोंकी कथासुनिये तांबेकेघड़ेके समान गंजेशिरवाला एक मूर्खमनुष्य किसी वृक्षकेनीचे बैठाथा उसेदेखकर कोई भूखातरुण पुरुष अपने पासकेकैथे उसके शिरपरमारनेलगा और वह मूर्खशिरसे रुधिरबहनेपरभी कुछ न बोला मारते २ जब सब कैथे निबटगये तब वह तरुण पुरुषव्यर्थ क्रीड़ाकरके कैथोंको भी खोकर भूखा अपनेघरगया और वह मूर्खभी यह कहकर कि स्वादिष्टकैथोंकी मार मैं कैसे न सहूं वहां से रुधिरबहाताहुआ चलागया मूर्खोंके राज्यकी पगड़ीके समान उसके शिरमें रुधिर देखकर सबलोग हँसे इसप्रकारसे हेस्वामी निर्बुद्धिलोग लोकमें उपहासको प्राप्तहोते हैं और उनका कुछ प्रयोजनसिद्ध नहीं होताहै गोमुखसे मूर्खोंकी इनकथाओंको सुनकर नरवाहनदत्तने उठकर अपना आह्निकक्रिया ५६ रात्रिकेसमय फिर उत्कंठितहुए नरवाहनदत्तकी आज्ञासे गोमुख यह अपूर्व्व बुद्धिमत्ताकी कथा कहनेलगा कि किसी वनमें एक बहुतबड़ा सेमरका वृक्षथा उसपर लघुपातीनाम कौआ रहताथा एकसमय अपने घोंसलेमें बैठेहुए उसकौएनेदेखा कि जाल तथा लाठी हाथमेंलिये कोई भयकरपुरुष वहां आकर जालफैलाके और उसपर चांवलडालकर अलगजाके छिपकरबैठा इतनेमें कबूतरोंका स्वामीचित्रग्रीव कबूतर अपने सैकड़ों कबूतरोंसमेत वहां आया और चांवलोंको देखकर लोभसे उनके खानेके लिये अपने सबसाथियों समेत जालमें फँसगया तब चित्रग्रीव ने सब कबूतरोंसे कहा कि चोंचोंसे इस जाल को पकड़कर बड़े वेगसे तुमलोग आकाशमेंउड़ो उसकी इसआज्ञासे सबकबूतर जालकोलेकर उड़चले और बहेलिया इसआशासे कि अब यह कहींगिरेंगे बहुतदूरतक उनके पीछे २ दौड़ा परन्तु जब वह दृष्टिसेभी दूरपर निकलगये तब लाचारहोकर लौटआया उसेलौटाजानकर चित्रग्रीव निर्भयहोकर अपने साथियोंसेबोला कि मेरेमित्र हिरण्यकनाम चूहेकेपासचलो वह हमको इसजालको काटकर छुटावेगा यह कहकर वहउनसबकोलेकर हिरण्यकके बिलकेपासजाके आकाशसेउतरा और बिलकेद्वारपरचिल्लाके बोला कि हे हिरण्यक बाहरनिकलो तुम्हारा मित्र चित्रग्रीव मैं आयाहूं उसके यहबचनसुनके हिरण्यकने अपने सौद्वारवाले बिलसे निकलकर उसका सब वृत्तान्त पूछके उसजालको काटदिया जालके कटजाने

परै चित्रग्रीव प्रेम पूर्व्वक उसके साथ वार्त्तालापकरके उसकी आज्ञालेकर अपने सब साथियों समेतचलागया इस सब चरित्रके देखने के लिये कबूतरों के पीछे २ आयाहुआ लघुपाती कौआ हिरण्यक को ऐसा मित्र वत्सल देखकर उसके बिलके द्वारपरजाकर बोला कि मैं लघुपाती नाम कौआ तुमको मित्र वत्सल देखकर और ऐसी २ आपत्तियों से उद्धार करनेवाला जानकर तुमसे मित्रताकरने को आयाहूं यह सुनकर उस हिरण्यकने बिलके भीतरही से कहा कि भक्ष्य और भक्षककी मित्रता कैसे होसक्ती है इससे तुमजाओ मेरी तुम्हारी मित्रतानहीं सधैगी यह सुनकर लघुपातीने कहा कि तुम्हें खाकर मुझे क्षणभर तृप्तिहोगी और तुम्हारे साथ मित्रता करनेसे सदैव प्राणों की रक्षाहोगी इससे मैं शपथ खाकर कहताहूं कि मैं तुम्हारे साथ विश्वासघात कभी न करूंगा उसके इत्यादि वचनसुनकर हिरण्यकने बिलसे बाहर निकलकर उसके साथ मित्रताकी तबसे वह दोनों बड़े प्रेम पूर्व्वक रहनेलगे कौआ तो मांसके टुकड़े लाकर और हिरण्यक चावलके कण लाकर एकसाथही बैठकर दोनों भोजन करते थे एकसमय लघुपातीने हिरण्यकसे कहा कि हे मित्र यहां से कुछदूरपर वनमें एकनदी है उसमें मन्थरक नाम कछुआ मेरा मित्ररहताहै मैं वहीं जाताहूं क्योंकि वहां मांसादिक भोजन सुखपूर्व्वक मिलतेहैं और यहां एक तो भोजन बड़ेकष्टसे मिलताहै दूसरे बहेलियोंका भय नित्य बनारहताहै लघुपातीके यहवचन सुनकर हिरण्यकने कहा कि मुझेभी वहीं लेचलो मैं तुम्हारे साथही रहूंगा क्योंकि मुझे भी यहां बड़ा खेदहै उस खेदका कारण तुमसे वहीं चलकर कहूंगा उसके यहवचन सुनके लघुपाती उसको चोंच में पकड़कर आकाशमार्गसे वनकी नदीके तटपर लेगया वहां मन्थरकनाम कछुए ने उसका बड़ाअतिथि सत्कारकिया और कुशलपूछी कुशलके प्रसंगसे लघुपाती ने उससे अपने आगमनका कारण और हिरण्यककी मित्रताकासबवृत्तान्त कहा तबमन्थरकने लघुपातीसे हिरण्यककी प्रशंसा सुनके उसकेसाथ मित्रताकरके उससे देश त्यागनेके खेदका कारण पूछा तब हिरण्यकने मन्थरक और लघुपाती इनदोनों अपने मित्रों से अपनी यहकथा कही कि नगरके निकट अपने बिलमें रहते हुए मैंने रात्रि के समय राजमन्दिरसे एक हारलाकर अपने बिलमें रक्खा उसहारको देखकर मैं बड़ाबलवान् होगया औरबहुत सा अन्न लानेलगा इससे बहुतसे मूसे मेरे पास आकर रहनेलगे उनदिनों में मेरे बिलके निकट एक कुटीमें एकसंन्यासी रहताथा वहनित्य भिक्षासे बहुतसा अन्न लाकर खाके जो कुछ बचताथा उसेप्रातःकालके भोजनके निमित्त किसीपात्रमें रखकर खूंटीमें टांगदेताथा और भोजनको रखकर जब वहरात्रि के समय सो जाताथा तब मैं नित्य जाकर उसका सब भोजन उछल २ कर लेजाताथा एकसमय उस संन्यासीका मित्र एकदूसरा संन्यासी वहांआया रात्रिकेसमय भोजनके उपरान्त वहअपने मित्रके साथ वार्त्तालाप करनेलगा उससमय मुझे अन्न लिये जाते देखकर वह संन्यासी बीच २ में एकबांसके टुकड़े से उसपात्रको खटखटाता जाताथा उसे बांस खटखटाते देखकर दूसरे संन्यासीने उससे पूछा कि तुम मेरी बातको बे सुनी कर २ के यहक्या करतेहो तब उसने कहा कि यहां एकमूसा मेरा शत्रुहोगयाहै वहबहुत ऊंचे स्थानमें भी टँगेहुए अन्नको उछल २ कर लेजाताहै उसीको मैं यहबांस खटखटाकर डराताहूं उसके

यहवचन सुनकर उसदूसरे संन्यासीने उससे कहा कि लोभ जीवोंका महादोषहै इसविषयपर मैं तुमको एककथा सुनाताहूं एकसमय मैं तीर्थाटन करते २ एकनगर मे जाकर एकब्राह्मण के यहां टिका मेरे आगेही उसब्राह्मणने अपनी स्त्रीसे कहा कि आज पर्वका दिनहै ब्राह्मणोंको खिलाने के लिये कृसरा बनाओ यहसुनकर उसने कहा कि तुम निर्धनहो तुम्हारे यहां कृसरा कहां से आई तब उसब्राह्मण ने कहा कि हे प्रिये यद्यपि गृहस्थको संचयकरना उचितहै तथापि अति संचय नहीं करनाचाहिये इसविषयपर मैं तुमको एककथा सुनाताहूं १००, किसी वन में कोई बहेलिया बहुतसे जीवोंको मारकर उनके मांसको लेके किसी शूकरके पीछे धनुप चढाकर दौड़ा व बाणके लगनेसे उसशूकरने घूमकर उसके अंडकोशोंमें ऐसी डाढ़मारी जिससे वहमरगया और वह शूकरभी बाणकी पीड़ासे मृत्युको प्राप्तहुआ दूसरे उनदोनोंकी यहदशा देखके कोई शृगाल वहांआया और शूकर व्याध तथा मांसको संचयकरनेके लिये छोड़कर धनुपकी तांत चवानेलगा इससे वहधनुप टूटकर उसके पेट में ऐसालगा जिससे उसके प्राण निकलगये इससे बहुत संचय नहीं करनाचाहिये ब्राह्मणके यहवचन सुनकर उसकी ब्राह्मणीने सुखाने के लिये धूप में तिल फैलाये और फैलाकर जैसेही वहघरके भीतरगई वैसेही एक कुत्ता उनतिलों को जुठारगया तब वह तिल किसी काम के न रहे इससे लोभ केवल क्लेशाहीका कारण होताहै यह कहकर उस दूसरे संन्यासी ने उससे कहा कि तुम्हारे पास कुदाली होय तो दो मैं युक्तिपूर्वक इस उपद्रवको दूरकरदूंगा यह सुनकर उसने उसे कुदाली लादी उस कुदाली से उसदूसरे संन्यासी ने मेरा बिल खोदकर वह हारतथा अन्य मेरी इकट्ठी की हुई सबवस्तु निकाललीं और अपने मित्र संन्यासीसे कहा कि इसीहारके तेजसे इसमूसे में इतनाबलथा यह कहके उसने वहहार अपने गलेमें पहनके और मेरा सबधन लेके निस्सन्देहहोकर अपने मित्रकेसाथ सोरहा उनदोनोंके सोजानेपर मैं फिर उसके अन्न के लेनेको उसके यहांगया तब उस संन्यासीने जगकर मेरे शिरमें लाठीमारी उससे मैं घायल होकर अपने बिलमें चलाआया और फिर मुझे यह शक्तिनहुई कि मैं दूसरी बार अन्नलेनेको जाऊं (अर्थोहि यौवनंपुंसां तदभावश्चवार्द्धकं तेनास्यौजोबलंरूप मुत्साहश्चापिहीयते), धनही मनुष्यो का यौवनहै और धनका अभावही वृद्धावस्था है क्योंकि धनकेबिना ओज बल रूप तथा उत्साह यहसब नष्टहोजाते हैं, इसके उपरान्त अपने पेटभरनेमे भी मुझे असमर्थ देखकर सबमूसे मुझे छोड़कर चलेगये ठीकहै (अवृत्तिकंप्रभुंभृत्या अपुष्पंभ्रमरास्तरुम्। अजलंचसरोहंसा मुंचन्त्यपिचिरोपितम्) जीविका रहित बहुत प्राचीन स्वामीको भी सेवक पुष्परहित वृक्षको भ्रमर और जल रहित तड़ागको हंस त्यागदेते हैं इसप्रकारसे मैं वहां दुखितहोकर इसलघुपाती को मित्रपाके तुम्हारेपास आयाहूं हिरण्यक के यहवचन सुनकर मन्थरकने उससेकहा कि हे मित्र यह तुम्हाराही स्थान है यहांरहो और धैर्य्यकरो (गुणिनोनविदेशोस्तिनसंतुष्टस्यचासुखं धीरस्यचविपन्नास्तिनासाध्यंव्यवसायिनः) गुणवान् के लिये कोई विदेशनहीं है सन्तोषीको कोई दुःखनहीं है धीरको कोई विपत्तिनहीं है और व्यवसाई को कुछ असाध्यनहीं है उसके इसप्रकार कहतेही व्याधों के भयसे भागाहुआ चित्राङ्गदनाम एक मृग वहां आया उनसबने उसे

देखकर और उसकेपीछे व्याधकोआया न देखकर उसे सावधानकरके उसकेसाथ मित्रताकरली तबसे वहचारों परस्पर उपकार करतेहुए सुखपूर्वक वहांरहनेलगे एकदिन चित्राङ्गदकोआया न देखकर लघुपातीने वृक्षपर चढ़के देखा कि नदीकेतटपर चित्राङ्गदजालमें फँसाहुआहै यह देखकर उसने हिरण्यक तथा मन्थरकसेकहा कि चित्राङ्गदजालमें फँसाहुआ है तब आपसमें सलाहकरके लघुपाती हिरण्यक को चोंचमें दबाकर चित्राङ्गदकेपासलेगया हिरण्यकने शीघ्रही उसका जालकाटदिया और नदीकेद्वारा मंथरकभी उसकेपास आया इतनेहीमें वह बहेलिया जिसनें कि जाललगायाथा वहांआया उसे देखकर चित्राङ्गद हिरण्यक तथा लघुपाती यहतीनों तो भागगये और मंथरक न भागसका इससे उस बहेलिये नें मंथरकको पकड़कर जालमें बांधलिया मंथरकको फँसा देखकर आपसमें सलाहकरके उसी बहेलियेके मार्गमें चित्राङ्गद मरेकेसमान लेटगया और लघुपाती उसपर बैठकर चोंचसे उसकेनेत्र कुरेदनेलगा यह देखकर वहबहेलिया जैसेही कछुएको नदीके तटपर रखकर मृगको लेनेकेलियेगया वैसेही हिरण्यकने उस मन्थरकके जालको काटदिया इससे वहनदीमें चलागया और उसबहेलियेको निकटआयादेखकर चित्राङ्गदभी उठकर भागगया उसे भगा देखकर वह बहेलिया लौट आया और कछुएको भी वहां न पाकर तथा जालको कटा हुआ देखकर भाग्यकी निन्दा करताहुआ अपनें घरको चलागया तब वह चारों मित्र बहुत प्रसन्न होकर एकत्रित हुए और चित्राङ्गदने अपने तीनों मित्रोंसे कहा कि मैं बड़ा पुण्यवान् हूं जिसे ऐसे मित्र प्राप्तहुए कि जिन्होंने अपने प्राणोंकी भी उपेक्षा करके मुझे बचाया इसप्रकार प्रशंसाकरतेहुए उसमृग के साथ वह तीनों परस्पर स्नेह करतेहुए सुखपूर्वक रहे इसप्रकार से पशु पक्षी भी बुद्धिके बलसे अपने मनोरथों को सिद्धकरते हैं और अपने प्राणोंकी भी उपेक्षाकरके आपत्तिकाल में अपने मित्रोंकी रक्षा करते हैं इससे मित्रों में आसक्त होना अच्छाहै परन्तु ईर्ष्याकी मूल स्त्रियोंमें आसक्त होना अच्छा नहीं है इस विषयपर भी मैं आपको एक कथा सुनाताहूं १४१ किसी नगरमें कोई बड़ा ईर्ष्यावान् पुरुष रहताथा उसकी स्त्री बड़ी रूपवतीथी वह अविश्वास करके उसे कभी अकेली नहीं छोड़ताथा एकसमय किसी आवश्यक कार्य्यके निमित्त वह अपनी स्त्रीको साथ लेकर परदेशको चला मार्ग में कुछ दूर चलकर आगे भील लोगोंका गांव जानकर उनके भयसे किसी ग्रामीण वृद्ध ब्राह्मणके यहां वह अपनी स्त्रीको छोड़कर चलागया उसके चले जानेपर वह स्त्री उस ब्राह्मणके यहां रहकर एकदिन आयेहुए बहुतसे भिल्लोंमें से किसी तरुणभिल्ल से स्नेह करके उसके साथ उसके ग्राममें जाकर उसीसे यथेच्छभोगकरनेलगी कुछदिनोंके उपरान्त उसईर्ष्यावान् पुरुषने लौटकर उस वृद्धब्राह्मण से अपनीस्त्री मांगी तब उस ब्राह्मणने कहा कि मैं नहीं जानताहूं वहकहांगई हां इतना मैं कहसक्ताहूं कि यहां बहुतसे भील आयेथे उन्हींके साथ वह चलीगई होगी उन भीलोंका गांव यहांसे निकटही है इससे तुम वहीं जाओ वहां उसका पता लगेगा उसके यह वचन सुनकर वह रोताहुआ भीलोंके गांवमेंगया और वहां ढूंढ़के अपनी स्त्रीके पासगया वह भी उसे देखकर भयभीत होकर बोली कि हेस्वामी मेरा कोई अपराध नहीं है मुझे एक भील जबरदस्ती यहां पकड़लायाहै यहसुनकर उसने कहा कि अच्छा जो हुआ सो

हुआ अब शीघ्रतासे मेरे साथ भागचलो ऐसा न होय कि फिर कोई भील तुमको देखकर पकड़ले उस के यह वचन सुनकर वह बोली कि शिकार खेलकर उस भीलके आनेका यह समयहै वह आजायगा तो तुमको अवश्य मारडालेगा इससे इसगुफामें जाकर तुम छिपरहो रात्रिके समय जब वह भील सो-जाय तब उसे मारकर मुझे लेकर निर्भय चलेचलना उस कुलटाके यह वचन सुनकर वह मूर्ख उस की बताईहुई गुफामें चलागया ठीक है (कोवकाशोविवेकस्य हृदिकामांधचेतसः) कामान्ध पुरुषों के चित्त में विवेकका अवकाश नहीं होताहै तदनन्तर सायंकाल के समय आयेहुए भीलको उस कुलटा ने अपना पति दिखलादिया तब उस भीलने उसे गुफामें से निकाल के प्रातःकाल देवीजी के बलिदान के लिये एक वृक्षमें कसकर बाँधदिया और भोजन करके उसीके आगे उसकी स्त्री के साथ भोग करके शयन किया उसे सोया देखकर उस पुरुष ने बहुत व्याकुल होकर भगवती की बड़ी स्तुतिकी इससे भगवतीने प्रसन्न होकर उसे ऐसा वरदान दिया कि जिससे बन्धनों के शिथिल होजानेपर उसने उस भीलकेही खड्गसे उसका शिरकाटके अपनी स्त्री से जगाकर कहा कि चलो मैंने इसपापीको मारडाला उसके यह वचनसुनकर वह कुलटा अत्यन्त दुखित होके उसभील के शिरको छुपाके अपने साथ में लेकर उसके साथ चली और प्रातःकाल नगरमे पहुंचकर वह शिरदिखाकर तथा यहकहके कि इसने मेरे पतिको मारडाला है चिल्ला २ कर रोनेलगी उसको इसप्रकार रोतेदेखके पुरके रक्षक उनदोनों को पकड़कर राजाके पासलेगये राजाने उनदोनों से सब वृत्तान्त पूछकर और अपनी बुद्धिके बलसे तत्त्व को जानकर उस कुलटा स्त्री के नाक कानकटवालिये और उस मूर्खको छोड़दिया तब वह उसदुष्टस्त्री के स्नेहसे रहितहोकर अपने घरकोचलागया इसप्रकारसे हे स्वामी ईर्ष्यासे रोकीगई स्त्री ऐसेही कुकर्मकरती है (शिक्षयत्यन्यपुरुषां संगमीर्ष्यैवहिस्त्रियः। तदीर्ष्यामप्रकाश्यैव रक्ष्यानारीसुबुद्धिना) ईर्ष्याही स्त्रियों को अन्य पुरुषोंसे संगकरना सिखाती है इससे ईर्ष्याको न प्रकटकरके बुद्धिमान्पुरुषको चाहिये कि स्त्री की रक्षाकरे और कल्याणचाहनेवाला पुरुष स्त्रियों से गुप्तवार्त्ता कभी न कहै इस विषयपर मैं आप को एक कथासुनाताहूं कोई सर्प गरुड़जी के भयसे भागकर मनुष्यकारूपधरके किसी वेश्याकेयहांआकर रहाथा और अपने प्रभावसे पांचसौ हाथी रोज उसको दियाकरताथा एकदिन उस वेश्याने उससे बहुत हठकरके पूछा कि आप कौनहैं और इतने हाथी आपकेपास कहांसेआते है उसने उसकी बड़ी हठदेखकर काम से मोहितहोकर कहा कि किसी से कहना मत मैं सर्पहूं गरुड़जी के भयसे मै इसप्रकारका होकर तुम्हारेयहां छिपकर रहताहूं उससे यह बातसुनकर उस वेश्या ने अपनी कुटनी से एकान्त में कहदीनी इसबीचमें गरुड़जी भी पुरुषकारूप धारणकरके सब स्थानों में ढूंढतेहुए वहांआये और उस कुटनी से बोले कि आज मैं इस वेश्या के यहां रहनाचाहताहूं एकदिनका जो तुम्हारा मोल होताहोय सो मुझसे लेलो यह सुनकर उसने कहा कि एकसर्प पांचसौ हाथी रोजदेताहै तुमको एकदिन रखकर यह क्या करेगी उसके इन वचनों से गरुड़जी ने उससर्पको वहां रहता जानकर अतिथिका स्वरूपधारणकरके उस वेश्याके मंदिरमें जाकर सर्पको देखा और उसे मारकर खाडाला इससे बुद्धिमान् लोग स्त्रियोंसे अपनी

गुप्त बात नहीं कहते हैं यह कहकर गोमुख एक मूर्ख पुरुषकी कथा कहनेलगा कि किसी नगरमें तांबेके घटके समान कोई गंजे शिरवाला महा धनवान् मूर्ख पुरुष रहताथा उसे बालों के विना बड़ी लज्जा रहतीथी एकदिन किसी धूर्त्तने उससे आकरकहा कि एक वैद्यहै उसके पास बालोंके उत्पन्न करने की औषधहै यह सुनकर उसने कहा कि जो तुम उसको लाओ तो मैं तुमको और उसवैद्यको दोनोंको बहुत सी धनदूंगा यह कहकर उसने उसे थोड़ासा धनदिया तब वह धूर्त्त किसी धूर्त्तही वैद्यको उसकेपासले आया उस वैद्यने उससे बहुत कालतक अत्यन्त धनलिया और एकदिन अपना शिर खोलकर युक्ति पूर्व्वक उसे दिखादिया उसे देखकर भी उस मूर्खने जब उससे अपने बालोंके लिये औषधमांगी तो उस वैद्यने उससे कहा कि मैं तो आपही गंजाहूं मैं दूसरे के शिरमें कैसे बाल उत्पन्न करूं इसीसे मैंने अपना शिर खोलकर तुम्हे दिखलादिया था इतने परभी तुम नहीं समझेहो यह कहकर वह वैद्य चलागया इसप्रकार से धूर्त्तलोग जड़बुद्धियोंसे धनलिया करते हैं यह बालोंके मूर्खकी कथा तो आपने सुनी अब तेलके मूर्खकी भी कथा आपसुनिये किसी धनवान् के यहां एक मूर्ख सेवक था एकसमय उस सेवक को उस धनवान्ने तेललेने के लिये बाजारमें भेजा वह किसी वणियेके यहां से तेल लेकर लौटा आता था मार्गमें किसी पुरुषने उससे कहा कि देखो यह तेलका पात्र नीचेसे टपकताहै इसे बचाओ यह सुनकर उसने उस पात्रकेनीचे के तलेको देखने के लिये उसे उलटकर देखा इसे वह सब तेल गिरपड़ा और सबलोग हँसनेलगे और उसके स्वामीने उसका यह वृत्तान्त सुनकर अपने घरसे उसे निकाल दिया इससे मूर्खका अपनी ही बुद्धिसे कामकरना अच्छा है उपदेश से उलटा फलहोता है यह तेलके मूर्खकी कथाहुई अब अस्थिके मूर्खकी कथा सुनिये किसी मूर्ख पुरुषकी पुंश्चली स्त्री थी एक समय उस मूर्खके परदेश चलेजानेपर वह स्त्री अपनी दासीको शिक्षादेकर आनन्दभोगने के लिये किसी जार पुरुषके यहां चलीगई जब वह मूर्खपुरुष परदेशसे लौटकर अपने घरआया तो उस दासीने गद्गद वचन करके आंसूभरके उससे कहा कि तुम्हारी स्त्री मरगई और उसे मैंने जलादिया यह कहकर उसने उसेश्मशानमें ले जाके किसी चितामें पड़ीहुई हड्डियां दिखादीं उन्हें देखकर वह बहुत रोकर तिलांजलिदेके और उन हड्डियोंको तीर्थमें फेंकके महीने २ पीछे अपनी स्त्रीका श्राद्ध करनेलगा उस दासीने जिस ब्राह्मणके यहां उसकी स्त्री निकलकररही थी उसी ब्राह्मणको उस स्त्री समेत श्राद्धमें भोजनके लिये बुलालाकर उस मूर्खसे कहा कि देखो तुम्हारी स्त्री सतीधर्म्मके प्रभावसे सदेह आकर इस ब्राह्मण के साथ भोजन करतीहै उसमूर्खने उसके वहवचन सत्यही मानलिये और वह पुंश्चली महीने २ आकर अपनेही यहां उत्तम भोजनकरती रही इसप्रकारसे दुष्टस्त्रियां मूर्खोंको ठगाकरती हैं यह अस्थिके मूर्खकी कथा आपने सुनी अब चाण्डालकी कन्याकी कथा सुनिये २०३ किसी चाण्डालकी अत्यन्त रूपवती कन्याने सबसे श्रेष्ठ पुरुषकेसाथ अपने विवाह करने का निश्चयकिया एकसमय वह नगरके भ्रमणकरने के लिये निकलेहुए राजाको देखकर और उसे सबसे श्रेष्ठ जानकर उसीकेसाथ विवाह करनेके निमित्त उसके पीछे २ चली मार्गमें मिलेहुए किसी मुनिको राजाने हाथीपर से उतरकर प्रणामकिया यह

देखकर वहकन्या राजासे भी मुनिको श्रेष्ठ समझकर उनके पीछे २ चली मुनिने वहांसे चलकर मार्गमे मिलेहुए किसी शिवालयमें पृथ्वीपर गिरकर श्रीशिवजी को प्रणामकिया यह देखकर वह मुनिसे भी श्रेष्ठ श्रीशिवजीको जानकर मुनिकोछोड़कर श्रीशिवजीको अपना पति बनानेकेलिये वहींरही क्षणभर में एककुत्ता वहां आया और जलहरीपर चढ़के जंघा उठाके अपनीजातिके अनुसार काम करनेलगा यह देखकर वह उसकुत्तेको शिवजीसे अधिकजानकर उसीको अपना पति बनानेकेलिये उसके पीछे२ चली वह कुत्ता अपने स्वामीचाण्डालकेयहां जाकर उसके पैरोंपर लोटनेलगा यह देखकर उसचाण्डाल कन्याने कुत्तेसे उसचाण्डालको अधिकजानके उसीकेसाथ अपना विवाह करलिया इसप्रकार से मूर्ख लोग बहुत ऊंचे बढकरभी अपनेहीस्थानमें आगिरतेहैं यह चाण्डाल कन्याकी कथाहुई अब आप एक मूर्ख राजाकी कथा सुनिये किसीनगरमें एकबड़ा धनवान् राजा अत्यन्त मूर्ख तथा कृपणथा एकदिन उसके हितचाहनेवाले मंत्रियों ने उससेकहा कि हे स्वामी दानसे परलोकमें दुर्दशा नहींहोती है इससे आपभी दानकियाकरिये क्योंकि यह जीव तथा धन क्षणभंगुरहै यह सुनकर उसनेकहा कि मैं तभी दानदूंगा जबकि मैं मरकर अपने को दुर्दशामें पड़ा देखूंगा यहसुनकर वह मंत्री अपनेहृदयमें हँसकर चुपहोरहे इसप्रकार से मूर्खलोग धनको नहीं छोड़तेहैं चाहै धनही उनको छोड़जाय यह मूर्ख राजाकी कथा आपने सुनी अब दो मित्रोंकी कथा सुनिये कान्यकुब्ज देशमें चन्द्रापीड़नाम राजाके एकधवल मुखनाम सेवकथा वह सदैव बाहरही भोजनकरके अपने घरमेंजाताथा एकदिन उसकीस्त्रीने उससे पूछा कि तुम नित्यकहांसे भोजनकरआते हो यह सुनकर उसनेकहा कि हेसुन्दरि मैं अपने मित्रके यहां से भोजनकर आताहूं इससंसारमें मेरे दोमित्रहैं एक कल्याणवर्मा नाम वैश्य वह भोजनादिकसे मेरा उपकार करताहै और दूसरा वीरबाहु अपनेप्राणोंसे भी मेरा उपकार करनेवालाहै यह सुनकर उसकीस्त्रीने उससेकहा कि तुम अपने दोनों मित्रोंको मुझेभी दिखाओ उसके कहनेसे वह अपनी स्त्रीकोसाथ लेकर पहले अपनेमित्र कल्याणवर्माके यहांगया उसने उसका बड़ा सत्कारकिया और बड़े उत्तम भोजनकराके बहुमूल्य वस्त्र तथा आभूषण पहराये इसप्रकार वह दिन उसके घरमें व्यतीतकरके धवलमुख दूसरे दिन अपनीस्त्रीसमेत अपनेदूसरे मित्र वीरबाहुके यहांगया वह उससमय जुआखेलरहाथा उसने जुआखेलतेही खेलते उससे क्षेम पूछकर उसको विदाकरदिया तबउसकीस्त्री ने उस अपनेधवलमुख पतिसे पूछा कि हेआर्य पुत्र कल्याणवर्माने आपका बड़ासत्कारकिया और वीरबाहुने केवल आपकीक्षेमपूछकर स्वागतहीकिया तो आप इनदोनोंमें से वीरबाहुको क्यों श्रेष्ठ समझतेहो यह सुनकर उसनेकहा कि तुम मेरेदोनों मित्रों से जाकरकहो कि अकस्मात् राजा मेरे ऊपर कुपितहुआ है इससे तुमको इनदोनों का भेद मालूमहो-जायगा यह सुनकर उसने प्रथम कल्याणवर्मा से जाकरकहा कि आर्यपुत्रपर राजा अकस्मात् कुपित हुआहै यह सुनकर वह बोला कि मैं तो वैश्यहूं बताओ मैं राजाका क्याकरसक्ताहूं उसके यहवचन सु-नकर उसने वीरबाहुसेभी यहीबात जाकरकही वह इसबातको सुनतेही ढाल तलवार लेकर दौड़ताहुआ धवलमुखकेपास आया उसे देखकर धवलमुखने उससे कहा कि मंत्रियों ने राजाको शान्तकरदिया है

अब आप जाइये यह सुनकर वीरबाहु के चलेजानेपर उसने अपनी स्त्रीसे कहा कि हे प्रिये तुमने इन दोनों का अन्तर देखलिया उसके यह वचन सुनकर वह स्त्री अत्यन्त प्रसन्नहुई इसप्रकार दिखावे के मित्र और होतेहैं और यथार्थ मित्र अन्यहोते हैं (तुल्येपिस्निग्धतायोगेतैलंतैलंघृतंघृतं) चिकनाई में समान होनेपर भी तेल तेलही है घी घीही है २३५ इस कथाको कहकर गोमुखने फिर कहा कि किसी मूर्ख पथिकने बहुत दूर चलके प्यासाहोकर नदीके किनारे पहुंचकर भी जलनहीं पिया वहांपर खड़ेहुए किसी अन्यपुरुषने उससेकहा कि तुम प्यासेहोकर भी जल क्यों नहीं पीतेहो उसनेकहा कि इतना जल मैं कैसे पियूं यह सुनके वह हँसकर बोला कि जो तुम सब जलनहीं पियोगे तो क्या राजा तुमको दंड देगा उसके इसप्रकार हँसकर कहनेपर भी उसने जलनहीं पिया इसप्रकारसे मूर्खलोग जो काम सबनहीं करसक्ते हैं यथा शक्ति उसका एक अंशभी नहीं करते हैं जलसे डरनेवाले की यहकथा आपने सुनी अब पुत्र घातीकी कथा सुनिये किसी दरिद्री मूर्ख पुरुषके बहुत से पुत्रथे एकसमय उसने एकपुत्रके मरजाने पर दूसरेको भी इसलिये आपही मारडाला कि मेरा एकपुत्र बहुत दूर मार्गमें अकेला कैसे जायगा तब सब लोगोंने उसकी मूर्खतापर हँसके उसको अपने देशसे निकालदिया इसप्रकार मूर्ख लोग पशुओं के समान निर्विवेक होते हैं यहपुत्र घातीकी कथा आपने सुनी अब दूसरे एक बड़ेमूर्खकी कथा सुनिये लोगोंकेसाथ वार्त्तालाप करतेहुए किसी मूर्खने एक सुन्दर पुरुषको देखकर कहा कि यहमेरा भाई लगता है इससे मैं इसका धनलेलेताहूं और मैं इसका कोई नहीं हूं इससे इसका कर्जा मुझे नहीं देना पड़ेगा उसके यहवचन सुनके वहसब लोग हँसदिये इसप्रकारसे स्वार्थान्ध मूर्खोंकी अत्यन्त विचित्रकथा होती है यह मूर्खकी कथाहुई अब ब्रह्मचारी के पुत्रकी कथा सुनिये किसी मूर्खने अपने मित्रोंकेसाथ वार्त्तालाप करने में अपने पिताकी प्रशंसा करते२ कहा कि मेरा पिता बाल्यावस्थासेही बड़ा ब्रह्मचारीहै उस के समान कोई नहीं है यह सुनकर उसके मित्रोंनेकहा तो तुम्हारा जन्म कैसेहुआ तब उसनेकहा कि मैं उसका मानसपुत्रहूं यह सुनकर वहसब लोग बहुत हँसे इसप्रकारसे मूर्खलोग असंबद्ध महा मिथ्या बातें कहा करते हैं यह ब्रह्मचारीके पुत्रकी कथा आपने सुनी अब एक ज्योतिषीकी कथा सुनिये कोई मूर्ख ज्योतिषी अपने देशमें जीविकासे रहित होकर अपनी स्त्री और पुत्र समेत परदेशको गया और वहां अपना मिथ्याज्ञान प्रकट करनेके लिये लोगोंके आगे अपने बालकको हृदयसे लगाकर रोनेलगा उसे रोते देखकर लोगोंने पूछा कि तुम क्यो रोतेहो उसनेकहा कि मैं भूत भविष्य और वर्त्तमान तीनोंकाल की बातें जानताहूं इससे मुझे मालूमहुआहै कि आज के सातवेंदिन यह बालक मरजायगा यह कहकर उसने उसदिनके सातवें दिन अपने बालकको मारडाला उस बालकको मरादेखकर लोगोंने विश्वास युक्तहोके उसको बहुतसा धनदिया और वह उसधनकोलेकर अपने घरको आया इसप्रकारसे मूर्खलोग धनकेलिये अपने पुत्रतकको मारडालते हे परन्तु बुद्धिमान्लोग उनपर प्रसन्न नहीं होतेहैं यह ज्योतिषी की कथाहुई अब आप एक क्रोधी पुरुषकी कथा सुनिये किसी ग्राममें कोई पुरुष किसी मकानके बाहर खड़ा हुआ था और उसस्थानके भीतर कोई अन्यपुरुष अपने मित्रों से उसकी प्रशंसाकररहाथा उन

मित्रोंमेंसे एकनेकहा कि हे मित्र आपका कहना बहुतठीकहै परन्तु उसमें दो दोषहैं एकसाहस और दूसरा क्रोध, यह सबबातें उसने बाहरहीसे सुनकर भीतरजाकर जिसने उसेक्रोधी और साहसी कहाथा उसके गलेमें कपड़ालपेटकर कहा कि अरेमूर्ख मैंने क्या साहस तथा क्रोधकियाहै सोबताओ यह सुनकर सबलोग उससे हँसकरबोले कि इसकेही कहने से क्याहै तुमने तो आपही अपना क्रोध और साहस प्रकट करदिया इसप्रकारसे अपने प्रकटदोषकोभी मूर्खलोग नहीं जानतेहैं यह क्रोधीमूर्खकी कथाहुई अब कन्या वढ़ानेवाले मूर्खराजाकी कथासुनिये किसीराजाके एकबड़ीस्वरूपवती कन्याउत्पन्नहुई उसने उसको बड़ासुन्दर रूपदेखकर वैद्योंको बुलाकरकहा कि कोई ऐसीऔषधदो जिससे मेरीकन्या बहुतजल्द बढ़जाय कि मैं किसीयोग्यवरकेसाथ इसका विवाहकरदूं यहसुनकर वैद्योंने उससेकहा कि हे महाराज औषध तो है परन्तु किसीदूरदेशमें है और उसका यहविधानहै कि जबतक वह औषध न आवे तबतक आप अपनी कन्याको अलक्षित करके रखिये उनके यहवचन सुनके उसराजाने अपनीकन्या उन्हेंसौंपदी कि आपही इसको अलक्षित करके रखिये राजाकी आज्ञापाके वह उसकन्याको अपनेघरलेगये और कईवर्षके उपरान्त जब वहतरुणहुई तो राजाके पासलेआये और बोले कि हेमहाराज औषधके प्रभावसे यह कन्या तरुण होगई उसकन्याको युवती देखकर राजाने उनको बहुतसाधनदिया इसप्रकारसे धूर्त्तलोग मूर्खोंकाधनहरते हैं यह कन्यावढ़ानेवाले राजाकी कथाहुई अबधेलेके पैदाकरनेवाले मूर्खकी कथासुनिये किसी नगरमें निवासी धनवान्के यहां एकग्रामीण सेवकथा वह सालभर नौकरीकरके किसी कारणसे नौकरीछोड़के अपनेघरको चलागया उसके चलेजानेपर उस धनवान्ने अपनीस्त्रीसे पूंछा कि हे प्रिये वह तुमसे कुछलेतो नहीं गयाहै उसने कहा हाँ धेलालेगयाहै यहसुनके वह दशपैसे खर्चकरके सेवकके घरपरजाकर अपना धेलालेआया उसकी इसचतुरता से सबलोग बहुतहँसे इसप्रकार से मूर्खलोग थोड़े के निमित्त बहुतसा व्ययकरते हैं यह धेला लानेवालेकी कथाहुई अब पहचानरखनेवाले मूर्खकी कथासुनिये कि जहाजपर चढ़कर समुद्रमें जातेहुए किसीमूर्खका चाँदीकापात्र समुद्रमेंगिरपड़ा उसमूर्खने वहां भँवर आदिकीपहँचान देखली और विचारलिया कि जहाँ ऐसे भँवर पड़तेहोंगे वहाँ से अपना पात्रनिकाललूंगा यह शोचकर उसने समुद्रके पारजाके किसी नदी मे भँवर पड़ते देखकर कटोरा मिलने के लिये उसमें गोतामारा लोगोंने पूछा कि तुम क्यों गोतालगारहे हो तब उसने अपना सब अभिप्राय कहदिया इससे उसका बड़ा उपहासहुआ यह पहचाननेवाले मूर्खकी कथाहुई अब आपबदले में मांसदेनेवाले मूर्खकी कथासुनिये किसी मूर्खराजाने अपने महलपरसे दो पुरुषोंको देखा और उनपर प्रसन्नहोके उन्हें बुलाकर अपने यहां नौकर करलिया उनमें से एकने रसोईमे से थोड़ासा मांसचुराया इससे राजाने पावभर मांस उसके शरीर मेंसे कटवालिया और जब मांसके कटनेसे वह पृथ्वीपर गिरकर तड़फनेलगा तब अपने प्रतीहारसे कहा कि पावभरसे अधिक मांस इसे दिलवादो इसे बड़ी व्यथाहोरही है यह सुनकर प्रतीहारने अपने चित्तमे हँसकर कहा कि क्या शिरकाटने से मराहुआ मनुष्य सौ शिरके देने से भी जीसक्ताहै और राजासे बहुत अच्छा कहके उसे वैद्योंके यहां लेजाके औषध लगवाके स्वस्थ करवा

दिया इसप्रकारसे मूर्खस्वामी न दण्डदेना जानते हैं और न कृपा करना जानतेहैं यह मूर्खराजाकी कथाहुई अब द्वितीय पुत्र चाहनेवाली मूर्खस्त्री की कथासुनिये किसी स्त्रीके एकही पुत्रथा उसने द्वितीय पुत्रकी अभिलाषा से किसी छलिन तपस्विनी से कहा कि पुत्रहोनेका कोई उपाय मुझे बताओ उसने कहा कि यह जो तुम्हारा बालक पुत्रहै इसे देवताके आगेमारकर जो बलिचढ़ाओ तो अवश्य तुम्हारे पुत्रहोगा उससे यह वचनसुनकर जब वह ऐसाही करनेको उद्यतहुई तो उसकी हितचाहने वाली किसी वृद्धस्त्री ने उससे कहा कि हे मूर्खनी तू अपने विद्यमान पुत्रकोमारकर अन्य पुत्र पाना चाहतीहै जो इसके मारनेपर भी तेरे पुत्र न हुआ तो क्या करेगी इसप्रकार उसके निषेध करने से वह उस मूर्खतासे निवृत्तहुई इसीप्रकार बहुधा दुष्टस्त्रियोंकी संगतिसे मूर्खस्त्रियां बिना बिचारे कार्य्य करने लगती हैं परन्तु साध्वी वृद्धास्त्रियां उन्हें निवारण करती हैं यह मूर्ख स्त्री की कथाहुई अब आंवलेलाने वालेकी कथा सुनिये किसी गृहस्थने अपने मूर्खसेवकको यह आज्ञादी कि बागमें जाकर मीठे २ आमले तोड़लाओ उसने बागमें जाकर आमले चख २ कर तोड़े और सब जूंठे आमलेलाकर अपने स्वामीसे कहा कि देखिये मैं आपके लिये चख २ कर आमलेलायाहूं यह सुनकर स्वामीने जूंठे आमले देखकर उसे क्रोधकरके अपने घरसे निकालदिया इसप्रकारसे मूर्खलोग स्वामीके कार्य्यको नष्टकरके अपनेको भी नष्ट करतेहैं अब आप इन कथाओंके बीचमें दो भाइयोंकी कथाको सुनिये २६६ पाटलिपुत्र नगर में यज्ञसोम और कीर्त्तिसोमनाम दो सगेभाई ब्राह्मण रहते थे इन दोनों के पास पिताका सञ्चयकिया हुआ बहुतसाधनथा कीर्त्तिसोम ने व्यवहार करके अपना भाग बहुत बढ़ाया परन्तु यज्ञसोमने भोगमें तथा दानमें अपना सब धनखर्च करडाला और निर्धनहोकर अपनी स्त्री से कहा कि हे प्रिये मैं यहां धनवान् होकररहाहूं अब निर्द्धन होकर मुझसे यहां नहीं रहाजाता इससे परदेश चलना चाहिये यह सुनकर उसने कहा कि मार्गके खर्चबिना कहां चलोगे इतने कहनेपर भी जब उसने बहुत हठकिया तब वह बोली कि जो अवश्य चलनाही है तो अपने छोटेभाई कीर्त्तिसोमसे कुछ धनमांगलाओ उसके यह वचनसुनके वह कीर्त्तिसोमके पासगया और बोला कि हे भाई मैं परदेश जानाचाहताहूं मुझे मार्ग के व्ययके निमित्त कुछधन दो यह सुनकर कीर्त्तिसोमकी स्त्रीने अपने पतिसे यह कहा कि इसने अपना सबधन तो खर्चकरडाला अब तुमसे मांगनेआयाहै तुम इसे कहांतकदोगे और जो तुम इसेदोगे तो जो कोई दरिद्रीहोगा वही तुमसे मांगनेआया करेगा उसके यहवचनसुनकर कीर्त्तिसोमने यज्ञसोम को कुछ भी नहीं दिया तब यज्ञसोम वहां से आके अपनी स्त्री से सब वृत्तान्त कहके उसको साथलेकर परदेश को चला मार्गमें चलते२ किसी वनमें उसको किसी अजगरने निगल लिया यह देखकर उसकी स्त्री पृथ्वी में गिरकर रोदन करनेलगी तब उस अजगरने मनुष्य भाषामें उससे कहा कि तुम क्यों रोतीहो उस ब्राह्मणीने कहा कि कैसे न रोऊं यहां विदेशमें तुमने मेरा भिक्षाकापात्र हरलिया यह सुनकर अजगरने अपने मुखसे एक सुवर्णका पात्रनिकालकर उसको देदिया और कहा कि यह भिक्षाका पात्र लो उस पात्रको लेकर उस ब्राह्मणीने फिर कहा कि हे महाभाग मुझ स्त्री को इसमें कौन भिक्षादेगा

अजगरने कहा कि जिससे तुम भिक्षा मांगोगी जो वह तुम्हें भिक्षा न देगा तो उसके शिरके सौटुकड़े होजाँयगे यह सुनकर उस ब्राह्मणीने कहा जो ऐसाहै तो मैं आपही से अपने पतिकी भिक्षामांगतीहूं उसके इसप्रकार कहनेपर उस अजगरने यज्ञसोमको जीताहुआही उगलदिया और दिव्यस्वरूप धारण करके उससे कहा कि मैं विद्याधरोंका स्वामी कांचनवेगनाम विद्याधरहूं गौतमऋषि के शापसे मैं अजगर होगया था और पतिव्रतास्त्री के साथ वार्त्तालाप करनेतकही इस शापकी अवधिथी इससे मैं आज तुम्हारे साथ वार्त्तालाप करके शापसे छूटगयाहूं यह कहकर और रत्नोंसे उसदियेहुए सुवर्णपात्र को भरकर वह विद्याधर अन्तर्द्धान होगया तब वह दोनों अक्षय धनपाकर अपने घरमें आकर सुख पूर्व्वक रहनेलगे ठीकहै (सत्त्वानुरूपंसर्वस्य धातासर्वंप्रयच्छति) ब्रह्मासबको सत्त्वके अनुसार सब कुछ देते हैं अब एक और अन्य मूर्खपुरुषकी आप कथा सुनिये कि किसी कर्नाटदेशीने अपने पराक्रम से राजाको प्रसन्नकिया राजाने प्रसन्नहोके उससे कहा कि तुम अभीष्ट वरमांगो तब उसने कहा कि आप अपने नपुंसक भाई को मुझे देदो ठीकहै (सर्वश्चित्तप्रमाणेन सदसद्वाभिवाञ्छति) अपने २ चित्तके अनुसार सबलोग अच्छी तथा बुरीवस्तु चाहते हैं अब कुछ नहीं मांगनेवाले मूर्खकी कथा सुनिये कि मार्ग में जातेहुए किसी मूर्खसे गाड़ीपर चढ़ेहुए किसी पुरुषने कहा कि जरातुम मेरी गाड़ीको बराबर कर दो यह सुनकर उसने कहा कि मुझे क्या मजूरी दोगे तब गाड़ीवाले ने कहा कि कुछ नहीं दूंगा तब उसमूर्खने गाड़ी बराबरकरके कहा कि मुझे कुछनहींदो यहसुनकर वह गाड़ीवाला हँसनेलगा इस प्रकारसे हे स्वामी मूर्खलोग सदैव उपहास निन्दा तथा विपत्तियोंको प्राप्तहोते हैं गोमुखसे इन सबकथाओं सुनकर मंत्रियो समेत प्रसन्नहुए नरवाहनदत्तको तीनोंलोकों के विश्रामकी हेतु भूत निद्राआई ३३०॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशक्तियशोलम्बकेपंचमस्तरंगः ५॥

इसके उपरान्त प्रातःकाल नरवाहनदत्त उठकर अपनेपिता वत्सराज उदयनके दर्शनकरनेको गया वहां मगधराजका पुत्र पद्मावतीका भाई सिंहवर्मा आयाहुआथा उसका स्वागत करके और उसीके साथ वार्त्तालाप तथा उसीके सत्कारमें वह दिन व्यतीतकरके और वहीं भोजनादिसे निवृत्तहोकर नरवाहनदत्त अपने मन्दिरमें आया वहां रात्रिके समय उसे शक्तियशा केलिये उत्कंठित देखकर उसके चित्तके प्रसन्नकरनेकेलिये गोमुख यह कथा कहनेलगा कि किसी वनमें वड़ी सघन छायावाला एक वर्गदका वड़ा वृक्षथा जो पक्षियोंके शब्दों से पथिकोंको मानो विश्रामकेलिये बुलाया करताथा उस वृक्षपर मेघवर्णनाम कौओंकाराजा रहताथा उस मेघवर्णका अवमर्दनाम उलूकों का राजा महाशत्रुथा एक दिन रात्रिके समय वह अवमर्द वर्गदके वृक्षपर आकर बहुतसे कौओंकोमारगया तब प्रातःकाल मेघवर्णने उड्डीवी आडीवी संडीवी प्रडीवी तथा चिरजीवीनाम मंत्रियोंसे बुलाकर कहा कि हमारा शत्रु रात्रिके समय आकर रात्रिही में अनेककाकोंको मारजाताहै इससे इसका उपायशोचो ऐसा न होय कि वह आकर हमारा राज्यछीनले क्योंकि वह वड़ा बलवान् शत्रुहै यह सुनकर पहले उड्डीवीने कहा कि हे स्वामी शत्रुके बलवान् होनेपर कैतो देशको त्यागना चाहिये अथवा शत्रुसे नम्रहोकर रहनाचा-

हिये तदनन्तर आडीवीने कहा कि अभी कोई बड़ा भयनहीं है इससे शत्रुके आशयको तथा अपनी शक्तिको जानकर जैसा उचितहोगा सो किया जायगा तदनन्तर संडीवीने कहा कि हे स्वामी मृत्यु अच्छी है परन्तु शत्रुके आगे नम्रहोकर रहना अथवा देशका त्याग करना श्रेष्ठ नहीं है इससे उसके साथ हमलोगोंको युद्ध करनाचाहिये क्योंकि सहायवान् उत्साही वीरराजा सदैव शत्रुओंको जीतताहै तदनन्तर प्रडीवीने कहा कि वह बलवान् शत्रु युद्धमें जीतनेके योग्य नहीं है संधिकरके अवसरपाके उसे मारना चाहिये इन सबकी बातोंको सुनकर चिरजीवी ने कहा कि कैसादूत और कैसी सन्धि कौओंके साथ उलूकोंका सदैवसे वैरचलाआताहै उसे कौन मिटासक्ता है यह बातमंत्रसे सिद्धहोसक्ती है क्योंकि मंत्रही राज्यका मूलहै यह सुनकर मेघवर्ण ने चिरजीवी से कहा कि तुम वृद्धहो जो तुम्हें काकों के साथ उलूकों के वैर होने का कारण मालूम होय तो कहो फिर पीछे से मन्त्र भी बताना यह सुनकर चिरजीवी ने काकराज से कहा कि यह वचन का दोष है क्या आपने एक गधेकी कथा नहीं सुनीहै किसी धोबी ने अपने दुर्बल गधेको शेरका चमड़ा उढ़ाकर नाज के खेतमें छोड़दिया वह गधा बहुत दिनों तक अन्न खाया किया और उसे शेर जानकर किसी ने निवारण नहीं किया एक दिन कोई धनुषधारी खेती करनेवाला उसे देखके और सिंह जानके भयभीत होके कम्बल ओढ़कर नौहरे नौहरे चला उसे इसप्रकार से जाते देखकर वह गधा उसे भी गधा जानकर उच्चस्वरसे बुलानेलगा उस शब्द को सुनकर खेतीवाले ने उसे गधा जानकर वहां आके उसको मारडाला इसी प्रकार वचनकेही दोषसे उलूकों के साथ हमलोगों का वैर हुआ है पूर्वसमयमें पक्षियों का कोई राजा न था इससे सम्पूर्ण पक्षियोंने मिलकर उलूकको राज्य देनाचाहा इतने में एककौएने यहजानकर पक्षियों से कहा कि हे मूर्खो इसक्रूर पापी कुरूप अमंगलकारी उलूकको क्यों राज्यदेतेहो क्या हंस तथा कोकिलादिक पक्षी नहीं रहे किसी बड़े प्रभाववालेको राजा बनानाचाहिये जिसके नामसेही सिद्धिहोय इसबातपर मैं तुमलोगों को एककथा सुनाताहूं कि चन्द्रसरनाम किसी निर्मलजलवाले तड़ागपर शिलीमुखनाम खरगोशोंका राजा रहताथा एकसमय अनावृष्टिके कारण अन्य जलाशयों के सूख जानेसे चतुर्दन्तनाम हाथियोंका राजा सम्पूर्ण अपने हाथियों समेत वहां जलपीनेको आया इससे हाथियों के पैरों से बहुतसे खरगोश कुचलगये तब उसहाथी के चलेजानेपर उस शिलीमुखने सभाकरके विजयनाम खरगोश से कहा कि यहगजराज जलका स्वाद जानगयाहै अब यह बारम्बार यहां आवेगा इससे सबखरगोशोंका नाशहो जायगा इस हेतुसे इसका कोई उपाय शोचो और उसके पास जाकर कोई युक्तिकरो क्योंकि तुम कार्य उपाय तथा कहनेकी युक्ति जानतेहो जहां जहां तुम गयेहो वहाँ वहाँ सब कार्य्य सिद्धिहुये हैं उसके यह वचन सुनकर वह विजयनाम खरगोश उसहाथीके पास एकऊंचेसे शिखरपर चढ़कर हाथी से बोला कि मैं चन्द्रमाका भेजाहुआ दूतहूं उन्होंने तुमसे कहाहै कि शीतल चन्द्रसर तड़ाग मेरे निजरहनेका स्थान है वहां जो खरगोश रहतेहैं उनका मैं राजाहूं और वह मेरे बड़े प्रियहैं इसीसे मेरानाम भी शशी होगयाहै देखो तुमने मेरे तड़ागका नाशकियाहै और मेरे खरगोशोंको माराहै अबजो तुम फिर ऐसाकरोगे तो

मुझसे इसका दर्शन हुआ जो गे उसके ऐसे वचन सुनकर हाथियों के स्वामी ने भयभीत होकर कहा कि अब ऐसा अपराध मैं नहीं करूंगा यह सुनकर उसने कहा कि अच्छा तुम मेरे साथ चलकर उनके दर्शन करके अपने अपराधों को क्षमा कराओ यह कहके उस खरगोश ने हाथियों के राजा को अपने साथ लाकर तड़ाग में चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब दिखाया उस प्रतिबिम्ब को देखकर वह गजराज प्रणाम करके भयभीत होकर अन्य वन को चलागया और फिर वहां कभी न गया विजय खरगोश की यह युक्ति देखकर शिलीमुख ने उसका बड़ा सत्कार किया और उसी के बल से निर्भय होकर वहां रहा यह कहकर उसने फिर पक्षियों से फिर कहा कि ऐसा ही स्वामी होना चाहिये जिसके कि नाम ही से सब भय मिटजावें इससे दिन का अन्धा यह उलूक राज्य के योग्य नहीं है देखो क्षुद्र का विश्वास न करना चाहिये इस बात पर भी मैं तुमको एक इतिहास सुनाता हूं एक समय किसी वृक्ष पर मैं रहता था उसी वृक्ष के नीचे एक कपिञ्जल पक्षी भी घोंसला बनाकर रहता था किसी समय वह कपिञ्जल कहीं चलागया और बहुत दिनतक नहीं आया इतने में एक खरगोश आकर उसके घोंसले में रहने लगा कुछ दिनों में कपिञ्जल भी आया उस समय कपिञ्जल और खरगोश का परस्पर यह विवाद होने लगा कि यह घोंसला किसका है बहुत विवाद करके वह दोनों निर्णय करनेवाले किसी सभ्य को ढूंढने के लिये चले और मैं भी उनका कौतुक देखने को उनके पीछे २ चला कुछ दूर चलकर किसी तड़ाग के निकट जीवहिंसा के लिये मिथ्याव्रत धारण किये हुए ध्यान से आधा नेत्र बन्द करके बैठे हुए बिलाव को देखकर उसको धर्मात्मा जानकर वह दोनों निर्णय कराने के लिये उसके कुछ समीप गये और उससे बोले कि हे भगवन् आप बड़े धर्मात्मा तपस्वी हो इससे आपही हमारा न्याय करो यह सुनकर वह बिलाव धीरे से बोला कि तप करते २ मैं बहुत क्षीण होगया हूं इससे मुझे अच्छे प्रकार सुनाई नहीं देता अत्यन्त निकट आकर कहो तो मैं निर्णय करूं क्योंकि अच्छे प्रकार निर्णय करने से दोनों लोक नष्ट होते हैं इस प्रकार से कहकर उन दोनों को बिलाव ने अपने पास बुलाकर मारके खाडाला इस प्रकार क्षुद्र कार्य्य करनेवाले दुर्जन का कभी विश्वास न करना चाहिये इससे इस दुष्ट उलूक को कभी राजा मत बनाओ यह उस कौए के यह वचन सुनकर संपूर्ण पक्षी उलूक को राज्य देना बन्द करके इधर उधर चलेगये तब उलूक कौए से बोला कि आज से हमारी तुम्हारी शत्रुता है इसे याद रखना मैं जाता हूं यह कहकर वह चलागया और वह कौआ उसके वचन सुनकर अत्यन्त भयभीत होकर दुःखी हुआ ठीक कहै (वाङ्मात्रेणापि ददाति सद्यो वैरात्कोनानुतप्यते) वचन मात्र से उत्पन्न किये गये असह्य वैर से किसको पश्चात्ताप नहीं होता इस प्रकार वचनों के दोष से काकों के साथ उलूकों का वैर हुआ है यह कहकर चिरजीवी ने फिर कहा कि उलूक बहुत हैं और बलवान् हैं इससे हमलोग उन्हें नहीं जीत सक्ते बहुतों का जय होता है इस बात पर मैं आपको एक दृष्टान्त देता हूं कि कोई ब्राह्मण किसी गांव से बकरा मोल लेकर कन्धे पर रखकर चला मार्ग में बहुत से धूर्त्तों ने उसे देखकर वह बकरा लेना चाहा उनमें से एक ने जाकर उस ब्राह्मण से कहा कि हे ब्राह्मण यह कुत्ता तुमने अपने कन्धे पर क्यों रक्खा है इसे छोड़दो उसके इसकहने को न मानकर वह ब्राह्मण उसे कन्धे पर रक्खेही रहा तब अन्य दो धूर्त्तों ने ब्राह्मण से कहा हे ब्राह्मण

यह कुत्ता तुमने कन्धेपर क्यों चढ़ायाहै यह सुनकर वह ब्राह्मण कुछ सन्देहयुक्त होकर बकरेको कन्धेपर रक्खे हुए ही चला तब अन्य तीन धूर्त्तों ने उससे आगेजाकर कहा कि तुम ब्राह्मण होके कुत्तेको क्यों कन्धेपर चढ़ातेहो हम जानते हैं कि तुम ब्राह्मण नहींहो व्याधहो इसीकुत्ते से जीवोंकी हिंसा करवातेहो यह सुनकर उसब्राह्मणने शोचा कि किसीभूतने मेरीदृष्टिहरकर मुझे सन्देह करानेको यह कुत्ता देदियाहै क्योंकि इन सबकीदृष्टि में अन्तर नहींहोसक्ताहै यह शोचकर वह उसबकरेको छोड़ स्नानकरके अपनेघरको चलागया और उन धूर्त्तों ने बकरेको लेजाके और मारके खाया यह कहकर उस चिरजीवीने मेघवर्ण से कहा कि हे स्वामी इसी हेतुसे बहुतसे बलवानोंका जीतना कठिनहै इससे अब जो मैं कहूं सो करो मेरे पंख कुछ नोचकर मुझे इसवृक्षके नीचे डालकर तुम सब इसपर्व्वतपर चलेजाओ मैं कार्य्यसिद्धकरके वहीं आऊंगा यह सुनके काकोंका राजा मेघवर्ण पंखनोचकर उसे वृक्षके नीचे डालकर अपने परिकरसमेत पर्वतपर चलागया इसके उपरान्त रात्रिके समय उलूकोंके राजा अवमर्द ने बहुतसे उलूकों सहित वहांआके वृक्षपर एक कौआ भी न देखा और नीचे चिरजीवी का मन्द २ रोदन सुनके उसकेपास जाकर उससे पूछा कि तुम कौनहो और किसने तुम्हारे पंख नोचे हैं यह सुनकर चिरजीवी धीरे २ बोला कि काकराज मेघवर्णका चिरजीवीनाममंत्रीहूं मेघवर्णने अपने मंत्रियों से सलाहकरके आपकेसाथ युद्धकरना चाहाथा यहदेखकर मैंने उससे कहा कि जो आप मेरीसलाह मानिये तो बलवान् उलूकराज के साथ विग्रह न करिये नम्र होकर उसकेसाथ संधि करलीजिये यह सुनकर काकराज मेघवर्ण मुझे शत्रुओंका पक्षपाती जानकर क्रोधसे मेरी यह दशाकरके अपने संपूर्ण परिकर समेत यहांसे कहीं चलागया यह कहके वह चिरजीवी नीचेको मुखकरके श्वास लेनेलगा और उसके यह वचन सुनकर अवमर्दने अपने मंत्रियोंसे पूछा कि इस चिरजीवीके लिये हमको क्या करना चाहिये यह सुनके दीप्तनयन नाम मंत्रीने कहा कि सज्जन लोग उपकारी चोरकी भी रक्षाकरते हैं पूर्व समय में किसी धनवान् वृद्ध वैश्यने धनके प्रभावसे किसी वैश्यकी युवती कन्यासे अपना विवाह करलिया वहस्त्री सदैव शैयापर उसकीओर से मुखफेर कर सोया करतीथी क्योंकि वह वृद्धहोनेके कारण उसे अच्छा नहीं मालूमहोताथा एक समय रात्रिमें उसवैश्यके घरमें चोर आया उसे देखकर उसस्त्रीने भयभीत होके अपने पतिका आलिंगन किया उस आश्चर्यको जानके वैश्यने इधर उधर देखा तो उसे एक कोने में एक चोर खड़ाहुआ दिखाई दिया उस चोरसे वैश्यने कहा कि तुम हमारे बड़े उपकारीहो इससे मैं तुमको पिटवाऊंगा नहीं तुम इसीसमय यहांसे भागजाओ यह कहकर उसने उस चोरको निकाल दिया इसप्रकारसे इस उपकारी चिरजीवीकी भी रक्षा करनीचाहिये यह कहकर दीप्तनयन के चुप होजानेपर अवमर्दने वक्रनासनाम मन्त्री से पूछा कि अब तुम बतलाओ कि इस विषयमें क्या करना अवश्यहै यह सुनकर वक्रनासने कहा कि इस चिरजीवीकी रक्षा करनी चाहिये क्योंकि यह शत्रुके मर्मको जानताहै इससे राजा और मंत्रियोंके वैर से हमारा बड़ा उपकार होगा इसके दृष्टांतमें मैं आपको एक कथा सुनाताहूं किसी ब्राह्मण ने कहीं से दो गौएं पाई थीं उन गौओंको देखकर किसी चोरने उन्हें चुरालेनेका विचार किया और उसीसमय

किसी राक्षस ने उस ब्राह्मण को खाने का विचार किया इसीलिये वह दोनों चोर और राक्षस रात्रि के समय उस ब्राह्मण के यहां चले और मार्ग में मिलकर परस्पर अपना अपना अभिप्राय कहके उस ब्राह्मण के यहां पहुँचे वहां चोरने राक्षससे कहा कि मैं पहिले गौओं को लेजाऊं तब तुम इस ब्राह्मणको खाना नहीं तो तुम्हारे छूनेसे यह ब्राह्मण जागपड़ैगा तो मैं गौए कैसे लूंगा यह सुनकर राक्षसने कहा कि पहले मैं इस ब्राह्मणको खाऊंगा ऐसा न होय कि जब तुम गौओंको खोलो और ब्राह्मण जग पड़े तो मेरा परिश्रम व्यर्थ होजाय उनके इस कलहको सुनकर ब्राह्मण जागपड़ा और राक्षसोंके नाश करने वाले मंत्रोंका जप करनेलगा इससे वह चोर और राक्षस दोनों भागगये इसप्रकार जैसे उन दोनोंके कलहसे ब्राह्मणका हित हुआ वैसेही अवकर्ण और चिरंजीवीके वैरसे हमारा हितहोगा वक्रनास के यह वचन सुनके अवमर्द ने प्राकारकर्ण नाम मंत्रीसे पूछा कि इसमें तुम्हारा क्या मतहै उसने कहा कि यह चिरजीवी आपत्तिमें पड़ाहुआ शरणमें आयाहै इससे इसकी रक्षाकरनी चाहिये देखिये राजा शिविने शरणागतके लिये अपना मांस दिया है प्राकारकर्णके यह वचन सुनकर उलूकराजने क्रूरलोचन नाम मंत्रीसे भी उसका मत पूछा उसने भी यही कहा तदनन्तर रक्ताक्ष नाम मंत्रीसे उलूकराजने पूछा कि तुम्हारा क्या मतहै यह सुनकर उस बुद्धिमान ने कहा कि हे राजा अन्यायकी बातोंसे यह मंत्री आपका नाश करवादेंगे नीतिके जाननेवाले लोग शत्रुओंका कभी विश्वास नहीं करते हैं और मूर्खलोग प्रत्यक्षदोषको देखकर भी थोड़ेसेही मिथ्या दिखावे से प्रसन्न होजाते हैं इस विषयपर मैं आपको एक कथा सुनाताहूं कि किसी बढ़ई को अपनी स्त्री बहुत प्यारीथी उसने लोगोंसे सुना कि यह किसी अन्य पुरुषपर आसक्त है यह सुनकर तत्त्व जानने की इच्छासे उसने अपनी स्त्रीसे कहा कि हे प्रिये राजाकी आज्ञासे मैं किसी दूरदेशको जाऊंगा तुम मार्ग में खानेके लिये मुझे सत्तू आदिक देदो यह कहके सत्तू आदिक लेके वह अपने शागिर्द समेत कहींको चलागया और रात्रि के समय छिपकर घर में आके अपने शागिर्द समेत खाटके नीचे लेटरही तब उसकीस्त्री उसको चलागया जानके अपने जारको बुलाकर उसी खाट पर भोगकरने लगी भोग करते २ कहीं उसके पैरमें उसका पति छूगया तब वह उसको वहीं स्थित जान के अत्यन्त व्याकुल हुई और उस जारने भी यह बात जानकर व्याकुल होके युक्तिपूर्वक उससे पूछा कि हे प्रिये तुमको मैं अधिक प्रियहूं या पति यह सुनके उसने कहा कि पति मुझे अधिक प्याराहै उसके लिये मैं प्राणभी त्याग करसक्तीहूं और जो मैं तुम्हारे साथ भोगकरतीहूं यह स्त्रियोंकी स्वाभाविक चपलता है इसको क्या कियाजाय स्त्रियोंके जो नाक न होय तो वह विष्ठा भी खालें उस कुलटाकी इन बनावटकी बातोंको सुनकर बढ़ईने अपने शागिर्दसे कहा कि तुमने देखा यह मेरी कैसी भक्त है इससे मैं आपने शिर पर इसे उठाताहूं यह कहकर उस बढ़ईने अपने शिरपर उन दोनोंको उठाया इसप्रकार प्रत्यक्ष दोषको देख कर भी मूर्खलोग कपटकी बातों से प्रसन्न होजाते हैं और पीछे से अपनी हँसी करातेहैं इससे आप इस शत्रु चिरजीवीकी रक्षा न कीजिये यह उपेक्षा कियेगये रोगकी समान शीघ्रही आपको नष्ट कर देगा रक्ताक्षके यह वचन सुनकर अवमर्दने कहा कि यह साधु हमारेही हितके लिये इस दशाको प्राप्त हुआहै

तो इसकी रक्षा क्यों न करनी चाहिये और यह अकेला हमारा करही क्या सक्ताहै इसप्रकारसे उसने मंत्री के वचन काटकर उस चिरजीवीका बड़ा सत्कारकिया तब चिरजीवीने उससे कहा कि मैं ऐसी अवस्था में जीकर क्या करूंगा इससे आप मुझे काष्ठदिलवादीजिये कि मैं चिता लगाकर अग्नि मगलाऊं यह प्रार्थना करके कि दूसरे जन्ममें मैं उलूक होकर इस काकराजसे बदला लूं भस्म होजाऊं उसके यह वचन सुनकर रक्ताक्षने हँसकरकहा कि हमारे स्वामीकी कृपासे तुम स्वस्थहीहो अग्निमें जलकर क्यों भस्म होतेहो जबतक तुमको काकहोनाबदाहै तबतक उलूक नहींहोसक्ते क्योंकि (यादृशोयःकृतोधात्राभवे चादृशएवसः) ब्रह्माने जिसको जैसा बनायाहै वह वैसाही रहताहै इस विषयपर मैं तुमको एक कथा सुनाताहूं कि पूर्वसमयमें किसीमुनिने बाजके पंजेसे छूटीहुई एकछोटीसी मूषिकाको पाकर उसे अपनेतपो बलसे कन्याबनाली और अपने आश्रममें उसका पालनकरके जबवह युवतीहुई तो किसीबलवान् के साथ उसकाविवाहकरनेकी इच्छाकरके सूर्य्यसेकहा कि मैं इसकन्याका किसीबलवान्के साथ विवाहकरना चाहताहूं इससे आपही इसको ग्रहणकरलीजिये यहसुनकर सूर्य्य देवताने कहा कि मेघ मुझसे अधिक बलवान्हें वह क्षणभरहीमें मुझे आच्छादित करलेते हैं यहसुनकर मुनिने मेघोंकोबुलाके उसकेसाथ विवाहकरनेकोकहा यहसुनके मेघोंनेकहा कि वायु हमसे अधिक बलवान्है क्योंकि वहहमसबको क्षण भरमेंही चारोंदिशाओं में फेंकदेताहै तब मुनिनेकहा कि तुम इससे अपना विवाह करलो उसनेभी यहकहा कि पर्व्वत हमसेभी अधिकबलवान् हैं क्योंकि हमभी उन्हें नहीं हिलासक्ते यह सुनके मुनि ने एकपर्वत कोबुलाकर उससे कहा कि तुम इसके साथ विवाहकरलो यहसुनकर उसनेकहा कि मूसे हमसेभी अधिक बलवान्होतेहैं क्योंकि वह हममेंभी छिद्रकरदेते हैं यह सुनके मुनिने एक मूसेको बुलाकरकहा कि तुम इसके साथ विवाह करो यह सुनकर उसने कहा कि महाराज यह मेरे बिलमें कैसे जायगी तब मुनि ने उसे मूषिकाही बनाकर उस मूषक के साथ उसका विवाह करदिया इसप्रकारसे जो जैसा है वह वैसाही रहताहै इससे हे चिरजीवी तुम कभी उलूक नहींहोगे उसके यह वचन सुनकर चिरजीवी ने अपने चित्तमें शोचा कि इस राजाने नीतिके जाननेवाले रक्ताक्षके तो वचन मानेनहीं हैं और अन्य सब मंत्री मूर्ख हैं इससे अब मेरा कार्य्य सिद्धही है इसप्रकार शोचतेहुए चिरजीवीकोलेकर अवमर्द अपने परिकरसमेत अपने स्थानकोगया और चिरजीवी वहां उनलोगों से मिलेहुए मांसको खाकर थोड़ेहीकाल में बहुत पुष्टहोगया एकदिन उसने अवमर्द से कहा कि हे स्वामी मैं जाकर उस काकराज मेघवर्ण को विश्वास देकर उसी बरगद के वृक्षपर बुलायेलाताहूं आपलोग रात्रिके समय आकर उन सबको मारडालियेगा जिससे मेरा आपकी कृपासे उद्धारहोय इससमय आपलोग अपने घोंसलोंको तृणादिसे बन्दकरलीजिये जिससे कि वह दिनमें आकर आपको मार न सकें यह कहकर उनके घोंसलों को तृणों से बन्दकरवाके वह अपने स्वामीके पासगया और जाकर उनसब कौओं के मुखों में एक २ बलती हुई लकड़ी पकड़ाके उलूकोंके घोंसलोंपर ले आया वहां आकर उनसबोंने दिवान्ध उल्लुओं के घोंसलोंपर अपनी २ जलतीहुई लकड़ी लगादी जिससे वहसब उल्लू जलकर मरगये इसप्रकार शत्रुओंको जीतकर काक

राज मेघवर्ण अत्यन्त प्रसन्नहोके अपने परिकर समेत उसी वर्गदके वृक्षपर आया वहां चिरजीवी ने शत्रुओं के वीचमें अपने रहनेका सव वृत्तान्त कहकर मेघवर्णसे कहा कि हे स्वामी तुम्हारे शत्रुके यहां एकरक्ताक्षही बुद्धिमान् मन्त्रीथा उसीके वचनोंको उसने न माना इसीसे मैंने छलकरके उसका नाश करायाहै जैसे किसी सर्पने मेंढकोंका नाश कियाथा वह यहकथाहै कि कोई वृद्धसर्प सुखपूर्वक जीवों के पकड़नेमें असमर्थहोकर किसी तड़ागके तटपर निश्चलहोकर वैठा उसे इसप्रकार निश्चल वैठा देखकर दूरहीसे मेंढकोंने उससे पूछा कि तुम जैसे पहले मेंढकोंको पकड़कर खातेथे अव क्यो नहींखातेहो यह सुनकर वह वोला कि मैंने किसी ब्राह्मणके पुत्र मेंढकको काटखायाथा इससे उसके मरजानेसे उसके पिताने क्रोधकरके मुझे यहशापदिया है कि तू मेंढकोंका वाहनहोगा तो अव मैं तुम्हारा वाहनहोगया हूं इससे तुमको कैसे खासक्ताहूं यहसुनकर मेंढकोंका राजा जलसे निकलकर अपने मंत्रियों समेत उसकी पीठपर चढ़गया तव उससर्पने उनको कुछदूर भ्रमणकराके कहा कि अव मैं थकगयाहूं मुझे कुछ भोजन दीजिये विनाभोजनके मैं नहींचलसक्ताहूं यह सुनकर मेंढकोंके राजाने कहा कि अच्छा तुम मेरे थोड़ेसे सेवकोंको रोज खा लियाकरो तव उस सर्पने धीरे २ क्रमपूर्व्वक सव मेंढक खालिये और वाहनके अभिमानसे मेंढकोंका राजा देखताहीरहा इसप्रकारसे बुद्धिमान् लोग मूर्ख शत्रुओं को मारलेतेहैं ऐसेही मैंने भी आपके शत्रुओं को छलसेही मारा है इससे राजा को सदैव नीतिके अनुसार कार्य्य करनाचाहिये क्योंकि जो राजा नीतिको नहीं जानताहै उसके सेवक उसका सव धन खाजाते हैं और शत्रु उसे जीत लेतेहैं हे स्वामी यह लक्ष्मी द्यूतलीलाके समान छलयुक्त जलकी लहरके समान चंचल और मदिराके समान मोहिनीहोती है और यही लक्ष्मी धीर अच्छे सलाहलेनेवाले व्यसनरहित विशेषज्ञ राजाके पास वॅधीहुईसीरहती है इससे अव आप विद्वानों के वचनों के अनुसार कार्य्यकरके शत्रुओं के नष्टहोजानेसे अकण्टक राज्यभोगिये चिरजीवी के यह वचन सुनकर काकराज मेघवर्ण उसका वड़ा सत्कारकरके उसीके वचनों के अनुसार राज्यको अकण्टककरके प्रजाका पालन करनेलगा १६७ यह कथा कहकर गोमुख ने नरवाहनदत्त से फिर कहा कि इसप्रकार बुद्धिके वल से पक्षी भी राज्यका भोगकरते हैं और निर्बुद्धिपुरुष लोक में अपनी हँसीकराके महादुखपाते हैं किसी धनवान् के एक मूर्ख सेवक था उसने विनाजाने भी मैं जाननेवालाहूं इस अभिमानसे स्फारदेकर स्वामीकी त्वचाफारडाली इससे स्वामी ने उसे निकालदिया और वह अत्यन्त दुखी हुआ ठीक है (अजानानोहठात्कुर्वन् प्राज्ञमानीविनश्यति) विनाजाने बुद्धिमानी के अभिमानसे हठ पूर्व्वक कार्य्य करनेवाला नष्टहोजाता है, एकअन्य मूर्खकी कथा आपसुनिये कि मालवदेशमें दो सगे भाई ब्राह्मणोंने अपने पिताका धन वाँटनेका विचारकिया और कमती वढ़तीका झगड़ा न होय इसलिये उपाध्यायसे पूछा कि क्याकरें उस वैदिक उपाध्यायने कहा कि हरएक वस्तुके दो २ भागकरके एक २ लेलो जिससे आपस में विगाड़ न होय यहसुनकर उन्होंने घर, शैया, पात्र तथा पशुओंको भी दो २ भागकरके वांटा करलिया एकदासी भी उनके यहां थी उसके भी उन्होंने दो भागकिये यह सुनकर राजाने क्रोधकरके उनदोनों का सर्वस्व छीनलिया इस

प्रकार मूर्खलोग मूर्खोंके उपदेशसे दोनों लोकोंका नाशकरतेहैं इससे बुद्धिमान्को चाहिये कि मूर्खोंको छोड़के सदैव बुद्धिमानों ही का सेवनकरे हे स्वामी असन्तोषसे भी वड़ी हानिहोती है इसपरभी मैं आपको एककथा सुनाताहूं कहीं कुछेकसंन्यासी सन्तोषसे भिक्षा मांग २ कर खातेथे और इसीसे मोटेताज़े वने रहतेथे उन्हें देखकर कुछ मित्रोंने परस्परमें कहा कि भिक्षामांगकर भी यह संन्यासी कैसे स्थूलहो रहेहैं उनमें से एकने कहा कि इनको मैं इसप्रकारके भोजन करनेपर भी दुर्वलकरदूंगा यह कहकर उसने उन संन्यासियों को निमन्त्रणदेके अपने यहाँ एकदिन वड़े २ स्वादिष्ट उत्तम भोजन करवाये इससे उनमूर्खोंको उसस्वादका स्मरणकरके भिक्षाका अन्न नहीं रुचनेलगा इसीसे वहदुर्वलहोगये तव जिसने उन्हें भोजन करवायेथे वह अपने मित्रोंको उनसंन्यासियों के पास लेजाकर वोला कि देखो इनसंन्यासियोंको भिक्षामें सन्तोषथा इसीसे यहहृष्टपुष्ट वनेरहतेथे अव इनका संतोष नष्टहोगयाहै इसीसे यह दुर्वलहोगयेहैं इससे सुखचाहनेवाला बुद्धिमान् पुरुष अपनेचित्तमें सदैव सन्तोष रक्खे क्योंकि सन्तोष न करनेसे दोनोंलोकों में दुस्सह दुःखप्राप्तहोताहै उसके यहवचन सुनके उनसब ने उसदुखदाई असन्तोष का त्यागकरदिया ठीकहै सत्संगसे किसका भला नहीं होताहै १८६ अव एकसुवर्ण के लोभीकी कथा आप सुनिये कोई युवापुरुष अपने पिताके साथ तड़ागपर जल पीनेकोगया वहां उसने सुवर्ण चूड़नाम पक्षीका सुवर्ण के वर्णका जलमें प्रतिविम्व देखकर सुवर्ण जानके तड़ागमें उतरकर उसको लेनेलगा परन्तु चंचल जलके सिवाय उसके हाथमें कुछ न आया और उसे वारम्वार जल पकड़ते देखकर उसके पिताने ऊपरसे उस सुवर्णचूड़को भगादिया और उसे जलके वाहर बुलाकर समझादिया कि यह सुवर्ण न था पक्षीका प्रतिविम्वथा इसप्रकारसे निर्विचार लोग भ्रांतिसे मोहितहोकर लोगोंमें उपहासको प्राप्तहोते हैं अव आप अन्य महामूर्खोंका वृत्तान्त सुनिये कि किसी वणियेका ऊंट भारकेमारे मार्ग में थकगयाथा तव वह अपने सेवकों से वोला कि मैं एकऊंट मोललेने जाताहूं इसपरका कुछ बोझ उसपर लादलूंगा और तुम लोग जो यहां पानीवरसे तो इसवातका ध्यानरखना कि इनगठरियोंके चमड़ेमें जल न लगने पावे यहकहकर उसवैश्यके चलेजानेपर मेघोंसे आकाश घिरगया और जल वरसनेलगा तव उनसेवकों ने यहशोचकर कि हमारे स्वामीने कहाहै कि इनगठरियोंके चमड़ेमें जल न जानेपावे उन गठरियोंमेंसे कपड़े निकालकर उनके चमड़ोंपर लपेट दिये इससे सव वस्त्र नष्टहोगये इतने में उसवणियेने आकर कपड़ों को भीजते देखके कहा कि हे मूर्खो तुमने सवकपड़े नष्टकर दिये यहसुनकर वह वोले कि हे स्वामी आपहीने तो कहाथा कि गठरियोंके चमड़े पानी में न भीजनेपावें तव वह वैश्य वोला कि चमड़ों के गीलेहोने से वस्त्रभी गीले न होजायँ इसलिये मैंने तुमसे कहा था कि केवल चमड़ेही की रक्षाके लिये कहाथा यहकहकर उसने ऊंटोंपर सव असवाव लादकर अपने घरजाके उनमूर्ख सेवकों का सर्वस्व छीनलिया इसप्रकारसे मूर्ख लोग तात्पर्य्य को न समझकर उलटा कामकरके अपने तथा स्वामी के प्रयोजनको नष्टकरते हैं अव आप पुओं के मूर्खकी कथा सुनिये किसी मूर्ख पथिक ने पैसे के आठपुए लिये उनमें से छः पुए खाने से उसकी तृप्ति न हुई और सातवें के खाने से तृप्ति होगई

तब वह चिल्लाकर रोनेलगा कि हाय मैंने यह पुआ पहलेही क्यों न खाया जिससे मेरे यह छः पुए बचजाते उसके रोदनका वृत्तान्त जानकर लोग हँसनेलगे अब आप द्वारके रक्षक मूर्खकी कथासुनिये किसी बणिये ने अपने मूर्ख सेवकसे कहा कि मैं घरमें जाताहूं तुम दुकानका द्वार देखतेरहना यह कह कर उसके चलेजानेपर वह मूर्खसेवक दरवाजा उतारके अपने कंधेपर लादके नटका तमाशा देखनेच-लागया और लौटकर उसवैश्यके क्रोधसे डांट पर बोला कि आपहीने तो द्वारकी रक्षाकरनेको कहाथा इस प्रकारसे तात्पर्य्यको न जानकर केवल शब्दोंकेही जाननेवाले मूर्खलोग विपरीत कार्य्य कियाकरते हैं अब आप भैंसोंके मूर्खोंकी कथासुनिये कुछ ग्रामीण पुरुषोंने किसीका भैंसा लेकर उसीके आगे गांव के बाहर लेजाके किसी बर्गदके वृक्षकेनीचे मारकर खाडाला तब भैंसे के स्वामी ने राजाके यहां जाके उनकी नालिशकी राजाने उनग्रामीणोंको बुलाया उनके आगे भैंसे के मालिकने राजासे कहा कि हे स्वामी इन ग्रामीणोंने तड़ागके तटपर बर्गदके नीचे मेरा भैंसा मारकर खायाहै यह सुनकर उनमेंसे एक वृद्धमूर्खने कहा कि इसगांवमें न तड़ागहै न बर्गदका वृक्षहै तो हमने इसका भैंसा कहां खाया यहबड़ा झूंठहै यह सुनके उसने कहा कि तुम्हारे गांवके पूर्वकी ओर क्या तालाबके निकट बर्गदका वृक्ष नहीं है वहीं बैठकर अष्टमीके दिन मेरा भैंसा तुमलोगोंने मारकर खायाहै यहसुनकर उस वृद्धने कहा कि ह-मारे गांवमें न पूर्वदिशाहै न अष्टमी तिथिहै यह सुनकर राजाने हँसके उसके उत्साह बढ़ानेकेलिये उस से कहा कि तुम बड़े सत्यवादीहो तुम्हारे कहनेमें कुछ झूंठ नहींहै अब तुम सत्य २ कहो कि तुमने भैं-सा खायाहै या नहीं यह सुनके उस वृद्धने कहा कि जब मेरा पिता मरगयाथा उसके तीनवर्ष पीछे मैं पैदा हुआ था उन्होंनेही मुझे यह सबचतुरता सिखाई है इससे मैं कभी झूंठ नहीं कहताहूं इसका भैंसा तो मैंने खायाहै परन्तु और सब इसकी बातें झूंठहैं यह सुनकर राजाने बहुतहँसके उन ग्रामीणोंको दंड दिया इस प्रकारसे मूर्ख लोग प्रकट करनेकी बातको छिपातेहैं और नहीं प्रकट करनेकी बातको प्रकटकर देतेहैं अब एक अन्यमूर्खकी कथा सुनिये कि किसी दरिद्रीमूर्ख से उसकी स्त्री ने कहा कि प्रातःकाल मेरे पिताके यहां उत्सवहै वहां मैं जाऊंगी इससे जो आप कमलोंकी माला मुझे न लादोगे तो आज से न मैं आपकी स्त्री न आप मेरे पति उसके यह वचन सुनके वहमूर्ख रात्रिके समय राजाके तालाबमें कमल तोड़नेको गया वहां रक्षकोंने उससे पूछा कि तुम कौनहो उसने कहा कि मैं चक्रवाकहूं यह सुन कर रक्षकलोग प्रातःकाल उसे बांधके राजा के पास लेगये राजाके पासभी जाके वह चक्रवाककासा शब्द करनेलगा तब राजाने उससे युक्ति पूर्व्वक सब वृत्तान्त पूछकर उसको मूर्खजानके छोड़दिया अब आप एक मूर्ख वैद्यकी कथा सुनिये किसी ब्राह्मणने किसी मूर्खवैद्य से कहा कि तुम मेरे पुत्रका कूबर बैठालदो यह सुनकर उस वैद्यने कहा कि तुम मुझे दशपैसे दो तो मैं इसका कूबर बैठालदूं और जो न बैठालदूं तो इसके दशगुने तुमको फेरदूंगा यह कहके उस वैद्यने दशपैसेलेकर कूबरके बैठानेमें बहुतसा उद्योग किया परन्तु वह न बैठा इससे उसने दशगुने पैसे फेरदिये इसप्रकार अशक्य कार्य्यकी प्रतिज्ञा करनेसे केवल हास्य तथा हानिही होतीहै इससे बुद्धिमान्को चाहिये कि ऐसी २ मूर्खतासे सदैवबचा

रहे गोमुखसे इन सब कथाओंको सुनकर शक्तियशाके लिये उत्कण्ठितभी नरवाहनदत्त अत्यन्त प्रसन्न होके अपने मंत्रियोंसमेत सोगया २३७॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशक्तियशोलंबकेषष्ठस्तरंगः ६॥

इसके उपरान्त प्रातःकाल उठकर नरवाहनदत्त शक्तियशाकी यादकरके बहुत व्याकुलहुआ विवाह के होने में दो चारही दिन बाकीथे कि वही दिन उसे युगके समान मालूमहुए गोमुखके द्वारा उसकी इस विकलताको सुनकर वत्सराजने अपने सम्पूर्ण मंत्री उसकेपास भेजदिये उन्हें देखकर इनके गौरव से नरवाहनदत्तके कुछ स्वस्थहोनेपर गोमुखने वसन्तकसेकहा कि हे आर्य्यवसंतक युवराजके मन बहलानेकेलिये कोई अपूर्वकथा कहिये उसके कहने से वसन्तक यहकथा कहनेलगा कि मालव देशमें बड़ा प्रसिद्ध एक श्रीधरनाम ब्राह्मणथा उसके दो पुत्रथे बड़े का नाम यशोधर और छोटेकानाम लक्ष्मीधर यह दोनों एकसाथही उत्पन्नहुए थे इसीसे इनकेरूपभी समानथे यहदोनों तरुणहोके विद्या उपार्जन करने के लिये परदेशको चले मार्गमें चलते २ जल तथा वृक्षों से रहित उष्णपृथ्वीवाले बड़े घोर वनमें पहुँचे उसवनमें धूप तथा तृषासे महा व्याकुलहोके वहदोनों कुछ दूर चलके सायंकालके समय एकबावड़ीपर पहुँचे उस बावड़ीके तटपर एक फलवान् सघनवृक्ष लगाथा उसवृक्षकेनीचे कुछ देरबैठके श्रमको दूरकरके उन दोनोंने उस बावड़ी में स्नानकिया और संध्यावन्दनकर उसीवृक्षके फलखाके बावड़ीका जलपिया फिर रात्रिहोजानेपर जीवोंकेभयसे वह दोनों उसी वृक्षपर चढ़केबैठे उससमय उसबावड़ी के जलमेंसे बहुतसे पुरुषनिकले उनमेंसे किसीने उस पृथ्वीपर बुहारीदी किसीने चौकादिया किसीने फूल बखेरे किसीने सुवर्णका पलँगलाकरबिछाया किसीने उसपलँगपर बिछौने बिछायें किसीने दिव्य भोजन किसीने दिव्य आभूषणलाके उसी वृक्षकेनीचे रक्खे और किसीने चन्दन तथा तैलादिक पदार्थ लाके रक्खे इसप्रकार सब सामग्रीके इकट्ठे होजानेपर एक दिव्य पुरुष हाथमें खड्गलियेहुए उस बावड़ीमेंसे निकला और आकरदिव्य आसनपर बैठा उसके शरीरमें चन्दनादि लगाके और सब आभूषण पहना के वह सब लोग बावड़ी में चलेगये उनके चलेजाने पर उस दिव्य पुरुषने अपने मुखसे सौभाग्यके आभूषण धारणकियेहुए एक साध्वी स्त्री और दिव्यवस्त्र तथा दिव्य आभूषण पहनेहुई दूसरी अत्यन्त सुन्दर स्त्री निकाली वह दोनों उसकी स्त्रीथीं परन्तु दूसरी उसे बहुत प्यारीथी मुख से निकलकर वह पहलीस्त्री अपने पतिके लिये तथा सपत्नीकेलिये सुवर्णके पात्रों में रखकर भोजनलाई वह दिव्य पुरुष उस दूसरी स्त्रीके साथ उन पदार्थोंको भोजन करके सुवर्णके पलँगपर उसे साथ लेकर लेटा और रति करके सोगया और वह पहलीस्त्री भोजन करके उसके पैरदाबनेलगी और वह दूसरी स्त्रीभी जागतीही रही यह देखकर उस वृक्षपर बैठेहुए वह दोनों ब्राह्मण यह सलाहकरके कि यह कौनहै यह बात इसपैर दाबनेवाली से पूछना चाहिये इसलिये वृक्षसे उतरकर उसके पासगये उसके पास उन्हें जाते देखकर उस दूसरी स्त्रीने अपने पतिके पाससे उठकर यशोधरसे कहा कि तुम मुझसे प्रसंगकरो यह सुनकर यशोधरने कहा कि तुमपरस्त्री हो मैं तुम्हारे साथ रमण नहीं करसक्ता तुमको ऐसा नहीकहना चाहिये

यह सुनकर वह फिर बोली कि इरोमत तुम सरीखे सौ पुरुषोंके साथ मैं रमण करचुकीहूं जो तुमको विश्वास न होय तो देखलो मेरे अंचलमें सौ अंगूठी बँधीहुई हैं जिस २ के साथ मैंने रमण कियाहै उस २ से एक २ अंगूठीलेली है यह कहकर उसने अपने अंचलसे खोलके सौ अंगूठी उसे दिखलादीं तब यशोधरने उससे कहा कि तुम सौकेसाथ अथवा लाखोंकेसाथ रमणकरो परन्तु मैं तुमको माताके समान जानताहूं मैं उन पुरुषोंकेसा कामान्ध नहींहूं इसप्रकार उसके निषेधको सुनकर उस पुंश्चलीने अपने पतिसे जगाकर कहा कि आपके सोजानेपर इस पुरुषने मेराधर्म नष्ट करदिया यह सुनके वह खड्गलेके उसे मारनेकेलिये चला तब पहली स्त्रीने उसके चरण पकड़कर उससे कहा कि आप व्यर्थ ब्रह्महत्या न कीजिये इसी पापिनने इससे रमणकरनेको कहाथा परन्तु इसने यह कहके कि तू मेरी माताहै इसका तिरस्कार किया तब इसने तुम्हें जगाकर इसे मरवानाचाहा इसने मेरे आगेही सौ अन्यपुरुषोंसे भोग कियाहै और सबसे एक २ अंगूठीलेली है और मैंने आपसे इसलिये कभी नहीं कहा कि शायद आप जानियेगा कि यह द्वेषसे कहरही है परन्तु आज आपको पापसे बचानेकेलिये मुझे कहनाही पड़ा जो आपको विश्वास न होय तो इसके आंचलमें अंगूठीबँधी हैं खोलकर देखलीजिये और मेरा यह सतीधर्म भी नहीं है जो मैं अपने पतिसे मिथ्या वचनकहूं अपने पतिव्रतापनके निश्चय करनेको मैं अपनाप्रभाव आपको दिखातीहूं यह कहकर उसने क्रोधकी दृष्टिसे देखकर वह वृक्षभस्मकरदिया और कृपाकी दृष्टिसे देखकर फिर हराकरदिया उसके इसप्रभावको देखकर उस दिव्य पुरुषने बहुत स्नेहसे उसेअपने हृदयमें लगालिया और उसदूसरीस्त्रीके आंचलमें अंगूठियां देखकर उसकीनाककाटकर निकाल बाहरकिया और यशोधरसे अपने अपराधोंकोक्षमाकराके कहा कि मैं ईर्ष्यासे इनदोनोंस्त्रियोंको हृदयमें रखकर इनकी रक्षाकरताथा इतने परभी इसपापिनकी मैं रक्षा न करसका (विद्युतंकःस्थिरीकुर्य्यात्कोरक्षेच्चपलांस्त्रियम्। साध्वीयदिपरंस्वेनशीलेनैकेनरक्ष्यते) बिजलीको कौन स्थिरकरसकाहै और चपलास्त्रीकी कौन रक्षाकर सकाहै केवल शीलही पतिव्रता साध्वीस्त्रीकी रक्षाकरताहै शीलवती स्त्री दोनोंलोकोंमें अपनेपति की रक्षाकरती है जैसे कि आज इसनेमेरी रक्षाकीहै इसीकी कृपासे आज पुंश्चलीकी संगति मुझसे छूटी और ब्रह्महत्याके महापातकसेभी मैं बचा यहकहकर उसनेयशोधर तथा लक्ष्मीधर दोनोंको बैठाकरपूछाकि तुम दोनों कहांसे आतेहो और कहांको जाओगे तब यशोधरने उससे अपना सबवृत्तान्त कहकर विश्वास पाके उससे पूछा कि हे महाभाग जो यह गुप्त बात न होय तो कहिये कि आप कौनहो और इसप्रकारके ऐश्वर्य्य होनेपर भी आपका जलमें निवास क्यों है यह सुनकर वह पुरुष बोला कि हिमालयके दक्षिण ओर कश्मीरनाम देशहै जिसे ब्रह्माने मानों मनुष्योंको स्वर्गका आनन्द दिखानेकेलिये बनाया है जिसमें कैलाश तथा श्वेतद्वीपके सुखको भूलकर श्रीशिवजी तथा विष्णुभगवान् सैकड़ों स्थानोंमें निवास करतेहैं शूर तथा विद्वज्जनोंसे व्याप्त वितस्ताके जलसे महापवित्र जिसदेशको बल आदिक शत्रुरूप महादोषभी नहीं जीतसकेहैं ऐसे सुन्दर उसदेशमें मैं भवशर्मानाम एक ग्रामीण ब्राह्मणथा और मेरे दोस्त्रियांथीं एक समय जयनी भिक्षुकोंसे मेरी पहचान होगई इससे मैंने उनके शास्त्रमें कहाहुआ

उपोपण नाम नियम किया जब वह व्रतसमाप्त होनेवालाहुआ तो एक मेरी पापिन स्त्री हठपूर्व्वक मेरे साथ आकर सोरही और रात्रिके पिछलेपहर उठकर मैंने निद्रामें अज्ञान होकर उसके साथ रमणकिया इसीसे वह मेरा व्रत खण्डित होगया और मैं उसके प्रभावसे जलपुरुष हुआ यहां भी वही दोनों मेरी स्त्रियांहुई हैं जो मेरे शयनपर सोरहीथी वही पापिन पुंश्चलीहुई और दूसरी यह पतिव्रताहै उसखंडित व्रतका भी इतना प्रभावहै कि मुझे अपने पूर्व्व जन्मका स्मरणवनाहै और रात्रिके समय ऐसा ऐश्वर्य्य प्राप्त होताहै जो मैं उस व्रतको खंडित न करदेता तो मुझे यह जन्म नहीं प्राप्तहोता इसप्रकार अपना वृत्तान्त कहकर उसने उन दोनों भाइयोंका बड़ा सत्कारकिया और स्वादिष्ठ भोजन कराके दिव्यवस्त्र उनको दिये तदनन्तर उस पतिव्रतास्त्री ने चन्द्रमाकी ओर देख प्रणाम करके कहा कि हे लोकपालो जो मैं सत्य २ पतिव्रताहूं तो मेरापति जलवास से छूटकर स्वर्गकोजाय उसके इस प्रकार कहतेही आकाशसे विमान आया उसपर चढ़के वह दोनों स्त्री पुरुष स्वर्गको चलेगये ठीकहै (असाध्यंसत्यसाध्वीनांकिमस्तिहिजगत्त्रये) सच्ची पतिव्रताओं को त्रैलोक्य में क्या असाध्यहै इसआश्चर्य्य को देखकर वह दोनों भाई शेष रात्रिको वहां व्यतीत करके प्रातःकाल वहांसे चले और चलते २ निर्ज्जन वनमें सायंकालके समय एक वृक्षके निकट पहुंचे और वहां इधर उधर जलकी तलाश करनेलगे उस समय उस वृक्षसे उन्हें यह शब्द सुनाईदिया कि हे ब्राह्मण लोगो ठहरो आज मैं तुम्हारा अतिथि सत्कार करूंगा क्योंकि तुम हमारे अतिथि हो यह कहकर वह शब्द तो बन्द होगया और वहांपर एक दिव्य बावड़ी उत्पन्न होगई और दिव्य भोजन भी उसी के तटपर आगये उस आश्चर्य्य को देखकर उन दोनों भाइयों ने उस बावड़ी में स्नानकर सन्ध्योपासन करके उस भोजनको खाया और उसी वृक्ष के नीचे आकर विश्राम करनेका विचार किया इतने में एक सुन्दर पुरुष उस वृक्षपरसे उतरकर उन दोनों के पास आया और स्वागत पूछ के उनके निकट बैठा उसे प्रणाम करके उन दोनों भाइयों ने पूछा कि आप कौनहैं उसने कहा कि पूर्व्व जन्ममें मैं दीन ब्राह्मणथा भाग्यवशसे श्रवणों (जैनी साधू) के साथ मेरी संगति होगई उनके उपदेश से मैंने एक व्रत किया उस व्रत में किसी मूर्ख ने सायंकाल के समय मुझे भोजन करवादिया इससे उस व्रतके खण्डित होजाने के कारण मैं यक्ष होगया और जो वह व्रतपूराहोजाता तो मैं स्वर्ग में देवताहोता यहकहकर उसने उनदोनों से पूछा कि तुम कौनहो और किस निमित्त यहां आयेहो यहसुनकर यशोधरने उससे अपना सब वृत्तान्त कहदिया ७८ तब उसयक्षने उनसे फिर कहा कि जो तुम विद्या सीखनेको जातेहो तो मैं अपने प्रभावसे तुमको सम्पूर्ण दिये देताहूं परदेश जाकर क्याकरोगे विद्वानहोकर अपने घरजाओ यहकहकर उसने उनदोनोंको सब विद्या देदीं और उसके प्रभावसे वह दोनों अत्यन्त विद्वानहोगये तब उसने उनसे फिर कहा कि तुम दोनों से हम एकगुरुदक्षिणा मांगते हैं हमारे लिये एकदिन तुम दोनों मिलकर सत्य भाषण ब्रह्मचर्य्य देवताओंकी प्रदक्षिणा भिक्षुकों के समयमें भोजन मनका संयम और क्षमा इननियमों समेत उपवास करना और इनका फल हमको देदेना इसीसे मैं स्वर्गको चलाजाऊंगा यहसुनकर उनदोनों ने कहा कि

बहुत अच्छा हम ऐसाही करेंगे यह सुनकर वह यक्ष अन्तर्द्धान होगया और उनदोनों भाइयों ने वह रात्रि वहीं व्यतीतकरके प्रातःकाल वहां से चलके कईदिनों में अपने घरपर आकर अपने माता पिता को सब वृत्तान्त सुनाके यक्षका बताया हुआ व्रतकिया और उसकाफल उसको दिया उसफलको पाते ही वह यक्ष विमानपर चढके वहां आके उनसे बोला कि तुम दोनोंकी कृपासे मैं यक्षयोनि से छूटकर स्वर्गको जाताहूं तुमभी अपने लिये इसव्रतको करना इसके प्रभावसे तुमको इसलोकमें अक्षय धन प्राप्त होगा और अन्त में स्वर्गको चलेजाओगे यहकहके वहयक्ष चलागया और वह दोनों भाई यशोधर तथा लक्ष्मीधर उसव्रतको करके उसके प्रभावसे अक्षयधनपाके सुखपूर्व्वक रहनेलगे इसप्रकारसे औसर पाकर भी धर्म के नहीं त्यागकरनेवाले सत्पुरुषोंपर देवता लोग प्रसन्नहोकर उनके मनोरथों को सिद्ध करतेहैं वसन्तकसे इसअपूर्व्व कथाको सुनकर नरवाहनदत्त भोजनके समय मंत्रियों समेत अपने पिता के यहांगया और भोजनकरके वहीं मंत्रियो समेत दिनको व्यतीतकरके सायङ्कालको अपने मन्दिरमें आया वहां उसे प्रसन्नकरनेके लिये गोमुख उससे यहकथा कहनेलगा कि अपने यूथसे भ्रष्टहुआ वलीमुखनाम कोई वन्दर समुद्रके तटपर गूलरोंके वनमें रहताथा एकसमय गूलरखातेहुए उसवन्दरके हाथसे एकगूलर समुद्रमें गिरपड़ा उस गिरेहुए गूलरको वहीं तैरते हुए एक शिशुमारनाम जलके जीवने खालिया और उसके स्वादसे प्रसन्नहोके बड़ा मनोहर शब्द किया उसशब्दको सुनकर वन्दरने बहुत से फल उसको दिये इससे उनदोनों की परममित्रताहोगई तबसे वह शिशुमार नित्य दिवसभर समुद्रके तटपर वन्दरही के पास वृक्षके नीचे रहनेलगा और वन्दर उसे नित्य यथेच्छ गूलर के फल देनेलगा शिशुमारकी इसमित्रताको जानकर उसकी स्त्री ने दिनमें विरह को न सहकर उसकी मित्रता छुटाने के लिये यहकहदिया कि मैं एकअसाध्य रोगसे अत्यन्त पीड़ितहूं शिशुमारने पूंछा कि हे प्रिये तुम्हें जो रोगहुआहै उसकी क्या औषधहै यह सुनकर उसकी सखीने कहा कि इसे ऐसा रोगहुआहै जिसकी औषध तुमकर नहीं सक्ते तथापि मैं तुमसे कहतीहूं कि वन्दरके कलेजेके मांसके रसकेविना वह रोग नहीं जासक्ता उसके यह वचन सुनकर शिशुमारने शोचा कि मुझे वन्दरका कलेजा कहांसेमिले उस मित्र वन्दरके साथ तो मुझको द्रोहकरना उचित नहीं है अथवा उस मित्रकोलेकर मैं क्या करूंगा यह स्त्री तो मुझे प्राणोंसे भी अधिक प्यारी है यह शोचकर और अपनी स्त्री से यह कहके कि हे प्रिये मैं तेरे लिये पूरा वन्दरहीलियेआताहूं शिशुमार अपने मित्र वन्दरकेपासगया और प्रसंगपाकर उससे बोला कि हे मित्र अभीतक तुमने हमारा घर नहीं देखा है इससे आज तुम हमारे घरचलो तुम्हारी भावज तुमको बहुत दिनसे बुलाती है जो मित्र परस्पर एक दूसरेके घरमें साथ बैठकर भोजन नहींकरते हैं और अपनी स्त्रियों को छुपाते हैं उनकी मित्रता नहीं है कपटहै इसप्रकार कहकर वह उस वन्दरको जल में बुलाकर अपनी पीठपरचढाकर लेचला चलतेसमय उसे उदासीनसा देखकर वन्दरने पूछा कि हे मित्र आज तुम दुःखी क्यों होरहेहो यह सुनकर उस मूर्ख शिशुमारने उसे अपने आधीनजानकर कहा कि आज तुम्हारी भावी कुछ रोगग्रस्त है उसे पथ्यके लिये बन्दरका कलेजा चाहिये इसीलिये मुझे उदासीनताहै कि मैं

वन्दरका कलेजा कहांपाऊं यह सुनकर उस बुद्धिमान् वन्दर ने शोचा कि यह पापी इसीलिये मुझे लिये जाताहै देखो यह स्त्री के कहने में आकर मित्रको भी मारने के लिये उद्यतहोगया अथवा भूतग्रस्त लोग अपनेही दांतोंसे क्या अपने मांसको नहीं काटते हैं यह शोचकर उसने शिशुमार से कहा कि हे मित्र जो ऐसाहीथा तो तुमने इससे पहलेही क्यों न कहा कि जो मैं अपना कलेजा साथलियेआता वह तो गूलरकेवृक्षपरही रक्खा है यह सुनकर वह मूर्ख शिशुमार उससे यह कहकर कि तुम गूलरपरसे कलेजा लेआओ उसे समुद्रके तटपर लेआया वहां यमराजके समान उस शिशुमारसे छूटकर वह अपने वृक्षपर चढ़के शिशुमार से बोला कि हे मूर्ख चलाजा क्या कलेजा शरीरसे अलगहोताहै मैंने यह बहानाकरके तुमसे अपने प्राणबचायेहैं अब मैं तेरे पास नहीं आऊंगा क्या इस विषयपर तूने गधेकी कथा नहीं सुनीहै कि किसी वन में शृगालसमेत एक सिंहरहता था एकसमय शिकारखेलने को आयेहुए किसी राजा ने उस सिंहको शस्त्रों से बहुत घायलकिया और सिंह ने घायलहोके किसी गुफामें घुसकर अपने प्राणबचाये तदनन्तर उस राजा के चलेजानेपर शृगाल ने सिंहसे कहा कि अब गुफासे निकलकर आप अपना भोजनढूंढ़िये क्योंकि आपको भी क्षुधालगीहोगी और मैंभी भूखसे व्याकुलहोरहाहूं यह सुनकर उस सिंहने कहा हे मित्र मैं घावोंसे ऐसा पीड़ितहूं कि मुझे घूमनेकी सामर्थ्य नहीं है जो गधेके कान तथा उसका हृदय मुझेमिले तो शीघ्र मेरे घाव अच्छेहोजायँ और मेरे शरीर में भी बलआजाय इससे जो कहीं गधामिले तो लाओ यह सुनकर शृगाल गधा ढूंढ़नेको चला और किसी नदीके तटपर किसी धोबीके गधेको चरतेदेखकर बोला कि हे मित्र तुम दुर्बल क्यों हो उसने कहा कि रोज २ इस धोबीका भार ढोते २ मैं दुर्बलहोगयाहूं यह सुनकर उसने कहा कि यहां तुम दुःख क्यों भोगतेहो हमारेसाथ वनमें चलो वहां गधियों के साथ कोमल २ दूबचरके स्वर्ग के सुखोंको भोगकरना यह सुनकर वह गधा उसके साथ वन में सिंहकी गुफाके निकटगया उस गधे को देखकर सिंह ने गुफासे निकलकर पीछेसेआकर उसकी पीठपर पंजामारा वह पंजा उसकी पीठपर अच्छेप्रकार से न लगा इससे वह गधा भयभीतहोकर नदी के किनारेपर फिर भागआया और सिंह व्याकुलताकेकारण उसके पीछे न दौड़कर अपनी गुफामें चलागया तब शृगालने सिंहसे कहा कि जो तुम इस गधेको भी न मारसके तो अन्य जीवों के मारने में तुम्हारी क्या गतिहोगी यह सुनकर सिंहने कहा कि अब तुम जैसेबने तैसे उस गधेको फिर लेआओ मैं अभी से तैयारहोरहूंगा आतेही उसे मारडालूंगा उसके यह वचन सुनकर शृगालने फिर उस गधेके पासजाकर कहा कि तुम क्यों भागआये उसने कहा कि वहां किसी भयङ्कर जीव ने मुझेमाराथा उसीसे मैं भाग आया यह सुनकर शृगाल हँसकर बोला कि तुमको भ्रमहोरहा है वहां कोई भयङ्कर जीव नहीं रहताहै नहीं तो मैं महानिर्बल जीव वहां कैसे रहसकताथा इससे अब तुम वहीं मेरे साथ चलो उसके यह वचन सुनकर वह गधा उसके साथ वनमें सिंहकी गुफाके समीप फिर गया वहां पहुँचतेही सिंह गुफासे निकलकर उसे मारके और उसके मांसको नोचकर उसी शृगालको उसका रक्षक नियतकरके स्नान करनेको चलागया उसके चलेजानेपर शृगाल ने गधेका हृदय तथा कान खाडाले जब स्नानकरके

लौटे हुए सिंहने पूछा कि इसके कान और हृदय कहां हैं उसने कहा कि इसके कान और हृदय प-हलेही से न थे नहीं तो यह आपका पंजा खाकर भी फिर लौटकर क्यों आता यह सुनकर सिंहने उसके वचन सत्य मानकर गधेका मांस खाया और जो उससे बचा वह शृगालने खाया इस कथा को कहकर बन्दर ने फिर शिशुमार से कहा कि मैं उस गधे के समान अब फिर तुम्हारे पास कभी न आऊंगा उस बन्दरके यह वचन सुनकर वह शिशुमार अपनी मूर्खताका शोच करता हुआ अपने स्थान को च-लागया और बन्दरके साथ उसकी मित्रता के छूटजानेसे वह स्त्री स्वस्थ होगई इसप्रकार से बुद्धिमान् पुरुषको दुष्टोंपर विश्वास न करना चाहिये ठीक है (दुर्जने कृष्णसर्पे च कुतो विश्वासतस्सुखम्) दुष्टोंपर और काले सर्पपर विश्वास करनेवाले को सुख कैसे होसक्ता है ॥४५॥ इस कथाको कहके नरवाहनदत्तसे फिर गोमुखने कहा कि अब मैं फिर आपको मूर्खोंकी हास्यकारी कथा सुनाताहूं किसी निपुणगाने वालेने मधुरगीत गाकर किसी धनवान् को प्रसन्न किया तब उसने अपने खजानचीको बुलवाकर कहा कि इस गानेवाले को दो हजार रुपये दो यह सुनकर बहुत अच्छा कहके खजानची चलागया तदन-न्तर उस गानेवालेने खजानची से रुपये मांगे परन्तु उसने कुछ न दिया तब गानेवालेने उस धनवान् से आकर कहा कि वह रुपये नहीं देता है यह सुनकर वह बोला क्या तुमने मुझे रुपये दिये थे जो तुम को मैं रुपये दिलवाऊं क्षण भर गानकरके तुमने मेरे कानोंको सुख दियाथा इसीसे मैंने रुपया देना कह के तुम्हारे कानोंको भी सुख देदिया यह सुनकर वह गानेवाला निराश होकर भी हँसकर चलागया अब अन्य दो मूर्खशिष्यों की कथा सुनिये किसी गुरुके दो शिष्य थे उन दोनों में परस्पर शत्रुता रहती थी उनमें से एकतो गुरुके दक्षिण चरणको धोके नित्य मलताथा और दूसरा बायेंको एकदिन दक्षिण चरणका मलनेवाला शिष्य कहीं चलागया था इससे गुरुजीने बायें चरणके मलनेवाले शिष्यसे कहा कि आज तुम दक्षिण चरणको भी मलदो यहसुनकर उसने गुरुसे कहा कि यह मेरे शत्रुका पैरहै इसे में नहीं मलूंगा यह सुनकर गुरुने उससे बड़ा आग्रह किया तब उसने पत्थर लेकर गुरुका वह पैर तोड़-डाला इससे गुरुने हाहाकार शब्द मचाया उस शब्दको सुनकर बाहरसे लोगोंने आकर पीटना चाहा परन्तु गुरुने कृपाकरके उसे बचादिया दूसरेदिन दूसरे शिष्यने आकर गुरुसे पैरकी पीड़ाका वृत्तान्त पूछके महा क्रोधितहोके यह कहा कि क्या मैं उसके पैरको नहीं तोड़ूंगा यह कहकर उसने गुरुका बा-यां पैर भी तोड़डाला यह जानकर लोग उसे पीटनेलगे परन्तु गुरुने कृपाकरके उसे भी छुड़ादिया उन दोनोंका यह वृत्तान्त जिस किसीने सुना वह बहुत हँसा और उनके गुरुकी कृपालुताकी बड़ी प्रशंसाकी इस प्रकारसे आपसमें विरोधकरके मूर्खसेवक स्वामीके कार्य्यको नष्टकरते हैं और उनका कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता अब आप दो शिरवाले सर्पकी कथा सुनिये कि किसी सर्प के दो शिरथे उनमें से एकशिरमें तो नेत्रथे और पूंछ की ओर जो शिरथा वह अन्धाथा उन दोनों में सदैव ग्रहविवाद रहता था कि एक कहता था मैं मुख्य हूं और दूसरा कहता था कि मैं मुख्यहूं परन्तु सर्प अपने मुख्य शिरकी ओरको ही चलताथा एकदिन मार्गमें उस पूंछवाले शिरने एक काष्ठ पकड़लिया इससे सर्प

का चलना बन्दहोगया तब वहसर्प उसी शिरको बलवान् जानके उसी अंधेशिरकी ओर से चलने लगा इसीसे मार्गमें किसी जलतेहुए अग्निकुण्ड में गिरकर मरगया इस प्रकारसे जो कोई पुरुष गुणों का अन्तर नहीं जानते हैं वह हीनगुणके संगसे नष्टहोजातेहैं अब आप चांवल खानेवाले मूर्खकी कथा सुनिये कोई मूर्खपुरुष अपनी सुसरालगया था वहां उसने भात करनेके लिये रक्खेहुए चांवलोंमेंसे मुट्ठी भर चांवल मुखमेंभरलिये और उसीसमय सासके आजानेसे वह मूर्ख लज्जितहोके उनमुखके चांवलोंको न खासका और न डालसका इससे उसकी सासने उसके गाल फूलेहुए देखकर और उसे असाध्यहुआ जानकर रोगके सन्देहसे अपने पतिको बुलाके उसे दिखाया उसने भी देखकर किसी वैद्यको बुलाया वैद्यने आनकर उसके मुखको सूजाहुआ जानके उसके जावड़े चीरे तबइसने दुःखसे उसके मुखसे वह चांवल निकले यह देखकर सबलोग हँसने लगे इसप्रकारसे मूर्खलोग कुकार्य करते तो हैं परन्तु उसे छिपा नहीं सकेहैं अब मूर्ख बालकों की कथा सुनिये कुछेक अज्ञान बालक गौओं को दुहते देखकर एक गधी पकड़कर दुहनेलगे और सबके चित्तमें यह बात उत्पन्नहुई कि पहले मैं दूधपियूं पहले मैं दूध पीयूं परन्तु परिश्रम करनेपरभी उन्हें दूध नहीं मिला ठीकहै (अवस्तु निकृतक्लेशो मूर्खोयात्यवहास्यताम्) अवस्तुमें परिश्रम करनेसे मूर्खोंकी हँसी होती है अब एक अन्य मूर्खकी कथा सुनिये किसी ब्राह्मण ने सायंकालके समय अपने मूर्ख पुत्रसे कहा कि कल प्रातःकाल तुमको गांव जानाहोगा यह सुनकर वह अपने पितासे कार्यके बिना पूछेही प्रातःकाल गांवकोगया और व्यर्थ श्रमकरके सायंकालको लौटकर अपने पितासे बोला कि मैगांव होआया यह सुनके उसके पिताने कहा कि तुम्हारे जानेसे क्या कार्य सिद्धहुआ इसप्रकारसे मूर्खलोग व्यर्थ कार्य करके केवल दुःखही पाते हैं और कुछ कार्य सिद्ध नहीं होताहै इसीसे संसारमें उनकी हँसी होती है गोमुखसे इन शिक्षायुत कथाओंको सुनकर नरवाहनदत्त प्रसन्नहोके रात्रि अधिक व्यतीतहुई जानकर अपने मित्रों समेत शयन स्थानमें गया ॥ १६४ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशक्तियशोलम्बकेसप्तमस्तरंगः ७ ॥

इसके उपरान्त दूसरे दिन फिर रात्रिके समय शक्तियशा के लिये उत्कण्ठित नरवाहनदत्त से गोमुख यह कथा कहनेलगा कि किसी नगरमें देवशर्म्मा नाम एक ब्राह्मण रहताथा उसके देवदत्ता नाम बड़ी सुशील स्त्रीथी कुछ कालमें देवदत्ताके एकपुत्र उत्पन्नहुआ उसपुत्रके उत्पन्नहोनेसे दरिद्रीभी देवशर्म्माको एकबड़ी निधि मिलनेके समान प्रसन्नताहुई एकदिन सूतकके निवृत्तहोजाने पर वह स्त्री नदी स्नानकरनेकोगई और देवशर्म्मा उस बालककी रक्षाकरनेको घरमेंरहा इतनेही में राजाके यहांसे स्वस्तिवाचन करवानेके लिये एकचेरी उसके बुलाने कोआई तब वह एक नौलेको जिसे उसने बाल्यावस्थाहीसे पाला था बालककी रक्षाके लिये छोड़कर दक्षिणाके लोभसे चेरीके साथ राजाके यहां चलागया उसके चले जानेपर एक काला सर्प अकस्मात् उस बालकके पासआया सर्पको देखकर नौलेने उसे मारडाला और क्षणभरके पीछेही देवशर्म्माको आते देखकर रुधिरसे भरेहुए मुखवाला वह नौला प्रसन्नतासे उसके पैरों पर लोटनेलगा देवशर्म्मा ने उस के मुखमें रुधिरभरा देखके यह जानकर कि यह मेरे बालकको मार

आयाहै उसे पत्थरसे कुचलकर मारडाला और भीतरजाकर बालकको सोताहुआ देखा और उसके पास ही नौलेका माराहुआ सर्प देखा यह देखकर उसके चित्तमें बड़ा दुःखहुआ और देवदत्ताने भी आके वह वृत्तान्त सुनके बहुत दुःखित होके कहा कि तुमने बिना विचारे उस उपकारी नौलेको क्यों मारडाला इस से हे स्वामी बुद्धिमान्को सहसा कोई कार्य न करडालना चाहिये सहसा कार्य करने से दोनों लोकों में दुःख होताहै और विधिपूर्वक कार्य न करनेसे उलटा फल होताहै जैसे कि किसीके शरीरमें वादीका रोगथा उसे वैद्यने औषध देकरकहा कि तुम घरमेंजाकर इनऔषधियोंकोपीसो मैंभी पीछेसे अभी आता हूं उसने घरमें जाकर वैद्यके आने में कुछ देर देखकर सब औषध पीसकर पीडालीं इस से वह व्याकुल होके मरनेसा लगा तब वैद्यने आके उसे वमनकराकेस्वस्थकिया और कहा कि हे मूर्ख बस्तिकी औषधी गुदामेंदीजाती है या पी जाती है तुमने मेरी प्रतीक्षा क्यों नहीं की इसप्रकारसे इष्टवस्तुभी अविधिसेकाम में लानेके हेतुसे अनिष्टफल देती है इससे बुद्धिमान्को चाहिये कि विधिपूर्वक सब कामकरे १६ विना विचारे कार्य करनेवालोंकी निन्दाहोती है इसपरभी मैं आपको एक कथा सुनाताहूं कोई मूर्ख पुरुष अपने पुत्रको साथ लेकर परदेशको चला मार्गके किसी वनमें उसका पुत्र कुछ दूर उससे अलग चलागया वहां रीछोंने उसे फाड़खाया तब उसने अपने किसी प्रकारसे प्राण बचाकर अपने पिताके पास आकर कहा कि मुझे फल खानेवाले बड़े २ बालवाले जीवोंने काट खायाहै यह सुनकर उसका पिता खड्ग लेके वनमेंगया और वहां फल तोड़तेहुए बड़े २ बालवाले तपस्वियोंके मारनेको उद्यतहुआ यह देखकर किसी पथिकने उससे कहा कि मेरे आगेही रीछने तुम्हारे पुत्रको काटखायाहै इन निरपराध विचारे मुनियोंको तुम मतमारो उसके इसप्रकार कहने से वह उस महापातक से निवृत्तहुआ इससे विना विचारे कोई भी कार्य न करना चाहिये मनुष्यको सदैव बुद्धिपूर्वक कार्य करनाचाहिये नहीं तो लोकमें उपहासहोता है कि किसी निर्धन पुरुषने मार्गमें अशर्फियों से भरीहुई एक थैलीपाई इससे प्रसन्नहोके वह मूर्ख वहीं बैठकर गिननेलगा इतनेमें जिसकी वह थैलीगिरीथी वह याद करके वहांआया और अपनी थैली उससे लेगया इससे वह दरिद्री मूर्ख उदासीन होके अपने घर चलाआया इसप्रकारसे मूर्खलोग प्राप्तहुएभी धन को क्षणभरमें गमा देते हैं द्वितीयाके चन्द्रमाके देखनेकी इच्छाकरतेहुए किसी मूर्खसे किसी पुरुषने कहा कि देखो मेरी उंगलीके सन्मुख चन्द्रमाहै यह सुनकर वह मूर्ख आकाशमें न देखकर उसीकी उंगलीमें देखनेलगा उसकी इस मूर्खतापर लोग बहुत हँसे बुद्धिके द्वारा असाध्य कार्यभी सिद्धहोते हैं इस बात पर मैं आपको एककथा सुनाताहूं कोई स्त्री अकेली किसी गांवको चली मार्ग में उसे किसी बन्दरने आ घेरा तब वह उस बन्दरसे बचनेके लिये एकवृक्षके इधर उधर घूमनेलगी यह देखकर उस मूर्ख बन्दर ने उस वृक्षको अपनी भुजाओंसे पकड़लिया उसकी इस मूर्खताको देखकर उसस्त्रीने उसके दोनों हाथपकड़ लिये इससे वह बन्दर पराधीन होकर अत्यन्त क्रोधितहुआ इतनेमें उसी मार्गसे आतेहुए किसी अहीर से उसस्त्रीने कहा कि हे महाभाग अगर तुम इस बन्दरके आकर हाथ पकड़लो तो मैं अपने वस्त्रसंभारलूं यह सुनकर उस अहीरने कहा कि तुम मेरे साथ रमणकरनेकोकहो तो मैं इसबन्दरके हाथ पकड़लूं उस

ने कहा कि बहुत अच्छा तुम इसबन्दरके हाथोंको पकड़ो मैं तुम्हारेसाथ रमण करूंगी यह कहकर उसने उस बन्दरके हाथ पकड़करके चक्कू निकालकर उसबन्दरको मारडाला और उस अहीर से कहा कि चलो एकान्त में चलें यह कहकर वह बहुत दूर अपने साथ उसे लेगई और जिस गांवको वह जाना चाहतीथी उसी गांव के रहनेवाले कुछ पुरुषों से मिलकर अपने गांवको चलीगई इसप्रकारसे उस स्त्री ने बुद्धिके द्वारा अपने धर्म्म की रक्षा करी इससे इस संसार में बुद्धिही मुख्य वस्तु है चाहै धन का दरिद्री होजाय परन्तु बुद्धिका दरिद्री नहीं होसक्ता अब हे स्वामी एकविचित्र कथा मैं आपको सुनाता हूं किसी नगर में घट और कर्परनाम दो चोर रहतेथे एकसमय रात्रि में कर्परघटको बाहर बैठाल के राजकन्याके महल में सेंधलगाकर गया वहां उसी समय जगीहुई राजकन्या ने उसे कोने में खड़ाहुआ देखकर काम से व्याकुलहोके उसी के साथ रमण किया और धन देके उससे कहा कि जो तुम फिर मेरे यहां आओगे तो मैं बहुतसा धन तुमको दूंगी तब कर्पर बाहर निकलकर घटको सबधन देके और उससे सब वृत्तान्त कहके फिर राजकन्याके पासगया ठीकहै (आकृष्टः कामलोभाभ्यामपायं को हि पश्यति) काम तथा लोभ के वशीभूत हुआ कौन मनुष्य परिणामको देखताहै वहां राजपुत्रीके पास जाकर कर्पर राजपुत्री के साथ फिर रमणकरके थककर उसीके पास सोगया और सोतेही सोते सबरात्रि व्यतीतहोगई प्रातःकाल पुर के रक्षक राजपुत्री के मंदिरमें सेंध देखके भीतरजाकर कर्परको बांधके राजाके पास लेगये राजाने क्रोध करके उसे फांसीकी आज्ञादेदी जब उसे राजाकेलोग मारनेके लिये लेचले तो मार्गमें मिलेहुए घटसे कर्परने एकइशारा करके कहा कि राजपुत्रीको राजमन्दिरसे लाकर अपने यहां रखलेना उसका आशय जानकर घटने भी इशारेसे कहदिया कि अच्छा मैं लेआऊंगा तदनन्तर वधिकोंने उसे लेजाके वृक्ष पर फांसीमें लटकाकर मारडाला और रात्रिके समय घटने अपनेघरसे राजपुत्रीके महलतक सुरंगखोद कर राजपुत्रीके महलमेंजाके बन्धनमें पड़ीहुई राजपुत्री से कहा कि तुम्हारेलिये जो आज कर्पर मारा गयाहै उसका मित्र मैं घटहूं उसीके वचनोंके अनुसार मैं तुमको लेनेके निमित्त यहां आयाहूं इससे तुम मेरे साथचलो यह सुनकर राजपुत्री प्रसन्नहोके उसके साथ चलनेको उद्यतहोगई तब घट उसकेबन्धन खोलके सुरंग के द्वारा उसे अपनेघर लेआया प्रातःकाल राजाने अपनी कन्याके कहीं चलेजाने का वृत्तान्त सुनकर सोचा कि उसपापी चोरका कोई साहसी मित्र अवश्यहै वही मेरी पुत्रीको हरलेगयाहै यह सोचकर राजाने कर्परके शरीरकी रक्षा करनेके लिये अपने सेवकोंको नियतकरदिया और उनसे कहदिया कि जो कोई पुरुष यहां शोककरके इसका दाहादिक करनेको आवे उसे बांधकर हमारेपासले आना उसीसे कुलमें दाग लगानेवाली उस कुलटापुत्रीका पतालगेगा राजाकी यह आज्ञापाकर सेवक लोग रात्रि दिन कर्परके शरीरकी रक्षा करनेलगे घटने इसबातको जानकर राजपुत्रीसे कहा कि हे प्रिये कर्पर मेरा बड़ा प्रियमित्रथा उसीके उद्योगसे अनेक प्रकारके रत्नोंसमेत तुम मुझको प्राप्तहुई हो उसके स्नेह से बिना अनृणहुए मेरे चित्तको शान्तिनहोगी इससे मैं युक्तिपूर्व्वक उसकेपास जाकर उसका शोककरूंगा और उसके शरीर को जलाके उसकी हड्डियां किसी तीर्थमें डालूंगा और इसबातपर तुम

किसीप्रकारका भयमतकरना क्योंकि मैं कर्परके समान मूर्ख नहीं हूं यह कहकर घट तपस्वीकासा भेष बनाके कर्पर (खपरा) में दही भातलेके पथिकके समान कर्परके शरीरकेपास गया और अकस्मात् गिरकर हाथसे उस खर्परको गिराकर हे अमृतसे भरेहुए खर्पर तुमकहांगये इत्यादि वचन कहकर रोने लगा रक्षकों ने उसकारुदन सुनकर यह जाना कि यह अपने खपरेकेलिये रोरहा है इससे कुछ उसके पकड़ने का विचार नहीकिया तदनन्तर घट क्षणभर शोककरके अपने घर चलाआया और राजपुत्रीके साथ आनन्द पूर्वकरहा दूसरे दिन अपने एक सेवकको स्त्रीकासाभेष बनाके और एक सेवकके शिरपर धतूरेमिलेहुए मिष्टान्नसे भराहुआ पात्ररखाके उनदोनों सेवकोंको साथलेके सायंकालकेसमय मतवाले ग्रामीणकासा भेष बनाके जहां कर्पर का शरीर था वहीं जानिकला उसे देखकर रक्षकों ने पूछा कि हे भाई तुम कौनहो और यह स्त्री तुम्हारी कौनहै और कहां जातेहो यह सुनकर उसने कहा कि मैं ग्रामीण पुरुषहूं यह मेरी स्त्री है इसे लेकर मैं अपने श्वशुरके यहां जारहाहूं यह भोजन मेरेसाथहै जो आपचाहैं तो आधा आप लोगखांय आधा मैं वहां लेजाऊँगा यह कहकर उसने वह मिष्टान्न निकालकर उन सब रक्षकोंको दिया उसके खातेही वह सब बेहोश होगये इससे रात्रिके समय कर्परके शरीरको जलाकर घट अपने घरको चलाआया प्रातःकाल राजाने यह खबरपाके उन मूर्ख सेवकों को निकालके अन्य सेवकोंको उसकी हड्डियों की रक्षाके निमित्त नियत करके कहा कि जो कोई इन हड्डियों को लेनेआवे उसे तुम पकड़कर हमारे पास लेआना और जो कोई तुम्हें कुछ खानेकोदे उसे कभी खानानहीं राजा की यह आज्ञापाके सेवक लोग रात्रि दिन बड़ी सावधानी से हड्डियोंकी रक्षा करनेलगे इस वृत्तान्तको सुनकर घट भगवती के मोहन मंत्रके जाननेवाले अपने मित्र संन्यासीको साथ लेकर कर्परके शरीरके पासगया और वहां उसके मंत्रके प्रभावसे रक्षकोंको मोहित कराके सब हड्डी वहांसे ले गंगाजीमें बहाके अपने घर आकर राजपुत्री के साथ सुख पूर्व्वक रहनेलगा राजाने इसवृत्तान्तको सुनकर जाना कि किसी योगीने यह सब कार्यकियाहै इससे उसने अपने सब नगरमें यह ढंढोरा पिटवाया कि जिस योगीने मेरी पुत्रीका हरण आदि सब विचित्र कर्म कियाहै वह मेरे पास आवे उसको मैं अपना आधा राज्यदूंगा इसढंढोरेको सुनके घटने राजाके पास जानाचाहा परन्तु राजपुत्री ने उसे न जानेदिया और उससे कहा कि छलकरके मारनेवाले इस राजापर तुम कभी विश्वास न करो उसके यह वचन सुनकर घटभेद खुलजाने के भयसे उस राजपुत्री तथा संन्यासीको साथ लेकर परदेशको चला मार्ग में राजपुत्री ने उस संन्यासी से एकान्तमें कहा कि पहले कर्परनाम चोरने मेरा धर्म नष्टकिया फिर उसके मरजानेपर यह मुझे लेआया इसपर मेरा कुछ स्नेह नहीं है इससे तुम मुझे स्वीकार करो यह कहके वह उस संन्यासी के साथ रमण करके घटको विषदेके मारकर उसी संन्यासी के साथचली मार्ग में रात्रिके समय एक धनदेव नाम वैश्य उसे मिला संन्यासी के सोजाने पर उससे वह राजपुत्री बोली कि इस अशुभ संन्यासीको लेकर मैं क्या करूंगी तुम मुझे स्वीकार करो यह कहकर वह उस सोतेहुए संन्यासीको त्यागकर उस वैश्यके साथ चलीगई प्रातःकाल उस संन्यासी ने राजपुत्रीको न देखकर मार्ग

हुई जानके यह शोचा कि (नस्नेहोस्तिनदाक्षिण्यं स्त्रीष्वहोचापलादृते) स्त्रियोंमें चपलताके सिवाय न स्नेह होताहै न सुशीलता होती है देखो यह पापिन मुझे विश्वास देकर भी सबधन लेकर भागगई अथवा यही बड़ा लाभहै कि जो उसने घटकेसमान मुझेभी नहीं मारडाला यह शोचकर वह संन्यासी अपने देशको चलागया और राजपुत्रीभी धनदेवके साथ उसके देशमें पहुँची वहां धनदेव यह शोच कर कि मैं इसपुंश्चलीको घर क्योंलेजाऊं सायंकाल के समय एक वृद्धास्त्री के घरगया और उस वृद्धा के यहां ठहरकर रात्रिके समय उससे बोला कि हे अम्ब तुम धनदेव वैश्यके घरकी कोई बात जानती हो यह सुनकर उसने कहा कि उसके यहां की बात क्या पूछतेहो उसकी स्त्री नित्य नवीन पुरुष के साथ रमण करती है एक चमड़ेकी पिटारी रस्सी में बंधीहुई उसकी खिड़की में लटका करती है उस पिटारीमें रात्रिके समय जो कोई पुरुष बैठजाय उसीको वह खैंचकर भीतर बुलालेती है और उसकेसाथ रमण करके पिछली रातमें उसको निकाल देती है वह मद्यसे ऐसी उन्मत्त रहती है कि ऊंच नीचका उसको जराभी विचार नहीं रहताहै उसका यह दुराचार सम्पूर्ण नगरमें प्रसिद्ध होगयाहै उसके पतिको गयेहुए बहुतदिन व्यतीत होगए हैं परन्तु अभीतक वह नहीं लौटा उस वृद्धाके यह बचनसुनकर वह वैश्य सन्देह युक्तहोकर अपने घरके निकटगया और वहां पिटारी लटकती हुई देखकर उसमें बैठगया उसे बैठादेखकर दासियोंने रस्सीखैंचकर उसे ऊपर चढ़ालिया वहां उसकी मदान्ध स्त्री ने आलिंगनकरके उसको शय्यापर लिटालिया उसके इस दुराचार को देखकर आलिंगन तथा चुम्बनादि करनेपर भी धन देवको रमण करनेकी इच्छा नहींहुई और वह स्त्री उन्मत्त होकर सोगई पिछली रातको दासियोंने उसे उसी पिटारी में बैठाकर उतारदिया तब उसने शोचा कि मुझे अब घरसे क्या प्रयोजनहै क्योंकि घरका मुख्य बन्धन स्त्री होतीहै और उसकी यहदशा है इससे मुझे अब बनजाना चाहिये यह शोचकर धनदेव उस राजकन्याको भी छोड़कर बनको चला १०९ मार्ग में बहुत दिनके पीछे परदेश से लौटेहुए रुद्र-सोमनाम ब्राह्मण के साथ धनदेवकी मित्रताहोगई रुद्रसोम धनदेवका सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनकर अपनी स्त्री पर सन्देह युक्त होकर उसीके साथ सायंकालके समय अपने ग्राम में पहुंचा वहां उसने नदीके तट पर अपने घरके निकट एक उन्मत्त अहीरको गाते देखकर उससे पूंछा कि हे गोपाल क्या कोई तरु-णी स्त्री तुम्हारे ऊपर अनुराग युक्त होगई है जिससे तुम संसारको तृणके समान जानके उसके उत्साह में ऐसे मदोन्मत्तहोगये हो यह सुनकर वह हँसकर बोला कि सुनो इसमें छिपानेही की क्या बातहै इस गांवके स्वामी बहुत दिनोंसे परदेशगयेहुए रुद्रसोमनाम ब्राह्मणकी स्त्रीसे मैं नित्यभोग किया करताहू उसकीदासी मुझे स्त्रीकासाभेष बनाकर उसकेपास लेजाती है उसगोपालके यहवचन सुनकर रुद्रसोमने तत्त्वजाननेकी इच्छासे अपने क्रोधको रोककर उससेकहा कि मैं तुम्हारा अतिथिहूं इससे अपनाभेष मुझे देदो तो आज तुम्हारेबदले मैंही उससे भोगकरके आनन्दभोगूं यहसुनकर उसनेकहा अच्छा तुम मेरा यह कालाकम्बल ओढ़के लाठीलेके यहां बैठो थोड़ीदेरमें उसकीदासी आकर तुमको मुझेही जानकर स्त्रीका-साभेष बनाकर उसकेपास लेजायगी आजकी रात्रि तुमही आनन्दकरो मैं विश्रामकरूंगा उस गोपालके

यहवचनसुनकर रुद्रसोम उससे कम्बल तथा लाठीलेके उसीकासाभेष बनाकर वहां बैठगया और वह अहीर धनदेवको साथ लेके कुछदूरपर अलग जाबैठा तदनन्तर दासी ने वहां आकर अन्धकार में रुद्रसोमको न पहचानके गोपालही जानके स्त्रियोंके वस्त्र पहनाकर उसे उसीके मकानमें लेगई वहां उसकी स्त्रीने उसे गोपजानकर उठके उसका आलिंगनकिया यह देखकर रुद्रसोमने शोचा कि दुष्टस्त्रियां निकटवर्त्ती नीचपरभी अनुरक्त होजाती हैं देखो यहपापिन पड़ोसी गोपके ऊपरभी अनुरक्तहोगई यह शोचकर वह कुछ वहानाकरके धनदेवके पासचलाआया और उससे अपने यहांका सम्पूर्ण वृत्तांत कहकर उसीकेसाथ वनको चला मार्गमें धनदेवका मित्र शशिमिला वह शशिप्रसंगसे उनदोनोंका वृत्तांतसुनकर तहखाने में भी वंदकीहुई अपनी स्त्री पर संदेह युक्तहुआ क्योंकि वह भी बहुतदिनोंकेउपरांत परदेशसे आयाथा उन दोनों मित्रोंके साथ वह शशि सायंकालके समय अपने ग्राममें पहुंचा वहां कुष्ठसे गलेहुए हाथ पैर तथा नखवाले एक पुरुषको शृंगारकरके गाते देखके शशिने उससे पूछा कि तुम कौनहो उसने कहा कि मैं कामदेवहूं यह सुनकर शशिने कहा कि इसमें क्या सन्देहहै तुम्हारारूपही कहेदेताहै कि तुम कामदेवहो यह सुनकर वह कुष्ठी फिर बोला कि इसग्रामका रहनेवाला एक शशिनामधूर्त्त ईर्ष्यासे अपनी स्त्रीको तहखानेमें बन्दकरके एकदासी उसके पास रखकर परदेशको चलागयाहै उसकी स्त्रीने मुझपर अनुरक्तहोकर अपना शरीर मुझे अर्पण करदियाहै उसकी दासीनित्य यहां आके मुझे अपनी पीठपर चढ़ाके उसके पास लेजाती है इससे बताओ मैं कामदेवसच्चाहूं कि नहीं क्योंकि कामदेवके विना शशिकी महारूपवती स्त्री किससे भोगकरसक्ती है यहसुनकर शशिने अपने दुःखको रोककर कहा कि सत्य २ तुम कामदेवहीहो मैं एक बात तुमसे मांगताहूं कि तुमसे उस स्त्रीकी प्रशंसा सुनकर मेरा भी चित्त उस स्त्रीपर चलायमान हुआहै इससे तुम अपनासा भेष बनाकर मुझे आज उसके पास जानेदो इसमें तुम्हारी कोई हानिभी नहीं है शशिके यहवचन सुनके उस कुष्ठी ने कहा कि अच्छा तुम मेरासा भेषबनाके लत्तोंसे हाथपैर बांधकर यहां बैठो जब खूब अन्धकार होजायगा तब उसकी दासी तुमको अपनी पीठपर चढाके वहां लेजायगी मैं पैरोंसेचल नहीं सक्ताहूं इसीसे रोज उसीकी पीठपरचढ़के वहां जाताहूं उस कुष्ठीके यह वचन सुनकर वह शशि उसीकासारूप बनाकर वहां बैठगया और वह कुष्ठी उसके दोनों मित्रोंको साथ लेकर वहांसे कुछ दूर एकस्थान में जाबैठा इसकेउपरान्त कुछ रात्रि व्यतीतहोजानेपर दासी वहां आकर शशिको कुष्ठीही जानके उसको अपनी पीठपर चढ़ाके उसकी स्त्रीके पास लेगई वहां अन्धकारमें शशिने शरीरके स्पर्शसे अपनी स्त्रीको पहचानकर अपने चित्तमें बड़ा खेदकिया और जब वह सोगई तब उठके अपने मित्रोंके पास चलाआया वहां आके उसने अपने मित्रों से कहा कि स्त्रियां दूरहीसे मनोहरहोती हैं नीचके साथ संसर्गकरनेमें इनको जराभी ग्लानि नहीं होती है यह बहुत थोड़ीसीही बातोंमें परायेआधीन होजाती हैं इससे इनकी रक्षाकरना अशक्यहै देखो तहखानेमें भी बन्द मेरीस्त्री इस कुष्ठीसे अनुरक्तहोगई इससे मैं भी तुम्हारेसाथ वनहीको चलूंगा घरमें अब क्याहै यह कहकर वह रात्रिभर उनदोनोंके साथ वहींरहा और प्रातःकाल उन्हींकेसाथ वनकोचला मार्ग

में चलते २ सायंकालके समय वहतीनों एक बावड़ीके किनारे किसी वृक्षकेनीचे पहुंचे और उसीबावड़ीमें स्नानकर कुछफल खाके उसी वृक्षपर चढ़के बैठे इतनेमें उनतीनोंने देखा कि कोईपथिक आकर उसवृक्ष के नीचे लेटा और क्षणभरमेंही एकपुरुष उस बावड़ीमेंसे निकलकर अपने मुखसे स्त्रीसमेत एक पलँग निकालके स्त्रीके साथ भोगविलास करके उसी पलँगपर सोगया उसके सोजानेपर उसस्त्रीने वहांसे उठ के उस सोतेहुए पथिकको जगाकर उसीके साथ रमणकिया रति करनेकेपीछे उस पथिकने उसस्त्री से पूछा कि तुम दोनों कौनहो यह सुनकर उसने कहा कि यह नागहै और मैं उसकी स्त्रीहूं तुमडरो मत मैं निन्नानवे पुरुषोंके साथ इसीप्रकारसे भोग करचुकीहूं आज तुम्हारे साथ भोग करनेसे सकड़ापूराहुआ उन दोनोंके इस वार्त्तालापको सुनके उस सर्पने जगकर उनदोनोंको अपने मुखके फूत्कारसे भस्मकरदिया इस प्रकार उन दोनोंको जलाकर उस सर्पके चलेजानेपर वह तीनों मित्र आपसमें कहने लगे कि जब शरीरके भीतरभी रक्खीहुई स्त्रियां कुकर्मिणी होजातीहैं तो घरमें जो स्त्रियां रहती हैं उन की क्या गणनाहै इन चपल स्त्रियोंको सर्वथा धिक्कार है इसप्रकार अनेक वार्त्तालाप करके वह तीनों रात्रिको वहां व्यतीत करके प्रातःकाल तपोवनमें जाके योगाभ्यासके द्वारा चित्तको स्थिरकरके सम्पूर्ण प्राणियोंपर समदृष्टिहोके समाधिमें निरुपम आनन्दका अनुभव करके तमोगुणसे रहितहोके मोक्षपदवी को प्राप्तहुए और उनकी स्त्रियां अपने पापोंके प्रभावसे अत्यन्त क्लेशयुक्त होकर नष्टहोगईं इस प्रकार से मोहके द्वारा स्त्रियों में उत्पन्न हुआ अनुराग किसको दुखदायी नहीं होता है और इन्हीं स्त्रियोंका त्याग करनेसे मोक्ष प्राप्तहोती है गोमुखसे इस कथा को सुनकर शक्तियशाके लिये उत्कंठित नरवाहनदत्त निद्राको प्राप्तहुआ १६४ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशक्तियशोलम्बकेअष्टमस्तरंगः ८॥

इसके उपरांत फिर दूसरेदिन रात्रिके समय नरवाहनदत्तका चित्त प्रसन्न करने के लिये गोमुख यह कथा कहने लगा कि किसी नगरमें एक धनवान् वैश्यका परमदयालु पुत्रथा उसकी माता मरगई थी इससे उसके पिताने अन्य स्त्रीमें आशक्तहोके उसी स्त्रीके कहने से उसपुत्रको उसकी स्त्रीसमेत अपने घरसे निकाल दिया और उसके छोटेभाई को भी उसीके साथ करदिया मार्ग में उसने अपने भाई को शान्तचित्त न देखकर अपने साथसे छोड़ दिया और क्रमसे चलते २ जल तथा वृक्षोंसे रहित मरुदेश के जंगलमें वह पहुँचा वहां उसने सात दिनतक अपनी स्त्रीको अपना मांस तथा रुधिरपिलाकर रक्षा की और उस पापिनने उसका रुधिर पीना तथा मांसखाना अंगीकार किया आठवेंदिन वह एक शीतलजल युक्त पहाड़ी नदीवाले और फल पुष्प तथा सघनवृक्षवाले वनमें पहुँचा वहां वह अपनी स्त्री को फल खिलाके तथा शीतलजल पिलाके उसी पहाड़ीनदीमें स्नान करनेको उतरा उस नदी में एक पुरुष जिसके चारों हाथपैर कटेहुएथे बहताहुआ चलाजाताथा उसे देखकर बहुत दिनसे उपवासकरने वाले उस दयालु वैश्यने नदी में तैरकर उसे निकाल लिया और किनारेपर उसे बैठालकर उससे पूछा कि हे भाई तुम्हारी ऐसी दशा किसनेकीहै यह सुनकर उसने कहा कि मेरे शत्रुओंने मेरे हाथपैर काट

कर मुझे नदी में डालदियाथा कि जिससे मैं क्लेशपाकर मरूं परन्तु आपने डूबतेहुए मेरे प्राण रखलिये उसके यह वचन सुनके वह कृपालु वणिकपुत्र उसके शरीर में पट्टी बांधके और उसको भोजन कराके आपभी उसी नदीमें स्नानकरके फल मूलखाके वहीं रहा और वहीं रहकर तप करनेलगा कुछ काल के उपरान्त उस घायल पुरुषके जब घाव भरआये तब एकदिन जब वह वैश्यका दयालु पुत्र फलमूल लेनेको गया तब उसकीस्त्रीने कामातुरहोके उस हाथपैर रहित रुण्डपुरुषके साथ रमण किया औरउस-सेही सलाह करके अपने पतिके मारनेकी इच्छाकरी दूसरे दिन उसने रोगका बहाना करके अपनेपति से कहा कि यहजो नदी में गढ़ाहै इसमें जो यह औषध दूरसे दिखाई देती है इस से मेरारोग दूरहोगा जो आप इसेलादें तो मेरे प्राणवचें यह वात स्वप्नमें मुझसे एक देवताने कही है यह सुनकर वह कृपा-लु किसी वृक्षमें रस्सी बांधके उस रस्सीके सहारे उसगढ़े में उतरा और उतरतेही उसकी स्त्रीने वहरस्सी तोड़दी इससे वह उसनदीके गढ़े में गिरकर वहते २ अपने पुण्योंके प्रभावसे किसी नगरके निकट नदीके किनारे लगगया और जलके बहनेके श्रमसे व्याकुलहोकर किसी वृक्षके नीचे अपनीस्त्रीके आचरणका ध्यान करताहुआ विश्राम करनेलगा उससमय उस देशका राजामरगयाथा राजाके मरनेपर उसदेशकी यह सनातन रीतिथी कि मंगलनाम हाथी फिरते२ जिसको अपनीसूंड़से उठाके अपनी पीठपर चढ़ालेवही राजा कियाजाताथा दैवयोगसे उसमंगलनाम हाथी ने भ्रमणकरते २ उसदयालु वैश्यपुत्रके पास आके उस-को अपनीसूंड़से उठाके अपनी पीठपरचढ़ालिया इससे सब नगरनिवासियोंने उसे लेजाकर राज्यदेदिया तब राज्यकोपाकर वह दयालु वैश्य चपल स्त्रियोंका संसर्गछोड़के दया तथा क्षमारूपी पवित्रस्त्रियोंकेसाथ धर्म से राज्यका पालनकरनेलगा इसवीचमें उसकी स्त्री उसे नदी में डूबकर मराजानके निश्शंक होके उस हाथ पैररहित रुण्डपुरुषको अपनी पीठपरचढ़ाके इधर उधर घूमनेलगी और यह कहकर भिक्षामांगने लगी कि शत्रुओं ने मेरे इस पतिके हाथ पैरकाटडाले और मैं पतिव्रताहूं इससे इसको पीठपरचढ़ाये डो-लतीहूं और भिक्षा मांगकर इसका पोषणकरतीहूं इसप्रकारसे वह नगरों में तथा ग्रामों में भिक्षामांगती हुई अपने पतिके नगरमेंगई वहां पुरवासियों से उसकी बड़ी प्रशंसा सुनकर राजा ने उसे अपने पासबुलाके और पहचानके उससे कहा कि तूही वह पतिव्रताहै यह सुनकर उसने उसे न पहचानकर कहा कि हे महाराज मैंही वह पतिव्रताहूं तब राजा ने हँसकर उससे कहा कि मैंने तेरा पतिव्रतापन देखा है तूने अपने पतिका रुधिर तथा मांसखाकरभी उससे स्नेह नहीं किया तू स्त्री नहीं है राक्षसी है मैं जानताहूं कि तू उसी पापसे इस रुण्डको अपनी पीठपर चढ़ाये २ फिरती है क्या वह तेरा पति न था जिसे तूने नदी में डालदिया था यह सुनकर वह अपने पति को पहचानकर भयभीतहोकर मूर्च्छितसी तसवीरमें लिखीसी तथा मरीसी होगई उसकी यह दशादेखकर मन्त्रियो ने राजा से पूछा कि हे स्वामी यह क्या बातहै मन्त्रियों के यह वचन सुनकर राजा ने अपना सब वृत्तान्त कहदिया उस वृत्तान्तको जानकर मन्त्रियों ने उसके नाक कान काटकर उसे देश से निकालदिया उससमय ब्रह्मा ने उस नकटी के साथ रुण्डका और राज्यलक्ष्मी के साथ उस कृपालु वैश्यका संयोगकराके संसार में सदृश समागम बतादिया

इसप्रकारसे विचार रहितहोकर नीचोंपर दयाकरनेवाले दैवके समान स्त्रियोंके चित्तकी गतिको कोई नहीं
जानता और इसीप्रकारसे अपने धर्मको नहीं त्यागनेवाले क्रोधको जीतनेवाले सत्त्ववान् पुरुषोंपर
मानों कृपाकरके संपत्तियां प्रसन्नहोकर अपने आपही उनके पास आती हैं ४२ इस कथा को कहकर
गोमुख ने फिर नरवाहनदत्त से यह कथा कही कि किसी वन में बुद्ध के समान परमदयालु महासत्त्ववान्
एक तपस्वी कुटीवनाकर रहताथा वह वहां विपत्ति में पड़ेहुए प्राणियोंका तथा पिशाचोंका उद्धारकिया
करताथा और अन्य पथिकलोगोंको भी अपने प्रभावसे प्राप्तहुए जल तथा अन्नों से तृप्त किया करताथा
एकदिन परोपकार के निमित्त भ्रमण करतेहुए उस तपस्वी ने एक बड़ा कूप देखा और उसमें झांका उसे
झांकते देखकर उसमें से एक स्त्री ने कहा कि हे महात्मन् मैं स्त्री एकसिंह एक स्वर्णचूड़पक्षी
और एक सर्प हम चारों जीव रात्रिके समय इस कूप में गिरपड़े हैं इस महाक्लेश से आप हमारा उद्धार
कीजिये यह सुनकर तपस्वी ने कहा कि रात्रि के समय अन्धकार में स्त्रीका सिंहका तथा सर्पका गिरना
तो कूप में संभव है परन्तु यह पक्षी कैसे गिरा यह सुनकर उस स्त्री ने कहा कि यह बहेलिये के जाल में
फँसकर गिरा है यह सुनकर उस तपस्वी ने अपने तप के बल से उन सबको कूप से निकालना चाहा
परन्तु वह नहीं निकले और तपस्वी के तपकी शक्तिहीनहोगई तपकी हीनताको देखकर तपस्वी ने
अपने चित्त में जानलिया कि यह स्त्री पापिनहै क्योंकि इसके साथ सम्भाषणकरतेही मेरी सिद्धि नष्ट
होगई यह शोचकर उसने रस्सीडालकर उन सबको कूपसे निकाला और उस सिंहको सर्पको तथा
पक्षीको मनुष्यभाषा में स्तुतिकरते देखके उनसे पूछा कि तुम सबलोगोंका क्या वृत्तान्त है सत्य २ हमसे
कहो यहसुनकर सिंह बोला कि हमसबको अपने पूर्वजन्मका स्मरणहै और परस्पर हम वार्ताकरनेवाले
हैं अब क्रमसे हमसबका वृत्तान्त सुनिये यहकहकर वह सिंह अपना वृत्तान्त कहनेलगा कि हिमालयमें
वैडूर्यशृङ्ग नाम बड़ासुन्दर पुरहै उस पुरमें विद्याधरोंका पद्मवेगनाम राजाहै उस पद्मवेगके वज्रवेगनाम
पुत्रथा वह वज्रवेग अत्यन्त अभिमानीहोकर शूरता के मदसे सबके साथ विरोधकिया करताथा उसके
पिताने उसे बहुतसा समझाया परन्तु उस मूर्ख ने उसका कहना न माना इसी से उसने क्रोधसे उसे यह
शापदिया कि तू मृत्युलोकमें उत्पन्नहो शापसे वज्रवेगका सब अभिमान और विद्या नष्टहोगई तब उ
सने विनयपूर्वक अपने पितासे शापका अन्त पूछा उसे नम्रदेखकर पद्मवेगने ध्यानकरके उससे कहा
कि तुम पृथ्वी में किसी ब्राह्मण के यहां उत्पन्नहोके इसीप्रकार से अभिमानकरके पिताकेही शापसे सिंह
होकर कूपमेंगिरोगे तब कोई परमकृपालु महासत्त्ववान् तुमको कुएमें से निकालेगा उसका आपत्तिमें
प्रत्युपकार करके तुम इस शापसे छूटोगे इस शापान्तको सुनकर वज्रवेग मालव देशमें हरघोषनाम
ब्राह्मणका देवघोषनाम पुत्रहुआ और वहां भी शूरताके अभिमान से सबके साथ वैरकरनेलगा पिता
ने उसके अभिमान को देखकर उसे बहुत समझाया जब उसने न माना तब उसने क्रोध करके उसे
यह शाप दिया कि हे दुर्बुद्धे तू वन का सिंहहोजा हरघोष के इस शाप से देवघोष इस वन में सिंह
हुआ वह सिंह मैंहीहूं गतरात्रिको भ्रमण करतेहुए मैं इस कूपमें गिरपड़ा और आपने कृपाकरके मुझे

निकाला अब मैं जाता हूं जब आपपर कोई आपत्ति पड़ै तो आप मेरा स्मरण कीजियेगा तब आपका उपकार करके मैं इसी शापसे छूटूंगा यह कहकर उस सिंहके चलेजानेपर उस तपस्वी के पूंछने से वह सुवर्णचूड़ पक्षी अपना सब वृत्तान्त इसप्रकार कहनेलगा कि ७१ हिमाचल पर्व्वत पर विद्याधरों का वज्रदंष्ट्र नाम राजा है उसके लगातार पांच कन्या हुईं इससे उसने तपके द्वारा श्री शिवजीका आराधन करके रजतदंष्ट्र नाम अत्यन्त प्रिय पुत्र पाया और अत्यन्त स्नेहसे उसे बाल्यावस्थाही में सब विद्या सिखलादीं एक समय रजतदंष्ट्र अपनी बड़ी बहिन सोमप्रभाको भगवती के आगे झांझ बजाते देखकर उससे हठकरके झांझ मांगनेलगा और जब इसने नहीं दी तबहठसे झांझ छीनकर पक्षीके समान आकाशमें वह उड़गया यह देखकर सोमप्रभाने क्रोधकरके उसे यह शापदिया कि तू पक्षीके समान मेरी झांझ लेकर उड़गया है इससे तू स्वर्णचूड़ पक्षी होगा इस शापको सुनकर रजतदंष्ट्रने अपनी बहिन के चरणों में पड़कर उसको बहुत मनाया तब उसने कहा कि हे मूढ़ तू पक्षी होकर अन्धे कुएमें गिरेगा और कोई कृपालु महापुरुष तुझको निकालेगा उसका कुछ उपकार करके तू इस शापसे छूटेगा उसके इसप्रकार कहतेही वह रजतदंष्ट्र स्वर्णचूड़ पक्षी होगया था वह स्वर्णचूड़ मैंही हूं रात्रिके समय मैं इसकूप में गिरपड़ाथा सो आपने इससमय निकाला है अब मैं जाता हूं जब आपपर कोई आपत्ति आवे तब मेरा स्मरण करियेगा उससमय मैं आपका उपकार करके इसशापसे छूटूंगा यह कहकर उस पक्षी के भी चलेजानेपर उसदयालु तपस्वीसे सर्प अपना वृत्तान्त कहनेलगा कि कश्यपजी के आश्रममें मैं मुनिकुमारथा वहां एक मुनिकुमारके साथ मेरी परम मित्रताथी एकदिन उसमित्रके स्नान करने के लिये तड़ागमें जानेपर मैंने किनारेपर एक तीन फणका सर्प देखा और अपने मित्रको डरानेकेलिये सर्पको किनारे पर ही मंत्रके बलसे रोककर रक्खा क्षणभरमेंही वह मुनिपुत्र स्नान करके किनारेपर आया और एकाएकी उससर्प को देखकर मूर्छित होगया थोड़े कालमें जब उसकी मूर्छा जगी तब उसने अपने ध्यानके द्वारा यह जानकर कि इसनेही सर्पको रोकरक्खाथा क्रोधकरके मुझे यह शापदिया कि तुमभी इसीप्रकारके तीनफणवाले सर्पहोगे और विनय करनेसे यह शापका अन्त बताया कि जब तुम कुएमें गिरोगे और कोई कृपालु महात्मा तुमको निकालेगा तब उसका प्रत्युपकार करके इसशापसे तुम छूटोगे इसप्रकारसे हे दयालो मैं सर्प हुआ हूं आज भाग्यवशसे मुझ कुएमें गिरेहुए को आपने निकालाहै अब मैं जाताहूं जब आप मेरा स्मरण करोगे तब मैं आपका उपकार करके इसशापसे छूटूंगा यह कहकर सर्प के भी चलेजानेपर उस स्त्री ने अपना वृत्तान्त कहा कि मैं राजाके सेवक अत्यन्त शूर बड़े सुन्दर एक तरुण क्षत्रीकी स्त्री हूं पतिके इस प्रकार गुणवान होनेपर भी मैंने परपुरुषसे संग कियाथा मेरे इसकुकर्मको जानकर मेरे पतिने मुझे मारडालनेकी इच्छाकी सखी के द्वारा इसबातको जानकर मैं रात्रिके समय वनमें भाग आई और इस कुएमें गिरपड़ी इससमय आपने मुझे कुएसे निकाला है अब मैं जाकर आपकी कृपा से कहीं इस शरीरका पालन करूंगी ऐसा भी कोई दिन होगा जब मैं आपका प्रत्युपकार करूंगी यह कहकर वह कुलटा राजा गोत्रवर्द्धनके नगरमें जाकर राजाके सेवकोंसे परिचयकरके रानीकी दासी होगई और उस कुलटा के

साथ भाषण करनेसे उसतपस्वीकी सब सिद्धिनष्टहोगई इससे उसवनमें फल पुष्पआदि कोई वस्तु भी नहीं उत्पन्नहुई तब क्षुधा तथा तृषासे व्याकुलहोकर तपस्वी ने उस सिंहका स्मरणकिया स्मरण करतेही सिंहने आकर मृगमारकर उनकामांस उसतपस्वीको खिलाया और कुछदिन इसप्रकार सेवनकरके उस से कहा कि अब मेराशाप क्षीणहोगयाहै इससे मैं अपने लोकको जाताहूं यहकहकर सिंहरूपको त्यागके विद्याधर होकर मुनिसे आज्ञालेके वहअपने लोकको चलागया उसके चलेजानेपर तपस्वीने जीविकाके लिये उस स्वर्णचूड़पक्षीका स्मरणकिया स्मरण करतेही वह रत्नजटित आभूषणोंसे भरीहुई एक पिटारी लेकर उनके पास आया और बोला कि इस धनसे आपकी सदैवको जीविका होजायगी और मेरे शाप का अन्त भी अब होगया इससे मैं अपने लोकको जाताहूं यहकहके वह विद्याधर कुमार होकर अपने लोकको चलागया उसके चलेजानेपर वह तपस्वी उन रत्नोंको लेकर बेचने के लिये उसी नगरमें आया जहां वहस्त्री राजाकी रानीकी दासीहोगई थी वहां किसी वृद्धा ब्राह्मणीके यहां सम्पूर्ण आभूषणोंको रख कर जैसेही वह बाजारकोगया वैसेही वह स्त्री उसको मिली परस्पर वार्त्तालाप होनेपर स्त्रीने कहा कि मैं राजाकी रानीकी नौकरहूं और तपस्वी ने भी अपना सब वृत्तान्त कहकर उसे वृद्धाके स्थानपर लेजाकर वह सब आभूषण दिखादिये उन आभूषणोंको देखकर उस कुलटाने रानीसे जाकरकहा कि तुम्हारे जो आभूषण खोगयेथे उन्हें एकभिक्षुक लायाहै रानीने राजासेकहा राजाने सुनकर सेवकोंको भेजकर आभूषणों समेत तपस्वीको बँधवामँगवाया और उससे सब वृत्तान्त पूछकरसत्य २ जानकर भी सब आभूषणलेके उसे कैदखाने में डलवादिया बन्धनमें पड़कर तपस्वीने उस सर्पका स्मरण किया स्मरण करतेही सर्पने आकर उससे सब वृत्तान्त पूछके कहा कि मैं जाकर अपने शरीरसे इस राजाको शिरसे पैरतक लपेटताहूं जबतक तुम वहां आकर छोड़नेको न कहोगे तबतक मैं उसे नहीं छोडूंगा और तुमभी लोगों से कहना कि हम राजाको सर्पसे छुटवादेंगे इससे जबतुम राजाके पासआकर कहोगे कि राजाको छोड़ दे तब मैं राजाको छोड़दूंगा और इसके बदले राजा तुमको अपना आधाराज्यदेगा यह कहकर उससर्प ने जाके अपने शरीरसे राजाका सब शरीर लपेट लिया और अपने तीनों फण राजाके शिरपर रखदिये राजाकी यह दशा देखकर बड़ा हाहाकार मचगया कि सर्प राजाको काटना चाहताहै इसहाहाकार को सुनके तपस्वी ने कैदखाने के अधिकारी से कहा कि मैं राजाको सर्प से बचासक्ताहूं सेवकों के द्वारा राजाने इसबातको सुनकर तपस्वीको अपनेपास बुलाकरकहा कि जो तुम मुझे इससर्पसे छुटादोगे तो मैं तुमको अपना आधाराज्य देदूंगा इसमें मेरेमंत्री जामिनहैं राजाके यहवचन सुनकर तपस्वी ने सर्प से कहा कि तू राजाको शीघ्रही छोड़दे उसके कहतेही सर्पने राजाको छोड़दिया और राजाने अपना आधाराज्य तपस्वी के नामलिखदिया और वहसर्प मुनिकुमारहोकर सभामें अपना सबवृत्तान्त कहकर महर्षि कश्यपजी के आश्रमको चलागया इसप्रकार से पुण्यात्मा लोगोंको बीचमें चाहें क्लेशभी होय परन्तु अन्तमें शुभहोताहै और इसीप्रकारसे प्राण दानका उपकारभी दुष्टस्त्रियों के चित्तमें नहीं रहता है अन्य उपकारोंकी तो क्या गणना है १३० इस कथाको कहकर गोमुखने कहा कि अब मैं कुछ मूर्खोंको

कथा आपसे कहताहूं कि किसी मूर्ख जैनीभिक्षुकको मार्गमें कुत्तेने काटखाया इससे उसने शोचा कि मैं अपने स्थानमें जाकर सबलोगोंसे कहांतक बताऊंगा कि कुत्तेने मुझेकाटाहै और सबलोग मुझसे पूछेंगे कि तुम्हारी जंघामें क्याहुआ मुझे इसबातके बतानेमें बहुतसा समय व्यतीतकरना पड़ैगा इससे सबको यहबात एकही बारमें जतानेका उपायकरना चाहिये यह शोचकर उसने अपने स्थान में जाके मठीके ऊपर चढके एकतुरई बजाई उसशब्दको सुनकर सबभिक्षुक लोगोंने इकट्ठाहोकर उससे पूंछा कि असमयमें आप क्यों तुरई बजारहेहो यह सुनकर उसने सबसेकहा कि कुत्तेने मेरे पैरमें काटखायाहै मैं सबसे जुदा२ कहांतक कहता इसहेतुसे तुरई से मैंने सबको इकट्ठाकियाहै जिससे एकहीबार सबसे कहनापड़ा अब तुमसबलोग जानलो कि इसे कुत्तेनेकाटाहै यहकहकर उसने वहअपनापैर सबकोदिखादिया उसकी इस मूर्खताको देखकर सबभिक्षुक हँसनेलगे—अब एक अन्यमूर्खकी कथा सुनिये वाहीक देश का रहनेवाला एक महाधनवान् अत्यन्त लोभी मूर्खथा वह सदैव अपनी स्त्री समेत लवण रहित सत्तू खाताथा दूसरे अन्नका उसको स्वादभी नहीं मालूमथा एक दिन उसने भाग्यवशहोके अपनी स्त्री से कहा कि आज तुम मेरेलिये तस्मईबनाओ उसकी आज्ञापाके उसकी स्त्री खीर बनानेलगी और वह कृपणकोठरी के भीतरजाकर लेटरहा इसलिये कि कहीं कोई मित्र न आजाय कि उसको भी खीरखिलानी पड़े इतने में उसके एक धूर्त्त मित्र ने आकर उसकी स्त्री से कहा कि तुम्हारा पति कहां है यह सुनकर वह स्त्री कुछ उत्तर दिये विनाही भीतर जाकर अपने पति से बोली कि तुम्हारा मित्र आया है यह सुनकर उसने कहा कि अच्छा उसे बैठारहनेदे तू मेरे पैर पकड़कर रोदन कर और जो मेरा मित्र पूछे तो कहदेना कि मेरा पति मरगया है इस युक्तिसे जब यह चलाजायगा तो हम तुम दोनों मिलकर खीर खायँगे उसके यह वचन सुनकर वह स्त्री उसके पैरपकड़कर रोनेलगी रोदन सुनके वह धूर्त्त भीतर जाकर उससे पूछने लगा कि तू क्यों रोती है उसने कहा कि मेरा पति मरगया है यह सुनकर उसने शोचा कि अभी तो यह आनन्दमें बैठी खीर बनारही थी और अभी यह यहां आनकर रोनेलगी है मालूमहोता है कि इनदोनों ने मुझे पाहुन जानके अपनी खीर बचाने के लिये यह प्रपंचरचा है इस से मुझे यहां से नही जाना चाहिये यह शोचकर वहधूर्त्त वहां बैठकर हाय मित्र हाय मित्र कहने लगा रोदनको सुनकर उसके सम्पूर्ण बांधव आकर उसे मराहुआसा जानके श्मशान लेजाने के लिये उद्यत हुए तब उसकी स्त्री ने कानमें उससे धीरेसे कहा कि अब उठबैठो नहीं तो यह तुम्हें लेजाकर श्मशान में जला देंगे यहसुनकर वह धीरे से बोला कि यह धूर्त्त मेरी खीरखाना चाहता है इस से जबतक यह न जायगा तबतक मैं नहीं उठूंगा क्योंकि मुझे प्राणों सेभी अन्न अधिक प्यारा है तदनन्तर सब मित्र बांधवों ने उसे लेजाकर श्मशान में जलादिया परन्तु उसमूर्ख ने कुछ न कहा इसप्रकार से उसमूर्ख ने अपने प्राण तक देदिये परन्तु खीर न खानेदी अब आप अन्य मूर्खोंकी कथा सुनिये कि उज्जयिनी नगरी में कोईमूर्ख उपाध्याय रहताथा उसको रात्रिके समय मूसोंके उपद्रवसे निद्रा नहींआतीथी उसने अपनी यहव्यथा किसी मित्र से कही यहसुनकर उसके मित्रने कहा कि तुम बिल्ली कहींसे लाकर पालो

वहमूसोंको जव खाजायगी तव तुम्हारी व्यथादूर होजायगी उपाध्यायने कहा कि विल्ली कैसीहोती है और कहां रहतीहै मैने आजतक कभी नही देखीहै यहसुनकर वह मित्र वोला कि उसके कंजे नेत्र होतेहैं वर्णधुमैला होताहै और पीठपर रोयेंदार चमड़ाहोता है इसपहचानसे तुम विल्ली मंगवालो यहकहकर उसके चलेजानेपर उपाध्यायने अपने शिष्योंसे कहा कि तुमने विल्लीकी पहचान तो सुनहीलीहै कहीं से विल्ली ले आओ उपाध्यायकी आज्ञापाकर सव शिष्य इधर उधर विल्ली ढूंढ़नेलगे परन्तु विल्ली कहीं न मिली तव एककंजेनेत्रवाला तथा धुमैले वर्णवाला विद्यार्थी मृगचर्म ओढ़े हुए उनको मिला उसे सम्पूर्ण लक्षणोंसे युक्तहोनेके कारण विल्ली जानकर उपाध्यायके पास शिष्यलोग ले आये और उपाध्यायनेभी उसे अपने मित्रके वताये हुए लक्षण समेत देख विल्ली जानके अपने मठ में रखलिया वह विद्यार्थी उसी ब्राह्मणका शिष्यथा जिसने उपाध्यायको लक्षण वताये थे प्रातःकाल उसब्राह्मणने वहां आकर उसमठमें अपने विद्यार्थीको देखकर उनसवसे पूंछा कि इसे यहां कौनलायाहै यहसुनकर वहमूर्ख उपाध्याय तथा शिष्य वोले कि आपके वतायेहुए लक्षणोंके अनुसार यहविल्ली हम लायेहैं यहसुनकर वहब्राह्मण हँसकर वोला कि हे मूर्खो कहां तो मनुष्य और कहां पशुविल्ली उसके तो चारपैर होते हैं और पूंछभी होती है यहसुनकर उनमूर्खों ने उसविद्यार्थीको छोड़कर कहा कि अव आप जैसी विल्ली वताइयेगा वैसीही हम लावेंगे उनमूर्खोंके यहवचन सुनकर सव लोग वहुत हँसे ठीक है (अज्ञतानाम कस्येहनोपहासायजायते) मूर्खतासे किसकी हँसी नहीहोतीहै १७६ अव अन्य मूर्खोंकी कथा सुनिये कि किसी मठमें वहुतसे मूर्खोंका प्रधान एकमूर्ख रहताथा एकदिन उसने किसी धर्म्मशास्त्री से तड़ाग वनवानेका वड़ा माहात्म्य सुना इससे उसने अपने मठकेही निकट वड़ा सुन्दर तालाव वनवाया एक दिन वह अपना तालाव देखनेको गया वहां उसतालावकी सिड्ढी उसे खुदीहुई मालूमहुई इससे उसने दूसरे दिन फिर जाकरदेखा तो और भी अधिक खुदीहुई सिड्ढी देखी यहदेखकर उसने अपने चित्तमें कहा कि मैं प्रातःकालसे यहां आनकर देखूंगा कि कौन तालाव की सीढ़ियां तोड़जाताहै यहशोच कर वह दूसरे दिन जैसेही प्रातःकाल तालावके किनारे आनकर वैठा वैसेही एकवैल आकाशसे उतर कर अपने सींगोंसे सीढ़ियोंको खोदनेलगा उसे देखके उसने यहशोचकर कि यह दिव्य वैलहै इसके साथ मैं स्वर्ग को क्यों न चलाजाऊं उसकी पूंछ अपने हाथों से जाकर पकड़लीनी तव वह वैल उस मूर्ख समेत आकाश मार्ग से उड़कर कैलाशपर चलागया वहां मोदकादि दिव्य भोजनपाके वह मूर्ख कुछ दिन सुख पूर्व्वकरहा उस वैलको नित्य आतेजाते देखकर उस मूर्ख ने एकदिन भाग्य से मोहित होके अपने चित्त में शोचा कि इस वैलकी पूंछ पकड़कर मैं अपने भाई वन्धुओं से मिलआऊं और फिर इसकी पूंछ पकड़कर चलाआऊंगा यह शोचके वह वैलकी पूंछ पकड़कर पृथ्वीपर आया और अपने अन्य मूर्ख मित्रों से मिला उन सवने उससे पूछा कि तुम कहां गयेथे उसने अपना सव वृत्तान्त उनसे कहदिया उस आश्चर्य्यको सुनकर वह सव वोले कि हमें भी वहां लेजाकर मोदक खिलवाओ यह सुनकर वह उन सवको युक्ति वताकर तालावपर लेगया वहां जव वह वैल आया तव उसने उसकी

पूंछपकड़ली उसके पैर दूसरे मूर्खने पकड़लिये उसके दूसरेने इसी क्रमसे सबने एक २ के पैर पकड़ लिये इसप्रकारसे एक २ का पैर पकड़कर उन मूर्खोंने जंजीरसी बनाली इतने में वह बैल उन सब समेत बड़े वेगसे उड़कर आकाशमें चला मार्गमे बहुत दूर ऊपरजाके एक मूर्खने अपने प्रधान मूर्खसे कहा कि तुमने वहां कितने २ बड़े मोदक खायेथे यह सुनकर उस प्रधान मूर्खने बैलकी पूंछ छोड़कर हाथों से लड्डुओं का प्रमाण बताना चाहा इससे वह सब मूर्खों समेत पृथ्वी में गिरकर नष्टहोगया और बैल आकाशको चलागया उन मूर्खोंकी यह दशा देखकर सब लोगहँसे इसप्रकारसे मूर्ख लोगों के प्रश्नोत्तरों में भी दोषही उत्पन्न होताहै १९६ आकाशगामी मूर्खों की कथा आपने सुनी अब अन्य मूर्खकी कथा सुनिये कोई मूर्ख किसी स्थानकोजाते समय मार्ग भूलगया पूछनेपर लोगोंने उसे यह पता बताया कि नदी के किनारेपर जो वृक्ष दिखाई पड़ताहै इसके ऊपरके मार्गसे चलेजाओ यह सुनकर वह मूर्ख उस वृक्षपर चढ़गया और उसके ऊपरकी ऐसी पतली शाखापर पहुँचा कि वह शाखा भारसे एकाएकी झुक गई और वह उसी शाखाको पकड़कर नदीकी ओर लटकगया इतने में कोई महावत हाथी को जल पिलानेकेलिये उसी मार्गसे नदीपर आया महावतसे उस मूर्खने कहा कि हे महाशय तुम कृपा करके मुझे यहां से उतारलो यह सुनकर उस महावतने उसे उतारनेके लिये उसके पैर पकड़लिये इससे वह हाथी निकलगया और महावत उसके पैर पकड़े लटका रहगया तब उस मूर्ख ने महावतसे कहा कि जो तुमको गाना आताहो तो शीघ्रता से गाओ गान सुनकर जो कोई यहां आवेगा वही हम दोनों को उतारेगा उसके कहने से महावत ने ऐसा मधुर गान किया कि जिससे उस मूर्खने आनन्दसे मोहित होकर डालीको छोड़कर हाथसे तालदेनाचाहा इससे वह महावत समेत नदी में डूबकर मरगया मूर्खकी संगतिसे उस बिचारे महावतके भी प्राणगये ऐसेही मूर्ख की संगतसे किसीका कल्याण नहीं होता इस कथाको कहकर गोमुख नरवाहनदत्त से हिरण्याक्ष राजपुत्रकी कथा कहनेलगा कि सम्पूर्ण देशों के शिरोमणि कश्मीर देशमें विद्वान् तथा धर्म्मात्मा लोगों से युक्त एक हिरण्यपुर नाम नगरथा उसमें कनकाक्षनाम राजाथा उस राजाके श्रीशिवजी की आराधना से रत्नप्रभा रानी में उत्पन्नहुआ हिरण्याक्ष नाम एकपुत्रथा एकसमय गेंद खेलते २ हिरण्याक्षका गेंद मार्गमे आई हुई एकतपस्विनी के लगगया गेंदके लगनेपर क्रोधरहित उस तपस्विनी ने उससे कहा कि अभी से तुमको यौवनके मदसे जो इतना अभिमान है तो जब मृगांकलेखा नाम स्त्री को पाओगे तो तुम्हारी क्या दशाहोगी यह सुनकर हिरण्याक्ष ने अपना अपराध क्षमाकरवाके उससे कहा कि हे भगवति वह मृगांकलेखा कौन है उसे मुझे बताओ यह सुनकर वह तपस्विनी बोली कि हिमालयपर्व्वतपर विद्याधरों का शशितेज नाम राजाहै उसके मृगांकलेखा नाम अत्यन्त रूपवती कन्याहै जिसके रूपसे मोहितहुए विद्याधरोंको रात्रिभर निद्रा नहीं आती है वही तुम्हारे योग्य स्त्री है और तुम उसके योग्य पतिहो तपस्विनी के यह वचन सुनकर हिरण्याक्षने उससे कहा कि आप मुझे मृगांकलेखाके मिलनेका उपाय कृपाकरके बताओ यह सुनकर वह तपस्विनी फिर बोली कि मैं उसके पास जाकर तुम्हारी प्रशंसाकरूंगी और जब उसका चित्त तुमपर

अनुरक्त जानूंगी तब तुमको उसके पास लेजाऊंगी यह कहके वह तपस्विनी आकाश मार्ग्ग से हिमालय पर मृगांकलेखा के पासगई और वहां जाकर उसने उससे हिरण्याक्षकी ऐसी प्रशंसाकी जिसे सुनकर मृगांकलेखा ने अत्यन्त अनुरक्त होकर उससे कहा कि जो वह मुझे पति न मिला तो मेरा जन्म व्यर्थ है इसप्रकार से मृगांकलेखा को हिरण्याक्ष पर अनुरक्त कराके वह तपस्विनी उस दिनको वहीं व्यतीत करके रात्रि के समय भी मृगांकलेखाकेही पास रही यहां हिरण्याक्ष ने भी मृगांकलेखाकेही चिन्ता में दिन व्यतीत करके रात्रि के समय किसी प्रकारसे निद्रा युक्त होकर यह स्वप्न देखा कि साक्षात् भगवती श्रीपार्व्वतीजी उससे कहरही हैं कि हेपुत्र तुम विद्याधर हो मुनि के शापसे तुम्हारा मनुष्य जन्म हुआहै इस तपस्विनी के हाथ के स्पर्श से तुम शाप से छूटकर मृगांकलेखा को पाओगे इसमें कुछ चिन्ता मतकरना यह तुम्हारी पूर्व्वजन्मकी स्त्री है यह कहकर भगवती के अन्तर्द्धान होजानेपर हिरण्याक्ष उठके स्नान करके श्रीअमरेश्वर नाम शिवजी के मन्दिर में गया और वहां हाथ जोड़कर श्रीशिवजीके आगे बैठा इसबीचमें किसी प्रकारसे निद्राको प्राप्तहुई मृगांकलेखासे भी श्रीपार्वतीजीने स्वप्नमें कहा कि तपस्विनीके हाथके स्पर्शसे शापरहित हुए हिरण्याक्षको तुम शीघ्रही पाओगी कुछ चिन्ता न करो यह कहकर भगवतीके अन्तर्द्धान होजानेपर मृगांकलेखाने जगकर तपस्विनी से अपने स्वप्नका सब वृत्तान्त कहा इस स्वप्नको सुनकर वह तपस्विनी श्रीअमरेशनाम शिवजीके मन्दिर में आकर हिरण्याक्षसे बोली किहे पुत्र तुम विद्याधरोंके लोकको हमारेसाथ चलो और यह कहके उसकी भुजाओंको पकड़के उसे आकाशमार्गसे लेचली उसके हाथका स्पर्श होतेही हिरण्याक्ष विद्याधरों का राजाहोके शापके क्षीणहोजानेसे अपने पूर्वजन्मका स्मरण करके उस तपस्विनीसे बोला कि हिमालय पर्वतपर वज्रकूटनाम नगर में विद्याधरों का अमृततेजनाम मैं राजा हूं उल्लंघन से कुपितहुए एक मुनिने मुझको मनुष्यहोनेका शाप दियाथा और उसकी अवधि तुम्हारेहाथका स्पर्श बताया था जब मुनिके शापसे मैं मृत्युलोकमें मनुष्यहोगया तब मेरी स्त्री दुःखसे मरगई वही यह मृगांकलेखा है आज मैं तुम्हारी कृपासे उस शापसे छूटकर उसअपनीस्त्री को पाऊंगा इसप्रकार कहताहुआ वहअमृततेज तपस्विनीके साथ हिमालय पर्व्वतपर उपवनमें बैठीहुई मृगांकलेखाके पासगया वहां उस तपस्विनी से निवेदन कियेगये अमृततेजको देखकर मृगांकलेखा अत्यन्त प्रसन्नहुई और उसे देखकर अमृततेजभी अपनी खोईहुई निधिके प्राप्तहुएके समान अत्यन्त प्रसन्नहुआ तब उस तपस्विनीने मृगांकलेखासे कहा कि अब तुम अपने पितासे अपना सबमनोरथ जाकरकहो यहसुनकर मृगांकलेखाने अपनी सखी के द्वारा अपना सब वृत्तान्त अपने पितासे कहा सखीके वचन सुनकर शशितेज ने अमृततेजको बड़े आदरपूर्व्वक अपने मन्दिरमें लेजाके विधिपूर्व्वक मृगांकलेखाका विवाह उसके साथकर दिया क्योंकि पार्वतीजीने स्वप्नमे उसे भी यहआज्ञादेदी थी फिर विवाहके उपरान्त अमृततेज मृगांकलेखाको लेकर अपने वज्रकूटनाम नगरको चलागया और वहां उस तपस्विनी के द्वारा अपने पिता कनकाक्षको मृत्युलोकसे बुलवाकर बहुतसे रत्नादिदेके फिर मृत्युलोक में भेजकर मृगांकलेखाके साथ

अपने राज्यका सुख भोगनेलगा इस प्रकारसे पूर्वकर्मके अनुसार मनुष्योंको जो कुछ भावी है वह अवश्य होताहै विना यत्नकेही वड़े २ असाध्यकार्य्य भी सिद्धहोजातेहैं गोमुख से इस कथाको सुनकर शक्तियशाके लिये उत्कण्ठित नरवाहनदत्त शयनस्थानमें जाकर सोरहा २५६ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशक्तियशोलम्बकेनवमस्तरंगः ९ ॥

इसके उपरान्त दूसरे दिन रात्रिके समय नरवाहनदत्तके प्रसन्न करनेकेलिये गोमुख यहकथा कहने लगा कि धारेश्वरनाम शिवजीके सिद्धिक्षेत्रमें एक महामुनि अपने बहुतसे शिष्योंसमेत रहतेथे एक समय उसमुनिने अपने शिष्योंसे कहा कि तुम लोगोंमेंसे जिस किसीने कोई अपूर्व्वबात देखीहो अथवा सुनीहो सो कहे यह सुनकर एक शिष्यने कहा कि मैंने एक अपूर्व बातसुनी है उसको आपके आगे कहताहूं कि कश्मीर देशमें श्रीशिवजीके विजयनाम महाक्षेत्रमें एक बड़ा विद्याभिमानी संन्यासी रहताथा वह यह संकल्प करके कि मेरी कहीं पराजय नहो श्रीशिवजीको प्रणामकरके विवाद करने के लिये पाटलिपुत्र नगरको चला मार्गमें बहुतसी नदी पर्वत तथा बनोंको उल्लंघन करके वह एकवनमें थककर किसी वृक्षके नीचे विश्राम करनेलगा उसी समय एक धार्मिक पथिक एकदंड तथा कूंडी हाथ में लियेहुए उसी वृक्षके नीचे आकरबैठा उससे उस संन्यासीने पूछा कि तुम कहांसे आतेहो औरकहां को जाओगे यह सुनकर उस धार्मिकने कहा कि हेमित्र मैं पाटलिपुत्र नगरसे आयाहूं और कश्मीरदेशके संपूर्ण पंडितोंको वादमें जीतनेके लिये वहां जाताहूं उसके यह वचनसुनकर उस संन्यासीने यह शोचकर कि जो मैंने इसको यहां न जीता तो वहां जाकर वहां के बहुत से विद्वानों को कैसे जीतूंगा उससे कहा कि हे धार्म्मिक तुम्हारा कार्य्य बड़ा विपरीतहै कहां तो मोक्ष की इच्छा करनेवाले तुम धार्म्मिक और कहां वाद विवाद करना जो तुम बादके अभिमानरूपी बन्धनके द्वारा संसारसे मुक्त होना चाहते हो तो अग्निसे ऊष्माको और हिमसे शीतको दूरकरना चाहतेहो पत्थरकी नौका परचढकर समुद्रके पार जाना चाहतेहो और प्रज्वलित अग्निको वायुसे निवारण करना चाहतेहो ब्राह्मणोंका क्षमा क्षत्रियों का आपत्ति से रक्षाकरना मुक्तिचाहनेवालों का शम और राक्षसोंका कलह करना शीलहै इससे मुक्ति चाहनेवाले को सदैव शान्त तथा जितेन्द्री रहना चाहिये और सुख दुःखको त्यागकर संसार के क्लेशों से डरना चाहिये इससे तुम शान्तिरूपी कुठारके द्वारा संसाररूपी वृक्षको काटो वादके अभिमान रूपी जलसे उसकी जड़को न सींचो उसके यह वचनसुनकर वह धार्मिक उसे प्रणामकर आप मेरे गुरू हैं ऐसा कहके प्रसन्नता पूर्व्वक अपने पाटलिपुत्र नगरको लौटगया और वह संन्यासी उसीवृक्षके नीचे हँसताहुआ बैठारहा इतने में अपनी स्त्री के साथ वार्त्तालाप करतेहुए किसी यक्षका शब्द उसे सुनाई दिया उस यक्षने हास्य करके एक पुष्पोंकी माला अपनीस्त्री के मारी उसके लगतेही उसने अपनेको मृतकके समान बनालिया यह देखकर यक्षके सब सेवक रोनेलगे क्षणभरमें वह फिर जीनेसीलगी और नेत्र खोलकर यक्षकी ओर देखनेलगी तो उस यक्षने उससे पूछा कि इतने समयमें तुझे क्या दिखाई

दिया उसने मिथ्या बना करके मिथ्या उससे कहा कि आपकी मालाके लगतेही पाशको हाथमें लिये हुए जाज्वल्य नेत्रवाला बड़े २ लम्बे बालवाला एक महा भयंकर श्यामवर्ण पुरुष मुझे दिखाई दिया वह मुझे यमराजके मन्दिरमें लेगया तब वहां के अधिकारियों ने उसे धमकाकर मुझे छुड़वादिया उसके यह वचनसुनके वह यक्ष हँसकर बोला कि इन्द्रजालसे रहित स्त्रियोंकी कोई भी बात नहीं होती एक तो पुष्पों के लगने से मरनाही असम्भवहै दूसरे यमराजके लोकसे लौटना और भी असम्भवहै हे मूर्खे तूने तो इससमय पाटलिपुत्र नगरकी स्त्रियों का अनुकरण कियाहै उस नगरमें जो सिंहाक्षनाम राजाहै उसकी रानी एक समय मन्त्री सेनाधिपति पुरोहित तथा वैद्य इनसबकी स्त्रियोंको साथमें लेकर शुक्लपक्षकी त्रयोदशी के दिन उसी नगरके निकट विशाल मन्दिर में वर्त्तमान सरस्वतीके दर्शनकोगई वहांमार्ग में बहुतसे कुबड़े अन्धे तथा पंगुओं ने उन सब स्त्रियों से यह प्रार्थनाकी कि हम दीन रोगियोंको औषध दिलवाओ जिससे हम इस रोगसे छूटें (समुद्रलहरीलोलो विद्युत्स्फुटितभंगुरः। जीवलोकोह्ययंयात्रा त्सवक्षणसुन्दरः॥ तदसारेत्रसंसारे सारंदीनेषुयादया। कृपणेषुचयद्दानं गुणवान्कनजीवति॥ आढ्यस्य किंचदानेन सुहितस्याशनेनकिम्। किंचन्दनेनशीतालोः किंघनेनहिमागमे) समुद्रकी लहरों के समान चंचल बिजलीकी चमकके समान भंगहोनेवाला और यात्रादिक उत्सवों के समान क्षणभर सुन्दर यह संसारहै इससे इस असार संसार में दीनोंपर दयाकरना और दरिद्रियोंको दान देनाही सार है गुणवान्की जीविका तो सबकहींहोती है धनवान्को दानदेने से क्या तृप्तको भोजनसे क्या शीतयुक्तको चन्दनसे क्या और हेमन्तऋतुमें मेघोंसे क्या इससे हम दीनलोगोंपर दयाकरो उनके यह वचनसुनकर उनस्त्रियों ने परस्परमें कहा कि यहबहुत उचित कहते हैं इससे इनकी औषध अवश्य करवानी चाहिये यहकहकर वह सब स्त्रियां सरस्वतीजीका पूजनकरके उन रोगियों में से एक २ को अपने २ घर लेगई और अपने २ पतियों से कहकर उनकी औषध करवानेलगी और रात्रिदिन उन्हींकी चिन्तामें रहनेलगीं बहुत काल तक एकसाथ रहनेसे उनरोगियोंपर अनुरक्तहुई उनस्त्रियोंको ऐसा कामका वेगहुआ कि वहतन्मयहो-गईं और उन्हें यहभी विचार न रहा कि कहां तो यहदीन रोगी और कहां यह ऐश्वर्य्यवान् हमारे पति तब उनरोगियों के साथ रमणकरनेसे जो उनस्त्रियोंके नखक्षत तथा दन्तक्षतहोगये वह उनके राजा मंत्री सेनापति पुरोहित तथा वैद्य पतियोंने देखे और सन्देहयुक्तहोकर उनसबने परस्परमें यह बातकही तब राजाने उनसबसेकहा तुमलोग अभी ठहरजाओ पहले मैं अपनी रानीसे युक्तिपूर्व्वक पूछलूं यह कहके राजाने अपने मंदिरमें जाकर रानीसे स्नेह तथा भयदिखाकर पूछा कि तुम्हारा ओष्ठ किसनेकाटा और तुम्हारे स्तनों में किसने नखक्षतलगाये हैं सत्य २ कहो नहीं तो तुम्हारा कल्याण न होगा यह सुनकर रानीने बात बनाकरकहा कि यद्यपि कहनेके योग्य बातनहीं है तथापि मैं आपसे कहती हूं रात्रिकेसमय एक शंख चक्रधारी पुरुष दीवारमें से निकलकर मेरेसाथ भोगकिया करताहै और भोगकरके इसी दीवार में घुसजाताहै मेरे जिन अंगोंको चन्द्रमा और सूर्य्यने भी नहींदेखाहै उनकी वह नित्यदुर्दशा करता है आपके जीतेहीमें मेरी यह दुर्दशाहोतीहै रानीके वचन सुनकर राजा ने वैष्णवीमाया जानकर उसपर

विश्वास करलिया और अपने मंत्री आदिको से भी यह वृत्तान्त कह दिया राजाके यह वचन सुनकर वह मूर्खभी अपनी २ स्त्रियों का विष्णुभगवान् से भोगकरवाना जानकर चुपहो रहे इसप्रकार से पुंश्चली स्त्रियां असत्य बोलने में चतुरहोती हैं और मूर्खों को ठगती हैं मैं वैसा मूर्ख नहीं हूं ५२ यह कहकर यक्षने अपनी स्त्रीको लज्जित किया यक्षकी इस सब वार्त्तालापको सुनकर वृक्षके नीचेबैठे हुए संन्यासीनें हाथ जोडकर यक्षसे कहा कि हेभगवन् आपके आश्रममें आयाहुआ मै शरणागतहूं इससे मैंने जो आपकी वार्त्तालापको सुनाहै उसे क्षमाकीजियेगा उसके यह सत्य वचन सुनकर यक्षने उसके सत्य वचनो से प्रसन्न होकर कहा कि मै सर्व स्थानगत नाम यक्षहू मुझसे जो चाहो सो तुम वर मांगो मैं तुम्हारे ऊपर अत्यन्त प्रसन्नहूं यह सुनके संन्यासीने कहा कि आप अपनी इस स्त्रीपर क्रोध न कीजियेगा यही वरदान में मांगताहूं उसके यह गंभीर वचन सुनके यक्षने कहा कि अब मैं तुम्हारे ऊपर और भी अधिक प्रसन्नहूं इससे यह वर तो मैंने तुमको दिया अब अन्य वर मांगो यह सुनकर संन्यासी ने कहा कि जोआप प्रसन्नहैं तो मै अन्यवर यह मांगताहूं कि आजसे तुम दोनो मुझे अपना पुत्र करके मानो यह सुनकर वह यक्ष अपनी स्त्री समेत प्रकट होकर बोला कि हे पुत्र तुम हमारे पुत्र हीहो हमारी कृपासे तुम्हारे ऊपर कभी विपत्ति नही आवेगी और विवाद कलह तथा द्यूतमें सदैव तुम्हारी विजय होगी यह कहकर उस यक्षके अन्तर्द्धान होजानेपर यक्षको प्रणामकर उस रात्रिको वहीं व्यतीत करके उस संन्यासीने पाटलिपुत्र नगर मे आकर राजद्वारमे प्रतीहारके द्वारा राजा सिंहाक्ष से अपना आगमन कहलभेजा और प्रतीहारकेद्वारा राजाकी आज्ञापाके सभामें जाकर यक्षके माहात्म्य से वहांके सम्पूर्ण पण्डितोंको वाद विवादमें जीतलिया और फिर उनपर आक्षेप करके उनसे यह कहा कि दिवाल से निकलकर शंख चक्र गदा और पद्म धारी पुरुष दांतोंसे ओठकाटकर और नखोंसे स्तनो में क्षत देकर मेरे साथ भोग करके फिर उसी दीवारमें चला जाताहै यह क्या बातहै इसका उत्तर मे आपसे पूछताहूं यह सुनकर सब पण्डित कुछ तत्त्व न समझकर एक दूसरेका मुखदेखतेहुए निरुत्तर होगये तब राजा सिंहाक्षने उससे कहा कि यह जो आपने प्रश्न कियाहै इसका उत्तरभी आपही दो यह सुनकर उसने यक्षसे सुनाहुआ उसकी स्त्री का सब वृत्तान्त कहकर कहा कि मनुष्यको पापकी मूल स्त्रियोंका संग कदापि न करना चाहिये उसके यह वचनसुनके राजाने प्रसन्न होकर उसे अपना राज्य देना चाहा परन्तु संन्यासीने अपने देशके स्नेहसे राज्यलेना न चाहा तब राजाने उसे बहुतसे अमूल्य रत्नदिये उन रत्नोंको लेकर वह संन्यासी कश्मीर देशमें जाके यक्षकी कृपासे दीनता रहित होकर सुख पूर्व्वक रहनेलगा इस वृत्तान्त को कहके शिष्यने मुनिसे कहा कि मैंने उस संन्यासी हीके मुखसे यह सब बातेंसुनीहैं इस कथाको सुनकर वह मुनि अपने सब शिष्यों समेत बड़े प्रसन्नहुए यह कथा कहकर गोमुखने नरवाहनदत्त से कहा कि इसप्रकारसे कुकर्मिणी स्त्रियोंके चरित्र ब्रह्माके कार्य्योंके समान विचित्र होते हैं अब ग्यारहपुरुषोंके मारनेवाली स्त्रीकी कथा आपसुनिये मालवदेशमें एक कुटुंबी ग्रामीण ब्राह्मणरहताथा उसके तीनपुत्रोंके उपरान्त एककन्या उत्पन्नहुई उसकन्याके उत्पन्नहोतेही उसकी माता

ब्राह्मणकी स्त्री मरगई और दोचारदिनोंकेपीछे उसका पुत्रभी मरगया और बैलके मारनेसे उसका एक भाई भी मरगया इसीसे उसब्राह्मणने अपनी कन्याकानाम त्रिमारिका रक्खा जब समयपाकर वहकन्या युवतीहुई तब उसीगांवके रहनेवाले एक धनवान् ब्राह्मणने उस ब्राह्मणसे कहा कि इस कन्याका विवाह मेरे साथ करदे उसकी यह प्रार्थना सुनकर उसने अपनी कन्याका विवाह उस के साथ करदिया उस पतिके साथ वह त्रिमारिका कुछ दिन तकरही और थोड़ेही कालमें वह मरगया तब उसने किसी अन्य को अपनापति बनालिया वह भी थोड़ेही कालमें मरगया उसके पीछे यौवनसे उन्मत्त उस त्रिमारिका ने तीसरा पतिकिया वह भी थोड़ेही कालमें मरगया इस क्रमसे उसके दशपतिमरे तब लोगोंने हास्यसे उसकानाम दशमारिका रख दिया दश पतियों के मरनेके उपरान्त अन्यपति करनेकी उसकी इच्छा देखकर उसके पिताने लज्जितहोके उसे अपने घरमें रखलिया और अन्यपति न करनेदिया एकसमय उस ब्राह्मणके यहां एक सुन्दर युवापथिक पुरुष रात्रिभर रहनेकेलिये टिका उसे देखकर दशमारिकाका चित्त उसपर चलायमान हुआ और उस पथिककाभी चित्त दशमारिकापर चलायमान होगया तब काम-देवकी पीड़ासे लज्जारहितहोके दशमारिकाने अपने पितासे कहा कि हे तात अब एक इसपथिकको और मुझे अपना पतिबनालेने दीजिये जो यह भी न रहैगा तो फिर मैं संन्यासिनी होजाऊंगी यह सुनकर उस ब्राह्मणने कहा कि हे पुत्री ऐसामतकरो तुम्हारे दशपति मरचुकेहैं जो यह भी न रहैगा तो लोक में तुम्हारी बड़ी हँसी होगी यह सुनकर उस पथिक ने कहा कि मैं नहीं मरूंगा श्रीशिवजी की शपथ खाकर मैं कहताहूं कि मेरी भी दश स्त्रियां मरचुकी हैं इससे हम यह दोनों समान हैं उस प-थिकके यह वचन सुनकर सब गांवके रहनेवालों की सलाहसे दश मारिकाने उसे भी अपना पति ब-नाया थोड़े काल में वह भी शीतज्वर से मरगया तब वह व्याकुल होके गंगाजी के तटपर संन्यासिनी होगई इसकथाको सुनके हँसतेहुए नरवाहनदत्तसे गोमुखने यहकथाकही कि किसीग्राममें एक निर्धन कुटुम्बी रहताथा एक बधिया बैलही उसके पास धनथा निर्धनताके कारण वह कुटुम्ब समेत उपवास तक करजाताथा परन्तु बैलको नहीं वेचताथा एकसमय वह व्याकुलहोकर विन्ध्यवासिनी के मन्दिर में जाके निराहारहोकर तपकरने लगा तपसे प्रसन्नहोकर भगवती ने रात्रिके समय उसे यहस्वप्न दिया कि एक बैलही तुम्हारे पास सदैव धनरहैगा इससे उसी को बेचकर तुम सुखपूर्व्वकरहो स्वप्नमें यह भग-वतीकी आज्ञा पाके प्रातःकाल पारणकरके वह अपने घरको चलाआया फिर घरमें आकर वह तबभी बैलको न बेचसका कि ऐसा न होय कि मैं इसेभी बेचकर निपटही निर्धन होजाऊं तब उसके किसी मित्रने उससे स्वप्नमें हुई भगवतीकी आज्ञा सुनकर उसे समझानेके लिये कहा कि तुम्हारे पास एकही बैल धनरूप रहैगा इसको बेचकर तुम सदैव सुखसे रहो भगवती की इसआज्ञाका अर्थ तुम क्या नहीं समझेहो इसका तात्पर्य्य यहहै कि तुम इसबैलको बेचकर अपने कुटुम्बका पालनकरो तो तुमको अन्य बैल मिलजायगा उसेभी बेचकर फिर अपने कुटुम्बका पालनकरो इसीप्रकार सदैव तुमको बैल मिला करेंगे और तुम सुखसे रहोगे मित्रके यहवचन सुनकर उसग्रामीण ने वैसाही किया और सुखपूर्व्वक

उसका जन्म व्यतीतहुआ इसप्रकारसे सबको अपने २ सत्त्वके अनुसार फल मिलताहै इससे मनुष्यको सत्त्ववान् होनाचाहिये क्योंकि निस्सत्त्वके पास लक्ष्मी नहीं रहतीहै १०६ अब आप एकधूर्त्तकी कथा सुनिये दक्षिणदेशके किसी नगरमें पृथ्वीपति नाम एकराजाथा उसके राज्यमें एकमहाधूर्त्त रहताथा वह सदैव नगरवासियोंको ठगा करताथा एकदिन उसने शोचा कि ऐसी धूर्त्ततासे क्या प्रयोजनहै जिससे केवल भोजन मात्रही प्राप्तहोय ऐसा उपाय करनाचाहिये जिसमें बहुतसा धन मिले यह शोचकर वह धनवान् वणिये का सा भेषबनाकर राजद्वार में गया और प्रतीहारके द्वारा आज्ञा पाके राजा के समीप पहुँचकर भेटदेकर बोला कि हे स्वामी में एकान्त में एकबात आपसें कहना चाहताहूं राजा ने उसका सुन्दर भेष देख के उसे एकान्त में लेजाकर कहा कि कहो तब उसने कहा कि हे महाराज आप प्रति दिन सभा में सब के आगे एकान्त में मुझ से क्षणभर वार्त्तालाप किया करिये इससे में प्रति दिन आपको पांच सौ अशर्फी भेट दिया करूंगा और मेरी प्रार्थना कुछ नहीं है यह सुनकर राजाने शोचा कि इस में मेरी क्या हानि है यह मुझसे कुछ ले तो जायगाही नहीं और उलटी पांच सौ अशर्फी दे जायाकरेगा और धनवान् वैश्य के साथ वार्त्तालाप करने में किसी प्रकारकी लज्जा भी नहीं है इससे इसकी प्रार्थना स्वीकार करलेनी चाहिये यह विचारकर राजाने उससे कहा कि अच्छा ऐसाही करेंगे राजाकी यह आज्ञा पाकर वह धूर्त्त राजा को एकान्त में ले जाकर पांच सौ अशर्फी रोज देनेलगा इस से सम्पूर्ण नगर निवासी तथा अधिकारी लोग उसे राजा का परम स्नेही जानने लगे एक दिन उस धूर्त्त ने राजा के साथ वार्त्तालाप करते समय एक अधिकारी की ओर कईबार दृष्टिकरी इस से जब वह बाहर निकला तब उस अधिकारी ने उससे पूछा कि तुम मेरे ऊपर दृष्टि क्यों करते थे यह सुनकर उस ने कहा कि राजा तुम्हारे ऊपर बहुत कुपित हैं आज वह मुझसे कहते थे कि इस ने सब मेरा देश लूट खाया है इसी से में बारंबार तुम्हारी ओर देख रहाथा तुम डरो मत में राजा को समझा दूंगा यह सुनकर उस अधिकारीने हजार अशर्फी अपने घरसे लाकर उसेदीं दूसरे दिन उसधूर्त्त ने राजाके पाससे लौट कर उससे कहा कि मैंने राजाको समझा दिया है अब वह तुम्हारे ऊपर कुपित नहीं हैं अब तुम कभी मत डरना जब राजाको कुछ तुम्हारे ऊपर सन्देह होगा तब में उनको समझादूंगा इसप्रकार से उस धूर्त्त ने उस से तथा अन्य अधिकारियों से युक्तिपूर्वक इतना धन लिया कि पांचकरोड़ अशर्फी उस के पास होगईं तब उस ने एकान्त में राजा से कहा कि हे महाराज आप को पांचसौ अशर्फी नित्य देकर भी मैं ने आप की कृपासे पांच करोड़ अशर्फियां इकट्ठी कर लीनी आप यह सब अशर्फियां मुझसे ले-लीजिये क्योंकि इनमें मेरा क्याहै यह कहकर उसने सब अशर्फी राजाकी भेटकी राजाने उसके बहुत आग्रह करनेपर उसकी आधी अशर्फी लेलीं और प्रसन्नहोकर उसे अपना महामंत्री बनालिया इससे वह धूर्त्त महाधनवान् होगया इस प्रकारसे बुद्धिमान्लोग अन्याय से भी धन पैदा करते हैं और फल प्राप्तहोनेपर कुआं खुदवानेवाले के समान दोष रहितहोजातेहैं १२४ यह कथा कहकर गोमुखने नरवाहन-दत्त से कहा कि अब एक सुन्दरकथा में आपको और सुनाताहूं रत्नाकरनाम नगरमें शत्रुओंका जीत-

नेवाला परमप्रतापी बुद्धिप्रभनाम राजाथा उसके रत्नरेखानाम रानीमें उत्पन्नहुई हेमप्रभानाम सुन्दरक-न्याथी वह पूर्वजन्मकी विद्याधरीथी और शाप के कारण मनुष्यहुई थी इससे पूर्वजन्म में आकाश में चलनेके संसकारसे वह सदैव भूला भूलाकरतीथी बुद्धिप्रभने उसेबहुधा निषेध किया कि हेपुत्री बहुधा भूला मत भूलाकरो इससें गिरनेका बड़ाडर रहताहै परन्तु उसने नहीं माना इससे राजाने कुपितहोके उसके एक तमाचामारा इस अनादरसे कुपितहुई वह राजपुत्री विहारके बहानेसे उपवनमें जाके सेवको की दृष्टिबचाके किसी दूरवनमें चलीगई और वहां कुटी बनाके बनके फल मूल खाकर श्रीशिवजी का आराधन करनेलगी राजाबुद्धिप्रभने उसके चलेजाने का समाचार पाके बहुत दुखीहोके उसे ढुँढ़वाया परन्तु वह कहीं नहीं मिली कुछ कालमें राजा दुःखके न्यूनहोजानेपर चित्तके बहलानेके लिये शिकार खेलनेको गया और भ्रमण करते २ उसी वनमें पहुँचा जहां हेमप्रभा तपकर रही थी राजाने वहां एक कुटी देखकर किसी मुनिका आश्रम जानके उसके भीतर जाकर अपनी कन्याको तप करतेहुए देखा और वहभी राजाको देखकर उठके उसके पैरों पर गिरपड़ी राजाने उसे पैरोंपरसे उठाके अपने गले से लगाकर गोदमें बैठाल लिया बहुतकालके पीछे मिलनेके कारण वह दोनों ऐसे रोये कि जिस से वन के मृगभी रोनेसे लगे क्षणभर में राजा ने सावधान होकर हेमप्रभा से कहा कि हे पुत्री राज्य के सुख को त्यागकर तुम इस बनमें क्या करतीहो वनवासको छोड़कर अपनी माताके पास चलो यह सुनकर हेमप्रभाने उससे कहा कि हे तात भाग्याधीन मेरी बुद्धि ऐसी हुई है नहीं तो मेरी क्या शक्तिहै जो वन में रहकर तपकरूं इससे मैं इस तपके सुखको छोड़कर घर नहीं जाऊंगी उसके यह निश्चित वचन सुन-कर राजा ने उसके लिये वहीं एक बड़ा सुन्दर मन्दिर बनवादिया और अपने मन्त्रियों को यह आज्ञा देदी कि वन में हेमप्रभाके पास बहुतसा पक्वान्न तथा धन नित्य भेजाकरो जिस से वह नित्य अतिथि सत्कार कियाकरे राजाकी आज्ञा से मंत्री ऐसाही करनेलगे और हेमप्रभा आप फल मूल खाके उस धन तथा पक्वान्न से अतिथियों का पूजन करनेलगी एकसमय एक बाल ब्रह्मचारिणी संन्यासिनी उस के पास वहां आई उसका पूजनकरके हेमप्रभा ने उसके संन्यासलेनेका कारण उससे पूछा उसने कहा कि बाल्यावस्था में मैं अपने पिता के पैर दाबते २ ऊँघ गई इससे पिता ने कुपित होकर यह कहकर कि तू क्यों ऊँघती है मेरे एक लात मारी इसी कारण से मैं क्रोधित होकर संन्यासिनी होगई संन्या-सिनी के यह वचन सुनके हेमप्रभा ने उसे अपनेही समान जानकर अपने पास रख लिया एकसमय प्रातःकाल हेमप्रभाने उस संन्यासिनी से कहा कि आज स्वप्नमें मैं एक बड़ीनदी के पारजाकर श्वेत हाथीपर चढ़के एक ऊंचे से पर्व्वतपर गई और वहां श्रीशिवजी के दर्शनकरके वीणा बजाके उन के आगे गानकरनेलगी तदनन्तर एक दिव्य पुरुष मेरे पास आया उसे देखकर मैं तुम्हारे साथ आकाश को उड़गई इतना देखकर मैं जग पड़ी और रात्रि भी व्यतीत होगई इस स्वप्नको सुनकर उस संन्या-सिनी ने कहा कि हे सखी तुम शापके कारण उत्पन्नहुई कोई दिव्य स्त्रीहो अब तुम्हारे शापकी अवधि निकट आगई है यही बात इस स्वप्न से विदितहोती है सखी के यहवचन सुनकर हेमप्रभा बहुत प्रसन्नहुई

इसके उपरान्त श्रीसूर्य भगवान् के अच्छेप्रकार उदयहोनेपर घोड़े पर सवारहोके एक राजपुत्र वहां आया और तापसीरूप धारिणी हेमप्रभाको देखकर प्रसन्नहोके उसको वन्दनाकरके उसके पास बैठगया हेमप्रभा ने भी उसका बड़ा सत्कारकरके आसन देकर उससेपूछा कि हे महाभाग आप कौनहैं यहसुनकर राजपुत्रने कहा कि हे महाभागे प्रतापसेन नाम एक बड़ा पुण्यात्मा राजा है उस ने पुत्रके निमित्त श्रीशिवजी की बड़ी आराधनाकी इससे श्रीशिवजी ने प्रकटहोकर उससे कहा कि तुम्हारे विद्याधरका अवतार एक पुत्रहोगा और वह शाप के क्षीणहोनेपर अपने लोकको चलाजायगा दूसरे पुत्रसे तुम्हारा वंशचलेगा यह कहकर श्रीशिवजी के अन्तर्द्धान होजानेपर राजा ने उठके पारणकिया उसी राजाका बड़ा पुत्र लक्ष्मीसेन नाम मैंहूं मेरा सूरसेन नाम एक छोटा भाई है आज शिकार खेलनेको मैं आयाथा परन्तु घोड़ेके वेगसे यहां आगयाहूं यहकहकर उसने हेमप्रभासे उसका सबवृत्तान्त पूछा उसके पूछनेपर हेमप्रभा अपना सबवृत्तान्त कहकर एकाएकी अपने पूर्व्वजन्मका स्मरणकरके अत्यन्त प्रसन्नहोके बोली कि आपके दर्शनसे मुझे अपने पूर्व्वजन्मका स्मरण आगयाहै मैं अपनी इससखी समेत शापसे भ्रष्टहुई विद्याधरीहूं और तुमभी अपने मंत्रीसमेत शापसे च्युतहुए विद्याधरहो तुम मेरे पतिहो और तुम्हारामंत्री मेरी सखीका पतिहै अब मेरा और मेरी सखी का शाप क्षीणहोगया इससे मैं अपने लोक को जाती हूं वहीं आपका और मेरा समागमहोगा यह कहके दिव्य रूप धारण करके हेमप्रभा अपनी सखी समेत अपने लोकको आकाशमार्ग से चली गई इतने मे लक्ष्मीसेनका मन्त्री भी लक्ष्मीसेनको ढूंढताहुआ वहीं आया जैसेही लक्ष्मीसेन अपने मन्त्री से हेमप्रभाका वृत्तान्त कहनेलगा वैसेही हेमप्रभाका पिता राजा वुद्धिप्रभ हेमप्रभा के देखने के लिये वहांआया और हेमप्रभाको वहां न देखकर लक्ष्मीसेन से पूछनेलगा कि वह कहांगई तब लक्ष्मीसेनने जो कुछ देखाथा वह सब उससे कहदिया यहसुनके वुद्धिप्रभके बहुत उदासीन होनेपर मन्त्री समेत लक्ष्मीसेन अपने पूर्व्वजन्मका स्मरण करके आकाशमार्ग से अपने लोकको चलागया और वहां से हेमप्रभा को साथलेकर उसी वनमें खड़ेहुए वुद्धिप्रभके पास आके उसे समझाकर उसके नगरमे भेज के अपने पिता प्रतापसेनके पासगया और वहां अपने छोटे भाई सूरसेनको राज्य दिलवाकर पितासे आज्ञालेकर फ़िर हेमप्रभा समेत अपनेही लोक को चलागया और वहां हेमप्रभा तथा अपने मित्रोसमेत विद्याधरों के ऐश्वर्य्योंका सुखभोगनेलगा इसप्रकार गोमुख से कथाओं को सुनकर शक्तियशाके लिये उत्कण्ठितभी नरवाहनदत्त ने क्षण के समान रात्रि व्यतीत करदी इस रीतिसे एक मास व्यतीतकरके विवाहके दिन वत्सराज उदयन के पास बैठेहुए नरवाहनदत्त ने आकाशसे उतरतेहुए विद्याधरों को देखा उनमें अपनी कन्या शक्तियशाको लियेहुए विद्याधरों के स्वामी स्फटिकयशको देखकर नरवाहनदत्तने तथा वत्सराजने उसका वड़ा सत्कारकिया स्फटिकयशने भी अतिथि सत्कारको ग्रहणकरके अपनी सिद्धि के प्रभावसे वहीं वेदी उत्पन्नकरके बहुत से दिव्यरत्नों समेत अपनी शक्तियशा कन्या विधिपूर्व्वक संकल्पकरके नरवाहनदत्तको देदी उस शक्तियशाको पाकर नरवाहनदत्त ऐसा शोभितहुआ कि जैसे सूर्य्यकी द्युतिको पाकर कमल शोभितहोता है अपनी

कन्याका विवाहकरके स्फटिकयशके चलेजानेपर नरवाहनदत्त कौशाम्बीपुरी में शक्तियशासमेत सुख पूर्वक रहा १६३॥ इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशक्तियशोलम्बकेदशमस्तरंगः १०॥

शक्तियशानाम दशमा लम्बक समाप्त हुआ॥

वेलानामएकादशोलम्बकः॥

नमता शेषविघ्नौघ वारणं वारणाननं॥
कारणं सर्वसिद्धीनां दुरितार्णवतारणं १॥

इसप्रकार शक्तियशा को पाकर मदनमंचुका आदिक सम्पूर्ण रानियों के साथ विहार करताहुआ नरवाहनदत्त कौशाम्बीपुरीमें सुखपूर्वक रहनेलगा एकसमय उद्यानमें गयेहुए नरवाहनदत्त के पास दो परदेशी राजपुत्रआये अतिथि सत्कार ग्रहणकरके उनमें से एक नरवाहनदत्तसे बोला कि हे महाभाग वैशाखनामपुर के राजाकेपुत्र हमदोनों वैमात्रभाई हैं मेरानाम रुचिरदेव और इसकानाम पोतकहै मेरे पास एक जीविनीनाम हथिनी है और इसकेपास दो घोड़े हैं इसी निमित्त मेरा और इसका विवाद पड़ा है अर्थात मैं कहता हूं कि हथिनी अधिक वेगवती है और यह कहता है कि घोड़े अधिक वेगवाले हैं जो यह जीतेगा तो मैं अपनी हथिनी इसे देदूंगा और जो मैं जीतूंगा तो यह अपने दोनों घोड़े मुझे देदेगा यही हमदोनों का नियम है उनके वेगका भेद जाननेकेलिये आपके सिवाय और कोई समर्थ नहीं है इससे आप हमारे यहां चलकर उनकी परीक्षा कीजिये हम बहुत दूरसे आपकेपास इसी निमित्त आये हैं रुचिरदेवके इन वचनोंको स्वीकारकरके नरवाहनदत्त उन्हीं के बड़े वेगवान् रथपर चढ़के वैशाख पुरको गया वहां उसे देखकर पुरकी स्त्रियोंने कहा कि क्या यह रतिकेबिना नवीन कामहै अथवा जल में चलनेवाला दूसरा कलंकरहित चन्द्रमाहै अथवा ब्रह्माने सम्पूर्ण सतीस्त्रियोंके चित्त चलायमान करने के निमित्त कामदेव का यह पुरुषरूप बाण बनाया है इसप्रकार पुरकी स्त्रियोंसे वर्णन कियागया नरवाहनदत्त उसपुरके कामदेवके मन्दिरमें प्रथमगया और वहां कामदेवको प्रणामकरके क्षणभर मार्गके श्रमको दूर करके निकटवर्ती रुचिरदेव के मन्दिर में गया श्रेष्ठ घोड़े तथा हाथियों से युक्त अत्यन्त शोभायमान उस मन्दिरको देखकर अत्यन्त प्रसन्नहुए नरवाहनदत्त ने रुचिरदेव से कियेहुए सम्पूर्ण सत्कारों को ग्रहण करके रुचिरदेवकी बिना व्याहीहुई अत्यन्त रूपवती बहिन देखी उसे देखकर नरवाहनदत्त का चित्त उसपर ऐसा अनुरक्त हुआ कि वह अपने बान्धवों के विरह का क्लेश भूलगया और उस कन्या ने भी प्रेमपूर्वक फेंकीहुई प्रफुल्लित नीलकमलों की माला के समान अपनी दृष्टि से उसका स्वयम्वर किया जयेन्द्रसेना नाम उस कन्याको देखकर नरवाहनदत्त ऐसा कामसे पीड़ित हुआ

कि उसे रात्रिभर निद्रा नहीं आई दूसरे दिन रुचिरदेवकी हथिनीपर चढ़के नरवाहनदत्तने उसके वेग से पोतक के दोनों घोड़े जीतलिये इससे वह दोनों घोड़े रुचिरदेव को मिलगये, जैसेही उन घोड़ों को जीतकर नरवाहनदत्त रुचिरदेव के मन्दिर में जानेलगा वैसेही वत्सराज के भेजेहुए दूत ने पहुँच कर प्रणाम करके उससे कहा कि हे युवराज परिजनों के द्वारा महाराज उदयनने आपका यहां आना सुनकर मुझे आपके पास भेजाहै और यह कहाहै कि मुझसे विना पूंछेही तुम उपवन से इतनी दूर क्यों चलेआये हो मुझे वड़ा सन्देह होरहाहै इससे तुम शीघ्रही लौट आओ उस दूतके यह बचन सुनकर नरवाहनदत्त जयेन्द्रसेनाका ध्यान करके अत्यन्त सन्देह में पड़गया इतने में एक अत्यन्त प्रसन्न वैश्य दूरहीसे उसे प्रणाम करके निकट आकर बोला कि हे बीर तुम्हारी जयहोय हे पुष्पोंके धनुष से रहित कामदेव तुम्हारी जयहोय हे विद्याधरोंके भावी चक्रवर्त्ती आपकी जयहोय आप इस थोड़ीसी अवस्था मेंही अपने शत्रुओंको भयकारी होरहेहो आप थोड़ेही कालमें सम्पूर्ण विद्याधरोंको जीतकर उनके चक्रवर्त्ती होगे इसप्रकार स्तुति करतेहुए उस वैश्यका वड़ा सत्कार करके नरवाहनदत्तने उससे पूंछा कि तुम कौनहो यह सुनकर उसने कहा कि पृथ्वीकी आभूषणरूप लंपानाम नगरी में कुसुमसार नाम एक बड़ा धर्मात्मा धनवान् वैश्यथा श्रीशिवजी की आराधनासे उत्पन्नहुआ उसी कुसुमसार वैश्यका चन्द्रसार नाम मैं पुत्रहूं एक समय अपने बहुत से मित्रों के साथ मैं किसी देवमन्दिरमें उत्सव देखने के लिये गया वहां बहुतसे धनवानोंको दानकरते देखके मुझेदान करनेके निमित्त धनके उपार्जन करनेकी इच्छाहुई और अपने पिताके बहुतसे धनसे भी असन्तुष्ट होकर मैं जहाजपर चढ़के द्वीपान्तरको चला भाग्यके समान अनुकूल वायुसे प्रेरणा कियागया वहजहाज थोड़ेही दिनोंमें एकद्वीप में पहुंचगया वहाँ मुझे रत्नोंका बहुत बड़ा व्यवहार करतेदेखकर राजाने लोभसे मेरा सबधनलेकर मुझे कैदखानेमें डलवादिया वहाँ प्रेतोंके समान बहुत पापी कैदियोंके साथ मैंने कुछ कालतक नरककासा दुःख भोगा इतनेमें मेरे कुलके जाननेवाले वहीं के वसनेवाले एक वड़ेधनवान् वैश्यने मेरे लिये राजा से जाकर कहा कि हे स्वामी यह लम्पानगरी के निवासी महाधनवान् वैश्यका पुत्रहै इससे आप इस निरपराधी को छोड़दीजिये नहीं तो आपका वड़ा अपयश होगा उस वैश्यके इसप्रकार समझाने से राजा ने बन्धनसे छुटवा के मुझे अपने पास बुलवाकर बड़ा आदर करके मेरा सवधन देदिया तव उस राजा की कृपासे और उस मित्रवैश्यके आश्रयसे सुखपूर्व्वक रहकर मैं वहाँ वड़े २ व्यवहार करनेलगा एक समय वसन्तोत्सवकी यात्रा में मैंने शिखरनाम वैश्यकी अत्यन्त रूपवती कन्या देखी कामदेव के अभिमान के समुद्रकी लहरके समान उसे देखकर मेरा चित्त ऐसा चलायमान हुआ कि मैंने आप जाकर शिखर से कहा कि यह कन्या आप मुझे देदीजिये मेरे इस बचनको सुनके शिखर ने क्षणभर शोचकर यह कहा कि मैं इस कन्याको किसी विशेष कारण से अपने आप तो नहीं देसक्ताहूं इससे सिंहलद्वीपमें इसके मातामह के यहाँ मैं इसे भेजदेताहूं वहाँ जाकर तुम उनसे अपनी प्रार्थना करके इसके साथ विवाह करना मैं उनके पास ऐसा सन्देशा भेजदूंगा जिससे तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होजा-

यगा शिखरके यह वचन सुनकर मैं अपने घरको चलाआया और दूसरे दिन शिखरने अपनी कन्या को जहाजपर चढ़ाके सिंहलद्वीपको भेजा ५३ तदनन्तर जब मैं सिंहलद्वीप के जाने को उद्यत हुआ तो यह घोर समाचार सुनाईदिया कि शिखर वैश्यकी कन्या जिस जहाजपर बैठकर गईथी वह जहाज डूबगया और उस जहाज का कोई भी मनुष्य नहीं बचा इस समाचाररूपी वायु से मैं कम्पित होकर शोकरूपी समुद्र में डूबनेलगा फिर वृद्धलोगों के बहुत समझाने से चित्तमें ढाढ़स बांधकर मैं सिंहल द्वीपके जाने में उद्यतहुआ और अपना सबधन लेकर जहाजपर चढ़के समुद्रमें चला कुछदूर चलकर अकस्मात् महाघोर मेघोंसे आकाश आच्छादित होगया घोर मेह बरसनेलगा और प्रचंडवायु चलने लगी इससे मेरा जहाज डूबगया जहाजके सम्पूर्ण परिकर समेत डूब जानेपर एक बड़ाभारी काठ मुझे मिला वह काठ क्याथा मानों ब्रह्मा ने मुझे निरवलम्ब देखकर सहारे के लिये अपनी भुजा फैलाई थी उसीपर चढ़के मैं धीरे२ समुद्रके तटपर पहुंचा किनारेपर पहुंचकर मुझ दीनको एक सुवर्णका टुकड़ा पड़ाहुआ मिला उसे मैंने किसी निकटवर्ती ग्राममें बेचकर भोजन के पदार्थ तथा दो वस्त्र मोललिये उन वस्त्रों को पहनके और भोजन करके मार्ग को बिना जानेंही मैं इधर उधर घूमनेलगा घूमते२ एक स्थानमें मैंने बहुतसेबालूके शिवलिंगदेखे और वहीं एक अत्यन्त स्वरूपवतीकन्या श्रीशिवजीकापूजन करतीहुई देखी उसे देखकर मैंने शोचा कि मेरी प्रियाके सदृश यहकौनहै या मेरी प्रियाहीहोय अथवा वह नहीं है क्योंकि मेरे हीनभाग्य ऐसे नहीं हैं इसप्रकार शोचतेहुए मुझको दक्षिण नेत्रके फड़कने से निश्चयहुआ कि यह मेरी प्रियाहीहै यह निश्चय करके मैंने उससे पूछा कि हे सुन्दरी महलोंमें रहनेके योग्य तुम इसवनमें क्यों रहतीहो मेरे यहवचन सुनकर उसने कुछ उत्तर नहींदिया और मैं भी मुनियों के शापके भयसे लताओंकी कुंजमें जाकर उसे देखतारहा और वह भी शिवजीका पूजन करके मुझे देखतीहुई कहीं चलीगई उसके चलेजाने पर बिरह से अत्यन्त व्याकुल मैं रात्रि में चकवी चकवा के समान दीन होगया इसके उपरान्त क्षणभर में बालब्रह्मचारिणी सूर्य्य के समान तेजोवती तप से कृश शरीरवाली मतंगमुनि की दिव्यदृष्टिवाली यमुना नाम कन्या मेरे पास आई और कृपापूर्वक मुझसे बोली कि हे चन्द्रसार धैर्य्य धारणकरो और मेरे वचन सुनो कि शिखरनाम जो द्वीपान्तर में महाधनवान् वैश्यहै उसके जब अत्यन्त रूपवती कन्याहुई तो जिनरक्षित नाम एक ज्ञानी भिक्षुक ने उससे कहा कि तुम इस कन्याका स्वयं दान न करना उसी भिक्षुकके वचनको मानकर शिखर ने अपनी कन्याको उसके मातामहकेद्वारा तुम्हें देनेकेलिये सिंहलद्वीपको भेजा भाग्यवशसे मार्ग में जहाजके डूब जानेसे वहकन्या समुद्रकी लहरोंकेद्वारा समुद्रके तटपर बहकर आगई इतनेमेंमेरे पिता मतंगमुनि स्नान करनेको समुद्र के तटपरगये वहां मरीहुईसी उसकन्याको देखकर दया करके अपने आश्रम में लेआये और उसे सावधान करके मुझसे बोले कि हे यमुने इस कन्याकी तुम पालना करो और यह कन्या मुझे समुद्रकी वेला अर्थात् तटपर मिली है इससे इसका वेला नाम है अपने पिताकी यह आज्ञा पाके मैं उसकी पालना करतीरही और उसपर मेरा स्नेह अपनी पुत्री के समान होगया स्नेह के कारण

ब्रह्मचर्य्यसे हटकर मेरा चित्त संसारी बनाजारहाहै उसके नवीन यौवनको देखकर उसके विवाहके निमित्त मेरे चित्तमें सदैव सन्देह लगारहताहै इससे हे चन्द्रसार तुम चलकर उसके साथ विवाहकरो वह तुम्हारी पूर्व्वजन्मकी स्त्री है मैं ध्यानसे तुम्हारा यहां आगमन जानकर तुमको लिवानेकेलिये आईहूं तुम दोनों ने जो महाक्लेश उठायाहै वह अब सफलहोय यह अमृतके समान वचन मुझे सुनाकर भगवती यमुना मुझको अपने पिता मतंगके आश्रममें लेगई और वहां मतंग मुनिसे प्रार्थना करके उसने मेरा विवाह उस वेलाके साथ करवादिया इसप्रकार महाकष्टसे वेलाको पाकर मैं सुखपूर्व्वक उसके साथ उसी आश्रममें रहनेलगा एकसमय वेलाके साथ तड़ागमें जलक्रीड़ा करते २ मेरी छींटें स्नान करनेको आयेहुए मतंगमुनिपर पड़गई इससे मतंग मुनिने क्रोधितहोकर मुझे यह शापदिया कि तुम दोनोंका वियोग होगा उस शापको सुनके वेलाने मुनिके चरणोंपर गिरकर बड़ी प्रार्थनाकी इससे मतंगजीने ध्यानकरके यह शापका अन्तवताया कि हे चन्द्रसार जब विद्याधरोंके भावी चक्रवर्त्ती हथिनीके वेगसे घोड़ों के जीतनेवाले, महाबली नरवाहनदत्तको तुम देखोगे तब तुम्हारा यह शाप दूरहोगा यह कहके मतंग ऋषि स्नानकरके श्रीविष्णु भगवान्के दर्शनके निमित्त श्वेत द्वीपको चलेगये और यमुनाभी मुझे एकरत्न जटित आम्रका वृक्षदेकर और यह कहकर कि यह वृक्ष एक विद्याधरने श्रीशिवजी से पायाथा उससे बाल्यावस्था में अपने खेलने को मैंने लियाथा अब मैं यह तुम्हें देतीहूं, श्वेतद्वीपको चलीगई तदनन्तर मैं वनवासमें रहके महाविकल होकर स्वदेश जानेकेलिये अपनी स्त्रीको लेकर समुद्रके तटपर आया वहां किसी वैश्यके एक जहाजपर मैंने पहले अपनी स्त्रीको चढाया और उसे चढाके जैसेही मैं चढ़नेकोहुआ वैसेही वह जहाज वायुकेद्वारा बहुत दूर समुद्र में चलागया प्रियाके बहजाने से मुझे एकाएकी मूर्च्छाआगई इतने में वहां आयेहुए एक तपस्वी मुझे मूर्च्छित देखके कृपापूर्व्वक मेरे ऊपर जल छिड़ककर मुझे सावधानकर अपने आश्रममें लेगये और वहां मुझसे सब वृत्तान्त पूछकर उन्होंने मुझे बहुत धैर्य्यदिया वहां कुछ दिन रहकर जहाज के टूटनेसे किसी प्रकार समुद्र के तटपर आयेहुए एक मित्र वैश्य से मिलकर उसीके साथ अपनी प्रियाको ढूंढ़ताहुआ मैं अनेक देशोंको उल्लंघन करके इस वैशाखपुरमें आया यहां दूरसेही आपके दर्शन करके मेरा शाप छूटगया और जहाज में वैश्योंके साथ आईहुई मेरीप्रिया वेला मुझे मिलगई आपकी कृपासे यमुना के दियेहुए रत्नमय वृक्षसमेत वेला को पाकर मैं आपको प्रणाम करनेको आयाहूं और आपको प्रणाम करके अपने देशको जाताहूं इस प्रकार अपना वृत्तान्त कहके उस चन्द्रसार वैश्यके चलेजानेपर नरवाहनदत्तका प्रभाव देखके अत्यन्त प्रसन्नहुए रुचिरदेव ने अपनी बहिन के साथ उसका विवाहकर दिया और घोड़ेसमेत हथिनी उसे दे दिया उस नवीन स्त्री घोड़े तथा हथिनीको लेकर नरवाहनदत्त अपनी कौशाम्बी नगरी में आया और वत्सराजसे सबवृत्तान्तकहकर उनको प्रसन्नकरके अपनी मदनमंचुका आदि रानियों समेत सुखपूर्व्वक रहने लगा ११५॥ इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांवेलालम्बकेप्रथमस्तरंगः १॥

वेलानामग्यारहवांलम्बकसमाप्तहुआ ११॥

शशांकवतीनामद्वादशोलम्बकः॥

अथ्याद्वोविघ्नविध्वंस कीर्त्तिस्तंभमिवोत्क्षिपन्॥
कुरंगणपतिक्रीड़ा लीनभृंगाक्षरावलिम् १॥
अरागमपिरागाढ्य रचनाचतुरंपरम्॥
हरन्नवनवाश्चर्य्यं सर्गचित्रकरन्नुमः २॥
जितंस्मरशरैर्येषु पौष्पेष्वपिपतत्स्विह॥
वज्रादीन्यपिजायन्ते कुण्ठितान्येवतद्भृताम् ३॥

इस प्रकारसे अनेक स्त्रियोंको पाकर कौशाम्बीपुरी में सुखपूर्व्वक रहतेहुए नरवाहनदत्तको सम्पूर्ण स्त्रियों में से रानी मदनमंचुका ऐसी अधिक प्रियथी जैसी श्रीकृष्णजी को श्रीरुक्मिणी प्यारीथी एक समय रात्रिमें नरवाहनदत्तने स्वप्नमें देखा कि कोई रूपवती कन्या मुझे आकाशमार्ग से आकर उठाले गई उस स्वप्नको देखकर जब उसकी निद्राखुली तो उसने अपने को एक बड़े पर्वत के शिखरपर एक रत्नोंकी शिलापर लेटा देखा और उसी उठालेजाने वाली अत्यन्त रूपवती कन्याको अपने पास खड़ी हुई देखा उसे देखकर यह जानकर कि यही मुझेलाई है झूठमूठ सोतेहुएके समान कंवाकर उसने कहा कि हे प्रिये मदनमंचुके तुम कहाँ हो मेरा आलिंगनकरो यह सुनकर उस कन्याने मदनमंचुका का रूप धारण करके उसका आलिंगन किया तब नरवाहनदत्तने नेत्रखोल के अपनी प्रियाकीसी आकृति देखके वाहरे तेरे विज्ञान यह कहकर उसे गलेमें लगालिया यह सुनकर उस कन्याने लज्जा छोड़ के अपना स्वरूप धारण करके नरवाहनदत्तसे कहा कि आप मुझे ग्रहण कीजिये उसकी यह प्रार्थनासुन के नरवाहनदत्तने उससे गान्धर्व विवाह करलिया और उसीके साथ वहरात्रि व्यतीत करके प्रातःकाल युक्तिपूर्व्वक उसका वंश जानने के लिये उससे कहा कि हे प्रिये मैं तुम को एक अपूर्व्व कथा सुनाताहूं किसी तपोवनमें ब्रह्मसिद्धिनाम एक मुनि रहते थे उनके आश्रमके निकट किसी खोह में एक वृद्धा शृगाली रहती थी एकदिन उस शृगालीको भोजन के निमित्त निकलीहुई देखकर एक उन्मत्त हाथी उसके मारनेको उद्यतहुआ वह देखकर उस ज्ञानी मुनिने कृपाकरके उस शृगालीको हथिनी बना दिया उस हथिनी को देखकर हाथी वैर रहितहोकर उसपर अनुरक्तहोगया और वहभी मृत्युसे बचगई तदनन्तर उस हथिनी के साथ भ्रमण करताहुआ वह हाथी उसके निमित्त कमल लेनेके लिये एक तड़ागमें गया और उस तड़ागकी कीच में फँसकर वज्रसे कटेहुए पक्षवाले पर्व्वतके समान निश्चल होगया उसकी यह दशा देखकर वह हथिनी किसी दूसरे हाथी के साथ चलीगई इतने में उस हाथी की पहली हथिनी उसे ढूंढ़ती २ वहांआई और उसे फँसा देखकर आपभी उसके स्नेहसे उसी कीचमें जाकर फँसगई उस समय उसी मार्ग से अपने शिष्यों समेत आयेहुए ब्रह्मसिद्धिमुनिने कीचमें फँसेहुए

उन दोनोंको देखकर कृपाकरके अपने शिष्योंको महाबलदेकर उन दोनोंको उस कीचसे निकलवाया उन्हें निकलवाके मुनिके चलेजानेपर वह दोनो सुखपूर्व्वक वनमें विचरनेलगे इसप्रकारसे हे प्रिये श्रेष्ठ जातिवाले पशुभी अपने स्वामी को तथा मित्रको आपत्तिमें पड़ाहुआ देखकर छोड़ते नहीं है किन्तु आपत्तिसे निद्धारकरतेहैं और हीनजातिमें उत्पन्नहुए चंचलजीवों के चित्तमें सत्व तथा स्नेहकालेशभी नहीं होता ३० नरवाहनदत्तसे इसकथाको सुनके उसदिव्यस्त्रीने कहा कि आपका कहना ठीकहै इसमे कोई संदेहनहीं है और आपके इसकथाके कहनेका अभिप्रायभी मैंने जानलिया इससे आपभी मुझसे एककथा सुनिये कान्यकुब्जदेशमें बाहुशक्तिनामराजाका महामान्य सौग्रामोंका स्वामी एकशूरदत्तनाम ब्राह्मणरहताथा उसके वसुमतीनाम पतिव्रतास्त्रीथी उसवसुमतीमें शूरदत्तके वामदत्तनाम अत्यन्तसुशील पुत्र उत्पन्नहुआ वह वामदत्त थोड़ेहीकालमे संपूर्ण विद्याओंको सीखकर किसी ब्राह्मणकी शशिप्रभा नाम कन्यामे अपना विवाह करके अपने पिताकी आज्ञा पालनकरताहुआ सुखपूर्वक रहनेलगा काल केप्रभावमे शूरदत्तके परलोकवासी होजानेपर वसुमती उसीकेसाथ सतीहोगई इससे वामदत्त बहुतखिन्न होकर अपनी स्त्री समेत गृहस्थीके संपूर्ण काम करनेलगा भाग्यवशसे उसकीस्त्री उसके विनाजानेही कहींसे शाकिनियोंकी सिद्धिपाके पुंश्चलीहोगई एकसमय वामदत्त किसी कार्य से राजाके यहां गया वहां उसकेचचाने जाके एकान्तमें उससेकहा कि हेपुत्र हमाराकुल नष्टहोगया क्योंकि मैंने तुम्हारीस्त्री को तुम्हारेही भैंस पालनेवालेके साथ रमणकरतेदेखा यहसुनकर वामदत्त अपने घरमेंआकर खड्गलेकर छुपके बैठरहा रात्रिके समय महिषपाल उसकेयहा आया उसे बहुत उत्तम २ भोजन कराके शशिप्रभा उसीके साथ पलँगपरलेटी यह देखके वामदत्त खड्गलेकर यह कहकर कि अरे पापियो यह क्या करते हो उनके मारनेको दौड़ा उसे देखकर उसकी स्त्रीने उसके मुखपर धूलडालकर उसेभैंसा बना दिया और लाठियोंसे बहुत पीटकर किसी वैश्यके हाथ बेचडाला वहवैश्य उसपर बहुतसाबोझा लादकर गंगाजी के तटपर किसी ग्राममे लेगया भैंसे होनेपर भी वामदत्तकी स्मृति नष्ट नहीं हुईथी इससे वह यह शोचकर कि बगलके भीतर घुसीहुई सर्पिणीके समान पुंश्चली स्त्रीसे किसविश्वासित मनुष्यको क्लेश नहीं होता रोया करताथा दैवयोगसे किसी योगिनीने उसे रोते देखकर और बोझके क्लेशसे उसे बहुत दुर्बल जानके अपने ज्ञानसे उसका सब वृत्तान्त जानकर मन्त्रका जल छिड़कके उसको फिर ज्योका त्यो पुरुष बनादिया और उसे अपने घर लेजाकर कान्तिमतीनाम अपनी कन्याके साथ उसका विवाहकरके थोड़ीसी मन्त्र पढ़ीहुई सरसो उसेदेदी और कहा कि इनसरसोको मारकर तुम उस अपनी दुष्ट स्त्रीको घोड़ी बनादेना उसके वचन सुनकर और उनसरसोको तथा अपनी नवीन कान्तिमती स्त्रीको साथ लेके वामदत्तने अपने घरमे आकर उस महिषपालको मारके सरसो के प्रभावसे अपनी स्त्री को घोड़ी बनाके और घुड़साल मे बाँधके यह प्रतिज्ञाकी कि प्रतिदिन इसके सातलाठी मारकर भोजन किया करूंगा इसप्रकार प्रतिज्ञाकरके कान्तिमतीके साथ सुखपूर्व्वक रहतेहुए वामदत्तके घरपर एकसमय एक अतिथि आया जब वहअतिथि भोजन करनेलगा तो वामदत्त भोजन विनाकियेही एकाएकी स्मरण

करके घोड़ीरूप अपनीस्त्रीके सातलाठी मारनेको चलागया और लाठी मारके आकर भोजन करनेलगा तब उसअतिथिने विस्मितहोके उससे पूंछा कि तुम भोजन छोड़कर एकाएकी कहां चलेगये थे यह सुनकर वामदत्तने अपना सब वृत्तान्त उससे कहदिया उसवृत्तान्तको सुनकर अतिथिने उससे कहा कि जिस तुम्हारी सासने तुमको पशुपनेसे छुटायाहै उसीकी आराधना करके कोई सिद्धि क्यों नहीं प्राप्त करतेहो उस अतिथिका यह उपदेश सुनकर वामदत्तने उस अतिथिको विदाकरके अकस्मात आईहुई अपनी सासका बड़ा सत्कार करके उससे प्रार्थनाकी कि मुझे कोई सिद्धिदो उसकी इस प्रार्थनाको सुनकर योगीश्वरीने उसको और अपनी कान्तिमती कन्याको कालसंकर्षिणी नाम विद्यादीनी उस विद्याको पाकर कान्तिमती सहित वामदत्तने श्रीपर्व्वतपर जाकरउस विद्याको सिद्धकिया उसविद्याने सिद्धहोकर उसको एक बड़ा दिव्यखड्ग दिया खड्गको पातेही वामदत्तने अपनी स्त्री समेत विद्याधर होकर मलयपर्व्वतके रजतकूटनाम शिखरपर अपनी सिद्धिके प्रभावसे एक दिव्यपुर बनाया उसपुरमें रहते हुए उसके एक ललितलोचना नाम कन्या उत्पन्नहुई उस कन्याके उत्पन्न होतेही यह आकाशवाणी हुई कि यह कन्या विद्याधरोंके चक्रवर्त्तीकी स्त्री होगी हे आर्यपुत्र वह ललितलोचना मैंही हूं और मैंही अपनी विद्याके प्रभावसे आपको यहां अपने स्थानमें लाईहूं इसप्रकार उसका वृत्तान्त सुनके नरवाहनदत्त उसे विद्याधरी जानके प्रसन्न होकर उसके साथ वहांरहा और उसका यह सब वृत्तान्त वत्सराज आदिकोंने रत्नप्रभा आदिक उस की विद्याधरी रानियोंकी विद्याओंके प्रभावसे जानलिया ७३ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेप्रथमस्तरंगः १ ॥

तदनन्तर उस नवीन ललित लोचना स्त्रीकोपाकर नरवाहदत्त मलयाचल पर्व्वतपर पुष्पित वृक्षोंसे शोभितवनोंमें उसकेसाथ विहार करनेलगा एकवनमें क्रीड़ाके निमित्त पुष्प तोड़नेकेलिये ललित लोचना के दृष्टि से पृथक् होजानेपर नरवाहनदत्त घूमताहुआ एक निर्मलजलवाले तड़ागके तटपर पहुँचा वहां उसने यह शोचकर कि जब तक ललितलोचना आवे तब तक मैं स्नानकरलूं तड़ागमें स्नान करलिया और देवताओं का पूजनकरके किसी चन्दनके वृक्षकी छायामें रत्नमय शिलापर बैठकर मन्द २ गमन करतीहुई राजहंसिनी देखी आमके वृक्षोंपर बैठीहुई मधुर २ शब्द करनेवाली कोकिलाओं के मनोहर शब्दसुने और मृगियों के चंचल नेत्र देखे इससे उसे प्रिया मदनमंचुका का स्मरण करके ऐसी कामकी पीड़ाहुई कि मूर्च्छा आगई इतने में वहां स्नान करनेको आयेहुए पिशंगजटनाम मुनिने उसे मूर्च्छित देखकर चन्दन का जल उसपर छिड़का और जलके छिड़कनेसे मूर्च्छासे जगकर प्रणामकरतेहुए नरवाहनदत्त से कहा कि हे पुत्र तुम्हारा अभीष्ट सिद्धहोगा धैर्य्यधारणकरो धैर्य्यसेही सब कार्य्य सिद्धहोते हैं इस विषयपर जो तुमने मृगांकदत्तकी कथा न सुनीहोय तो मेरे आश्रममें चलकर मुझसे सुनो यह कहके वह मुनिस्नानादि करके सम्पूर्ण आह्निकसे निवृत्तहोके नरवाहनदत्तको अपने आश्रममें लेगया और वहां उसेभी तथा आपभी फलखिला खाकर यहकथा कहनेलगा कि तीनों लोकोंमें विख्यात अयोध्या नाम पुरी में अमरदत्तनाम एक बड़ा प्रतापी राजा था उस राजा के पतिव्रता सुरतप्रभानाम रानी में

उत्पन्नहुआ मृगांकदत्तनाम महागुणवान् पुत्रथा उस मृगांकदत्त के युवा, कुलीन, शूर, स्वामिहितैषी तथा बड़े बुद्धिमान् प्रचण्डशक्ति, स्थूलवाहु, विक्रमकेसरी, दृढमुष्ठि, मेघवल, भीमपराक्रम, विमलबुद्धि व्याघ्रसेन, गुणाकर और विचित्रकथ नाम दश मन्त्री थे इन दशों मन्त्रियोंसमेत सुखपूर्व्वक रहतेहुए राजपुत्र मृगांकदत्त को अपने सदृश स्त्री नहीं प्राप्तहुई थी एकदिन एकान्तमें भीमपराक्रम नाम मंत्रीने उससे कहा कि आज मैं रात्रिकेसमयका अपना वृत्तान्त आपको सुनाताहूं आज रात्रिकेसमय महल में सोते २ एकाएकी उठकर मैंने एक सिंहको झपटकर अपने ऊपर आतेहुएदेखा उसे देखकर मैं छुरी हाथ मे लेकर उठा इससे वह सिंहभागा और मैं भी उसके पीछे २ दौड़ा भागते २ उस सिंहने नदीके पार जाकर अपनी जीभ मेरी ओरको फैलादी मैंने उसकी उस वहुतवड़ी जिह्वाको अपनी छुरी से काटके उसीके द्वारा नदीके पारजाकर देखा कि वह सिंह भयंकर पुरुषहोगया यह देखकर मैंने उससे पूछा कि तुम कौनहो उसने कहा कि हे वीर मैं वैतालहूं तुम्हारे सत्त्व से मैं वहुत प्रसन्नहूं यह सुनकर मैंने उससे कहा कि अच्छा तुम वतलाओ कि मृगांकदत्तकी कौन स्त्री होगी तवउस वैतालनेकहा कि उज्जयिनी नगरी में कर्मसेननामराजाहै उसके अप्सराओंसे भी अधिक महारूपवती ब्रह्माकी सुन्दरताकी खानसी शशाङ्कवतीनाम कन्याहै वही तुम्हारे स्वामीकी स्त्री होगी और उसेपाकर तुम्हारा स्वामी सम्पूर्ण पृथ्वीका राजाहोगा। यह कहकर वह वैताल अन्तर्द्धानहोगया औरमैंभी अपने घर चलाआया यही मेरा वृत्तांत है ३२ भीमपराक्रमका यह वृत्तान्त सुनकर मृगांकदत्त ने अपने सम्पूर्ण मन्त्रियों को वुलवाकर उन्हें भी यह वृत्तान्त सुनवाकर उनसे कहा कि आज रात्रिको जो मैंने स्वप्न देखाहै उसे सव सुनो आज रात्रिमें स्वप्नदशामे हम तुम सव लोग एकवड़े घोर वनमेंगये वहां मार्गके खेदसे सव प्यासेहोकर वड़े क्लेश से जलको पाके जैसेही पीनेको तैयार हुए वैसेही शस्त्रधारी पांच पुरुषो ने आकर हम सवको रोंका उन्हें मारकर जैसेही हमने फिर जल पीनाचाहा वैसेही वहां न कहींजलथा न पुरुषथे तव वड़ेहीक्लेशको प्राप्त हुए हमलोगोंने वृषभपर चढे आतेहुए श्रीशिवजीको देखा शिवजीने हम सवको प्रणाम करते देखकर अपने दक्षिण नेत्रसे एक आंसूकी वूंद पृथ्वीपर गिरादीनी उस बूंदसे महासमुद्र वनगया उस समुद्रमें से एक मोतियोंकी मालापाकर मैंने अपने गलेमें वांधली और अपने संपूर्ण साथियों समेत मनुष्यकी खोपड़ीसे उस समुद्रका जल पिया इतनादेखकर मेरी निद्रा खुलगई और रात्रिभी व्यतीतहोगई इसस्वप्न को सुनकर विमलबुद्धिनाममंत्रीने कहा कि हे स्वामी आपधन्यहैं जिनपर श्रीशिवजी ऐसी कृपाकरतेहैं आपने जो मोतियोंकी मालापहनकर समुद्रका जलपियाहै उसकायहफलहोगा कि आप शशांकवतीको पाकर संपूर्णपृथ्वीके राजाहूजियेगा और पहलेकी वातोंसे कुछक्लेशभी आपको होगा यहसुनकरमृगांकदत्तने कहा कि इसस्वप्नका जो कुछफलहै और भीमपराक्रमने जो कुछवैतालसे सुनाहै यद्यपि वहयथार्थ होगा तथापिसेनातथा दुर्गके अभिमानी राजा कर्मसेनसे वुद्धिकेवलसे शशांकवतीकी प्राप्तिका उद्योग मैं करूंगा क्योंकि सम्पूर्णवलोंमें वुद्धिहीकावल सवसे श्रेष्ठहै इसविषयपर मैं तुम लोगोंको एक कथा सुनाताहूं मगधदेशमें भद्रवाहु नामएकराजाथा उसके अत्यन्त वुद्धिमान् मंत्रगुप्तनाम एक मंत्रीथा एकसमय

भद्रबाहुने एकान्तमें अपने मंत्रीसे कहा कि काशीके राजा धर्मगोपके जो अनंगलीलानाम अत्यन्तसुन्दरीकन्याहै उसे प्रार्थनाकरनेपर भी द्वेषके कारण वह मुझेनहींदेता और भद्रदन्तनाम हाथीके प्रभावसे उसे कोई जीतभी नहीं सक्ता और मै उस अनंगलीलाके विना जी नहींसक्ता इससे तुम अपनी बुद्धि से इस विषयमें कोई उपाय शोचो यह सुनकर मंत्रगुप्तने कहा कि हे स्वामी क्या पराक्रमसेही सब कार्य्य सिद्धहोते हैं बुद्धिसे नहीं होते आप किसी प्रकारकी चिन्तामतकरो मैं अपनी बुद्धिके बलसे आपका कार्य्य सिद्धकरूंगा यह कहके वहमंत्री दूसरे दिन पांच सात विश्वासित मनुष्यों को साथलेके महाव्रती का वेप बनाकर काशीपुरीकोगया वहां उसके सबसाथी शिष्योंकावेष बनाकेसम्पूर्ण नगरमें कहनेलगे कि यह महासिद्धहै और इस चरचाको सुनकर कुछ लोग उसकेपास आनेभीलगे एकसमय रात्रिमें अपने कार्य्यकी युक्तिके ढूंढ़नेकेलिये भ्रमणकरतेहुए मंत्रीने देखा कि राजाके हाथीवान् की स्त्री तीनचार शस्त्रधारी पुरुषों के साथ जल्दी २ कहीं चलीजारही है यह देखके उसने यह शोचा कि निस्सन्देह यह अपने घरसे निकलकर किसी अन्य पुरुषके यहां जारही है इससे देखना चाहिये कि यह कहां जाती है यह शोचकर वह उसके पीछे २ चुपचाप चलागया और जिसस्थानमें वह गई उस स्थानको दूरसे देखकर लौटआया प्रातःकाल उसने अपने साथियोंको युक्ति पूर्व्वक उस राजाके हाथीवान्के मकानपर भेजा उन्होंने वहां जाकर हाथीवान्को अपनी स्त्रीके दुःखसे विषखायेहुए देखकर अपनी विद्यासे उसका विष दूरकरदिया और उससे कहा कि तुम हमारे गुरूके पास चलो वह बड़े ज्ञानी हैं तुमको सब बात बतादेंगे यह कहके वह उसे मंत्रीके पास लेआये वहां आकर उस हाथीवान्ने उसेप्रणाम करके पूछा कि बताइये मेरी स्त्री संपूर्ण आभूषण लेकर कहां गई है यह सुनकर मंत्रीने झूठ मूठ कुछ ध्यानकरके रात्रिके समय जहां वह पुरुष उसकी स्त्री को लेगयेथे वह स्थान उसे बतादिया तबहाथीवान्ने उसको नमस्कारकरके अपने बहुतसे साथियोको लेजाके उस स्थानको घेर लिया और उन पुरुषोंको मारकर आभूषणों समेत अपनी स्त्री पाई दूसरे दिन हाथीवान्ने मंत्रीकेपास आके हाथजोड़कर कहा कि आजके दिन आपका मेरे घरमे निमन्त्रणहै यह सुनके मंत्रीने कहा कि मैं किसीके घर भोजन नहीं करता और दिनको आहारभी नहीं करता यह सुनकर वहहाथीवान् प्रदोषके समय हाथियोंकी शालामें उसे सब साथियों समेत भोजन करानेके लिये लेगया मंत्रीभी एक बांसकी पोंगी में मंत्रके बलसे एक सर्पको बन्द करके और छुपाके वहां लेगया जब हाथीवान् उसे भोजन कराके चलागया और वहांके सब लोग सोगये तब उस भद्रदन्तनाम हाथी के कानमें उस सर्पको छोड़कर मंत्री उसरात्रिको वहीं व्यतीत करके प्रातःकाल अपने मगधदेशको सब साथियों समेत चलाआया इससे वह भद्रदन्त मरगया राजा धर्मगोपके अभिमानके समान उस भद्रदन्तको मराहुआ सुनकर राजा भद्रबाहुने अपने मंत्रीपर बहुत प्रसन्नहोके अनंग लीलाके मांगनेके लिये धर्मगोपके पास अपनादूत भेजा और धर्मगोपने भी अपनीकन्या उसेदेदी ठीकहै (भजन्तिवैतसीवृत्तिम् राजानःकालवेदिनः) काल के जाननेवाले राजालोग वेतकीसी नम्रवृत्ति रखतेहैं इसप्रकारसे मंत्रगुप्त मंत्रीकी बुद्धिके बलसे राजा

भद्रबाहुको अनंगलीला प्राप्तहोगई ७४ इससे मैंभी अपनी बुद्धिके बलसे शशांकवतीकी प्राप्तिकेलिये उद्योगकरूंगा मृगांकदत्तके यह वचनसुनकर विचित्रकथनाम मंत्रीने कहा कि श्रीशिवजीकी स्वप्नमें हुई कृपासे आपके सब कार्य्य सिद्धिहोंगे देवताओंके अमोघप्रसादसे कौन कार्य्य सिद्ध नहींहोसक्ताहै इस विषयपर में आपको एककथा सुनाताहूं कि तक्षशिलानाम पुरी में भद्राक्षनाम एक राजाथा वह पुत्रकी कामनासे नित्य खड्गमें लक्ष्मीजीका आवाहन करके एक सौ आठ कमलों से पूजनकरताथा एकबार पूजन करते समय एककमल घटगया इससे राजाने मौन व्रत न त्यागके अपना हृदय कमल निकालकर भगवती पर चढाया इससाहसको देखकर प्रसन्नहुई भगवती प्रकटहोकर बोलीं कि हे पुत्र तुम्हारे चक्रवर्ती पुत्रहोगा यहकहके और राजाको क्षत रहितकरके भगवती अन्तर्द्धानहोगईं तदनन्तर राजाके पटरानीमें सुलक्षण पुत्रहुआ उसका नाम राजाने पुष्कराक्ष रक्खा क्रमसे सम्पूर्ण विद्याओं को सीखकर युवावस्थामें प्राप्तहुए पुष्कराक्ष को राज्य देकर राजा भद्राक्ष वनको चलागया और पुष्कराक्ष भी राज्यपाके प्रतिदिन श्री शिवजीका पूजन करनेलगा एक दिनपूजनके उपरान्त उसने शिवजी से यहप्रार्थनाकी कि मुझे योग्य स्त्री दीजिये तब यह आकाशवाणी हुई कि हे पुत्र तुम्हारे सम्पूर्ण कार्य्य सिद्धहोंगे इसआकाशवाणीको सुनकर प्रसन्नहोकर पुष्कराक्ष वनमें शिकार खेलने को चलागया वहां संभोगकरतेहुए सर्पके जोड़ेको खानेकेलिये उद्युक्त एकऊंटके बच्चेको देखकर उसने कृपायुक्तहोकर उस ऊंटके एकबाण मारा बाणके लगतेही वह विद्याधर होकर प्रसन्नहोके उससे बोला कि तुमने मेरे साथ बड़ा उपकार कियाहै इससे जो मैं कहताहूं सो सुनो किसी विद्याधरकी तारावलीनाम कन्याने रंकमाली नाम विद्याधरपर अनुरक्तहोकर उसके साथ अपना गान्धर्व विवाह करलिया यहजानकर उसके पिता ने उसे यहशापदिया कि तुमदोनोंका कुछ काल वियोग रहैगा यहशापपाकर वहदोनों सुन्दर उपवनों में आनन्दसे विहारकरनेलगे एकसमय शापके प्रभावसे वह दोनों वनमें विहारकरते २ परस्पर वियुक्त होकर इधर उधर एकदूसरेको ढूंढनेलगे उनमेंसे तारावली अपने पतिको ढूंढते २ पश्चिम समुद्र के पार सिद्ध ऋषियों से सेवित एकवनमें पहुंची वहां एकप्रफुल्लित जामनका वृक्षदेखके भ्रमरीका रूप धारण करके विश्रामके लिये उसके एकपुष्पपर बैठकर मधुपान करनेलगी क्षणभर मेंही भाग्यवश से उसका पतिभी उसे ढूंढताहुआ वहींआया बहुतकालके उपरान्त अपने पतिको देखनेसे बहुत प्रसन्नहुई तारा-वलीका वीर्य्य उसपुष्पपर गिरा और वीर्य्यको त्यागकर वहभ्रमरी के रूपको छोड़कर अपना रूपधरके पतिसे जाकर मिली और उसे लेकर अपने लोकको चलीगई उसके चले जानेपर जिसपुष्पपर उसका वीर्य्य गिराथा उसमें एकफललगा और उसफलके भीतर काल योग से एककन्या उत्पन्न हुई क्योंकि दिव्य प्राणियोंका वीर्य्य निष्फल नहीं होताहै १०० तदनन्तर एकसमय विजिताश्वनाम मुनि फल मूल के निमित्त वहां आये और उसीसमय वहजामनका फल टूटकर गिरा पृथ्वीमें गिरकर टूटजाने से उस फलमें से एकदिव्य कन्या निकलके मुनिको वन्दना करके उनके आगे हाथ जोड़कर खड़ीहोगई उस कन्या को देखकर मुनि ने ध्यान से उसका सब तत्त्व जानकर उसे अपने आश्रम में ले जाकर उसका

नाम विनयवती रक्खा समय पाकर युवावस्था में प्राप्तहुई उस विनयवती को मैं आकाश से देखकर अपने रूप के अभिमान तथा कामसे मोहित होकर उसकी इच्छा के विना भी उससे बलात्कार करके रमण करनेको उद्यत हुआ मेरे इस दुराचार से चिल्लाती हुई विनयवती के शब्द को सुनकर विजिताश्वमुनिने वहां आके क्रोधसे मुझे यह शाप दिया कि तुझे अपने रूपका बड़ा अभिमानहै इससे तू ऊंटका महाकुरूप बच्चाहोगा जब राजा पुष्कराक्ष तुझे मारेगा तब तेरा यहशाप दूरहोगा और वही पुष्कराक्ष इस विनयवतीका पतिहोगा इसप्रकार शाप पाकर मैं यहां ऊंटका बच्चाहोगया आज आपकी कृपासे मेराशाप दूरहोगया अब मैं अपने स्थानको जाताहूं और आप पश्चिम समुद्रकेपार सुरभिमारुत नाम वनमें जाकर उसदिव्यस्त्रीको लीजिये यहकहके वहविद्याधर अन्तर्द्धानहोगया और राजा पुष्कराक्ष भी अपनी नगरी में आकर मंत्रियोके सुपुर्द राज्यका भारकरके घोड़ेपर चढ़के अकेलाही पश्चिम समुद्रके तटपर पहुंचा वहां उसे यह चिन्ताहुई कि मैं समुद्रके पार कैसे जाऊँ इस चिन्ताके उत्पन्नहोतेही एकशून्य भगवतीका मन्दिर दिखाईदिया उसमन्दिर में जाके वह भगवतीको प्रणामकरके वहां किसी की रक्खीहुई वीणाको लेकर बजा २ कर भगवती की मधुर २ गानसे स्तुति करनेलगा उस गानको सुनकर प्रसन्नहुई भगवती ने जब वह सोगया तब अपने गणों के द्वारा उसे समुद्रके पार पहुंचादिया प्रातःकाल जब राजाकी निद्राखुली तो उसने अपनेको एकवनमें लेटा देखा और उठकर भ्रमण करते २ एक फलवान् वृक्षों से युक्त अति मनोहर आश्रम देखा उसआश्रममें जाके राजाने शिष्यों समेत एक मुनिको देखके उनकी वन्दनाकी तब मुनिनेभी अतिथिसत्कारकरके उससे कहा कि हे पुष्कराक्ष जिस विनयवतीके लिये तुम यहां आयेहो वह समिधलेनेकेलिये वनमेंगई है इससे क्षणभर ठहरो वह आजाय तो मैं आजही उसका विवाह तुम्हारे साथ करदूं वह तुम्हारी पूर्व्वजन्मकी भी स्त्री है मुनिके यह वचन सुनकर राजा ने यह शोचा कि यह वही विजिताश्वमुनिहैं और यह वही सुरभिमारुत वन है मैं जानताहूं कि भगवती ने कृपाकरके मुझे समुद्र के पारकरदिया है, यह बड़ा आश्चर्य्य है कि मुनिने कहा है यह तुम्हारी पूर्व्वजन्मकी भी स्त्री है यह शोचकर उसने मुनि से पूछा कि हे भगवन् यह मेरी पूर्व्वजन्मकी स्त्री कैसे है यह सुनकर मुनि ने कहा कि सुनो ताम्रलिप्ती नाम नगरी में धर्मसेन नाम एक वैश्यथा उसके विद्युल्लेखा नाम परमसुशील स्त्री थी भाग्यवश से उसके घर में चोरों ने आकर उसका सब धनलेके उसे खूबमारा इससे वह दुखीहोकर अग्निजलाके अपनी स्त्री समेत उसमें जलगया मरतेसमय उन दोनों स्त्री पुरुषोंका चित्त आकाश में उड़तेहुए राजहंसों को देखकर बहुत प्रसन्नहुआ इससे वह दूसरे जन्ममें राजहंसहुए एकसमय वर्षाऋतु में किसी खजूरके वृक्षपर वह दोनों घोंसलाबनाकर रहतेथे भाग्यवशसे एकदिन रात्रिकेसमय बहुत प्रचण्ड वायुकेकारण उस वृक्ष के टूटजाने से वह दोनों घबराकर परस्पर अलग २होगये प्रातःकाल वायुके शान्तहोजानेपर वहहंस अपनी प्रियाको ढूंढ़ताहुआ बहुतसे तड़ागों में तथा नदियों में उसेनपाकर मानसरोवरमें गया वहां अपनी उसहंसीकोपाकर वहीं वर्षाऋतुको व्यतीत करके शरदऋतु में उसके साथ विहारकरनेकेलिये एक पर्व्वत के शिखरपरगया उस पर्व्वतपर एक बड़े

लिये ने उस हंसी को बाणसे मारडाला यह देखकर वह हंस भय और शोकसे महा व्याकुलहोकर वहांसे भागगया और वह वहेलिया उस मरीहुई हंसिनी को लेकर वहांसेचला मार्ग मे कुछ शस्त्रधारी पुरुषोंको आते देखकर उस वहेलिये ने यह जानकर कि ऐसा न होय यह मेरी हंसिनीछीनलें छुरी से तृणों को काटके उन तृणों के भीतर उस हंसिनी को छिपादिया और उन पुरुषों के चलेजानेपर उसने जैसेही तृणों को हटाकर उस हंसिनीको लेनाचाहा वैसेही वह हंसी उन तृणों के साथ कटीहुई संजीविनी औषध के रसके संयोगको पाके जीकर आकाशको उड़गई इतने में शोक से मोहित उसका हंस किसी तड़ाग के निकट उसीको ढूंढताहुआ बहुतसे अन्य हंसों में जामिला उन सब हंसों को एक वहेलिये ने अपने जालको फेककर बाँधलिया इतनेमें वह हंसिनी उसे ढूंढतीहुई वहीं आई और अपने पति को बँधा देखकर बहुत व्याकुलहुई तदनन्तर वहां स्नानकरने के निमित्त आयेहुए किसी पुरुषकी रक्खीहुई तड़ागके तटपर रत्नोंकीमाला देखकर वह हंसी उस मालाको अपनी चोंच में दबके उस वहेलिये को मालादिखातीहुई धीरे २ उड़नेलगी उसे देखकर वह वहेलिया लाठीलेके उसके पीछे २ दौड़ा उसे दौड़ा हुआ देखकर हंसी उसे दिखाके एक शिखरके ऊंचे स्थान में उस मालाको रखके चलीआई और वह वहेलिया लोभ से उसके लेनेका उद्योगकरनेलगा इसप्रकार उस वहेलिये को जालके पाससे हटाकर उसने जालके समीप किसी वृक्षपर सोतेहुए वन्दरकी आंख में अपनी चोंचमारी इससे उस वन्दर ने एकाएकी उठके कुपितहोके वहांसे कूदकर उस जालको तोड़डाला इससे वह सब हंस उसमें से निकल भागे इसप्रकार से वह दोनों मिलकर सुखपूर्वक विहारकरनेलगे और मालाको लेकर आयेहुए उस वहेलिये को मालासमेत देखकर जिस पुरुषकी वह मालाथी उसने उसका दाहिना हाथ काटलिया इसके उपरान्त वह दोनों हंस हंसिनी मध्याह्न के समय एक कमलकी छत्रीलगाकर किसी तड़ागके तट से उड़कर किसी नदी के तटपर पहुँचे उस नदीके तटपर बैठे हुए एक मुनि श्रीशिवजीका पूजनकररहे थे वहीं एक वहेलिये ने उन दोनों को उड़ते देखकर एक ऐसा बाणमारा कि वह दोनों मरकर एकसाथही गिरपड़े और उनका वह कमल श्रीशिवजी के लिंगपर आकरगिरा उस वहेलिये ने हंस तो आप लेलिया और हंसिनी मुनि को देकर यह कहदिया कि इसका नैवेद्य आप श्री शिवजी को चढाइये हे पुष्कराक्ष वह हंस तुम्हींहो श्रीशिवजी के ऊपर कमल चढजाने के प्रभाव से तुम्हारा जन्म राजा के घर में हुआ और वह हंसिनी यह विनयवतीहुई इसके मांस से श्रीशिवजी का पूजनहुआथा इससे इसका जन्म विद्याधरों के कुल में हुआ इसप्रकार से यह तुम्हारी पूर्व्वजन्मकी स्त्री है विजिताश्वमुनि के यह वचन सुनकर पुष्कराक्षने फिर मुनि से पूछा कि हे महर्षि जी पापनाशक अग्निमें प्रवेशकरनेवाले हम दोनों का पक्षी की योनि में क्यों जन्महुआ यह राजा के वचन सुनकर मुनि ने कहा कि (यद्भावितात्मा म्रियतेजन्तुस्तद्रूपमश्नुते) मरते समय जीव जिसकी भवना करता है उसी रूपको प्राप्तहोता है, १५६ इस विषय पर मैं तुमको कथा भी सुनाता हूं उज्जयिनी नाम नगरी में लावण्यमञ्जिरी नाम एक बालब्रह्मचारिणी ब्राह्मणी रहती थी एकसमय एक कमलोदय नाम युवा ब्राह्मण को देखकर उसके

चित्त कामदेव से अत्यन्त पीड़ित हुआ इससे उसने बहुत व्याकुलभी होकर अपना नियम छोड़कर गंधवती नदीके तटपर जाके भोगकी भावना मेंही अपना शरीर त्यागदिया इसी भावनासे वह एक लव्यानाम नगरी में रूपवती नाम वेश्याहुई तीर्थ तथा व्रतके प्रभावसे उसे अपने पूर्वजन्मका स्मरण बनारहा इससे उसने प्रसंगपाकर उड़कर्ण नाम एक जापक ब्राह्मणसे अपने पूर्व जन्मका सब वृत्तान्त कहा उस वृत्तान्तको सुनकर उड़कर्णने उसे ऐसा उपदेश दिया कि उसका चित्त शुद्धहोगया कि वह वेश्या होकरभी सद्गतिको प्राप्तहोगई इससे हे राजा अन्त समयमें जिसका जिसपर चित्तलगताहै उस का उसीसे संयोग होताहै यह कहके मुनिने स्नान करनेके लिये राजाको भेजा और आप मध्याह्नके समय का आह्निक करनेलगे मुनिकी आज्ञा पाकर राजा पुष्कराक्षने नदीके तटपर जाके विनयवतीको पुष्प तोड़ते देखा और सूर्य्य की प्रभाके समान उसे देदीप्यमान देखकर अपने चित्तमें शोचा कि यह कौन है उसके इसप्रकार शोचतेही शोचते विनयवती राजा को न देखकर अपनी विश्वास पात्र एक सखी से कहनेलगी कि हे सखी जो विद्याधर मुझे पहलेहरना चाहताथा उसी ने आज मुझसे आकर कहा है कि तुझे शीघ्रही योग्यपति मिलैगा यह सुनकर उस सखीने कहा कि यह बहुत सत्यहै आज मेरे आगेही प्रातःकाल विजिताश्वने अपने मुंजकेश नामशिष्यसे कहा था कि शीघ्रही जाके तारा वली और रंकमाली को बुलालाओ आज उनकी पुत्री विनयवती का विवाह पुष्कराक्ष नाम राजा से होगा गुरुकी यह आज्ञापातेही मुंजकेश उनके बुलानेको गयाहै इससे हे सखी अब तुम शीघ्र आश्रमको चलो उसके यह वचनसुनकर विनयवती उसके साथ आश्रम को चलीगई और पुष्कराक्षभी उनकी इस वार्त्तालापको सुनकर जाज्वल्यमान कामाग्नि के संतापके दूरकरनेके लिये मानो नदी में स्नानकरके आश्रममें आया वहां मुनिकी आज्ञानुसार तारावली और रंकमालीने आनकर अपने प्रभाव से वेदी बनाके अग्निप्रज्वलितकर मुनिके आगे पुष्कराक्षको विनयवती संकल्प करके देदी और एक दिव्य आकाश गामी रथ उसे दिया उस समय विजिताश्वमुनि ने भी प्रसन्न होकर पुष्कराक्षको यह बरदान दिया कि तुम इस विनयवती समेत समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वीका पालनकरो इसप्रकार विवाहके हो जानेपर पुष्कराक्ष विनयवतीको लेके और मुनिसे आज्ञापाके आकाशगामी रथपर चढ़के अपनी पुरी को आया वहाँ उसरथके प्रभावसे सम्पूर्णपृथ्वीको जीतकर विनयवतीके साथराज्यके सुखकाभोगकरने लगा इसप्रकार देवताओंके अनुग्रहसे दुष्करकार्य्य भी सिद्धहोते हैं इससे हे स्वामी स्वप्नमेंहुई श्रीशिवजी की कृपासे तुम्हारा भी सब मनोरथ शीघ्र सिद्धहोगा विचित्रकथ से इस कथाको सुनकर शशाङ्कवती के लिये उत्कण्ठित मृगाङ्कदत्तने अपनेमन्त्रियों समेत उज्जयिनी के जानेका निश्चय किया १८५॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशाङ्कवतीलम्बकेद्वितीयस्तरंगः २॥

इस प्रकारसे राजा कर्मसेनकी पुत्री शशाङ्कवतीके निमित्त मृगाङ्कदत्तने महाव्रतीका वेषधारणकरके छिपकर उज्जयिनी जानेके लिये अपने मन्त्रियोंसे सलाहकी और मनुष्यों के कपाल आदिक सामग्री लानेके लिये भीमपराक्रम नामअपने मन्त्रीको आज्ञादी उसकी आज्ञासे भीमपराक्रमने सबसामग्रीलाके

अपनेघरमें रखछोड़ीं यहसब वृत्तान्त मृगांकदत्तके पिता राजाअमरदत्तके प्रधानमंत्रीने चारों (गोयन्दों) के द्वारा जानलिया उन्हीं दिनोंमें अकस्मात् मृगांकदत्तके मन्दिरके नीचेसे जातेहुए उसप्रधान मंत्रीके शिरपर मृगांकदत्तकी पीकविनाजाने गिरपड़ी पीकके पड़नेसे उसमन्त्री ने यहजानकर कि इसने मेरा तिरस्कार कियाहै अपनेचित्तमें अत्यन्त क्रोधकिया भाग्यवशसे दूसरेदिन मृगांकदत्तके पिताको विशूचिकाहुई इससे मन्त्रीने अवसरपाके राजासे एकान्तमें कहा कि हे स्वामी मृगांकदत्त भीमपराक्रमके घरमें आपकेलिये मारण करवारहा है यहवात मैंने गोयन्दोंके मुखसे सुनी है और उसकाफल भी प्रत्यक्षदिखाई देरहाहै इससे आप उसे अपने देशसे निकलवादीजिये यह सुनकर राजा ने घबराके अपने सेनापति को भीमपराक्रमके घरमें उस वातके देखनेको भेजा सेनापतिने जाकर उसके घरमें कपालादि चिह्नपाके राजाको लाकर दिखाये उन चिह्नोंको पाके राजाने सेनापतिको यह आज्ञादी कि शीघ्रही मृगांकदत्तको उसके मन्त्रियों समेत देशसे निकालदो क्योंकि वह मुझे मारकर राज्यलेना चाहताहै राजाकी यह आज्ञापाकर सेनापतिने मन्त्रियों समेत मृगांकदत्तको नगरीसे निकाल दिया मृगांकदत्तभी गणेशजीका स्मरण करके राज्यकी उपेक्षाकरके अपने मनमें माता पिताको नमस्कार करके अयोध्यासे चला और कुछ दूर चलकर प्रचंड शक्ति आदिक अपने मंत्रियोंसे बोला कि किरातों का शक्तिरक्षित नाम स्वामी मेरावाल्यावस्थाका परममित्र है हमारे पिताने एकसमय उसके पिताको जीतकर बन्धनमें डालदिया था इससे वह अपने बदले शक्तिरक्षितको कैदकेलिये देकर अपने स्थानको चलागया और जब वह मरगया तब उसके भाइयोंने उसका सब राज्यले लिया उससमय मैंने अपने पितासे कहकर शक्तिरक्षितको कैदसे छुड़वाके उसके पिताका राज्य उसे दिलवा दिया इससे उसी मित्रके पास पहले चलो वहां से फिर उज्जयिनी को चलेंगे यह कहके वह अपने मन्त्रियों समेत चलते २ सायंकाल के समय किसी जल तथा वृक्षोंसे रहितवनमें पहुंचा वहां बहुत ढूंढनेसे एक छोटासा तालावमिला उसतालावके किनारेपर एक सूखावृक्ष लगाथा वहीं संध्यावन्दन करके मृगांकदत्त अपने मंत्रियोंसमेत उस सूखेवृक्षके नीचेसोया कुछ रात्रि व्यतीत होजाने पर एकाएकी मृगांकदत्तने जगकर देखा कि उस सूखे वृक्षमें फल फूल तथा पत्रलगेहैं और पके २ फल नीचे गिररहेहैं यह आश्चर्य्य देखके उसने अपने मंत्रियोंको भी जगाकर वह चमत्कार दिखाया और उनके साथ बैठकर वह सुन्दर २ मधुरफलखाये उन सबके भोजन करचुकनेपर सबके देखतेही देखते वह वृक्ष कुमार अवस्था का एक ब्राह्मणहोगया यह आश्चर्य्य देखकर मृगांकदत्तने उस ब्राह्मणसे पूछा कि आप कौन हैं उसने कहा कि अयोध्यानाम नगरीमें एक दमथिनाम ब्राह्मणरहते थे उनका श्रुतधिनाम पुत्र मैंहूं एकसमय दुर्भिक्ष में मेरी मातामर गई उनका सब कर्म करके मेरे पिता बहुत दुखितहोके मुझे लेकर भ्रमण करते २ इस स्थान में आये यहां उनको क्षुधितदेखकर किसीने पांचफल उन्हेंदिये उनमेंसे वह तीनफल मुझे देके और दो अपने लिये रखकर इस तड़ागमें स्नान करनेकोगये उनके चलेजाने पर मैं वह फलभी खाके सोनेका वहाना करके लेटरहा उन्हों ने स्नानकरके लौटकर मुझे छलसे काठके समान पड़ा देखकर यह शापदिया कि

तू इसी तालाबके किनारे पर सूखा वृक्षहोजा चांदनी रात्रिको तुझमें फलफूल लगाकरेंगे किसीसमय तू अपनेफलोंसे अतिथियोंको तृप्तकरके इस शापसे छूटजायगा उनके इस शापसे मैं उसीसमय सूखावृक्ष होगया और आज आपकीकृपासे शापसे मेरा उद्धारहोगया उसका यहवृत्तान्त सुनकर मृगांकदत्त ने अपनाभी सबवृत्तान्त उससेकहा तब नीतिके जाननेवाले श्रुतधिब्राह्मणने उससे कहा कि मैंभी आपही के साथ में रहूंगा उसके यहवचन स्वीकारकरके मृगांकदत्त रात्रिको वहींव्यतीतकरके प्रातःकाल श्रुतधि तथा अपने सबमंत्रियोंसमेत वहांसे चला २६ चलतेरकटिमंडित नाम वनमें पहुंचके उन्हें बड़े२बालवाले पांच पुरुषमिले वह पुरुष उनको देखकर नम्रतापूर्व्वक उनसे बोले कि हे महाशय हम काशीपुरी में गौ चरानेवाले ब्राह्मणथे एकसमय अनावृष्टिके कारण वहां तृण आदिक न पाकर हम अपनी गौओंकोले-कर इसवनमें चलेआये यहां एकबावड़ीका रसायन जल हमको प्राप्तहुआ उस बावड़ीके तटपर त्रिफला के वृक्षलगेहैं उनके फल बावड़ीमें गिरते हैं इससे वह जल रसायन होगयाहै उसजलको पीकर दूधआदि भोजनकरतेहुए हमलोगोंको पांचसौवर्ष यहांआये व्यतीतहोगये इसीसे हम लोगोंके बाल बहुतबढ़गये और चेष्टाभी बदलगई है यहां आपलोग हमारे अतिथिहैं इससे आश्रममें चलकर कृपाकीजिये उनकी यहप्रार्थनासुनके मृगांकदत्त अपने साथियोंसमेत उनके आश्रममेंगया और वहांदूध आदिपीके वहदिन वहीं व्यतीतकरके दूसरे दिन प्रातःकाल वहां से चलके अनेकप्रकारके आश्चर्य्योंको देखताहुआ कि-रातों के देशमें पहुंचा वहां उसने अपने मित्र शक्तिरक्षकके पास अपना आगमन कहने के लिये श्रु-तधिको भेजा श्रुतधिसे मृगांकदत्तका आगमन सुनकर शक्तिरक्षक पुरके बाहर आकर मृगांकदत्तको सब साथियों समेत अपने स्थानमें लेआया उसके घरमें मृगांकदत्त उसके सत्कारको ग्रहणकरके कुछ दिन रहा और उससे अपनी सहायताके लिये तैयाररहनेको कहकर अच्छा मुहूर्त्त देखकर अपने सा-थियों समेत उज्जयिनीको चला चलते२ एक शून्य वनमें किसी वृक्षके नीचे एक जटाधारी तपस्वीको देखके मृगांकदत्तने पूछा कि हे भगवन् इस आश्रम रहित वनमें आप अकेले क्यों बैठेहो यह सुनकर तपस्वी ने कहा कि शुद्धकीर्त्तिनाम महागुरूका मैं शिष्यहूं मुझे अनेकप्रकारके मन्त्र सिद्धहैं एकसमय मैंने शुभ लक्षणयुक्त एक क्षत्री के बालकमें अपने एक मन्त्रका आवेशकिया आवेशके प्रभावसे उस बालकने पूछनेपर अनेक सिद्ध औषधियों के स्थान बताकर कहा कि उत्तरदिशामें विन्ध्याचलके वन में एक सिरसका वृक्षहै उस वृक्षके नीचे बड़ाभारी सर्पों का स्थान है उस स्थानके ऊपर गीली धूलसी पड़ी रहती है इससे मध्याह्नके समय बहुतसे हंस वहां आनकर बैठते हैं उसी स्थानमें पारावतनाम एक बड़ा सर्प रहताहै उस सर्पके पास देवासुरसंग्राममें मिलाहुआ वैदूर्य्य कान्तिनाम बड़ा दिव्य खड्गहै वह खड्ग जिसको मिलजाय वह सिद्धाधिपतिहोकर कहीं भी पराजित नहींहोगा परन्तु वह खड्ग उसी को प्राप्तहोसका है जिसके बड़े वीरलोग सहायकहोंय उस बालकके यह वचनसुनके मैं उसके आवेशको दूरकरके वीर सहायकों को ढूंढनेलगा परन्तु सम्पूर्ण पृथ्वीपर भ्रमण करनेपर भी मुझे सहायक नहीं मिले इससे खिन्नहोके मरनेके निमित्त मैं यहां आयाहूं उसके यह वचन सुनके मृगांकदत्तने कहा कि

मैं अपने मन्त्रियों समेत तुम्हारी सहायताकरूंगा यह सुनकर वह तपस्वी प्रसन्नहोके मृगांकदत्तादिको को अपने साथलेके मन्त्रके प्रभावसे शीघ्रही उस सर्प के स्थानपर पहुंचा और वहां रात्रिके समय मन्त्रोंके द्वारा मृगांकदत्तादिको की रक्षाकरके नागदमन मन्त्रों से अग्निमें हवनकरनेलगा उस समय जो २ विघ्नहुए वहभी उसने अपने मन्त्रोंकी शक्तिसे दूर करदिये विघ्नों के दूरहोजानेपर उसवृक्षसे एक दिव्य स्त्री निकली उसे देखतेही तपस्वीका चित्त उसपर चलायमानहोगया तपस्वी को अपने ऊपर आशक्त देखके उस स्त्री ने उसका आलिंगनकरके उसके हाथसे होमका पात्र गिरादिया इसी दोषको देखकर वह पारावत सर्पगर्जताहुआ पृथ्वी से निकला उसके निकलतेही वह दिव्य स्त्री तो अन्तर्द्धान होगई और उसके घोर शब्दको सुनकर तपस्वीका हृदय भयकेमारे फटगया उसे मरादेखके उस सर्प ने अपना क्रोध शान्त करके मृगांकदत्तादिकों को यह शाप दिया कि तुमलोगो ने निष्कारण इसकी सहायता की है इससे कुछ कालतक तुमलोगोंका परस्पर वियोगहोगा यह शापदेके सर्प के अन्तर्द्धान होजानेपर अन्धकार से वह लोग एकदूसरे को देख न सके और ऐसे बधिरहोगये कि परस्परमें एकदूसरे की बातको भी न सुनसके इससे वहसब वियुक्तहोकर इधर उधरको चलेगये रात्रिके व्यतीतहोजानेपर उनमें से मृगांकदत्त उसीवनमें इधर उधर अपने मंत्रियोंको ढूंढतारहा और उसके नजाने कहां२चलेगए तदनन्तर दो तीन महीनों के व्यतीतहो जानेपर अकस्मात् श्रुतधिब्राह्मण मृगांकदत्तको मिला श्रुतधि को देखकर उसने आंशूभरके बड़े स्नेहसे उससेपूंछा कि हे मित्र तुमने मेरे मंत्रियोंको भी कहींदेखाहै यह सुनकर उसने कहा कि हे स्वामी मैंने उनकोदेखा तो नहीं है परन्तु मैं जानताहूं कि वह सब उज्जयिनी कोही जायँगे क्योंकि वहींजानेका हमसबका विचारथा यहकहके वह मृगांकदत्तको लेके उज्जयिनीको चला कईदिन चलकेमार्गमें विमलबुद्धिनाममंत्री मृगांकदत्तको मिला उसे प्रणामकरते देखके मृगांकदत्त ने उससेस्नेहपूर्व्वक मिलकरपूंछा कि तुमने अन्यमंत्रियोंकोभी देखाहै यहसुनकर उसनेकहा कि हे स्वामी मुझे उनमें से कोई भी नहीं मिला न जाने वह कहांगये परन्तु यह मैं जानताहूं कि वह आपको अवश्य मिलजायँगे यह बात जैसे मैंने जानीहै वहभी आपको सुनाताहूं कि जब सर्पके शापसे आपका मेरासंग छूटा तो मैं वनके पूर्व्वकी ओर आप लोगोंके ढूंढनेको पहुंचा वहां एकसाधू मुझे व्याकुल देखकर ब्रह्म दंडीनाम महर्षि के आश्रममें लेगया उस आश्रममें महर्षि के दियेहुए फल मूलोंको खाकर आश्रमसे कुछदूरजाके मैंने एकगुहा देखी उसगुफामें जाके एकबड़ा सुन्दर मणिमय मंदिर मुझेदिखाई दिया उस मन्दिरमें जानेका मार्ग न जानकर झरोखे केद्वारा मैं उसमें झांकनेलगा उसमें यह विचित्र चमत्कार मैंने देखा कि एकस्त्री एकचक्र घुमारही है उस चक्रपर एक बैल और गधा बैठाहुआ है उनदोनों पर अलग २ भौंरे गुंजार कररहे हैं उस बैल तथा गधेके उगलेहुए दूध तथा रुधिरके फेनको पीकर वह भौंरे श्वेत तथा कृष्णमकड़ी होगये उन मकड़ियो ने अपनी २ विष्ठाओं से अनेक प्रकार के जाल बनाये श्वेत मकड़ियों के जालमें सुन्दर पुष्प और कालीमकड़ियों के जालमें विषके पुष्प लटकेहुए थे उन्हीं जालोंपर घूमतीहुई उन मकड़ियों को श्वेत तथा कृष्ण दो मुखवाले सर्पने आकर काटखाया यह देख-

कर उस स्त्रीने मकड़ियों को अनेक प्रकार के घटोंमें छोड़दिया इससे वहमकड़ियां फिर जीकर उन्हीं जालोंपर घूमनेलगी तब विषके वेगसे कालीमकड़ियां चिल्लानेलगीं यह देखकर श्वेत मकड़ियां भी चिल्लानेलगी उनके इस शब्दसे वहांपर बैठेहुए किसी कृपालुमुनिका ध्यान छूटगया तब उन मुनिने अपने मस्तकसे ऐसी ज्वाला छोड़ी कि जिससे उनमकड़ियोंके सबजाल जलगये इससे वहसब मकड़ी जालसे रहितहोकर एक मूंगेके छेददार डंडेमें घुसकर उसडंडेके ऊपर विराजमान तेजमें लीनहोगईं और वहस्त्री चक्र बैल तथा गधेसमेत कहीं गुप्तहोगई यह चमत्कार देखकर मैं वहीं घूमनेलगा इतने में एक पानीकी तलैया मुझे दिखाई दी उसके किनारेपर बैठके मैंने जलमें एकबड़ा वनदेखा उसवनमें एकबहेलिये ने सिंहके दशभुजावाले एकबच्चेको पाकर पाला और जब वह बड़ाहुआ तब क्रोधकरके उसे अपन वनसे निकालदिया वहसिंह किसी वनमें सिंहिनीका शब्द सुनकर उसके ढूंढनेको चला मार्ग में प्रचंडवायुसे उसकी दशों भुजाकटगई तब एकबड़े लम्बे पेटवाले पुरुषने आकर उसकी सब भुजा ज्योंकी त्यों फिर लगादीं इससे वह सिंह फिर बलवान् होके सिंहिनी की प्राप्ति के लिये दूसरे वनमें गया वहाँ उसके ढूंढनेमें बहुतसा क्लेश भोगकर उसे पाकर अपने वनमें चलाआया सिंहिनी समेत उसे आयाहुआ देखके वह बहेलिया उसे वह वन सौंपकर कहीं चलागया इसआश्चर्य्य को देखकर मैंने आश्रममें जाके महर्षि ब्रह्मदंडी को यहदोनों आश्चर्य्य सुनाये मेरे वृत्तान्तको सुनकर उन त्रिकालज्ञ मुनिने कहा कि तुम धन्यहो तुमको परमेश्वरने यहसब चमत्कार दिखायाहै जो स्त्री तुमने देखी थी वह मायाहै जो चक्र वह स्त्री घुमारही थी वह संसारहै उस चक्रपर जो भौंरे घूमरहेथे वह जीवहैं वह बैल तथा गधा धर्म अधर्म हैं बैल तथा गधेके उगलेहुए दूध तथा रुधिरके फेनके पीनेवाले पाप पुण्यके करनेवाले हैं अपने २ कर्मोंके अनुसार वह श्वेत तथा काले होकर अपने २ कर्म के अनुसार पुत्रादिक जालोंको फैलाकर अच्छे पुष्प तथा विषरूपी सुखदुःखका भोगकरते हैं वह जो सर्प तुमने देखाथा वह कालहै वही उनको अपने शुभ तथा अशुभ मुखसे काटकर मारता है तब वह स्त्री रूपी माया उनको घटरूपी अनेक योनियोंमें डालकर फिर उनको उत्पन्न करती है इससे वह फिर अपने २ पुत्रादिक जाल बन्धनोंमें सुख तथा दुःख भोगते हैं तदनन्तर वह जो काली मकड़ियां तुमने विषसे चिल्लाती देखीथीं वह पापी पुरुष दुःखसे पीड़ित होकर परमेश्वरको पुकारते थे उन्हें देखकर श्वेत मकड़ी रूप पुण्यात्मा पुरुष भी वैराग्य युक्तहोके परमेश्वरको ही पुकारनेलगे उनकी पुकारको सुनकर तपस्वी रूप परमेश्वरने ज्वालारूपी ज्ञानसे उनके अज्ञानरूपी सबजाल जलादिये इससे वह सब मुक्तहोकर मूंगेके दंडरूपी सूर्य्य मंडलमें प्रवेशकरके उसके ऊपर स्थित परमधाममें प्राप्तहुए और चक्ररूपी संसार तथा बैल गधे रूपी धर्माधर्म समेत वह मायारूपी स्त्री नष्टहोगई इसप्रकारसे इससंसारमें भ्रमण करतेहुए अपने २ कर्म के अनुसार सुखी तथा दुखी मनुष्य परमेश्वर के आराधनसे ही मुक्तहोते हैं यहबात तुम्हारे मोह दूरकरने के लिये परमेश्वरने तुमको दिखलाई है अबतलैयाके तटपर जो तुमने देखाहै सो भी सुनो वह सब मृगांकदत्तके वृत्तान्तकी होनेवाली बातकी सूचना है सिंह के दशभुजवाले बच्चे के तुल्य दशमंत्रियों

समेत मृगांकदत्तको पालनकरकेभी वनरूप अपने देशसे लुब्धकरूप उसके पिता राजाने उसे निकाल दिया वह अन्य वनरूपी उज्जयिनीमें सिंहिनी रूपी शशाङ्कवतीकी प्रशंसा सुनकर उसके लेनेको चला मार्गमें वायुरूपी सर्पके शापने उसके भुजारूपी मंत्री नष्टकरदिये तब लम्बोदर पुरुषरूपी श्रीगणेशजीने आकर उसके भुजारूपी मंत्री फिर जोड़दिये अर्थात् मंत्री मिलादिये तदनन्तर सिंहरूपी मृगांकदत्त वहाँ से चलकर अत्यन्त क्लेशभोगके सिंहिनीरूपी शशाङ्कवतीको लेकर अपनेदेशमें आया वहाँ लुब्धकरूपी उसका पितराजा उसे स्त्रीसहित आया देखकर उसे वनरूपी अपनादेश देके तपोवनको चलागया इस प्रकारसे परमेश्वरने तुमको सम्पूर्णभावीवस्तु दिखलादी इससे तुम्हारे स्वामीको संपूर्णमंत्री और वह स्त्री अवश्य प्राप्तहोंगी महर्षिब्रह्मदंडी के यहवचन सुनकर मैं धैर्य्यधरके उसआश्रमसे चलकर कईदिनोंके पीछे यहाँ आपसे आनमिला इससे आपका मनोरथ सिद्धहोगा और प्रचंडशक्तिआदिक सम्पूर्णमंत्री आपको मिलजायँगे क्योंकि आपने प्रस्थानकेसमय विघ्नका हर्ता परमकृपालु भक्तवत्सल श्रीगणाधिपति का पूजन कियाथा इससे वह आपपर प्रसन्नहैं विमलबुद्धिसे यह सब वृत्तान्त सुनकर मृगांकदत्त प्रसन्नहोके अपने अन्य मंत्रियोंको ढूंढताहुआ उज्जयिनी नगरीको चला १३२ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेतृतीयस्तरंगः ३ ॥

इसके उपरान्त शशांकवतीके निमित्त श्रुतधि तथा विमलबुद्धिके साथ उज्जयिनी नगरीको जाता हुआ मृगांकदत्त मार्ग मे नर्मदा नदीके तटपर पहुंचा वह नर्मदा इसे देखकर मानों प्रसन्नहोके अपनी चंचल लहररूपी भुजाओंको फैलाकर नृत्यसा कररहीथी वहां मायावटुनाम एक भीलोंका राजा स्नान करनेको आया जैसेही वह स्नान करने लगा वैसेही तीन जल मानुषोंने आकर उसे पकड़लिया और उसके सेवक भयभीत होकर भागगये यह देखके मृगांकदत्तने खड्गलेके जलमेंजा उनतीनोंको मारकर उसभीलोंके राजाको बचाया उस आपत्तिसे छूट जलके बाहर आके भिल्लराज मायावटुने मृगांकदत्तके चरणोंमें गिरकर पूछा कि आप कौनहैं जिनको परमेश्वर मेरे प्राणोंकी रक्षाकेलिये यहां लाया, किस पुण्यात्माके वंशको आपने अपने जन्मसे सुशोभित किया है और किस देशके पुण्य उदयहुए हैं जहां आप जाइयेगा उसके यह वचन सुनकर श्रुतधिने मृगांकदत्तका सबवृत्तान्त उसे सुनादिया उस वृत्तान्तको सुनकर मायावटुने नम्रतापूर्वक कहा कि आपके अभीष्टकार्य्य में यह दासभी दुर्गपिशाच नाम मातंगपति मित्र समेत यथाशक्ति सहायता करनेकेलिये उद्यत रहैगा हे स्वामी इस दीनके घरको भी चलकर सफलकीजिये इस प्रकार नम्र वचनों से प्रार्थना करके मायावटुने श्रुतधि तथा विमलबुद्धि समेत मृगांकदत्तको अपने ग्राममें लेजाकर अपने ऐश्वर्य्यके अनुसार उसकी बड़ी सेवा की और उस मातंगपतिनेभी वहां आकर अपने मित्रके प्राणोंकी रक्षाकरनेवाले मृगांकदत्तकी बड़ी प्रशंसाकी और कहा कि आप मुझे अपना दास समझिये तदनन्तर मायावटुकी प्रार्थनासे मृगांकदत्त कुछदिन वहां रहा एकदिन उसके आगे मायावटु अपने प्रतीहार चंडकेतुकेसाथ द्यूतखेलनेलगा इतनेमें मेघोंकेगर्जनेसे मोर नाचनेलगे उनके देखनेकेलिये मायावटु उठा, उसे उठादेखकर द्यूतके परमरसिक उस प्रतीहारने

कहा कि हेस्वामी इननृत्यके न जाननेवाले मोरोंको देखकर क्याकरियेगा मेरे घरमें एकऐसामोरहै जैसा संसारभरमें नहीहै यदि आपकीइच्छाहोगी तो प्रातःकाल में आपको दिखाऊंगा यहसुनकर मायावटु यहकहके कि अच्छा मुझेदिखाना दिनकीकृत्यकरनेको चलागया और मृगांकदत्तनेभी उसके यहवचन सुनके अपने साथियों समेत स्नान भोजनादि कृत्यकिया इसप्रकार दिनके व्यतीत होजानेपर रात्रिके समय मृगांकदत्त सबलोगों के सोजानेपर नीलेकपड़े पहनके खड्गलेकर भ्रमण करनेको निकला मार्ग में आतेहुए विना देखे किसी पुरुषके कन्धे से उसका कन्धा लड़गया इससे उसने कुपितहोके उसपुरुष से कहा कि तुम मेरे साथ युद्धकरो यह सुनकर उस बुद्धिमान् पुरुषने कहा कि क्यों बिना विचारे क्रोध करतेहो यदि विचारकरो तो चन्द्रमाको दोष देना चाहिये जिसने इस रात्रिको प्रकाशित नही किया अथवा ब्रह्माको दोषदेनाचाहिये जिसने सब रात्रियों में प्रकाशकरनेका चन्द्रमाको अधिकार नहीं दियाहै जिसके कारण इस घने अन्धकार में अकारण वैरहोते हैं यह सुनकर मृगांकदत्त ने तुम बहुत ठीककहते हो यह कहकर उससे पूछा कि तुम कौनहो उसने मिथ्या कहा कि मैं चोरहूं यह सुनकर मृगांकदत्त ने हाथबढ़ाकर उससे कहा कि हाथ मिलाओ मैंभी तुम्हारा साथीहूं इसप्रकार उसके साथ मित्रताकरके मृगांकदत्त उसीकेसाथ यह कहाँजायगा यह जाननेके लिये चला और एक तृणों से ढकेहुए जीर्णकूपपर पहुँचके उसीके द्वारा सुरंगमें होकर मायावटुके अंतःपुरमें पहुँचा वहां मृगांकदत्तने तो दीपकके प्रकाश से उसे पहचानलिया कि यह चण्डकेतुनाम प्रतीहारहै चोर नहीं है परन्तु प्रतीहारने उसे नहीं पहचाना क्योंकि एक तो उसका वेष अन्यथा दूसरे वह कोने में बैठरहा, उस प्रतीहार को देखकर मायावटुकी रानी मंजुमती ने उसे अपने गले में लगालिया और अपने पलँगपर बैठाके पूछा कि आज तुम्हारे साथ दूसरा पुरुष कौनहै यह सुनकर प्रतीहार ने कहा कि मेरा एकमित्रहै सावधानरहो यह सुनकर मञ्जुमती बोली कि मुझ अभागिनी को सावधानता कहाँ है देखो इस राजा को मृत्युके मुखसेभी मृगांकदत्तने बचालिया यह सुनकर प्रतीहारने कहा कि शोक मतकरो मैं थोड़ेहीकालमें मृगांकदत्त और राजा को मारडालूंगा यह सुनकर वह बोली कि क्या बलबलातेहो जब नर्मदा के जल में राजा को जलमानुषों ने पकड़ाथा तब अकेले मृगांकदत्तनेही उसकी रक्षाकीथी उस समय तुमने उसे क्यों न मारडाला क्यों डरकर भाग आये इससे तुम चुपरहो ऐसा न होय कि किसी से यह तुम्हारे वचन सुनकर मृगांकदत्त तुम्हें भी मार डाले यह सुनकर प्रतीहारने क्रोधकरके कहा कि हे पापिन तू अब मृगांकदत्तपर आशक्तहुई है इसीसे उसकी प्रशंसा कररही है अच्छा ले मैं उसका फल तुझे देताहूं यह कहके छुरी लेकर वह उसके मारने को चला उसे मारनेको उद्यत देखकर एकचेरीने अपने हाथमें छुरी रोकली और मंजुमती वहां से उठ कर भागगई उसके भागजानेपर वह प्रतीहार चेरी के हाथसे छुरी छीनके मृगांकदत्त के साथ सुरंगसे निकलकर अपने घरपरआया वहां मृगांकदत्तने उससे कहा कि तुम अपने घरपर पहुंचगये अब मैं जाताहूं यहसुनकर उसने उसकी चेष्टा देखने के लिये कहा कि तुमभी थकगयेहोगे यहीं सोरहो प्रातः काल चलेजाना उसनेकहा कि अच्छा तब प्रतीहारने अपने एक सेवकसेकहा कि इसको वहांलेजाओ

जहां वह मोर बन्दहै और वहीं शयनके लिये इसको पलँग बिछादो उसकी यह आज्ञापाकर वह सेवक मृगांकदत्तको वहीं लेगया और पलँग बिछाके तथा दीपक बालके द्वारके बाहरकी कुण्डी बन्दकरके अपने स्थानपर चलागया उसके चलेजाने पर मृगांकदत्त ने पिंजरे में बन्दहुए एकमोरको देखा ५२ और उसे देखकर यहशोचके कि जिसमोरकी प्रशंसा प्रतीहारने कीथी वह यही है उसको पिंजरे से खोल दिया वह मोर पिंजरे से निकलकर मृगांकदत्तको देखकर उसके पैरोंपर वारम्वार लोटनेलगा उस लोटते हुए मोरके गले में एक सूत बँधाहुआ देखकर मृगांकदत्त ने सूतसे उसे पीड़ित जानकर उसका वह सूत तोड़डाला सूतके टूटतेही वह मोर उसका भीमपराक्रम मंत्री होकर उसके पैरोंपर गिरा उसे उठाकर गलेसे लगाकर उससे मृगांकदत्त ने पूछा कि हे मित्र कहो तो यह क्या चमत्कारहै यह सुनकर उसने प्रसन्नहोकर कहा कि हे स्वामी आप सुनिये मैं अपना सब वृत्तान्त आपसे कहताहूं सर्पके शापसे जब आपका साथ मुझसे छूटा तो वनमें घूमते २ मुझे एक सेमरकावृक्ष मिला उस वृक्षमें गणेशजीकी एक प्रतिमागड़ीहुई देखकर मैं प्रणामकरके उस वृक्षकी जड़पर बैठगया और यह शोचनेलगा कि मैंने जो स्वामी से बेतालका वृत्तान्त कहदिया यह बड़ा पापकिया क्योंकि इसी निमित्त स्वामी को इतने दुःख भोगने पड़ेहैं इससे मैं इस अपने पापी शरीरको त्यागदूंगा यह शोचके मैं गणेशजी के आगे निराहार होकर बैठगया मुझे वहां बैठे २ कई दिन व्यतीतहोजाने पर एक वृद्धपथिक उसीमार्ग में आकर वृक्षके नीचे छाया में बैठगया और मुझे म्लान देखकर बोला कि हे पुत्र इस निर्जन वनमें तुम अकेले क्यों बैठेहो उसके यह वचन सुनके मैंने अपना सब वृत्तान्त उससे कहदिया मेरे वृत्तान्तको सुनकर उसवृद्ध ने कहा कि तुम वीरहोकरभी स्त्रियोंके समान क्यों प्राणदेनेको उद्यतहुएहो देखो स्त्रियांभी आपत्तिमें धैर्य्य को नहीं छोड़ती हैं इस विषयपर मैं तुमको एककथा सुनाताहूं कोशला नाम नगरी में विमलाकरनाम राजाके कमलाकरनाम पुत्रथा जिसेब्रह्माने मानोस्वामिकार्त्तिक कामदेव तथा कल्पवृक्षको जीतनेकेलिये तेजरूप तथा दातृत्वगुण से युक्त कियाथा एकसमय उस कमलाकर के आगे किसी बन्दीजन ने यह श्लोक पढ़ा कि (पद्मासादनसोत्सवनानामुखरद्विजालिपरिगीतम्। कमलाकरमप्राप्ताकरतिंहंसावली लभताम्) कमलोंकी प्राप्तिसे प्रसन्न अनेक शब्दायमान पक्षियोंके मनोहर शब्दों से युक्त कमलाकर को न पाकर हंसावलीको कहां चैनपड़े इसश्लोकको सुनकर कमलाकरने मनोरथ सिद्धि नाम उस बन्दी से पूछा कि तुम इसश्लोकको बारम्वार क्यों पढ़तेहो उसने कहा कि हे स्वामी सुनिये एक समय परदेशमें पर्य्यटन करताहुआ मैं मेघमाली नाम राजाकी विदीशानाम नगरी में गया वहां दर्दुरक नाम गीताचार्य्य के घरमें टिका एकदिन उसने मुझसेकहा कि यहां राजाकी हंसावलीनाम पुत्री कल प्रातःकाल राजाको अपना नवीन सीखाहुआ नृत्य दिखावेगी यहसुनकर दूसरे दिन मैं भी उसके साथ युक्तिपूर्व्वक नृत्यशालामें चलागया वहां चञ्चल आभूषणरूपी पुष्पवाली चंचल हाथ रूपी पल्लववाली और यौवनरूपी वायुसे कांपतीहुई कामदेवकी लतारूपी उस हंसावलीको देखकर मैंने शोचा कि इस सुन्दरी के लिये कमलाकरके सिवाय और कोई पति योग्य नहीं है जो उसके साथ इसका

विवाह न हुआ तो कामदेवका धनुषधारण करनाही व्यर्थ है इससे मुझे इस विषय में कुछ उपाय करना चाहिये यहशोचकर नृत्यके अन्तमें मैंने वहां से उठके राजद्वारमें जाकर यहपत्र लिखकर चिपका दिया कि यहां जो कोई चित्रकार मेरे समान होय वह मेरे सामने आकर चित्र लिखे मेरे इस पत्रका उत्तर किसी ने न दिया इससे राजाने मुझे बड़ा गुणवान् जानकर अपनी पुत्री हंसावलीके यहां चित्र बनाने को नियतकरदिया उसराजपुत्री के मन्दिर में मैंने दीवारपर आपका चित्र लिखदिया और एक अपने विश्वासपात्र मित्रको उन्मत्तरूप बनाके उससे अपना अभिप्राय कहकर कहदिया कि तुम राजमंदिरकेनिकट घूमो उसेघूमते देखकर राजपुत्रोंने खिलौने के समान उसे अपनेपास पकड़मँगवाया और वहां से हंसावली ने अपने खेलनेकेनिमित्त अपने मंदिरमें बुलवाया वहां आकर उसने आपका चित्र देखकरकहा कि आज भाग्यवशसे शंख चक्र तथा कमलादि लक्षणों से युक्त विष्णुके समान अनन्त गुणवान् यह कमलाकर दिखाई दिया है उसके यहवचन सुनकर हंसावलीने मुझसे पूछा कि यह क्या बकरहा है और तुमने किसका यह चित्र लिखाहै उसके यह पूछनेपर मैंनेकहा कि हे राजपुत्री मैं जानता हूं कि इस उन्मत्तने इसराजपुत्रको पहले कहीं देखाहै यह कमलाकर नाम राजपुत्रका चित्रहै यह कहकर मैंने आपके रूप तथा गुणोंकी बड़ी प्रशंसाकी उस प्रशंसाको सुनकर आपके प्रेमरूपी रससे सिंचेहुए उसके हृदयमें नवीन कामदेवरूपी वृक्ष उत्पन्नहोगया इतनेही में राजाने वहां आकर उस उन्मत्तको नाचते देखके क्रोधकरके मुझे और उस उन्मत्तको वहां से निकलवादिया तब से कृष्णपक्षमें चन्द्रमाकी कलाके समान प्रतिदिन क्षीणहोती हुई आपकेलिये उत्कण्ठित हंसावली रोगका बहाना करके अपने पितासे आज्ञा लेकर पापनाशक श्रीकृष्णजी के मन्दिर में अकेली रहनेलगी और आपकी चिन्ता से व्याकुलहोकर अत्यन्त खेद से दिनोंको व्यतीत करनेलगी एकदिन श्रीकृष्णभगवान् के दर्शन करने के बहाने में उस मन्दिर में गया वहां उसने मुझे देखकर बहुत वस्त्र तथा आभूषण मुझे दिये उनको लेकर बाहर आके एकवस्त्र के कोने में पद्मासादनसोत्सव इत्यादि श्लोक लिखा देखकर यहां आके आप के आगे पढ़ा लीजिये यह वही वस्त्र है जिसमें श्लोक लिखा है उस बन्दी के यह वचन सुनके और वस्त्रके कोने में लिखेहुए उस श्लोकको पढ़के कमलाकर हंसावली पर आशक्तहोकर उसके मिलने का उपाय शोचनेलगा इतने में उसके पिता विमलाकरने उसे बुलाकर कहा कि हे पुत्र मंत्रसे बँधेहुए सर्पोंके समान आलसी राजा नष्टहोजातेहैं और उनका उदय कभी नहींहोता तुमने सुखसे पड़कर अभी तक जीतनेकी इच्छानहींकी इससे आलस्य छोड़कर उद्योगकरो पहले अंगदेशकेराजाको जाकर जीतो क्योंकि वह हमारे ऊपर चढ़नेकी इच्छाकररहा है पिताके यह वचन सुनकर अपनी प्रियाकेपास जाने की इच्छा करके कमलाकर बहुत प्रसन्नहोके बहुतसी सेनालेकर अंगदेशके राजाके जीतने को चला कई दिनों में अंगदेश में पहुंचकर उसने अंगदेशके राजा की सम्पूर्ण सेना मारकर उसे जीताहुआ ही पकड़लिया और बाँधकर प्रतीहार के द्वारा अपने पिताके पास भेजदिया और उस प्रतीहारसे कह दिया कि मेरे पितासे कहदेना कि मैं अब अन्य राजाओं के जीतने को जाताहूं इसप्रकार अंगदेशके

राजाको जीतकर मार्ग में अन्य राजाओंको जीतताहुआ कमलाकर विदिशानाम नगरीके निकट पहुँचा वहाँ ठहरकर उसने राजामेघमाली केपास हंसावलीके मांगनेकेलिये दूतभेजा राजा मेघमाली दूतकेद्वारा कमलाकर का आगमन सुनकर उसकेपास आया और उसका बड़ा सत्कार करके बोला कि केवलदूत के द्वारा सिद्ध होनेवाले इस कार्य्य मे आपने इतनाश्रम क्यों किया मैं तो आपके साथ हंसावली का विवाह करना ही चाहताथा इसका कारण यहहै कि बाल्यावस्थामें विष्णु भगवान्का पूजन करतीहुई इसहंसावलीके कोमल अंगोंको देखके मुझे यह चिन्ताहुई कि इसके सदृश वर कहां मिलैगा यही चिन्ता करते २ मुझको महाज्वर उत्पन्नहुआ उसज्वरकी शान्तिके निमित्त मैंने विष्णु भगवान्का पूजन किया उसपूजनके प्रभावसें रात्रिके समय कुछ निद्रा आनेपर स्वप्नमें विष्णु भगवान्ने आकर मुझसे कहा कि हे पुत्र जिसहंसावली के लिये तुमको यह ज्वर हुआहै वही तुमको अपने हाथसे स्पर्शकरे तो ज्वर उतर जायगा क्योंकि मेरे पूजनसे वह ऐसी पवित्र होगई है कि वह जिसको अपने हाथसे स्पर्श करेगी उसका असाध्य ज्वरभी जातारहैगा इसके विवाहकी भी चिन्ता तुम न करो राजपुत्र कमलाकर इसका पतिहोगा और कुछकाल इसे थोड़ा कष्टहोगा कृष्ण भगवान्के यह वचन सुनके रात्रिके अन्त में मेरी निद्रा खुलगई और हंसावलीके हाथके स्पर्शसें मेराज्वर उतरगया इससे श्रीविष्णु भगवान्की आज्ञासे ही मैं हंसावलीका विवाह तुम्हारे साथ अवश्य करूंगा यहकहके लग्नका निश्चयकरके राजा मेघमाली अपनी राजधानीको चलागया वहां हंसावलीने अपने पितासे सब वृत्तान्त सुनके अपनी कनकमंजरी सखीसे कहा कि तुमजाकर देखआओ यह वही राजपुत्रहै जिसका चित्र उस चित्रकारने लिखाहै ऐसा न होय कि मेरेपिता इसीनामके किसी अन्य राजपुत्रके साथ मेरा विवाह करदें यहसुनकर कनकमंजरी तपस्विनीका वेष बनाके कमलाकर के डेरे में प्रतीहारके द्वारा उसकी आज्ञापाकर उसके पासगई वहां कामके मोहनास्त्रके समान उसे देखकर कामसे पीड़ितहोकर उसने शोचा कि जो इसके साथ मेरा समागम न हुआ तो मेरे जन्मको धिक्कार है इससे इसकी प्राप्तिका कुछ उपाय करना चाहिये यह शोचकर उसने एकमणि कमलाकरको भेट करके कहा कि इसमणि के धारण करने से शत्रुओं के शस्त्रस्तंभित होजाते हैं इसबातका मैंने कईवार अनुभव किया है तुम्हारे गुणोंको देखकर मैंने तुमको यह देदी है क्योंकि तुम्हें तो इसकी आवश्यकता है मुझ तपस्विनी को इसकी क्या आवश्यकता है यह कहके और उसकी दी हुई भिक्षाको न ग्रहणकरके कनकमञ्जरी वहां से निकलकर तपस्विनी का वेष त्यागकर कुछ उदासीनसी होकर हंसावली के पासगई और यह मिथ्या वचन बोली कि हे राजपुत्री तुम्हारे स्नेह से मैं यहगुप्त बात कहतीहूं कि यहां से तपस्विनीका वेष धारणकरके मैं कमलाकरके डेरे में गई वहां एकपुरुषने मुझसे कहा कि हे भगवती तुम भूत उतारना जानतीहो मैंने कहा कि हां यह कौन बड़ी बात है यह सुनकर वह मुझे राजपुत्र कमलाकरके पास लेगया उस समय उसपर भूत का आवेशथा इस से बहुत से पुरुष उसको पकड़ेहुए बैठेथे और उसके पास अनेक प्रकार की मणि तथा औषधि रक्खी थी यह देखकर मैं भी झूठमूठ मंत्र पढ़ के प्रातःकाल इसका दोष दूरकरूंगी यह

कहके तुम्हारे पास चली आई हूं इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह वही कमलाकर है अब तुम जैसा उचित समझो सो करो उसके यह वचन सुनकर सरल प्रकृतिवाली हंसावलीने बहुत दुखित होकरकहा कि ब्रह्मा अपनी गुणवती सृष्टिमें कोई न कोई दोष अवश्य लगादेते हैं जैसे चन्द्रमामें कलंक, मैं उसे अपना पति तो बनाही चुकीहूं इससे दूसरा पति करना तो मुझे योग्य नही है परन्तु प्राणदेना अथवा किसी वनमें चलाजाना उचितहै अब तुम बताओ मुझे क्या करना चाहिये यह सुनके उस दुष्ट कनकमंजरीने कहा कि विवाहके समय तुम अपनासा वेष बनाके किसी सखीको बैठालके जब सब लोग कामोंमें लगजांय तब तुम मेरे साथ कही चलीचलना यह सुनकर हंसावली ने कहा कि तुम्हीं मेरा स्वरूप धारण करके उसके साथ विवाह करना क्योंकि तुम्हारे समान और कोई विश्वासपात्र मेरी सखी नही है यह सुनकर कनकमंजरीने कहा कि धैर्य्यधरो ऐसाही करूंगी परन्तु उस समय जैसा मैं तुमसे कहूं वैसाही करना उसे इसप्रकार सावधान करके अपनी अशोककरी नाम सखीसे कनकमंजरी ने जाकर सब वृत्तान्तकहा और उसे भी हंसावलीके पास लेजाकर परिचित करवादिया तदनन्तर विवाह के दिन जब सायंकालके समय कमलाकर अपनी सम्पूर्ण सेना लेकर राजमंदिरमें आया तो उत्सवमें सब लोगोंके लगजानेपर कनकमंजरीने युक्ति पूर्व्वक सब सखियोंको हटाके अपना वेष हंसावलीकासा बनालिया और अपनासा अशोककरीका वेषबनाकर हंसावली से कहा कि इस पुरके पश्चिमद्वार से जाके कोसभरपर एक पुराना सेमरका वृक्षहै वहीं जाकर तुम उसके खोलमें बैठरहो सम्पूर्ण कार्य्य करके मैं वही तुम्हारे पास आऊंगी उसके यहवचन सुनकर हंसावली सखीकासा वेषबनाके पुरी के पश्चिम द्वारसे जाके उस सेमरके वृक्षके निकट पहुँची और उसवृक्षके खोलको बहुत अन्धकार युक्त देखके भय भीतहोकर पासके एकबरगदके वृक्षपर चढ़के अपनी सखी का मार्ग देखनेलगी उस सरल चित्तवाली हंसावलीको अबतक उसदुष्ट कनकमञ्जरीका कुछभी अभिप्राय नहीं मालूमहुआ इसबीचमें लग्नकासमय आजानेपर हंसावलीका वेषबनायेहुए कनकमञ्जरीका बिवाह राजाने कमलाकरके साथ करदिया उस समय रात्रिके और घूंघटके कारण उसकारूप किसीने पहचाना नहीं विवाहकरके उसबनीहुई हंसावली को कनकमञ्जरी रूपधारिणी अशोककरी समेत लेकर उसी दिन शुभ लग्न और नक्षत्रहोनेके कारण कमलाकरपुरीके पश्चिम द्वारसे अपने डेरेको चला मार्गमें उस सेमरके वृक्षके निकट आकर जहां हंसावली बरगदके वृक्षपर बैठीथी कनकमञ्जरी एकाएकी भयभीतसी होकर कमलाकरसे लिपटकर बोली कि हे आर्यपुत्र आज रात्रिको मैंने यहस्वप्नदेखा कि इस सेमरके वृक्षसे निकलकर एकराक्षसी मुझे खानेको दौड़ी तब किसी ब्राह्मणने दौड़कर मुझे बचाया और कहा कि हे पुत्री इसवृक्षको तुम जलवादेना और जो कोई स्त्री इसमेंसे निकलकर भागे उसे इसी में डलवादेना इसप्रकारसे तेरा कल्याणहोगा यहकहके उस ब्राह्मणके अन्तर्द्धानहोजानेपर मेरी निद्राखुलगई इसीसे इसवृक्षको देखकर मुझे उसराक्षसीका बड़ा भय मालूमहोताहै उसके यहवचन सुनकर कमलाकरने अपने सेवकोंको आज्ञादेके वहवृक्ष जलवादिया उसवृक्षके जलजानेसे कनकमञ्जरीने जाना कि हंसावली जलगई क्योंकि वह उसमें से निकली नहीं

तदनन्तर अत्यन्त प्रसन्नहुई कनकमञ्जरीको सत्य हंसावली जानकर कमलाकर उसेलेकर अपने डेरेपर आया और वहांसे शीघ्रही अपना डेरा उठाकर कोशलापुरीको आया वहां राजा विमलाकर बधूसमेत अपने पुत्रको देखकर उसे राज्य देकर तपोवनको चलागया और कमलाकर कनकमञ्जरीके साथ राज्य के सुखका भोगकरनेलगा उनदिनों वह मनोरथसिद्धिनाम वन्दी किसी कार्य्यसे कहीं दूरचला गयाथा इससे उस कनकमञ्जरीको कोईभी नही पहचानसका इसवीचमें बरगदके वृक्षपर बैठीहुई हंसावलीने वह सब वृत्तान्त देखके और सुनकर अपनेको छलीगई जानकर कमलाकरके वहासे चले आनेपर शोचा कि इसदुष्ट सखीने छलकरके मेरा पति छीनलिया यह मुझे जलाकर सुखभोगना चाहती है ठीकहै (अश्रेयशेनवाकस्यविश्वासोदुर्जनेजने) दुर्जन जनपर विश्वास करनेसे किसको दुःखनहीं होताहै अच्छा अब मैं इसजलते हुए वृक्ष मे अपने शरीरको जलाकर इसदुःखसे छूटूं यह शोचके वह उसबरगदपर से उतर के प्राणदेनेको उद्यतहुई भाग्यवशसे उससमय उसके चित्तमें यहविचार उत्पन्नहुआ कि मै व्यर्थ अपने प्राण क्योंदू कदाचित् जीतीरहूंगी तो उसदुष्ट सखी से अपना बदला लूंगी क्योंकि मेरे पिता से स्वप्नमें विष्णु भगवान्ने कहाथा कि हंसावली को कमलाकर पति प्राप्तहोगा परन्तु बीच में इसको कुछ क्लेश प्राप्तहोगा इससे मैं वन मे जाकर कुछकाल व्यतीतकरूं यह निश्चयकरके हंसावली निर्जन वन में गई कुछ दूर जाने पर मानों दयाकरके मार्ग दिखाने के लिये वह रात्रि व्यतीत होगई और उसको देखकर मानों दुखितहोके आकाश ओशरूपी अश्रु छोड़नेलगा और मानों उसके आंसूपोछने के लिये सूर्य्यभगवान्ने अपनी किरणरूपी हाथ फैलाये तब दिन होजाने के कारण कुछ सावधानहुई राजपुत्री हंसावली धीरे २ बहुत दूर चलकर कुश तथा कांटो से घायलहोकर एक वनमें पहुँची वह वन पक्षियों के मनोहर शब्दो से मानो उसे बुलारहाथा कि यहां आओ और वृक्षों के वायुके द्वारा चंचल बड़े २ पत्तों से मानो उसके श्रमको दूर करने के लिये पंखे हांकरहाथा प्रफुल्लित आमके वृक्षोंपर बैठीहुई कोकिलाओ के मनोहर शब्दों से युक्त वसन्तकी बहारवाले उस वनको देखकर हंसावली ने दुखित होकर शोचा कि यद्यपि यहां पुष्पोंकी रजसेयुक्त मलयाचलकी वायुसे मेरे शरीर में दाहहोताहै और भ्रमरयुक्त वृक्षों से गिरतेहुए यह पुष्प कामके बाणोंकी समान मेरे शरीरमें लगते हैं तथापि मैं यहीं रहकर अपने पापोंको दूर करने के लिये इन्हीं पुष्पोंसे विष्णुभगवान्का पूजनकरूं यह शोचकर वह कमलाकरकी प्राप्तिके निमित्त बावड़ियों में स्नानकरके श्रीकृष्णभगवान्का पूजन करतीहुई फल मूल खाकर वहीं रहनेलगी २०१ इसवीचमें भाग्यवशसे कमलाकरको चातुर्थिक ज्वर आनेलगा यह देखकर उस पापिन बनीहुई हंसावलीरूप कनकमंजरी ने शोचा कि एकभय तो मुझको अशोककरीके कारण बनाही रहताथा कि ऐसा न होय कि यह मन्त्र भेदकरदे उसपर अब यह दूसरा भय उत्पन्नहुआहै कि जो हंसावलीके पिताने इस मेरे पति कमलाकर से कहाथा कि इसके हाथके स्पर्श से ज्वर नाश होताहै यहबात जो इसे स्मरण आजायगी तो मेरा सब भेद खुलजायगा इससे किसी योगिनने जो मुझे ज्वर नाशक विधिवताई थी वह करनी चाहिये और उसी विधि में उस अशोककरी को भी मारडालना चाहिये क्योंकि

मनुष्योंकी शरीरकी बलि उसमें देनी आवश्यक होती है ऐसा करने से राजाका ज्वर भी जातारहैगा और अशोककरी भी मरजायगी इस उपायसे मेरे दोनों भय निवृत्तहोजायंगे यहशोचकर वह रात्रिके समय अशोककरी के द्वारा सब सामग्री को मँगाकर उसको साथलेके श्रीशिवजी के मन्दिरमेंगई वहां जाकर उसने खड्गसे एक बकरा मारकर उसके रुधिरसे श्रीशिवजी को अर्घ देकर स्नानकरवाया उसकी आंतोंकी मालापहराई उसका हृदयकमल इनके शिरपर चढ़ाया उसके नेत्रोंकी धूपदी और उसके शिर की बलिदीनी फिर इस प्रकार पूजनकरके शिवलिंगके आगे लालचंदनसे चौकादेके उस चौकेपर अष्ट दल कमलबनाके उस कमलपर त्रिपाद तथा त्रिमुख ज्वरकी प्रतिमाबनाकेरक्खी और उसमें परिवार सहित ज्वरका आवाहनकरके अशोकवती से कहा कि हे सखी श्रीशिवजी के आगे तुम अधोमुखहोके साष्टाङ्ग प्रणामकरो इससे तुम्हारा बड़ाकल्याणहोगा यह सुनकर अशोककरी के उसीप्रकारसे लेटजानें पर कनकमंजरी ने उसपर खड्गका प्रहारकिया परन्तु भाग्यवशसे खड्ग उसके अच्छेप्रकारसे नहीं लगा इससे वह घायलहोकर उठकेभागी औरकनकमंजरीको पीछेआते देखकरमुझे कोई बचाओ २ यहकहके चिल्लानेलगी उसके चिल्लाने के शब्दको सुनकर पुरके रक्षकों ने दौड़कर कनकमंजरीको राक्षसी जानकर मारते २ अधमरी करडाला और अशोककरी से सब वृत्तान्त पूछकर कोतवालको साथलेके उन दोनों स्त्रियों को राजाके सन्मुखलेजाकर सबवृत्तान्तकहा वहां कनकमंजरी भयके कारण और प्रहारोंकी व्यथासे शीघ्रहीमरगई यह देखकर राजाने अशोककरीसे कहा कि तुम निर्भयहोकर ठीक २ सब वृत्तान्त कहो राजाकी यह आज्ञापाकर उसने कनकमंजरीके आदिसे अन्ततक छलकरने का जो २ वृत्तान्तहुआ था वह सब कह दिया उससे सब तत्त्वको सुनकर राजा कमलाकरने शोचा कि इस दुष्टकनकमंजरी ने मुझे ऐसा ठगा कि मैंने अपनेही हाथ से हंसावली को जलादिया उस दुष्टाको तो अपने कर्मों का फल मिलगया जो रानीहोकर भी इस प्रकारसे मारीगई परन्तु ब्रह्माने बालकके समान मुझको केवलरूप मात्रसे मोहित करके रत्नछीनकर काच क्यों देदिया देखो मैंने अपने ज्वरके दूर करने के लिये विष्णु भगवान् के दियेहुए हंसावली के बरकाभी स्मरण नहींकिया इसप्रकार शोचते २ उसे यह विचार आया कि मेघमाली ने मुझसे कहा था कि विष्णु भगवान् ने कहाहै कि हंसावली को कमलाकरही पति प्राप्त होगा परन्तु बीचमें कुछ क्लेशहोगा इससे यह विष्णु भगवान्का वचन मिथ्या नहीं होसक्ता इसीसे वह कहीं न कहीं अवश्यजीती होगी क्योंकि (स्त्रीचित्तस्येवदैवस्यकोवेत्तिगहनाङ्गतिम्) स्त्रियों के चित्त के समान भाग्यकी गहनगतिको कौन जानसक्ता है इससे उस मनोरथ सिद्धिबंदी को फिर बुलवाना चाहिये यह शोचके उसने उस मनोरथसिद्धिको बुलवाकर कहा कि तुम इनदिनों यहां क्यों नहीं दिखाई दिये अथवा जिनको धूर्त्तठगते हैं वहां मनोरथ सिद्धि कैसे होसक्ती है यह सुनकर मनोरथ सिद्धिने कहा कि हे स्वामी राजद्वारमें मंत्र भेदकरने से अनेक आपत्ति आनपड़ती है इस भयसे मैं नहीं आया आप हंसावली के निमित्त विषाद न कीजिये क्योंकि विष्णु भगवान् ने ही उसको कुछकाल क्लेशभोगनेको कहाहै इनदिनों वही उसकी रक्षाकररहेहोंगे क्या आपने धर्म्म अधर्मका उदाहरण यहीं नहीं देखलिया

हे स्वामी अब मैं उसका पतालगाने के लिये जाऊंगा वन्दीके यह वचनसुनकर कमलाकर ने कहा कि मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा क्योंकि यहां मेराचित्त क्षणभरभी नहीं लगताहै यह कहकर और अपने प्रज्ञाढ्यनाम मन्त्रीको राज्य सौंपकर कमलाकर मनोर्थसिद्धिके साथ चला और क्रमसे अनेक ग्राम वन तथा आश्रमों को ढूंढताहुआ उस वन में पहुँचा जहाँ हंसावली तप कररहीथी वहां लाल अशोकके नीचे बैठीहुई चन्द्रमाकी अन्तिमकलाके समान हंसावलीको देखकर उसने वन्दी से कहा कि यह कौन स्त्री निश्चल बैठे हुए ध्यान कररही है यह तो कोई देवी मालूम होती है क्योंकि इसकारूप मृत्युलोक के योग्य नहीं है यह सुनके बन्दी ने उसे पहचानकर कहा कि हे स्वामी आप बड़े प्रारब्धी हो यह वही हंसावली है उन दोनों की यह वार्त्तालाप सुनकर और बन्दी को पहचानकर हंसावली का दुःख एकाएकी नवीनसा होगया और वह धैर्य्य छोड़कर चिल्लानेलगी कि हे तात हे आर्य्यपुत्र कमलाकर हे मनोर्थ सिद्धि तुम कहाँ हो हाय मेरे विपरीत भाग्य ने यह क्या किया इसप्रकार विलाप करते २ उसे मूर्च्छा आगई और कमलाकरभी उसे रोते देख के बहुत दुखितहोके पृथ्वी में गिरपड़ा उन दोनों को मूर्च्छित देखकर मनोर्थसिद्धि ने जल छिड़ककर दोनों को जगा के परस्पर मिलाया इसप्रकार वियोगरूपी समुद्रको पारकरके वह दोनों अत्यन्त आनन्दको प्राप्तहुए और परस्पर अपना २ वृत्तान्त कहकर वह दोनों मनोर्थसिद्धि समेत कोशलापुरी में आये वहाँआकर कमलाकर ने हंसावली के पिता राजा मेघमालीको बुलवाकर उससे सब वृत्तान्त कहके हंसावलीके साथ विधिपूर्व्वक विवाह किया इस प्रकार हंसावलीको पाकर राजा कमलाकर मनोर्थसिद्धिको बहुतसे ग्राम तथा धन देकर आनन्दपूर्व्वक हंसावलीकेसाथ राज्यका सुख भोगनेलगा इसीप्रकारसे जो कोई आपत्तिमें अपने धैर्य्यको नहीं त्यागतेहैं उनके सब कार्य्य सिद्ध होतेहैं इससे हे पुत्र शरीर न त्यागकरो तुम्हारा स्वामी तुमको मिलजायगा इसप्रकार यह कथा कहके वह वृद्ध पथिक मुझे मरनेसे निवारण करके वहां से चलागया २६१

यह वृत्तान्त कहके चंडकेतुके घरमें मृगांकदत्तसे भीमपराक्रमने फिर कहा कि उसवृद्धका उपदेशपाकर मैं आपसे मिलनेको उज्जयिनी नगरीमें गया वहां आपको न पाकर थकके एकस्त्रीके यहां रहनें के निमित्तगया वहां उसे भोजनका मूल्य देकर उसकी दीहुई शय्यापर हारा थका होकर सोरहा क्षणभरके बाद मेरी निद्रा खुलगई तब मैंने चुपचाप लेटे २ देखा कि उसस्त्रीने मुट्ठीभर जौ लेकर मंत्रपढ़ २ कर बोये बोतेही वह जौ उसी समय पैदाहोके फलकर पकगये उन जवोंको काटकर भूनके तथा पीस के वह स्त्री सत्तूबनाके एक कांसेके पात्रमें रखके स्नान करनेको चलीगई यह देखके मैं उसे शाकिनी जानकर जल्दी से उठके वह सत्तू किसी अन्य पात्रमें रखकर और उस पात्रमें अन्य सत्तू रखकर फिर वैसेही लेटरहा तदनन्तर उसस्त्री ने आके मुझे जगाके उसपात्रमेंसे सत्तू निकालके मुझे खानेको दिये और मेरे कृत्यको बिना जाने उसपात्रके सत्तू जो मैंने अलग रक्खे थे आप निकालकर खाये उनके खातेही वह बकरी होगई तब मैंने उसे लेजाके एक वधिकके हाथ वेचडाला उस वधिककी स्त्रीने उस बकरी को देख बड़े क्रोध पूर्व्वक मुझसे कहा कि तुमने मेरी सखी के साथ छल कियाहै इसका फल

पाओगे उसके यह वचन सुनके मैं उज्जयिनी से बाहरजाके एक वरगदके वृक्ष के नीचे जाके सोरहा सोतेही सोते उसदुष्ट वधिककी स्त्री ने मेरे गले में सूत्र बांधदिया इससे जब मैं जगा तो मैंने अपनेको मोर देखा तदनन्तर बहुत दुखीहोके इधर उधर घूमते हुए मुझको एक बहेलिये ने पकड़कर इसचंडकेतु को लाकर दिया इसकी स्त्री प्रतिदिन मुझे नचाया करतीरही आज भाग्यवश से आपने यहां आके इस सूत्रको खोलके मुझे मनुष्य बनाया अब यहां से निकल चलिये क्योंकि यह प्रतीहार इसीप्रकार रात्रि केसमय मिलेहुए बहुत से पुरुषों को मंत्रके खुलजाने के भय से मारचुका है बाहरकी कुंडीबन्द है इसकारण द्वारसे तो जानही सक्के हैं इससे आप इस सूत्रको गले में बांधकर मोरबन के झरोखेके द्वारा बाहर चले जाइये मैं हाथ फैलाकर आपके गलेसे यह सूत्र खोललूंगा और इसी को बांधके मोर- बनके मैं भी बाहर चलाऊंगा तब आप मेरे गले से डोरा खोल दीजियेगा उसके यह वचन सुनकर मृगांकदत्त इसी युक्तिसे बाहर चलागया और भीमपराक्रम भी निकल गया इसप्रकार संकट से छूटकर वह दोनों श्रुतधि तथा विमलबुद्धि के पासगये और वहां रात्रिभर अपना २ वृत्तान्त कहते सुनते रहे प्रातःकाल भिल्लराज मायावटु मृगांकदत्त के पास आया और यह पूछकर कि आप रात्रि भर सुख से रहे बोला कि चलिये द्यूत खेलें उसके यह वचन सुनके श्रुतधि ने उसके साथ उस प्रतीहारको देख कर कहा कि द्यूत खेलकर क्या कीजियेगा क्या आपने जो आज प्रतीहार के मोर का नृत्य देखने को कहा था वह आपको स्मरण नहीं है यह सुनके मायावटु ने प्रतीहार से कहा कि जाकर मोर ले- आओ उसकी यह आज्ञापाकर वह प्रतीहार यह शोचकर कि मैं उस चोरको मारना भूलगया अबज ल्दीसे जाके उसे मारकर मोर लेआऊं, जल्दीसे अपने घरकोगया वहां उस मोरको तथा चोरको न देख के वह महाभयभीतहोके लौटकर मायावटुसे बोला कि हे स्वामी रात्रिके समय कोई चोर वह मेरा मोर चुराकर लेगया उसके यह वचनसुनकर श्रुतधिको मुस्कुराते देखके मृगांकदत्तादिक परस्पर देखकर हँ सनेलगे यह देखकर मायावटुने बहुत आग्रह करके मृगांकदत्त से पूछा कि आपके हास्यका क्या का रणहै उसके बहुत आग्रह करनेपर मृगांकदत्तने रात्रिकेसमय जैसे वहप्रतीहार मिलाथा सो सबवृत्तान्त विस्तारपूर्वक कहदिया उस वृत्तान्तको सुनकर, अन्तःपुरमें चेरीकी उँगली कटीहुई देखकर और भीम- पराक्रमकेगलेमें सूत्रबांधके उसको मोरबनाके फिरमनुष्यरूपहुए भीमपराक्रमसे प्रतीहारका प्रतिदिनका सबवृत्तान्त पूछकर मायावटुने उस दुष्ट प्रतीहारको मरवाडाला और मृगांकदत्तके समझाने से मंजुमती रानीको न मारकर त्याग दिया इसप्रकार उसदुष्ट प्रतीहारको मरवाकर मृगांकदत्त अपने अन्य मंत्रियों के मिलजानेकी आशा करताहुआ शशांकवतीके लिये उत्कण्ठितहोकर भी कुछ दिन वहांरहा ३०५॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेचतुर्थस्तरंगः ४॥

इसप्रकारसे भिल्लराज मायावटुके यहां विमलबुद्धि आदिक मंत्रियोंसमेत मृगांकदत्त जिनदिनों रह ताथा उन्हीं दिनों एकसमय मृगांकदत्तके आगे मायावटुके सेनापतिने उससे आकरकहा कि हेस्वामी आपने जो भगवती के बलिदान के निमित्त वीरपुरुष लानेको कहाथा सो आज हमें एक ऐसा वीरपु-

रुप मिलाहै जिसने अकेलेही हमारीसेनाके पांचसौ वीर मारडाले उसको बड़े उद्योगसे हमलोग लाये हैं यहसुनकर मायावटुने कहा कि अच्छा उसे यहां लाओ मैभी देखूं कि वह कैसा वीरहै उसकी यह आज्ञा पाके सेनापति पाशमें बंधेहुए उसपुरुषको उसके सम्मुख लेगया वहां शस्त्रों से घायल पाशमें बंधे हुए उस वीरको देखकर मृगांकदत्तने एकाएकी उसे अपनागुणाकर मंत्री जान के उठके दौड़कर अपने गलेमे लगालिया और वहभी उसके चरणोंपर गिरपड़ा यहदेखकर मायावटुने विमलबुद्धिसे पूछकर कि यह कौनहै उसे अपनेपास बुलाकर उसका बडा सत्कार किया और वैद्यों को बुलवा घावो में पट्टीबंधवाके उसेपथ्य भोजनकराया तदनन्तर मृगांकदत्तने गुणाकरसे पूछा कि हे मित्र तुम इतने दिनोंका अपना सब वृत्तान्त कहो यह सुनकर गुणाकर कहनेलगा कि हे स्वामी सुनिये उस सर्पके शाप से जब मैं आपलोगोंसे वियुक्तहोकर चला तो मोहसे मुझे बहुत दूरतक कुछभी नहीं मालूमहुआ बहुत कालमें उसमोहके दूरहोजानेपर दुखितहोके मैंने शोचा कि ब्रह्माकी विलक्षणगतिहै जिस मृगांकदत्तको एक महलसे दूसरे महलके जानेमें क्लेश होताथा उसकी इसवनमें क्या दशा होतीहोगी और मेरे सब मित्रोंकी क्या गति हुईहोगी इसप्रकार शोचताहुआ मैं विन्ध्यवासिनीके मन्दिरपर पहुँचा वहां एकमृतकपुरुषके गले में खड्गलगा देख के यहजानके कि इसने अपना बलिदान कियाहै मुझेभी यह इच्छा हुई कि मैंभी अपनाशिर भगवतीको भेंटकरके भगवतीको प्रसन्नकरूं यह शोचकर जैसेही भगवतीको प्रणामकरके मैंने उस पुरुषके गलेमेंसे खड्ग निकाला वैसेही एक वृद्धतापसी ने दूरही से मुझे निवारण कर निकट आके मेरा सब वृत्तान्त पूछकेकहा कि हेपुत्र ऐसा मतकरो मरे मनुष्योंकाभी फिर समागमहोजाताहै फिर जीतोंकी क्या कहैं इस विषय पर मैं तुमको एककथा सुनाती हूं अहिच्छत्रानाम एक अतिसुन्दर नगरी में उदयतुंगनाम राजा था उस राजाके कमलामति नाम प्रतीहारथा उसके विनीतमति नाम महाउदार वीरपुत्रथा उसने एकसमय अपने महलपर बैठे २ कामरूपी कल्पवृक्षके पत्तेसे बनेहुए पूर्वदिशारूपी स्त्री के कर्णफूलके समान चन्द्रमाको उदितहुआ देखकर और उसकी किरणो से सम्पूर्ण संसारके अन्धकारको दूरहुआ जानकर प्रसन्नहोकर शोचा कि चन्द्रिकासे सम्पूर्ण मार्ग ऐसे उज्वलहोरहेहैं मानों सर्वत्र चूना पुताहुआहै इस समय में अकेला जाकर जो विहारकरूं तो बड़ा आनन्द होगा यह शोचके वह धनुषलेके घूमनेको निकला एक कोशजाकर अकस्मात् रोनेकासा शब्द उसे सुनाई दिया उस शब्दके अनुसार उसने कुछदूरजाकर एक वृक्षकेनीचे एक दिव्यस्त्रीको रोतेदेखकर पूछा कि हे सुन्दरी तुमकौनहो और अश्रुओंसे इस मुखको कलंकित चन्द्रमाके समान क्योंकरतीहो यह सुनकर वहबोली कि मैं गन्धमालीनाम सर्पकी विजयवतीनाम पुत्रीहूं एक समय रणसे भागजानेके कारण मेरे पिताको वासुकिने यह शापदिया कि हे पापी तू अपनेशत्रुसे पराजितहोके उसका दासहोगा इसशाप से कालजिह्वनाम यक्ष मेरे पिताको जीतकर अपना दासबनाके रोज उसपर फूल लदवानेलगा इस दुःखसे मैंने तप करके श्रीभगवतीको प्रसन्नकिया प्रसन्नहुई भगवतीने प्रत्यक्षहोकर मुझसे कहा कि हे पुत्री मानसरोवर तड़ागके भीतर एक हजार दलोंसे युक्त स्फटिक पत्थरका कमल है उसपर सूर्य्य की

किरणों के पड़नेसे ऐसी शोभाहोती है कि मानों मणियोंकी किरणोंसेयुक्त शेषजीका हज़ारफणवाला शिरहै एक समय उस कमलको देखकर कुबेरजीने उसमें श्रीशिवजीके पूजनका प्रारम्भकिया और उन के सेवक सम्पूर्ण यक्ष चक्रवाक तथा हंसादि पक्षियोंका रूप धारण करकेवही विचरनेलगे उनमें तुम्हारे शत्रु कालजिह्वका ज्येष्ठ भाई विद्युज्जिह्वभी चक्रवाकका स्वरूप धारणकरके अपनी प्रियाके साथ विहार कररहाथा भाग्यवशसे उसके पक्षके लगने से कुबेरके हाथसे अर्घपात्र गिरपड़ा इससे कुबेरने कुपित होके उसे यह शापदिया कि हे दुष्ट तू अपनी स्त्री समेत यहाँ चक्रवाकही रहैगा इस शापसे वह चक्रवाकही होगया उसके स्नेहसे तुम्हारा शत्रु कालजिह्व तुम्हारे पिता समेत वहीं रहताहै इससे तुम अहिच्छत्रा नाम नगरी के प्रतीहारके पुत्रको उससे लड़ने को भेजो यह घोड़ा तथा खड्ग उसे देदो इसी के प्रभावसे वह उसे जीतलेगा यह खड्ग जिसके पास होताहै वह शत्रुओं को जीतकर सम्पूर्ण पृथ्वी का राजा होताहै यह कहकर घोड़ा तथा खड्ग मुझे देकर भगवती अन्तर्द्धान होगई इससे मैं तुमको प्रेरणा करनेके लिये यहाँ आईहूं इस समय तुम्हें जाते देखकर मैंने रोदनके शब्दसे यहाँ बुलाया है अब तुम मेरे प्रयोजनको सिद्धकरो यह सुनकर विनीतमति ने उसके वचन स्वीकार करलिये तब उस नागकन्या ने वह श्वेत घोड़ा तथा दिव्य खड्ग उसे लाकर देदिया ५४ उस खड्ग को लेकर विनीतमति उस कन्यासमेत उसी घोड़ेपर चढ़के शीघ्रही मानसरोवरपर प्राप्तहुआ वह मानसरोवर वायुसे कंपित कमलरूपीहाथों से और चक्रवाकोंके कूजित शब्दों से मानों कालजिह्वपर दयाकरके उससे निषेध कररहाथा कि इसे मतमारो वहाँ विनीतमतिने यक्षोंके वशमें गन्धमाली सर्पको देखके उसके छुटाने के लिये बहुतसे यक्षों को खड्गसे मारा यक्षों को मरते देखकर कालजिह्व मेघके समान गर्जकर युद्ध करने के लिये आया उसे देखतेही विनीतमति ने दौड़कर उसके बालपकड़ के जैसेही शिरकाटना चाहा वैसेही उसने कहा कि मैं शरणागतहूं मेरी रक्षाकीजिये यह दीन वचन सुनकर विनीतमतिने उसे छोड़दिया छूटकर कालजिह्व ने उसे एक ईतिनाशक अंगूठी दी और उस गन्धमाली सर्पको दासभावसे छोड़दिया दासभावसे छूटकर गन्धमालीने अपनी वह विजयवती कन्या उसे देदी और प्रसन्नहोकर अपने घरको चलागया उस के चलेजाने पर विनीतमति खड्ग अंगूठी घोड़ा तथा विजयवती को लेकर अपनी अहिच्छत्रापुरी को लौट आया और अपने पितासे सब वृत्तान्त कहकर उस नागकन्याके साथ सुख पूर्व्वक रहनेलगा एक समय विनीतमतिसे उसके पिता कमलमतिने एकान्त में कहा कि हे पुत्र इस उदयतुंगनाम राजा की उदयवती नाम परम सुन्दरी जो कन्याहै उसने सम्पूर्ण विद्याओं में बड़ा अभ्यास कियाहै इससे राजा ने यह प्रणकिया है कि जो ब्राह्मण अथवा क्षत्री इसको वादमें जीतेगा उसीके साथ में इसका विवाह करूंगा इससे उस कन्याने बहुतसे पुरुषोंको वादमें जीत भी लियाहै अब मैं चाहताहूं कि तुम उसके साथ वादकरके उसे जीतकर उसके साथ विवाहकरो क्योंकि तुम भी सम्पूर्ण विद्याओं में बड़े निपुण हो यह सुनकर विनीतमतिने कहा कि हे तात यद्यपि मैं ऐसी चतुरस्त्रियों से वाद नहीं करसक्ताहूं तथापि आपकी आज्ञा मुझे अवश्य पालनीयहै उसके यह उचित वचनसुनकर कमलमतिने राजाके पास जा

कर कहा कि प्रातःकाल इस दासकापुत्र विनीतमति राजपुत्री के साथ वादकरेगा यह सुनकर राजा ने कहा कि बहुत अच्छा कल प्रातःकाल उसे लाइये राजाके यह वचनसुनके विमलमतिने अपने घरमें जाकर अपने पुत्रसेकहा कि कल प्रातःकाल तुमको राजपुत्रीके साथ वाद करनाहोगा इसके उपरान्त दूसरेदिन प्रातःकाल कमलमतिके साथ विनीतमति अनेक विद्वानोंसे युक्त राजसभामें राजपुत्रीके साथ वाद करनेको गया उसे देखकर राजाने उदयवती को बुलवाभेजा राजाकी आज्ञापाके क्षणभरमें कामदेव की मूर्त्तिमती शक्तिके समान राजपुत्री उदयवती सभामें आकर नीलमणिके आसनपर बैठी जो निर्मल आकाशमें कलंकरहित चन्द्रमा उदयहोय तो नीलमणि के आसनपर बैठीहुई उदयवतीकी उपमा बने उसके रत्नजटित आभूषण ऐसे शब्दायमान होरहे थे कि मानों पहलेही से उसके पूर्व्व पक्षोंका उत्तर देरहे थे उसके अंगोंकी शोभा देखकर और विनीतमतिको देखकर राजाने योग्य समागम जानके उससे कहा कि हे पुत्री तुम विनीतमतिसे पूर्व्वपक्षकरो राजाकी यह आज्ञापाकर दांतोंकी किरणरूपी सूत्रों में सुन्दर पदरूपी रत्नोंकी माला बनातीहुई विनयवती ने विनीतमतिसे प्रश्नकिया और विनीतमतिने उसके पद २ को काटकर उसे निरुत्तर करदिया विनीतमतिके उत्तरको सुनकर सम्पूर्ण सभासद विनीतमतिकी बड़ी प्रशंसा करनेलगे इस प्रशंसाको सुनकर राजपुत्री ने पराजयहोनेपर भी सत्पतिके मिलनेसे अपनी विजयहीमानी तब राजा उदयतुंगने बहुत प्रसन्नहोकर शुभ लग्न देखके विनीतमति के साथ उदयवतीका विवाह करदिया इसप्रकार राजपुत्री तथा नागपुत्रीको पाकर विनीतमति सुखपूर्व्वक उनके साथ रहनेलगा ८३. एक समय द्यूत खेलतेहुए विनीतमतिसे किसी ब्राह्मणने आके हठ करके भोजनमांगा उस समय द्यूतकी व्यग्रतासे उसने क्रोधकरके अपने किसी सेवकसे कानमें कह दिया कि इसे किसी पात्रमें वालूभरके वस्त्रसे ढककरदेदो उसकी यह आज्ञापाकर सेवकने ऐसाही किया उस ब्राह्मणने उस पात्रको भारी समझ सुवर्ण से भराजानकर एकान्तमें जाकर खोला और उसमें केवल वालू भरीदेखके महादुखीहोके किसी अन्य गृहस्थके यहां जाकर भोजन किया विनीतमतिभी इस बात का कुछ विचार न करके सुखपूर्वक अपनी प्रियाओं के साथ रहनेलगा इसके उपरान्त कुछकाल व्यतीत होजानेपर राजा उदयतुंग वृद्धावस्थासे शिथिल होकर अपुत्रहोनेके कारण अपना सम्पूर्ण राज्य विनीतमतिको देकर गंगाजीके तटपर तपकरनेको चलागया राज्यको पाकर विनीतमति घोड़े तथा खड्ग के प्रभावसे सम्पूर्ण दिशाओंको जीतकर चक्रवर्त्ती राजाहोगया ईतिनाशक अंगूठीके प्रभावसे उसका सम्पूर्ण राज्य दुर्भिक्ष आदिदोषों से रहितथा एक समय किसी देशसे रत्नचन्द्रमति नाम भिक्षुकने आकर राजासे मिलके अतिथि सत्कार स्वीकार करनेके पीछे कहा कि हे राजा आप हमारेसाथ वाद कीजिये जो मैं आपको जीतलूं तो आप जैनमतको स्वीकार कीजियेगा और जो आप मुझे जीतलीजियेगा तो मैं इस वेषको त्यागकर ब्राह्मणोंकी शुश्रूषा करूंगा उसके यहवचन सुनकर राजा ने उसके साथ वाद करना प्रारम्भकिया वाद करते २ आठवेंदिन भिक्षुकने राजाको जीत लिया इससे राजाविनीतमति भिक्षुककी आज्ञा से जैनी होकर ब्राह्मणोंके लिये तथा भिक्षुकों के लिये सदावर्त्त तथा धर्मशाला

वनवाकर जिनदेवका पूजन करनेलगा कुछकाल पूजनकरके शान्तचित्तहोके राजाने उसभिक्षुकसेकहा कि आप कृपाकरके सम्पूर्ण जीवोंका उपकारक वौद्धमत मुझे वतलाइये उसीका अवलम्वन मैं करूंगा राजाके यह बचनसुनकर भिक्षुकने कहा कि पापरहित पुरुषोंको वौद्धमतका अवलम्वन करना चाहिये यद्यपि कोई आपका प्रकटपाप हमलोगोंकी दृष्टिमें नही है तथापि मेरी बताईहुई स्वप्नकी युक्तिसे आप अपने सूक्ष्म पापको देखकर उसकी शान्ति कीजिये यह कहकर उसने वह युक्ति बतादी और राजाने भी उसरात्रिमें उसकी युक्तिसे स्वप्नदेखकर प्रातःकाल उससेकहा कि हे आचार्य्य आज रात्रि के समय स्वप्नमें मै परलोकको गयाथा वहां क्षुधासे बहुतपीड़ित होकर मैंने अन्नमांगा तब दंडधारी कुछ पुरुषों ने मुझसे कहा कि बहुतसी तप्तबालू धरीहै उसे तुमखाओ जो तुमने भूखेब्राह्मणको दीथी दशकरोड़ अशर्फियोंका दान करके तुम इसपातकसे छूटोगे उनपुरुषोंके वचनसुनकर मेरी निद्रा खुलगई यहकहकर राजाने दशकरोड़ अशर्फियों का दान करके फिर वही स्वप्न देखनेकी युक्तिकी और स्वप्न देखकर दूसरे दिन प्रातःकाल उस भिक्षुक से कहा कि आजभी मैं स्वप्न में परलोकको गया और वही बालू मुझे भोजन करनेके लिये उन्हीं पुरुषोंने दी उस बालूको देखकर मैंने उनसे पूछा कि आपका बतायाहुआ दान करनेपर भी मुझे वह बालू क्यों खाने को मिली यह सुनकर उन पुरुषों ने कहा कि वह तुम्हारा दान व्यर्थ होगया क्योंकि उसमें एक अशर्फी किसी ब्राह्मणकी थी यह स्वप्न देखकर मेरी निद्रा खुल गई यह कहके राजाने फिर दशकरोड़ अशर्फियोंका दान करके रात्रिके समय उसी युक्तिसे स्वप्न देखके प्रातःकाल भिक्षुकसे कहा कि आजभी उन पुरुषोंने मुझे बालूही खानेको दी और पूछनेपर कहा कि हे राजा तुम्हारा यह दानभी व्यर्थ होगया क्योंकि आज तुम्हारे देशके किसी वनमें चोरों ने एक ब्राह्मण को लूट कर मारडाला है उसकी रक्षा तुम्हारेद्वारा नही होसकी इसी से तुम्हारा यह दान व्यर्थ होगया इससे अब तुम द्विगुण दानकरना उनके यहवचन सुनकर मेरी निद्रा खुलगई यहकहके राजाने द्विगुण दानकरके उस भिक्षुक से पूछा कि हे आचार्य्य मुझसरीके मनुष्य इसधर्म का पालन कैसे करसक्ते हैं जिसमें अनेक प्रकारकी बाधालगीही रहती हैं यहसुनकर उसभिक्षुकने कहा कि हे राजा इतने में उकता-कर धर्ममें अनुत्साह न करना चाहिये क्योंकि स्वधर्म्मावलम्वी उत्साहवान् धीर पुरुषोंकी रक्षा देवता लोग आपही करते हैं और उनके मनोरथोंको पूर्ण करते हैं इस विषयपर मैं आपको एक बुद्धके अवतार वाराहकी कथा सुनाताहूं कि पूर्व्वसमय विन्ध्याचलकी गुहामें एक वाराह अपने मित्र वानरसहित रहताथा और अपनी शक्ति के अनुसार सदैव अतिथियों का सत्कार किया करताथा एक समय वहां लगातार पांच दिनतक जलकी वृष्टिहुई जिससे कोई भी प्राणी अपने २ स्थानको छोड़कर बाहर नहीं निकला पांचवें दिन रात्रि के समय वाराह तथा वानर के सोजाने पर एक सिंह अपनी सिंहिनी तथा बच्चे समेत उसी गुफा के द्वारपर आकर सिंहिनी से बोला कि इस दुर्दिन में कोई जीव न पाकर हम तीनों अवश्यही भूखों से मरजांयगे यह सुनकर सिंहिनीने कहा कि क्षुधासे सबका मरना संभवहै इस से मुझे खाकर आप दो जने अपने २ प्राणों की रक्षा कीजिये क्योंकि आप और यह पुत्र यही मेरे

सर्वस्व है और मुझसरीकी स्त्री आपको पीछे भी मिलजायगी उन दोनोंका यह वार्त्तालाप उस वाराह ने अकस्मात् जगके सुनकर प्रसन्नता पूर्व्वक शोचा कि कहां यह रात्रि कहां यह दुर्दिन और कहां ऐसे अतिथिकी प्राप्ति आज मेरे किसी पूर्व पुण्यका उदय हुआहैइससे शीघ्रहीजाके इस अपने क्षणभंगुरशरीर से इन अतिथियों को जाकर तृप्तकरूं यह शोचकर वह वाराह वाहर आके सिंहसे बोला कि तुम खेदमतकरो मुझे खाकर अपने प्राणों की रक्षाकरो उसके यह वचन सुनकर सिंह ने प्रसन्नहोके सिंहिनीसे कहा कि पहले यह वच्चा इसको खाय फिर मैं खाऊंगा तदनन्तर तुम खालेना यह कहकर वह सिंह प्रथम थोड़ासा उसका मांस अपने बच्चेको खिलवाकर आपखानेलगा उस खातेहुए सिंहसे महा सत्त्ववान् वाराहने कहा कि प्रथम तुम मेरा रुधिर पीलो क्योंकि यह मट्टी मे मिलाजाताहै फिर मांस खाना और जो तुमसे वचेगा वह तुम्हारी प्रियाखायगी उसके यह वचन सुनकर सिंहने रुधिरपीकर उस का मांसखाते २ केवल हड्डियां छोड़ी और इतनेपरभी उसशूकरके प्राण नहीं निकले मानो वह उसके धैर्य्यके देखनेकोही ठहरेहुएथे इतनेमें वह सिंहिनी क्षुधासे अत्यन्त व्याकुलहोकर मरगई तव सिंह अपने वच्चेको लेकरकहीं चलागया और रात्रि व्यतीतहोगई प्रातःकाल उस वन्दरने जगके वाहरआके उसवाराहकी यह दशादेखके पूछा कि हे मित्र तुम्हारी यहदशा कैसेहुई यह सुनकर उस धीरवाराहने अपनासव वृत्तान्त कहदिया उसवृत्तान्तकोसुनकर वानरने रोकर उसके पैरोंपर गिर के कहा कि तुम किसी देवता का अंशहो नहीं तो तुम्हारी बुद्धि ऐसी नही होती अव इसअन्त समय में तुमको कोई अभिलापहोय सो वताओ उसे मैं पूर्णकरूं उसवानरके वचन सुनकर वाराहने कहा कि जो मेरा अभिलापहै उसेब्रह्मा भी नहीं पूर्ण करसक्ता मैं चाहताहूं कि यह जो सिंहिनी मेरे देखतेही देखते क्षुधासे मरगई है वह फिर जी उठे और मेरे शरीर में फिर मांसहोआवे उसे खाकर यहतृप्तहोय उसके इसप्रकार कहने पर साक्षात् धर्म ने प्रकटहोकर अपने हाथके स्पर्शसे उसे मुनीश्वर वनाके कहा कि मैनेही सिंहका स्वरूप धरके तुम्हारी परीक्षाकीथी तुमने उसपरीक्षामें मुझे प्रसन्नकरके मुनीश्वरत्व पाया धर्मके यहवचन सुनकर उसमुनिने कहा कि इस अपने मित्रको वानररूपमें देखकर मुझे यह मुनीश्वरत्व अच्छानहीं मालूमहोताहै यह सुन कर धर्मने वानरकोभी मुनिवनादिया ठीकहै (ध्रुवंफलायमहते महद्भिस्सहसंगमः) महात्माओंकी संगतिसे अवश्य महाफल प्राप्तहोता है तदनन्तर धर्म अन्तर्द्धान होगया और वह मरीहुई सिंहिनीभी न जाने कहांगई इसप्रकारसे सत्त्वकेवलसे धर्म के उत्साहको न छोड़कर कार्य्यकरने वाले धर्मात्मा पुरुषों के मनोरथ देवताओंकी सहायतासे सिद्धहोते हैं १५१ भिक्षुकके यह वचन सुनके विनीतमतिने फिर वही स्वप्नकी युक्तिकरके रात्रिमें स्वप्नदेखकर प्रातःकाल भिक्षुकसे कहा कि हे आचार्य्य आज स्वप्नमें मुझसे किसी दिव्य मुनिने कहा कि हे पुत्र तुम निष्पापहोगये अव वौद्धमतका अवलम्बन करो उसके यह वचन सुनकर मेरी निद्राखुलगई यह कहकर उसने भिक्षुकसे शुभ मुहूर्त्त में वौद्धधर्मकी शिक्षाली और याचकोंको वहुतसा धनवांटा दानके प्रभाव से उसकाधन अक्षयहोगया क्योंकि (धर्ममूलाहिसम्पदः) धर्महीं संपत्तियोंकामूल कारणहै इसके उपरान्त एक दिन एक अर्थी ब्राह्मणने उसके पास आकर कहा

कि हे राजा मैं पाटलिपुत्र नगरका रहनेवाला ब्राह्मणहूं मेरी अग्निशालामें एक ब्रह्मराक्षस रहताहै उस ने बहुत दिनोंसे मेरे पुत्रपर अपना आवेश कर रक्खाहै उसपर मेरा कोई भी उपाय नहीं चलता इससे मैं आपके पास याचना करनेको आयाहूं कि आप अपनी सर्वदोष नाशक अंगूठी मुझे देदीजिये उस की यह याञ्चा सुनकर राजा विनीतमतिनें कालजिह्वसे मिलीहुई अपनी अंगूठी उसे हर्षपूर्वक देदी अंगूठीलेके उस ब्राह्मणके चलेजाने पर राजाकायश सम्पूर्ण दिशाओंमें फैलगया उसके उपरान्त एक समय उत्तर दिशासे एक इन्दुकलशनाम राजपुत्र विनीतमतिके पास आकरबोला कि हे राजा आप इस संसारमें याचकोंके चिन्तामणिहो आपके पाससे कोई भी अर्थी विमुख नहीं जाता मुझे कनककलशनाम मेरे भाईने मेरा सम्पूर्ण राज्यछीनकर निकालदिया है इससे मैं आपके पास याञ्चाकरने को आयाहूं आपके पास जो घोड़ा और दिव्य खड्ग है वह मुझे देदीजिये तो मैं उसके प्रभाव से अपने शत्रुओंको जीतलूं उसकी यह प्रार्थना सुनके विनीतमतिने मंत्रियोंके निवारण करनेपरभी वह खड्ग तथा अश्व उस राजपुत्रको देदिये खड्ग तथा घोड़ेको लेकर उस राजपुत्रने अपने भाईको जीतकर राज्य पाया और राज्यसे भ्रष्टहुआ उसका भाई कनककलश विनीतमति की नगरी में आकर अग्निमें जलनेको उद्यतहुआ दूतों से यह बात सुनकर विनीतमति ने अपने मंत्रियों से कहा कि मेरेही अपराध से इस बिचारेकी यह दशाहुई है इससे मैं अपना राज्य इसेदेकर इससे अनृणहोजाऊं इस निष्प्रयोजन राज्यसे मेरा क्या प्रयोजनहै मुझ अनपत्यका यही पुत्रके समानहोकर राज्यलेले यह कहके विनीतमति कनककलशको बुलाके राज्यदेकर अपनी दोनों स्त्रियोंको साथलेके पुरके बाहरचला उसेजाते देखकर हाय२ जगतके तृप्त करनेवाले सम्पूर्ण चन्द्रमाको अकस्मात् मेघने आकर आच्छादित करलिया सबकी आशाके पूर्णकरनेवाले इस राजारूपी कल्पवृक्षको ब्रह्माने क्यों छीनलिया इत्यादि विलापकरते २ सम्पूर्ण पुरवासी उसके पीछे २ चले उन सबको पीछे आता देखकर विनीतमति उन्हें समझाके और लौटाके वनकोचला चलते २ जल तथा वृक्षोंसे रहित सूर्य्यकी किरणोंसे संतप्त बालुकावाली मरुभूमिमें पहुँचा वहां तृषासे व्याकुलहोके एक स्थानमें बैठकर श्रमको दूरकरनेलगा बैठे २ उसे तथा उसकी स्त्रियों को निद्रा आगई क्षणभर पीछे उसने जगकरदेखा कि एक बड़ा सुन्दर उपवन लगाहुआहै उसमें हरी २ दूब सर्वत्र कोमल रेशमीवस्त्रोंके समान बिछीहुई है फलोंके भारसे नानाप्रकारके वृक्ष झुकरहे हैं छाया में सुन्दरमणिमय शिलाबिछीहुई हैं और प्रफुल्लित कमलोंसे आच्छादित निर्मलजलवाली बावड़ी भरीहुई हैं वह उपवन क्याथा मानों राजाके दानके प्रभावसे नन्दनवनही स्वर्गसे उतर आयाथा उस उपवनको देखकर विनीतमति ने शोचा कि यह स्वप्नहै अथवा मेरा भ्रमहै या मेरे ऊपर किसी देवताका अनुग्रहहै उसके इसप्रकार विचार करनेपर दो सिद्धोंने हंसोंका स्वरूप धारण करके आकाशमें आकर उससे कहा कि हे राजा अपने सत्त्व के माहात्म्यमें तुमको क्या आश्चर्य्य होरहाहै इससे सदैव फलने फूलनेवाले इस वनमें तुम स्वेच्छा पूर्वक निवासकरो सिद्धोंके यह वचन सुनकर वह सुखपूर्वक अपनी स्त्रियोंसमेत उस वनमें तप करनेलगा एक समय उसने किसी पुरुषको फांसीलगाकर मरनेकेलिये उद्यत देखकर शीघ्रही

उसके पास जाकर प्रियवचन कहके मृत्यु से निवारण करके उससे पूछा कि हे भाई तुम मरने के लिये क्यों उद्यतहुएहो उसने कहा कि सुनिये मैं आपसे अपना सब वृत्तान्त वर्णन करताहूं सोमदेशके नागशूरनाम एक निवासीका सोमसूरनाम मैं पुत्रहूं जिस समय मेराजन्म हुआथा तो ज्योतिषियोने कहा था कि यह चोरहोगा इस भयसे मेरे पिताने यत्नपूर्वक मुझे धर्म्मशास्त्र पढाया परन्तु मेरे पिताका यह श्रम व्यर्थहुआ क्योंकि धर्मशास्त्र पढ़करभी मैं चोरी करनेलगा ठीकहै (कस्यप्राक्कर्म्मकेनेह शक्यते कर्तुमन्यथा) किसके प्राक्तनकर्मको कौन झूठ करसक्ताहै एक समय पुररक्षकोने चोरीकरतेहुए मुझे पकड़कर वध करनेके लिये शूली देनेके स्थानमें लेजाकर शूली देनाचाहा उसी समय राजाका उन्मत्त हाथी गजशालामे छूटकर अनेक पुरुषोंको मारताहुआ उसीस्थानमें आया इससे वह वधिक मुझे छोंड़कर भागगये और मैंभी अपने प्राणबचे जानकर वहांसे भागा वहांसे भागकर मैंने सुना कि जबमुझे मारनेके लिये वधिकलोग वधके स्थानमें लेगये तब शोक से मेरे पिताके प्राण निकलगये और मेरी माताभी शोकके कारण उन्हींके साथ सतीहोगई यह समाचार सुनके मै शोक से व्याकुलहोके अपने शरीरको त्यागनेके लिये घूमताहुआ इस निर्जनवनमें आया यहां आतेही अकस्मात् एक स्त्री ने आकर मुझसे कहा कि हे पुत्र तुम राजर्षि विनीतमतिके आश्रममें प्राप्तहुएहो इससे तुम्हारा सब पापदूरहोगया और इसी राजर्षिसे तुमको यहां ज्ञान प्राप्तहोगा यह कहकर वह अन्तर्द्धान होगई और मैं उस राजर्षिको बहुत ढूंढकर उसे न पाके शोकमे प्राणदेनेको जैसेही उद्यतहुआ वैसेही आपने देखलिया २०१ सोमसूरके यह वचन सुनकर विनीतमतिने उसे अपने आश्रममें लेजाकर उसका अतिथि सत्कारकरके अपना नाम बताके उससे कहा कि हे वत्स अज्ञानका त्याग करनाचाहिये क्योंकि उससे मनुष्यकीबुद्धि विपरीत होजाती है और दोनों लोकोंकी हानिहोती है इस बातपर मैं तुमको एककथा सुनाताहूं कि पांचालदेशमें देवभूतिनाम एक वैदिकब्राह्मण रहताथा उसके भोगवतीनाम सतीस्त्रीथी एकसमय देवभूतिके स्नानकरनेके निमित्त जानेपर भोगवती शाकलेनेके निमित्त शाकवाटिकामें गई वहां धोबीके गधेको शाकखाते देखकर लाठीलेकर उसके मारनेको दौड़ी इससे वह गधा भागकर एक गढेमें गिरपड़ा और उसके एक पैरमे चोट आगई यह जानकर गधेकेस्वामी बलासुरनाम धोबीने आकर लातोंसे तथा लाठियोंसे ब्राह्मणीको बहुतपीटा इससे उस गर्भिणी ब्राह्मणी का गर्भ गिरपड़ा और वह धोबी अपने गधेको लेकर चलागया तदनन्तर देवभूतिने आकर अपनीस्त्रीकी दुर्दशा देखके और सबवृत्तान्त पूछकर पुराध्यक्षसे यह सबवृत्तान्त जाकर कहा पुराध्यक्षने उसका सब वृत्तान्त सुनके धोबी को बुलवाके उनदोनोंकी वार्त्तालाप सुनकर यह न्यायकिया कि इसधोबीके गधेका पैरटूटगया है इससे जबतक इस गधेको आराम न होय तबतक ब्राह्मण इसका भारढोवे और इसब्राह्मणकी स्त्री का गर्भ गिरपड़ाहै इससे धोबीही उसके फिर गर्भ उत्पन्नकरै इसन्यायको सुनकर स्त्री सहित वहब्राह्मण विष खाके मरगया इस वृत्तान्तको सुनकर राजाने उस ब्रह्मघाती पुररक्षकको मरवाडाला और मरकर वह हत्यारा बहुत दिन तक नीचयोनिमें भ्रमण करतारहा अर्थात् जन्मलेतारहा इस प्रकारसे अज्ञानरूपी अन्धकार से मोहित

पुरुष अपने दोषोंसे कुमार्ग में चलतेहुए, शास्त्ररूपी दीपक के विना अवश्य भ्रष्टहोते हैं यह कहके विनीतमतिने फिर उससे कहा कि हे पुत्र मैं तुमको बहुतसी उपदेशकी बातें सुनाताहूं पूर्व्व समयके बीच कुरुक्षेत्र देशमें एक मलयप्रभ नाम राजाथा एकसमय दुर्भिक्षमें प्रजाओंको बहुतधन देतेहुए राजामलयप्रभसे मंत्रियोंने कहा कि आपको ऐसा अधिक दानकरना उचित नहीं है मंत्रियोंके यह वचनसुनके इन्दुप्रभनाम राजपुत्रने कहा कि हे तात आप इनमंत्रियोंके कहनेसे दानदेना न छोड़िये क्योंकि आप प्रजाओंके निमित्त कल्पवृक्षहैं और प्रजा आपकी कामधेनुहैं उसके यह वचनसुनके मंत्रियोंके वशीभूत होनेवाले राजाने कहा क्या मेरेपास अक्षयधनहै, जो धनके विनाही मैं प्रजाओंके लिये कल्पवृक्ष बनसक्ताहूं तो तुम्हीं कल्पवृक्ष क्यों नही बनतेहो पिताके यह वचन सुनकर इन्दुप्रभ यह निश्चय करके कि यातो मैं तपसे कल्पवृक्षही हूंगा या मरजाऊंगा तपोवनको चलागया तपोवन में उसके घोरतप से प्रसन्नहुए इन्द्रने उससे कहा कि हे पुत्र तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्नहूं तुम अभीष्टवर मांगो इन्द्रके यह वचन सुनके उसने कहा कि हे महाराज मैं अपनेही नगरमें कल्पवृक्ष होजाऊं इन्द्रने कहा कि ऐसाही होगा इन्द्रके इसवरदानसे वह अपनेनगरमें बड़ी २ शाखाओंपरबैठेहुए मनोहर पक्षियोंसे शब्दायमान कल्पवृक्ष होकेयाचकोंके दुर्लभ मनोरथोंकोभी पूर्णकरनेलगा इससे उसकी सबप्रजा देवताओंके समान सुखभोगनेलगी तदनन्तर कुछ काल व्यतीतहोनेपर इन्द्रने उस कल्पवृक्षके पास आकरकहा कि तुम परोपकार करचुके अब अपना स्वरूप धारणकरके स्वर्गको चलो इन्द्रके यहवचन सुनके कल्पवृक्षरूप राजपुत्रने कहा कि देखिये सामान्य वृक्षभी अपने पुष्पफल तथा पत्तोंसे सदैव उपकारकिया करतेहैं तो कल्पवृक्ष होके मैं इतने लोगोंकी आशाको छुड़ाकर केवल अपनेही सुखके लिये स्वर्गको कैसे जाऊं उसके यह उदार वचनसुनके इन्द्रने कहा कि अच्छा तुम अपनी सम्पूर्ण प्रजाभी अपने साथ स्वर्ग को ले चलो यहसुनकर उस ने कहा कि जो आप मुझपर प्रसन्नहैं तो सम्पूर्ण प्रजाको स्वर्ग लेजाइये मुझे स्वर्ग से कुछ प्रयोजन नहीं है मैं मनुष्यहोकर परोपकारके निमित्त महातप करूंगा उसके यहवचन सुनके इन्द्र अत्यन्त प्रसन्नहोके उसकी सब प्रजाको लेकर स्वर्गको चलेगये और वह राजपुत्र वृक्षपनको त्यागकर वनमें जाके महातपकरके बुद्धरूपहोगया इसीप्रकारसे दानी लोगोंको महा सिद्धि प्राप्तहोती हैं यह महा दानी की कथा तो मैंने तुमसे कही अब एक महाशीलवान् की कथा सुनिये विन्ध्याचल पर्व्वतपर तोतोंका बड़ा शीलवान् हेमप्रभनाम राजाथा उसे अपने पूर्व्वजन्मका स्मरण बनाथा इसी से वह सदैव धर्मका उपदेश किया करताथा उसके बड़ा अनुरागी चारुमतिनाम एक तोता प्रतीहारथा एकसमय किसी बहेलियेने चारुमति की स्त्री को पकड़कर मारडाला इससे वह चारुमति बहुत शोकाकुल होकर अत्यन्त दुर्बलहोगया उसकी यहदशा देखके हेमप्रभने युक्ति पूर्व्वक उसके शोक दूरकरने के लिये कहा कि तुम्हारी स्त्री मरी नहीं है बहेलियेके जाल से निकलकर वह कहीं भागगई है आज मैंने उसे देखा है चलो तुम्हेभी चलकर दिखादूं यहकहके वह उसे अपने साथ में लेजाके एकतड़ागके ऊपर जाके उसे उसीका प्रतिबिम्ब दिखाकर बोला कि यही तुम्हारी स्त्री है यहसुनकर वह अपने प्रतिबिम्बको देख के

प्रसन्नहोके पानी मे जाके प्रतिविम्बकाही आलिङ्गन तथा चुम्बन करनेलगा और स्पर्श न पाके तथा शब्द न सुनकर यह शोचनेलगा कि यह मेरा आलिङ्गन क्यों नहींकरती ओर बोलती क्यों नहीं है यह शोचके उसने ऐसा निश्चय करके कि यह मेरे ऊपर कुपितहोगई है एकआंवला लाके उसप्रतिविम्ब के मुखमें रक्खा वह आंवला पानीमे वहगया इससे उसने यहजानकर कि इसने आंवला फेंकदियाहै खेद युक्तहोकर राजा हेमप्रभसे जाकर कहा कि हे स्वामी अव वह न मेरा स्पर्श करतीहै और न वार्त्तालाप करती है और मैंने उसे आंवला लाकर दियाथा वह भी उसने फेंकदिया यहसुनकर राजाने उससे कहा कि यद्यपि कहनेके योग्य तो नहीं है तथापि मैं तुम्हारे स्नेहसे कहताहूं तुम्हारी स्त्री अव अन्यसे अनुरक्तहोगई है इसीसे वह तुमपर स्नेह नहीं करती है चलो आज चलकर मैं तुमको यह भी दिखादूं यह कहके उसने उसे अपने साथलेजाके उसके शरीरसे अपना शरीर जोड़के तड़ागमें अपना मिलाहुआ प्रतिविम्व दिखाया उसप्रतिविम्वको देखके उसने अपनी स्त्रीको अन्यसे अनुरक्त जानके राजासे कहा कि हे स्वामी मैंने आपका उपदेश नहींमाना इसीका यहफल मुझे प्राप्तहुआ अव जो कुछ मुझे करना उचितहोय सोही आप उपदेश कीजिये उसके यह वचन सुनके राजाने उपदेशका अवसर जानके उससे कहा कि (वरंहालाहलंभुक्तमहिर्वद्धोवरंगले।नपुनःस्त्रीषुविश्वासोमणिमन्त्राद्यगोचरः॥कलंकयन्ति सन्मार्ग जुषःपरिभवन्त्यलम्। वात्याइवातिचपलाःस्त्रियोभूरिरजोभृतः॥ तत्तासुनप्रसक्तव्यं धीरसत्त्वैः सुवुद्धिभिः।शीलमभ्यसनीयन्तु वीतरागंपदाप्तये) विपखाना अच्छाहै और गलेमें सर्पका वांधलेना भी अच्छाहै परन्तु मणि मन्त्रादिकों से भी अगोचर स्त्रियोंपर विश्वासकरना उचित नहीं है वहुतरज (रजोगुण और धूल) युक्त आंधी के समान अत्यन्त चपलास्त्रियां सन्मार्गों में चलनेवाले मनुष्योंको कलंकित करके अत्यन्त क्लेश देती हैं इससे धीरसत्त्ववान् पुरुषोंको स्त्रियों से प्रसंग न करके वैराग्यकी प्राप्ति के लिये शीलका अभ्यासकरना चाहिये राजाका यह उपदेश सुनकर चारुमति स्त्रियोंको त्यागकर बुद्ध के समान ऊर्ध्वरेताहोगया इसप्रकार शीलवान् पुरुष अपने उपदेशों से अन्य को भी तारते हैं यह शीलवान्की कथाहुई अव मैं तुमको वड़े क्षमावान्की कथा सुनाताहूं २५६ केदारनाम पर्व्वतपर सदैव गंगाजी के स्नानकरनेवाले जितेन्द्री वड़े तपस्वी शुभनयनाम एक वड़े मुनिरहतेथे एकसमय चोरों ने उन्हीं के आश्रम के निकट पहलेका गाड़ाहुआ सुवर्ण खोदकर न पाकर यह जानकर कि मुनि ने ही सुवर्ण लेलियाहै कुटी में जाकर उनसे कहा कि अरेपाखंडी मुनि हमारा सुवर्णदेदे तू चोरोंका भी चोरहै उनके यहवचन सुनकर मुनिने कहा कि हमने न कुछ लियाहै और न देखाहै यहसुनकर चोरों ने मुनि को लाठियों से खूबपीटा इतनेपर भी मुनि ने वही वचनकहे तब चोरों ने उनको वड़ा दुष्टजानके उनके हाथ पैरकाटके दोनों नेत्र फोड़डाले फिरभी मुनि ने वही वचनकहे तव चोर उन्हें छोड़कर कहीं चलेगये दूसरे दिन प्रातःकाल मुनि के शिष्य शेखरज्योति नाम राजा ने वहां आकर अपने गुरुकी यह दशा देखके और सव वृत्तान्तजानके उन चोरों को ढुंढ़वाकर फांसी देनाचाहा यह जानकर मुनि ने राजा से कहा कि हे राजा जो तुम इनको मारोगे तो मैंभी अपने प्राण देदेऊंगा क्योंकि शस्त्रों से मेरे अंग कटे

हैं इसमें इनका कौन अपराध है और जो यह कहो कि चोर उन शस्त्रों के प्रेरकथे तो इनका भी प्रेरक क्रोधथा क्रोधका भी प्रेरक सुवर्णका नाश था सुवर्ण नाशका प्रेरक मेरे पूर्व्वजन्मका पाप था और उस पापका भी प्रेरक मेरा अज्ञान था इससे वही मुख्य अपकारी है उसीका नाशकरना चाहिये और जो इनको अपकारी जानकर मारतेहो तो उपकारीजानके इनकी रक्षा भी करनी चाहिये क्योंकि जो यह मेरे साथ ऐसा उपद्रव न करते तो मैं क्षमा किसपरकरता इससे यह मेरे पूर्णउपकारी हैं इत्यादि अनेक वाक्यों से मुनि ने राजा को समझा के चोरों को वध सेवचवाया और इसी क्षमाके माहात्म्यसे उनके अंग ज्यों के त्यो होगये और महासिद्धि उनको प्राप्तहुई इसप्रकारसे क्षमावान् पुरुष संसार से छूटजाते हैं यह क्षमावान् की कथा हुई अब महा धैर्य्यवान् की कथा सुनिये २७७ पूर्व्व समयमें मालाधर नाम एक ब्राह्मण का पुत्र आकाशमें जातेहुए किसी सिद्धकुमारको देखकर उसकी ईर्ष्या से तृणों के पक्ष बाँधके उछल २ के आकाश में उड़ना सीखने लगा इस प्रकार से प्रति दिन व्यर्थ परिश्रम करते हुए उसको एक दिन आकाशसे स्वामिकार्त्तिकजी ने देखकर शोचा कि यह धैर्य्ययुक्तहोकर दुर्लभ कार्य्य में भी कैसा श्रमकररहाहै इससे इस बालकपर मुझे दया करनी चाहिये यह शोचकर उन्हों ने उसबालक को अपना गण बनालिया इसप्रकार धैर्य्यसे देवताभी प्रसन्नहोते हैं यह धैर्य्यवान्की कथाहुई अब ध्यानवान्की कथासुनिये पूर्व्वकालके बीच कर्नाट देशमें विजयमाली नाम महाधनवान् वैश्यके मलयमाली नाम पुत्रथा एक समय मलयमालीने अपने पिताके साथ राजद्वारमें जाके राजा इन्दुकेशरीकी इन्दुयशानाम कन्याको देखा उसे देखतेही वह ऐसा उसपर आशक्तहोगया कि उसे न रात्रिको निद्रा आई न दिनको कुछ क्षुधालगी और लोगों के पूछनेपर भी वह कुछ न कहके उसी के ध्यानमें मूकसा बनारहा उसे इसप्रकारसे व्याकुल देखके राजाके चित्रकर मन्थरकनाम उसके मित्रने उससेकहा कि हे मित्र क्या कारणहै कि तुम किसी की न सुनतेहो और न अपनी कहतेहो मैं तुम्हारा परममित्रहूं मुझ से अपना सब वृत्तान्तकहो उसके यह वचन सुनकर मलयमालीने अपना सबवृत्तान्त उससे कह दिया यह सुनकर मन्थरकने कहा कि तुम वैश्यके पुत्रहो तुमको राजपुत्रीकी इच्छा न करनी चाहिये अपने २ योग्यही अभिलाषा करने से सबका कल्याणहोताहै सामान्य तड़ागों की कमलनियोंकी इच्छा हंसकरे तो उचित है परन्तु विष्णुभगवान्के नाभि कमलकी उसको इच्छा न करना चाहिये उसके इस प्रकार समझानेपर भी जब मलयमालीको कुछ बोध न हुआ तो उसने राजपुत्रीका एक चित्र उतारके उसे देदिया उस चित्रकोपाके वह उसीको इन्दुयशा राजपुत्री जानके ऐसा उसके ध्यानमें मग्नहोगया कि उसी चित्रका चुम्बन तथा आलिंगनादिक करनेलगा और इसी से उसका क्लेशभी निवृत्तहोगया एक समय वह उस चित्रकोलेके चन्द्रोदयमें वनके विहारकरनेको गया और उस चित्रको किसी वृक्षकी जड़पर रखके अपनी प्रियाके लिये वनमें जाकर पुष्पतोड़नेलगा उस समय विनयज्योतिनाम मुनि उसे देखके आकाशसे उतरकर उसका उद्धारकरने के लिये अपने प्रभावसे उस चित्रके कोने में एक जीवताहुआ कालासर्प बनाकर अलक्षितहोके वहीं खड़ेरहे इतने मे पुष्पतोड़कर लौटेहुए मलयमाली

ने चित्रमें उस सर्पको देखकरशोचा कि यह सर्प यहां कहां से आया क्या ब्रह्माने मेरी प्रियाकी रक्षाके लिये तो इसे नहीं भेजाहै यह शोचकर जैसेंही उसने उस चित्रपर फूलआदि रखके चाहा कि मैं इसका आलिंगनकरके इसी से पूछूं कि यह सर्प कहां से आयाहै वैसेही मुनि के प्रभावसे उसे मालूमहुआ कि सर्प के काटने से वह मरगई इससे वह हाय २ करके मूर्च्छितहोके गिरपड़ा और क्षणभरमें मूर्च्छा जगनेपर उठके एकऊंचे वृक्षपर चढ़के अपने प्राणदेनेको कूदा उसे गिरते देखके कृपालु मुनि ने बीचही में उसे अपने हाथोंपर रोककर समझाकर उससे कहा कि हेमूर्ख तुम्हे नहीं मालूम है कि वह राजपुत्री अपने घरमे है यह केवल चित्रकी पुतली है तुम किसका आलिंगन करतेहो किसे सर्पने काटा है यह तुम्हारे विचारों की भावनाओ का भ्रमहै जो तुम इतनेही दृढध्यान से तत्त्वका विचार करो तो तुम्हारे सब दुःखदूर हो जांय यह सुनकर मलयमाली मोहसे रहित होके बोला कि हे भगवन् आपकी कृपासे मेरा यह अज्ञान तो दूरहोगया अब ऐसी कृपाकीजिये जिससे इस संसार से मैं छूटूं उसकी यह प्रार्थना सुनकर वह मुनि उसे बुद्धजीके बताये हुए ज्ञानका उपदेश करके वहीं अन्तर्द्धान होगये उसज्ञान को पाकर वह मलयमाली तपोवनमे जाके तपस्या करके तत्त्वको जानकर बुद्धके समान होगया फिर उसने राजा इन्दुके शरीरकेपास आकर ऐसा ज्ञान उपदेशकिया कि जिससे सम्पूर्ण नगरनिवासी मुक्त होगये इसप्रकारसे ध्यान करनेवाले मोक्षको प्राप्तहोतेहै यह ध्यानवान्की कथाहुई अब एक बुद्धिमान् की कथा सुनिये कि सिंहलद्वीप में सिंह विक्रमनाम एक चोरने परायेधनसे जन्मभर अपना पोषण करके वृद्धावस्था मे चोरीका त्याग करके अपने मनमे शोचा कि परलोकमे मेरीकौन रक्षाकरेगा जो मैं विष्णु भगवान् अथवा शिवजीकी शरणमे जाऊं तो वहाँ मुझे कौन पूछेगा क्योंकि उनके तो बड़े २ देवता तथा मुनिलोग सेवकहैं इससे सम्पूर्ण जीवोंके कर्मोंके लिखनेवाले चित्र गुप्तकी सेवाकरनी चाहिये वही मेरी रक्षाकरेंगे यह शोचके वह चित्रगुप्तकी भक्ति करनेलगा और उनकी प्रीतिके लिये नित्य ब्राह्मणों को भोजन करवानेलगा उसकी यह भक्ति देखकर चित्रगुप्तजी उसकी परीक्षा करनेके लिये अतिथिका वेपधारण करके उसकेपास आये उसचोरने उनका पूजनकरके भोजन कराके तथा दक्षिणादेकर कहा कि कहो चित्रगुप्त तुमपर प्रसन्नहोंय यह सुनके चित्रगुप्तने उससे कहा कि शिव विष्णु आदि देवताओं को छोड़कर चित्रगुप्तजीसे ही तुम्हारा क्या प्रयोजन है यह सुनकर उसने कहा कि तुमको इससे क्या प्रयोजनहै मे अन्य देवताओ को नही प्रसन्न करना चाहता यह सुनकर ब्राह्मण रूपधारी चित्रगुप्त ने कहा कि जो तुम अपनी स्त्री मुझे देनेकहो तो मै ऐसाकहूं यह सुनके उस चोरने प्रसन्नहोके कहा कि अच्छा मै अपनी स्त्री आपको दूंगा आप कहिये यह सुनकर चित्रगुप्तजी अपना स्वरूप धारण करके बोले कि हे सिंहविक्रम मै तुमपर प्रसन्नहूं अब बताओ तुम क्या चाहतेहो उसने कहा कि हेस्वामी जिस प्रकार से मेरी मृत्यु न होय वही उपाय बताइये यह सुनकर चित्रगुप्तने कहा कि यद्यपि मृत्युसे कोईभी बचा नहींसक्ताहै तथापि मै तुम्हे एक युक्ति बताताहूं उसे सुनो जबसे श्री शिवजी ने श्वेतमुनिके लिये कुपित होके कालको भस्मकरके फिर बनाया है तब से जहां श्वेत मुनिरहते हैं वहां किसीको भी काल

की बाधा नहीं होती वह श्वेतमुनि इससमय पूर्व्व समुद्रके उसपार तरंगिणी नाम नदीकेपार तपोवनमें रहतेहैं वहीं तुमको मैं लेजाके छोड़आताहूं तरंगिणी नदीके इसपार तुम न आना कदाचित् तुम आभी जाओगे और तुम्हारी मृत्युहोजायगी तो परलोकमें तुम्हारीरक्षामैंकरूंगा यहकहकर चित्रगुप्तजी उससिंह-विक्रमको साथलेके श्वेतमुनिके आश्रममें पहुँचाकर अन्तर्द्धान होगये इसके उपरान्त कुछकाल व्यतीतहोजानेपर कालने तरंगिणी नदीके इसपारजाकर सिंहविक्रमको लेजानेके निमित्त यहयुक्तिकरी कि एकदिव्य स्त्री बनाके तरंगिणी नदीके उसपार सिंहविक्रमके पास भेजी उसस्त्रीने अपनी सुन्दरतासे उसे अपने वशीभूत करके उसके साथ रमणकिया कुछदिनोंके व्यतीतहोनेपर वहस्त्री अपने भाइयोंके देखने केबहानेसे इसपार आनेके निमित्त नदीमेंघुसी और बीचमें आके बहनेसीलगीहोके चिल्लाकरबोली कि हे आर्य्यपुत्र मुझको मरतेहुए देखरहेहो और मेरी रक्षानहीं करते तुम सिंहविक्रम नहीं हो शृगालविक्रमहो उसके यह वचन सुनकर सिंहविक्रम नदीमें उतरा और वह स्त्री उसेनदीके इसपार बहाके लेआई यहां आतेही कालने उसके गलेमें फांसीडालके कहा (अपायोमस्तकस्थोहि विषयग्रस्तचेतसां) विषयी जीवोंके शिरपरही आपत्तिखड़ी रहतीहै यह कहकर काल उसको यमराजकी सभामें लेगया वहां चित्रगुप्तने उसे देखकर चुपकेसे उससे कहदिया कि जो तुमसे कोई पूछे कि तुम पहले स्वर्गभोगकरोगे या नरक तो कहदेना कि स्वर्ग फिर स्वर्गमें जाकर स्वर्गकी दृढ़ताकेलिये पुण्य करना और स्वर्गके दृढ़हो जानेपर सम्पूर्ण पापोंके नाश करनेकेलिये तपकरना चित्रगुप्तके यह वचन स्वीकार करके सिंहविक्रम चुपचाप खड़ारहा क्षणभरमें यमराजने चित्रगुप्तसे पूछा क्या इस चोरका कुछ पुण्यभी है चित्रगुप्तने कहा कि हां है इसने अतिथियोंका बहुत सत्कारकियाहै और अपने इष्टदेवताके प्रसन्न करनेको अपनी स्त्री भी ब्राह्मणकोदीहै इससे यह एक दिव्य दिन स्वर्गमें रहसक्ताहै चित्रगुप्तके यह वचन सुनकर यमराजने सिंहविक्रमकी ओर देखकर कहा कि बताओ तुम पहले पुण्यका भोगकरोगे या पापका सिंहविक्रमने कहा कि पहले पुण्यका भोगकरूंगा तब यमराजकी आज्ञासे आयेहुए विमानपर चढ़के स्वर्गमें जाके उसने आकाश गंगामें स्नान करके सम्पूर्ण भोगोंको त्यागकर केवल जप किया उस जपके प्रभावसे उसे कई दिव्य दिन तक स्वर्गमें रहनेकी आज्ञामिली तब वह घोर तपसे श्रीशिवजीकी आराधना करके ज्ञानको प्राप्तहोगया और उसके सम्पूर्ण पातक भस्महोगये इससे नरकके दूत उसका फिर कमुख भी न देखसके और चित्रगुप्तने अपने सब कागजोंपर से उसके सम्पूर्ण पापकाटदिये इसप्रकारसे चोर होकरभी सिंहविक्रमने अपनी बुद्धिके बलसे सिद्धिपाई यह महा बुद्धिमान्‌की कथाहुई ऐसेही मनुष्य दान शील आदि छः पदार्थों के द्वारा संसाररूपी समुद्रके पारहोताहै इस प्रकारसे सोमसूर को उपदेश देतेहुए विनीतमति के धर्म्मोपदेशोंको सुनके मानों सूर्य्य भगवान् शान्तहोकर संध्यारूपी गेरूएवस्त्रोंको पहरकर अस्ताचलकी कन्दरामें चलेगये सूर्य्य भगवान्‌को अस्तहुआ देखकर संध्योपासन करके सोमसूर तथा विनीतमतिने वहीं कुटीमें शयनकरके वह रात्रि व्यतीतकी २६५ दूसरेदिन विनीतमतिने सोमसूरको बौद्धमतका उपदेश करदिया उसउपदेशको पाके सोमसूर कहीं कुटीबनाकर रहने

लगा क्रमसे वह दोनों गुरू और शिष्य योग करते २ परमज्ञान को प्राप्तहुए इसवीचमें इन्द्रकलशने खड्ग तथा घोड़ेके प्रभाव से कनककलशको विनीतमति की दीहुई आहिच्छत्रानगरी से भी निकाल दिया राज्यसे भ्रष्टहोके कनककलश अपने दो तीन मंत्रियोंको साथलेके भ्रमण करताहुआ विनीतमतिके आश्रममें आया और जैसेही उसने उसबनके फलोंको खानाचाहा वैसेही विनीतमतिकी परीक्षाकरनेके लिये इन्द्रने उसवनको जलाके मरुभूमिकरदीनी अकस्मात् उसआश्रमको नष्टहुआ देखकर विनीतमति चकितहोके इधर उधर घूमनेलगा और कनककलशको क्षुधासे व्याकुल आया देखकर उसके पासजाके सबवृत्तान्त पूछके बोला कि इसवनमें क्षुधितोंके लिये जीनेका आज एकही उपायहै वह मैं आपको बताताहूं यहांसे आधकोशपर एकगढ़ेमें मृगगिरकर मरगयाहै वहां जाके तुम उसका मांसखाओ यहसुनकर वह वहां जानेको उद्यतहुआ और विनीतमतिने यहकहके योगवलसे वहां जाकर मृगकारूप धारणकरके गढ़ेमें गिरकर अपना प्राण त्यागदिया तदनन्तर कनककलशने अपने साथियों समेत धीरे २ वहां जाके गढ़ेसे मृगको निकालके भूनकर खाया इतनेमें विनीतमतिकी दोनों स्त्रियोंने आश्रमको नष्टहुआ देखके और अपने पतिको ढूंढनेपर भी कहीं न पाकर सोमसूरको समाधि से जगाकर उससे सबवृत्तान्त कहा यहसुनके सोमसूरने ध्यानके द्वारा अपने गुरूका सबकृत्य जानके अपनी गुरुपत्नियों से कहदिया और उनदोनों को अपने साथलेजाके उसगढ़े के निकटही मृगरूप अपने गुरूकी हड्डी देखी उनहड्डियों को लेकर वह दोनों पतिव्रतारानी भस्महोगई और उसवृत्तान्त को जानके कनककलश भी अपने को महापापी मानके अपने साथियों समेत अग्नि में जलगया यह देखकर सोमसूर अपनी कुटी में आके कुशासनपर बैठकर योगवलसे अपने प्राणदेने को उद्यत हुआ उस समय साक्षात् इन्द्रने आकर उससे कहा कि तुम प्राण न दो मैंने तुम्हारे गुरूकी परीक्षाकी थी अबमैंने अमृत छिड़ककर उसे दोनोंरानी तथा कनककलशादि समेत जिलादिया इन्द्रके यहवचन सुनकर सोमसूरने वहांजाकर देखा कि परमदयालु विनीतमति अपनी दोनों रानी तथा कनककलशादि समेत फिर जी उठेहैं यह देखके उसने प्रसन्न होके अपने गुरूके चरणोंमें नमस्कार किया और कनककलश ने भी विनीतमति को प्रणाम करके उसकी बड़ी प्रशंसाकी उस समय ब्रह्मा विष्णु आदिक सम्पूर्ण देवताओं ने आकर विनीतमतिको परोपकारी दिव्यवरदान दिये फिर उनके अन्तर्द्धान होजाने पर विनीतमति सोमसूरादिकोंको अपने साथलेकर अन्य दिव्य तपोवनको चलागया इसप्रकार भस्म होजानेवाले मनुष्योंका भी फिर समागम होताहै और जीतेहुओंका तो कहनाही क्याहै इससे हे पुत्र तुम शरीरको मत त्यागो तुम वीरहोकर यह क्या अनुचित् कार्य्य करतेहो जाओ मृगांकदत्तसे तुम्हारा अवश्य समागम होगा उस वृद्ध तपस्विनीके यह वचन सुनके मैं अपने चित्तमें आपके मिलने की आशासे खड्गलेके विंध्यवासिनीको प्रणाम करके वहांसे चला और क्रमसे चलते २ इसवनमें आया यहां भगवतीके लिये वलिदान ढूंढ़तेहुये भिल्ल युद्धमें मुझे पकड़के बांधकर मायावटुके पास लेआये भाग्यवशसे यहां दोमंत्रियों समेत आपके दर्शनसे मेरा सब दुःखदूरहोगया इसप्रकार गुणाकरके संपूर्ण

वृत्तान्तको सुनकर मृगांकदत्त बड़े आनन्दको प्राप्तहुआ और उसके शरीरमें अच्छे प्रकारसे पट्टी बँध-वाके अपने मंत्रियो समेत आह्निक करनेकोगया इसप्रकार गुणाकरकोपाकर उसकी औषधी करवाता हुआ मृगांकदत्त अपने अन्य मंत्री तथा शशांकवतीकेलिये उत्कंठितभी होकर मायावटुके आग्रह से कुछ दिन वहां और रहा ४०७॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशाङ्कवतीलम्बकेपंचमस्तरङ्गः ५॥

इसके उपरान्त गुणाकर के स्वस्थ होजानेपर मृगांकदत्त शुभ मूहूर्त्त देखकर मायावटु तथा दुर्गपिशाचसे अपने कार्यके निमित्त सहायता लेनेका निश्चय करके और उनसे आज्ञालेकर श्रुतधि विमलबुद्धि भीम पराक्रम तथा गुणाकर सहित उज्जयिनीको चला मार्ग में अन्य मंत्रियोंको ढूंढते २ एक दिन विन्ध्याचलके वनमें सायंकालके समय किसी वृक्षके नीचे पहुँचकर वहीं अपने मंत्रियों समेत सोया कुछरात्रि व्यतीत होनेपर अकस्मात् उठके उसने एक अन्य पुरुषको वहीं सोता देखकर यह कौनहै इस के जाननेकेलिये उसका मुख खोलकर देखा तो वह उसीका मंत्री विचित्रकथ था मुख खोलने से विचित्र कथभी जगकर उसे पहचानके उसके पैरोंपर गिरा मृगांकदत्तने उसे पैरोंपर से उठा के गले से लगाकर अन्यमंत्रियोंको भी जगाके उसे दिखाया उनसबने उठके उससे मिलके अपना २ सबवृत्तान्त कहके उससे पूछा कि तुम इतने दिनतक कहां कैसेरहे और क्या २ वृत्तान्त देखा सोसबको कहो यह सुनकर विचित्रकथने कहा कि उस सर्पके शापसे आप लोगोंसे पृथक्होकर मैं मोहितहोके भ्रमणकरते २ दूसरे दिन अकस्मात् उसीवनके किनारेपर एकदिव्यपुरमें पहुँचा वहांदो दिव्यस्त्रियोंसे युक्त एकदिव्य पुरुष ने मुझे बहुतसमझाके शीतल जलसे स्नानकरवाके मन्दिरमें लेजाके दिव्य भोजनकरवाया और आप भी भोजनकिया भोजन के उपरान्त मैंने उससेकहा कि आप कौनहैं और क्यों इतनी दया आपने मेरे ऊपरकी मैं अपने स्वामी के विना अवश्य अपना शरीर त्यागना चाहताहूं यहकहके मैंने उससे अपना सब वृत्तान्त कहदीना सो सुनके उसनेकहा कि मैं यक्षहूं और यहदोनों मेरीस्त्रीहैं तुम मेरे यहां आज अतिथि प्राप्तहुए हो इसीसे मैंने तुम्हारा सत्कारकियाहै क्योंकि यथा शक्ति अतिथियोंका सत्कार करना गृहस्थियों का धर्म्महै तुम अपने प्राण क्यों देना चाहतेहो शापके नष्टहोजानेपर तुम्हारा समागम अवश्य अपने स्वामीसेहोगा भला बताओ तो सही इससंसारमें कौन दुःखसे रहितहै देखो यक्षहोकर भी जो २ दुःख मैंने उठाये हैं वहसब तुमको सुनाताहूं इसपृथ्वी की आभूषण रूप त्रिगर्त्तानाम नगरी में एक कुलीन कुटुम्बी पवित्रधरनाम दरिद्री ब्राह्मण रहताथा एकदिन उस ने शोचा कि यहां धनवानों के बीचमें रहने से मेरी कुछ शोभा नहीं है मैं यहां मानकेकारण धनवानोंकी न सेवाकरसक्ता हूं न इन से दानही लेसक्ताहूं इससे कहीं एकान्तमें जाकर यक्षिणीको सिद्धकरूं क्योंकि मेरे गुरुने मुझे यक्षिणी के मंत्रका उपदेश कियाहै यह शोचके उसने वनमें जाके स्त्रीरूप यक्षिणी सिद्धकी और सिद्धहुई सौ दामिनीनाम यक्षिणीकेसाथ सुखपूर्वक रहनेलगा एकदिन पुत्रोत्पत्तिके विना पवित्रधरको दुखित देख के यक्षिणी ने कहा कि हे आर्यपुत्र चिन्ता न करो पुत्र अवश्य होगा इसी विषयका वृत्तान्त मैं तुमसे

वर्णन करतीहूं दक्षिणदेशमें एकवड़ाघना तमालका वनहै उसमें पृथूदरनाम यक्षरहताहै उसकी सौदामिनी नाम मैंही एककन्याहूं मेरा पिता मुझपर स्नेहकरके मुझे लियेर पर्व्वतोंपर फिरताथा एकसमय मैंने कैलाश पर्व्वतपर अट्टहासनाम यक्षको देखा और उस अट्टहास ने भी मुझे देखा परस्पर देखकर हमदोनो का चित्त एक दूसरेपर चलायमान होगया यह जानके मेरे पिता तुल्यसंयोग जानके अट्टहासको बुलाके विवाहका निश्चर्यकरके और शुभ लग्न ठीककर मुझे लेकर अपने घरचलेआये और अट्टहास भी प्रसन्नहोके अपने मित्रों के साथ अपने घरचलागया दूसरे दिन कपिशभ्रूनाम मेरी सखी कुछ उदासीनसीहोके मेरेपास आई और हठपूर्वक उदासीनता का कारण पूछनेपर कहनेलगी कि हे सखी यद्यपि कहनेके योग्य बात नहीं है तथापि यह दुखदाई बात मैं तुमसे कहतीहूं आज मैंने भ्रमण करते २ हिमालयके चित्रस्थलनाम शिखरपर तुम्हारे प्रिय अट्टहासको देखा कि उसकेमित्रोंने उसे वियोगसे व्याकुल देखके वहलाने के लिये उसे यक्षराज बनाया और उसके भाई को यक्षराज का पुत्र नलकूवर बनाया और आप सब उसकेमंत्रीवने इसप्रकार क्रीड़ा करतेहुए उसको अकस्मात् आकाश मार्गसे जातेहुए नलकूवरने देखकर क्रोधकरके यह शापदिया कि हे मूर्ख तू सेवकहोकर स्वामीकीलीला करताहै इससे मनुष्यहोगा यहघोरशाप सुनके अट्टहासने हाथ जोड़केकहा कि हे स्वामी मैंने उत्सुकता के दूर करनेकेलिये यह मूर्खताकी थी अधिकार के अभिमान से नहीं की इससे मेरे इस अपराध को क्षमाकीजिये उसके ऐसे आर्द्रवचन सुनकर नलकूवरनेकहा कि जिस यक्षिणी को तुम चाहतेहो उसी यक्षिणी के साथ तुम्हारा मनुष्यहोकर विवाहहोगा और उसी यक्षिणी में यह तुम्हारा छोटाभाई पुत्र रूपसे उत्पन्न होगा इसके उत्पन्न होतेही तुम शापसे छूटजाओगे और तुम्हारा यहभाई बहुत कालतक पृथ्वी पर राज्यकरके शापसे छूटेगा नलकूवर के यह वचन सुनके शापके प्रभाव से वह अट्टहास कहीं चलागयायह देखकर मैं बहुत दुखितहोके तुम्हारे पास आईहूं अपनी सखी से यह सुनके मैं अति दुखित होकें अपने माता पितासे सब वृत्तान्तकहके फिर समागमकी इच्छासे अपना समय व्यतीतकरनेलगी हे स्वामी वह अट्टहास आपहीहो बहुतकालके पीछे हमारा और आपका समागमहुआहै इससे आप चिन्ता न करिये पुत्र अवश्यहोगा सौदामिनी यक्षिणी के यह वचन सुनके पवित्रधर विश्वासयुक्तहोके बहुत प्रसन्नहुआ कुछकालके उपरान्त उसके यक्षिणी स्त्रीमें पुत्रहुआ जिसके तेजसे सम्पूर्ण घर प्रकाशितहोगया उस पुत्र के मुखको देखतेही पवित्रधर अट्टहासनाम यक्षहोके सौदामिनी नाम अपनी यक्षिणी स्त्री से बोला कि हे प्रिये अब मेरा शाप निवृत्त होगया चलो अपने स्थानको चलें यह सुनकर यक्षिणी ने कहा कि यहतुम्हारा भाईही तुम्हारा पुत्ररूप हुआहै यह अभी अज्ञानहै इसकी क्या दशाहोगी यह तो शोचलो उसके यह वचन सुनके अट्टहासने ध्यानकरके कहा कि हे प्रिये इसीपुरी में देवदर्शन नाम एक अनपत्य दरिद्री ब्राह्मणरहताहै एकसमय धन तथा पुत्रके निमित्त तपकरतेहुए देवदर्शन से भगवान् अग्नि ने स्वप्नमें कहा कि हे ब्राह्मण तुम्हारे औरस पुत्र नहींहोगा परन्तु कृत्रिमपुत्र तुमको प्राप्त होगा उसीके प्रभाव से तुम्हारा दरिद्र दूरहोगा अग्निकी यह आज्ञापाके देवदर्शन अबतक उसी पुत्रकी

आशाकररहाहै इससे उसीको यह बालक देदेनाचाहिये क्योंकि ऐसाही होनहारहै यह कहके अट्टहास रात्रिकेसमय एक सुवर्णके घटमें रत्नभरकर उसपर उस बालकको सुलाके बालकके गलेमें एकदिव्य रत्नो की माला पहनाके उस ब्राह्मणके यहां रखकर सौदामिनी समेत अपने स्थानको चलागया उसके चले जानेपर उस ब्राह्मणने जगके रत्नोंको चमकतेहुए देखकर उठके उस बालकको जाके देखा और बहुत धनसमेत बालकको पाकर अग्निदेवके वचनको स्मरणकरके अपनी स्त्रीको भी सोतेसे जगाकर प्रसन्नता सुनाके दूसरे दिन प्रातःकाल बड़ा उत्सव किया और ग्यारहवें दिन अपने नामके अनुसार उस बालकका नाम श्रीदर्शन रक्खा इसप्रकारसे देवदर्शन महाधनवान् होकर यज्ञ आदिक धर्म कार्य्योंको करताहुआ सुख पूर्वक रहनेलगा और श्रीदर्शनभी वृद्धिको प्राप्तहोकर सम्पूर्ण वेदोंमें विद्याओं में तथा अस्त्र विद्यामें निपुणहोगया कुछ कालके उपरान्त श्रीदर्शनके तरुणहोनेपर देवदर्शन तीर्थयात्राके प्रसंगसे प्रयाग में जाके मृत्युको प्राप्तहोगया यह समाचार सुनकर देवदर्शनकी स्त्रीभी उसका कोई चिह्न लेकर अग्नि में भस्महोगई तब उन दोनों का ऊर्ध्व दैहिककर्म करके श्रीदर्शन विद्वान् होकर भी विवाह न करके कुसंगके प्रभावसे द्यूत खेलनेलगा थोड़ेही कालमें उस दुर्व्यसनसे उसका सम्पूर्ण धन क्षीणहोगया और भोजनभी कष्टसे मिलनेलगा एकसमय द्यूतशाला में तीन दिनतक निराहार बैठेहुए लज्जासे बाहर निकलनेकी इच्छा न करतेहुए और किसी दूसरेके दियेहुए भोजन न करनेसे दुखित हुए श्री दर्शनसे उसके सुखरकनाम किसी मित्रने कहा कि हे भाई क्यों इतना मोह कररहेहो यह द्यूत का व्यसन ऐसाही होताहै क्या निर्धनताके कटाक्षरूपी पाशोंको तुम पहलेसे नहीं जानतेथे ज्वारी की शय्या धूलहै तकिये भुजाहैं चौराहा गृहहै और निर्धनता स्त्री है इससे भोजन क्यों नहीं करतेहो विद्वान् होकर भी क्यों प्राण दिये देतेहो देखो जीतेहुए मनुष्योंके सम्पूर्ण मनोरथ पूर्णहोते हैं इसविषयपर मैं तुम को एकराजा भूनन्दनकी विचित्र कथा सुनाताहूं इसपृथ्वीका आभूषण रूप कश्मीरनाम देशहै जिसे ब्रह्माने मानों पुण्यात्मा मनुष्योंके सुखके लिये द्वितीय स्वर्ग बनायाहै जिसमें लक्ष्मी और सरस्वती मैं बड़ीहूं मैं बड़ीहूं इसईर्ष्यासे सदैव निवास करतीहैं धर्म्मद्रोही कलियुगकी इसमें प्रवेश न होय इसीलिये मानों हिमालय जिसकी चारोंओर से रक्षाकरता है जिसमें वितस्ता नदी अपनी तरंगरूपी हातों से मानों पापोंको यहकहकर हटाती है कि इसतीर्थमय देशसे तुम दूरभागजाओ जिसके श्वेत महलोंको देखकर हिमालय के शिखरोंकी भ्रान्ति होती है ऐसे सुन्दर उस देश में वर्णाश्रमकी रक्षा करनेवाला प्रजाओंको आनन्द देनेवाला सम्पूर्ण विद्याओंका जाननेवाला भूनन्दननाम राजाथा जिसकी भुजाओं के बलसे सदैव शत्रु मण्डल भागे २ फिरते थे उसकी प्रजाओं में कभी किसी प्रकारका दुर्भिक्ष नहीं होताथा उसकी प्रजाओंके चित्त सदैव शुद्ध बनेरहते थे वह नित्य विष्णुभगवान्का पूजनकरके नीतिपूर्वक प्रजाओंका पालन करताथा एक समय वह राजा द्वादशी के दिन विधिपूर्वक विष्णुभगवान्का पूजनकरके रात्रिके समय पलँगपरसोया तब उसने स्वप्नमें देखा कि एक दैत्यकन्याने आकर उससे सम्भोगकिया यह स्वप्न देखकर जगकर उसने अपने शरीरमें सम्भोगके चिह्नदेखके और

दैत्य कन्याको न पाकर शोचा कि यह स्वप्न तो नहीं है क्योंकि मेरे शरीरमें सम्भोगके चिह्न प्रकटहैं में जानताहूं किसी दिव्य स्त्री ने आकर मुझे छलाहै यह शोचकर वह ऐसा विरहातुर हुआ कि सम्पूर्ण राज्य कार्य्य करना भूलगया और उसकी प्राप्तिका कोई उपाय न देखकर विचारनेलगा कि विष्णुभगवान्कीही कृपासे वहमुझे रात्रिके समय प्राप्तहुईथी इससे एकान्तमें जाकर उन्हींका आराधन करना चाहिये उसके बिना यह सब मेरा राज्य व्यर्थ है यह शोचकर सुनन्दननाम अपने छोटेभाईको राज्यदेकर और मन्त्रियोंको सब राज्यके कार्य्य समझाकर वह वामनजी के चरणों से उत्पन्नहुए क्रमसरनाम तीर्थपर चलागया जिस तीर्थ के निकट तीन शिखर ब्रह्मा विष्णु तथा श्री शिवजी के समान शोभित होते हैं जिस तीर्थ ने कश्मीर देशमें विष्णुभगवान् के चरणोंसे द्वितीय गंगाके समान वितस्तानाम नदी उत्पन्नकीहै ऐसे श्रेष्ठ उस तीर्थपर पहुंचकर वह राजा अन्यरसोंसे निष्पृहहोकर ग्रीष्म ऋतुमें वर्षा की चाहना करनेवाले चातककी समान तप करनेलगा तप करते २ बारहवर्ष व्यतीत होजानेपर उसी मार्गसे पीली २ जटाओं को धारण कियेहुए बहुतसे शिष्योंको साथमें लियेहुए एक बड़ेज्ञानी तपस्वी वहाँ आये वह उस राजाको देखके और सब वृत्तान्त पूंछ के क्षणभर ध्यान करके बोले कि हेराजा वह आपकी प्रिया दैत्यकन्या पातालकी रहनेवालीहै इससे आप सावधान रहिये मैं आपको वहीं पहुंचाय देताहूं मैं दक्षिण देशके रहनेवाले यज्ञनाम एक याज्ञिक ब्राह्मणका भूतवसु नाम पुत्रहूं मेरे पिता ने पातालशास्त्रसे अनेकप्रकारके मंत्र यन्त्रों की विधि मुझे सिखाई उसे सीखकर श्रीपर्व्वतपर जाके मैंने श्रीशिवजीकी आराधनाका तपकिया उससे प्रसन्न होकर श्री शिवजीने आकर मुझसे कहा कि तुम रसातल में जाकर दैत्यांगनाओंके साथ कुछकाल रहकर मेरे पास चलेआओगे और पातालमे जाने का यह उपायहै कि इस पृथ्वीपर बहुतसेछिद्र पातालमें जानेकेहैं परन्तु कश्मीर देशमें एकछिद्रहै जो कि सबकोथोड़ेश्रमसे मिलसक्ताहै जिसकेद्वारा ऊषाने अनिरुद्धको दैत्योंके उपवनमेंलेजाके रमणकिया था उससमय प्रद्युम्नने अपने पुत्रकीरक्षाके लिये पर्व्वतके शिखरमेंसे वहां का एकद्वारबनाके शारिका नाम दुर्गादेवीकी आराधनाकरके द्वारकी रक्षाकेलिये स्थापित कियाथा इससे उसस्थानकानाम शारिका कूट तथा प्रद्युम्नशिखर उसदेशमें आजकलप्रकटहै वहींजाकर अपने साथियोंसमेत तुमपातालकोजाओ मेरी कृपासे वहां तुमको सिद्धि प्राप्तहोगी यहकहकर श्री शिवजी के अन्तर्द्धान होजानेपर मैं सम्पूर्ण विज्ञानों से युक्तहोकर इसकश्मीरदेशमें आयाहूं इससे हे राजा तुम मेरे साथ शारिका कूटको चलो वहांसे मैं तुमको तुम्हारी प्रियाके स्थान पातालमें लेजाऊंगा ११४ उसतपस्वीके यहवचन स्वीकारकरके राजा भूनन्दन उसके साथ शारिकाकूटको गया वहां वितस्तानदी में स्नानकरके और विघ्नहरता श्री गणेशजी तथा शारिकादेवीका पूजन करके और सर्षपोंसे दिग्बन्धनकरके वह तपस्वी छिद्रको प्रकट करके अपने शिष्यों तथा राजाभूनन्दन समेत उसी छिद्रमें प्रवेशकरके पातालके मार्गमें पांचदिन रात्रि बराबर चलागया छठेदिन पाताल गंगाका उल्लंघन करके रजतमय पृथ्वीमें उसने एक दिव्यवनदेखा उसवनमें अत्यन्त सुगंधित सुवर्ण के कमल पृथ्वीमेंही लगेहुए थे और मूंगे कपूर चन्दन तथा अगर

के वृक्ष अपनी सुगन्धियों से जीवोंके चित्तोंको तृप्तकरतेथे उनवृक्षोंके बीचमें एकबहुत बड़ा शिवजीका मन्दिरथा उसमें रत्नोंकी सीढ़ियां सुवर्णकी दीवार माणिक्यके खंभे और चन्द्रकान्ति मणिकी चट्टान थी ऐसे अति मनोहर उस मन्दिरको देखके आश्चर्य्यितहुए अपने शिष्यों से तथा राजा भूनन्दनसे उसने कहा कि यहपातालमें हाटकेश्वर नाम श्री शिवजीका मन्दिरहै तुमसबलोग इनका पूजनकरो तपस्वी के यहवचन सुनके सबने पुष्प तोड़ के आकाशगंगा में स्नान करके श्री शिवजी का पूजन किया और क्षणभर विश्रामकरके वहां से चलकर पके फलों से युक्त एक जामन का वृक्ष देखा उसे देखकर तपस्वी ने कहा कि इसवृक्षके फलोंको कोई न खाना जो खाओगे तो बड़ा विघ्नहोगा यह सुनकर भी उनके एक शिष्य ने फलखालिये और खातेही काष्ठके समान जड़ होगया उसकी यह दशा देखके सब लोग भयभीत होके उन फलों को छोड़कर वहां से चले एककोशभर पृथ्वी चलकर एक बड़ा सुवर्ण का परकोटा मिला जिसमें रत्नमय द्वार लगाथा उसद्वारपर दो लोहेके मेढ़े लोगों के रोकनेको खड़ेथे मन्त्र पढ़ेहुये डंडेसे उन मेढ़ों को भगाकर तपस्वी ने अपने साथियोंसमेत भीतर जाके रत्नजटित सुवर्ण के दिव्य गृह देखे उन गृहों के द्वारपर लोहे के डंडे लियेहुए बड़े २ रक्षक खड़े थे उन रक्षकों को देखके तपस्वी ने एक वृक्षके नीचे बैठके दुष्टघ्नी योगधारणा की उसके प्रभावसे वह भयंकर रक्षक भागगये और उन गृहोंमें से दैत्य कन्याओंकी बहुतसी दासी निकली उन दासियोंने इन सबसे अलग २ आकर कहा कि कृपा करके भीतर चलिये आपको हमारी स्वामिनी बुलाती हैं उनके यह वचन सुनके तपस्वीने अपने साथियों से कहा कि मंदिरों में जाकर तुम लोग अपनी २ प्रियाओं के वचनोंका उल्लंघन न करना यह कहके वह तपस्वी उन दासियोंके साथ एक दिव्य मंदिरमें जाकर एक उत्तम दिव्य दैत्य कन्याको पाकर अभीष्ट सुखको प्राप्तहुआ और उसके शिष्यभी जुदे २ मंदिरोंमें जाकर दैत्य कन्याओंको पाकर महा सुखीहुये और राजा भूनन्दनभी एक दासीके साथ परम उत्तम दिव्य मन्दिरमें गया उसमन्दिरकी रत्न मयी दीवारों मे स्त्रियों के प्रतिबिम्ब पड़नेसे ऐसी शोभा होती थी कि मानों सजीव चित्र बनेहुये हैं उस मन्दिरकी सब चट्टान नीलमणिकी बनीहुई थीं इससे ऐसी शोभाहोतीथी कि मानों यह मन्दिर विमानों के जीतनेकी इच्छासे आकाश में चढ़गयाहै वहांकी स्त्रियां ऐसी सुकुमारथीं कि प्रातःकालकी धूप के सहनेवाले पुष्प भी उनकी तुल्यता नहींकरसक्ते थे ऐसे सुन्दर उस मन्दिरमें राजा भूनन्दनने अपनी प्रिया दैत्यकन्याको बैठीहुई देखा उसकी कान्तिसेही वह मन्दिर ऐसा देदीप्यमान होरहाथा कि रत्नके दीपकोंकीभी कुछ आवश्यकता न थी उसके परमसुन्दररूपको देखके राजा के आनन्दाश्रु निकलआये वह आंसू क्या निकले मानों राजा ने अन्य स्त्रियों के देखनेसे लगेहुए अपने नेत्रोंके मैलको धोडाला कुमुदिनीनाम उस कन्याने भी राजा को देखके बड़े आनन्दसे उठके राजाका हाथ पकड़कर आपको मैंने बड़ा परिश्रम दिया यहकहके आदरपूर्वक दिव्यआसनपर बैठाया क्षणभर विश्रामकरने के उपरान्त वह राजा को स्नानकराके तथा दिव्यभोजन कराके और नवीन वस्त्राभरण पहराके उपवनमें बावड़ी के तटपर लेगई और एक मणिकी शिलापर बैठगई उस बावड़ी में

रुधिर तथा चरबीका मद्यभराहुआ था उसीमें से एक पात्रभरके उसने राजाके पीनेको दिया परन्तु राजा ने उसका ग्रहण नहीं किया तब उसने कहा कि जो आप इसका ग्रहण न करोगे तो कल्याण न होगा उसके यह वचन सुनकर राजाने कहा कि जो चाहे सो होय मैं इस निन्दित वस्तुको नहीं पीऊंगा यह सुनके वह उसके शिरपर वह पात्र पटकके वहां से चलीगई और उसकी दासियों ने राजाको लेजाके दूसरी बावडी में डालदिया उसमें पड़तेही राजा उसीक्रमसर नाम तीर्थके तपोवनमें आनिकला और बहुत आश्चर्य्ययुक्तहोके शोचने लगा कि कहां तो वह दैत्यकन्याका उपवन और कहां यह क्रमसर तीर्थ यह क्या आश्चर्य्य है क्या यह कोई मायाहै या मेरा कोई बुद्धिभ्रमहै अथवा जो मैंने उस तपस्वी के कहनेका उल्लंघन किया उसीका यह फलहै जो उसने मुझे पीनेको मद्यदियी थी वह निन्दित न थी यह मेरी परीक्षाथी देखो वह जो मद्य मेरे शिरपर पड़ीहै उसमें दिव्य सुगन्धि आरही है मन्दभागी लोग जो महाक्लेश करके कोई कार्य्य करतेभी हैं तो उसका फल उन्हें नहीं प्राप्तहोता क्योंकि उनका भाग्य तो विपरीत ही रहताहै इसप्रकार शोचतेहुए राजाको दैत्यकन्याकी फेंकी हुई मद्यकी गन्धसे सुगन्धिकेलोभी भ्रमरोंने आकर घेरलिया उन भ्रमरोंको देखके राजाने बहुत घबराके अपने चित्तमें कहा कि अच्छाफलहोना तो दूररहा मुझे उसके बदले अनिष्टफलप्राप्तहुआ कि इन भ्रमरोंकेमारे कहीं सुखसे बैठभी नहींसक्ताहूं इसप्रकारसे विकलहोकर राजा भूनन्दन अपने प्राणदेनेको उद्यतहुआ इतने में उसी मार्ग मे आयेहुए एक ऋषि ने राजा को भ्रमरों से घिराहुआ देखके भ्रमरों को हटाके सब वृत्तान्त पूछ कर राजा से कहा कि हे राजा जबतक यह शरीर है तबतक दुःखका नाश नहींहोसक्ता इससे क्लेश को न मानकर पुरुषार्थ करनाचाहिये जबतक ब्रह्मा विष्णु महेश में अभेदमानकर उपासना नहींकीजाती है तबतक कोईयथार्थ सिद्ध नहीं होसक्ता इससे अभेद बुद्धिकरके तुम ब्रह्मा विष्णु महेशकी उपासनाकरके बारहवर्ष तक और तप करो तब तुम्हारी प्रिया तुमको प्राप्तहोगी और अन्त में परमसिद्धि प्राप्तहोगी तुम्हारा शरीर सिद्धहोगया है क्योंकि तुम्हारे शरीर से दिव्यगंधि आरही है अब मैं तुमको एकमंत्रका उपदेशकरे देताहूं तुम उसीका जप करना और अपना मृगचर्म्म तुम्हें देताहूं जिसके लपेटनेसे भ्रमरों की बाधा न होगी यह कहके वह मुनिमंत्रका उपदेशकरके तथा मृगचर्म्म देकर वहीं अन्तर्द्धान होगये और राजा भूनन्दन उसी तीर्थ पर तपकरनेलगा बारहवर्ष के उपरान्त परमेश्वरकी कृपासे वह कुमुदिनीनाम दैत्य कन्या राजाकेपास आई और उसे अपनेसाथमें पातालको लेगई वहांजाके राजाभूनन्दन उसकेसाथ बहुत कालतक दिव्यसुखभोगके अन्तमें परमसिद्धिको प्राप्तहुआ इसप्रकारसे धैर्य्यवान् पुरुष अपने मनोरथों को बहुत कालमें भी प्राप्त करते हैं इससे हे श्रीदर्शन तुमभी भोजनकरो भूखसे अपने प्राणमतत्यागो १७८ मुखरकके यहवचन सुनकर श्रीदर्शन ने कहा कि तुम बहुतठीक कहते हो परन्तु इसप्रकारकी दुर्दशामें ग्रसितहोके मैं द्यूतशालाके बाहर इस नगरमें नहीं निकलाचाहताहूं इससे जो तुम आजही रात्रिको परदेशजानेकी मुझेआज्ञादो तो मैं भोजनकरूं उसके यहवचन स्वीकारकरके मुखरकने उसीसमय उसे भोजनकरवाया और कहा कि हे मित्र मैंभी तुम्हारेही साथचलूंगा उसके यह वचनसुनके

श्रीदर्शन उसे साथलेकर परदेशकोचला भाग्यवशसे मार्ग में जातेहुए श्रीदर्शनको उसके माता पिता सौदामिनी और अट्टहासनामयक्ष यक्षिणी ने देखकर और आपत्ति में ग्रसितजानकर आकाशही से कहा कि हे श्रीदर्शन तुम्हारी माता देवदर्शनकी स्त्री ने अपने रहने के स्थानमें बहुतसे आभूषणगाड़ेथे वह अबतक वहीं गड़ेहुएहैं उन्हें जाकर तुम खोदलो और निश्चिन्तहो के मालवदेश को जाओ वहां श्रीसेननाम बड़ा धनवान् राजा है उस राजा को कुमार अवस्था में जुएकेकारण से महा क्लेशहुआथा इससे उसने अपने राज्य में एक बड़ाभारी स्थान ज्वारियों के लिये बनवाया है उसमें जो कोई ज्वारी जाकररहते हैं उनको अभीष्ट भोजन मिलता है इससे हे पुत्र तुमभी वहींजाओ तुम्हारा वहां कल्याण होगा यह आकाशवाणी सुनकर श्रीदर्शन अपने घर में मित्रसमेतजाके आभूषणों को खोदके प्रसन्नता पूर्व्वक मालवदेश को चला बहुत दूरचलकर सायंकाल के समय बहुशष्यनाम ग्राम के निकट एक निर्मलजलवाले तड़ाग के तटपरजाके बैठा और हाथ पैर धोकर जलपीके विश्रामकरनेलगा उससमय एक अत्यन्त रूपवती कन्या जलभरनेको वहां आई नीलकमलके समान रूपवाली वह कन्या क्या थी मानों दूसरी रतिहीथी जिसका कि शरीर श्रीशिवजीके क्रोध से भस्महोनेवाले कामदेवके धुएंसे श्याम होगयाथा उसकन्याने श्रीदर्शनको प्रेमपूर्व्वक देखके उसके निकटआकर कहा कि तुमदोनों जने यहां प्राण देनेको क्यों आयेहो पतंगके समान अज्ञानसे बलतीहुई अग्निमें क्यों कूदतेहो यह सुनके मुखरक ने घबराकर कहा कि हे सुन्दरी तुम कौनहो और यहतुमने क्या कहा इसका अभिप्राय मैं नहींसमझा यह सुनके उसने कहा कि सुनो मैं अपना वृत्तान्त संक्षेपसे कहतीहूं बड़े प्रसिद्ध सुघोषनामग्राम में पद्मगर्भनाम एक वैदिक ब्राह्मण रहताथा उसके शशिकला नाम पतिव्रता स्त्रीथी उस शशिकलामें उस ब्राह्मणसे दो सन्तान उत्पन्नहुईं एक मुखरकनाम पुत्र और दूसरी पद्मिष्ठानाम मैं कन्या मेरा भाई मुखरक बाल्यावस्थाहीमें द्यूतके व्यसनसे कहीं परदेशको चलागया उस शोकसे मेरी माता मरगई और उसीके शोक से मेरे पिता घरको त्यागके मुझे अपने साथ लेकर मुखरकके ढूंढ़नेको परदेशको चले अनेक नगर तथा ग्रामोंमें घूमतेहुए भाग्यवशसे इस ग्राममें आये इस ग्राममें अनेक चोरोंका स्वामी वसुभूतिनाम चोर नाममात्रका ब्राह्मणरहता है उस पापीने अपने साथियों समेत मेरे पिताको मारकर सब धनले लिया और मुझे अपने साथ लेजाकर इसलिये रक्खा कि सुभूतिनाम अपने लड़केके साथ मेरा विवाहकरे उसका वह पुत्र चोरी करनेकेलिये कहीं गयाहै और मेरे पुण्योंके प्रभावसे अभी तक नहीं आयाहै अब जो मेरी भाग्यमें बदाहोगा सो होगा इससे वह चोर जो तुम्हें देखलेगा तो अवश्य मारडालेगा ऐसा उपाय करो जिससे वह तुम्हें न पावे उसके यहवचन सुनके मुखरक उसे गलेसे लगाके रोकरबोला कि हे पद्मिष्ठे तेरा मुखरकनाम महा अभागी भाई मैंहीहूं हाय मेरेही कारण मेरे माता पिताका देहान्त हुआ उसके यह वचन सुनकर पद्मिष्ठाभी उसे पहचानकर रोनेलगी उनदोनोंको रोते देखकर श्रीदर्शन ने उन्हें समझाके कहा कि यह शोकका अवसर नहीं है इस समय अपने शरीरकी रक्षाकरनी उचित है धन देकरभी जो अपने प्राण बचजांय तो अच्छाहै श्रीदर्शनके यह वचन सुनके सबने जो कुछ कर्त्तव्य

था उसका निश्चयकिया तब श्रीदर्शन तो रोगका बहाना करके लेटरहा क्योंकि उसका शरीर लंघनों के कारण कृशहोगया था और मुखरक उसके पैरपकड़कर रोनेलगा और पद्मिष्ठाने शीघ्रहीजाके चोरोंके स्वामी वसुभूतिसे कहा कि तड़ागके निकट कोई रोगी पथिकआयाहै उसके साथ एक अन्य पुरुषभी है यह सुनकर उसने कुछ चोरोंको उनके पासभेजा उन्होंने तड़ागके निकटजाके मुखरकसे पूछा कि तुम क्यों रोरहेहो यह सुनकर मुखरकने कहा कि मैं ब्राह्मणहूं और यह मेरा बड़ा भाईहै तीर्थयात्रामें बहुत दिनोंतक भ्रमण करनेके कारण यह रोगी होगयाहै और धीरे २ यहां आकर इसकी सब चेष्टा जातीरही है इससे इसने मुझसे कहाहै कि हे पुत्र तुम मुझे कुशकी शय्यापर लिटाओ और ग्रामसे कोई गुणी ब्राह्मण बुलालाओ जिसे मैं अपना सर्वस्वदान करके देदूं क्योंकि आज रात्रिको मेरे प्राण नहीं बचेंगे इसके यह वचन सुनके मैं यहां परदेशमें रात्रिके समय कोई अपना सहायक न देखके दीनहोकर रोनेलगा तुम लोग कृपाकरके कोई गुणी ब्राह्मण बुलालाओ जिसे यह और मैं जो कुछ हमारेपासधनहै संकल्प करकेदेदें आज रात्रिको निस्सन्देह इसकी मृत्युहोजायगी और मैं भी इस दुःखको न सहकर प्रातःकाल अग्निमें जलकर अपने प्राणदेदूंगा इससे तुम इस हमारी प्रार्थनाको स्वीकारकरो क्योंकि तुम लोग हमको यहां अकारण मित्रमिलेहो यह सुनके उनचोरोंने वसुभूतिसे सब वृत्तान्त कहके कहा कि चलो उससे दान लेआओ उनके यह वचन सुनकर वसुभूतिने कहा कि विना मारे धनलेना हम लोगोंको अनुचितहै क्योंकि जिसका धनलेलो और उसे मार न डालो तो इसमें बड़ा दोष उत्पन्नहोता है यह सुनके चोरों ने कहा कि तुम्हारा सन्देहकरना व्यर्थ है क्योंकि जिसका धनछीनलो उसकेही न मारनेमें दोषहोताहै और जो दानदेताहै उसके मारनेमें क्या फलहै और जो प्रातःकाल तक यह दोनों जीतेरहेंगे तो मारभीडालेंगे नहीं तो व्यर्थ ब्रह्महत्या करनेसे क्या लाभहै उनके यह वचन सुनके वसुभूति दानलेनेकेलिये श्रीदर्शनके निकटआया और श्रीदर्शनने बहुत विकलता दिखाके अपनी माता के आभूषण उसे देदिये वह लेके वसुभूति अपनेसाथियोंसमेत ग्रामको चलागया इसके उपरान्त सब चोरोंके सोजानेपर पद्मिष्ठा वहांसे उठकर मुखरकके पास चलीआई तब मुखरक तथा श्रीदर्शन उसे अपने साथलेके रात्रिहीके समय मालवदेशकोचले रात्रिभर चलते २ प्रातःकाल एक महावनमें पहुंचे जिसमें कि अनेक प्रकारके कांटोंके वृक्षलगेथे व्याघ्र सिंहादिक भयंकरजीव उच्चस्वरसे चिल्लारहेथे और सैकड़ों मृग इधर उधर घूमरहेथे ऐसे भयंकर उस वनमें वहतीनों दिनभर चलतेरहे सायंकालके समय मानों उनके क्लेशको देखकर सूर्य्यभगवान् अपनी धूपको खेंचके अस्ताचलकोगये सूर्य्यभगवान् के अस्तहोजाने पर वह तीनोंथककर तथा क्षुधासे व्याकुलहोके एक वृक्षकेनीचे बैठगये वहां थोड़ीदूरपर एक ज्वालासी उन्हें दिखाईदी उसे देखकर श्रीदर्शनने मुखरकसे कहा कि शायद यहां कोई ग्रामहै मैं जाके उसे देखताहूं यह कहके वह ज्वालाके सन्मुखगया कुछ दूर चलकर एक रत्नमयगृह उसेमिला उनरत्नोंकी प्रभाहीज्वालाके समान दूरसे दीखतीथी उस मन्दिरके भीतरजाके उसने एक अत्यन्त रूपवती यक्षिणी देखी और बहुतसे उलटे पैरवाले यक्ष उसके सेवकदेखे और उनका लायाहुआ बहुतसा अन्न भी इकट्ठा

देखा यह देखके उसने यक्षिणीके पास जाके उससे कहा कि हम तीन अतिथि तुम्हारे यहां आयेहैं हम को भोजनदो उसके यह वचन सुनके यक्षिणीने उसके सत्त्वसे प्रसन्नहोकर तीन मनुष्योंके भोजनके योग्य अन्न तथा जल एक यक्षपर लदवाके उसके साथ करदिया उसे लेकर वह पद्मिष्ठा तथा मुखरक के पास आया और यक्षसे अन्न तथा जललेके उसे विदाकरके संध्योपासनादि नित्यकृत्यसे निवृत्तहुआ तदनन्तर मुखरक तथा पद्मिष्ठाके साथ वैठकर उसने दिव्य अन्नखाके निर्मल जल पिया वह दिव्य भोजन करके मुखरकने श्रीदर्शन के सत्त्व तथा प्रभाव को देखकर कहा कि हे मित्र तुम कोई देवांशहो और यह मेरी बहिन पद्मिष्ठाभी पृथ्वीपर एकही सुन्दरी है इससे मैंने यह तुम्हेंदेदी उसके यह वचन सुनके श्रीदर्शन ने प्रसन्नहोकर कहा कि मुझे तुम्हारे वचन स्वीकार हैं क्योंकि पहलेही से मेरी यह इच्छाथी परन्तु किसी योग्य स्थानमें जाकर मैं इसके साथ अपना विधिपूर्वक विवाहकरूंगा इसप्रकार वार्त्तालापकरके वह दोनों रात्रिको वही व्यतीतकरके प्रातःकाल पद्मिष्ठासमेत वहांसेचलकर क्रमसे मालवदेशके स्वामी राजा श्रीसेनके नगरमें पहुंचकर एक वृद्धास्त्रीके घरमें जाकर टिके २५५ वहां प्रसंगसे उन दोनोंने अपना वृत्तान्त कहकर उस वृद्धस्त्रीको उदासीनसा देखकर उससे पूछा कि तुम उदासीनसी क्यों होरहीहो यह सुनके उसने कहा कि मैं राजाके एक सेवक सत्यव्रतनाम ब्राह्मणकी स्त्रीहूं मेरे पतिके मरजानेपर उसके मासिकका चतुर्थांश यह दयालुराजा मुझे देताहै आज कल मेरे अभाग्यसे राजाको राजयक्ष्मा रोग ऐसा होगयाहै जो वैद्योंसे असाध्यहै बड़े २ मंत्र और औषधियां व्यर्थहोगई हैं एक मंत्रवादीने यह प्रतिज्ञाकी है कि जो कोई वीरसहायक मुझे मिले तो मैं वेताल सिद्धकरके इसरोग को दूरकरूंगा उसके इसप्रकार कहनेपर राजाने जब कोई वीर न पाया तो अपने मंत्रियोंसे कहा कि जो मैंने ज्वारियोंकेलिये स्थान बनवायाहै उसमें देखतेरहो कि शायद कोई वीर ज्वारी आजाय क्योंकि ज्वारीलोग निर्भय और निरपेक्षहोते हैं राजाकी यह आज्ञापाकर मंत्रियोंने उस स्थानके स्वामीसे यह बात कहदीनी इससे वहांका स्वामी प्रतिदिन नवीन आयेहुए ज्वारियोंमेंसे वीरपुरुषको ढूंढता रहताहै तुम दोनों वीरज्वारीहो जो तुममेंसे कोई इसकार्य्यको करसके तो मुझसे कहो मैं तुमको उसी ज्वारियों के स्थान में लेचलूंगी इसमें मेरा बड़ा उपकारहोगा और तुम्हाराभी राजाके यहां बड़ा सत्कारहोगा यह सुनकर श्रीदर्शनने कहा कि मैं इसकार्य्यको करसक्ताहूं मुझे तुम वहां लेचलो श्रीदर्शन के यहवचन सुनके वहवृद्धामुखरक तथा पद्मिष्ठा समेत श्रीदर्शनको वहां ज्वारियों के स्थानके अधिकारीके पास ले जाकर बोली कि यहज्वारी ब्राह्मण राजाके निमित्त प्रयोगकरनेवाले तांत्रिककी सहायताकरनेको उद्यत हैं उसके यहवचन सुनके वह अधिकारीने श्रीदर्शनको राजाके पास लेजाकर राजा से कहा कि हेमहाराज यहवीर ब्राह्मण उसमांत्रिककी सहायता करनेको उद्यत है उसके यहवचन सुनके और श्रीदर्शन को देखकर राजाने श्रीदर्शन से कहा कि हेवीर तुम्हारे यत्नसे मेरा रोग अवश्य नष्टहोजायगा क्योंकि तुम्हारे दर्शनसेही मेरे शरीरकी पीड़ा कमहोगई और मेरे चित्तमें अत्यन्त प्रसन्नताहोगई है इससे तुम अवश्य सहायताकरो यहसुनकर श्रीदर्शनने कहा कि यह कौन बड़ीवातहै आप जो कहिये सो मैं करूं

यह उसके वचन सुनके राजाने उसमांत्रिकको बुलाके कहा कि यहवीर तुम्हारा सहायक है अब जो तुम करनाचाहतेथे सो करो राजाके यहवचन सुनके उसमांत्रिकने श्रीदर्शनसे कहा कि जो तुम वेताल के बुलानेमें सहायता करसक्तेहो तो आज कृष्णचतुर्दशीकोही रात्रिके समय श्मशानमे मेरे पासआओ यहकहके वह मांत्रिक चलागया और श्रीदर्शनभी राजासे आज्ञा लेकर ज्वारियों के स्थान में मुखरक तथा पद्मिष्ठाके पासआया और उनके साथ भोजन करके रात्रिके समय खड्ग लेकर अकेलाही अनेक भूत प्रेतोंसे व्याप्त भयंकर अंधियारे श्मशानमें गया वहां श्मशानके वीचमें सम्पूर्ण शरीरमे भस्मलगाये हुए वालोंका यज्ञोपवीत पहरेहुए प्रेतोंके वस्त्रकी पगड़ी बांधेहुए और नीलेवस्त्र धारणकिये उसमांत्रिक को वैठादेखकर उसके पास जाके श्रीदर्शनने उससे कहा कि कहो अब मैं क्या तुम्हारी सहायताकरूं उसके यहवचन सुनके मांत्रिकने प्रसन्नहोकर कहा कि जाओ यहांसे पश्चिम दिशामें आधकोसपर एक सीसों का वृक्षहै उसकी जड़पर एकमुर्दा रक्खाहुआहै उसे तुम ज्योंका त्यों लेआओ उसके यहवचन सुनके श्रीदर्शनने वहां जाकर यहदेखके कि उसमुर्देको कोई अन्यपुरुष उठाये लिये जाता है दौड़कर उससे छीननाचाहा इतनेमें उसमुर्देमे वेतालने प्रवेशकरके महाभयानक शब्दकिया उसशब्दको सुन-कर वहमुर्दा लेजानेवाला दूसरा पुरुष भयभीतहोके मरगया और श्रीदर्शन उसे लेके चला इतनेमे वह जो पुरुष मरगयाथा वह वेतालके आवेशसे उठकर श्रीदर्शनसे वोला कि ठहरो मेरे मित्रको कहां लिये जातेहो यह सुनके उसमें भूतका आवेश जानकर श्री दर्शनने कहा कि यहतुम्हारा मित्रहै इसमें क्या प्रमाणहै यह तो मेराही मित्र है यहसुनके उसने कहा कि जिसे तुम लियेजातेहो इसीका कहना यहां प्रमाण होसक्ता है जिसे यह अपना मित्र कहे वही मित्रहै यहसुनकर श्रीदर्शनके कन्धेपर जो मृतकथा उसमें प्रवेशकरके वेतालने कहा कि मुझे क्षुधालगीहै जो कोई मुझे भोजन लाकरदे वही मेरा मित्र है और वही मुझे जहां चाहे वहां लेजाय यहसुनकर उसदूसरे वेतालने कहा कि मेरे पास भोजन नहीं है श्रीदर्शनके पासहोय तो देवे यहसुनकर श्रीदर्शन ने कहा कि मैं भोजनदूंगा यहकहके जैसेही उसने उसवेताल युक्त मुर्देको मारनाचाहा वैसेही वह अन्तर्द्धान होगया उसे अन्तर्द्धान हुआ देखके श्री द-र्शनके पास जो मुर्दाथा उसमें वैठेहुए वेतालने कहा कि तुमने मुझे भोजन देने कहाथा सो दो उसके यहवचन सुनके श्री दर्शनने और कहीं मांस न देखकर अपनाही मांस काटकर उसे दिया इसकारण प्रसन्नहोके वह वेताल बोला कि हे महासत्त्व तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्नहूं तुमने जो मांस काटकर मुझे दिया है वहतुम्हारे शरीरका घाव अभी भरजायगा अब तुम मुझे लेचलो यहमांत्रिक जो कार्य्य सिद्ध करना चाहताहै सो तुमहीको सिद्धहोगा क्योंकि उसमें कुछ वीरता नहींहै इससे वह नष्टहोजायगा उसके इस वचनको सुनके श्रीदर्शनने उसे लेजाकर उसमान्त्रिक के पास धरदिया उसे देखके वह मांत्रिक वहुत प्रसन्नहोके मनुष्योंकी हड्डियोंके चूरेसे लियेहुए चौकेमें उसे रखकर चरवीका दीपक वालके रक्तपुष्पोंसे उसका पूजनकरके उसकी छातीपर वैठके उसके मुखमें हवनकरनेलगा क्षणभरमेंही उसके मुखसे ऐसी ज्वाला निकलनेलगी कि जिसे देखतेही वह मांत्रिक भयभीतहोके भागा यह देखके उसवेतालने उसके

पीछे दौड़कर उसे समूचाही निगललिया यहदशा देखके श्रीदर्शन खड्ग ले के उसके पीछे दौड़ा इससे वह वेताल अत्यन्त प्रसन्नहोकर बोला कि हे श्रीदर्शन तुम्हारे इसधैर्य्यको देखके मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हूं इससे तुम मेरे मुखसे उत्पन्नहुए इनसरसों के दानोंकोलो इनको शिरमें बांधने से और हाथ मे लेने से राजा शीघ्रही नीरोग होजायगा और तुम थोड़ेही काल में इससम्पूर्ण पृथ्वी के राजा होजाओगे उस वेतालके यहवचन सुनकर श्रीदर्शन ने कहा कि इसमांत्रिकके बिना मैं राजा के पास कैसे जाऊं क्योंकि राजा कदाचित् यहीशोचेगा कि इसीने लोभ से उसको मारडाला है श्रीदर्शन के यहवचन सुनके वेताल ने कहा कि जो राजा तुमपर सन्देह करे तो उसे यहां लाकर इसमुर्दे का जिसमें कि मैं हूं पेटचीरकर दिखाना इसमें मांत्रिकका पूराशरीर मिलैगा यह कहके और सरसोंदेके वह वेताल उस मुर्दे मेंसे निकलगया इससे वह मुर्दा पृथ्वीपर गिरपड़ा और श्रीदर्शन उन सरसों के दानों को लेकर ज्वारियोंके स्थान में आकर पद्मिष्ठा तथा मुखरकके पास रात्रिभररहा प्रातःकाल राजा के पासजाके उसने सब वृत्तान्तकहके और मंत्रियोंको श्मशानमें लेजाके उस मुर्देका पेटचीरकर उस मांत्रिकका शरीर दिखाके फिर राजा के पासआकर वह सरसों उसके शिरमें बँधवाये और कुछ उसके हाथमेंभी देदिये वह सरसों बाँधतेही राजाका सब दुःख दूरहोगया इससे प्रसन्नहोकर राजा श्रीसेन ने अनपत्यहोने के कारण श्रीदर्शनकोही अपना पुत्र मानके युवराज पदवीदेदी ठीकहै (उप्तंसुकृतबीजंहि सुक्षेत्रेषुमहाफलम्) अच्छे क्षेत्र में बोयाहुआ पुण्यरूपीबीज महा फलदायकहोताहै इसप्रकार श्रीदर्शन युवराजपदवी को पाकर पद्मिष्ठा के साथ अपना विवाहकरके मुखरक तथा पद्मिष्ठासमेत राज्य के सुखोंका अनुभवकरने लगा ३२४ एकसमय उपेन्द्रशक्ति नाम किसी वैश्य ने समुद्रके तटपर एक श्रीगणाधिपतिकी रत्नमयी प्रतिमापाकर युवराज श्रीदर्शन को लाकरदी युवराज ने उसे अमूल्य देखकर बहुतसा धन खर्चकरके उसकी प्रतिष्ठाकरवाई और हजारगांव नित्य नैवेद्यादि भोजनादिके खर्चके निमित्त अर्पण किये और प्रतिष्ठाकेदिन रात्रिमें बड़ाभारी उत्सवकिया इससे प्रसन्नहुए श्रीगणेशजी ने अपने गणो से कहा कि मेरी कृपासे यह श्रीदर्शन चक्रवर्त्ती राजाहोगा इससे समुद्रकेपार हंसद्वीप में अनंगोदय नाम जो राजाहै उसकी अनंगमंजरी नाम कन्या अद्वितीय रूपवाली है वह मेरी परमभक्त है सदैव मेरा पूजनकरके मुझ से यह प्रार्थना कियाकरती है कि हे भगवन् मुझे सम्पूर्ण पृथ्वीकास्वामी पतिदीजिये इससे श्रीदर्शनके साथ उसका संयोग मैं कराऊंगा जिससे इन दोनों को मेरी भक्तिका फल मिलजाय इससे तुम लोग युक्तिपूर्वक श्रीदर्शन को उस कन्या के पासलेजाके परस्पर दर्शनकराके शीघ्रही लौटालाओ फिर धीरे धीरे क्रमसे उन दोनोका संयोगहोगा आजही नही होसक्ताहै क्योंकि भवितव्यताही ऐसी है और इस प्रकार से मेरी मूर्त्तिके लानेवाले उपेन्द्रशक्ति वैश्यका भी कुछ उपकारहोजायगा श्रीगणेशजी की यह आज्ञापाकर गणों ने रात्रिकेसमय अपनी सिद्धि से श्रीदर्शन को हंसद्वीप में लेजाकर अनंगमंजरीके शयन स्थान में सुलादिया वहां क्षणभरमेंही श्रीदर्शन ने जगकर रत्नों के दीपकों से प्रकाशित अमूल्य मणिमय चँदोवोंसे युक्त निर्मल श्वेत रेशमीवस्त्रोंसे बिछेहुए पलँगपर सोतीहुई अनंगमंजरी को शर-

त्काल के मेघों में नेत्रों के आनन्ददेनेवाली चन्द्रमाकी मूर्त्तिके समान देखा और हर्ष विस्मय तथा भ्रम से युक्तहोकर शोचा कि कहाँ मैं सोयाथा और कहाँ आकरजगाहूं यह क्या वातहै और यह स्त्री कौनहै निस्सन्देह यह स्वप्नहै परन्तु ऐसा स्वप्न भी अच्छा है लाओ इसे जगाकरदेखूं कि यह कौनहै यह शोच कर उसने उसका कन्धापकड़कर धीरे से जगाया उसके हाथ के स्पर्श से जगकर और उसे देखकर अनंगमंजरी ने शोचा कि यह दिव्यरूपधारी कौन पुरुषहै मैं जानतीहूं कि यह कोई देवता है नहीं तो ऐसे वन्द स्थान मे कैसे आता यह शोचके उसने श्रीदर्शन से पूछा कि तुम कौनहो और यहां कैसे आयेहो यह सुनकर श्रीदर्शन ने अपना सब वृत्तान्त कहके उससे पूछा कि तुम कौनहो और इस देशका क्या नाम है यह सुनके अनंगमंजरी ने अपना देश नाम तथा वंश सब वतलाया इसप्रकार परस्पर अपना २ वृत्तान्त कहके उन दोनों ने निश्चयके लिये अपने २ आभूपण वदल लिये और गान्धर्व्व विवाह करनाचाहा यह जानकर गणो ने उन दोनों को निद्राके वशीभूतकरके श्रीदर्शन को उसीके शयनस्थानमें लाकर सुलादिया वहां श्रीदर्शनने क्षणमात्रमेंही जगके अपनास्थान देखके और अपने शरीरमें स्त्रीके आभूपण पाकर शोचा कि अरे यह क्यावातहै कहां तो हंसद्वीपके स्वामी की कन्या अनंगमंजरी कहां वह दिव्य स्थान कहां मेरा वहां जाना और कहां फिर यहीं लौटआना यह स्वप्न तोथा नही क्योंकि उसके आभूपण मेरे शरीर मे वर्त्तमानहै यह कोई ईश्वरीय वातहै इत्यादि चिन्तवन करतेहुये उसको पद्मिष्ठाने जगकर उसे स्त्रियोंके आभूपण पहरेहुये देखकर पूछा कि यह क्या वातहै उसने सब वृत्तान्त कहदिया इस वृत्तान्तको सुनके पद्मिष्ठाने उसे वहुत समझाया इससे उसने किसी प्रकार वह रात्रि व्यतीत करके प्रातःकाल राजा श्रीसेनसे जाकर सब वृत्तान्त कहा राजाने भी उसके स्नेहसे यह ढंढोरा पिटवाया कि जो कोई हंसद्वीपका मार्ग जानताहो वह वतावे उसे मैं वहुतसा धनदूंगा परन्तु हंसद्वीपका जाननेवाला कोई भी न निकला तव श्रीदर्शन अनंगमंजरीकी उत्कंठासे ऐसा कामसे पीड़ित हुआ कि उससे न दिनको भोजन कियागया न रात्रिको निद्रा आई न अन्य विपयोंमें उसका चित्तलगा, इस बीचमें राजपुत्री अनंगमंजरी प्रातःकाल जगकर रात्रिके वृत्तान्तका स्मरण करके अपने शरीरमे पुरुपके आभूपण देखके शोचने लगी कि स्वप्नकी भ्रान्तिके दूरकरनेवाले और दुर्लभ जनमें प्रेमके वढ़ानेवाले यह आभूपण मुझे अत्यन्त क्लेश देरहे हैं यह क्या वातथी कुछ मेरे विचारमें नहीं आती इतनेहीमें राजा अनंगदेव अकस्मात् उसके मंदिरमें गया और उसे पुरुषों के आभूपण पहरे देखकर वड़ा आश्चर्य्यितहुआ और अनंगमंजरीने भी अपने पिताको देखकर लज्जासे नम्रहोके वस्त्रसे अपने सब अंगढकलिये तव राजाने उसे अपनी गोदमें वैठालकर प्रेमसे पूछा कि हे पुत्री तुमने पुरुपकासा वेप क्यों वनायाहै और आज तुम्हें यह लज्जा वहुत अधिक क्योंहै मुझसे सव ठीक २ कहदो क्योंकि मेरे प्राण तुम्हारेही स्नेहमें वंधेहुये हैं अपने पिताके यह वचन सुनके अनंगमंजरीने धीरे २ अपना सव वृत्तान्त कहदिया उस वृत्तान्तको जानकर राजा अनंगदेव उस स्थान में मनुष्यके आनेकी गति न देखकर इन्द्रजाल सा मानके अपनेही देशके रहनेवाले एक ब्रह्मसोमनाम

सिद्धयोगीके पासजाके सब वृत्तान्त कहके पूछा कि हे महाराज यह क्याबातहै राजाके वचन सुनकर ब्रह्मसोमने ध्यान से सब जानके कहा कि श्रीगणेशजी महाराज तुम्हारी पुत्रीपर और मालवदेशके राजा श्रीदर्शनपर प्रसन्नहैं उन्हींकी कृपासे श्रीदर्शन चक्रवर्त्ती होगा और उन्हींकी आज्ञासे उनकेगण श्रीदर्शनको तुम्हारी कन्याके पास लायेथे वह तुम्हारी कन्याके योग्य वरहै, योगीके यह वचन सुनके राजाने कहा कि हे भगवन् कहां मालवदेश और कहां हंसद्वीप वहांका मार्गभी किसी को नहीं मालूमहोगा और यह कार्य्य बहुत काल व्यतीत करके करनेके योग्य नहीं है इस विषयमें आपही हमारे गतिहो राजाके यह नम्र वचन सुनके वह कृपालु योगी यह कहके कि मैं तुम्हारे कार्य्यको सिद्धकरूंगा वहांसे अन्तर्द्धानहोके मालवदेशमें आया और श्रीदर्शनके बनवायेहुये गणेशमन्दिरमें जाकर गणेशजीको प्रणामकरके उनकी यह स्तुति करनेलगा कि हे सुमेरुपर्व्वतके समान कान्तिवाले गणेशजी आपको नमस्कारहै नक्षत्रोंकी मालाओंसे आभूषित शिरवाले आपके बड़े शरीरको प्रणामहै मंगलमय आपकी मूर्त्तिको नमस्कारहै नृत्यके उत्सवमें उठीहुई आकाशतक पहुंचनेवाली जो आपकी सूंड़ त्रैलोक्यरूपी मन्दिरके धारण करने वाले स्तंभके समान शोभित होती है उसे प्रणामहै हे विघ्नान्तक सम्पूर्ण सिद्धियों के निधिरूप बड़े उदरवाले सर्पोंके आभूषणवाले आपके शरीरको नमस्कार है इस प्रकार से स्तुति करतेहुये उस योगीके पास गणेशजीकी प्रतिमा लानेवाले उपेन्द्रशक्ति वैश्यका महेन्द्रशक्ति नाम बहुत कालका उन्मत्तपुत्र आया और उस योगीके पकड़नेको दौड़ा उसे आया देखकर योगीने मंत्रपढ़कर एक ऐसा थप्पड़ उसके मारा कि जिससे उसका सब उन्माद नष्टहोगया और वह स्वस्थ होके नग्नहोनेके कारण लज्जितहोके हाथोंसे निज गुह्यअंगोंको ढकके अपने घरकोचला ३८३ उस समय उसका पिता उपेन्द्र शक्ति यह समाचार सुनके उसे अपने घर लिवालेगया वहां उसे स्नान कराके तथा वस्त्र पहराके उसे साथलेकर ब्रह्मसोममहर्षि के पासगया और प्रणाम करके बहुतसा धन उन्हें देनेलगा परन्तु उन्होंने नहींस्वीकारकिया इतनेमें इसी वृत्तान्तकोसुनकर राजा श्रीसेनभी श्रीदर्शनको साथलेके तपस्वीके समीप गया और प्रणाम करके तथा उनकी स्तुति करके बोला कि हे भगवन् आपके आगमन से इस वैश्यके पुत्रका बहुत कालका प्राचीन रोग नष्ट होगया इससे अब मेरे ऊपर भी ऐसी कृपा कीजिये जिससे इस युवराज श्रीदर्शनका भी दुःख दूर होजाय यह सुनके वह योगी हँसकर बोला कि हेराजा इस चोरपर मैं क्या दयाकरूं जो हंसद्वीपसे राजपुत्री अनंगमंजरीके आभूषण तथा वस्त्र चुरालाया तथापि आपका कहना मैं अवश्य करूंगा यह कहके वह योगी श्रीदर्शन का हाथ पकड़के उसे लेकर अन्तर्द्धान होगया और हंसद्वीप में राजा अनंगोदयके निकट उसे लेआया उसे देखकर राजा अनंगोदयने योगीको प्रणाम करके शुभलग्न दिखाकर उसके साथ अनंगमंजरी का विवाह करदिया और उसी योगी के द्वारा उसे अनंगमंजरी समेत मालवदेश में भिजवा दिया अनंगमंजरी समेत श्रीदर्शनको आया देखके राजा श्रीसेनने प्रसन्नतापूर्व्वक बड़ा उत्सव किया और श्रीदर्शन अपनी दोनों स्त्रियों समेत सुखपूर्व्वक रहनेलगा कुछ कालके उपरान्त राजा श्रीसेनके पर

लोक पधारनेपर उसके राज्यकोपाके श्रीदर्शन पृथ्वी के सब राजाओंको जीतके सम्पूर्ण पृथ्वीका चक्रवर्ती राजाहोगया तदनन्तर उसकी दोनों रानियों के दो पुत्रहुए उनमें से एकका नाम पद्मसेन और दूसरेका नाम अनंगसेन उसनेरक्खा उन दोनों बालकों के क्रमसे कुछ बढनेपर एक समय राजा श्रीदर्शन ने किसी ब्राह्मणका बाहर रोदनसुनके उसे अपने पास बुलवाके उससे रोदनका कारणपूछा उस ब्राह्मणने कहा कि जो दीप्तशिख अग्नि मेरेपासथी उसे भी ज्योति तथा धूमलेखा सहित कालमेघने नष्टकरदिया यहकहके वह अन्तर्द्धानहोगया उसे अन्तर्द्धानहुआ देखकर राजा श्रीदर्शन उसके अभिप्रायको न समझकर बहुत चकितहुआ और अपनी रानियों से बोला कि इसने क्याकहाथा और यह कहांचलागया उसके यह वचनसुनके वह दोनों रानियां बहुत रोते २ मरगईं यह देखके राजा श्रीदर्शन विलापकरके पृथ्वीपर मूर्च्छितहोकर गिरपड़ा तब सेवकलोग उसे तो दूसरे स्थानमें उठाके लेगये और मुखरकने उन दोनो रानियोंका दाहकरदिया तदनन्तर मूर्च्छा से जगकर राजा श्रीदर्शन स्नेहसे उन दोनो रानियोका वर्ष दिनतक और्ध्वदैहिक कर्मकरके अपने पुत्रोंको आधा २ राज्यदेके तपकरने की इच्छासे वनको चलागया वहीं फल मूल खाके कुछ काल रहते २ एकदिन घूमते २ किसी वर्गदके वृक्ष के निकटगया उस वृक्षमें से अकस्मात् दो स्त्रियां हाथमें फलमूल लियेहुए निकलकर उसके पास आकर बोलीं कि हे राजा हमारे साथ चलकर यह फलमूल स्वीकारकरो यह सुनके श्रीदर्शन ने पूछा कि तुम दोनों कौनहो तब उन्होंने कहा कि आप कृपाकरके हमारे स्थानपर चलिये वहीं हम अपना सब वृत्तान्त आपसे कहेंगी उनके यह वचन सुनके श्रीदर्शनने उनके साथ उस वृक्षके खोखले में होकर जाकर एक दिव्य सुवर्णमय पुरदेखा वहां उन दोनों स्त्रियों ने उसे दिव्य फलमूल खिलाकर कहा कि हे राजा अब हमारा सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनिये कि प्रतिष्ठानदेशमें कमलगर्भनाम एक धर्मात्मा ब्राह्मण रहताथा उसके पथ्या और वरानाम दो स्त्रियांथीं उन तीनों में परस्पर ऐसा स्नेहथा कि वृद्धावस्था मे उन्होंने अग्निभगवान्से यह वरमांगकर कि भविष्यजन्मभे भी हमारा सबका इसीप्रकारका समागम होय अग्निमे जलके अपना २ शरीर त्यागदिया इससे वह कमलगर्भ यक्षयोनिमें प्रदीप्ताक्षनाम यक्ष का पुत्र और अट्टहास नाम यक्षका छोटाभाई दीप्तशिखहुआ और उसकी दोनों स्त्रियां धूमकेतु नाम यक्षराजकी ज्योतिर्लेखा और धूमलेखानाम कन्याहुईं समयपाके वह दोनो कन्या युवतीहोके योग्य पति पानेके लिये वनमें जाकर तपकरनेलगीं उस तपसे प्रसन्नहोके श्री शिवजी ने प्रत्यक्षहोकर उनसे कहा कि पूर्व्वजन्मभे तुमने जिसको सम्पूर्ण जन्मों में पतिपाने के लिये अग्निमें अपना शरीर भस्म कियाथा वह अट्टहासका छोटाभाई दीप्तशिख नलकूवरके शापसे फिर मृत्युलोकमें आके श्रीदर्शननाम मे उत्पन्नहुआहै इससे तुम दोनों भी मृत्युलोकमें जाके उसीकी स्त्री हो जब उसका शाप क्षीणहोगा तब फिर तुम तीनों यक्षत्वभावको प्राप्तहोजाओगे श्री शिवजी के इस वचनसे वह दोनों यक्ष कन्या पृथ्वी में पद्मिष्ठा और अनंगमंजरी नामसे श्रीदर्शनकी स्त्रीहुईं बहुतकालमे ब्राह्मणरूपी अट्टहासने आकर युक्तिपूर्व्वक व्यर्थ वचनकहके उन दोनों स्त्रियोंको पूर्व्वजन्मका स्मरणकरवादिया इससे वह दोनों अ-

पने मनुष्य शरीरको त्यागकर यक्षिणीहोगई हे राजा वह दोनों हमहीं हैं और आपही दीप्तशिख नाम यक्षहो उनके यह वचन सुनकर श्रीदर्शन अपने पूर्वजन्मका स्मरणकरके दीप्तशिखनाम यक्षहोगया और अपनी दोनों यक्षिणी स्त्रियोंको पाकर बहुत प्रसन्नहुआ हे विचित्रकथ वहयक्ष मैंही हूं और यही दोनों मेरी प्रियाहैं इसप्रकारसे देवयोनिमें उत्पन्नहुए हमलोगोंको भी ऐसे २ दुःख प्राप्तहोते हैं फिर मनुष्योंकी क्या गणनाहै हे पुत्र थोड़ेही कालमें मृगांकदत्तसे तुम्हारा संयोगहोगा विषादमतकरो मैं तुम्हारा यहां अतिथि सत्कारकरूंगा क्योंकि मेरा पृथ्वीपरका यहीं स्थानहै और तुम्हारा मनोरथ सिद्ध करके फिर अपने मुख्य स्थान कैलाशको चलाजाऊंगा यह अपनी कथाकहके उस यक्षने कुछ दिन तक अपने पास मुझे रक्खा और आज रात्रिमें आपलोगोंको यहां आया जानके वह मुझ सोतेहुए हीको यहां छोड़गया उसीकी कृपासे आपलोगों के दर्शन मुझे हुएहैं यही आपके वियोगमें मेरा वृत्तान्तहै विचित्रकथसे इस सब कथाको सुनकर मृगांकदत्त अपने सब मन्त्रियों समेत बहुत प्रसन्नहुआ और उस रात्रिको वहीं व्यतीतकरके प्रातःकाल अपने अन्य मन्त्रियोंको ढूंढताहुआ शशांकवतीकी प्राप्तिके निमित्त मन्त्रियों समेत उज्जयिनीपुरीको चला ४४१ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशाङ्कवतीलम्बके षष्ठस्तरंगः ६ ॥

इसके उपरान्त श्रुतधि तथा गुणाकर आदि चारमंत्रियों समेत विन्ध्याचलके वनों में भ्रमण करता हुआ मृगांकदत्त अनेक प्रकारके सफलवृक्षोंसे युक्त एक तड़ागके निकट पहुँचा उस तड़ागमें मंत्रियों समेत स्नान करके और सुन्दर २ फलखाके उसने एक लताओंकी कुंजमें कुछ वार्त्तालापसी सुनी और जैसे ही वहां जाकर देखा तो एक बड़ाभारी हाथी किसी अन्धे पथिकको अपनी सूंड़से जल छिड़क के और कानों से उसपर पंखाकरके सावधान कररहा था और बारम्बार मनुष्यों कीसी स्पष्टवाणी से पूछता था कि क्या तुम कुछ सावधानहुए यह देखकर मृगांकदत्त ने अपने अन्य मंत्रियों को भी बुलाकर कहा कि देखो कहां तो वनकाहाथी और कहां मनुष्योंके समान आचार निस्सन्देह किसी कारणसे यह कोई अन्यजीव इस शरीरमें है और यह पुरुष मेरे मंत्री प्रचण्डशक्ति के समानहै किन्तु वह अन्धा न था और यह अन्धाहै अच्छा थोड़ीदेर यहां ठहरकर देखना चाहिये कि यह दोनों क्याकरतेहैं यह कहकर मृगांकदत्त वहीं छिपाहुआ खड़ारहा इतने में सावधानहुए उस अन्धपुरुषसे हाथी ने पूछा कि तुमकौनहो और अन्धेहोकर किसप्रकार यहां आये हो यह सुनके उस अन्धपुरुषने कहा कि अयोध्या नाम पुरीमें अमरदत्त नाम राजाहै उसके मृगांकदत्त नाम बड़ा गुणवान् पुत्रहै उसीका प्रचण्ड शक्तिनाम मैं मन्त्री हूं मृगांकदत्तको किसी कारण से दशमंत्रियों समेत उसके पिताने अपने देशसे निकाल दिया फिर वनमें सर्पके शापसे हम सबका परस्पर वियोग होगया और मैं अन्धाहोकर भ्रमण करते २ यथा कथंचित् मिलेहुए फलमूलखाके यहां आया यद्यपि मैं चाहताथा कि कहीं गढ़ेमें गिरकर या क्षुधासे मेरे प्राणनिकलजांय परन्तु मुझ अभागीका यह मनोरथभी ब्रह्माने पूर्ण नहीं किया आजमैं जानताहूं कि आपकी कृपासे जैसे मेराश्रम दूरहुआ है वैसेही यह अन्धता भी दूर होजायगी मुझेप्राण

कोई देवता मालूम होतेहैं उसके इसप्रकार कहनेपर मृगांकदत्तने अपने मंत्रियोंसे कहा कि यह प्रचण्ड शक्तिनाम मेरा मंत्रीही है इस समय इससे बोलना नहीं चाहिये क्योंकि कदाचित् यह हाथी इसकी अन्धताभी दूरकरदे और हमलोगोकोदेखकर ऐसा न होय कि यहहाथी कहीं चलाजाय इससे यहीं खड़े २ देखना चाहिये कि क्या होताहै यह कहके मृगांकदत्त चुपचाप वहीं खड़ारहा इतने में प्रचण्ड शक्ति ने हाथीसे पूछा कि आपकौनहैं और यह हाथीका स्वरूप आपका कैसेहुआ और यह मनुष्योंकीसी वाणी आपकी कैसे है यह सुनके उस हाथीने बड़ी श्वासलेके कहा कि सुनो मैं अपना सबवृत्तान्त कहताहूं कि एक लव्यानाम नगरी में श्रुतधरनाम राजा के दो रानियों में शीलधर और सत्यधरनाम दो पुत्रथे कालके प्रभावसे राजा श्रुतधरके मरजानेपर सत्यधरने अपने बड़े भाई शीलधरको निकालकर आपही सब राज्य लेलिया इससे शीलधरने वनमें जाके घोर तपकरके श्री शिवजी को प्रसन्न किया और प्रसन्नहुए साक्षात् आयेहुए श्री शिवजीसे यह वरमागा कि हे स्वामी मैं गन्धर्व होजाऊं जिससे उस अपने दुष्टभाईको मैं शीघ्रही मारडालूं यह सुनकर श्री शिवजीने कहा कि ऐसाही होगा परन्तु वह तुम्हारा शत्रु इससमय आपही मरगयाहै अब वह राढानगरीमें उग्रभटनाम राजाका समरभटनाम पुत्र होगा और तुम उसके भीमभटनाम सौतेले बड़ेभाई होकर उसेमारके राज्यकरोगे तुमने क्रोध युक्त होकर यह तपकियाहै इससे तुम किसी मुनिके शापसे अपने राज्यसे च्युतहोकर वनके हाथी होगे परन्तु तुम्हें अपने पूर्वजन्मका स्मरण बनारहैगा और तुम्हारी वाणी मनुष्यों कीसी रहैगी जब तुम किसी थके हुये अतिथिको सावधान करके उससे अपना वृत्तान्त कहोगे तब हाथीपनेसे छूटकर गन्धर्व होजाओगे और उस अतिथि का भी उपकार होगा यहकहके श्री शिवजी के अन्तर्द्धान होजाने पर शीलधरने गंगाजी में डूबकर अपना शरीर त्यागकरदिया इस बीच में राढ़ापुरी के उग्रभटनाम राजा के अपने तुल्य मनोरमानाम रानीके साथ सुख पूर्वक रहताथा एकसमय देशान्तर से लासकनाम एक नर्त्तक उसके पास आया उसने राजाको अपना नृत्य दिखाकर अपनी लास्यवती नाम कन्या का भी नृत्य दिखाया उस कन्याको देखतेही राजाने कामके वशीभूतहोकर उसके पिताको बहुतसा धनदेके उसके साथ अपना विवाह करलिया इसके उपरान्त एकसमय राजा उग्रभटने अपने यज्ञस्वामीनाम पुरोहित से कहा कि मेरेपुत्र नहीं है इससे तुम मेरे निमित्त पुत्रेष्टीनाम यज्ञकरो राजाकी यह आज्ञापाके पुरोहित ने विद्वान् ब्राह्मणों समेत पुत्रेष्टी करके मंत्रसे पवित्रचरुका प्रथम भाग मनोरमा रानीकोदिया और शेष भाग उस दूसरी लास्यवती रानीकोदिया इससे उनदोनों रानियों के उदरमें वह शीलधर और सत्यधर दोनोंभाई आकर प्राप्तहुए समयपाकर मनोरमा रानीमें शीलधर पुत्रहुआ उसके उत्पन्नहोतेही यह आकाश वाणीहुई कि यह भीमभटनाम बड़ा यशस्वी राजाहोगा तदनन्तर दूसरे दिन लास्यवती रानी में सत्यधर पुत्र उत्पन्नहुआ उसकानाम राजाने समरभट रक्खा समय पाकर जब वहदोनों बालक सयानेहुए तो समरभटकी अपेक्षा भीमभट अधिक गुणवान् तथा बलवान् हुआ इसीसे उनदोनोंका परस्पर बड़ा द्वेषहोगया एकसमय बाहुयुद्धके खेलमें समरभटने हठपूर्व्वक भीमभटके गले में बड़े पराक्रम

से प्रहारकिया इससे भीमभटने क्रोधितहोके समरभटको उठाके पृथ्वीपर शीघ्रतासे पटकदिया इससे उस के ऐसी चोटलगी कि उसके मुखसे रुधिर गिरनेलगा तो उसके सेवक उसकी लास्यवती नाम माता के पास उसे लेगये उसे देखकर और उसके वृत्तान्त को जानके लास्यवती उसके शिरमें अपना शिर लगाके बहुत रोनेलगी इतने में राजाने वहां आकर उसे रोता देखके पूछा कि तुम्हारे रोनेका क्या कारण है उसने कहा कि देखिये आज भीमभटने खेलमें समरभटकी यह दशाकरदी है यह सदैव इसकी दुर्द्दशाकिया करताहै परन्तु मै आपसे नही कहतीहूं और मुझे इसके उपद्रवों से मालूमहोताहै कि ऐसे दुष्ट पुत्रसे आपका भी क्या कल्याणहोगा अथवा आप अपनेही चित्तसे विचारसक्ते हो मेरे कहने की क्या आवश्यकताहै उसके यह वचन सुनकर राजा उग्रभटने क्रोधकरके भीमभटको अपने राजमंदिर से निकलवादिया और उसे जो कुछ खर्च करने को धनमिला करताथा सो भी बन्दकरवाके समरभटकी रक्षाकेलिये सौ राजपुत्र रक्खे और समरभटको भांडागार का अधिकारी बनादिया तब रानी मनोरमा ने भीमभटको अपने पास बुलाकेकहा कि हे पुत्र तुम्हारे पिताने लास्यवती के कहने से तुमको घरसे निकलवादिया है इससे तुम पाटलिपुत्रमें अपने नानाके यहांजाओ मेरे कोई भाई नही है इससे वह अपना राज्य तुमकोदेदेंगे और जो तुम यहां रहोगे तो यहसमरभट तुम्हारा बैरी है तुमको मरवाडालेगा मातके यहवचन सुनकर भीमभटने कहा कि हे माता धैर्य्यधरो मुझको कौन मारसक्ताहै मैं क्षत्रीहोके नपुंसकों के समान अपना देशनही छोडूंगा यह सुनकर मनोरमाने कहा कि अच्छा तुम अपनी रक्षा के लिये मुझसे धनलेके बहुत से सहायक करलो यह सुनके भीमभटने फिर कहा कि हे अम्ब यहभी मुझे शोभा नहीदेता क्योंकि ऐसा करनेसे मैं अपने पिताकेसाथ बराबरी करने का अपराधीहूंगा, तुम कुछ सन्देह मतकरो तुम्हारे केवल आशीर्वादही से मेरा कल्याणहोगा इसप्रकार अपनी माताको समझाके वह राजमंदिर के बाहर चलागया इतने मे पुरवासियों ने यहवृत्तान्त सुनकर शोचा कि राजाने यह बड़ा अनुचित कार्य्य किया भीमभटके आगे समरभटको राज्य देना योग्य नहीहै इससमय भीमभट के गुणोंके कारण हमसब लोगोंको उसकी सहायता करनीचाहिये यह निश्चयकरके सम्पूर्ण पुरवासी उसे गुप्तधन देनेलगे जिससे वह अपने सेवकों समेत सुखपूर्व्वक रहनेलगा और समरभट युक्ति पूर्व्वक उसके मारनेकी इच्छाकरनेलगा और इसीनिमित्त उसने बहुतसा धनभी खर्च किया इतनेमें भीमभट और समरभट दोनोका मित्र शंखदत्तनाम युवाशूर तथा धनवान् एकब्राह्मण समरभटके पास आकर बोला कि तुमको अपने बड़ेभाई के साथ बैर नहीं करनाचाहिये यह बड़ा अधर्म्म है और तुम उसे मारभी न सकोगे क्योंकि वह तुमसे अधिक बलवान् और गुणवान्है इससे तुम केवल अयशमात्रही के भागी होगे उसके यहवचन सुनकर समरभटने उसके श्रेष्ठ वचनोंको स्वीकार न करके उसका बड़ा तिरस्कार किया ठीकहै (हितोपदेशोमूर्खस्यकोपायैवनशान्तये) मूर्खको हितका उपदेश करनेसे क्रोपही होताहै शान्ति नही होतीहै इससे शंखदत्तने कुपितहोकर इसदुष्टके जीतनेकी इच्छासे भीमभटके साथ जाकर परम मित्रता करली ७५ इसके उपरान्त देशान्तरसे आयाहुआ मणिदत्तनाम वैश्य चन्द्रमाके समान

श्वेत और शंख आदिके समान सुन्दर शब्दवाला एक अत्युत्तम घोड़ालाया उसघोड़ेको शंखदत्तके कहनेसे भीमभटने मोल ले लिया यहसमाचार पाकर समरभट उग्रवैश्यसे जाकर बोला कि दूना मोल लेकर वह घोड़ा मुझे देदे परन्तु वह वैश्य घोड़ा बेचचुकाथा इससे वहघोड़ा न देसका तब समरभट बलात्कारसे घोड़ा लेनेकेलिये अपने सहायकों समेत भीमभटके यहांगया और वहां उनदोनों भाइयों का परस्पर युद्धहोनेलगा युद्धमें भीमभटसे हारकर समरभट भागनेलगा उसको भागते देखके शंखदत्त ने उसके पीछेसे बाल पकड़कर जैसेही उसे मारनाचाहा वैसेही भीमभट ने उससे निषेधकरके कहा कि इसको जानेदो इसके मरनेसे पिता को बड़ा क्लेशहोगा उसके यह वचन सुनकर शंखदत्त ने उसे छोड़ दिया और वह अपने पिता के पास भागगया इसके क्षणभर पीछेही एक ब्राह्मण ने आकर एकान्त में भीमभट से कहा कि तुम्हारी माता मनोरमा यजुस्स्वामी पुरोहित और सुमतिमन्त्री ने कहा है कि हे पुत्र यह तो तुम जानतेहीहो कि राजा तुमपर कैसा रुष्टहै और इस समाचार को पाकर और भी रुष्ट क्या पूरा शत्रुही होजायगा इससे जो तुम अपने शरीर धर्म तथा यशकी रक्षा करना चाहतेहो और कुछ भविष्यका विचारकरसक्तेहो और हमलोगोंको अपना हितकारी जानतेहो तो सूर्य्यास्तहोने के पहलेही यहां से निकलकर अपनी ननसाल चलेजाओ यह उन लोगों ने कहा है और यह रत्नोंसे भरा हुआ डिब्बा रानी ने आप को दिया है उस सँदेसे को मानकर और उस डिब्बेको लेकर भीमभट संगमें शंखदत्तको लेकर घोड़ेपर चढके वहां से चला चलते २ एक बड़े घोर पतावरके वन में पहुँचा वहां घोड़ों के पैरके शब्दको सुनकर दो सिंहोंने अपने बच्चोसमेत आकर अपने नखोंसे घोड़ोंके पेटोंको फाड़डाला और उन दोनो वीरों ने खड्गकेप्रहारसे दोनों सिंहोंको मारडाला और जैसेही घोड़ोपर से दोनों उतरे वैसेही उन दोनों घोड़ोंकी आंतेंगिरपड़ीं और पृथ्वीमेंगिरकर मरगये यह देखके भीमभट ने बहुत दुखित होकर शंखदत्त से कहा कि हे मित्र भाइयोंके विरोधसे तो भागकर हम यहां आये अब बताओ इसविपरीत भाग्यसे भागकर कहांजांय जिसने यहां भी घोड़ोंको मारकर हमें अत्यन्त दुखदिया जिस घोड़े के निमित्त हमने अपना देश त्यागा था वह घोड़ा भी मरगया अब पैदल इसवनमें कैसेचलेंगे उसके यह वचन सुनके शंखदत्त ने कहा (नैतन्नवंजयतियत्पौरुषविधुरोविधिः निसर्गएवतस्यायं धैर्येणतुसजीयते वातेद्रेरिवकिंकुर्य्याद्धीरस्याकंपितस्यसः) यह बात कुछ नवीन नहीं है कि कुटिल भाग्य पुरुषार्थ को जीतलेताहै यह तो उसका स्वभावही है परन्तु धैर्य्य उसे जीतताहै जैसे पर्व्वतको वायु नहीं कंपा सक्ती है वैसेही नहीं कम्पायमान होनेवाले धीर पुरुषका भाग्य क्या करसक्ताहै इससे धैर्य्यरूपी घोड़ेपर चढकर चलोचलें शंखदत्तके यहवचन सुनके भीमभट उसकेसाथ चला और रात्रिभरमें उसवनको उल्लंघन करके प्रातःकाल चलते २ तपस्वियों की कुटियों से व्याप्त श्रीगंगाजीके तटपरपहुँचा वहां श्रीशिवजीके शिरमे रहनेके कारणमानों चन्द्रमा के अमृतसे युक्त गंगाजीके मधुर शीतलजलमें स्नानकरके उनदोनों ने विश्रामकिया और मार्गमें आयेहुए व्याधोंसे हिरणोंका मांस लेकर भूनकेखाया तदनन्तर गंगाजीके पारजानेको असमर्थ होकर वह शंखदत्त समेत गंगाजीके किनारे २ चला मार्गमें एकयुवा

ब्राह्मण किसी निर्जन स्थानमें बैठाहुआ अपना स्वाध्याय कर रहाथा यह देखकर भीमभटने उससे पूछा कि तुम कौनहो और इस निर्जन स्थानमें अकेले आकर क्यों बैठेहो उसनेकहा कि मैं काशीके निवासी श्रीकंठनाम ब्राह्मण का नीलकंठनाम पुत्रहूं यज्ञोपवीत संस्कारके उपरान्त मैं गुरुके यहां जाकर विद्याध्ययन करनेलगा और जब तक मैं विद्याध्ययनकरके लौटूं तबतक मेरा सबकुटुम्ब नष्टहोगया इससे मैं अनाथहोकर गृहस्थी के भारके धारण करने को असमर्थहोके गंगाजी के तटपर आकर तपकरनेलगा तपसे प्रसन्नहोके श्रीगंगाजीने स्वप्नमें कुछ फलदे के मुझसेकहा कि इनफलोंको खाकर तुम यहांही तब तक रहो जबतक कि तुम्हारा मनोरथ सिद्ध न होय यह स्वप्न देख मैंने प्रातःकाल उठके स्नान के निमित्त जाके श्रीगंगाजीमें बहतेहुए फलपाये और अमृतके समान स्वादिष्ट उनफलोंको अपनी कुटी में लाकर खाया इसप्रकार से प्रतिदिन फलोंको पाकर उन्हें ही खाके मैं यहां रहता हूं उसके वचन सुनके भीमभटने शंखदत्त से कहा कि मैं अपना धन इसे देदूं तो यह सुख पूर्व्वक अपना गृहस्थाश्रम करे उसने कहा कि बहुत अच्छा आप ऐसाही कीजिये यह सुनतेही भीमभटने अपनी माताका भेजाहुआ सब धन उसे देदिया (अलुप्तसत्त्वकोषाणांमहत्त्वंमहतांहिकिम् आकर्णितांपरस्यार्त्तिनचेच्छिदन्तुतत्क्षणम्) जिनका कि सत्त्वरूपी खजाना नहीं नष्टहुआहै ऐसे महात्माओंका महत्त्वही क्या होय जो वह पराई विपत्तिको सुनकर उसी समय न दूरकरें उस ब्राह्मण को धनदेकर शंखदत्त सहित भीमभट गंगाजीके पारजानेका कोई उपाय न देखकर शिरमें खड्गको बाँधके पारजानेके लिये गंगाजी में उतरकर तैरनेलगा बीच में पहुंचकर जल के वेगसे शंखदत्त कहीं दूर बहगया और भीमभट जैसे तैसे पारआया पारआके अपने मित्रको न देखकर वहदिनभर उसे गंगाजी के तटपर ढूंढ़तारहा सायंकालके समयतक उसे न पाके निराश होके हा मित्र हा मित्र इसप्रकार पुकारकर गंगाजी में डूबने को उद्यत हुआ और जैसेही उसने हे भगवती गंगा तुमने मेरे मित्रको लेलिया है इससे इस शून्य शरीर को भी तुम लेलो यह कहकर डूबनाचाहा वैसेही साक्षात् गंगाजी जलमें प्रकट होकर उससे बोलीं कि हे पुत्र सहसा मत करो तुम्हारा मित्र जीताहै थोड़ेही कालमें तुम्हारा समागम उससे होगा अब तुम प्रतिलोमा और अनुलोमा नाम विद्या हमसे लो अनुलोमा विद्या के पढ़ने से मनुष्य अदृश्य होजाता है और प्रतिलोमा विद्या के पढ़ने से जैसा चाहै वैसा रूप होजाता है हे पुत्र यह सात २ अक्षर की विद्या हैं इनके प्रभावसे तुम सम्पूर्ण पृथ्वी के राजा होजाओगे यह कहके विद्या देकर श्रीगंगाजी के अन्तर्द्धान होजाने पर भीमभट विश्वास युक्त होकर मरण से निवृत्तहुआ और उस रात्रि को व्यतीतकरके प्रातःकाल शंख दत्तको ढूंढ़नेकेलिये चला १३७ चलते २ वह अकेला लाटदेशमें पहुंचा वहां बहुत से स्थानोंको देखताहुआ एक द्यूतशाला में गया वहां लंगोटी पहनेहुए बहुतसे ज्वारीद्यूत खेलरहेथे यह भी उनके साथ वार्त्तालाप करके द्यूत खेलने लगा उन लोगों ने तो इसे आभूषण पहने देखकर जाना कि इसे जीतकर हम बहुतसा धन पावेंगे परन्तु उसने अपनी प्रवीणतासे उन सबका धन जीतलिया और हारके उन्हें जाता देखके उनसे कहा कि कहां जातेहो यह अपना धनलेतेजाओ

मैं इस धनको लेकर क्याकरूंगा मे तो धनलेकर अपने मित्रोंकोही दूंगा क्या तुम मेरे मित्र नहींहो तुम्हारे समान और मित्र मुझको कहां मिलेंगे उसके वचन सुनकर कुछ लोगोंको धन लेनेसे निषेध करते देखकर अक्षक्षपणक नाम एकज्वारीने कहा कि ज्वारियोंका यह सिद्धान्त होताहै कि जीताहुआ धन वह नहीं देते परन्तु यह जो हमलोगोंको मित्र मानकरदेताहै तो लेलेनेमें क्या हानिहै यहसुनकर अन्य सवलोगोंने कहा कि जो यह सदैवकेलिये हम लोगों के साथ मित्रताकरे तो हम धनलेलें उनके यह वचन सुनकर भीमभटने उनके साथ सदैवकेलिये मित्रताकरके उनका सव धन उन्हें देदिया और उनलोगोंके साथ उपवनमें जाकर भोजनादिसे निवृत्तहोके उनसे सव अपना वृत्तान्त कहके उनकाभी सव वृत्तान्त पूछा उनमें से अक्षक्षपणक ने पहले अपना वृत्तान्त कहा कि हस्तिनापुरमें शिवदत्तनाम एक महाधनवान् ब्राह्मणरहताथा उसका मैं वसुदत्तनाम पुत्रहूं वाल्यावस्था मे मेरे पिताने मुझे शस्त्र विद्या और शास्त्रविद्या दोनो सिखाकर एक कुलीन ब्राह्मणकी कन्याके साथ मेरा विवाहकरदिया मेरी माता वड़ी कर्कसाथी इससे मेरे पिता वहुत क्लेशितहोकर घरछोड़कर न जाने कहां चलेगये इससे मैंने भयभीत होकर अपनी स्त्रीको माताकी आज्ञापालन में नियुक्त किया और वह भी भयभीतहोकर मेरी और मेरी माताकी आज्ञापालनकरने लगी परन्तु इतने पर भी मेरी माताको संतोष नहीं हुआ वह सदैव कलह करतीही रही जो मेरी स्त्री चुपचाप रहतीथी तो मेरी माता कहतीथी कि यह मेरा अनादर करतीहै और जव वह दीन वचन वोलतीथी तो माता कहती थी कि यह छलकरती है और जव वह समझातीथी तो माता कहतीथी कि यह मुझसे लड़ाई लड़तीहै ठीकहै (कोहित्याजयितुंशक्तोवह्नेस्स्वान्दहनात्मताम्) अग्निकी स्वाभाविक दाहशक्तिको कौन छुटासक्ताहै मेरी माताके इसप्रकार वहुतकालतक कलहकरने पर मेरी स्त्रीभी घर त्यागकर न जाने कहां चलीगई उसके चलेजाने पर वन्धुओंने मिलकर हठकरके मेरा दूसरा विवाहकरवादिया मेरी दूसरी स्त्री कोभी मेरी माताने ऐसा क्लेशदिया कि वह भी फांसी लगाकर मरगई तव मैं अत्यन्त खिन्नहोकर परदेश जानेको उद्यतहुआ और परदेशजानेको निषेधकरतेहुए वन्धुओंसे मैंने अपनी माताकी सव दुष्टता कहदी परन्तु उनलोगो को मेरी वात पर विश्वास न हुआ इसलिये मैंने उन्हें विश्वास दिलानेकेलिये एक काष्ठकी स्त्री वनवाकर उसके साथ झूठमूठ व्याहकरके घरमें लाकर उसे एक वैठकमें वन्दकर दिया और एक काष्ठकी दासी भी वनवाके उसेभी उसीके साथ वन्दकरके अपनी मातासे कहा कि मैंने यह नवीन स्त्री लाकर अलगरखदी है न तुम उसके पास जाना न वह तुम्हारे पास आवे क्योंकि वह अभी इतनी चतुर नहीं है कि तुम्हारा कार्य्यकरसके इसीसे मैंने उसे तालेमें वन्दकरदियाहै मेरे इसप्रकार कहनेके दो चार दिन व्यतीत होजाने पर मेरी माता उसकाष्ठकी स्त्रीको किसी प्रकारसे न पाकर एक दिन पत्थरसे अपना शिर फोड़कर आंगनमें वैठके रोनेलगी उसरोदनको सुनके मैंने और मेरे वन्धुओंने आकर पूछा कि यह क्या वातहै उसने कहा कि इसनई वधूने कमरेमेंसे आकर विना कारण मेरी यह दशाकी है इससे मैं अपने प्राणदेदूंगी यह सुनकर उन सवने कुपितहोकर उस कमरेमें जाके काष्ठकी पुतली खड़ीहुई देखी तव उन सव

लोगोंको मेरे कहनेका विश्वासहोगया इससे वह हँसतेहुए तथा मेरी माताकी निन्दाकरतेहुए अपने२ घरको चलेगये और मैंभी अपनी माताको छोड़कर नगरसे बाहर आके भ्रमण करते२ इसलाटदेशमें आया और यहां इस द्यूतशाला में आकर चण्डभुजंग, पांसुपट, श्मशान वेताल, कालवराटक और शारिप्रस्तरनाम इन पांचोंशूरों को द्यूतखेलते देखकर जो हारेगा वह सेवक होजायगा यह प्रणकरके इनके साथ द्यूतखेलनेलगा द्यूतखेलते २ मैंने इन पांचोंको जीतलिया इससे यह पांचों मेरे दासहोगये परन्तु इन लोगोंमें ऐसे गुण हैं कि मैंही इनका दास बनाहुआहूं इनके साथ यहां रहनेसे मैं सब दुःख भूलगया अब इस अवस्थाके अनुसार मेरा अक्षक्षपणक नाम है आज भाग्यवशसे आपभी हमलोगों को यहां प्राप्तहुए अब आपही हम छओंके स्वामीहो इसप्रकार अक्षक्षपणकके अपने सब वृत्तान्त कहने पर उन पांचोंनेभी अपना २ सब वृत्तान्त कहा उन सबके वृत्तान्तको सुनकर भीमभट उन सबको वीर जानकर उसी उपवनमें वह दिन व्यतीतकरके सायंकाल के समय उन्हीं अक्षक्षपणकादि अपने छओं मित्रों के साथ उन्हीके स्थानको गया इसप्रकार उन मित्रोंको पाकर उन के साथ रहतेहुए भीमभटको वर्षा ऋतु प्राप्तहुई उनदिनों वहांकी विपाशानाम नदी समुद्रके जलसे पूर्णहोकर उलटी बहनेलगी उसीके जलमें एकबहुतबड़ी तिमिनाम मछली बहकर उसनदीके किनारेपर आकरलगी और शीघ्रही पानीके न्यूनहोजानेके कारण वह वहां से बहनसकी उसे देखकर वहांके निवासियोंने उसका पेट फाड़ा उसमें से एकयुवा ब्राह्मण निकला यह अद्भुत वार्त्ता नगरभरमें फैलगई इससे भीमभटनेभी अपने मित्रोंसमेत वहां जाकरदेखा कि वहउसका मित्र शंखदत्तही मछलीके पेटसे निकलाथा उसेदेखतेही भीमभटने दौड़कर उसे अपने हृदयमें लगालिया और मानों मछलीके पेटमें रहनेके कारण लगेहुए मैलके धोनेकेलिये बहुतसे आंसूबहाये शंखदत्तभी बहुतकालके उपरान्त उससेमिलकर अत्यन्तप्रसन्नहुआ तदनन्तर भीमभटकेपूंछने पर शंखदत्तने कहा कि उससमय गंगाजीके वेगसे जो मैं आपके पाससे अलगहोकर बहा तो मुझेइसमछलीने निगललिया बड़े महलके समान इसके पेटमें जाकर मैं छुरीसे इसके पेटके मांसको काटकर बहुत दिनतकखातारहा आजभाग्यवशसे यहमछली यहांआई सो लोगोंनेइसका पेटफाड़के मुझे निकाललिया यही मेरा सब वृत्तान्तहै शंखदत्तके यहवचन सुनकर भीमभटने तथा अन्य सब लोगों ने कहा कि कहां तो गंगामें बहना कहां मछलीके द्वारा समुद्रमें जाना कहां समुद्रसेभी विपाशानदी में आना कहां उस मछलीका माराजाना और कहां उसमेंसेभी जीता निकलना अद्भुत कार्य्य करनेवाले ब्रह्माकी भी अचिन्त्य गतिहै इत्यादि अनेकप्रकारकी अनेकवार्त्ता कहते हुए उनसब मित्रों समेत भीमभट शंखदत्त को लेकर अपने स्थानको गया और वहां उने स्नानकराके तथा वस्त्र पहराके भोजनादि सत्कारकरके मछलीके पेटसे मानों पुनर्जन्मको पानेवाले अपने मित्रको पाकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ २०७ इसके उपरान्त वहीं आनन्द पूर्व्वक रहताहुआ भीमभट एकदिन नागराज वासुकि के मंदिरमें उत्सव देखने को गया वह उत्सव उसदेशमें बहुत प्रसिद्धथा वहां जाकर नागराजको प्रणामकरके उनके मन्दिरके दक्षिणकी ओर उसने अपने मित्रों समेत एकतड़ाग देखा उसतड़ागमें जो लाल कमल लगेथे वहीं

मानों वासुकीके फणोंकी मणियोंकी प्रभाके पुंजथे नीलकमल क्या लगेथे मानों उननागराजके विष युक्त फूत्कारहीथे किनारेपर लगेहुए वृक्षोके जो पुष्प टूट २ कर गिरतेथे वह मानों नागराजका पूजनही होरहाथा ऐसे सुन्दर उस तड़ागकी शोभाको देखकर जैसेही भीमभट वहांसे चलना चाहताथा वैसेही लाटदेशके राजा चन्द्रादित्य से कुवलयावती रानी में उत्पन्नहुई हंसावली नाम कन्या अपनी सखियों समेत वहां स्नानकरनेको आई वह ऐसी सुन्दरथी कि केवल उसके पलकोंहीके देखनेसे मालूमहोताथा कि यहमानुषी है उसने तिरछी दृष्टिसे देखके नेत्ररूपी बाणोंसे हृदयमें मारकर भीमभटको मोहित कर दिया और भीमभट भी नेत्रोंके द्वारा उसके हृदयमें घुसकर उसका धैर्य्य हरलाया तब वहकन्या अपनी सखीके द्वारा भीमभटके मित्रोंसे उसकानाम तथा स्थान पूंछकर स्नानादिसे निवृत्तहोकर अपने स्थान को चलीगई और प्रियाके प्रेमरूपी पाशोंसे बँधाहुआ भीमभटभी अपने मित्रों समेत जिस किसीतरह निज स्थानपर आया वहां क्षणभरमेंही राजकन्याकी भेजीहुई दूतीने आकर उससे एकान्तमें कहा कि हे महाभाग राजपुत्री हंसावली आपसे यहप्रार्थना करतीहै कि कामरूपी प्रवाहमें वहतेहुए प्रेमीजनको देखकर उसपर कुछभी ध्यान न देके आपको किनारा करना उचित नहीं है दूतीके यहअमृतमय वचन सुनकर बहुत प्रसन्नहोकर भीमभटने कहा कि मैंभी कामही के प्रवाह में वहरहाहूं यह क्या प्रिया नहीं जानती इससे मैं अवश्य उसकी आज्ञाका पालनकरूंगा आज रात्रि के समय अन्तःपुर में आकर मैं उसे प्रसन्नकरूंगा और मुझे वहां आतेहुए कोईभी नहीं देखसकेगा क्योंकि मैं विद्याके बलसे अपना शरीर अदृश्य करलूंगा उसके यहवचन सुनकर दासी ने जाके हंसावली से रात्रि में उसके आनेका वृत्तान्त कहदिया इससे हंसावली बहुतही प्रसन्नहोके उसके आगमनकी प्रत्यासा करके बैठी सायंकाल के समय भीमभट भी दिव्य आभूषण पहनकर गंगाजीकी दीहुई विद्याका अनुलोम पाठकरके अदृश्य होकर राजपुत्रीके अगरसे सुगंधित मन्दिरमें गया राजपुत्रीने पहलेहीसे वहां सब सखियों को हटाकर एकान्तकर रक्खाथा कामके उपवनरूप उसमन्दिरमें गंगाजीकी विद्याकी लतारूपी राजपुत्रीको देखकर विद्याका प्रतिलोम पाठकरके भीमभट उसके सन्मुखही जाके प्रकटहोगया उसे देखतेही आनन्द पुलक कम्प तथा भययुक्त राजपुत्री लज्जाके कारण नीचेको मुखकरके बैठगई वहमानों अपने हृदय से पूंछ रहीथी कि बताओ अब क्याकरें यहदेखकर भीमभटने उसके निकट बैठके कहा कि हे सुन्दरी प्रकट बात कोभी तुम लज्जासे क्यों छुपातीहो चाहै अपने चित्तको तुम छुपालो परन्तु पुलककोया रोमांचकोया कंचुकीकी ढीली गांठोंको कौन छुपावेगा इत्यादि वचनोंसे उसकी लज्जाको छुड़ाकर भीमभट उसके साथ गान्धर्व विवाहकरके उसीके साथ वहरात्रि व्यतीत करके और फिर आनेका नियमकरके अपने स्थानको चलाआया २४० वहां प्रातःकाल हंसावलीको नखक्षतआदि संभोगके चिह्नों से युक्त देखकर अन्तःपुरके रक्षकोंने राजाके पास जाके यहखबरकरदी राजाने इसबातको जाननेके लिये अपने चार लोगोंको यहआज्ञा देदीनी कि तुम देखो कि यह कौन पुरुषहै यहां भीमभट दिवसको अपने मित्रो के साथ व्यतीतकरके रात्रिके समय फिर अपनी प्रियाके पासगया वहांचारोंने उसे अलक्षित आया देखकर

सिद्धजानके चारोंने राजासे आकर कहा कि हे स्वामी वहकोई सिद्धमालूमहोता है क्योंकि जो ऐसे गुप्त स्थानमें अलक्षितहोके चलाआवे वहमनुष्य कैसेहोसक्ताहै यहसुनकर राजाने उनसेकहा कि उसको तुम अभीजाकर यहीं बुलालाओ मैं देखूं तो वह कौन है और मेरे वचनसे सरलता पूर्व्वक उससे कहना कि आपने मुझसे आकर मेरीकन्या क्यों नहीं मांगी इसके छिपानेकी क्या आवश्यकता थी आप सरीखे गुणवान् वरकहां मिलसक्केहै यहकहके राजाके भेजेहुए चारों ने राजपुत्रीके द्वारपर जाके पुकारके भीम भटसे राजाके कहेहुए सब वचनकहे यहसुनकर भीमभटने यहजानकर कि राजाने मुझेजानलियाहै कहा कि राजासे जाके कहो कि मैं प्रातःकालआपकीसभामें आकर सबतत्त्वकहूंगा यहरात्रिकासमय मेरेआने के योग्य नहीं है यह सुनके उनलोगोंने राजासे वैसाही जाकरकहदिया और राजाभी चुपहोरहा प्रातः काल भीमभट राजपुत्री के स्थानसे अपने मित्रों के पास जाकर उन्हें साथलेके राजाकी सभा में गया राजाने उसके तेज धैर्य्य तथा सौन्दर्य्य को देखकर योग्य आसनपर मित्रों समेत बैठाया सबके बैठजाने पर शंखदत्तने राजासे कहा कि हे राजा राढ़ानगरीके राजा उग्रभटका यह पुत्रहै यह ऐसी विद्याओंको जानता है जिनके प्रभावसे इसे कोई जीत नहीसक्ता इसका भीमभटनाम है आपकी कन्याके निमित्त यह यहां आयाहै यह सुनकर राजाने योग्य जानकर मैं धन्यहूं यह कहके विवाहका अत्यन्त उत्सवकरके अनेक रत्नोंसमेत हंसावली भीमभटको देदी इसप्रकार हंसावलीको पाकर भीमभट हंसावली तथा अपने मित्रों समेत राज्यके सुखोंका अनुभव करनेलगा कुछदिनोंके उपरान्त राजा चन्द्रादित्य अपुत्रहोनेके कारण वृद्धावस्थापाके अपना राज्य भीमभटको देकर तपस्या करनेचलागया उस राज्यको पाके भीमभट अपने मित्रोंको बड़े २ अधिकार देकर धर्मपूर्व्वक प्रजाओं का पालन करनेलगा कुछ कालके उपरान्त दूतोंके द्वारा उसने सुना कि उसका पिता उग्रभट प्रयागमें आकर मरगया और वह मरतेसमय अपने छोटे पुत्र समरभटको राढ़ापुरी का राज्य देगया यह समाचार पाकर भीमभटने अपने पिताका शोककरके और उसकी ऊर्ध्व दैहिक क्रियाकरके एक पत्रमें यह लिखवाकर कि हे मूर्ख नर्त्तकीके पुत्र पिताके सिंहासनपर बैठनेकी तेरीकोई योग्यता नहीं है इसमें मेरा अधिकारहै इससे तू उस आसनपर न बैठ यह पत्रदेके समरभटके पास दूतभेजा दूतने जाकर सभामें बैठेहुए समरभटको वहपत्र देदिया समर भटने उस पत्रको पढ़वाकर कुपितहोके कहा कि जिसे पिताने अयोग्य जानके अपने देशसे निकलवा दिया ऐसे मूर्खको इतना अभिमान करना उचितही है अपनी गुफामें बैठाहुआ शृगालभी सिंहके समान गर्जता और उछलता कूदताहै परन्तु सिंहके आगेजाकर उसका सबअभिमान मिटजाताहै इत्यादि वचन कहके और यहीपत्रमें लिखवाकर भीमभटके पास अपना दूतभेजा उसदूतके पहुंचनेपर भीमभट ने उस पत्रको बचवाकर हँसकर दूतसे कहा कि हे दूत तुम उसनर्त्तकीके पुत्रसे मेरे यह वचन कहना कि घोड़ा छीनने के समयमें मैंने तुमको शंखदत्तसे बचालियाथा इसलिये कि तुम्हारे मरनेसे पिताको बड़ा खेदहोता अब मैं निस्सन्देह तुमको अपने पिताकेही पास भेजदूंगा तुम तैयार रहना थोड़ेही दिनों में मैं आताहूं यह कहके उसदूतको भेजकर भीमभट अपनी सम्पूर्ण सेनालेकर हाथीपर चढ़के चला उस

समय उसकी सहायताके लिये आयेहुए सेना सहित राजपुत्रोंसे सम्पूर्ण पृथ्वी व्याप्तहोगई और घोड़े तथा हाथियोंके शब्दोंसे मानो पृथ्वी भयभीतहोके रोनेसी लगी उन सबको साथलेकर भीमभट राढ़ा-नगरी के निकट पहुंचा और समरभटभी अपनी सेनाको लेके लड़ने के लिये नगरी के बाहर निकला उनदोनों सेनाओंके परस्पर मिलनेसे महाघोर युद्ध होनेलगा कुपित यमराजकी जिह्वाके समान खड्ग चमकनेलगे वीरोंके देखनेको आईहुई अप्सराओं की दृष्टिके समान तीक्ष्णबाण चलनेलगे चंदोओंके समान धूल आकाशमें छागई सेनाके शब्दरूपी बाजेबजनेलगे कबंध नाचनेलगे और मनुष्योंके मुंड तथा कबन्धो सहित रुधिरकी नदी बहनेलगी क्षणभरमें शंखदत्त तथा अक्षक्षपण आदिक महाबलवान् वीर मित्रो समेत भीमभटने शत्रुकी सम्पूर्ण सेनानष्ट करदी सब सेनाके नष्टहोजानेपर समरभट रण मे आके अपने आप रथपर चढके युद्ध करनेलगा उसे देखकर हाथीपर चढ़ेहुए भीमभटने उसका धनुष काटके घोड़ोको मारकर उसेविरथ करदिया विरथहोके भी समरभटने दौड़के भीमभटके हाथीके मस्तक पर ऐसा तोमरमारा जिसके लगनेसे वह हाथी पृथ्वीपर गिरकर मरगया इससे वह दोनों पैदलही होके ढाल तलवारों से परस्पर युद्ध करनेलगे भीमभटने विद्याओं के प्रभावसे अलक्षित होके उसके मारने में समर्थ होकर भी धर्म समझकर उसे न मारके बहुत कालतक युद्ध करके बलात्कार से उसके शिरके बाल पकड़के खड्गके द्वारा उसका शिरकाटलिया समरभटके मरजानेपर युद्धको समाप्त करके भीमभट अपने मित्रों समेत राढ़ापुरी में जाके अपनी माताके निकटगया और माताको प्रणाम करके सम्पूर्ण प्रजाओं का सत्कारकर सम्पूर्ण मंत्रियों को प्रसन्न करके अपने पिताके सिंहासनपर बैठा इसप्रकार शत्रुओंकोमार अपने पिताके राज्यको पाके उसने लाटदेशका राज्य अपने मित्रशंखदत्तको दे दिया और अक्षक्षप-णादि अपने मित्रों को बहुतसे ग्राम तथा अमूल्य रत्नदिये क्रमसे थोड़ेही दिनों में वह सम्पूर्ण पृथ्वीको जीतकर बहुतसी राजकन्याओंको लाकर चक्रवर्त्तीराजाहोगया और मंत्रियोंपर राज्यका भाररखके ऐसा विषयमें तत्परहुआ कि रात्रिदिन अन्तःपुरही मे बनारहा एकसमय भाग्यवशसे उत्तंकनाम मुनि उससे मिलने को राजद्वारपरआये प्रतीहारोंके मुनिकाआगमन निवेदनकरनेपर भी वह मदान्ध होनेके कारण मुनि से मिलने कोभी न आया इससे मुनि ने कुपितहोके उसे यह शापदिया कि हे मदान्ध तू राज्यसे भ्रष्टहोकर वनका हाथीहोजा इस शापको सुनकर राजा भीमभट भयसे मदहीनहोकर मुनि के निकट आके उनके चरणोंपर गिरकर दीनवचन कहनेलगा इससे वह मुनि क्रोधरहित होकर बोले कि हे राजा तुम हाथी तो अवश्यहोगे परन्तु मृगांकदत्त के प्रचण्डशक्तिनाम मंत्री को सर्प के शापसे अन्धाहुआ जब पाओगे तो तुम अपना सब वृत्तान्त उससे कहके शाप से छूटकर शिवजीकी आज्ञा के अनुसार गन्धर्वहोजाओगे और प्रचण्डशक्ति के नेत्रभी अच्छेहोजायंगे यहकहके वह उत्तंकमुनि चलेगये और भीमभट राज्यसे च्युतहोके हाथीहोगया हे मित्र वह हाथी मैंहीहूं मैं जानताहूं कि वह प्रचण्डशक्ति भी तुमहीहो इससे अब मेरे शापका अन्तआगया यह कहकर वह हाथीका स्वरूप त्यागकर दिव्य रूपधारी गन्धर्वहोगया और प्रचण्डशक्ति के नेत्रखुलगये यह कथा सुनके और उन दोनोंका यह चरित्रदेखके

मृगांकदत्त दौड़कर प्रचण्डशक्तिके गलेसे लिपटगया और प्रचण्डशक्तिभी अकस्मात् उसे देखके उसके चरणोंपर गिरपड़ा उससमय बहुतकालके दुःखको मानो धोनेकेलिये वहदोनों रो २ कर बहुतआंसूबहाने लगे यह देखकर उस गन्धर्व ने इन दोनों को शान्त किया तब मृगांकदत्त ने नम्रहोके उस गन्धर्व से कहा कि जो मुझे यह मित्र प्राप्तहुआहै और जो इसके नेत्र फिर अच्छेहोगये हैं यह आपहीका माहात्म्यहै इससे मैं आपको प्रणामकरताहूं यह सुनकर गन्धर्व ने कहा कि हे राजा थोड़ेहीकाल में सम्पूर्ण मन्त्रियों को पाकर तुम शशांकवती को पाओगे और सम्पूर्ण पृथ्वीपर तुम्हारा राज्यहोगा इससे धैर्य्य धरो मैं अब जाताहूं जब तुम मेरा स्मरणकरोगे तब मैं फिर आऊंगा यह कहके वह गन्धर्व आकाशको चलागया और मृगांकदत्त ने भी प्रचण्डशक्ति को पाकर अपने अन्य मन्त्रियों समेत सुखपूर्व्वक वह दिन उसी वन में व्यतीतकिया ३२६ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशाङ्कवतीलम्बकेसप्तमस्तरङ्गः ७ ॥

वेतालपचीसी ॥

जितंविघ्नजितायस्य पुष्पवृष्टिरिवाम्बरात् ॥
तारावलीकराघातच्च्युतापततिनृत्यतः १ ॥

इसके उपरान्त उस रात्रि को भी वहीं व्यतीतकरके प्रातःकाल मृगांकदत्त अपने प्रचण्डशक्ति आदिक मन्त्रियोंसमेत उस वन से अपने अन्य मन्त्रियों को ढूंढ़ताहुआ फिर शशांकवती के निमित्त उज्जयिनी को चला कुछदूरचलकर उसने देखा कि उसका विक्रमकेसरी नाम मंत्री एक भयंकर पुरुष पर चढ़ाहुआ आकाश में चलाजाताहै यह देखकर जैसेही उसने उसे अपने अन्य मन्त्रियोंको दिखाया वैसेही वह आकाश से नीचेआके उस पुरुषपर से उतरकर उसके पैरोंपर गिरा और अपने अन्य सब मित्रों से मिलकर उस पुरुष से बोला कि तुम जाओ जब मैं स्मरणकरूं तब आना उसके यह वचन सुनके उस पुरुष के चलेजानेपर मृगांकदत्त मन्त्रियों समेत एक वृक्षके नीचे बैठकर विक्रमकेसरी से बोला कि हे मित्र तुम इतने दिनका अपना सब वृत्तान्तकहो यह सुनके उसने कहा कि सर्प के शापसे आपलोगों से वियुक्तहोके बहुत दिनोंतक इधर उधर भ्रमणकरते २ मैंने शोचा कि मुझे उज्जयिनीको चलनाचाहिये क्योंकि वहीं वह सबलोग आवेंगे यह निश्चयकरके मैं उज्जयिनीनगरी को चला और क्रमसे उज्जयिनी के निकट ब्रह्मस्थलनाम ग्राम में पहुँचकर बावड़ी के किनारेपर एक वृक्षकेनीचे बैठगया वहां सर्पके काटनेसे माहाव्याकुल एक वृद्धब्राह्मण आकर मुझसे बोला कि हे पुत्र यहां से उठजाओ नहीं तो मेरीसी दशा तुम्हारी भी होगी यहां एक बड़ा विषधर सर्परहताहै उसीके काटनेसे मैं व्याकुल

होकर इस बावड़ी में डूबकर शरीरत्यागने को उद्यतहूं उसके यह वचन सुनके मैंने विषविद्या से उसका विष दूरकरदिया इससे वह ब्राह्मण प्रसन्नहोके मेरा सब वृत्तान्त पूछके बोला कि तुमने मेरे प्राणोंकी रक्षाकीहै इससे मेरे पिताका बतायाहुआ वेतालका मन्त्र तुम मुझसे सीखलो तुमसरीके वीरोंकोही उसके सिद्धकरनेकी योग्यताहै मुझ सरीके नपुंसको को उससे क्या होसक्ताहै उसके यह वचन सुनके मैंने कहा कि मृगांकदत्त के विना मैं वेताल सिद्धकरके क्या करूंगा मेरा यह वचन सुनके वह ब्राह्मण हँसकर बोला कि तुमको नही मालूम है कि वेताल के सिद्धकरने से सम्पूर्ण मनोरथ सिद्धहोते हैं देखो वेतालहीकी कृपा से राजा त्रिविक्रमसेन को विद्याधरोंका ऐश्वर्य्य प्राप्तहुआ उसकी कथा मैं तुमको सुनाताहूं कि गोदावरी के तटपर प्रतिष्ठाननाम एक देशहै वहां पूर्व्वसमय में विक्रमसेनका पुत्र त्रिविक्रमसेन नाम इन्द्रके समान पराक्रमी राजा था उस राजा के निकट सभा मे क्षान्तिशील नाम एक भिक्षुक प्रतिदिन एकफललाके राजाको देताथा और राजा अपने समीप बैठे हुए खजानचीको वहफल देदिया करता था इस प्रकार दश वर्ष व्यतीत होजानेपर एक समय फल देकर उस भिक्षुक के चलेजाने पर एक पालतू बन्दर सेवकों के हाथ से छुटकर राजा के पास चलाआया राजा ने वह फल उस बन्दरको देदिया जैसेही बन्दर ने वह फलखाया वैसेही एक अमूल्य रत्न उसमें से निकला उसे देखके राजाने खजानची से पूछा कि भिक्षुक के लायेहुये जो फल मैंने तुमको दिये हैं वह कहां हैं यह सुनकर खजानची ने भयभीत होकर कहा कि हे स्वामी मैंने वहफल झरोखे के द्वारा कोठरीमें डालदिये हैं जो आप आज्ञा दीजिये तो वहां जाकर देखूं यह कहके उसने राजाकी आज्ञापाकर क्षणभरही में खजाना देखके लौटकर राजासे आकर कहा कि हे स्वामी वह फल तो बहुत दिन होने के कारण सड़गये परन्तु वहां एक रत्नोंका ढेरलगाहै यह सुनकर राजाने प्रसन्न होके वह सब रत्न खजानचीकोही देदिये और दूसरे दिन फिर आयेहुए उस भिक्षुकसे पूछा कि हे भिक्षुक तुम अपना धन खर्च करके मेरासेवन क्यो करतेहो अब तुम अपना प्रयोजन बताओ नहीं तो मैं तुम्हारे फल नहीं लूंगा यह सुनकर भिक्षुक ने राजाको एकान्तमे लेजाकर कहा किमैं एकमंत्र सिद्ध करना जानताहूं उसमें वीर सहायक की आवश्यकताहै मैं चाहताहूं कि आपही उसमें सहायताकरो यह सुनकर राजाने कहा कि अच्छा मैं तुम्हारी सहायताकरूंगा यह सुनकर उस भिक्षुकने प्रसन्नहोके कहा कि अच्छा तो आनेवाली कृष्ण चतुर्दशी के दिन तुम रात्रिके समय श्मशानमे बरगदके वृक्षके नीचे मेरे पास आना राजाने कहा कि बहुतअच्छा यह सुनकर वह क्षान्तिशील प्रसन्नहोके अपने स्थानको चलागया इसके उपरान्त कृष्ण चतुर्दशी के दिन भिक्षुकके वचन स्मरण करके राजा त्रिविक्रमसेन सायंकाल के समय नीले वस्त्र पहनके खड्ग हाथमें लेकर श्मशानमें गया वहां घोर अन्धकारके कारण अपना हाथभी फैलानेसे नही मालूम होताथा कहीं २ चिताकी भयंकर अग्नि दिखाई देतीथी मनुष्योंके अनेक कपाल तथा पांजर पैरों में लगतेथे भूत तथा वेताल प्रसन्नता पूर्वक इधर उधर घूमरहेथे और शृगाल भयंकरशब्द कररहे थे ऐसे भयंकर उसश्मशानमें बरगदके नीचे भिक्षुक के पास पहुँचकर राजाने कहा कि हे भिक्षुक मैं आगया

अव तुमकहो मैं क्याकरूं यहसुनके भिक्षुक राजाकोदेखके प्रसन्नहोकरबोला कि हे राजा इससमय आपने मेरे ऊपर बड़ी कृपाकी यहांसे दक्षिणदिशामें कुछ दूरपर एक सीसमका वृक्षहै उसपर एक मराहुआ पुरुष रस्सीमें बँधा हुआ लटकरहाहै उसे तुम खोलके मेरे पास लेआओ यह सुनकर सत्यसिन्धु राजा त्रिविक्रमसेन बहुतअच्छा कहकर चिताओंके उजयाले से मार्गको देखताहुआ उस सीसम के वृक्षके नीचे पहुँचा उसपर रस्सियोंमें बँधाहुआ एक भूतकासा मुर्दा लटकरहाथा उसे देखके राजाने उस वृक्ष पर चढ़के रस्सी काटकर उस मुर्देको पृथ्वीपर गिरादिया गिरने से उसने बहुत चोट लगनेके समान अकस्मात् शब्द किया इससे राजाने यहसन्देह करके कि यह जीताहोगा कृपापूर्वक वृक्षसे उतरकर जैसे ही उसका स्पर्श किया वैसेही वह उच्चस्वरसे हँसनेलगा तब राजाने उसमें वेतालका आवेश जान के कहा कि क्यों हँसतेहो चलो चलें यह कहतेही वह फिर उसी वृक्षपर जालटका यह देखकर राजा फिर उसे वृक्षसे उतारकर कन्धेपर रखकेलेचला ठीकहै (वज्रादपिहिवीराणां चित्तरत्नमखंडितम्) वीरोंके चित्तरूपी रत्नवज्रसे भी अधिकपुष्ट होतेहै मार्गमें उसवेतालसे युक्त मुर्देने राजासे कहा कि हेराजा मार्गमें आपका चित्त वहलानेके निमित्त मैं एककथा कहताहूं उसे आप सुनिये ५८ अनेक विद्वान् पुण्यात्मा जनोंसे सेवित काशीनाम नगरीमें अपने प्रतापसे शत्रुओंका नाशकरनेवाला प्रतापमुकुट नाम राजा पूर्व्व समयमें था उसके वज्रमुकुटनाम अत्यन्त रूपवान् वीरपुत्रथा उसराजपुत्रके बुद्धिशरीर नाम महा बुद्धिमान्मंत्रिपुत्र परममित्रथा एकसमय उस मंत्रीके साथ राजपुत्र शिकार खेलने के लिये जंगलको गया वहां वीरलक्ष्मीके चामरोंके समान सिंहोंके मस्तकोंको काटताहुआ क्रमसे एक महावनमें प्राप्तहुआ उसवनमें कामदेवके वन्दीके समान कोकिला मधुरशब्द कररहीथीं सुगन्धितपुष्पोंमें लगकर शीतल मंदसुगंध पवन चलरहीथी ऐसे मनोहर उस वनको देखके मंत्री समेत वह राजपुत्र एककमलों से व्याप्त निर्मल तड़ागपर पहुँचा उससमय उसी तड़ागपर एक दिव्य स्वरूपवती कन्या अपने परिकर समेत स्नानकरनेको आई वह कन्या अपनी दृष्टिसे मानों तड़ागमें नवीन कमलों की पंक्ति लगारही थी और अपने सौन्दर्य्य रससे उसतड़ागके जलको मानों बढ़ारहीथी ऐसी सुन्दर उसकन्या को देखतेही राजपुत्रका चित्त उसपर आशक्त होगया और वह कन्याभी उसे देखके ऐसी उसके आधीन हुई कि स्त्रियोंके मुख्य आभूषण लज्जाकाभी उसे ध्यान न रहा इससे उसने राजपुत्रको दिखाकर यहसंज्ञा (इशारह) कियी कि पहले एक कमललेके कानमें रक्खा फिर बहुतकाल तक अपने दांतमलें तदनन्तर एककमललेके अपने शिरपर रक्खा फिर बहुत प्रेमपूर्व्वक हृदयमें हाथ रक्खा यह संज्ञा करके वह परिकर समेत अपनेस्थानको चलीगई और वहां पलँगपर लेटके अपनीसंज्ञाके कारण राजपुत्रके आने का विश्वासकरके उसीका ध्यान करनेलगी किन्तु राजपुत्रने उसकी वह संज्ञानहीं जानी परन्तु परम बुद्धिमान् मंत्रिपुत्र ने जानली इससे जब अपनी नगरीमें जाके वह राजपुत्र उसकन्याका स्मरणकरके बहुत व्याकुल हुआ तब मंत्रिपुत्रने उससे कहा कि घबराओ मत वह तुमको मिलजायगी यह सुनकर राजपुत्रने कहा कि जिसका नाम ग्राम तथा वंश कुछभी नहीं मालूमहै वह कैसे प्राप्तहोसक्तीहै तुम

क्योंमुझे झूंठमूठ बहलातेहो यह सुनकर मंत्रीके पुत्रनेकहा कि क्या उसने जो २ संज्ञाकीथीं वह तुमने नहीं देखीं उसने कानमें कमलरखकरयह सूचित कियाथा किमैं कर्णोत्पल राजाके राज्यमें रहतीहूं और जो दांत उसने मलेथे उसका यह अभिप्रायथा कि मैं दन्तघाटककी पुत्रीहूं और उसने जो शिरपरकमलरक्खाथा उसका यह प्रयोजनथा कि पद्मावती मेरा नामहै और हृदयमें हाथ रखकर उसने यह प्रकट किया कि तुम्हारे आधीन मेरे प्राणहैं, कलतो आपने सुनाभीहै कि कलिंगदेश मे राजाकर्णोत्पल का महामान्य जो दन्तघाटक मंत्री है उसके प्राणों से भी प्यारी अत्यन्त रूपवती पद्मावतीनाम कन्या है इसीसे मैंने उसकी सब संज्ञा जानली हैं मंत्री के पुत्र के यह वचन सुनकर राजपुत्र वहुत प्रसन्न होके परिकर समेत शिकार खेलने के वहाने से उसी दिशा को चला कुछदूर जाके मार्गमेंही सेनाको छोड़कर मंत्री के पुत्रके साथ कलिंगदेश को गया वहां राजाकर्णोत्पल के नगर मे पहुँचकर दन्तघाटक के स्थान के समीप एक वृद्ध स्त्री के यहां जाकर टिका और घोड़ों को घास खिला पानी पिलाकर सावधान होकरबैठा उससमय मंत्री के पुत्रने उस वृद्धासे पूछा कि हे अम्ब तुम यहां राजाके प्रिय दन्तघाटक को जानतीहो यहसुनकर वह वृद्धा बोली कि हे पुत्र जानती क्यो नहींहूं मैं तो उसकी धात्री (धाय) हूं आज कल उसने मुझे अत्यन्त वृद्ध जानके अपनी कन्या पद्मावती के पास रखदियाहै परन्तु मैं उसके पास नित्य नहीं जाती क्योंकि मेरे वस्त्र ऐसे फटेहुएहै कि जिनको पहरकर मैं वाहर नहीं निकलसक्ती मेरा पुत्र ऐसा ज्वारी है कि मैं जो नवीन वस्त्र निकालती हूं उसे वह उठालेजाताहै यह सुनकर मन्त्री के पुत्रने अपना दुपट्टा देकर उससे कहा कि तुम मेरी माता के समान हो जो मैं तुमसे कोई कामकहूं वह मेरा करदो उसनेकहा कि करदूंगी तव मन्त्री के पुत्रनेकहा कि तुम पद्मावती के पास जाकर कहदो कि जिस राजपुत्रको तुमने तालावपर देखाथा वह यहां आयाहै उसी ने मुझको तुम्हारे पास भेजाहै यह सुनकर वह वृद्धा पद्मावती के पासजाके क्षणभरही में लौटके उससे वोली कि मैंने एकान्तमे उससे जाकर तुम्हारे आगमनका वृत्तान्त कहा यह सुनके उसने अपने दोनों हाथों मे कपूर लगाकर मेरे दोनों गालो में दो थप्पड़मारे देखो अभीतक उसका चिह्न वनाहै वृद्धाके यह वचन सुनकर मन्त्री के पुत्रने एकान्तमें राजपुत्रसे कहा कि कुछ सन्देह मतकरो उसने जो इसके गालों मे थप्पड़मारके दश उँगलियों के चिह्नवनाये हैं उसका यह अभिप्रायहै कि शुक्लपक्षकी जो दश रात्रि वाकी हैं उनमें अभी ठहरजाओ यह संगमके योग्यनही है यह कहकर मन्त्री के पुत्रने एक आभूपण उस वृद्धाकेही हाथो विकवाके वहुत उत्तम भोजन वनवाकर राजपुत्रसमेत आपखाये और वृद्धाकोभी खिलाये इसप्रकार दश दिन व्यतीतकरके उसने उस वृद्धाको फिर पद्मावती के पास भेजा भोजन के लोभसे वह वृद्धा फिरभी उसके पास जाके लौटकर वोली कि आज मैं उसके पास जाकर चुपचापही खड़ीरही परन्तु उसने यह कहकर कि तू ने राजपुत्रके आनेका वृत्तान्त मुझसे क्यों कहाथा तीन उँगलियो मे महावर लगाकर मेरी छाती में थप्पड़मारा इससे मैं खिन्नहोकर आपके पास चलीआई हूं यह सुनकर मन्त्री के पुत्रने एकान्तमें राजपुत्रसे कहा कि महावर लगीहुई तीन उँगलियों के चिह्नका यह

अभिप्रायहै कि मैं रजस्वला होगईहूं अभी तीन रात्रि ठहरजाओ यह कहके तीन दिनके उपरान्त उस ने उसवृद्धाको फिर पद्मावती के पास भेजा उस दिन पद्मावती ने उस वृद्धाको भोजन कराके दिनभर अपने यहां रक्खा और सायंकालके समय जब वह चलनेको तैयारहुई वैसेही बाहर यह कोलाहल सु-नाई दिया कि गजशालासे छूटाहुआ मतवालाहाथी लोगोंको मारताहुआ इधरआताहै तब पद्मावती ने उस वृद्धासे कहा कि तुमको द्वारके मार्ग से जाना योग्यनहीं है क्योंकि वहां हाथी के आनेका सं-देहहै इससे मैं तुमको पटरेपर बैठाकर रस्सी बाँधके झरोखे में से उपवनमें लटकाये देतीहूं वहां वृक्षपर चढ़के छालदीवारीको लांघकर दूसरे वृक्षसे उतरकर अपने घरको चलीजाना यह कहके उसने अपनी चेरियों के द्वारा उसे उपवनमें लटकवादिया और उसने उसीमार्ग से अपने घरमें आकर राजपुत्र तथा मन्त्री के पुत्रसे वह सब वृत्तान्त कहदिया यह सुनकर मन्त्री के पुत्रने राजपुत्रसे एकान्त में कहा कि तुम्हारा मनोरथ सिद्धहोगया उसने युक्तिपूर्व्वक अपने पास आनेका मार्ग तुम्हें दिखायाहै इससे तुम इसी मार्ग से सायंकाल के समय अपनी प्रियाके पास जाओ उसके यह वचन सुनके राजपुत्र रात्रि के समय मन्त्री के पुत्रको साथलेके वृद्धाके बतायेहुए मार्ग से उपवनमें गया वहां पहलेही से चेरियों ने झरोखे में से एक पटरा नीचे लटकारक्खा था उसपर जैसेही राजपुत्र बैठा वैसेही चेरियों ने उसे खैंचकर भीतर करलिया और मन्त्रीका पुत्र अपने स्थानको चलाआया वहां राजपुत्रको देखतेही पद्मावती ने उठकर बहुत आदरकरके उसे अपने पलँगपर बैठाया तब राजपुत्र उसके साथ गान्धर्व विवाहकरके कुछ दिन सुखपूर्व्वक उसके यहां रहा एकदिन उसने रात्रिके समय पद्मावती से कहा कि मेरा मित्र मन्त्रीका पुत्रभी मेरे साथ आयाहै वह उसी वृद्धाके यहां ठहराहै मैं उसके पास होआऊं तब फिर लौट-कर तुम्हारे पास आजाऊंगा यह सुनकर उस चालाक पद्मावती ने कहा कि हे आर्य्यपुत्र मैंने जो संज्ञा कीथीं वह तुम ने जान लीथीं या तुम्हारे मित्र ने जानीथीं उसनेकहा कि मैंने नहीजानी थीं मेरे मित्र नेही जानीथीं यह सुनकर पद्मावती ने कहा कि तुमने यह बात बहुत अनुचितकी जो पहलेही से उस के आने का वृत्तान्त मुझसे नही कहा तुम्हारा जो मित्र है वह मेरे भाई के समान है उसका पहलेही ताम्बूलादिसे सत्कार करना मुझे उचितहै उसके यह वचन सुनके राजपुत्रने उससे आज्ञालेकर मन्त्री के पुत्रके पास आकर सब वृत्तान्त कहा मन्त्री के पुत्रने यह सुनके कि इसनें मेराभी वहां नाम लियाहै कहा कि यह बात आपने उचित नहींकी इत्यादि वार्त्तालाप करते २ वह रात्रि व्यतीतहोगई प्रातः-काल पद्मावतीकी सखी पक्वान्न तथा तांबूललेकर आई और मन्त्री के पुत्रको देकर युक्तिपूर्व्वक राज-पुत्र से उस भोजनके खाने का निषेध करने के लिये बोली कि आप वहीं चलके भोजन कीजियेगा क्योंकि पद्मावती आपकी प्रतीक्षा कररही है यह कहकर उसके चलेजानेपर मन्त्री के पुत्रने राजपुत्र से कहा कि आइये मैं आपको एक आश्चर्य्य दिखाता हूं यह कहकर उसने एक कुत्ते को वह पक्वान्न खिलाया उसेखातेही कुत्तामरगया यहदेखकर राजपुत्रने उससेपूछा कि यह क्या बातहै उसनेकहा कि पद्मावतीने मुझेछलीजानकर विषदेकर इसलिये मारनाचाहाथा कि जबतक यहरहैगा तबतक राजपुत्र

मेरे वशीभूत न होगा और मुझे छोड़कर इसीकेसाथ अपनी नगरीको चलाजायगा इससे अब तुम मेरी बताईहुई युक्तिसे इसे यहांसे लेकर अपनी नगरी को चलेचलो यह सुनके राजपुत्रने उसकी बड़ी प्रशंसाकी कि तुमबड़ेही बुद्धिमान् हो इतने में बाहर लोगोंका दुःख युक्त यह कोलाहल सुनाई दिया कि हाय २ राजाका बालकपुत्र मरगया उस शब्दको सुनकर मंत्रीकेपुत्रने प्रसन्नहोके राजपुत्रसेकहा कि आज तुम रात्रिकेसमय पद्मावती के यहांजाकर पद्मावती को इतनी मद्यपिलाओ कि वह अत्यन्त बेहोशहोजाय तब उसकी कमरमें तपाहुआ त्रिशूल दागके उसकेसम्पूर्ण आभूषण लेके मेरेपास चले-आओ तदनन्तर जो उचितहोगा सो मैं करूंगा यह कहके मंत्रीकेपुत्रने रात्रिकेसमय उसे त्रिशूलदेके पद्मावतीकेपास भेजा वहभी त्रिशूललेके उसके वचन स्वीकार करके पद्मावतीकेपास गया ठीकहै (अविचार्यप्रभूणांहिशुचेर्वाक्यंसुमन्त्रिणः) स्वामीको शुद्ध मंत्रीके वाक्यपर विचार न करना चाहिये वहां जाके राजपुत्रने पद्मावतीको बहुतसी मद्यसे बेहोशकरके उसकी कमरमें त्रिशूल दागके उसके सबआ-भूषणलेके वहांसे आकर मंत्रीके पुत्रको लाके सब आभूषण देदिये उन आभूषणोंको पाके मंत्रीकेपुत्र ने अपने मनोरथको सिद्धजानके श्मशानमें जाकर अपना तपस्वीकासा वेषबनालिया और राजपुत्र को अपना शिष्य बनाकर उससेकहा कि इन आभूषणोंमें से तुम इस मोतीकी मालाको लेके बाजार में बेचनेकोजाओ और वहां इसका ऐसाभारी मोलकहो जिससे कोई भी इसको मोलनलेसके और सब लोग इसे देखलें और जो पुरकेरक्षक तुमको पकड़ें तो उनसेकहो कि हमारे गुरूने यह हमको बेचने के लिये दीहै उसके यह वचन सुनकर राजपुत्र उसमोतीकी मालाको लेके बेचने के लिये बाजारमें घूमने लगा मालाको देखके पुरकेरक्षक उसे पकड़कर कोतवालकेपास लेगये कोतवालने उसका तपस्वीका सावेष देखकर सरलता पूर्वक पूंछा कि हे तपस्वी यह मोतियोंकीमाला तुम कहांसेलाये हो क्या तुम्हीं ने रात्रिकेसमय दन्तघाटककी कन्याके आभूषण चुरायेहैं यह सुनकर राजपुत्रने कहा कि मैं नहीं जान-ताहूं मेरे गुरूने मुझे बेचनेको यहदीहै उन्हींसे चलकर पूछो यह सुनकर कोतवालने मंत्रीके पुत्रकेपास जाके प्रणामकरके पूंछा कि हे भगवन् यह मोतियोंकीमाला आपके शिष्यकेपास कहांसेआई यह सुन-कर उसने एकान्तमें कोतवालसेकहा कि मैं तो तपस्वीहूं सदैव वनोंमें घूमाही करताहूं भाग्य वशसे जो इस श्मशानमें मैं आकर टिका तो रात्रिकेसमय बहुतसी योगिनी यहां आईं उनमें से एकयोगिनी राज-पुत्रको लाके उसका कलेजा भैरोंजीकी भेटकरके रुधिरपीके मतवाली होकर मेरे हाथसे माला छीनने लगी इससे मैंने कोप युक्तहोकर उसकी कमरमें एक त्रिशूल दागदिया और उसीके गलेसे यहमाला उतारली अब मैं इसमालाको बेचनाचाहताहूं क्योंकि इसमालासे मेरा कोई प्रयोजन नहीं है उसके यह वचन सुनके कोतवालने राजासे यहसब वृत्तान्तकहा और राजा उसकानिश्चय करनेकेलिये वृद्धास्त्रियों के द्वारा पद्मावती की कमरका त्रिशूल दिखवाकर उस वृत्तान्तको सत्यजानके यह जानकर कि इसीने मेरे पुत्रको मारा है आपही उस तपस्वी रूपधारी मंत्रीके पुत्रकेपासगया और वहां उसने उससे पूंछा कि इस पद्मावतीको क्या दंडदेना योग्यहै उसनेकहा कि इसे पुरसे निकलवा देना चाहिये उसके यहवचन

सुनके राजाने पद्मावतीको वनमें भिजवादिया वनमें जाकर अत्यन्त व्याकुलहोकर भी पद्मावतीने अपना शरीर नहींत्यागा क्योंकि उसके चित्तमें यह अनुमानथा कि कदाचित् मंत्रीके पुत्रनेही यहकोई उपाय कियाहै, पद्मावती को वनमें गई जानकर मंत्रीकापुत्र तथा राजपुत्र तपस्वियोंका वेष छोड़ घोड़ोपर चढ़के पद्मावतीके निकटपहुंचे और उसे समझाके अपनेसाथलेके काशीपुरीको चलेगये वहां पहुंचकर राजपुत्र उसकेसाथ सुखपूर्वक रहनेलगा यहां दन्तघाटक वनमें अपनी कन्याको ढूंढ़कर उसे न पाके यह जानकर कि उसे किसी जीवनेखालिया शोकसे मरगया और उसकी स्त्रीभी उसीकेसाथ सती होगई यहकथा कहकर वेतालने राजा त्रिविक्रमसेनसेकहा कि हे राजा तुम बड़े बुद्धिमान् हो इससे मेरे संदेहको दूरकरो कि इनदोनों स्त्री पुरुषोंके मरनेसे किसको पापहुआ मंत्रीके पुत्रको पद्मावतीको अथवा राजपुत्रको जो जानकर भी तुम इसका उत्तर न दोगे तो तुम्हारे शिरके सौटुकड़े होजायँगे वेताल के यहवचन सुनकर राजा त्रिविक्रमसेन शापसे डरकर बोला कि हे योगेश्वर इनतीनोंमेंसे किसीकोभी पापनहीं हुआ यह पाप राजा कर्णोत्पलकोही हुआ यह सुनकर वेतालने कहा कि इसमें राजाका क्या अपराध है इसका मूलकारण तो वही तीनों हैं क्या हंसनाजखाजांय तो कौओंको अपराध लगाया जाताहै यह सुनके राजाने कहा कि उनतीनोंका कोईदोष नहीं है क्योंकि मंत्रीके पुत्रने तो अपने स्वामी का कार्य्य किया इससे वह निष्पापहै और पद्मावती तथा राजपुत्र यहदोनों कामाग्निसे व्याकुलहोकर विचार करने में असमर्थथे इससे वहभी निष्पापहैं परन्तु नीतिशास्त्रके नहीं जाननेवाले राजाकर्णोत्पल ने दूतोंकेद्वारा अपनी प्रजाओं के विना तत्त्वके जाने और छली लोगोंके चरित्रोंको विना विचारे यह जो अन्याय किया इसीसे वह पापका भागी है, मौन छोड़कर राजासे कहेहुए इस ठीक २ उत्तरको सुन कर वह वेताल राजाकी दृढ़ताको देखने के लिये अपनी मायाके बलसे राजाके कन्धेपर से फिर उसी वृक्षपर चलागया और राजा भी उसे लानेकेलिये फिर तैयारहुआ १६॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेअष्टमस्तरंगः ८॥

इसके उपरान्त राजा त्रिविक्रमसेनने उस मुर्द्दे के लानेकेलिये उस सीसोंके वृक्षके नीचे जाकर देखा कि वह मुर्दा पृथ्वीपर पड़ाहुआ चिल्लारहाहै इससे उसमें वेतालका आवेश जानकर राजा उसे कन्धे पर चढ़ाकर फिर लेचला तब वह वेताल बोला हे राजा तुम इस महाअनुचित क्लेशमें पड़ेहो इससे तुमको प्रसन्न करनेकेलिये मैं एक कथा कहताहूं कि कालिन्दीके तटपर ब्रह्मस्थलनाम एक ग्रामहै उसमें ब्रह्मस्वामी नाम एक वैदिक ब्राह्मण रहताथा उसके एक मन्दारवती नाम अतिरूपवती कन्याथी जिसे बनाकर ब्रह्माने अपनीही बनाईहुई स्वर्गकी स्त्रियोंकी भी अवश्य निन्दाकरी होगी जब वह कन्या युवतीहुई तो कान्यकुब्ज देशसे आयेहुए समान गुणवान् तीन ब्राह्मणों ने अपने २ निमित्त उस ब्राह्मणसे वह कन्या मांगी परन्तु उसके पिताने उन तीनोंमें से किसीको भी वह कन्या नहीं दी क्योंकि वह जानताथा कि जो मैं एकको दूंगा तो दो निराश होकर मरजायगे इससे यह तीनों उस कन्याके मुखरूपी चन्द्रमाको रात्रि दिन चकोरके समान देखतेहुए वहीं रहनेलगे कुछ कालके उपरान्त अक-

स्मात् वह कन्या ज्वरसे पीड़ितहोके मृत्युको प्राप्तहुई तब उन तीनोंने उसे लेजाकर श्मशानकी भूमिमें अग्निसे भस्मकरदिया फिर उनमें से एक तो वहीं कुटी बनाके उसकी भस्मकी शय्या बनाकर बिना याचनाकिये मिलेहुए अन्नको खाकर रहनेलगा दूसरा उसकी हड्डी गंगाजीमें फेंकनेको लेगया और तीसरा तपस्वी होकर देशान्तरोंमें भ्रमण करनेलगा वह भ्रमण करते २ वक्रोलकनाम ग्राममें पहुंचकर किसी ब्राह्मणका अतिथिहुआ और जैसेहीं भोजन करनेलगा वैसेही एक बालक रोनेलगा जब बहुत पुच-कारनेपर भी वह बालक न चुपहुआ तो ब्राह्मणकी स्त्रीने उसे बलतीहुई अग्निमें छोड़दिया इससे वह बालक भस्महोगया यह देखकर उस तपस्वीने कहा कि यह ब्राह्मणका घरनहीं है यह तो किसी ब्रह्म-राक्षसका गृहहै इससे मैं मूर्त्तिमान पापरूप इस अन्नको नहीं खाऊंगा उसके यह वचन सुनकर उस ब्राह्मणने कहा कि तुम मेरी शक्ति देखो मैं अभी इस बालकको जिलाये देताहूं यह कहकरके उसने मंत्रोंकी पुस्तक लेकर मंत्रपढ़कर अग्नि में धूलडालदीनी इससे जीताहुआ बालक उस अग्निमें से निकल आया यह देखके उस तपस्वीने प्रसन्न होकर भोजन किया और वह ब्राह्मणभी खूंटीपर पुस्तक रखके भोजनकरके अपनी स्त्रीसमेत सोरहा उसे सोया देखकर वह तपस्वी अपनी प्रियाके जिलाने के निमित्त खूंटीपरसे उसपुस्तकको उतारके वहांसे चलके उसी श्मशानमें आया जहां उसकी प्रिया भस्म हुईथी उससमय जो उसकी हड्डीफेंकनेगयाथा वहभी आगया तब उसतपस्वीने कुटीमेंरहनेवाले ब्राह्मण से कहा कि तुम भस्मको छोड़दो मैं मन्त्रके प्रभावसे अपनी प्रिया इसमेंसे जिलाऊंगा यहसुनकर वह ब्राह्मण हटगया तब उसने मन्त्रपढ़के जैसेही उसभस्ममें धूलडाली वैसेही मंदारवती ज्योंकीत्यों जीकर खड़ीहोगई उसको देखकर वहतीनों कामातुरहोके उसके लेनेकेलिये परस्पर कलहकरनेलगे एकनेकहा कि यह मेरीही स्त्री है क्योंकि मैंनेही इसे मन्त्रके बलसे जिलायाहै दूसरे ने कहा कि मैं तीर्थपर गयाथा उसीके प्रभावसे यह जी उठीहै इससे यह मेरी स्त्री है तीसरे ने कहा कि मैंनेही इसकी भस्मकी रक्षाकरके अपने तप से इसे जिलायाहै इससे यह मेरी स्त्रीहुई उनतीनों के विवादमें हे राजा मैं आपसे पूंछताहूं कि वह उनतीनों में से किसकी स्त्री हुई जो आप जानकरभी इसप्रश्नका उत्तर न दोगे तो आपका शिर फूट जायगा वेतालके वचन सुनकर राजाने कहा कि जिसने क्लेश भोगकर मन्त्रकेद्वारा उसे जिलायाथा वह उसका पिताहुआ इससे वह उसकापति नहींहोसक्ता और जो उसकीहड्डी गंगाजी लेगयाथा वहउसका पुत्रहुआ इससे वहभी पति नहींहोसक्ता और जो उसकीभस्मको लेकर प्रेमसे उसी श्मशानमें तपकरता रहा वही उसका पतिहै क्योंकि उसीने पतिके प्रेमके अनुसार कार्य्य कियाहै राजा त्रिविक्रमसेन के यहवचन सुनकर फिर वेताल राजा के कन्धेपर से उसी वृक्षपर जा लटका और राजाने फिर उसे लाने केलिये इच्छाकी ठीक है (प्राणात्ययेपिप्रतिपन्नमर्थम् तिष्ठत्यनिर्वाह्यनधीरसत्वाः) धीरसत्त्ववान् लोग जिस कार्य्यकेलिये प्रतिज्ञाकरते हैं उसको वह प्राणोंके कष्टमें भी बिनाकिये नहीं मानते ४२॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेनवमस्तरंगः ९॥

इसके उपरान्त फिर राजा त्रिविक्रमसेन सीसों के वृक्षसे उतारकर उसमुर्देको लेकरचला तब वैताल ने उससे कहा कि हे राजा यहां रात्रि के समय तुमको वारम्वार आने में बड़ा खेदहोताहोगा इससे आपके प्रसन्नकरनेके निमित्त एक कथा मैं कहताहूं कि पाटलिपुत्र नाम नगरमें विक्रमकेसरी नाम एक गुणवान् तथा धनवान् राजाथा उस राजाके यहां शापसे उत्पन्नहुआ विदग्ध चूड़ामणिनाम सम्पूर्ण शास्त्रोंकाज्ञाता महाविज्ञानी तोताथा उसी तोतेके उपदेशसे राजाने मगधदेशके राजाकी पुत्री चन्द्रप्रभा के साथ अपना विवाहकिया था उस चन्द्रप्रभाके पास भी सोमिकानाम मैना सम्पूर्ण शास्त्र तथा विज्ञानोंकी जानने वालीथी राजाके यहां वह दोनोंपक्षी एकही पिंजरे में रहतेथे और अपने २ मधुर शब्दों से राजा रानी दोनो को प्रसन्नकिया करतेथे एक समय उस तोतेने कामसे पीड़ितहोकर मैनासे कहा कि हे सुभगे तुम मुझे अपना पति बनालो यह सुनकर मैनाने कहा कि मैं पुरुषका संसर्ग नहीं करना चाहतीहूं क्योंकि पुरुष बड़े दुष्ट और कृतघ्नहोते हैं यह सुनके तोतेने कहा कि पुरुष दुष्ट नहीं होते स्त्रियांही बड़ी दुष्टा तथा कठोरहोती हैं इसप्रकार उत्तर प्रत्युत्तरसे उन दोनोंका बड़ा विवादबढ़गया और उन दोनों ने यह प्रणकरके कि जो तोता हारेगा तो मैनाकादास होजायगा और मैना हारेगी तो तोतेकी स्त्री होजायगी राज पुत्रसे कहा कि आप हमारे विवादका निर्णय कीजिये विवादको सुनकर राज पुत्रने उस मैनासे कहा कि पुरुष कैसे कृतघ्नहोते हैं उसने कहा कि सुनिये कामन्दिकानाम नगरीमें अर्थदत्त नाम एक महाधनवान् वैश्यथा उसके धनदत्तनाम पुत्रथा कालके प्रभावसे अर्थदत्त के मरजानेपर धूर्त्तोंने मिलके धनदत्तको द्यूतआदिक व्यसनोंमें लगाया ठीकहै (कामंव्यसनवृक्षस्य मूलंदुर्जनसंगतिः) दुष्टोंकासंग व्यसनरूपी वृक्षका मूलहै थोड़े कालमें व्यसनके कारण धनदत्तनिर्धन होकर लज्जासे अपने देशमें न रहकर परदेशको चला चलते २ चन्दनपुरनाम नगरमें पहुंचकर एक वैश्यके घर भोजनके निमित्तगया उस वैश्यने उसे सुकुमार देखके उससे नाम तथा कुल पूछके कुली नजानके बहुतसा धन देकर अपनी रत्नावली नाम कन्यासे उसका विवाहकर दिया इससे वह धनदत्त प्रसन्नहोकर वहीं रहनेलगा कुछ दिनों के उपरान्त सुखसे अपनी दुर्दशाको भूलकर वह अपने श्वशुरसे आज्ञालेकर अपनी रत्नावली स्त्री तथा उसकी एक वृद्धादासी और सम्पूर्ण धनलेकर अपने देशको चला क्रमसे एकवन में आकर उसने अपनी स्त्री से सम्पूर्ण आभूषण लेलिये और उसे उस वृद्धादासी समेत एकगहरे गढ़ेमें ढकेलदिया (दृश्यतांद्यूतवेश्यादि कष्टव्यसनसंगिनांहृदयंहाकृतघ्नानांपुंसांनिस्त्रिंशकर्कशम्) देखो द्यूतवेश्या आदिक दुर्व्यसनों में आसक्त कृतघ्न पुरुषों का हृदय खड्गके समान कर्कश होताहै उन्हें गढ़ेमें डालके उसके चलेजानेपर वह वृद्धातो गिरते ही मरगई परन्तु उसकी स्त्री आयुर्दाय शेषहोने के कारण नहीं मरी और कुछ चोटखाकर लता आदि के सहारेसे उस गढ़ेमें से ऊपर आके पथिक लोगोंसे मार्ग पूछ २ कर धीरे २ अपने पिताके यहां आगई वहां उसे अकस्मात् रोती हुईआई देखकर उसके माता पिताने पूछा कि हे पुत्री तुम क्यों रोती हो औरक्यों इतनी जल्दी अकेली ही लौट आईहो माता पिताके यह वचनसुनकर उसनेकहा कि मार्ग में बहुतसे चोर आके सब धनलेके

मेरे पतिको बाँधलेगये और मैं उस वृद्धासमेत भयभीत होकर एक गढ़ेमें गिरपड़ी वह वृद्धा तो गिरते ही मरगई परन्तु मैं भाग्यवश से जीतीरही तब उसी मार्ग से आए हुए एक दयालु पथिकने मुझे उस गढ़से निकाला गढ़ेसे निकलकर मैं धीरे २ मार्ग पूछतीहुई यहा चलीआई उसके यह वचनसुनके उस के माता पिताने उसे बहुत समझाके सुखपूर्व्वक रक्खा कुछकाल के उपरान्त धनदत्तने द्यूतमें वह सब धनभी नष्टकरके शोचा कि मैं अपने श्वशुरके यहां जाकर धनलाऊं और जो वह अपनी पुत्रीको पूछेगा तो कहदूंगा कि तुम्हारी पुत्री मेरे घरमें है यह शोचके वह अपने श्वशुरके यहां गया वहां उसेदूरही से देखकर उसकी स्त्रीने दौड़कर उसके पैरोंपर गिरके जो कुछ अपने पितासे हालकहा था वह उससे भी कह दिया जिससे कि वह झूठा न पड़े ठीकहै (दुष्टेपिप्रत्यौसाध्वीनांनान्यथावृत्तिमानसम्) सतीस्त्रियोंका चित्त दुष्टपति से भी नहीं बदलताहै) उससे इस वृत्तान्त को जानकर धनदत्त निर्भयहोकर अपने श्वशुर के पासगया और उसने भी उसे देखकर भाग्यवशसे मेरा जामाता चोरोंके हाथसे बचगया यह कहके बड़ा उत्सवकिया और उसे आदरपूर्व्वक अपने घर में रक्खा तब धनदत्त अपने श्वशुर के धनको भोगता हुआ सुखपूर्व्वक रत्नावली के साथ रहनेलगा इसके उपरान्त एकदिन रात्रिकेसमय जो पाप उस दुष्टने किया वह यद्यपि कहने के योग्य नहीं है तथापि कथाके प्रसंगसे कहतीहूं कि वह दुष्ट गोदी में सोईहुई उस पतिव्रता स्त्री को मारके उसके आभूषणलेके छुपकर अपने देश को चलागया इसप्रकार से पुरुष महापापी तथा दुष्टहोते हैं मैनाके यह वचन सुनके राजपुत्र ने तोते से कहा कि अब तुमकहो यह सुनकर तोतेनेकहा कि हे स्वामी स्त्रियां बड़ी दुष्टा पापिनी तथा सहसा करनेवाली होती हैं इसविषयमें मैं आपको एक कथा सुनाताहूं कि हर्षवती नाम नगरीमें कई करोड़ अशर्फियोंका धनी धर्मदत्तनाम वैश्य रहता था उसके वसुदत्तानाम एक अत्यन्त रूपवती प्राणोंसे भी प्यारी कन्याथी उस कन्याका विवाह उसने ताम्रलिप्तीनाम नगरीके निवासी समुद्रदत्तनाम तरुणरूपवान् एकवैश्यकेसाथ करदिया एकसमय वह वसुदत्ताने अपने पिताके यहां दूरसे किसी सुन्दर युवा पुरुषको देखकर उसपर आसक्तहोके उसे अपनी सखी के द्वारा बुलवाके उसके साथ रमण किया और उसी दिनसे रात्रिके समय किसी संकेत स्थानमें उसीके साथ वह नित्य रमण करतीरही एक दिन वसुदत्ताका पति समुद्रदत्त अपने देशसे उसके यहां गया इससे वसुदत्ताके माता पिताने उसका बड़ा आदर सत्कारकिया और रात्रिके समय वसुदत्ताकी माताने वसुदत्ताको समुद्रदत्तके साथ शयन करनेकोभेजा परन्तु उस दुष्टाने समुद्रदत्तकेपास शयन करके भी उससे सोनेका मिथ्या बहानाकरके उसके साथ रमणनहीं किया और समुद्रदत्तभी मार्गका थका हुआथा इससे शीघ्रही सोगया तब सबके सो जानेपर एकचोर सेंधलगाके उसके शयन स्थानमें घुसा उससमय वसुदत्ता उसचोरको न देखकर अपने पति को सोयाजानके उसी सेंधके द्वारा अपने जार पतिके पास चली यह देखकर उसचोरने शोचा कि जिन आभूषणोंके लिये मैं आयाथा उन्हींको पहने हुए यह जारही है इससे देखनाचाहिये कि यहकहांजाती है यह शोचकर वह उसीके पीछे२चला और वसुदत्ता नगरके बाहर एकउपवनमेंगई वहां एकवृक्षमें उसकाजार फांसीमें लटकरहाथा क्योंकि रात्रिके

समय पुररक्षकोंने उसे वहां खड़ा देखकर चोर जानकर फांसीपर चढ़ादियाथा उसे मराहुआ लटका देख कर वसुदत्ता हाय २ करके बहुत रोई और वृक्षपरसे उसे उतारके अपनी गोदी में लिटाके शोकके कारण मोहितहोके,उसका आलिंगन करके जैसेही उसका मुख उठाके चुम्बन करनेलगी वैसेंही उस मृतक पुरुष में वेतालने प्रवेशकरके उसकी नाककाटली इससे वह विह्वलहोकर उसे छोड़के कुछदूर चली और यह शोचकर कि शायद यहजीता है उसे देखनेको फिर लौटआई परन्तु उसमेंसे वेताल निकल गयाथा इस से उसे निश्चेष्टपड़ा देखके वह धीरे २ वहांसे रोतीहुई अपने घरको चली उसका यह सब कर्म उस छिपेहुए चोरने देखकर शोचा कि हाय इसपापिनने क्याकिया अरे स्त्रियोंकाहृदय बड़े भयंकर अन्धकूपकेसमान अगाधहोताहै इसमें जो कोई गिरतेहैं उनका निकलना बहुत कठिनहै अब फिर चलकर देखनाचाहिये कि यहदुष्टा क्याकरतीहै यह शोचकर वह फिर उसीके पीछे २ चला और वह भी अपने घरमें जाकर रोके चिल्लानेलगी कि हाय २ मुझे बचाओ इसपतिरूपशत्रुने मुझ निरपराधिनीकी नाककाटली उसशब्द को सुनकर उसका पति पिता माता तथा सम्पूर्ण परिजन वहां इकट्ठे होगये और उसके पिताने अपनी कन्याकी नाककटी हुई देखकर अपने जामाताको क्रोधकरके बंधवाया परन्तु समुद्रदत्तने मूकके समान कुछभी नहीं कहा तदनन्तर इसकोलाहलको सुनके चोरके चले जानेपर और रात्रिके व्यतीतहोजाने पर प्रातःकाल वसुदत्ताका पिता समुद्रदत्तको और उसनकटी वसुदत्ताको लेकर राजद्वारपरगया वहां राजा ने सम्पूर्ण अभियोग (मुकद्दमह) को सुनकर समुद्रदत्तके मारनेकी आज्ञादेदी तब राजाकी आज्ञासे समुद्रदत्तको मारनेके निमित्त लिये जातेहुए राजपुरुषोंसे मार्गमें उसचोरने आकर कहा कि इस निर-पराधको मतमारो मैं इसका सब वृत्तान्त जानताहूं राजाके पास मुझे लेचलो वहां मैं सब कहूंगा उसके यहवचन सुनके वहराजपुरुष उसे राजाके पास लेगये वहां उसने राजाके आगे रात्रि का सब वृत्तान्त निवेदन करके कहा कि हे स्वामी जो आपको मेरे वचनों पर विश्वास न होय तो उसमृतक पुरुषके मुख में अभीतक नाकहै उसे आप किसी को भेजकर दिखवालीजिये उसके यहवचन सुनके राजाने अपने सेवकोंको भेजके उसमुर्देके मुखमें नाकको दिखवाकर उसचोरके वचन सत्य जानके समुद्रदत्त को बन्धनसे छुड़वादिया, उसकी स्त्री वसुदत्ताके कानभी कटवाके अपने देशसे निकलवादिया वसु-दत्ताके पिताका सब मालधन छीनलिया और उसचोरपर प्रसन्नहोके उसे नगरका कोतवाल बनादिया इसप्रकारसे स्त्रियां स्वभावहीसे कठोरहृदय तथा दुष्टा होती हैं यहकहके वहतोता शापके क्षीणहोजानेके कारण चित्ररथनाम दिव्यरूप गन्धर्वहोकर आकाशको चलागया और वह मैनाभी शापके क्षीणहो-जानेके कारण तिलोत्तमानाम अप्सराहोकर स्वर्गको चली गई और उनदोनों के विवादका सभा में कुछभी निर्णय नहींहुआ इसमें हे राजा मैं आपसे पूंछताहूं कि आपही कहिये कि बहुधा पुरुष पापी होतेहैं या स्त्रियां पापिनी होतीहैं जो आप जानकेभी उत्तर न देंगे तो आपका शिरफटजायगा वेताल के यहवचन सुनकर राजा त्रिविक्रमसेनने मौन छोड़करकहा कि हे योगेश्वर स्त्रियां पापिनी होती हैं पुरुष तो कहीं २ कोई ऐसा दुराचारी होताहै परन्तु स्त्रियां प्रायः सर्वत्र सदैव ऐसीही होती हैं राजाके यह

वचन सुनके वह वेताल फिर राजाके कन्धेपरसे उसीवृक्षपर जा लटका और राजा उसके लानेके लिये फिर उद्यतहुआ ६५ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेदशमस्तरङ्गः १० ॥

इसके उपरान्त राजा त्रिविक्रमसेन फिर वेतालके लेनेकेलिये उसीशीशोंके वृक्षके निकटगया और उस मुर्देको हँसते देखकर निर्भयहोके उसे अपने कन्धेपर रखकर लेचला तब वेतालने उससेकहा कि हे राजा इस दुष्ट भिक्षुकके लिये आप क्यों इतना परिश्रम करतेहो इस निष्फल कार्य्य करने में आपको जराभी विवेक नहीं होता अब मार्गमें आपका चित्त बहलानेके निमित्त मैं एककथा आपसे कहताहूं शोभावती नाम नगरीमें शूद्रकनाम एक बड़ा वीर राजाथा उसके प्रतापसे उसके सम्पूर्ण शत्रु अपने२ देशोंको छोड़ सदैव वनोंहीमे वनेरहतेथे वह ऐसा धर्म्म करताथा कि जिससे सब प्रजामात्रको रामादिक राजाओंपर भी अनिच्छा होगईथी एक समय मालवदेशसे वीरवर नाम एक ब्राह्मण सेवा करने के निमित्त शोभावती नगरीमें आया उसके साथमें उसकी धर्म्मवती नाम स्त्री सत्त्ववर नाम पुत्र तथा वीरवती नाम कन्याथी यही उसका सब कुटुम्बथा और उसकी कमर में खड्ग और हाथमे ढालथी उसने राजासे आकर पांचसौ अशर्फी रोज वेतनकेलिये कही राजाने भी उसकी चेष्टासे उसके पुरुषार्थ का अनुमान करके वह वेतनदेना स्वीकार करलिया और अपने दूतोंको यह आज्ञादी कि छिपकर देखो यह इतनाधन सत्कार्य्योंमें व्ययकरताहै या असत्कार्य्यमें वीरवर प्रातःकाल राजाके दर्शनकरके फाटक पर जाके मध्याह्नतक वहीं खड़ारहताथा फिर उन अशर्फियोंकोलेके घरमें जाकर उनमेंसे सौ अशर्फी अपनी स्त्री को भोजनादिके खर्चको देताथा सौ अशर्फियां वस्त्र ताम्बूलादिमें खर्चकरताथा सौ अशर्फी स्नानके पीछे विष्णुभगवान्के पूजनमें लगाताथा और दोसौ अशर्फी दीन तथाब्राह्मणोंको बांटदेताथा इसप्रकार उन पांचोंसौ अशर्फियों को व्ययकरके और नित्य नैमित्तिक कार्योंसे निवृत्तहोकर राजा के फाटकपर जाकर रात्रिभर वहीं खड़ा रहता था दूतो के मुखसे उसकी यह नित्यचर्य्या सुनके राजा ने अपने दूतोंसे कहदिया कि अब उसकेसाथ न रहाकरो इसके उपरान्त कुछदिन व्यतीत होनेपर मानों वीरवरके धैर्यकी परीक्षा करनेकेलिये वर्षाऋतु प्राप्तहुई मेघोंने सम्पूर्ण आकाश घेरलिया विजलीचमकने लगी और घोर जलकी वृष्टिहोनेलगी ऐसे घोर समयमें भी वीरवर नित्यके समान फाटकपरसे जरा भी नहींहटा एकदिन राजा शूद्रक उसकी परीक्षा करनेके लिये फाटकपर चढके ऊपरसे बोला कि फाटकपर कौनहै वीरवरने कहा कि मैंहूं उसके यह वचनसुनके राजाने शोचा कि यह बड़ावीरहै और मेरा परमभक्तहै इससे इसको कोई बड़ा अधिकार देनाचाहिये यह शोचकर राजा फाटकपर से उतरकर अन्तःपुरमें जाके सोया दूसरेदिन फिर रात्रिके समय बड़ी वृष्टिहोनेपर अन्धकारसे सम्पूर्ण दिशाओंके ढकजानेपर राजा शूद्रकने फिर उसकी परीक्षा करने के लिये ऊपर चढ़के पूछा कि फाटकपर कौनहै वीरवरने कहा कि मैंहू उसके यह वचनसुनके राजा को बड़ा आश्चर्य्य हुआ कि यह बड़ा निर्भय पुरुष है इतने में दूरसे किसी स्त्री के रोदनकासा शब्द राजाको सुनाई दिया रोदनको सुनके राजाने शोचा

कि मेरे राज्यमें न कोई दरिद्री है न कोई दुःखितहै और न कोई किसीको दुःखदेताहै तो यह कौन अकेली रोरही है यह शोचकर उसने वीरवरसे कहा कि हे वीरवर जाकर तुम देखो कि यह कौनस्त्री रोरहीहै राजा के वचनसुनतेही वीरवर खड्ग लेकर अकेलाही उस अन्धकारमें चला उसे जाते देखकर राजा भी दया युक्त होके फाटकसे उतरकर उसके पीछे २ चला वीरवर उस रोदन के शब्दके अनुसार नगरीके बाहर जाके एक तड़ाग के निकट पहुंचा उस तड़ागके जलमें एक स्त्री हा शूर हा कृपालो हा त्यागी तुम्हारे विना मैं कैसे रहूंगी यह कह २ कर रोदनकररहीथी उसे देखके वीरवरने उससे पूछा कि तुम कौनहो और क्यों रोरहीहो यह सुनकर उसने कहा कि हे वीरवरमैं पृथ्वीहूं इस समय परमधार्मिक शूद्रकही मेरा राजा है आजसे तीसरे दिन उसकी मृत्यु होजायगी फिर मुझे ऐसा धर्म्मात्मा पति कहां मिलैगा इसीसे मैं रोरहीहूं उसके यह वचन सुनके वीरवरने कहा कि हे भगवती ऐसा कोई उपायहै जिससे इस धर्म्मात्मा राजाकी मृत्यु न होय यह सुनके पृथ्वीने कहा कि इसका एकही उपाय है और वह तुम्हीं करसक्ते हो दूसरा नहीं करसक्ता यह सुनके वीरवरने कहा कि हे भगवती जल्दी बताओ मैं अभी जाकरकरूं नहीं तो मेरा जीवनही व्यर्थ है यह सुनकर पृथ्वी ने कहा कि हे वीरवर तुम बड़ेशूरहो और अपने स्वामीके बड़ेभक्तहो इससे उपायको सुनों यह जो राजमन्दिर के निकट राजा ने चण्डिका देवीकी स्थापनाकी है उनके आगे तुम अपने सत्त्ववर पुत्रको जाके भेटकरोगे तो यह राजा सौवर्ष जीवेगा जो आजही तुम इसकार्य्यको करोगे तो कल्याणहै नहींतो आजसे तीसरेही दिन राजाकीमृत्यु अवश्य होजायगी पृथ्वी के यहवचनसुनके वीरवरने कहा कि मैं अभीजाके इसकार्य्यको करताहूं उसके यहवचनसुनके तुम्हारा कल्याणहोय यहकहके पृथ्वी के अन्तर्द्धान होजानेपर वीरवर अपने घरको चलागया और राजाशूद्रक भी पृथ्वी के तथा वीरवरके इस वार्त्तालापको सुनकर वीरवरके पीछेही पीछे छिपाहुआ उसके घरतक गया अपने घरमें पहुंचके वीरवरने अपनी स्त्रीको जगाके पृथ्वीका कहाहुआ सब वृत्तान्त उससे कहा यह सुनकर धर्म्मवती ने कहा कि हे आर्य्यपुत्र स्वामीका कार्य्य तो अवश्य करनाचाहिये इससे आप सत्त्ववरको जगाके यह सब वृत्तान्त कहिये यहसुनके वीरवरने सत्त्ववरको जगाके उससे यह सबवृत्तांत कहदिया यह सुनकर सत्त्ववरने दृढ़चित्तहोकर कहा कि हे तात मैं धन्यहूं जो मेरे प्राणके व्ययसे राजा के जीवकी रक्षाहोय और मैंने जो राजाका धान्यखायाहै उससे भी मेरा उद्धार होजायगा अब आप क्यों देर करतेहो मुझे लेचलो और जल्दी से भगवती के भेटकरो जिससे राजाका कल्याणहोय सत्त्ववरके यह वचन सुनके वीरवरने कहा कि हे पुत्र स्गात्रासहै तुम मेरेही वीर्य्य से उत्पन्नहुएहो उनसबकी यह वार्त्तालाप सुनकर बाहर खड़ेहुए राजाने अपने चित्तमें कहा कि इन सबका सत्त्व समानहै तब वीरवर सत्त्ववरको कन्धेपर चढ़ाके और धर्म्मवती अपनी वीरवती नाम कन्याको गोदमें लेके दोनों भगवती के मन्दिरको चले राजा शूद्रक भी छिपाहुआ उन्हीं के पीछे २ चला ६६ भगवती के मन्दिर में पहुंचके सत्त्ववर वीरवरके कन्धेपर से उतरकर भगवती के आगे हाथजोड़के बोला कि हे भगवती मेरे शिरकी भेटसे राजा शूद्रक और सौ वर्ष जीकर अकंटक राज्यकरे उसके यहवचन सुनके वीरवरने खड्ग

से सत्त्ववरका शिरकाटके भगवती के आगे रखदिया और कहा कि हे भगवती मेरेपुत्रकी भेटसे राजा शूद्रक चिरंजीवीहोय उस समय यह आकाशवाणीहुई कि हे वीरवर तुम्हारे समान और कौन स्वामि-भक्तहै जिसने अपने पुत्रकेप्राणो के व्ययसे भी राजा शूद्रकके प्राण तथा राज्यकी रक्षाकी, सत्त्ववरको मरा देखकर वीरवरकी कन्या वीरवती भाई के स्नेह से ऐसी व्याकुलहुई कि उसका हृदय फटकर प्राण निकलगये तव धर्म्मवती ने वीरवरसे कहा कि राजाका कल्याण तो आप करचुके अव, मैं एकप्रार्थना करतीहूं उसे आप स्वीकार कीजिये कि जव यह अज्ञानकन्याभी भाई के शोकसे मरगई तो कन्या तथा पुत्र दोनो के नष्टहोजानेपर मैं जीकर क्या करूंगी मैंने पहलेही राजाके कल्याणके निमित्त अपना शिर नहीं चढ़ादिया यहमेरी वड़ी मूर्खताहुई अव आपआज्ञादीजिये तो मैं अपने कन्या पुत्र दोनोंका शरीरलेकर अग्निमे भस्महोजाऊं उसके यह वचन सुनके वीरवरने कहा कि अच्छाहै ऐसाहीकरो सन्तानकेशोकसे इसदुःखमय संसारमे अव तुम्हें क्यासुखहै परंतु यहपश्चात्ताप मतकरो कि मैंने पहलेही राजाके कल्याण के निमित्त अपना शिर भगवती के अर्थ नहीं भेटकिया क्योंकि जो यह कार्य्य अन्य से सिद्धहोनेके योग्यहोता तो मैंहीं अपना शिर भगवती के अर्पण क्यो न करता इससे सन्तोषकरो मैं तुम्हारे लिये चिता लगायेदेताहूं यहकहके वीरवरने काष्ठ इकट्ठाकर चितालगाकर उसपर अपने पुत्र तथा कन्याके शरीरको रखके अग्निलगादी तव धर्म्मवती वीरवरके चरणों मे गिरकर तथा भगवती को प्रणामकरके वोली कि हे भगवती जन्मान्तरमें भी यही आर्य्यपुत्र मेरे पतिहोयँ और मेरे इस शरीर से स्वामीका कल्याणहो यह कहके वह भी चितामे कूदकर भस्महोगई तव वीरवरने शोचा कि राजा का कार्य्य तो सिद्धहोचुका क्योंकि आकाशवाणीही कहगई इससे राजाका जो धान्य मैंने खायाहै उससे मेरा उद्धारहोगया तो अव मुझ अकेलेको प्राणोंका लोभकरने से क्या प्रयोजनहै अनेकप्रकारके क्लेश सहकर कुटुम्वका पालन करना तो मनुष्यका धर्म्म है परन्तु जव कुटुम्वही नहींहै तो मुझ सरीके का अकेला जीना शोभित नहींहोता इससे मे भी अपने शिरको भगवती के अर्पणकरके क्यो न भगवती को प्रसन्न करूं यह शोचकर प्रथम भगवती की उसने यह स्तुति की कि हे महिषासुर के मारनेवाली रुरु दानवोको विदीर्ण करनेवाली त्रिशूल धारण करनेवाली भगवती तुम्हारी सदैव जयहोय हे सम्पूर्ण देवताओ को आनन्द देनेवाली हे त्रैलोक्य की धारण करनेवाली हे जगन्माता तुम्हारी जयहोय हे जगत्पूजित चरणारविन्दे हे त्रैलोक्यशरणे हे भक्तभयहारिणि तुम्हारी जय होय हे कोटि सूर्य्य के समान प्रभाववाली हे पापरूप अन्धकारकी दूर करनेवाली तुम्हारी जय होय हे काली हे कपालिनी हे कंकालिनी तुम्हारी जयहोय हे भगवती तुमको वारंवार नमस्कारहै मेरे मस्तक की भेटसे तुम राजा शूद्रकपर प्रसन्न होवो यह कहकर वीरवर ने खड्ग से अपना शिरकाटडाला यह देखकर राजा शूद्रक दुःख तथा आश्चर्य्य से युक्त होकर शोचने लगा कि सकुटुम्व इस वीरवर ने मेरे लिये यह बड़ा दुष्कर कार्य्य किया इस विचित्र संसार में ऐसा धीर पुरुष कहां मिलसक्ता है जो विना कहे सुनेही परोक्ष मे अपने स्वामी के निमित्त सकुटुम्व अपने प्राणोंको देदे जो इस उपकारका मे कुछ प्रत्युपकार न करूं

तो मेरा प्रभुत्त्वही क्या है और पशुओं के समान इस जीवन को धिक्कारहै यह शोचकर राजा ने खड्ग निकालके भगवती के निकट जाके कहा कि हे भगवती मेरे मस्तककी भेटसे प्रसन्न होकर यह अनुग्रहकरो कि यह वीरवर अपने सब कुटुम्ब समेत जीउठे यह कहके जैसेही उसने अपना शिर काटना चाहा वैसेही यह आकाशवाणी हुई कि हे पुत्र सहसा न करो मैं तुम्हारे सत्त्वसे प्रसन्न हूं यह सकुटुम्ब वीरवर जीउठेगा इस आकाशवाणी को सुनकर राजा अलग छिपकर खड़ाहोगया और सकुटुम्ब बीरवर जीउठा उससमय वीरवर ने अपने स्त्री पुत्र तथा कन्याको जीवित देखकर चकित होके बोला कि लोग भस्म होकर भी कैसे जीउठे और मैंने भी अपना शिर काटडालाथा मैं भी कैसे जीउठा यह भ्रम है अथवा भगवती की कृपा है उसके वचन सुनके उन्होंने कहा कि भगवतीकीही कृपाहै जो हम सब लोग जीउठे उनके यह वचन सत्य जानकर वीरवर भगवती को प्रणामकर सबको साथ लेके अपने घरगया और उनको घर में पहुँचाके फिर आकर राजाके फाटकपर खड़ाहोगया और राजा शूद्रकभी इस सब वृत्तान्तको देखकर ऊपर छिपाहुआही जाकर वहांसे बोला कि फाटकपर कौनहै वीरवरनेकहा कि मैं हूं आपकी आज्ञासे मैं उस स्त्रीको देखनेगयाथा परन्तु वह मेरे देखतेही देखते राक्षसी के समान न जानिये कहांचलीगई यह सुनके राजाने चकितहोके शोचा कि देखो सत्त्ववान् मनुष्य कैसे समुद्र के समान गंभीरहोते हैं जो ऐसे २ कार्य्यों को करकेभी नहीं कहते यह शोचकर उसने अन्तःपुर में जाके वह रात्रि व्यतीतकरके प्रातःकाल सभामें वीरवरके आगे अपने मंत्रियोंसे रात्रिका सबवृत्तान्त कहा और प्रसन्नहोकर वीरवरको लाट तथा कर्नाटदेशका राज्य देदिया तब वीरवर शूद्रककेही समान ऐश्वर्य्यवान् होकर उसका उपकार करताहुआ सुखपूर्व्वक रहनेलगा इस अद्भुत कथाको कहकर वेतालने राजासे कहा कि हे राजा बताओ इन सबमें कौनअधिक वीरथा जानकर भी जो आप उत्तर न देंगे तो आपका शिर फटजायगा राजानेकहा कि इन सबमें राजाशूद्रक अधिक वीरथा यह सुनकर वेतालने कहा कि वीरवर क्योंनहीं अधिकहै जिसकेसमान इस पृथ्वी में होतेहीनहीं अथवा उसकी स्त्री क्योंनहीं अधिकहै जिसने स्त्री होकरभी अपनेआगेही अपनेपुत्रका बलिदान करवाया अथवा उसका पुत्र सत्त्ववरही क्योंनहीं अधिकवीरहै जो बाल्यावस्थाही में ऐसा सत्त्ववान्था यह सुनके राजा ने कहा कि ऐसा तुम सन्देह न करो क्योंकि वीरवर एक सत्कुलमें उत्पन्नहुआ पुरुषथा उसको प्राणों से पुत्रों से तथा स्त्रियोंसे स्वामीकी रक्षाकरनी आवश्यकथी उसकी स्त्री भी सत्कुलमें उत्पन्नहुई बड़ी पतिव्रता थी इससे पतिकेअनुसार कार्य्य करनेके सिवाय उसका अन्य धर्म्मही क्याथा और इन दोनोंसे उत्पन्न हुआ सत्त्वरभी इन्हींके समानथा क्योंकि (यादृशास्तन्तवःकामं तादृशोजायतेपटः) जैसे सूत्र होतेहैं वैसाहीवस्त्र बनताहै परन्तु जिनसेवकोंके प्राणोंकेव्ययसे राजालोग अपनी रक्षाकरतेहैं उन्हींके निमित्त शरीर त्यागनेकी इच्छा करनेवाला राजा शूद्रकही सबसे अधिकथा राजाके यह वचनसुनके वह वेताल राजाके कन्धे से उतरकर फिर उसी अपने वृक्षपर जालटका और राजा फिर उसके लानेके लिये उद्यत हुआ १३२ ॥ इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायां शशांकवतीलम्बकेएकादशस्तरंगः ११ ॥

इसके उपरान्त राजा त्रिविक्रमसेन फिर उसी सीसमके बृक्षके नीचे जाकर उस मृतकको कन्धे पर रखकर चला मार्ग में वेताल बोला कि हेराजा आप बड़े क्लेश में पड़ेहो और मेरे बड़े प्रियहो इससे आप के प्रसन्न करनेको एककथा कहताहूं उसे आप सुनिये उज्जयिनी के पुण्यसेन नाम राजाके हरिस्वामी नाम एक गुणवान्ब्राह्मण मंत्रीथा उसके देवस्वामी नाम एकपुत्र और अत्यन्तरूपवती सोमप्रभानाम कन्याथी जब वह कन्या विवाह के योग्य हुई तब उसने अपनी माताके द्वारा अपने पिता तथा भाई से कहलवाया कि किसी शूर ज्ञानी अथवा विज्ञानी के साथ मेरा विवाह करना नहीं तो मैं अपने प्राण देदूंगी यह सुनकर उसका पिता ऐसाहीवर ढूंढनेलगा इतने में राजा पुण्यसेनने उसे दक्षिण में किसी राजासे सन्धि करनेके लिये भेजा वहां जाकर उसने वहांके दाक्षिणात्य राजासे संधि करवादी वहीं एकब्राह्मणने उसकी कन्याकी प्रशंसा सुनके उससेकहा कि आप अपनी कन्याका विवाह मेरे साथ करदीजिये यह सुनकर उसनेकहा कि मेरीपुत्री ज्ञानी विज्ञानी तथा शूरसे अपना विवाह करना चाहती है इनमें से कौनसा गुण तुममें है वह मुझसे कहो हरिस्वामी के यह वचन सुनकर उस ब्राह्मण ने कहा कि मैं विज्ञानीहूं यह सुनके हरिस्वामी ने कहा कि अच्छा अपना विज्ञान मुझेदिखाओ तब वहब्राह्मण एक आकाशगामी रथबनाकर उसपर हरिस्वामीको बैठालके स्वर्गादिक लोक दिखालाया इससे हरिस्वामी ने प्रसन्नहोके उसे अपनी कन्या देनी स्वीकारकियी और उसदिनसे सातवां दिन लग्नका निश्चयकिया उसीसमय उज्जयिनीमें देवस्वामीकेपास आकर किसी ब्राह्मणनेकहा कि तुम अपनी बहिनकाविवाह मेरेसाथ करदो यह सुनकर देवस्वामीने कहा कि मेरी बहिन शूरज्ञानी अथवा विज्ञानी के साथ अपना विवाहकरेगी इनमें से आपमें कौनसागुणहै वह मुझसेकहिये उसने कहा कि मैं शूरहूं यह सुनके देवस्वामीने उसके शस्त्र अस्त्रादि विद्याकी परीक्षा करके उसे अपनी बहिनका देना स्वीकार करलिया और सातवेंहीदिन लग्नका निश्चयकिया उसीसमय उसकी माताकेपास देवस्वामी के परोक्षमें आकर एक ब्राह्मण ने कहा कि तुम अपनी कन्याका विवाह मेरेसाथकरदो यहसुनके उसने कहा कि तुम शूरज्ञानी अथवा विज्ञानी इनमें से कौनहो क्योंकि ऐसेही पतिकेसाथ मेरी कन्या अपना विवाह करना चाहती है यह सुनकर उस ब्राह्मणने कहा कि मैं ज्ञानीहूं तब उसने उसका भूतभविष्य तथा वर्त्तमान तीनों कालोंका ज्ञान देखकर उसे अपनी कन्यादेनी अंगीकारकियी और सातवें दिन लग्नका निश्चयकिया इसके उपरान्त दूसरे दिन हरिस्वामीने अपनी स्त्री तथा पुत्रसे घरमें आकर कहा कि मैं अपनी कन्याकेलिये वरढूंढ़आया हूं यह सुनकर उनदोनोंने भी कहा कि हमने भी वरढूंढा है यह सुनके वह हरिस्वामी बहुत चिन्ता युक्तहुआ कि मैं इन तीनोंवरोंमें से किसकेसाथ अपनी कन्याका विवाहकरूंगा इसके उपरान्त विवाहकेदिन ज्ञानी विज्ञानी तथा शूर यह तीनोंवर हरिस्वामीके घरपरआये और वह सोमप्रभा न जाने कहांचलीगई बहुत ढूंढनेपरभी उसका पतानलगा इससे हरिस्वामी ने घबराके ज्ञानीसे पूंछा कि बताओ इससमय मेरी कन्या कहां चलीगईहै उसनेकहा कि धूमशिखनाम राक्षस उसे बनमें हरलेगया है ज्ञानीके यहवचन सुनकर हरिस्वामी हाय हाय करके रोनेलगा उसे रोते

देखकर विज्ञानी ने कहा कि धैर्य्यधरो मैं तुमको उसीकेपास पहुंचायें देताहूं यह कहकर वह आकाशगामी रथपर हरिस्वामी ज्ञानी तथा शूरको चढ़ाके विन्ध्याचलके वनमें जहां वहकन्याथी लेगया वहां शूरने उसराक्षसकेसाथ बड़ा युद्धकरके अर्धचन्द्रबाणसे उसका शिरकाटडाला राक्षसके मरजानेपर सोमप्रभाको लेकर हरिस्वामी उनसबसमेत अपने घरचलाआया वहां लग्नकेसमय ज्ञानी विज्ञानी तथा शूर का महाविवादहोनेलगा ज्ञानीनेकहा कि जो मैं अपने ज्ञानसे न जानता कि यहकन्या कहांहै तो यह कैसे आती इससे इसका विवाह मेरेही साथ होना चाहिये विज्ञानी ने कहा कि जो मैं आकाशगामी विमान न बनाता तो यहकन्या कैसे आती इससे मेरेही साथ इसका विवाह होना चाहिये तब शूरने कहा जो मैं राक्षसको न मारता तो तुम लोगोंका यत्न कैसे सिद्धहोता इससे इसका विवाह मेरेसाथ होना योग्य है उनतीनोंका यह विवाद सुनकर हरिस्वामी घबराके चुपहोकर बैठरहा इससे हे राजा अब तुम बताओ कि वह कन्या किसको मिलनी चाहिये जो जानकर भी इसका ठीक २ उत्तर न दोगे तो तुम्हारा शिरफटजायगा यह सुनके राजानेकहा कि शूरकेसाथ उसका विवाह होना चाहिये क्योंकि उसने अपने बाहुबलसे राक्षसको जीतकर कन्यापाई है और ज्ञानी विज्ञानी तो केवल उसकेसहायकथे क्योंकि ज्योतिषी और बढ़ई यह दोनों सदैव पराया कार्य्य कियाही करते हैं राजाके यह वचन सुनके वह वेताल फिर उसके कन्धेपरसे उतरकर उसी वृक्षपर जालटका और राजा उसके लेने के लिये फिरचला ५०॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बके द्वादशस्तरंगः १२॥

इसके उपरान्त राजा त्रिविक्रमसेन फिर उस वेतालको सीसमके वृक्षसे उतारकर कन्धेपर रखके लेचला मार्गमें वेतालने उससे कहा कि हे राजा तुम बड़े बुद्धिमान् और सत्त्ववान्हो इससे मैं तुम्हारे स्नेहसे तुमको प्रसन्न करनेकेलिये एक कथा कहताहूं उसे सुनो कि शोभावती नाम नगरीमें यशःकेतु नाम एक राजाथा उसके राज्यमें एक पार्वतीजीका मन्दिरथा उस मन्दिरके दक्षिणकी ओर गौरीतीर्थ नाम एक तड़ागथा आषाढ़की शुक्लाचतुर्दशीके दिन बहुत दूर २ से बहुतसे लोग वहां स्नान करनेको आया करतेथे एक समय उसी चतुर्दशीके दिन ब्रह्मस्थलनाम ग्रामसे धवलनाम एक युवा धोबी उस तीर्थपर स्नान करनेको आया वहां शुद्धपट नाम धोबीकी मदनसुन्दरी नाम कन्याको देखकर वह बहुत कामसे पीड़ित होगया और उसका नाम तथा कुल पूछकर अपने घरमें जाके बिना कुछ खायेहुए ही व्याकुलहोके पलँगपर लेटा उसकी यह दशा देखके उसकी माताने उससे सब वृत्तान्त पूछके अपने विमलनाम पतिसे कहा यह सुनकर विमल धवलकेपास जाकर बोला कि हे पुत्र इससाधारण कार्य्यके निमित्त तुम क्यों व्याकुल होतेहो मैं शुद्धपटसे जो तुम्हारे निमित्त कन्या मांगूंगा तो वह अवश्य देदेगा क्योंकि हम कुल धन तथा कर्म्म आदि किसी काममें भी उससे कम नहीं हैं वह मुझे जानताहै और मैं उसे जानताहूं इससे यह काम कुछ दुष्कर नहीं है इसप्रकार उसे समझाकर और भोजन कराके दूसरे दिन विमलने अपने साथ धवलको भी लेजाकर उस शुद्धपटसे कन्यामांगी इससे शुद्धपटने बहुत प्रसन्न होकर शुभलग्नदेखके धवलकेसाथ अपनी मदनसुन्दरी कन्याका विवाह करदिया विवाहकरके धवल

मदनसुन्दरी को साथलेके अपने पिता के घरमें आकर सुख पूर्वक रहनेलगा एकसमय मदनसुन्दरी का भाई वहां आया और कुशलप्रश्न तथा सत्कार ग्रहण करनेके पीछे बोला कि मैं मदनसुन्दरी तथा धवलके लिवानेके लिये आयाहूं क्योंकि मेरे यहां देवी पूजाका मेला होनेवालाहै उसके यह वचन सुनके उस दिन उसे अपने यहां रखके सुन्दर भोजनादि करवाके दूसरे दिन धवल मदनसुन्दरी समेत उसके साथ अपने श्वशुरके घरको चला चलते २ उस शोभावतीरी नाम पुरी में पहुंचकर धवलने भगवतीका मन्दिर देखके अपने सालेसे कहा कि चलो भगवतीके दर्शनकरें उसने कहा कि खाली हाथ देवताके दर्शन न करना चाहिये इससे अभी न चलो उसके यह वचन सुनकर तुम ठहरो मैं जाताहूं यह कहके धवलभगवतीके मन्दिरमें चलागया वहां अष्टादशभुजवाली महिषासुरपर चढ़ीहुई भगवतीको देखके प्रणाम करके उसने शोचा कि बहुधा लोग जीवोंका बलिदेकर भगवतीका पूजनकिया करतेहैं जो मैं अपनाही शिरभगवतीके अर्पणकरूं तो बहुत अच्छाहै यह शोचके उसने वहीं किसीसे खड्ग मांगकर घंटेकी जंजीरमें अपने शिरके वालोंको बांधके खड्ग से अपना शिर काटडाला इससे उसका धड़ पृथ्वीमें गिरपड़ा और उसकाशिर घंटेमें लटकारहा उसे गयेहुए बहुत देरजानके उसका सालामदनसुन्दरीको वाहरही छोड़के उसे देखनेको मन्दिर में गया वहां उसको शिरकटाहुआ देखके उसने भी शोकसे मोहित होके अपना शिर खड्गसे काटडाला जब उसे भी बहुत देरलगी तो मदनसुन्दरी भी देवीके मन्दिरमेंगई और वहां अपनेपति तथा भाईको मरादेखकर व्याकुल होकर पृथ्वीमें गिरपड़ी और क्षणभरमें उठके बहुत रोदन करके उसने शोचा कि मैं भी अब इस पापी शरीरको धारण करके क्या करूंगी यह शोचके उसने भगवतीसे हाथ जोड़के विनयकरी कि हेभगवती हेसम्पूर्ण संसारके विधान करनेवाली हे अपने पतिके अर्द्धांगमें निवास करनेवाली हे दुःखहारिणी हे शरण में आईहुई सम्पूर्ण स्त्रियोंकी रक्षा करनेवाली आपने एकसाथही किस अपराधसे मेरे पति और भाईको हरलिया मुझ दीनके साथ आपको ऐसी कठोरता करनी उचित न थी अब अन्त समयमें मेरे यह दीनवचन कृपा करके सुनिये मैं इसअभागी शरीरको यहां त्यागतीहूं इसके उपरान्त जहां कहीं मेराजन्महोय वहां यही दोनों मेरे भाई और पतिहोयँ इसप्रकार विज्ञापना करके और प्रणाम करके उसने अशोक वृक्षमें फांसी लगाकर जैसेही अपना शिर उसमें डालनाचाहा वैसेही यह आकाशवाणीहुई कि हे पुत्री साहस न करो तुम्हारे इस सत्त्वसे मैं प्रसन्नहूं तुम अपने पति तथा भाई के शिरोंको उनके धड़ोंसे जोड़दो तो वह जी उठेंगे यह आकाशवाणी सुनके उसने जल्दीसे जाके अपने पतिकाशिर भाईके धड़पर और भाई का शिर अपने पतिके धड़पर रखकर जोड़ दिया शिरोंके जोड़तेही वहदोनों जीउठे और प्रसन्नहोके भगवतीको प्रणामकरके अपना २ वृत्तान्त कहतेहुए मदनसुन्दरीको साथलेके चले चलते २ मदनसुंदरी उन दोनोंके शिरोंकी अदल बदल देखके बहुत व्याकुलहोकर शोचनेलगी कि मैं क्या करूं हे राजा अब तुम्हीं बताओ कि उनदोनोंमेंसे उसका कौनपति होनाचाहिये जानकरभी जो उत्तर न दोगे तो तुम्हारा शिर फटजायगा यहसुनकर राजानेकहा कि जिसधड़ पर उसके पतिकाशिरहै वही उसकापतिहै

क्योंकि संपूर्ण अंगोंमें शिरप्रधानहै और उसीसे मनुष्य पहचानाजाताहै राजाके यहवचन सुनके वेताल उसके कन्धेपरसे उतरकर फिर उसी वृक्षपर चलागया और राजा फिर उसे लेनेकेलियेगया ७४॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीनामलम्बकेत्रयोदशस्तरंगः १३॥

इसके उपरान्त फिर राजा त्रिविक्रमसेन शीशमके वृक्षपरसे वेतालको उतार कन्धेपर रखके लेचला मार्गमें वेतालनेकहा कि हे राजा आपके चित्तके वहलानेके निमित्त मैं एककथा कहताहूं उसे सुनोपूर्व समुद्र के तटपर ताम्रलिप्तीनाम नगरीमें चन्द्रसेननाम बड़ाप्रतापी शूर यशस्वी और धर्मात्मा एकराजा था एकसमय दक्षिण देशका सत्त्वशीलनाम एकराजपुत्र राजा चन्द्रसेनके द्वारपर आके निर्धनता के कारण चिथड़े लपेटकर बैठा बहुत वर्षोंतक इसीप्रकार वह राजद्वारपर बैठतारहा परन्तु राजासे उसे कुछ फल नहीं प्राप्तहुआ एकदिन उसने शोचा कि जो राजाके यहां मेरा परमेश्वरने जन्मदियाथा तो इतना निर्धन मुझे क्योंकिया औरजो निर्धनभी किया तो मुझे इतनामानी क्यों बनाया देखो यहराजा मुझे इतने दिनोंसे क्लेशित देखकरभी कुछभी ध्याननहींदेता उसके इसप्रकार शोचतेही शोचते वह राजा घोड़ेपर चढ़के शिकार खेलनेकोचला और वह राजपुत्रभी हाथमें लाठी लेकर उसी के आगे २ दौड़ा वनमें पहुंचके राजाने बहुत से जीवोंका शिकारकरके एक मतवाले शूकरका पीछाकिया उसके पीछे दौड़ते २ राजा वनमें बहुत दूर निकलगया वहां वहशूकर तो तृण तथा लताओं से आच्छादित एक मार्गमें चलागया और राजा उससे निराशहोकर लौटनेका विचार करनेलगा परन्तु उसे वहांदिशाओं का भ्रमहोगया इससे वह बहुत व्याकुलहोगया एक वह अकेला राजपुत्रही उसे वहां सहायक दिखाई दिया उसे अपनेसाथ आया जानकर राजाने उससे पूंछा क्या तुमको यहांसे ताम्रलिप्तीका मार्गमालूम है उसने हाथ जोड़केकहा कि हां मैं जानताहूं परन्तु मध्याह्नकासमय है इससे आप कुछ विश्रामकर-लीजिये उसके यह वचन सुनके राजाने उससे कहा कि अच्छा देखो यहां कहीं जलमिलसक्ताहै यह सुनके उसने एकऊंचे वृक्षपर चढ़के कुछ दूरपर एकनदी देखकर वृक्षपरसे उतरके राजाको नदीकेतटपर लेजाकर घोड़ेके आगे घासनोचकरडाली और स्नानसे निवृत्तहुए राजाको अपने चिथड़ेमें से खोल कर सुन्दर आमले धोकरदिये उन आमलोंको देखके राजाने पूंछा कि यह आमले तुम यहां कहां से लायेहो उसनेकहा कि हे स्वामी इन्हीं आमलोंको खाकरकर मैंने आपके द्वारपर दशवर्ष व्यतीतकियेहैं इसीसे आजभी यह मेरे वस्त्रमेंबंधेहैं उसके यहवचनसुनके राजानेकहा कि सत्त्वशील तुम्हारानाम यथा-र्थ है और शोचा कि उन राजालोगोंको धिक्कारहै जो दीनोंपर दया नहींकरते और उसके परिकरवालों कोभी धिक्कारहै जो उसे उत्तम शिक्षानहीं देते यह शोचके उसने दो आमले खाके जलपीकर विश्राम किया और क्षणभर विश्रामकरके घोड़ेपर चढ़के उसी राजपुत्रके बतायेहुए मार्गसे अपनी नगरी में आकर उसे बहुतसे रत्न तथा ग्रामदेकर अपने मंत्रियों से उसकी बड़ी प्रशंसाकी इसप्रकार अपने योग्य धनपाकर सत्त्वशील कृतार्थ होकर राजा चण्डसेनकेपास सुखपूर्वक रहनेलगा एकसमय राजा चण्ड-सेनने उस सत्त्वशीलको सिंहलद्वीपके राजाकी कन्या अपने लिये मांगनेको उसे सिंहलद्वीपके राजा

के पास जानेकी आज्ञादी राजाकी आज्ञासे सत्त्वशील बहुत से ब्राह्मण तथा क्षत्रियों को साथ लेकर जहाज़पर चढ़केचला जब जहाज़ समुद्रके बीचमें पहुंचा तो जलमें से एक बड़ीभारी सुवर्णकी ध्वजा निकली आकाशमें बादल घिरके जलकी वृष्टि करनेलगे और तीव्रवायु चलनेलगी इससे वह जहाज उस ध्वजामें टक्करखाकर डूबनेलगा यह देखके जहाजमें बैठेहुए ब्राह्मण तथा क्षत्रीराजा चंडसेनकानाम लेलेकर हाय२ करके चिल्लानेलगे उनसबका यह शब्द सुनकर वीर सत्त्वशील कमर बांध हाथमें खड्ग ले समुद्रकाही वह अपराध जानके मानों उसकेसाथ युद्धकरने को समुद्रमें कूदपड़ा वह जहाज वायुके वेगसे टूटगया और जहाजपर जो लोग बैठेथे उन्हें जलजन्तुखागये परन्तु सत्त्व शील समुद्रमें जातेही एक दिव्यपुरीमें पहुंचगया उसपुरीमें सुवर्ण के बड़े २ महलबनेथे और उपवनोंमें बहुतसी मनोहर बावड़ी भरीहुईथीं जिनकी रत्नजटित सीढ़ियांथीं ऐसीसुन्दर उसपुरीमें अनेकध्वजाओंसेयुक्त भगवतीका एकसुमेरुके समान ऊंचामंदिर उसनेदेखा उसमें जाकर भगवतीको प्रणामकरके और उनकीस्तुति करके वह आश्चर्यपूर्वक शोचनेलगा कि यह क्या इन्द्रजालहै ४६ इतने में उसी मंदिरके एकप्रभामंडलमें से एकदिव्यकन्या किवाड़खोलकर आई जिसके नेत्र नीलकमलके समान मुखप्रफुल्लित पंकज के समान तथा हास्य पुष्पोंके समान था और उसके सम्पूर्ण अंगकमलकी डंडीके समान कोमलथे उसकन्याको देखकर सत्त्वशीलकाचित्त उसपर आशक्तहोगया भगवतीका पूजनकरके वहकन्या फिर उसीप्रभामंडलमें चलीगई और सत्त्वशील भी उसीके पीछे२ चलागया वहांजाके उसने एक अन्य उत्तमपुरदेखा उसपुर के एकअत्युत्तम मंदिरमें वहकन्या एकअतिउत्तम मणिमय पलँगपरजाके बैठी उसे बैठीदेखके सत्त्वशील भी उसीके पास जाकर बैठगया और उसीके मुखको टकटकी बांधके देखनेलगा देखते२ उसके रोमांच आगये और यह इच्छाहुई किमैं इस कन्याका आलिंगनकरूं उसका यह अभिप्राय जानकर उसकन्या ने अपनी चेरियोंकी ओर देखा चेरियोंने अपनी स्वामिनी के अभिप्रायको जानकर सत्त्वशीलसे कहा कि आप हमारे अतिथि हैं इससे प्रथम चलके स्नान भोजन कीजिये फिर यहां आकर बैठियेगा उन के यह वचनसुनके सत्त्वशीलने उनकी बताईहुई बावड़ीमें जैसेही गोतामारा वैसेही ताम्रलिप्ती नगरीमें राजा चंडसेनके उपवनकी बावड़ीमें आनिकला यह विचित्रलीला देखके उसने शोचा कि यह क्या बातहै कहां वह दिव्यपुर और कहां यह उपवन कहां दिव्य कन्याका अमृतसमान दर्शन और कहां उसका विषके समान वियोग यह स्वप्न तो है नहीं क्योंकि मुझे निद्राही नहीं आईथी मैं जानताहूं कि उन कन्याओंनेही मुझे छला है यह शोचके वह उसी कन्याका ध्यान करके उसीउपवनमें उन्मत्त के समान भ्रमण तथा विलाप करनेलगा उद्यान पालकोंने उसकी यह सब दशा राजाचंडसेन से जाकर कही यह सुनकर राजाने वहां आके उसे सावधान करके पूछा कि हे मित्र यह क्याबातहै तुम कहांगये थे और कहां आनिकले राजाके यह वचनसुनके सत्त्वशीलने अपना सब वृत्तान्त कहदिया उसवृत्तान्तको सुनके राजाने शोचा कि मेरेही पुण्योंसे यह कामसे पीड़ित हुआहै अब इससे उद्धार होने का मुझे अवसर मिलाहै यह शोचके राजाने उससे कहा कि व्यर्थ शोक मतकरो मैं तुमको उसी मार्गसे

तुम्हारी प्रियाके पास पहुँचादूंगा यह कहकर राजाने स्नानकराके उसे भोजनकरवाया दूसरेदिन मंत्रियोंको राज्यसौंपकर राजाचंडसेन सत्त्वशीलको जहाजपर चढ़ाके समुद्रमें लेचला जब समुद्र के बीचमें जहाज पहुँचा तो वह ध्वजा जलमेंसे फिर निकली उसे देखके सत्त्वशीलने राजासे कहा कि हे स्वामी यह वही ध्वजाहै जब यह जहाज ध्वजासे टकरखाके टूटनेलगेगा तब मैं इसपरसे कूदूंगा और आपभी मेरे पीछे कूदियेगा यह कहके उस ध्वजाके निकट पहुँचके जहाजको टूटते देखके सत्त्वशील जल में कूदा उसके पीछे राजाभी कूदपड़ा कूदतेही वह दोनों उस दिव्यपुरमें पहुँचे वहां राजा भगवती के दर्शनकरके आश्चर्य्य पूर्वक एक स्थानमें सत्त्वशील समेत बैठगया इतनेमें प्रभामंडलसे निकलकर वह कन्या भगवतीके पूजनको आई उसे देखकर सत्त्वशीलने राजासे कहा कि यह वही कन्याहै उसके वचन सुनके और उसकन्याके स्वरूपको देखके राजाने अपने चित्तमें कहा कि इसपर आशक्तहोना इसको उचितही है और राजाको देखकर वह कन्याभी यह कोई बड़ा तेजस्वी पुरुष है यहजानके उसको देखतीहुई भगवतीका पूजनकरके अपने स्थानको लौटगई परन्तु राजाउससे कुछभी न कहके उसवन की शोभा देखनेको चलागया क्षणभरमें उसकन्याने अपनी सखीसे कहा कि तुम जाकर देखो कि वह महात्मा जो इस मंदिरमें बैठाथा सो कहां है उससे जाके कहो कि मेरी स्वामिनी आप को अतिथि सत्कार ग्रहण करनेको बुलावतीहै उसके यह वचनसुनके सखीने उपवनमें जाके राजासे अपनी स्वामिनीके वचनकहे उसके वचनसुनकर राजाने निरपेक्षहोके कहा कि इतनाकहनाही बहुतहै आतिथ्य का क्याप्रयोजनहै राजाके यहवचन उसने अपनी स्वामिनीसे जाकर कहदिये यहसुनकेवहकन्या राजाको बड़ा धैर्य्यवान् जानकर आपही उपवनमें राजाके निकटआके बोली कि हे महाभाग मेरे स्थानपरचलके अतिथि सत्कारको ग्रहणकीजिये यह सुनके राजाने उससे कहा कि सत्त्वशीलके कहनेसे मैं यहां भगवतीके दर्शन करनेको आयाथा सो भगवतीके दर्शनके उपरान्त तुम्हारेभी दर्शन हुए इससे अधिक और क्या अतिथि सत्कारहोगा राजाके यह वचन सुनके उसकन्याने कहा कि अच्छा आपकृपाकरके चलकर मेरा दूसरा पुरही अवलोकनकीजिये यह सुनके राजाने हँसकर कहा कि वही पुरहै जहां वह स्नान करनेकी बावड़ी है यह सुनके उसने कहा ऐसा न कहिये मैं छलिन नहींहूं और आपमेरे पूज्य हो आपकेसाथ मैं क्या छलकरूंगी उसके इसवचनको मानकर राजा चण्डसेन सत्त्वशील समेत उसी के साथ द्वितीयपुरमें गया उसपुरके सबगृह सुवर्णमयथे और उसके उपवनों में ऐसे वृक्षलगेथे जिनमें सब ऋतुओंके फलफूल सदैव लगेरहतेथे ऐसे सुन्दर उसपुरके मध्यवर्त्ती एकदिव्य मंदिरमें राजाको सत्त्वशील समेत लेजाकर रत्नजटित आसनपर बैठालके अर्घ पाद्यादि यथायोग्य पूजनकरके उसकन्या ने कहा किमैं कालनेमिनाम दैत्यकी पुत्रीहूं विष्णुभगवान्ने मेरे पिताको मारडाला है यह दोनों मेरे पिताके पुर विश्वकर्माके बनायेहुएहैं इनके निवासी न कभी वृद्ध होते हैं न मरते हैं अब आपही मेरे पिताहो संपूर्णपुर समेत मैं आपके वशीभूतहूं उसके यह वचनसुनके राजाने कहा कि हे पुत्री मैंने अपने मित्र इस सत्त्वशीलको तुम्हें देदिया उसने कहा कि जो आपकी आज्ञा तब राजाने सत्त्वशीलके

साथ उसका विवाह करवाके सत्त्वशीलसे कहा कि मैंने तुम्हारे दो आमले खायेथे उनमेंसे एकके ऋण से तो मेरा उद्धारहुआ अब एकका ही ऋण बाकीरहा उससे यह कहके उस दैत्यकन्यासे कहा कि मुझे अपनी पुरीजानेका मार्ग बताओ उसके यह वचनसुनकर उस कन्या ने अपराजितनाम एकखड्ग और जरामृत्यु नाशक एक फलदेकर बावड़ी के किनारेपर राजाको लेजाकर कहा कि आप इस मे गोता मारियेगा तो अपनी पुरीमें पहुँच जाइयेगा उसके यह वचनसुनके राजाने जैसेही बावड़ीमें गोतामारा वैसेही अपनीपुरीमें आनिकला और उसखड्गके प्रभावसे राजाकी सम्पूर्ण कामना सिद्धहोगई औरसत्त्वशीलभी उस दैत्यकन्याको पाकर सुखपूर्वक उनदोनों पुरोंमें विहार करनेलगा अब हे राजातुम बताओ कि सत्त्वशील और राजाचंडसेन इनदोनोंमें से समुद्रके कूदनेमें कौन अधिक सत्त्ववान्था जो जानकर तुम उत्तर न दोगे तो तुम्हारा शिर फ़टजायगा वेतालके यह वचनसुनके राजा त्रिविक्रमसेन ने कहा कि इन दोनोंमें से सत्त्वशीलही अधिक सत्त्ववान्था क्योंकि वह विना तत्त्वजानेही निरपेक्षहोकर समुद्र में कूदाथा और राजा तत्त्वजानकर कूदाथा इससे उसके समान नहीं होसक्ता राजाके यहवचन सुनकर वेताल फिर अपने स्थानको चलागया और राजा उसके लेनेके लिये फिरचला ठीकहै (प्रारब्धे ह्यसमाप्तेकार्येशिथिलीभवन्तिकिंसुधियः) क्या बुद्धिमान्लोग प्रारंभ कियेहुए कार्य्यको विना समाप्त कियेही शिथिल होते हैं ११५ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेचतुर्द्दशस्तरंगः १४ ॥

इसके उपरान्त फिर शीशमके वृक्षके पास जाकर राजा त्रिविक्रमसेन वेतालको पकड़के कन्धे पर रखकर ले चला मार्ग में वेतालने कहा कि हे राजा आपके श्रम दूर करनेको मै एक कथा कहताहूं उसे आप सुनिये कि अंगदेशमें वृक्षघट नाम एक ग्रामहै उसमें विष्णु स्वामी नाम एक याज्ञिक ब्राह्मणरहता था उसके बड़े चतुर तीन पुत्रथे एकसमय विष्णु स्वामी ने यज्ञका प्रारम्भ करके अपने तीनो पुत्रों को समुद्रमें से कछुआ लानेके लिये भेजा पिताकी आज्ञासे समुद्रके तटपर जाके बड़े भाई ने अपने दोनों छोटे भाइयोंसे कहा कि तुम दोनोंमें से कोई इस कछुएको लेलो यह सुनकर छोटे भाइयोंने कहा कि जो तुम नहीं लेतेहो तो हम क्यों लेलें यह सुनके बड़ा भाई बोला कि तुम दोनो में से कोई इस कछुए को अवश्य लेलो नहीं तो तुमको पिताके यज्ञ भंग करनेका पाप होगा और इसी पापसे अन्तमें नरक होगा यह सुनके उन दोनोंने कहा कि हमारेहीलिये धर्मजानतेहो अथवा अपनेलिये भी पापकाभय तो हम तीनोंको समानही है यह सुनके उसनेकहा कि मैं भोजनचंगहूं इससे इस निंद्य वस्तुको नहीं छुऊंगा यह सुनके मझले भाईने कहा कि मैं तुमसे अधिकहूं क्योंकि मैं नारीचंगहूं यह छोटा भाई चाहै इसको लेले यह सुनकर छोटाभाई भृकुटी कुटिल करके बोला कि मैं तुमसे भी अधिकहूं क्योंकि मैं शय्याचंगहूं इसप्रकार विवाद करके वह तीनो कछुएको छोड़के चतुरताका निर्णय करानेके लिये विटंकपुरमें राजा प्रसेनजितके पास गये वहां उन तीनो ने राजासे अपना सब वृत्तान्त कहा उस वृत्तान्तको सुनके राजा ने कहा ठहरो मैं तुम्हारा निर्णय करदूंगा यह कहके भोजनके समय राजाने अपनेही भोजन में से उन

तीनोंको अपनेही आगे पट्रस भोजन दिलवाया भोजन पाके दोनों छोटे भाइयों ने तो खाया परन्तु वड़े भाई भोजनचंगने भोजन न करके उसओरसे अपना मुख फेरलिया यहदेखके राजाने उससेकहा कि यह स्वादिष्ट पदार्थ आप क्यों नहीं खातेहो राजाके वचन सुनके उसने कहा कि यद्यपि यह भोजन बहुत स्वादिष्टहै तथापि इसमें मृतकोंके धुएंकी गन्धि आती है इससे मैं इसे नहीं खासक्ता उसके यहवचन सुनकर राजाने वहां बैठेहुए सब लोगोंको भोजन सुंघाया परन्तु किसीको उसमें दुर्गन्धि नही मालूमहुई फिर राजाने भोजनके अधिकारियोंसेपूछा तो मालूमहुआ कि श्मशान भूमिके निकटहोनेवाले चावल का भात उस भोजनमेंथा यहजानके राजाने वहुतप्रसन्नहोके उसे दूसरा भोजनदिलवाया और कहा कि तुम यथार्थ भोजनचंगहो इसके उपरान्त रात्रिकेसमय मझले भाई नारीचंगके पास शयनस्थानमें राजा ने अत्यन्त रूपवती वेश्या अपने सेवकोंकेसाथ भेजी जैसेही वहवेश्या उसके निकटपहुंची वैसेही उसने अपनी नाक बन्दकरके राजाके सेवकोंसे कहा कि इसे जल्दी मेरे पाससे लेजाओ नहीं तो मेरे प्राण निकल जायँगे क्योंकि इसके शरीरसे बकरेकी दुर्गंधि आरही है उसके यहवचनसुनके राजाके सेवकोंने उस वेश्याको लेजाके राजासे उसका सववृत्तान्त कहा तव राजाने नारीचंगको अपने पास बुलाके कहा कि जिसके शरीरमें अगर चन्दन तथा कपूरलगाहुआहै उसमें बकरेकी दुर्गंधि कैसे आसक्ती है उसनेकहा कि नहीं मेरे कहनेमें आप सन्देह न समझिये उसके यहवचनसुनके राजाने युक्तिपूर्व्वक उस वेश्यासे पूछ करजाना कि वाल्यावस्थामें उसवेश्याकी पालना वकरीकेही दूधसे हुईथी यहजानके राजाने वहुतआश्चर्य्यित होके नारीचंगकी वड़ी प्रशंसाकी तदनन्तर छोटे भाई शय्याचंगको बड़े सुन्दर मंदिरमें सोने के लिये सात तोसकों का बिछाहुआ पलँग राजाने दिवाया उस शय्यापर घंड़ीभर सोके शय्याचंग अपनी पीठको दवाताहुआ महा चिल्लाकर उठा उसके शब्दको सुनकर राजाके सेवकोंने उसकी पीठमें बालकासा लाल चिह्न देखकर राजासे जाकर सब वृत्तान्त कहा यह सुनकर राजाने उनसे कहा कि जाकर देखो पलँगमें कुछहै तो नहीं यह आज्ञापाके सेवकोंने सात तोसकोंके नीचे पलंगपर बालको पाकर राजाको लाकर दिखाया उसे देखके राजाने आश्चर्य्य पूर्व्वक उस रात्रिको व्यतीत करके उन तीनोंको वड़ा चतुर जानके प्रातःकाल एक २ लाख अशर्फी उन्हेंदीं इससे वह सुखी होकर अपने पिताके यज्ञ को भूलकर वहीं रहनेलगे यह कथा कहके वेतालने राजासे पूछा कि हे राजा आपके विचारमें इनतीनों चंगोंमें से कौन अधिकथा जो जानकर भी उत्तर न दोगे तो तुम्हारा शिर फटजायगा यह सुनके राजाने कहा किइन में शय्याचंग सवसे अधिकथा क्योंकि उसके शरीरमें वालका चिह्न प्रत्यक्ष दिखाई दिया और उन दोनों में यह सन्देहहै कि कदाचित् उन्होंने वह बात किसी से पूछ भी लीहो राजाके यहवचन सुनकर वेताल फिर अपने वृक्षपर जालटका औरराजा भी उसे लेनेको फिर चला ५२॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशाङ्कवतीलम्बकेपञ्चदशस्तरंगः १५॥

इसके उपरान्त फिर राजा त्रिविक्रमसेन उसी शीशमके वृक्षपरसे वेतालको उतार कन्धेपर रखकर लेचला मार्ग में वेतालने कहा कि हे राजा कहां तो राज्य कहां रात्रिके समय श्मशानमें घूमना क्या

भूतोंसे व्याप्त इस श्मशान में आपको भयनहीं मालूमहोता उस भिक्षुकके कहने से आपनें यह बड़ा कठिन कार्य्य स्वीकारकिया है इससे आपके चित्तके वहलाने के लिये मैं एक कथा आपसे कहताहूं कि अवन्ति देशमें जो उज्जयिनीनाम नगरी है उसे ब्रह्माने सृष्टिके आदिमें वनायाथा इसका सतयुग में पद्मावती त्रेतामें भोगवती और द्वापरमें हिरण्यवतीनामथा अव कलियुगमें यह उज्जयिनी कहा- तीहै ऐसी प्राचीन इस नगरीमें वीरदेवनाम एक राजाथा उसके पद्मरतिनाम रानीथी एक समय राजा वीरदेवपद्मरति रानीको साथ लेकर पुत्रकी प्राप्तिकेलिये श्रीशिवजीके प्रसन्न करनेको गंगाजीके तटपर तपस्या करनेलगा वहुत कालतक तप करनेमे प्रसन्नहुए श्रीशिवजीकी कहीहुई यह आकाशवाणी उसे सुनाईदी कि हे राजा तुम्हारे वड़ा शूरवीर पुत्र होगा और अप्सराओ से भी अधिक रूपवती एक कन्या होगी इस आकाशवाणीको सुनके राजा वीरसेन प्रसन्नहोके रानी समेत अपनी नगरीमें चला आया वहां प्रथम उसके शूरदेव नाम एक पुत्र उत्पन्न हुआ फिर अत्यन्त रूपवती कन्या उत्पन्नहुई उसका नाम राजाने अनंगरति रक्खा जव वह अनंगरति तरुणहुई तो राजा वीरदेवने उसके समान वर मिलनेकेलिये पृथ्वीके सम्पूर्ण राजाओं के चित्र मंगवाये परन्तु उनमे से कोई भी अनंगरतिके समान रूपवान् नहीं निकला इससे राजाने अनंगरतिसे कहा कि हे पुत्री मुझे तुम्हारे समान कोई वर नहीं मिलताहै इससे तुम स्वयंवर करके जिस राजाके साथ चाहो उसके साथ अपना विवाह करलो अपने पिताके यह वचन सुनके अनंगरतिने कहा कि हे तात लज्जाके कारण मैं स्वयंवर नहीं करना चाहतीहूं किन्तु मेरी यह इच्छाहै कि जो कोई सुन्दर युवा पुरुष एक अपूर्व विज्ञान जानताहो उसके साथ आप मेरा विवाहकर दीजिये अनंगरतिके यह वचन सुनकर राजा वीरदेव ऐसाही वर ढूंढनेलगा इतने मे इस समाचारको सुनके दक्षिण दिशासे चारवीर विज्ञानी पुरुष राजाके यहां आये उनमे से एकने कहा कि हेराजा मैं पंचपट्टिक नाम शूद्रहूं मैं अकेलाही श्रेष्ठवस्त्रोंके पांच जोड़े नित्य वुनलेताहूं उनमें से एक ब्राह्मणको देताहूं एक देवताओंको अर्पण करताहूं एक अपने शरीरमें धारण करताहूं एक जो कोई मेरी स्त्री होगी उसकेलिये रखताहूं और एक वेचकर भोजनादिके काममें लगाताहूं इससे हे राजा यह अनंगरति आप मुझे देदीजिये उसके इसकहनेपर दूसरेने कहा कि मैं भाषाज्ञ नाम वैश्यहूं सम्पूर्ण पशुपक्षियोकी वोली मैं जानताहूं इससे आप अपनी पुत्री मुझे देदीजिये उसके इसप्रकार कहनेपर तीसरेने कहा कि मैं खड्गधर नाम क्षत्रीहूं सम्पूर्ण पृथ्वी में मेरे समान कोई खड्ग विद्याका जाननेवाला नहीं है इससे आप अपनी कन्या मुझे देदीजिये उसके ऐसे कहनेपर चौथेने कहा कि मैं जीवदत्तनाम ब्राह्मणहूं मैं मरेहुए मनुष्योंको भी जिलाके दिखा देताहूं इससे आप अपनी कन्या मुझे देदीजिये उन चारोंके यह वचन सुनकर तथा उनके दिव्य स्वरूपोंको देखकर राजा वीरदेव तथा अ- नगरति दोनो विचारके महासागरमें गोते खानेलगे इससे हे राजा तुम वताओ कि अनंगरतिके योग्य इनमेंसे कौन पतिथा यह सुनके राजा त्रिविक्रमसेनने वेतालसे कहा कि तुम कालक्षेप करनेके लिये वारम्वार मेरा मौन छुड़ातेहो नहीं तो यह कौन कठिन प्रश्नहै शूद्रको क्षत्रिया कैसे दी जासक्ती है और

वैश्यको भी नहीं दीजासक्की और उसवैश्यका गुणभी व्यर्थ है क्योंकि पशु पक्षियोंकी भाषाजानने से क्या प्रयोजन निकलसक्काहै और उस ब्राह्मणको भी अनंगरतिकी योग्यता नहीं है क्योंकि वह अपने कर्म से च्युतहोजानेके कारण पतितहै क्योंकि इन्द्रजालियों के समान उसका गुण उसके योग्य नहीं है इससे मेरी बुद्धिसे वह क्षत्रीही उसके योग्य पतिथा मौनछोड़कर राजा से कहेहुए इस उत्तरको, सुनकर वेताल फिर उसके कन्धे से उतरकर उसी वृक्षपर चलागया और राजाभी उसे लानेकेलिये फिर लौटा ठीक है (उत्साहैकघनेहि वीरहृदये नाप्नोतिखेदोन्तरम्) उत्साहसे भरेहुए वीरों के हृदयमें खेदको स्थाननहीं मिलता है २९ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेषोड़शस्तरंगः १६ ॥

इसके उपरान्त राजा त्रिविक्रमसेन फिर शीशमके वृक्षकेनिकट जाके वेतालको पकड़कर कन्धेपर रखके लेचला मार्ग में वेतालने कहा कि हे राजा तुमश्रमसे थकगयेहोगे इससे तुम्हारे चित्तके वहलाने के लिये मैं एककथा कहताहूं उसे सुनिये कि सम्पूर्ण राजाओं के जीतनेवाले राजा वीरबाहुके अनंग पुरनाम नगरमें अर्थदत्त नाम एक महाधनवान् वैश्य रहताथा उसके धनदत्तनाम एकपुत्र और धनदत्त से छोटी एक अत्यन्त रूपवती मदनसेना नाम कन्याथी एकसमय अपने उपवन में क्रीड़ाकरती हुई मदनसेनाको लावण्यरूपी जलसेपूर्ण त्रिवली रूपी लहरोंसे युक्त कुछ लक्षित कुचरूपी कुंभवाली यौवनरूपी हाथीकी क्रीड़ाकी बावड़ीके समान देखकर अर्थदत्तका मित्र धर्मदत्त वैश्य अत्यन्त कामसे पीड़ितहुआ और शोचनेलगा कि कामदेवने मेरेहृदयको भेदने के लिये अत्यन्त रूपवती यह बरछी बनाई है इसप्रकार उसके शोचते २ वहदिन व्यतीतहोगया और मदनसेना अपने गृहमें चलीगई मानों उसके न देखने की दुःखाग्निसे सतप्तहोकर सूर्य्य भगवान् पश्चिम समुद्र में डूबगये और उसे भीतर चलीगई जानकर उसके मुखारविन्दसे जीतागया चंद्रमा धीरे २ उदितहुआ इसप्रकार रात्रिहोजानेपर धर्मदत्त अपने घरमेंजाके मदनसेनाकाही ध्यान करते२सोगया और प्रातःकाल उठकर फिर उसी उपवन में जाकर मदनसेनाको एकान्तमें अकेली खड़ीदेखकर उसकेपास जाके पैरोंपरगिरके मधुर२ वचनकहके उससे रति करनेकी प्रार्थना करनेलगा उसके वचनसुनकर मदनसेनाने कहा कि मैं कन्याहूं और अभीसे पराई स्त्री होचुकीहूं क्योंकि मेरे पिताने समुद्रदत्तनाम वैश्यके साथ मेरा विवाह करना विचारा है कुछ दिनोंमें मेरा विवाह होनेवाला है इससे तुम यहां से चलेजाओ कोई देखलेगा तो बड़ा दोषहोगा उसके यह वचन सुनके धर्मदत्तने कहा कि मेरे लिये चाहै जैसा दोषहोय परन्तु मैंतो तुम्हारे बिना जी नहीं सक्ताहूं यह सुनके बलात्कारसे डरी हुई मदनसेनाबोली कि पहले मेरा विवाहहोजाय और मेरे पिताको कन्यादानका फल मिलचुके तब मैं तुम्हारेपास आऊंगी यह सुनकर धर्मदत्तने कहा कि मैं अन्य भुक्त प्रियाके साथ भोग नहीं किया चाहताहूं (परभुक्तेहिकमलेकिमलेर्जायतेरतिः) क्या पराये उच्छिष्ट कमल में भ्रमण रमण करताहै यह सुनकर वह बोली कि अच्छा विवाहके उपरान्त मैं प्रथम तुम्हारेपास आऊंगी फिर अपने पतिके पास जाऊंगी इसप्रकार कहके और शपथखाकर मदनसेना उस से बचकर

अपने घरको आई और लग्नके दिन विवाह होनेके उपरान्त अपने पतिके घर जाकर उत्सवसे दिनके व्यतीत होजानेपर. रात्रिके समय पतिके साथ शयन स्थानमें गई वहां समुद्रदत्त नाम अपने पतिके प्रार्थना करनेपरभी उसने उसका आलिंगन नहीं किया और वहुत आग्रह करनेपर आंसू भरलिये इस से समुद्रदत्तने यह जानकर कि मैं इसे नहीं रुचताहूं उससे कहा कि हे सुन्दरी जो मुझसे तुमको स्नेह नहीं है तो मुझे तुमसे कुछ प्रयोजन नहीं है तुम्हारा जो कोई प्रियहोय उसके पास तुम जाओ समुद्रदत्त के यह वचन सुनके वह नम्रतापूर्व्वक धीरेसे बोली कि हे आर्यपुत्र आप मुझे प्राणोंसेभी अधिक प्यारेहो किन्तु मेरी एक प्रार्थनाको सुनके स्वीकार कीजे और मुझे अभयदान दीजिये तो मैं कहूं उसने कहा कि अच्छा कहो तव वह लज्जा खेद तथा भययुक्त होकर वोली कि एक समय उद्यानमें मेरे भाईके धर्मदत्त नाम मित्रने मुझे अकेली देखकर कामसे पीड़ित होके मेरे संग वलात्कारसे रमण करनाचाहा इस से मैंने अपने पिताको कन्यादानका फल प्राप्त होनेके निमित्त और अपवाद से वचनेके लिये उस से यह प्रतिज्ञा करी कि विवाहके उपरान्त पहले मैं तुम्हारे पास आऊंगी तव अपने पतिके पास जाऊंगी इस सत्यवचन के पालन करनेके लिये आप मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं उसके पास होके क्षणभरही में आपके पास लौट आऊं वाल्यावस्थाही से पालन कियेहुए सत्यको मैं नहीं त्यागसक्तीहूं उसके यहवज्र रूपी वचन सुनकर समुद्रदत्तने शोचा कि यह अन्य पुरुषपर अनुरक्तहै इससे यह अवश्य चली जायगी तो मैं सत्यनाश करनेका पापी क्यों होऊं व्यर्थ आग्रह करनेसे क्या फलहोगा यह शोचकर उसने उस से कहा कि अच्छा जहां चाहो वहां जाओ उसके यह वचन सुनके मदनसेना अपने पति के घर से निकलकरचली चन्द्रमाकी चन्द्रिकासे प्रकाशित मार्गोंमें उसे जातीहुई देखकर एक चोरने उसका वस्त्र पकड़कर रोककर उससे पूछा कि तुम कौनहो और कहां जातीहो यह सुनके वह डरतीहुई वोली कि मुझे छोड़दो तुमको क्या प्रयोजन है मैं अपने एक कामको जातीहूं यह सुनके चोर ने कहा कि मैं चोरहूं तुझे नहीं छोड़ूंगा यह सुनके उसने कहा कि जो तुम चोरहो तो मेरे आभूषणलेलो यह सुनके चोर वोला कि इन पाषाणोंको लेकर मैं क्या करूंगा नीलमणिके समान केशवाली वज्रके समान कटि वाली सुवर्ण के समान अंगवाली पद्मराग मणिके समान मनोहर चरणवाली जगत्के आभूषणरूप तुमको मैं नहीं छोड़ूंगा चोरके यह वचन सुनकर विवशहुई मदनसेना अपना सववृत्तान्त कहकर उससे वोली कि क्षणभर क्षमाकरो मैं अपने सत्यका पालन करके शीघ्रही तुम्हारे पास यहां आऊंगी इससत्य वचनका मैं कदापि उल्लंघन नहीकरूंगी उसके यह वचन सुनकर वहचोर उसे सच्चीजानके उसे छोड़ के वहीं वैठारहा और मदनसेना धर्मदत्त वैश्यके पास पहुंची उसे आई देखके और उससे सव वृत्तान्त पूछकर धर्मदत्तने क्षणभर शोचके उससेकहा कि तुम्हारे सत्यसे मैं प्रसन्नहूं तुम पराई स्त्रीहोगईहो अव तुमसे मुझे क्या प्रयोजनहै यहांसे शीघ्रही चलीजाओ ऐसा न होय कि कोई तुमको देखले उसके यह वचन सुनकर मदनसेना वहां से चलकर प्रतीक्षा करतेहुए उस चोरके पास आई उस चोरने उसे शीघ्रही लौटी देखकर पूछा कि कहो वहा तुमसे क्या वार्त्तालापहुई यह सुनके उसने धर्मदत्तने जैसे

उसे छोड़ाथा वह सब सत्य २ कहदिया यह सुनके वह चोर बोला कि जो ऐसाहै तो मैंनेभी तुम्हारे सत्य से प्रसन्नहोके तुमको छोड़ा यह कहके वह चोर उसको उसी के घरभेजगया इसप्रकार धर्म से नहीभ्रष्ट हुई मदनसेना बहुत प्रसन्नतापूर्व्वक अपने पति समुद्रदत्तके पास गई उसे आई देखकर उसके सब वृत्तान्तको पूछके उसके मुखकी कान्तिको नही नष्टहुई देखकर कोई सम्भोगके चिह्न उसमें न पाकर उसे नहीं भ्रष्ट हुई जानके समुद्रदत्त प्रसन्नहोकर अत्यन्त सत्यवती सती मदनसेनाके साथ सुखपूर्व्वक रहा इस कथाको कहकर वेतालने राजा त्रिविक्रमसेनसे फिर पूछा कि हे राजा बताइये धर्मदत्त समुद्रदत्त तथा चोर इन तीनों में से कौन त्यागी है जो जानकर भी सत्य २ उत्तर न दोगे तो तुम्हारे शिरके सौ टुकड़े होजायँगे वेतालके यह वचन सुनकर राजा त्रिविक्रमसेन मौन छोड़कर बोला कि इन तीनों में से चोर त्यागी है वह दोनों वैश्य नहीं जो उसके पतिने विवाहकरके भी उसे त्यागकिया सो उचित है क्योंकि वह कुलीनहोकर अपनी स्त्रीको अन्यमें आशक्त जानकर कैसे ग्रहणकरता और जो उसद्वितीय धर्मदत्त वैश्यने उसका त्यागकिया उसका यह कारणथा कि एक तो काल अधिक व्यतीतहोने के कारण उसका कामका वेग शान्तहोगयाथा और दूसरे उसे यहभयथा कि जो इसका पति जानलेगा तो प्रातःकाल राजासे जाकर कहैगा, परन्तु चोरने पापी होकर भी और राजदण्डसे निरपेक्षहोकरभी उस आभूषण सहित अत्यन्त रूपवती स्त्रीका जो त्यागकिया इससे वही पक्कात्यागी है राजा के यह वचन सुनकर वह वेताल फिर अपने वृक्षपर चलागया और राजा फिर उसे लेने के लिये लौटा ६८॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेसप्तदशस्तरंगः १७॥

इसके उपरान्त राजा त्रिविक्रमसेन फिर उसी शीशम के वृक्षके नीचे जाकर वेतालको पकड़के ले चला मार्ग में वेतालने राजासेकहा कि हे राजा एक बड़ी विचित्र कथा मैं आपसे कहताहूं उज्जयिनी नगरी में राजाधर्मध्वजके इन्दुलेखा, तारावली, तथा मृगांकवती नाम अत्यन्त प्यारी तीन रानीथीं उन तीनोंके साथ राजासुखपूर्व्वक विहार कियाकरताथा एकसमय वसन्तके उत्सवमें राजाधर्मध्वज तीनों रानियों समेत उपवनमें क्रीड़ाकरनेको गया वहां भ्रमरोंकी पंक्तिरूप प्रत्यंचावाली पुष्पोंके भारसे नम्र कामदेवके धनुषके समान लताओंको देखताहुआ कोकिलाओं के मधुरशब्दोंको सुनताहुआ उत्तम सुगन्धित मद्यको पीताहुआ राजा धर्मध्वज अपनी प्रियाओं के साथ क्रीड़ाकरनेलगा क्रीड़ा करते २ राजाने जो रानी इन्दुलेखाके केशपकड़े तो उसके कानका कमल उसकी जंघापर गिरपड़ा इससे उस की जंघामें घावहोगया और वह हायहायकरके पृथ्वी में मूर्च्छितहोकर गिरपड़ी यह देखके राजाने बहुत विह्वलहोकर शीतल जल तथा वायुसे उसे सावधानकरके वहां से राजमन्दिरमें लेजाके वैद्यों को बुलवाके उसकी औषधकरवाई कुछदिनोंमें उसे नीरोगदेखकर राजा दूसरी रानी तारावलीको साथलेके रात्रिके समय महलपरगया वहां वह रानी तारावली राजाकी गोदीमेंही सोगई और वायुकेद्वारा उसके वस्त्र उड़ने से उसके शरीरमें चन्द्रमाकी किरणेंलगीं इससे क्षणभरमें वह जगकर हाय २ मैं जलगई यह कहके अंगको हाथसे दाबनेलगी उसके यह वचन सुनके और अंगमें छाले देखके राजाने उससे पूछा

कि यह क्या बातहै उसनेकहा कि कपड़ों के उड़ने से जो मेरे शरीरमें चन्द्रमाकी किरणेंलगीं उनसे मेरी यह दशा होगई है यह सुनके राजाने उसके शरीरमें चन्दनका लेप लगवाया तारावलीकी इस व्यथाको सुनकर तीसरी रानी मृगांकवती उसे देखनेको अपने स्थानसे चली मार्ग में कहीं नाज कूटा जारहाथा इससे मूसलके शब्दको सुनकर हाय मैं मरी यह कहके रानी मृगांकवती वहीं बैठगई और अपने हाथ पटकनेलगी इससे उसके सेवकलोग उसीके स्थानमें उसे लौटालेगये वहां वह शय्यापर लेटकर रोनेलगी उसके हाथमें नीले २ दाग देखकर सेवकों ने जाकर राजासे यह वृत्तान्तकहा राजाने सुनके महा विह्वलहोके वहां आकर पूछा कि हे रानी तुम्हारी विकलताका क्या कारण है यह सुनके उसने अपने हाथ दिखाकर कहा कि मैंने मूसलका शब्द सुनाथा इससे मेरे हाथों में यहदाग पड़गये हैं दागोंको देखकर राजाने उसके हाथों में चन्दनका लेप लगवादिया और शोचा कि एकके तो कमल गिरने से घावहोगया दूसरी का अंग चन्द्रमाकी किरणों से जलगया और तीसरी के हाथों में मूसलका शब्द सुनने से नीले दागपड़गये हाय मेरी प्रियाओंका यह गुण भी दोपकारी होगया इस प्रकार शोचते २ राजाकी वह रात्रि व्यतीतहोगई प्रातःकाल उसने वैद्योंको बुलाकर रानियोंकी ऐसी उत्तम औषध कराई जिससे वह शीघ्रही नीरोगहोगई इस अद्भुत कथाको कहके वेतालने राजासेपूछा कि बताइये इन तीनों में कौन अधिक सुकुमारहै जो जानकर भी उत्तर न दोगे तो तुम्हारा शिर फट जायगा यह सुनके राजाने कहा कि इन तीनों रानियों में वह अधिक सुकुमारहै जिसके हाथों में मूसल का शब्द सुनकरही नीले दागहोगये और उन दोनों रानियोंके तो कमल तथा चन्द्रमाकी किरणों के स्पर्श से घाव और विष्फोटकहुएथे इससे वह दोनों इसके समान नहीं होसक्तीं राजा के यहवचनसुनके वेताल फिर अपने स्थानको चलागया और दृढ़ निश्चयवान् राजा वित्रिक्रमसेन भी उसके लेनेको फिर लौटा २६ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेअष्टादशस्तरङ्गः १८ ॥

इसके उपरान्त राजा त्रिविक्रमसेन फिर शीशमके वृक्षके समीपजाके वेतालको पकड़कर कन्धेपर रखकर लेचला मार्ग्ग में वेताल बोला हे राजा इतना श्रम करनेपर भी तुमको धैर्य्य बना है इससे तुम मेरे बड़े प्यारेहो इसी से तुम्हें प्रसन्न करनेको मैं एक बड़ी उत्तम कथा कहताहूं उसको तुम ध्यानदेके सुनो कि अंगदेशमें एक महा प्रतापी अत्यन्तरूपवान् यशःकेतु नाम राजा था उसके दीर्घदर्शी नाम बड़ा बुद्धिमान् मन्त्रीथा वह राजा उस मन्त्रीपर राज्यका भाररखके ऐसा विषयों में तत्परहुआ कि रात्रि दिन अन्तःपुरही में रहनेलगा और नृत्य गानआदि विषयोंही में अपना सब समय व्यतीत करनेलगा राज्यके कार्य्यों में दृष्टिदेना तथा सभामें जाकर विचारादिक करना उसने छोड़दिया परन्तु दीर्घदर्शी ने रात्रि दिन राज्यके कार्य्यों को करके ऐसा श्रमकिया कि राज्यमें किसीप्रकारकी हानि नहीं होनेपाई तथापि लोकमें उसका यह अपयशहुआ कि दीर्घदर्शी राजाको व्यसनों में डालके आपही राज्यको भोगताहै इससे दीर्घदर्शी ने एक दिन अपनी मेधावती नाम स्त्री से एकान्तमें कहा कि हे प्रिये राजा

तो सुखमें आशक्तहोगया और मैं रात्रि दिन राज्यहीकी चिन्तामें अपना समय व्यतीत करताहूं इतने पर भी मेरा यह अपयशहुआहै कि मन्त्री राजाको व्यसनमें डालके आपही राज्यको भोगताहै और मिथ्या लोकापवादभी बड़ा हानिकारक होताहै देखो लोकापवादही से क्या रामचन्द्रजी ने जानकीका त्याग नहीं करदिया इससे तुम बताओ मैं अब क्या उपायकरूं दीर्घदर्शी के यह वचन सुनके परमचतुर मेधावती ने कहा कि आप राजासे पूछकर कुछ काल तीर्थयात्राके बहाने से परदेशको चलेजाइये इससे आपका अपयश मिटजायगा क्योंकि लोग आपको निष्पृह जानेंगे और आपके यहां न होने से राजाभी अपने राज्यके कार्य्योंको करेगा इससे उसके व्यसन छूटजायँगे मेधावती के यह वचन सुनकर दीर्घदर्शी ने राजा यशःकेतुके पास जाके प्रसंगपाकर कहा कि हे राजा कुछ दिन मुझे तीर्थयात्रा करनेकी आज्ञादीजिये मेरी धर्मकरनेकी इच्छाहै यह सुनके राजानेकहा कि क्या तीर्थों के विना घरमेंही दानादिक धर्म नहीं होसक्के यह सुनके मन्त्री ने कहा कि हे राजा दानादिकधर्म में अर्थ शुद्धि आदिकी आवश्यकता होती है परन्तु तीर्थ नित्य शुद्धहोते हैं बुद्धिमान्को उचितहै कि युवावस्थाही में तीर्थयात्राकरे नही तो इस नश्वर शरीरका वृद्धावस्थामें क्या विश्वासहै उन दोनों के इसप्रकार उत्तर प्रत्युत्तरहोनेपर प्रतीहारने आकर राजा से कहा कि हे स्वामी मध्याह्नका समयहै इससे उठिये अब आप के स्नानका अवसर आया उसके यह वचन सुनके राजा स्नानकोगया और मन्त्री अपने घरको चला आया वहां वह अपनी स्त्रीको संग चलने से रोककर अपने घरही में रखके अपने सेवकों से भी विना कहे अकेलाही तीर्त्थयात्रा को चला अनेक देशों में तथा तीर्त्थों में भ्रमण करता हुआ पुण्ड्रदेश में पहुंचा वहां समुद्र के तट पर एक नगर में जाके एक शिवजी के मन्दिर में शिवजी को प्रणाम करके बैठा वहां दर्शन करनेके लिये आयाहुआ निधिदत्तनाम वैश्य उसे यज्ञोपवीत धारण किये तथा सूर्य्यकी किरणोंसे व्याकुल देखके उत्तम ब्राह्मण जानके अतिथि सत्कार करनेके लिये अपने घरको लेगया और वहां उसे स्नानकरवाके तथा उत्तम २ भोजनकराके निधिदत्तने उससे पूछा कि तुम कौन हो कहांसे आयेहो और कहांको जाओगे यहसुनके दीर्घदर्शी ने कहा कि मैं अंगदेशका रहनेवाला दीर्घदर्शीनाम ब्राह्मणहूं तीर्थयात्राके निमित्त अपने देशसे यहां आयाहूं दीर्घदर्शीके यहवचन सुनकर निधिदत्तने कहा कि मैं व्यापारके निमित्त सुवर्णद्वीप जायाचाहताहूं इससे कुछ दिन तुम यहां विश्राम करो जब मैं लौटूंगा तब जहां चाहना वहांजाना यहसुनकर दीर्घदर्शीने कहा कि जो तुम जातेहो तो मैंभी यहां रहकर क्या करूंगा मैंभी तुम्हारे साथ स्वर्णद्वीपको चलूंगा यहकहके वह उस दिनको व्यतीत करके दूसरे दिन जहाजपर चढ़के निधिदत्तके साथ स्वर्णद्वीप को चला देखो कहां तो महामन्त्रीपन और कहां दूसरेके आश्रितहोके परदेशजाना (अयशोभीरवः किन्नकुर्वन्तेवतसाधवः) अयशसे डरने वाले साधू लोग क्या नहीं करतेहैं क्रमसे समुद्रका उल्लंघन करके दीर्घदर्शी स्वर्णद्वीपमें पहुंचके कुछ दिन उसके साथ वहां रहा कुछकालके उपरान्त जहाजपर चढ़के उसीके साथ लौटा मार्गमें समुद्रकी तरंगों में अकस्मात् उठाहुआ मूंगेकी शाखावाला और मणिमय पुष्प तथा फलवाला एककल्पवृक्ष

उसे दिखाई पड़ा उसवृक्षकी मोटी शाखाओं में रत्नोंके पलँगपर एकअत्यन्त रूपवती कन्या बैठीथी उसे देखकर दीर्घदर्शी जैसेही शोचनेलगा कि यह क्यावात है वैसेही वह कन्या वीणा वजाकर यह गान करनेलगी कि (यत्कर्म्मवीजमुप्तंयेनपुरानिश्चितंसतद्भुंक्ते। पूर्व्वकृतस्यहिशक्योविधिनापिनकर्त्तुमन्यथाभावः) जिसने पूर्वजन्ममें जैसा कर्मरूपी वीज वोयाहै उसे उसका भोग अवश्य करना पड़ता है ब्रह्मा भी प्राक्तनकर्मोंको नहीं वदल सक्तेहैं यहगान करके वह कन्या क्षणभरमेंही वृक्ष समेत जलमें डूवगई यहदेखके दीर्घदर्शीने शोचा कि आज यह वड़ी अद्भुतवात मैंने देखी कहां यहसमुद्र और कहां अकस्मात् कल्पवृक्षपर उत्पन्नहोकर दिव्य कन्याका फिर डूवजाना अथवा यह क्या आश्चर्य्यकी वात है क्योंकि समुद्र तो ऐसी वस्तुओंकी खानिही है क्या लक्ष्मी पारिजात तथा चन्द्रमा आदिक पदार्थ इसमें से नहीं निकलेहैं इसप्रकार शोचतेहुए दीर्घदर्शीसे कर्णधार (मल्लाह) आदिकोंने कहा कि इसीप्रकार यहकन्या नित्य दिखाई देकर डूवजाया करती है आपने पहलेही पहल इसे देखाहै इसीसे आश्चर्य्यसा मालूमहोताहै उनके यहवचन सुनके दीर्घदर्शी समुद्रके किनारे पहुंचके जहाजसे उतरकर निधिदत्तके साथ उसके घरगया वहां कुछदिन सुखपूर्व्वक रहकर निधिदत्तसे वोला कि हे मित्र मैं तुम्हारे यहां वहुत दिन सुखपूर्व्वकरहा अव आज्ञादीजिये तो मैं अपने घरको जाऊं यहकहके उससे आज्ञा लेकर दीर्घदर्शी धीरे२चलके पुंड्रदेशसे अपने अंग देशमेंपहुंचा वहां उसीके ढूंढनेको आयेहुए राजा यशःकेतुके दूतों ने उसे देखकर उसके आनेका समाचार राजा से जाकर कहा इससमाचार को पाकर राजा नगरके वाहरजाकर उससे मिलके वहुत आदरपूर्व्वक उसे अपने राजमन्दिर मे ले आया वहां उससे कुशल वृत्तान्त पूंछके राजाने कहा कि आपने हम लोगोको छोड़कर इतने दिन परदेशमे भ्रमणकरके कौन २ देशदेखे और कौन २ सी नवीन वात देखी यहसुनके दीर्घदर्शीने सुवर्णद्वीप पर्य्यन्त अपनी यात्राका वर्णनकरके समुद्रसे कल्पवृक्षपर निकलीहुई उस दिव्यकन्याकाभी सव वृत्तान्त कहा उसकन्याके वृत्तान्तको सुनकर राजाने अत्यन्त कामके वशीभूतहोकर दीर्घदर्शीको एकान्त में लेजाकर उससे कहा कि मैं उसकन्याके देखनेको तुम्हारे वतायेहुए मार्गसे अवश्य जाऊंगा क्योंकि उसके विना देखे मेरे प्राणही नहीं रहसक्ते हैं इससे तुम मुझे रोकना नहीं न मेरे साथ चलना मैं अकेलाही छिपकर जाऊंगा तुम मेरे राज्यकी रक्षाकरना तुम्हे मेरी शपथहै तुम मेरे इनवचनोंको मिथ्या न करना यहकहके राजाने उसे उसके घर भेजा वहां अत्यन्त उत्सवहोनेपरभी दीर्घदर्शी अत्यन्त उदासही रहा क्योंकि (स्वामिन्यसाध्यव्यसनेसुखंमन्मन्त्रिणांकुतः) स्वामीको असाध्य व्यसनमें आसक्त देखकर सन्मंत्रियोको सुख कैसेहोसक्ताहै दूसरे दिन राजा यशःकेतु दीर्घदर्शीको अपना राज्य सौंपकर तपस्वी का रूप धारणकरके चला मार्ग में कुशनाभनाम मुनिको देखके उसने प्रणाम किया उसे प्रणामकरते देखके मुनिने कहा हे पुत्र लक्ष्मीदत्तनाम वैश्यके साथ जहाजपर चढ़के समुद्रमें जाकर तुम अपनी प्रियाको पाओगे उसके यहवचन सुनकर राजा यशःकेतु प्रसन्नहोके अनेकदेश पर्व्वत तथा नदियोंका उल्लघन करके समुद्रके तटपर पहुंचा वहां स्वर्णद्वीपको जानेकी इच्छाकरतेहुए लक्ष्मीदत्तनाम वैश्यसे मि-

लकर उसके साथ जहाजपर चढ़के समुद्रमें चला समुद्रके बीचमें जब वह जहाज पहुंचा तो जलमेंसे कल्पवृक्षपर बैठीहुई वहकन्या निकली और वीणा बजाकर यह गानेलगी कि (यत्कर्मवीजमुप्तं येनपुरा निश्चितंसतदभुंक्ते। पूर्व्वकृतस्यहिशक्योविधिनापिनकर्तुमन्यथाभावः॥तस्माद्यत्रयथायद्भवितव्यंयस्यदैव योगेन। तत्रतथातत्प्राप्त्यैविवशोसौनीयतेत्रनभ्रांतिः) जिसने पूर्व्वजन्ममे जो कर्मरूपी बीजबोयाहै वह उसका अवश्य भोगकरताहै ब्रह्माभी प्राक्तन संस्कारको नही मेटसके इससे भाग्यवशसे जहां जिसको जो होनाहै वहां उसीप्रकारसे उसकी प्राप्तिकेलिये विवशहोकर वह लेजाया जाताहै इसमें कोई भ्रांति नहींहै उसके इसभावी अर्थके सूचितकरनेवाले गानको सुनकर कामके बाणोंसे पीड़ित राजा यशःकेतु बोला कि हेरत्नाकर आपको नमस्कारहै आपने इसकन्याको छिपाकर लक्ष्मीदेके विष्णुभगवान्‌कोठगा आपके अन्तको देवता लोगोंनेभी नहीं जानाहै मैं आपकी शरणमें आयाहूं मेरे मनोरथको सिद्धकीजिये उसके इसप्रकार कहतेही कहते वहकन्या जलमेंडूबगई यहदेखकर राजा यशःकेतुभी मानों कामाग्निके शान्ति करनेको समुद्रमें कूदपड़ा उसेडूबाजानके लक्ष्मीदत्त वैश्य दुःखसे प्राणदेनेको उद्यतहुआ तबयह आकाशवाणीहुई कि हे पुत्र साहस मतकरो यह तपस्वीरूपधारी राजा यशःकेतुहै इसेसमुद्रमें डूबनेसे कुछ भयनहीं है यह इसी कन्याके निमित्त यहां आयाथा यह इसकी पूर्वजन्मकी स्त्रीहै इसे लेकर यह फिर अपने अंग देशका राज्यकरेगा इस आकाशवाणीको सुनकर लक्ष्मीदत्त वैश्य सावधानहोके व्यापार के निमित्त स्वर्णद्वीपको चलागया ८६ और राजा यशःकेतुभी समुद्रके भीतरजाके अकस्मात् एक दिव्य नगरमें पहुंचा उसपुरके मंदिर सुवर्णमयथे उनमें मणियोंके खंभेलगेथे और मोतियोंकी जालियों के झरोखेथे अनेक प्रकारकी मणियों से जटित सीढ़ियोंवाली बावड़ियों से शोभितसम्पूर्ण कामनाओं के पूर्ण करनेवाले कल्पवृक्षोंके उपवनलगे थे ऐसे सुन्दर उसपुरमें राजाने अनेक गृहों में ढूंढ़ते २ एक अत्युत्तम मणिमय मन्दिरमें जाकर रत्नजटित पलंगपर एकस्त्री सोतीहुई देखी और क्या यही मेरी प्रिया है ऐसा जानकर ज्योंहीं उसका मुखखोला तो वह उसकी प्रियाही थी उसके देखने से राजाकी ऐसी दशाहुई जो ग्रीष्मऋतुमें मध्याह्नकेसमय मरुदेशके पथिक की नदीके देखने से होती है वहकन्याभी मुख खोलके उसे देखकर एकाएकी उस शय्यापरसे उठकर नीचेको मुखकरके मानों अपने नेत्र कमलों से उसके चरणों का पूजनकरके बोली कि हे महाभाग आप कौनहो किसनिमित्त इस अगम्य रसातल में आये हो और राजाओंके चिह्नोंसे युक्तहोकर भी यह तपस्वियोंका वेष क्योंधारणकिये हो उसके यह वचन सुनके राजानेकहा कि अंगदेशका यशःकेतुनाम मैं राजाहूं अपने मंत्रीसे तुम्हारी प्रशंसा सुन कर मैं राज्य छोड़के तपस्वी का रूपधारणकरके समुद्रमें आकर तुम्हें देखके तुम्हारेही पीछे समुद्रमें कूद के यहां आयाहूं अब तुम यह बताओ कि तुम कौनहो यह सुनके लज्जा अनुराग तथा आनन्दयुक्त होकर वहकन्या बोली कि विद्याधरोंके राजा मृगांकसेनकी मृगांकवती नाम मैं पुत्रीहूं मेरे पिता मुझे इसनगरमें अकेली छोड़कर न जानिये किसकारण से सम्पूर्ण पुरवासियों समेत कहीं चलेगये इससे मैं इस शून्यपुरमें रहकर नित्ययन्त्रके कल्पवृक्षपर चढ़के समुद्रके ऊपर जाकर भवितव्यताका गानकिया

करतीहूं उसके यहवचन सुनके राजाने प्रेमयुक्त वचनकहकर उसे ऐसा अनुरक्तकिया कि जिसअनुरागसे विवशहोकर उसने राजाकी स्त्रीहोना स्वीकार करके यह नियमकिया कि कृष्ण तथा शुक्लपक्षकी दोनों चतुर्द्दशी तथा दोनों अष्टमीके चारदिन मैं महीनेमें स्वाधीनरहूंगी इनदिनोंमें मैं जहांजाऊं वहां आपमुझे न रोकना और न पूछना कि तुम कहां जातीहो इसमें कोई विशेष कारणहै उसके यहवचन स्वीकार करके राजाने उसकेसाथ गान्धर्वविवाहकरके अपूर्व्वदिव्य सुखका अनुभवकिया एकदिन मृगांकवतीने राजा से कहा कि हे आर्यपुत्र आज कृष्णचतुर्द्दशीहै इससे मैं किसी कार्य्यकोजातीहूं तुम यहांहींरहना और इस स्फटिकके गृहमें न जाना नहीं तो वावड़ीमें गिरकर पृथ्वीपरचलेजाओगे यहकहके वह उससे आज्ञा लेकर पुरके वाहरगई राजाभी खड्गलेके छिपकर उसीके पीछे पीछे चलागया वहां एक अत्यन्त श्याम वर्ण राक्षस आकर मृगांकवती को निगलगया यह देखके राजाने क्रोधकरके अपने खड्गसे उसराक्षस का शिरकाटडाला और मृगांकवती उस राक्षसका पेटफाड़के जीतीहुई निकल आई उसे देखके राजा ने दौड़के उसका आलिंगन करके उससे पूंछा कि हे प्रिये यह स्वप्नथा अथवा कोई मायाथी राजाके वचन सुनके मृगांकवतीने स्मरणकरके कहा कि हे आर्य्यपुत्र न यहस्वप्नथा न मायाथी यह मेरे पिताका शापथा मेरेपिता बहुत पुत्रोंकेहोनेपरभी मेरे ऊपर बहुत स्नेहकरतेथे इसीसे मेरेविना कभी भोजन नहीं करतेथे मैं सदैव शिवजीके पूजनके निमित्त चतुर्द्दशी तथा अष्टमी के दिन इसनिर्जन स्थान में आया करतीथी एकसमय चतुर्द्दशी के दिन यहां श्रीपार्वतीजीका बड़ेअनुरागसे पूजन करते२ मेरा संपूर्णदिन व्यतीतहोगया तव मेरेपिताने दिनभर न भोजन किया न जलपिया जव मैं रात्रिके समयगई तो उन्हों ने मुझे क्रोधकरके यह शापदिया कि अष्टमी तथा चतुर्द्दशीकेदिन शिवजीका पूजन करने के निमित्त पुरसे वाहर जातीहुई तुझको कृतांतसंत्रास नाम राक्षस सदैव निगललियाकरेगा और उसका पेटफाड़२ कर तू जीतीहुई निकलआयाकरेगी तुझे न इसशापका स्मरणरहैगा न राक्षसके निगलनेकी पीड़ाहोगी और इसी पुरमें तू अकेली रहैगी इस घोर शापको सुनके जव मैंने उनसे वड़ी प्रार्थनाकी तव उन्हों ने ध्यान करके यह शापका अन्त वताया कि जव अनंगदेशका राजा यशःकेतु तेरे साथ विवाह करके उस राक्षसको मारेगा तव उसी राक्षसके पेटसे निकलकर तेरा शाप निवृत्तहोगा और तभी तुझे सम्पूर्ण विद्याओंका तथा शापका स्मरण आवेगा इसप्रकार शापका अन्त वताके मुझे यहां अकेली छोड़ के वह अपने सव परिकर समेत निषध पर्व्वतपर चलेगये १४२ और शापके मोहसे मैं यहींरही अव वह मेरा शाप क्षीण होगया इससे सम्पूर्ण विद्या तथा शापका मुझे स्मरण आगया अव मैं अपने पिता के पास निषध पर्व्वतपर जातीहूं क्योंकि हम लोगोंका यह नियमहै कि शापके अन्तमें अपने स्थान को चलेजातेहैं तुम चाहे यहां रहो चाहे अपने राज्यको जाओ उसके वचन सुनके राजानेदुखित होकेकहा कि हे सुमुखी एक सप्ताह तुम और ठहरजाओ इतने दिनों में और तुम्हारे साथ उपवनो में क्रीड़ा करके सुख भोगलूं फिर तुम अपने स्थानको चलीजाना और मैं अपने राज्यको चलाजाऊंगा इस वात को मृगांकवती के स्वीकार करलेनेपर राजा छः दिन तक उपवनो मे उसके साथ विहार करके सातवे दिन

उसे युक्तिपूर्व्वक उस बावड़ीके पास लेगया जिसमें गिरनेसे मनुष्य पृथ्वीपर पहुंच जाताथा वहां उसको पकड़ उस समेत वह बावड़ी में कूदपड़ा और कूदतेही अपने उपवनकी बावड़ी में आ निकला उसेदिव्यस्त्री समेत देखकर उद्यानपालकों ने प्रसन्न होकर दीर्घदर्शी से जाकर कहा राजाका आगमन सुनके दीर्घदर्शी प्रसन्न होके उपवनमें आकर राजाको मृगांकवती समेत राजमंदिर में लेगया और मृगांकवती को देखकर आश्चर्य्यपूर्व्वक शोचने लगा कि जिस दिव्यस्त्रीको मैंने बिजलीके समान आकाश में क्षणभर देखाथा वह इसे कैसे मिलगई अथवा (यद्यस्यलिखितंधात्राललाटाक्षरपंक्तिषु । तदवश्यमसंभाव्यमपितस्योपतिष्ठते) ब्रह्माने जिसके ललाटमें जो लिखदियाहै उसे वह असम्भव होनेपरभी अवश्य प्राप्त होताहै उसके इसप्रकार विचार करते २ वह मृगांकवती राजाको अपने देश में आया देखके और सप्ताहको पूराहुआ जानके निषध पर्व्वतपर जानेकी इच्छा करनेलगी परन्तु आकाशगामी विद्या का उसे स्मरण न आया इससे वह महाखेदको प्राप्तहुई उसे उदासीन देखकर राजाने पूछा कि हे प्रिये तुम अकस्मात् उदासीन क्यों होगईहो राजाके यह वचन सुनके उसने कहा कि शापके नष्टहोजाने पर भी जो आपके कहनेसे मैं यहां रहगई इसीसे मेरी सम्पूर्ण विद्या नष्टहोगई यह सुनके राजाने उसको अपने आधीन जानकर बहुत प्रसन्नहोके बड़ा उत्सवकिया उस महोत्सवको देखकर वह दीर्घदर्शी मंत्री अपने घरमें जाकर रात्रिके समय पलंगपर लेटे २ हृदय फटकर मरगया मंत्रीका मरण सुनके राजा यशःकेतु बहुत विषाद करके आपही राज्यका पालन करनेलगा इतनी कथा कहकर वेतालने राजासेपूछा कि हे राजा स्वामीके मनोरथके सिद्ध होजानेपर भी मंत्रीका हृदय क्यों फटगया क्या उसने वह दिव्यस्त्री नहीं पाई इससे उसका हृदय फटा अथवा वह राज्य लेना चाहताथा राजाके आजाने से निराश होनेके कारण उसका हृदय फटा जो जानकर भी इसका उत्तर न दोगे तो आपका शिर फटजायगा वेतालका यह प्रश्न सुनके राजाने कहा कि ऐसे श्रेष्ठ मंत्रीमें आपकी कहीहुई दोनों बातें नहीं होसक्ती किन्तु यह शोच कर उसका हृदय फटगया कि जो राजा साधारण स्त्रियोंमेंही आसक्तहोके राज्य कार्य्य नहीं करताथा वह अब इस दिव्यस्त्रीको पाकर न जाने क्या करेगा इससे जो मैंने बड़ा कष्ट भोगकर उपाय कियाथा उस में और भी अधिकतर दोष बढ़गया राजाके यह वचन सुनके वह वेताल फिर अपने वृक्षपर चलागया और राजाभी उसके लेनेको फिर चला १७१॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशाङ्कवतीलम्बकेएकोनविंशस्तरङ्गः १६ ॥

इसके उपरान्त फिर राजा त्रिविक्रमसेन शीशम के वृक्षके समीपजाके वेतालको पकड़कंधेपर रखके लेचला मार्ग मे वेतालने कहा कि हे राजा एक संक्षिप्तकथा मैं तुम से कहताहूं उसको सुनो कि काशीपुरी में राजा का महामान्य एक देवस्वामी नाम महाधनवान् ब्राह्मण रहता था उसके हरिस्वामी नाम एक पुत्रथा हरिस्वामी के लावण्यवती नाम अत्यन्त सुन्दर स्त्री थी मानों ब्रह्माने तिलोत्तमा आदिक अप्सराओंके बनाने में प्रवीणताका अभ्यासकरके उसका स्वरूप बनायाथा एकसमय हरिस्वामी अपने महलके ऊपर लावण्यवतीके साथ भोगकरके सोगया उससमय मदनवेग नाम विद्याधरने उसी मार्गसे

आकाशमें आकर लावण्यवतीको अपने पतिकेपास सोतीदेखके उसकी सुन्दरताके वशीभूत होकर उस सोतीहुईकोही हरलेगया क्षणभरमें हरिस्वामी जगकर अपने समीप लावण्यवतीको न देखकर एकाएकी उठवैठा और यह शोचकर कि कहीं वह मेरी परीक्षाके लिये छिपरही है सम्पूर्ण गृह तथा उपवनमें ढूंढके कहीं भी उसे न पाके विलाप करनेलगा कि हा चन्द्रवदने हाप्रिये हा प्राणेश्वरी तुम्हारे साथमें जिस चन्द्रमा की किरणें मुझे सुखदेती थीं वही चन्द्रमा कामके वाणों की समान अपनी किरणोंसे अव मुझे दुःख देरहाहै इसप्रकार उसके विलाप करते२ रात्रि व्यतीतहोगई परन्तु उसकी विरहव्यथा नहीं दूरहुई प्रातःकाल सूर्य्यकी किरणोंसे सम्पूर्ण संसारभरका अन्धकार दूरहोगया परन्तु उसके चित्तका मोहरूपी अन्धकार नहीं दूरहुआ यहां वह वैठीथी यहां उसने स्नान किया था यहां उसने अपना शृंगार किया और यहां उसने विहार कियाथा इस प्रकार कहता और रोताहुआ वह सव ओरको घूमनेलगा उसकी यह दशा देखकर उसके मित्रोंने उससे कहा कि तुम्हारी प्रियामरी तो है नहीं तो क्यों तुम अपने प्राण दिये देतेहो जो जीतेरहोगे तो अवश्य तुमको वह मिलजायगी इससे धैर्य्य धारणकरके उसेढूंढो (अप्राप्यंनामनेहास्तिधीरस्यव्यवसायिनः) उद्योगी धीर पुरुषको इस संसारमें कोईवस्तु अलभ्य नहीं है मित्रोंके इसप्रकार समझानेसे हरिस्वामीने धैर्य्यधरके शोचा कि मैं अपना सर्वस्व ब्राह्मणों को देकर तीर्थों पर भ्रमण करूं इससे मेरे पाप नष्टहोजायँगे और पापोंके नष्ट होनेपर कदाचित् भ्रमण करते२ मेरी प्रिया भी मुझे मिल जायगी यह शोचके उसने उसदिन यथावत् स्नानभोजनादि करके दूसरे दिन ब्राह्मणों का निमंत्रण करके अपना सवधन उन्हें देदिया इसप्रकार अकिंचन होके वह भ्रमण करनेकोचला भ्रमण करते २ उसे ग्रीष्म ऋतु प्राप्तहुई मानों प्रियाओंके विरहसे संतप्त पथिकोंके श्वासोंसे मिलकर अत्यन्त उष्ण वायु चलनेलगी धूपसे जलरूपी सम्पत्ति के नष्टहोजाने के कारण तड़ागोंकी सूखीहुई तथा चिटकी हुई कीचड़ ऐसी शोभित होतीथीं मानों शोकसे उनके हृदय फटगये हैं झींगरों के झंकारसे शब्दायमान, धूपसे म्लान ओष्ठ रूपी पत्तोंवाले वृक्ष वसन्त लक्ष्मी के विरहसे मानों रोनेलगे उससमय धूप से वियोगसे क्षुधासे तथा नित्यमार्ग चलनेसे अत्यन्त व्याकुल हरिस्वामी एक दिन भ्रमण करते २ एक ग्राममें सदावर्त्त देनेवाले पद्मनाभि नाम एक ब्राह्मणके स्थानपर भोजन करनेके निमित्तगया वहां भीतर वहुतसे ब्राह्मणोंको भोजन करते देखकर वह द्वारहीपर चुपचाप नीचा मुख करके खड़ारहा उसेखड़ा देखकर पद्मनाभिकी स्त्री ने शोचा कि (अहोक्षुन्नामगुर्व्येपानकुर्य्यात्कस्यलाघवम्) अरे यहक्षुधा वड़ी कठिनहै यह किसको तुच्छ नहीं करदेती है देखो यहकोई अन्नार्थी ब्राह्मण कैसी दीनतासे मेरे द्वारपर खड़ाहै मालूम होताहै कि यह कहीं दूरसे आयाहै इससे इससमय इसको अवश्य अन्न देनाचाहिये यह शोचकर उसने एकपात्रमें घृत शर्करायुक्त खीर भरके हरिस्वामी को लाकरदी और उससेकहा कि कहीं वावड़ी के किनारे जाकर इसे खाओ क्योंकि यहां ब्राह्मण खानेलगे हैं इससे यहस्थान उच्छिष्ट होगया है खीरके पात्रको लेकर हरिस्वामी वहां से थोड़ीदूर पर किसी वावड़ीके किनारे एक वरगदके वृक्षके नीचे उस खीरके पात्रको रखकर वावड़ी में हाथ पैर धोनेको गया इतनेमें एक वाज चोंचमें सर्पको पकड़ के

उसी वृक्षपर बैठकर खानेलगा इससे उस मरेहुए सर्पके मुखसे विषकी लार टपककर उसखीरमें गिरी इस बातको न जानकर हरिस्वामी ने हाथ पैर धोके आकर उस वृक्षके नीचे बैठके वह सब खीर खाडाली खाते ही उसके शरीरमें विषकी वेदना उत्पन्न हुई इससे वह यह कहताहुआ कि हाय भाग्यके विपरीत होनेपर क्या नहीं विपरीत होताहै देखो यह घृत शर्करा सहित खीरभी मेरे लिये विष होगई, उस ब्राह्मणी के पास गया और बोला कि तुम्हारे दियेहुए अन्नकेखानेसे मेरे शरीरमें विषछागया इससे किसीमंत्रके जाननेवाले को बुलाओ नहीं तो तुम्हें ब्रह्महत्या होगी इसप्रकार कहतेही कहते हरिस्वामी के नेत्र लौटगये और प्राण निकलगये हरिस्वामी को मरादेखके पद्मनाभि ब्राह्मणने अपनी उस स्त्रीको ब्रह्महत्यालगाके अपने घरसे बाहर निकाल दिया इस मिथ्या अपवादसे वह साध्वी तीर्थोंपर जाके तपकरनेलगी उस समय यमराजके यहां यह वादहुआ कि इस ब्राह्मणके मारनेकी हत्या किसकोहुई सर्पको बाजको अथवा अन्नदेनेवाली ब्राह्मणीको परन्तु कुछ निर्णय नहीहुआ इससे हेराजा त्रिविक्रमसेन तुम्हीं बताओ यह ब्रह्महत्या किसको हुई जो जानकर भी उत्तर न दोगे तो तुम्हारा शिर फटजायगा वेतालके यह वचन सुनके राजाने कहा कि इसमें पराधीन सर्पका अपराधही क्या था और बाजका भी क्या दोष था जो अकस्मात् मिलेहुए अपने भक्ष्यपदार्थको भोजन कररहाथा और उस विचारी ब्राह्मणीका भी क्या अपराधथा वह तो धर्म्मही करतीथी इससे मेरी बुद्धिसे यह ब्रह्महत्या उस मूर्खको है जो विनाविचारे ही इनमें से किसीको भी ब्रह्महत्याका दोष लगावे राजाके यह वचन सुनके वेताल फिर अपने उसी वृक्षपर चलागया और राजा भी उसके लेनेको फिरचला ६० ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेविंशस्तरंगः २० ॥

इसके उपरान्त राजा त्रिविक्रमसेन फिर उसीशीशमके वृक्षसे वेतालको उतार कन्धेपर रखके लेचला मार्ग में वेतालने राजासे कहा कि हेराजा एक विचित्र कथा मैं आपसे कहताहूं उसे आप सुनिये कि श्रीरामचन्द्रजीकी राजधानी अयोध्या नगरीमें राजा वीरकेतुके समय में रत्नदत्तनाम एक महाधनवान् वैश्य रहताथा उसके देवताओंके आराधन करनेसे नन्दयन्तीनाम स्त्रीमें रत्नवतीनाम अत्यन्त रूपवती कन्या उत्पन्नहुई जब वह रत्नवती युवतीहुई तब केवल महाधनवान् वैश्योंनेही नहीं किन्तु राजालोगों नेभी उस कन्याकी यांचनाकी परन्तु रत्नवतीको ऐसा पुरुषोंसे द्वेषथा कि जो इन्द्रभी आते तो उनके साथ भी वह अपना विवाह नहीं करती वह विवाहकी बात सुनकर भी प्राणदेनेको उद्यत होजातीथी अपनी कन्याका यह हठ देखके रत्नदत्त चुपहोकर बैठरहा उसका यह हठ सम्पूर्ण अयोध्या नगरीमें प्रकट होगया इस बीचमें सम्पूर्ण पुरवासियोंने जाकर राजा वीरकेतु से यह प्रार्थनाकी कि हेस्वामी रात्रिके समय चोर हम सबोंका धन चुरा लेजाते हैं और पकड़े नहीं जाते हैं आप जैसा उचित समझिये वैसा कीजिये पुरवासियोंकी यह विज्ञापना सुनके राजाने बहुतसे रक्षकोंको छिपकर चोरोंके ढूंढ़नेकी आज्ञादी परन्तु उनको भी चोर न मिले और नगरमें चोरी बराबर होतीरही इससे रात्रिके समय एकदिन राजा आपही खड्ग लेकर पुरीमें भ्रमण करनेलगा भ्रमण करते २ उसने एक पुरुषको परकोटेसे बाहर

जाते देखा वह इसप्रकार से चलताथा कि उसके चलने में जराभी शब्द नहीं होताथा और वह पीछे फिर २ कर वारम्वार देखता जाताथा उसे चोर जानके राजा उसके निकट गया राजाको देखकर उसने पूछा कि तुम कौनहो राजाने कहा कि मैं चोरहूं यह सुनके उसने कहा कि अच्छा तुम हमारे मित्रहो हमारे घर चलो और सत्कार ग्रहणकरो उसके वचन स्वीकार करके राजा उसीके साथ वनमें पृथ्वीके गढ़ेके भीतर उसके घरमें गया अनेक प्रकारके रत्नोंसे दीप्यमान वह घर क्याथा मानों दूसरा पातालथा वहां वह चोर राजाको आसनपर वैठालके आप भीतर चलागया उस समय एक दासीने राजाको देखकर कहा कि हे महाभाग तुम इस मृत्युके मुखमें कहां आयेहो यह चोर वड़ा विश्वास घाती है अभी आकर आपको मारडालेगा इससे आप यहां से भागजाओ उसके वह वचन सुनके राजा ने अपनी पुरी में आके वहुतसी सेनालेकर उस चोरका घर घेरलिया सेनाका शब्द सुनकर उस चोर ने अपना भेद खुलाजानके मृत्युका निश्चय करके वाहर आके अपना वड़ा पराक्रम दिखलाया खड्गके प्रहारों से उसने हाथियोंकी सूंड़ें घोड़ोंके पैर तथा हजारों योद्धाओंके शिरकाटडाले यह देखकर राजाने आपही उसके सन्मुख जाकर पेचकरके उसकेहाथसे खड्गछीनलिया और अपने हाथसे भी खड्गफेंककर वाहु युद्धसे उसे जीतकर उसे जीवता हुआही वांधलिया और उसे अपनी नगरी में लाकर प्रातःकाल उसको शूलीदेनेकी आज्ञादी उसे वध्यस्थानमे लेजाते देखके उसरत्नवतीने अपने रत्नदत्त नाम पितासे कहा कि यह जो पुरुष फांसी लगनेको जारहाहै इसको मैंने अपना पति स्वीकार कियाहै इसको आप राजासे कहके शूलीसे वचवाइये नहीं तो मैंभी इसके साथ सती होजाऊंगी यह सुनकर रत्नदत्तने उससे कहा कि हे पुत्री तुमने तो वड़े २ राजा लोगोंको भी नहीं स्वीकार कियाहै अव इस महापापी चोरपर तुम्हारा चित्त क्यों चलायमान हुआहै इस प्रकार समझानेपर भी जव वह नहीं मानी तव रत्नदत्तने राजाके पास जाकर अपनासर्वस्व देकर राजासे उसचोरको छुड़वानाचाहा परन्तु राजाने सौकरोड़अशर्फी लेकर भी उसको न छोड़नाचाहा तव रत्नदत्त विमुखहोके लौटआया उसके लौटआनेपर रत्नवती वन्धुओं के निवारण करनेपर भी पालकीपरचढ़के रोतेहुए माता पिता समेत उस वध्यस्थानमेंगई वहां वधिकोंसे शूलीपर चढ़ायागया वह चोर लोगोंसे रत्नवतीका वृत्तान्तसुनकेऔर उसे देखके क्षणभर रोकर हँसता २ मरगया उसे मरादेखकर रत्नवती ने शूलीपरसे उसे उतारके चिता लगाके जैसेही उसकेसाथ भस्महोना चाहा वैसेही आकाशसे अलक्षित श्री भैरवजी ने कहा कि हे पतिव्रते तेरी इस पति भक्तिको देखकर में तुझपर प्रसन्नहूं तू वरमांग यहसुनकर उसने कहाकि मेरेपिताके कोईपुत्रनहींहै इससे इनके सौपुत्रहोंय जिससे यह मेरे वियोगसे मरेंनहीं यहसुनकर औरभीअधिक प्रसन्नहोके भैरवजीनेकहा कि तेरे पिताके तो सौपुत्रहोंगे इससे विशेष तू औरभी वरमांग यहसुनके वहवोलीकि हेप्रभु जो आपमुझसे प्रसन्नहैं तो यहमेरापतिजीउठे और यह सदैव धर्मात्मावनारहे यहसुनके भैरवजीने कहा कि ऐसाहीहोय यहजीउठे धर्मात्माहोय और राजावीरकेतु इसपरप्रसन्नहोय भैरवजीके इसप्रकारकहतेही वहचोर उसीसमय ज्यों कात्योंजीउठा यहदेखके रत्नदत्तने वहुत प्रसन्नहोके रत्नवती तथा उसचोरको अपनेघरलेजाके वड़ाउत्सव

किया इसवृत्तान्तको सुनकर राजावीरकेतुने प्रसन्नहोके उसचोरको अपनासेनापति बनालिया उसअधिकारकोपाके वहचोर चोरी से निवृत्तहोके रत्नवतीकेसाथ विवाहकरके सुखपूर्व्वक रहनेलगा यहकथा कहके वेतालने राजात्रिविक्रमसेन से पूछाकि शूलीपर चढ़ाहुआ वहचोर क्यों रोया और हँसाथा जो जानकरभी उत्तर न दोगे तो तुम्हारा शिरफटजायगा वेतालके वचनसुनके राजाने कहा कि वहचोर इस दुःखसे रोयाथा कि मैं अकारणबन्धु इसरत्नदत्तवैश्यका कुछउपकार न करसका और इस आश्चर्य्य से हँसाथा कियहकन्या राजालोगोंकोभी छोड़कर मेरेऊपर क्यों अनुरक्तहुई वाह स्त्रियोंकाचित्त विचित्र होताहै मौनछोड़के राजासे कहेहुए इसउत्तरको सुनके वेतालफिर अपनेस्थानको चलागया और राजाभी उसके लानेको फिरउद्युक्तहुआ ६१ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेएकविंशस्तरंगः २१ ॥

इसके उपरान्तफिर राजात्रिविक्रमसेन शीशमके वृक्षसे वेतालको उतार कन्धेपररखके लेचला मार्ग में वेतालने राजासे कहाकि मैं आपसे एक रमणीक कथा कहता हूं उसे आपसुनियेकि नैपालदेशके शिवपुरनगरमें यशःकेतुनाम एक राजाथा वह अपने प्रज्ञासागरनाम मंत्रीपर राज्यका भाररखके रानी चन्द्रप्रभाकेसाथ विषयोंका सुखभोगताथा कुछकालमें उसकी चन्द्रप्रभा रानीमें अत्यन्तरूपवती एककन्या उत्पन्न हुई उसका नाम राजा ने शशिप्रभा रक्खा क्रम से युवा अवस्था में प्राप्तहुई वह शशिप्रभा एक समय चैत्रकेमहीनेमें वसन्तोत्सवदेखने केलिये सखियोंकेसाथ उपवनमेंगई वहां उसे पुष्पतोड़ते देखकर किसी धनवान् ब्राह्मणका मनस्वामीनामपुत्र कामके वशीभूतहोकर शोचनेलगाकि क्या यह साक्षात् रतिही तोनहींहै जोकामदेवके बाणोंकेलिये पुष्पतोड़तीहो अथवा यह वनदेवी है वसन्तकापूजनकरनेको पुष्पतोड़ती है इसप्रकार शोचतेहुए मनस्वामीको देखकर राजपुत्री शशिप्रभाभी कामके वशीभूत हुई इतनेमें महा हाहाकार सुनाईदिया और जैसेही वह उसके निश्चयकरनेको ग्रीवाउठाकर देखनेलगे वैसेही एकहाथी मार्गके वृक्षोंको तोड़ताहुआ दौड़ता उसीओरको आया तब हाथीको देखकर राजपुत्री के सब सेवकोंके भागजानेपर मनस्वामी राजपुत्रीको गोदीमें उठाकर हाथीके पाससे दूरलेगया वहां राजपुत्रीके सेवकआके मनस्वामीकी बड़ीप्रशंसाकरके राजपुत्रीको अन्तःपुरमें लेगये अन्तःपुरमें जाकर शशिप्रभा उसीमनस्वामीका स्मरणकरके कामाग्निसे अत्यन्त संतप्तहुई और वह मनस्वामी भी राजपुत्रीको अन्तःपुरमें गईदेख के इसकेबिना मैं नहीं जीसकूंगा इससे इसविषयमें धूर्त्तसिद्ध मूलदेव मेरी सहायता करसक्ताहै इससे उसीकेपास चलनाचाहिये यहशोचके उसदिनको व्यतीतकरके प्रातःकाल मूलदेवके पासगया वहां शशिनाम मित्रसमेत मूलदेवको देखकर उसने अपना सब वृत्तान्तकहा उस वृत्तान्तकोसुन मूलदेवने उसका मनोरथ सिद्धकरनेका निश्चयकरके अपने मुखमें एकगुटिका डालकर अपना स्वरूप वृद्धब्राह्मणकासा बनालिया और मनस्वामी के मुखमेंभी एक गुटिका डालकर उसेसुन्दरकन्या रूपबनालिया और उसे अपनेसाथलेजाकर शशिप्रभाकेपिता राजायशःकेतुसे कहा कि हे राजा मेरे एकहीपुत्रहै उसकेलिये मैं बहुतदूरसे यह कन्या मांगकर लायाहूं वहमेरापुत्र न जाने इनदिनो

कहां चलागयाहै मैं उसीको ढूंढनेकेलिये जाताहूं इससे जबतक मैं उसे ढूंढकरलाऊं तबतक आप इस कन्याकी रक्षाकीजिये उसके यह वचनसुनके राजाने शापकेभयसे शशिप्रभाको बुलवाकर कहा कि हे पुत्री इसकन्याको लेजाकर तुम अपने मंदिरमेंरक्खो अपनेहीसाथ इसेभोजन करवाना और अपनेही साथ इसे सुलाना अपने पिता के यह वचनसुनके शशिप्रभा कन्यारूपधारी मनस्वामीको साथलेकर अपने मंदिरकोचली और वह मूलदेवराजा से आज्ञालेकर अपने स्थानको चलागया इसके उपरान्त कन्यारूप मनस्वामी अपनी प्रियाकेपास रहकर कुछदिनोंमें उसका बड़ाविश्वासपात्र होगया एक दिन उसने रात्रिकेसमय विरहसे क्षीणहोनेवाली अपनी प्रियासेपूछा कि हेसखी तुम दिन२ क्यों क्षीणहोती जातीहो तुम्हारामुख क्यों पीलापड़गयाहै कृष्णपक्षके चन्द्रमाके समान तुम को क्षीण देखकर मुझ को महादुःखहोताहै इससे तुम अपना वृत्तान्त मुझसेकहो मेरे ऊपर अविश्वास न करो जबतक तुम अपना वृत्तांत मुझसेनहीं कहोगी तबतक मैं भोजन नहीकरूंगी उसके यहवचनसुनके शशिप्रभा दीर्घश्वास लेकरबोली कि हेसखी तुमपर क्या अविश्वासहै सुनोएकसमय मैं वसंतोत्सव देखनेको उपवनमेंगई वहां द्वितीयकामदेवके समान एकयुवाब्राह्मणको देखकर मेराचित्त उसपर चलायमानहुआ इतनेमें एक मतवालाहाथी गर्जताहुआ वहींआया उसहाथीको देखकर मेरे सबसेवकतो भागगये परंतु वहब्राह्मण मुझे गोदीमेंउठाके उसहाथीसे बचाकर दूरलेगया चंदनकेसमान शीतल उसके हाथोंके स्पर्शसे जो मेरीदशा हुई उसे क्याकहूं क्षणभरमें मेरे सेवक वहांजाके उसब्राह्मणकी बड़ीप्रशंसाकरके मुझेयहांलेआये तबसे मैं उसीका ध्यानकरके अनेकप्रकारके संकल्प अपने चित्तमें कियाकरतीहूं और स्वप्नमें भी मैं उसीको देखतीहूं उसकेनाम आदिक मुझे नहींमालूमहैं इसीसे मुझ अभागिनीको उसकी प्राप्ति नहींहोती इसी कारणसे मैं प्रतिदिन क्षीणहोती चलीजाती हूं शशिप्रभाके यह वचन सुनकर मनस्वामी अपनेप्रकट करने का अवसर जानकर मुखसे गुटिका निकालके पुरुष रूपहोके बोला कि हे प्यारी वह मैंहीहूं जिस को तुमने उपवनमें दर्शन मात्रसेही अपनादास बनाया था उससमय तुमसे वियुक्तहोकर मुझको ऐसा क्लेश हुआ जिससे कि मुझे कन्याका वेष धारण करके तुम्हारेपास आनाही पड़ा यहवचन सुनके तथा पहचानकर स्नेह आश्चर्य्य तथा लज्जासे युक्त शशिप्रभाको देखकर मनस्वामी ने उसका आलिंगन करके उसकेसाथ गान्धर्वविवाह करलिया तबसे मनस्वामी दिनमें मुखमें गुटिकारखकर कन्यारूप और रात्रिमें पुरुषरूपहोके उसकेसाथ रहनेलगा इसके उपरान्त कुछ दिन व्यतीत होजानेपर राजायशःकेतु के शाले मृगांकदत्तने अपनी मृगांकदत्तानाम कन्या प्रज्ञासागर नाममंत्रीके पुत्रकोदी मामाकी कन्या के विवाह में शशिप्रभाभी कन्या रूपधारी मनस्वामी समेत अपने मामाके यहां निमंत्रण में गई वहां मंत्रीकापुत्र कन्या रूपधारी मनस्वामीको देखकर उसपर आशक्तहोगया और मृगांकदत्ताकेसाथ विवाह करके उसे लेकर वह अपने घरमें जाके कन्यारूपधारी मनस्वामीका ध्यानकरके कामसे अति व्याकुल हुआ उसे व्याकुल देखकर प्रज्ञासागर उससे सबवृत्तान्त पूछके उसकन्यारूप मनस्वामीको अपने आधीन न जानकर अत्यन्त विह्वलहुआ इससमाचारको सुनके राजा यशःकेतु भी वहां आकर मंत्रीके

पुत्रको काम की पीड़ासे मूर्च्छित देखके वहां बैठेहुए सब लोगोंसे बोला कि ब्राह्मण की रक्खीहुई उस कन्याको मैं कैसे इसेदेदूं परन्तु उसके विना यह जीनहीं सक्ताहै इसके नष्टहोनेसे इसका पिता मेरामंत्री भी नष्टहोजायगा और मंत्रीके मरनेसे साराराज्य नष्टहोजायगा इससे बताओ अब क्या करना चाहिये ६९ राजाके यह वचन सुनकर सब लोगोंने कहा कि प्रजाओं के धर्मकी रक्षाकरना राजाओं का परम धर्म है यहबात मंत्रके आधीनहै और मंत्र मंत्रीके आधीनहै इससे जो मंत्रीका नाशहुआ तो मानो मूलही का नाशहोगया इससे आपको धर्मकी रक्षा अवश्य करनी चाहिये देखिये जो पुत्र समेत मंत्री मरजायगा तो उस ब्राह्मणको भी बड़ा पापहोगा यह जानकर आप मंत्रीकेपुत्रको यहकन्या देदीजिये जब कुछ कालमें वह ब्राह्मण आवेगा उससमय जैसा होगा वैसा देखा जायगा उनलोगोंके यहवचन सुनके राजाने लग्नका निश्चयकरके शशिप्रभा के यहांसे कन्यारूप मनस्वामीको बुलवाके उस मंत्रीके पुत्रकेसाथ उसका विवाह करना चाहा तब मनस्वामीने राजासे कहा कि यह ब्राह्मण मुझे अन्यकेलिये लायाथा और आप मुझे अन्यको देतेहो इसमें जो कुछ पुण्य पापहोय उसके भागी आपही होगे परंतु मैं इसनियम से विवाह करूंगी कि मेरापति तबतक मेरेसाथ शयनकरे जबतक कि वह छःमहीने की तीर्थयात्रा न करआवे जो इस नियम का भंगहोगा तो मैं अपने प्राणदेदूंगी उसके इसनियमको सुन कर राजाने मंत्रीके पुत्रसे इसनियमके पालनकरने का निश्चयकराके उसकेसाथ कन्यारूपी मनस्वामी का विवाह करदिया मंत्रीका पुत्र विवाहकरके मनस्वामी को मृगांकदत्ताकेसाथ रखकर तीर्थयात्रा करने को चलागया और मनस्वामी मृगांकदत्ता के साथ रहनेलगा एकसमय रात्रिमें सम्पूर्ण परिजनों के सो जानेपर साथही लेटेहुए मनस्वामीसे मृगांकदत्ताने कहा कि हे सखी कोई कथा कहो आज मुझे निद्रा नहीं आती यह सुनकर मनस्वामीने सूर्य्यवंशी राजा इलका पार्वतीजीके शापसे स्त्री होना और वन में बुधसे मिलकर संयोगहोने से पुरूरवाका उत्पन्न होना यह सब कथा कही यह कथा कहके फिर कहा कि हे सखी देवताओं की आज्ञासे अथवा मंत्रौषधि के प्रभाव से कभी पुरुषस्त्री होजाता है और स्त्री पुरुष होजाती है ऐसे संयोग बहुधाहुआ करते हैं यह सुनके मृगांकवती उससे बोली कि हे सखी इसकथाको सुनकर मेरे सम्पूर्ण अंगसनसनाते हैं और हृदय धड़कता है यह क्या बातहै यह सुनके मनस्वामीने कहा कि हे सखी यह कामके चिह्न हैं तुमको कभी काम बाधा नहींहुई है इससे तुम इसको नहीं जानसक्ती हो मैंने इनका बहुधा अनुभव किया है उसके यह वचनसुनके मृगांकवती ने धीरे से कहा कि हे सखी तुम मुझे प्राणों से भी प्यारीहो इससे मैं कहती हूं क्या किसी उपाय से यहां कोई पुरुष आसक्ताहै यह सुनकर मनस्वामी बोला कि विष्णुभगवान् के वरदानसे मैं रात्रि के समय पुरुषभी होसक्तीहूं इससे तुम्हारे लिये आज मैं पुरुषका रूप धारणकरूंगा यह कहके उसने अपने मुखसे गुटिका निकालकर पुरुषहोके उसके साथ रमण किया और तभी से वह दिन में मुख में गुटिका रखकर कन्या होजाताथा और रात्रिको गुटिका निकालकर पुरुषहोकर मन्त्री के पुत्रकी स्त्रीके साथ सम्भोग किया करताथा कुछ दिनों के उपरान्त मन्त्री के पुत्रके आनेका समय निकट जानकर

मनस्वामी रात्रिके समय मृगांकदत्ताको लेकर वहां से निकलगया तदनन्तर इस सब वृत्तान्तको जान कर मूलदेव वृद्ध ब्राह्मणका स्वरूप बनाके और अपने मित्र शशिको अपना युवापुत्रबनाके राजा यशःकेतु के पास आकर बोला कि हे राजा मैं अपने पुत्रको ढूंढ़लाया अब मेरीबहू मुझे आप देदीजिये उसके यह वचन सुनके राजाने शापके भयसे अपने मन्त्रियों से सलाहकरके उससे कहा कि हे ब्राह्मण मैं नहीं जानताहूं कि तुम्हारी बहू कहां चलीगई इससे मेरे अपराधको क्षमाकीजिये मैं अपनी कन्या आपके पुत्रको दिये देताहूं यह कहके राजाने ब्राह्मणको समझाके अपनी कन्याका विवाह शशि के साथ करदिया इसप्रकार मूलदेव शशिप्रभाको साथलेकर अपने स्थानको गया वहां मनस्वामी और शशिका परस्पर बड़ा विवादहुआ मनस्वामी ने कहा कि शशिप्रभा मुझे देदो क्योंकि गुरुकी कृपासे मैंने प्रथमही इसके मन्दिरमें जाके इसकेसाथ गान्धर्व विवाहकियाहै और शशिनेकहा कि हे मूर्ख तू इसका कौनहै यह मेरी धर्मकी स्त्री है क्योंकि इसके पिताने अग्नि भगवान्को साक्षी करके इसके साथ मेरा विवाह कियाहै इसप्रकार विवाद करतेहुए उन दोनोंका निर्णय कुछ भी नहीं हुआ इससे हे राजा तुम्हीं बताओ वह राजपुत्री किसकी स्त्री होनेको योग्यथी जो जानके भी उत्तर न दोगे तो तुम्हारा शिर फटजायगा वेतालके यह वचन सुनके राजाने कहा कि वह शशिकी स्त्रीहोने के योग्यथी क्योंकि राजाने विधिपूर्व्वक शशिकेही साथ उसका विवाहकियाथा और मनस्वामी ने तो चोरी से उसके साथ गान्धर्व विवाहकियाथा इससे वह उसकी स्त्री नहीं होसक्ती क्योंकि पराये धन में चोरका कभी स्वत्व नहीं होसक्ता राजाके यह वचन सुनके वहवेताल फिर उसी वृक्षपर जालटका और राजा फिर उसे लेनेको गया ११५॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेद्वाविंशस्तरंगः २२॥

इसके उपरान्त फिर राजा त्रिविक्रमसेन शीशमके वृक्षपरसे वेतालको अपने कन्धेपर रखकर ले चला मार्ग में वेतालने उससे कहा कि हे राजा एक अत्यन्त मनोहर कथा में तुमसे कहताहूं उसे सुनो पार्वती तथा गंगाके पिता हिमवान्नाम पर्व्वतपर कांचनपुरनाम एक अत्यन्त रमणीक नगरहै उसपुर में जीमूतकेतुनाम विद्याधरोंका राजा पूर्व्वकालमें था उस राजाके यहां उपवनमें पुरखों के समयसे एक कल्पवृक्षथा उससे प्रार्थनाकरके राजा ने महादानी महाकृपालु सत्त्ववान् जीमूतवाहननाम पुत्र पाया और क्रमसे उसे युवावस्थामें प्राप्तहुआ जानकर अपने मन्त्रियों के कहने से उसे युवराज पदवी देदी एकसमय जीमूतकेतु के मन्त्रियों ने जीमूतवाहनसे कहा कि हे युवराज यह जो सम्पूर्ण कामनाओंका देनेवाला तुम्हारे यहां कल्पवृक्षहै इसका तुम सदैव पूजन कियाकरो इसकेप्रभावसे इन्द्रभी तुम्हारा कुछ नहीं करसक्ते हैं तो अन्य राजाओंकी क्या गणना है मन्त्रियों के यह वचन सुनकर जीमूतवाहनने शोचा कि इस महा प्रभाववाले कल्पवृक्षको भी पाकर हमारे पुरखों ने कोई उत्तमफल नहीं पाया केवल अपनाही पालनकिया इससे अपने को और इसको दोनोंकोही तुच्छ किया अब मैं इससे अपना मनोरथ सिद्धकरूंगा यह शोचके उसने अपने पिताके पास जाकर शुश्रूषासे प्रसन्नकरके एकान्तमें उन

से कहा कि हे तात आप जानतेहीहो कि इस संसाररूपी समुद्रमें शरीर पर्य्यन्त सम्पूर्ण पदार्थ लहरों के समान चंचलहै और विशेषकरके थोड़ेही कालतक प्रकाश करनेवाली संध्या बिजली तथा लक्ष्मी को किसने कब और कहां स्थिर देखाहै एक परोपकारही इस संसारमें स्थिरहै जो सैकड़ों युगोंतक रहनेवाले धर्म और यशको उत्पन्न करताहै इससे क्षणिक भोगोंके लिये इस कल्पवृक्षको व्यर्थ रखके क्या करनाहै हमारे जिन पूर्व्वजोंने ममत्वकरके इसे रक्खाथा वह अब कहां हैं और यह कहां है वह सब इसके कौनहैं और यह उनका कौनहै इससे हेतात जो आपकी आज्ञाहोय तो मैं इसे परोपकारके निमित्त नियुक्तकरूं यह कहके अपने पितासे आज्ञालेकर जीमूतवाहन ने कल्पवृक्ष के पास जाके हाथ जोड़कर कहा कि हे देव आपने हमारे पूर्वजों के सदैव मनोरथ पूर्ण किये हैं अब एक मेरी यह कामनाभी पूर्ण कीजिये कि जिसप्रकार से मैं इस सम्पूर्ण पृथ्वी को दरिद्र से रहित देखूं ऐसा उपाय कीजिये मैंने आपको सम्पूर्ण याचकों के अर्पण करदिया अब आपजाइये उसके इसप्रकार कहने पर उस वृक्षमे से यह शब्द सुनाई दिया कि तुमने मेरा त्यागकिया अब मैं जाताहूं यह शब्द होतेही उस वृक्षने आकाश में जाकर इतना धन बरसाया जिससे सम्पूर्ण पृथ्वी में कोई भी दरिद्री न रहा इससे जीमूतवाहनका त्रैलोक्य में यश फैलगया और उसके गोत्री भाइयों ने उसे कल्पवृक्ष से रहित जान के यह शोच के कि अब इसे हम जीतलेंगे आपस में मिलकर उससे युद्धकरने के लिये उसपर चढ़ाई की उनको लड़ने के लिये उद्यत जानके जीमूतवाहन ने अपने पितासे कहा कि हे तात यद्यपि आपके आगे कोई युद्ध नहीं करसक्ताहै तथापि इसपापी शरीर के लिये बन्धुओं को मारकर कौन राज्य लेनाचाहै इससे हमको राज्यसे क्या प्रयोजनहै हम लोग किसी अन्य स्थान में चलकर धर्मकरें जिस से दोनों लोकों का हितहोय यहां यह दीन बांधवलोगही राज्यके सुखको भोगें जीमूतवाहन के वचनसुनके जीमूतकेतुने कहा कि हे पुत्र मैं तो तुम्हारेही लिये राज्य चाहताहूं जो तुम्हीं इसे त्यागना चाहतेहो तो मुझ वृद्धको इससे कौन प्रयोजन है पिताके यह वचन सुनके जीमूतवाहन अपने माता पिताको लेके मलयाचल पर्वतपरजाके चन्दनके वृक्षोंसे आच्छादित झरनोंसे युक्त स्थानमें आश्रमबनाके अपने माता पिताकी सेवा करताहुआ रहनेलगा वहां सिद्धराज विश्वावसु के पुत्र मित्रावसुके साथ उसकी बड़ी मित्रताहोगई ३६ एकसमय जीमूतवाहन उपवनमें भ्रमण करते २ श्रीपार्वतीजी के मंदिरके देखनेको गया वहां एककन्या अपनी सखियोंसमेत वीणाबजाकर पार्वतीजीकी स्तुतिकररही थी कमलोंके समान बड़े२ नेत्रवाली उन्नतस्तनवाली और पतली कटिवाली उसकन्याको देखकर जीमूतवाहनका चित्त उसपर आशक्तहोगया और जीमूतवाहनको देखके वह कन्याभी कामके बाणों से ऐसी विह्वलहुई कि उससे वीणाभी न बजसकी तब जीमूतवाहनने उसकी सखीसेपूछा कि इसका क्या नामहै और किस वंशमें इसका जन्महै यह सुनकर उसकी सखी ने कहा कि इसका मलयवतीनाम है सिद्धराज विश्वावसुकी यह पुत्री है और मित्रावसुकी बहिनहै यह कहकर उससखीने जीमूतवाहनके साथ आयेहुए मुनिपुत्र से जीमूतवाहन का नाम तथा वंशपूछकर मलयवती से कहा कि हे सखी क्या

विद्याधरों के स्वामी जगत्पूज्य इस अतिथिका सत्कार नहीं करोगी यह सुनके मलयवती ने लज्जासे अपनामुख नीचेको करलिया यह देखकर एक सखीने यह बड़ीलज्जावती है इससे मैंहीं आपकापूजन करतीहूं यह कहके एकमाला जीमूतवाहनको पहरादी जीमूतवाहनने अपने गलेसे वहमाला निकाल के मलयवतीको पहरादी मलयवतीने भी तिरछीदृष्टिसे देखकर मानों उसकेगलेमें नीलकमलोंकी माला डाली इतनेमें एक चेरीने आकर मलयवतीसे कहा कि हेराजपुत्री माता तुमको याद करती हैं इस से शीघ्रही चलो यह सुनकर मलयवती जीमूतवाहनको तिरछीदृष्टिसे देखतीहुई अपने स्थानको चलीगई और अपनीमातासे मिलकर कामाग्निसे व्याकुलहोके पलँगपरलेटी उससमय सखियों के चन्दनालेप सेभी उसको जराभी चैन नहींपड़ी और जीमूतवाहनभी मलयवतीकाही ध्यान करताहुआ अपनेआश्रममें आया वहां कामसे अत्यन्त विकलहोकर लज्जाके कारण किसीसे कुछ न कहकर वह पुटपाक केसे संतापको प्राप्तहुआ और बड़े कष्टसे उस दिन रात्रिको व्यतीत करके प्रातःकाल उत्कण्ठितहोके मुनिपुत्रसमेत फिर उसी पार्वतीजीके मंदिरमेंगया इतनेमें मलयवतीभी विरहके सहने में असमर्थहोकर अकेलीही प्राणदेनेको वहांआई और वृक्षोंमें छिपेहुए अपने प्रियको न देखकर हाथजोड़के पार्वतीजीके आगेबोली कि हे भगवती जो इसजन्ममें जीमूतवाहन मेरापति न हुआ तो द्वितीयजन्ममें आपकीकृपा से यही मेरापति अवश्यहोय यहकहके अशोकवृक्षमें अपने दुपट्टेसे फांसीलगाकर उसने हे नाथ जीमूतवाहन तुमने परमदयालुहोकरभी मेरी रक्षा न की यहकहके जैसेही गलेमें फांसी लगाई वैसेही यह आकाशवाणी हुई कि हेपुत्री साहस मतकरो विद्याधरोंका चक्रवर्त्ती जीमूतवाहन तुम्हारापति अवश्य होगा इसआकाशवाणीको सुनकर जीमूतवाहन मुनिपुत्र समेत अपनी प्रियाकेपासगया मुनिपुत्रने मलयवतीसे कहा कि देखो भगवतीका दियाहुआ वर प्रत्यक्ष तुम्हारे समीप आगया और जीमूतवाहनने प्रेमपूर्वक वचनकहके अपनेही हाथोंसे उसके गलेकी फांसीखोली इतनेमें ढूंढ़तीहुई एकचेरीने आकर मलयवती से कहा कि हे सखी तुम बड़ी भाग्यवतीहो तुम्हारा मनोरथ सिद्धहुआ आजही महाराज विश्वावसुसे मित्रावसुनेकहा कि हे तात कल्पवृक्षका भी दानकरनेवाला जो विद्याधरोंका स्वामी जीमूतवाहन यहां आयाहै वहहमारा अतिथिहुआ इससे कन्यारत्नरूपी मलयवती इसको देनीचाहिये क्योंकि इसके समान और कोई वर नहीं मिलेगा मित्रावसुके यह वचन महाराज विश्वावसुने स्वीकारकरलिये इसीसे मित्रावसु जीमूतवाहनके आश्रमको तुम्हारे विवाहकी प्रार्थनाकरने को गयाहै मैं जानतीहूं कि शीघ्रही तुम्हारा विवाहहोनेवालाहै इससे शीघ्रही अपने मन्दिरकोचलो और यहभी अपने आश्रमको जायँ चेरीके यहवचन सुनतेही मलयवती उसकेसाथ अपने मन्दिरको चलीगई और जीमूतवाहनने भी अपने आश्रममें जाकर वहां आयेहुए मित्रावसुसे अपने विवाहकी प्रार्थना सुनकर स्वीकार करके अपने उसके तथा मलयवतीके पूर्वजन्मका सबवृत्तान्त वर्णनकिया अपने पूर्वजन्मके वृत्तान्तको सुनकर मित्रावसुने बहुत प्रसन्नहोकर जीमूतवाहनके माता पितासे भी उसके विवाहकी आज्ञालेके उसे अपने घरलेजाके मलयवतीके साथ उसका विवाह विधिपूर्वक करदिया इसप्रकार मलयवतीको पाकर जी-

मूतवाहन अपने माता पिताकी सुश्रूषा करताहुआ उसी आश्रम में सुखपूर्व्वक रहनेलगा ६३ एक समय जीमूतवाहन मित्रावसुके साथ मलयाचलपर भ्रमण करताहुआ समुद्रकेतटपर पहुँचा वहां हड्डियों के बहुत ढेर देखकर उसने मित्रावसुसे पूछा कि यह हड्डियां किसकी हैं तब मित्रावसुने कहा कि सुनो संक्षेपसे मैं तुम्हारे आगे कहताहूं कि पूर्व्वसमयमें नागोंकी माता कद्रूने गरुड़की माता विनताको छल से जीतकर अपनी दासी बनालियाथा इसीवैरसे गरुड़जीने अपनी माताको छुड़ाकरकेभी सर्पोंका खाना प्रारम्भ किया वह सदैव पातालमें जाकर कुछ सर्पोंको खातेथे कुछेकोंको व्यर्थ मारडालतेथे और कुछ उनके भयसे आपही मरजातेथे इससे सर्पों का एकसाथही सर्वनाश होते देखकर नागराज वासुकिने प्रार्थना पूर्व्वक गरुड़जीसे यहनियम किया कि हे खगेन्द्र मैं प्रतिदिन एकसर्प आपके भोजनके निमित्त दक्षिण समुद्रकेतटपर भेजाकरूंगा तुम अब इसपातालमें न आना यहां तुम्हारे आनेसे सम्पूर्णसर्प नष्ट हुए जातेहैं इसमें तुम्हारे स्वार्थकीभी हानिहोतीहै वासुकीके यहवचन स्वीकार करके गरुड़जी तब से वासुकिका भेजाहुआ एकसर्प यहां नित्य खातेहैं उन्हींके खायेहुए सर्पोंकी हड्डियों के यह ढेर हैं मित्रा-वसुके यहवचन सुनकर दयालु जीमूतवाहनने कहा कि नागराजवासुकी कैसे अपनी प्रजाओंको शत्रुके लिये प्रतिदिन भेटकरते हैं उनके हजार मुखोंमेंसे एकमुखसेभी यह नहीं निकला कि हे गरुड़ मुझे खालो वह कैसे अपनेही हाथसे अपने वंशका नाशकरतेहैं और कैसे सर्पिणियोंके रोदनको सुनते हे और कृष्ण भगवान्के वाहन कश्यपजीके पुत्र गरुड़भी यह क्या महापाप करते हैं यहकहके उसने अपने चित्तमें शोचा कि जो मैं अपनेको गरुड़जीके अर्पणकरके एकसर्पकीभी रक्षाकरूं तो मेरा यह असारदेह सफलहोजाय इतनेमें एकप्रतीहारने आकर मित्रावसुसे कहा कि चलो तुम्हें राजा बुलाते हैं प्रतीहारके वचन सुनके जीमूतवाहनने मित्रावसुसे कहा कि तुम चलो मैं पीछे से आताहूं उसके यह वचन सुनके मित्रावसुके चलेजाने पर उसे रोदनकासा शब्द दूरसे सुनाई दिया उसशब्दको सुनकर उसने उसी शब्दके अनुसार जाके देखा कि एकऊंची शिलाके पास एकसुन्दर युवा पुरुषको एकराज सेवकने लाकर छोड़ा और वह युवापुरुष एक रोतीहुई वृद्धस्त्रीको समझारहाहै उसे देखके यह कौनहै यहजाननेके लिये जीमूतवाहन वृक्षोंकीआड़में खड़ाहोगया इतने में वहवृद्धास्त्री उसयुवापुरुषको देख देखकर यह विलापकरने लगी कि हा शंखचूड़ हा गुणिन् हा पुत्र तुम अनेक दुःखोंसे मुझे प्राप्तहुएथे तुम्हीं मेरे कुलके एक अवलम्बहो तुम्हें अब मैं कहां देखूंगी हे वत्स तुम्हारे मुखरूपी चन्द्रमाके अस्त होजानेपर शोकरूपी अन्धकारमें पड़ेहुए तुम्हारे वृद्धपिताकी क्यादशाहोगी सूर्य्यकी किरणोंके स्पर्श से भी जो तुम्हारे अंगपीड़ितहोतेथे वह गरुड़की चोंचोंके आघातको कैसे सहेंगे इसविस्तीर्ण नागलोक में नागराजको गरुड़के लिये मुझ अभागिनीकाही पुत्र मिला इसप्रकार विलाप करतीहुई उसवृद्धासे युवापुरुषने कहा कि हे अम्बमुझ दुखीको भी तुम अधिक दुःख क्योंदेतीहो घरको लौटजाओ अब मैं तुमको अन्तिम प्रणामकरताहूं गरुड़जी आनेही चाहतेहोंगे उसके यहवचन सुनकर वह वृद्धा हाय हाय मेरे पुत्रको अब कौन बचावेगा यहकहके चारोंओर देखनेलगी उसवृद्धाके इसविलापको सुनकर

कृपालु जीमूतवाहनने शोचा कि यह शंखचूड़नाम सर्पहै इसे वासुकीने गरुड़के भोजनके निमित्त भेजा है और यह वृद्धा इसकी माताहै स्नेहसे इसीके पीछे २ चली आई है जो मैं अपने इसनश्वर शरीरसे इसदुखितनागकी रक्षा न करूं तो मेरे इसनिष्फलजन्मको धिक्कारहै यहशोचके उसने उस वृद्धाके पास जाकरकहा कि हेमाता मैं तुम्हारेपुत्रकी रक्षाकरूंगा उसके यहवचनसुनकर गरुड़को आयाजानकेवहवृद्धा डरकरबोली कि हेगरुड़ तुम मुझेही खालो तब शंखचूड़नेकहा कि हेमाता डरोमत यहगरुड़ नहीं है कहां यहचन्द्रमाके समान आनन्ददायी और कहांभयंकर वहगरुड़ शंखचूड़के ऐसा कहनेपर जीमूतवाहनने कहा कि अंबमैं विद्याधरहूं तुम्हारे पुत्रकी रक्षाकरनेको आयाहूं मैंवस्त्रसे अपनेशरीरको ढकके गरुड़के अर्पणकरूंगा तुम इसेलेके अपनेघरको चलीजाओ यहसुनकर उसवृद्धानेकहा कि ऐसा न कहो तुमइससेभी मुझेअधिकप्यारेहो क्योंकि तुमने ऐसे समयपर मेरेऊपर यहकृपाकी है यह सुनकर जीमूतवाहन ने फिर कहा कि हे अंब तुम मेरे इस मनोरथको भंग मतकरो उसकेइस आग्रहको देखकर शंखचूड़ बोला कि हे महासत्त्व तुमने जो यह महा कृपालुता दिखाई परन्तु मैं तुम्हारे शरीरके व्ययसे अपने शरीरकी रक्षा नहीं करना चाहताहूं (रत्नव्ययेनपाषाणंकोहिरक्षितुमर्हति) रत्नका व्यय करके कौन पाषाण की रक्षा करना चाहताहै मुझसरीके स्वार्थियोंसे तो सम्पूर्ण संसार भराहुआहै परन्तु आप सरीके कृपालु कहां मिलते हैं मैं शंखपालके चन्द्रमाके समान निर्मल कुलमें कलंक नहीं लगाना चाहताहूं उससे इसप्रकार कहके उसने अपनी मातासे कहा कि हे अंब अब तुम इसवनसे चलीजाओ मैं समुद्रके तटपर श्रीगोकर्ण नाम शिवजी के दर्शन करके शीघ्रही यहां लौटा आताहूं क्योंकि गरुड़ आयाही चाहतेहैं यह कहके और रोतीहुई माताको प्रणाम करके शंखचूड़ गोकर्ण महादेवके दर्शनको चलागया तब जीमूतवाहनने अपने चित्तमें शोचा कि इस बीचमें जो गरुड़जी आजायँ तो मेरा मनोरथ सिद्ध होजाय इतनेमें गरुड़जी के निकट आनेके कारण उनके पक्षोंकी वायुसे हिलतेहुए मानों निवारण करतेहुए वृक्षोंको देखके जीमूतवाहन गरुड़को आया जानके उसवध्य शिलापर चढ़गया और गरुड़आके शिलापरसे उसेउठाकर शिरपरसे उसके मुकुटको रत्नके धोखेसे उखाड़ फेंकके चोंचके लगनेसे बहतेहुए रुधिरवाले उसजीमूतवाहनको मलयाचलके शिखरपर लेजाके खानेलगे १५१ उससमय जीमूतवाहननेअपने चित्तमेंशोचा कि इसीप्रकारसे प्रतिजन्ममें मेरे शरीरसे पराया उपकारहोय परोपकारसे रहित स्वर्ग अथवा मोक्षकी भी मुझे इच्छा नहीं है उसके इसप्रकार शोचतेही आकाशसे उसपर पुष्पोंकी वृष्टि हुई इसबीचमें गरुड़का फेंकाहुआ उसका मुकुट मलयवतीके आगे जाकर गिरा उसने उसे देख पहचानके महा विकल होकर अपने सास श्वशुरको दिखलाया अपने पुत्रके मुकुटको देखकर वह दोनोंभी अति विकलहोके अपनी विद्याओंके प्रभावसे सब वृत्तान्त जानके मलयवतीको साथ लेके जहां गरुड़थे वहांको चले इतनेमें शंखचूड़भी गोकर्णेश्वरको नमस्कार करके लौटकर उसवध्य शिलापर रुधिर पड़ा देखके बोला कि हाय२ मैं बड़ा पापीहूं मेरे लिये उस महात्माने गरुड़को अपना शरीर देदिया इससे चलकर देखूं कि गरुड़ उसे कहां लेगये हैं जो वह जीता मुझे मिलजाय तो मैं इस अयशसे बचजाऊं यहकहके वह रुधिरकीधार

को देखताहुआ चला इसबीच में गरुड़ने जीमूतवाहनको खाते २ उसे प्रसन्न होता देखके खाना छोड़कर शोचा कि यह कोई अपूर्व महासत्त्ववान् जीवहै मैं इसको खाभी रहाहूं परइसके प्राण नहीं निकले और यहप्रसन्नसा होरहाहै और मुझको उपकारीके समान देखताहै इससे यहसर्प नहीं है कोईसाधुहै इसलिये इससे पूछूं कि यह कौनहै इसप्रकार शोचतेहुए गरुड़जीसे जीमूतवाहनने कहा कि हे पक्षिराज मेरे शरीरमें अभी मांस तथा रुधिरहै और तुम अभी तृप्तभी नहीं हुएहो इससे भोजनकरो उसके यहवचन सुनकर गरुड़ने आश्चर्य्य करके उससे पूछा कि हे महात्मा तुम सर्प तो नहीं हो कौनहो यह बताओ गरुड़के यह वचन सुनके जीमूतवाहनने कहा कि मैं सर्पहीहूं इस पूछनेसे आपको क्या प्रयोजनहै आप अपना काम कीजिये बुद्धिमान् लोग निष्प्रयोजन बात नहीं करते हैं जीमूतवाहनके ऐसा कहतेही शंखचूड़ने दूरहीसे गरुड़को देखकर पुकारकरकहा कि हेगरुड़ यहमहापाप न करो यहसर्प नहीं है सर्प मैंहूं यहकहके और निकटआकर गरुड़को भ्रमयुक्त देखके फ़िर उसने कहा कि हेगरुड़ तुमको बड़ाभ्रम हुआहै क्या तुम मेरे फण तथा दोजिह्वाओं को नही देखते हो क्या तुमको इसविद्याधरकी सौम्य आकृति नहीं पहचान पड़ती उसके इसप्रकार कहतेहीकहते मलयवतीसमेत जीमूतवाहनके मातापिताभी आगये और जीमूतवाहनके अंगकटेहुए देखकर यहविलाप करनेलगे कि हा जीमूतवाहन हा कारुणिक हा परार्थप्राणप्रद तुम्हारी क्या दशाहोगई हा गरुड़ तुमने यह विना विचारे क्याकिया उनका यह विलाप सुनकर गरुड़ने अत्यन्त पश्चात्ताप युक्तहोकर शोचा कि हाय मैंने अज्ञानसे परम कृपालु इस जीमूतवाहन को खाडाला जिसके यशरूपी वस्त्रसे त्रैलोक्य ढकाहुआ है जो यह मरजायगा तो मैंभी इस पापकी शान्तिके निमित्त अग्नि में प्रवेश करजाऊंगा (अधर्मविषवृक्षस्यपच्यतेस्वादुकिंफलं) अधर्मरूपी विषके वृक्षमे और कौन स्वादिष्ट फललगताहै इसप्रकार गरुड़के विचार करतेहीं करते जीमूतवाहन अपने माता पिताको देखकर घावोंकी व्यथासे मरगया यह देखके उसके माता पिता महाविलाप करनेलगे शंखचूड़ बहुत विलापकर अपनी निन्दा करनेलगा और मलयवती आकाशकी ओर मुखकरके नेत्रों में आंसू भरके बोली कि हे भगवती गौरी आपने मुझको यहवर दियाथा कि विद्याधरोंका भावी चक्रवर्त्ती तेरा पति होगा हाय आज मुझ अभागिनिके विषयमें आप भी मिथ्यावादिनी होगई उसके इसप्रकार कहतेही पार्वतीजीने प्रकटहोकर कहा कि हे पुत्री मेरे वचन मिथ्या नहीं हैं और यह कहके अपने कमण्डलसे अमृतनिकालके जीमूतवाहनको सींचा अमृतके पड़तेही जीमूतवाहन पहलेसेभी अधिकदीप्तिवान् होकर जीउठा उठकर प्रणाम करतेहुए जीमूतवाहनसे भगवतीने कहा कि हेपुत्र मैं तुम्हारी कृपालुताको देखकर तुमपर प्रसन्नहूं इससे अपनेही हाथ से मैं विद्याधरों के चक्रवर्त्ती होनेको तुम्हारा अभिषेक करतीहूं तुम एक कल्प पर्य्यन्त विद्याधरोंके चक्रवर्त्ती रहोगे यह कहके भगवती जीमूतवाहनपर अभिषेक करके और उसकी कीहुई पूजाको ग्रहण करके अन्तर्द्धान होगई और आकाशसे पुष्पोंकी वृष्टिहुई तदनन्तर गरुड़ने नम्रतापूर्वक जीमूतवाहनसे कहा कि तीनों लोकों में आश्चर्य्यकारी तुम्हारे इस पुरुषार्थको देखकर मैं अत्यन्त प्रसन्नहूं इससे तुम मुझसे कोई वरमांगो और मुझको उत्तम शिक्षा

दो गरुड़के वचनसुनके जीमूतवाहन ने कहा कि हे गरुड़ तुम अपने पूर्वपापों का पश्चात्ताप करके अव सर्पोंको न खाना यह तो शिक्षाहुई और यह वर मैं मांगताहूं कि यह जो सर्प मरेहुए पड़ेहैं वह सव जीउठें उसके यहवचनसुनके गरुड़नेकहा कि आजसे मैं अत्र सर्पोंको नहीं खाऊंगा और जो सर्प मैंने पहलेखाये हैं वह सव भी जीउठें गरुड़ के इसप्रकार कहतेही सव सर्प जी उठे इससे उस मलयाचलपर वड़ा आनन्द हुआ उस समय जीमूतवाहनके इसवृत्तान्त को सुनकर भगवती की कृपासे सम्पूर्ण विद्याधरों के राजा मलयाचलपर आकर सम्पूर्ण परिकर सहित जीमूतवाहनको चक्रवर्त्ती करनेके लिये हिमालय परलेगये वहाँ पिता माता मित्रावसु तथा मलयावती समेत जीमूतवाहन संसारमें अपने यशको फैलाके विद्याधरों के चक्रवर्त्ती के पदकोपाकर राज्य सुखको भोगनेलगा इसउदार सरसकथाको कहकर वेताल ने राजासे पूछा कि हे राजा शंखचूड़ और जीमूतवाहन इन दोनोंमे से कौनअधिक सत्त्ववान् था जान कर भी जो तुम यथार्थ उत्तर न दोगे तो तुम्हारा शिरफटजायगा वेतालके वचनसुनकर राजाने कहाकि वहुत जन्मोंसे इसीदयाका अभ्यास करतेहुए जीमूतवाहनको यह क्या वड़ीवातहै वह शंखचूड़ प्रशंसा करनेके योग्यहै जिसने मरणसे वंचकर भी वहुतदूर गरुड़के पासजाकर उनसे कहा कि तुम मुझेखाओ इसे छोड़दो राजाके यह वचनसुनकर वेतालफिर अपने स्थानको चलागया और राजाभी उसके पीछे ही उसके लानेको वहांगया २०७ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेत्रयोविंशस्तरंगः २३ ॥

इसके उपरान्त फिर राजा त्रिविक्रमसेन शीशमके वृक्षपरसे वेतालको पकड़कर कन्धेपर रखकर ले चला मार्गमें वेतालनेकहा कि हेराजा एककथा मैं तुमसे कहताहूं उसेसुनो गंगाजीके तटपर कनकपुर नाम एकनगरथा उसनगरमें यशोधननाम वड़ाप्रतापी धर्मात्मा यशस्वीशूर तथा उदारराजाथा उसराजा के नगरमें एकधनवान् वैश्यकी उन्मादनीनाम कन्याथी उसउन्मादनीको जो कोई पुरुष देखताथा वह उसके रूपसे वशीभूत होकर उन्मत्तहोजाता था उसउन्मादनीको युवावस्थामें प्राप्त देखकर उसके पिता ने राजा यशोधनसे जाकर कहा कि हे स्वामी उन्मादनीनाम मेरी कन्या अवविवाहके योग्यहुई आप से विनाकहे मैं उसका विवाह नहीं करना चाहताहूं क्योंकि वह अत्यन्त रूपवती होनेके कारण आपहीके योग्यहै जो आप उसे स्वीकार कीजिये तो मैं कृतार्थ होजाऊं उसवैश्यके यह वचन सुनकर राजा यशोधनने उसके लक्षण देखनेको अपने ब्राह्मणों को भेजा ब्राह्मणों ने जाके उस अत्यन्तसुन्दरी त्रैलोक्यमोहिनी कन्याको देखके वड़े यत्नसे अपने चित्तके विकारको रोककर शोचा कि जो राजा के साथ इसका विवाहहोगा तो राजा इसके रूपसे मोहित होकर इसीके साथ रात्रि दिन रहेगा तो इससे राज्यकी वड़ी हानिहोगी और प्रजाका पालन नहीं होगा इसकारणसे राजासे यहकहना चाहिये कि उसकन्याके लक्षण अच्छे नहीं हैं यहसलाहकरके ब्राह्मणोंने जाकर राजासे कहदिया कि उसकन्याके लक्षण अच्छे नहीं हैं इससे राजाने उसका स्वीकार नहींकिया तव राजासे आज्ञालेकर उसवैश्यने राजा के सेनापति वलधरनाम वैश्यसे उसकन्याका विवाह करदिया उन्मादनी उस सेनापति के यहाँ जाकर

राजाने मुझे कुलक्षणा कहके त्यागदिया है इसबातको चित्तमें रखकर सुखपूर्व्वक रहनेलगी एकसमय राजा यशोधन वसन्तोत्सव देखने के लिये हाथीपर चढ़के निकला और नगर में यह ढंढोरा पिटगया कि कोई सती स्त्री घरसे बाहर न निकले क्योंकि राजाके रूपको देखके उनके पतिव्रत धर्मके लोप होजानेका सन्देह है ढंढोरेको सुनकर उन्मादनी राजाको आते जानके अपने महलपर चढ़कर खड़ीहोगई वसन्तसे बालीगई कामाग्निकी ज्वालाके समान उसे देखकर राजा कामसे अत्यन्त मोहित होगया और अपने सेवकोंसे यहजानकर कि मैंने इसका पहले त्याग कियाहै राजमंदिरमें आके उन मिथ्यावादी ब्राह्मणोंको अपने देशसे निकलवाके उसी उन्मादनीका ध्यानकरके शोचनेलगा कि यह चन्द्रमा बड़ा निर्लज्ज है जो जगदानन्ददायी उसके निष्कलंक मुखको देखकर भी प्रतिदिन उदित होताहै कठोर सुवर्ण के घट तथा कर्कश हाथीके मस्तक उसके उन्नत बड़े स्तनोंकी उपमाको नहीं पासक्ते हैं कामरूपी हाथीके मस्तकके समान उसके नितम्बों को देखकर कौन नहीं मोहित होताहै इसप्रकार उसका ध्यानकरके राजा प्रतिदिन क्षीणहोनेलगा और लज्जाके कारण किसीसे कुछकह नहीं सका जब मंत्रियोंने तथा मित्रोंने बड़े आग्रहसे खेदका कारण उससे पूछा तब उसने अपने खेदका कारण बतलाया उसे जानकर मंत्रियोंने कहा कि हे स्वामी आप खेद क्यों करतेहैं वह तो आपके आधीनहीं है उसे आप ले लीजिये उनके वचन राजाने नहीं स्वीकार किये तदनन्तर सेनापति बलधर भी राजा के कष्टको जानकर राजाके पास आके नम्रतापूर्व्वक बोला कि हे स्वामी दासकी स्त्री आपकी दासीही है उसे आप ग्रहण कीजिये मैं आप उसको आपके अर्पणकिये देताहूं इसमें आपको परस्त्रीगमनका दोषनहींहोगा अथवा मैं देवमंदिरमें जाकर उसका त्यागकरे देताहूं उसे आप वहांसे लेलीजिये क्योंकि आप देवमन्दिरमें त्यागकीहुई स्त्रियों के मालिकहैं सेनापतिके यहवचन सुनके राजाने क्रोधकरके कहा कि मैं राजा होकर भी यहअधर्म कैसे करसक्ताहूं जब मैंही मर्यादाका त्यागकरूंगा तो फिर अन्यलोग अपने धर्मोंमें कैसेरहेंगे तुममेरे भक्तहोकर भी क्षणभर सुखदेनेवाले परलोकमें महादुखदायी पापमें मुझको क्यों लगातेहो जो तुम उसपतिव्रता स्त्री का त्याग करोगे तो मैं तुमको दंडदूंगा क्योंकि मुझसरीके लोग ऐसे अधर्मको नहीं सहसक्तेहै इससे इसकामाग्निमें मेरा भस्महोना अच्छाहै परन्तु अधर्म करना उचितनहीं क्योंकि (त्यजंत्युत्तमसत्त्वाहिप्राणानपिनसत्पथम्) श्रेष्ठसत्त्ववान्पुरुष प्राणोंकात्यागकरतेहैं परन्तु सन्मार्गका त्याग नहीं करते हैं इस प्रकार सेनापतिसे निषेध करके कामाग्निसे अत्यन्त पीड़ित होकर राजा यशोधन मृत्युको प्राप्त होगया और वह सेनापति भी राजाको मरादेखकर स्नेहसे उसीके साथ भस्महोगया इसकथाको कहकर वेतालने राजासे पूछा कि हेराजा वह सेनापति बलधर और यशोधन राजा इन दोनोंमें कौन अधिक सत्त्ववान्था जानकर भी जो उत्तर न दोगे तो तुम्हारा शिरफट जायगा वेतालके यह वचन सुनके राजाने कहा कि राजा यशोधन अधिक सत्त्ववान्था यह सुनकर वेतालनेकहा कि सेनापति क्यों नहीं अधिकथा जिसने ऐसी सुन्दर स्त्री पाकर भी राजाको देनीचाही और अन्तमें अपना शरीर भी उसके साथ भस्म करदिया और राजाने तो केवल उस स्त्रीका त्याग

मात्रही कियाथा वेतालके यह वचन सुनकर राजाने फिर कहा कि यद्यपि आपका कहना ठीकहै तथापि यह क्या आश्चर्य्यकी बातहै कि सत्कुलमें उत्पन्नहुए सेनापतिने अपने स्वामीकेलिये जो प्राणदेदिये क्योंकि प्राण देकर भी स्वामीकी रक्षा करना सेवकोंका परमधर्म है परन्तु राजा लोग मदोन्मत्त हाथियों के समान निरंकुशहोकर धर्म मर्य्यादारूपी जंजीरको तोड़कर विषयोंकी ओर दौड़ते हैं अभिषेकके जल के साथही उनका सब विवेक मानों बहजाताहै वृद्धो के उपदेश कियेहुए शास्त्ररूपी मच्छर मानों चमरकी वायु के भयसे उनके पाससे भागजाते हैं ऐश्वर्य्यरूपी तीक्ष्ण वायुसे घबराईहुई उनकी दृष्टि सन्मार्ग्गों को नहीं देखती है देखो जगतविजयी नहुषआदिक राजाभी कामकेवशीभूत होकर अनेक आपत्तियोको प्राप्त हुएहैं इसपृथ्वीमें यही एक राजा यशोधन ऐसाहुआ जिसे चपललक्ष्मी के समान वह उन्मादनी मोहित नहीं करसकी इसने प्राणोका भी त्याग करदिया परन्तु अधर्म में पैर नही रक्खा इससे मेरी बुद्धिमें यह राजाही अधिक सत्त्ववान् है राजाके यह वचन सुनके वह वेताल फिर अपने स्थानको चलागया और राजाभी उसके लेनेकेलिये फिरचला ठीकहै (आरब्धेहिसुदुष्करेपिमहतांमध्येविरामःकुतः)दुष्कर भी कार्य्यका आरंभ करके महात्मालोगोंको मध्यमे विश्राम कैसेमिलसक्ताहै६१॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेचतुर्विंशस्तरंगः २४ ॥

इसके उपरान्त राजा त्रिविक्रमसेनने फिर उसी शीशमके वृक्षके पास जाकर देखा कि उस वृक्षमें वेतालके समान बहुतसे मुर्दे लटकरहेहैं यह देखकर उसने शोचा कि यह क्या बातहै अथवा वह वेताल माया करके समय मेरा व्यतीत कररहाहै मुझे नहीं मालूम होताहै कि मैं इनमें से किसको लेजाऊं जो इसी प्रकारसे यह रात्रि व्यतीत होगई तो मैं प्रातःकालही अग्निमें प्रवेश करके अपने प्राण देदूंगा परन्तु लोकमें हास्यनही कराऊंगा राजाका यह निश्चय जानके वेतालने प्रसन्न होके अपनी मायादूर करदी तब राजा वहां एकही मुर्देको देख उसे अपने कन्धेपर रखकरलेचला मार्गमें वेतालने फिर कहा कि हे राजा तुम बड़े धीरहो इससे एक विचित्र कथा मैं तुमको सुनाताहूं उज्जयिनी नाम नगरी में चन्द्रप्रभ नाम राजाके देवस्वामी नाम महाधनवान्‌मंत्रीथा उसके चन्द्रस्वामीनाम एकपुत्रथा वह चन्द्र स्वामी सम्पूर्ण विद्याओंको पढ़कर भी युवावस्थामें बड़ा ज्वारी होगया एक समय चन्द्रस्वामी द्यूतखेलनेकेलिये ज्वारियोंके स्थानमें गया वह गृह मानों पांसेरूपी नेत्रोंसे यह देखरहाथा कि किसको मैं विपत्तियो से युक्तकरूं और ज्वारियोकी कलहसे मानों यह कहरहाथा कि चाहें कुवेर भी आवें तो मैं उनको भी निर्धनकरके यहांसे जानेदूंगा वहां क्रमसे द्यूत खेलते२ चन्द्रस्वामी वस्त्रपर्यंत अपने पासका सब धनहारकर कुछ उधारकरके भी हारा औरउन लोगोंके मांगनेपर दे न सका इससे वहांके पंचनेइसे बंधवाके लाठियोंसे खूबपीटा लाठियोंके प्रहारसे उसने पाषाणके समान अपने शरीरको निश्चलकरके अपनेको मरासाबनालिया इसीसे उस पंचने उसे मारना बन्दकरदिया दोतीनदिनतक उसे उसीप्रकार पड़ाहुआ देखकर पंचने क्रोधकरके ज्वारियोंसे कहा कि इसे लेजाकर किसी अंधेकुएमें छोड़आओ मैं तुम्हाराधन अपने पाससे देदूंगा उसकेयहवचनसुनके ज्वारीलोग उसे वनमें लेगये वहां एकबुड्ढे ज्वारी

ने कहा कि यह मरनाही चाहताहै तो इसी स्थानमें इसे छोड़दो, पंचसे कहदेंगे कि हम उसे कुएमें डाल आये उसके वचनमानके वहसव उसे वहीं छोड़कर अपने २ स्थानोंको चलेगये उनलोगोंके चलेजानेपर चन्द्रस्वामी उठकर एकशून्य शिवालयमें चलागया. और वहांपर सावधान होकर शोचनेलगा कि मैं इसदशामें कहांजाऊं मुझे नग्न देखके मेरे माता पिता भाई आदि सब क्याकहेंगे इससमय तो मैं नग्न होने के कारण बाहर कैसे निकलूं और रात्रिकेसमय भोजनकहांसे ढूंढूं उसके इसप्रकार शोचतेही शोचते वहदिन व्यतीतहोगया रात्रिकेसमय त्रिशूललियेहुए एकजटाधारी तपस्वी वहांआये और चन्द्रस्वामीको देखके उससे सबवृत्तान्त पूछके बोले कि तुम मेरे आश्रममें आयेहुए अतिथि हो इससे उठो स्नान करके जो कुछ मैं भिक्षामांगलायाहूं उसे भोजनकरो यह सुनकर चन्द्रस्वामीनेकहा कि हे तपस्वी जी मैं ब्राह्मणहूं इससे आपकीभिक्षामेंसे लेकर भोजननहीं करसक्ताहूं उसके यहवचनसुनके उसतपस्वीने अपनी कुटी में जाकर इष्टसंपादिनी विद्याका स्मरणकिया स्मरण करतेही उस विद्याने आकर कहा कि क्या आज्ञाहै उसने कहा कि इस अतिथिका सत्कारकरो उसके इसप्रकार कहतेही एकबड़ा सुवर्ण का पुर चन्द्रस्वामीको दिखाई दिया उसपुरमें से कुछ स्त्रियोंने आकर उससेकहा कि चलो स्नानकरो और भोजनकरो यह कहके वहस्त्रियां उसे एकमंदिरमें लेजाके स्नान करवाके तथा उत्तम वस्त्र पहना के एक दूसरे मंदिरमें लेगईं वहां एक अत्यन्त रूपवती स्त्रीने अपने आसनसे उठकर उसे अपनेपास बैठाया और अपनेहीसाथ भोजन करवाके पलंगपर लेटाके उसकेसाथ संभोगभी किया इसप्रकार सुख भोगके सोयेहुए चन्द्रस्वामीने प्रातःकाल उठकर वही सूना शिवालय देखा तब तपस्वीने उससे पूंछा कि तुम रात्रिभर सुखसेरहे उसनेकहा कि हां मैं आपकी कृपासे बड़े सुखसेरहा परन्तु अब उस दिव्यस्त्रीके विना मेरेप्राण नहीं बचेंगे यह सुनकर तपस्वीने हंसकर कहा कि अच्छा यहींरहो रात्रिमें वही सुख तुमको फिर मिलेगा। तपस्वी के यहवचन सुनकर चन्द्रस्वामी वहींरहकर रात्रिकेसमय दिव्य सुख भोगनेलगा कुछ दिन वहां रहके यह जानके कि यह विद्याका प्रभावहै एकदिन उस तपस्वी से चन्द्रस्वामीने कहा कि हे भगवन् जो आप सत्य २ मुझदीनपर कृपाकरतेहो तो यह विद्या मुझे दो जिसका कि ऐसा अद्भुतप्रभावहै उसके वचन सुनकर तपस्वीने कहा कि यहविद्या बड़ी असाध्यहै इसका साधन जलके भीतरहोताहै वहां यहविद्या जापकपर ऐसीमाया करतीहै जिससे वह सिद्धनहींहोता उसे यहमालूमहोताहै कि मेरा फिर जन्महुआ मैं फिर युवाहुआहूं मेरा विवाहहुआहै मेरे स्त्री पुरुष तथा मित्रहैं इस मिथ्या मोहसे वह अपने पहले जन्मको तथा विद्याके साधनको भूलजाताहै जो अपने गुरूकी विद्याके प्रभाव से उसमाया को जानकर उसी जन्ममें मायाकी अग्निमें प्रवेश करता है उसी धीरको यह विद्या सिद्धहोती है और जो यह विद्या शिष्यको नहीं सिद्धहोती है तो गुरूको भी भूलजाती है इससे तुम इसविद्याको न सीखो ऐसानहोय कि तुमभी सिद्धनहो और मेरीभी विद्या नष्टहोजाय जिससे तुम्हारा यहसुखभी जातारहै तपस्वी के इसप्रकार कहनेपर भी चन्द्रस्वामी ने बड़ा आग्रहकरके कहा मैं सब कर लूंगा आप सन्देह न कीजिये उसके यहवचनसुनके दयालु तपस्वीने उसे एक नदीके तटपर लेजाकर

आचमन कराके विद्याका उपदेश करदिया और कहा कि हे पुत्र जव इस विद्याका जपकरते २ माया से मोहितहोगे तो मेरी विद्याके प्रभावसे उस मायाको जानकर मायाकीही अग्निमें तुम प्रवेश करना और मैं तुम्हारे लिये इमी नदी के तटपर वैठारहूंगा तपस्वी के यह वचन सुनके चन्द्रस्वामी नदी में जाकर जलके भीतर उस विद्याका जपकरनेलगा उससमय मायासे मोहितहोके उसे यह मालूमहुआ कि मैं अन्य किसीपुरमें ब्राह्मणके यहां उत्पन्नहोकर धीरे २ सम्पूर्ण विद्याओंको पढ़के युवाहुआहूं और किसी ब्राह्मणी स्त्री से मेरा विवाहहोकर मेरे बहुतसे पुत्रहुएहैं उन पुत्रों के स्नेहसे वहगृहस्थी के कार्य्य करनेलगा और अपने माता पिताका सेवनकरनेलगा इसप्रकारसे उसे मिथ्या जन्मका अनुभव करते जानकर तपस्वी ने प्रवोधिनी विद्याका प्रयोगकिया उस विद्याके प्रभावसे वह मोहरहितहोके मायाको जानकर अग्निमे भस्महोनेको उद्यतहुआ यह जानकर उसके मिथ्या माता पिता तथा स्त्री पुत्रादिक उसे निषेध करनेलगे उनके निषेधको न मानकर वह नदीके तटपर भस्महोने को आया वहां वृद्ध माता पिता रोते और स्त्रीको सती होनेको उद्यत तथा वालकों को रोते देखकर उसने मोहित होके शोचा कि देखो मेरे मरनेसे यह सव कुटुम्बीभी मरेजाते हैं और न जाने गुरूके वचन सत्यहैं या मिथ्याहैं इस से अग्निमे प्रवेशकरूं या न करूं अथवा गुरूके वचन मिथ्या नहीं होसक्के इससे अग्नि में अवश्य प्रवेश करना चाहिये यह शोचकर उसने अग्निमें प्रवेशकिया और उसे वह अग्नि शीतल मालूमहुई इतनेमें सव माया नष्ट होगई और उसने नदीके भीतरसे निकलकर किनारेपर वैठेहुए गुरूतपस्वीको प्रणामकरके अपना सववृत्तान्त कहा उसवृत्तान्तको सुनकर तपस्वी ने उससे कहा कि मै जानताहूं कि तुमसे कुछ वननही पड़ा नहीं तो अग्नि शीतल कैसे होगई इसविद्याके साधनमें कभीअग्नि शीतल नहीं होती तपस्वीके यह वचनसुनके चन्द्रस्वामी ने कहा कि हे भगवन् मैंने अपनी जानमें कोईभी दोष नहीं किया तव तपस्वीने दोषके जानने के लिये उस विद्याका स्मरणकिया परन्तु वह विद्यास्मरण नहीं आई और चन्द्रस्वामी को भी भूलगई इससे वह दोनों वहुतखिन्न होकर चलेगये इस कथाको कहकर उस वेताल ने राजासे कहा कि हे राजा यथावतसाधन करनेपर भी उन दोनों की विद्या किस दोषसे नष्टहोगई वेतालके यहवचनसुनके राजानेकहा कि हेयोगेश्वर यद्यपि मैं जानताहूं कि तुम मेरे समयको व्यर्थ नष्ट करतेहो तथापिमैं कहताहूं सुनो जवतक मनुष्यका चित्त विकल्परहितहोकर निर्मल नहींहोताहै तवतक उसेदुष्कर शुद्धकर्मसेभी सिद्धि नहीं प्राप्त होतीहै चन्द्रस्वामी के चित्तमें मोहरहित होकरभी विकल्प आ गयाथा इसीसे उसे वह विद्या नही प्राप्तहुई और कुपात्रमें देनेसे उसतपस्वीकीभी विद्यानष्टहोगई राजाके यह वचनसुनके वेताल फिर अपनेस्थानको चलागया और राजाभी उसके लेनेको फिरचला ८७ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्वकेपंचविंशस्तरंगः २५ ॥

इसके उपरांत फिर राजात्रिविक्रमसेन शीशमके वृक्षकेपास जाके वेतालको उतार कन्धेपर रखकर लेचला मार्गमें फिर वेतालवोला कि हेराजा एकमनोहर कथा मैं तुमको सुनाताहूं कि स्वर्गके समान अद्भुत वक्रोलकनाम नगरमें इन्द्रके समान प्रतापी सूर्यप्रभनाम राजाथा उसराजाको संपूर्णसुखथे परन्तु

एक यही दुखथा कि उसके सन्तान नहीथी उन्ही दिनोंमें ताम्रलिप्तीनाम पुरी में धर्मपालनाम एकमहा धनवान् वैश्यथा उसवैश्यके धनवतीनाम एक बड़ीसुन्दर कन्याथी जब धनवती तरुणहुई तो धर्मपाल मरगया इससे उसका सबधन उसके भाइयोंने लेलिया तब उसकी हिरण्यवती नाम स्त्री अपनी धनवतीकन्याको साथलेकर रत्नजटित आभूषणोंको छिपाके बाधकर रात्रिके समय अन्धकार में पुरके बाहर चलीगई वहांअन्धकारमें भाग्यवशसे शूलीपर चढ़ेहुए एकचोरके उसका धक्कालगगया इससे जीताहुआ वहचोर बोला कि हायकटेपर यह निमक किसने छोड़ा उसके यह वचनसुनकर हिरण्यवती ने पूछा कि तुमकौनहो उसने कहा किमैं चोरहूं शूलीपरभी मुझपापीके प्राण नहीं निकले जातेहैं हे आर्ये तुम कौनहो और इससमय कहांचलीहो यह सुनकर हिरण्यवती ने अपना सब वृत्तान्त उससेकहा इतने में चन्द्रोदयहोने के कारण सम्पूर्ण दिशाओं में उजयाला फैलगया इससे उस चोरने धनवतीको देखकर हिरण्यवती से कहा कि जो तुम मुझे यह अपनी कन्यादेदो तो मैं तुम्हें हजार अशर्फी देदूं यह सुनकर हिरण्यवती ने हँसकर कहा कि तुम इसे लेकर क्या करोगे उसने कहा कि सुनों मेरे कोई पुत्र नहीं है और अपुत्रकी परलोकमें गति नहीं होती इससे जो यह कहीं मेरी आज्ञासे किसी के भी योगसे जो पुत्र उत्पन्न करेगी तो वह मेराही क्षेत्रज पुत्रहोगा इसीलिये मैं इसे चाहताहूं तुम मेरा मनोरथ पूर्णकरो चोरके यह वचन सुनकर हिरण्यवती ने कहीं से जललाके अपनी कन्या उसे संकल्प करदी तब वह चोर प्रसन्नहोकर बोला कि इस वर्गदके नीचे से तुम हजार अशर्फी खोदलो और जब मैं मरजाऊं तो युक्तिपूर्व्वक मेरा दाहकराके मेरी हड्डी किसी तीर्थ में छोड़वाके राजा सूर्य्यप्रभके वक्रोलकनाम नगर में जाके सुखपूर्व्वकरहो यह कहके वहचोर उसी के लायेहुए जलको पीकर मरगया तब हिरण्यवती वर्गद के नीचे से अशर्फी खोदकर अपने पति के एक मित्रके घरमें जाकर उसके द्वारा युक्तिपूर्व्वक उस चोर का दाह तथा उसकी हड्डी किसी तीर्थ में फिकवाके वहां से वक्रोलकनगरको चलीआई और वसुदत्त नाम वैश्य से एक मकान मोललेके अपनी कन्या समेत वहां रही उन दिनों वहां विष्णुस्वामी नाम उपाध्यायका मनस्वामी नाम एक बड़ा रूपवान् ब्राह्मण शिष्य रहताथा वह विद्वान् होकर भी यौवन के मदसे हंसावली नाम एक वेश्याको चाहताथा वह वेश्या पांच सो अशर्फी प्रति दिन अपना मूल्य लियाकरती थी उस ब्राह्मणके पास इतना धन न था इसी से वह विकल रहाकरताथा एक समय धनवती ने अपने महलपरसे उस ब्राह्मणको देखा और उसपर आसक्तहोके युक्तिपूर्व्वक अपनी माता से कहा कि हे अम्ब देखो इस युवा ब्राह्मणका कैसा सुन्दर आनन्ददायी रूपहै उसके यह वचन सुनके उसकी माताने उसे उस ब्राह्मणपर अनुरक्त जानके शोचा कि मेरी इसपुत्रीको चोरकी आज्ञासे पुत्रोत्पत्तिकेलिये कोई वर तो अवश्य करनाहीचाहिये इससे इसी युवा ब्राह्मणको बुलाके इसमें पुत्र उत्पन्न कराना चाहिये यह शोचके उसने अपनी एक चेरी के द्वारा उस ब्राह्मणसे अपना मनोरथ कहलवाया चेरी के द्वारा उसकी बात को जानके उस ब्राह्मण ने कहा कि जो हंसावली के लिये मुझे पांचसौ अशर्फी दे तो मैं एक दिन उसकी पुत्री सेभी सम्भोग करूंगा उसके वचन सुनके चेरी ने जाके उससे

वह उसका कहना कहदिया चेरी के वचन सुनके हिरण्यवती ने उसी चेरी के हाथ उसके पास पांचसौ अशर्फी भेजदीं उन अशर्फियोको लेकर उसब्राह्मणने आकर धनवतीको देखके अत्यन्त प्रसन्नहोकर धनवती के साथ सम्भोगकरके वह रात्रि व्यतीतकी इसी से धनवती गर्भवती होगई समयपाकर राज्य लक्षणों से युक्त एक पुत्रहुआ उस पुत्रको देखके प्रसन्नहुई धनवती तथा हिरण्यवतीको रात्रिके समय स्वप्नमें श्री शिवजी ने दर्शन देकर कहा कि प्रातःकाल इस वालकको हजार अशर्फियों समेत राजा सूर्य्यप्रभके द्वारपर रखआओ इससे इसवालकका वड़ा कल्याणहोगा इस स्वप्नको देखके उन दोनों मा बेटियों ने परस्पर कहके प्रातःकाल उस वालकको हजार अशर्फियों समेत लेजाके राजा सूर्य्यप्रभ के द्वारपर रखदिया और अपने घरमें आके श्री शिवजीकी आज्ञाको यथार्थ मानकर अपने चित्तमे संतोषकिया उसी रात्रिको राजा सूर्य्यप्रभसे भी स्वप्नमे श्री शिवजी ने कहा कि हे राजा उठो तुम्हारे द्वार पर कोई हजार अशर्फियों समेत वालकको रखगयाहै उसे तुमलेलो स्वप्नमें श्री शिवजीकी यह आज्ञा पाके राजाने प्रातःकाल उठकर द्वारपरसे अशर्फियों समेत उस वालकको लाकर वड़ा उत्सव किया और वारहवे दिन उसका चन्द्रप्रभ नाम रक्खा वह चन्द्रप्रभ धीरे २ सम्पूर्ण विद्याओंको सीखकर युवा हुआ उसे युवा देखके राजा सूर्य्यप्रभ उसका विवाहकरके उसे राज्यदेके काशीजी मे जाके तपकरके परलोकको गया ६२ पिताका मरण सुनकर चन्द्रप्रभने वड़ाशोककरके उसकी क्रियासे निवृत्तहोके अपने मन्त्रियो से कहा कि यद्यपि मैं अपने तातसे अनृण नहीं होसक्ताहूं तथापि मैं उनकेहाड़लेकर विधिपूर्व्वक श्री गंगाजी में फेकूंगा और गयाजी में जाकर सम्पूर्ण पितरोंको पिण्डदूंगा और इसी प्रसंग से पूर्व्व समुद्र पर्य्यन्त तीर्थयात्रा भी करूंगा उसके यहवचनसुनके मन्त्रियोंने कहा कि हे स्वामी आपको तीर्थयात्रा करना उचितनहीं है क्योंकिक्षणभरमेंही राजाके विनाराज्यमे वड़ाअंतरपड़जाताहै प्रजाओकी रक्षाकरनाही आपकी तीर्थ यात्राहै इससे आप ब्राह्मण द्वाराही यहसव कार्य्य करवादीजिये मन्त्रियोंके वचन सुनकर राजाने कहा कि मैं अपने पिताके निमित्त अवश्य गया करूंगा श्रौर तीर्थ यात्राभी अवश्य करूंगा पीछे कोई जानता है कि क्याहोगा इसक्षण भंगुर शरीरका क्या विश्वास है इससे मैं अवश्य जाऊंगा तुम लोग हमारे राज्यकी रक्षाकरना राजाके यहवचन सुनके मंत्री चुपहोगये और राजा शुभमुहूर्त्त देखकर अनेक ब्राह्मण, सेवक तथा अपने पुरोहित समेत चला क्रमसे श्रीगंगाजी के तटपर पहुँचकर वहां राजा सूर्य्यप्रभके हाड़ोको पधराके और श्राद्धकरके प्रयागको चला क्रमसे प्रयाग जीमें पहुँचकर वहांभी श्राद्ध तथा अनेकदान करके काशीजीको गया वहांभी तीनदिन रहके श्राद्ध करके वहांसे चलकर अनेकप्रकारके देश नदी वन तथा पर्व्वतोंको देखताहुआ गयाजीमें पहुँचा वहां गयाशिर में विधिपूर्व्वक श्राद्धकरके वहुतसी दक्षिणा देके गयाकूप मे जाके जैसेही वह अपने पिता के नामसे पिण्डदेनेलगा वैसेही उसमेंसे तीन हाथ निकले उनहाथों को देखकर राजा चन्द्रप्रभने भ्रम युक्तहोकर ब्राह्मणोंसे कहा कि मैं किस हाथमें पिण्डदूं ब्राह्मणोने कहा कि इनमेंसे एकहाथ तो चोरका है जिसमें लोहेका दण्ड है दूसरा हाथ ब्राह्मणका है जिसमें पवित्रा है श्रौर तीसरा राजा का है जिसमें

सुन्दर चिह्न तथा उँगली में अगूंठी है इससे हमलोग नहीं जानसक्ते कि इनमेंसे किसको पिण्ड देना चाहिये उनब्राह्मणों के वचन सुनके राजा कुछभी निश्चय नहीं करसका इतनी कथा कहके वेतालने राजासे पूछा कि हे राजा तुम बतलाओ कि वह पिण्डा किसके हाथमें देनाचाहिये था जानकरभी जो उत्तर न दोगे तो तुम्हारा शिर फटजायगा वेतालके वचन सुनके राजाने मौन छोड़कर कहा कि चोर के हाथमें पिण्डा देना उचितथा क्योंकि राजा चन्द्रप्रभ उसीका क्षेत्रजपुत्रथा यद्यपि उसब्राह्मणने उसे उत्पन्न कियाथा तथापि वह उसका पिता नहींहोसक्ता है क्योंकि ब्राह्मणने केवल एकही रात्रिके निमित्त अपना शरीर वेचडालाथा और राजा सूर्य्यप्रभ भी पालन तथा लाड़करनेसे उसका पिता नहींहोसक्ता क्योंकि शिवजीकी आज्ञासे उसकी माताने उसके पालनके निमित्त हजार अशर्फी उसके पास रख- दीथी इससे जिसे उसकी माता संकल्पकरके दी गईथी जिसकी आज्ञा से उसे उत्पन्न कियाथा और जिसका वह धनथा उसीका वहचन्द्रप्रभ राजा क्षेत्रजपुत्रहुआ इससे उसी के हाथमें पिण्डदेना उचितथा राजाके यहवचन सुनकर वेताल फिर उसी वृक्षपर चलागया और राजा भी फिर उसके लाने में उद्युक्त हुआ १०२॥ इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेषड्विन्शस्तरंगः २६॥

इसके उपरान्त फिर राजा त्रिविक्रमसेन उसशीशमके वृक्षपरसे वेतालको लेके कन्धेपर रखकर ले चला मार्ग में वेतालने कहा कि हे राजा तुम यह क्यों आग्रहकरतेहो अपने घरजाओ रात्रिका सुख भोगो उसदुष्ट भिक्षुकके पास तुम मुझे न लेचलो जो तुमको बड़ा आग्रहहै तो मेरी यहकथा सुनो त्रि- कूटनाम नगरमें चन्द्रावलोकनाम बड़ा शूर और धर्म्मात्मा एकराजाथा उसकेसम्पूर्ण सम्पत्तियोंके होने परभी एक यही चिन्ताथी कि उसके योग्य कोई स्त्री न थी एकसमय वह राजा अपनी सेना समेत घोड़े पर चढ़के शिकार खेलनेको वनमें गया वहां बहुतसे शूकर सिंह तथा मृगोंको मारताहुआ अकेलाही घोड़ेको दौड़ाकर दशयोजन पृथ्वी निकलगया वहां श्रमसे घोड़े के ठहरजानेपर राजाने दिग्मोह में प्राप्तहोकर एक तालाब निकटदेखा वायुके द्वारा हिलतेहुए कमलरूपी हाथोंसे वह तड़ाग मानों अपने पास उसे बुलारहाथा उसतड़ागके तटपर जाके राजाने घोड़ेकी काठी खोलकर उसे घास और जलसे तृप्तकरके वृक्षकी जड़से बांधदिया और आपभी उसी तालाबमें स्नानकरके और वनके परार्थी वृक्षों से फल तोड़के खाके जल पिया इसप्रकार सावधानहोकर राजाने उसी तालाबपर घूमते २ एक अशोक वृक्षके नीचे सखी सहित एकतपस्विनी कन्यादेखी उसे देखकर कामके वशीभूतहोकर राजाने शोचा कि क्या यहसाक्षात् सावित्रीही यहां स्नानकरनेको आई है या श्री शिवजीसे वियुक्तहोकर श्रीपार्वती जीही फिर तपकररही हैं अथवा दिनमें अस्तहुए चन्द्रमाकी कान्तिहै अच्छा इसके पास चलके सखी से पूछूं कि यह कौनहै यह शोचकर राजा उसके पासगया वहांवह कन्याभी उसेदेखकर उसपर आसक्त होके शोचनेलगी कि इसवनमें ऐसा रूपवान् मनुष्य कहांसे आया यह कोई सिद्धहै अथवा विद्याधर है इसका रूप जगत्भरके नेत्रोंको आनन्द देनेवालाहै यह शोचके वह लज्जापूर्वक उसे तिरछी दृष्टि से देखतीहुई चली यह देखकर राजाने उससे कहा कि हे सुन्दरी पहलेहीपहल बहुत दूरसे आये हुए

अतिथिका सत्कार तो दूररहा क्या यह भी तपस्वियों का धर्म्म है कि उसके पाससे भागजाना राजाके यह वचन सुनकर उसकी चतुर सखी ने उसे वहीं बैठालकर राजाका अतिथि सत्कार किया तब राजा ने सखी से पूछा कि किस पुण्यवान् वंश में तुम्हारी सखीका जन्महुआ है कानों को अमृतके समान आनन्द देनेवाला इसका क्या नामहै पुष्पके समान अपने सुकुमार शरीरको यह क्यों तपसे क्लेशित करती है राजाके यह वचन सुनके उसकी सखी ने कहा कि यह मेनिका नाम अप्सराकी इन्दीवरप्रभा नाम पुत्री है महर्षि कण्व ने इसे अपने आश्रममें पालाहै उन्हींकी आज्ञा से यह यहाँ तड़ाग मे स्नान करने को आई है यहाँ से कुछेकही दूरपर उनका आश्रम है उसके यह वचन सुनके राजा प्रसन्न होके घोड़ेपर चढ़के कण्व महर्षि के आश्रमपर गया और आश्रम के बाहर घोड़ा बाँधकर आश्रम के भीतर जाके अनेक मुनियों के मध्य मे बैठे हुए कण्व मुनिको प्रणाम करके बैठा महर्षि कण्व ने उसका अतिथि सत्कार करके कहा कि हे वत्स चन्द्रावलोक मैं तुमसे कुछ हितकारी वचन कहताहूं उसे सुनों यह तो तुमजानतेही हो कि इस संसारमे प्राणियोंको मृत्युसे कैसा भयहै तो फिर तुम निष्कारण इन दीनपशुओ को क्यो मारतेहो परमेश्वर ने क्षत्रियो को भीतोंकी रक्षाके ही निमित्त शस्त्र दियाहै इससे धर्म्मपूर्व्वक प्रजाओं का पालन करो हाथी घोड़े आदि वाहनोंपर चढके शस्त्र अस्त्र आदिकों का अभ्यास करो राज्यका सुख भोगो दीन और ब्राह्मणो को धन दो दिशाओं में अपना यश फैलाओ यमराज की क्रीड़ा के समान इस शिकार को त्यागो इसमें बड़े अनर्थ हैं क्या तुमने राजा पाण्डु का वृत्तान्त नहीं सुनाहै कण्वमुनिके यह वचनसुनकर राजा चन्द्रावलोक नम्रतापूर्व्वक बोला कि हे भगवन् आपने कृपा करके मुझे बड़ी उत्तम शिक्षादी है आज से मैंने शिकार का खेलना त्याग दिया सम्पूर्ण पशुपक्षी निर्भय होकररहें उसके यह वचनसुनके महर्षि कण्वमुनिने कहा कि हे राजा तुम्हारी इस प्रतिज्ञासे मैं बहुत प्रसन्नहुआ अब तुम अपनी इच्छाके समान वरमांगो मुनि के यह वचनसुनके राजाने कहा कि हे भगवन् जो आप मुझसे प्रसन्नहैं तो यह इन्दीवरप्रभा कन्या मुझे दीजिये राजा के यह वचनसुनके कण्वमुनि ने इन्दीवर प्रभाका विवाह राजाके साथ करदिया तब मुनिकी आज्ञा से इन्दीवरप्रभा को घोड़ेपर बैठाके और आपभी चढके राजा चन्द्रावलोक वहां से चला चलते २ वनमें ही उसे सायंकाल होगया मानों उसके सम्पूर्ण कार्य्योंको देखके सूर्य्य भगवान् श्रमितहोकर अस्ताचलपर बैठगये और रात्रिहोगई उससमय एक बावड़ी के तटपर एक घना बरगदका वृक्ष देखकर राजा ने वहीं रात्रि व्यतीत करनेका विचारकर घोड़ेपरसे उतरकर घोड़ेको घासडाल तथा जलपिलाके आप भी कुछ जलपान करके उसी वृक्षके नीचे पुष्पोको बिछाके अपनी प्रिया समेत लेटा उससमय अपनी किरणों से अन्धकाररूपी वस्त्रको हटाकर पूर्व्व दिशारूपी स्त्रीके मुखको चुम्बन करताहुआ चन्द्रमा उदित हुआ उसकी किरणों से सम्पूर्ण दिशा प्रकाशित होगई और उस वृक्षके नीचे भी कुछ २ उजयाला आगया तब राजा चन्द्रावलोकने भी अपनी प्रिया इन्दीवर प्रभाके साथ भोग विलास किया उस सुखसे क्षणके समान रात्रिको व्यतीत करके उसी बावड़ी में स्नान पूर्व्वक सन्ध्या वन्दनादि करके राजा अपनी प्रिया

समेत घोड़ेपर चढ़के जहां उसने अपनी सेनाछोड़ी थी वही जानेको उद्यतहुआ इतनेमें मानों रात्रि के समय कमलोंकी शोभाको विगाड़कर अस्ताचलकी कन्दरामें छिपेहुए चन्द्रमाको मारने के लिये प्रचंड किरणरूपी हाथों को फैलायेहुए अत्यन्त रक्तवर्ण सूर्य्य भगवान् के उदित होनेपर अकस्मात् बिजली के समान पीले केशवाला काजलके समान श्याम वर्णवाला आंतोंकी मालाओं को पहनेहुए वालों के यज्ञोपवीत को धारण कियेहुए मनुष्यके शिरके मांसको खाताहुआ और कपालसे रुधिरको पीता हुआ एक ब्रह्मराक्षस आया और क्रोधसे अग्निकी ज्वाला मुखसे छोड़ता हुआ बहुत गर्जकर राजा से बोला कि हे पाप मैं ज्वालामुख नाम ब्रह्मराक्षसहूं यह वरगद मेरे निवासका स्थानहै देवतालोग भी इसका उल्लंघन नहीं करतेहैं तुमने स्त्री समेत इस आश्रम में रहकर इसे भ्रष्टकियाहै इसका फल तुम को अभी मिलाजाताहै मैं तुमको मारके तुम्हारे हृदयका मांस खाकर तुम्हारे रुधिरको पियूंगा उसके यह घोर वचनसुनकर और उसे अवध्य जानकर राजाने नम्रता पूर्व्वक कहा कि मैंने अज्ञानसे जो अपराध कियाहै उसे आप क्षमाकीजिये मैं इस आश्रममें आयाहुआ शरणागत अतिथिहूं इससे मुझे न मारो आप जैसा पुरुष अथवा पशु बताओ उसे मैं लाऊं जिससे आपकी तृप्ति होय राजा के यह वचन सुनके वह ब्रह्मराक्षस शान्त होके बोला कि जो ब्राह्मण का पुत्र सात वर्षकीही अवस्था में महा: सत्त्ववान् विवेकीहोय और तुम्हारे लिये स्वेच्छा से अपने प्राण देना चाहै और जब वह माराजाय तब उसके माता पिता अपनेही हाथसे उसके हाथ पैर पकड़ें ऐसे पुरुष को जो तुम सात दिन के बीच में अपने हाथसेही बलिदान करो तो मैं तुम्हारे प्राण छोड़दूं नहीं तो तुमको परिकर समेत मारडालूंगा उसके यह वचन राजाने भयभीत होनेकेकारण स्वीकार करलिये और वह उसी समय अन्तर्द्धान हो-गया ८२ इसके उपरान्त राजा चन्द्रावलोक उस राक्षसकोगया देखके अपने घोड़ेपर प्रियासमेत सवार होकर अपनी सेना को ढूंढ़नेको चला कुछ दूर चल के अपनी सेनाको पाकर सब सेना समेत नगरमें आया वहां बड़े उत्सवसे उसदिनको व्यतीतकरके दूसरे दिन उसने एकान्तमें अपने मंत्रियों से उसरा-क्षसका सबवृत्तान्त कहा उस वृत्तान्तको सुनकर उनमें से एक बुद्धिमान् मंत्रीनेकहा कि आप शोकन करिये मैं ब्रह्मराक्षसकेलिये वैसाही पुरुष लादूंगा इसपृथ्वीमें अनेक प्रकारके पुरुष हैं इसप्रकार राजासे कहकर उसने सातवर्षके वालककीसी प्रतिमा बनाकर उसमें अनेक रत्न जड़वाके गाड़ीपर रखवाके ग्राम तथा नगरों में घुमाई और उसकेसाथ ९ यह कहलवाया कि जो सातवर्षका ब्राह्मण का पुत्र अपने माता पिताकी आज्ञासे अपना शरीर ब्रह्मराक्षस के अर्पणकरे और जिससमय वह माराजाय उससमय उसके माता पिता उसके हाथ पैर पकड़ें उसे उसके माता पिताके उपकारकेलिये राजा चन्द्रावलोक इसप्रतिमा समेत सौगांवदेगा एक ग्राममें इस ढंढोरेको सुनकर किसी ब्राह्मणके सातवर्षके महासत्त्ववान् पुत्रने ढंढोरेवालोंसे कहा कि मैं तुम्हारे राजाकेलिये राक्षसको अपना शरीरदूंगा और अपने माता पितासे कहकर अभी आताहूं यह कहके वह बालक अपने घरमेंजाके हाथ जोड़कर अपने माता पितासे बोला कि मैं राजाके हितकेलिये अपना यह नश्वरशरीर दिये देताहूं और सौग्राम सहित सुवर्णकी प्रतिमा

राजासे लेकर तुम्हेंदिये देताहूं इसप्रकारसे मैं आपसे अनृण होजाऊंगा और परोपकार भी सिद्धहोगा और आप भी दरिद्र रहित होजाओगे उसके यह वचन सुनकर उसके माता पिता बोले कि हे पुत्र तुम क्या बकरहेहो क्या तुम्हारे कोई प्रेत तो नहीं लगाहै ऐसा कौनहै जो अपने पुत्रको धनके निमित्त मरवाडाले और कौन ऐसा बालक होगा जो अपने आप अपने प्राण देगा उनके वचन सुनके वह बालक फिर बोला कि सुनो मैं यथार्थ वचन कहताहूं (अवाच्याशुचिसम्पूर्णमुत्पत्त्येवजुगुप्सितंदुःखक्षेत्रंविनाश्येव शरीरमचिरादिदम् तदनेनात्यसारेण सुकृतंयदुपार्ज्यते तदेवसारंसंसारेकृतबुद्धिभिरुच्यते) अवाच्य अपवित्र वस्तुओं से पूर्ण उत्पत्तिसेही निन्दित दुःखो का क्षेत्र यह शरीर शीघ्रही नष्ट होनेवालाहै इससे इस असार शरीरके द्वारा संसार में जो कुछ धर्मोपार्जन कियाजाय बुद्धिमान् लोग उसीको सार कहते हैं और प्राणियोंका उपकार करने से अधिक कोई पुण्य नहीं है उसमें भी जो माता पिताकी भक्तिहोय तो क्याही बातहै इत्यादि वचन कहकर वह बालक अपने माता पिताको वह बात स्वीकार कराके राजपुरुषों से वह प्रतिमा तथा सौग्रामोका पट्टा लिखवालेके और माता पिताकोदेके उन्हें साथ लेकर राजाके यहां आया राजाभी उस बालकको देखके बहुत प्रसन्न होकर उसे तथा उसके माता पिताको हाथीपर चढ़ाके उस राक्षसके पास लेगया वहां चौका लीपकर जैसेही पुरोहितने यथोचित पूजनक्रिया वैसेही वह महाभयंकर राक्षस प्रकट होगया उसे देखके राजा चन्द्रावलोक नम्रहोकर बोला कि हे भगवन् आपके निमित्त मैं इस बालकको लायाहूं इसे आप प्रसन्न होकर ग्रहणकीजिये राजाके यह वचन सुनकर वह ब्रह्मराक्षस उस बालकको देखकर जिह्वासे अपने ओष्ठ चाटनेलगा उस समय उस बालकने शोचा कि इस शरीरके देनेसे मुझे जो कुछ पुण्यहुआहो उससे मुझे स्वर्ग तथा मोक्षकी प्राप्ति न होय किन्तु प्रति जन्ममें मेरे शरीरसे परोपकारहो उसके यह विचार करतेही आकाश से पुष्पोंकी वृष्टि होनेलगी तब जैसेही ब्रह्मराक्षसके आगे उसके माता पिता उसके हाथ पैर पकड़के खड़ेहुए और राजाने उसको मारना चाहा वैसेही वह बालक इतने जोरसे हँसा कि जिससे ब्रह्मराक्षसादिक सम्पूर्ण लोग अपने २कार्य्यको छोड़के चकितहोके उसके आगे हाथजोड़ २ के खड़ेहोगये इतनी कथाको कहके वेतालने राजासे कहा कि हे राजा अन्त समयमें भी वह बालक क्यों हँसा. जोजानकर भी इसका उत्तर न दोगे तो तुम्हारा शिरफटजायगा वेतालके यह वचन सुनके राजाने कहा कि सुनो भय उपस्थित होनेपर दुर्बलजीव अपने प्राणोंकी रक्षाकेलिये अपने माता पिताको पुकारतेहैं जो माता पिता न होंय तो राजाको और जो राजाभी न होय तो वहांके देवताको पुकारते हैं उस बालककेपास यह सब सामग्रीथी परन्तु उसका फल विपरीतथा धनके लोभसे उसके माता पिताने तो उसके हाथ पैरही पकड़रक्खे थे राजा अपने शरीरके बचानेकेलिये उसे मारनेहीको उद्यतथा और वहांका देवता जो ब्रह्मराक्षसथा वह उसका भक्षकहीथा, देखो नहीं स्थिर रहनेवाले अन्तमें विरस आधिव्याधिसे युक्त इस शरीरकेलिये मूर्खोंको कैसा लोभ होताहै ब्रह्मा विष्णु तथा महेशका भी यह शरीर अवश्य नष्ट होगा परन्तु यह प्राकृत लोग अपने शरीरको स्थिरही मानते हैं इसविचित्र मोहको देखकर और अपने.

मनोरथको सिद्धजानकर वह बालक आश्चर्य्य तथा हर्ष से हँसाथा राजाके यह वचन सुनके वेताल अपनी माया से अन्तर्द्धानहोके उसी वृक्षपर चलागया और समुद्रके समान गंभीर चित्तवाला राजा त्रिविक्रमसेन फिर उसे लेनेको चला १२७ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेसप्तविंशस्तरंगः २७ ॥

इसके उपरान्त राजा त्रिविक्रमसेन फिर शीशमके वृक्षकेपासजाके वेतालको पकड़कर कन्धेपररखके लेचला मार्ग में वेतालने कहा कि हे राजा एकबड़ी कामोद्दीपक कथा मैं आपको सुनाताहूं कि विशालानामपुरी में सम्पूर्ण शत्रुओंका जीतनेवाला पद्मनाभ नाम राजाथा उसी राजाके समयमें उस नगरी में कुबेरके समान धनवान् अर्थदत्तनाम एक वैश्य रहताथा उस वैश्यके अनंग मंजरीनाम अत्यन्त रूपवती एक कन्याथी उसका विवाह अर्थदत्त ने ताम्रलिप्ती नगरी के निवासी मणिवर्म्मानाम वैश्यके साथ कियाथा और अर्थदत्त के वह एकही कन्याथी इससे वह कन्या समेत अपने जामाताको अपने घरही में रखताथा उस अनंग मंजरीको अपने पतिपर ऐसी अरुचि थी जैसे रोगीको कड़वी औषधिपर होती है परन्तु वह अपने पतिको ऐसी प्यारी थी जैसी कि लोभीको सम्पत्ति प्यारी होती है एकसमय उसकापति मणिवर्मा अपने माता पिता के देखने को अपने घर चलागया तदनन्तर कुछ दिनों के उपरान्त सूर्य्यकी तीक्ष्ण किरणोंसे पथिकों के मार्गोंको रोकताहुआ उष्णकाल आया वसन्त के विरह से दिशाओं के उष्णश्वासों के समान उष्णवायु चलनेलगी वायुके द्वारा उड़ीहुई धूल आकाश में व्याप्तहोगई मानों संतप्त पृथ्वीने वर्षाकाल के बुलाने के लिये अपनी दूती भेजी कठोर धूपसे सन्तप्त वृक्षोंकी छायाकी आकांक्षा करनेवाले पथिकों के समान दिन भी धीरे २ जानेलगे हेमन्तऋतुके वियोगसे रात्रियां अत्यन्त दुर्बल होगईं ऐसे समयमें सम्पूर्ण शरीरमें चन्दन लगायेहुए रेशमी वस्त्रों को पहनेहुए उसअनंग मंजरीने अपनी सखी समेत अपने घरके ऊंचे झरोखेसे राजाके पुरोहित के कमलाकरनाम अत्यन्त रूपवान् युवा पुत्रको देखा उसकमलाकर ने भी चन्द्रमाकी कला के समान उस अनंग मंजरीको देखा परस्पर देखनेसे प्रेमरूपी रस्सी में उनदोनोंका चित्त बँधगया कमलाकरको कामके वशीभूत देखकर उसका मित्र उसे अपने घरपर लिवालेगया और अनंग मंजरी भी उसे गया देखकर शयन स्थानमें जाके कामसे पीड़ित होकर पलंगपर लेटगई दो तीनदिनके उपरान्त विरहके सन्तापके सहने में असमर्थ होकर अनंग मंजरी रात्रिके समय सम्पूर्ण लोगों के सोजाने पर मरनेके लिये अपने घरके उपवनकी बावड़ी के निकटगई वहाँ अपने पितासे स्थापन की गई कुलदेवता भगवती चंडिकाको प्रणाम करके बोली कि हे भगवती जो इसजन्ममें मुझे कमलाकर पति नहीं मिला है तो द्वितीय जन्ममें अवश्य मिले यहकहके वह अशोकके वृक्षमें अपने डुपट्टेसे फाँसी लगा के मरने को उद्यतहुई इतने में उसकी मालतिकानाम सखी उसे शयन स्थानमें न देखकर ढूंढ़तीहुई वहीं आई वहां उसने उसे अपने गले में फांसी लगाते देखकर हां हां कहके और दौड़ के वह फांसी काटडाली उसे आई देखके अनंग मंजरी बहुत दुःखसे पृथ्वी में गिरकर उसके बहुत समझाने से अपने दुःखका

कारण कहके बोली कि हे सखी मुझे प्रियका समागम बहुत दुर्लभहै इससे रोज २ के सन्तापसे एक दिनका मरनाही अच्छाहै यहकहकर वह मूर्च्छित होगई तब मालतिकाने शीतल जल तथा वायुसे उसे स्वस्थकरके कमलके पत्तोंकी उसके लिये शय्या बिछादी और हिमके समान शीतल पुष्पोंकाहार उसके गलेमें पहराया इतनेपर भी सन्तापको दूरहोते न देखकर अनंगमंजरी आंसूभरकर बोली कि हे सखी इनहारादिकों से मेरा यह दाह नहीं शान्त होसक्ताहै जो तुम मेरे प्राण बचाना चाहतीहो तो मेरे प्रियको किसीप्रकारसे लाओ उसके यहवचन सुनके मालतिका बोली कि हेसखी आजरात्रि बहुत व्यतीत होचुकी है प्रातःकाल मैं उद्योग करके रात्रिके समय यहीं तुम्हारे प्रियको लाऊंगी इससे धैर्य्य धरके अपने मंदिरको जाओ उसके वचनसुनकर अनंगमंजरीने अपने गले से हार उतारकर उसे पहनादिया और उसी के साथ अपने शयन स्थानमें जाके उससे कहा कि तुम अपने घरको जाओ प्रातःकाल मेरे कार्य्य के लिये यत्नकरना उसके यहवचन सुनके मालतिका अपने घरमें आकर प्रातःकाल कमलाकरके घरगई वहाँ उसे ढूंढ़कर उपवनमें एक वृक्षके नीचे कमलकी शय्यापर लेटाहुआ देखकर और उसके मित्रको उसे समझाते देखके वह यह किसके लिये कामातुर होरहाहै यह जाननेके लिये वृक्षोंकी आड़में छिपकर खड़ी होरही इतने में उस मित्रने कमलाकर से कहा कि हे मित्र क्षणभर इस मनोहर उपवनको देखकर अपने चित्तको बहलाओ बहुत विकल न होना चाहिये यहसुनकर कमलाकरने कहा कि मेरे जिस चित्तको वणिक पुत्री अनगमंजरी ने हरलियाहै उसे मैं कैसे बहलाऊं कामदेव तरकसके समान मुझमें अपने बाण भरताही जाताहै इससे ऐसा उपायकरो जिससे मेरे मन की चुरानेवाली जो अनंगमंजरी है वह मुझे मिले उसके यहवचन सुनके मालतिकाने उसके निकट आके कहा कि हे सुभग अनंगमंजरी ने मुझे आपके पास भेजा है यह कौनसी शिष्टताहै जो आप उस मुग्धाका चित्त चुराकर चलेआयेहो परन्तु यह बड़ाआश्चर्य है कि वह आपको प्राणोंसमेत अपना शरीर भी देनाचाहतीहै रात्रिदिन हृदयमें बलतीहुई कामाग्निके धूमके समान उष्णश्वासोंको वहछोड़ा करतीही है अंजनसे कालेहुये उसके आंसू मुखारविन्दकी सुगन्धिके लोभसे आयेहुये भ्रमरोंके समान शोभितहोतेहैं इससे जो तुममेरा कहनामानो तो तुम दोनोंका जिसमें कल्याणहोय वह उपाय मैं बताऊं उसके वचन सुनके कमलाकरबोला कि हे सखी तुम्हारे मुखसे प्रिया के खेद तथा स्नेहको सुनकर मुझे भय तथा हर्ष दोनों होते है तुम जैसा उचित समझो सो करो यह सुनकर मालतिकाबोली कि आज रात्रिके समय में अनंगमंजरीको उसी के उपवनमें छिपाकर लाऊंगी तुम बाहर खड़े रहना मैं युक्तिपूर्व्वक तुम्हें भी उसके भीतर लेजाऊंगी इसप्रकारसे तुम दोनोंका समागमहोगा उससे यह कहकर मालतिकाने अनंगमंजरी के पास आकर सब वृत्तांतकहा तदनन्तर दिनके व्यतीतहोजानेपर रात्रि के समय कमलाकर उस उपवनके बाहर आकर खड़ाहोगया और मालतिका युक्तिपूर्व्वक अनंगमंजरीको उपवनमें लाकर लताओं के पुंजमें बैठालकर कमलाकरको वहीं बुलालाई जैसेही वह अनंगमंजरी के निकट आया वैसेही अनंगमंजरी कामके वेगसे लज्जारहितहोके दौड़कर उसकेगले में लिपटगई और

अब कहां जाओगे यह कहकर बड़े हर्षको न सहकर मरकर पृथ्वी में गिरपड़ी यह देखकर कमलाकर हाय २ करके पृथ्वी में मूर्च्छितहोकर गिरपड़ा क्षणभरमें मूर्च्छासे उठकर प्रियाका आलिंगन चुंबनकरके बहुत विलाप करते २ ऐसा दुःखितहुआ कि उसका भी हृदय फटगया और प्राणनिकलगये उनदोनों की यह दशा देखकर मानों शोकसे रात्रिक्षीणहोगई प्रातःकाल उद्यानपालों ने जाके उसके माता पिता तथा भाईबन्धुओं से यह वृत्तांतकहा इससे उसके माता पिता रोतेहुए लज्जासे नीचे मुख किये हुए अपने भाईबन्धुओंसमेत वहां आये ठीकहै (कष्टाःकुलखलीकार हेतवोवतकुस्त्रियः) कुलमें कलंक लगानेवाली कुत्सित स्त्रियां बड़ी कष्टदायिनी होती हैं इतने में ताम्रलिप्तीसे उसका पति मणिवर्मा भी अपने श्वशुरके घरआया और वहां इस वृत्तांतको सुनकर उपवनमें आकर परपुरुषके साथ मरीहुई अपनी स्त्रीको देखकर शोकसे व्याकुलहोके मरगया यह देखके वहां बैठेहुए सबलोग बड़ा कोलाहलकरके रोनेलगे और सम्पूर्ण पुरवासी इस आश्चर्य्यको सुन देखने के लिये वहांआये उस अवसर में अनंगमंजरी के पिताकी स्थापन कीहुई भगवतीसे गणों ने कहा कि हे देवी यह अर्थदत्त तुम्हारा परमभक्त है इसके दुःख में दयाकरो गणोंके यह वचनसुनकर परम कृपालु भगवतीने कहा कि यह तीनों कामकी व्यथासे रहित होकर जी उठें भगवती के इसप्रकार कहतेही वह तीनों जी उठे उस आश्चर्य्य को देखकर सबलोग अचंभा करनेलगे तब कमलाकर लज्जासे नीचा मुख करके अपनेघर चलागया और अर्थदत्त भी लज्जित अनंगमंजरी तथा जमाईको लेकर अपनेघर चलागया यह कथा कहके वेतालने राजासे पूछा कि हेराजा इन तीनोंमें से कौन अधिक अनुरागसे अन्धाथा जानकरभी जो उत्तर न दोगे तो तुम्हारा शिरफट जायगा वेतालके यह वचनसुनके राजाने कहा कि इन तीनों में से मणिवर्मा अधिक अनुरागान्धाथा क्योंकि वह दोनों तो बहुत काल से परस्पर वियोगसे पीड़ित होरहे थे परस्पर के एकाएकी मिलने से जो उनके प्राणहर्ष से निकल गये इसमें कोई आश्चर्य्य नहीं परन्तु मणिवर्मा बड़ाही मूर्खथा जो पर पुरुषके साथ अपनी स्त्रीको मरी हुई देखकर क्रोधके समय में भी अनुराग युक्तहोके शोकसे मरगया राजाकेयह वचन सुनके वेताल फिर अपने स्थानको चलागया और राजाभी उसे लेनेको फिरचला ९७॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेअष्टाविंशस्तरंगः २८॥

इसके उपरान्त फिर राजात्रिविक्रमसेन शिंशपाके वृक्षके पासजाके वेतालको लेकर चला मार्गमें वेतालने कहा हे राजा तुम बड़ेसाधु तथा सत्त्वधान् हो इससे एक अपूर्व्व कथा मैं तुम्हें सुनाताहूं कि कुसुमपुरके धरणी वाराहनाम राजाके राज्यमें ब्रह्मस्थलनाम एकग्राम था उसमें विष्णुस्वामीनाम एक ब्राह्मण रहताथा उसके चारपुत्रथे सम्पूर्ण वेदोंको पढ़कर उनचारों पुत्रोंके युवाहोनेपर वह विष्णुस्वामी मरगया और उसकी स्त्री उसके साथ सतीहोगई इससे वह चारों अनाथ होकर अपने ग्राम में जीविका रहित रहने को असमर्थ होकर यज्ञस्थलनाम ग्राममें रहनेवाले अपने नानाके यहां भिक्षा मांगतेहुए गये वहां नाना तो उनका मरगया था इसलिये मामाओं ने उन्हें रक्खा कुछ दिनोंके उपरान्त उनका

वहाँ अनादरहोने लगा इससे उन चारों ने एकान्तमें बैठकर विचार किया उनमें से सबसे बड़े भाई ने कहा कि पुरुष अपने आप कुछ नहीं करसक्ता है सब बात भाग्यके आधीनहैं आज मैंने बहुत दुःखित होके श्मशानमें जाकर देखा कि एक पुरुष मराहुआ पृथ्वीमें पड़ाथा उसे देखकर मैंने शोचा कि यह धन्य है जो दुःखके भारको छोड़कर यहां आनन्दसे विश्रामकर रहाहै यह शोचकर मैंने वृक्षमें फांसी लगाके उस में अपना गला फांसदिया मेरे प्राणनिकलनेही कोथे कि वह फांसीटूटगई और मैं मूर्च्छितहोके पृथ्वी में गिरपड़ा और मूर्च्छाजगनेपर मैंने देखा कि एक कृपालु पुरुष मेरे मुखपर अपना वस्त्रहिला रहेहै मुझे स्वस्थहुआ देखकर उस कृपालु पुरुषने कहा कि हे मित्र तुम विद्वान होकर भी ऐसा खेद क्यों करतेहो (सुखंहिसुकृताद्दुःखंदुष्कृतादेतिनान्यतः) पुण्यसे सुख और पापसे दुःख प्राप्त होताहै अन्य कारणसे नहीं जो तुम्हें दुःखसे भयहै तो पुण्य करो आत्महत्या करके नरकके घोर दुःखों को क्यों भोगना चाहतेहो यह कहके मुझे सावधान करके वह पुरुष कहीं चलागया और मैं यहां चला आया इससे जो भाग्यमें न बदाहोय तो मनुष्य मरभी नहींसक्ता अब मैं किसी तीर्थपर जाकर अपने शरीरको भस्मकरूंगा जिससे फिर कभी निर्धन न होऊं उसकेयह वचनसुनकर छोटे भाइयोंने कहा कि हे आर्य्य आपविद्वान् होकर भी धनके विना इतनाखेद क्यों करतेहो क्या आप नहीं जानतेहो कि शरत्कालके मेघोंके समानधन चंचलहोताहै अच्छे प्रकारसे रक्षाकीगई भी अन्त में त्याग करनेवाली दुष्टोंकी मित्रता वेश्या तथा लक्ष्मी कबस्थिरहुई है इससे बुद्धिमान् पुरुषको किसी ऐसे गुणका उपार्जन करनाचाहिये जिसमें बँधेहुएधनरूपी हरिण वारम्वार चलेआवे छोटे भाइयोंके यहवचनसुनकर बड़ेभाईने कहा अच्छा कौनसा गुण उपार्जन करना चाहिये तब उन सबने विचार करके यह निश्चय किया कि पृथ्वी में घूमकर कोई अपूर्व विज्ञान सीखना चाहिये यह निश्चय करके और लौटकर आनेका एक स्थान नियतकरके वह चारों एक २ दिशाको चलेगये कुछकालके उपरान्त उसीनियत स्थानपर आये हुए चारों भाइयों ने परस्पर कहा कि किसने कौनसा विज्ञानसीखा उनमें से एकने कहा कि मैंने यह विज्ञानसीखा है कि जो मुझे किसी प्राणी की हड्डियां मिलें तो मैं उनमें उसी के अनुसार मांस उत्पन्न करसक्ताहूं उसके वचनसुनकर दूसरेने कहा कि मैं उसी मांसपर उसी प्राणीके योग्य रोम तथा त्वचा उत्पन्न करसक्ताहूं तीसरेने कहा कि मैं उसपर उसीप्राणीके योग्यसम्पूर्ण अंगउत्पन्न करसक्ताहूं यहसुनकर चौथेने कहा कि मैं उसमें प्राण उत्पन्न करसक्ताहूं यह कहके वह चारों अपने २ विज्ञानको प्रकट करने के लिये जंगलमें जाके भाग्य वशसे सिंहकी हड्डियां ले आये एकने उसमें मांस उत्पन्न किया दूसरेने त्वचा तथा रोम उत्पन्न किये तीसरे ने उसके सम्पूर्ण अंगउत्पन्न करदिये और चौथेने सिंहके शरीरको देखकरभी उसमें प्राण उत्पन्न करदिये इससे वह भयंकरसिंह उठके उन चारोंको खाकर बनमे चलागया इसप्रकार सिंहको उत्पन्न करके वह चारोंभाई नष्टहोगये ठीकहै (दुष्टंहिजन्तुमुत्थाप्यकस्यात्मनिसुखंभवेत्) दुष्टजीवको उठाकरके किसकी आत्माको सुखहोताहै (इत्थंचोपार्जितोयत्नाद्गुणोपिविधुरेविधौ। सम्पत्तयेननपरंजायतेतुविपत्तये॥ मूलेह्यविकृतेदैवेसिक्तेप्रज्ञानवारिणा। नयालवालः फलतिप्रायः पौरुष

पादपः) इसप्रकारयत्नपूर्व्वक उपार्जन कियाहुआ गुणभीभाग्यके विपरीतहोनेपर सम्पत्तिको नहीं किन्तु विपत्तिको उत्पन्न करताहै ज्ञानरूपी जलसे सींचेगये भाग्यरूपी मूलके पुष्टहोनेपर नीतिरूप थांवले में पुरुषार्थरूपी वृक्ष प्रायः फलित होताहै यह कथा कहके वेतालने राजासे पूछा कि बताओ इन चारोंमें से सिंहके बनाने में किसके अपराधसे वह चारों मारेगये जानकर भी जो उत्तर न दोगे तो तुम्हारा शिर फटजायगा वेतालके वचनसुनके राजाने यह मेरा मौन छुड़ाकर जाना चाहताहै अच्छा मैं इसे फिर लाऊंगा यह निश्चयकरके कहा कि जिसने सिंहके प्राणदिये थे वहीअपराधी है अन्यतीनोंने तो सिंह को विनाजाने ही युक्तिके बलसे मांस लोम त्वचा तथा अंग उत्पन्न कियेथे इससे उनका कोई दोष नहीं है परन्तु जिसने सिंहका आकार देखकरभी अपनी विद्याको प्रकट करनेके लिये उसमें प्राण दिये उसी को यह ब्रह्महत्या हुई राजाके यहवचन सुनकर वेताल फिर अपने स्थानको चलागया और राजाभी उसके लेनेको फिर चला ५१॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेएकोनत्रिन्शस्तरंगः २९॥

इसके उपरान्त राजा त्रिविक्रमसेन उसी शीशमके वृक्षके पासजाके वेतालको पकड़कर कन्धेपर रखके लेचला मार्गमें वेतालने कहा कि हे राजा आपके श्रमके दूरकरनेको मैं एककथा कहताहूं उसे सुनो स्वर्गके समान शोभायमान शोभावतीनाम नगरीके राजा प्रद्युम्नके राज्यमें उसीका पुण्यकिया हुआ यज्ञस्थलनाम एकग्रामथा उसमें यज्ञसोमनाम एकवैदिक महाधनवान् अग्निहोत्री ब्राह्मणरहता था उसके वृद्धावस्थामें बहुत यत्नोंसे एकपुत्रहुआथा उसकानाम उसने देवसोम रक्खाथा वह देवसोम विद्या तथा विनय आदि गुणोंसे युक्तहोकर सोलह वर्षकी अवस्थामें ज्वरसे पीड़ितहोकर मरगया उस को मृतकहुआ देखके यज्ञसोमने बड़ा विलाप किया और बहुत कालतक उसने उसे श्मशानमें नहीं जाने दिया तब सम्पूर्ण ब्राह्मणोंने उससे कहा कि हे विद्वन् तुम शास्त्रोंको पढ़करभी जलके बुलबुले के समान इससंसारकी गतिको क्या नहीं जानतेहो देखो बड़े २ राजा लोग जिनकी सेनाओंसे संपूर्ण पृथ्वी पूर्णथी जो अपनेको अमरसा मानकर संसारके भोगों में पड़े रहतेथे वह भी चिताकी अग्निमें भस्महोगये उन्हें भी कोई रोक न सका इससे तुम इस प्रेतका क्यों आलिंगन करतेहो अब इसे घरमें रखकर क्याकरोगे इसप्रकार समझानेसे उसने बड़े कष्टसे उसे छोड़ा तब उसे बांधव लोग श्मशान में लेगये उसश्मशानमें एकपाशुपत वृद्धयोगी कुटीमें रहताथा वामशिव उसकानामथा बिजलीके समान पीली उसकी जटाथीं और दुर्बलताके कारण सब शरीरकी नसें उसकी दिखलाई देतीथीं उसतपस्वीने उसब्राह्मणके बालकको लेकर दाहकरनेके लिये आयेहुए लोगों का कोलाहल सुनकर अपने एकमूर्ख अभिमानी शिष्यसे कहा कि बाहर जाकर देखो यह कोलाहल क्यों होरहा है गुरुके यहवचन सुनके शिष्यने कहा कि मैं नहीं जाता तुम्हीं जाकर देखो मेरी भिक्षाका समय आता है यहसुनकर गुरुने कहा कि हे मूर्ख अभी आधाप्रहर दिन चढ़ा है तेरी भिक्षाका कैसे समय आगया यहसुनके शिष्यने कहा कि हे वृद्ध आज से न तू मेरा गुरु है और न मैं तेरा शिष्यहूं अब मैं जाताहूं तू अपना दण्ड

कमण्डलुलो यहकहके वहदण्डकमण्डलु रखकर चलागया और वह तपस्वी वहांपरगया जहां सबलोग उसब्राह्मणके पुत्रको जलाने लायेथे और उसे देखकर उसके शरीरमे प्रवेशकरनेकी इच्छासे एकान्तमें जाकर रोदनकरके नाचताहुआ अपने उसवृद्ध शरीरको त्यागकर उसब्राह्मणके पुत्रके शरीरमें प्रवेश करगया इससे वह ब्राह्मणका पुत्र जी उठा उसे जियाहुआ देखके लोगोंने बड़े हर्षसे कहा कि भाग्यवश से ब्राह्मणका पुत्र जी आया तव उसतपस्वीने तपको न छोड़नेकी इच्छासे उनलोगोंसे यहवचन कहे कि श्रीशिवजी ने मुझको यहकहकर फिर जिलाया है कि तुम मृत्युलोक में जाकर पाशुपत व्रतका ग्रहणकरो इससे मैं अभी एकान्तमे जाकर उस पाशुपतव्रतका ग्रहणकरताहूं नहीं तो मेरे प्राण निकल जायँगे यहकहके वह उनलोगोंको श्मशानसे भेजकर और अपने पुराने वृद्ध शरीरको किसी गढ़े में डालकर किसी अन्य स्थानमें जाकर तपकरनेलगा यह कथा कहकर वेतालने राजासे कहा कि हे राजा उससमय वह योगी क्यों रोया औ क्यों नाचाथा जानकर भी जो उत्तर न दोगे तो तुम्हारा शिर फट जायगा वेतालके वचन सुनके राजाने कहा कि वह तपस्वी इसलिये रोयाथा कि इस मेरे शरीरको माता पिताने वड़े लाड़प्यारसे पालाथा और इसीके द्वारा मुझे सम्पूर्ण सिद्धियां प्राप्तहुईं अव मैं इसका त्यागकरताहूं और इसहर्ष से वह नाचाथा कि इसतरुण शरीरको पाकर मैं अन्य वहुतसी सिद्धियांभी प्राप्तकरलूंगा राजाके यहवचन सुनके वह वेताल फिर अपने वृक्षपर चलागया और कल्पान्तमेंभी नहीं चलायमान होनेवाले कुल पर्व्वतोंके समान स्थिर चित्तवाला राजा फिर उसके लेनेको चला ४८॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेत्रिन्शस्तरंगः ३०॥

इसके उपरान्त फिर राजा त्रिविक्रमसेन उसी शीशमके वृक्षकेपास जाकर वेतालको पकड़कर कंधेपर रखकेलेचला मार्ग में वेताल फिर वोला कि हे राजा तुम्हारे वारम्वार आनेसे मैं तो घवरागया परन्तु तुम नहीं घवराये इसस मैं तुमसे एक महाकठिन प्रश्न करताहूं उसको सुनो दक्षिणदेशमें धर्मनाम एक वड़ा धर्मात्मा राजाथा उसके चन्द्रवतीनाम अत्यन्त रूपवती स्त्रीथी उसी चन्द्रवती में उसके एक लावण्यवती नाम कन्याहुई जव वह लावण्यवती विवाहकेयोग्य हुई तो राजा धर्म के गोत्रीभाइयों ने राजाको जीत कर वाहर निकालदिया तव राजा धर्म अपनीकन्या तथा स्त्री को साथलेकर मालवदेश को चला मार्ग में चलते २ विन्ध्याचलके वनमें भिल्लोके ग्रामके निकट पहुंचा वहां राजाको आभूषण पहिने देखकर वहुतसे भिल्ल उसे मारनेके लिये अपने २ शस्त्रलेकर दौड़े उन्हें आते देखकर राजाने अपनी रानी तथा कन्यासे कहा कि तुम वन में भागजाओ नहीं तो यह तुम्हें भ्रष्टकरडालेंगे राजाके वचन सुनकर वह दोनों वनमें जाकर छिपीं और वह भिल्ल आकर राजाकेसाथ घोरयुद्धकरके उसेमारकर सव रत्नादिकलेके अपनेग्रामको चलेगये भिल्लोंके चलेजानेपर राजाको मरादेखके वह दोनों मा वेटी वहांसे भागकर एक दूसरेवनमे चलीगईं औरमध्याह्नकी धूपसे वहुत व्याकुलहोकेएकतड़ागके तटपर अशोकवृक्षके नीचे बैठ कर रोनेलगीं इतनेमें उसीवनके निकटका रहनेवाला एक चंडसिंह नाम क्षत्री अपने सिंह पराक्रम नाम पुत्रसहित घोड़ोंपर चढके भाग्यवशसे जिस मार्ग से वह दोनों मा वेटी गई थीं उसीमार्गमें आया वहां

चंडसिंहने उन दोनोंस्त्रियों के पैरों के चिह्नोंको देखकर सिंह पराक्रमसे कहा कि जो चलते २ यह दोनों स्त्रियां हमें मिलजायँ तो इनमेंसे जिसकेसाथ तुम चाहना उसीकेसाथ अपना विवाह करना अपनेपिता के यह वचन सुनके सिंहपराक्रमने कहा कि इनमेंसे जिसके छोटे पैर हैं उसकी कमअवस्था होगी उसके साथ में विवाह करलूंगा और जिसके वड़े पैरहैं उसकी अवस्था बड़ी होगी इससे उसकेसाथ तुम विवाह करलेना यह सुनकर चंडसिंहने कहा कि हेपुत्र अब मैं विवाह नहीं करूंगा तुम्हारीमाता अभी थोड़ेही दिन हुये तब मरी है ऐसी पतिव्रता स्त्री के मरजाने पर किसको पुनर्विवाहकी इच्छाहोगी यह सुनकर सिंहपराक्रम बोला कि हेतात ऐसा न कहो स्त्रीकेबिना गृह शून्य मालूम होताहै क्या आपने मूलदेवका कहाहुआ यह श्लोक नहींसुनाहै (यत्रघनस्तनजघना नास्तेमार्गावलोकिनी कान्ताअजड़ंकस्तदनिगड़ंप्रविशातिगृहसंज्ञकंदुर्गम्) जहां घनेस्तन तथा जंघावाली मार्गके देखनेवाली कान्ता न होय उस गृहसंज्ञक जंजीर रहित दुर्ग में कौनमूर्ख जाय इससे हेतात तुमको मेरीशपथहै कि तुम वड़ेपैरवाली दूसरी स्त्रीकेसाथ अवश्य विवाह करलेना उसके यहवचन स्वीकार करके चंडसिंह उसके साथ उनदोनों स्त्रियों के चरणचिह्न देखताहुआ उस तड़ागपर पहुंचा उन दोनोंपिता पुत्रोंको देखकर रानी चन्द्रवती उन्हेंचोर जानकर डरकेमारे खड़ीहोगई तब लावण्यवतीने उससे कहा कि हे माता डरोमत यह चोर नहीं हैंइन की चेष्टा सौम्य मालूम होतीहै लावण्यवतीके यहवचन सुनकर चन्द्रवती सन्देहसे निवृत्त न होकर चुप चाप खड़ीरही इतनेमें चंडसिंह घोड़ेपरसे उतरकर उनसे बोला कि डरोमत सावधान होकर बताओ कि तुमदोनों कौनहो तुम्हारा शरीर रत्नजटित महलों के रहनेके योग्यहै तुम इस कांटोंके बनमें क्यों आईहो तुम्हारी इस दीनताको देखकर हमारे चित्तमें खेदहोताहै तुम्हारे शरीरमें जो तीक्ष्ण सूर्य्यकी किरणलगती हैं इससे हमारे शरीरमें सन्ताप होताहै इससे शीघ्रही अपना वृत्तान्त वर्णनकरो चण्डसिंहके यह वचन सुनके रानीचन्द्रवती बड़ी श्वासलेके अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया उस वृत्तान्तको सुन के चण्डसिंहने उसे पतिरहित जानके मधुर २ वचन कहके उन दोनोंको घोड़ोंपर बैठाकर अपने पुत्र समेत घरको गया वहां जाकर सिंहपराक्रमने छोटे पैरहोनेके कारण रानीचन्द्रवतीके साथ अपना संयोगकिया और चण्डसिंहने वड़े पैरहोनेके कारण लावण्यवतीके साथ अपना विवाह किया क्योंकि मार्ग में उन दोनोंने छोटे वड़े पैर देखकर ऐसीही परस्पर प्रतिज्ञाकीथी इसप्रकार वह दोनों मा बेटी क्रमसे पुत्र तथा पिताकी स्त्री होकर वहू और सासहोगई समयपाकर उन दोनों के उन्हीं पतियों से बहुत से कन्या पुत्र उत्पन्नहुए इसप्रकार लावण्यवती तथा चन्द्रवतीको पाकर पुत्र और पिता सुखपूर्व्वक रहने लगे यह कथा कहके वेतालने राजासे पूछा कि हे राजा उन दोनों पुत्र और पिताके संयोगोंसे जो उन मा बेटियोंकी सन्ततिहुई उनका परस्पर क्या सम्बन्धहुआ जो जानकर भी उत्तर न दोगे तो तुम्हारा शिर फटजायगा वेतालके यह वचन सुनकर राजा त्रिविक्रमसेन बहुत विचार करके भी कुछ उत्तर न जानके चुपचाप चलतारहा तब उस मुर्देमें प्रविष्ट वेतालने हँसकर अपने चित्तमें शोचा कि राजा इस प्रश्नका उत्तर नहीं देसक्ताहै इसीसे प्रसन्नता पूर्व्वक चुपचाप चलरहाहै यह बड़ा सत्त्ववान् है इससे मैं

इसको ठग नहीं सकूंगा वह दुष्टभिक्षुक मुझे बहुत पीड़ितकिया करताहै इससे उस दुष्टको मरवाके जो कुछ सिद्धि उसे होनेवाली है वह इसराजाकोही देनीचाहिये यह शोचकर उसने राजा से कहा कि हे राजा इस अँधेरीरातमें तुम निर्भयहोकर श्मशानमें वारम्वार घूमरहेहो इससे मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहूं इस मुर्देमें से निकलकर अब मैं जाताहूं तुम इसे लेकर उस भिक्षुकके पास जाओ एक हितकारी वात मैं तुमको बताये जाताहूं उसे तुम अवश्य करना कि जिस भिक्षुककेलिये तुम इस मृतकको लायेहो वह इस मुर्देमें मेरा आवाहन करके पूजनकरेगा और पूजनके अन्तमें तुम्हे बलिदेनेकेलिये तुमसे कहैगा कि तुम इसको साष्टांग प्रणामकरो उसके यह वचन सुनकर तुम उससे कहना कि पहले तुम मुझे प्रणाम करके दिखाओ तब मैं उसीप्रकारसे प्रणामकरूंगा तुम्हारे कहनेसे जब वह प्रणामकरे तब तुम उसका शिर खड्गसे काटडालना इससे जो विद्याधरोंका ऐश्वर्य्य वह चाहता है सो सब तुम्हींको प्राप्त होगा और सम्पूर्ण पृथ्वीका राज्य तुमको मिलेगा और जो तुममेरा कहना न मानोंगे तो वह भिक्षुक तुमको मारडालेगा इसीलिये मैंने इतनी देरतक विघ्न किया है अब तुम जाओ तुमको सिद्धि प्राप्त होगी यहकहके वह वेताल उस मुर्देमेंसे निकलगया और राजा वेतालके वाक्यसे उस भिक्षुकको अपना अहितकारी जानके उसी मुर्देकोलेकर प्रसन्नता पूर्वक उसी भिक्षुकके पास चला ७५॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशाङ्कवतीलम्बकेएकत्रिन्शस्तरङ्गः ३१॥

इसके उपरान्त राजा त्रिविक्रमसेन उस मृतकको कन्धेपर रक्खेहुए क्षांतिशीलनाम उसभिक्षुकके पास गया रुधिरसे लिपेहुए चौकेमें हड्डियोंके चूर्णका मंडल बनाकर चारों कोनोंमे रुधिरके घटभरेहुए रखकर चर्बीका दीपकबालके अग्निमें हवनकरताहुआ वहभिक्षुक राजाको देखके उठकरबोला कि हे महाराज आपने मुझपर बड़ा अनुग्रह किया कहां आप सरीके राजा और कहां यह श्रमका कार्य्य आप बड़े परोपकारीहो (एतदेवमहत्त्वंच महतामुच्यतेबुधैः। प्रतिपन्नादचलनंप्राणानामत्ययेपियत्) प्राणोंके सन्देहमे भी प्रतिज्ञा करेहुए कार्य्यको न छोड़नाही महात्मा लोगोंका महत्त्वबुद्धिमान् लोगोंने कहाहै यह कहकर उसने राजाके कन्धेपर से उस मुर्देको उतारकर मंडल में रखके उसमें वेताल का आवाहन करके विधिपूर्वक क्रमसे पूजनकिया कपाल से अर्घदिया मनुष्यके दांतों के पुष्प चढ़ाये मनुष्यके नेत्रोकी धूपदी और मनुष्य मांसहीका नैवेद्यलगाया इस प्रकार पूजन करके उसने राजासे कहा कि हेराजा तुम इस वेतालके आगे पृथ्वीपर गिरकर साष्टांग प्रणामकरो यह तुम्हारे सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करेगा राजाने कहा कि हे भिक्षुक पहले तुम प्रणाम करके मुझे दिखाओ तब उसी प्रकारसे मैंभी प्रणाम करूंगा यह सुनकर जैसेही उसने प्रणाम किया वैसेही राजाने खड्गसे उसका शिरकाट डाला और उसका हृदय निकालकर वेतालके अर्पणकिया तब सम्पूर्ण भूतोंने उसकी बड़ी प्रशंसाकी और वेतालने प्रसन्न होकर कहा कि हे राजा जो विद्याधरोंका चक्रवर्त्तीहोना यह भिक्षुक चाहताथा वह तुमको अन्तमे प्राप्त होगा और प्रथम तुम सब पृथ्वीभरके चक्रवर्त्ती राजाहोगे और मैंने तुमको बहुत क्लेशदियाहै इससे तुम अभीष्ट वरमांगो यह सुनकर राजाने कहा कि जो आप मेरे ऊपर प्रसन्नहैं

तो मेरा कौनसा अभीष्ट सिद्धनहीं है तथापि मैं आपसे एक यह वर मांगताहूं कि आपने जो चौबीस कथा मुझसे कही हैं और यह जो आपकी प्रसन्नताकी कथाहै यह पचीसों कथा संसार में प्रसिद्धहोवें राजाके यह वचन सुनकर वेतालने कहा कि यह पचीसों कथा संसारमें वेताल पंचविंशतिका नामसे प्रसिद्ध होंगी और कल्याणकारिणीहोंगी जो कोई इनका एक श्लोकभी पढ़ेगा अथवा सुनेगा उसके सब पाप छूटजावेंगे जहां इनका पाठ कियाजायगा वहां यक्षवेताल कूष्माण्ड डाकिनी तथा राक्षसादिकों का भयनहीं होगा यह कहकर वह वेताल मुर्दे में से निकलगया तदनन्तर सम्पूर्ण देवताओंसमेत श्रीशिवजी साक्षात् प्रकटहुए और राजा त्रिविक्रमसेन से बोले कि हे वत्स तुमने बहुत अच्छा किया जो इसदुष्ट भिक्षुकको मारडाला यह हठ करके विद्याधरोंका चक्रवर्ती होना चाहताथा मैंने पहले म्लेच्छरूपसे उत्पन्नहुए दैत्योंके नाशकरनेके अर्थ विक्रमादित्य नामसे तुमको अपनेही अंशसे उत्पन्नकियाथा अब दुष्टोंके दमन करनेको मैंने तुम्हें त्रिविक्रमसेन नामसे उत्पन्नकिया है इससे सम्पूर्ण पृथ्वीको जीतके अपने वशमें करके थोड़ेही कालमें तुम विद्याधरोंके चक्रवर्तीहोगे और बहुत कालतक उस ऐश्वर्य्यको भोगकरके अन्तमें मेरेही शरीरमें लीनहोजाओगे यह अपराजित नाम खड्ग तुमलो इसके प्रभाव से तुम्हारे सब मनोरथ पूर्णहोंगे यह कहके और खड्ग देकर श्रीशिवजी अन्तर्द्धान होगये श्रीशिवजीके चलेजानेपर रात्रि व्यतीतहुई जानके राजाने अपने प्रतिष्ठानपुरमें आकर बड़ा उत्सवकिया थोड़ेही कालमें राजा त्रिविक्रमसेन श्रीशिवजीके दियेहुए खड्गके प्रभावसे पाताल समेत सब पृथ्वीको जीतके निष्कण्टक राज्य करके थोड़ेही दिनोंमें विद्याधरोंका चक्रवर्त्ती होगया और बहुत कालतक विद्याधरोंके ऐश्वर्य्यको भोगकर अन्तमें श्रीशिवजीकेही शरीर में लयहोगया ४१ ॥ इतिवेतालपंचविन्शतिका॥

यह कथा कहकर विक्रमकेशरी मंत्री ने मृगांकदत्तसे कहा कि हे स्वामी उसवृद्ध ब्राह्मणने मुझसे इसप्रकार वेताल पंचविन्शतिका कहके फिर यह कहा कि हे पुत्र देखो राजा त्रिविक्रमसेनको वेताल की कृपासे कैसा ऐश्वर्य्य प्राप्तहुआ इससे तुमभी मुझसे मंत्र सीखके वेतालको प्रसन्न करके अपने स्वामी मृगांकदत्तको पाओगे हे पुत्र उत्साही मनुष्योंको कोई वस्तु अप्राप्य नहीं है और जिन्हें उत्साह नहीं है उनसे कुछ भी नहीं होसक्ता इससे जो कुछ मैं तुम से कहताहूं वह तुमकरो तुमने मेरे सर्पका विष दूरकियाहै इससे तुममेरे परम उपकारी हो इसप्रकार कहते हुए उसब्राह्मणसे वेतालका मंत्र सीखकर मैंने उज्जयिनीमें जाके रात्रिके समय श्मशानमें मुर्दा लाके उसीमंत्रसे वेतालका पूजन किया और मनुष्यका मांस उसको भोजन करनेको दिया उसमांसको खाकर उसने मुझसे कहा कि अभी मैं तृप्त नहीं हुआहूं मुझे और मांस खानेको दे तब मैंने और कहीं मांस न पाकर अपनाही मांसकाटके उसे भोजन को दिया इससे वह वेताल प्रसन्न होकर बोला कि हे वीर तुमसे मैं बहुत प्रसन्न हूं तुम्हारा यह घाव अभी अच्छा होकर भरजायगा अब तुम अभीष्ट वरमांगो यहसुनके मैंने उससे कहा कि जहां मेरे स्वामी मृगांकदत्तहैं वहाँ मुझे ले चलो मेरे वचन सुनके वह कन्धेपर मुझे चढ़ाके आकाश मार्ग से ले चला और यहाँ आपको देख वह मुझे उतारकर चलागया हे स्वामी आपके वियोग

में मेरा यही वृत्तान्तहै विक्रमके शरीका यहवृत्तान्त सुनकर मृगांकदत्त अपने बाकी मंत्रियों के इसी प्रकार मिलनेकी आशाकरके बहुत प्रसन्न हुआ ५८ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेद्वात्रिंशस्तरंगः ३२ ॥

नमोविघ्नजितेयस्यजानुदेशेविवर्त्तते।कुंभस्रस्तेवनक्षत्रमालारात्रिपुनृत्यतः १

इसके उपरान्त विक्रमकेशरी गुणाकर विमलबुद्धि, विचित्रकथ, भीमपराक्रम, प्रचण्डशक्ति तथा श्रुतधि ब्राह्मण सहित मृगांकदत्त अपने शेष मंत्रियोंको ढूंढ़ताहुआ उज्जयिनीको चला मार्गमें बड़े भयंकर मरुस्थलको उल्लंघन करके एक बड़े सुन्दर तड़ागके तटपर पहुंचा उसतड़ागका निर्मल जल क्या था मानों दिनमें सूर्य्य के सन्ताप से पिघलेहुए चन्द्रमाका रसही था वह तड़ाग क्या था मानों त्रैलोक्यकी लक्ष्मी ने अपना प्रतिबिम्ब देखने के लिये मणिका दर्पण बनायाथा नानाप्रकारके सुन्दर कमल उसमें प्रफुल्लितहोरहेथे अनेकप्रकारके सुन्दर २ पक्षी उसके तटपरबैठे शब्द कररहेथे उस तड़ाग के पश्चिम तटपर एक बहुतबड़ा दिव्यवृक्ष लगाथा अत्यन्त उन्नत आकाशगामी शाखाओंसे वह ऐसा शोभित होताथा कि मानों कौतुकसे नन्दनवनकी शोभा देखने को उद्यतहै अमृतके समान स्वादिष्ट फल उसकी शाखाओंमें लटकरहेथे पत्तेरूपी हाथोंको हिला २ कर पक्षियोंके शब्दों से वह मानों यह कहताथा कि कोई जैसे तैसे आकर मुझे नहींछुए ऐसे सुन्दर उसवृक्षको मृगांकदत्त तो देखनेलगा परन्तु उसके छओमंत्री क्षुधासे व्याकुलहोके उसके फलखानेको उसपर चढ़गये और चढ़तेही फल रूप होगये तब मृगांकदत्त अपने उन मंत्रियों को न देखकर उनका नाम लेलेकर पुकारनेलगा और कुछ प्रत्युत्तर न पाकर बहुत विह्वलहोके पृथ्वीपर मूर्च्छितहोके गिरपड़ा उसे मूर्च्छित देखके श्रुतधि ब्राह्मण ने तड़ागका शीतलजल उसपर छिड़कके मूर्च्छासे जगाकर कहा कि हे स्वामी तुम बुद्धिमान् होकर भी क्यों अधैर्य्य होकर दुखितहोतेहो (अश्नुतेहिसकल्याणं व्यसनेयोनमुह्यति) जो आपत्ति में मोहित नहींहोता है उसे अवश्य कल्याण प्राप्तहोता है जैसे सर्प के शापसे छूटकर यह सब मंत्री आप को मिलेथे वैसेही यह तथा अन्य मंत्री भी आपको फिर मिलजायँगे और थोड़ेहीकालमें शशांकवती भी आपको मिलजायगी श्रुतधिके यह वचन सुनकर मृगांकदत्तने कहा कि हे मित्र ब्रह्माने हमलोगों के नाशहीके लिये यह रचनाकी है नहीं तो कहां रात्रिमें भीमपराक्रम से वेतालका मिलना कहां उस से शशांकवती का ज्ञानहोना कहां अयोध्या से शशांकवती के निमित्त चलना कहां विंध्याचल में सर्पके शापसे हमलोगों का परस्पर वियोग होना फिर कहां क्रमसे कुछेकों का मिलजाना और कहां वृक्षमें उनका फिर नष्ट होजाना किसी भूतने इसवृक्षपर इन्हें नष्ट करदियाहै उनके विना मैं शशांकवतीको लेकर क्या करूंगा यहकहके वह श्रुतधिके निवारण करनेपर भी उसतड़ागमें अपने प्राण देनेको उद्यतहुआ तब यह आकाशवाणी हुई कि हे पुत्र साहस न करो अन्तमें तुम्हारा कल्याणही होगा इस वृक्षपर साक्षात् गणेशजीका निवासहै तुम्हारे मंत्रियोंने अज्ञानसे उनका निरादर कियाहै वह सब विना

हाथ पैर धोये और आचमन किये विनाही फल लेनेकेलिये इस वृक्षपर चढ़गये इससे गणेशजीके इस शापसे कि तुम फल लेनेको आयेहो इसीसे फल होजाओ, फलरूप होगये और जो तुम्हारे चारमंत्री अभी नहीं मिले हैं वह भी इसीप्रकारसे इसमें फल होकर लटकरहे हैं इससे तुम तप करके परम कृपालु श्रीगणेशजी की आराधना करो उनकी कृपा से तुम्हारे सर्वकार्य्य सिद्धहोंगे इस आकाशवाणी को सुनकर मृगांकदत्त बहुत प्रसन्नहोके उस तड़ागमें स्नान करके उसी वृक्षमें गणेशजीका पूजन करके हाथजोड़के उनकी यह स्तुति करनेलगा कि हे गणेशजी आपकी जयहोय जिस समय आप तांडव नृत्यमें अपने चरणों से पृथ्वीको दवाते हो तव पृथ्वी के टेढ़े होजानेसे ऐसी शोभा होती है कि मानों सम्पूर्ण पृथ्वी वन तथा पर्वत आपको प्रणाम कररहे हैं देवता दैत्य तथा मनुष्योंसे पूजन कियेहुए चरण कमलवाले हे गणेशजी आपकी सदैव जयहोय हे अनेक प्रकारकी सिद्धियोंकी निधिके कुंभरूप गणेशजी आपकी जयहोय हे एकसाथही उदित होनेवाले वारह सूर्य्यों के समान तेजवाले आपकी जयहोय इन्द्र विष्णु तथा शिव आदिक देवताओं से भी दुर्जय दैत्यों के नाश करनेवाले भक्तोंके पापों को दूरकरके सदैव दयाकरनेवाले हे गणेशजी आपकी सदैव जयहोय अग्निकी दीप्तिमान् ज्वालाके समान जाज्वल्यमान परशुके धारणकरनेवाले हे गणेशजी आपकी जयहोय हे गणेशजी त्रिपुर युद्धमें श्री शिवजीकी जयके लिये पार्वतीजीने भी आपका पूजन कियाहै मैं आपकी शरणमें प्राप्तहोके आपको वारंवार नमस्कार करताहूं इसप्रकार स्तुतिकरके मृगांकदत्त ग्यारह दिनतक उसी वृक्षके नीचे निराहार होकर तपकरतारहा वारहवेंदिन रात्रिके समय स्वप्नमें श्रीगणेशजीने उससे कहा कि हे पुत्र मैं तुमपर प्रसन्नहूं तुम्हारे मंत्री शापसे छूटकर तुम्हें मिलजायँगे उनके साथ जाकर तुम शशांकवती को पाकर फिर अपनी नगरीमें आकर सम्पूर्ण पृथ्वीका राज्यकरोगे गणेशजीके यह वचन सुनकर मृगांकदत्त प्रातःकाल उठके श्रुतधि से यहसव स्वप्नका वृत्तान्त कहके स्नान पूर्वक श्रीगणेशजीका पूजन करके जैसेही उसवृक्षकी प्रदक्षिणा करनेलगा वैसेही उसके दशों मंत्री व्याघ्रसेन, स्थूलबाहु, मेघबल तथा दृढ़मुष्टि और छः वह जो पहिले मिलचुके थे वृक्षपरसे उतरकर उसके पैरोंपर गिरे वह दशों मंत्री एकसाथही मिले देखकर मृगांकदत्तने वहुत प्रसन्न होकर उनसवका आलिंगनकरके सवसे कुशलपूछी और वह सव भी श्रुतधिसे मृगांकदत्तकी विकलता तथा उसके वारह दिनतक निराहार रहनेका वृत्तान्त सुनके वहुत प्रसन्न होकर अपने को सनाथ मानते भये इसके उपरान्त तड़ागमें स्नानकर संध्या आदिसे निवृत्तहुए उनसव मंत्रियों के साथ मृगांकदत्तने सुखपूर्वक व्रतका पालन किया ५९॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेत्रयस्त्रिंशस्तरंगः ३३॥

इसके उपरान्त उसीतड़ागके तटपर पारण करके सुखपूर्वक बैठेहुए मृगांकदत्तने उसीदिन मिलेहुए अपने चारों मन्त्रियोंसे अपनेसे वियोगहोनेके उपरान्तका सव वृत्तान्तपूछा उनमेंसे व्याघ्रसेनने कहा सुनिये मैं सव वृत्तान्त कहताहूं जिससमय पारावत सर्प के शापसे मैं आपलोगों से वियुक्तहुआ तब मोहितहोकर कुछ देरतक उसी वनमें घूमा किया कुछ देरके वाद मोहसे निवृत्तहोकर भी मुझे रात्रिमें

अन्धकारके कारण मार्गादिक कुछभी नहीं दिखाई दिया वड़े कष्टसे उसरात्रि के व्यतीत होनेपर सूर्य्य भगवान्के तेजसे दिशाओं को प्रकाशित देखकर मैंने शोचा कि हाय हमारा स्वामी कहांगया होगा हम लोगों के विना अव उसकी क्या दशाहोगी मैं उसे कैसे कहांपाऊं अच्छा उज्जयिनी कोही चलना चाहिये कदाचित् वह भी वहीं गयाहोगा यह शोचकर महाघोर वनमें चलते २ वड़े क्लेशसे मैं एक तड़ागके निकट पहुंचा वह तड़ाग अपने प्रफुल्लित कमलरूपी नेत्रोंसे मानों देखकर तरंगरूपी हाथोंको हिलाकर हंसादि पक्षियोके मनोहर शब्दों से पथिकोंको वुलारहा था सत्पुरुषके समान उस तड़ागको देखकर मेरा सन्ताप जातारहा उसमें स्नान करके कमल की डंडियांखाकर जलको पीकर जैसेही मैं वैठा वैसेही दृढ़मुष्टि, स्थूलवाहु तथा मेघवल यह तीनों भी वहीं आये हम चारों आपके वृत्तान्तको परस्पर पूछके और कुछ भी न जानके आपके वियोग से शरीर त्यागने को उद्यतहुए इतने में दीर्घतप नाम महर्षिका महातपनाम पुत्र कालेमृगचर्मको ओढेहुए वायें हाथमे कमण्डललिये और दहने हाथ में मालालियेहुए वहुत से छोटे २ मृगों के वच्चे तथा मुनि पुत्रों को साथ में लियेहुए वहीं स्नानकरने को आया वह हम लोगो को तड़ागमें गिरनेको उद्यत देखकर हमारे निकटआके वोला कि हे महापुरुषो यह पापमतकरो कातरलोग दुःखसे अन्धेहोकर विपत्तिमे पड़ते हैं और धीरपुरुष विवेकरूपी दृष्टि से सन्मार्गको देखकर कभी आपत्तिरूपी गढ़ोंमें नहीं गिरतेहैं और निस्सन्देह अपने कार्य्यको सिद्धकरतेहैं तुमलोगों की भव्यआकृतिहै तुम्हारा कल्याणहोगा कहो तुमको क्या दुःखहै उसके वचन सुनके मैंने सव वृत्तान्त कहदिया तव उसने हम लोगोंको समझाके मरनेसे निवृत्तकरके तड़ागमें जाके अपने साथियों समेत स्नान पूर्व्वक सन्ध्यावन्धनादिक कर्मकिया उसकृत्यको समाप्त करके वह मुनिपुत्र हम लोगोंको अतिथि सत्कारकेलिये अपने आश्रमको लेगया वहां हम लोगोंको एक स्थानमें वैठालकर उसने भिक्षापात्रलेकर आश्रम वृक्षोंके पासजाके उनसे भिक्षामांगी क्षणभरही मे उन वृक्षोसे गिरेहुए फलोंसे उसका भिक्षापात्र भरगया वह फललाकर उसने हमलोगोको दिये अमृतके समान उनस्वादिष्ट फलोंको खाकर हमलोगोने वह दिन वहीं व्यतीत किया रात्रिके समय आकाशमे नक्षत्र व्याप्तहोगये मानों सूर्य्यके समुद्रमे गिरनेसे समुद्रकी छींटें उड़कर आकाशमें गई थीं सूर्य्य को अस्त देखके चन्द्रमा मानों वैराग्यसे चन्द्रिकारूपी धौतवस्त्रको पहनकर उदयाचलके तपोवनमे प्राप्तहुआ उस समय अपने २ कार्य्योंको करके एकस्थान में वैठेहुए संपूर्ण मुनियोंके दर्शनों के निमित्त हमलोगगये और उनको प्रणामकरके उन्हींके निकट वैठगये मुनियोंने हमलोगोंसे पूछा कि तुम कहांसे आयेहो तव उस मुनिकुमारने हमलोगोंका सव वृत्तान्त उनसे कहदिया हमलोगोंके वृत्तान्तको जानके कण्वमुनिने कहा कि तुम वीरहोकरभी ऐसे अधीर क्यों होतेहो (आपद्यभग्नधैर्य्यत्वं सम्पद्यनभिमानिता यदुत्साहस्यचात्यागस्तद्धिसत्पुरुषव्रतम् महान्तश्चमहान्त्येव कृच्छ्राण्युत्तीर्य्यधैर्य्यतः महतोर्थान्समासाद्यमहच्छन्दमवाप्नुवन्) आपत्ति मे धैर्य्य का न छोड़ना सम्पत्तिमें अभिमान न करना और उत्साहको न त्यागना यह सत्पुरुषोंका व्रतहै महात्मालोग धैर्य्यसे महाक्लेशों को उल्लंघन करके और महासम्पत्तियों को पाकरके

महतशब्दको प्राप्तहुएहैं, इसी विषयपर मैं तुमलोगोंको सुन्दरसेनकीकथा सुनाताहूं उसने मन्दारवती के निमित्त बड़ाक्लेश सहाहै यह कहके वह कण्वमुनि हमलोगोंके आगे यहकथा कहनेलगे ४०. उत्तर दिशाके आभूषणरूप निषध देशमें अलकानाम एक नगरीथी उसमें बड़ाप्रतापी शत्रुओं का जीतने-वाला महासेननाम राजाथा उसराजाके गुणपालितनाम बड़ाबुद्धिमान् मंत्रीथा उसपरराज्यकाभार रख कर सुख भोगतेहुए राजा महासेनके शशिप्रभानाम रानीमें सुन्दरसेन नाम अत्यन्त रूपवान् वीर पुत्र हुआ उसके बाल्यावस्थासेही अत्यन्तस्नेही पांचमंत्रीथे चंडप्रभ, भीमभुज, व्याघ्रपराक्रम, विक्रमशक्ति तथा दृढ़बुद्धि यह पांचों महाकुलीन स्वामिभक्त तथा पक्षियोंकी बोलियोंके जाननेवालेथे पांचों मंत्रि-योंके साथ सुखपूर्वक अपने पिताके यहां रहतेहुए राजपुत्र सुन्दरसेनने युवावस्था होनेपरभी योग्यस्त्री न मिलनेके कारण अपना विवाह नहीं किया (अनम्राक्रमणंशौर्यं धनंनिजभुजार्जितं भार्य्यारूपानु रुपाच पुरुषस्येहपूज्यते) नम्रोंको नहीं आक्रमण करनेवाली शूरता अपने भुजबल से उपार्जन किया हुआ धन और अपने स्वरूपके अनुरूपस्त्री पुरुषको योग्यहै नहीं तो यह तीनों व्यर्थहैं यही शोचकर सुन्दरसेन विवाहनहीं करताथा एकसमय अपने पांचों मंत्रियों समेत सुन्दरसेन शिकार खेलनेको नगरी के बाहर निकला वहां उसे कात्यायिनीनाम एक वृद्ध तपस्विनी देखकर उसके दिव्यस्वरूपपर अत्यन्त चकितहुई और सेवकोंसे उसका नामपूछकर दूरसे चिल्लाकरबोली कि हे कुमार तुम्हारी जयहोय उसके यहवचन सुन्दरसेनने अपने मंत्रियोंसे वार्त्तालापकरनेमें व्यग्रहोनेकेकारण नहींसुने जबबहुत पुकारनेसे भी सुन्दरसेनने उसकेवचन नहींसुने तब वहबोली कि हेराजपुत्र तुम मेरेआशीर्वादको क्योंनहींसुनते जो तुम्हें अभीसे ऐसाअभिमानहै तो जब तुम हंसद्वीपकेराजाकी मंदारवतीनामकन्याको पाओगे तो इन्द्रके भी वचन नहींसुनोगे उसके यहवचन सुनकर सुन्दरसेनने उससे अपनाअपराध क्षमाकराके अपने विक्र-मशक्तिनाम मंत्रीके यहां उसे टिकनेकेलिये अपने सेवकोंकेसाथ भेजदिया और शिकार खेलनेके पीछे लौटकर अपने मन्दिरमें आकर भोजनके उपरान्त उसतपस्विनी को अपने पास बुलाकर उससे पूछा कि हे भगवती वह मन्दारवती नाम कन्या कौनहै जिसकानाम तुमने लियाथा यहसुनकर तपस्विनी बोली कि मैं तीर्थयात्राके निमित्त सम्पूर्ण पृथ्वी पर भ्रमण किया करतीहूं एकसमय भ्रमणकरते २ मैं हंसद्वीपको गई वहां राजामन्दारदेवकी मन्दारवतीनाम अत्यन्त रूपवती कन्या मैंने देखी उसके समान पृथ्वीभरमें कोई रूपवान् नहीहै केवल आपही उसके समान दिखाई देतेहैं जिन्होंने उसका रूप नहीं देखाहै उनके नेत्र तथा जन्म व्यर्थहैं यहसुनकर सुन्दरसेनने कहा कि हे अम्ब उसका वहसुन्दररूप मैं किसप्रकारसे देखूं तपस्विनीने कहा कि मैंने उसकी तसवीर उतारकर अपनी झोली में छोड़लीथी वह मेरे पास है जो चाहो तो देखो यहकहके उसने झोली में से तसवीर निकालके सुन्दरसेनको देदी उस तसवीरको देखतेही सुन्दरसेन कामके वशीभूतहोकर बिना कुछकहे सुनेही चित्रसाहोगया तब उसके मंत्रियों ने तपस्विनी से कहा कि हे आर्ये तुम इसराजपुत्री के साथ सुन्दरसेनकी भी तसवीर लिखदो जिससे हमें यहभी मालूमहोय कि तुम्हें ठीक तसवीर उतारना आताहै या नहीं यहसुनकर उसतपस्विनी

ने क्षणभरहीमें सुन्दरसेनकी तसवीर उतारली उसतसवीरको देखकर सब मंत्रियोंने कहा कि हे भगवती निस्सन्देह तुम्हारे तसवीर उतारनेमें कोई प्रकारका अन्तर नहींहै इसतसवीरके देखनेसे यह मालूमहोताहै कि यह साक्षात् सुन्दरसेनही है इससे यह मन्दारवती भी ऐसीही रूपवतीहोगी मंत्रियोंके इसप्रकार कहनेपर वह सुन्दरसेन उनदोनों तसवीरों को लेकर आदरपूर्व्वक उसतपस्विनी को विदाकरके शयन स्थानमें जाके पलंगपर लेटा और मन्दारवतीके चित्रको देखकर यह मुखहै अथवा कलंकरहित चन्द्रमा है यह स्तनहैं अथवा कामदेव के राज्याभिषेक के कलश हैं यह त्रिवली हैं अथवा रूप समुद्रकी लहरें हैं और यह नितम्बहै अथवा रति के निवासस्थान है इसप्रकार उसकी शोभाको देखताहुआ कई दिन तक निराहारही पलंगपर पड़ारहा उसकी इस विकलताको सुनकर उसके पिताने आके उसके मंत्रियों से सब वृत्तान्त पूंछकर कहा कि हे पुत्र तुम मन्दारवती के निमित्त इतने क्यों विकल होरहेहो उसका पिता मन्दारदेव मेरा परममित्रहै जो मैं उसके पास अपना दूत भेजूंगा तो वह मेरी प्रार्थना को अवश्य अंगीकार करेगा यह कहकर राजा महासेनने तपस्विनीकी वनाईहुई दोनों तसवीर देकर सुरतदेव नाम दूत राजा मन्दारदेव के पास भेजा वह दूत कई दिनों में समुद्रका उल्लंघन करके हंसद्वीपमें पहुंचकर प्रतीहार के द्वारा आज्ञा लेकर मन्दारदेव के निकट जाकर बोला कि हे महाराज राजा महासेन ने आपके पास यह सन्देशा भेजाहै कि आप मेरे पुत्र सुन्दरसेन को अपनी पुत्री देदीजिये कात्यायिनी नाम तपस्विनी आपकी कन्याकी तसवीर लिखकर यहां दिखाई थी इसीसे हमने समान संयोग जान के उसी के हाथसे सुन्दरसेन की भी तसवीर लिखवाई यह वड़ा स्वरूपवान् है इससे अपने समान स्त्री के विना विवाह नहीं करना चाहताहै एक तुम्हारीही कन्या इसके समानहै यह सन्देशा कहके राजाने वह दोनों तसवीरें भी मेरे हाथ आपके पास भेजी हैं यह कहकर दूत ने वह तसवीरें राजाको देदीं दूत के वचन सुनके प्रसन्न होकर राजा ने अपनी रानी तथा मन्दारवती को बुलाकर उनके सामने सुन्दरसेन की तसवीर खोली उसे देखतेही मेरी कन्याके समान रूपवान् कोई नहीं है इसअभिमानसे रहित होकर राजाने कहा कि जो इस राजपुत्रके साथ मेरी कन्याका विवाह होय तो इसका रूप सफलहै क्योंकि इस राजपुत्रके विना मेरी कन्याकी और मेरी कन्याके विना राजपुत्रकी शोभा नहीं है हंसके विना कमलनी की शोभा नहीं और कमलनी विना हंसकी शोभा नहीं होती राजाके यह वचन सुनकर और उस चित्र को देखकर रानीभी वहुतप्रसन्नहुई और मन्दारवती कामसे मोहितहोकर उसतसवीरको देखतीहुई आप भी तसवीरसी होगई उसकी यह दशादेखके मन्दारदेवने उसदूतका बड़ासत्कारकरके दूसरे दिन उसदूत के साथ एक अपना भी दूत करके उन दोनोंसे कहा कि तुम जाकर अलकाके स्वामी महासेनसे कहो कि तुम्हारेस्नेहसे हमने अपनी कन्या तुम्हारेपुत्रको देनी स्वीकारकी इससे तुम्हारापुत्र यहांआवेगा या मैंहीं अपनी कन्याको वहां भेजदूं राजाके यहवचन सुनकर वह दोनों दूत जहाजके द्वारा समुद्रकेपार शशांकपुरमें पहुँचकर वहांसे कईदिनों में अलकामें आकर राजामहासेनके निकटगये उन दोनों दूतोंके द्वारा मन्दारदेव के संदेशेको सुनकर राजा महासेनने वहुतप्रसन्नहोकर ज्योतिषियों से लग्नपूछी ज्योतिषियों

ने तीन महीनेके उपरान्त कार्तिक महीनेकी शुक्लापंचमीके दिन लग्न बताई राजाने वह लग्न पत्र में लिखवाकर मन्दारदेवके दूतके साथ एक अपना दूत पत्र देकरके भेजा उन दोनों दूतोंने हंसद्वीपमें जाकर राजा मन्दारदेवको पत्रदेकर सब वृत्तान्तकहा राजा मन्दारदेवने उस लग्नको स्वीकार करके महासेनके दूतको बहुतसा धन देकर विदा किया इसप्रकार लग्नका निश्चय होजानेपर दोनों पक्षके लोग लग्नकी प्रतीक्षा करनेलगे इतनेमें मन्दारवती विवाहकी लग्नको बहुत दूर जानकर कामाग्निसे अत्यन्त सन्तप्त हुई चन्दनका लेपभी उसको अंगारके समान अति उष्ण मालूम होताथा पुष्पोंकी शय्याभी तप्त वालूके समान उसे मालूम होती थी और चन्द्रमाकी शीतल किरणें भी उसे अग्निकी लपटों के समान मालूम होती थीं यह दशा देखकर सखियों के बहुत पूछनेपर उसने कहा कि हे सखियो विवाह में अभी बहुतदिन बाकी हैं मैं उस प्रियके विना क्षणभर भी नहीं ठहरसक्ती हूं औरउसका स्थान यहां से बहुतदूर है ब्रह्माकी बड़ी विचित्रगति है न जानें विवाह पर्य्यन्त किसकी क्या दशाहोय मैं जानती हूं कि मेरे प्राण अवश्य निकलजायंगे यह कहके वह मूर्च्छितसी होगई सखियों के द्वारा उसकी यह दशा सुनकर राजा मन्दारदेवने अपनी रानी तथा मंत्रियों से यह सलाहकी कि राजा महासेन हमारा परममित्रहै और मन्दारवती विरहसे अत्यन्त व्याकुल है इससे इसको वहीं अलका मे भेजदेना चाहिये यह अपने प्रियकेपास जाके लग्नकी प्रतीक्षा करसकेगी यह सलाहकरके शुभ मुहूर्त्त दिखलाकर राजा मन्दारदेवने सम्पूर्ण परिकर तथा बहुतसे धनसमेत मन्दारवतीको अपने विनीतमति नाम मंत्रीकेसाथ जहाजपर बैठाके अलका जानेकेलिये विदाकिया १३८ कईदिनतक समुद्रमें चलते२ एकदिन अकस्मात् घोरमेघ आकर बरसनेलगे और तीक्ष्णवायु चलनेलगी इससे वह जहाज फटगया सम्पूर्ण परिकर समेत विनीतमतिके डूबजानेपर मन्दारवती समुद्रकी तरंगोंके द्वारा तटकेवनमें आकर गिरी वहां वह अपनेको अकेली देखकर दुःखके समुद्रमें डूबकर यह विलाप करनेलगी कि हाय मैं कहां को चलीथी और कहां आ लगी मेरे सब साथी कहांगये हाय यहक्याहुआ क्या करूं कहांजाऊं हाय मेरे मन्दभाग्य ने मुझे समुद्रमें डूबने भी न दिया हेतात हेअम्ब हेआर्यपुत्र तुमको विनापायेही मैं इस वन में मरीजातीहूं मुझे आकर बचाओ उसके इसप्रकार विलाप करतेही मतंग नाम मुनि समुद्रके जल में स्नान करनेको अपनी यमुना नाम कन्यासमेत वहां आये वहां मन्दारवती को रोते देखकर उससे बोले तुम कौनहो इस वनमें कैसेआईहो और क्यों रोरहीहो मुनिके वचन सुनकर मन्दारवतीने लज्जा से अधोमुखहोकर अपना सबवृत्तान्त कहा तब मतंगमुनिने ध्यानकरके उससे कहा कि हेराजपुत्री खेद को त्यागकरके धैर्य्य धरो रोदन से तुमको और अधिक क्लेश मालूम होताहोगा विपत्तियां कोमल और कठोरकी अपेक्षा नहींकरतीं तुम्हाराप्रिय थोड़ेहीदिनमें तुमको मिलजायगा इससे मेरे आश्रममें चलके मेरी इसकन्याके साथ रहो यह कहकर मतंगजी स्नानकरके उसे अपने आश्रममें लेगये वहां जाकरवह मुनिकी सेवाकरतीहुई मुनिकी कन्याकेसाथ रहनेलगी इसबीचमें लग्नकेदिन निकटहोनेपर राजामहासेनने सुन्दरसेनके हंसद्वीप जानेकी तैयारीकी और शुभलग्न देखके उसे बहुतसीसेनासमेत मंत्रियोंको

साथकरके हंसद्वीपकोभेजा कईदिन चलकर सुन्दरसेन अपनी सेनासमेत शशांकपुर नगरमें पहुंचावहां राजा महेन्द्रादित्यने उसे अपने राजमंदिरमें लेजाकर उसका मंत्रियोंसहित बड़ासत्कार किया राजा महेन्द्रादित्यके सत्कारको ग्रहणकरके उसने वहदिन वहींव्यतीत किया और समुद्रके पारजाके मैं अपनी प्रियाको कबपाऊंगा कब उसके मधुरवचनोंको सुनूंगा और कब उसकाआलिंगन करूंगा इत्यादि विचारों से रात्रि भी व्यतीतकी दूसरेदिन प्रातःकाल वहअपनी सेनाको उसीनगरमें छोड़कर अपनेमंत्रीतथाराजा महेन्द्रादित्य समेत समुद्र के किनारे परगया वहां एक जहाजपर तो वह राजा महेन्द्रादित्य तथा अपने मंत्रियों समेत चढ़ा और दूसरे पर अपने मुख्य २ सेवक जिनका लेजाना आवश्यकथा उन्हें चढ़ाया तब वह दोनों जहाज समुद्रमेंचले दो तीन दिनके उपरान्त एक दिन अकस्मात् प्रचण्डवायु चलने लगी उसके वेगसे समुद्रकी लहरें बहुतऊंची २ उठनेलगीं इससे मल्लाहोंने मस्तूल उतारडाले और जंजीरोंमें बंधीहुई बहुत भारी २ पत्थरोंकी शिला समुद्रमें लटकादी इतना यत्न करनेपर भी वह दोनों जहाज समुद्रमें डूबनेलगे तब सुन्दरसेनने राजा महेन्द्रादित्यसे कहा कि मेरे पापोंके प्रभावसे तुम्हारे जहाज डूबेजातेहैं इससे मैं समुद्र मे कूदताहूं यह कहके कमर में दुपट्टा बांधके वह कूदपड़ा यह देखके उसके पांचोंमंत्री तथा राजा महेन्द्रादित्य भी कूदपड़ा वह सब भुजाओंके बलसे समुद्र में तैरतेहुए समुद्र की लहरोंसे इधर उधर वह चले क्षणभरमें वायुके शान्तहोजानेपर दृढबुद्धि मंत्री सहित सुन्दरसेन ने एक बहतीहुई डोंगीपाई उस पर वह अपने मंत्री सहितचढा दिशाओंके भेदको न जानकर सम्पूर्ण संसार को जलमय देखताहुआ और परमेश्वरका स्मरण करताहुआ वह तीन दिनमें उसीडोंगीके द्वारा समुद्रके तटपर पहुंचा वहां डोंगीपरसे उतरकर वह पृथ्वीमें आके दृढबुद्धि मंत्रीसेबोला कि यहां आकर भी मुझे क्या सुख है विक्रमशक्ति, व्याघ्रपराक्रम, चण्डप्रभ, तथा भीमभुज और अकारणबन्धु राजा महेन्द्रादित्य इनके विना मेरे जीनेकी क्या शोभाहै उसके वचन सुनकर दृढ़बुद्धिने कहा कि हे स्वामी धैर्य्य करिये मैं जानताहूं कि अन्तमे आपका कल्याणहोगा मुझे निश्चयहै कि जैसे हम दोनों समुद्र के पार आयेहैं वैसे वेभी आगयेहोंगे (शक्याहिकेननिश्चेतुं दुर्ज्ञानानियतेर्गतिः) दैवकी दुर्ज्ञेयगति का कौन निश्चय करसक्ताहै इतने में स्नानके लिये आयेहुए दो तपस्वी राजपुत्रको दुःखित देखकर सब वृत्तान्त पूछके दयाकरके बोले कि हे राजपुत्र देवताभी प्राक्तन कर्म्म को बदल नहीं सक्ते हैं इससे धीरमनुष्यको उचितहै कि दुःखके दूरकरने के निमित्त पुण्यकरे क्योंकि यही उसका मुख्ययत्नहै शोक करनेसे कुछ नहीं होता इससे तुम खेदका त्यागकरो धैर्य्यसे शरीरकी रक्षाकरो क्योंकि शरीरके होनेपर कोई ऐसा पदार्थ नहीं है जो सिद्ध नहीं होता तुम्हारे लक्षण बहुत अच्छेहैं तुम्हारा कल्याणहोगा यह कहकर वह दोनों तपस्वी उनदोनों को अपने आश्रम में लिवालेगये वहां सुन्दरसेन दृढ़मति के साथ कुछ दिन रहा इसबीचमें भीमभुज तथा विक्रमशक्ति नामके दो मंत्री अलग २ समुद्रके तटपर पहुंचकर कदाचित् हमारेही समान सुन्दरसेन भी समुद्रके तटपर आगयाहो यह जानकर वनमें जाकर उसेढूंढने लगे और बाकी चण्डप्रभ व्याघ्रपराक्रम मन्त्री तथा राजा महेन्द्रादित्य यह तीनों भुजाओंसे समुद्रतैरकर

समुद्रके तटपर पहुंचे और सुन्दरसेनको ढूंढ़केकहीं न पाकर शशांकपुरमें आये और वहां से वहदोनों मंत्री अपनी सम्पूर्ण सेनाको लेकर अलकापुरींकोगये वहां उन मंत्रियोंसे सुन्दरसेनके सब वृत्तान्तको सुनकर सब पुरीमें हाहाकार मचगया और राजा महासेन के जो प्राणनहीं निकले इसमें उसकी आयुर्दायही का बलथा और उसे प्राण देनेको उद्यत देखके मंत्रियों ने अनेक प्रकारके उपदेश करके सुन्दरसेन के मिलनेकी आशादिखाई इससे वह नगरीके बाहर श्रीशिवजीके स्थानमें अपनी रानी समेत रहकर तप करनेलगा इतनेमें हंसद्वीपमें राजा मन्दारदेवभी अपनी कन्या तथा जामाताका वृत्तान्त जानकर और अलकामें दो मंत्रियोंके पहुंचनेका तथा राजा महासेनके तप करनेका वृत्तान्त सुनकर मंत्रियोंपर राज्य का भार रखकर रानी कन्दर्पसेना सहित यह निश्चय करके कि जो राजा महासेन करेगा वही मैंभी करूंगा अलकाको चलाआया और वहां राजा महासेन के साथ तपकरनेलगा इस प्रकार दैवयोगसे वायुकेद्वारा उड़ेहुए पत्तोंके समान उन सबके तितर बितर होजानेपर भाग्यवशसे दृढ़बुद्धि सहित सुंदर सेन घूमते २ मतंग ऋषिके आश्रमके निकट पहुंचा वहां एकनिर्मल तड़ागको देखकर उसीमें स्नान करके तथा उसीके तटपर लगेहुए मधुर फलखाके वहांसे कुछदूर चलके एकवनकी नदीके तटपरआया वहां एक श्रीशिवजीके मन्दिरके निकट कुछ मुनिकन्या पुष्प तोड़ रहीं थीं उनमें से एक कन्या अत्यन्तरूपवतीथी उसकी कान्ति चन्द्रमाकी चन्द्रिकाके समान चारोंओर फैलरहीथी उसकी दृष्टि पड़नेसे वनमें प्रफुल्लित कमलसे बिछजातेथे ऐसी सुन्दर उस कन्याको देखकर सुन्दरसेन ने दृढ़बुद्धिसे कहा कि क्या यह कोई अप्सराहै अथवा वनदेवी है ब्रह्माने बहुतसी अप्सराओं को बना के अभ्यासकरके इसका स्वरूप बनायाहै मैंने जो अपनी प्रियाकी तसवीर देखी है उसीके समान इसकी भी आकृति है क्या यहवही तो नहीं है अथवा यह कैसे होसक्ताहै कहां हंसद्वीप और कहां यह वन न जाने यह कौनहै सुन्दरसेनके वचन सुनकर दृढ़बुद्धिने कहा कि हे स्वामी देखिये वनके पुष्पों से भी इसकी कैसी शोभा होरही है यह कोई दिव्य स्त्री है अथवा राजकन्याहै यह ऋषिकन्या नहींहै क्योंकि वनमें ऐसी सुकुमारता तथा सुन्दरता नहीं होसक्ती अच्छा जो कुछहो क्षणभर ठहरकर जानना चाहिये कि यह कौनहै यह कहके वह सुन्दरसेनसहित छिपकर वृक्षकीआड़में खड़ाहोगया इतनेमें वह सब कन्या पुष्पतोड़कर नदीमें स्नान करनेलगीं स्नानकरते२ भाग्यवश से एक ग्राहने आकर उस अत्यन्त रूपवती कन्याको पकड़ा यहदेखकर सबमुनिकन्या चिल्लानेलगीं कि हेवनदेवता रक्षाकरो रक्षाकरो मन्दारवतीको ग्राहपकड़े लियेजाताहै उनके यह वचनसुनके सुन्दरसेनने यहजानकर कि कदाचित् यह मेरी प्रियाहीहो नदीमें जाकर खड्गसे ग्राहको मारडाला और मृत्युकेसमान उसकेमुखसे मन्दारवती को छुड़ाकर किनारेपर लाके सावधान किया मन्दारवतीभी निर्भयहोकर प्राणोंकीरक्षा करनेवाले सुन्दरसेनकोदेखकर यहशोचनेलगी कि मेरे भाग्यसे यह कौनमहात्मा यहां आगयाहै मैंने जो अपने प्रियका चित्रदेखाथा उसीके समान इसकी आकृतिहै कदाचित् यह वही होय अथवा इस मेरे विचारको धिक्कारहै उसको कदापि ऐसे दुखदायी विदेशमे न आनापड़े, मुझे अन्य पुरुषके पास ठहरना उचित नहीं है इससे अब यहां से चलना

चाहिये परमेश्वर इस महात्मा का कल्याणकरे यह शोचकर मन्दारवतीने अपनी सखियों से कहा कि हे सखियो अव इस महाभागको प्रणाम करके यहां से चलो उसके वचनसुनकर सुन्दरसेन केवल नाम ही सुनने से वहुत आशायुक्तहोकर उसकी एकसखी से वोला कि हे शुभे यह तुम्हारी सखी किसकी कन्याहै यह सुनकर उस मुनिकन्याने कहा कि हंसद्वीपके मन्दारदेवनाम राजाकी यह मन्दारवतीनाम कन्याहै सुन्दरसेन नाम राजपुत्रके साथ इसका विवाह करने के लिये इसके पिताका मन्त्री इसेजहाज पर चढाके अलकापुरीको लिये जाताथा मार्गमें जहाजके टूटनेसे मन्त्री तो सम्पूर्ण परिकर समेत डूव गया परन्तु यह समुद्रकी लहरोंके द्वारा किनारेपर आगई वहां इसको वहुत दुखितदेखके मतंगमुनि इसे अपने आश्रममें लेआयेहैं २५० उसके यह वचनसुनके दृढ़वुद्धिने वहुत प्रसन्नहोके सुन्दरसेनसे कहा कि हे राजपुत्र तुम वड़े भाग्यवान् हो जिसके लिये तुम अत्यन्त विकल थे वह यहीं मौजूदहै दृढ़वुद्धि के यह वचनसुनके मन्दारवती सुन्दरसेन को अपना प्रियजानके रोतीहुई हाय २ करती उसके चरणों पर गिरपड़ी और सुन्दरसेन भी उसे पैरोंपरसेउठा गलेसे लगाकर रोनेलगा उन दोनोंको रोते देखकर मुनिकन्या आश्रममेंजाके यमुनासहित मतंगमुनिको वुलालाई मतंगमुनिने आकर प्रणाम करतेहुए सुन्दरसेनको मन्दारवती तथा दृढ़वुद्धिसहित अपने आश्रममें लेजाकर अतिथि सत्कारकरके उसदिन अपने यहां रक्खा दूसरेदिन प्रातःकाल उससेकहा कि हेपुत्र मैं श्वेतद्वीपकोजाताहूं तुम मन्दारवतीको लेकर अलकापुरीजाओ वहां इसके साथ विवाह करना और इसको सुखसे रखना मैंने कन्याके समान इसकी पालनाकी है तुम वहुतकाल इसके साथ सम्पूर्ण पृथ्वीका राज्यकरोगे और थोड़ेही कालमें तुम्हारे सव मंत्री तुमको मिलजायँगे यह कहके मतंगमुनि यमुनासहित आकाशमार्ग में चलेगये और सुन्दरसेन भी मन्दारवती तथा दृढ़वुद्धि सहित समुद्रके तटपर आया वहां दैवयोगसे किसी युवावैश्यने अपना जहाज लगाया था उससे सुन्दरसेनने कहा कि तुम हम सवको भी इस जहाजपर चढ़ालेचलो उसने मन्दारवती को देख कामसे मोहित होकर कहा कि वहुत अच्छा मैं तुमको लेचलूंगा उसके यह वचनसुनके सुन्दरसेनने जैसेही मन्दारवतीकोचढ़ाकर दृढ़वुद्धिसमेत आप चढनाचाहा वैसेंही उसवैश्य ने मल्लाहोंसे कहकर वह जहाज चलवादिया क्षणभरहीमें जहाज सुन्दरसेनकी दृष्टिसेवाहर निकलगया तव वह हाय२करके विलाप करनेलगा और पृथ्वीपरगिरकर मूर्च्छितहोगया उसकी यह दीनदशादेखकर दृढ़वुद्धिने जलछिड़क मूर्च्छासे जगाकर उससेकहा कि उठो इस विकलताको छोड़ो वीरोंको ऐसाअधैर्य नहींउचितहै चलोचलकर उस दुष्टचोरकोढूंढ़ें विद्वान्लोग आपत्तिमें भी उत्साहको नहींछोड़तेहैं उसके इसप्रकार समझानेसे सुन्दरसेन उसकेसाथचला मार्ग में प्रफुल्लितलता कमल तथा कोकिलाओंके शब्द आदिक कामोद्दीपन पदार्थोंसे अत्यन्तव्याकुलहोताहुआ निराहार कईदिन चलते२मार्गभूलनेके कारण एकवड़ेभयंकरवनमें पहुंचा वहां भगवतीके वलिदानकेनिमित्त पुरुषोंको ढूंढ़तेहुए निषादोंने उसे दृढ़वुद्धि समेत पकड़नाचाहा विदेश विरहका क्लेश नीचसे तिरस्कार अनाहार तथा मार्गका खेद इनपांच अग्नियोंके देदीप्यमान होनेपरभी ब्रह्माने मानों उसके धैर्य्यके देखनेके लिये यहछठी अग्निवाली उन

निषादोंको दृढ़बुद्धि सहित सुन्दरसेनने मारकर ढेरकरदिया तब निषादोंके राजा विन्ध्यकेतुने बहुतसी सेना भेजी उससेनामेंसेभी बहुतसे निषादोंको मारकर वह दोनो मूर्च्छितहोगये यह देखकर निषादोंने उन्हें लाकर कैदखानेमें डालदिया वहां मूर्च्छासे जगकर उनदोनोंने उनदोनों मंत्रियोंकोभी देखा जो समुद्रसे निकलकर वनमें उसे ढूंढ़नेको गयेथे सुन्दरसेनको पहचानकर वह दोनों पैरोंपर गिरपड़े और उसने उन्हें उठाके अपनी छातीसे लगालिया और परस्पर मिलके वह चारों बहुत रोदनकरनेलगे यह देखकर अन्य कैदियोंने उनसे कहा कि क्यों बहुत खेदकरतेहो प्राक्तनकर्मको कौन उल्लंघन करसक्ता है देखो हम सबलोगों की मृत्यु एकसाथही आनपहुंची है निषादों के राजाने आनेवाली चतुर्द्दशीके दिन हम सबलोगोंको भगवती के आगे बलिदान देनेको इकट्ठाकियाहै इससे शोककरनेसे क्याहोगा जिस विपरीत भाग्यने हम सबको इसविपत्तिमें डालाहै वही उद्धारकरेगा उनके वचन सुनके वह उसी कैदखानेमें अत्यन्त खेदपूर्व्वक रहे इसके उपरान्त चतुर्द्दशीके दिन विन्ध्यकेतुकी आज्ञासे निषादलोग उनसबको भगवतीके मंदिरमें बलिदानके निमित्त लेगये वहां सुन्दरसेनने भगवतीके दर्शनकर नम्रता से प्रणामकरके हाथ जोड़के यह विज्ञापनाकी कि हे भक्तोंको अभय देनेवाली हे देवताओंके संतापको दूरकरनेवाली भगवती उद्दंडदैत्योंके नाशकरनेवाले दीनोंपर अमृतकीसी वृष्टिकरनेवाले अपने प्रसन्न नेत्रसे दुःखरूपी दावाग्निमें भस्महोते हुए मुझदीनको देखो उसके इसप्रकारसे विज्ञापन करतेही निषादोंका राजा विन्ध्यकेतु भगवतीका पूजन करनेको आया उसे देखके पहचानकर सुन्दरसेनने अपने मंत्रियोंसे कहा कि यह वही विन्ध्यकेतुहै जो हमारे पिताकेपास बहुधा भेट लेकरआया करताहै उन्हींकी कृपासे यह इस वनका राज्य करता है परन्तु हमलोगों को इसके आगे कुछ भी नही कहना चाहिये क्योंकि मानी पुरुषका मरना अच्छाहै परन्तु इसप्रकारसे अपनेको प्रकट करना श्रेष्ठ नहीं है इतनेमें विन्ध्यकेतु ने अपने सेवकों से कहा कि वह पुरुष कहां है जिसने हमारी सेनाके बहुत पुरुषमारे हैं लाओ उसे देखें उसके वचन सुनकर सेवकलोग सुन्दरसेन को उसके पास लेगये सुन्दरसेन को देखके कुछ पहचानकर उसने पूछा कि तुम कौनहो और कहां से आयेहो यह सुनकर सुन्दरसेन ने कहा कि हम जो हैं और जहां से आये हैं इससे तुमको क्या प्रयोजनहै तुम अपना कामकरो उसके इसप्रकार कहनेपर और भलीभांति पहचानकर विन्ध्यकेतु हाय २ करके पृथ्वीमें गिरपड़ा और बोला कि हे महाराज महासेन देखो आज मुझपापीने आपके साथ कैसा प्रत्युपकार कियाहै जो आपके प्राणोंके समान प्रियपुत्रकी मैंने यहदशा की है हाय राजपुत्र सुन्दरसेन यहां कहांसे आगयाहै इत्यादि वचन कहके और सुन्दरसेनका आलिंगन करके उसने बड़ा विलापकिया तब मंत्रियोंने उससेकहा कि बहुत अच्छा हुआ जो तुम इसको पहलेहीसे पहचानगये नहीं तो पीछे फिर क्या होसक्ताथा इससे यह हर्ष का समयहै दुःखका नहीं है दृढ़बुद्धि आदि मंत्रियोंके यह वचन सुनकर उसने सुन्दरसेन के चरणोंपर गिरके अपने अपराध क्षमाकराके सब क़ैदी छुड़वादिये और मंत्रियोंसमेत सुन्दरसेनको अपने स्थानमें लेजाकर बड़ा पूजनकिया और संपूर्ण आदरसत्कारके पीछे उससे पूछा कि हे राजपुत्र आपका आ-

ना यहां किसप्रकारसे हुआ उसके यह वचन सुनकर सुन्दरसेनने अपना सब वृत्तान्त कहा इसवृत्तान्त को जानकर वह बोला कहां मन्दारवतीके लिये यात्रा कहां समुद्रमे गिरना कहां समुद्रसे निकलकर मतंगके आश्रममें प्रियाका मिलना कहां फिर दुष्ट वैश्यके द्वारा प्रियाका हराजाना कहां इसवनमें आकर पकड़ाजाना और कहां मुझसे पहचान होनेके कारण मृत्युके मुखसे बचना ब्रह्माकी विचित्रगतिको वारंवार नमस्कारहै अव आप अपनी प्रियाके निमित्त चिन्ता न कीजिये जिस परमेश्वरने आपपर इतनी दयाकी है वही तुम्हारी प्रियाको भी तुमसे मिलावेगा इसप्रकार कहतेहुए विन्ध्यकेतुसे उसके सेनापति ने आकरकहा कि हे स्वामी एकवैश्य वहुतसाधन तथा अत्यन्त रूपवती एक स्त्री को लेकर इसी वनके मार्गसे जारहाथा उसे मैं स्त्री समेत पकड़लायाहूं उसके यह वचन सुनके यह वही वैश्य तो नहीं है जो मन्दारवतीको हरलेगयाहै यह शोचकर विन्ध्यकेतुने कहा कि उसे स्त्रीसमेत यहां लेआओ उसकीआज्ञा पातेही सेनापति उसे स्त्री समेत लेआया उसस्त्रीको देखकर दृढ़वुद्धिने कहा कि यह वही मन्दारवती है और यह वही दुष्टवैश्यहै हाय धूपसे जलीहुई लताकीसी इस सुन्दरीकी दशाहोगई है उसके यह वचन सुनके सुन्दरसेनने उठके अपने गले से प्रियाको लगालिया तव वह भी उसके गले में लिपटकर रोने लगी उनदोनोंको समझाकर विन्ध्यकेतु ने उस वैश्यसे पूछा क्यों रे तैंने विश्वासी राजपुत्रकी स्त्री क्यो हरी यह सुनके वह वैश्य भयभीत होकर वोला कि मैंने व्यर्थ अपने नाशके लिये यह कर्मकिया था यह ऐसी तेजस्विनी है कि मैं अग्निकी ज्वालाके समान इसका स्पर्शभी नहीं करसका किन्तु मेरी यह इच्छा थी कि मैं अपने देशमे जाकर इसके साथ विवाहकरूं उसके यह वचनसुनकर विन्ध्यकेतुने उसके मारने की आज्ञा देदी तव सुन्दरसेन ने कहा कि इसका धन छीनलो इसे मारो नहीं क्योंकि (दिने दिनेम्रियन्तेहि गतार्थानगताशवः) जिनका धन नष्ट होजाता है उनको प्रति दिन मरनेकासा कष्ट सहना पड़ताहै और मरेहुओंको नहीं सहनापड़ताहै सुन्दरसेन के यह वचनसुनकर विन्ध्यकेतुने उस वैश्यका सब धनलेके उसे छोड़दिया और मन्दारवती को अपने अन्तःपुरमे लेजाकर अपनी स्त्री से कहा कि तुम इसे स्नान तथा भोजन कराके उत्तम वस्त्र तथा आभूषण पहराओ इसप्रकार उन दोनों का सेवन करके उसने वड़ा उत्सव किया इसके उपरान्त दूसरे दिन सुन्दरसेनने विन्ध्यकेतुसे कहा कि मेरा मनोरथ सिद्ध होगया अव मै यहांसे अपनी नगरीको जाना चाहताहूं इससे तुम अपने किसी दूत के हाथ मेरा सब वृत्तान्त पत्रमे लिखकर मेरे पिताके पास भेजो उसके यह वचन सुनके विन्ध्यकेतु ने पत्रमें सव वृत्तान्त लिख दूतको उसके पिताके पास भेजा जिससमय वह दूत अलकामे पहुंचा उससमय सुन्दरसेनके समाचार न मिलनेके कारण राजा महासेन अपनी रानी तथा सम्वन्धी सहित अग्निमें प्रवेश करनेको उद्यतथा और सम्पूर्ण पुरवासी उसे घेरेहुए खड़े थे नगरके बाहरही राजाको खड़ा देखकर उस दूतनेकहा कि हे महाराज आपकी जयहोय आपका पुत्र सुन्दरसेन मन्दारवती सहित मेरे स्वामी के यहां पहुंचकर उसीके साथ आताहै उसीने मुझको पत्रदेकर आपके पास भेजाहै यह कहकर उसने राजा के चरणों के पास पत्र रखदिया उस पत्रको वॅचवाकर राजा महासेन अत्यन्त प्रसन्नहुआ और

सम्पूर्ण पुरवासी बड़े आनन्दकी ध्वनि करनेलगे उस दूतका बड़ा सत्कार करके राजा महासेन सम्पूर्ण परिकर समेत अपनी पुरीमें जाकर चतुरंगिणी सेना सजाकर अपने पुत्रको लेनेचला और सुन्दरसेन भी मन्दारवती विक्रमशक्ति, भीमभुज, दृढ़बुद्धि, तथा विन्ध्यकेतुसहित निषादोके ग्रामसे घोड़ोंपर चढ़के चला कई दिनोंके उपरान्त मार्गमें उसने अपने पिताको सेना समेत आते देखकर अपने मित्रोंसमेत घोड़ोंसे उतरकर पिताके चरणोंपर गिरा पैरों परसे उसे उठाके छातीमें लगाकर राजा महासेनको परम आनन्द प्राप्तहुआ और मन्दारवतीको प्रणाम करते देखकर उसने अपनेको तथा अपने सब कुलको कृतार्थ माना और अपने तीनों मंत्रियोंको भी प्रणाम करते देखके पुत्रसे भी अधिक उनका सत्कारकिया तदनन्तर सुन्दरसेनने अपने पिताके कहनेसे मन्दारदेवको पहचानके बड़े आनन्दपूर्व्वक उसके पैरों पर गिरकर प्रणाम किया और पहले आयेहुए अपने चंडप्रभ तथा व्याघ्रपराक्रम नाम दोनों मंत्रियोसे भी मिलकर अपने मनोरथों को पूर्णमाना उससमय शशांकपुरसे राजा महेन्द्रादित्यभी प्रसन्न होकर वहीं आया इसके उपरान्त उन सबको साथ लेकर सुन्दरसेन बड़ी प्रसन्नतापूर्व्वक राजधानीमें जाकर सम्पूर्ण पुरवासियोंको अपना नयनानन्ददायी दर्शनदेकर अपनी माताकेमन्दिरमें गया वहां मंदारवती समेत उसने अपनीमाताके चरणोंमें प्रणामकरके वह दिन बड़ेउत्सवसे वहीं व्यतीतकिया दूसरेदिन ज्योतिषियोसे शुभलग्नपूछकर मन्दारदेवने मन्दारवतीका विवाह सुन्दरसेनकेसाथ करदिया और सम्पूर्ण अपनाराज्य रत्नोंसमेत अपने जीवनके उपरान्त कहके उसको देदिया और राजा महासेनने भी अपने ऐश्वर्य्यके समानबड़ा उत्सव किया परिजन लोगोंको सुवर्ण वस्त्र तथा आभूषणदिये कारागृहसे कैदी छुड़वाये और ब्राह्मणोंको अनेकप्रकारके दानदिये इसके उपरान्त उत्सवके समाप्तहोनेपर राजा मन्दारदेव महेन्द्रादित्य तथा विन्ध्यकेतु अपने २ स्थानोंकोगये तदनन्तर सुखसे कुछकाल व्यतीत होनेपर राजा महासेन अपने पुत्र सुन्दरसेन को सब प्रजाओं का प्यारा तथा महागुणवान् देखकर उसे राज्य देकर रानीसमेत वनको चलागया राज्यको पाकर सुन्दरसेन भुजबलसे सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतकर चक्रवर्त्ती होगया और अपने पांचोंमंत्री तथा मन्दारवती समेत राज्यके सुखोंको भोगने लगा यह कथा कहके कण्वमुनिने हम सबलोगों से कहा कि हे पुत्रो जो धीरपुरुष बड़े२ कठिन दुःखोंको सहतेहैं उनके बड़े२ कठिन मनोरथ भी पूर्ण होजातेहैं और जो सत्त्वहीन आलस्यी होतेहैं उनके करनेसे कुछ भी नहींहोता इससे तुमलोग विकलताको त्यागकरो तुम्हारा स्वामी मृगांकदत्तभी सम्पूर्ण मंत्रियों से मिलकर शशांकवतीको पाके बहुतकालतक राज्य करेगा कण्वमुनिके यह वचन सुनकर हमलोग उस रात्रिको वहीं व्यतीतकरके दूसरेदिन वहां से चलके इस वनमें आये यहां क्षुधासे अत्यन्त व्याकुलहोके इस वृक्षपर चढ़नेसे गणेशजी के कोपसे फलरूप होगये आज आपके तपके प्रभावसे हम फिर मनुष्यहुएहैं यही हम चारों का वृत्तान्तहै अब शाप क्षीण होगया चलकर अपने कार्य्य को सिद्ध कीजिये व्याघ्रसेन से इस वृत्तान्त को सुनकर मृगांकदत्तने बहुत प्रसन्नहोकर शशांकवती के मिलने की दृढ़ आशा करके वहरात्रि वहीं व्यतीतकी॥२६२॥इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेचतुस्त्रिंशस्तरंगः ३४॥

इसके उपरान्त प्रातःकाल उस तड़ागके तटसे उठके श्रीगणेशजीके वृक्षको प्रणामकरके मृगांकदत्त अपने दशोमंत्री तथा श्रुतधि ब्राह्मण सहित उज्जयिनीको चला तो अनेकप्रकारके वन नानाप्रकारके जीव अनेक पर्व्वत तथा अनेक नदियोंको देखताहुआ क्रमसे उज्जयिनीनगरीके निकट पहुंच कर गन्धवतीनाम नदीमें स्नानकरके उसकेपार जाकर श्रीमहाकाल शिवजीके श्मशानमें अपने सब साथियोंसमेत पहुंचा वहां सैकड़ों मनुष्योंके शिर पड़ेहुएथे अनेक भूत तथा डाकिनी घूमरहीथीं और चिताओंके धुओंसे वृक्ष श्यामहोगयेथे ऐसे घोर उस श्मशानको उल्लंघनकरके उसने वह उज्जयिनी पुरीदेखी बड़े २ वीरलोग सब ओरसे उसकी रक्षाकररहेथे पर्व्वतोंके समान ऊंचापरकोटा चारों ओरसे घिराहुआथा सब फाटकोंपर असंख्य हाथी घोड़े रथ तथा पैदलोंकी सेना खड़ीथी ऐसी दुर्गम उसपुरी को देखकर मृगांकदत्त ने उदासीनहोकर अपने सब मंत्रियो से कहा कि अनेक प्रकारके क्लेशसहकर यहां आनेपर भी इसपुरीमें हमलोगोंका प्रवेशही नही होसक्ता फिर प्रियाकी प्राप्ति तो बहुतही कठिन है उसके यह वचन सुनके मंत्रियो ने कहा कि हे स्वामी हमलोगोंके बलसे तो यह पुरीजीती नहीं जा सक्ती इससे कोई उपाय शोचना चाहिये कोई उपाय तो अवश्यहोईगा क्योंकि देवतालोगों ने जो आपको वरदिये है वह मिथ्या नहीं होसक्ते मंत्रियों के वचन सुनकर मृगांकदत्त उन सबके साथ कई दिन तक वहीं घूमतारहा एक दिन विक्रमकेशरी ने पहले सिद्धकियेहुए वेतालको इसलिये स्मरण किया कि वह शशांकवतीको राजमंदिरसे उठालावे ऊंटकेसमान ग्रीवा हाथी के समान मुख भैंसेकेसमान पैर उल्लूके समान नेत्र तथा गधेके समान कानवाला अत्यन्त भयंकर वेताल स्मरणकरतेही आया तो सही परन्तु उस नगरी में वह प्रवेश नहीकरसक्ताथा इससे आकेरलौटगया क्योंकि श्रीशिवजीके वरदानसे दुष्टजीव उस पुरीका उल्लंघन नहीं करसक्तेथे तब मृगांकदत्तको खिन्न देखकर नीतिके जानने वाले श्रुतधि ब्राह्मणने कहा कि हे स्वामी आपनीतिके तत्त्वको जानकर भी क्योंमोहितहोतेहो अपने और शत्रुके बलाबलको विना देखे पराक्रम नहीं करना चाहिये इसनगरीके चारों द्वारोंपर दो २ हजार हाथी बीस २ हजार घोड़े दश २ हजार रथ और एक २ लाख पैदल सेना हरसमय सन्नद्ध रहती है इससे हम लोगोंका एकाएकी जो इसमें प्रवेश करनाहै वह अग्निमें पतंगके जलनेके समानहै इससे कुछ प्रयोजन नही सिद्धहोगा और थोड़ी सेनासे भी आप इसपुरीमें प्रवेश नहीं करसकियेगा क्योंकि बलवान्के साथ निर्बलका लड़ना ऐसाहै जैसे हाथीके साथ पैदल मनुष्यका लड़ना इससे भिल्लोंकाराजा मायावटु जिसको तुमने नर्म्मदा नदी में ग्राहसे बचायाथा और उसका मित्र मतंगराज दुर्ग पिशाच और आपका बाल्यावस्थाका मित्र किरातोंका राजा शक्तिरक्षित यह तीनों महाबलवान्हे इनतीनो से मिल कर इन्हीं तीनोंकी सेनालाकर अपना मनोरथ सिद्धकीजिये किरातोंका राजा शक्तिरक्षित आपके दूत की प्रतीक्षाही कररहाहोगा और मायावटु तथा दुर्गपिशाच यहदोनों भी युद्धके लिये उद्यतहीहोंगे क्योंकि उनसे यहसलाह पहलेही होचुकीथी इससे विन्ध्याचलके दक्षिण तटपर मातंगराज दुर्गपिशाच के करभग्रीवनाम कोटको चलिये वहीं उनदोनोंकोभी बुलाकर सेना एकत्रित कीजियेगा श्रुतधिके यह

वचन सुनकर मृगांकदत्तने बहुत प्रसन्नहोकर स्वीकार किये दूसरे दिन प्रातःकाल सूर्य्य भगवान्को प्रणामकरके वह अपने दशों मंत्री तथा श्रुतधि ब्राह्मण समेत वहाँसे चला बड़े २ गहनवनोंको उल्लंघन करताहुआ तड़ागों के तटपर वृक्षों के नीचे निवास करताहुआ विन्ध्याचलके दक्षिण ओर पहुंचा वहां उसने यह शोचा कि मातंगराजका कोट यहां हमें कौन बतावेगा और कैसे प्राप्तहोगा, इतने में एक मुनिकुमार आताहुआ दिखाई दिया मंत्रियों समेत मृगांकदत्तने प्रणाम करके उससे पूछा कि हे सौम्य क्या आप जानते हैं कि मातंगराजका स्थानकहांहै यहसुनके उसने कहा कि यहांसे कोसभरपर पंचवटी नाम स्थानहै पंचवटी से कुछ दूरपर आकाश से राजा नहुष के गिरानेवाले अगस्त्यमुनि का आश्रमहै जहां अपने पिताकीआज्ञासे श्रीरामचन्द्रजी अपने छोटेभाई लक्ष्मण और सीतासहित आनकररहेथे जहां श्रीरामचन्द्रको कवन्ध निगलना चाहताथा जहां श्रीरामचन्द्रजीने योजनवाहुकी भुजा काटीथी जहां वर्षाऋतुमें मेघोंके शब्दोंको सुनकर जानकीजी के पालेहुए वृद्धमृग श्रीरामचन्द्रजी के धनुषकी गम्भीर टंकारको स्मरणकरके चारोंओर देखके अवतक आंसू भरलेते हैं जहां मानों मृगोंको वचाने के लिये सुवर्णका मृग अपनी मायासे श्रीरामचन्द्रजी को बहुत दूरतक लेगयाथा और जहां अनेक तड़ागोंसे ऐसी शोभाहोतीहै कि मानों अगस्त्यजी ने समुद्रको पीकर पद २ पर उसका जल उगलाहै उसआश्रमसे कुछदूरपर विन्ध्याचलके बड़े ऊंचे शिखरपर करभग्रीवनाम बड़ा दुर्गमकोटहै उसमें महावलवान् मातंगराज दुर्गपिशाच रहताहै उसके पास एकलाख बड़े २ धनुर्द्धर योद्धाहैं जिनमें से एक २ योद्धा पांच २ सौ योद्धाओंको अकेलाही जीतसक्ता है उन्हीं योद्धाओं के द्वारा वह पथिकोंको लूटताहै और वड़े २ राजा लोगों से निर्भयहोकर वनका राज्य करता है मुनिपुत्रके यहवचन सुनकर मृगांकदत्त अपने मंत्रियों समेत उसी मार्गसे करभग्रीवके निकटआया ६० वहां पहिलेसेही आकर डेरे डालकर टिकेहुए मायावटुके दूतोंने उसे देख और पहचानके शीघ्रही मायावटुसे जाकर कहा मायावटु उसके आगमनका वृत्तान्त सुनके सेना समेत उसके निकटजाकर उसे मातंगराजके यहां जानेसे रोककर अपने डेरेमें लेगया और वहीं उसने मातंगराजको बुलवाभेजा मातंगराज अपनी सम्पूर्ण भयंकर सेनाको लेकर वहां आया और मृगांकदत्तको प्रणामकरके बोला कि आज भगवती विन्ध्यवासिनी मेरे ऊपर प्रसन्नहैं जो मंत्रियों सहित आपके दर्शन मुझे हुएहैं यहकहकर मोती तथा कस्तूरी आदिक उसने भेटकिये उससमय सम्पूर्ण सेनाके कोलाहलसे वन पूर्णहोगया और उनकाले २ सैनिकों को देखकर यहमालूमहोताथा कि मानों कज्जलके पर्व्वतसे बहुतसी शिलाल्हुड़क आई हैं अथवा प्रलयकालके भयंकर मेघ पृथ्वीमें उतर आये हैं तब मृगांकदत्तके कहनेसे सम्पूर्ण सेनाके डेरे वनमें पड़े बड़े२ वृक्षोंमें हाथी तथा घोड़े बांधदियेगये और पैदल लोग अपने २ शस्त्रधरकर भोजनादिकी तय्यारी करने लगे इसके उपरान्त भोजनादिसे निवृत्तहोकर सुखपूर्व्वक बैठेहुए मृगांकदत्तसे दुर्गपिशाचने कहा कि हे राजपुत्र यह मायावटु बहुतकालसे यहीं मेरे स्थानके निकट सेना सहित आके आपकी प्रतीक्षा करता हुआ टिकाहै आप इतने दिन कहां रहे और क्या २ काम अपने किये सो सब कहिये उसके यहवचन

सुनकर मृगांकदत्तने कहा कि उससमय मायावटुके यहां से विमल बुद्धि गुणाकर, भीमपराक्रम तथा श्रुतधिके साथ जाकर मुझे मार्ग में प्रचण्डशक्ति विचित्रकथ तथा विक्रमकेशरी यह तीनमंत्री क्रमसे मिले इन्हें साथलेकर मैं गणेशजी के एकवृक्षके निकटपहुंचा वहां वृक्षपर चढजानेके अपराधसे मेरे छओं मंत्री फलहोगये फिर श्रीगणेशजीकी आराधना करके मैंने इनछओं मंत्रियोंको तथा पहलेहीं फलरूप होजानेवाले दृढ़मुष्ठि, व्याघ्रसेन, मेघवल और स्थूलबाहु इनचारोकोभी फलरूपसे छुटाया और इनसबको पाकर इन्हींके साथ उज्जयिनीके निकटजाके उसे सब ओरसे रक्षितदेखा इससे उसनगरीके भीतरभी हम नहीं जासके प्रियाकी प्राप्ति तो बहुत दूररही और हमारे पास कुछ सेना न थी इससे राजा के पास कोई दूत भेजनाभी उचित न समझा इसीकारण अब तुम्हारे पास चले आये हैं अब हमारे कार्य्य का सिद्धहोना तुम्हारेही आधीन है मृगांकदत्तके यहवचन सुनकर दुर्गपिशाच तथा मायावटु ने कहा कि धैर्य्यधरिये यह कौन बड़ी बात है यहप्राण आपही के निमित्त हैं कहिये राजा कर्मसेनको यहां पकड़ लावें अथवा उसकी पुत्री शशांकवती को छीनलावें उनके यहवचन सुनकर मृगांकदत्त ने कहा क्या बातहै तुम ऐसेही वीरहो तुम्हारे सत्त्वसेही मालूमहोता है कि तुम सम्पूर्ण कार्य्यों का निर्वाह करोगे ब्रह्माने विन्ध्याचल से दृढ़ता और सिंहों से शूरतालेकर तुम लोगों को बनाया है अब विचार करके जैसा उचितहो वैसाकरना इसप्रकार वार्त्ता करते २ सूर्य्य भगवान् अस्त होगये उस रात्रि को उसी कटकमें व्यतीत करके प्रातःकाल मृगांकदत्त ने गुणाकरको शक्तिरक्षित नाम किरातराज के बुलानेको भेजा तब गुणाकर जाके थोड़ेही दिनोंमें शक्तिरक्षितको सेना सहित बुलालाया उसके साथमें दश लाख पैदल दो लाख घोड़े दशहज़ार हाथी और अट्ठासी हज़ार रथथे मृगांकदत्तने उसे आगे चलके ले आकर कटकमें टिकाया इतनेमें मातंगराज तथा मायावटुके मित्र तथा बांधवदूतोंके द्वारा इसवृत्तान्त को सुन २ कर अपनी २ सेना सहित आये उनको बड़े आदरपूर्वक मृगांकदत्तने ठहराया और मायावटु तथा दुर्ग पिशाचने फल मांस तथा मद्य आदिसे उनका बड़ा सत्कार किया मृगांकदत्तने उन सब को यथायोग्य स्थानो में बैठालकर उन्हींके साथ भोजनकिया और मातंगराजको पहलेही दूर बैठालके भोजन करादिया ठीकहै (कार्य्यदेशश्चकालश्चगरीयान्नपुनःपुमान्) कार्य्य देश तथा काल गरिष्ठ होताहै पुरुप नही इसके उपरान्त नवीनआईहुई सम्पूर्ण सेनाके डेरे पड़जानेपर मृगांकदत्तने सम्पूर्ण निषाद-राजाओंका बड़ा सत्कार करके एकान्तमें मातंगराज आदिक मित्रोसे कहा कि अब क्यों देर करतेहो इस सम्पूर्ण सेनाको साथ लेकर शीघ्रही उज्जयिनीको चलना चाहिये यह सुनकर श्रुतधि ब्राह्मण ने कहा कि हे स्वामी सुनो मैं नीतिके जाननेवालोंका मत कहताहूं पहले जीतनेवालेकी इच्छा करनेको कार्य्य और अकार्य्यका विचार करना चाहिये जो उपायसे न सिद्धहोसके उसे अकार्य्य कहते हैं उसका त्याग करनाचाहिये और जो उपायसे सिद्धहोसके उसे कार्य्य कहते है उपाय चार प्रकारकाहै साम दाम भेद और दंड इनमें पूर्व २ उत्तम और पर पर निकृष्टहैं इससेपहले आपको सामउपाय करनाचाहिये क्योंकि राजा कर्मसेन निर्लोभहै इससे वहां दाम नही चलसक्ता और उसकी प्रजा तथा बन्धुओं में कोई उससे

अप्रसन्नभी नहीं है इससे भेदभी नहीं चलसक्ता और अबतक कोई राजा उसे जीत नहीं सकाहै क्योंकि उसके पास बहुतसी सेनाहै इससे दंडमें भी सन्देहहै युद्धमें बड़े २ बलवानोंको भी जयश्रीपर विश्वास न करना चाहिये और जिसकी कन्या लेनी चाहिये उसका पहलेहीसे नाश करदेना यह भी योग्य नहीं है इससे सामके लिये पहले उसके पास दूतही भेजना चाहिये जो इससे काम नहीं चलेगा तो अन्त में युद्धही किया जायगा श्रुतधिके यह वचन वहांके सब लोगोंने स्वीकार करलिये तब मृगांकदत्तने किरातराज शक्तिरक्षितके सेवक सुविग्रह नाम ब्राह्मणको पत्र लिखके दूत बनाकर भेजा उसने उज्जयिनी में जाकर प्रतीहारसे आज्ञा पाकर सभामें जाकर राजा कर्मसेन को सिंहासनपर बैठाहुआ देखा और कुशल पूछके उसको वह पत्र देदिया उसपत्रको लेके मुहर तोड़के प्रज्ञाकोश नाम मंत्रीने पढ़ा उसमें यह लिखाथा कि करभग्रीवकोटसे अयोध्यापुरीके स्वामी अमरदत्तका मृगांकदत्तनाम पुत्र उज्जयिनीके महाराजा कर्मसेनको आदरपूर्वक यह संदेशा देताहै कि आपके अत्यन्त रूपवती एक कन्याहै उसका विवाह आपको अवश्य करनाहै इससे आप उसका विवाह मेरेही साथकर दीजिये क्योंकि देवतालोगों ने ऐसाही कहाहै जो आप ऐसा करेंगे तो हमारा और आपका पिछला बैर नष्टहोगा और नवीन स्नेह बढ़ैगा और ऐसा न होनेपर हम अपनी भुजाओं काही आश्रय लेंगे इस लेखको सुनकर कर्मसेनने अपने मंत्रियोंसे कहा कि देखो वह तो हमारे सदैवके शत्रुहैं पत्रमें पहले अपना नाम लिखा पीछे मेरा नाम लिखा और अपनी भुजाओंका बलभी प्रकट कियाहै इससे मुझे उनके पत्रका उत्तरही न देना चाहिये कन्या तो बहुत दूर रही मंत्रियोंसे यह कहके उसने दूतसे कहा कि हे दूत तू जा तेरा स्वामी जो चाहे सो करे उसके वह वचन सुनके सुविग्रहने कहा कि जब तक राजपुत्र नहीं आताहै तबतक तुम चाहे जितनी वल्गना करो तुम तैयार रहना जब वह आवेगा तब तुमको सब हाल मालूम होजायगा उसके यहवचन सुनके सम्पूर्ण सभा कुपित होगई राजाने कहा कि तू चलाजा क्योंकि दूत अवध्यहोताहै कुछवीरोंने हाथ मलकर कहा कि चलो अभी चलकर उस दुष्टराजपुत्रको मारडालें कुछ लोगोंने कहा इसको जाने दो जब वह आवेगा तब देखना हम क्या करते हैं और कुछ लोग बिना कुछ कहेही कुपित होकर रहगये इस प्रकार सभाको कुपित देखके सुविग्रह वहांसे मृगांकदत्तके कटकमें आया और मृगांकदत्तके निकटजाकर राजा कर्मसेनके यहांका सब वृत्तान्त कहा इसवृत्तान्तको सुनकर मृगांकदत्तने सेनाको चलने की आज्ञा देदी उसकी आज्ञासे हाथी घोड़े रथ तथा पैदलोंकी चतुरंगिणी सेना जय ध्वनि करतीहुई चली और मृगांकदत्तभी श्रीगणेशजी को प्रणामकरके अपने मंत्रियों समेत चला १५३ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशाङ्कवतीलम्बकेपंचत्रिंशस्तरङ्गः ३५ ॥

इसके उपरान्त विन्ध्याचल का उल्लंघन करके मृगांकदत्त सेना सहित उज्जयिनी की सीमापर पहुंचा उसके आगमन को सुनके राजा कर्मसेनभी अपनी सबसेना समेत पुरीकेबाहर आया उनदोनों सेनाओं के परस्पर मिलने से घोर युद्धहोनेलगा वीरलोग गर्जकर अस्त्र शस्त्र चलानेलगे कायरलोग भयभीत होकर भागनेलगे टीड़ियों के समान बाणोंके समूह धान्यों के समान सुभटोंपर गिरनेलगे जहां

के लगने से हाथियोंके मस्तकोंसे गिरेहुए मोती युद्धलक्ष्मीके टूटेहुए हारके समान शोभितहुए भालों से कटेहुए उछलतेहुए वीरोंके शिर ऐसे शोभितहोतेथे मानों आकाशमें दिव्यस्त्रियों का चुम्बन करने को जाते हैं सुभटोंके कबन्ध इधर उधर खड्गलेलेकर दौड़नेलगे और रुधिरकी नदी बहनेलगी इसप्रकार पांच दिनतक महाघोर युद्धहुआ पांचवेंदिन रात्रिके समय अपने मंत्रियों समेत एकान्तमें बैठेहुए मृगांकदत्तसे श्रुतधिने कहा कि जब आपलोग युद्ध में व्यग्रहुए तब मैंने भिक्षुकका स्वरूप रखके उज्जयिनी में जाके विद्याके प्रभावसे अलक्षितहोके जो समाचार पाये हैं वह आपसुनिये-जब राजा कर्मसेन युद्धके लिये निकला तो माताकी आज्ञा से शशांकवती अपने पिताके कल्याण के अर्थ पार्वतीजी के मंदिरमें जाके उनकी आराधना करनेलगी वहां उसने एकान्त में किसी अपनी प्यारीसखी से कहा कि हेसखी मेरे लिये मेरे पिताको यह युद्ध करना पड़ाहै जो यह हारेगा तो राज्य बचाने के लिये राजपुत्र के साथ मेराविवाह करदेगा क्योंकि राजा लोगोंको सन्ततिकी अपेक्षा राज्य अधिक प्रियहोताहै मुझे नहीं मालूम है कि वह राजपुत्र मेरे योग्यहै या नही मैं चाहतीहूं कि चाहै मेरी मृत्युहोजाय पर कुरूप पति नहींमिले जो रूपवान् दरिद्रीभी पतिहोय तो अच्छाहै परन्तु कुरूप चक्रवर्त्तीभी नहीं अच्छाहै इससे तुम अपनी बुद्धिके बलसे उसकी सेनामें जाकर देखआओ कि उसका रूप कैसाहै उसके यह वचन सुनकर वह सखी युक्तिसे तुम्हारे कटकमें आके तुम्हें देखके जाकर शशांकवती से बोली कि हे सखी शेषजीको भी यह सामर्थ्य नहीं है जो उसकेरूपका वर्णन करसके जैसे तुम्हारेसमान कोई रूपवती स्त्री नहीं है वैसेही उसके सदृश कोई रूपवान् मनुष्य नहीं है अथवा त्रैलोक्यमें सिद्ध गन्धर्व विद्याधर तथा देवता कोई भी उसके समान रूपवान् नहीं है उस सखीके यह वचनसुनकर शशांकवती का मन काम के बाणों से आपमें कीलित होगया उसीक्षणसे वह आपकी और अपने पिताकी कुशल मनारही है और आपके विरहसे कृश होरही है इससे आप रात्रिके समय पार्वतीजी के मंदिरसे उसे हरलाकर मायावटुके घरचलेजाओ पीछेसे इन सब लोगोंको लेकर मैंभी वहीं आजाऊंगा इससे युद्ध निवृत्तहोजायगा और तुम्हारा तथा तुम्हारे श्वशुरका कल्याण होगा बुद्धिमान् लोग युद्धको महानिन्दित उपाय कहते हैं यह अगतिक गतिहै श्रुतधिके यह वचनसुनकर मृगांकदत्त अपने दशों मंत्रियों समेत घोड़ोंपर चढ़ के रक्षकों के सोजाने के कारण सुखसे उज्जयिनी में चलागया और वहां श्रुतधि के बतायेहुए पते से पुष्पकरण्डक नाम उपवनमें पहुंचा इतने में सम्पूर्ण सखियों के सोजानेपर शशांकवती ने जगकर यह शोचा कि मेरे निमित्त युद्धमें दोनों पक्षोंके राजा तथा राजपुत्र मारेजारहेहैं और वह राजपुत्र मृगांकदत्तही मेरा पतिहोगा यह भगवतीने आज मुझसे स्वप्नमें कहाहै और मेराचित्त भी उसीपर अनुरक्त होरहा है परन्तु मेरे पिता मुझ अभागिनीको अभिमान करके उसे नहींदेंगे यह सखियों से आज मैंने सुनाहै इससे मुझे अपने प्रिय की प्राप्ति में कोई द्वारा नहीं दिखाई देताहै जब भाग्य विपरीत होताहै तो देवताओं के वरकाभी कुछ निश्चय नहीं रहताहै इससे युद्धमें जबतक मेरे प्रियकी तथा मेरे पिताकी कुशलहै तब तक मुझे अपने प्राण त्यागदेने चाहिये यह शोचके उठके उसने पार्वतीजी के आगे जाके

अशोक वृक्षमें अपने डुपट्टेसे फांसीलगाई इतने में मृगांकदत्त भी अपने मंत्रियोंसमेत घोड़ोंपरसे उतर कर और घोड़ोंको वृक्षोंमें बांधके पार्वतीजीके मन्दिरके निकटगया वहां कुछ दूरसे विमलबुद्धि ने शशांकवतीको देखकर मृगांकदत्तसे कहा कि हे स्वामी देखिये यह कोई कन्या फांसीलगाकर मरना चाहती है उसके वचन सुनके मृगांकदत्तने उसे देखकर कहा कि क्या यह साक्षात् रतिहै या चन्द्रमाकी साकारकान्तिहै अथवा कामदेवकी चलनेवाली आज्ञाहै या कोई अप्सराहै परन्तु इनमें से यह कोई भी नहीं है नहीं तो फांसी क्यों लगाती इससे वृक्षोंकी आड़में क्षणभर ठहरके देखना चाहिये कि यह कौनहै यह कहके जैसेही मृगांकदत्त मंत्रियों सहित वृक्षोंकी आड़में खड़ाहुआ वैसेही शशांकवती ने भगवतीसे यह विज्ञापनाकी कि हे भगवती जो इस जन्ममें भाक्तन पापोंके कारण राजपुत्र मृगांकदत्त मेरा पति नहीं हुआ तो तुम्हारी कृपासे अन्य जन्ममें अवश्यहोय यह विज्ञापना करके जैसेही उसने अपने गले में फांसीलगाई वैसेही जगकर सखियोंने उसे वहां न देखकर ढूंढ़नेके कारण वहां आके उसे फांसीलगाते देखा और देखकर जल्दीसे फांसीको तोड़के उससे कहा कि हे सखी यह तुम क्या साहसकरतीहो उससमय पार्वतीजीके मंदिरसे यह शब्द सुनाईदिया कि हे पुत्री खेदमतकरो मैंने जो वचन तुमसे स्वप्न में कहे हैं वह मिथ्या नहीं होसक्ते वह मृगांकदत्त तुम्हारे निकट आगयाहै इसके साथ जाकर तुम सम्पूर्ण पृथ्वीका राज्यभोगो इस शब्दको सुनकर शशांकवती चकित होकर जैसेही इधर उधर देखनेलगी वैसेही मृगांकदत्तके मंत्री विक्रमकेशरीने उसके पास जाकर कहा कि हे राजपुत्री भगवतीके वचन यथार्थहैं देखो तुम्हारे प्रेमरूपी पाशोंसे बँधाहुआ मृगांकदत्त यहीं खड़ाहै उसके वचन सुनकर शशांकवती नक्षत्रों के बीचमें चन्द्रमा के समान मंत्रियोंके बीचमें मृगांकदत्तको देखकर निश्चलहोगई और उसके शरीरमें रोमांचहोआये तब मृगांकदत्तने उसके निकटजाके यह मधुर वचन कहे कि हे सुन्दरी तुम्हारे गुण मुझे देश राज्य तथा बन्धुओंसे छुड़ाकर यहां बांधलाये हैं वनवास पृथ्वीमें शयन फलाहार तथा धूपका सहना इत्यादि कठिन तपका फल मुझे यह मिला जो नेत्रोंमें अमृत के समान आनन्ददायी तुम्हारारूप मैंने देखा हेमृगनयनी जोमुझपर तुमको स्नेहहै तो हमारेसाथ चलकर हमारे पुरकी स्त्रियोंके नेत्रोंको सुख दो यह युद्धशान्तहोय जिससे दोनों पक्षोंका कल्याणहोय और हे प्रिये तुम्हारे संयोगसे मेरा जन्म सफलहोय मृगांकदत्तके यह वचन सुनकर शशांकवतीबोली कि हे आर्य्य पुत्र यहजन तो आपके स्वाधीनहीहै इससे जिसमें आप कल्याणदेखो सो करो उसके यह वचन सुनके मृगांकदत्तने भगवतीको प्रणाम करके उसको अपने घोड़ेपर बैठालिया और मंत्रियोंने उसकी सखियोंको अपने २ घोड़ोंपर बैठालिया इसप्रकारसे सखियों सहित शशांकवतीको लेकर मृगांकदत्त अपने मंत्रियोंसमेत वहांसे चला पुररक्षक लोग उसे जाते देखकरभी न रोकसके और वह उज्जयिनीसे निकलकर श्रुतधि के कहनेके अनुसार मायावटुके यहां चलागया यहां उज्जयिनीमें यह कौनथे और कहांगये इसप्रकार रक्षकोंके कोलाहलहोने पर यह मालूमहुआ कि शशांकवतीको कोई हरलेगया यह समाचार कहनेके लिये रानीने नगराध्यक्षको राजा कर्मसेनके पास भेजा इतनेमें रात्रिके समय कटकमें राजा कर्मसेनसे

एक गोयन्देने कहा कि हे स्वामी आज सायंकालके समय मंत्रियों सहित मृगांकदत्त अपने कटकमेंसे निकलकर घोड़ोंपरचढके शशांकवतीके हरनेकेलिये उज्जयिनीके भीतरगयाहै अब जैसा आप उचित समझियें सो कीजिये उसके वचनसुनके राजाकर्मसेनने अपने सेनापतिकोबुलाके सबवृत्तान्त सुनाके कहा कि पांचसौ सवारलेकर शीघ्रही उज्जयिनीको जाओ और मृगांकदत्तको मारडालो या जीता पकड़लाओ मैंभी पीछेआताहूं राजाके यहवचनसुनकर सेनापति पांचसौसवारलेकर उज्जयिनीकोचला मार्ग में नगराध्यक्षने उससे मिलकर कहा कि कोई वीर राजपुत्रीको जाने किसमार्ग से हरलेगया उसके वचन सुनकर सेनापतिने लौटकर राजासे यहसब वृत्तान्तकहा इसवृत्तान्तको सुनकर बड़ेविचारमें पड़कर राजाने वह रात्रि व्यतीतकी और मृगांकदत्त के कटकमें श्रुतधिके कहनेसे मायावटु आदिक सम्पूर्ण वीर युद्धकेलिये रात्रिभर सन्नद्धरहे प्रातःकाल राजा कर्मसेन ने मृगांकदत्त के कटकमें दूतके द्वारा यह संदेशा भेजा कि मृगांकदत्त छलसे मेरी कन्याको हरलेगया है इसमें कोई हानि नहीं है क्योंकि मृगांकदत्त के सिवाय शशांकवतीके योग्य दूसरा पति नहींथा इससे वह तुम लोगों समेत हमारे घरआवे मैं अपनी कन्याका विधिपूर्व्वक व्याह करदूं इस संदेशेको श्रुतधि तथा सम्पूर्ण किरातराजाओंने स्वीकार करके दूतसे कहा कि तुम्हारा स्वामी अपनी पुरीको जाय हम लोग उसे लिवाकर तुम्हारे यहां आवेंगे उनके वचन सुनके दूतने जाकर राजा कर्मसेन से सब कहदिया इससे राजा कर्मसेन अपनी सेनाको लेकर उज्जयिनीको चलागया और उसकेचलेजानेपर मायावटु आदिक सम्पूर्ण किरातराज मृगांकदत्तकेपास चले ९६ इस बीचमें मृगांकदत्तभी शशांकवती तथा अपने मंत्रियों समेत मायावटुके यहां पहुंचा वहां मायावटुकी रानियोंने बड़ा सत्कार करके उसे टिकाया दूसरे दिन श्रुतधि शक्तिरक्षित मायावटु तथा दुर्गपिशाचादिक सब लोग भी वहीं आगये और मृगांकदत्तको शशांकवती समेत देखकर अत्यन्त प्रसन्नहुए और कुशल प्रश्नके उपरान्त राजा कर्मसेनका संदेशा कहकर अपने २ योग्य स्थानोंमें डेरे डाल २ कर टिके तदनन्तर मृगांकदत्तने सम्पूर्ण मंत्री श्रुतधि ब्राह्मण तथा किरात राजाओंको बुलाकर यह सलाह पूछी कि मुझको विवाहके निमित्त उज्जयिनी जाना चाहिये या नहीं यह सुनकर सब मंत्रियोंने तथा राजाओं ने कहा कि राजा कर्मसेन बड़ादुष्टहै इससे उसके यहां नहीं जानाचाहिये और उसके यहां जानेसे प्रयोजनही क्याहै क्योंकि उसकी कन्या तो आहीगई है सबका यह मत सुनकर मृगांकदत्तने श्रुतधिसे कहा कि हे महामते तुम क्यों उदासीन बैठेहो तुम्हारा भी यही मतहै या नहीं सो कहो तब श्रुतधिने कहा कि सुनिये मेरा मत तो यह है कि कर्मसेनके यहां अवश्य जानाचाहिये उसने निश्छल होकर यह संदेशा भेजाहै नहीं तो वह युद्ध छोड़कर क्यों अपने घर चलाजाता और जो उसके चित्तमे छलभी होगा तो वह आपका क्या करसकेगा क्योंकि आप सम्पूर्ण सेना लेकर उसके यहां जाइयेगा और उसके यहां जानेसे यह बड़ा लाभ होगा कि वह सदैवके लिये आपका सहायक होजायगा उसने अपनी कन्याकेही स्नेहसे आपको बुलाया है इससे आपको अवश्य जाना चाहिये श्रुतधिके यह वचन सुनके सबने कहा कि बहुत ठीकहै तब मृगांकदत्त ने कहा कि अच्छा वि-

वाह करनेको तो मैं वहां जाऊंगा परन्तु माता पिताके विना मुझे विवाह नहीं रुचता इससे कोई मेरे माता पिताके बुलानेको जाय उनका अभिप्राय जानकर जैसा उचितहोगा सो किया जायगा यह कहकर उसने भीमपराक्रम नाम मंत्रीको अपने पिताके पास भेजा इसबीचमें मृगांकदत्तका पिता राजा अमरदत्त अयोध्यापुरी में लोगोंके द्वारा यह जानकर कि विनीतमति मंत्रीने झूठा दोष लगाकर मृगांकदत्तको निकलवा दियाहै उसे कुटुंब सहित मरवाकर शोकसे रानियों समेत नन्दिग्राम में रहनेलगा वहां वहुत दिनतक उसके रहते २ भीमपराक्रम अयोध्यामें आया और अयोध्याको उदासीन देखकर यह जानके कि राजा नन्दिग्राममें रहताहै वहीं जाकर राजाके पैरोंपर गिरा उसे गलेसे लगाकर राजा अमरदत्तने आंसूभरके पूछा कि कहो मृगांकदत्त कुशलपूर्व्वक है उसने कहा कि हे महाराज मृगांकदत्तने अपनेही पराक्रम से राजा कर्मसेनकी शशांकवती कन्यापाई आपके विना वह विवाह करना उचित नहीं समझताहै इससे उसने आपके बुलानेकेलिये मुझे भेजाहै वह भिल्लराज मायावटुके यहां आपकी प्रतीक्षा कररहाहै यह कहके उसने मृगांकदत्तका सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया अपने पुत्रके वृत्तान्तको सुनकर राजा अमरदत्त अपनी रानी तथा सम्पूर्ण सेनाको साथ लेकर अपने पुत्रके पासचला और थोड़ेही दिनों में मायावटुके पुरके निकट पहुंचगया मृगांकदत्त अपने पिताका आगमन जानकर अपने मित्र तथा मंत्रियों सहित पुरके वाहर आकर उसके पैरोंपर गिरा अमरदत्तने उसे पैरोंपर से उठाकर अपनी छातीसे लगालिया और उसकीमाताने भी उसे छातीसे लगाकर वहुत दिनके वियोगके कारण उसे बड़ी देरमें छोड़ा मृगांकदत्तके मित्रोंने भी अमरदत्तको प्रणामकिया तदनन्तर राजा अमरदत्त मायावटुके पुरमें जाकर वहां प्रणाम करतीहुई अपनी शशांकवती वहूको देखके अत्यन्त प्रसन्नहोके उसे लेकर पुरके वाहर डेरे डालकर वहीं टिका वहां सम्पूर्ण राजा तथा अपने पुत्रके साथ भोजन करके उसने वड़े उत्सवसे वह दिन व्यतीत किया और मृगांकदत्तको भावीचक्रवर्त्ती जानकर अपने जन्मको सफलमाना इतनेमें राजाकर्मसेनने दूतकेद्वारा मृगांकदत्तकेपास यह संदेशाभेजा कि जो आप उज्जयिनीको नहीं आनाचाहते हो तो मैं अपने पुत्र सुषेणकोही आपकेपास भेजताहूं वही आकर अपनी वहिनका आपकेसाथ विधिपूर्वक व्याहकरदेगा इससे जोआपको मेरेसाथ कुछ स्नेहरखनाहोय तो मेरी कन्याकेसाथ अविधि विवाह न करना इस संदेशेको सुनकर राजा अमरदत्तने दूतसेकहा कि राजा कर्मसेनसे हमको वड़ा स्नेहहै वह अपने पुत्रकोभेजे हमवही कार्य्यकरेंगे जिसमें उसकी प्रसन्नताहोगी यह कहके दूतको विदाकरके अपने पुत्रसे श्रुतधि से तथा अन्य किरातराजोंसेकहा कि अव मैं अयोध्याको जाताहूं क्योंकि विवाहकी शोभा वहीहोगी और सुषेणका सत्कारभी यथायोग्य वहीं वनेगा राजा मायावटु अभी यहांठहरे वह सुषेणको लेकर पीछे से आवे मैं आगे चलकर विवाहकी सम्पूर्ण सामग्री इकट्ठी करूंगा उसके वचन सवने स्वीकार करलिये तव दूसरे दिन राजा अमरदत्त शशांकवती, अपनी रानी, मृगांकदत्त, सम्पूर्णमंत्री सवसेना तथा सम्पूर्ण किरातराज इनसवको साथ लेकर चला उससमय सेनाकी धूलिसे आकाश पृथ्वीकेसमान और गर्जतेहुए हाथी रूपी मेघोंसे व्याप्तपृथ्वी आकाश के समान

शोभितहुई मार्ग में क्रमसे चलते २ किरातराज शक्तिरक्षित के यहां वह पहुंचा और उसके यहां एक दिन रहकर उसकी दीहुई भेटलेके वहांसे चलकर अयोध्यापुरी में आया उससमय वहपुरी झरोखों के द्वारा देखती हुई पुराङ्गनाओं के मुखारविन्दों से प्रफुल्लित कमलवाली उनके चंचल नेत्रोंसे कंपित कोकावेलीवाली और पताकारूपी तरंगवाली नदी के समान शोभितहुई शशांकवती को देखकर संपूर्ण पुरवासियों ने कहा कि जो समुद्र तथा हिमालय इस शशांकवती को देखें तो उन्हें अपनी लक्ष्मी तथा पार्वतीजीके अत्यन्त रूपवती होनेका अभिमान दूरहोजाय सम्पूर्ण पुरवासियों के नेत्रोको आनन्ददेकर राजा अमरदत्त सम्पूर्ण परिकर सहित अपने मंदिरमेंगया और वहदिन बड़े उत्सवसे व्यतीत करके दूसरे दिन उसने ज्योतिषियों से लग्नका निश्चयकराके विवाहकी सम्पूर्ण सामग्री इकट्ठी कराई अनेक दिशाओं से आयेहुए रत्नोंसे वहपुरी ऐसी पूर्णहुई कि अलकाभी उससे न्यूनहोगई इसके उपरान्त कुछ दिनोंमें सभामें बैठेहुए राजा अमरदत्त से द्वारपालने आकर कहा कि हे स्वामी भिल्लराज मायावटुका दूत द्वारपर खड़ाहै राजाने कहा बहुत अच्छा उसे आने दो द्वारपालसे आज्ञापाकर उसदूत ने राजाके निकट आके प्रणामकरके कहा कि हे स्वामी राजपुत्र सुषेण और किरातराज मायावटु अयोध्याकी सीमापर आकर स्थितहुएहैं दूतके वचन सुनकर राजा अमरदत्तने मृगांकदत्तको तथा अपने सेनापतिको उनके लेने के लिये भेजा मृगांकदत्त जाकर उनदोनों को बड़े आदरपूर्व्वक अपने रथपर चढ़ाके लिवालाया सुषेण राजमंदिर में आकर पहले राजा अमरदत्तसे मिला और फिर अपनी बहिन शशांकवती के पासगया शशांकवती उठकर उसे अपने गलेसे लगाके आंसूभरके लज्जासे नीचेको मुखकरके खड़ीहोगई तब सुषेणने उसे बैठालकर उससेकहा कि हे बहिन तातने तुमसेकहा है कि हेपुत्री तुमने अनुचित नहीं किया मुझे अब मालूमहुआ है कि भगवतीने तुमसे स्वप्नमें कहाहै कि मृगांकदत्त तुम्हारा पतिहोगा इससे जो तुमने अपने पतिकी आज्ञामानी यह बहुतहीउचितकिया सतीस्त्रियों का यही परमधर्म्म है उसे इसप्रकार समझाकर सुषेणने राजा अमरदत्तको ढाईहजार मन सोना साढ़े बारहसौ मन रत्नजटित आभूषण तथा अन्यसुवर्णमय बहुतसे पात्रदेकर कहा कि यहसब शशांकवती का निज धनहै और जो कुछ मेरे पिताने धनदियाहै वह विवाहकेसमयमें मैंदूंगा तदनन्तर मृगांकदत्त के साथ सुखपूर्व्वक वहीं रहा लग्नकादिन प्राप्तहोनेपर शशांकवती तथा मृगांकदत्त स्नानकरके तथा दिव्य आभूषण वस्त्रादि पहनकर वेदीपर बैठे उससमय सुषेणने शशांकवती का हाथ संकल्पकर मृगांक दत्तके हाथमें देदिया पाणिग्रहणके उपरान्त प्रथम लाजाहवन में सुषेणने पांचहजार घोड़े पांचसौहाथी पांचसौमनसुवर्ण और अच्छे वस्त्र आभूषण तथा रत्नोंसे लदीहुई नब्बेहथिनीदीं और इसीक्रमसे द्विगुण२धन हर एकलाजाहवनमें दिया इसप्रकार विवाह विधिके होजानेपर राजा अमरदत्तने अपनी संपूर्ण प्रजाओंको हाथी घोड़े रत्न आभूषण तथा वस्त्र दिये और शशांकवती मृगांकदत्त सुषेण तथा सम्पूर्ण राजालोगोके साथ भोजन करके नृत्य तथा गानादिसे वह दिन बड़े सुखपूर्वक व्यतीत किया उत्सव के समाप्त होनेपर मानों सूर्य भगवान्भी उस उत्सवको देख थककर अपने अस्ताचलपर बैठगये संध्या

के साथ सूर्य भगवान्‌को गये देखकर दिनकी लक्ष्मीभी मानों पक्षियोंके शब्दरूपी कोलाहलको करके उन्हींके पीछे चलीगई और रात्रिरूपी अभिसारिका (जो स्त्री छिपकर अपने प्रियके संकेतको जाती हो) अन्धकाररूपी काले वस्त्रोंको पहरकर आई कामकी लताके नवीन पल्लवरूपी चन्द्रमासे पूर्वदिशाका मुख प्रकाशित हुआ उससमय मृगांकदत्त संध्योपासन करके शशांकवतीके साथ शयनस्थान में गया वहां मुखफेरकर लेटीहुई शशांकवतीको उसने चुंबन तथा आलिंगनसे लज्जारहित करके उसे अपने सम्मुख किया और उसके साथ आनन्दपूर्वक संभोग किया वह रात्रि रतिके आनन्दही में व्यतीतहोगई उससमय वन्दीजनोंने यहकहकर उसे जगाया कि हेस्वामी रात्रि व्यतीतहुई अव शय्याको त्यागकीजे रात्रिके अन्तको सूचित करनेवाली शीतलवायु चलरही है चन्द्रमाके साथ सहसा गईहुई रात्रिरूपी स्त्रीके टूटेहुए हारके मोतियोंके समान ओसके विन्दु दूवकी पत्तियोंपर शोभायमान होरहे हैं हेराजपुत्र देखिये जिन भ्रमरों ने चन्द्रिकामें प्रकाशित कोकावेलियोंपर वैठकर रात्रिभर मधुपान किया है वही भ्रमर अब उन कोकावेलियोंको संकुचित देखकर अन्य स्थानोंको चलेजारहेहैं ठीकही है मलिनलोग आपत्तिमें किसीके साथी नहीं होते कामदेवने रात्रिको सूर्यकी किरणोंसे युक्तहोते देखके उस का चन्द्रमारूपी तिलक तथा अंजनरूपी अन्धकार धोडाला वन्दियोंके यहवचन सुनकर मृगांकदत्तने उठके स्नानपूर्वक संध्योपासनादि नित्यकृत्य किया इसप्रकार वहुतदिनोंके व्यतीतहोनेपर राजा अमरदत्तने बहुतसे हाथी घोड़े आभूषण वस्त्र तथा रूपवती सौस्त्री सहित एकसुन्दरदेश सुषेणको दिया और मायावटु शक्तिरक्षित दुर्ग पिशाच श्रुतधि ब्राह्मण तथामृगांकदत्तके दशोंमंत्री इन सवकोभी घोड़ेहाथी सुवर्ण वस्त्र तथा रत्नसहित एक २ देश दिया इसके उपरान्त विदेशी लोगोंको विदाकरके सुखपूर्वक राज्यभोगनेलगा और मृगांकदत्त भी अपने मंत्रियों और शशांकवतीकेसाथ सुखभोगनेलगा कुछकाल व्यतीतहोनेपर राजाअमरदत्तके कानोंमें मानों यह कहनेकेलिये कि आप ऐश्वर्य्यका समय भोगचुके अव शान्तिका समय आयाहै वृद्धावस्था कानोंके निकट आई तव राजा अमरदत्तने अपने मंत्रियोंसे कहा कि मेरी अवस्था व्यतीतहोगई यमराजकी दूतीरूप वृद्धावस्थाने मेरे वाल पकड़लिये हैं इससे अव भोगोंकी तृष्णा छोड़नी चाहिये अवस्थाके साथही साथ लोभभी वढ़ताजाताहै यह नीचपुरुषोंकीवातें हैं सत्पुरुषोंमें यहवात नहींहोती इससे मैं सव प्रकारसे समर्थ होनेवाले मृगांकदत्तको अपना राज्यदेकर रानी सहित किसी तीर्थपर जाकर तपकरूंगा अव मेरी यही शोभा है उसके यह योग्य वचन रानी ने तथा सव मंत्रियोंने स्वीकार करलिये तव उसने ज्योतिषियोंको वुलाकर शुभलग्न पूछ के राज्याभिषेक की संपूर्ण सामग्री मँगाके तीर्थके जलोंसे तथा अपने आनन्दके अश्रुजलों से अभिषेक करके मृगांकदत्तको सव राज्य देदिया और सातदिन तक वड़ा उत्सवकिया आठवेंदिन वह अपने मंत्री तथा रानी को साथलेकर काशीपुरीको चलागया और वहां त्रिकाल शिवपूजनपूर्वक तप करनेलगा मृगांकदत्त भी राज्यको पाकर अपनेमंत्रीश्रुतधि ब्राह्मण कर्मसेनादिक राजा तथा मायावटु आदिक किरातराजाओं को साथलेकर सप्तद्वीपवती पृथ्वीका दिग्विजय करके धर्मपूर्वक संपूर्ण पृथ्वी का राज्य करनेलगा

मृगांकदत्तके राज्यसमयमें, दुर्भिक्ष, चोर, तथा अकालमरणादिक दुःख केवल कथाओंमेंही सुनाई देतेथे सम्पूर्ण प्रजा उसे अपने पिता के समान देखतीथी और वह सबको पुत्रके समान देखताथा इसप्रकार सम्पूर्ण प्रजाओं को सुखी करके मृगांकदत्तने अपने मन्त्री और शशांकवती के साथ बहुतकाल तक आनन्दपूर्वक राज्य किया मलयाचलके वनमे नरवाहनदत्तसे इस कथाको कहके पिशंगजट मुनि ने फिर कहा कि हे युवराज जैसे बहुत क्लेश सहकर मृगांकदत्तको शशांकवती मिलीथी इसीप्रकार तुम्हे भी मदनमंचुका मिलजायगी पिशंगजटके इन वचनोंको सुनकर नरवाहनदत्त मदनमंचुका की प्राप्ति के लिये अपने चित्त में धैर्य्य करके उनसे आज्ञा लेकर उस ललितलोचना विद्याधरी को ढूंढ़नेलगा जो उसे वहां लेगईथी २४५ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांशशांकवतीलम्बकेषट्त्रिंशस्तरंगः ३६ ॥

शशांकवतीनामबारहवांलम्बकसमाप्तहुआ ॥

मदिरावतीनामत्रयोदशोलम्बकः ॥

सर्वोविघ्नेश्वरःपायान्नमितोन्नमितेवयम् ।
अनुनृत्यतिनृत्यन्तंसंध्यासुभुवनावली ॥
गौरीप्रसाधनालग्नचरणालक्तकश्रियः ।
सखीसुखायभूयाद्वःशंभोर्भालेक्षणप्रभा ॥
कवीन्द्रमानसांभोजनिवासभ्रमरीन्नुमः ।
देवींसहृदयानन्दशब्दमूर्त्तिसरस्वतीम् ॥

इसके उपरान्त मदनमंचुका के विना विरहसे व्याकुल नरवाहनदत्तको मलयाचलके सुन्दर वनोंमें बड़ा क्लेशहुआ भ्रमरोंकी पंक्ति रूप प्रत्यंचासे युक्त आम्रके बौर रूपी कामके धनुषको देखके उसके हृदय में बड़ा कम्पहुआ कामदेवके क्रोधयुक्त वचनोंके समान कोकिलाओंका मधुर शब्दभी उसके कानों में दुस्सहहुआ पुष्पोंकी धूलिसे युक्त मलयाचलकी शीतल वायु कामाग्निके समान इसके अंगोंको संताप करनेवाली हुई उस वनमें बहुत विकल होकर वह वहांसे गंगाजीकी ओर गयेहुए मार्गके निकट एक तड़ागके तटपर गया वहां एक वृक्षके नीचे दो सुन्दर ब्राह्मण कुछ वार्त्तालाप कररहेथे वह दोनो नरवाहनदत्तको देखके कामदेव जानकर खड़े होकर हाथजोड़के बोले कि हे भगवन् कुसुमायुध आप अपने पुष्पोंके धनुषको छोड़के रतिके विना अकेले कहां भ्रमण कररहे हैं उनके वचन सुनकर नरवाहनदत्तने

कहा कि मैं कामदेव नहींहूं मनुष्यहूं यह कहके उसने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्तकहकर उनसे पूछा कि तुम दोनों कौनहो अपना सब वृत्तान्त मुझसे कहो उसके वचन सुनकर उनमेंसे एकने नम्रतापूर्वक कहा कि यद्यपि आपसरीके राजाओंके आगे गुप्तबात कहना योग्य नहीं है तथापि आपकी आज्ञाके अनुरोधसे मैं कहताहूं कि कलिङ्ग देशमें कलियुगके प्रभावसे रहित अत्यन्तपवित्र शोभावतीनाम नगरीहै उसमें यशस्करनाम एक विद्वान् याज्ञिक ब्राह्मण रहताथा उसके मेखलानाम पतिव्रतास्त्रीथी उसब्राह्मण के उसीस्त्रीमें एक मैंही पुत्र उत्पन्नहुआ मेरे पिताने योग्य समयमें मेरा यज्ञोपवीत करदिया और मैं गुरु के यहां जाकर विद्याध्ययन करनेलगा कुछकालके उपरान्त उस देशमें अनावृष्टिके कारण बड़ादुर्भिक्ष पड़ा इससे मेरे पिता मुझे और सबपरिकर लेकर विशालानाम पुरीको चलेआये वहां एकमित्र वैश्यके यहांरहेऔरमैंभी वहीं एकउपाध्यायके पासजाकर विद्याध्ययन करनेलगा उसउपाध्यायके बहुतसेशिष्य थे उनमें से किसी धनवान् क्षत्रीके विजयसेन नाम एक गुणवान् पुत्रकेसाथ मेरी मित्रता होगई एक समय मेरे मित्रकी मदिरावतीनाम बहिनभी अपने भाईके साथ उपाध्यायके यहांआई वह ऐसी रूपवतीथी जिससे यह मालूमहोताथा कि मानों ब्रह्माने इसके मुखको बनाकर बचीहुई सुन्दरतासे चन्द्रमा को बनाडालाहै उसे देखकर मैं उसपर आसक्तहोके अत्यन्त कामसे पीड़ितहुआ और उसने भी तिरछी दृष्टिसे मुझे देखकर कपोलोंकी रोमावली से अपना मुझपर प्रेम प्रकटकिया तदनन्तर क्रीड़ाके व्याज से वह बहुतकालतक वहां ठहरकर फिर २ के मुझे देखतीहुई अपने घरको चलीगई और मैं भी अपने घरजाकर जलसे निकालीगई मछलीके समान दिन रात तड़फतारहा और दूसरे दिन फिर उपाध्याय के यहां गया वहां मेरे मित्रने मुझ से आकर कहा कि हे मित्र मेरी बहिनके मुखसे तुम्हारी प्रशंसा सुनकर मेरी माताभी तुमको देखना चाहती है इससे तुम मेरे घरचलो उसके यह अमृतमय वचन सुनकर मैं उसीके साथ उसके घरगया वहां उसकी माताने मेरा बड़ा सत्कार किया और मेरा मित्र अपने पिताकी आज्ञासे कहीं को चलागया उससमय मदिरावतीकी धायने मेरे पास आके मुझसे कहा कि हे पुत्र मदिरावतीने जो अपने हाथसे सींचकर उपवनमें मालतीकीलता बढ़ाई है उसमें पहलेही पहल पुष्प निकलेहैं उनपुष्पोंको तोड़कर उसने अपने हाथसे बनाकर यहपुष्पमाला तुमको भेजी है क्योंकि नवीन वस्तु प्रथम अपने प्रियको देनीचाहिये यहकहकर उसने पांच पान और वहमाला मुझ को दी उनपानों को खाके और प्रियाके आलिंगनके समान सुखदायी उस मालाको पहनकर मैंने उससे कहा कि हे आर्ये मेरे हृदयमें ऐसी कामकी बाधाहै कि मैं मदिरावतीके लिये अपने प्राणभी देदूं तो अपना सफल जन्मसमझूं क्योंकि वही मेरी प्राणेश्वरी है उससे यह कहकर मैं उसीसमय आयेहुए विजयसेनके साथ उपाध्यायके घरको चलाआया वहांसे विजयसेन अपनेघरको लौटगया और मैं अपने घरको आया ५० दूसरेदिन विजयसेन मदिरावती को लेकर मेरे घर आया इसप्रकार बारंबार मिलने से मेरे और मदिरावतीके हृदय में प्रेमरूपी वृक्षगुप्ततासे बढ़तागया एकदिन मदिरावती की दासी ने एकान्तमें मुझसे कहा कि हे महाभाग एकबात मैं तुमसे कहतीहूं उसे तुम यथार्थही मानना जिसदिन

से उपाध्यायके यहां मदिरावतीने तुमको देखाहै उसदिनसे भोजन क्रीड़ा संगीत आदि किसी पदार्थ में भी उसका चित्तनहीं लगता केलेकेपत्ते चन्दनकालेप तथा चन्द्रमाकी शीतल किरणोंसे भी उसे सन्ताप होताहै और कृष्णपक्षकी चन्द्रमाकी कलाके समान उसका शरीर प्रतिदिन क्षीण होता जाताहै केवल तुम्हारे विषयकेही वार्त्तालापोंसे उसको आनन्द होताहै इससे अब ऐसाकरो जिससे उसका मनोरथ सफलहोय नहीं तो उसका जीवन कठिनहै उसके वचनसुनके मैंने कहा कि मैं तुम्हारे आधीन हूं जैसा उचित समझो वैसाकरो मेरे वचनसुनके वह प्रसन्नहोकर चलीगई और मैंभी अपने चित्तमें कुछ धैर्य्ययुक्त हुआ दूसरेदिन उज्जयिनी से आयेहुए एक महाधनवान् धनीने मदिरावती के पितासे मदिरावतीके लिये याञ्चाकी उसके पिताने उसकी प्रार्थना स्वीकार करली इस समाचारको सुनकर मैं स्वर्गसे गिरेहुए वज्रसेहतहुए तथा भूतसे ग्रस्तहुए के समान बहुत कालतक मोहितरहा फिरसावधान होकर मैंने शोचा कि अभी व्याकुलहोने से क्या प्रयोजनहै देखो अन्तमें क्याहोता है इसप्रकार धैर्य्य करके मैं महाकष्टसे दिनव्यतीतकरनेलगा इतनेमें लग्नका निश्चयहोगया और लग्नकेदिन बड़ेठाटबाट और तैयारीसे वह वर उसके यहांआया यहदेखकर मैंने मदिरावतीसे निराशहोकर और मरणकेदुःखसे भी विरहके दुःखको कठिन जानके नगरी के बाहरजाके एकबरगदके वृक्षमे उसीकी जटाबांधके गले में फांसीलगाली फांसीलगातेही मेरी चेतना जातीरही क्षणभरमें फिर चैतन्यहोकर मैंने अपनेको उसीवृक्ष के नीचे एकयुवा पुरुषकी गोदीमें लेटेहुए देखा उसे अपना रक्षकजानके उससे मैंनेकहा कि हे महासत्त्व आपने तो बड़ी कृपालुता प्रकटकी परन्तु मुझविरहीको जीवनकी अपेक्षा मृत्यु अच्छीमालूमहोती है मुझे चन्द्रमा अग्निके समान आहार विषकेसमान मधुरगीत कटुभाषणके समान उपवन बन्दीगृह के समान पुष्पोंकीमाला बाणोंकेसमान औरचन्दनादिक लेप अंगारोंकेसमान मालूमहोताहै हेमित्र ऐसे क्लेशित वियोगियोंको जीवन मे क्या सुखहै यहकहके मैंने उसे अपना सबवृत्तांत सुनादिया तब वह साधू मुझसे बोला कि जिस आत्माके लिये यहसंपूर्ण यत्नहैं उसके त्यागकरने मे क्या फलहै सुनो इस विषयपर मैं अपनाही वृत्तान्त तुमको सुनाता हूं हिमालय नामपर्व्वत पर निषधनाम महापवित्र देश है उस देशके निवासी शीलश्रुतनाम ब्राह्मण का मैं पुत्र हूं देशान्तरों के देखने के कौतुक से मैं अपने देशसे चलकर भ्रमण करताहुआ और अनेक उपाध्यायों को देखताहुआ यहां से कुछ दूर पर शंखपुरनाम नगरमें पहुंचा जहां शंखपालनाम नागराजका शंखह्रदनाम बड़ा निर्मलतड़ागहै उस पुरमें एक उपाध्यायके यहां जाकर मैं रहनेलगा एकसमय किसीपर्वकेदिन मैं उसीतड़ागमे स्नानकरनेको गया वहां स्नानकरके उस तड़ागके दक्षिण ओर बहुतसे वृक्षोंका समूह मैंने देखा तमालरूपी धुंएसे, टेसूरूपी अंगारोंसे और प्रफुल्लित अशोकरूपी ज्वालाओंसे वह वृक्षोंका समूह श्रीशिवजी के नेत्रकी अग्निसे जलतेहुए कामदेव के समान शोभितथा वहां एक कन्या पुष्प तोड़रहीथी पुष्पों के तोड़नेकेलिये हाथके उठानेके कारण उसका एकपयोधर कुछ २ लक्षित होरहाथा उसकी शिरकीचोटी ऐसी शोभितहोरहीथी कि मानों मुखरूपी चन्द्रमाके भयसे अन्धकार शरणमे आयाथा देखतेही वह

कन्या मेरे हृदयमें कामदेवकी बरछीके समान प्रविष्टहोगई और वह भी मुझे देखकर कामके वशीभूत होगई और तिरछी दृष्टिसे वारम्वार मुझे देखनेलगी इतनेमें भागतेहुए लोगोंका महाहाहाकार सुनाई दिया और एक मतवाला हाथी उसी ओर को दौड़ताहुआ आया हाथीको देखकर भयभीतहुई उस कन्याको गोदीमें लेकर जहां सब लोग भागकरगयेथे वहां मैंभी चलागया वहां उसके सेवकोंने आकर उसे सावधान किया इतनेमें वह हाथी वहां भी आया इससे बहुत भीड़होनेके कारण उस कन्याके सेवकनजानें उसे कहां लेगये इससे हाथीके चलेजाने पर भी में उसे कहीं न देखकर बहुत उदासीन होके उपाध्याय के घरको चलाआया वहां उसके स्पर्श के सुखका स्मरण करके अत्यन्त दुःखीहुआ चिन्ता ने मानों मुझे विकल देखके अपनी गोदी में लेलिया और शिरकी पीड़ा ने आकर मेरा शिर पकड़ लिया मेरेधैर्य्यके साथही वह दिन समाप्त होगया मेरे मुखके समान कमल संकुचित होगये मेरे मनोरथोंके समान चक्रवाकों के जोड़े भिन्न २ होगये सुखियों का आनन्द देनेवाला चन्द्रमा पूर्वदिशा में उदित हुआ उसकी अमृतमय किरणें भी मेरे अंगों में अग्नि की वृष्टि के समान क्लेश देनेलगीं इसप्रकार मुझे महादुःखित देखकर मेरेएक स्वाध्यायीने मुझसेकहा कि हे मित्र तुम क्यों बहुत दुःखित होरहेहो तुम्हारे शरीर में कोई रोग तो नहीं दिखाई देता है परन्तु धन अथवा कामके निमित्त तुम्हारे चित्तमें कोई खेदहोय तो सुनो मैं कहताहूं (अतिगर्धेनयेह्यर्थावंचयित्वापरंचये। अपहृत्यपरेषांवावांछ्यन्तेनैवतेस्थिराः १ पापमूलायतस्पापफलभारंप्रसूयते। तद्भरेणैवभज्यन्तेशीघ्रंधनविषद्रुमाः २ अर्जनादिपरिक्लेशस्केवलंतैर्धनैरिह। अमुत्रदुःखमाचन्द्रतारकंनारकंमहत् ३ कामोप्यप्राप्यनष्टोयःसाप्राणान्तविडंबना। पश्चाद्धर्मोग्रद्रुतःसनिरयाग्नेर्मुखप्रियः ४) बहुत लोभसे दूसरोंको ठगकर अथवा दूसरोंके यहांसे चुराके जिसधनकी अभिलाषा कीजाती है वह धनस्थिर नहीं रहता १ पाप उसका मूलहोताहै इससे वह धनरूपी विष वृक्ष पापरूपी फलोंके भारको उत्पन्नकरके उन्हींके भारसे नष्टहोजाताहै २ इस लोकमें उस धनसे केवल उपार्जनादिका क्लेश प्राप्तहोताहै और परलोकमें जब तक चन्द्रमा तथा नक्षत्ररहेंगे तब तक नरकोंका दुःखभोगना पड़ताहै ३ विना प्राप्तहुए नष्टहुआ कामभी प्राणान्त कष्टदायी होताहै और जो उस में अधर्म्म होताहै वह पहले कुछसुखदायी नरककी अग्निका पहलादूतहै ४ परन्तु धैर्य्य बुद्धि तथा उत्साहयुक्त पुरुष न्यायसे धन तथा काम प्राप्तकरते हैं तुम्हारे सरीके अधीरोंसे कुछ नहीं होसक्ताहै इससे धैर्य्यका अवलंबन करके अपने मनोरथकी सिद्धिकेलिये यत्नकरो उसके यह वचन सुनके उसको कुछ भी उत्तर न देकर मैं किसी प्रकार उस रात्रिको वहां व्यतीतकरके इस पुरीमें इसलिये चला आयाहूं कि कदाचित् वह यहीं रहतीहो यहां मैंने तुमको फांसी में लटका देखकर तुम्हें फांसी से उतारकर तुम्हारा दुःख सुना और अपना तुमसे कहा हे मित्र मैं अपनी प्रियाका नाम आदि कुछ भी नहीं जानताहूं तौ भी उसके निमित्त उद्योगकर रहाहूं और तुम मदिरावतीको जानकर भी पुरुषार्थको छोड़कर क्यों अधीर होतेहो क्या तुमने रुक्मिणीजीका वृत्तान्त नहीं सुनाहै कि उनके विवाहका ठीक तो शिशुपालसेथा और कृष्ण उनको हरलेगये उसके इसप्रकार कहतेही बजतेहुए बाजोंके साथ मदिरावती वहीं

आई उसे देखकर मैंने अपने उस मित्रसे कहा कि यह जो कामदेवका मंदिरहै इसमें कामदेवका पूजनकरनेकेलिये यह मदिरावती यहां आई है इस नगरीकी यहरीतिहै कि जिनकन्याओं का विवाहहोता है वह यहां आकर प्रथम कामदेवका पूजन करतीहै इसीसे मैंने इसवरगदमें फांसी लगाईथी कि मदिरावती यहां आकर मुझे मराहुआ देखेगी मेरे यह वचन सुनकर उस अकारण मित्रने मुझसे कहा कि चलो इस मंदिरमें मातृका देवीकी मूर्त्तिके पीछे छिपकर खड़ेहोयँ कदाचित् कोई उपाय निकलआवे उसके यह वचन सुनके मैं उसीके साथ मंदिरमे जाकर मातृकादेवीके पीछे छिपकर खड़ाहोगया तव मदिरावती अपनी सखियोंसे वोली कि तुम सवमन्दिरसे वाहररहो मैं अकेलीही कामदेवसे कुछ वरमांगूंगी यह कहके सव सखियोंको मन्दिरके वाहरही छोड़कर मन्दिरके भीतरजाके कामदेवका पूजनकर के उसने यह विज्ञापनाकी कि हे देव आपने मनोभवहोकर भी मेरे मनका अभिप्राय क्यों नहीं जाना अच्छा जो इस जन्ममें आपने मेरा मनोरथ नहीं पूर्णकिया तो अन्य जन्ममें आपकी कृपासे वह ब्राह्मण अवश्य मेरा पतिहोय यह कहके उसने खूंटियोंमे डुपट्टा वांधके अपने गलेमें फांसीलगाई यह देखकर मेरे मित्रने मुझ से कहा कि जल्दी जाकर इसके प्राणवचाओ उसके यह वचन सुनकर मैंने तुरन्तहीजाके उसकेगलेसे डुपट्टाखोलके उससेकहा कि हेप्रिये साहसनकरो तुम्हारादासतो आगेहीखड़ा है मुझे एकाएकी देखकर वह आनन्द तथा भ्रमसे चकितसी होगई इतनेमें मेरे मित्रने मुझसे कहा कि दिन व्यतीतहोनेके कारण इससमय अन्धकारहोरहाहै इससेमैं इसकावेपवनाकर इसकीसखियोंके साथ चलाजाऊंगा और तुम इसे लेकर दूसरेद्वारसे आजही देशान्तरको चलेजाओ मेरी चिन्ता कुछ न करना परमेश्वर मेरा कल्याण करेगा यह कहकर वह मदिरावती कासा वेपवनाकर उन सखियोंके संग चलागया और मैं मदिरावतीकोलेकर उसी रात्रिको एकयोजन पृथ्वी निकलगया और प्रातःकाल किसीस्थानमें भोजनादिसे निवृत्तहोकर चलते२ अचलपुरनाम नगरमें पहुंचगया वहां एकब्राह्मणने मित्रताकरकेमेरे रहनेको एकघर मुझेदिया वहीं मैंने मदिरावतीकेसाथ गान्धर्वविवाह करलिया१५०वहां सुखपूर्व्वकरहते हुए मुझको एकयही व्यथाथी कि मेरे मित्रकी क्यादशाहुई होगी तदनन्तर गंगाजीके स्नान करनेके निमित्त यहांआयेहुए मुझको यहवही अकारणमित्रमिलगया और जैसेमैं इसका आलिंगनकरके वृत्तान्त पूंछनेलगा वैसेही आप आगये उसके वचन सुनकर नरवाहनदत्तनें उसदूसरे ब्राह्मणसे पूंछा कि उस संकट से तुम किसप्रकार से छूटे वह सर्व वृत्तान्त मुझसे कहो तव नरवाहनदत्तके वचन सुनकर उसने कहा कि जव मैं मदिरावतीका वेपवनाकर मन्दिरके वाहरआया तव सम्पूर्ण सखियां मुझे पालकीपर चढ़ाकर मदिरावतीके मकानपर लेगई वहां वहुतसी स्त्रियों ने आकर मुझे घेर लिया और सम्पूर्ण सखियां विवाहके आनन्दसे गानेलगीं इतनेमें वहुतसी सखियों समेत एककन्या वहांआई सौन्दर्य्य समुद्र की लहरके समान उसकन्याको देखकर पहचानके मैं अपने चित्तमें अत्यन्त हर्षितहुआ वह वही कन्या थी जो शंखहृदके निकट मुझको मिलीथी क्षणभरमें मदिरावतीकी सखियों ने उससे कहा कि हे सखी आज तुम उदासीन क्योंहो उसने अपने आशयको छिपाकरकहा क्या तुम नहीं जानतीहो कि मदि-

रावती मेरी कैसी प्यारी सखी है यह विवाहकरके अपने श्वशुरके यहां चलीजायगी और इसके बिना मैं नहीं रहसकूंगी यही मुझे दुःख है तुमलोग यहां से चली जाओ मैं इससे एकान्त में कुछ वार्त्तालाप करूंगी यहकहके वह सबको हटाकर कुण्डी बन्दकरके मुझसे बोली कि हे सखी मदिरावती तुम्हारे दुःख से अधिक और कोई दुःख नहीं है तुम्हारा प्रिय तो और है परन्तु तुम्हारा पिता दूसरे के साथ तुम्हारा विवाहकरे देताहै तथापि तुम अपने प्रियको जानतीहो इससे कदाचित् फिर तुम्हारा समागमहोजाय परन्तु मुझे ऐसा दुःख उत्पन्नहुआहै जिसके दूरहोनेकी आशा नहीहै वह मैं तुमको सुनातीहूं क्योंकि तुमसे मैं कोई बात छिपा नहीं सक्तीहूं एकपर्वके दिन मैं शंखह्रदमें स्नानकरनेको गईथी वहां सौन्दर्य्य रूपी हाथीके बांधनेके स्तंभके समान एक नवयुवक ब्राह्मण आया उसके मुखारविन्दमें भ्रमरकी पंक्ति के समान थोड़ी २ मूंछें अत्यन्त शोभितहोरहीथी उसे देखकर मुझे ऐसी कामबाधाहुई कि मैं लज्जा तथा भय रहितहोकर उसे अपनी तिरछी दृष्टि से देखनेलगी इतने में एक मतवाला हाथी चिंघाड़ता हुआ वही आया उसे देखकर सब लोग भागे और वह नवयुवक मुझे भयभीत देखके अपनी गोदीमें चढ़ाकर जहां वह सब भागकर गयेथे वहीं मुझेभी लेगया उसके अंगोंके स्पर्शसे मुझे ऐसा आनन्द हुआ कि कहां हाथी है कहां मैं हूं और कहां मेरे सेवकहैं कुछ भी मुझे ज्ञान न रहा तब मेरे सेवकोंने आकर उसकी बड़ी प्रशंसाकरके उससे मुझे ले लिया इतने में वह मतवाला हाथी वहां भी आया उस हाथीको देखकर मेरे सेवक मुझे घरलेआये और मेरा वह प्रिय न जानें कहां चलागया तबसे मैं रात्रि दिन उसीका स्मरण किया करतीहूं सम्पूर्ण दुःखोंकी दूरकरनेवाली निद्राभी मुझे नहीं आती इसनिरुपाय दुःख में तुम्हारे साथ वार्त्तालाप करने से मुझे कुछ सावधानता होतीथी सो तुमभी जातीहो अब मेरी मृत्यु अवश्यहोजायगी चलो अच्छा लाओ तुम्हारा मुख तो अच्छे प्रकारसे देखलूं यह कहकर उसने मेरा घूंघट खोलके जैसेही देखा वैसेही पहचानकर हर्ष आश्चर्य्य तथा सम्भ्रम से व्याप्तहोगई तब मैंने उससे कहा कि हे मुग्धे तुम क्यों भयभीतसी होगईहो मैं वही तुम्हारा दासहूं (विधिर्हिघटयत्यर्था नचिन्त्यानपिसम्मुखः) अनुकूल भाग्य अचिन्त्य कार्य्योंकोभी सिद्धकर देताहै मैंने तुम्हारे लिये बहुत दुःख भोगाहै वह सब वृत्तान्त मैं तुमसे कहूंगा अभी कहनेका समय नहीं है इससमय तो यहांसे निकल चलनेका उपाय शोचनाचाहिये मेरे वचन सुनकर उसने कहा कि यह जो पश्चिमकीओर द्वार लगाहै इसे खोलकर निकलचलो इसद्वारके बाहर मेरे पिताका उपवनहै उसीउपवनमें जाकर जहांचाहना वहां चलना यहकहके वह अपने आभूषण खोलकर मुझे देकर उसी मार्ग से मेरे साथ चली रात्रि मेंही मैं इतनी दूरचला कि प्रातःकाल होते २ एकमहावनमें पहुंचगया उसी वनमें प्रियाके साथ चलते २ मध्याह्न का समय होगया तब अपनीप्रियाको दुःखितदेखकर मैंने एकवृक्षकेनीचे उसे बैठालकर अपनेवस्त्रोंकापंखा उस के हांका इतनेमें एकघायल भैंसा वहां दौड़ताहुआ आया और उसकेपीछे घोड़ेपरसवार एकधनुष धारी पुरुष आया उसने भालेके प्रहारसे उस भैंसेको मारकर गिरादिया औरमुझे देखके घोड़ेसे उतरकर पूछनेलगा कि तुम कौनहो और यह स्त्री तुम्हारी कौनहै उसके यह वचन सुनके अपना जनेऊ दिखा

कर झूठ तथा सत्य गर्भित यह वचन मैंने कहा कि मैं ब्राह्मणहूं और यह मेरी स्त्री है किसी कार्य्य से मैं इसे लेकर परदेशको जाताथा मार्गमें चोरोंने मेरे सब साथियोंको लूट लिया इसीसे भयभीत होकर मैं इस वनमें आयाहूं यहां आपको देखकर अब सब मेरा भय दूरहोगया मेरे वचन सुनके उसने दया युक्त होके कहा कि मैं वनवासियोंका राजाहूं तुम दोनो यहां आनेसे मेरे अतिथि हुए इससे कुछ दूर चलके मेरे स्थानको पवित्र करो यह कहके वह मेरी प्रियाको घोड़ेपर चढाके आप पैदलही चलकर मुझे अपने स्थानपर लेगया वहां उसने मेरा भोजनादिसे बड़ा सत्कार किया (कुदेशेष्वपिजायन्तेक्वचित्केचिन्महाशयाः) कहीं कुदेशोंमें भी कोई २ महाशय उत्पन्न होजाते हैं तदनन्तर उससे कुछ रक्षकोंको लेकर मैं उस वनका उल्लंघन करके प्रिया सहित एक ग्राम में आया वहां किसी ब्राह्मण के घरमें रहके और वहीं अपनी प्रियाके साथ गान्धर्व विवाह करके अनेक देशोंमें भ्रमण करते २ श्रीगंगाजीके स्नानकरनेको यहां आया भाग्यवशसे यहीं यह मित्र मिलगया और आपके भी दर्शन हुए उसके यह वचनसुनकर नरवाहनदत्तने उसकी बड़ी प्रशंसाकी इतनेमें नरवाहनदत्तको ढूंढतेहुए गोमुखादिक मंत्री वहां आगये और उसे देखकर आनन्दसे उसके पैरोंपरगिरे उन सबको हृदयसेलगाकर नरवाहनदत्त उनदोनोंब्राह्मणोंको तथा उसीसमय आईहुई ललितलोचनाको साथ लेकर उन मंत्रियोंसमेत अपनी पुरीकोआया २१६॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांमदिरावतीलम्बकेप्रथमस्तरङ्गः १॥

मदिरावतीनामतेरहवांलम्बकसमाप्तहुआ॥

पंचनामचतुर्दशोलम्बकः॥

तुष्टेनयेनदेहार्धमप्युमायैसमर्पितम्।
सवोददात्त्वभिमतंवरदःपार्वतीपतिः १॥
निशिविघ्नजितोवोऽव्याच्चाण्डवोद्दंडितःकरः।
शोणश्चन्द्रातपत्रस्यतन्वन्विद्रुमदण्डताम् २॥

इसके उपरान्त नरवाहनदत्त त्रैलोक्य सुन्दरी मदनमंचुका आदिक स्त्रियोंको पाकर सुखपूर्व्वक गोमुखादि मंत्रियोंके साथ अपना समय व्यतीत करनेलगा एकसमय उसने अन्तःपुर में अपनी प्रिया मदनमंचुकाको तथा उसकी दासियोंको नहीं देखा उसे न देखके उसने शोचा क्या मेरी परीक्षा करनेके लिये मेरी प्रिया कहीं छिपगई है या मेरे किसी अपराध से वह कुपित होगई है अथवा किसीने मायाकरके उसे छिपा लियाहै या उसे कोई हरलेगयाहै इसप्रकार अनेक सन्देह करके वह विह्वलहोगया इस

वृत्तान्तको सुनकर राजा उदयन बहुत घबराकर अपनी रानी तथा मंत्रियों सहित वहां आया और कलिंगसेनाभी मदनमंचुकाके वृत्तान्तको सुनकर बड़ी व्याकुल हुई उससमय अन्तःपुर की रहनेवाली एक वृद्धाने नरवाहनदत्तके आगे सबसे कहा कि जो मानसवेग नाम विद्याधर कलिंगसेनासे जबमदनमंचुका कन्याहीथी तब उसे मांगने को आयाथा वही अपनी मायासे मदनमंचुकाको हरलेगया होगा यद्यपि दिव्यपुरुष परस्त्रीको नहीहरते हैं तथापि कामान्धलोगोंको कुमार्ग और सुमार्गका ज्ञाननहीरहता है उसके वचन सुनकर लहरों में पड़ेहुए कमलके समान नरवाहनदत्तका चित्त कोप विचार तथा विरहसे डगमगानेलगा उसीसमय रुमण्वान् ने भी कहा कि इसपुरीकी रक्षकलोग सब ओरसे ऐसी रक्षाकरतेहैं कि आकाशके सिवाय पृथ्वीके मार्गों से कोई भी अपरिचित यहां नहीं आसक्ताहै और श्रीशिवजीकी कृपासे मदनमंचुका का कुछ अनिष्ट नहीं होसक्ताहै वह यहीं कही युवराजकी परीक्षाकेलिये छिपी होगी इस विषयपर मैं तुम लोगोंको एककथा सुनाताहूं कि पूर्व्व समयमें अंगिरा नाम ऋषिने अष्टवक्रसे उनकी सावित्री नाम कन्या अपने साथ विवाह करनेकेलिये मांगी परन्तु अष्टावक्रने उन्हें सावित्री कन्या नदी क्योंकि वह किसी अन्यके साथ उसका विवाह करनेको कहचुकेथे तब अंगिराने अष्टावक्रके भाईकी अश्रुतानाम कन्याके साथ अपना विवाह करलिया वह अश्रुताजानती थी कि मेरे पतिने पहले सावित्रीके साथ अपना विवाह करना चाहा था एक समय अंगिरा ऋषि बहुत देरसे बैठे हुए जपकर रहेथे उससमय अश्रुताने उनसे पूछा कि हे आर्य्यपुत्र आप किसका बहुत देरसे ध्यान कररहे हो तब मुनिने कहा कि हेप्रिये मैं सावित्रीका ध्यानकररहा हूं सावित्रीकानाम सुनकर अश्रुताने अष्टावक्रकी पुत्री का ध्यान करना जानकर वनमें जाके फांसी लगाकर अपने प्राण देनेचाहे उस समय अक्षसूत्र कमण्डल धारिणी भगवती गायत्रीने प्रकटहोकर उससे कहा कि हेपुत्री साहस न करो तुम्हारे पतिने मेरा ध्यान किया था अष्टावक्रकी पुत्रीका ध्यान नहीं कियाथा यह कहकर गायत्री अन्तर्द्धान होगई और अश्रुतावनसे अपने घरको चलीआई इससे मदनमंचुका भी किसीस्वल्प अपराधसे कुपित होकर कहीं छिपीहोगी उसेढूंढ़िये रुमण्वान् के यह बचनसुनके वत्सराज उदयन् ने कहा कि रुमण्वान् का कहना बहुत ठीकहै मदनमंचुका को कोई अनिष्ट नहीं होसक्ता क्योंकि जब इसका जन्महुआ था तब यह आकाशवाणी हुईथी कि मदनमंचुका का नरवाहनदत्तके साथ विवाह होगा और एक कल्प पर्य्यन्त यह विद्याधरों का ऐश्वर्य्य उसके साथ भोगेगी यह आकाशवाणी मिथ्या नहीं होसक्ती इससे अच्छे प्रकारसे उसेढूंढ़ना चाहिये अपने पिताके यह वचनसुनकर नरवाहनदत्त उन्मत्तसाहोके उसे इधर उधर ढूंढ़नेलगा वनमें पत्तेरूपी हाथोंको हिला २ कर मानों वृक्ष उससे कहते थे कि हमने तुम्हारी स्त्री नहीं देखीहै मरुभूति हरिशिख गोमुख तथा वसन्तक यह मंत्री भी उसे ढूंढ़नेलगे इस बीचमें वेगवती नाम विद्याधरी मदनमंचुकाकासारूप बनाके उपवनमें अशोक वृक्षके नीचे आकर बैठगई मरुभूतिने ढूंढ़ते ढूंढ़ते उसे देखकर नरवाहनदत्त से जाकर कहा कि सावधानहो तुम्हारी प्रिया अशोक के नीचे बैठी है उसके यह वचनसुनकर नरवाहनदत्तने शीघ्रही वहां आकर जैसेही उसका आलिंगन करना

चाहा वैसेही उसने युक्ति पूर्व्वक अपना विवाह करनेके लिये कहा कि अभी तुम मेरास्पर्श न करना जब मेरा विवाह नहींहुआ था तब मैंने यक्षोंसे तुम्हारी प्राप्तिके लिये यहप्रार्थना करीथी कि जबमेरा विवाह नरवाहनदत्तके साथहोगा तब मैं अपने हाथसे तुम्हें वलिदूंगी परन्तु विवाहके समय मैं वलिदेना भूलगई इसीक्रोपसे यह यक्षमुझे हरलेगये थे इस समय वह यक्षमुझसे यह वात कहके कि तुम फिर अपना विवाह करके हमको वलिदेकर पतिसे समागम करना नहीं तो तुम्हारा कल्याण न होगा मुझे यहां छोड़गये इससे आपफिर मेरे साथ विवाहकरो तो मैं यक्षोंको वलिदान अपने हाथसे देऊं उसके यह वचनसुनकर नरवाहनदत्तने शान्तिसोम पुरोहित को बुलवाकर उसके साथ अपना विवाह किया और उसने यक्षों को वलिदियी तदनन्तर बड़े उत्सवसे उसदिनके समाप्तहोने पर रात्रिके समय बहुत कालसे उत्कण्ठित नरवाहनदत्तने शयन स्थान में जाकर उसके साथ सम्भोग किया सम्भोगके उपरान्त उसने नरवाहनदत्तसे कहा कि हेप्रिय जब मैं सोजाऊं तो मेरामुख खोलकर मतदेखना उसके यह वचनसुनकर नरवाहनदत्तने सन्देह युक्तहोकर जब वह सोगई तब उसका मुखदेखा उस समय सोनेके कारण उसका वह मायाकारूप नष्टहोगया था इससे जब वह जगी तब नरवाहनदत्तने उससे पूछा कि सत्य २ बताओ कि तुम कौनहो तब वह अपना भेदखुलाजानकर बोली कि हे प्रियसुनो मैं अपना वृत्तान्त कहतीहूं विद्याधरों का निवास स्थान आषाढपुर नाम एक पर्व्वतहै वहांके राजावेगवान् के मानसवेग नाम एक पुत्र है उसकी वेगवती नाम मैं छोटी वहिनहूं मेराभाई मेरे साथ बहुतद्वेष करताथा इससे उसने मुझे विद्या नहीं सिखाई तब मैंने तपोवनमें जाकर अपने पितासे सब विद्यासीखीं और पिताके वरदानसे वह सम्पूर्ण विद्या मुझे अधिक वलवती होकर प्राप्तहुई मैंने आषाढपुरमें आपकी प्रिया मदनमंचुकाको देखाहै मेराभाई मानसवेग उसे हरलेगयाहै वह हठ पूर्व्वक उसके साथ संभोग नहीं करसका क्योंकि उसको यह शापहै कि वह हठ पूर्व्वक किसी स्त्रीके साथ सभोगकरे तो उसकी मृत्युहोजाय इससे उसने मदनमंचुकाके समझानेकेलिये मुझे भेजा मैंने उसके पास जाकर प्रसंग से तुम्हारा नामसुना नामके सुनतेही तुम्हारे ऊपर मेरा चित्त आशक्त होगया तब मुझे भगवतीके इस वरका स्मरणआया कि जिसके नामको सुनकर तुझे कामकी पीड़ा होगी वही तेरा पति होगा इस वरको स्मरण करके और अत्यन्त व्याकुल मदनमंचुकाको समझाके उसीका रूप धारण करके मैंने युक्ति पूर्व्वक आपके साथ विवाह किया अब जहां आपकी प्रिया मदनमंचुकाहै चलिये मैं वहीं आपको लेचलूं मैं आपके स्नेहसे सौतों से भी द्वेष नहीं करतीहूं यह कहकर वह नरवाहनदत्तको लेकर आकाश मार्गसे धीरे २ चली यहां प्रातःकाल नरवाहनदत्तको मदनमंचुका सहित न देखकर राजा उदयन् वासवदत्ता पद्मावती यौगन्धरायणादिक मंत्री तथा नरवाहनदत्तके मरुभूति आदिक मंत्री और संपूर्ण पुरवासी बहुत व्याकुलहुए उससमय आकाशसे द्वितीय सूर्य्यके समान तेजस्वी नारदमुनि राजा उदयन्के पास आये और अर्घपाद्य ग्रहण करके बोले कि तुम्हारा पुत्र विद्याधरी के साथ आषाढपुरको गयाहै थोड़े कालमें आजायगा तुमको धैर्य्य देनेकेलिये शिवजीने मुझको भेजाहै यह कहके नारद

तीने वेगवतीका सब वृत्तान्त उदयसे कहदिया नारदजीके वचन सुनकर रानियों सहित तथा मंत्रियों समेत राजा उदयनका चित्त सावधान होगया और नारदमुनि अपने लोकको चलेगये इस बीचमें वह वेगवती आकाश मार्गसे नरवाहनदत्तको आषाढ़पुर में लेगई मानसवेगने यह जानकर उन दोनों अपने बहिन बहनोईको मारनाचाहा तब वेगवतीने नरवाहनदत्तको विद्याके द्वारा रक्षित करके मानसवेगके साथ बड़ा युद्ध किया और मायाके बलसे अपना भयंकर रूपबनाके मानसवेगको मोहितकरके अग्नि पर्व्वतपर डालदिया और नरवाहनदत्तको गन्धर्वपुरमेंलाके एक सूखे कुएमें छोड़कर कहा कि हे आर्य्य पुत्र आप कुछ काल यहां रहिये इससे आपका बड़ा कल्याण होगा आप अधैर्य्य न कीजियेगा यहां आप सम्पूर्ण विद्याधरोंके चक्रवर्त्ती होजाइयेगा अब मैं अपनी विद्याओंको फिर सिद्धकरनेको जातीहूं मैंने अपने बड़े भाईका तिरस्कार कियाहै इसीसे मेरी विद्याक्षीण होगई है थोड़ेही कालमें मैं आपके पास आजाऊंगी यह कहके वह वेगवती विद्याधरी कहीं चलीगई ६१ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांपंचलम्बकेप्रथमस्तरंगः १ ॥

इसके उपरान्त कुएं में पड़ेहुए नरवाहनदत्तको एकवीणादत्तनाम गन्धर्वने निकाला और उससेपूछा कि तुम मनुष्य नही मालूमहोतेहो क्योंकि मनुष्योंसे अगम्य इसस्थानमें प्राप्तहुएहो यह सुनकर नरवाहनदत्तने कहा कि (परार्थफलजन्मानोनस्युर्मार्गद्रुमाइव तापच्छिदोमहान्तश्चेज्जीर्णारण्यंजगद्भवेत्) मार्गके वृक्षोंके समान परार्थरूपी फलकेही लिये उत्पन्नहुए महात्मालोग जो तापके नाशकरने वाले न होयँ तो संपूर्ण संसार जीर्णारण्य होजाय यह कहकर उसने कहा कि मैं मनुष्यहूं मुझे विद्याधरीने लाकर यहां डालाहै उसके वचन सुनके और चक्रवर्त्तियोंके से उसके लक्षण देखकर वह गन्धर्व उसे अपने घरलेगया उसके घरमें जाकर नरवाहनदत्तने उसके दियेहुए भोजन वस्त्र तथा आभूषणो को ग्रहण करके वह दिन वहीं व्यतीत किया दूसरेदिन उस पुरमें सबपुरुषोंको वीणाधारी देखकर नरवाहनदत्तने वीणादत्तसे पूछा कि इस पुरमें सब लोग वीणाधारी क्यों हैं उसने कहा कि यहां गन्धर्वों का सागरदत्तनाम जो राजाहै उसके गन्धर्वदत्तानाम बड़ी रूपवती कन्याहै वह सदैव वीणा में विष्णु भगवान्के भजन गाते २ गान्धर्वविद्यामें परम चतुर होगईहै इससे उसने यह प्रतिज्ञाकीहै कि जो विष्णु भगवान्के पद वीणामें तीन ग्रामोसे बजासके और गासके उसीके साथमें अपना विवाह करूंगी इससे यहांके सबलोग वीणालेकर उसका अभ्यासकरते हैं परन्तु अभीतक इसकी पराकाष्ठाको कोईनहीं पहुँचाहै उसके यह वचनसुनके नरवाहनदत्तने कहा किमैं संपूर्णगान्धर्वविद्या भलीभांति जानताहूं उसके यह वचन सुनके उस गन्धर्वने उसे लेजाकर राजा सागरदत्तसे कहा कि यह वत्सराजका पुत्र नरवाहनदत्तहै विद्याधरीके साथ यहां यह आयाहै संपूर्ण गन्धर्वविद्या इसे अच्छेप्रकारसे आती है उसके यह वचन सुनकर राजाने कहा कि मैंने पहलेही गन्धर्वोंके मुखसे इसकी प्रशंसा सुनी है यहकहके उसने गन्धर्वदत्ताको वहां बुलवाया गन्धर्वदत्ताने वहां आकर अपने पिताकी आज्ञासे वीणाबजाई वीणा को सुनकर तथा उसके अद्भुत रूपको देखके नरवाहनदत्तने चकितहोकर उससे कहा कि हे राजपुत्री

तुम्हारी वीणाका स्वर अच्छा नहींहै मैं जानताहूं इसके भीतर कोई बालहै उसके वचनसुनके जो वीणा दिखाई गई तो उसमें बालनिकला इससे संपूर्ण गन्धर्वोंको बड़ा आश्चर्य्य हुआ तब राजा सागरदत्त ने उससे कहा कि हेराजपुत्र तुम वीणालेकरबजाओ यह कहके राजाने अपनी पुत्री के हाथसे वीणा लेकर उसे देदी वीणालेके नरवाहनदत्तने उसी वीणाके द्वारा ऐसे मधुरस्वरसे विष्णुपद गाये जिससे संपूर्ण वहांके लोग चित्र लिखेसे रहगये और गन्धर्वदत्ता उसपर आसक्तहोगई राजा सागरदत्तने अपनी कन्याको मोहितहुई जानके उसका विवाह नरवाहनदत्तकेसाथ करदिया उसकेसाथ विवाहकरके नरवाहनदत्त सुखपूर्वक वहां रहनेलगा एक दिन नरवाहनदत्त नगरकी शोभा देखताहुआ उपवन में गया वहां उसने एक दिव्यस्त्री कन्यासमेत आकाशसे उतरतीहुई देखी नरवाहनदत्तको देखके उस स्त्री ने अपनी कन्यासे कहा कि हेपुत्री यही राजपुत्र तुम्हारा पतिहोगा यह कहके निकटआईहुई उस स्त्रीसे नरवाहनदत्त बोला कि तुम कौनहो और किस लिये यहां आईहो उसने कहा कि विद्याधरों के राजा देवसिहकी मैं स्त्रीहूं और यह कन्या मेरीपुत्री है इसका अजिनावती नामहै चंडसिंह नाम इसका एकभाई है जिस समय इसकन्याका जन्म हुआथा उस समय यह आकाशवाणी हुईथी कि इसकन्या का पति नरवाहनदत्तहोगा इससे मैं तुमको यहां आयाजानकर तुमसे अपना अभीष्ट कहनेको आई हूं तुमको इस स्थानमें न रहना चाहिये क्योंकि संपूर्ण विद्याधरलोग तुमसे शत्रुता रखतेहैं वह तुमको यहां अकेला जानकर बहुत क्लेशदेंगे इससे चलो मैं तुमको ऐसे स्थान में पहुँचादूं कि जहां विद्याधर लोग तुमको न पासकें यह कहके वह नरवाहनदत्तको लेके श्रावस्तीपुरीके उपवनमें छोड़गई और यह कहगईकिमैं समयपर अपनी पुत्रीका विवाह तुम्हारेसाथकरूंगी उसकेचलेजानेपर राजाप्रसेनजित वहां आकर उसे देखके उसका नाम तथा वंशपूछके अपने राजमंदिरमें लेगया और वहांउसने ज्योतिषियो से लग्नपूछके अपनी भागीरथयशानाम कन्याका विवाह उसकेसाथ करदिया उसकेसाथ नरवाहनदत्त सुखपूर्वक वहांरहाठीकहै(यत्रतत्रस्थितंसोत्कानरंकल्याणभाजनम्।संपदोभिसरन्त्येवप्रियंजनमिवाङ्गनाः) जैसे प्रियपुरुषकेपास स्त्रियांजाती हैं उसीप्रकार कल्याणभागीपुरुषके पास सम्पत्तियांभीजाती हैं एकदिन रात्रिकेसमय नरवाहनदत्त चन्द्रमाकी चन्द्रिकामे भगीरथयशाके साथ पलंगपर लेटा और थोड़े काल तक उसकेसाथ क्रीड़ा करके शयनस्थानमें जाके उसीकेसाथ सोरहा भगीरथयशा तो सोतीरही परन्तु उसकी निद्रा बीचमेंही खुलगई उससमय उसको यह विचार उत्पन्नहुआ कि मेरीसम्पूर्ण प्रियाओंकी क्या दशाहोगी देखो मेरामंत्री मरुभूति तो प्रायः वीरताके कार्य्योंमें रहताहै और हरशिखनीतिके कार्य्यों में लगा रहता है परन्तु गोमुख सदैव मेरी प्रसन्नताकाही यत्नकिया करताहै उसके विना मुझे हरसमय बड़ा क्लेश होताहै इसप्रकार शोचते २ उसने किसी स्त्रीकासा हाय२ शब्द सुना और शब्दको सुनकर जैसेही सबओरको देखा वैसेही झरोखे के भीतर किसी दिव्य स्त्रीका निष्कलंक चन्द्रमा के समान मुख उसे दिखाई दिया उसके अन्य अंगोंको न देखकर उसने शोचा कि ब्रह्माने पूर्वसमयमें आतापी राक्षस को सृष्टिमें अनेक विघ्न करते देखकर उससे कहा कि नन्दनवनमें जाकर तुम एक आश्चर्य्य देखो यह

सुनकर उसने नन्दनवनमें जाके किसीस्त्रीका मनोहर पैरमात्र देखा इससे वह उसस्त्रीके अन्य अंगोंके देखने की इच्छासे उद्योग करतेही करते मरगया उसीप्रकार क्या ब्रह्माने मुझे भी यह सुखदिखाया है उसके इसप्रकार शोचतेही उस दिव्य स्त्रीने झरोखेमें हाथडालकर उसे बुलाया तब नरवाहनदत्त शयन स्थानसे निकलकर उसकेपासगया उसे देखकर उसदिव्य स्त्रीनेकहा कि हाय मदनमंचुके इस अन्या-सक्त पतिपर स्नेहकरके तू अपने प्राण क्योंदिये देतीहै मदनमंचुका का नाम सुनके नरवाहनदत्त ने उससे कहा कि तुम कौनहो तुमने मदनमंचुका कहां देखी है और तुम मेरेपास क्योंआईहो नरवाहन-दत्त के वचन सुनके उसने उसे एकान्तमें लेजाकर कहा कि सुनो मैं सबवृत्तान्त कहतीहूं कि पुष्करावती नाम नगरीमें विद्याधरों का पिंगलगान्धारनाम राजाहै उसकी मैं प्रभावती नाम कन्याहूं मैं आषाढ़पुर में अपनी प्यारी सखी वेगवतीके देखने को गई थी परन्तु वह वहां नहीं मिली और मैंने सुना कि वह कहीं तपकरने को गई है वहीं उसकी माता पृथ्वीने तुम्हारी प्रिया मदनमंचुकाको मुझे दिखाया वहम-दनमंचुका तुम्हारे गुणोंका वर्णन कर २ के रोरही थी बहुतसी विद्याधरी स्त्रियां उसे घेरे बैठीं थीं उसीसे तुम्हारी प्रशंसाको सुनकर मैं तुमपर आसक्त होगई इससे और मदनमंचुका के दुःखको दूर करनेकेलिये मैं अपनी विद्याके प्रभावसे तुमको यहां आयाहुआ जान के आई हूं मैं चाहतीहूं कि तुम चलकर मदन-मंचुका के दुःखको दूरकरके मेरे भी मनोरथको पूर्णकरो इससमय तुमको अन्यस्त्रीकेसाथ सोते देखकर मुझे यह दुःखहुआ कि वह तो आपसे ऐसा स्नेह करतीहै और आप उसे भूलके अन्यस्त्रियों से संभोग करतेहो उसके यह वचन सुनकर नरवाहनदत्तने कहा कि जहां मेरी प्रियाहै वहीं मुझको लेचलो तुम मुझसे जो कहोगी सो मैं करूंगा उसके यहवचन सुनकर वह प्रभावती विद्याधरी उसे लेके आकाश मार्गसे चली मार्गमें कहीं अग्नि बलती देखकर उसने युक्तिपूर्वक अपना विवाह करनेके लिये नर-वाहनदत्त का हाथ पकड़कर उस अग्निकी प्रदक्षिणाकरी फिर वहां से नरवाहनदत्तको अनेक प्रकार के मार्ग दिखातीहुई चली बहुत दूर चलके नरवाहनदत्त को तृषालगी इससे उसने एकसुन्दर वनके निर्मल जलवाले तड़ागपर कर नरवाहनदत्तको उतार जलपिलाया उससुन्दर वनको देखकर नरवाहन-दत्त कामसे पीड़ितहोके उससे संभोग करने को हठकरनेलगा तब उसने मदनमंचुकाके दुःखका स्मरण करके नरवाहनदत्तकी बड़ी निन्दाकी ठीक है (परार्थप्रतिपन्नाहि नेक्षन्ते स्वार्थमुत्तमाः) परोपकार में लगेहुए उत्तम लोग स्वार्थनहीं देखते हैं, और कहा कि हे आर्यपुत्र मेरी निन्दासे आप अप्रसन्न न हूजियेगा मेरा जो अभिप्रायहै उसपर मैं एककथा आपको सुनातीहूं ६२ पाटलिपुत्र नामनगरमें एक युवती विधवाहोगई थी उसके एकबालकपुत्रथा रात्रिकेसमय वह अपने बालकको अकेला घरमें छोड़ कर पर पुरुषों के यहां जायाकरती थी जाते समय वह अपने पुत्रसे यहकहजाया करती थी कि हेपुत्र मैं तुम्हारे लिये मोदकलाऊंगी और प्रातःकाल मोदकलेआया करती थी इससे वह बालक मोदककी आशालगायेहुए घरमें चुपचाप बैठा रहताथा एकदिन वहस्त्री मोदकलानेको भूलगई और जब बालक ने मोदकमांगा तब उसनेकहा कि हेपुत्र मैं तो अपने प्रियकोही मोदक समझती हूं माताके यहवचन

सुनकर वह बालक निराशहोकर मरगया इससे हे प्राणप्रिय जो मैं अभी तुम्हारेसाथ संभोग करूंगी तो मदनमंचुका यह जानकर शीघ्रही निराशहोकर मरजायगी इससे आप पहले उससे मिललो तब मेरे मनोरथको पूर्णकरना उसके यहवचनसुनके नरवाहनदत्तने उसेबड़ीसाध्वी जानके उससेकहा कि अच्छा तुम मुझको मदनमंचुकाकेही पास लेचलो उसकेयहवचन सुनकर प्रभावती शीघ्रहीउसेआषाढ़पुर पर्व्वत परलेगई वहां विरहसेसंतप्तअत्यन्तकृश मदनमंचुकाको देखकर नरवाहनदत्तने अपनेहृदयमें लगालिया और मदनमंचुका ने मानों विरहकी अग्नि बुझाने को रोरोकर बहुतसे आंसू बहाये उससमय प्रभावती ने अपनी विद्याके प्रभावसे उनदोनों के लिये वहीं शयनके लिये शय्या और वस्त्रादिक उत्पन्न कर दिये और ऐसी मायाकी जिससे मदनमंचुकाके सिवाय नरवाहनदत्तको किसी नेभी नहीं देखा प्रातःकाल बहुत दिनसे बंधीहुई चोटीको खोलतेहुए नरवाहनदत्तसे मदनमंचुकाने कहा कि मैंने यह प्रतिज्ञाकीथी कि जो आर्यपुत्र मानसवेगको जीतकर मारडालेंगे तो वही अपने हाथसे मेरी चोटी खोलेंगे और नहीं तो जो मैं बीचहीमें मरगई तो यह चोटी अग्निमें भस्महोगी तो यह मेरी प्रतिज्ञा मिथ्याहो गई क्योंकि मानसवेगके जीतेही आपने मेरी चोटी खोली इससे मेरे चित्तमें बड़ा खेदहोताहै देखो वेगवती ने इसको अग्नि पर्व्वतपर फेंका तब भी यह नहीं मरा इससमय प्रभावती ने अपनी माया से आप को अलक्षित कर रक्खाहै नहीं तो शत्रुके सहायक लोग आपको देखकर अवश्य उपद्रव करते उसके वचन सुनके नरवाहनदत्त ने कहा कि हे प्रिये कुछकाल धैर्य्यधरो मैं विद्याओं को सीखकर इसदुष्टको बहुत शीघ्र मारूंगा यहकहके नरवाहनदत्त उसीके पास वहीं रहनेलगा तब प्रभावती ने अपनी विद्याके प्रभावसे स्वयं अलक्षितहोके नरवाहनदत्तका अपनासा स्वरूप करदिया इससे किसी ने भी उसको नहीं पहचाना और यह अनुमान किया कि प्रभावती वेगवती की बड़ी सखीहै इसी से मदनमंचुका का सेवनकिया करतीहै इसके उपरान्त एकदिन मदनमंचुका ने प्रसंगसे नरवाहनदत्त से अपने विरहका यह वृत्तान्त कहा कि जिससमय मानसवेग अपनी मायासे मुझे हरलाकर अनेक प्रकारसे मुझे भ्रष्ट करनेको उद्यतहुआ उस समय भगवान् भैरवने प्रकटहोकर हुंकार करके मानसवेगसे कहा कि हे दुष्ट विद्याधरों के भावी चक्रवर्त्तीकी इस स्त्रीको तू क्यों भ्रष्टकरनाचाहताहै क्या तू मुझेनहीं जानताहै भैरवजीके इसप्रकार कहतेही वहपापी पृथ्वीमें गिरपड़ा और उसके मुखसे रुधिर बहनिकला तब भैरवजी अन्तर्द्धान होगये और मानसवेग थोड़ी देर में सावधानहोकर अपने मंदिर में चलागया तदनन्तर अन्तःपुरकी चेरियों ने मुझे अत्यन्त व्याकुल देखके मुझसे कहा कि पूर्व्वसमयमें यह मानसवेग किसी रूपवती मुनिकन्याको देखकर हरना चाहताथा इससे उसके भाइयोंने इसे यह शापदिया कि हेपापी जो तू किसी परस्त्री के साथ हठपूर्व्वक संभोगकरेगा तो तेरे शिरके सौटुकड़े होजायंगे इससे यह तुम्हारेसाथ बलात्कार नहीं करेगा तुम भयमतकरो चेरियोंके इसप्रकारकहतेही मानसवेगकी बहिन वेगवती मुझे समझानेकोआई और मुझे देखकर कृपाकरके जैसे आपको बुलानेकोगई वह सब आपको विदितहीहै वेगवतीके चलेजानेपर मानसवेगकी मातापृथ्वीनेआकर मुझसे स्नेहपूर्व्वककहा किहे पुत्री

तुम भोजनछोड़कर प्राण क्योंदिये देतीहो शत्रुकाअन्न मैं कैसेखाऊं यह सन्देहमतकरो क्योंकि इसराज्यमें मेरीपुत्री वेगवतीकाभी भागहै और उसके साथ तुम्हारे पतिने विवाहकर लियाहै तो जो धनवेगवतीकाहै वह तुम्हारे पतिकाहै और जो तुम्हारे पतिकाहै सो तुम्हाराहै इससे भोजनकरो भोजनकरने में कोई दोष नहीं है यह कहके उसने शपथ दिलाकर मुझे भोजन करवाया तदनन्तर वेगवती आप को लेकर यहां आई और आपकी रक्षाकरके उसने अपने भाईको जीता फिर उसका क्या वृत्तान्तहुआ वह मैं नहीं जानती तदनन्तर प्रभावतीके प्रभावसे इस संकटमें आप मुझे मिले अब मुझे यह चिन्ता है कि जो प्रभावती यहांसे चली जायगी तो तुम्हारा यहरूपभी नष्टहोजायगा तब न जाने कैसी दशा होगी उसके यह वचन सुनकर नरवाहनदत्त उसे समझाकर वहीं रहनेलगा एकसमय प्रभावती अपने पिताके स्थानको चलीगई इससे नरवाहनदत्त को निजस्वरूपमें देखकर सेवकोंने मानसवेग से जाकर कहा कि कोई परस्त्रीलंपट पुरुष यहां आगयाहै यह सुनकर मानसवेगने सेनासमेत आ के नरवाहनदत्तको घेरलिया तब उसकी माता पृथ्वीने आकर उससे कहा कि हे पुत्र इसको मारना नहीं यहमहाराज उदयनका पुत्र नरवाहनदत्त है और अपनी स्त्रीके पास आया है इसमें इसका क्या अपराधहै मैं अपनी विद्याके बलसे जानतीहूं कि यह मेरा जामाताहोचुका इससे यह तुम्हारा पूज्यहै अपनी माता के यह वचन सुनकर मानसवेगने कहा कि अब तो यह मेरा शत्रुहोगया यह सुनके उसने फिर कहा कि हे पुत्र यह विद्याधरोंका लोकहै इसमें अधर्म नहीं चलसक्ता इससे विद्याधरोंकी जो सभाहै उसमें उसे लेजाकर सभापतिके आगे तुम इसे दोषीठहराओ वहां से जो कुछ निर्णयहोगा वही ठीकहै और जो ऐसानकरोगे तो सम्पूर्ण विद्याधर तुम पर रुष्टहोंगे और देवतालोग तुमको शापदेंगे माताके यह वचन सुनके मानसवेगने नरवाहनदत्तको बांधके सभामें लेजानाचाहा इससे नरवाहनदत्तने कुपितहोके एक खंभउपाड़के उसीके प्रहार से उसके बहुतसे सेवक मारडाले और उन्हींमें से किसीका खड्गलेकर बहुतोंके शिर काटडाले तब मानसवेग उसे अपनी विद्याके बलसे बांधकर मदनमंचुका समेत सभामें लेगया वहां नगाड़ोंके शब्दको सुनकर सम्पूर्णसभ्य विद्याधरआये और सभापति राजा वायुपथभी आकर रत्नके सिंहासन पर बैठा उसके आगे मानसवेगने नरवाहनदत्तकी ओर दृष्टिकरके कहा कि इस ने मनुष्यहोकर भी मेरी बहिनको भ्रष्टकिया और यह हम लोगोंका चक्रवर्तीहोना चाहताहै और हमारे अन्तःपुर में अकेलाही चलाआया है इससे इस शत्रुको मारडालना चाहिये उसके यह वचन सुनके सभापतिने नरवाहनदत्तसे कहा कि तुम इसका कुछ उत्तरदेना चाहतेहो यह सुनकर नरवाहनदत्त ने कहा कि (सासभायत्रसभ्योऽस्तिससभ्योधर्ममाहयः। सधर्मोयत्रसत्यंस्यात्तत्सत्यंयत्रनच्छलम्) जहां सभ्यहोंय वह सभा कहलाती है और जो धर्मवादी होंय वह सभ्य कहलाते हैं और वही धर्म है जिसमें सत्यहोय और वही सत्यहै जिसमें छल न होय देखो मैं तो मायासे बंधाहुआहूं और पृथ्वीपर खड़ा हुआहूं परन्तु यह खुलाहुआहै और आसनपर बैठाहै इससे हमारा और इस का क्या विवादहै नरवाहनदत्तके यह वचन सुनकर वायुपथने मानसवेगकोभी पृथ्वीपर खड़ा करवादिया और नरवाह-

नदत्तके बंधन छुड़वादिये तब नरवाहनदत्तने सम्पूर्ण सभ्योंके आगे कहा कि यह मेरी इसमदनमंचुका स्त्रीको यहां हरलायाथा मैं जो अपनी स्त्रीके पास आया इसमें क्यादोषहै और इसकी बहिनने मेरी स्त्रीका रूप बनाकर मुझे अपना पति बनाया इसमें मेरा क्या अपराधहै और जो इसने कहाहै कि यह विद्याधरों का चक्रवर्ती होना चाहताहै इसमेंभी कोई दोष नहीं है क्योंकि किसकी अभिलाषा किसपर नहींहोती नरवाहनदत्त के यह वचन सुनके राजा वायुपथने विचारके मानसवेगसे कहा कि यह बहुत धर्मानुकूल वचन कहरहाहै इससे तुम इसके साथकोई अधर्मका व्यवहार न करना उसके यहवचन सुनकरभी मानस वेग अधर्मसे नहीं निवृत्तहुआ और सेना लेकर उससे लड़नेको उद्यतहुआ इससे वह राजा वायुपथभी धर्मके अनुरोधसे अपनी सेनालेकर मानसवेगसे लड़नेको उद्यतहुआ ठीकहै(धर्मासनोपविष्टाहिदुर्बलंब-लिनंपरं।आत्मीयंवत्जानन्तिधीरान्यायैकदर्शिनः)धर्मासनपर बैठेहुए न्यायदर्शी धीरलोग दुर्बलकोबल वान् और परको आत्मीय जानते हैं उससमय नरवाहनदत्तने मानसवेगसे कहा कि तू मायाको छोड़ कर मुझसे युद्धकर तब मैं अपना पुरुषार्थ दिखाऊं एकही प्रहारसे मैं तेरे प्राणलेलूंगा इसप्रकारपरस्पर कलहहोनेपर सभाका एक खंभा तड़ाक से फटगया उस मे से महाभयंकर स्वरूपधारी भैरवजी निकले और मानसवेगसे बोले कि हेमूर्ख तू विद्याधरोंके भावीचक्रवर्त्ती का पराभवनहीं करसक्ता है भैरवजी के यह वचन सुनके मानसवेग अधोमुख होगया और वायुपथ बहुत प्रसन्नहुआ तब भैरवजी नरवाहनदत्त को लेकर ऋष्यमूक पर्वतपर चलेगये और वहां उसे छोड़कर अन्तर्द्धानहोगये भैरवजीके चलेजानेपर सभामें सब विद्याधर क्रोधरहित होगये वायुपथ अपने संपूर्ण सभ्योंको लेकर चलागया और मानसवे-ग हर्ष तथा दुःखसे व्याकुल मदनमंचुकाको लेकर अपने आषाढ़पुरको चलाआया १८६ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांपंचलंबकेद्वितीयस्तरंगः २ ॥

इसके उपरान्त ऋष्यमूकपर्व्वतपर नरवाहनदत्तसे प्रभावती नेआकरकहा कि सभामें आपके साथ मानसवेगको उपद्रव करते देखकर मैं अपनी विद्याके प्रभावसे भैरवजीका रूपधरके उसको डाटकर आपको यहां लेआई इसपर्व्वतपर बड़े २ विद्याधरोंकी भी विद्याका प्रभाव नहीं चलता क्योंकि यह सिद्धक्षेत्रहै इसीसे मेरी विद्याका भी यहां प्रभाव नहीं चलता इससे मुझको बड़ा शोच होताहै कि यहां आप वनके फलोंको खाकर कैसे अपना निर्वाह करोगे उसके वचन सुनके भी नरवाहनदत्त उस क्लेश के समयको व्यतीत करनेके लिये वहीं रहा और वनवासियों से मिलकर श्रीरामचन्द्रजी के क्रीड़ाके स्थानोंको देखनेलगा उन स्थानोंको देख २ कर प्रभावती उसके चित्तको बहलानेके लिये रामायणके वृत्तान्त कहतीथी जैसे देखो हेआर्यपुत्र यहीं श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मण तथा सीताके सहित रहे थे यहीं वालिने दुन्दुभि दैत्यको माराथा इसीसे वालि और सुग्रीवका वैरहुआथा सुग्रीवने भ्रमसे यह जानाथा कि उसदैत्यने वालिको मारडाला इसीसे वह उसगुफाको पर्व्वतों से बन्दकरके अपने घरको चलाआया जब वालि उस दैत्यको मारकर गुहाके द्वारपर से शिलाओंको हटाकर अपने घरमें आया तो सुग्रीवको अपना वैरी जानकर राज्यसे निकालदिया इससे वह भागकर हनुमान् आदिक मंत्रियों सहित इस

शिखरपर रहा यहां सीताजीको ढूंढ़ते आयेहुए श्रीरामचन्द्रजी से उसकी मित्रता होगई इससे रामचन्द्रजीने वालि को मारकर यहांका राज्य सुग्रीवको दिया और सुग्रीवने सीताजी के ढूंढ़ने को हनुमान् आदिक दूतभेजे उनके द्वारा सीताजी के समाचारको पाकर समुद्रमें सेतुबांधके श्रीरामचन्द्रजी सीताजीको लेआये हे आर्यपुत्र तुमभी इसीप्रकार आपत्तियों से छूटजाओगे इसप्रकार कहतीहुई प्रभावती के साथ नरवाहनदत्त क्रीड़ाकरताहुआ वहींरहा एकसमय पंपासरोवरके तटपर होमकरतेहुए नरवाहनदत्तके पास धनवती अजिनवतीको साथ लेकरआई (यह वही दोनों हैं जिन्होंने नरवाहनदत्तको श्रावस्ती पुरी में पहुंचायाथा) अजिनवती तो प्रभावती से वार्त्तालाप करनेलगी और धनवतीने नरवाहनदत्तसे कहा कि मैंने पहले अजिनवतीका विवाह तुम्हारे साथ करनेको कहाथा अब तुम इसके साथ विवाह करलो क्योंकि अब तुम्हारे उदयका समय निकट आगयाहै धनवतीके यह वचन नरवाहनदत्तने और प्रभावती दोनोंने स्वीकारकरलिये तब धनवतीने उसके साथ अजिनवतीका विवाहकरके वह दिन उत्सवसे व्यतीतकिया और दूसरे दिन उससे कहा कि हे पुत्र तुमको बहुत कालतक ऐसे वैसे स्थानोंमें न रहना चाहिये क्योंकि विद्याधरलोग बड़े मायावीहोते हैं इससे तुम अजिनवती और प्रभावतीको लेकर अपनी कौशाम्बीपुरी को जाओ मैं अपने पुत्र चण्डसिंह तथा अन्य विद्याधरों के राजाओंको साथ लेकर वहीं आऊंगी यह कहके धनवती आकाशको चलीगई और प्रभावती तथा अजिनवती यह दोनों नरवाहनदत्तको लेके आकाशमार्ग से कौशाम्बीपुरी को आई वहां उपवनमें नरवाहनदत्त उनदोनों के साथ आकाश से उतरा उद्यानपालों ने उसे देखकर जाके राजा उदयन्से उसके आनेका वृत्तान्त कहा उसके आगमनको सुनकर महाराज उदयन् वासवदत्ता पद्मावती तथा यौगन्धरायणादिक मंत्रियों समेत उसके पासगया और नरवाहनदत्तके गोमुखादि मंत्री भी उसकीरत्नप्रभाआदि रानियों समेत वहींगये नरवाहनदत्त इन सब से यथायोग्य मिला और बड़ा उत्सव वहां होनेलगा इतने में मानसवेगकी बहिन वेगवती विद्याधरी भी वहां आई और सास श्वशुरको प्रणाम करके अपने पति नरवाहनदत्तसे बोली कि मैं अपनी विद्याओं को तपसे पुष्टकरके फिर आपके पास आगई नरवाहनदत्तसे यह कहके वह अपनी प्यारीसखी प्रभावती और अजिनावती से जाकर मिली उन दोनोंने मिलकर उसे अपने पास बैठाया इतनेमें अजिनावतीकी माता धनवती आई उसके साथ में बहुतसे विद्याधर अपनी २ सेनालेकर आये उसका पुत्र चंडसिंह उसीका भाई अमितगति प्रभावतीका पिता पिंगलगान्धार सभापति वायुपथ रत्नप्रभाका पिता हेमप्रभ उसका पुत्र वज्रप्रभ गन्धर्वदत्ताका पिता गन्धर्वराज सागरदत्त तथा चित्रांगद इत्यादि बहुतसे लोग धनवती के साथ आये इन सब को महाराज उदयन्ने आदर पूर्वक यथा योग्य आसनोंपर बैठाया उससमय पिंगल गान्धारने नरवाहनदत्तसे कहा कि तुम देवताओंकी आज्ञासे हम सबके चक्रवर्त्तीहोगे इससे हम सब लोग स्नेहसे तुम को देखनेको आये हैं यह धनवती तुम्हारी सास बड़ी ज्ञानवती है और यह सदैव तुम्हारी रक्षाका उद्योग किया करतीहै इससे तुम्हारे कार्य्य सिद्धहोनेमें कोई सन्देह नहीं है अब मैं जो कहताहूं सो तुम सुनो

हिमाचलपर विद्याधरोंके दो वेद्यर्ध हैं एक उत्तर दूसरा दक्षिण कैलाशके इस ओर उत्तर वेद्यर्धहै और उस ओर दक्षिण वेद्यर्धहै इनमें से उत्तर वेद्यर्धकी प्राप्तिकेलिये अमितगति ने घोरतपकरके श्रीशिवजी को प्रसन्नकिया है इससे श्रीशिवजीने प्रसन्नहोकर इससे कहाहै कि तुम सबका जो नरवाहनदत्त चक्रवर्त्तीहोगा वही तुम्हारे मनोरथोंको पूर्णकरेगा उस वेद्यर्धमें मन्दरदेवनाम बड़ा दुष्ट मुख्य राजाहै यद्यपि वह बड़ा बलवान् है तथापि आप विद्याओं को पाकर उसे जीतलीजियेगा परन्तु दक्षिण वेद्यर्धमें जो गौरिमुण्ड नाम मुख्यराजा है वह विद्याओं के प्रभावसे बड़ा दुर्जय है और आपके शत्रु मानसवेगका परममित्रहै जब तक आप उसे न जीतयेगा तबतक कोई कार्य सिद्ध न होगा इससे अब आप शीघ्रही विद्याओंको सिद्ध कीजिये पिंगलगान्धार के इसप्रकार कहनेपर धनवती ने कहा कि हे पुत्र यह राजा बहुत यथार्थ कहरहाहै इससे सिद्ध क्षेत्रमें जाकर तुम विद्याओंकी सिद्धिकेलिये श्रीशिवजीको प्रसन्न करो क्योंकि उनकी कृपाके विना कोई कार्य्य सिद्धनहीं होसक्ताहै वहां यह सम्पूर्ण राजालोग तुम्हारी रक्षाकरेंगे उनके यह वचन सुनकर चित्रांगदने कहा कि बहुत ठीकहै चलिये सबसे पहले मैंही आपके साथचलताहूं उनसबके वचनोंपर निश्चयकरके नरवाहनदत्त अपने माता पिताकी आज्ञालेकर अपनी सम्पूर्ण रानी तथा मंत्रियों समेत उनके साथ उन्हींकी विद्याओं के प्रभावसे आकाशमार्ग होकर चला क्षणमात्रमेंही वह सब उसेलेकर सिद्धक्षेत्रमें पहुंचगये वहां सिद्धों से नियमकी विधि पूछकर श्रीशिवजीको प्रसन्न करनेके लिये नरवाहनदत्त घोरतपकरनेलगा और वह सम्पूर्ण राजालोग उसे घेरकर रात्रि दिन उसीकी रक्षाकरनेलगे तपकरतेहुए नरवाहनदत्तको देखकर बहुतसी विद्याधरी उसपर आसक्तहुईं पांच क्वांरी विद्याधरियों ने उसे देखकर परस्पर कहा कि जब यहतपकर चुकेगा तब हम पांचों एकसाथही इसके साथ विवाहकरेंगी जो हममेंसे कोई भी अलग अपना विवाहकरलेगी तो चारों अग्निमें भस्म होजायँगी इसप्रकार दिव्य कन्याओं के मोहितहोनेपर उसतपोवनमें अकस्मात् घोर उत्पातहोने लगा बड़े २ वृक्षोंको उखाड़तीहुई घोर वायु चलनेलगी वह मानो यह सूचन करतीथी कि इसीप्रकार युद्धमें शूर लोग गिरेंगे हाय यहां क्याहोगा इसभयसे मानों पृथ्वी कांपनेलगी मानो भयभीतोंको अवकाश देनेके लिये पर्व्वतोंके शिखर फटगये और मेघोंके विनाही आकाशमें घोरशब्द होनेलगा इसउत्पात में नरवाहनदत्त निर्भयहोकर श्रीशिवजीका ध्यानकरतारहा और गन्धर्वराज तथा सम्पूर्ण विद्याधरों के राजा शत्रुओंका आगमन जानके शस्त्र बांध २ कर युद्धके लिये उद्यतहुए दूसरे दिन अकस्मात् आकाश में विद्याधरों की बड़ी भयंकर सेना आगई तब धनवती ने कहा कि देखो मानसवेगके साथ दक्षिण वेदीका राजा गौरिमुण्ड आगया उसके इसप्रकार कहतेही मानसवेग तथा गौरिमुण्ड दोनों उनसबसे आके क्रोधकरके बोले कि कहां तो यहमनुष्य और कहां हमतुमने हमें छोड़कर इसमनुष्यका पक्षपात कियाहै इससे हमतुम्हारे अभिमानको अभी दूरकरेदेते हैं उनके यहवचन सुनकर यहसम्पूर्णवीर दौड़कर उनसे युद्धकरनेलगे धूलरूपी मेघ आकाशमें छागये शस्त्रोंकी दीप्तिरूपी बिजली चमकनेलगी और रुधिररूपी जल बरसनेलगा योद्धालोग शत्रुओंके शिरकाट२कर मानों रणकी लक्ष्मीको बलिदेने

लगे कवन्धरूपी ग्राह शस्त्ररूपी सर्प तथा मेदारूपी फेनावाली, रुधिरकी नदी वहनेलगी युद्धहोते२ गौरिमुण्डकी सम्पूर्ण सेना मारीगई तब उसने अपनी गौरी विद्याका स्मरणकिया उस विद्याने प्रकटहोकर नरवाहनदत्तके पक्षवाले सम्पूर्णवीरोंको मोहित करदिया तब गौरिमुंड नरवाहनदत्तसे जाकर बाहुयुद्ध करनेलगा नरवाहनदत्तने उसे युद्धविद्यामें जीतलिया हारकर उसने फिर अपनी उसी विद्याका स्मरण किया और उसके बलसे नरवाहनदत्तको आकाशमें उठालेजाकर धनवतीकी विद्याके प्रभावसे उसके मारनेमें असमर्थहोकर उसे अग्नि पर्वतपर फेंकदिया और मानसवेगने उसके गोमुख आदि मंत्रियोंको पकड़कर आकाशमें लेजाकर बहुत ऊंचेसे पृथ्वीपर डालदिया धनवतीकी विद्याने उनकोभी बीचहीमें रोककर अलग२ स्थानों में रखदिया और उनसे कहदिया कि घबरानानहीं तुम्हारास्वामी तुमको शीघ्रही मिलजायगा, तब अपनी विजय जानकर मानसवेग तथा गौरिमुण्ड दोनों अपनी२ सेना समेत अपने२ स्थानोंको गये उनके चलेजानेपर धनवती ने मोह रहितहुए सम्पूर्ण विद्याधर तथा गन्धर्वराजो से कहा कि तुमलोग अपने २ स्थानको जाओ नरवाहनदत्त कार्य्य सिद्धकरके तुमलोगों के पास आवेगा उसका कुछ अनिष्ट न होगा धनवतीके यह वचनसुनकर वह सबलोग अपने २ स्थानको चलेगये और वह अपनी पुत्री आदि नरवाहनदत्त की सब रानियों समेत अपने स्थानकोगई मानसवेग ने अपने स्थानपर जाकर मदनमंचुकासे कहा कि तुम्हारा पतिमारागया अब तुम मुझे स्वीकार करो यह सुनकर मदनमंचुकाने कहा कि तुम उसको क्यामारोगे उसपर देवताओंकी कृपाहै इससे वही तुम को मारेगा इस बीचमें जब नरवाहनदत्तको गौरिमुंडने अग्नि पर्व्वतपर फेंका तो बीचही में कोई पुरुष उसे रोककर श्रीगंगाजी के तटपरलेगया वहां नरवाहनदत्तने उससे पूछा कि आप कौनहैं उसने कहा कि मैं विद्याधरोंका राजा अमृतप्रभहूं इससमय श्रीशिवजीने तुम्हारी रक्षाकेलिये मुझको भेजाथा देखो आगे यह कैलाश पर्व्वत है यहां तुम शिवजीकी आराधना करके सम्पूर्ण सिद्धियोंको पाओगे इससे चलो मैं तुमको कैलाशपर पहुंचादूं यह कहके वह उसे कैलाशपर पहुंचाके अन्तर्द्धान होगया नरवाहनदत्तने कैलाशपर पहुंचके पहले तपकरके श्रीगणेशजीको प्रसन्नकिया गणेशजीने प्रसन्नहोके उसे श्री शिवजीके स्थानके निकटजानेकी आज्ञादी उनकीआज्ञापाके उसनेशिवजीके द्वारपरजाके द्वारपर नन्दी को खड़ादेखकर उसकी प्रदक्षिणाकी उसे प्रदक्षिणाकरते देखकर नन्दीने उससे कहा कि अबतुम्हारे सब विघ्न शान्तहोगये अब तुमयहीं शिवजीके प्रसन्नकरनेको तपकरो क्योंकि पापनाशक तपके विनाकोई सिद्धि नहीं प्राप्तहोती नंदी के यह वचनसुनकर नरवाहनदत्त श्रीशिवजी तथा पार्व्वतीजी का ध्यान करके वायुभक्षी होकर तप करनेलगा कुछकाल तपकरने से प्रसन्नहुए शिवजी पार्वती समेत प्रकट होकर उससे बोले कि हेपुत्र तुम सम्पूर्ण विद्याधरों के चक्रवर्त्ती हो सबसे अधिक सम्पूर्ण विद्या तुमको प्राप्तहोयँ हमारे प्रभावसे तुम सब शत्रुओंको जीतोगे शस्त्रोंके लगनेसे तुम्हारा शरीर छिन्न भिन्न न होगा तुम्हारे आगे तुम्हारे शत्रुओं की सब विद्या नष्टहोजायँगी और गौरी विद्याभी तुमको प्राप्तहोगी इस प्रकार वरदेके श्री शिवजीने ब्रह्माजीका बनायाहुआ चक्रवर्त्तियों का महापद्म विमान उसको दिया तब

सम्पूर्ण विद्या उसके आगे प्रकटहोकर बोलीं कि क्या आज्ञा है इसप्रकार सम्पूर्ण विद्याओं को पाकर नरवाहनदत्त श्री शिवजी तथा पार्वतीजी को प्रणाम करके उनसे आज्ञालेके विमानपर चढ़के प्रथम चक्रपुरमें अमित गतिके यहां आया अमित गतिने उसे आतेदेखकर आगेजाके उसे अपने घरमें लाकर बड़ा सत्कारकिया और सम्पूर्ण सिद्धियों का वृत्तान्त उससे पूछकर अपनी सुलोचना नाम कन्या का विवाह उसके साथ करदिया विद्याधरोंकी द्वितीय लक्ष्मीके समान उस सुलोचनाको पाकर नरवाहनदत्त बड़े उत्सवसे उसदिन वहां रहा १३६ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांपंचलम्बकेतृतीयस्तरङ्गः३॥

इसके उपरान्त चक्रपुरमेंस्थित नरवाहनदत्तके पास दूसरेदिन सभामें एकपुरुष आकाशसे उतरकर प्रणामकरके बोला कि हे स्वामी पौररुचिनाम मैं चक्रवर्त्तियों का सदैव से प्रतीहार हूं इससे आपकी सेवा के निमित्त आयाहूं यह कहके उसने अमितगतिकी ओर देखा अमितगतिने कहा कि यह बहुत यथार्थ वचन कहताहै तब नरवाहनदत्त ने उसे अपना प्रतीहार बनालिया तदनन्तर अपनी २ विद्याओं के प्रभावसे नरवाहनदत्त के वृत्तान्तको जानकर नरवाहनदत्तकी सम्पूर्ण स्त्रियों समेत धनवती उसका पुत्र चंडसिंह राजा पिंगल गान्धार सभापति वायुपथ, हेमप्रभ, चित्रांगद तथा गन्धर्वराज सागरदत्त इत्यादिक बहुत से लोगआये नरवाहनदत्त ने सबको आदर पूर्वक बैठाया और धनवती को प्रणाम किया और उससे आशीर्वादलेके तथा अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहके पूंछा कि मेरे सम्पूर्ण मंत्री कहां हैं उसने कहा कि मैंने अपनी विद्याके प्रभावसे उनको अलग २ रखदिया है यहकहके उसने विद्याके द्वारा उनसबको वहीं बुलवालिया आकर प्रणाम करतेहुए उनसबसे कुशल पूछकर तथा अपनी सिद्धि का वृत्तान्त कहके नरवाहनदत्तने उनसे पूंछा कि इतने दिन तुमसब कहां २ रहे यहसब वृत्तान्त मुझसे कहो उसके वचन सुनकर पहले गोमुखनेकहा कि जब मानसवेगने मुझको आकाशसे फेंका तो कोई देवी मुझे अपने हाथोंपर रोककर एक वनमें छोड़कर अन्तर्द्धानहोगई वहां आपके वियोगसे दुखित होकर मैंने एकऊंचेस्थानसे गिरकर अपने प्राणदेने चाहे इतने में एकतपस्वीने आकर मुझसेकहा कि हे गोमुख तुम्हारा स्वामी सिद्धिको प्राप्तहोकर फिर तुमको मिलेगा उसके यह वचन सुनके मैंने उससे पूंछा कि तुम कौनहो और मुझे तुमने कैसेजानाहै उसने कहा कि मेरे आश्रममें चलो तो मैं तुमसे सबवृत्तान्त कहूंगा यहकहके उसने मुझे अपने आश्रममें लेजाकर अतिथि सत्कार करके अपनी यह कथा कही २० कि मैं कुंडिनपुरका रहनेवाला नागस्वामी नाम ब्राह्मण हूं पिताके मरजानेपर मैं अपने देशसे पाटलिपुत्र नगरमें जाकर जयदत्तनाम उपाध्यायके यहां विद्याध्ययन करनेलगा मेरी ऐसीजड़ बुद्धिथी कि एक अक्षरभी मुझे समझ नहीं पड़ता था इससे सम्पूर्ण विद्यार्थी मुझे देखकर हंसाकरते थे इस उपहासको न सहकर मैं विन्ध्यवासिनी के दर्शन को चला मार्ग में वक्रोलकनाम पुरमें पहुंचकर भिक्षामांगनेलगा एकघरसे एकस्त्रीने निकलकर मुझे एकलालकमल सहित भिक्षादी उसे लेकर मैं दूसरेघर मांगनेगया वहां दूसरी स्त्रीने वह कमल देखकर मुझसे कहा कि तुमको योगिनी स्त्री ने

फांसलिया यह लालकमल नहीं है मनुष्य का हाथ है उसके वचन सुनकर जो मैंने देखा तो वह ठीक ठीक हाथही था उसे फेंककर उस स्त्रीके पैरोंपर गिरकर मैंने कहा कि हेमाता ऐसा उपाय बताओ जिससे मेरे प्राणबचें यह सुनकर उसने कहा कि यहां से तीन योजनपर करभकनाम ग्राममें देवरक्षितनाम ब्राह्मण रहता है उसके पास एक कपिला गौ है वह गौ आजकी रात्रि तुम्हारी रक्षाकरेगी उसकेवचन सुन के मैं भयभीतहोकर दौड़ते २ करभक ग्राममें भयभीत होकर देवरक्षित ब्राह्मणके यहां पहुंचा वहां उस कपिलागौ को देखकर मैंने यह विज्ञापनाकरी कि हे भगवती मैं भयभीत होकर तुम्हारी शरणमें आयाहूं मेरी रक्षाकरो इतनेमें वह योगिनी बहुतसी योगिनियोंको साथ लेकर वहीं आगई यह देखकर उस कपिलाने मुझे अपने खुरों के बीच में छिपाकर योगिनियों से युद्ध करके रात्रिभर मेरी रक्षा की प्रातःकाल योगिनियों के चलेजानेपर उस कपिलाने मुझसे कहा कि हे पुत्र आज मैं तुम्हारी रक्षा नहीं करसकूंगी यहां से पांचयोजनपर वनमें शिवालय में भूति-शिवनाम एक ज्ञानी पाशुपति रहता है उसकी शरण में जाओ वह आजकी रात्रि तुम्हारी रक्षाकरेगा कपिला के यह वचन सुनकर मैं उसी दिन पांच योजन पृथ्वी चल के भूति शिव के पास पहुंचा रात्रि के समय वहां भी योगिनी आईं मुझे शिवालय में बन्द करके रात्रिभर भूति शिवने योगिनियोंसे मेरी रक्षाकी प्रातःकाल जब सब योगिनी चलीगईं तब उसने मुझसे कहा कि हे ब्राह्मण आज मैं तुम्हारी रक्षा न करसकूंगा इससे यहां से दश योजनपर संध्यावास ग्राम में वसुमति नाम एक ब्राह्मण रहताहै उसकी शरणमेंजाओ आजकी रात्रि वह तुम्हारी रक्षा करेगा जो आज रात्रिको भी तुम बचगये तो योगिनी तुम्हारा कुछ नहीं करसकेंगी उसके यह वचन सुनकर मैं वहांसे भी चला उसग्रामके बहुत दूर होनेके कारण मार्गमें ही सूर्य्यास्त होगया इससे योगिनियां आकर मुझे उठाकर आकाशमें लेचलीं कुछ दूर चलकर अन्य बहुतसी योगिनियां उनको मिलीं न जाने किस कारण से उन दोनों दलोंका परस्पर युद्धहोनेलगा इससे मैं उनके हाथसे छूटकर एक निर्जन स्थानमें गिरपड़ा वहांपर एक बड़ाभारी मंदिरथा मैं दौड़कर उसी मंदिरमें घुसगया उस मन्दिरमें सौ सखियों समेत एक बड़ी सुन्दर स्त्री रहतीथी क्षणभरमें सावधान होकर मैंने उससे पूछा कि हे सुमुखी तुम कौनहो उसने कहा कि मैं सुमित्रानाम यक्षिणीहूं शापके कारण यहां रहतीहूं जब मैं मनुष्य से संगकरूंगी तब शापका अन्त होगा तुम अकस्मात यहां आगयेहो इससे निर्भय होकर मेरे साथ रमणकरो यह कहके उसने अपनी सखियों से मुझे स्नान पूर्वक भोजन कराके मेरे साथ संभोगकिया तदनन्तर कई दिनतक मैं उसीके साथ वहीं रहा एकदिन उसने मुझसे कहा कि हे ब्राह्मण अब मेरा शाप क्षीणहोगयाहै सो अब मैं जातीहूं मेरी कृपासे तुम्हें दिव्य ज्ञान प्राप्त होगा और तुम तपस्वी हो के यहीं रहना यहां तुम को सब सुख प्राप्तहोंगे तुम इस गृहके मध्यम खंड में कभी न जाना यह कहके वह अन्तर्द्धान होगई और मैं कौतुक से उस घरके मध्यम खंडमेंगया वहां एक घोड़ेने मेरे एक ऐसी लातमारी कि मैं क्षणभरही में वहां से गिरकर इस मंदिर में आगया तबसे मैं यहीं रहता हूं उस यक्षिणी की कृपा से मुझे त्रिकाल ज्ञानहोगया इसी प्रकार से

सबको बड़े २ क्लेशोंसे सिद्धियां प्राप्त होती हैं इससे तुम यहींरहो तुम्हारे मनोरथकोभी श्रीशिवजी पूर्ण करेंगे उसके वचन स्वीकार करके मैं इतने दिन वहीरहा आज कोई दिव्य स्त्री वहांसे मुझे आपके पास लेआई है यही मेरा वृत्तान्त है यह कहके गोमुखके निवृत्तहोजाने पर मरुभूतिने कहा कि जब मानस वेगने मुझको आकाश से फेंका तो एक देवी मुझे अपने हाथों पर रोकके एकवनमें छोड़कर आप अन्तर्द्धान होगई वहां बहुत दुखितहोके मरनेकी इच्छासे मैंने भ्रमण करते २ नदी के तटपर एक आश्रमदेखा उस आश्रममें एक जटाधारी तपस्वी शिलापर बैठाथा उसने मुझसे पूछा कि तुम कौनहो और यहां कैसे आयेहो उसके वचन सुनके मैंने अपना सब वृत्तान्त कहदिया तब उसने ध्यानकरके मुझसे कहा कि तुम अभी आत्मघात न करो यहीं तुमको नरवाहनदत्तका सब वृत्तान्त मालूमहोजायगा उसके यह वचन सुनकर मैं आपका वृत्तान्त सुननेको वहां ठहरगया इतनेमें कुछ दिव्य स्त्रियां नदीमें स्नानकरने को आईं और किनारेपर वस्त्ररखकर स्नानकरने लगीं तब उसतपस्वीने मुझसे कहा कि तुम जाकर किसी स्त्रीका कोई वस्त्रलेआओ उससे तुम्हें अपने स्वामी का वृत्तान्त मालूमहोजायगा उसके वचन सुनके मैं एक स्त्रीके वस्त्र उठालाया तब स्नानकरके वह स्त्री गीलेवस्त्र पहनेहुए मेरे पास वस्त्र मांगनेको आई उससे तपस्वीने कहा कि तुम पहले नरवाहनदत्तका वृत्तान्त बतादोगी तब तुम्हारे वस्त्र मिलेंगे उसने कहा कि इससमय नरवाहनदत्त कैलाशमें श्रीशिवजीकी आराधना कररहाहै थोड़ेकालमें वह विद्याधरों का चक्रवर्त्ती होजायगा यह कहके वह शापके वशसे उसी तपस्वी की स्त्री होगई इससे वह तपस्वी सुख पूर्व्वक उसके साथ रहनेलगा और मैं भी आपके मिलनेकी आशासे वहींरहा कुछ दिनमें वह स्त्री गर्भवती होगई और समय पाकर पुत्र उत्पन्नकरके तपस्वीसे बोली कि तुम्हारे संग से मेरा शाप निवृत्तहोगया अब मैं अपने स्थानको जातीहूं जो तुमको फिर मेरे मिलनेकी इच्छाहोय तो इस पुत्रको चावलों के साथ पकाकरखाओ तो मुझे पाओगे यह कहके उसके अन्तर्द्धान होजाने पर उस तपस्वी ने चावलों के साथ उसगर्भको पकाकर मुझसे कहा कि तुमभी इसेखाओ परन्तु मैंने घृणासे नहीं खाया तब वह तपस्वीचावलों समेत गर्भकोखाके सिद्धहोकर आकाशको चलागया उस सिद्धिको देखकर मैंने उस पात्रमें दोचावलके कणलगेथे उन्हें खालिया इससे जहां मैं थूकताथा वहां सुवर्ण होजाताथा इस सिद्धिको पाके मैं भ्रमणकरते २ एक पुरमें गया वहां एक वेश्याके यहां उसीसुवर्ण को खर्चकर२ के रहनेलगा वहां एककुट्टिनीने मेरी सिद्धिके जाननेकी इच्छासे मुझे छलकरके वमनकी औषधिखिलादी इससे वह दोनों चावल मेरेपेटसे निकलकर बाहरगिरपड़े और उस कुट्टिनीने उठाकर खालिये इससे मेरी सिद्धि उसेमिलगई तब मैंने शोचा कि श्रीविष्णु भगवान्के पास जो अभीतक कौस्तुभमणिहै इसका कारणयही है कि उन्हें अभीतक कोईकुट्टिनी नहीं मिली हा धिक् इससंसारमें कैसे२ छली जीवहैं यह शोचकर मैं आपकी प्राप्तिके लिये तपसे भगवती को प्रसन्न करने के निमित्त निराहार होकर तीनदिन तक बैठारहा तीसरेदिन स्वप्नमें भगवतीने मुझसे कहा कि तुम्हारा स्वामी सिद्ध होगयाहै अब तुम्हें शीघ्रमिलैगा भगवतीके यह वचनसुनके प्रातःकाल मेरी निद्राखुलगई और कोई

देवी मुझे आपकेपास पहुंचागई मरुभूतिकी यह कथासुनकर नरवाहनदत्त अपने साथियों समेत बहुत हँसा तदनन्तर हरिशिखने कहा कि जब मुझे मानसवेगने आकाशसे फेंका तब एकदेवीने मुझे अपने हाथोंपर रोककर उज्जयिनी में लेकर छोड़दिया वहां मैंने आपके दुखसे दुखीहोके श्मशानमें जाकर चितालगाकर उसमें भस्महोना चाहा उससमय तालजंघ नाम भूतराजने आकर मुझसे कहा कि तुम क्यों प्राणदेतेहो तुम्हारा स्वामी जीताहै जब उसे सब सिद्धियां प्राप्तहोंगी तब तुमसे मिलैगा उसकेइन वचनोंपर विश्वासकरके मैं उज्जयिनी में जाकर श्री शिवजीकी आराधना करनेलगा आज कोई देवी मुझे आपके पास पहुंचागई है इसीप्रकार अन्य सबने भी अपना २ वृत्तान्तकहा तदनन्तर नरवाहन-दत्तने धनवती से अपने सम्पूर्ण मंत्रियोंको विद्या दिलवाई इससे वह सबभी विद्याधर होगये तब धन-वतीने नरवाहनदत्तसे कहा कि अबशुभमुहूर्त्त देखकर शत्रुओंको जीतो उसके वचनसुनकर नरवाहन-दत्तने अपने महापद्म विमानपर सम्पूर्ण विद्याधरों को सेनासमेत चढ़ाके और आपभी अपने मन्त्री तथा रानियों समेत बैठकर गौरिसुंडके गोविन्दकूट नाम पुरको प्रस्थान किया आधेमार्ग में धनवतीके मातंगपुर नाम नगरमें टिककर उसने वहीं से गौरिसुंड तथा मानसवेगके पास युद्ध करनेको दूतभेजा और दूसरे दिन वह अपनी स्त्रियोंको वहीं छोड़कर अपने मंत्री तथा सम्पूर्ण विद्याधरों समेत गोविन्द-कूटको गया वहां मानसवेग तथा गौरिसुंड अपनी २ सेना लेकर युद्ध करनेको आये और दोनोंसेना-ओंका परस्पर युद्ध होनेलगा बड़े २ शूर गिर २ कर मरनेलगे रुधिरकी नदियां बहने लगीं भूत तथा वेतालों के साथ कबन्ध नाचनेलगे वह युद्धभूमि रुधिरसे लिप्त खड्गरूपी जिह्वावाले यमराज के मुख के समान शोभितहुई इस प्रकार घोर युद्धसे बहुतसी सेनाके नष्टहोने पर मानसवेग आपही युद्ध करनेको आया नरवाहनदत्तने क्रोधकरके शीघ्रही खड्गकेद्वारा उसका शिर काटडाला उसे मरा देख-कर गौरिसुंड क्रोधकरके आया उसे भी नरवाहनदत्त ने पकड़कर घुमाके एक शिलापर पटकदिया और पटकतेही उसके प्राण निकलगये इसप्रकार उनदोनों के मरजाने पर उनकी सब सेना भाग खड़ी हुई और उनके पक्षपाती सब विद्याधरोंनें नरवाहनदत्तकी आज्ञामानली तब उसने अपने सम्पूर्ण परिकर समेत गौरिमुण्डकी राजधानी में जाकर बड़ा उत्सवकिया उत्सवहोने के पीछे धनवती ने उससे आकर कहा कि गौरिमुण्डके अत्यन्त रूपवती आत्मनिकानाम कन्याहै उसके साथ आप विवाह करलीजिये उसके यहवचन सुनके नरवाहनदत्तने उसकन्यासे विवाहकरके वह रात्रि उसीके साथ सुखपूर्वक व्यतीत की और दूसरे दिन प्रातःकाल वेगवती तथा प्रभावतीको भेजकर मदनमंचुकाको बुलवाया और उसे भी सम्पूर्ण विद्या सिखाकर उसे विद्याधरी बनाके उसके साथ सुखपूर्वक कुछ समय व्यतीत किया और प्रभावतीके द्वारा भगीरथयशाकोभी बुलवाकर उसेभी सब विद्या सिखलादीं इसके उपरान्त सभा में बैठेहुए नरवाहनदत्तसे दो विद्याधरों ने आकर कहा कि हे स्वामी हम दोनों धनवती की आज्ञा से उत्तर वेदार्ध में मन्दरदेवकी चेष्टाके जाननेके लिये गयेथे वहां हमने छिपकर सभामें बैठेहुए राजामंदर-देवको देखा वह अपने मंत्रियोंसे यह कहरहाथा कि नरवाहनदत्तने मानसवेग तथा गौरिमुण्डको जीत-

लिया इससे शीघ्रही चलकर उसे मारडालनाचाहिये नहीं तो बड़ी हानि होगी उसके यहवचन हम आपसे कहनेको आयेहैं उनदोनोंके यहवचन सुनके सम्पूर्ण सभासद बहुत कुपितहुए और अपनी२ भुजाओंकी ओर देखनेलगे तथा धनुषकेसमान सबकीभ्रकुटी टेढीहोगई परन्तु नरवाहनदत्त क्रोधयुक्त होकर भी विकार को नहीं प्राप्तहुआ ठीकहै (अक्षोभ्यतैवमहतां महत्त्वस्यहिलक्षणम्) क्षोभका न होनाही महात्माओं के महत्त्व का लक्षणहै तब नरवाहनदत्तने यह निश्चयकिया कि प्रथम चलकर चक्रवर्त्तियों के रत्न लेने चाहिये फिर मंदरदेवके जीतनेको जाना चाहिये यह निश्चयकरके वह अपने महापद्म विमानपर अपने सब परिकर समेत चढके गोविन्दकूटसेचला तो हिमाचलपर पहुंच के उसे एक दिव्य तड़ागदिखाई दिया तरंगरूपी हाथोंको हिला २ कर मानों वहतड़ाग उसे स्नान करने को बुला रहा था उससमय वायुपथने नरवाहनदत्तसेकहा कि आप इसमें स्नानकीजिये क्योंकि चक्रवर्त्तियों के सिवाय इसमे कोई स्नान नहीं करने पाताहै उसके वचन सुनके नरवाहनदत्त उसमे स्नान करने को उतरा उससमय यह आकाश वाणीहुई कि हे नरवाहनदत्त इसमें चक्रवर्त्तियों के सिवाय कोई स्नान नहीं करसक्ता है तू चक्रवर्त्ती है इससे इसमें स्नानकर इस आकाश वाणीको सुनके उसने अपनी रानियों समेत स्नान करके जलक्रीड़ाकी क्रीड़ा करने से कमल टूट २ कर तड़ाग में गिरपड़े मानों उसकी रानियों के मुखारविन्दों से हारकर लज्जा से जलमें डूबगये इसप्रकार क्रीड़ा करके तड़ागसे निकलकर उसदिन वह उसीतड़ागके तटपररहा और दूसरे दिन फिर उसी विमानपर चढ़के परिकर समेत चला चलते २ मार्गमें वायुपथके पुरमें पहुंचा वायुपथने बहुत आग्रहकरके उसे वहां टिकाया और बड़ा आदर सत्कार किया वहां उपवनमें वायुपथकी वायुयशानाम क्वारी बहिनको देखके नरवाहनदत्त उसपर आसक्तहोगया और वह वायुयशाभी उसपर मोहितहोकर भी न जाने किसकारण वहांसे चलीगई उसे गईदेखके नरवाहनदत्त अपने चित्तमें लज्जितसाहोके कुछ तत्त्व न जानके अपने डेरेको चलाआया वहां गोमुख उसे सावधान करके वायुयशा की चित्तवृत्ति जाननेकेलिये पुरके भीतर गया वहां वायुपथने उसे पुरके देखने को आया जानके बड़ा सत्कारकरके एकान्त में लेजाकर उससे कहा कि मेरी वायुयशानाम क्वारीबहिनहै उसका विवाह मैं नरवाहनदत्तकेसाथ करना चाहता हूं यह मेरा कार्य्य तुम सिद्धकरादो इसलिये मैं तुम्हारेपास आनेवालाही था वायुपथके वचन सुनके गोमुखने कहा कि यद्यपि वह अपने शत्रुओं के जीतने को जाताहै तथापि तुम आकर विज्ञापनाकरोगे तो मैं तुम्हारे कार्य्यको सिद्धकरादूंगा यहकहके गोमुखने वहां आकर नरवाहनदत्त से सबवृत्तान्त कहदिया और दूसरे दिन जब वायुपथने आकर नरवाहनदत्त से प्रार्थना की तब गोमुखने कहा कि हे स्वामी वायुपथकी प्रार्थनाको आप स्वीकार करलीजिये क्योंकि यह आपका बड़ा भक्तहै गोमुखके यह वचन सुनकर नरवाहनदत्तने कहा कि अच्छा जो तुम कहोगे सो मैं स्वीकार करूंगा तब वायुपथने नहीं इच्छाकरतीहुई भी अपनी बहिनको लाकर नरवाहनदत्तकेसाथ विवाह करदिया विवाहके समय उसने कहा कि हे लोकपालो मेरे भाईने मेरा विवाह हठपूर्व्वक कियाहै इससे मेरा अपराध नहीं है उसके इस

बातके कहनेके समय वायुपथकी सब स्त्रियोंने ऐसा कोलाहल शब्द किया जिससे उसका कहना सबने नहीं सुना विवाहके उपरान्त गोमुख नरवाहनदत्तको लज्जादेनेवाली वायुयशाकी बातके तत्त्वको ढूंढ़ने केलिये इधर उधर भ्रमण करनेलगा भ्रमण करते २ उसने एक स्थानमें देखा कि चारकन्या एकसाथही अग्निमें प्रवेश करनेको उद्यतहैं यह देखकर उसने उनसे पूछा कि तुम क्यों भस्म होतीहो उन्होंनेकहा कि वायुयशाने हमारे नियमका भंगकियाहै इससे हम भस्म होना चाहती हैं उनके वचन सुनके गोमुखनेआकर नरवाहनदत्तसे कहदिया यहसुनकर नरवाहनदत्तको तो बहुत आश्चर्य्यहुआ औरवायुयशाने उससे कहा कि हे आर्यपुत्र तुम चलकर उन कुमारी कन्याओंकी पहले रक्षाकरो फिर मैं इसका सब कारण तुमसे कहूंगी उसके वचन सुनकर नरवाहनदत्त सम्पूर्ण रानी तथा मंत्रियों समेत वहांगया उन कन्याओंको जलने से निवृत्त करके वायुयशाने कहा कि हे आर्यपुत्र इनमें से एक यह कालकूट पतिकी कालिका नाम पुत्री है दूसरी विद्युत्पुंज की विद्युत्पुंजानाम पुत्री है तीसरी मन्दरकी मतंगिनी नाम पुत्री है और चौथी महादंष्ट्रकी पद्मप्रभानाम पुत्री हैऔर पांचवीं मैंहूं सिद्धिक्षेत्रमें आपको तपकरते देखके हम पांचोंने कामसे मोहितहोके एक साथही आपके साथ विवाह करनेकी प्रतिज्ञाकीथी और कहाथा कि जो कोई प्रतिज्ञाको भंगकरके अकेले अपना विवाह करलेगी तो अन्यचारों अग्निमें भस्म होजायँगी इसीसे मैं आपकेसाथ अलग विवाहकरना न चाहतीथी इसीसे मैंने अभीतक अपना शरीर आपके अर्पण नही किया है इसबातमें आप और सम्पूर्ण लोकपाल मेरे साक्षी हैं इससे हे आर्यपुत्र आप इनचारों के साथ अपना विवाह कीजिये वायुयशाके यह वचन सुनकर वह चारों सखियां बहुत प्रसन्नहोके उससे मिलीं और उनके पिताओं ने अपनी २ विद्याओं के प्रभावसे सब वृत्तान्त जानकर वहां आके अपनी २ कन्याओं का विवाह नरवाहनदत्तके साथ करदिया और उसीकी आज्ञामाननी स्वीकार कियी इसप्रकार महाविद्याधरोंकी पांच विद्याधरी पुत्रियोंको पाकर नरवाहनदत्त बड़े सुख पूर्वक कुछ दिन तक वहां रहा एक दिन सेनापति हरिशिखने उससे कहा कि हेस्वामी आपशास्त्रको जानकरभी क्यों नीतिका उल्लंघन करतेहो विग्रहके समय में यह कामकी क्रीड़ा शोभित नहीं होती कहां मन्दरदेवके जीतने निमित्त यात्राकरना और कहां इतने दिन तक अन्तःपुरमें विहारकरना हरशिखके यह वचन सुनके नरवाहनदत्तने कहा तुम बहुत ठीक कहतेहो परन्तु मैंने संभोगकेलिये यह यत्न नहीं कियाहै किन्तु इसप्रकारसे बहुतसे विद्याधर मेरे सहायक होजायँगे इसलिये यह उद्योग कियाहै क्योंकि शत्रुओं के जीतने का यह मुख्य अंगहै अब सम्पूर्ण सेनाको लेकर तुम शत्रुओं के जीतनेको चलो उसके यह वचन सुनकर मन्दरने कहा कि जब तक आपको सम्पूर्ण चक्रवर्त्तियोके रत्न सिद्ध नहीं हो चुकेंगे तब तक आप मंदरदेव को नहीं जीतसकियेगा उसके यहां जानेसे पहले त्रिशीर्षानाम गुहामिलती है उस गुहाकी रक्षाबड़े२मायावी वीरलोग करते हैं इसी गुहाके बलसे उसे कोई जीत नहीं सक्ताहै जिसके पास चक्रवर्त्तियोंके सम्पूर्ण रत्नहोयँ वही चक्रवर्त्ती इस गुहाका आक्रमण करसक्ताहै इससे इसी स्थानमें चक्रवर्त्तियोंका रत्न जो चन्दनका वृक्षहै उसे आप सिद्धकीजिये चक्रवर्त्ती के सिवाय दूसरा

उसके निकट नहीं जासक्ता है मंदरके यह वचन सुनकर नरवाहनदत्त रात्रिके समय निराहार होकर अनेक विघ्नोंका उल्लंघन करके उस चन्दनके वृक्षके निकटगया और सुवर्णमय वेदीपर लगेहुए उस वृक्षको प्रणाम करके वहीं वैठगया उससमय उस वृक्षमेंसे यह शब्द सुनाई दिया कि हे चक्रवर्त्तिन् तुम को मैं सिद्धहोगया जब तुम मेरा स्मरणकरोगे तब मैं तुम्हारे पास आऊंगा अब तुम गोविन्दकूटको जाओ वहीं तुमको सम्पूर्ण अन्यरत्न सिद्धहोजायँगे और तभी तुम मंदर देवको सरलतासे जीतलोगे इस शब्दको सुनकर नरवाहनदत्त उस वृक्षको प्रणाम करके प्रसन्नता पूर्व्वक अपने कटकको चला आया वहां उसने वह रात्रि व्यतीत करके प्रातःकाल गन्धर्वोंसे विद्याधरों से और अपने मंत्रियों से चन्दनके वृक्षका सब वृत्तान्त कहा उस वृत्तान्तको सुनकर वह सब वहुत प्रसन्नहुए और उसकी धीरता की वड़ी प्रशंसाकरनेलगे तदनन्तर उन सबसे सलाहकरके मंदरदेवको जीतनेके निमित्त अन्यरत्नों को सिद्ध करनेकेलिये अपने सम्पूर्ण परिकर समेत नरवाहनदत्त उस दिव्य विमानपर वैठकर गोविन्दकूटमे आया २०९॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांपंचलम्बकेचतुर्थस्तरंगः ४॥
पंचनामचौदहवांलम्बकसमाप्तहुआ॥

महाभिषेकोनाम पञ्चदशोलम्बकः॥

निशासुताण्डवोद्दण्डशुण्डाशीत्कारशीकरैः।
ज्योतींषिपुष्णन्निववस्तमोमुष्णातुविघ्नजित्॥

इसके उपरान्त गोविन्दकूट पर सभामें वैठेहुये नरवाहनदत्तके पास अमृतप्रभनाम विद्याधर आया (यह वही विद्याधरहै जिसने अग्निपर्व्वत पर नरवाहनदत्तकी रक्षाकीथी) और प्रणामकरके बोला कि हेस्वामी मलयाचलपर्व्वतपर एक वामदेव नाम महर्षि रहतेहैं उन्होंने किसीकार्य्यके निमित्त आप को अकेलेमें वुलायाहै इसलिये मैं आपकेपास आयाहूं अब आप मेरे साथचलिये उसके वचन सुनकर नरवाहनदत्त अपनी सेना मंत्री तथा सब स्त्रियोंको वहीं छोड़कर अकेलाही उसकेसाथ गया वहां वामदेव महर्षिको देखकर प्रणामकरके उनके निकटवैठा वामदेवने अतिथि सत्कार करके उससे कहा कि हेपुत्र श्रीशिवजीने तुमको सम्पूर्ण विद्याधरोंका चक्रवर्त्ती कियाहै मेरे इस आश्रमकी गुहामे रत्न हैं उनको तुम सिद्धकरो रत्नोंको सिद्धकरके तुम मन्दरदेवको जीतसकोगे इसीलिये श्रीशिवजी की आज्ञासे मैंने तुमको यहां वुलायाहै यह कहके मुनिने उसे गुहामें जानेकी विधि वतलादी उसी विधि से नरवाहनदत्त उस गुहामें गया और अनेकप्रकारके विघ्नोंको जीतकर एकदौड़तेहुये मतवाले हाथी को देखकर उसीपर चढ़गया उससमय उसगुहा मेंसे यह शब्द हुआ कि हे नरवाहनदत्त तुमको यह हस्तिरत्न सिद्धहोगया तदनन्तर एक वड़ाउत्तम खड्ग उसने देखा और उसे अपनेहाथमें उठालिया खड्ग

को लेतेही गुफामेंसे यह शब्द सुनाई दिया कि हेनरवाहनदत्त तुमको खड्ग भी सिद्धहोगया इसकेपीछे चन्द्रिकारत्न कामिनीरत्न तथा विध्वंसिनी विद्यारत्न भी उसे वहीं सिद्धहोगया इन सब रत्नोंको सिद्ध करके गुफाके बाहर आके उसने वामदेवऋषिसे सब वृत्तान्त कहा तब वामदेवने उससे कहा कि हे पुत्र तुमको सम्पूर्ण रत्न सिद्धहोगये अब तुम मन्दरदेवको जीतकर विद्याधरोंका ऐश्वर्य्य भोगो उनके यह वचन सुनके और प्रणामकरके नरवाहनदत्तने वहां से अमृतप्रभके साथ गोविन्दकूट में आकर सबसे रत्नोंके सिद्धहोनेका वृत्तान्त कहा इससे उन सबलोगोंने बड़ाउत्सव किया दूसरेदिन नरवाहदत्त अपने महाविमानपर सम्पूर्ण सेनाको चढ़ाकर और अपने सम्पूर्णमित्र मंत्री तथा स्त्रियोंसमेत बैठकर मन्दरदेवके जीतनेको चला मार्ग में मानसरोवर तथा गंडशैलका उल्लंघनकरके कैलाशके निकटपहुंचा वहां गंगाजीके तटपर मन्दर नाम विद्याधरने उससे कहा कि हेस्वामी आज यहींरहिये कैलाशका उल्लंघन करना उचित नहीं है क्योंकि जो कोई इसका उल्लंघन करताहै उसकी सब विद्या नष्टहोजाती है इससे त्रिशीर्षा नाम गुहाके भीतर होकर मन्दरदेवके यहां चलना चाहिये परन्तु उस गुफाकी रक्षा महाअभिमानी देवमाय नाम राजा करताहै उसको विनाजीते उसमें जाना नहींहोसक्ताहै मन्दरके इनवचनों का धनवती ने अनुमोदन किया इससे नरवाहनदत्त उसदिन वहींरहा और वहीं से उसने देवमाय के पास सन्धिके निमित्त दूत भेजा परन्तु देवमायने सन्धिकरना स्वीकार नहीं किया इससे नरवाहनदत्त दूसरेदिन अपनी सम्पूर्ण सेनासमेत त्रिशीर्षा गुहाकेपास उससे युद्धकरनेको गया और देवमाय भी अपनी सेनालेकर युद्धकरनेको निकला उन दोनोंसेनाओंका परस्पर घोरयुद्ध होनेलगा बहुतसे योद्धाओंके मरनेपर नरवाहनदत्तने देवमायको युद्धमेंमूर्च्छित करदिया और अपने योद्धाओंसे उसेबँधवा लिया इससे उसकी सम्पूर्णसेना भागगई और संग्रामबन्दहोगया तदनन्तर जब देवमाय मूर्च्छासे जगा तब नरवाहनदत्तने कृपाकरके उसे छुड़वा दिया इससे उसने लज्जित होकर उसकी आज्ञाका मानना स्वीकार किया इसके उपरान्त दूसरे दिन नरवाहनदत्तने सभामें आयेहुये देवमायसे त्रिशीर्षा गुहा का परम्परागत वृत्तान्त पूछा देवमायने कहा कि हे स्वामी पहले कैलाशके दक्षिण तथा उत्तरओर विद्याधरों के दोचक्रवर्ती हुआकरते थे एकसमय ऋषभ नाम विद्याधरपर प्रसन्नहोकर श्रीशिवजी ने उसे दोनों ओरका चक्रवर्त्ती होने के लिये आज्ञादी इससे वह कैलाशका उल्लंघन करके उत्तरकी ओर चला कैलाश के ऊपर जातेही उसकी सम्पूर्ण विद्या नष्टहोगई और वह पृथ्वीपर गिरपड़ा परन्तु उसने उठकर फिर घोर तपकरके शिवजी को प्रसन्नकिया और शिवजी ने फिर उसको वही वरदान दे दिया तब उसने हाथजोड़कर कहा कि हे स्वामी मैं तो कैलाशका उल्लंघनही नहीं करसक्ताहूं तो किसप्रकारसे दोनों ओरका चक्रवर्ती होसकूंगा उसके वचन सुनकर श्री शिवजी ने उत्तरकी ओर जाने के लिये कैलाशको भेदकर एक गुहा बनादी तब कैलाशने खिन्नहोकर शिवजी से कहा कि मेरे उत्तरकी ओर कोई मनुष्य नहीं जासक्ताथा परन्तु अब मनुष्य भी जांयगे इससे ऐसा कीजिये जिससे मेरी मर्य्यादा नष्ट न होय कैलाशके वचन सुनकर शिवजी ने दिग्गज भयंकर सर्प तथा गुह्यकों को

गुहाके मध्यकी रक्षाके लिये नियत करदिया और दक्षिण द्वारपर महामायको तथा उत्तर द्वारपर काल रात्रिको रक्षाके लिये नियतकिया इसप्रकार गुहाकी रक्षाकरके और वहुतसेरत्न उत्पन्नकरके श्री शिवजी ने यह व्यवस्थाकी कि जिस चक्रवर्तीको सम्पूर्ण रत्न सिद्धहोजायँगे वह अपने सम्पूर्ण परिकरसमेत इस गुहामें जासकेगा और उसकी आज्ञासे जो कोई उत्तरवेदी के राजाहोंगे वह भी गुहामें जासकेंगे उनके सिवाय और कोई इस गुहामें न जासकेगा श्रीशिवजी के यहवचन सुनकर ऋषभक दोनोंओर का राज्यकरनेलगा और अभिमान से देवताओं के साथ युद्धकरके मारागया यही इस गुहाका वृत्तान्त है इस गुहाके रक्षाकरनेवाले महामायके वंशमें देवमायनाम मैं उत्पन्नहुआहूं जिससमय मेरा जन्महुआ था उस समय यह आकाशवाणीहुईथी कि कोई विद्याधर इसको युद्ध में नहीं जीतसकेगा और जो कोई इसे जीतेगा वही सम्पूर्ण विद्याधरोंका चक्रवर्तीहोगा इससे हे स्वामी आपही हमसव विद्याधरों के चक्रवर्ती हूजियेगा इससे इस गुहाके द्वारा उत्तरवेदी में चलकर सब शत्रुओंको जीतिये देवमाय के यह वचन सुनकर नरवाहनदत्तने कहा कि आज चलकर सवलोग उस गुहाके द्वारपररहैं कल प्रातःकाल उसमें प्रवेशकरनाहोगा यह कहके वह अपने सम्पूर्ण परिकरसमेत गुहाके द्वारपर जाके टिका उसगुहा में वाहरसे ऐसा अन्धकार दीखताथा कि मानों कल्पान्तके अन्धकारकी वह जन्मभूमिथी दूसरे दिन नरवाहनदत्त श्रीगणेशजी का पूजनकरके सम्पूर्ण परिकरसमेत विमानपर वैठके गुहामेंचला अन्धकार को चन्द्रिकारत्नसे सर्पोंको चन्दनसे दिग्गजोंको हस्तिरत्नसे और गुह्यकोंको खड्गसे जीतकर गुहाके वा-हर उत्तरवेदीपर पहुंचा उस समय यह आकाशवाणीहुई कि हे नरवाहनदत्त चक्रवर्तिन् तुमने रत्नों के प्रभावसे इस गुहाका उल्लंघनकिया इससे तुम धन्यहो तदनन्तर धनवती तथा देवमायने उससे कहा कि गुहाके इस द्वारपर सदैव कालरात्रि स्थित रहती है विष्णुभगवान्‌ने समुद्रके मथने के समय अमृत की रक्षाके निमित्त इसे उत्पन्नकियाथा और श्रीशिवजी ने इसको इस गुहाकी रक्षाके लिये नियतकिया है इससे आप अपनी विजयके लिये इसका पूजनकीजिये उन दोनों के इस प्रकार कहतेही वह दिन व्यतीतहोगया सव ओरसे अन्धकार फैलगया भूत वेताल आदि आकर नाचनेलगे और क्षणभर में नरवाहनदत्तकी सम्पूर्ण सेना सोयेहुएके समान मोहितहोगई केवल नरवाहनदत्तही मोहित नहीं हुआ तव उसने यह जानकर कि मैंने कालरात्रिका पूजन नहीं कियाहै इसी से मेरी सेना मोहितहो गई है कालरात्रिकी यह स्तुतिकी कि हे भगवती तुम्हीं संसारभरके जीवों की प्राणशक्तिहो तुमको न-मस्कारहै महिषासुरको मारकर तीनों लोकोंकी प्रसन्न करनेवाली हे दुर्गारूपे भगवती तुमको नमस्कार है रुरुदैत्यके रुधिरको पानकरके अपने नृत्यसे तीनों लोकोंकी प्रसन्नकरनेवाली हे भगवती तुमको न-मस्कारहै हेकपालहस्ते हेशिवप्रिये हेकालरात्रि तुमको वारम्वारनमस्कारहै इसप्रकार स्तुतिकरनेपरभीजव भगवती कालरात्रि नहींप्रसन्नहुई तो उसने अपना शिरकाटकर इनको प्रसन्न करनाचाहा तव प्रसन्नहो कर कालरात्रिने कहा कि हेपुत्र साहस मतकरो मैं तुम्हारेऊपर प्रसन्नहूं तुम्हारी सम्पूर्णसेना मोह रहितहो जायगी और तुम्हारी विजयहोगी कालरात्रिके इसप्रकार कहतेही सम्पूर्ण सेना मोहरहितहोगई और उस

वृत्तान्तको जानकर सबलोग नरवाहनदत्तकी बड़ीप्रशंसा करनेलगे तदनन्तर आहार पानादिसे उस रात्रि को व्यतीतकरके दूसरे दिन नरवाहनदत्त कालरात्रिका पूजनकरके मन्दरदेवके प्रधान राजा धूमशिखके जीतनेको परिकरसमेत गया उसकेसाथ बड़ाघोर संग्रामहुआ आकाश खड्गमय दिखाई देनेलगा पृथ्वी शिरमय दिखाई देनेलगी और मारो२यही शब्द सुनाईदिया उसयुद्धमें जीवतेहुएही धूमशिखको पकड़ के नरवाहनदत्तने उससे अपनी आज्ञास्वीकारकरवाई और उसीकेपुरमें अपनीसेनाका डेराडलवादिया दूसरे दिन चारों के द्वारा यहसमाचार पाकर कि मन्दरदेव आपही युद्ध करने को आरहाहै नरवाहन दत्त अपनी सम्पूर्ण सेनाको लेकर युद्धकरनेको चला कुछ दूर चलकर उसने यह देखकर कि मन्दरदेव की सेना व्यूहबनाये हुए खड़ीहै अपनीभी सेनामें व्यूहबनवाकर युद्धकरनेकी आज्ञादेदी तब उनमहा सेनाओंका घोर युद्धहोनेलगा कैलाशकी पृथ्वी रुधिरसे रक्तहोगई और हाहाकारसे सब पृथ्वी कांपने लगी पर्व्वत हिलगये और देखनेको आयेहुए देवता तथा दैत्यभी भयभीतहोगये इसप्रकारके घोर युद्ध में चण्डसिंहके शिरपर कांचनदंष्ट्रने गदामारी इससे वह पृथ्वीपर गिरपड़ा अपने पुत्रको गिरादेखके धनवती ने क्रोधकरके विद्याकेबलसे दोनों सेनाओंको मोहितकरदिया केवल नरवाहनदत्त तथा मन्दरदेव यह दोही चैतन्यरहे धनवतीको कुपित देखकर आकाशमें खड़ेहुए देवताभी भयभीतहोकर भाग गये उससमय नरवाहनदत्तको अकेला देखकर मन्दरदेव शस्त्र लेकर दौड़ा नरवाहनदत्तभी विमानसे उतर खड्ग लेकर उससे भिड़गया मन्दरदेवने मायासे अपना हाथीकासा भेष बनालिया इससे नरवाहनदत्तने अपना सिंहकासा रूपबनालिया सिंहके रूपको देखकर उसने हाथी के रूपको त्याग दिया तब नरवाहनदत्तभी सिंहका रूप छोड़कर अपने रूपमें होकर उससे खड्गयुद्धकरनेलगा बहुतकालतक युद्धकरते२नरवाहनदत्तने युक्तिकरके मन्दरदेवके हाथसे खड्गछीनलिया तब उसने छुरीनिकाली नरवाहन दत्तने वहभी छीनली इससे वहकुपितहोकर मल्लयुद्ध करनेलगा मल्लयुद्धमें नरवाहनदत्तने उसे पटकके बाल पकड़कर उसका शिरकाटनाचाहा इतनेमें मन्दरदेवकी क्वारीबहिन मन्दरदेवीने आकर उससे कहा कि मैंने आपको तपोवनमें देखकर अपने चित्तसे अपना पति स्वीकार किया है इससे यह आपका सालाहुआ इसे न मारिये मन्दरदेवीके यह वचन सुनकर नरवाहनदत्तने उसे छोड़ दिया और उसे लज्जित देखकर उससे कहा कि हे विद्याधरेश मैंने तुमको जीतकर छोड़दियाहै इसबातकी तुम लज्जा मतकरो क्योंकि युद्धमें शूरलोगोंके जय पराजयहोनेका कोई नियम नहीं है नरवाहनदत्तके यहवचन सुनकर मन्दरदेवने कहा कि स्त्रीसे बचायेगये मेरे इसजीवनको धिक्कारहै इससे वनमें मैं अपने पिताके पास तपकरनेको जाताहूं तुम्हीं दोनों वेद्यर्धोंके चक्रवर्त्तीहो मेरे पिताने पहलेही मुझसे इसबातकी सूचनाकरदीथी यहकहके वह अपने पिताके पास तपोवनको चलागया उससमय आकाशमें खड़ेहुए देवताओंने कहा कि हे नरवाहनदत्त तुम धन्यहो तुमने अपनी भुजाओंके बलसे शत्रुओंको जीतकर चक्रवर्त्तीपनेको पाया है तदनन्तर मन्दरदेवके चलेजाने पर धनवती ने अपने पुत्र चण्डसेनको तथा दोनों सेनाओंको मोहसे रहित करदिया तब सोकर जगेहुओंके समान नरवाहनदत्तके मंत्री तथा मित्र

लोग शत्रुकी पराजय जानकर बहुत प्रसन्नहुए और मन्दरदेवके पक्षवाले कांचनदंष्ट्र अशोकक रक्ताक्ष तथा कालजिह्वा आदि राजाओंनेभी नरवाहनदत्तकी आज्ञा स्वीकार करली उससमय कांचनदंष्ट्रको देखकरचण्डसिंह गदाकेप्रहारका स्मरणकरके क्रोधसे फिर खड्गलेके लड़नेकोउद्यतहुआ यहदेखकर धनवतीने उससेकहा कि हेपुत्र क्रोध न करो तुमको युद्धमें कौन जीतसक्ताहै मैंनेही दोनों यक्षोंकी रक्षाके लिये यह मायाकीथी धनवती के यह वचनसुनकर चंडसिंहका क्रोधशान्त होगया और संपूर्ण लोग धनवतीकी इस सिद्धिको देखकर बहुतप्रसन्नहुए इसप्रकारसे संपूर्णवीर शत्रुओंको जीतकर उत्तर वेद्यर्धकाभी राज्यपाके नरवाहनदत्तने अपने मित्र तथा मंत्रियों समेत अप्सराओं के नृत्य आदि से बड़ा उत्सव करके अपनी प्रियाओंके साथ वह दिन बड़े आनन्दसे व्यतीत किया १५२॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांमहाभिषेकलम्बकेप्रथमस्तरंगः १॥

इसके उपरान्त दूसरेदिन नरवाहनदत्त राजा कांचनदंष्ट्रके कहनेसे अपनी संपूर्ण सेनासहित मंदरदेवके विमलनाम पुरके देखनेको गया वह सुवर्णमय पुर ऐसाशोभित होरहाथा कि मानों कैलाश से मिलने को सुमेरु आयाहै उसपुरकी सभामेजाके बैठेहुए नरवाहनदत्तसे एक वृद्धास्त्री ने आकर कहा कि आपसे पराजित होके मंदरदेवके चलेजानेपर उसकी संपूर्णरानी अग्नि में प्रवेशकरना चाहती हैं अब आप जैसा उचित समझिये सो कीजिये उसके वचनसुनकर नरवाहनदत्तने उनसबको अग्निमें प्रवेश करनेसे निवृत्तकरके उन सबको अपनी बहिनोंकेसमान आदर पूर्व्वक रक्खा इससे सम्पूर्णविद्याधरलोग उसपर बहुतही प्रसन्नहुए इसके उपरान्त नरवाहनदत्तने अमितगतिको मंदरदेवके राज्यपर बैठालकर वहांके सब राजाओंको उसीके आधीनकरके वहींके उपवनोंमे सातदिन तक विहारकिया तदनन्तर विद्याधरों को जीतकरके अधिक जीतनेकी इच्छासे मंत्रियोंके निवारण करनेपर भी सुमेरुपर्व्वतके जीतनेको उसने विचारकरा उसके इस अनुचित उत्साहको देखकर नारदमुनिने आकर उससेकहा कि हेराजा तुम नीतिको जानकरकेभी यह व्यर्थ उद्योग क्यों करतेहो जो अभिमान से असाध्य कार्य्यके करनेको उद्यतहोताहै वह कैलाशके उठानेके लिये उद्यत रावणके समान तिरस्कारको प्राप्तहोताहै सूर्य्य चन्द्रमाभी मेरुका उल्लंघन नहीं करसक्तेहैं तो तुम उसको कैसे जीतोगे तुमको श्रीशिवजीनेविद्याधरोंका चक्रवर्ती कियाहै देवताओंका राज्य तुम्हें नहीं दियाहै विद्याधरोंका स्थान हिमालय है वह तो तुमने जीतही लिया अब देवताओंके स्थान सुमेरुको जीतकर क्या करोगे तुम तपोवनमें जाकर मंदरदेवके पिता अकंपनका दर्शनकरो इससे तुम्हारा कल्याणहोगा इसप्रकार उसे समझाकर नारदमुनि अन्तर्द्धानहोगये नारदजीके चलेजानेपर नरवाहनदत्त देवमायके कहेहुए ऋषभके नाशका स्मरणकरके उस उद्योगसे निवृत्तहोके तपोवनमें राजर्षि अकंपनके दर्शनको गया वहां बहुतसे महर्षियोंकेबीच में जटावल्कलधारी अकंपनको बैठेदेखकर नरवाहनदत्तने चरणोंपर गिरकर प्रणामकिया अकंपननेभी उसका आतिथ्यकरके कहा कि हेराजा तुमने बहुत अच्छा किया कि तुम यहां चलेआये नहीं तो यह मुनिलोग कुपितहोके तुम्हें शाप देते २६ उसके इसप्रकार कहतेही मंदरदेव अपनीबहिन मंदरदेवीसहित

वहीं आया नरवाहनदत्तने उसे देखकर अपनेगलेसे लगालिया क्योंकि धीरलोग जीतेहुए शत्रुओंसे स्नेह करतेहैं मंदरदेवीको देखकर अकंपनने नरवाहनदत्तसे कहा कि यह मेरीपुत्री है जब इसका जन्म हुआथा तो यह आकाशवाणी हुईथी कि यह चक्रवर्त्तीकी स्त्री होगी इससे आप इसकेसाथ विवाहकरलीजिये अपने पिताके वचनसुनकर मंदरदेवीने कहा कि मेरे चारसखियां हैं एक विद्याधरों के राजा कांचनदंष्ट्रकी पुत्री कनकवती दूसरी कालजिह्वकी पुत्री कालवती तीसरी दीर्घदंष्ट्रकी पुत्री श्रुता और चौथी पोत्रराजकी पुत्री अंवरप्रभा इन चारोंकेसाथ भ्रमण करते २ मैंने तपोवनमें इस राजपुत्रको तप करते देखा इससे हम पांचोंको एकसाथ इसपर अनुराग होगया तो हम पांचोंने यह नियम किया कि हम सब एकसाथही इसकेसाथ विवाहकरेंगी और जो कोई अकेली विवाहकरलेगी तो शेष चारों अग्नि में भस्महोजायँगी इससे मैं उन अपनी चारोंसखियोंके विना विवाह नहीं करूंगी उसके यह वचनसुन के अकंपन ने उनचारों विद्याधरों को पुत्रियों समेत वहीं बुलवालिया और उन सबसे वह वृत्तान्त कहकर नरवाहनदत्त के साथ उन पांचों पुत्रियों का विवाहकरदिया उनपांचों कन्याओं के साथ विवाहकरके नरवाहनदत्त सुखपूर्वक उसी आश्रम में उनकन्याओं के साथ बहुत दिनतक रहा एकदिन अकंपनने नरवाहनदत्तसे कहा कि हेराजा महा अभिषेक के निमित्त अब तुम ऋषभपर्व्वतपर जाओ यह सुनकर देवमायने भी कहा कि आपको अवश्य ऋषभ पर्व्वतपर चलना चाहिये क्योंकि ऋषभक आदि चक्रवर्त्तियों का अभिषेक वहीं हुआ है यह सुनकर हरिशिखने कहा कि मन्दराचल यहां से समीपहै उसीपर महा अभिषेक करनाचाहिये और ऋषभ पर्व्वत यहांसे बहुतदूरहै वहांजानेमें क्लेश होगा उसके इसप्रकार कहतेही यह आकाशवाणीहुई कि हे राजा सम्पूर्ण प्राचीन चक्रवर्त्तियोंका महा अभिषेक ऋषभ पर्व्वतपरही हुआहै क्योंकि वह सिद्धपदहै इसआकाशवाणीको सुनकर नरवाहनदत्त राजर्षि अकंपन तथा सम्पूर्ण महर्षियोंको प्रणामकरके अपने सम्पूर्ण परिकर समेत वहांसे चला और त्रिशीर्षगुहाके द्वारपर पहुंचकर कालरात्रिका पूजनकरके उसगुहामें प्रवेशकरके उसके दक्षिण द्वारपर आया वहां देवमायने बहुतप्रार्थनाकरके उसे अपने यहां उसदिनरक्खा वहांसे वह उसीदिन गोमुखको साथ लेकर कैलाशपर श्रीशिवजीके दर्शन करनेको गया वहां नन्दीको प्रणाम तथा प्रदक्षिणा करके आश्रमके भीतरजाके उसने पार्वतीजीके साथ बैठेहुए श्रीशिवजीको दण्डप्रणाम करके तीनवार प्रदक्षिणाकी तब श्री शिवजी ने उससे कहा कि तुमने बहुत उचित किया जो यहां चले आये नहीं तो तुम्हारी बड़ी हानिहोती अब तुम्हारी सम्पूर्ण विद्या कभी नष्ट न होंगी अब तुम ऋषभ पर्व्वतपर जाकर अपना महाअभिषेक करवाओ श्रीशिवजी के यहवचन सुनकर उनको प्रणामकरके वह गोमुखके साथ देवमायके स्थानको चलाआया वहां रानी मदनमंचुकाने उससे कहा कि हे आर्यपुत्र तुम कहांगयेथे बहुत प्रसन्नसे दिखाई देरहेहो क्या वहांभी तुमको और पांच कन्या तो नहीं मिलगईं मदनमंचुका के यह परिहास वचन सुनकर उससे श्रीशिवजी के दर्शनका वृत्तान्त कहके वह सुखपूर्व्वक उसदिन वहीं रहा और दूसरे दिन अपने सम्पूर्ण परिकरकोलेके विमानपरचढ़के ऋषभपर्व्वत पर गया वहांविद्याधरों के

संपूर्ण राजा उसके महाभिषेककेलिये संपूर्ण सामग्रियां लेलेकर आये उन सबने मिलकर नरवाहनदत्तसे पूछा कि आपके साथ आपकी किसरानीका अभिषेक होनाचाहिये उसने कहा मदनमंचुकाका, उसके यह वचन सुनकर सम्पूर्ण विद्याधर विचार करनेलगे तब यह आकाशवाणीहुई कि हे विद्याधर लोगो यह मदनमंचुका मानुषी नहीं है यह साक्षात् रतिहै यह मदनवेगसे कलिंगसेनामें नहीं उत्पन्नहुई है क्योंकि यह अयोनिजहै देवतालोगों ने कलिंगसेनाका गर्भ हरकर इसे रखदिया था और उसका इत्यकनाम पुत्र अबतक मदनवेगके पासहै इससे नरवाहनदत्त के साथ मदनमंचुकाका अभिषेक अवश्य करना चाहिये इस आकाशवाणी को सुनकर सम्पूर्ण विद्याधर बहुत प्रसन्नहुए इसके उपरान्त शुभ मुहूर्त्त में महर्षिलोगोंने मदनमंचुका समेत नरवाहनदत्त को सिंहासनपर बैठालकर सम्पूर्ण तीर्थोंके जलोंसे महाभिषेक किया बड़ा आश्चर्य्य है कि तीर्थोंका जल तो नरवाहनदत्तके शिरपर पड़ा परन्तु शत्रुओंके चित्त वैररूपी मलसे रहितहोगये लक्ष्मीजी मानों समुद्रके जलके साथही साथ आकर उसके शरीरमें व्याप्त होगई प्रतापके समान अरुण अंगरागसे वह उदित होनेवाले सूर्य्यके समान शोभितहुआ और कल्प वृक्षकी मालाओंको शिरमें बांधकर सुन्दर वस्त्राभरण पहरकर तथा दिव्य मुकुट धारण करके वह रानी मदनमंचुका सहित उससमय इन्द्राणी सहित इन्द्रके समान लक्षितहुआ आकाशमें नगाड़े बजनेलगे पुष्पोंकी वृष्टिहोनेलगी अप्सरा नाचनेलगीं और गन्धर्वगानेलगे वायुके द्वारा कंपितलताभी मानों उस समय हर्षसे नाचनेलगीं और वह पर्व्वतभी मानों प्रति शब्दों के व्याज से गानकरनेलगा इसप्रकार महोत्सवसे महाभिषेक के समाप्त होनेपर नरवाहनदत्तने अपने पिताका स्मरण करके अपने मंत्रियोंसे भी सलाहकरके वायुपथसे कहा कि तुम कौशाम्बीमें जाकर मेरे पितासे यह कहकर कि नरवाहनदत्त आपको स्मरण करताहै, उनको मंत्री तथा रानियों समेत विमानपर चढ़ाकरलेआओ यह आज्ञापातेही वायुपथ शीघ्रही विमानपर चढकर कौशाम्बी में गया वहां महाराज उदयन्‌के पास पहुंचकर कुशल प्रश्न पूछकर उसने उससे कहा कि हे महाराज आपका पुत्र नरवाहनदत्त श्रीशिवजीकी कृपासे सम्पूर्ण विद्याधरोंको जीतकर दोनों वेद्यर्धोंका चक्रवर्तीहोगया और ऋषभ पर्व्वतपर उसका महाभिषेक हुआ है इससमय वह आपका स्मरण कररहाहै इससे सम्पूर्ण रानियों तथा मंत्रियों समेत आपके बुलानेके लिये उसने मुझे भेजा है उसके यह वचन सुनकर महाराज उदयन् अपनी सम्पूर्ण रानी मन्त्री तथा कलिंगसेना समेत विमानपर चढके ऋषभ पर्व्वतपरगया वहां दिव्य सिंहासनपर बैठेहुए अपने पुत्र को देखकर वह अत्यन्त प्रसन्नहुआ नरवाहनदत्तभी अपने पिताको मंत्रियों समेत आते देखकर सिंहासनसे उतर आगे चलकर अपने परिकर समेत उसके चरणोंपरगिरा तब राजा उदयन्‌ने उसे उठा हृदय में लगाके आनन्दके अश्रुओं से उसके शिरमें अभिषेक किया और उसे आलिंगनकरके रानी वासवदत्ताके स्तनोंसे दूध बहनेलगा रानी पद्मावती तथा यौगन्धरायणादिक मंत्रीभी उसे देखकर बहुत प्रसन्नहुए और कलिंगसेना अपने जामाता तथा पुत्री को देखकर आनन्दकेमारे शरीरमें नहीं समाई मदनमंचुका रत्नप्रभा अलंकारवती, ललितलोचना, कर्पूरिका, शक्तियशा, भगीरथयशा, वेगवती, अजि-

नावती, गन्धर्वदत्ता, प्रभावती, आत्मनिका, वायुयशा, कालिका, सुलोचना तथा मंदरदेवी आदिक नरवाहनदत्तकी रानियों ने राजा उदयन् वासवदत्ता तथा पद्मावती को यथायोग्य प्रणाम किया और उन लोगोने उनको यथायोग्य आशीर्वाददिया तदनन्तर राजा उदयन्के अपने सम्पूर्ण परिकर समेत यथायोग्य आसनोंपर बैठजानेपर नरवाहनदत्त अपने महासिंहासन पर बैठा उससमय रानी वासवदत्ता अपनी नवीन बहुओंको देखके उनके कुल तथा नाम पूछकर बहुत प्रसन्नहुई और राजा उदयन्भी अपने पुत्रकी महाविभूतिको देखकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ इसके उपरान्त रुचिरदेव प्रतीहारने आकर कहा कि हे स्वामी मद्यपानकी भूमि सजगई वहीं चलिये उसके वचन सुनके नरवाहनदत्त उन सबको लेकर वहां गया वह स्थान अनेक प्रकारके रत्नोंके पात्रों से अनेक प्रकारके प्रफुल्लितकमलवाले तड़ाग के समान सुशोभित होरहाथा वहां सबने बड़ेहर्षपूर्व्वक मद्यपानकिया मद्यपीनेसे कुछ रक्तवर्णहुए उन के प्रफुल्लित मुख प्रातःकालकी धूपसेयुक्त तड़ागों के कमलों के समान शोभितहुए फिर मद्यपानके उपरान्त सब लोग भोजनके स्थानमेंगये वहां अनेक प्रकारके आसन अलग २ बिछेहुएथे और आसनोंके पास अनेक रत्नमय पात्र भोजनोंके निमित्त रक्खेहुएथे और उनपात्रोंमें अनेक प्रकारके दिव्य भोजन रक्खेथे वहां भोजन करके सूर्य्य भगवान् के अस्तहोजाने पर सब लोग अपने २ योग्य शयन स्थानमेंगये और नरवाहनदत्त विद्याओंके प्रभावसे अनेकरूप धारण करके अपनी सम्पूर्ण रानियोंके पास गया परन्तु अपने यथार्थ शरीर से रानी मदनमंचुकाकेही पासरहा और राजा उदयन्भी अपने सम्पूर्ण परिकर समेत उसी शरीरसे मानों जन्मान्तर में प्राप्तहोकर बड़े आनन्दसे उसरात्रिको व्यतीत करके दूसरे दिन प्रातःकाल वहांके दिव्य उद्यानोंको देखकर बड़े सुखसे वहीं रहा इसप्रकार बड़े आनन्द पूर्व्वक बहुत दिनों के व्यतीत होनेपर एक दिन महाराज उदयन्ने नरवाहनदत्त से कहा कि हे पुत्र ऐसा कौनजीवहोगा जिसका चित्त इन दिव्यभोगों में न रमे किन्तु मनुष्यों को जन्मभूमि का स्नेह बहुत होता है इससे मैं अब अपनी पुरी को जाताहूं तुम विद्याधरों के ऐश्वर्य्यों को भोगकरो क्योंकि अब तुम दिव्य शरीर होगयेहो इससे यही स्थान तुम्हारे योग्य है समयपाकर फिर तुम हम लोगोंको बुलाना क्योंकि इस जन्मका मुख्य फल हमको यही है कि तुम्हारे सुन्दर मुखारविन्दको देखें और तुम्हारे इस दिव्य ऐश्वर्य्य को देखकर प्रसन्नहोंय अपने पिताके यह वचन सुनकर नरवाहनदत्त ने देवमायको बुलाके गद्गद वचनोंसे कहा कि संपूर्ण मंत्रियों तथा सब माताओं समेत तात अब जाने को कहते हैं इससे हजारों विद्याधरों पर हजारों मन सुवर्ण तथा रत्न लदवाकर कौशाम्बपुरी को भेजो उसके यह वचनसुनकर देवमायने कहा कि हे स्वामी मैं आपहीजाकर महाराज उदयन् को कौशाम्बी तक भेजआऊंगा उसके वचन सुनकर नरवाहनदत्त ने पिताका माताओंका तथा यौगन्धरायणादिक मंत्रियोंका वस्त्र आभूषणादिसे पूजनकिया और उन सबको दिव्य विमानपर चढ़ाके वायुपथ तथा देवमायको उनके साथकरदिया उस दिव्यविमानपर चढ़कर राजाउदयन् दूरतक साथ२ चलेआयेहुए अपने पुत्रको लौटाकर अपनी पुरीकोचला और रानी वासवदत्ता स्नेहसे विह्वल होकर प्रणाम करतेहुए पुत्र

को लौटाकर फिर २ कर उसे देखती और रोतीहुई महाकष्टसे चली और नरवाहनदत्तभी अपने माता पिताको विदाकरके अश्रुओंसे अपने मुखचन्द्रको कलंकित करताहुआ मंत्रियोंसमेत अपने स्थानपर आया वहां गोमुखादिक मंत्री तथा मदनमंचुकादिक रानियोंसमेत विद्याधरोंके दिव्य सुखोंको भोगता हुआ बहुतकालतक आनन्दपूर्व्वक वहां रहा १४८ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांमहाभिषेकलम्बकेद्वितीयस्तरंगः २ ॥

महाभिषेकनामपन्द्रहवांलम्बकसमाप्तहुआ ॥

सुरतमञ्जरीनाम षोड़शोलम्बकः ॥

पातुवस्ताण्डवोड्डीनगंडासिन्दूरमण्डनः ॥
वान्ताभिपीतप्रत्यूहप्रतापइवविघ्नजित् १

इसप्रकार ऋषभपर्व्वत पर रहतेहुए नरवाहनदत्तको वसन्तऋतु प्राप्तहुई चन्द्रमाकी चन्द्रिका निर्मल होगई नवीन २ दूर्वा से युक्त पृथ्वी अत्यन्त शोभित होनेलगी मलयाचलकी वायुसे वारंवार स्पर्श की गई वनकी पंक्तियां कंपित तथा अत्यन्त सरसहोगईं कोकिला अपने मधुरशब्दोसे मानो मानवतियों को मानकरनेसे निषेध करनेलगीं आमके वृक्षोपरसे उड़तीहुई भ्रमरो की पंक्तियां कामदेवके धनुषसे निकलीहुई वाणोकी पंक्तियोंकी समान शोभितहुईं इसप्रकार वसन्तके आगमनको देखकर गोमुखादि मंत्रियोंने नरवाहनदत्तसे कहा कि हे स्वामी देखिये वसन्तके आगमनसे इस ऋषभपर्व्वत की औरही शोभाहोगई देखिये लताएं परागरूपी वस्त्रोको पहनकर भ्रमरोके गुंजाररूपी गानोंकोकरके मानो वायु के द्वारा कम्पितहोकर नृत्य कररहीहैं चलिये गंगाजीके तटपर उपवन में चलके वसन्तकी शोभाकोदेखें मंत्रियों के यह वचन सुनकर नरवाहनदत्त अपनी सम्पूर्ण रानियो समेत गंगाजीके तटपर गया और इलायची लौंग वकुल अशोक तथा मन्दार आदिक वृक्षोंसेयुक्त उस उपवन में शिलापर बैठके अपने बाईओर मदनमंचुकाको बैठालके वसन्तकी शोभाको देखकर अपने मंत्रियोसे बोला कि शीतल मन्द सुगंध मलयाचल की वायु, निर्मल दिशा, स्थान २ में सुगन्धितवन, कोकिलाओं के मधुरशब्द और भ्रमरोंकी गुंजार इत्यादि अनेकसुख इस वसन्तमेंहैं केवल प्रियका वियोगही इस ऋतुमें बड़ा दुखदायी होताहै भला मनुष्योंकी तो कौनकहे पशुपक्षियोको भी इसमें बड़ाक्लेशहोताहै देखो यह कोकिला अपने खोयेहुए प्रियको बहुत ढूंढके भी न पाकर विरहसे विह्वलहोकर आमकी शाखापर कैसी मरीहुईसी चुपचाप बैठीहुई है उसके यह वचन सुनकर गोमुखने कहा कि हे स्वामी इसऋतुमें सब प्राणियोंको विरह बड़ादुस्सह होताहै श्रावस्तीपुरीका एक वृत्तान्त मैं आपको सुनाताहूं उस पुरीमें एक राजाका सेवक

सूरसेन नाम राजपुत्र रहताथा उसके सुषेणानाम परमप्यारी स्त्रीथी एकसमय राजाकी आज्ञासे वह सूरसेन विदेशजानेको उद्यतहुआ तब सुषेणाने उससे कहा कि हे आर्य्यपुत्र मुझे अकेली छोड़कर आप को जाना उचितनहीं है मैं आपके विना क्षणभरभी न रहसकूंगी उसके यह वचन सुनके सूरसेननेकहा कि हे प्यारी क्या तुम नहीजानतीहो कि मैं राजाकी आज्ञाको नहीं उल्लंघन करसक्ताहूं मैं पराधीन सेवकहूं यह सुनकर सुषेणाने कहा अच्छा जो आपको अवश्य जानाहै तो जाइये परन्तु वसन्तऋतु में आपका एकदिनका भी वियोग मैं न सहसकूंगी यह सुनकर सूरसेनने कहा कि अच्छा जो मुझेकोई आवश्यक भी कार्य्यहोगा उसे छोड़के मैं चैत्रके प्रथमदिन अवश्य आजाऊंगा यह कहके वह चला गया और सुषेणा उसकी अवधिके दिनोंको प्रतिदिन गिनतीरही धीरे २ वसन्तके प्रारम्भका दिन आगया कोकिला कामकी आज्ञाके समान अपने मधुर २ शब्द सुनानेलगीं और कामदेव के धनुष की टंकारके समान उन्मत्त भ्रमरोंके गुंजार सुनाई देनेलगे उसदिन सुषेणा यह जानकर कि आज मेरा प्रिय अवश्य आवेगा स्नान करके तथा सुन्दरवस्त्र आभूषण पहरकर उसका मार्ग देखनेलगी दिनके व्यतीत होजानेपर भी जब वह न आया तो निराशहोकर शोचनेलगी कि हाय मृत्युका समय तो आगया परन्तु प्रिय न आया हाय पराधीन मनुष्योंको अपने स्वजनोंपर स्नेह नहींहोता इसप्रकार शोचते २ उसकेप्राण निकलगये तदनन्तर सूरसेन भी अपने कार्य्यको समाप्तकरके बड़ेवेगवाले घोड़े पर सवारहोकर उसीदिन रात्रिके पिछलेपहरमें आया और वायुकेद्वारा उखड़ीहुई प्रफुल्लित लताकेसमान अपनी प्रियाको मरीहुई देखकर विलाप करनेलगा विलापकरते २ उसकेभी प्राण निकलगये उन दोनों की यह दशा देखके उनकी कुल देवता चंडीदेवी ने उनको जिलादिया फिर जीकर वह दोनों तब से कभी वियुक्त नहींहुए इसप्रकारसे हे स्वामी वसन्तऋतुमें मलयाचलकी वायुसे उद्दीप्तहुई विरहाग्नि किस को दुस्सह नहींहोतीहै ४७ गोमुखके यह वचन सुनकर नरवाहनदत्त अकस्मात् कुछ उदासीनसा होगया (किसीहेतुके विनाही प्रसन्नहुआ अथवा खिन्नहुआ महात्माओं का अन्तःकरण भावी शुभाशुभको सूचित करताहै) उस दिनके व्यतीत होजानेपर नरवाहनदत्त संध्योपासनकरके शयनस्थान में सोया पिछलीरात्रिको उसे यह स्वप्नदिखाई दिया कि महाराज उदयन् को कोई काली स्त्री दक्षिण दिशामें घसीटे लिये जाती है यह स्वप्न देखके जगकर उसने सन्देह युक्तहोकर प्रज्ञप्तिनाम विद्याका स्मरणकरके उससे पूंछा कि मेरे पिताका क्या वृत्तान्त है वह बताओ उसके यहवचन सुनकर वह विद्या रूप धारणकरके बोली कि एकदिन तुम्हारे पिताने उज्जयिनी से आये हुए एकदूतसे सुना कि राजा चण्डमहासेन मरगया और रानी अंगारवती उसके साथ सतीहोगई दूतके वचन सुनके वह पृथ्वीपर शोकसे व्याकुलहोके मूर्च्छितहो गिरपड़ा थोड़ेही कालके पीछे चैतन्यहोकर उसने रानी वासवदत्ताके साथ अपने सास श्वशुरका बड़ा शोककिया और मंत्रियोंके इसप्रकार समझानेसे कि इससंसारमें कोई वस्तु स्थिर नहीं है राजा चण्डमहासेन शोककरनेके योग्य नहीहै क्योंकि आप उसके जामाता गोपालक उसका पुत्र और नरवाहनदत्त उसका दौहित्रहै, उनको तिलांजलिदी और वहीं रहतेहुए अपने साले

गोपालकसे कहा कि तुम उज्जयिनीको जाओ और अपने पिताके राज्यका पालनकरो उसके वचन सुनकर गोपालकने रोके कहा कि मैं आपको और अपनी बहिनको छोड़कर यहां से जाना नहीं चाहताहूं क्योंकि मै अपने पितासे शून्य उसपुरीको नहीं देखना चाहताहूं इससे मेरा छोटा भाई पालकही राज्य करे उसके यहवचन सुनके महाराज उदयन्ने रुमरवान्को उज्जयिनी भेजकर पालकको राज्य दिलवा दिया और अपने यौगन्धरायण आदि मंत्रियोंसे कहा कि इस असार संसारमें सम्पूर्ण पदार्थ अन्त में नीरसहैं हमने बहुत दिन राज्य किया शत्रुओंको जीता और पुत्रको विद्याधरोंके चक्रवर्त्ती पदपर देख लिया इससे अधिक क्याहोगा अब हमारी अवस्था व्यतीतहोगई वृद्धावस्थावालों को पकड़के हमें मृत्युको देनाचाहतीहै सब शरीर शिथिलहोगया इससे कालिञ्जर पर्व्वतपर जाके इस नश्वर शरीरका त्यागकरके परमपदका साधन करना चाहिये उसके यहवचन सुनकर रानी वासवदत्ता पद्मावती तथा यौगन्धरायण मन्त्री इनसबने कहा कि हे स्वामी आपको जैसा श्रेष्ठ समझ पड़े वह कीजिये हमभी आपके साथ चलकर परमपदको प्राप्तहोंगे उनके वचन सुनके महाराज उदयन्ने गोपालकसे कहा कि तुम मुझको नरवाहनदत्तके समान प्रियहो इससे तुम कौशाम्बीका राज्यकरो यहसुनकर गोपालकने कहा कि जो आपकी गतिहोगी वही मेरीभी गतिहोगी मैं आपके विना यहां नहींरहूंगा उसके यह हठयुक्त वचन सुनके महाराज उदयन्ने बनावटका कोपकरके कहा क्या तुम अभीसे स्वाधीनहोगये मेरे कहनेपर तुमने कुछ भी ध्यान नहींकिया यहसुनकर गोपालकने अपने चित्त में वनजाने का निश्चय करके उसकी आज्ञा ऊपरके चित्तसे स्वीकारकरली तब महाराज उदयन् उसे राज्य देकर और रोतीहुई सम्पूर्ण प्रजाओं को समझाके रानी वासवदत्ता पद्मावती तथा यौगन्धरायण आदि मंत्रियों को साथ लेके हाथीपर चढके कालिञ्जर पर्व्वतपरगया वहां श्री शिवजी को प्रणामकरके और अपनी घोषवती वीणाको हाथमें लेकर अपने सम्पूर्ण साथियों समेत प्राणदेनेके लिये शिखरपरसे कूदा कूदतेही देवताओंके दूत उसे विमानपर चढाके सब साथियों समेत स्वर्गको लेगये विद्याके यहवचन सुनकर नरवाहनदत्त हाय तात यहकहकर मूर्च्छितहोके पृथ्वीपर गिरपड़ा क्षणभरमें मूर्च्छा से जगके अपने माता पिताका शोककरके रोदन करनेलगा उसके रोदन को सुनकर गोमुखादि मन्त्री भी वहां आके और सब वृत्तान्त पूंछके अपने २ पिताओंका शोककरनेलगे उससमय सम्पूर्ण विद्याधरों ने तथा धनवती ने नरवाहनदत्त से कहा कि हे स्वामी आप इसक्षणभंगुर संसारके स्वरूपको जानकरभी क्यों ऐसे मोहित होतेहो महाराज उदयन् शोककरनेके योग्य नहींथे जिनके आपसरीके चक्रवर्त्ती पुत्रहो, उनके इस प्रकार समझाने से उसने अपने पितरो को तिलांजलि देकर फिर उस विद्या से पूंछा कि मेरा मामा गोपालक कहां है और मेरे पिताके परलोक जानेके उपरान्त उसने क्याकिया यहसब वर्णनकरो यह सुनकर विद्याने कहा कि महाराज उदयन्के चलेजानेके उपरान्त गोपालक उज्जयिनी से अपने छोटे भाई पालकको बुलाकर कौशाम्बीकाभी राज्य उसे देकर असित गिरिपर कश्यपजी के आश्रममें तपकरने को चलागया अभीतक वह वहीं तपकररहाहै विद्याके यह वचन सुनके नरवाहनदत्त अपने मामा

के देखनेके निमित्त संपूर्ण परिकर समेत विमानपर चढ़के असित गिरिपर गया वहां विमान से उतर कर उसने कश्यपजीके आश्रमको देखा वह आश्रम पक्षियोंके शब्दोंसे मानों पथिकों से स्वागत पूछ रहाथा और हवनके धुंएंसे मानों तपस्वियोंको स्वर्गका मार्ग बतारहाथा वहां मुनियों के मध्य में मूर्त्ति मान् शमके समान बैठेहुए अपने मामा गोपालकको उसने देखा गोपालकने भी उसे देखकर उठके अपनी गोदीमें उसे उठा लिया परस्पर मिलकर वह दोनों अपने २ माता पिताओंका स्मरणकर २ के वहां रोदन करनेलगेठीकहै (स्वजनालोकवातेद्धोदुःखाग्निः कन्नतापयेत्) स्वजनके दर्शनरूपी वायु से दीप्तहुई दुःखाग्नि किसको नहीं संतप्तकरती है उन दोनोंके रोदनसे पशु पक्षियोंको भी दुखित देख कर कश्यपादिक मुनियों ने समझाकर उन्हें सावधान किया इसके उपरान्त नरवाहनदत्तने वह दिन वहीं व्यतीत करके दूसरे दिन अपने मामागोपालकसे कहा कि हेमामा आप चलकर हमारे ऐश्वर्य्यमें निवास करिये उसके वचन सुनकर गोपालकने कहा कि हेवत्स तुम्हारेदर्शनसेही मुझे सवसुखहोगया अव जो तुमको मुझपर कुछस्नेहहै तो यह जो वर्षाऋतु आगई है इसे इसी आश्रममें व्यतीतकरो गो-पालकके यहवचनसुनकर नरवाहनदत्तने अपने परिकरसमेत वर्षाऋतुमें वहींरहना स्वीकारकिया १०६॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांसुरतमंजरीलम्बकेप्रथमस्तरङ्गः १॥

इसके उपरान्त असित पर्व्वतपर सभामें बैठेहुए नरवाहनदत्तसे सेनापतिने कहा कि हेस्वामी आ-जरात्रि को मैंने अपने महलपर से देखा कि एक दिव्यपुरुष एक सुन्दरस्त्री को हरेलिये चलाजाताथा और वहस्त्री हाय आर्यपुत्र हाय आर्यपुत्र यह कहके रोती चलीजातीथी उसके आर्त्तशब्दको सुनकर मैंने उसपुरुषसे कहा कि हे पापी तू पराई स्त्री को हरकर कहां लिये जाता है राजा नरवाहनदत्तके ६४ हजारयोजन राज्यमें पशु पक्षीभी पाप नहीं करते हैं तो अन्योंकी क्या गणनाहै यहकहके मैंनेदौड़कर उसे आकाश से उतारलिया और उतारकर जो मैंने देखा तो वह आपकी महाराणी मदनमंचुका का भाई इत्यक था जो मदनवेगसे कलिंगसेनामें उत्पन्नहुआ है मैंने उससे पूछा कि यह कौन स्त्रीहै और तुम कैसे इसको हरेलिये जाते हो मेरे वचन सुनके उसने कहा कि यह मतंगदेव विद्याधरकी सुरतमं-जरीनाम पुत्रीहै इसकी माताने पहलेही मुझे इसका वाक्‌दान करदियाथा फिर इसके पिताने इसका किसी मनुष्यके साथ विवाह करदिया इससे आजजो इसेप्राकर मैं हरेलिये जाताहूं इस में मेरा कौन अपराधहै इत्यकके यह वचनसुनके मैंने उसस्त्रीसे पूछा कि हेआर्य्ये किसके साथ तुम्हारा विवाह हुआहै और यह किसप्रकार तुमको पकड़ लायाहै मेरे वचन सुनकर उसने कहा कि उज्जयिनी में पालकना-मराजाहै उसके अवन्तिवर्धननाम पुत्रहै उसीके साथ मेरा विवाह हुआहै आज मेरे पतिके सो जानेपर यह पापी मुझे हरलायाहै उसके यह वचनसुनकर मैंने उन दोनोंको अपने यहां रखछोड़ाहै अब आप जैसा उचित समझिये वैसा कीजिये सेनापतिके यह वचन सुनकर नरवाहनदत्तने गोपालकसे यह सब वृत्तान्त कहा यह सुनकर गोपालकने कहा कि मेरे आगे पालकके पुत्रका विवाह नहीं हुआथा अब चाहै उसका विवाह होगयाहो उज्जयिनी से भरतरोहनाम मंत्री समेत उसे बुलाओ तो निश्चयहोजाय

गोपालकके यह वचन सुनकर नरवाहनदत्तने धूमशिखनाम विद्याधरको भेजके उज्जयिनीसे भरतरोह मंत्री समेत अपने मामाके पुत्रको बुलवाया और धूमशिखके साथ आयेहुए उनदोनोंको प्रणामकरते देखकर बड़े आदरपूर्व्वक उनको बैठालकर और इत्यक तथा सुरतमंजरीको भी वहीं बुलवाकर सब के आगे भरतरोह तथा अवन्तिवर्धन से वह सब वृत्तान्त कहके कहा कि तुम सुरतमंजरी के विवाहका सब वृत्तान्त यथावत् कहो उस के वचन सुनकर भरतरोहने कहा हेस्वामी सुनिये मैं सब वृत्तान्त कहता हूं एक दिन उज्जयिनी में राजा पालकसे सब पुरवासियों ने आकरकहा कि हे स्वामी आज के दिन इसपुरी में उदकदान नाम एक मेला हुआ करता है इसका हेतु जो आपको न मालूम होय तो सुनिये पूर्व्वसमयमें आपके पिता चण्डमहासेनने उत्तम खड्ग तथा श्रेष्ठ स्त्रीपाने के लिये तप करके भगवतीको प्रसन्न किया प्रसन्नहुई भगवतीने अपना खड्ग देकर उससे कहा कि हे पुत्र तुम इस खड्गको लो थोड़ेही कालमें अंगारक नाम दैत्यको मारकर उसकी अत्यन्त रूपवती अंगारवती पुत्री तुम पाओगे उसीके साथ अपना विवाह करलेना भगवती से इस वरदानको पाकर राजा चण्डमहासेन अंगारवती की प्राप्तिके लिये बड़ा उत्कण्ठितरहा इस बीचमें उज्जयिनीपुरी में जो कोई नगराधिपहोताथा उसे कोई जीव रात्रिके समय खा जाताथा इस बातके तत्त्वके जाननेके लिये राजा चण्डमहासेन एकदिन आप ही रात्रिके समय पुरी में भ्रमण करनेको निकला भ्रमण करते २ उसने एक लम्पट पुरुषको देखकर उस का शिर काटलिया शिर काटतेही एक राक्षसने आकर खानेके लिये उसका धड़ ले लिया उस राक्षसको देखकर राजा चण्डमहासेनने यहजानकर कि यही मेरे नगराधिपों को खाजाताहै उसके बाल पकड़कर उसका शिर काटना चाहा तब उस राक्षसने कहा कि हे राजा मुझे व्यर्थ न मारो तुम्हारे नगराधिपों का खानेवाला कोई औरही है उसके वचन सुनकर राजाने पूछा कि वह कौनहै उसने कहा कि अंगारक नाम दैत्य अर्धरात्रिके समय आपके नगराधिपोंको मारकर खाजाया करताहै और राजकन्याओंको हर ले जाकर अपनी कन्याकी सखी बनाताहै उसके यह वचन सुनके राजा उसे छोड़कर अपने मन्दिर में चला आया और एकदिन शिकार खेलनेको गया वहां एक महाभयंकर शूकरको देखकर यह अनुमान करके कि यह अंगारक नाम दैत्यहै उसे बाणोंसे मारता हुआ उसके पीछे दौड़ा वह शूकर उनबाणोंको सहकर एक गुफामे घुसगया राजाभी उसीके पीछे गुफामे चला गया वहां वह शूकर तो नहीं परन्तु एक दिव्य पुर उसे दिखाई दिया वहां एक बावड़ीके तटपर बैठके उसने एक अत्यन्त रूपवती कन्या देखी उस कन्याने उसके निकट आके उससे आगमनका सब वृत्तान्त पूछके गद्गद वचन होके कहा कि हाय तुम किस विपत्ति में आगये वह जो शूकर तुमने देखाथा वह अंगारक नाम महाबलवान् दैत्यहै उसका संपूर्ण शरीर वज्रमयहै वह इस समय सोरहाहै जगकर न जाने तुम्हारी क्या दशा करेगा मैं उसकी अंगारवती नाम पुत्रीहूं तुमको देखकर मुझे बड़ा खेदहो रहाहै उसके यह वचन सुनके राजाने भगवतीके वरदान को स्मरण करके प्रसन्न होकर उससे कहा कि जो मुझपर तुमको स्नेहहै तो जब तुम्हारा पिता जगे तब तुम उसके पास बैठकर रोनेलगना और जब वह रोनेका कारण पूछे तो तुम कहना कि जो तुम्हें कोई

मारडाले तो मेरी क्या दशा होगी इसी शोचमें मैं रोतीहूं इसयुक्ति से हमारा तुम्हारा दोनों का कल्याण होगा राजाके यह वचन सुनके वह अपने पिताके पास जाकर जब वह जगा तो रोनेलगी और पूछने पर राजाका बतायाहुआ रोदनका कारण कहदिया तब उस दैत्यनेकहा कि मेरा सम्पूर्ण शरीर वज्रका है मुझे कौन मारसक्ताहै और जो मेरे बायेंहाथमें मर्म है वह धनुषसे बचारहताहै उसके यहवचन राजा ने एकान्तमें छिपकर सुनलिये और जब वह दैत्य स्नानकरके श्री शिवजीका पूजन मौनहोकर करने लगा तब राजाने उसके सन्मुखजाके कहा कि तुम मेरे साथ युद्धकरो तब उस दैत्यने दक्षिण हाथमें के पूजनमें व्यग्रहोने के कारण बायां हाथ उठाकर इशारे से कहा कि जरादेर ठहरजाओ राजाने उसी समय उसके मर्म में ऐसा बाणमारा कि वह पृथ्वी में गिरपड़ा और यह वचनबोला कि जिसने मुझप्यासे को माराहै वह जो प्रतिवर्ष मेरा तर्पण नहीं करेगा तो उसके पांच मन्त्री हर वर्ष मरजायंगे यह कहके उस दैत्यके मरजानेपर राजा चण्डमहासेनने अंगारवतीकोलेके उज्जयिनी में आकर विवाहकरके प्रति वर्ष अंगारकासुरका तर्पण किया इसी से यहां के सबलोग उस दिन उदकदाननाम महोत्सव करनेलगे आज वही दिनहै इससे आपको भी महोत्सव करना उचितहै प्रजाओं के यह वचन सुनकर राजा पालकने पुरीभर में जलदानोत्सव करनेकी आज्ञादेदी ६१ उस महोत्सव में सम्पूर्ण पुरवासियों के व्यग्र होनेपर अकस्मात् एक उन्मत्त हाथी जंजीरतोड़कर भागा उसके पकड़ने के लिये बहुतसे हाथीवान् तथा पुरवासी उसके पीछेदौड़े परन्तु कोई भी उसे न रोकसका क्रमसे दौड़ताहुआ वह हाथी चांडालों के मुहल्ले में पहुंचा वहां लोगोंकी दृष्टिको अतिआनन्द देनेवाली एक महासुन्दर चांडालकी कन्या ने अपने घरसे निकलकर अपने हाथसे उस हाथी को ठोंका इससे वहहाथी मोहितहोकर उसीकी ओर देखकर वहीं रुकगया तब वह कन्या उसके दांतों में डुपट्टाडालके झूलनेलगी उस चमत्कारको देखकर सम्पूर्ण पुरवासियों ने कहा कि यह कोई दिव्य कन्याहै जिसने अपने प्रभावसे पशुओंको भी वशकर लियाहै इतने में इस वृत्तान्तको सुनकर यह कुमार अवन्तिवर्द्धन भी वहां गया वहां इसका चित्तरूपी हरिण कामदेवरूपी बहेलिये के बन्धनरूपी उस कन्यासे बँधगया और वह कन्याभी इसे देखकर इसपर आसक्तहोके हाथी के दांतोंपरसे अपना डुपट्टा उतारकर अपने घर चलीगई तब हाथीवान् उस हाथी को गजशाला में लेगया और कुमार अवन्तिवर्द्धन भी अपने घरको चलाआया वहां इसने अपने मित्रोंसे पूछा कि तुम जानतेहो वह कन्या किसकी है उन्होंनेकहा कि उत्पलहस्तनाम चांडालकी वह सुरतमंजरीनाम कन्याहै उसका अत्यन्त मनोहररूप सज्जनों के दर्शनके योग्यहै परन्तु स्पर्शके योग्य नहीं है यह सुनकर अवन्तिवर्द्धनने उनसे कहा कि मैं जानताहूं वह कोई दिव्यस्त्री है चांडालकी कन्या नहीं है क्योंकि चांडालकी कन्याका ऐसा स्वरूपनहीं होसक्ता इससे जो वहकन्या मुझे न मिलेगी तो मेरा जीना व्यर्थ है अपने मित्रोंसे यह कहकर यह बहुत व्याकुलहुआ इसकी व्याकुलताको सुनकर रानी अवन्तिवती तथा राजा पालक दोनों बड़े सन्देहमें पड़े रानी अवन्तिवती ने कहा कि मेरा पुत्र राजवंशमें उत्पन्नहोकर चांडालकी कन्यापर क्यों आसक्तहुआहै यह सुनकर राजा पालकने कहा कि

मेरे पुत्रका चित्त जो उसपर चलायमानहुआ है इससे मालूमहोताहै कि वह यथार्थ में चांडाल कन्या नहीं है क्योंकि ऐसे कार्य्योंमें सज्जनलोगोंकी चित्तवृत्तिही प्रमाण होतीहै इस विषयपर मैं तुमको एककथा सुनाताहूं पूर्व्वसमयमें राजाप्रसेनजित्के सुप्रतिष्ठितनाम नगरमें कुरंगीनाम एक अत्यंत रूपवती राजपुत्री कन्या रहती थी एकसमय उपवनमें गईहुई उस कन्याको कहीं से आयेहुए एक मतवाले हाथी ने अपने दांतोंपर उठालिया इससे उसके सबसाथी हाय २ करकें भगे इतनेमें एक चाण्डालके पुत्रने आकर खड्गके प्रहारसे हाथी की सूंड़ काटकर उस कन्याको बचालिया तब उसके सब साथी आकर उस कन्याको घरको लेगये घर में जाकर वह कन्या यह शोचनेलगी कि वह मेरी रक्षाकरनेवाला कै तो मेरा पतिहोगा अथवा विरह क्लेशसे मेरा मृत्युकारीहोगा और उस चांडालके पुत्रने अपने घरमें जाकर उसी कुरंगीनाम कन्या का स्मरणकरके यह शोचा कि कहां तो मैं अन्त्यज और कहां वह राजकन्या कौएके साथ राजहंसी का समागम कैसे होसक्ताहै यह हास्यकारी अपने चित्तकी बात न किसी से कहसक्ताहूं और न छिपाही सक्ताहूं यह शोचकर उसने रात्रिके समय श्मशानमे जाकर चितालगाके अग्निबलाकर यहप्रार्थनाकी कि हेअग्निदेव मैं आपमे अपनेशरीरका हवनकरताहूं इससे दूसरेजन्ममें राजपुत्री कुरंगी मेरीस्त्रीहोय यह कहके जैसेही उसने चितामें कूदनाचाहा वैसेही अग्निदेवने प्रकटहोकरकहा कि हेपुत्र साहस मतकरो वहराजपुत्री तुम्हारी स्त्रीहोगी तुम चाण्डाल नहीं हो इसनगर में कपिलशर्मानाम एकब्राह्मण रहताहै उसके अग्निकुंड में मैं प्रत्यक्ष होकर सदैव रहताहूं एकसमय उसकी कन्याको देखकर रूपके लोभ से वरदानदेके उसके दोषको मिटाके उसके साथ मैंने रमण किया उसी समय मेरे अमोघ वीर्य से तुम उत्पन्नहुए तुम्हारी माताने लज्जासे तुमको लेके गलीमें फेंकदिया वहां से चांडालोंने लेजाकर तुमको पाला इसप्रकार तुम ब्राह्मणीके गर्भसे उत्पन्न मेरे पुत्रहो तुमको वह कुरंगी अवश्य मिलैगी यह कहके अग्निदेव अन्तर्द्धान होगये और वह चांडाल अपने घरको चलागया तदनन्तर स्वप्नमें अग्निदेवकी आज्ञापाके राजा प्रसेनजित् ने चांडाल के साथ कुरंगीका विवाह करदिया इसप्रकारसे हे रानी इस संसारमें बहुतसे दिव्यजीव छिपेहुए रहतेहैं इससे यह सुरतमंजरी भी कोई दिव्यस्त्रीहै राजाके यह वचन सुनकर मैंने कहा कि हे स्वामी आपका कथन बहुतठीकहै मैंभी इसी विषयपर आपको एक कथा सुनाताहूं राजगृहनाम नगरमे मलयसिंह नाम एक राजाथा उसके मायावती नाम अत्यन्त रूपवती एक कन्याथी एकसमय उस कन्याको उपवन में क्रीड़ा करतेदेखकर किसी धीवरकासुप्रहार नाम पुत्र काम के वशीभूत होगया और अपने घरमें जाकर मछलियों का पकड़ना आदि अपना कर्मछोड़कर शय्या परलेटके उसीका स्मरण करनेलगा और अपनी रक्षितिका नाम माताके पूछनेपर उसने अपना अभिप्राय कहदिया तब रक्षितिकाने कहा कि हेपुत्र तुम खेद न करो युक्तिपूर्व्वक मैं तुम्हारा मनोरथ सिद्ध करदूंगी अपनी माता के यह वचन सुनके उसने सावधान होकर भोजन किया और वह रक्षितिका बहुत उत्तम २ मछली लेकर राजपुत्री के यहां गई और राजपुत्री को मछलियों की भेटदेकर चली आई इसप्रकार से वह प्रतिदिन मछलियां लेकर राजपुत्रीके यहां जातीरही एकदिन राजपुत्रीने बहुत

प्रसन्न होकर उससे कहा कि बता तू क्या चाहती है तेरा दुष्कर कार्य्य भी मैं करदूंगी यह सुनकर रक्षितिकाने एकान्त में जाकर उससे कहा कि मेरापुत्र उद्यानमें तुमको देखकर तुम्हारे ऊपर आसक्त होगया है और तुम्हारा स्मरण करके अत्यन्त व्याकुल पड़ा रहताहै मैंने तुम्हारे मिलनेकी उसे आशादी है इससे जो तुम मेरे ऊपर प्रसन्नहो तो उसका आलिंगन करके उसके प्राणोंकी रक्षाकरो उसके यह वचन सुनके राजपुत्री ने क्षणभर विचार करके कहा कि रात्रिके समय तुम छिपाकर अपने पुत्रको मेरे यहां लाना उसके वचन सुनके रक्षितिका बहुत प्रसन्नहोकर अपने घरको चलीगई और रात्रिके समय अपने कुम्हार पुत्रको राजपुत्री के यहां लेगई वहाँ राजपुत्री ने हाथ पकड़कर उसे अपने पलंगपर बैठालिया और मधुर२ वचनकहके उसे सावधान किया राजपुत्री के हाथके स्पर्श से वह अत्यन्त प्रसन्नहोकर उसीसमय सोगया और उसे सोया देखकर वह राजपुत्री वहां से उठकर अन्यस्थानमें जाकर सोगई क्षणभरके उपरान्त कुम्हार जगकर अपनी प्रिया राजपुत्रीको न देखकर अत्यन्त व्याकुलहोके मिलीहुई निधिके खोजाने से दरिद्री के समान बहुत दुखितहोकर मरगया थोड़ेही कालकेपीछे राजकन्या वहां आके उसेमरा देखकर अपनी बहुत निन्दाकरके प्रातःकाल उसके साथ सती होनेको उद्यतहुई इसवृत्तान्तको सुनके राजामलयसिंहने वहांआकर अपनी कन्याको निवारण करनेमें असमर्थ होकरकहा कि जो मैं सत्य२ श्रीशिवजीका भक्तहूं तो इससमय मुझे जैसा करना उचितहोय वह लोकपाल बतावैं राजाके इसप्रकार कहतेही यह आकाशवाणीहुई कि हे राजा यह तुम्हारी पुत्री इस कुम्हारकी पूर्व जन्मकी स्त्रीहै नाकस्थलनाम ग्राममें महीधर नाम ब्राह्मण के बलधरनाम एकपुत्रथा वह अपने पिताके मरजानेपर निर्द्धन होकर अपनी स्त्रीको साथलेके श्रीगंगाजी के तटपर निराहारहोकर प्राणदेनेको बैठा कुछ दिनों के उपरान्त धीवरों को वहां मछलीखाते देखकर उसका भी चित्त मछली खानेकोहुआ इससे वह अपने चित्त में भ्रष्टहोकर दो तीनादिनके उपरान्त मरगया और उसकी शुद्ध स्त्रीभी उसीकेसाथ सतीहोगई चित्तके दोषसे वही ब्राह्मण धीवरके यहां यह उत्पन्न हुआ है और उसकी स्त्री तुम्हारी पुत्रीहुई है इससे इसको तुम्हारी पुत्री अपनी आधीआयु देकर जिलावे इसके पुण्यके प्रभावसे पवित्रहोकर यह आपका जामाताहोकर राजा होजायगा इस आकाशवाणी को सुनकर राजाने अपनी पुत्री से आधीआयुदान के देनेका संकल्पकराके उस धीवरको जिलाकर उसीकेसाथ उसका विवाह करदिया और बहुत से गांव हाथी धनआदि पदार्थ देकर उसे अपने समान राजा बनालिया इसप्रकार से बहुधा मनुष्यों का प्राक्तन संस्कारसे स्नेहहुआ करताहै इसी विषयपर मैं आपको एक चोरकी कथा सुनाताहूं पूर्व्व समयमें अयोध्यापुरीमें वीरबाहुनाम बड़ा धर्मात्मा राजाथा एकसमय पुरवासियों ने आकर उसराजासे यह प्रार्थना करी कि हे स्वामी इस नगरी में नित्य प्रति चोरलोग चोरियां करते हैं और हमलोग रात्रिभर जागते भी रहते हैं परन्तु वह लक्षित नहींहोते पुरवासियों के यहवचन सुनके राजाने बहुतसे गोयन्दोंको उनचोरों के ढूंढ़नेको नियत करदिया परन्तु उनको भी चोर नही मिले और उपद्रवभी शान्त न हुआ इससे वह राजा आपही चोरोंके ढूंढ़नेको रात्रिकेसमय खड्गलेकर निकला घूमते२ उसने परकोटेपर एकपुरुषको

बहुत धीरे २ चलते देखा वहपुरुष ऐसे धीरे२ पैररखताथा कि उसका शब्द नहीं सुनाईदेताथा और मुंह फेर२कर वह पीछेकी ओर देखता चलाजाताथा और नंगीतलवार बांधेहुएथा उसे देखकर यह जानकर कि यही चोर मेरी नगरीमें नित्यचोरी करताहै राजा उसकेपास गया उसने राजासेपूंछा कि तुम कौन हो राजाने कहा कि मैं तो चोरहूं तुम कौनहो यहसुनकर उसचोरने कहा कि मैं भी चोरहूं तुम मेरे यहां चलो तो मैं तुमको बहुतसा धनदूं उसके यह वचन सुनके राजा उसीके साथ वनमें एक गुफाके भीतर गया उसगुफाके भीतर उसचोरका बड़ा दिव्य गृहबनाथा वहां बाहरकी ओर राजाको बैठा कर वहघरके भीतर चलागया उससमय एकदासीने आकर राजासेकहा कि तुम इसकालकेमुखमें कैसे आगयेहो यह विश्वासघाती भीतरसे निकलकर तुमको मारडालेगा उसके वचन सुनकर राजाने शीघ्रही वहांसे अपनी पुरीमें आकर सेना साथ लेकर उसकी गुफाजाकर घेरली और योद्धाओंके द्वारा उसे पकड़वाकर उसे अपनी नगरी में लाके शूलीपर चढ़ाने की आज्ञादी राजाकी आज्ञासे घातकलोग उसे बाजारमें घुमाकर मारनेकेलिये लेचले मार्गमें उसे एक वामदत्ता नाम वैश्यपुत्री ने देखकर अपने पितासे कहा कि हे तात यह जो चोर शूलीपर चढानेकेलिये जाताहै वह जो मेरापति न होगा तो मैं अपने प्राणदेदूंगी अपनी पुत्रीके यह हठपूर्व्वक वचन सुनकर उस वैश्यने राजाके यहां जाके करोड़ अशर्फी देकर उसे बचानाचाहा परन्तु राजाने उसके वचन न मानके क्रोधसे उसीसमय चोरको फांसीपर चढ़वादिया तब वह वामदत्ता श्मशानमें जाके उसचोरके शरीरको लेकर अग्निमें भस्महोगई इसप्रकारसे प्राक्तन जन्मके सम्बन्धसे जिसको जो होनेवालाहै उसे कोई रोक नहींसक्ताहै इससे यह सुरतमंजरीभी अवन्तिवर्धनकी अवश्य स्त्री होगी हे स्वामी आप सुरतमंजरी के पिता उत्पलहस्तके पास दूत भेजकर कन्या मांगिये देखिये वह क्या कहता है मेरे यह वचन सुनकर राजा पालकने उत्पलहस्तके पास कन्या मांगने के लिये दूत भेजा दूतके वचन सुनकर उत्पलहस्तने कहा कि मैं राजपुत्र को कन्या तो देना चाहताहूं परन्तु मेरी यहप्रतिज्ञा है कि जो इसपुरके रहनेवाले अठारह हजार ब्राह्मण मेरे घरपर खिलावे उसे यह सुरतमंजरी कन्यादूंगा उसके वचन सुनके दूतों ने राजा से आकर कहे इस बात को सकारण जान के राजाने ब्राह्मणों को बुलाकर उनसे कहा कि तुम सब अठारह हजार ब्राह्मण मिलकर उत्पलहस्त के यहां भोजन करो राजा पालक के यह वचन सुनकर और चांडालके यहां खाना अनुचित समझकर वह सब ब्राह्मण महाकाल जी के मंदिर में तप करनेलगे दो तीन दिन के पीछे श्री शिवजीने स्वप्नमें उनसे कहा कि हे ब्राह्मण लोगो तुम उत्पलहस्तके घरपर निस्सन्देह भोजनकरो यह चांडाल नहीं है किन्तु विद्याधरहै श्रीशिवजीकी आज्ञापाके ब्राह्मणों ने राजासे यह सब वृत्तान्त कहा कि हे राजा यह उत्पलहस्त चांडालोंके मुहल्लेसे निकलकर अलग किसी गृहमेंरहे तो उसके यहां भोजन करेंगे ब्राह्मणोंके वचन सुनकर राजाने अन्य स्थानमें उत्पलहस्तको दिया और वहीं रसोई करनेवालों को भेजकर ब्राह्मणोंके योग्य भोजन बनवा दिये स्नान करके शुद्धवस्त्र पहनकर अठारहहजार ब्राह्मणोंको भोजनकरवाया और

देवी
कि मुझ
माद्रीरानी मे
रात्रि किसी राजाने
जा वह तुम्हें कुवलया-

जानेके उपरान्त राज सभामें आके प्रणामपूर्वक राजा पालकसे आकरकहा कि हे राजा विद्याधरोंके स्वामी गौरिमुण्ड नाम विद्याधरका मैं आज्ञावर्तीथा मतंगदेव मेरा नामहै जब मेरे यह सुरतमञ्जरीकन्या उत्पन्नहुई तो गौरिमुण्डने एकान्त में मुझ से कहा कि राजा उदयन के जो यह नरवाहनदत्त नाम पुत्र हुआ है उसे देवतालोग हम लोगों का भावी चक्रवर्ती बताते हैं इससे तुम जाकर पहले ही अपनी मायासे उसे मारडालो जिससे वह बचनेही न पावे गौरिमुण्डके यह वचनसुनके मैं आकाशमार्ग से नरवाहनदत्तके मारनेको चला मार्ग में मुझे श्री शिवजी मिलगये उन्हों ने क्रोधकरके मुझे यह शाप दिया कि हे पापी तू निरपराधी महात्माके साथ पाप करना चाहताहै इससे तू अपनी स्त्री तथा पुत्री समेत इसी शरीरसे उज्जयिनी में जाकर चांडालहोजा जब कोई तेरीकन्या के निमित्त तेरे स्थानपर अठारह हजार ब्राह्मणोंका भोजन करावेगा तब तू इस शापसे छूटेगा और उसी को तू अपनी कन्या देदेना यह कहकर श्री शिवजीके अन्तर्द्धान होजानेपर मैं इस पुरी में अपनीस्त्री तथा पुत्री समेत आकर उत्पलहस्तनाम चाण्डाल होकररहा इससमय आपके पुत्रकी कृपासे मेराशाप छूटगया इससे मैंने अपनी यह सुरतमंजरी कन्या उसेदेदी अब मैं अपने चक्रवर्ती नरवाहनदत्तकी सेवाके निमित्त अपने स्थानको जाताहूं यह कहके वह कन्या देकर अपनी स्त्री समेत आकाश में उड़कर आपकेपास चला आया तब राजा पालकने सब तत्त्वकोजानके अति प्रसन्नहोकर सुरतमंजरी के साथ इस अवन्तिवर्धन का विवाह किया और यहभी विद्याधरी स्त्रीको पाकर बहुत प्रसन्नहुआ एकदिन यह महलपर अपनी प्रियासमेत सोया और थोड़ेही कालके पीछे उठकर इसने अपनी प्रियाको न देखा उससमय सुरतमंजरी को ढूंढ़के उसे न पाकर यह ऐसा व्याकुलहुआ जिससे राजा पालकभी इसकी विकलताको देखकर अत्यन्त व्याकुलहोगया तब हम लोगोंने कहा कि इसपुरीकी ऐसी रक्षाकीजातीहै जिससे रात्रिमें कोई भी अपरिचित यहां नहींआसक्ता इससे मालूमहोताहै कि कोईपापी आकाशचारीसुरतमंजरीको हरले गयाहै हम लोगोंके इस प्रकार कहतेही आपका भेजाहुआ धूमशिखनाम विद्याधर जाकर राजापालक से सब वृत्तान्त कहकर मुझसमेत कुमार अवन्तिवर्द्धन को आपके पासलेआया यहां सुरतमंजरी तथा उसका पिता मतंगदेवभी स्थित है और सब वृत्तान्त भी आपने सुन लिया अब जैसा उचित जानिये सो कीजिये इसप्रकार कहके भरतरोहके निवृत्त होजानेपर सभासदों ने नरवाहनदत्त के आगे मतंगदेवसे पूछा कि तुमने सुरतमंजरी किसको दीथी यह सुनकर मतंगदेवने कहा कि मैंने अवन्तिवर्धनको दीथी उसके वचन सुनके सभासदोंने इत्यकसे पूछा कि तुम इसको एकान्तमें पाकर क्यों उठाये लिये जातेथे यह सुनकर इत्यकने कहा कि इसकी माताने पहलेही इसका विवाह मेरे साथ करने को कहाथा इसीसे मैं इसे अकेले में पाकरलिये जाताथा उसके वचन सुनके सभासदों ने कहा कि जिसका पिता जीताहोय उसकी माताको कन्याके देनेका कुछ अधिकार नहीं है और इस बातका भी तुम्हारेपास कोई साक्षी नहीं है कि इसकी माताने तुम्हें इसे देनेकहाथा इससे तुम इसपरस्त्रीकेहरने के अपराधीहो सभासदों के यहवचन सुनकर नरवाहनदत्तने उसके वधकी आज्ञादेदी तब कश्यपादिक मुनियोंने कहा कि हे

राजा इसके एक अपराधको क्षमाकरो क्योंकि यह मदनवेग का पुत्र तुम्हारा सालाहै मुनियों के यह वचन सुनके नरवाहनदत्तने उसे बहुत धिक्कारी देकर छोड़दिया और भरतरोह तथा सुरतमंजरी सहित अवन्ति वर्धनको वायुपथ के द्वारा उज्जयिनी भिजवादिया, २३४ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांसुरतमंजरीलम्बकेद्वितीयस्तरंगः २॥

इसप्रकार असित पर्व्वतपर इत्यकसे सुरतमंजरी को छुटवाकर सभामें बैठेहुए नरवाहनदत्त से कश्यपऋषिने कहा कि हे राजा तुम्हारे समान चक्रवर्त्ती न हुआ है और न होगा क्योंकि ऐसा अधिकार पाकरभी तुम्हारे चित्तमें पक्षपात नहीं है वह धन्य पुरुष हैं जो तुमको नित्य देखते हैं पूर्व्वसमयमें ऋषभकआदि बहुतसे चक्रवर्त्ती हुएहैं परन्तु उनमें बहुत ऐसे दोषथे इसीसे वह नष्टहोगये ऋषभक, सर्वदमन, तथा बन्धुजीवक यहतीनों बड़े अभिमानी थे इसीसे इनको इन्द्रने मारडाला जीमूतवाहन भी जब चक्रवर्त्तीहुआथा तो उससे महर्षि नारदने पूंछा था कि तुम चक्रवर्त्ती कैसेहुए हो नारद के वचन सुनकर उसनेकहा था कि मैंने कल्पवृक्षका दानकिया और अपने शरीरका परोपकारकेलिये त्यागकिया इसीसे चक्रवर्त्ती हुआहूं इसप्रकार अपने पुण्यके कहने से वह अपने चक्रवर्त्ती पदसे भ्रष्टहोगया और विश्वान्तरनाम जो चक्रवर्त्तीहुआ था उसके पुत्रको चेदिदेश के राजावसन्ततिलक ने अपनी स्त्री के भ्रष्ट करनेके अपराध से मारडाला उसी शोक से विश्वान्तर अधीर्य्य होके अपने पदसे भ्रष्टहुआ एक तारावलोक मनुष्य होकर भी पुण्यके प्रभाव से विद्याधरों का चक्रवर्त्ती होकर निर्दोषहोने के कारण बहुत दिनतक राज्यका भोग करके अन्त में वैराग्यसे राज्यको त्यागकर तपोवनको चलागया इसी प्रकार से प्रायः विद्याधर लोग अत्यन्त अभिमानी होकर कुमार्ग में चलनेलगतेहैं और इसीसे भ्रष्टहो जाते हैं इससे तुम सदैव सुमार्गमें चलना और संपूर्ण विद्याधरोंको अधर्मसे बचाना कश्यपमुनिके इन योग्य वचनों को सुनकर नरवाहनदत्तने उनसे पूंछा कि हे भगवन् तारावलोक किसप्रकार से मनुष्य होकर विद्याधरों का चक्रवर्त्ती हुआ था यह सुनके कश्यपजी ने कहा कि पूर्व्वसमय में इस पृथ्वी पर चन्द्रावलोकनाम एक राजाथा उसके चन्द्रलेखानाम बड़ी प्यारी स्त्री थी और कुवलयापीड़नाम एकबड़ा बलवान् हाथीथा उसहाथीके बलसे राजाचन्द्रावलोकको कोई शत्रु नहीं जीतसक्ताथा उसराजाके वृद्धावस्थामें रानी चन्द्रलेखामें तारावलोकनाम एकपुत्रहुआ वह तारावलोक क्रमसे सब शास्त्रोंको पढ़कर युवाहुआ परन्तु उसके सब कार्य्य वृद्धोंकेसेथे वह सूर्य्यके समान अत्यन्त तेजस्वी था परन्तु अत्यन्त सौम्य मालूमहोताथा उसके शरीर भरमें चक्रवर्त्तियों के लक्षण थे राजा चन्द्रावलोक ने अपने पुत्रको सम्पूर्ण गुणोंसेयुक्त देखकर मद्रदेशके राजाकी माद्रीनाम कन्यासे उसका विवाहकरके युवराज पदवी उसे देदी युवराजपदवी पाकर तारावलोकने बहुतसे सदावर्त्त खोलदिये और यह नियम किया कि मुझ से जो कोई जौनसा पदार्थ मांगेगा मैं उसे वही दूंगा कुछ दिनो के उपरान्त तारावलोकके माद्रीरानी में दो पुत्र उत्पन्नहुए उनकानाम उसने राम लक्ष्मण रक्खा एकसमय तारावलोक के शत्रु किसी राजाने अपने ब्राह्मणोंसे कहा कि तुम जाकर तारावलोकसे कुवलयापीड़ हाथी मांगो जो वह तुम्हें कुवलया-

पीड़ हाथी देदेगा तो मैं उसीके वलसे उसे जीतलूंगा और जो न देगा तो उसका यश नष्टहोजायगा अपने राजा के वचन सुनकर ब्राह्मणों ने आकर तारावलोकसे कुवलयापीड़ हाथी मांगा ब्राह्मणों के वचन सुनके तारावलोकने शोचा कि इनब्राह्मणोंको हाथीसे क्या प्रयोजनहै मैं जानताहूं कि किसीने इनको मांगनेके लिये भेजाहै अच्छा जो चाहै सो होय इनको हाथी अवश्य देदेना योग्यहै यह शोच कर उनब्राह्मणोंको उसने वहहाथी देदिया ब्राह्मणोंको हाथी लेजाते देखके पुरवासियोंने राजाचन्द्रावलोकसे जाकर कहा कि तुम्हारापुत्र राज्यको त्यागे देताहै क्योंकि उसने सम्पूर्णराज्यका मूलकारण कुवलयापीड़ हाथीही ब्राह्मणोंको देदिया इससे तुम इसपुत्रको वनभेजदो या ब्राह्मणों से उसहाथीको फेर लो तो हम अन्य कोई राजा वनालें पुरवासियोंके वचनसुनकर राजा चन्द्रावलोकने तारावलोकके पास यहीसंदेशा प्रतीहारके द्वारा भेजदिया प्रतीहार के वचनसुनकर तारावलोकनेकहा कि हाथी तो मैंने ब्राह्मणोंको देदिया और मेरे पास ऐसी कोईवस्तु नहीं है जो अदेयहोय ऐसे पराधीनराज्यको लेकर मैं क्या करूंगा और विजलीके समान चंचल लक्ष्मीसे भी मुझे क्या प्रयोजनहै इससे मैं वनको चलाजाऊंगा मुझे जड़वृक्षोंमें रहना अच्छाहै परन्तु ऐसे पशुओंके समान मनुष्योंमें रहना उचित नहींहै यहकहकर वह अपनी स्त्री तथा पुत्रोंको साथ लेकर रोतेहुए ब्राह्मणोंको समझाकर अपने पुत्रोंके चढ़ानेके लिये केवल एकरथ लेकर वनको चला मार्ग में ब्राह्मणोंने उससे रथके घोड़े मांगे उन्हें वह घोड़े देकर आपही स्त्री समेत रथको घसीटताहुआ वनको चला कुछदूर जाकर एकब्राह्मणने उससे रथभी मांगा उसे वह रथभी देकर तारावलोक अपने पुत्र और स्त्री समेत किसीप्रकारसे तपोवन में पहुंचा वहां एकवृक्ष के नीचे कुटी वनाकर आनन्द से रहनेलगा वह तपोवन चंचललतारूपी चामरों से वृक्षों की छायारूपी छत्रोंसे शिलारूपी सिंहासनोंसे भ्रमरोंके गीतोंसे और अनेक प्रकारके फलोंसे उसदानवीरकी उनदिनों मानों वड़ीसेवाकरतारहा एकसमय फल पुष्प लेनेके निमित्त माद्रीकेवनान्तरमें जानेपर एकवृद्धब्राह्मण ने आकर तारावलोकसे वह दोनों राम लक्ष्मणनाम पुत्रमांगे ब्राह्मणकी याचनासुनकर तारावलोक ने शोचा कि इन वालकों के चलेजाने पर मैं किसीप्रकारसे अपनासमय व्यतीत करलूंगा इससे इसब्राह्मण का मनोरथ भंग न करनाचाहिये ब्रह्मा मेरे धैर्य्यकी परीक्षाकररहाहै यहशोचकर उसने अपने दोनोंपुत्र उसब्राह्मणको देदिये ब्राह्मणने उनवालकोंको लेकर उन्हें अपनेसाथमें न चलते देखकर उनके हाथबांधके उन्हें वहुत पीटा और उनरोतेहुए वालकों को वह निर्दय अपने साथलेकर कहीं चलागया अपने वालकों की यह दुर्दशा देखकर भी तारावलोक के चित्तमें जराखेद नहीहुआ तदनन्तर फल पुष्पलेकर आईहुई माद्री अपने वालकों को न देखकर और उनके खिलौने विखरे पड़े देखकर सन्देह युक्तहोकर अपने पतिसे बोली कि हाय वह मेरे पुत्र कहांगये उसके वचनसुनकर तारावलोकने धीरेसे उससे कहा कि मैंने एकदरिद्री याचक ब्राह्मणको वह दोनों पुत्रदेदिये यहसुनकर वह मोहरहितहोकर बोली कि आपने वहुत अच्छा किया क्योंकि अर्थीका पराङ्मुखजाना अच्छा नहीं है उसके इसप्रकार कहनेपर उनदोनों के धैर्य्यसे त्रैलोक्य कांपउठा और इन्द्रकाआसन चलायमानहुआ तब इन्द्रने ब्राह्मण

का स्वरूप धारणकरके तारावलोकसे माद्रीको मांगा तारावलोक उसीसमय माद्रीका संकल्प करनेको उद्यतहोगया उसकी इस उदारताको देखकर ब्राह्मणरूप इन्द्रने उससे पूछा कि हेराजर्षे तुम इसप्रकार के दानसे कौनसा फल चाहतेहो इन्द्रके यह वचनसुनकर तारावलोकने कहा कि मैं कोईभी फलनहीं चाहताहूं यही मेरी इच्छाहै कि जो ब्राह्मण मेरे प्राणभीमांगे तो मैं उसे वहभी देदूं उसके यहवचनसुनके इन्द्रअपना स्वरूपधारणकरके उससे बोले कि हेराजा तुमपरमैंप्रसन्नहूं इससेमैंकहताहूं कि अबतुम अपनी स्त्री किसीको न देना तुम थोड़ेही कालमें विद्याधरोंके चक्रवर्त्ती होजाओगे यहकहकर इन्द्र अन्तर्द्धान होगये इस बीचमें वह वृद्धब्राह्मण तारावलोकके राम लक्ष्मणनाम दोनों पुत्रोंको लेजाकर राजा चन्द्रावलोकके पुरमें बाजारमें खड़ाहोकर बेचनेलगा वहाँ पुरवासीलोग उनबालकोंको पहचानकर उसब्राह्मणको बालको समेत राजा चन्द्रावलोकके पासलेगये राजा चन्द्रावलोक अपने पौत्रोंको देखकर उस ब्राह्मणसे सब वृत्तान्त पूछकर बहुतसाधन देके उस ब्राह्मण से अपने पौत्रोंको लेकर अपने सम्पूर्ण परिकर समेत तारावलोकके आश्रम को गया वहां तारावलोक अपने पिताको आते देखकर प्रणाम करके उसके चरणोंपर गिरा और चन्द्रावलोक उसे उठाकर हृदय से लगाके गोदीमें बैठालकर उसपर अश्रुओं की वृष्टि करनेलगा तारावलोक ने अपने पुत्रोंको देखकर चन्द्रावलोक से पूछा कि आपके पास यह कहां से गये उसने कहा कि जिस ब्राह्मणको तुमने यह दियेथे उसीसे हमने मोललिये उन दोनोंके इसप्रकार वार्त्तालाप करतेही आकाशसे चारदांतका हाथी विद्याधरों की राज्य लक्ष्मी और बहुत से विद्याधरों के राजा आकाश से उतरे राज्य लक्ष्मीने तारावलोक से कहा कि हे राजा इसहाथी पर चढ़के विद्याधरों के लोकको चलो और वहां चलकर दानके प्रभावसे प्राप्तहुए विद्याधरों के चक्रवर्त्ती पदको स्वीकारकरो लक्ष्मीके यह वचनसुनकर तारावलोक अपने पिताको प्रणाम करके अपनी स्त्री तथा पुत्रों समेत हाथीपर बैठकर आकाश मार्गसे विद्याधरोंके स्थानको गया वहां बहुतकाल तक विद्याधरों के ऐश्वर्य्यको भोगकरके अन्तमें वैराग्ययुक्तहोकर तपोवन में चलागया इसप्रकार से तारावलोक पुण्यके प्रभावसे मनुष्यहोकर भी विद्याधरोंका चक्रवर्त्ती हुआ था और अन्यभी बहुतसे चक्रवर्त्तीहुएहैं परन्तु वह प्रमादसे अपने २ पदों से भ्रष्टहोगयेहैं इससे तुम ऐसायत्न सदैव करतेरहो जिससे तुम्हारी प्रजामें कोई भी अधर्म न करनेपावे और तुम भी कभी अधर्मकी ओर दृष्टि न करना कश्यप मुनि के यह वचनसुनकर नरवाहनदत्तने अपने सम्पूर्ण राज्यमें यह ढण्ढोरा पिटवादिया कि जो कोई विद्याधर मेरे राज्यमें धर्मसे प्रतिकूल कार्य्य करेगा उसका मैं अवश्य बधकरूंगा इसप्रकार ढंढोरा पिटवाकर नरवाहनदत्त वर्षाऋतुके व्यतीत करनेके निमित्त अपने मामाकेपास वहीं कश्यपमुनिके आश्रममें परिकर समेत सुख पूर्वक रहा १०१॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांसुरतमंजरीलम्बकेतृतीयस्तरंगः ३॥

सुरतमंजरी नाम सोलहवां लम्बक समाप्तहुआ॥

पद्मावती नाम सप्तदशो लम्बकः॥

देहार्धधृतकान्तोपि तपस्वीनिर्गुणोपियः॥
जगत्स्तुत्योनमस्तस्मै चित्ररूपायशम्भवे १
चलत्कर्णाग्रविक्षिप्त गंडोड्डीनालिमण्डलं॥
धुन्वानंविघ्नसंघात मिवविघ्नान्तकंनुमः २

इसप्रकार कश्यपमुनिके आश्रममें अपने मामा गोपालकके निकट मदनमंचुका आदिक पचीस रानियों समेत सुखपूर्व्वक रहतेहुए नरवाहनदत्तसे एक दिन मुनियों ने कथा प्रसंगमें पूछा कि जब रानी मदनमंचुका को मानसवेग अपनी मायासे हरलेगयाथा तब विरह से व्याकुल आपके चित्तको किसने किसप्रकारसे बहलाया था उन लोगों के इसप्रकार पूछनेपर नरवाहनदत्त ने कहा कि जब मदनमंचुकाको वह पापी हरलेगयाथा तब जो दुःख मुझे हुआहै वह मैं कहांतककहूं पुरी में ऐसा न कोई घर न वन था जिसमें मैं न घूमाहूं तब उपवनमें वृक्षकेनीचे बैठेहुए मुझसे गोमुखनेकहा कि तुम बहुत व्याकुल मतहो थोड़ेही कालमें मदनमंचुका तुमको मिलजायगी क्योंकि देवतालोगों ने तुमको यह वरदियाहै कि तुम मदनमंचुका के साथ विद्याधरों के चक्रवर्तीहोगे तो उनके वचन कभी मिथ्या नहीं होसक्ते देखो श्रीरामचन्द्र, राजा नल तथा तुम्हारे पूर्व्व पितामह पाण्डव इनसबको बहुतसे विरहके उपरान्त क्या प्रियायें नहीं मिलगई हैं और विद्याधरों के चक्रवर्ती मुक्ताफलकेतुको क्या बहुत कालके उपरान्त पद्मावती नहीं मिली है उसकी कथा मैं आपको सुनाताहूं इस पृथ्वी में काशीनामपुरी है जो देव मन्दिरों के कम्पित ध्वजाओं के वस्त्रों से मानों लोगोंको बुलाकर यह कहती है कि यहांआओ मोक्ष को लो उसपुरी में पूर्व्वसमयमें ब्रह्मदत्तनाम बड़ा शिवभक्त शूर ब्रह्मण्य तथा दाता राजाथा उसके सोमप्रभा नाम अत्यन्त रूपवती रानी थी और शिवभूतिनाम सम्पूर्ण शास्त्रोंका जाननेवाला बृहस्पतिके समान महाबुद्धिमान् मन्त्री था एकसमय राजा ब्रह्मदत्त ने रात्रि के समय अपने महलपर से बहुत से सामान्य हंसों से युक्त दो सुवर्णमय हंस आकाशमें उड़तेहुएदेखे उनहंसों के दृष्टिसे दूरहोजानेपर राजा को उनके देखनेकी बड़ीउत्कण्ठाहुई निद्राके विनाही उस रात्रिको व्यतीतकरके प्रातःकाल उसने शिवभूति मन्त्री से हंसोंका वर्णनकरके कहा कि जो वह हंस मुझे फिर देखने को न मिलें तो इस राज्य तथा जीवनसे मुझे सुखनही राजाके वचन सुनके शिवभूतिने कहा कि हे स्वामी इसका एक उपाय है सो मैं आपसे कहताहूं उसे सुनिये २६ ब्रह्माके इस संसार में विचित्रकर्मों के योगसे अप्रमाण विचित्र सृष्टि है इस दुःखमय सृष्टिमें भी मोहसे सुखमानकर प्राणीलोग निवास तथा आहारादिके रसके स्नेहसे अनुरक्तहोते हैं ब्रह्माने प्राणियों के अपनी २ जाति के अनुसार पृथक् २ निवास तथा भोजनादि कल्पित किये हैं इससे आप एक बड़ा उत्तम कमलों से युक्त तड़ाग बनवाइये और उसके तटपर जलचर

पक्षियों के प्रिय अन्न डलवादीजिये इससे अनेक प्रकारके पक्षी यहांआवेंगे उनके साथमें वह दोनोंहंस भी थोड़ेही कालमें आजायँगे तव आप उनको अच्छेप्रकारसे देखलीजियेगा अपने मन्त्री के वचन सुनकर राजाने वैसाही सुन्दर तड़ाग वनवादिया उसमें बहुतसे पक्षी आनेलगे और थोड़ेही काल में वह दोनों सुवर्ण के हंसभी आये तब रक्षकों के द्वारा उनहंसों के आनेका समाचार सुनके राजा बहुत प्रसन्नहोके उस तड़ागपर आया और हंसोंको भोजनके लिये दूधभात दिलवाकर उनको विश्वासित करके उनके पासगया और उन्हें भलीभांति देखकर बहुत प्रसन्नहुआ उन हंसोंका सम्पूर्ण शरीर सुवर्ण मयथा मोतियों के उनके नेत्रथे और उनकी चोच तथा पैर मूंगे के थे वह हंस वहां उत्तम भोजनपाकर नित्य २ आनेलगे एकदिन राजा ब्रह्मदत्त उस तड़ागपर भ्रमण करते २ एक स्थानपर श्री शिवजीपर अम्लान पुष्पचढ़े देखकर अपने सेवकों से बोला कि यह पूजन किसने किया है उन्होंने कहा कि हे स्वामी यह दोनों सुवर्णमय हंस त्रिकाल संध्याओं के समय इसतड़ागमें स्नानकरके नित्य श्री शिवजी का पूजनकरके कुछ कालतक उनके आगे ध्यानलगाये वैठेरहते हैं उन्हींका कियाहुआ यह पूजनहै उनके वचनसुनकर राजाने शोचा कि कहां यह हंस और कहां ऐसापूजन इसमे कोईकारण अवश्यहै इस से इनकेतत्त्वके जाननेके लिये मैं तपकरूं यह शोचकर राजा अपनेमंत्री तथा रानी समेत निराहारहोकर तपकरनेलगा वारहवे दिन स्वप्नमें उनहंसो ने राजासे कहा कि हे राजा उठो कल प्रातःकाल तुम पारणकरना तव हम अपना सव तत्त्व तुमसे कहेंगे यहकहके वह हंस अन्तर्द्धानहोगये और राजा ने अपने मंत्री तथा रानी समेत प्रातःकाल पारण किया पारण करने के उपरान्त एकान्त में मंत्री तथा रानी समेत वैठेहुए राजाके पास वह दोनों हंस आये उनका पूजनकरके राजाने उनसे पूंछा कि आप कौनहैं अपना सव वृत्तान्त कहिये राजाके वचन सुनकर वह अपना वृत्तान्त इसप्रकार कहनेलगे कि एकसमय अत्यन्त मनोहर मन्दरनाम पर्व्वतपर श्रीशिवजी पार्वतीजी के साथ क्रीड़ाकरके देवताओं के किसीकार्य्यसे पार्वतीजी को वहीं छोड़कर अन्तर्द्धानहोगये तव पार्वतीजी उनके विरहसे व्याकुल होकर उसी पर्व्वतपर अपने चित्तके वहलानेको इधर उधर घूमने लगीं एकसमय वसन्तके आगमनसे वहुत खिन्नहोके एकवृक्षके नीचे वैठीं उससमय भगवतीकी चमर ढुलानेवाली जयाकी पुत्री चन्द्रलेखा को मणिपुष्पनाम गण कामकी अभिलाष से देखनेलगा और चन्द्रलेखाभी अपने कटाक्ष उसपर चलाने लगी उनदोनोंकी यहदशा देखकर पिंगेश्वर तथा गुहेश्वर नाम दोनोंगण हँसनेलगे उन्हें हँसते देख-कर यह क्यों हँसरहेहैं इसलिये पार्वती जी ने सव ओर देखा तो उन्हें मालूमहुआ कि चन्द्रलेखा और मणिपुष्पेश्वर दोनों परस्पर अनुरक्तहो रहे हैं तव भगवती ने कुपितहोकर कहा कि तुम दोनों मृत्यु-लोकमें मनुष्य योनिमें उत्पन्नहोकर स्त्री पुरुषहोगे और वहीं यह दोनों हँसनेवाले भी दुष्ट उत्पन्नहोकर अनेक क्लेशों को भोगेंगे यह पहले दीन ब्राह्मण होके फिर ब्रह्मराक्षस फिर पिशाच फिर चाण्डाल फिर चोर फिर छिन्नपुच्छ कुत्ते और फिर अनेक प्रकार के पक्षीहोंगे क्योंकि इन्हों ने सावधान होकर भी मेरे आगे परिहासकिया भगवती के यह वचन सुनके धूर्यटनाम गणने कहा कि यह श्रेष्ठगण इत-

ने ही थोड़े अपराधसे ऐसे घोर शापके योग्य नहीं हैं उसके यह वचनसुनकर भगवती ने कहा कि हे दुष्ट तू भी मृत्युलोकमें उत्पन्न होगा भगवती के यह वचनसुनकर जयाने भगवती के चरणोंपर गिर कर यह विज्ञापनाकरी कि हेभगवती इस मेरी कन्याके शापका अन्तवताओ और अपने अज्ञानी इन सेवकोंपर भी दयाकरके इनके भी शापका अन्तवताओ प्रतीहारी के वचनसुनकर भगवतीने कहा कि जब यह ज्ञानकी प्राप्तिकरके सब इकट्ठे होकर मिलेंगे तब ब्रह्मादिकों के तपक्षेत्र में सिद्धीश्वरके दर्शन करके शापसे छूटकर यहींचलेआवेंगे मनुष्ययोनिमें चन्द्रलेखा इसका प्रिय तथा धूर्ध्रट यह तीनों सुखी रहैंगे और पिंगेश्वर तथा गुह्येश्वर यह दोनों दुखीरहैंगे भगवतीके इसप्रकार कहतेही श्रीशिवजीकोकहीं गया जानकर वहां अन्धकासुर उनके हरनेको आया उसे गणों ने मारकर वहां से भगादिया और श्री शिवजीने उसकी यह दुष्टता जानकर उसे उसीके स्थानपर जाकर मारडाला उसेमारकर मन्दराचलपर आयेहुए श्रीशिवजीसे पार्वतीजीने अन्धकासुरके आगमनका वृत्तान्तकहा उनके वचन सुनकर श्री-शिवजी ने कहा कि तुम्हारे मानसपुत्र इस अन्धकासुरको आज मैंने मारडाला अब वह भृंगी होगा यह कहकर श्रीशिवजी वहीं विहार करनेलगे और मणिपुष्पेश्वरादिक पांचों पृथ्वीपर उत्पन्नहुए उन मे से पिंगेश्वर और गुह्येश्वर इन दोनोंका विचित्र वृत्तान्त आप सुनिये कि यज्ञस्थल नाम एक ग्राम में यज्ञसोम नाम एक गुणीब्राह्मण रहताथा उसके हरिसोम तथा देवसोम नाम दो पुत्र उत्पन्नहुए जब उनदोनों बालकोंका यज्ञोपवीत होगया तबयज्ञसोम निर्धनहोकर मरगया इससे उनदोनों बालकोने दीन होकर परस्पर यह विचारकिया कि अब हमारी भिक्षाकी वृत्तिहोगई सो भी कोई नहींदेताहै इससे नाना के यहां चलना चाहिये यद्यपि वहां भी विनाबुलाये जानेसे आदर न होगा तथापि क्याकरें और कोई गति नहीं है यह सलाहकरके वह दोनों भिक्षा मांगतेहुए अपने मातामहके ग्राममें पहुंचे भाग्यवशसे उनके नाना नानी भी दोनों मरगयेथे इससे यह यज्ञदेव तथा क्रतुदेव नाम अपने मामाके पास गये उन दोनोंने बड़ेआदरपूर्व्वक अपने इन दोनोंभानजोंको रक्खा वहां यह दोनों विद्याध्ययन करनेलगे कुछकालके उपरान्त यज्ञदेव तथा क्रतुदेव भी भाग्यवशसे निर्धनहोगये इससे वह अपने दोनोंभानजों से बोले कि हे पुत्रो हम अब ऐसे दरिद्रीहोगये हैं कि पशुपालक नौकर नहीं रखसक्तेहैं इससे तुम्हीं हमारे पशुओंकी रक्षाकियाकरो उनके वचन सुनके हरिसोम तथा देवसोम दोनों वनमेंजाकर पशुओंको चरानेलगे कुछकालके उपरान्त भाग्यवशसे उनके कुछ पशु तो चोरलेगये और कुछेकों को व्याघ्रादिक खागये एकसमय एक गौ तथा बकरा जो उनके मामाने यज्ञके लिये रक्खे थे वह भी खोगये इससे वह दोनों अन्यपशुओं को घर में छोड़के गौ तथा बकरे के ढूंढ़ने के लिये बहुतदूर वनमें चले गये वहां किसी व्याघ्रका खायाहुआ वही आधा बकरा पड़ाहुआथा उस बकरेको देखकर उनदोनों ने आपसमें यह सलाहकी कि हमारे मामाओंने यज्ञकेलिये रक्खाथा इसकेनष्टहोजानेसे वहहमारे ऊपर बड़ा क्रोध करेंगे इससे इस बकरे का थोड़ासा मांसपकाके और खाके और बाकी लेकर कहीं अन्यत्र जाके भिक्षाकी वृत्तिकरें यह सलाहकर जैसेही वह अग्नि बालकर मांसको पकानेलगे वैसेही उनके मामाभी

वहां आगये मामाको आतेदेखकर वह दोनों वहां से उठकरभागे और उनके मामाओंने उन्हें मांस प-काते देखके यह शापदिया कि तुम दोनोंने राक्षसोंकासा कर्म कियाहै इससे तुमदोनों मांसाशी ब्रह्म-राक्षस होजाओगे इस शापसे वह दोनों ब्रह्मराक्षस होकर वनमें जीवोंको पकड़ २ कर खानेलगे एक समय वह दोनो एक तपस्वी योगीको खानेके लिये दौड़े इससे तपस्वी ने उन्हें शापदेकर पिशाचकर दिया पिशाच योनिमे भी एक ब्राह्मणकी गौके मारनेकोदौड़े इससे उस ब्राह्मणने अपने मंत्रके प्रभाव से उन्हें चाण्डाल करदिया चाण्डालहोके वह दोनों धनुष बाण लेकर प्राणियोंको मारतेहुए इधर उधर घूमनेलगे एकसमय दोनों घूमते २ चोरों के गांव में पहुंचे वहां चोर उनके नाक कान काटके उन्हें अ-पने स्वामी के पास लेगये स्वामीने उनका सब वृत्तान्त पूछके उन्हें अपनेही पास रखलिया और उन्हें भी चोरीका भागदेना स्वीकार किया इससे वह दोनों वहां रहते २ चोरी करते २ अपने पराक्रमसे चोरों के सेनापति होगये एकसमय वह दोनों वहुतसी सेनालेकर रात्रिके समय शैवकक्षेत्र नाम महापुर के लूटनेकोगये और पुर मे जाकर निवासियोको लूटनेलगे तव वहांके पुरवासियोंने बहुत व्याकुल होकर श्रीशिवजीकी शरणली इससे शिवजीने सब चोरोंको अन्धा करदिया यह देखके पुरवासियों ने ला-ठियोंसे चोरोको बहुतसा मारा और बहुतसे चोरोंको मार २ गढ़ोंमें डालकर उन दोनों सेनापतियों को जैसेही मारनेलगे वैसेही वह दोनों छिन्नपुच्छ कुत्तेहोकर अपने पूर्व्वजन्मका स्मरणकरके श्रीशिवजी के आगे नाचनेलगे यह देखकर सम्पूर्ण पुरवासी आश्चर्य्य से हँसतेहुए अपने २ घरको चलेगये और वह कुत्ते मोहरहित होकर शापकी शान्तिके निमित्त निराहारहोके शिवजीके प्रसन्न करनेके अर्थ तप करनेलगे उनको बहुत दिनतक निराहार देखकर गणोने श्रीशिवजीसे कहा कि हे स्वामी श्रीभगवती के शापसे पिंगेश्वर और गुहेश्वर यह दोनोंगण बहुतकाल से दुःख भोगरहेहैं अब इनपर कृपाकीजिये गणोके यह वचन सुनकर श्रीशिवजीने कहा कि अच्छा अब यह दोनो कौए होजायँ शिवजीके यह कहतेही वह दोनो कौए होकर श्रीशिवजीका आराधनकरके उन्हींपर चढेहुए पदार्थों को खानेलगे कुछकालमे शिवजीने उनकी भक्तिसे प्रसन्नहोकर उन्हें मोर करदिया मोरसे भी फिर हंस करदिया हंस योनिमें भी वह परमभक्तिसे श्रीशिवजीका पूजन करतेरहे इससे वह सुवर्ण के महाज्ञानी हंसहोगये हे राजा पार्वतीजीके शापसे हंसहोनेवाले वह पिंगेश्वर और गुहेश्वर दोनों हमहीं हैं और जयाकी चा-हना करनेवाले मणिपुष्पेश्वर तुमहो यह तुम्हारी रानी सोमप्रभा जयाकी पुत्री चन्द्रलेखाहै और तुम्हारा मंत्री शिवभूतिक धूर्य्यटहै इसीसे हम दोनोने आज रात्रिको स्वप्नमें आपको दर्शन दिये अब हम सब यहां मिलगयेहैं और हम ज्ञानभी तुम्हेंदेदेंगे इससे देवताओंके क्षेत्रमेंचलो जहां विद्युध्वजासुरके नाश के लिये श्रीसिद्धीश्वरजीके आगे देवताओंने तपकियाथा और श्रीशिवजीकी कृपासे विद्याधरोंके च-क्रवर्त्ती मुक्ताफल की सहायता से दैत्यको माराथा और वह मुक्ताफलकेतु शापसे हुए मनुष्यत्त्व को छोड़कर श्री शिवजीकीही कृपासे फिर पद्मावती से मिला ऐसे उस क्षेत्रमें चलकर श्री शिवजीको प्र-णामकरके हमलोग भी अपने शापसे छूटें क्योंकि भगवती ने इसीप्रकारसे हम सबका शापांत बताया

है उन दिव्य हंसों के यहवचनसुनकर राजाब्रह्मदत्तको मुक्ताफलकेतुकी कथासुननेकी इच्छाहुई १४४॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांपद्मावतीलम्बकेप्रथमस्तरंगः १॥

इसके उपरान्त राजा ब्रह्मदत्तने हंसों से कहा कि किसप्रकारसे विद्युध्वजको मुक्ताफलकेतुने माराथा और कैसे शापसे प्राप्तहुए मनुष्यत्त्वको छोड़कर पद्मावती उसनेपाई सो कहो फिर जैसा तुम कहोगे वही मैं करूंगा राजाके यह वचन सुनकर वह हंस इसप्रकारसे कथा कहनेलगे कि विद्युत्प्रभनाम एक बड़ा उग्र दैत्यराजथा उसने गंगाजी के तटपर सौ वर्ष तपकरके प्रसन्नहुए ब्रह्माजी के वरसे देवताओं से अवध्य विद्युध्वजनाम पुत्रपाया वह विद्युध्वज बाल्यावस्थामेंही अपने पुरको सेनाओं से रक्षित देखकर किसी अपने मित्रसे बोला कि हे मित्र यहां भय किसकाहै जिससे इस पुरकी इतनी रक्षा करनी पड़ती है यह सुनकर उसने कहा कि इन्द्र हमलोगोंका शत्रुहै इसी से इस पुरकी ऐसी रक्षाकीजाती है दश लाख हाथी चौदहलाख रथ तीसलाख घोड़े और दशकरोड़ पैदल इस पुरकी रक्षा करते हैं पहर २ भर में इतनी २ सेनाकी बदली रहाकरती है और इतनी अधिक सेनाहै कि सातवें वर्ष हरएककी बारी आती है उसके वचन सुनकर विद्युध्वजने कहा कि ऐसे राज्यको धिक्कारहै जिसकी रक्षा अपने बाहु बलसे न होसके इससे मैं ऐसा तपकरूंगा जिससे कि शत्रुओं का भय जातारहै यह कहके वह अपने माता पितासे बिना आज्ञालियेही तपकरनेको चलागया उसके माता पिता यह जानकर पीछेसे उसके पास जाकर बोले कि हे पुत्र साहस न करो कहां तुम बालक और कहां घोरतप अपने कोमल शरीर को सुखाके हमलोगोंको क्यों क्लेशित कियाचाहतेहो माता पिताके वचन सुनकर विद्युध्वजने कहा कि बाल्यावस्थाही में तपोबलसे दिव्य अस्त्रोंका उपार्जन करूंगा जिससे सबभय दूर होजायँ अपने माता पिता से यह कहकर विद्युध्वजने तीन २ सौ वर्ष फलाहार जल भक्षण वायु भक्षण तथा निराहारहोकर तप किया उसके इस तपसे प्रसन्नहोके ब्रह्माजी ने आकर उसे अपना ब्रह्मास्त्र देकर कहा कि हे पुत्र इस मेरे अस्त्रको पाशुपत के सिवाय और कोई अस्त्रनहीं जीतसक्ता है इससे समयके बिना इसका प्रयोग न करना यह कहकर ब्रह्मा अन्तर्द्धानहोगये और विद्युध्वज अपने घरमें आकर अपनी सम्पूर्ण सेना लेकर इन्द्रके जीतनेको चला इन्द्र उसके आगमनका वृत्तान्त जानकर अपने मित्र विद्याधरों के राजा चन्द्रकेतुको साथलेकर युद्ध करने के लिये स्वर्ग से बाहर निकला गन्धर्वोंका राजा पद्मशेखरभी इसकी सहायता करनेको आया और ब्रह्मा तथा शिवआदिक देवताभी युद्ध देखनेको आये तब उन दोनों सेनाओंका परस्पर युद्धहोनेलगा और इन्द्रके साथ विद्युध्वज के पिताका द्वन्द्व युद्धहुआ इन्द्रने अपने को पराजितहोता जानके उसे वज्र फेंककर मारडाला इससे विद्युध्वज ने कुपितहोकर इन्द्रपर ब्रह्मास्त्र चलाया यह देखकर इन्द्रने उसके निवारण करनेको पाशुपत अस्त्रचलाया इससे सम्पूर्ण दैत्योंकी सेना नष्टहोगई केवल विद्युध्वज बालकहोने के कारण मूर्च्छितहोके गिरपड़ा क्योंकि पाशुपतअस्त्र बालवृद्ध तथा पराङ्मुखोंको नहीं नष्टकरताहै तबसम्पूर्णदेवता जयपाकर अपनेस्थानोंको चलेगये और विद्युध्वज मूर्च्छा से जगकर अपने बचेहुए सैनिकों से बोला कि ब्रह्मास्त्र पाकरभी हमलोगोंका पराजयहुआ इसमें

मैं इन्द्रके पासजाके उससे युद्धकरके अपना शरीर त्यागदूंगा पिताको मरवाके अकेला अपने पुरमें नहीं जाऊंगा उसके वचन सुनके एक उसके वृद्धमन्त्री ने कहा कि तुमने असमयमें ब्रह्मास्त्रका प्रयोगकिया इसीसे वह व्यर्थ गया इससे अब इन्द्रकेपास जाके तुम अपने प्राण मतदो धीरलोग अपनी रक्षाकरके समय जानके शत्रुको मारकर यशको प्राप्तहोते हैं उसवृद्धमन्त्री के यह वचन सुनकर विद्युध्वजने उस से कहा कि अच्छा तुम जाके पुरकी रक्षाकरो और मैं जाकर श्री शिवजी को प्रसन्नकरूंगा यह कहके वह कैलाशके निकट श्री गंगाजी के तटपर तप करनेलगा धूपमें पंचाग्नि में तथा शीतजल में एक २ हजारवर्ष उसने तपकिया तब ब्रह्माजी प्रसन्नहोके उसे वरदेनेको आये उससमय ब्रह्माजी से उसने कहा आप जाइये मैंने आपके वरका प्रभाव देखलिया इसप्रकार ब्रह्माजी को लौटाकर उसने उतनाही फिर तपकिया तब श्रीशिवजी ने आकर उससे कहा कि वरमांगो उसने कहा कि हे स्वामी मैं इन्द्रको युद्धमे मारूं उसके यह वचनसुनकर श्री शिवजी उससे यह कहकर कि जीतना और मारना समान होताहै इससे तुम इन्द्रको जीतकर स्वर्ग के अधिकारी होगे यह कहके शिवजी अन्तर्द्धान होगये और विद्यु-ध्वजने अपना मनोरथ सिद्ध जानकर अपने पुरमे जाकर पारण किया और सम्पूर्ण सेना लेके इन्द्रके जीतनेको प्रयाणकिया इन्द्रने उसका आगमन जानके अपनी सवसेना युद्धकरनेको भेजी इक्कीसदिन महाघोर युद्धहोनेके पीछे देवतालोग हारकरभागे तब इन्द्र आपही ऐरावतहाथीपर चढकर युद्ध करने को आया उसे देखकर विद्युध्वज अपने पिताके मरणका स्मरणकरके इन्द्रसे घोरयुद्ध करनेलगा इन्द्रने अपने वाणोंसे उसका धनुष कईवार काटडाला इससे उसने मुद्गरलेके उछलकर ऐरावतपर जाकर इन्द्र के मुद्गरमारा इससे इन्द्रमूर्च्छित होकर वायुके रथपर गिरपड़ा उससमय यह आकाशवाणी हुई कि यह बड़ा कुसमयहै इन्द्रकोलेकर यहां से भागो इस आकाशवाणीको सुनकर वायु इन्द्रको लेकरभागा और विद्युध्वजभी उन्हीं के पीछे दौड़ा इतनेमें सवदेवता भागगये और वृहस्पतिजी इन्द्राणीको ब्रह्मलोकमें ले-गये और विद्युध्वज इन्द्रको न पाकर लौटकर अपनी सम्पूर्ण सेनासमेत स्वर्गमेंगया और इन्द्रभी मूर्च्छासे जगकर सम्पूर्ण देवता तथा ऐरावतसमेत ब्रह्मलोककोगया वहाँ ब्रह्माने उनको समाधिस्थल नाम स्थान रहनेको दिया और उन्हींके कहने से गन्धर्वलोग सोमलोकमें जाकररहे और विद्याधरलोग वायुलोकमें जाकररहे और विद्युध्वज सम्पूर्ण स्वर्ग में आनन्दसे राज्य करनेलगा इसके उपरान्त वायुलोक में वहुत कालतक रहकर एकदिन विद्याधरोंके राजाचन्द्रकेतुने शोचा कि अपने अधिकारसे भ्रष्टहोकर हम यहां कवतकरहेंगे हमारे शत्रु विद्युध्वजका अवतक भी तपक्षीण नहींहुआ मैंने सुनाहै कि गन्धर्वोंका राजा मेरामित्र पद्मशेखर चन्द्रलोक से शिवपुर में तपकरने गयाहै न जानिये अवतक श्री शिवजी उसपर प्र-सन्नहुएहैं या नहीं उसके इसप्रकार शोचतेही पद्मशेखर वहां आगया उसका आदरसत्कारकरके चन्द्र-केतुने उससे कहा कि अपना सव वृत्तान्तकहो तबउसने कहा कि मैंने शिवपुर में जाकर तपस्यासे श्री शिवजी को प्रसन्नकिया उन्होंने मुझको यह वरदानदिया कि तुम्हारे एक पुत्रहोगा और बड़ीश्रेष्ठ एक कन्याहोगी उसी कन्याका पति विद्युध्वजको मारेगा पद्मशेखरके यह वचनसुनकर चन्द्रकेतुने कहा कि

मैंभी अपने दुःखकी शान्तिके लिये शिवजीकी आराधना करूंगा क्योंकि उनके आराधन बिना कोई भी सिद्धि प्राप्त नहीं होसक्ती यह कहके वह अपनी मुक्तावली स्त्रीको साथलेकर श्री शिवजी के दिव्य क्षेत्रमें तपकरनेको गया और पद्मशेखर ब्रह्मलोकमें जाके इन्द्रसे सब वृत्तान्त कहके चन्द्रलोकको चला गया तब इन्द्रने वृहस्पतिजी से बुलाकर कहा कि हे गुरुदेव श्रीशिवजी ने प्रसन्नहोकर पद्मशेखरको यह वरदियाहै कि तेरे विद्युध्वजका मारनेवाला जामाताहोगा इससे अब हमारे दुःखका अन्त निकट आया दीखताहै किन्तु आप मुझे उसके शीघ्र नाश करनेका कोई उपाय बताइये यह सुनकर वृहस्पतिजी ने कहा कि विद्युध्वजके पापोसे उसका तप क्षीण होगयाहै इससे हमारे यत्नकरनेका अवसरहै चलो ब्रह्माके पास चलें वह कोई उपाय बतावेंगे वृहस्पति के वचन सुनके इन्द्र उन्हीं के साथ ब्रह्माके पासगया ब्रह्मा ने इन्द्रका मनोरथ जानकर उससे कहा कि तुम्हारी चिन्ता मुझको भी है परन्तु शिवजी के किये कार्य्य को शिवजीही मेटसक्ते हैं परन्तु उनके प्रसन्न करनेमें बहुत देरलगेगी इससे चलो विष्णुजीके पासचलें वह कोई उपाय बतावेंगे क्योंकि वह उन्हीं के दूसरे रूपहैं यह कहकर ब्रह्माजी इन्द्रादि देवता तथा वृहस्पतिजी को लेकर उस श्वेतद्वीप को गये जहां के सब निवासी शंख चक्र गदा पद्मधारी हैं वहां रत्नमय मन्दिर में शेषशय्या पर लक्ष्मी समेत बैठे हुए विष्णुभगवान् के पास यह सब प्रणाम करके यथायोग्य आसनोंपर बैठे भगवान् ने देवतालोगों से कुशलप्रश्नपूछी तब देवताओं ने कहा कि हे भगवन् विद्युध्वज के जीतेहुए हमलोगों की कुशलकैसे होसक्ती है देवता लोगोंके वचनसुनकर विष्णुभगवान् ने कहा मैं जानताहूं वह बड़ा दुष्टहै उसने मेरी संपूर्ण मर्य्यादा नष्टकरदी हैं किन्तु जो श्री शिवजी ने किया है उसको मैं मेट नहीं सक्ता इससे श्री शिवजीकेही द्वारा उस दैत्यका नाशहोगा परन्तु शीघ्रता के लिये मैं एकउपाय तुमको बताताहूं कि सिद्धीश्वरनाम एक दिव्य शिवजीका क्षेत्रहै वहाँ वह नित्य स्थित रहते हैं यह साक्षात् श्री शिवजीनेही मुझसे कहाथा इससे चलो वहीं चलकर उनसे प्रार्थना करें जिससे उपद्रवकी शान्ति होय विष्णु भगवान् के यह वचन सुनके वह सब उनकेही साथ सिद्धीश्वर क्षेत्रको गये और वहाँ श्री शिवजीका पूजनकरके उनके प्रसन्न करने के अर्थ घोर तप करनेलगे इस बीचमें तपसे प्रसन्नहुए श्री शिवजीने चन्द्रकेतुको यह वरदिया कि हे राजा तुम्हारे ऐसा वीर पुत्रहोगा जो युद्धमें विद्युध्वजको मारेगा और शापसे मनुष्ययोनि में उत्पन्नहोके देवताओं का हितकरके गन्धर्व्वराजकी पुत्री पद्मावती के तपोवलके द्वारा शापसे छूटकर अपने पदपर आके उसी के साथ दश कल्पतक विद्याधरों का चक्रवर्त्ती रहैगा यह वर देके श्री शिवजी के अन्तर्द्धान होनेपर चन्द्रकेतु अपनी स्त्री समेत वायुलोकको चलागया इसके उपरान्त सिद्धीश्वर क्षेत्रमें तपकरतेहुए ब्रह्मा विष्णु इन्द्र तथा वृहस्पतिजीको दर्शन देकर श्री शिवजीने कहा कि अब तपके क्लेशको छोड़ो विद्याधरों के राजा चन्द्रकेतु के यहाँ मेरे अंशसे पुत्र उत्पन्न होगा वही विद्युध्वजको युद्धमें मारेगा और शापसे मनुष्य होकर पार्वतीजी के अंशसे उत्पन्न हुई पद्मावती के तपोवलसे फिर अपने अधिकारको पाकर दशकल्पतक उसीके साथ विद्याधरोंका चक्रवर्त्ती रहकर मुझीमें लयहोजायगा यहकहके श्री शिवजी अन्त

र्द्धान होगये और ब्रह्मा विष्णु इन्द्र और बृहस्पति जी जहाँ २ से आये थे वहाँ २ चलेगये इसके उपरान्त राजा चन्द्रकेतुकी रानी मुक्तावली गर्भवती हुई और समय पाकर एक बड़ातेजस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ उससमय यह आकाशवाणी हुई कि हे चन्द्रकेतु यह तुम्हारा पुत्र विद्युध्वजको मारेगा इसका नाम तुम मुक्ताफलकेतु रखना इस आकाशवाणीको सुनकर चन्द्रकेतुने बड़ा उत्सवकिया और पद्मशेखर तथा इन्द्र भी आके उसउत्सवको देखकर अपने २ स्थानोंको लौटगये और मुक्ताफलकेतु अपने पिताके आनन्द सहित क्रमसे बढ़नेलगा मुक्ताफलकेतुके जन्मके कुछदिन उपरान्त गन्धर्वोंके राजा पद्मशेखरकेभी कन्या हुई उससमय यह अकाशवाणी हुई कि हे गन्धर्वराज तुम्हारी यहपुत्री विद्युध्वजके मारनेवाले की स्त्री होगी इसका तुम पद्मावती नामरखना इस आकाशवाणीको सुनकर पद्मशेखरने बड़ा उत्सवकिया वह मुक्ताफलकेतु बाल्यावस्थाही में श्रीशिवजीकी भक्तिसे व्रतनियमादि किया करताथा एकसमय बारहदिन तक बराबर श्रीशिवजीके ध्यानमें वह बैठारहा इससे श्रीशिवजीने प्रसन्न होकर प्रकटहोके उससेकहा कि मैं तुम्हारी भक्तिसे प्रसन्नहूं संपूर्ण अस्त्र विद्या तथा कला तुमको प्राप्तहोंगी और यह अपराजित नाम खड्ग तुमलो इसके प्रभावसे कोई भी शत्रु तुमको नहीं जीतसकेगा यह कहकर और खड्गदेके श्रीशिवजी अन्तर्द्धान होगये और मुक्ताफलकेतु उसीसमय सम्पूर्ण अस्त्र विद्या तथा कलाओंसे युक्त होगया इस बीच में एकसमय वह विद्युध्वज दैत्य आकाशगंगा में क्रीड़ा करनेको गया गंगाजीके जलमें पुष्पोंकी रज देखके तथा मदकी गन्ध सूंघकर उसने अपने सेवकोंसेकहा कि जाकर देखो कि मेरे ऊपर भी कौनक्रीड़ा कररहा है उसके वचन सुनके उनलोगों ने ऊपर देखके आकर उससे कहा कि हे स्वामी श्री शिवजीका बृषभ इन्द्रके ऐरावत हाथीके साथ जलक्रीड़ा कररहा है यह सुनकर उसने श्रीशिवजी की भी कुछ कान न करके क्रोधपूर्व्वक कहा कि तुम जाकर उनदोनों को पकड़लाओ उसके वचन सुनकर जैसेही उन लोगोंने जाकर उन दोनोंको पकड़ना चाहा तो उन दोनोंने दैत्योंकोमारा और जो बचे उन्होंने आकर विद्युध्वजसे उन दैत्योंके मरनेका वृत्तान्त कहा इससे उसने कुपित होकर बहुतसी दैत्योंकी सेना उनके पकड़नेको भेजी उस सेनाको भी मारकर बृषभ तो शिवजी के पास गया और ऐरावत इन्द्रकेपास चला गया इन्द्र ने ऐरावत के रक्षकों के द्वारा ऐरावत की जय सुनकर और यह जानकर कि विद्युध्वज ने श्री शिवजीका भी निरादर किया ब्रह्माजी से सब वृत्तान्त कहा और विद्याधरोंकी तथा देवताओं की सेना लेकर उस दुष्ट दैत्य के जीतने के लिये प्रस्थान किया १५६ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांपद्मावतीलम्बकेद्वितीयस्तरङ्गः २ ॥

इसके उपरान्त स्वर्ग के निकट पहुँचकर इन्द्रने सेनाओंसे स्वर्गको घेर लिया यह देखकर वह विद्युध्वज भी बाहर निकला उससमय उसको बहुतसे अशकुन हुए ध्वजाओंपर बिजलीगिरी रथोंपरगिद्ध घूमने लगे छत्र टूटे और शृगाली अशुभ शब्द करनेलगीं इन अशकुनोंको न मानकर वह दुष्ट देवताओंसे युद्ध करनेलगा उससमय इन्द्रने चन्द्रकेतुसे पूछा कि मुक्ताफलकेतु अभीतक क्यों नहीं आया यह सुनकर चन्द्रकेतु ने कहा कि मैंने चलते समय भूलकर उससे चलनेको नहीं कहा वह मेरे आनेका

वृत्तान्त सुनकर पीछे आताही होगा चन्द्रकेतुके वचन सुनकर इन्द्रने मुक्ताफलकेतुके बुलानेको वायुको रथलेकर भेजा और चन्द्रकेतुने उसी रथकेसाथ अपना प्रतीहारभी उसके बुलानेको भेजा इस अन्तर में मुक्ताफलकेतु अपने पिताको युद्धमें गया सुनकर हाथीपर चढ़के शिवजीके दिये हुए अपराजितनाम खड्गको लेकर उसीसमय चला विद्युध्वजके भयसे जो २ देवतालोग भागगये थे वह सब भी उसके साथ आगये उनसबके साथ चलते २ मार्ग में मुक्ताफलकेतुने मेघवन नाम पार्वतीजीका मंदिर देखा इस से हाथीपरसे उतरकर वह दिव्य पुष्पोंको लेकर पार्वतीजी का पूजन करनेलगा इसबीचमें गन्धर्वराज पद्मशेखरकी कन्या पद्मावती अपने पिता तथा पतिके कल्याणके निमित्त विमानपर चढ़कर उसी मंदिरमें पार्वतीजीका पूजन करनेको आई वहां उसकी एकसखी ने उस से पूछा कि हे पद्मावती तुम्हारे लिये अभी कोई वर तो निश्चय हुआ नहीं है और तुम्हारे पिताके लिये तुम्हारी माता तप कर रही हैं तो फिर तुम किसके लिये भगवतीका पूजन करने आईहो उसके वचन सुनकर पद्मावती ने कहा कि हे सखी कन्याओंका पिताही परम देवताहै और मेरे लिये वरभी निश्चित होचुका जो मुक्ताफलकेतु नाम विद्याधर श्रीशिवजीकी कृपासे विद्युध्वज के मारनेको उत्पन्न हुआहै वही मेरा पति होगा यह बात मैंने अपने पिताके मुखसे सुनी है वह मेरा वर संग्राममें जाचुका होगा या जायगा इससे मैं अपने पति और पिता के कल्याण के निमित्त श्रीपार्वती जीकी आराधना करूंगी उसके यह वचन सुनकर सखी ने कहा कि तुम्हारा यह कार्य्य बहुत योग्यहै परमेश्वर तुम्हारे इस कार्य्यको पूराकरे सखीके यहवचन सुनकर वह उस मंदिरके निकट एक सुन्दर तड़ागमें से पुष्प तोड़कर जैसेही स्नान करनेलगी वैसेही उसीमार्गसे आती हुई दो राक्षसी उसे वहां से उठालेगई इससे उसकी सब सखी बड़ा हाहाकार करके रोदन करनेलगीं इतने में मुक्ताफलकेतु भगवतीका पूजन करके मंदिरसे बाहर निकला और सखियोंका हाहाकार शब्द सुनके वहीं आया और आकाशमें पद्मावतीको लियेहुए राक्षसियोंको जाती देखकर आकाश में जाके राक्षसियोंको मारकर उसे छुड़ालाया और उसे देखकर क्षणभर कामदेवके वशीभूत होकर चित्र लिखासा होगया और पद्मावती भी चन्द्रमा और कामदेवको मानों एककरके बनागये मुक्ताफलकेतु को देखकर लज्जासे नीचेको मुखकरके अपनी सखीसे बोली कि परमेश्वर इस वीरका कल्याणकरे अबचलो यहां परपुरुषके पास बैठना उचित नहीं है तब मुक्ताफलकेतुने उसकी सखीसे पूछा कि यह क्या कहतीहै उस ने कहा कि यह आपको आशीर्वाद देके मुझसे कहती है कि इस परपुरुषके पाससे चलो यहसुनकर मुक्ताफलकेतुने उससे पूछा कि यह कौन है और किसके साथ इसका विवाह होनेवाला है यह सुनकर वह सखी बोली कि यह गन्धर्वराज पद्मशेखरकी पद्मावती नामकन्याहै इसका विवाह विद्युध्वजके मारने वाले विद्याधरों के स्वामी मुक्ताफलकेतुके साथ होगा उसी की जयके निमित्त यह यहां भगवती के पूजन करनेको आई है यह सुनकर चन्द्रकेतुके साथियों ने पद्मावती से कहा कि हे सुन्दरी तुम्हारा वर यही मुक्ताफलकेतुहै उनके यहवचन सुनके पद्मावती बहुतप्रसन्नहुई और मुक्ताफलकेतुभी उसे पहचान कर आनन्दसे पूर्ण होगया इसप्रकार परस्पर पहचानकर जैसेही वहदोनों प्रेम सहित परस्पर देखनेलगे

वैसेही नगाड़ेका शब्द सुनाई दिया और चन्द्रकेतुका प्रतीहार मुक्ताफलकेतुके बुलानेके निमित्त वहीं आकर उससे बोला कि आपको इन्द्र तथा चन्द्रकेतु युद्धमे बुलारहे है आप इसी रथपरचढ़के चलिये उन के यह वचन सुनके वह उसरथपर चढ़केसम्पूर्ण देवताओं समेत चला और पद्मावती तड़ागमें स्नानकर- के उसके कल्याणके निमित्त श्रीपार्वतीजी का पूजन करनेलगी; उसमंदिरसे चलकर मुक्ताफलकेतु उस युद्धमें पहुँचा उसे देखकर सम्पूर्ण दैत्य क्रोधकरके उसीसे युद्ध करनेलगे तव उसने अपने वाणोंसे उन सवको मारकर हटादिया यह देखके विद्युध्वज क्रोधकरके उसी से युद्ध करनेलगा मुक्ताफलकेतुने उस पर वाणोंकी वृष्टिकी उस समय सम्पूर्ण देवता तथा दैत्यों का परस्पर घोर युद्ध होनेलगा हाथी घोड़े तथा वड़े २ वीर मर मरकर पृथ्वीमें गिरनेलगे रुधिर की नदियां वहनेलगीं और भूतों के साथ कवन्ध नाचनेलगे इसप्रकार से चौवीस दिन तक युद्ध रहा पच्चीसवें दिन दोनों सेनाओं के क्षीण होजाने पर मुक्ताफलकेतु के साथ विद्युध्वजका द्वन्द्व युद्ध होनेलगा उस समय अन्धकारास्त्र को सूर्य्यास्त्र से ग्रीष्मास्त्रको शिशिरास्त्रसे पर्व्वतास्त्रको वज्रास्त्रसे और नागास्त्रको गरुड़ास्त्रसे निवारणकरके मुक्ताफ- लकेतुने विद्युध्वजका रथ घोड़े तथा सारथियोंसमेत काटडाला इससे विद्युध्वज आकाशमें जाके अ- पनी मायाकरके अग्नि तथा शिलाओंकी वृष्टिकरनेलगा तव मुक्ताफलकेतुने अभिमंत्रणकरके ब्रह्मास्त्र चलाया इससे वह दुष्ट दैत्य निर्जीवहोकर गिरपड़ा और उसके सव सहायक भयभीतहोकर पातालको चलेगये और देवतालोग जयजय ध्वनिकरके पुष्पोंकी वृष्टिकरनेलगे तव इन्द्र मुक्ताफलकेतु को साथ लेकर स्वर्ग के भीतरगया उससमय इन्द्राणीको लेकर आयेहुए वृहस्पतिजी ने मुक्ताफलकेतुके शिर में महाउत्तम चूड़ामणि पहराई और इन्द्रने अपने गलेसे दिव्य हार उतारकर उसके गले में पहरादिया और प्रतीहार भेजकर विद्युध्वजका स्वर्ग से भी अधिक सुन्दरपुर अपने अधिकार में करलिया उसस- मय गन्धर्वराज पद्मशेखरने पद्मावती के विवाहकी इच्छासे ब्रह्माकी ओर देखा उसके अभिप्राय को जानके ब्रह्माने कहा अभी कुछ कार्य्य वाकी है इससे कुछ काल ठहरजाओ तदनन्तर रम्भाआदि के नृत्यों से वहां वड़ाउत्सवहुआ उसउत्सवको देखकर ब्रह्माजी के चलेजानेपर इन्द्रने सम्पूर्ण लोकपालों को विदाकरके गन्धर्वराज पद्मशेखरको वड़े सत्कारपूर्व्वक गन्धर्वनगर के जानेकी आज्ञादी और चन्द्र- केतु तथा मुक्ताफलकेतुको अपनेही रथपर चढाके वड़े आदरपूर्व्वक विद्याधरों के स्थानको भेजा विद्यु- ध्वजको मारकर अपने स्थानमें आके मुक्ताफलकेतुने वड़ा उत्सवकिया और उसके पिता चन्द्रकेतुने अपने पुत्रके विजयसे वहुत प्रसन्नहोकर अपने वन्धुजन तथा भृत्योंको वहुतसाधनदेकर अत्यन्त प्रसन्न किया दैत्यों के विजयकी कीर्त्तिको पाकरभी पद्मावती के विना मुक्ताफलकेतुको अपने ऐश्वर्य में कुछ भी सुख नहींहुआ तव संयतकनाम मंत्रीके समझानेसे किसीप्रकार वहदिन उसने व्यतीतकिया ६५॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांपद्मावतीलम्बकेतृतीयस्तरंगः ३॥

इसवीचमेंगन्धर्व राज पद्मशेखरने अपने पुरमें पहुँचकर अपनी स्त्रीके मुखसे अपनी कन्या को त- पकरनेको गई जानकर वुलवालिया और उसे प्रणाम करते देखकर यह आशीर्वाद दिया कि हे वत्से

तुमने मेरे लिये बड़ा क्लेशकिया इससे विद्याधरोंका राजा विद्युध्वजका मारनेवाला विजयी मुक्ताफल-केतु शीघ्रही तुम्हारा पतिहोय पिताके इसआशीर्वादको सुनके वह नीचेको मुखकरके बैठगई और उ-सकी माता कुवलयावली ने चन्द्रकेतु से कहा कि हे आर्य्यपुत्र कैसे उसमहाभयंकर दैत्यको अत्यन्त कोमल अंगवाले राजपुत्रने शीघ्रही मारडाला यहसुनकर उसने देवता और असुरोंके युद्धका सम्पूर्ण वृत्तान्त उससे कहा तब पद्मावतीकी सखीने उनराक्षसियोंका भी सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया यहसुनकर चन्द्रकेतुने कहा कि जिसने दैत्योंकी महासेना क्षणभरमें ही नष्टकरदी उसके आगे उन दो राक्षसियों की क्या गणनाहै अपने प्रियकी इसप्रकार प्रशंसा सुनकर कामाग्निसे बहुत पीड़ित होके पद्मावती वहां से अपने महलको चलीगई वहां भी अपने प्रियका स्मरण करके उसको महा संताप हुआ बहुत विकलहोके उसने अपने महलपरसे एक बड़ा सुन्दर उपवन देखकर विचार किया कि यह पुर बड़ाही उत्तमहै मेरे जन्म स्थान चन्द्रलोकसे भी इसमें अधिक शोभाहै देखो यहपुर नन्दन वनसे भी अधिक सुन्दर है इससे इसउपवनमें चलकर थोड़े काल अपनी विरहाग्नि को शान्तकरूं यहशोचकर वह अ-पने प्रभावसे पक्षियोंपर चढ़कर उसउपवनमें गई और वहां केलोंके पुंजमें पुष्प बिछाकर बैठी उसअत्य-न्त शीतल स्थानमें भी उसकी व्यथाकम नहीं हुई किन्तु और भी वृद्धिको प्राप्तहुई तब उसने अपनी सिद्धिके प्रभावसे वहां चित्र फलक (तसवीर लिखनेका कागज) तथा रंगकी बत्तियां लेकर अपने चित्त के बहलानेके लिये मुक्ताफलकेतुकी तसवीर बनाई इतनेमें उसकी मनोहारिका नाम सखी उसे ढूंढ़तीहुई वहींआई और उसे देखके यह जाननेके लिये कि यहक्या कररही है छिपकर उसके पीछे खड़ीहुई उस समय पद्मावती ने उसचित्रको देखकर कहा कि दुर्जय दैत्यकोजीतकर तुमने इन्द्रकी रक्षाकी इससमय संभाषण मात्रसेही मेरी रक्षा क्यों नहीं करते मुझसरीकी अभागिनियों के लिये कल्पवृक्ष भी कृपणबुद्ध भी निर्दय और सुवर्ण भी पाषाण होजाताहै मैं जानती हूं कि तुम्हें कभी कामकी पीड़ा नहीं हुईहै इस से तुम मेरी व्यथाको नहीं जानते घोर दैत्योंके भी जीतनेवाले तुमको पुष्पों के बाणोंसे कामदेव कैसे पीड़ित करसक्ताहै यह कुटिल भाग्य अश्रुओंसे नेत्रोंको बन्दकरके चित्रमें भी आपके दर्शन नहीं करने देता यहकहकर वह रोनेलगी तब मनोहारिका उसके सम्मुख गई मनोहारिका को देखकर उसने वह चित्र छिपा लिया और कहा कि हे सखी तुम इतनी देरसे कहां थी यहसुनकर मनोहारिका बोली कि तुम्हीं को मैं ढूंढ़रही थी इसचित्रको तुम क्यों छिपाती हो मैंने इसे देखलिया और तुम्हारी सबबातें भी मैं ने सुनली हैं उसके यहवचन सुनकर पद्मावती ने वह चित्र निकाल कर कहा कि हे सखी तुमको तो सब विदितही है तुमसे क्या छिपाऊंगी तड़ागमें उस राजपुत्रने राक्षसीरूपी अग्निमेंसे निकालकर भी मुझे इस कामाग्निमें डालदिया है अब मैं क्या करूं कहीं जाऊं क्या उपायकरूं उसके यह वचन सुनकर मनोहारिका ने कहा कि हे सखी उसपर तुम्हारा अनुराग करना उचितहीहै किंतु तुमको उसके विनाअधैर्य न करना चाहिये क्योंकि तुम्हारे विना उसको भी बड़ी विकलता होगी क्या तुमने उससमय उसका विकार नहींदेखाथा तुम्हारे स्वरूपको देखकर स्त्रियांभी चाहती हैं कि हम पुरुषहोजायँ ऐसेतुम्हारे

रूपको वह कैसे छोड़ेगा और शिवजीके वचन कैसे मिथ्या होसक्तेहैं इससे सावधानहो थोड़ेहीकालमें वह तुमको मिलजायगा तुमको कोई दुर्लभ नहीं है किन्तु तुम्हीं सबको महादुर्लभहो मनोहारिका के वचन सुनकर पद्मावतीने कहा कि हेसखी यह मैं जानतीहूं परन्तु क्याकरूं मेरा चित्त उसकेबिना क्षण भर भी नहींमानता सन्तापसे मेरे सम्पूर्ण अंग भस्मसे होरहेहैं और प्राण बाहरको निकलसे रहेहैं यह कहके वह मोहितहोके मनोहारिकाकी गोदीमे गिरपड़ी तब मनोहारिकाने जल छिड़ककर उसे साव-धान किया और कोमल २ पत्ते उसके नीचे रखकर चन्दनकालेप उसके शरीरमें किया इससे और भी अधिक सन्तप्त होकर पद्मावतीने कहा कि हेसखी क्यो व्यर्थश्रम करतीहो इससे मेरीव्यथा दूरनहीं हो-सक्ती जिससे शान्तिहोय सो करो तब कल्याणहोय यह सुनकर मनोहारिकाने कहा कि हेसखी ऐसा कौन कार्य्य है जो मैं तुम्हारेलिये नहीं करूंगी यह सुनकर पद्मावतीने कहा कि तुम जाकर मेरेप्रियको यहां लेआओ इसके सिवाय कोई उपायनहीं है और जब वह यहां आवेगा तब मेरापिता शीघ्रही मेरा विवाह उसकेसाथ करदेगा उसके वचन सुनकर मनोहारिकाने कहा कि अच्छा तुम धैर्य्यकरो मैं विद्या-धरोंके राजा चन्द्रकेतुके चन्द्रपुर नगरमे जाके तुम्हारे प्रियको लियेआतीहूं उसके यह वचन सुनके प-द्मावतीने कुछ सावधान होकर कहा कि वहां जाकर तुम मेरे प्रियसे मेरीओरसे यह वचन कहना कि भगवतीके मंदिरमें राक्षसियोंसे मेरी रक्षाकरके अब इस हत्यारे कामदेवसे मेरीरक्षा आप क्योंनहीं करते आपसरीके महात्माओंको यह उचित नहीं है कि अपने आश्रित जनकी एकवार रक्षाकरके आपत्तिमें फिर उसकी रक्षा न करनी, इसके सिवाय जोतुम और कोई योग्यबात समझना सोकहना यह कहके पद्मावतीने उसे बिदाकिया तब वह अपनी सिद्धिके प्रभावसे पक्षियोंके वाहनपर चढके विद्याधरोंके पुर को गई ६८ मनोहारिकाके चलेजानेपर पद्मावती धैर्य्यधरके उस चित्रकोलेकर अपने पिताके घरमें जाके अपने निवासस्थान में सखियों के सन्मुख श्रीशिवजी का पूजनकरके हाथ जोड़करबोली कि हे देव देव शिवजी त्रैलोक्यमें आपकी कृपाके विना किसीका कोई भी मनोरथ सिद्ध नहीं होताहै इससे कृपाकरके विद्याधरोंके चक्रवर्त्तीके पुत्रको मेरापति बनाइये नहीं तो मैं अपना शरीर आपकेआगे त्यागदूंगी उसके यह वचनसुनकर सखियोंने कहा कि हेसखी तुम ऐसा क्यों कहतीहो त्रैलोक्यमें ऐसी कौन वस्तुहै जो तुमको दुर्लभहै बुद्ध भी जो तुम्हारे शरीरको देखें तो संयमको त्यागकरदें इससे वह बड़ा पुण्यात्माहै जिसकेलिये तुम प्रार्थना करतीहो सखियोंके वचनसुनकर उसनेकहा कि जिसने अकेलेही युद्ध में सं-पूर्ण दैत्योंकोमारा और जिसने राक्षसियोंसे मेरेप्राणबचाये उसकेलिये मैं प्रार्थना क्यो न करूं यहकहकर वह अपनी सखियों से उसीकी प्रशंसा करनेलगी इस बीचमें मनोहारिका विद्याधरों के चन्द्रपुर नाम नगरमें पहुँचकर राजमन्दिरमें मुक्ताफलकेतुको न देखके उपवनमें गई वहां पक्षीरूपी उपवनके रक्षकोने मनुष्योंके समान प्रिय वचन कहके रत्नमय शिलापर बैठाकर उसका अतिथि सत्कारकिया उस सत्कार को ग्रहण करके विद्याधरों के ऐश्वर्य्य से बहुत आश्चर्य्यित होकर वह उसी उपवन में किसी कुंज के भीतर पुष्पोंकी शय्यापर लेटेहुए मुक्ताफलकेतुको देखकर यह यहां क्यों लेटाहै यह जाननेके लिये वह

वहीं छिपकर खड़ी होगई उस समय मुक्ताफलकेतुने अपने संयतक नाम मित्रसे कहा कि काम-देवने हिमचन्दन तथा मलयाचलकी वायुमें बहुतसे अंगार भरदिये हैं इससे तुम मेरे लिये व्यर्थ श्रम न करो अप्सराओंके मनोहर गीतोंको सुनकर भी मेरे चित्तको खेद होता है गन्धर्वराज पद्मशेखरकी पुत्री पद्मावतीके विना मेरा यह कामज्वर नहीं शान्तहोगा और उसकी प्राप्तिका एकही उपायहै जहां पार्वतीजीके मंदिरमें मैंने उसे देखाहै वहां जाकर उसकी प्राप्तिकेलिये श्रीशिवजीकी आराधनाकरूं यह कहकर जैसेही उसने वहांसे उठना चाहा वैसेही मनोहारिका अपने चित्तमें प्रसन्न होकर उसके सन्मुख गई उसे देखकर संयतकने मुक्ताफलकेतुसे कहा कि हेमित्र तुम बड़े भाग्यवान्हो देखो तुम्हारी प्रियाकी सखी तुम्हारे पास आई इसको मैंने पार्वतीजीके मन्दिरमें तुम्हारी प्रियाकेपास देखाथा संयतकके यह वचन सुनकर मुक्ताफलकेतुने आनन्दमें मग्नहोकर मनोहारिकाको बैठालकर उससे अपनी प्रियाकी कुशल पूछी तब मनोहारिकाने कहा कि हे स्वामी आपके संयोगसे मेरीसखीको अवश्य कुशल होगा परन्तु इससमय वह दुखित है जबसे उसने आपको भगवतीके मन्दिरमें देखा है तबसे वह न किसी के वचन सुनती है और न कहती है अत्यन्त शीतल पुष्पों की शैयापर भी लेटकर बहुत संतप्त होती है यहकहकर मनोहारिकाने पद्मावतीका सबसंदेसा उससे कहदिया उस संदेसेको सुनकर मुक्ताफलके-तुने कहा कि तुम्हारे अमृतके समान वचनोंको सुनकर मेरा सब संताप दूरहोगया आज मेरे पूर्वकृत पुण्य सफल होगये जो पद्मावती भी मेरे ऊपर ऐसीकृपा करतीहै मैं तो किसीप्रकारसे विरहकी व्यथाको सहभीसक्ताहूं परन्तु वह अत्यन्त कोमलाङ्गी होनेके कारण नहीं सहसक्ती है इससे आज मैं उसी पार्वती जीके मंदिरमें आऊंगा तुम भी अपनी सखीको वहीं लिवालाना ब्रह्माजीने प्रसन्नहोके सर्वदुःखनाशक यह चूड़ामणि मुझको दीहै यह तुम जाकर मेरी प्रियाको देदेना और इन्द्रका दियाहुआ यह हार मैं तुमको पारितोपिक देताहूं यह कहके मुक्ताफलकेतुने चूड़ामणि तथा हार देकर उसे बिदाकिया तब वहां से चलकर पद्मावतीके निकट पहुँचकर मनोहारिकाने उसके प्रियका सब संदेसा उससे कहकर शिरमें वह चूड़ामणि पहरादी और अपनेको मिलाहुआ हारभी उसे दिखादिया तब पद्मावतीने बहुत प्रसन्न होकर मनोहारिकाको अपने हृदयमें लगाके पार्वतीजीके मंदिरको जानेके लिये तैयारीकरी इस बीच मे भाग्यवशसे पार्वतीजीके उस मंदिरमें तपोधन नाम एक मुनि दृढ़व्रतनाम एक अपने शिष्यकेसाथ आये और उस शिष्यसे बोले कि मैं यहां समाधि लगाताहूं तुम इस उपवनके द्वारपर खड़ेरहो किसी को इसके भीतर आने मतदेना यह कहके अपने शिष्यको द्वारपर खड़ाकरके वह मुनि कुछकाल तक समाधि लगाकर अपने शिष्यसे विनाकहेही मठके भीतर जाके भगवती का पूजनकरनेलगे इतने में मुक्ताफलकेतु अपने मित्र संयतकके साथ वहां आया और जैसेही उपवनके भीतर जानेलगा वैसेही मुनिके शिष्यने कहा कि हमारेगुरु समाधिमें लगेहैं तुम भीतर मतजाओ उसके वचन सुनकर मुक्ता-फलकेतु यह शोचके कि मुनि तो इसउपवनमें किसी एकस्थानमें बैठे होंगे कदाचित् मेरीप्रिया आकर न घबरा रहीहो, मुनि शिष्यकी दृष्टिबचाकर उपवनके भीतर चलागया इतनेमें मुनिका शिष्य अपने

गुरुकी समाधिके देखनेके लिये भीतर गया वहां उसने अपने गुरुको तो नहीं किन्तु मुक्ताफलकेतुको अपने मित्रसमेत देखकर क्रोधसे यह शापदिया कि हेमूर्ख तुमने मेरे गुरुको यहां से भगादियाहै इस अपराधसे तुम अपने मित्रसहित मनुष्य होजाओ यह शापदेकर वह अपने गुरुकेपास चलागया और मुक्ताफलकेतु उसशापको सुनकर अत्यन्त खेदको प्राप्तहोगया इतनेमें पद्मावतीभी मनोहारिकाके साथ वहां आई उस समय उसका दक्षिणनेत्र फड़कनेलगा इससे वह सन्देहयुक्त होकर और अपने प्रियको उदासीन देखकर यह शोचनेलगी कि क्या मेरे आनेमें देरहोगई इससे राजपुत्र उदासीन होगया उसे सन्देहयुक्त देखकर मुक्ताफलकेतु ने उससे कहा कि हेप्रिये तुम्हारा मनोरथ सिद्धहोकर भी भग्न होगया यह कहकर उसने शापका सब वृत्तान्त कहदिया तब पद्मावती उदासीन होकर उसे अपने साथमें लेकर उस ज्ञानी तपोधन मुनिकेपास शापका अन्त पूछनेकोगई परमज्ञानी तपोधन मुनिने उन सबको आकर प्रणाम करतेदेखकर मुक्ताफलकेतुसे कहा कि इस मूर्खशिष्यने आपको व्यर्थ शापदियाहै क्योंकि आपने मेरा कोई अपराध नहीं किया मैं अपनेआप समाधिसे उठबैठाहूं अच्छा यह तो तुम्हारे लिये होनाहीथा यह केवल हेतुमात्रहोगया क्योंकि मनुष्यशरीरमें तुमको अवश्य देवकार्य्य करनाहै मनुष्य योनिमें जब तुम कामसे पीड़ितहोकर इस पद्मावतीको देखोगे तब तुम शापसे छूटोगे और फिर यही शरीर पाकर इसकेसाथ विवाह करोगे तुमने ब्रह्मास्त्रका प्रयोगकरके बहुतसे बाल वृद्धदैत्य भी मारडाले हैं उसीअधर्मके लेशसे तुमको इतनाक्लेश सहना पड़ेगा मुनिके यह वचन सुनकर पद्मावती ने कहा हेभगवन् जो गति आर्य्यपुत्रकी होगी वही मेरी भी हो क्योंकि इनके विना मैं क्षणभर नहीं रहसक्ती यह सुनकर मुनि ने कहा कि ऐसा नहीं होसक्ता तुम यहीं तपकरो जिससे यह शीघ्रही शाप से छूटकर तुमको मिले और दशकल्प तक विद्याधरोंका राज्यकरे इसकी दीहुई चूड़ामणिके पहरनेसे तुमको तपमें क्लेश न होगा क्योंकि यह ब्रह्माके कमंडलसे पैदाहुई है इससे इसमें बड़ाप्रभावहै इसप्रकार कहते हुए उस मुनिसे मुक्ताफलकेतुने कहा कि हेभगवन् मनुष्ययोनिमें मुझको श्रीशिवजीके चरणोंमें बड़ी भक्तिहो और पद्मावतीके सिवाय अन्य किसी स्त्रीमें मेराचित्त चलायमान न होय मुनिने कहा ऐसाही होगा तब पद्मावतीने क्रोधकरके मुनिके शिष्यको यह शाप दिया कि तुमने अपनी मूर्खतासे आर्यपुत्र को शाप दियाहै इससे मनुष्ययोनिमें तुम इनके कामचारी वाहनहोगे पद्मावतीके शापको सुनकर वह मुनि अपने शिष्यसमेत अन्तर्द्धान होगये तब मुक्ताफलकेतुने पद्मावती से कहा कि मैं अपने पुरको जाता हूं देखूं वहां मेरी क्यादशा होती है यह सुनकर पद्मावती विरहसे व्याकुल होकर मूर्छितहोके पृथ्वी में गिरपड़ी तब उसे मूर्च्छासे जगाके और बहुत समझाके मुक्ताफलकेतु अपने मित्रसमेत वहां से चलागया और पद्मावती ने बहुत विलापकरके मनोहारिका से कहा कि हे सखी आज स्वप्नमें श्री पार्वतीजीने मुझे दर्शन देकर कमलकी माला मेरेगले में पहरानी चाही परन्तु न जानें किसकारणसे माला न पहराकर मुझसे कहा कि मैं तुमको फिर माला पहराऊंगी इससे मैं जानती हूं कि पार्वतीजी ने प्रियके संगमका विघ्न मुझे इसप्रकारसे सूचन कियाहै उसके यहवचन सुनकर मनोहारिकाने कहा

कि भगवती ने तुमको सावधान करने के लिये यहस्वप्न दिखाया है और मुनिने भी ऐसाही कहा है और अन्य देवताओं की भीयही आज्ञाहै इससे धैर्य्यधरो थोड़ेही कालमें तुम्हारा प्रिय तुमको मिलैगा सखीके वचन सुनकर पद्मावती धैर्य्य धारण करके त्रिकाल शिवपूजन करतीहुई वहीं तपकरनेलगी इससमाचारको सुनकर वहाँ आकर तपसे निषेधकरतेहुए अपने माता पितासे उसने कहा कि जो मेरे पतिको शापका अत्यन्त दुःखमिलाहै तो मैं सुखपूर्व्वक कैसेरहूं क्योंकि पतिव्रता स्त्रियोंका पतिही परम देवहै तपसे पापके क्षीणहोजानेपर और श्री शिवजी के प्रसन्नहोजानेपर थोड़ेही कालमें मेरा प्रिय मुझको मिलजायगा क्योंकि तपसे कोई वस्तु असाध्य नहीं है पद्मावतीके यह निश्चित वचन सुनकर उसकी माता कुवलयावली ने अपने पति से कहा कि हे स्वामी इसको तपकरनेदो निषेध मतकरो क्योंकिऐसाही होनेवालाहै इसका जो कारणहै वह मैं आपसे कहतीहूं आप सुनिये कि पूर्व्वसमय शिवपुरमें सिद्धोंके स्वामीकी देवप्रभा नाम कन्या अभीष्ट पति मिलने के लिये घोर तपकररहीथी उसे देख कर पद्मावतीने हँसकर उससे कहाथा कि तुम पतिके लिये तपकरनेमें क्यों नहीं लज्जितहोतीहो इस के यह वचन सुनकर उसने इसे यह शापदियाथा कि हे मूर्खे तू बालकपनसे मुझे अभी हँसती है तुझ को भी पतिके लिये इसीप्रकार तप करनापड़ैगा उसी शापके प्रभावसे इसको यह क्लेश भोगनापड़ा है इससे आप इसको तपकरनेदीजिये कुवलयावली के यह वचनसुनकर गन्धर्वराज उसकेसाथ अपनी पुरीको चला गया और पद्मावती नित्य आकाशमार्ग से जाकर श्री सिद्धीश्वरका पूजनकरके पार्वती जी के उसी आश्रममें रहनेलगी १८२॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांपद्मावतीलम्बकेचतुर्थस्तरंगः४॥

इसप्रकारसे पद्मावती तो दृढ़चित्त होकर तप करनेलगी और मुक्ताफलकेतु अपने नगर में आकर शापके भयसे श्री शिवजी के मन्दिरमें जाके भक्तिपूर्व्वक श्री शिवजी का पूजन करनेलगा उससमय उस मन्दिरसे यह वचन सुनाईदिया कि हे पुत्र डरोमत तुमको गर्भ के बासका क्लेश नहींहोगा मनुष्य योनि में भी तुमको बहुतसे दुःख नहीं भोगनेपड़ेंगे और तुम महाबलवान् राजपुत्रहोगे तपोधन नाम मुनिसे तुमको सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्र प्राप्तहोंगे और मेरा किंकर नाम गण तुम्हारा छोटा भाईहोगा उसकी सहायतासे तुम सम्पूर्ण शत्रुओंको जीतकर देवताओंका कार्य्यकरके फिर विद्याधर होजाओगे इस वचनको सुनकर मुक्ताफलकेतु धैर्य्यधरके शापके फलकी अपेक्षा करनेलगा उन्हीं दिनों में पूर्व्व दिशामें देवसभनाम एक नगरथा उसमें मेरुध्वजनाम महायशस्वी धर्मात्मा प्रतापी और परमदानी राजा था उस राजाके चित्तमें केवल दो बातोंकी चिन्ता रहती थी एक तो यह कि उसके कोई पुत्र न था और दूसरे देवताओं के युद्ध से भागेहुए दैत्य जो पातालमें रहते थे वह उसके तीर्थ तथा आश्रमों में आकर उनको भ्रष्टकरके चलेजाते थे और उपाय करनेपर भी राजाके बन्धनमें नहीं आते थे यही दो चिन्ता उसके हृदयमें रहतीथीं एकसमय चैत्रके शुक्लपक्षकी प्रतिपदाके दिन इन्द्रने उत्सव देखने के निमित्त अपना रथ भेजकर राजा मेरुध्वजको स्वर्ग में बुलवाया वहां दिव्य स्त्रियों के नृत्यको देखकर भी राजा

को अप्रसन्न देखकर इन्द्रने उसका अभिप्राय जानकर कहा कि हे राजा मैं तुम्हारे दुःखको जानता हूं यह दुःख तुम त्यागदो क्योंकि श्रीशिवजी के अंशसे मुक्ताफलध्वजनाम और श्री शिवजी के गणका अवतार मलयध्वजनाम यह दो पुत्र तुम्हारे होंगे तपोधन नाम मुनिसे सम्पूर्ण विद्या कामचारीवाहन तथा सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्र पाकर और फिर महापाशुपतनाम अस्त्रको भी प्राप्तकरके मुक्ताफलध्वज सम्पूर्ण दैत्योंको जीतकर पृथ्वी तथा पातालको अपने वशकरलेगा और तुम मुझसे कांचनगिरि तथा कांचनशेखरनाम दो हाथी और महाअस्त्रलो यह कहके इन्द्रने उसे दोनों हाथी तथा अस्त्र देकर पृथ्वीपर भेजदिया पृथ्वीपर आकर उन दिव्य हाथियोंपर चढ़के तपोधन मुनिके आश्रममें जाकर उसने यह प्रार्थनाकरी कि हे भगवन् पुत्रोंकी प्राप्तिके निमित्त मुझको कोई शीघ्र उपाय आप बताइये उसके यह वचन सुनकर तपोधन मुनिने उसे श्री शिवजी के आराधन का व्रतबतलाया उस व्रतसे राजापर प्रसन्न हुए श्री शिवजी ने स्वप्नमें दर्शन देकर कहा कि हे राजा उठो सम्पूर्ण दैत्यों के नाशकरनेवाले दो पुत्र तुम्हारे क्रमसे उत्पन्नहोंगे शिवजी से यह वरपाके राजाने प्रातःकाल सोने से उठके मुनिसे सब वृत्तांत कहके व्रतका पारणकिया इसके कुछेकदिनके उपरान्त राजा मेरुध्वजकी रानीको रजोधर्महुआ उन्हीं दिनों मुक्ताफलकेतु अपने शरीरको त्यागकर उसके गर्भमें आकर प्राप्तहुआ और उसका वह मुख्य शरीर चन्द्रपुरमें विद्याके प्रभावसे ज्योंकात्योंही रक्खारहा और यहां देवसभनगर में राजा मेरुध्वज अपनी रानीको गर्भवती जानकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ समय पाकर रानी ने अत्यन्त तेजस्वी पुत्रउत्पन्न किया इससे सम्पूर्ण नगरमें बड़ा महोत्सवहुआ और आकाशमें नगाड़ेबजे तपोबलसे पुत्रकी उत्पत्ति को जानकर तपोधन मुनि ने वहां आकर राजाके कहने से उस बालकका मुक्ताफलध्वज नाम रक्खा नामकरणकरके मुनिके चलेजानेपर एकवर्ष के उपरान्त राजा मेरुध्वजके उसी रानी में द्वितीय पुत्र उत्पन्नहुआ तपोधन मुनिने आकर प्रसन्नहोकर उसका मलयध्वज नाम रक्खा तदनन्तर संयतक भी शापके प्रभाव से राजा मेरुध्वज के मन्त्री के यहां उत्पन्न हुआ उसका नाम मन्त्री ने महाबुद्धि रक्खा तदनन्तर आठवर्ष व्यतीत होनेपर तपोधन मुनिने आकरउन दोनों राजपुत्रोंका यज्ञोपवीत करके उन्हें सम्पूर्ण विद्या कला तथा महा अस्त्रोंकी शिक्षाकी बालकों को शिक्षित करके जब तपोधन मुनि अपने आश्रमको जानेलगे तब राजा मेरुध्वज ने उनसे कहा कि हे भगवन् आप अभीष्ट दक्षिणा मांगिये राजाके यह वचनसुनके तपोधन मुनिनेकहा कि हेराजा मैं यही दक्षिणा मांगताहूं कि तुम अपने पुत्रों समेत आकर यज्ञों में विघ्न करनेवाले दैत्यों को मारो मुनि के वचनसुनकर राजाने कहा कि आप अपने आश्रममें जाकर यज्ञको प्रारम्भ कीजिये जब दैत्य लोग विघ्न करनेआवेंगे तब मैं अपने पुत्रों समेत आकर उनका नाशकरूंगा पूर्वसमय में दैत्य लोग छलसे यज्ञमें विघ्नकरके आकाशमे उड़के समुद्रमें कूदकर पाताल में चलेजातेथे अब तो इन्द्रके दिये हुए आकाशगामी हाथी मेरे पासहैं इससे उनको आकाशसे भी मैं पकड़लाऊंगा राजा के यह वचन सुनकर तपोधनने कहा कि अच्छा आप यज्ञकी सम्पूर्ण सामग्री मेरे आश्रममें भिजवाइये मैं आश्रममें जाके यज्ञका प्रारम्भकरके अपने इसदृढ़

व्रतनाम शिष्यको आपके बुलाने के लिये भेजूंगा यह पक्षीरूपहोकर आपके पास आवेगा और मु-क्ताफलध्वजका कामचारी वाहनहोगा यह कहके वह मुनि अपने आश्रमको चलेगये और राजाने उन के साथही सम्पूर्ण यज्ञकी सामग्रीभेजदी यज्ञका प्रारम्भ होतेही पातालमें सम्पूर्ण दैत्यलोग महा कुपित हुए यह जानकर तपोधनने शापके प्रभावसे पक्षीहुए दृढव्रत नाम अपने शिष्यको राजाके बुलाने को भेजा उसेदेखकर मुनि के वचनका स्मरण करके अपने दोनों हाथियों को सजवाके एकपर आप तथा दूसरे हाथीपर अपने दूसरे पुत्रको चढ़ाकर और मुक्ताफलध्वजको उस पक्षीपर चढ़ाके राजा मेरु ध्वज मुनिके आश्रमको गया और पीछेसे सम्पूर्ण सेनाभी पृथ्वी के मार्ग से गई आश्रम में उनसबको आया देखके मुनिने प्रसन्नहोकर यह वरदिया कि तुमलोगोंके शरीरों में शस्त्रोंका वेधनहीं होगा इतनेमें दैत्योंकी सेनाभी यज्ञविध्वंस करनेको आगई उन्हें देखकर मेरुध्वजकी सेना उनदैत्योंसे युद्धकरनेलगी आकाशचारी दैत्यो से मनुष्यों को पीड़ित देखकर मुक्ताफलध्वजने अपने पक्षीरूप वाहनपर चढ़के आकाशमें जाकर अपने वाणोंकी वृष्टिसे दैत्योंके शरीर काटडाले उसे पक्षीपर चढ़ा देखके विष्णुभग-वान् जानकर सब दैत्योंने भागकर पातालमें जाकर त्रैलोक्यमालीनाम दैत्यराज से सब वृत्तान्त कहा दैत्योंके वचनसुनकर त्रैलोक्यमाली चारोंके द्वारा मुक्ताफलध्वजको मनुष्य जानके युद्धके लिये सम्पूर्ण दैत्योंको एकत्रित करके दुश्शकुनोंको भी न मानकर सम्पूर्ण दैत्यों समेत युद्ध करनेको आश्रममें आया उसे आते देखकर मेरुध्वजके सम्पूर्ण सैनिक लोग उन दैत्यों से युद्ध करनेलगे उससमय मुक्ताफल ध्वजके पास शिवजीका भेजाहुआ पाशुपत नाम अस्त्रभी आकर प्राप्तहुआ और बोला कि श्रीशिव-जीने तुम्हारे विजयके निमित्त मुझको भेजाहै उसके यह वचन सुनके मुक्ताफलध्वजने पूजन करके उसे ग्रहण करलिया उस अस्त्रके तीननेत्र चारमुख एक पैर तथा आठ भुजायीं और कल्पान्तकी अग्नि के समान उसका तेजथा ऐसे अस्त्रको पाकर वाणोंके जालोंसे अपनी सेनाकी रक्षा करके मुक्ताफल-ध्वजने अपने भाई तथा पिताको साथलेके आकाशमें जाकर दैत्योंसे घोर युद्ध किया मुक्ताफलध्वजके बड़े पराक्रमको देखकर दैत्यराज त्रैलोक्यमाली ने सर्पास्त्र चलाया उससे निकलेहुए हज़ारों सर्पों को मलयध्वजने गरुड़ास्त्रसे नष्ट करदिया इस प्रकार उस दैत्यने जो २ अस्त्र चलाये वह सब मुक्ताफलध्व-जने अपने अस्त्रों से काटडाले इससे सम्पूर्ण दैत्योंने कुपितहोकर आग्नेयादिक सम्पूर्ण अस्त्र उसपर एकवारही चलाये परन्तु सब अस्त्र पाशुपत अस्त्रको देखके विमुख होकर लौटगये इससे वह दैत्यजैसे ही भागने की इच्छा करनेलगे वैसेही मुक्ताफलध्वजने उनके चारोंओर वाणोंका पिंजरासा बनादिया जिससे कि वह भागने में असमर्थ होकर उसीके भीतर पक्षियों के समान घूमनेलगे तब उसके पिता तथा भाईने तीक्ष्ण वाणों से उन दैत्यों के हाथ पैर तथा शिर काट २ कर पृथ्वीपर डालदिये और उन दैत्यों के शरीरों से रुधिरकी नदियां बहनेलगीं इस विचित्र युद्धको देखकर देवता लोगों ने आकाश पुष्पोंकी वृष्टिकरके मुक्ताफलध्वजकी बड़ी प्रशंसाकी तब मुक्ताफलध्वजने मोहनास्त्रसे सम्पूर्ण दैत्यों मोहित करके वारुणास्त्रसे सबको बांधलिया यह देखकर तपोधनने मेरुध्वजसे कहा कि अब इन

दुष्ट दैत्यों को न मारो इन्हीं के साथ रसातलमें चलना होगा इस दैत्यराज त्रैलोक्यमाली को कुटुम्ब सहित बांधकर दुष्ट सर्प दुष्टराक्षस तथा बड़े २ दैत्यों समेत श्वेत पर्वतकी गुहामें बन्दकरदो तपोधनके यह वचन सुनकर मेरुध्वजने दैत्योंसे कहा कि तुम लोग भयमतकरो अब हम तुमको नहीं मारेंगे परन्तु मुक्ताफलध्वजकी आज्ञा तुम लोगों को माननी होगी राजा के यह वचन उन सब दैत्योंने प्रसन्नहोकर स्वीकार करलिये तब राजा मेरुध्वजने त्रैलोक्यमाली को बँधवाकर श्वेत पर्व्वतकी गुहा में बन्द करवादिया और बहुतसी सेना समेत अपने प्रधान मंत्रीको उसकी रक्षाके निमित्त नियत करदिया ६७ इसके उपरान्त युद्ध के निवृत्त होजानेपर मेरुध्वजने अपने दोनों पुत्रोंसे कहा कि मैं यहीं यज्ञकी रक्षा के निमित्त ठहरताहूं तुम दोनों अपनी सबसेना लेकर दैत्यों के साथ पातालमें जाके वहाँ के निवासियों को स्वस्थ करके उनपर अपना अधिकार जमाकर और अपने अधिकारी नियत करके यहाँ लौट आओ मेरुध्वजके यहवचन सुनकर मुक्ताफलध्वज तथा मलयध्वज दोनों भाई अपनी सम्पूर्ण सेना लेकर दैत्यों के साथ रसातलमें गये वहाँ सातों रसातलोंमें अपने नामका ढँढोरा पिटवाकर उनपर अपना अधिकार जमाकर कुछदिन वहाँ के उपवनों में विहार करतेरहे वहाँ बहुतसी अत्यन्त रूपवती दैत्यों की स्त्रियां उन्हों ने देखीं उनमें से दैत्यराज त्रैलोक्यमालीकी स्वयंप्रभानाम स्त्री और त्रैलोक्यप्रभा तथा त्रिभुवनप्रभानाम दोनों कन्या अपने पति तथा पिता के कल्याण के लिये तपकरतीथीं, उनको देखकर वह दोनों राजपुत्र सम्पूर्ण पाताल को स्वस्थ करके और संग्रामसिंहादिक अधिकारियों को वहाँ नियतकरके तपोधन मुनिके आश्रममें अपने पिताकेपास चलेआये इतने में मुनिका यज्ञभी समाप्तहुआ इससे इन्द्रादिक देवता तथा सम्पूर्ण महर्षि अपने २ आश्रमको चले तब मेरुध्वजने इन्द्रसे कहा कि हे देवराज जो आप मुझपर प्रसन्नहैं तो मेरे नगरको चलकर पवित्रकरो उसके वचन सुनकर इन्द्र उसके साथ देवसभ नगरमें गया वहाँ राजा मेरुध्वजने इन्द्रका ऐसा सत्कार किया कि जिससे वह अपने स्वर्ग के सुखोंको भी भूलगया इससे इन्द्रने भी प्रसन्न होकर मेरुध्वजको मुक्ताफलध्वज तथा मलयध्वज समेत स्वर्गमें लेजाकर बड़ा सत्कार किया और कल्पवृक्षकी माला तथा दिव्य मुकुट पहराकर पृथ्वीपर भेजदिया तदनन्तर एकदिन मेरुध्वज ने मुक्ताफलध्वजसे कहा कि हे पुत्र तुमने सम्पूर्ण शत्रुजीते और तुम्हारी युवावस्था है और बहुतसी रूपवती राजकन्या मेरे वशमेंहैं इससे तुम अपना विवाहकरो अपने पिताके वचन सुनकर मुक्ताफलध्वजने कहा कि हे तात विवाहकरनेको मेरा चित्त नहीं चाहताहै मैं श्री शिवजी के प्रसन्न करने के लिये तपकरूंगा मलयध्वजको चाहिये कि अपना विवाहकरले मुक्ताफलध्वजके वचन सुनकर मलयध्वजने कहा कि हे आर्य तुम्हारे विवाह किये बिना मुझको विवाहकरना कैसे उचित है मैं तुम्हारा अनुचर हूं जो तुमकरोगे वही मैं करूंगा मलयध्वज के यहवचन सुनके मेरुध्वज ने मुक्ताफलध्वज से कहा कि तुम्हारा अनुज बहुत ठीक कहताहै परन्तु तुम उचित बात नहीं कहतेहो क्योंकि यहकौनसा तपका समय है इससे इसदुराग्रहको त्यागकर अपना विवाहकरो पिताके यहवचन सुनकर भी मुक्ताफलध्वजने विवाहकरना नहीं स्वीकार किया इससे राजा

मेरुध्वज चुपहोके समयकीप्रतीक्षा करनेलगा इसवीचमें पातालमें त्रैलोक्यमालीकी स्वयंप्रभानाम स्त्रीसे उसकी दोनोंकन्याओं ने कहा कि हे अंब किसपापरूपी अपराधसे हमारापिता बन्धनमेंपड़ाहै आठवर्ष हमको तपकरतेहोगये अभीतक श्रीशिवजी प्रसन्ननहीहुए इससे हम अपनेशरीरोंको अग्नि में जलाये देती हैं यहकन्याओंके वचनसुनकर स्वयंप्रभानेकहा हेप्यारीपुत्रियो सन्तोपकरो तुम्हाराउदय फिरहोगा श्रीशिवजीने मुझसे स्वप्नमेंयहकहाहै कि हेपुत्री धैर्य्यकरो तुम्हारेपति को फिर पातालका राज्य मिलेगा मुक्ताफलध्वज तथा मलयध्वज तुम्हारी दोनोकन्याओं के पतिहोंगे इनको तुममनुष्य मतजानों इनमें से एकविद्याधर और दूसरा मेरागणहै श्रीशिवजीके यहवचन सुनकरमैं जगपड़ी और इसी आशासे मैंने इतनाक्लेशसहा अवतुम्हारे पितासे इसस्वप्नके वृत्तान्तको कहलवाकर उसकी आज्ञासे तुम्हारे विवाहका यत्न करूंगी इसप्रकार अपनीकन्याओंको समझाकर स्वयंप्रभाने अपनी इन्दुमतीनाम सखीसे कहा कि श्वेतशैलकी गुहामें आर्यपुत्रके निकट जाके मेरी ओरसे विनयकरके मैंने जो स्वप्न देखाहै वह उनको सुनाओ और कन्याओं के विवाहके लिये उनसे पूछो फिर जो कुछवह तुमसे कहें वहमुझसे आकर कहो यह कहके उसइन्दुमती को गुहा में भेजा इन्दुमती ने पातालसे श्वेत पर्वतकी गुहा में जाकर रक्ष- कों से आज्ञालेके त्रैलोक्यमाली के निकट जाके उससे स्वयंप्रभा का सब संदेसा कहा संदेसे को सुन- कर त्रैलोक्यमाली ने कहा कि चाहो मैं इसी बन्धन मेंही मरजाऊं परन्तु मेरुध्वज के पुत्रोंको अपनी कन्या कभी न दूंगा त्रैलोक्यमाली के वचनसुनकर इन्दुमती ने आकर स्वयंप्रभासे सबवृत्तान्तकहदिया इन्दुमतीके वचन सुनकर त्रैलोक्यप्रभा तथा त्रिभुवनप्रभा दोनों कन्याओं ने अपनी स्वयंप्रभा मातासे कहाकि हेअंब अव यौवनकेभयसे हमको अग्निहीमें जलजाना उचितहै इससे यह जो चतुर्दशी आती है उस दिन हमदोनों अग्निमें भस्महोंगी यह कन्याओं के वचन सुनकर स्वयंप्रभानेभी अग्निमें भस्म होने का निश्चयकर लिया और जब चतुर्दशी का दिन आया तो हाटकेश्वरनाम शिवजी का पू- जनकरके पापरिपुनाम तीर्थ के निकट उनसबने चितालगाई इतने में राजामेरुध्वजभी उसीदिन अपने पुत्रतथा स्त्रियों समेत हाटकेश्वरका पूजनकरने के निमित्त वहींगया वहीं से पापरिपु तीर्थमें स्नानकर- ने के लिये जाकर उसीके निकट वनमें धुआंउठना देखकर उसने अपने अधिकारियों से कहाकि देखो यह धुआं कैसा उठरहाहै उन्होने कहा हे महाराज त्रैलोक्यमाली दैत्यकी स्वयंप्रभानाम स्त्री अपनीदोनों कन्याओंसमेत यहाँ तपकरती है वही कुछहवन कररहीहोगी अथवा खिन्नहोकर अग्निमें प्रवेशकरना चाहतीहोगी यहसुनकर राजामेरुध्वज संपूर्ण सेनाको वहीं छोड़कर अपने पुत्र तथा स्त्रियों समेत उनके पास जाके छिपकर उन्हें देखनेलगा और अत्यन्तरूपवती उनदोनों कन्याओंको देखकर राजानेशोचा कि इनके बाल क्याहें मानों ब्रह्माने इनके स्वरूपकी रक्षाके लिये सर्पही बैठालदियेहैं क्याही विलक्षण इनका स्वरूपहै कि रंभा उर्वशी तथा तिलोत्तमादिक अप्सरा भी इनकी तुल्यता नहींकरसक्ती हैं राजाके इसप्रकार शोचतेही त्रैलोक्यप्रभानाम ज्येष्ठकन्याने अग्निका पूजनकरके यहप्रार्थना करी कि हे अग्नि देव जिसदिनसे मेरीमाताने स्वप्नका वर्णनकियाहै उसी दिनसे राजपुत्र मुक्ताफलध्वजको मैंने अपना

पति मानलियाहै इससे द्वितीय जन्म में वह मेरा पति अवश्य होय क्योंकि इसजन्ममें मैं उसके साथ पिताकी आज्ञाके विना विवाह नहींकरसक्तीहूं यहकहके उसके निवृत्तहोजानेपर त्रिभुवनप्रभाने मलय-ध्वजको द्वितीय जन्ममें अपने पतिहोनेकी प्रार्थनाकरी उनदोनोंकी यह प्रार्थना सुनकर राजा मेरुध्व-जने अपनी रानी से यह सलाहकरी कि यह दोनों कन्या जो हमारे पुत्रोंको मिलें तो इनके सम्पूर्ण गुण सफलहोंय इससे इनके पास चलके इनको मृत्युसे निवारण करना चाहिये यह शोचकर राजाने रानी समेत उनके पास जाकर कहा कि साहस मतकरो मैं तुम्हारे दुःखको दूरकरूंगा राजाके यहवचन सुनकर वह सब उसको प्रणामकरके बोलीं कि आपके दर्शनके प्रभावसे हमारा दुःख अवश्य नष्टहोगा अब आप आसनपर बैठकर अर्घपाद्यादि सत्कार ग्रहणकीजिये यहसुनकर राजाने स्वयंप्रभासे हँसकर कहा कि तुम दोनों इन अपने जामाताओंको अर्घपाद्यदो यह सुनकर स्वयंप्रभाने कहा कि जब श्री शिवजी कृपाकरेंगे तब में इनको अर्घपाद्यदूंगी अभी तो आप अर्घपाद्य ग्रहण कीजिये यह सुनकर मेरुध्वजने कहा कि तुम मृत्युसे निवृत्तहोगी तब जानो कि मैंने सब सत्कार पाया अब तुम यहांसे च-लकर अपने पुरमें रहो मैं तुम्हारे कल्याणके लिये यत्नकरूंगा राजाके यह वचनसुनकर स्वयंप्रभाने कहा कि आपकी आज्ञासे हम शरीर त्याग करने से तो निवृत्तहोगई परन्तु स्वामीके कारागृह में होने पर हमको पुरमें रहना उचित नहीं है इससे तबतक हम यहीं रहेंगी जबतक आप हमारे पतिको कुटुम्ब सहित कारागृहसे न छोड़ियेगा जब आपउसे छोड़दीजियेगा तब वह आपहीका अधिकारी होकर यहां का राज्य करेगा और आपकी आज्ञानुसारही सम्पूर्ण कार्य्यकरेगा इसमें मैं आपकी प्रतिभू (ज़ामिन) हूं इन पातालों में से जो २ रत्न आपको चाहिये सो २ ले लीजिये स्वयंप्रभाके यह वचनसुनकर मेरुध्व-जने यह कहकर कि जैसा योग्य समझ पड़ेगा वह हम करेंगे परन्तु तुम अपने वचनोंको न भूलना, स्नान करके हाटकेश्वरका पूजन किया, उससमय मुक्ताफलध्वज तथा मलयध्वजको देखकर वहदोनों कन्या उन्हीं में एकाग्रचित्तहोगई तदनन्तर राजामेरुध्वज अपने पुत्र स्त्री और सम्पूर्ण परिकरको लेकर पातालसे अपने नगरको आया वहां मलयध्वज त्रिभुवनप्रभाका स्मरणकरके कामसे अत्यन्त पीड़ित हुआ परन्तु अत्यन्त धैर्य्यवान् मुक्ताफलध्वज त्रैलोक्यप्रभा को अपने ऊपर आसक्त जानकरके भी मुनिके वरके प्रभावसे जराभी चित्तमें विकारयुक्त नहीं हुआ और राजा मेरुध्वज मुक्ताफलध्वजको वि-वाह करनेसे विमुख देखकर मलयध्वज को कामसे पीड़ित जानकर और उस त्रैलोक्यमाली दैत्यको कन्या देनेमें विरुद्धजानकर उपायके शोचने में अत्यन्त व्यग्रहुआ १६७ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांपद्मावतीलम्बकेपंचमस्तरंगः ५ ॥

इसके उपरान्त राजा मेरुध्वजने मलयध्वजको कामसे पीड़ित देखकर अपनी महादेवीनाम रानी से कहा कि जो त्रैलोक्यमाली दैत्यकी कन्या मेरी पुत्रवधू नहींहुई तो मेरा सब राज्य व्यर्थ है छोटी कन्याके विना मेरा पुत्र मलयध्वज अत्यन्त कामसे पीड़ित होरहाहै मैंने त्रैलोक्यमाली दैत्यको अभी तक बन्धनमें से इसी कारण नहीं छोड़ाहै क्योंकि वह बन्धनसे छूटकर अभिमानसे फिर मेरे पुत्रों को

मनुष्य जानकर अपनी कन्या नहीं देगा इससे पहलेही उससे नियम करालेना चाहिये यहकहके और रानी से सलाहकरके उसने प्रतीहारको बुलाकेकहा कि तुम श्वेतशैलकी गुहामें जाकर त्रैलोक्यमाली दैत्यसे यह मेरे वचनकहो कि हे दैत्यराज दैवयोगसे तुमको यहां बड़ा क्लेश प्राप्तहुआहै इससे अब हमारे वचनमानके अपने क्लेशको दूरकरो अपनी दोनों कन्या मेरे दोनों पुत्रोंको देदो और बन्धन से छूटकर अपने देशको जाकर राज्यकरो राजाके वचन सुनके प्रतीहारने श्वेतपर्व्वत में जाके त्रैलोक्यमाली से राजाके वचनकहे और उसका यहउत्तर कि मैं अपनी कन्या मनुष्योंको नहींदूंगा राजासे आकर कहा तब राजा मेरुध्वज कोई अन्य उपाय शोचनेलगा उन्हीं दिनों में स्वयंप्रभाने सब वृत्तान्त जानकर इन्दुमतीको महादेवी के पास भेजा उसने आकर महादेवी से कहा कि पर्व्वत तथा समुद्र चाहे अपनी मर्य्यादाको त्यागदें परन्तु आपलोगों के वचन नहीं टलते हमारे स्वामी ने तुम्हारे पुत्रों को कन्या देना इसलिये नहीं स्वीकार कियाहै कि वह कन्याओंकी भेंट देकर बन्धनसे नहीं छूटना चाहता है जो तुम बन्धनसे उसे छुड़वादोगी तो वह प्रत्युपकारके लिये अपनी कन्या तुम्हारे पुत्रों को अवश्यदेगा और नहीं तो स्वयंप्रभा अपनी कन्याओं समेत अपना प्राणदेदेगी इससे हेरानी ऐसा उपाय करो जिससे त्रैलोक्यमाली बन्धन से छूटे तो सब कार्य्य सिद्ध होजाय और स्वयंप्रभाकी दीहुई यह चूड़ामणि तुमलो इसके पहरनेसे मनुष्यको आकाशमें गमन करनेकी शक्तिहोजाती है इन्दुमतीके यह वचन सुनकर रानी महादेवीने उससे कहा कि उस दुःखित स्वयंप्रभाका यह आभूषण में कैसे लूं यह सुनके इन्दुमतीने कहा कि जो तुम इसे न लोगी तो हमको बड़ा दुःख होगा और जो लेलोगी तो हमारे चित्तमें शान्ति होगी इन्दुमतीके वचन सुनकर रानीने वह चूड़ामणि लेली और कहा जबतक राजा आवें तबतक तुम यहीं ठहरो इतनेमें राजा मेरुध्वज वहां आया उसे देखकर इन्दुमतीने प्रणाम करके स्वयंप्रभाका भेजाहुआ विषरोग तथा वृद्धावस्थानाशक आभूषण उसकी भेंटकिया उस आभूषणको देखकर राजाने कहा कि जब हम अपने सत्यका पालन करलेंगे तब इस आभूषणको लेंगे राजाके यह वचन सुनकर इन्दुमतीने कहा कि आपने जो कहाहै वह आप अवश्य कीजियेगा इससे जो आप इसको लेलीजियेगा तो हमलोगोंके चित्तमें बड़ी स्वस्थता होगी उसके यह वचनसुनकर रानीने आभूषण लेकर राजाको पहरादिया तब इन्दुमतीने जो वचन रानी से कहेथे वही वचन राजासेभीकहे इन्दुमतीके वचन सुनकर राजाने कहा आज तुम यहीं रहो प्रातःकाल में तुमको उत्तर दूंगा यह कहके वह रात्रि व्यतीत करके राजाने प्रातःकाल अपने मन्त्रियोंको बुलाके उनके आगे इन्दुमतीसे कहा कि हमारे इन मंत्रियोंके साथ जाकर त्रैलोक्यमाली से आज्ञा लेकर पातालसे स्वयंप्रभा आदिक सम्पूर्ण दैत्याङ्गना तथा पातालके मुख्य निवासी और हाटकेश्वरका जल यहां लाकर सम्पूर्ण दैत्यांगनाओंसे अपने २ पतियोंकी यह शपथ लिखवाओ कि त्रैलोक्यमाली अपने कुटुम्ब सहित सदैव मेरे वशीभूत रहेगा तथा सबलोग पृथ्वीमें किसी प्रकारकी हानि नहीं पहुंचावेंगे इस विषय में सम्पूर्ण पाताल के निवासी प्रतिभू (जामिन) हों और राजा समेत सब दैत्य इस विषय का पत्र लिखकर मुझेदेदें और

सब मिलकर हाटकेश्वरका जलपियें तब मैं त्रैलोक्यमालीको बन्दीगृहसे छोड़ूंगा यह कहकर राजाने इन्दुमतीको अपने मंत्रियों के साथ भेजा वह उन मंत्रियोंके साथजाके त्रैलोक्यमाली से आज्ञा लेकर पातालसे स्वयंप्रभा आदिक सबको राजाके निकट लिवालाई राजाने उनसबसे शपथ खिलवाकर और पत्र लिखवाकर त्रैलोक्यमालीको बन्दीगृहसे निकालकर अपने घरमें लाकर आदरपूर्वक पातालका राज्यदेदिया और उससे बहुमूल्य दैत्योंके सबरत्न लेलिये तदनन्तर त्रैलोक्यमालीने पातालमें जाकर बड़ाउत्सव किया और स्वयंप्रभासे सलाहकरके फिर मेरुध्वजके निकट आकरकहा कि आपने प्रथम भलीभांति रसातल न देखा होगा इससे अब मेरे साथ चलकर सब रसातलको देखिये और अपने पुत्रों के लिये मेरी कन्याओं को स्वीकार कीजिये त्रैलोक्यमालीके यह वचन सुनकर मेरुध्वजने अपनी रानी तथा पुत्रों को वहीं बुलवाके त्रैलोक्यमाली के कहेहुये वचन सुनाये तब मुक्ताफलध्वजने कहा कि हे तात मैं शिवजीकी आराधना किये विना विवाह नहीं करूंगा इस मेरे अपराध को आप क्षमाकीजिये, मलयध्वज अपना विवाह करले क्योंकि दैत्यकन्याके विना इसका चित्त बहुत विकल होरहाहै उसके यहवचन सुनकर मलयध्वजने कहा कि हे आर्य आपके विवाह किये विना मैं अपना विवाह नहीं करूंगा इसमे मुझको अयश तथा अधर्म होगा उनदोनोंकी यह वार्त्तालाप सुनकर त्रैलोक्यमाली मेरुध्वजसे आज्ञालेकर पातालको लौटगया वहां उसने अपनी स्त्री तथा पुत्रों से कहा कि देखो मेरा भाग्य कैसा विपरीत है कि मनुष्य भी मेरी कन्याओंको नहीं स्वीकार करते हैं यहसुनकर उसकी स्त्री तथा पुत्र ने कहा कि ब्रह्माकी चित्तवृत्तिको कौन जान सक्ताहै क्या शिवजी के वचन भी मिथ्या होजायँगे उनको इसप्रकार कहतेहुए सुनकर त्रैलोक्यप्रभा तथा त्रिभुवनप्रभा दोनों कन्याओंने यह प्रतिज्ञाकरी कि बारह दिनतक हमदोनो निराहार रहैंगी इतने दिनोंमें जो श्री शिवजीकी कृपासे हमारे विवाहका निश्चय न होगा तो अग्निमें प्रवेशकरके अपने शरीरों को त्यागकरेंगी यह नियमकरके वह दोनों श्री शिवजीका ध्यानकरके बैठगईं उनकी यह दशा देखकर स्वयंप्रभा तथा त्रैलोक्यमालीने भी आहार त्यागदिया तब स्वयंप्रभाने इन्दुमतीके द्वारा महादेवीके पास यहवृत्तान्त कहलाभेजा इन्दुमती से इसवृत्तान्तको सुनकर महादेवी तथा मेरुध्वज ने भी आहार त्यागदिया और अपने मातापिताको निराहार देखकर मुक्ताफलध्वज तथा मलयध्वजने भी आहार त्यागदिया इसप्रकार सबके निराहार होनेपर मुक्ताफलध्वज शरणागत वत्सल श्रीशिवजीका ध्यान करनेलगा छःरात्रि व्यतीत होजाने पर मुक्ताफलध्वजने सातवें दिन प्रातःकाल उठकर अपने महाबुद्धिनाम मित्रसेकहा कि हे मित्र आज स्वप्नमें मैं तपोधन मुनिके दियेहुये वाहनपर चढकर यहां से बहुत दूर मेरुपर्व्वत के निकट श्रीशिवजीके दर्शनको गया तो वहां एक दिव्य कन्या तप कररही थी उस कन्यापर दृष्टि करके एक जटाधारी पुरुषने हँसकर मुझसे कहा कि एक कन्यासे भागकर तुम यहांआयेहो यहां यह दूसरी कन्या तुम्हारे लिये खड़ी हुई है उस पुरुष के यहवचन सुनकर उसकन्या के अत्यन्त मनोहर रूपको देखतेही देखते मैं जगपड़ा इससे मैं उसदिव्य कन्याकी प्राप्तिके लिये उसी स्थानको जाऊंगा

और जो वह वहां न मिलैगी तो शरीर त्यागदूंगा देखो स्वतः मिलीहुई उस दैत्यकन्याको त्यागकरके मेराचित्त स्वप्नमें देखीहुई उसदिव्य कन्यापर कैसा आशक्त होगया विधनाकी वड़ी विचित्र गतिहै यह कहकर वह तपोधनके दियेहुए विमानरूप वाहनपर अपने मित्र समेत चढ़के श्रीशिवजी के उसीदिव्य स्थानको गया वहां स्वप्नके अनुसार सम्पूर्ण स्थान देखकर वहुत प्रसन्न होकर सिद्धोदकनाम तीर्थ में स्नान करनेलगा इतनेमें उसका पिता उसे कहींगया जानके वड़े खेदको प्राप्तहुआ और त्रैलोक्यमाली भी इसवृत्तान्तको सुनकर अपनी स्त्री तथा कन्याओंको लेकर राजा मेरुध्वजके पास आया वहां उन सवने यह निश्चयकिया कि आज चतुर्दशी का दिनहै इससे वह कहीं शिवजीका पूजन करनेगया होगा इससे आज उसकी प्रतीक्षा करनी चाहिये जो प्रातःकाल वह नहीं आवेगा तो जहां वहहोगा वहीं चलेंगे इसवीचमें पार्वती के मंदिरमें स्थित पद्मावती ने उसीदिन अपनी सखियों से कहा कि सखियो आज स्वप्नमें मैं सिद्धीश्वरक्षेत्र में गई थी वहां एक जटाधारी पुरुषने मुझसे कहा कि हे पुत्रि तुम्हारा दुःख समाप्तहुआ अवतुम्हारा पति तुमको मिलजायगा यहकहके उसके अन्तर्द्धान होजानेपर रात्रि और निद्रा दोनों व्यतीत होगई अवचलो वहीं चलें यहकहके पद्मावती अपनी सखियों समेत श्री शिवजी के उसी स्थानको गई वहां सिद्धोदक में स्नान करतेहुए मुक्ताफलध्वजको देखकर उसने अपनी सखियों से कहा कि देखो यहपुरुष मेरे प्रियकेही सदृशही मालूम होताहै क्या यह वही तो नहीं है नहीं नहीं यह तो मनुष्य है उसके वचन सुनकर सखियों ने मुक्ताफलध्वजकी ओर देखकर कहा कि केवल यही तुम्हारे प्रियके सदृश नहीं है किन्तु इसका मित्र भी तुम्हारे प्रियके संयतकनाम मित्रके समानहै तुमने जो अपने स्वप्नका वर्णन किया था उससे मालूम होताहै कि शापसे मनुष्य रूपहुए तुम्हारे प्रियको परमेश्वर किसीयुक्तिसे यहांलेआयाहै नहीं तो इसदेवभूमि में मनुष्योंका आना कैसे होसक्ताहै सखियों के यहवचन सुनकर पद्मावती श्रीशिवजीका पूजनकरके मुक्ताफलध्वजके वृत्तान्त जानेके लिये वहीं अपनी सखियों समेत छिपरही उससमय मुक्ताफलध्वज स्नान करके मंदिर में आया श्रीशिवजी के पूजन से निवृत्त होकर सब ओर देखकर महाबुद्धि से वोला कि यह वही शिवजीका स्थानहै जो मैंने स्वप्नमें देखाथा और वही रत्नमय श्री शिवजीकी मूर्त्ति है जिसके भीतर गौरीशंकरकी मूर्त्ति लक्षित होती है और वही रत्नमय दिव्य उपवनहै परन्तु उससमय मैंने जो दिव्य कन्या देखी वह यहां कहीं नही दिखाई देती जो मुझको वह नहीं मिलैगी तो मैं अपना शरीर त्यागदूंगा उसके यह वचन सुनके सखियोंने धीरेसे पद्मावती से कहा कि सुनो यहस्वप्नमें तुमको देखकर यहां आया और तुम्हारे विनादेखे प्राणदेना चाहता है इससे छिपकर इसे देखो कि क्या निश्चयहोताहै १०३ यह कहकर उनके छिपकर खड़े होजानेपर मुक्ताफलध्वजने श्री शिवजीका पूजनकरके मंदिरके वाहर निकलकर भक्तिसे जैसेही शिवजी की तीनप्रदक्षिणाकीं वैसेही उसे और उसके मित्रको अपने पूर्वजन्म का स्मरणआया और वृक्षोंके वीचमें से उसे पद्मावती दिखाईदी पद्मावती को देखकर मुक्ताफलध्वजने अपने मित्रसे कहा देखो मैंने स्वप्नमें पद्मावती कोही देखाथा और भाग्यवशसे वह यहां भी मिली

अब इसकेपास जाकर इससे वार्त्तालाप करताहूं यह कहकर उसने पद्मावतीके निकटजाके कहा कि हे प्यारी अब यहांसे कहीं न जाना तुम्हारा प्रिय मुक्ताफलकेतु मैं ही हूं आज मुझको अपने पूर्वजन्मका स्मरण आया है यह कहकर उसने पद्मावती का आलिंगन करना चाहा परन्तु पद्मावती कुछ सन्देह युक्तहोकर मायासे छिपकर अलग हटकर खड़ी होगई उसे न देखकर मुक्ताफलध्वज मूर्च्छाखाकर पृथ्वी पर गिरपड़ा तब उसके मित्रनेकहा कि हे पद्मावती जिसकेलिये तुमने अत्यन्त क्लेशदायी तप किया है उसे पाकर भी क्यों नहीं बोलती हो मैं तुम्हारे प्रियका मित्र संयतकहूं तुम्हारे लिये हमदोनोंको शाप प्राप्तहुआहै यहकहकर उसने मुक्ताफलध्वजको मूर्च्छासे जगाकर कहा कि हे मित्र जो तुमने दैत्यराजकी अनुरक्त कन्याका त्यागकियाहै उसीका यहफलहै उसके यहवचन सुनकर पद्मावतीने अपनी सखियोंसे कहा कि सुनो इसकीबातसे मालूमहोताहै कि इसने दैत्यराजकी कन्याकेसाथभी विवाह नहीकिया यह सुनकर सखियोंने कहा कि क्यातुमको यहस्मरण नहींहै कि शापकेसमय तुम्हारे प्रियने तपोधन मुनिसे यहवरमांगाथा कि मनुष्य योनि में पद्मावती के विना किसी अन्यस्त्री में मेराचित्त अनुरक्त न होय उसी वरके प्रभावसे इसका चित्त अन्यस्त्रीपर अनुरक्त नहींहोता यहसुनकर पद्मावती अपने चित्तमें अत्यन्त सन्देह युक्तहुई और मुक्ताफलध्वज अपनी प्रियाको न देखकर हाप्रिये पद्मावति क्यों नहीं दिखाई देतीहो विद्याधरपनेमें तुम्हारेही निमित्त मुझको शापप्राप्तहुआथा और तुम्हारेही निमित्त आजभी मेरी मृत्युहोती है उसके इनवचनोंको सुनकर पद्मावतीने अपनी सखियोंसे कहा कि यद्यपि इसके सबवचनोंसे किसी प्रकारका सन्देह नहींहोताहै तथापि इननरोंने कहीं मेरा सबवृत्तान्त न सुनाहो यहशोचकर चित्तमें संदेह होताहै मैं इसके दुःखित वचनोंको नहीं सुनसक्तीहूं इससेचलो पार्वतीजीके स्थानमेंचलें पूजनका समय भी आगयाहै यहकहकर पद्मावती ने अपनी सखियों समेत पार्वतीजी के मंदिरमें जाके पार्वतीजीका पूजनकरके यह विज्ञापनाकी कि हे भगवती जिसपुरुषको मैंने सिद्धीश्वरक्षेत्रमें देखाहै वह जो सत्य २ मेरा प्रियहोय तो शीघ्रही उसके साथ मेरा समागमहोय उसके यहकहतेही मुक्ताफलध्वज ने अपने मित्र महाबुद्धिसे कहा कि हे मित्र मैं जानताहूं कि पद्मावती श्रीपार्वतीजी के स्थानको चलीगई इससे चलो वहीं चलें यहकहके अपने उसी विमानपर चढ़के वह श्रीपार्वतीजी के मंदिरमें गया वहां उसे विमानपरसे उतरते देखकर सखियोंने पद्मावती से कहा देखो यह दिव्य विमानपर चढ़के यहां भी आगया मनुष्य होकर भी यहकैसा प्रभावशाली है सखियों के वचनसुनकर पद्मावती ने कहा कि क्या तुमको स्मरण नहीं है कि मैंने अपने प्रियके शापदेनेवाले मुनि शिष्यको यह शाप दियाथा कि तुम मनुष्य योनिमें इसके कामरूप वाहनहोगे इसीसे वाहनरूपहुए मुनि शिष्यपर चढ़ाहुआ यह सब ओर घूमता है उसके वचनसुनकर सखियों ने कहा कि जो तुम यह जानतीहो तो फिर क्यों नहीं इससे बोलतीहो यहसुनकर उसने कहा कि यह संभावना होतीहै परन्तु निश्चय अभीतक नहीं हुआ और जो सत्य२ यह वही होय तो भी मुझे इससे वार्त्तालाप करना योग्य नहीं है क्योंकि यह अन्य शरीरमें स्थित है इससे छिपकर खड़े होकर देखना चाहिये कि यह क्या करताहै इतने में मुक्ताफलध्वज विमान से उतर

कर अपने मित्रसे बोला कि यहीं मैंने राक्षसियो से अपनी प्रियाकी रक्षाकी थी और यहीं मुझे मुनि शिष्यका शापहुआ था देखो जो पद्मावती मेरेसाथही प्राणदेनेको उद्यतहोकर मुनिके बहुत समझाने से निवृत्तहुई थी वही आज मुझको दर्शन भी नहीं देती है उसके यहवचन सुनकर पद्मावतीने अपनी सखियों से कहा हे सखियो सत्यही यह मेरा प्रियहै परन्तु यह अन्य शरीरमें स्थितहै इससे मैं इसकेपास कैसेजाऊं इसविषयमें सिद्धीश्वरजीही मेरी गतिहैं उन्होंनेही मुझे स्वप्नदियाहै और वही मेरी सहायता करेंगे यहकहके वह अपनी सखियों समेत सिद्धीश्वरजी के मंदिरमें जाके श्री शिवजीका पूजनकरके हाथजोड़कर बोली कि हे श्रीशिवजी शीघ्रहीं प्रियसे मेरा संगमकराओ नहीं तो मृत्यु दो इतने में मुक्ताफलध्वज पार्वतीजी के मंदिरमें पद्मावती को ढूंढ़कर कहीं न पाके अपने मित्रसे बोला कि यहां मुझको प्रिया नहीं मिलीहै इससे फिर वहीं शिवजी के मंदिरमें चलताहूं और वहां भी जो वह मुझे न मिलैगी तो इसपापी शरीरको अग्निमें त्यागूंगा यहसुनकर महाबुद्धिने कहा कि तुम्हारा कल्याणहोगा क्योंकि श्रीशिवजीके वचन मिथ्या नहीं होसक्ते इसप्रकार समझातेहुए अपने मित्रकेसाथ मुक्ताफलध्वज उसी विमानपर चढ़के सिद्धीश्वरक्षेत्रमें आया उसे आया देखकर पद्मावतीने अपनी सखियों से कहा कि देखो यह यहां फिर आगया तब मुक्ताफलध्वज विमानपरसे उतरकर मंदिरमें जाके श्रीशिवजी का नवीन पूजन देखके अपने मित्रसे बोला कि हे मित्र देखो अभी किसीने श्रीशिवजी का पूजन किया है मैं जानताहूं मेरी प्रिया यहां कहीं है उसीका कियाहुआ यह पूजनहै यहकहके वह पद्मावती को बहुतढूंढ़कर कहीं न पाके बड़े उच्चस्वरसे विलाप करनेलगा उससमय कोकिलाओंके शब्द सुनके तथा कमलोंके वनोंको देखकर उसेबहुतही कामकी पीड़ाहुई तब महाबुद्धिने उसे समझाकरकहा कि हे मित्र तुमअपने शरीरको क्यों सत्यानाशकररहेहो तुम्हारापिता मेरुध्वज तुम्हारा श्वशुर त्रैलोक्यमाली तुमपर अनुरक्त त्रैलोक्यप्रभा तुम्हारी माता और तुम्हारा अनुज मलयध्वज यहसब तुम्हारे विना शरीर त्यागदेंगे इससे चलकर उनकी रक्षाकरनी चाहिये उसके वचन सुनके मुक्ताफलध्वजने कहा कि तुम्हीं मेरे विमानपर चढ़के वहां जाकर उन्हे समझाओ यह सुनकर उसने कहा कि तुम्हारा विमान मुझे कैसे मिलसक्ताहै क्योंकि तुम्हारी प्रियाके शापसे मुनिका शिष्य केवल तुम्हारेही लिये वाहनहुआ है उसके वचन सुनकर मुक्ताफलध्वजनेकहा कि अच्छा अभी यहीं ठहरो देखो क्याहोताहै उनदोनोंकी यहबातालाप सुनके पद्मावतीने अपनी सखियों से कहा कि मुझे पूर्ण निश्चयहोताहै कि यही मेरा प्रियहै शाप से अन्यशरीर होनेके कारण इसको यहक्लेश होरहाहै और मैंने भी सिद्धकी कन्याका उपहासकियाथा इसीसे यह क्लेश मुझको भी होरहाहै उसके इसप्रकार कहतेही वियोगी लोगोंका अत्यन्त क्लेशदायक चन्द्रमा उदयहुआ चन्द्रमाको देखकर अत्यन्त विलाप करतेहुए मुक्ताफलध्वजसे छिपीहुई पद्मावतीने कहा कि हे राजपुत्र यद्यपि तुम सत्य २ मेरे प्रियहो तथापि अन्यशरीर में स्थितहोने के कारण मेरे लिये परपुरुषहो और मैं तुम्हारेलिये परस्त्रीहूं इससे क्यों बहुत विलाप करते हो जो मुनिके वचन सत्य हैं तो कोई उपाय अवश्य होगा उसके यह वचन सुनके और उन्हें न देखकर मुक्ताफलध्वज हर्षविषाद

से युक्तहोकर बोला कि हे प्रिये मैंने पूर्वजन्मका स्मरणकरके तुमको पहचानलिया क्योंकि तुम अपने ही शरीरमें स्थितहो परंतु तुमने मुझको कैसे पहचाना क्योंकि मै अन्यशरीर में स्थितहूं मैं अब इस पापी शरीरको अवश्य त्यागदूंगा यह कहकर वह चुपहोगया और पद्मावती छिपीहुई खड़ी रही तदनन्तर बहुत रात्रिव्यतीतहोनेपर अपने मित्र महाबुद्धिको सोया देखकर पद्मावती को उसशरीरसे अप्राप्त जानकर मुक्ताफलध्वजने चितालगाकर श्रीशिवजीसे यह प्रार्थना करके कि मुझको शीघ्रही पूर्व शरीर से पद्मावती मिले अपना शरीर भस्मकरदिया इतने में महाबुद्धिने उठकर मुक्ताफलध्वजको न देखके और यह जानकर कि उसने अपना शरीर भस्मकरदिया है उसी अग्निमे कूदकर अपना भी शरीर त्यागकरदिया यह देखकर पद्मावतीने दुखितहोकर अपनी सखियों से कहा कि (धिगहोहृदयं स्त्रीणांकठिनंकुलिशादपि) अरे धिक्कारहै स्त्रियों का हृदय वज्रसे भी कठोरहोताहै जो इस महाक्लेश को देखकर भी मेरेप्राण नहीं निकले मुझ अभागिनी के दुःखका अन्त अभी तक नहींहुआ मेरे पापों के प्रभावसे मुनिके भी वचन मिथ्याहोगये इससे अब शरीरका त्यागनाही मेरेलिये कल्याणकारी है अग्नि तो परपुरुष है इसमें प्रवेश करना मुझको उचितनहीं है इससे फांसीलगाना चाहिये यह कहकर उसने सखियों के समझानेको न मानकर शिवजीके आगे अशोक वृक्षमें जैसेही फांसीलगाई वैसेही तपोधन मुनिने आकर उससे कहा कि हे पुत्री साहस न करो तुम्हारा प्रिय अभी यहीं तुमको मिलैगा तुम्हारेही तपके प्रभावसे उसका शाप क्षीणहोगया अपने तपमें अविश्वास न करो हर्षकेसमय विषाद न करना चाहिये मैं ध्यानसे तुम्हारी इसदशाको जानकर यहां आयाहूं इसप्रकार कहतेहुए तपोधन मुनिको देखकर पद्मावती अपने चित्तमे बहुत सन्देह युक्तहुई उसीसमय मुक्ताफलकेतु मनुष्य शरीर को त्यागकरके अपने विद्याधर शरीरको पाकर अपने मित्र समेत वहींआया उसे देखकर पद्मावती ऐसी प्रसन्नहुई जैसे नवीन मेघको देखकर चातकी और पौर्णमासी के चन्द्रमा को देखकर कुमुद्नी प्रसन्नहोतीहै उससमय पद्मावती को देखकर मुक्ताफलकेतु ऐसा प्रसन्नहुआ जैसे बहुत कालसे मरुदेश में भ्रमण करताहुआ पथिक नदीको पाकर प्रसन्नहोताहै उनदोनों के परस्पर मिलनेसे बड़ेहर्ष पूर्व्वक उस रात्रिके व्यतीतहोजानेपर प्रातःकाल राजा मेरुध्वज त्रैलोक्यमाली त्रैलोक्यप्रभा मलयध्वज तथा अन्य परिकर समेत वहींआया उनसबको तपोधन मुनिने मुक्ताफलकेतुकी सम्पूर्ण कथा सुनाई और उनसबको सिद्धोदक तीर्थ में स्नान करवाके और श्रीशिवजी का पूजन कराके शोकरहितकिया उस समय त्रैलोक्यप्रभा अपने पूर्वजन्मका स्मरणकरके यह शोचनेलगी कि मैं तो सिद्धाधिप की कन्या वह देवप्रभाहूं जिसने विद्याधरों के स्वामी को पति बनाने के लिये तप करते २ पद्मावती के हँसने से अपना शरीर अग्नि में भस्म किया था मेरा प्रिय विद्याधरों का राजा यह मुक्ताफलकेतु तो मनुष्य शरीर को त्यागकर अपने विद्याधर शरीर को पागया इससे मुझ को इस आसुरी शरीर से इसके साथ विवाह न करना चाहिये यह शोच के और अपने माता पिता से अपना सब वृत्तान्त कहके जिस अग्नि में मुक्ताफलध्वज भस्म हुआथा उसी में वह भी भस्महोगई उसके भस्महोतेही अग्निदेव प्रसन्न

होके उसको उसका पूर्व्वशरीर देकर उसे लेकर प्रकटहुए और मुक्ताफलकेतुसे बोले कि हे विद्याधरेन्द्र इसने तुम्हारेलिये अग्निमें अपना शरीर भस्मकियाहै इससे तुम इसे अपनी स्त्री बनाओ यहकहकर अ-ग्निके अन्तर्द्धान होजानेपर ब्रह्मा तथा इन्द्रादिकदेवता मुक्ताफलकेतुका पिता विद्याधर चन्द्रकेतु और गन्धर्वराज पद्मशेखर वहां आये उससमय पद्मशेखरने सब देवताओं से आज्ञालेकर मुक्ताफलकेतु के साथ पद्मावतीका विवाह विधिपूर्व्वक करदिया और पद्मावती के विवाहके पीछे मुक्ताफलकेतुने सिद्ध राजकी पुत्री देवप्रभा के साथ भी विवाह किया और त्रैलोक्यमाली ने उसीसमय मलयध्वजके साथ अपनी छोटी कन्या त्रिभुवनप्रभाका विवाह करदिया और राजा मेरुध्वज मलयध्वजको अपना संपूर्ण राज्यदेकर स्त्री समेत तपकरनेके लिये वनको चलागया और त्रैलोक्यमाली अपने सम्पूर्ण परिकर समेत निज लोकको चलागया तदनन्तर इन्द्रने मुक्ताफलकेतुको विद्युध्वज दैत्यकी सब राज लक्ष्मी देदी उससमय यह आकाशवाणी हुई कि मुक्ताफलकेतु विद्याधरोंके तथा दैत्योंके ऐश्वर्य्यका भोगकरे और सम्पूर्ण देवता लोग अपने २ स्थानमें जायँ इसआकाशवाणीको सुनकर ब्रह्मादिक देवता अपने२ स्थानको चलेगये और तपोधन मुनि शापसे छूटेहुए अपने शिष्यको साथ लेकर अपने आश्रमको गये और चन्द्रकेतु विद्याधरभी दोनों बहुओं समेत मुक्ताफलकेतुको साथ लेकर अपने स्थानको गया और वहां बहुत कालतक विद्याधरों की चक्रवर्त्ति लक्ष्मी को भोगकरके मुक्ताफलकेतुको राज्य देकर वैराग्यसे अपनी स्त्री समेत तपोवनको चलागया तब मुक्ताफलकेतुने दैत्योंके तथा विद्याधरोंके चक्रवर्त्ती पनेको पाकर पद्मावतीके साथ दशकल्प पर्य्यन्त राज्य सुखका भोगकिया अन्तमें सम्पूर्ण सांसारिक पदार्थोंको अनित्य जानकर वह तपोवन में जाके अत्यन्त तपकरके श्री शिवजी में लीनहोगया उन हंसोंसे इस सरस कथाको सुनकर और उनसे दिव्य ज्ञानपाकर राजा ब्रह्मदत्त उन्ही हंसोंके साथ अपनी स्त्री तथा मंत्रियों समेत सिद्धीश्वर चेत्रमेंगया वहां शापसे प्राप्तहोनेवाले अपने २ शरीरोंको त्यागकर वह सब श्री शिवजीके अनुचरहोगये मदनमंचुकाके विरह में गोमुखसे इसकथाको सुनकर हे मुनि लोगो मुझे क्षणमात्रतक कुछ सावधानताहुई नरवाहनदत्तसे इसकथाको सुनकर कश्यपजीके आश्रम में गोपालक सहित सम्पूर्ण मुनि बहुत प्रसन्नहुए २१९ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांपद्मावतीलम्बकेषष्ठस्तरंगः ६ ॥

पद्मावतीनाम सत्रहवां लम्बक समाप्तहुआ ॥

विषमशीलोनाम अष्टादशो लम्बकः॥

चन्द्राननार्द्धदेहाय चन्द्रांशुसितभूतये ॥
चन्द्रार्कानलनेत्राय चन्द्रार्द्धशिरसेनमः १
करेणकुंचिताग्रेण लीलयोन्नमितेनयः ॥
भातिसिद्धीरिवददत्सपायाद्वोगजाननः २

इसके उपरान्त कश्यपजी के आश्रममें नरवाहनदत्त ने मुनियों से कहा कि मदनमंचुका के विरह में जब वेगवती ने मुझे लेजाकर विद्यासे रक्षितकरके रक्खा तो अत्यन्त विरहसे व्याकुलहोकर मैंने अपना शरीर त्यागनाचाहा इतने में वनमे भ्रमण करतेहुए कश्यमुनिको देखकर मैंने प्रणाम किया उन्होने मुझे प्रणाम करते देखके ध्यानसे मेरे सब वृत्तान्तको जानकर मुझे अपने आश्रममे लेजाकर मुझसे कहा कि चन्द्रवंशमें उत्पन्नहोकर भी तुम ऐसे कातर क्यो होतेहो क्या देवताओं के कहनेपरभी तुमको अपनी प्रियाके मिलने का विश्वासनहीं है मनुष्योंको असम्भव पदार्थ भी संसारमें प्राप्तहोते हैं इस विषयपर मैं राजा विक्रमादित्यकी कथा तुमको सुनाताहूं कि अवन्ती देशमें परम प्रसिद्ध उज्जयिनी नाम पुरी है उसमें महाप्रतापी कामके समान स्वरूपवान् बड़ादानी महेन्द्रादित्य नाम राजा था उसके सौम्यदर्शनानाम अत्यन्त रूपवती रानी थी सुमति नाम महा बुद्धिमान् मंत्री था और वज्रायुध नाम प्रतीहार था उनसबके साथ राज्यका पालन करताहुआ राजा महेन्द्रादित्य पुत्रकी कामनासे अनेक व्रत कियाकरता था इसबीचमें म्लेच्छोंके उपद्रवों से दुखितहोकर इन्द्रादिक देवता कैलाश में श्री शिवजी के निकट गये स्तुतिपूर्व्वक प्रणामकरके बैठने के उपरान्त आगमनका कारण पूछनेपर उन लोगोंने शिवजी से कहा कि हे स्वामी जिन दैत्योंको आपने तथा विष्णुभगवान् ने माराहै वह म्लेच्छरूपसे पृथ्वी मे उत्पन्नहोकर ब्राह्मणोंको मारते हैं यज्ञादिक क्रियाओ को नष्ट करते हैं और मुनियों की कन्याओको हरलेते हैं इत्यादिक अनेक पापकरते हैं भूलोकसे सदैव देवलोक तृप्तहोताहै क्योंकि ब्राह्मणलोग जो हविष्यान्न अग्निमें हवन करते हैं उसी से देवताओंकी तृप्तिहोती है इन दिनों पृथ्वी म्लेच्छो से व्याप्तहोगई है इसकारण यज्ञभाग नष्टहोगयेहैं इससे देवतालोग बहुत पीड़ितहैं इसका आप कोई उपाय शीघ्रही कीजिये कोई ऐसा वीर पृथ्वीमे उत्पन्न कीजिये जो इन म्लेच्छोंका नाशकरे देवताओ के वचन सुनके श्री शिवजी ने कहा कि तुमलोग जाओ हमशीघ्रहीइसका उपाय करेंगे शिवजी के वचन सुनकर देवताओ के चलेजाने पर शिवजी ने माल्यवान् गणको बुलाकर उससे कहा कि हे पुत्र तुम मृत्युलोक में उज्जयिनी के राजामहेन्द्रादित्यके पुत्रहो वहराजा मेरा अंशहै और उसकी स्त्री पार्वती जी के अंशसे है उसके यहां उत्पन्नहोके वैदिकधर्म्मके नष्टकरनेवाले म्लेच्छोंको मारकर तुम देवताओंको प्रसन्नकरो मेरी कृपासे तुम सातों द्वीपो के राजाहोगे यक्ष राक्षस तथा वैताल तुम्हारे वशीभूतहोंगे कुछ

काल मनुष्यलोक के सुखोंको भोगकर फिर मेरे पास चलेआओगे शिवजीके यह वचन सुनकर माल्य वान्ने कहा कि आपकी आज्ञा अलंघ्यहै परन्तु मनुष्यलोकमें कौनसे सुखहैं जहां बन्धुमित्र तथा भृत्य के वियोगसे अत्यन्त दुस्सहदुःख प्राप्तहोतेहैं और धननाश वृद्धावस्था तथा अनेकरोगोंसे बड़ीव्यथा होती है माल्यवान्के यहवचन सुनके श्रीशिवजीने कहा कि जाओ तुमको इनमेंसे कोईदुःख भी न होगा मेरी कृपासे तुम सदैव सुखीरहोगे शिवजीके यहवचन सुनकर माल्यवान् वहांसे अन्तर्द्धान होकर उज्जयिनी में आकर राजामहेन्द्रादित्यकी ऋतुमती रानीके गर्भ में प्रविष्टहुआ ३५ उससमय श्रीशिवजी ने राजा महेन्द्रादित्यसे स्वप्नमें कहा कि हेराजा मैं तुम्हारेऊपर प्रसन्नहूं इससे ऐसावीर पुत्र तुम्हारे होगा जो सम्पूर्ण पृथ्वीकोजीतकर यक्ष राक्षस तथा पिशाचादिकोंको अपनेवशमें करेगा और सम्पूर्ण म्लेच्छोंको मारेगा इसीसे उसका नाम विक्रमादित्यहोगा और कोई २ उसे विषमशील भी कहैगा यह कहके शिवजीके अन्तर्द्धान होजानेपर राजा महेन्द्रादित्यने प्रातःकाल सभामें अपने मंत्रियों से स्वप्नका सब वृत्तान्त कहा उसेसुनकर मंत्रियोंने बहुत प्रसन्नहोकर कहा कि हेस्वामी आपके महाप्रतापी पुत्र होगा इतनेमें अन्तःपुर से चेरीने आकर राजाको एकफल दिखाके कहा कि रानीको स्वप्नमें श्रीशिवजीने यहफल दियाहै फलको देखकर राजा तथा मंत्री बहुत प्रसन्नहुये तदनन्तर रानीने गर्भ धारणकरके यह स्वप्न देखा कि वह सातोंसमुद्रोंके पारगई और सम्पूर्ण यक्ष राक्षस और वैतालोंने उसे प्रणाम किया समय पाकर रानीके महातेजस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ जिसके तेजसे सम्पूर्णगृह देदीप्यमान होगया उससमय आकाशमें नगाड़ेबजे पुत्रके जन्ममें राजा महेन्द्रादित्यने बहुतसा धन बांटकर श्रीशिवजीकी आज्ञा से उसका नाम विक्रमादित्य तथा विषमशील रक्खा इसके कुछदिन उपरान्त सुमति मंत्रीके महामति वज्रायुध प्रतीहारके भद्रायुत और महीधर पुरोहितके श्रीधर नाम पुत्र हुआ इन तीनोंकेसाथ विक्रमा दित्य क्रमसे वृद्धि को प्राप्तहुआ यज्ञोपवीत के उपरान्त गुरुओं ने जो २ विद्याउसे पढ़ाई वह सब उसे विना परिश्रमही आगई रामचन्द्रादि धनुर्धरों के समान वह दिव्य अस्त्रों मे प्रवीण होगया और बहुतसे राजाओं ने प्रसन्नहोकर अपनी कन्याओं के साथ उसका विवाह करदिया तब उसे युवावस्था मे देखकर राजा महेन्द्रादित्य उसे राज्यदेके तप करने के लिये काशी में चलागया पिताके राज्यको पाकर विक्रमादित्य बड़ाही प्रतापशाली हुआ उसने अपने दिव्यप्रभावसे वैताल तथा राक्षसादिकों को भी अपने वशमें करलिया उसकी सेनाओंने सब दिशाओंमें जाकर सब राजाओंको अपनेवशमें करलिया उसके निर्मल यशसे सम्पूर्ण पृथ्वी आच्छादित होगई उसने पुत्रोंके समान अपनी प्रजाओं का पालन किया एक समय सभामें बैठेहुये राजा विक्रमादित्यसे भद्रायुधनाम प्रतीहारने आकरकहा कि हे स्वामी आप की आज्ञा से दक्षिणदिशाके जीतने के लिये जो विक्रमशक्ति गयाथा उसकेपास जो आपने अनंगदेव नाम दूत भेजाथा वह एकपुरुष के साथ आकर द्वारपर खड़ा है राजा ने कहा अच्छा उसे आनेदो राजा की आज्ञापाकर प्रतीहारने उसे राजा के पास भेजदिया जय शब्द करके प्रणामकरते हुए उस दूत से राजा ने पूछा कि सेनाधिपति विक्रमशक्ति कुशलपूर्वक है क्याप्रबल

दिक राजालोग आनन्दमें हैं मेरी सम्पूर्ण सेना में कोई विघ्न तो नहीं हुआ राजा के यह वचन सुनकर अनंगदेव ने कहा कि सम्पूर्ण सेनासहित विक्रमशक्ति कुशलपूर्व्वकहै उसने सम्पूर्ण दक्षिणदिशा जीतकर मध्यदेश सौराष्ट्रदेश तथा अंग वंग समेत पूर्व्वदिशाभी जीतली कश्मीरदेश सहित उत्तरदिशा भी जीतली और पश्चिमदिशा भी उसके वशमें होगई सम्पूर्ण द्वीपों को जीतकर बहुतसे म्लेच्छों को उसने माराहै और बाकी उसके वशमें होगये हैं बहुतसे राजालोगो को अपने साथमें लेकर आपके पास वह आताहै यहांसे दो तीनही मंजिलपरहै उसके यह वचनसुनके राजाने बहुत प्रसन्नहोके उसे बहुतसे वस्त्राभरण तथा ग्रामदेकर उससे पूछा कि अनंगदेव यहांसे जाकर तुमने कौन २ से देश देखे और कहां कौनसी अद्भुत बात देखी विक्रमादित्यके यह वचनसुनकर अनंगदेव ने कहा कि हे स्वामी आपकी आज्ञा से मैं जो गया तो कईदिन में विक्रमशक्ति के पासपहुँचा वहां कईदिन रहते २ एकदिन सिंहलद्वीप के राजा के दूत ने आकर मेरे आगेही विक्रमशक्ति से कहा कि हमारे राजा ने कहाहै कि हमने अपने दूतों के द्वारा यह सुनाहै कि राजा विक्रमादित्यका अत्यन्त विश्वासपात्र अनंगदेव नाम दूत आपके पासहै उसे आप मेरे पास शीघ्रही भेजदीजिये राजाका हितकारी कोई बड़ाआवश्यक कार्य्यहै उस दूत के वचनसुनकर विक्रमशक्ति ने मुझसे कहा कि तुम सिंहलद्वीप को जाओ देखो क्या कार्य्य है विक्रमशक्ति के वचनसुनके मैं उस दूत के साथ जहाजकेद्वारा सिंहलद्वीप को गया वहां सुवर्णमय राजधानी को देखकर राजा वीरसेन के निकट प्राप्त हुआ उसने मेरा बड़ा आदर सत्कारपूर्व्वक आपकी कुशल पूछकर मुझे बड़े सुन्दर स्थान में टिकाया और दूसरे दिन मुझे सभा में बुलाकर कहा कि मेरे अत्यन्त रूपवती मदनलेखानाम कन्याहै वह मैं तुम्हारे राजा को दूंगा क्योंकि उसके सिवाय मेरी कन्या के योग्य कोई पति नहीं है इसीलिये मैंने तुमको यहां बुलायाहै तुम हमारे दूत के साथजाके अपने स्वामीसे यह सब वृत्तान्तकहो मैं पीछेसे अपनी कन्या को भी भेजताहूं यह कहकर राजा ने अपनी कन्याको सभा में बुलाके गोदी में बैठालकर मुझसे कहा कि यह कन्या मैंने तुम्हारे स्वामीकोदी उसके अत्यन्त मनोहर स्वरूप को देखकर मैंने कहा कि मैंने अपने स्वामी के लिये इसे ग्रहण किया उस कन्या को देखकर मैंने अपने मन में कहा कि ब्रह्माकी आश्चर्य्यकारी सृष्टिकी कोई अवधि नहीं है क्योंकि तिलोत्तमा आदिक अप्सराओं से भी यह अधिक रूपवती है तब राजा वीरसेन ने अपने इस धवलसेन नाम दूत के साथ मुझे विदा किया वहां से जहाजपर चढकर हम दोनों चले कुछ दूरचलकर समुद्र के बीच में एक बहुत छोटासा टापू दिखाईदिया उसमें दो कन्या क्रीड़ा कर रहीथीं एकश्यामांगी और दूसरी गौरांगी थी उनके पास एक सुवर्णमय रत्न जटित सजीव हिरन था उसको ताली बजा २ कर वह खिलारही थी यह देख के हम दोनों ने आश्चर्य्य पूर्व्वक कहा कि यह स्वप्न है या मायाहै क्याहै हमदोनों के इसप्रकार कहतेही ऐसी प्रचंड वायु चली जिससे हमारा जहाज फट गया और जहाजपर बैठेहुए लोग जलमें डूबने लगे और हमदोनों को वही दोनों कन्या उसी टापूपर ले जाके सावधान करके एक गुफामें लेगई उसगुफाके भीतर जाके जो हमने देखा तो न वह कन्या थी

न मृग था न समुद्र था केवल एक बड़ा घना वन लगाथा जिसमें अनेक प्रकारके फल पुष्पवाले वृक्ष लगे थे उसवनमें बहुत घूमते २ एक बड़े निर्म्मल जलवाला तड़ाग हमको मिला उसतालावपर एक दिव्य कन्या पालकीपर चढ़ीहुई बहुतसे परिकर समेत स्नानकरनेको आई पालकी परसे उतरके उस कन्याने कमल तोड़कर स्नानकरके श्रीशिवजीका ध्यान किया ध्यान करतेही उसतड़ागमें से श्रीशिवजीका एकरत्न मय लिंग निकलकर उसके निकट प्राप्तहुआ उस लिंगका पूजनकरके उसने वीणा वजाकर ऐसा मधुरगान किया कि जिसे सुनकर आकाशमें चलनेवाले देवता भी निश्चल होगये क्षण भर पीछे गानसे निवृत्तहोके उसने शिवजीका विसर्जन किया विसर्जन करतेही वह लिंग उसी तड़ाग में डूबगया तदनन्तर वह कन्या पालकी में चढ़के अपने सब परिकर समेत चली हमदोनों ने उसके परिजनों से कईबार यह पूछा कि यह कौनहै परन्तु किसीने कोई उत्तर नहीं दिया तब मैंने इसदूतको आपका प्रभाव दिखाने के लिये उच्चस्वरसे कहा कि हे सुन्दरी तुमको महाराज विक्रमादित्यके चरणों की शपथहै जो तुम अपना वृत्तान्त बिना कहे जाओ मेरे यहवचन सुनके वह पालकी परसे उतरकर बोली कि महाराज विक्रमादित्य कुशल पूर्व्वक हैं अथवा क्या पूछूं मुझे तो सब विदित ही है मैं ही माया करके राजाके किसी कार्य्य के लिये तुमको यहां लाई हूं राजा मेरा मान्यहै क्योंकि महाभय से उसने मेरी रक्षाकी है इससे तुम मेरेघर चलो वहां तुमसे सब वृत्तान्त कहूंगी यह कहके वह नम्रता पूर्व्वक हमदोनों को अपने स्वर्ग समान सुन्दर पुरमें लेगई उसपुरके रत्न जटित द्वारोंपर अनेक प्रकारके शस्त्रधारी बहुतसे वीर पुरुष बैठे थे वहां उसने अपने मंदिरमें हमदोनोंको टिकवाके अपनी सखियों के द्वारा स्नान वस्त्र भूषण तथा भोजनादि से सेवाकरवाई १३३ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांविषमशीललम्बकेप्रथमस्तरंगः १॥

यहकहके अनंगदेवने फिर कहा किहे स्वामी भोजनके उपरान्त वह दिव्य स्त्री बोली कि हे अनंगदेव सुनों मैं अपना संपूर्ण वृत्तान्त तुमसे कहती हूं कि मैं कुवेरके भाई मणिभद्रकी स्त्री हूं यक्षराज दुन्दुभि मेरेपिताका नामहै और मेरानाम मदनमंजरी है मैं अपने पतिके साथ नदियों के तटपर पर्व्वतों में तथा उपवनोंमें सुखपूर्व्वक भ्रमण करतीहुई एकसमय उज्जयिनी के मकरन्दनाम उपवनमें विहार करनेको गई वहां भाग्यवशसे प्रातःकाल मुझे विहारके श्रमसे सोते देखकर एक खंड कापालिक काम के वशीभूत होकर मुझे सिद्ध करनेके लिये श्मशानमें जाकर हवन करनेलगा इसबातको मैं ने अपने प्रभावसे जानकर अपने पतिसे कहा उसने अपनेभाई कुवेरसे कहा कुवेर ने ब्रह्माजी से कहा ब्रह्माजी ने ध्यानकरके उनसेकहा कि सत्यही तुम्हारेभाईकी स्त्रीको वह कापालिक हरना चाहताहै क्योंकि उसे यक्षोंके सिद्ध करनेवाले मंत्रोंकी बड़ीशक्तिहै जब वह तुम्हारे भाई की स्त्रीको मंत्रके बलसे आकर्षण करे तो वह स्त्री महाराज विक्रमादित्यको अपनी रक्षाके लिये पुकारे तो वह उसकी अवश्य रक्षाकरेगा ब्रह्माके वचन सुनके कुवेरने मेरे पतिसे आकर कहा और मेरे पतिने मुझसे कहा इतने में मंत्र सिद्ध करके उसदुष्ट कापालिकने मंत्रकेप्रभावसे मुझको श्मशानमें आकर्षणकिया मंत्रसे खिंचीहुई मैं श्मशान

में भी उसकेपास गई वहँ दुष्ट शवपर चढाहुआ अग्निमें हवन कर रहाथा मुझेदेखकर वह अभिमान से मोहित होकर श्मशानके निकट एकनदीमें आचमन करनेकोगया उससमय मैंने ब्रह्माजीके वचनका स्मरणकरके उच्चस्वरसे कहा कि हेमहाराज विक्रमादित्य मेरी रक्षाकरो तुम्हारे राज्यमें यह दुष्ट कापालिक मुझ सतीस्त्रीको भ्रष्टकरना चाहताहै मेरे इसप्रकार कहतेही राजाविक्रमादित्य जाज्वल्यमान् खड्ग हाथमें लिये मेरे पास आके बोले कि हेशुभे डरोनहीं मैं तुम्हारी इस कापालिकसे रक्षाकरूंगा मेरे राज्य में कौनऐसा अधर्म करसक्ताहै यह कहके उन्हों ने अग्निशिख नाम वैतालको बुलाया उसने आकर राजासे कहा कि क्या आज्ञाहै तव राजाने उससे कहा कि इस परस्त्रीहारी कापालिकको तुम मारकर खाजाओ राजाके वचन सुनके उस वैतालने एक मुर्देमें प्रवेशकरके दौड़कर आचमनकरके आतेहुये उस कापालिकको पकड़कर पटकके मारडाला उस कापालिकको मरादेखके यमशिखनाम वैताल ने आकर उसका शरीर लेलिया तव उस अग्नि शिखनाम वैतालने उससे कहा कि अरेदुष्ट मैंने विक्रमादित्य राजाकी आज्ञासे इस कापालिकको माराहै तू इसका कौन होताहै यहसुनकर यमशिखने उस से कहा कि वताओ राजा विक्रमादित्यका क्या प्रभावहै यहसुनकर अग्निशिखने कहा कि तुम उसके प्रभावको नहीं जानतेहो तो मुझसे सुनो इसपुरी में डाकिनेयनाम एकज्वारी रहताथा एकसमय वह अपना सव धन हारगया और कुछ उधार भी लेकरहारा इससे अन्य ज्वारियोंने उसे वहुत मारकर ले जाके एकअन्धे कुएमे डालदिया कुए में जाकर उसने दो भयंकर पुरुषदेखे उनदोनोंने उसे भयभीत देखकर पूछा कि तू कौनहै और कैसे इस कुएमें आयाहै उनसे उसने अपना सव वृत्तान्त कहके पूछा कि तुम दोनों कौनहो यहसुनकर उन्हों ने कहा कि हम दोनों इसपुरी के श्मशानके रहनेवाले ब्रह्म राक्षसहैं हम दोनों ने प्रधान मंत्री तथा प्रधान वैश्यकी कन्याओं पर अपना आवेश कियाथा पृथ्वीके वड़े २ मांत्रिक लोगभी हमसे उनकन्याओंको नहीं छुटासके तव राजा विक्रमादित्य उनकन्याओंके पिताओंके स्नेहसे वहां आया उसे देखतेही हमने उनकन्याओंको छोड़कर भागनाचाहा परन्तु उस के तेजसे भाग न सके तव उसने हम दोनोंको वांधकर कहा कि हे पापियो तुम एकवर्षतक अन्धकूप में जाकररहो और अव ऐसा कार्य्यकभी न करना नहीं तो मैं तुम्हें मारडालूंगा यहकहके उसने हम दोनोंको इसअन्धकूप में डालदिया आजसे आठवें दिन इसकुए में हमारे रहनेकी अवधि पूरीहोगी इस से जो तुम इनदिनों में कुछ भोजन हमे देनेकहो तो हम इस कुए से वाहर तुमको निकालदें और जो तुम अंगीकारकरके भी हमको भोजन न दोगे तो हम इस कुएसे निकलकर तुमको खाजायँगे उन ब्रह्मराक्षसों के यह वचन उस डाकिनेयज्वारी ने स्वीकारकर लिये इससे उन दोनों ने उसे कुएके वाहर निकालदिया कुएके वाहर निकलकर वह उन दोनों ब्रह्मराक्षसों के भोजन देनेका कोई उपाय न जानकर श्मशान में जाकर महामांस वेचनेलगा उससमय श्मशानमें उस ज्वारीको महा मांस वेचते देखकर मैंने उससे कहा कि इसका क्या मूल्यलोगे उसने कहा कि इसके वदले में तुम अपना रूप और प्रभाव मुझकोदेदो यह सुनकर मैंने उससे पूछा कि यह लेकर तुम क्या करोगे मेरे

वचनसुनके उसने अपना सब वृत्तान्तकहकर कहा कि मैं तुम्हारे रूप और प्रभावको पाकर उन सब ज्वारियों को मारके ब्रह्मराक्षसोंको भोजनदूंगा उसके यह वचनसुनकर मैंने सातदिनकेलिये अपना रूप और प्रभाव उसे देदिया उनको पाके उसने सातदिनतक उन ज्वारियों को मारकर उन ब्रह्मराक्षसों को भोजनदिया आठवेंदिन जब मैंने अपना रूप और प्रभावलेलिया तो वह डाकिनेय भयभीतहोकर मुझसे बोला कि आज आठवांदिनहै आज मैंने उन ब्रह्मराक्षसों को कुछ भोजन नहींदियाहै इससे वह निकलकर मुझे खाजायँगे उनसे बचनेका कोई उपाय तुम मुझको बताओ उसके वचनसुनकर मैंने कहा कि, उन राक्षसों ने ज्वारियोंको खायाहै तुम चलकर उन राक्षसों को मुझे दिखाओ तो मैं उन्हें खाजाऊं यह वचनसुनके वह मुझे उस कुएके निकटलेगया वहां जैसेही मैं कुए में झांककर देखनेलगा वैसेही उसने मुझे कुएमें ढकेलदिया कुएके भीतर जो मैं गया तो राक्षसों ने भोजन जानके मुझे पकड़ लिया इससे उनकेसाथ मैंने बड़ा बाहुयुद्धकिया और जब वह मुझे नहीं जीतसके तब युद्धसे निवृत्तहोकर मुझसे बोले कि तुम कौनहो मैंने उनसे डाकिनेय का सबवृत्तान्त कहदिया तब राक्षसोंने मेरेसाथ मित्रताकरके मुझसे कहा कि देखो इस दुष्ट ज्वारी ने हमारी तुम्हारी और उनज्वारियों की क्यादशा की ज्वारियोंपर कभी विश्वास न करना चाहिये क्योंकि उनके चित्तमें परोपकार दया तथा मित्रताकालेश भी नही होता और वह स्वभावही से बड़े साहसी होते हैं इस विषयमें हम तुमको ठिंठाकरालकी कथा सुनातेहैं इसी उज्जयिनीमें ठिंठाकराल नाम एक ज्वारी रहताथा वह जिन ज्वारियोंकेसाथ अपना सब धनहारा था वह उसको प्रतिदिन सौकौड़ीदिया करतेथे उनकौड़ियों से वह आटालेकर खपरेमें मलकर श्मशानमें जाके चिताकी अग्नि में सेककर महाकालके मंदिरमें आकर उनके दीपकके घृतसे चुपड़कर खाताथा और वहीं सो रहताथा एकसमय रात्रिमें महाकालजीके मंदिरमें मातृका देवी तथा यक्षादिकों की प्रतिमा देखकर उसने शोचा कि धन उपार्जनकेलिये एक युक्तिकरूं जो सिद्धहोजायगी तो अच्छा है नहीं तो कुछ हानिनहीं है यह शोचके उसने देवताओं की ओर देखकर कहा कि आओ तुम्हारेसाथ द्यूतखेलें जो हारना सोदेदेना और जो जीतना सो लेलेना उसकेइसप्रकार कहनेपर जबप्रतिमाओं में से कोई उत्तर नही मिला तो उसने पणकरके कौड़ी फेंकी क्योंकि द्यूतकी यह मर्य्यादाहै कि जो पणबदने में निषेध न कियाजाय तो अंगीकार समझा जाता है तब बहुतसा धन जीतकर उसनें उन प्रतिमाओं से कहा कि जो धन तुम हारी हो सो हमें देदो उसके इसप्रकार कहनेपरभी जबकोई उत्तर नहीं मिला तब उसने क्रोधकरके प्रतिमाओं से कहा कि जो तुम मुझे कुछ उत्तर नहीं देतीहो तो हारकर न देनेवाले ज्वारियों का जो यत्न कियाजाताहै वही मैं करूंगा यह कहके वह पैना आरा लेकर उन प्रतिमाओं को काटनेचला तब देवताओं ने उसे वह सब धन देदिया उस धनको लेकर उसने प्रातःकालही ज्वारियोंकी मण्डली में जाके सब हारदिया और रात्रिके समय फिर वहीं आकर मातृका देवियोंसे उसीप्रकार धन लिया इसप्रकारसे वह बहुत दिनतक करतारहा एक दिन चामुण्डादेवीके कहने से मातृकादेवियों ने उस ठिंठाकरालसे द्यूतके समय कहदिया कि हम तुम्हारेसाथ नहीं खेलते तब

उनसे निराशहोकर ठिंठाकरालने महाकालजी से द्यूत खेलनेको कहा महाकाल ने भी कहा कि हम तुम्हारे साथ द्यूत नहीं खेलते महादोषी निर्भय दुर्जन ज्वारियो से देवताभी डरते हैं तव ठिंठाकराल ने शोचा कि देवतालोगों ने मेरी युक्तिजानकर मेरा तिरस्कार करदिया इससे इन्हीं श्री शिवजीकी शरण में जानाचाहिये यहशोचकर वह महाकालके चरणोंपर शिररखकर इसप्रकारसे स्तुतिकरनेलगा कि जव पार्वतीजी द्यूतमे चन्द्रमा वैल तथा गजचर्मको जीतलेती हैं तव आपनग्नहोके घुटनों में कपोलरखकर वैठतेहो आपके ऐसे स्वरूपको मैं प्रणामकरताहूं आप जटाभस्म तथा कपालधारीहोकरभी देवतालोगोंको अनेक ऐश्वर्य्यदेतेहो आपहीकी कृपासे देवतालोग अपनेभक्तोंके मनोरथोंको पूर्णकरतेहैं मुझअभागे के लिये आपभी न जानें क्यों लोभीहोगये हो आप विश्वम्भरहोकरभी मुझ दीनकापालन क्योंनहीं करते हाय मंदभागियोंके मनोरथ कल्पवृक्षके पास जाकर भी नही पूर्णहोते हे दयालो मुझ व्यसनी के अपराधों को क्षमाकरो हे स्वामी आप भी त्र्यक्ष (त्रिनेत्र) हो और मैं भी त्र्यक्ष (तीनपाशेवाला) हूं आप भी भस्मधारी हो और मेरे भी शरीर में भस्म लगीं हुई है आप भी कपालमे भोजन करते हैं और मैं भी कपालही में भोजन करताहूं इससे मुझे अपने सदृश ज्ञानकर मेरेऊपर दयाकीजिये आप के साथ वार्त्तालाप करके मैं क्षुद्र मनुष्यो से कैसे वोलूंगा मेरा उद्धारकीजिये उसे इसप्रकार स्तुतिकरते देखकर श्रीशिवजी प्रसन्न होकर वोले कि हे ठिंठाकराल धैर्य्य धरो मैं तुमपर प्रसन्नहूं यही रहो मैं तुम्हें सवप्रकारके भोग यही दूंगा श्रीशिवजीकी यह आज्ञा पाकर वह धूर्त्त उनकी कृपासे मिलेहुए ऐश्वर्य्य को भोगकरताहुआ वही रहनेलगा १०८ एकदिन रात्रिके समय महाकाल तीर्थ में स्नान करनेको आई हुई अप्सराओं को देखकर श्रीशिवजी ने ठिंठाकरालसे कहा कि जव यह स्नान करनेलगें तव इनके वस्त्र लेकर मेरे पास चले आओ और जव तक यह तुमको कलावती नाम अप्सरा न दे तव तक इनके वस्त्र न देना श्रीशिवजी से यह आज्ञा पाकर ठिंठाकराल उनके कपड़े उठालाया और जव उन्होंने कहा कि हमारे वस्त्रदेदो हमको नग्नमतकरो तव उनसे कहा जो कलावतीनाम अप्सरा मुझे न दोगी तो तुम्हारेवस्त्र न दूंगा उसके यहवचनसुनकर और इन्द्रकेशापका स्मरणकरके उन्होंनेकलावती उसेदेकर अपनेवस्त्र लेलिये कलावतीको छोड़कर अप्सराओ के चलेजानेपर ठिंठाकराल शिवजी की आज्ञासे वहीं स्थान वनाकर कलावती के साथ सुखपूर्व्वक रहनेलगा कलावती दिनको तो सदैव शिवजीका पूजनकरनेको स्वर्ग मे चली जातीथी और रात्रिमें उसके पास आजायाकरतीथी एकदिन कलावती ने ठिंठाकरालसे कहा कि हे स्वामी इन्द्रके शापसे जो मुझको आपकी प्राप्तिहुई वह शापभी वरकेही समानहै उसके यह वचनसुनकर ठिंठाकरालने पूछा कि इन्द्रका शाप तुमको कैसेहुआ उसने कहा कि एकसमय मैंने देवतालोगोंके आगे मनुष्यों के भोगोंकी वड़ी प्रशंसा की इससे इन्द्रने कुपित होके मुझे यहशापदिया कि कोई मनुष्यतेरेसाथ विवाहकरेगा तव तू मनुष्योंके सुखको भोगेगी इसीसे मेरा और आपका संयोगहुआहै कलमैं तुम्हारे पास देरको आऊंगी तुमसन्देह न करना क्योंकि कल के दिन रंभा अप्सरा इन्द्रके आगे नृत्य करेगी जव नृत्य समाप्त होगा तव मैं तुम्हारे पास आऊंगी उ-

सके वचन सुनकर ठिंठाकराल ने कहा कि मैं भी रंभाका नृत्य देखना चाहताहूं तुम मुझको भी छिपाकर वहां ले चलो यह सुनकर कलावती ने कहा कि यह योग्य नहीं है कदाचित् इन्द्र जानजायगा तो बड़ा क्रोधकरेगा उसके यहवचन सुनकर भी ठिंठाकरालने बड़ा आग्रहकिया तो वह अपने प्रभावसे ठिंठाकरालको छिपाकर कानके कमलमें रखकर स्वर्गको लेगई वहां नन्दन वनादिक उत्तम २ स्थानों को देखकर उसने इन्द्रकी सभामें रम्भाका नृत्यदेखा और नारदादि मुनियों के बनायेहुये सम्पूर्ण बाजे सुने ठीकहै (प्रसन्नेहिकिमप्राप्यमस्तीहपरमेश्वरे) परमेश्वरके प्रसन्नहोनेपर कौनसी वस्तु अप्राप्यहोतीहै नृत्यके उपरान्त एकदिव्य भांड़ बकरेकीसी चेष्टा करके नृत्यकरनेलगा उसेदेखकर ठिंठाकराल ने शोचा कि यह तो उज्जयिनीहीकासा बकरा मालूमहोताहै यह यहां किसप्रकारसे आया यह देवताओं की माया बड़ी अचिन्त्यहै उसबकरेके नृत्यके उपरान्त इन्द्रने सभा समाप्तकी तब कलावती प्रसन्नहोकर ठिंठाकरालको मृत्युलोकमें लेआई दूसरे दिन ठिंठाकरालने उज्जयिनी में आयेहुए उसभांड़से कहा कि तुमने जैसा नृत्य इन्द्रके आगे कियाथा वैसाही मेरे आगे करो उसके यहवचन सुनकर वह भांड़ यह जानकर कि यहमनुष्य होकर भी मुझे कैसे जानताहै, चुपहोरहा उसे चुपहुआ जानके ठिंठाकरालने बड़ा आग्रहकिया और आग्रहकरनेपर भी जब उसने नृत्य नहीं किया तो उसके शिरपर लाठी मारी इससे उसभांड़ने कुपित होके इन्द्रके पास जाके यहसब वृत्तान्त कहा उसके वचन सुनके इन्द्रने ध्यान से सब वृत्तान्त जानकर कलावतीको बुलाके यह शापदिया कि तूने मेरे साथ बड़ा छल कियाहै इससे नागपुरमें राजा नरसिंहके बनवायेहुए देवमंदिरके स्तंभमें तू पुतली होगी इसशापको सुनकर कलावती ने बड़ी प्रार्थनाकरी तब इन्द्रने यह शापान्त बतलाया कि जब वह मंदिर नष्टहोके पृथ्वी में मिलजायगा तब तू शापसे छूटेगी इसशापान्तको सुनकर कलावती मृत्युलोक में जाके ठिंठाकराल से सब वृत्तान्त कहके और अपने आभूषण उसेदेके नागपुरमें जाकर काष्ठकी पुतलीहोगई उसके चलेजानेपर ठिंठाकराल विलापकरके यह कहनेलगा कि हाय मैं बड़ा मूर्खहूं मैंने गुप्तबात भी प्रकटकरदी उसीके कारण मेरा प्रिया से वियोगहुआ यह विलापकरके उसने शोचा कि यह विलापका समय नहीं है धैर्यधरके शापान्तका यत्न करनाचाहिये यह शोचकर वह संन्यासी का रूपबनाके नागपुरको गया वहां पुरके बाहर चारों दिशाओं में अपनी स्त्री के आभूषण कलशों में रखकर पृथ्वी में गाड़ दिये और एककलशमें रत्नभरके देवमन्दिर के आगे गाड़दिया यह यत्नकरके वह नदी के तटपर अपनी कुटी बनाके भिक्षावृत्ति करके तप करनेलगा इससे नगर भरमें उसे सब जानगये क्रमसे राजाने भी उसके तपकी प्रशंसा सुनकर उसे अपने यहां बुलाया वह बुलानेपर भी जब न गया तो राजा आपही उसके पास चलागया बहुत देर ठहरकर जब सायंकालके समय राजा अपने स्थानको जानेलगा तो अकस्मात् शृगाली ने शब्द किया उस शब्दको सुनकर ठिंठाकराल बहुत हँसा और वह राजा के बहुत पूछने पर बोला कि इसनगर की पूर्व्व दिशामें एक रत्नके आभूषणों से भराहुआ कलशा है उसे तुम खोद लो यही बात इसशृगाली ने कही है यहकहके उसने राजाको उसी स्थान में लेजाकर वह कलश

खुदवादिया इससे राजाके चित्तमें बड़ाविश्वासहुआ और राजाने उसके पैरोंपरगिरकर वारंवार प्रणाम किया और अपने स्थानमे जाके वह आभूषण अपने खजाने में रखवा आया इसीप्रकार से उस ठिं- ठाकरालने राजाको वह तीनों वाकी के कलशभी खुदवादिये इससे राजा और सब मंत्रियों को उस पर बड़ाही विश्वास होगया एकदिन वह ठिंठाकराल राजाके साथ देवमंदिरके दर्शन को जाताथा मार्ग में कौएके शब्दको सुनकर राजासे कहा कि तुमने कौएका शब्द सुना यह कौआ यह कहता है कि देवमंदिर के आगे रत्नोंका कलशगड़ा है उसे तुम क्यों नहीं खोदवालेतेहो तव राजा उसका हाथ पकड़- कर देवमंदिरमें उसे लेगया वहां उसने स्तंभमें अपनी प्रिया कलावतीको देखा और कलावती भी उसे देखकर रोनेलगी यह देखकर राजाने उससे पूछा कि यह पुतली क्यों रोती है राजाके वचन सुनकर वह दुखितसाहोकर बोला कि अपने स्थानको चलिये वहां मैं सव वृत्तान्त कहूंगा यह कहकर उसने राजा के स्थानमें जाकर उससे कहा कि आपने कुमुहूर्त्तमें इसमंदिरको वनवायाहै इससे आजके तीसरे दिन आपका कोई बड़ा अनिष्टहोगा यही शोचकर वह पुतली आपको देखकर रोईथी इससे जो आप अ- पना कल्याण चाहतेहैं तो आजही इस मंदिर को खुदवाइये और अन्यस्थानमें सुन्दर मुहूर्त्तमें वनवा- इये यह सुनकर राजाने उसी दिन वह मंदिर खुदवाडाला और दूसरे स्थानमें मंदिर वनवानेकी आज्ञा दी ठीकहै (अहोविश्वास्यवंच्यन्तेधूर्त्तैश्छद्मभिरीश्वराः) धूर्त्तलोग राजा लोगोंको छलसे विश्वासित करके ठगते हैं तदनन्तर इसप्रकार अपने कार्य्यको सिद्धकरके ठिंठाकराल तपस्वी के वेषको छोड़कर उज्जयिनी को चलागया और वह कलावती भी शापसे छूटकर वहुत कालके उपरान्त अपने प्रियसे मिलकर स्वर्गमे इन्द्रकेपास गई इन्द्रने उसे देखके आश्चर्य्यितहोके उससे सववृत्तान्त पूछा इन्द्रकी आज्ञा से कलावतीने अपने धूर्त्त पतिकी सव मायाकहदी इस वृत्तान्तको सुनकर वृहस्पतिने इन्द्रसे कहा कि ज्वारी लोग इसीप्रकार सदैव से मायावीहोतेहैं पूर्व्वकल्पमें किसी नगरमें कुट्टिनी कपटनाम एकज्वारी रहताथा जब वहमरकर परलोकमेंगया तव यमराजने उससेकहा कि हेधूर्त्त तुमको एककल्प पर्य्यन्तनरक में रहनापड़ेगा और एकदिनकेलिये तुमको इन्द्रकी पदवी मिलैगी क्योंकि तुमने एकवैदिकब्राह्मणको किसीसमय सुवर्णका दानदियाथा इससे तुमकहो कि पहले इन्द्रपदवीका भोगकरोगे या नरकका यह सुनकर उसधूर्त्तने कहा कि मै पहले इन्द्रपदवीका भोगकरूंगा उसके वचनसुनकर यमराजने उसे स्वर्ग मेजदिया वहां देवतालोगोंने उसदिन इन्द्रकोउतारकर उसकेस्थानमें उसको वैठलादिया इन्द्रपदवीको पाकर उसने देवताओंको यहआज्ञादी कि तुममृत्युलोकसे सम्पूर्णज्वारी तथा वेश्याओंको लाकरउनके साथमुझको पृथ्वीके तथा स्वर्गके सवतीर्थोंमें स्नानकराओ और राजालोगोंके शरीरोंमें प्रवेशकरके मेरे निमित्त अनेकप्रकारके दानदो उसकी यह आज्ञापाकर देवतालोगोंने ऐसाहीकिया इससे वहधूर्त्त पाप रहित होकर स्थिर इन्द्रपदवीको प्राप्तहोगया और जिन वेश्या तथा ज्वारियों को उसने अपने साथ में स्नान करवाया था वह सव भी देवता होगये दूसरे दिन चित्रगुप्तने यमराज से कहा कि वह ज्वारी अपने पुण्यके प्रभावसे सदैवकेलिये इन्द्र होगया यह सुनकर धर्मराजको वड़ा आश्चर्य्य हुआ हे इन्द्र

इसी प्रकारसे ज्वारी लोग बड़े छली होतेहैं यह कहकर बृहस्पतिजीके निवृत्त होजानेपर इन्द्रने कला-वतीको भेजकर ठिंठाकरालको अपने पास बुलवालिया और उसपर प्रसन्न होकर उसे अपनेही पास रखलिया इससे वह सुख पूर्वक कलावतीके साथ स्वर्ग में रहनेलगा इसप्रकारसे ज्वारी लोगोंकी बड़ी कठिन माया होतीहै इससे हे अग्निशिख वैताल क्या आश्चर्य्य है कि तुमको डाकिनेयने कुएमें ढकेल दिया अब तुम इसमें से निकलजाओ ब्रह्मराक्षसोंके यह वचन सुनकर मैंने उसकूपसे निकलकर रात्रि में एक पथिक ब्राह्मणको जाते देखकर उसे खाना चाहा तब उसने भयभीत होकर विक्रमादित्यको पुकारा उसके शब्दको सुनकर विक्रमादित्यने प्रकट होकर मुझसे कहा कि हे पापी ब्राह्मणको मत-मारे यह कहके वह मेरा चित्र बनाके चित्रका शिरकाटने लगा इससे मेरी ग्रीवा कटनेलगी और रुधिर बहने लगा इससे मैं व्याकुलहोके ब्राह्मणको छोड़कर उसीकी शरणमें गया तो उसनें मुझे कृपाकरके छोड़दिया हे अग्निशिख राजा विक्रमादित्यका ऐसा प्रभावहै उसीकी आज्ञासे मैंने इसखंडकापालिक को माराहै तुम इसको छोड़दो अग्निशिखके यह वचन सुनकर भी यमशिखनें अभिमानसे खंडका-पालिकका शिरलेलिया तब विक्रमादित्यनें प्रकट होकर पृथ्वी में एक पुरुष लिखकर खड्गसे उसका हाथ काटडाला इससे, यमशिखका हाथ कटकर पृथ्वीमें गिरपड़ा तब वह खंडकापालिकको छोड़कर भागगया और अग्निशिखने उसे लेकर खाडाला यह सब वृत्तान्त मैंने वहां देखा इस प्रकार आपका प्रताप कहके उस मदनमंजरीने फिर कहा कि तब महाराज विक्रमादित्यने मुझसे कहा कि हे यक्षिणी अब तुम अपने घरकोजाओ उसके वचन सुनके मैं उसे प्रणाम करके अपने घरचली आई इसप्रकार से महाराज विक्रमादित्यने मेरी रक्षाकी है जब तुम मेरा यह वृत्तान्त उनसे कहोगे तो उनको स्मरण आजायगा जबसे राजाविक्रमादित्यने मेरी रक्षाकीहै तबसे मैं उनका प्रत्युपकार करना चाहतीहूं आज मैंने जानाहै कि सिंहलदेशके राजाने अपनी त्रैलोक्य सुन्दरी कन्या महाराज विक्रमादित्यके लिये भेजी है इससे सम्पूर्ण राजालोग मिलकर विक्रमादित्य के विक्रमशक्ति सेनापतिको मारकर उसकन्या को लेनाचाहते हैं इससे तुम विक्रमशक्तिसे जाकरकहो कि वहसावधानरहे और मैंभी ऐसायत्नकरूंगी जिससे विक्रमादित्यकी जयहोय इसीलिये मैंने मायाकरके तुमको यहांबुलायाहै मैं तुम्हारे स्वामी के लिये भेंटभी भेजूंगीइससे उनका कुछप्रत्युपकारहोगा उसकेइसप्रकार कहतेही वहदोनोंकन्या मृग लिये हुऐ जिनको कि मैंने समुद्रकेटापूमेंदेखाथा वहांआईं उनकोदेखकर मैंने मदनमंजरीसे पूछा कि यहदोनों कन्याकौनहैं और यहमृगकैसाहै यहसुनकर उसनेकहा कि हेअनंगदेवसुनो पूर्व्वसमयमें ब्रह्माकी सृष्टि में विघ्नकरनेके लिये घंट और निघंट दो दैत्य आये उनके नाशके लिये ब्रह्माने यहअत्यन्त रूपवती दोनों कन्या बनाईं इनको देखकर वह दोनों लेनेकी इच्छासे परस्पर युद्धकरके मरगये तब ब्रह्माने यह दोनों कन्या कुबेरको इसलिये देदीं कि तुम किसी योग्य वरके अर्थ इनको देदेना कुबेरने अपने छोटे भाई मेरे पतिको देदीं मेरे पतिने मुझे देदीं मैंने महाराज विक्रमादित्यको इनके योग्य वर समझाहै इनकन्याओंका वृत्तान्त तो हुआ अब मृगका वृत्तान्त सुनो इन्द्रके पुत्र जयन्तने स्वर्गकी स्त्रियों के

साथ विहारकरते २ एकसमय मृत्युलोकमें राजपुत्रोंको हरिणोंके साथ क्रीड़ाकरते देखा इससे वह मृगों के पानेके लिये इन्द्रके पास जाके रोया इन्द्रने विश्वकर्म्मा से स्वर्णमय मृग बनवालिया उसके साथ जयन्त क्रीड़ाकरके बहुत प्रसन्नहुआ कुछकालके उपरान्त रावणका पुत्र इन्द्रजीत इन्द्रको जीतकर उस मृगको लंकामें लेगया तदनन्तर जब श्री राम लक्ष्मणने रावण तथा इन्द्रजीतको जीतकर लंकाका राज्य विभीषणको देदिया तब से वह मृग विभीषणके पास रहा विभीषणने किसी उत्सवमें बड़े स्नेह से वह मृग मुझे देदिया तबसे यह मेरेपासहै मैं तुम्हारे स्वामीको यह दूंगी उसयक्षणी के इसप्रकार कहतेही सूर्य्यभगवान् अस्तहोगये तब संध्यावन्दनकरके उसीके बतायेहुए स्थानमे हमदोनोंजने सोये और प्रातःकालउठे तो आपकेसेनापति विक्रमशक्तिके डेरेमें हमने अपनेकोदेखा इससेहम बहुतआश्चर्य्यितहोके विक्रम शक्तिकेपासगये उसने हमसे कुशलपूछकर जैसेही सिंहलद्वीपकावृत्तान्त पूछनाचाहा वैसेही यक्षणीके यहांजो हमने वह दिव्यकन्या देखीथीं वहकन्या मृग तथा बहुतसी यक्षोंकी सेनासमेत वहांआई उन्हेदेखकर विक्रमशक्तिने हमसेपूछा कि येहकौनहै यहसुनकर मैंनेयक्षणीका सबवृत्तान्त उससे कहदिया और यहभी कहा कि सब राजा लोग एक मतहोके आपसे युद्धकरना चाहते हैं इससे आप सावधान रहना मेरे वचन सुनकर विक्रमशक्तिने युद्धकेलिये सम्पूर्ण सेनासजी क्षणभरमें बहुतसे म्लेच्छ तथा राजा लोग युद्ध करने को आगये उनकेसाथ हमारी सेनाका महाघोर युद्धहोनेलगा यक्षणी के भेजे हुए यक्षोंने हमारे शत्रुओं की सेना मारकर भगादी क्षणभरही में सम्पूर्ण राजा लोग नम्रहोकर विक्रमशक्तिकी शरणमें आये उससमय वह यक्षिणी अपने पति समेत प्रकटहोकर विक्रमशक्तिसे बोली कि मैंने जो आपके स्वामीकी यह सेवाकी है इसका विज्ञापन करके तुम उनसे कहना कि इन दिव्यकन्याओंके साथ आप अपना विवाह करलीजिये और इस मृगका पालन कीजिये यह कहके और बहुत से रत्न देके वह यक्षणी अपने पति समेत अन्तर्द्धान होगई इसके उपरान्त दूसरे दिन सिंहलद्वीपके राजाकी पुत्री मदनलेखा बहुतसे परिकर समेत वहां आई विक्रमशक्ति ने बड़े आदर पूर्व्वक उसको अपने डेरे में रक्खा और दूसरे दिन मंगलाचार पूर्व्वक सम्पूर्ण सेना तथा मृगसमेत उनकन्याओं को लेकर यहाको प्रस्थान किया वह कई दिन चलकर यहांसे निकटही आगयाहै इससे हम दोनों आपसे कहनेके लिये यहां पहले आगये हैं अब आगे चलकर आप उनको लीजिये अनंगदेवके यह वचन सुनकर राजा विक्रमादित्यने यक्षणी की रक्षाका स्मरण करके उसके प्रत्युपकारके सन्मुख अपने उपकारको तृण समान भी नहीं माना ठीकहै (बहुकृत्वापिमन्यन्तेस्वल्पमेवमहाशयाः) महाशय लोग बहुत करके भी थोड़ाहीसा मानतेहैं इसके उपरान्त अनंगदेवको फिर बहुतसे ग्राम तथा रत्न देकर वह दिन बड़े उत्सवसे व्यतीत करके दूसरे दिन राजा विक्रमादित्य सम्पूर्ण सेना लेकर विक्रमशक्तिकेलेने कोचला जयवर्धन अंजनगिरिनाम हाथीपर रणभटकाल मेघनाम हाथीपर सिंह पराक्रम संग्राम सिद्धि नाम हाथीपर विक्रमनिधि रिपुराक्षस नाम हाथीपर जयकेशपवन जव नाम घोड़ेपर नलभशक्ति समुद्रवेग नाम घोड़ेपर बाहु तथा सुबाहु शरवेग तथा गरुड़वेगनाम घोड़ेपर कीर्त्तिवर्मा कुवलयमालानाम

घोड़ीपर और समरसिंह गंगालहरीनाम घोड़ीपर चढ़करचला इसप्रकार से सब लोग अपने २ हाथी तथा घोड़े घोड़ीपर चढ़ २ के राजाके साथ चले उस समय महाराज विक्रमादित्यके चलने में सम्पूर्ण पृथ्वी सेनामयी, दिशाशब्दमयी और आकाश धूलमयहोगया २८० ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांविषमशीललम्बकेद्वितीयस्तरंगः २ ॥

इसके उपरान्त राजा विक्रमादित्य चलकर अपने सेनापति विक्रमशक्तिके निकट पहुँचगया वहां पहलेही विक्रमशक्तिने आकर उसके चरणों में प्रणामकिया तदनन्तर अन्य जो राजा लोग उसकेसाथ में आये थे उनको नामदेश कहके प्रतीहारने लाकर मिलाया गौड़देशके स्वामी शक्तिकुमार, कर्नाटक-देशके राजा जयध्वज, लाटदेशके राजा विजयवर्मा, कश्मीरके राजा सुनन्दन, सिन्धुके राजा गोपाल, भिल्लों के राजा विन्ध्यबल, और पारसके राजा निर्मूक, को प्रणाम करते देखकर महाराजा विक्रमादित्यने बड़े आदर पूर्व्वक बैठाला और सिंहलद्वीपके राजाकी कन्या तथा उनदिव्य कन्याओं का बड़ा सत्कार किया और उनके साथ वह दिन वहीं व्यतीत करके दूसरे दिन उज्जयिनीमें आकर सम्पूर्ण राजा लोगों को अपने २ देश जानेकी आज्ञादी तदनन्तर जगदानन्ददायी वसन्तऋतु आगई लताएं पुष्परूपी आभूषण पहरने लगीं भ्रमरी अपने गुंजाररूपी गीत गानेलगीं शीतल मन्द सुगन्ध वायुके लगनेसे वनकी पंक्ति मानों नाचने लगी और कोकिला अपने मधुर शब्दों से, मानों मंगल गान करनेलगीं ऐसे सुन्दर समयमें राजा विक्रमादित्यने उन तीनों कन्याओंके साथ अपना विवाह किया सिंहलद्वीपी कन्याके साथ आयेहुए उसके बड़े भाई ने बहुतसे रत्न राजाको दिये और उसी समय आईहुई वह यक्षिणी राजाको बहुतसे रत्नदेकर बोली कि हे राजा मैं आपसे यद्यपि कभी अनृण नहींहोसक्तीहूं तथापि यह जो मैंने आपकी सेवाकी है उसे स्वीकार कीजिये और इनकन्याओंपर तथा हरिणपर कृपा दृष्टि रखियेगा यहकहकर वह अन्तर्द्धानहोगई इसप्रकार ऐसी सुन्दर स्त्रियां तथा सप्तद्वीपवती पृथ्वी पाकर राजा विक्रमादित्य वसन्त आदि ऋतुओंके अलग २ आनन्दोंको भोगताहुआ अकंटक राज्य करनेलगा राजा विक्रमादित्य के नगर स्वामीनाम एकबड़ा प्रिय चित्रकर था जिसको कि उसने सौ ग्राम दियेथे वहदूसरे दिन नवीन २ प्रकारकी राजकन्या बनाकर राजाकी भेटकिया करता था एकसमय किसी उत्सवके कारण वह चित्रकर तसवीर लिखनेको भूलगया इससे राजाके यहां जाने के समय वह बड़ा व्याकुलहुआ कि मैं राजाके यहां जाके क्या भेटकरूंगा इतने में एकपथिक उसके हाथमें पुस्तकरखकर कहीं चलागया उसेखोलकर जो उस चित्रकरने देखा तो उसमें किसी राजकन्या का अपूर्व चित्रदिखाई दिया उसेलेकर उसने राजाके यहां जाकर वही चित्र राजाकी भेटकरके कहा कि हे स्वामी आज ऐसा अपूर्व चित्र मुझसे बनगयाहै उसे देखकर राजाने कहा कि हे नगरस्वामी यह तुम्हारे हाथका लेख नहींहै यह विश्वकर्माके हाथकी रेखाहैं क्योंकि मनुष्य ऐसारूप लिख नहीं सक्ते यह सुनकर चित्रकरने राजासे सब वृत्तान्त कहा २८ तब से उसीकन्यामें आशक्तहोकर स्वप्नमें राजाने किसी द्वीपान्तरमें उसे देखा और जैसेही उसके साथ समागम करनाचाहा वैसेही पहरूने रात्रि क्षीण

होजाने के कारण उसे जगा दिया इससे उसकन्या के समागम के सुखसे रहित होकर राजा ने क्रोध करके उस पहरुएको नगरसे बाहर निकलवा दिया और अपने चित्तमें शोचा कि कहां पथिक कहां पुस्तक कहां राजकन्याका चित्र और फिर कहां उसीका स्वप्न में मिलना इसदैवी घटनासे मुझे अवश्य मालूम होताहै कि वह कन्या कहीं अवश्य है परन्तु न जानिये किस द्वीप मे है इससे उसका प्राप्तहोना बहुत कठिनहोगा इत्यादि विचार करके राजा विक्रमादित्य कामसे बहुत पीड़ितहुआ उसे व्याकुल देखकर भद्रायुध प्रतीहारने पूछा कि हे स्वामी आपकी विकलताका क्या कारण है उस के वचन सुनकर राजाने कहा कि हे मित्र चित्रकर ने जो मुझे राजकन्याका चित्र दिखायाथा उसका ध्यानकरतेही करते मैं सोगया स्वप्नमें समुद्रके पारजाके मैंने एकनगरमें बहुतसी शस्त्र धारिणी कन्या देखीं वह मुझे देखकर मारो २ ऐसा कोलाहल करनेलगी तब एक तपस्विनी ने मुझे अपने घरमें ले जाकर मुझसे कहा कि हे पुत्र मलयवती नाम राजपुत्री इधर आती है यह जिस किसी पुरुषको देख लेती है उसे इन कन्याओं से मरवाडालती है इसलिये मैं तुमको अपने घरमें लेआई हूं यह कहकर उसने मेरा स्त्रियोंकासा भेष करदिया मैंने भी कन्याओ को अवध्य जानकर स्त्रीका भेष स्वीकार कर लिया इतने में वह राजपुत्री वहींआई और मैंने उसे देखा तो वह वहीथी जिसका कि चित्र देखकर मैं मोहितहुआ था इससे मै ने अपने चित्तमें कहा कि मैं धन्यहूं जो यह साक्षात् मुझे देखने को मिली इतने में उस राजपुत्रीने तपस्विनी से कहा कि मैं ने यहां किसी पुरुषको आते देखाहै उसके वचन सुनकर तपस्विनीने कहा कि पुरुष तो कोई नहीं आया है केवल मेरी कन्याकी पुत्रीआई है यह कहके उसने मुझे दिखा दिया मुझ स्त्रीरूपको भी देखकर वह राजकन्या कामके वशीभूतहोके तपस्विनी से बोली कि तुम्हारी कन्याकी पुत्री तो मेरी भी मान्यहुई इससे मैं इसे घरलेजाके सत्कार करके तुम्हारे पास भेजदूंगी यह कहके वह मेरा हाथ पकड़कर मुझे अपने घरलेगई वहां उसने मेरा बड़ा सत्कार किया और क्षणभर भी मुझे अपनी दृष्टिसे अलग नहींकिया तब उसकी सखियों ने क्रीड़ामें मुझेवर बनाके और उस राजपुत्री को वधू बनाके मेरेसाथ उसका विवाहकिया विवाह करके उसने मुझे शयन स्थानमें लेजाकर निस्सन्देह होकर मुझे अपने गलेमें लगालिया उससमय मैंने अपना स्वरूप प्रकट करके उसका आलिंगनकिया इससे वह अपना मनोरथ पूर्ण जानके चित्तमें प्रसन्नहोकर भी लज्जित होगई तब जैसेही उसकी लज्जाको दूरकरके मैने उसकेसाथ रमणकरना चाहा वैसेही पहरुएने मुझको जगादिया इससे हे वज्रायुध उस मलयवती के बिना मुझे अपना जीना कठिन मालूमहोता है राजाके यह वचन सुनके और स्वप्नको सत्यजानके भद्रायुधने राजासे कहा कि जो नगर आपने स्वप्नमें देखा था उसका जो आपको अच्छे प्रकार स्मरणहोय तो उसका ठीक २ चित्र बनाइये वज्रायुधके वचन सुनकर राजाने उसीसमय उसनगरका चित्र लिखदिया उस चित्रको लेकर भद्रायुधने एकनवीन मठ बनवाके उसकी दीवारमें वह चित्रलटकादिया और उस मठमें दूरदेशसे आयेहुए बन्दियों को षट्रस भोजन वस्त्रका जोड़ा तथा एक अशर्फी देनेकी आज्ञादेदी और मठके अधिकारियों से कहा कि चित्र

में लिखे हुए इसपुरका जाननेवाला जो बन्दीआवे उसे मेरेपास लेआना इतने में वर्षाऋतु आगई इस से राजा विक्रमादित्यकी कामाग्नि और भी प्रज्वलित हुई उसे व्याकुल देखकर हे हारलने हिमलाओ हे चित्रांगी चन्दन से सींचो हे पत्रलेखे कमलके पत्तों की शैया विछाओ और हे कन्दर्पसेने केले के पत्रों से पंखाकरो यह शब्द राजमंदिर में सुनाई दिये इसप्रकार महाकष्टसे वर्षाऋतु तो समाप्तहुई परन्तु राजाका सन्ताप नहीं गया वर्षा के उपरान्त शरदऋतु आई मार्गों में पथिक लोग चलनेलगे स्त्रियां अपने प्रियो के मिलने की आशा करनेलगीं और राजहंस अपने मनोहर शब्दोंसे दिशाओं को व्याप्त करनेलगे ऐसी सुन्दर उस ऋतुमें संवरसिद्धि नाम एक बन्दी भद्रायुधके बनवायेहुए मठमें भोजनके निमित्त आया उसने उस पुरके चित्रको देखकर आश्चर्य्यित होकर कहा कि यह चित्र किसने लिखाहै मैं तो जानताहूं कि केवल मैंनेही इस पुरको देखाहै और कदाचित् जिसने यह चित्रलिखाहै उसने भी देखाहोय उसके यह वचन सुनकर मठका अधिकारी उसे भद्रायुधके पास लेगया और भद्रायुध उसे राजाके निकट लेगया उससे राजाने पूछा कि क्या तुमने सत्य २ यह पुर देखाहै यह सुनकर उसने कहा कि मैंने सम्पूर्ण पृथ्वी में भ्रमण करते २ समुद्रका उल्लंघन करके एक द्वीपमें मलयपुरनाम यह नगर देखाहै इस पुरमें मलयसिंह नाम राजाहै और उसके मलयवती नाम अत्यन्त रूपवती कन्या है वह मलयवती पुरुषों से द्वेष करतीथी एक समय स्वप्नमें किसी महापुरुषको देखकर उसके चित्तसे द्वेष निकलगया स्वप्नमे ही उसने उसके साथ विवाह करके शयन स्थानमें जाकर जैसेही रति करनी चाही वैसेही प्रातःकाल होनेके कारण दासीने उसे जगादिया इससे उसने क्रोध करके उस दासीको अपने देशसे निकालदिया और उस प्रियको स्मरण करके वह कामसे ऐसी पीड़ित हुई कि उठ २ कर शैयापर गिरनेलगी और मूक तथा उन्मत्तोंके समान होकर उसने पूछनेवालो से कुछ न बोली उसके इस क्लेशको सुनकर राजा रानीने बड़े आग्रह से पूछा तो उसने अपनी एक प्यारी सखी के द्वारा अपने स्वप्नका सब वृत्तान्त कहदिया तब उस वृत्तान्तको जानकर अपने पिताके बहुत समझाने से उसने यह प्रतिज्ञाकी कि जो छः महीने के भीतर वह प्रिय मुझे नहीं मिलैगा तो मैं अग्नि में प्रवेश करूंगी, हे राजन् आज उसको प्रतिज्ञा कियेहुए पांच महीने व्यतीत होगये न जानें उसकेलिये क्या होनेवालाहै हे स्वामी यह अद्भुत वृत्तान्त मुझे उसपुर में जानेसे मालूमहुआ संवरसिद्धिके यह वचन सुनकर राजाको प्रसन्न देखके भद्रायुधने कहा कि हे स्वामी आपका कार्य्य सिद्ध होगया वह द्वीप आपहीके वशमे है इससे शीघ्रही वहां जाइये ऐसा न होय कि अवधिका बाकी छठा महीनाभी व्यतीत होजाय भद्रायुधके यह वचन सुनकर राजा विक्रमादित्य संवरसिद्धिको साथलेकर थोड़ीसी सेना लेके चला क्रमसे समुद्रकेपार पहुँचकर जैसेही उस पुरके निकट पहुंचा वैसेही यह कोलाहल सुनाई दिया कि आज छःमहीने के पूर्ण होजाने के कारण अपने प्रियको न पाकर राजपुत्री मलयवती अग्नि में प्रवेश करना चाहती है इस कोलाहलको सुनकर राजा विक्रमादित्य वहीं गये जहां उस राजपुत्री के भस्म होनेको चिता बनीथी वहां राजाको देखकर राजपुत्री मलयवती ने अपनी सखियों से कहा कि

जिस प्रियको मैंने स्वप्नमें देखाथा वह आगया इससे मेरे पिताको जाकर बुला लाओ उसके वचन सुन-कर सखियोंने जाकर राजासे कहा तब प्रसन्न होकर राजा मलयसिंह वहां आया उससमय संवरसिद्धि वंदीने हाथ उठाकर कहा कि हे म्लेच्छरूपी वनके दावाग्नि हे अपने तेजसे भूतों के सिद्ध करनेवाले हे सप्तद्वीपवती पृथ्वीके नाथ हे सम्पूर्ण राजाओंके शिरपर अपनी आज्ञाके रखनेवाले विषमशील वि-क्रमादित्य आपकी सदैव जयहोय वन्दीके यह वचन सुनकर मलयसिंहने उसे विक्रमादित्य जानकर चरणोंमें गिरकर उसे प्रणामकिया और उसे अपने मंदिरमें लेजाकर विधिपूर्व्वक मलयवती से उसका विवाह करके अपनेको कृतकृत्यमाना राजा विक्रमादित्यभी उस प्रियाको पाकर कई दिन सुख पूर्व्वक वहां व्यतीत करके मलयसिंहसे आज्ञा मांगकर अपनी सम्पूर्ण सेना तथा मलयवतीको साथमें लेकर मार्ग में राजालोगों से भेटोंको लेताहुआ अपनी उज्जयिनी पुरी मे आया वहां उसके इस प्रभावको देखकर पुरवासियोंने हर्ष तथा आश्चर्य्यसे युक्तहोके बड़ा उत्सवकिया ११३॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांविषमशीललम्बकेतृतीयस्तरंगः ३॥

इसके उपरान्त एकसमय विक्रमादित्यकी कलिंगसेना नाम रानीने अपनी सौतों से कहा कि आर्य्य-पुत्रने जो मलयवतीके लिये इतना श्रमकियाहै यह आश्चर्य्यकी वात नहीं है इनका स्वभावही इसीप्रकारका है मेरे समान पुत्तलिका खम्भेमे देखकर इन्होंने मेरे साथ हठ पूर्व्वक विवाह कियाथा राजाने मेरे साथ अविधिसे विवाह क्यों किया इसलिये मुझे दुखित देखकर देवसेननाम कार्पटिक (भिक्षुक) ने मेरे समझानेके लिये जो कथाकही है वह मैं तुमको सुनातीहूं उसने मुझसे कहा कि हे रानी चित्त में खेद न करो राजाने बड़ी श्रद्धासे तुम्हारे साथ विवाह कियाहै इसकी सब कथा मैं तुमको सुनाताहूं मैं कार्पटिक होकर तुम्हारे पतिकी सेवाकरताथा एकसमय वनमें वड़े भारी शूकरको देखकर मैंने आके महाराजसे कहा कि हे स्वामी वनमें मैंने एकशिकारके योग्य महाशूकर देखाहै वह शूकर क्याहै मानों चन्द्रमाओंकी कलाओंको खाताहुआ रूपधारी कृष्णपक्षही है मेरे वचनसुनकर राजाने शिकारके निमित्त वनमें जाकर मेरा बतायाहुआ वहशूकर देखा उसशूकरको बड़ा अद्भुत जानकर महाराज विक्रमादित्य उच्चैश्रवाके पुत्र रत्नाकरनाम घोड़ेपर चढके (मध्याह्नके समय सदैव सूर्य्य भगवान् एकमुहूर्त्ततक आकाशमें ठहर जातेहैं उससमय अरुण स्नान तथा जल पीनेके निमित्त घोड़ोंको छोड़तेहैं एकसमय सूर्य्यके रथसे छूटकर उच्चैश्रवाने वनमें महाराज विक्रमादित्यकी घोड़ीको देखकर उसके साथ रमणकिया उससे उस रत्नाकरका जन्महुआथा) उसशूकरके पीछे दौड़े वहुतदूर जाके वह अत्यन्त वेगवान् शूकर राजा की दृष्टि से अलक्षितहोगया तव राजाने शूकरको न पाकर केवल मुझकोही अपने साथ में देखकर मुझसे पूछा कि तुम जानतेहो कि हम कितनी दूर निकलआये हैं यहसुनकर मैंने कहा कि हे स्वामी तीन सौ योजन पृथ्वी आप निकलआये हैं यहसुनकर राजाने मुझसे कहा कि तुम पैदल मेरे साथ कैसे आये यहसुनकर मैंने कहा कि हे स्वामी मेरे पास एक पैरों में लगानेका लेपहै उसका वृत्तान्त आप सुनिये कि पूर्वसमयमें अपनी स्त्री के वियोग से तीर्थ यात्राके निमित्त निकलेहुए मैंने मार्ग में

सायंकाल के समय एकदेवमंदिर देखकर उसके भीतर जाके एक स्त्री उसमें बैठीहुई देखी उस स्त्री ने बड़े आदर पूर्व्वक मुझे वहां रक्खा रात्रिकेसमय उसने एकओठ आकाश में और एकओठ पृथ्वी में लगाकर मुझसे कहा कि तुमने कहीं ऐसा मुखदेखाहै तब मैंने खड्ग निकालकर उससे कहा कि तुम ने ऐसा पुरुष कहीं देखाहै तब वह अपना साधारण रूपकरके मुझसे बोली कि मैं चंडीनाम यक्षिणीहूं तुम्हारे धैर्यसे मैं तुमपर प्रसन्नहूं तुम जो चाहो सो वरमांगो उसके वचन सुनकर मैंने कहा कि जो तुम सत्य २ मुझपर प्रसन्नहो तो ऐसाकर कि बिनाही परिश्रमके मैं सब तीर्थोंका भ्रमणकरूं मेरे वचन सुन कर उस यक्षिणी ने मेरे पैरोंमें ऐसा लेपलगादिया कि जिससे बिना क्लेशकेही मैं संपूर्ण तीर्थोंपर घूमा और आज आपके साथ यहां दौड़ा और इसी लेपके प्रभावसे रोज इसवनमें आके फलखाकर उज्जयिनी में आपकी सेवाकरता हूं यह मेरे वचन सुनकर राजा मेरे ऊपर बहुत प्रसन्नहुआ तब मैंने फिर राजासे कहा कि हेस्वामी जो आपको क्षुधालगीहोय तो मैं आपको सुन्दर मधुर फललाकरदेऊं यह सुन कर राजाने कहा कि मुझे क्षुधानहीं है तुम्हारी जो इच्छाहोय तो तुमको जो यहांमिले सोखाओ राजा की यह आज्ञापाके मैंने एककककड़ी वहीसे तोड़कर खाई उसके खातेही मैं अजगरहोगया मेरी यह दशा देखकर महाराज विक्रमादित्यने खेद युक्तहोकर भूतकेतु नाम वैतालका स्मरणकिया जिसके नेत्ररोग को उन्होंने दृष्टिमात्रसेही दूर कियाथा स्मरण करतेही उस वैतालने आकर कहा कि हे महाराज क्या आज्ञा है तब राजानें उससे कहा कि यह मेरा कार्पटिक सहसा अजगरहोगया है इसको शीघ्र अजगर पनेसे छुड़ाओ राजाके यह वचन सुनकर वैतालने कहा कि मुझमें ऐसी शक्तिनहीं है क्योंकि सबकी शक्तियां नियतहोती हैं क्या जल बिजली की अग्निको शान्तकरसक्ता है यह सुनके राजानेकहा कि तो हे मित्र चलो इस गांवमें चलें कदाचित भिल्लोंसे कोई उपाय मालूमहोगा यह कहके राजा विक्रमादित्य वैतालकेसाथ उसगांवमें गया वहां उसे आभूषण पहरे देखकर बहुतसे चोर उसपर बाणोंकी वृष्टिकरनेलगे तब राजाकी आज्ञासे उस वैतालने पांचसौ चोर चबाडाले और जो बाकीबचे उन्होंने जाकर अपने सेनापति से सब वृत्तान्त कहा भिल्लोंकी मृत्यु सुनकर एकाकिकेसरी नाम वह सेनापति बहुतसी सेनालेकर आया परन्तु एक सेवक जोकि राजा विक्रमादित्यको पहचानताथा उसके कहनेसे राजाको पहचानके वह सेनापति उसके चरणोंपर गिरा उससे कुशलप्रश्न पूछकर राजाने कहा कि मेरा कार्पटिक यहां ककड़ी खाकर अजगर होगयाहै उसके अजगरपने के छूटने के लिये कोई उपायकरो राजाके यह वचन सुनकर सेनापति ने कहा कि मेरे इस पुत्रको इस वैतालके साथ अजगर के निकट भेजिये तब राजा के कहने से वह वैताल सेनापतिके पुत्रको लेकर मेरे पास आया वहां आकर सेनापति के पुत्रने मुझे एक औषधका रस सुँघाकर फिर पुरुष करदिया ४६ तब मैं प्रसन्नहोकर सेनापतिके पुत्रके साथ राजाके निकटगया राजानें मुझे देखके और बहुत प्रसन्नहोके सेनापति के पुत्रकी बड़ी प्रशंसाकी राजाको प्रसन्न देखकर वह एकाकिकेसरी सेनापति बहुत प्रार्थनाकरके मुझ समेत राजा को अपने घरमें लेगया उस गृहमें बहुतसा हाथीदांत जड़ाहुआ था सुगन्धिके लिये हाथी का मदबिड़का

गया और बहुतसी घोंघची तथा मोरपंख रक्खेहुएथे वहां सेनापतिकी मोती के आभूषण पहरेहुए स्त्री ने राजाकी बड़ी सुश्रूषाकी स्नान तथा भोजन के उपरान्त राजाने सेनापतिको तरुण और उसके पुत्रों को वृद्ध देखकर उससे पूछा कि हे सेनापति मुझे आश्चर्य्य है कि तुम तरुणहो और तुम्हारे पुत्र वृद्ध हैं राजाके वचन सुनकर सेनापति ने कहा हेस्वामी सुनिये मैं मायापुरीका रहनेवाला चन्द्रस्वामीनाम ब्राह्मणहूं एक समय में काष्ठलेनेको अपने पिताकी आज्ञासे वनमें गया वहां एक वन्दरने मेरा मार्ग रोका और दीनहोकर दृष्टिके इशारे से मुझे दूसरा मार्ग दिखाया यह देखकर मैंने शोचा कि यह वानर मुझे क्लेश तो देता नहीं है इससे इसके बताएहुए मार्ग से चलूं देखूं इसका क्या अभिप्रायहै यह शोच के मैं उसी मार्ग से चला और वहवानर फिर २ कर मुझे देखताहुआ आगे २ चला थोड़ी दूर जाकर वह एक जामुनके वृक्षपर चढ़गया उस वृक्षपर उसकी वानरी लताओं से बँधीहुई बैठीहुई थी उसे देखके यह जानकर कि यह इसी के छुड़ाने को मुझे बुलालाया है मैंने कुठारसे उसके सब वन्धन काटदिये और वृक्षपरसे उतरकर अपने घर आनाचाहा तब वह वानरी मेरे पैरों में चिपटगई और उस वानर ने कहीं से जाके एक दिव्य फल मुझे लाकर दिया उस फलको मैंने अपने घरमें लाके अपनी स्त्री के साथ खाया उसे खातेही मैं और मेरी स्त्री दोनों अजर अमर होगये तदनन्तर उस देशमें बड़ा दुर्भिक्ष हुआ इससे वहां के लोग जहां तहां भागगये और अपनी स्त्री समेत मैं भाग्यवशासे इस वनमें आया उनदिनों यहां शवरोंका कॉचनदंष्ट्रनाम राजा था शस्त्रधारणकरके उसी की सेवा मैं करनेलगा युद्ध में मुझे बहुत प्रवीण जानके कॉचनदंष्ट्रने मुझे सेनापति बनालिया सेनापतिहोके मैंने उसका ऐसा सेवन किया कि जिससे मरते समय वह अपना राज्य मुझे देगया मुझे यहां रहते २ सत्ताईससौ वर्ष होचुके परन्तु उस फल के प्रभावसे अभीतक मुझे वृद्धावस्थानहींहुई इसप्रकार अपना वृत्तांतकहके उसने फिर कहा कि हे महाराज उस फल के खाने से जो मैं इतने दिनतक जिया उसका फल यह प्राप्त हुआ कि आपके चरणोंके दर्शन हुए अब हे स्वामी मैं यह प्रार्थना करता हूं कि आपने मेरे गृहमें आकर जो कृपा प्रकटकी है उसें और भी पूर्ण कीजिये कि मेरे क्षत्रिया स्त्री में उत्पन्नहुई अत्यन्त रूपवती मदन-सुन्दरी नाम एक कन्याहै उसे आप स्वीकार कीजिये उसकी यह प्रार्थना सुनकर महाराज विक्रमा-दित्य उस कन्याके साथ विवाह करके सातदिन वहां रहकर उस सेनापति के दियेहुए सैकड़ों मोती और कस्तूरी से लदेहुए ऊंटोंको लेकर भिल्लोंकी सेनाके साथ वहां से चला इस बीच में जहां राजाने शिकार खेलते २ अपनी सेना छोड़ीथी वहां बड़ा सन्देहहुआ कि राजा कहां चलागया सबको उदासीन देखके भद्रायुधने कहा कि खेद न करो थोड़ेही समयमें हमारा स्वामी आताहोगा उसके दिव्यप्रभाव के कारण उसकी कहीं कुछ हानि नहींहोसक्ती क्या तुम लोगों को स्मरण नहीं है कि वह अकेलाही पातालमें जाकर सुरूपानाम नागकन्याको ले आयाथा और गन्धर्व लोक में जाकर गन्धर्वराजकी तारावलीनाम कन्याको ले आयाथा भद्रायुधके इसप्रकार समझानेसे वह सब उसीवनमें राजाकी प्रत्या-शा करनेलगे और राजा विक्रमादित्यभी मदनसुन्दरीको भिल्लोंकी सेनाके साथ स्पष्टमार्ग में छोड़कर

उस वैतालको तथा मुझे साथमें लेकर उसमहाशूकरको देखनेके लिये वनमेंगया वनमें जातेही वहशूकर उसके आगे आया शूकरको देखकर राजाने पांच वाणमारे वाणोंके लगनेसे वहशूकर मरके पृथ्वी परगिरपड़ा और एकसुन्दर पुरुष उसशूकरके पेटकोफाड़कर निकला जैसेहीराजाने उससे पूछनाचाहा कि तुम कौनहो वैसेही एकमहाभयंकर मतवाला हाथी आया उसे आते देखकर राजाने एकही वाणसे उसे मारकर पृथ्वीमें गिरादिया उसकेभी पेटको फाड़के एकपुरुष तथा एक दिव्य स्त्री उसमेंसे निकली तव शूकरके पेटसे निकलेहुए पुरुषने राजासे कहा कि हे स्वामी सुनिये मैं आपसे अपना सब वृत्तान्त कहताहूं कि हम दोनों देवकुमारहैं इसकानाम भद्रहै और मेरा नाम शुभ है एकसमय भ्रमणकरतेहुए हमदोनों ने ध्यानकरते हुए कण्वमुनिको देखकर हाथी तथा शूकरकासा रूपबनाके उनको डरवाया इससे कुपितहोके कण्वमुनिने यह शापदिया कि तुमने हाथी और शूकरका रूपबनके मुझे डराया है इससे तुम इसीरूपमें होकर इसवनमें घूमोगे जब राजा विक्रमादित्य तुमको मारेगा तब तुम्हारेशापका अन्तहोगा कण्वमुनिके इसशापसे हमदोनों हाथी तथा शूकरहोकर इसवनमें घूमनेलगे आज आपके वाणोंके लगनेसे शापसे छूटे इसस्त्रीको हम नहीं जानते हैं यह अपना वृत्तान्त आप कहैगी और यह जो मराहुआ शूकर तथा हाथी पड़ाहै इनको आप स्पर्शकरेंगे तो यह दोनों दिव्य ढाल तलवारहोजायँगे यहकहके वह दोनों अन्तर्द्धानहोगये और वह शूकर और हाथी स्पर्शकरनेसे ढाल तलवारहोगये तब स्त्रीने पूछनेपर अपना यह वृत्तान्तकहा कि उज्जयिनी के रहनेवाले धनदत्तनाम वैश्यकी मैं स्त्री हूं मैं अपने महलपर सोरहीथी वहांसे यहहाथी मुझे निगलकर यहां चलाआया इसके पेटमें कोई पुरुष न था परन्तु जब यहमरा तो मेरे साथ एकपुरुषभी इसके पेटमेंसे निकला उसके यहवचन सुनकर राजाने उससे कहा कि धैर्य्यधरो मैं तुम्हारे पतिके पास तुमको भेजदूंगा तुम हमारी रानी मदनसुन्दरीके साथ यहांसे चलो यहकहके राजाने उसको वैतालके साथ रानी मदनसुन्दरी के पास भेज दिया उसस्त्रीको रानीके पास पहुंचाके जैसेही वैताल आया वैसेही उसवनमें वहुतसे परिकर समेत दो कन्या दिखाईदीं उन्हें देखके राजाने मुझे भेजकर उनके प्रधान मनुष्यों को वुलाके उनसे पूछा कि यहकन्या कौन हैं और कहां से आई हैं उन्हों ने कहा कि कटाहनाम द्वीप में गुणसागरनाम बड़ा प्रतापी राजा है उसके गुणवतीनाम अत्यन्त रूपवती एककन्याहुई उसकन्याके लक्षणोंको देखकर सिद्धोंने कहा कि इसका पति सातोंद्वीपों का स्वामीहोगा समय पाके उसकन्याको तरुणी देखकर राजा गुणसागरने अपने मंत्रियों से यह सलाहकरी कि राजा विक्रमादित्य इसके योग्य पति है इससे उसीके पास इसे भेजना चाहिये यह निश्चयकरके उसने उसको सब परिकर समेत जहाजपर चढ़ाके विदा किया भाग्यवश से जब वह जहाज सुवर्णद्वीपके निकटआया तो वहां समुद्रका एकमहामत्स्य उसे निगलगया और वह कर सुवर्णद्वीपके किनारे आकर लगा वहां उसमहामत्स्यको देखके वहुतसे लोगोंने उसे मारकर उस का पेट फाड़ा उसमें से वह पूरा जहाज निकला इससमाचारको सुनके वहांका राजा चन्द्रशेखर वहां आया वह राजा गुणसागरका सालाथा इससे उसने परिजनों के द्वारा गुणवतीको अपनी बहिनकी

पुत्री जानकर परिकर समेत अपनी राजधानी में लेजाकर बड़ा उत्सव किया और दूसरे दिन अपनी चन्द्रवतीनाम कन्या जिसका कि उसने पहलेहीसे विक्रमादित्यके साथ विवाह करनाचाहाथा उसे भी गुणवती के साथ परिकर समेत जहाजपर चढ़ाके सुमुहूर्त में राजा विक्रमादित्यके पास जानेको विदा किया वही यहदोनों कन्या समुद्रका उल्लंघन करके क्रमसे यहां आई हैं हम सब इनकेसाथ में हैं यहां जब हम पहुँचे तो एक शूकर और हाथी दोनों हमलोगोंपर दौड़े तब हम लोगोंने चिल्लाकर कहा कि यह दोनों कन्या महाराज विक्रमादित्यकेलिये आई हैं हे लोकपालो उसके धर्म से इनकी रक्षाकरो यह सुन कर हाथी तथा शूकरनेकहा कि धैर्य्यकरो राजाके नामलेनेसे तुमको कोई भय नहीं है वह राजा तुमको यहां मिलजायगा यह कहकर वह दोनों कहीं चलेगये हेस्वामी यही हमदोनोंका वृत्तान्तहै उनके वचन सुनकर मैंने उनसेकहा कि यही महाराज विक्रमादित्य हैं मेरे वचन सुनके उन्होंने प्रसन्नहोके राजाको प्रणामकरके वह दोनों कन्या राजाके अर्पण करदीं तब राजाने उन दोनों कन्याओं को वेतालके द्वारा मदनसुन्दरी के पास भिजवादिया और कहा कि यहभी मदनसुन्दरी के साथ उज्जयिनी को चलें फिर उनकन्याओं को पहुँचाके आयेहुए वेतालकेसाथ महाराज विक्रमादित्य मुझे अपनेसाथ लेकर वनमें ही चले वनमें चलते २ सूर्य्यभगवान् अस्तहोगये उससमय वहां मृदंगकी ध्वनि सुनाई दी इससे राजाने वेतालसे पूछा कि यह शब्द यहां कहां से आया वेतालने कहा हे स्वामी यहां विश्वकर्माका वनायाहुआ एक देवमंदिर है उसमें अनेक प्रकारके कौतुकहुआ करते हैं वहीं यह मृदंग बजरहाहै वेताल के यह वचन सुनकर उसीके साथ राजा और मैं दोनों मंदिरमें गये और घोड़ा बाहरही बांधदिया वहां एक रत्न मय शिवजी के लिंगके आगे एकदीपक वलरहाथा और वहुतसी दिव्यस्त्रियां सुन्दर बाजे बजाकर गान कर २ के नृत्य कररही थीं और वहुतसे पुरुषभी बाजे बजारहे थे क्षणभरमेंही गान तथा नृत्यके समाप्त होनेपर वह स्त्रियां स्तंभोंकी पुतलियों में लीनहोगईं और वहपुरुष चित्रके पुरुषों में लीनहोगये यह देखकर राजाके आश्चर्य्यितहोनेपर वेतालनेकहा कि विश्वकर्माकी बनाई हुई यह मायाहै यहां सदैव संध्याके समय यही हुआ करताहै वेताल के यह वचन सुनकर उसीकेसाथ उस मंदिरमें भ्रमण करते२ राजाने एक अत्यन्त रूपवती पुतली खंभेमें देखी उसे देखकर उसकी शोभाके वशीभूतहोके कहा कि जो ऐसीही सजीव स्त्री मुझको नहींमिली तो मेरे राज्य तथा जीवनको धिक्कारहै यह सुनके वेतालने कहा कि यह कोई दुर्लभ बातनहीं है कलिंगदेशके राजाकी कलिंगसेना नाम पुत्रीको देखकर वर्धमान पुरके रहनेवाले शिल्पीने यह पुतली बनाई है इससे हे स्वामी उज्जयिनी में जाकर कलिंगदेशके राजा से उसकी कन्या मांगिये या पराक्रम से हरलीजिये वेताल के यह वचन स्वीकार करके राजा विक्रमा- दित्य उस रात्रि को वहीं व्यतीत करके प्रातःकाल हम दोनों को साथ लेकर वहाँ से चला मार्ग में एक अशोक वृक्षके नीचे बैठेहुए दो पुरुष मिले उन्हों ने उठकर राजाको प्रणाम किया उनसे राजाने पूछा कि तुमकौनहो और वनमें कैसे रहतेहो यह सुनकर उनमें से एकने कहा कि मैं उज्जयिनी का रहनेवाला अनंगदत्तनाम वैश्यहूं एकदिन मैं अपनी स्त्रीके साथ महलपर सोया परन्तु प्रातःकाल उठ

कर देखा तो स्त्री वहां न थी और अन्य २ महल तथा उपवनादि में ढूंढनेसे भी वह नहीं मिली उसका चित्त कुछ दुष्टभी नहीं मालूम होताथा क्योंकि एकदिन उसने मुझे यह कहकर एक मालादी थी कि जो मैं पतिव्रताहूंगी तो यह माला नहीं कुम्हलावेगी वह माला अभीतक म्लान नहीं हुई है न जाने वह कहां चलीगई या कोई भूतादिक उसे लेगये यह शोच २ कर उसके वियोगकी अग्नि से मैं बहुत व्याकुल हुआ और बन्धुओंके बहुत समझाने से एक देवमन्दिर में जाकर सदैव ब्राह्मणों को भोजन कराताहुआ वहीं रहनेलगा वहाँ एकदिन यह ब्राह्मण थकाहुआ आया इसका मैंने स्नान तथा भोजनसे अतिथि सत्कार किया और जब यह स्वस्थहोकर बैठा तो इससे पूछा कि तुम कहां से आयेहो इसने कहा कि काशीके समीप एकग्राम का मैं रहनेवालाहूं और वहींसे आयाहूं तदनन्तर इसने मेरे सेवकों से मेरा दुःख जानकर मुझसे कहा कि हे मित्र तुमने उद्योगके विना इतना क्लेश क्यों सहा उद्योगी लोगोंको दुर्लभ पदार्थ भी प्राप्तहोजाता है इससे मेरे साथ चलकर अपनी स्त्री को ढूंढो इस के यह वचनसुनकर मैंने कहा कि जिसका कुछ भी ठिकाना नहीं मालूमहै उसे कैसे ढूंढूं मेरे वचन सुनकर इसने फिर कहा कि यह सन्देह न करो इसीप्रकार से केसटको भी रूपवती स्त्री प्राप्तहुई है यह कथा मैं तुमको सुनाताहूं कि पाटलिपुत्र नाम नगरमें किसी धनाढ्य ब्राह्मणके केसटनाम अतिरूपवान् पुत्रथा वह सदृश स्त्रीकी प्राप्तिके निमित्त माता पितासे विना कहेही तीर्थोंमें भ्रमण करताहुआ देश २ में घूमनेलगा क्रमसे नर्मदाके तटपर पहुँचकर उसने एक बहुत बड़ी बरात आते देखी बरातमें से एक ब्राह्मणने आकर केसट से नम्रतापूर्वक एकान्तमें कहा कि तुमसे मैं कुछ प्रार्थनाकरताहूं उसमें तुम्हारी कोई हानि नहीं है और मेरा बड़ा उपकारहै जो तुम स्वीकारकरो तो कहूं यह सुनकर केसटने कहा कि हे आर्य जो मुझसे होसकेगा सो मैं अवश्य करूंगा आपकहिये यह सुनकर उस वृद्धब्राह्मणने कहा कि मेरे एकपुत्रहै वह अत्यन्त कुरूप है अर्थात् दांत बड़े नाक चपटी वर्ण काला पेट लम्बा पैर टेढ़े और कान सूपसे हैं ऐसे कुरूपआकार पुत्रके लिये भी मैंने स्नेहसे उसकेरूपकी बड़ी प्रशंसाकरके रत्नदत्तनाम ब्राह्मण से उसकी कन्यामांगी उसने रूपवतीनाम अत्यन्त सुन्दर अपनी कन्या देनी स्वीकार करली आज उसका पाणिग्रहण है इसीनिमित्त हमलोग आये हैं मैं जानताहूं कि जो वह मेरे पुत्रको देखेगा तो कन्या न देगा इससे मेरा सब उद्योग व्यर्थ होजायगा इसमें यहीउपाय है कि तुम हमारे साथ चल के उस कन्यासे विवाह करके उसे हमारे पुत्रको देदो केसटने उसके यह वचन स्वीकार करलिये तब वह वृद्धब्राह्मण केसटको साथलेके नर्मदानदीके पारजाकर एक पुरकेपास जाकेटिका सायंकालके स- मय केसट सन्ध्याकरनेको नर्मदा नदीके तटपरगया वहाँ एक राक्षसने प्रकटहोकर उससेकहा कि हे के- सट मैं तुमको खाऊंगा राक्षसके वचनसुनके केसटनेकहा कि मैंने ब्राह्मणसे जो प्रतिज्ञाकीहै उसको पूर्ण करके तुम्हारेपास फिर आऊंगा तब तुम मुझको खाना यहसुनकर राक्षसने शपथलेकर उसे छोड़दिया तब केसट राक्षससे छूटकर वृद्धब्राह्मणके पास आया ब्राह्मण लग्नका समय निकट जानकर केसटको सम्पूर्ण वरके वस्त्रादिक पहराकर सब बरातियोंके साथ उसपुरके भीतरजाके रत्नदत्तके गृहमें लेगया वहां

रत्नदत्तने केसटको वेदीपर बैठाके उसकेसाथ अपनी रूपवती कन्याका विवाह विधिपूर्व्वक करदिया उस समय केसटके रूपको देखकर सम्पूर्ण स्त्री तथा वह रूपवती अत्यन्त प्रसन्नहुई और केसट अपने चित्तमें आश्चर्य्य तथा खेद दोनोंसे व्याकुलहुआ तदनन्तर रात्रि के समय शयनस्थान में अत्यन्त चिन्ता में व्याकुलहुए केसटको पड़ाहुआ देखके रूपवतीभी उसके पासजाकर सोनेका वहाना करके लेटरही अर्द्ध रात्रिके समय केसट रूपवतीको सोतीहुई जानके सत्यका पालन करनेकेलिये उस राक्षसके पास गया और रूपवतीभी उसे जाते देखकर छिपकर उसीके पीछे २ चलीगई राक्षसने केसटको आया देखके कहा कि हे केसट तुम बड़े सत्यवान्हो तुमने अपने पुर पाटलिपुत्रको तथा अपने पिता देसटको पवित्र किया आओ मैं तुम्हें खाऊं राक्षसके यह वचन सुनके रूपवतीने उसके निकटजाके कहा कि हे राक्षस तुम मुझेखालो मेरे पतिको न खाओ नहीं तो मेरी क्यागतिहोगी यह सुनकर राक्षसने कहा कि भिक्षा तुम्हारी गतिहोगी यह सुनके रूपवतीने कहा कि मुझ स्त्रीको कौन भिक्षादेगा यह सुनके राक्षसने कहा जिससे तुम भिक्षामांगोगी जो वह तुम्हें भिक्षा न देगा तो उसके शिरकेसौटुकड़े होजायँगे राक्षस के यह वचन सुनकर रूपवतीने कहा तो मैं तुम्हींसे इस पतिकी भिक्षामांगतीहूं यह सुनकर जो उस ने उस ब्राह्मणको न छोड़नाचाहा तो उसका शिर फटगया और उसे मरा देखकर रूपवती केसटको लेकर अपने पिताके यहां चलीआई इतनेमें वह रात्रि व्यतीतहोगई दूसरे दिन सबबरातीलोग भोजन करके वधू वरको साथलेकर नर्मदानदीके किनारेआये वहां वह वृद्ध ब्राह्मण मल्लाहों से सलाहकरके एक नावपर केसटको चढवाके दूसरी नावपर रूपवती तथा अन्य परिकर समेत आपचढ़ा तब वह ब्राह्मण तो नर्मदाके पारआगया और केसटकी नावको मल्लाह नदीके बड़े प्रवाह में छोड़कर नावपर से कूदके पैरकर चलेआये और केसट उसनावके द्वारा बहकर समुद्रमें चलागया वहां वायुके वेगसे उस की नाव लहरके द्वारा किनारेपर लगगई उससमय केसटने नावसे उतरके सावधान होकर शोचा कि देखो उस ब्राह्मणने मेरे साथ यह प्रत्युपकार किया अथवा उसकी तो अधर्मता और मूर्खता पहलेही प्रकटथी जब कि उसने दूसरेके साथ व्याहीहुई स्त्रीको अपनी पुत्रवधू बनाना चाहाथा उसके इसप्रकार शोचतेही दिन व्यतीतहोगया और रात्रि आगई चिन्तासे रात्रिके समय केसटको निद्रा नहींपड़ी चौथे पहरमें उसने देखा कि एक सुन्दरपुरुष आकाशसे गिरा उसे देखके केसट पहलेतो कुछ भयभीतहुआ फिर सावधानहोके उससे बोला कि तुम कौनहो उस पुरुष ने कहा कि पहले तुम बतलाओ कि तुम कौनहो तब मैंभी बतलाऊंगा यह सुनके केसटने अपना सब वृत्तान्त कहदिया उसके वृत्तान्तको सुन के उस पुरुषने कहा कि हे मित्र मेरी और तुम्हारी समानही दशाहै इससे मेरे वृत्तान्तको सुनो कि वेणानदी के तटपर रत्नपुर नाम एक नगरहै उसके निवासी एक धनवान् ब्राह्मणका कंदर्प नाम मैं पुत्रहूं एकदिन में वेणानदी पर सायंकाल के समय जललेनेको गया भाग्यवश से पैरके फिसलजाने के कारण नदी में गिरकर मैं वहा रात्रिभर बहते २ दूसरे दिन प्रातःकाल एक वृक्षमें जाकर रुका उस वृक्षकी शाखाओंके आश्रयसे किनारे पर जाके मातृकाओंका एक शून्य मंदिर देखकर उस में गया

वहां मातृकादेवी को प्रणाम करके मैंने यह विज्ञापनाकरी कि हे भगवती मुझ दीनकी रक्षाकरो मैं तुम्हारी शरणमें प्राप्तहूं यह विज्ञापना करके मैंने वहीं विश्राम किया और वह दिन भी व्यतीत होगया २१० और चन्द्रिकासे निर्मल रात्रि आई उससमय मातृकादेवी में से निकलकर योगिनियों ने परस्पर कहा कि आज चक्रपुर में हमलोगोंको अवश्य जाना है यहां इस दीन शरणागत ब्राह्मणकी कौन रक्षा करेगा इससे इसे ऐसे स्थानमें लेजाकर रखना चाहिये जहां इसका कुछ कल्याण होय फिर प्रातःकाल हम वहांसे इसे लेआवेंगी यह कहके वह आकाशमार्ग से मुझे लेजाकर किसी पुरमें एक धनवान् ब्राह्मण के घरमें छोड़कर चलीगई वहां मैंने देखा कि कन्याके विवाहकी संपूर्ण सामग्री इकट्ठी होरहीथी और लग्नका समय आगयाथा परन्तु बरात नहीं आईथी इससे वहां केलोगों ने मेरा सुन्दर रूप देखके मेरे साथ सुमनानाम कन्याका विवाह करदिया विवाहविधि के उपरान्त मैं वहीं ब्राह्मणोंकी आज्ञासे एक सुन्दर महलमें उस सुमनाके साथ जाके सोया रात्रिके पिछले पहरमें चक्रपुर से लौटीहुई योगिनियां मुझे वहांसे लेकर आकाशमें उड़चलीं मार्ग में अन्य योगिनी उनसे मिलकर मुझे छीनने लगीं इससे उनका परस्पर युद्ध होनेलगा और मैं उनके हाथसे छूटकर यहां गिरपड़ा मैं नहीं जानताहूं कि किस नगरमें सुमनाके साथ मेरा विवाह हुआथा अब न जानिये मेरे भाग्यमें क्या बदाहै हे मित्र यही मेरा वृत्तान्तहै इससमय तुम्हारे समागम से मेरा सब दुःख शान्तसा होगयाहै कन्दर्पके यह वचन सुनके केसटने कहा कि हे मित्र भय न करो योगिनी तुम्हारा कुछ नहीं करेंगी क्योंकि मेरे पास ऐसीही विलक्षण शक्तिहै अब तुम हमारे साथही रहो परमेश्वर कल्याण करेगा उनके इस प्रकार वार्त्तालाप करते २ वह रात्रि व्यतीत होगई प्रातःकाल वह दोनों वहांसे चलकर भ्रमण करते २ रत्नानदी के तटपर भीमपुर नाम नगर में पहुँचे वहां उस नदी के तटपर महाकोलाहल सुनके उन्होंने जाकर देखा कि एक इतनी बड़ी मछली आकर फँसी है कि पुलके समान जिस मछली से नदी के दोनों तट व्याप्त होगये हैं उस मछलीका पेट फाड़नेसे एक अत्यन्त रूपवती स्त्री उसमेंसे निकली उसे देखकर कन्दर्पने केसटसे कहा कि हे मित्र यह वही सुमनानाम स्त्री है जिसके साथ मेरा विवाहहुआ था परन्तु न जाने मछलीके पेट में इसका कैसे निवास हुआ इससे थोड़ी देर यहां ठहरें तो सब प्रकट होजायगा उसके यह वचन सुनकर केसटने कहा कि अच्छा ऐसाही करो तब लोगों के पूछनेसे सुमनाने कहा कि मैं रत्नाकरनाम पुरके रहनेवाले जयदत्त ब्राह्मण की सुमनानाम पुत्री हूं न जाने कहां से आयेहुए एक ब्राह्मणकेसाथ मेरा विवाहहोगया उसी रात्रिमें जब मैं सोगई तब वह न जाने कहां चलागया मेरे पिताने यत्नपूर्वक उसे बहुत ढूंढ़ा परन्तु उसका कुछ पता न मिला इससे मैं वियोगाग्नि की शान्तिकेलिये नदीमें डूबी वहां एक मछलीने मुझे निगललिया जिसके द्वारा मैं यहां आकर प्रकट हुई हूं उसके इसप्रकार कहतेही एक यज्ञस्वामी नाम ब्राह्मणने उसे गलेसे लगाकर कहा कि हे पुत्री तू मेरी भानजी है मैं तुम्हारी माताका यज्ञस्वामी नाम भाईहूं उसके वचन सुनके सुमना मुखखोलकर उसे पहचानके उसके पैरोंपर गिरकर बहुत देरतकरोई और बोली कि हे मामाजी मुझे बचालादो तो मैं

चितालगाकर भस्महोजाऊं क्योंकि आर्यपुत्रके विना मुझे जीना योग्यनहीं है यहसुनकर यज्ञस्वामीने उसे बहुत समझाया परन्तु वह अपने निश्चयसे चलायमान न हुई तब कन्दर्प उसके चित्तको शुद्धजानकर उसके निकटगया कन्दर्पको देखके उसके पैरोंपर गिरकर वह बहुत रोई और अपनेमामासे बोली कि यही मेरापति है उसके वचन सुन के यज्ञस्वामी बहुत प्रसन्नहोकर उसे तथा कन्दर्प और केसटको अपने घर लेगया वहां उनसबसे सब वृत्तान्त पूछकर उसने सबका बड़ा सत्कारकिया वहां कई दिन रहकर केसटने कन्दर्पसे कहा कि हे मित्र तुम तो अपनी प्रियाकोपाकर कृतार्थ होगये इसमे तुम अपनी प्रियाको लेकर अपने रत्नपुर नगरको जाओ और मैं अपने देशको नही जाऊंगा तीर्थोंपर भ्रमण करके इस अपने पापी शरीरको त्यागूंगा उसके वचन सुनकर यज्ञस्वामीने कहा कि तुमकातरहोके यह क्या वचन कहतेहो धैर्य्यसे जीनेहुए को सब पदार्थ प्राप्तहोजाते है सुनो मैं तुमको कुसुमायुधका वृत्तान्त सुनाताहूं चण्डपुर नाम नगरमे देवस्वामी नाम एक ब्राह्मण रहताथा उसके अत्यन्तरूपवती कमललोचना नाम कन्याथी और कुसुमायुध नाम एक युवा ब्राह्मण उसका शिष्यथा इन दोनों में परस्पर स्नेहथा एक समय देवस्वामीने कमललोचनाका किसी अन्यवरके साथ विवाह करनेका निश्चय किया तब उसने अपनी सखीके द्वारा कुसुमायुध से कहलवाया कि मेरे पिता किसी अन्यके साथ मेरा विवाहकरना चाहते हैं और मैंने पहलेहीसे तुम्हारे साथ विवाह करनेका संकल्पकरलिया है इससे तुम युक्ति पूर्व्वक मुझे यहांसे हरलेचलो उसका यह अभिप्राय जानकर कुसुमायुधने उसके हरनेकेलिये एक अत्यन्त वेगवती ऊंटनी अपने सेवकके साथ उसके गृहके पास खड़ीकरदी रात्रिके समय कमललोचना घरसे निकलकर उस ऊंटनीपर चढली उसे देखकर वह सेवक कामके वशीभूत होकर उसे किसी अन्यस्थान में लेगया वहां प्रातःकाल हुआ जानके कमललोचना ने उससे कहा कि तुम्हारा स्वामी मेरापति कहां है उसीके पास मुझे क्यों नहीं लेचलते उसके यह वचन सुनकर उस दुष्ट सेवकने कहा कि मैंही तुम्हारे साथ विवाहकरूंगा वह न जाने कहांगया यह सुनकर परम चतुर कमललोचनाने कहा कि तुम तो मेरे बड़ेही प्रियहो शीघ्रही तुम मेरे साथ विवाहकरो उसके वचन सुनकर वहमूर्ख किसी नगर के उपवनमें उसे छोड़कर विवाहकी सामग्री लेनेकेलिये बाजारको गया उसेगया देखकर कमललोचना वहांसे भागकर एक वृद्धमालीके यहां चलीगई उसमालीने उससे सबवृत्तान्त पूछकर बड़े आदर पूर्व्वक उसे अपने यहांरक्खा और वह दुष्टसेवक उसे उपवनमें न पाकर कुसुमायुधकेपास जाकरबोला कि तुमबड़े सरल चित्तहो इससे स्त्रियोंकी कुटिलताको नहींजानते वह कमललोचना तो घरसे निकलीही नहीं और लोगोंने मुझे वहां खड़ादेखकर बहुतपीटा इससमय मैं अपनेप्राण किसीप्रकारसे बचाकर भागके तुम्हारे पास आयाहूं उसके यह वचन सुनकर कुसुमायुध चुपहोगया इसकेउपरान्त एकसमय कुसुमायुध अपने पिताकी प्रेरणासे किसी अन्य कन्यासे विवाह करनेकोचला और मार्गमें उसीनगरमे जाकर टिका जहां कमललोचनाथी वहां कमललोचनाने कुसुमायुधको देखकर उसमालीसे जिसके कि यहां वह रहतीथी जाकरकहा कि यहां मेरापति आयाहै उसके वचनसुनकर मालीने कुसुमायुधके पासजाकर सब वृत्तान्त

कहा और उसेकमललोचनाके पास लिवालाया कमललोचनाकोदेखके अत्यन्तप्रसन्नहोके कुसुमायुधने वहीं उसके साथ विवाह करके उस दुष्ट सेवकको मारकर निकालदिया और जिस कन्या के साथ विवाह करनेको जाताथा जाकर उसके साथ भी विवाह किया इस रीतिसे वह दोनों स्त्रियोंको लेकर आनन्दसे अपने घरको गया इसप्रकारसे मनुष्यों के असंभव समागम भी होजाते हैं हे केसट तुमभी थोड़ेही कालमें अपनी प्रियाको पाओगे यज्ञस्वामीके यह वचन सुनकर केसट तथा कन्दर्प दोनों कुछ काल वहां रहकर सुमनाको लेकर अपने देशकोचले वहांसे चलके एक महावनमें पहुँचकर एक मत-वाले हाथी के भयसे वह सब अलग २ होगये उनमें से केसट बहुत दुखीहोके अकेलाही काशीपुरी में आया वहां कन्दर्प भी उसे मिलगया उसके साथ वह अपने पाटलिपुत्र नगरमें अपने पिताके पास गया वहां रूपवतीके विवाह तथा कन्दर्पके समागमका वृत्तान्त कहकर कुछ दिन रहा इस बीचमें हाथीके भयसे भागीहुई वह सुमना वनमें हा आर्यपुत्र हा अम्ब इसप्रकार कहतीहुई रात्रिके समय बहुत शोच कर दावाग्निमें अपना शरीर भस्म करने को उद्यत हुई इतने में वह योगिनी जिन्होंने कन्दर्पपर कृपा कीथी उन्होंने अपने स्थानमें जाकर कन्दर्पका स्मरण करके अपने प्रभावसे जानलिया कि उसकी स्त्री वनमें शरीर त्यागनेको उद्यतहै यह जानकर उन्होंने यह सलाहकरी कि कन्दर्प तो पुरुष होनेके कारण धैर्य्यधरेगा परन्तु उसकीस्त्री अवश्यप्राणदेदेगी इससे उसको रत्नपुरमें लेजाकर छोड़देना चाहिये वहां वह अपने श्वशुरके घरमें सौतकेसाथरहैगी यह निश्चयकरके योगिनियोंने वनमें जाकर सुमनाको समझाके वहांसे लाकर रत्नपुरमें छोड़दिया वहां रात्रिके व्यतीत होजानेपर प्रातःकाल बहुत व्यग्रतासे दौड़तेहुए लोगोंके द्वारा यह सुनकर कि कन्दर्प ब्राह्मणकी अनंगवतीनामस्त्री उसके बहुतकालसे चले जानेकेकारण निराशहोकर भस्महोनेको जाती है और कन्दर्पके माता पिताभी उसीके साथ भस्महोना चाहतेहैं सुमनाने चिताकेस्थानमें जाकर अनंगवतीसेकहा कि हे आर्य्ये साहस न करो तुम्हारापति जीता है यह कहकर उसने कन्दर्पका सब वृत्तान्त उसे सुनाया और कन्दर्पकी दीहुई रत्नजटित अंगूठी दिखाई इससे उसकेवचनको सत्यजानकर कन्दर्प के माता पिता अनंगवती तथा सुमना इन दोनों पुत्रवधुओंको लेकर मृत्युसे निवृत्तहोकर अपनेघरकोगये इसबीचमें कन्दर्प केसटसे बिनाकहेही पाटलिपुत्र नगरसे चल कर उसनगरमें पहुंचा जहां रूपवती के साथ केसटका विवाहहुआ था और केसटभी रूपवती के बिना दुखी होकर माता पितासे बिना कहेही भ्रमण करने को चलागया इसके उपरान्त कन्दर्पने उसनगरमें बड़ा कोलाहल सुनकर लोगोंसे पूछा कि इसकोलाहल का क्याकारण है तब एक पुरुषने उससे कहा कि यहां ब्राह्मणकी पुत्री रूपवती अपने केसटनाम पतिको बहुतकालसे प्रतीक्षाकरतीहुई न पाकर प्राण देनेको उद्यतहै उसका सबवृत्तान्त मैं तुमसे कहता हूं यह कहकर उसने केसटकोविवाह तथा राक्षसके आश्चर्य्यकारी वृत्तान्तको वर्णनकरके कहा कि वह वृद्ध ब्राह्मण केसटको ठगके रूपवतीको लेकर चला यह नहीं मालूमहुआ कि रूपवती से विवाहकरके केसट कहांगया मार्ग में रूपवती ने केसटको न देख कर पूछा कि आर्य्यपुत्र कहांगये यह सुनकर उस वृद्ध ब्राह्मणने अपने पुत्रको दिखाकर उससे कहा कि

हे पुत्री यही तुम्हारापतिहै यह सुनकर रूपवतीने क्रोधकरके कहा कि यह कुरूप मेरा पति नहीं है जिस के साथ कल मेरा विवाहहुआ था अगर वह पति मुझे नहीं मिलैगा तो मैं अपने प्राणदेदूंगी यह कह कर उसने भोजन तथा जलछोड़दिया तब वह वृद्धब्राह्मण राजाके भयसे रूपवतीको यहां उसके पिता के घरमें छोड़गया रूपवती के पिताने उससे सबवृत्तान्त पूछकर कहा कि हे पुत्री जिसकेसाथ तुम्हारा विवाहहुआ है उसका पता कैसे लगसक्ताहै यह सुनकर रूपवतीने कहा कि हे तात पाटलिपुत्रके रहने वाले देसटनाम ब्राह्मण का पुत्र मेरा पति है उसका केसटनाम है यह मैंने रात्रिको राक्षसके मुखसे सुना है यह कहकर उसने अपने पति और राक्षस का सब वृत्तान्त कहा तब उसके पिताने नर्मदाके किनारे जाके राक्षसको मरा देखके अपनी कन्याके वचनों पर विश्वासयुक्त होके बहुतसे ढूंढनेवालों को पाटलि-पुत्र भेजा उन्होंने कुछ दिनोंके पीछे वहांसे आकर कहा कि पाटलिपुत्र नगर में देसट तो मिला उससे हमने पूछा कि केसट कहां है तब उसने आंसूभरके कहा कि कन्दर्प नाम मित्रकेसाथ केसट यहां आकर भी रूपवती के दुःखसे मुझसे बिना कहेही न जाने कहां चलागया देसटके यह वचन सुनकर हमलोग यहां चलेआये ढूंढनेवालों के यहवचन सुनकर रूपवतीने अपने पितासेकहा कि हे तात अब मैं अग्नि में प्रवेशकरूंगी क्योंकि पतिके बिना मैं इस पापी शरीर को नहीं धारण करसक्ती हूं यह कहके अपने पिताके भी निषेध करनेको न मानकर वह रूपवती आज चितामें भस्महोनेको जाती है उसकेसाथ उस की शृंगारवती तथा अनुरागवती दो सखियां भी प्राणदेनेको उद्यतहैं क्योंकि रूपवती के विवाहमे उ-न्होंने भी केसटको देखकर उसे अपनापति बनानेका संकल्पकियाथा इसी निमित्त यह कोलाहल यहां होरहाहै उसपुरुषके यह वचनसुनकर कन्दर्पने चिताकेनिकटजाकर अग्निकापूजन करतीहुई रूपवतीसे कलकल शब्दको निवृत्तकरके कहा कि हे आर्ये साहस न करो तुम्हारा पति केसट जीताहै मैं उसका मित्र कन्दर्प हूं यह कहकर उसने केसटका नावसमेत बहने से लेकर जो २ वृत्तान्तहुआ सब कहदिया उस वृत्तान्त को सुनकर रूपवती प्रसन्नहोकर अपनी सखियों समेत पिताके घरकोगई और रूपवतीके पिताने कन्दर्पको अपने घरमेंलेजाकर बड़े आदरपूर्व्वक रक्खा इसबीचमें केसटभी भ्रमण करते २ रत्नपुर नगरमेंपहुँचा जहां कन्दर्पका घरथा वहां महलपरसे सुमनाने उसे देखकर हर्षपूर्व्वक अपने श्वशुरसेकहा कि आर्य्यपुत्रका मित्र केसट यहांआयाहै इसे शीघ्रहीबुलाओ इससे सबवृत्तान्त मालूमहोगा उसके यह वचनसुनकर कन्दर्पका पिता केसटको सुमनाकेपास बुलालाया केसटने सुमनाको देखके बहुतप्रसन्नहोके वनसे छूटनेसे लेकर अपना और कन्दर्पका सबवृत्तान्तकहा तब कन्दर्प के पिताने उसका बड़ा आदर करके उसे अपनेही यहां रखलिया उसके दोचार दिनकेही उपरान्त कन्दर्पके पाससे एकपुरुष एकपत्र लेकर वहांआया उसपत्रमे यह लिखाथा कि जिसनगरमें कन्दर्प के मित्र केसटने रूपवतीकेसाथ विवाह कियाथा वहां कन्दर्प औररूपवती दोनों हैं इस लेखकोपढ़कर कंदर्पकेपिताने बहुतप्रसन्नहोकर केसटको वहीं जानेकेलिये विदाकिया और उसीकेसाथ कन्दर्पके बुलाने के निमित्त एकअपना दूतभेजा केसटने वहांसे चलकर कईदिनमे अपनीप्रियाके नगरमें पहुँचकर बहुतकालसे चातकीकेसमान उत्कण्ठित अप-

नी प्रियाको प्रसन्नकिया और कन्दर्पसे मिलकर अपनी प्रियाके कहनेसे उसकी दोनों शृंगारवती और अनुरागवती सखियों के साथभी विवाह किया इसके उपरान्त उत्सवसे बहुतदिनों के व्यतीत होनेपर केसट अपनी उन तीनोंप्रियाओंको लेकर और कन्दर्पसे पूछकर अपने पाटलिपुत्र नगरकोगया और कन्दर्पभी दूतके साथ अपने रत्नपुर नगरमें जाकर अपनी अनंगवती और सुमनानाम स्त्रियोंसे मिला इसप्रकार केसट और कन्दर्प दोनों अपनी २ स्त्रियोंको लेकर अपने २ देशमें जाके आनन्द भोगने लगे इसभांति दुर्भाग्यसे वियोगको प्राप्तहुए मनुष्य अनेक प्रकारके दुःखोंको भोगकर अन्तमें अपनी प्रियाओं को पाते हैं इससे हे मित्र चलो तुम भी ढूंढ़ने से अपनी प्रियाको पाओगे दैवकी विचित्र गति को कौन जानता है देखो मैंनेही अपनी मरीहुई स्त्री फिरकर सजीवपाई है इसप्रकार यह कथा कहकर इसने मुझे बड़ा उत्साह दिलाया इससे मैं इसीके साथ अपनी प्रियाको ढूंढ़ताहुआ यहां आया हूं यहां मैंने एक बड़ाभारी हाथी देखा उसने मेरे आगे मेरी प्रियाको उगलकरभी फिर निगललिया वह हाथीभी अब न जाने कहाँ चलागया बहुत ढूंढ़ने से भी नहीं मिलताहै यही मेरा वृत्तान्तहै इससमय बड़े पुण्योंके प्रभावसे आपके दर्शन हुएहैं उस वैश्यके यह वचनसुनकर महाराज विक्रमादित्यने वेतालके द्वारा उसकी प्रियाको अपनी रानीके पास से बुलवाके उसके सुपुर्दकरदिया परस्पर मिलकर वह दोनों स्त्री पुरुष अपना २ वृत्तान्त कहके अत्यन्त प्रसन्नहुए और महाराज विक्रमादित्यकी बड़ी प्रशंसा करनेलगे ३४५ ॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांविषमशीललम्बकेचतुर्थस्तरंगः ४ ॥

इसके उपरान्त राजा विक्रमादित्यने उस वैश्यके मित्रसे पूछा कि तुमने जो कहाथा कि मैंने मरी हुई स्त्री भी सजीवपाई उसका सब वृत्तान्त मुझसे कहो राजाके वचनसुनकर उस वैश्यने कहा कि ब्रह्मस्थल नाम ग्रामका रहनेवाला चन्द्रस्वामी नाम मैं ब्राह्मणहूं मेरी स्त्री अत्यन्त रूपवती है एक समय अपने पिताकी आज्ञासे मैं दूसरे ग्रामको किसी कार्य्यके लियेगया मेरे पीछे भिक्षालिये आयेहुए एक कापालिकने मेरी स्त्री को देखा उसके देखनेसेही वह ज्वर से पीड़ितहोके सायंकालही को मरगई तब मेरे बन्धुओंने उसे लेजाकर रात्रिके समय श्मशान में चितालगाकर जलाया उसीसमय मैं भी ग्रामसे लौटकर अपने घरमें आके उस वृत्तान्तको सुनकर श्मशानमें चिताके निकटगया उससमय वह कापालिकभी खट्वाङ्ग को नचाता और डमरू को बजाताहुआ वहीं आया और भस्मफेंककर चिताको शान्त करके उसमेंसे सजीव निकलीहुई मेरीस्त्रीको मन्त्रके प्रभावसे अपने साथलेके गंगातटपर जाके एक गुफाके द्वारपर खट्वाङ्गको रखकर भीतर चलागया और मैंभी धनुष चढ़ायेहुए उसीके पीछे २ चलागया वहां उस दुष्टने भीतर बैठीहुई दो कन्याओं से कहा कि तुम दोनों को पाकरभी जिसके विना मैंने भोग नहीं कियाथा आज वह मुझे प्राप्तहोगई देखो वह यही है यहकहकर जब वह उन कन्याओं को मेरी स्त्री दिखानेलगा तब मैंने उसका खट्वाङ्गलेके गंगामें फेंककर उससे कहा कि हे दुष्ट कापालिक तू मेरी स्त्रीको हरनाचाहताहै देख मैं तुझे अभी मारेडालताहूं मेरे यह वचनसुनके खट्वाङ्गको न पाकर

वह सिद्धि रहित होकर वहां से भागा उसे भागा देखकर मैंने धनुष में विषसे बुझाहुआ बाण चढाके उसके मारा जिसके लगतेही उसके प्राणनिकलगये इसप्रकार उस पाखंडीको मारकर अपनी स्त्री तथा उन दोनों कन्याओ को लेकर मैं अपने घरमे आया वहाँ पूछनेपर उन कन्याओं ने अपना यहवृत्तान्त कहा कि काशीपुरी के रहनेवाले एकक्षत्री तथा एक वैश्यकी हमदोनों कन्याहैं हमको सिद्धिकी युक्ति से यह दुष्ट हरलाया आपकी कृपा से हमारा इस पापी से उद्धार हुआ उनके वचन सुनकर दूसरे दिन मैं दोनों कन्याओं को लेकर काशीजी में उनके पिताओंके पास भेजआया काशी से लौटकर मार्ग में यह वैश्य मुझे मिला इसी के साथ मैं यहां आया उस कापालिककी गुफामें मुझे एक अंगराग मिला था जिसके लगाने से अबतक मेरे शरीरमें सुगन्ध आरही है इसप्रकार मैंने मरीहुई स्त्रीभी सजीवपाई उसके यह वचन सुनकर राजाने उन दोनों को वहीं छोड़कर उज्जयिनी में आके गुणवती और चन्द्रवती के साथ विवाहकिया और स्तम्भमे देखीहुई उस पुतलीका स्मरणकरके प्रतीहारसे कहा कि कलिंग देशके राजाकलिंगसेन से कन्या मांगनेकेलिये दूत भेजो राजाकी यह आज्ञा पाकर प्रतीहारने कलिंग देशको दूत भेजा उस दूतने राजाकलिंगसेन से जाकर कहा कि महाराज विक्रमादित्य ने तुमसे कहा है कि तुम जानतेहो इसपृथ्वी में जो २ उत्तम रत्न होताहै वह मेरे पास आताहै इससे तुम अपनी कन्या रूपी रत्न मेरे पास भेज दो और हमारी कृपा से अकण्टक राज्यभोगो दूत के यह वचन सुनकर राजा कलिंगसेनने क्रोधकरके कहा कि राजाविक्रमादित्य यह क्या मुझे आज्ञा देताहै वह बड़ा अभिमानी होगयाहै इससे उसे नीचा देखनापड़ैगा उसके यह वचन सुनकर उस दूतने उससे यह कहकर कि तुम सेवक होकरभी स्वामी से क्यों द्वेष करतेहो उसकी प्रतापाग्निमें अपने प्राण मतहोमो, राजाविक्रमादित्य के पास आके कलिंगसेनका सब वृत्तान्त कहा दूतके वचन सुनकर राजा विक्रमादित्य भूतकेतु वेताल तथा बहुतसी सेनाको लेकर कलिंगदेश में गया वहां राजाकलिंगसेनको युद्धके लिये तैयार देखकर राजाविक्रमादित्य ने शोचा कि इसकी कन्याके साथ मैं विवाह करना चाहताहूं इससे यह मेरा श्वशुर हुआ इसको मारना योग्य नहीं है इसमें कोई युक्ति करनी चाहिये यहशोचकर राजा विक्रमादित्य रात्रि के समय वेतालके साथ कलिंगसेनके शयन स्थानमें गया वहां वेतालने कलिंगसेनको जगाकर उस से कहा कि विक्रमादित्यसे विरोध करके भी तुम क्यों पड़े सोरहेहोवेतालके वचन सुनके उसने उठकर विक्रमादित्यको देखकर भयभीत होकर कहा कि मैं आपके वशीभूतहूं जो आज्ञाहोय सो करूं उसके वचन सुनकर महाराज विक्रमादित्यने उससे कहा कि जो तुम मेरी आज्ञा पालन करना चाहतेहो तो अपनी कलिंगसेना कन्याका विवाह मेरे साथ करदो यह सुनकर उसने कहा कि कल मैं अपनी पुत्री कलिंगसेनाका विवाह आपके साथ करदूंगा उसके यह वचन सुनके राजा विक्रमादित्य वेताल समेत अपने डेरेमें चलाआया दूसरे दिन कलिंगसेनने महाराज विक्रमादित्यके साथ तुम्हारा विवाह करदिया इसप्रकार हे रानी राजाने बड़े अनुरागपूर्वक तुम्हारे साथ विवाह कियाहै उस कार्पटिकसे यह कथा सुनकर मेरे चित्तको बड़ा संतोषहुआ रानी कलिंगसेनासे यह वृत्तान्त सुनकर सब रानी बहुत प्रसन्न

हुई इस प्रकारकी अनेक वार्त्ताओंसे सुख पूर्व्वक रहती हुई सम्पूर्ण रानियों के साथ महाराज विक्रमादित्य आनन्दसे राज्यके सुखको भोगनेलगा इसके उपरान्त एक समय दक्षिण देशसे कृष्णशक्तिनाम राजपुत्र अपने गोत्री भाइयोंसे हारकर पांचसौ राजपूतोंके साथ उज्जयिनीमें आया उसने पुरीके फाटक पर बैठकर यह प्रतिज्ञा करके कि मैं बारह वर्षतक महाराजका सेवन करूंगा कार्पटिकका भेष धारण किया निश्चयपूर्व्वक उसे वहां रहते २ ग्यारहवर्ष व्यतीत होगये बारहवेंवर्ष उसकी स्त्रीने उसकेपास पत्र भेजा रात्रिके समय छिपकर नगरके देखनेको निकलेहुए राजा विक्रमादित्यके सुनतेही उसने वह पत्र बांचा उसमें यह लिखाथा कि हे नाथ आपके विरहमें मुझ कठोर हृदयवाली के अत्यन्त संतप्त दीर्घ श्वास तो निकलते हैं परन्तु प्राण नहींनिकलते इसपत्रको सुनकर राजाने अपनेमंदिरमें जाके शोचा कि इसकार्पटिकको ग्यारह वर्ष क्लेश सहते व्यतीत होगये जो बारहवां वर्षभी व्यतीत होजायगा तो यह प्राण देदेगा इससे अब देर न करना चाहिये शीघ्रही इसपर दया करनी चाहिये यह शोचकर दासी भेजकर उसे बुलवाके एक आज्ञापत्र लिखके उसे देकर कहा कि तुम ओंकार पीठके मार्ग से उत्तर दिशाको जाओ वहां इस मेरे आज्ञापत्रके प्रभावसे मिलेहुए ग्रामकोलो उस ग्रामका खंडवटक नामहै पूछते २ चलेजाओ तुमको यह मिलजायगा राजाके यह वचन सुनके और उस आज्ञापत्रको लेकर वह कार्पटिक अपने चित्तमें बहुत दुखितहुआ कि राजाने मुझे एकही ग्राम दिया इससे वह अपने साथियों से विनाकहेही चलागया और ओंकार पीठसे बहुत दूर एक वनमें जाकर उसने बहुतसी कन्याओंको खेलते देखकर उनसे पूछा कि तुम खंडवटक नाम ग्रामकोजानतीहो कि कहां है यह सुनकर उन कन्याओंने कहा कि हम उस ग्रामको नहीं जानती हैं आगेजाओ यहांसे दश योजनपर हमारापिता है वह शायद उस ग्रामको जानता होगा उन कन्याओंके यह वचन सुनकर कार्पटिकने वहां से दश योजन जाके उन कन्याओंके पिता भयंकर राक्षसको देखकर उससे पूछा कि यहां खंडवटकनाम ग्राम कहां है उसके वचन सुनकर राक्षसने कहा कि वहां जाकर तुम क्या करोगे वह तो बहुत दिनसे शून्य पड़ाहै और जो तुम जानाही चाहतेहो तो सुनो जो तुम्हारे सन्मुख दो मार्ग हैं इनमेंसे बाईं ओर तुम जाओ आगे कुछ दूर चलकर एक गली तुमको मिलैगी उसीमें होकर तुम उस ग्राममें पहुंच जाओगे उस राक्षस के यह वचन सुनकर वह कार्पटिक उसी के बताये हुए मार्ग से निर्ज्जन होने के कारण भयदायी अत्यन्त मनोहर उस खण्डवटक नाम दिव्यपुरमें पहुंचकर मणियों से जटित सुवर्णमय राजमन्दिरमें जाके रत्नमय सिंहासनपर बैठगया इतने में बेतलियेहुए एक राक्षसने आकर उससे कहा कि हे मनुष्य तू इस राज्यासनपर आकर क्यों बैठगया यह सुनकर कृष्णशक्ति कार्पटिक ने उससे कहा कि हम यहांके स्वामी हैं और तुम सब हमारी प्रजाहो क्योंकि राजा विक्रमादित्यने हमें यहांका राज्य दियाहै उसके वचन सुनके और आज्ञापत्रको देखकर उस राक्षसने कहा कि ठीकहै आप यहांके राजा हो और मैं यहां आपका प्रतीहारहूं क्योंकि महाराज विक्रमादित्यकी आज्ञाको कोई उल्लंघन नहीं करसक्ताहै यह कहकर उस राक्षसने मंत्रियोंको सेवकोंको तथा सम्पूर्ण प्रजाओंको बुलाकर उस कार्प-

टिकको प्रणामकरवाया और चतुरंगिणी सेनासे वह सम्पूर्ण नगर भरगया इसप्रकार राज्यपाकर राजाओंके योग्य सामग्रियोसे स्नान करके उसकार्पटिकने शोचा कि महाराजा विक्रमादित्यका बड़ा प्रभावहै और बड़ी गंभीरताभी उसमे है क्योंकि इतने बड़े राज्यको भी वह एक ग्राम कहताहै यह शोचकर वह वहांका राज्य करनेलगा और महाराजा विक्रमादित्यने उसके साथियोंका पालन किया कुछदिन वहां राज्यकरके वह कार्पटिक बहुतसी सेना लेकर महाराज विक्रमादित्यको प्रणाम करनेकोआया उसे आकर प्रणाम करते देखकर विक्रमादित्यने कहा कि जाकर अपनी स्त्रीको सावधानकरो नहीं तो वह मरजायगी राजाके यह वचन सुनके वह अपने साथियों को लेकर अपने देशमें जाके अपने गोत्री भाइयो को जीतकर बहुत कालसे उत्कण्ठित अपनी स्त्रीको लेकर खंडवटक नाम पुरमें जाके सुखपूर्व्वक राज्य करनेलगा इसप्रकार राजा विक्रमादित्यके अद्भुत चरित्रहैं एकसमय एक ब्राह्मण जिसके कि सवरोयें खड़ेहुए थे उसे देखकर महाराज विक्रमादित्यने उससे पूछा कि हे ब्राह्मण तुम्हारे सवरोयें क्यों खड़े हैं उसके वचन सुनके उस ब्राह्मणनेकहा कि हे महाराज पाटलिपुत्रके निवासी अग्निस्वामीनाम अग्निहोत्रीका मैं देवस्वामीनाम पुत्रहूं मैंने दूर देशमें एक ब्राह्मणकी कन्याकेसाथ विवाह किया और उस कन्याकी अवस्था थोड़ीथी इससे उसको उसके पिताही के यहां छोड़आया कुछकाल व्यतीतहोनेपर उसको युवतीहुई जानके घोड़ेपर चढके एक सेवकसाथ में लेकर मैं अपने श्वशुरके यहांगया मेरे श्वशुरने बड़ा सत्कार करके एक चेरी समेत मेरी स्त्रीको मेरेसाथ विदाकरदिया उसे घोड़ेपर चढाके मैं ले चला आधे मार्गमें आकर वह घोड़ेपर से उतरकर नदीमे जलपीने को गई जव उसे बहुत देरलगी तो मैंने अपने सेवकको उसके देखने के लिये भेजा जब उसको भी बहुत देरलगी तो मैं उसकी चेरी को घोड़ेकेपास छोड़के आपही उसके देखने को गया वहां जाकर मैंने देखा तो मेरी स्त्री मेरे सेवकको मार कर खारही थी यह देखके भयभीत होके मैंने लौट आकर जो चेरीको देखा तो वह मेरे घोड़े को मार कर खारही थी तव वहां से भागकर मै यहां आया इसीभयसे मेरे रोम अब तक खड़ेहुएहैं अब आपही मेरी गतिहो उसके यह वचन सुनके विक्रमादित्यने उसे अपने प्रभावसे निर्भयकरके कहा कि स्त्रियोंका विश्वास न करना चाहिये राजाके वचन सुनकर एक मंत्रीने कहा कि हे स्वामी स्त्रियां बड़ी कठिनहोतीहैं क्या आपने यहीं के रहनेवाले अग्निशर्मानाम ब्राह्मणकी कथा नहीं सुनी इसीपुरी में सोमशर्मा नाम ब्राह्मण का पुत्र अग्निशर्मानाम महामूर्ख ब्राह्मण रहताहै वह अपने माता पिताको बड़ा प्रियहै अग्निशर्माने वर्धमान पुरके एक धनवान् ब्राह्मणकी कन्यासे विवाहकिया उसकी अवस्था छोटी थी इससे उसके माता पिताने उसे विदा नहींकिया जब वह युवतीहुई तो अग्निशर्मा के माता पिताने अग्निशर्मा से कहा कि हे पुत्र तुम अपनी स्त्रीको जाकर विदा करालाओ जब अपने पिताके वचन सुनकर वहमूर्ख अपनी स्त्रीके लेनेको चला तो चलते समय उसके दाहिनीओर शृगाली रोई इस अशकुनको शकुनजानकर वह मूढ जीवजीव कहके अपने श्वशुरके यहां पहुंचा वहां बाई ओर उसे शृगाल मिला उसको भी वह शकुन जानके जीव जीव कहके अपने श्वशुर के घरमेंगया उसके श्वशुरने उसे

प्रणामकरते देखके उससे पूछा कि हे पुत्र तुम अकेले क्यों आये यह सुनकर उसने कहा कि मैं अपने माता पितासे बिना कहेही चला आयाहूं तदनन्तर स्नान तथा भोजनादि से निवृत्तहोकर वह रात्रिके समय शयनस्थानमें जाकर श्रमसे सोगया और उसकी स्त्री शयन स्थानमें जाके उसे सोयाजान के अपने उपपति चोर के पासगई वह चोर शूलीपर चढ़ादिया गया था स्नेहसे वह उस मरेहुए का भी आलिंगन करनेलगी तब उसमें एकभूतने प्रवेश करके उसकी नाककाटली इससे वह भागकर अपने पतिकेपास आकर उसकी तलवार खोलके उसीकेपास रखकर उच्चस्वरसे रोकर यह कहनेलगी कि हाय २ में मरी मुझे बचाओ इस पतिने उठकर बिना अपराधकेही मेरी नाककाटलीहै यह सुनकर उसके बंधुओंने आकर उसकी नाककटी देखके अग्निशर्मा को लाठियों से बहुतपीटा और प्रातःकाल राजा के यहां उसे लेजाकर उसके अपराधको कहके राजाकी आज्ञासे उसे बधिक लोगोंके सुपुर्दकरदिया जब बधिकलोग उसे वध्यस्थानमें लेगये तो शकुनदेवताने शोचा कि अशकुन का फल तो इसे प्राप्तहोगया और इसने जीव जीव कहाहै इससे इसके प्राण बचानेचाहियें यह शोचकर शकुनदेवताने यहआकाशवाणी बोली कि हे घातकलोगो यह ब्राह्मण निर्दोषहै शूलीपर चढ़ेहुए चोरका मुखदेखो उसमें तुमकोइस स्त्रीकी नाक मिलैगी यह कहके रात्रिका सबवृत्तान्त शकुनदेवताने कहदिया तब घातकलोगोंके मुखसे इस आकाशवाणीको सुनके राजाने चोरके मुखमें नाक दिखवाकर अग्निशर्माको छोड़दिया और उसकी स्त्री तथा उसके श्वशुरादिकोंको बहुतदंडदिया हे राजा इसप्रकार दुष्टा बहुतसी स्त्रीहोतीहैं इसकथाकोसुनकर राजाके निकट बैठेहुए मूलदेव नाम धूर्त्तनेकहा कि हे स्वामी कहीं २ सती स्त्रियांभी होती हैं मैंने जो अनुभवकियाहै वही आपको सुनाताहूं एकसमय मैं अपनेमित्र शशिके साथ पाटलिपुत्र नगरमें वहांकी चतुरता देखनेकोगया वहां नगरके बाहर एक तड़ागमें वस्त्रोंको धोतीहुई एक स्त्रीसे मैंने पूछा कि यहां पथिक लोग कहां टिकते हैं यह सुनकर उसने कहा कि तटपर चकवाक जलमें मछली और कमलों में भ्रमर निवास करते हैं यहां पथिकोंके रहने का स्थान नहीं है उसके यह गंभीर वचन सुनके मैं शशिके साथ नगरके भीतर गया वहां एक घरके द्वारपर एक बालक रोरहाथा और उसके आगे उष्णपात्र में खीर भरीहुई रक्खीथी यह देखकर शशिनेकहा कि यह कैसा मूर्ख बालकहै जो आगे रक्खीहुई खीरको न खाकर रोरहाहै शशिके वचन सुनकेउस बालकने अपने नेत्र पोंछके कहा कि तुम बड़े मूर्खहो रोदन के गुण तुम्हें नहीं मालूमहैं सुनो एक तो धीरे २ यह खीर ठंढी होरहीहै दूसरे आंसुओंके बहने से कफ क्षीण होताहै और भूख बढ़ती जाती है यह गुण रोदनके हैं मैं मूर्खतासे नहीं रोताहूं तुम लोग ग्रामीण मूर्खहो इससे मेरे रोदनके गुणको नहीं जानतेहो उस बालकके यह वचन सुनके हम दोनों लज्जित होके आगेचले एक स्थानमें आमके पेड़पर एक सुन्दर कन्या बैठीथी और वृक्षकेनीचे उसकी बहुतसी सखियां बैठीथीं उस कन्यासे मैंने कहा कि कुछ आम हमको भी दो यह सुनकर उसने कहा कि उष्ण आम खाओगे अथवा ठण्ढे यह सुनकर हमने आश्चर्यितहोके उससे कहा कि पहले उष्ण फिर ठण्ढे खांयगे यह सुनकर उसने थोड़े से आम धूलमें फेंकदिये वह आम लेकर हमने अपने मुखकी वायुसे

फूंक २ कर खाये तब वह कन्या अपनी सखियों समेत हँसकर बोली यह तो उष्ण आम थे क्योंकि तुमने इनको फूंक २ कर खायाहै अब ठंढे लेनाचाहो तो वस्त्रमें डलवाओ उनको विना फूंकेही खाना उसके यह वचन सुनकर आम लेके हमलोग लज्जितहोके वहांसे चले मार्ग में मैंने शशि तथा अपने अन्य साथियोंसे कहा कि मैं इस चतुर कन्याके साथ अपना विवाह करके इसहास्यका उत्तरदूंगा मेरे वचन सुनकर मेरे साथियों ने उस कन्याके पिताका स्थान ढूंढा दूसरे दिन वेष बदलकर हम सब लोग उसके यहां जाकर वेदका पाठ करनेलगे वेदपाठको सुनकर उस कन्याके पिता यज्ञ स्वामीनाम ब्राह्मण ने हम लोगोंसे पूछा कि तुम कहां रहतेहो हमने कहा कि हम लोग मायापुरी से विद्या पढनेको यहां आये हैं यह सुनकर उस धनवान् ब्राह्मणने कहा कि अच्छा तुम कृपाकरके चारमहीने मेरेही स्थानमें रहो यह सुनकर हम लोगोंने कहा कि हे ब्राह्मण जो तुम चारमहीने के उपरान्त हमारे मनोरथके पूर्ण करनेकी प्रतिज्ञा करो तो हम चौमासे भर तुम्हारेही यहां रहैं यहसुनके यज्ञस्वामीने कहा कि जो मेरी सामर्थ्यसे मनोरथ पूर्णहोसकेगा तो मैं अवश्य पूर्ण करूंगा उसके वचनसुनकर हम सब चार महीने तक वहां रहे जब चारमहीने पूर्ण होगये तब हमारे साथियों ने उससे कहा कि अब हमारे मनोरथ को पूर्ण करो यह सुनकर यज्ञस्वामीने कहा कि तुमलोग क्या चाहतेहो तब शशी ने मुझे दिखाके उससे कहा कि अपनी कन्याका विवाह इसके साथ करदो शशी के यह वचनसुनके यज्ञस्वामी ने वचनबद्ध होकर अपनी उस कन्याका विवाह मेरे साथ करदिया रात्रिके समय मैंने शयनस्थान में जाकर उससे कहा कि तुम्हें उष्ण और ठण्ढे आमोंका क्या स्मरण है यह सुनके उसने मुझे पहचानके हँसकर कहा कि नागरिकलोग ग्रामीणोंको इसीप्रकारसे हँसाकरते हैं तुम उसमे कुपित क्योंहोतेहो यह सुनकर मैंने उससे कहा कि हे नागरिके तुम सुखसे रहो मैं तुझे छोड़कर चलाजाऊंगा यह मेरी प्रतिज्ञाहै यह सुनकर उसने कहा कि मेरी भी यह प्रतिज्ञा है कि तुम्हीं से उत्पन्न हुए पुत्रसे तुमको बँधवाकर यहां बुलाऊंगी यह प्रतिज्ञाकरके वह पराङ्मुख होकर सोरही और मैं उसके सोजानेपर अपनी अँगूठी उसकी उंगलीमें पहराकर उठके अपने साथियोंके पास चलाआया और उसकी चतुरता देखनेकेलिये उनसबके साथ उज्जयिनी में आगया और वह स्त्री भी प्रातःकाल उठकर मुझे न देखकर और मेरे नामसे चिह्नित अँगूठी को अपनी उंगली में देखकर शोचने लगी कि वह तो अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करके मुझे छोड़कर चलागया अब मुझको भी पश्चात्ताप छोड़कर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करनी चाहिये इस अँगूठीमें मूलदेवनाम लिखाहुआहै इससे मूलदेव नाम जो धूर्त्त प्रसिद्धहै वही यहहै और वह उज्जयिनीमें रहताहै ऐसा लोग कहते हैं इससे युक्ति पूर्वक उज्जयिनी में जाकर अपना मनोरथ पूर्ण करूं यह विचार करके उसने अपने पितासे कहा कि हे तात मेरापति मुझे छोड़कर चलागया उसके विना यहां मैं नहीं रहसक्ती इससे मैं तीर्थयात्राको जातीहूं पितासे यह कहके वह बहुतसा धन तथा परिकर लेकर वेश्याकासा वेषबनाके उज्जयिनी में आई वहाँ उसने अपने सब परिकरसे सलाह करके अपना सुमंगला नाम प्रसिद्ध किया और उसके सेवकोंने नगरभरमें यह प्रसिद्धी करदी कि कामरूदेशसे सुमंगला नाम

वेश्या आई है और बहुतसाधन लेकर अपने पास पुरुषको आनेदेती है यहप्रसिद्धि करके वह वहींकी रहने वाली देवदत्ता नाम वेश्यासे सुन्दर मकान लेकर उसमें रहनेलगी. उसकी प्रशंसाको सुनके पहले मेरे मित्रशशीने, सेवकके द्वारा उससे पुछवाया कि तुम्हारा क्या मूल्यहै यह सुनकर उसने कहाकि जो कामी मेरा कहनामाने वह यहां आवेमुझे मूल्यसे कुछ प्रयोजन नहीं है मैं पशुओं के समान मूर्ख पुरुषोंसे संगनहीं किया चाहती सेवकके द्वारा उसके उत्तरको सुनकर रात्रिके पहलेही प्रहरमे शशी उसके यहां गया वहाँ पहलेहीद्वारपर द्वारपालने उससे कहा कि हमारी स्वामिनी की यह आज्ञाहै कि जो तुम स्नानकरके भी आयेहो तोभी यहाँ स्नानकरो यहसुनकर शशी ने स्नानकरना स्वीकार किया वहाँ दासियों ने उसे स्नान कराने में पहला प्रहर व्यतीत करदिया स्नान करके जब वह दूसरे द्वारपर गया तो द्वारपालने उससे कहा कि तुम नवीन वस्त्रोंसे अपना शृंगारकरो उसने शृंगारकरना भी स्वीकार किया वहाँ दासियों ने शृंगारमें दूसरा प्रहरभी व्यतीत करदिया शृंगार करके जब वह तीसरे द्वार परगया तो द्वारपालने उससे कहा कि भोजन करके भीतरजाना द्वारपालके वचनसुनके उसने भोजन करना भी स्वीकार करलिया तब दासियों ने अनेक प्रकारके व्यंजनोंके ही परोसने में तीसरा पहर भी व्यतीत करदिया भोजनके उपरान्त जब चौथे द्वारपर वह गया तब द्वारपालने उससे कहा कि हे ग्रामीण यहाँ से तू चलाजा क्या रात्रिके पिछले प्रहरमें वेश्याओंसे संगम किया जाताहै द्वारपालके यह वचनसुनकर शशी खिन्न होकर वहाँ से चलाआया इसप्रकारसे उसने बहुतसे कामियोंको अपने घरसे निकलवा दिया इसवृत्तान्तको सुनकर दूतोंके द्वारा वार्त्तालाप करके मैंभी सुन्दर वस्त्रादि पहरकर उसके यहां गया और बहुतसा धन देके द्वारपालोंको प्रसन्नकरके स्नानादि बिनाकियेही उसके शयन स्थान के निकट पहुंचा मैंने तो उसको नहीं पहचाना परन्तु उसने मुझे पहचानकर अभ्युत्थान करके मुझे पलंगपर बैठाके मधुर २ वचनों से मुझे बहुत प्रसन्नकिया तब उसकेसाथ संभोगपूर्वक उसरात्रिको व्यतीतकरके उसपर मेरा ऐसा अनुरागहुआ कि मैं उसके यहांसे न आसका और वह भी मेरेसाथ बड़ा स्नेह प्रकटकरके जब तक गर्भवती न होली तबतक क्षणभरही मेरेपास से नहींहटी गर्भस्थिति के पीछे एक झूठा पत्र बनाके उसने मुझेदिया और कहा कि राजाने यहपत्र भेजा है इसे तुमपढ़ो उस पत्रको खोलकर जो मैंने पढ़ा तो उसमें यह लिखाथा कि कामरूप देशसे श्रीमान् महाराज मानसिंह सुमंगला को यह आज्ञा देते हैं कि तुम्हेंगये बहुत समय व्यतीत होचुकाहै इससे शीघ्रही चली आओ, मुझसे इस पत्रको सुनकर वह दुखितसी होकर मुझसे बोली कि मैं अब जाती हूं मेरे अपराधको क्षमाकरना क्योंकि मैं पराधीनहूं यह व्याज करके वह अपने पाटलिपुत्र नगर को चलीगई और मैं उसे पराधीन जानके उसके संग नहींगया, २०१ वहां उसने समय पाकर एकपुत्र उत्पन्नकिया उसने बाल्यावस्थाही में सब कलाएं सीखलीं बारहवर्षकी अवस्था में उसने चपलतासे अपने समान अवस्थावाले दासको पीटा इससे वहदास रोकर बोला कि तू मुझे क्या मारता है तेरे पिताका कुछ ठीक नहीं है तेरी माता विदेशमें भ्रमण करने गई थी वहीं न जाने किसके संगसे गर्भरहगया उसदासके यहवचन सुनकर उस

ने लज्जितहोकर अपनी मातासे जाकर पूछा कि हे अंब मेरा पिता कहां है और कौनहै बालकके यह वचन सुनकर उस परमचतुर स्त्री ने समय जानकर कहा कि तुम्हारे पिताका मूलदेव नाम है वह मुझे छोड़कर उज्जयिनी को चलागया है यह कहकर उसने सब वृत्तान्त उससे कहदिया तब उस बालकने कहा कि हे अंब मैं जाकर अपने पिताको लाकर तुम्हारी प्रतिज्ञाको पूर्णकरूंगा यह कहकर वह अपनी माता से मेरे सम्पूर्ण चिह्न पूछकर उज्जयिनी में आया यहां द्यूत स्थानमें मुझे द्यूतखेलते देखकर पहचानके उसने धूर्त्ततासे सब ज्वारियों को जीतकर याचकों को सबधनदेदिया तदनन्तर रात्रिकेसमय उसने जहां मैं शयन करताथा वहां आकर युक्तिपूर्व्वक मुझको खाटपरसे उतारके पृथ्वी में लिटाकर वह खाट बाजारमें लेजाकर रक्खी जब मेरी निद्राखुली तब मैं अपने को पृथ्वीमें पड़ादेखकर बहुत लज्जितहुआ और वहां से बाजारमें जाकर देखा तो वह बालक उस खाटको बेचरहाथा यह देखकर मैंने उस के पास जाकर कहा कि इस खाटका क्या मूल्यहै मेरे वचन सुनकर वह बोला कि हे धूर्त्त यह खटिया मूल्यसे नहीं मिलैगी कोई अपूर्व्व या अद्भुत वृत्तान्त कहने से यह मिलैगी यह सुनकर मैंने उससे कहा कि मैं तुमसे एक अद्भुत वृत्तान्त कहताहूं परन्तु उसे तुम तत्त्वसे सत्यजानकर स्वीकार करना और जो तुम मेरे ऊपर विश्वास न करके उसे असत्यकहोगे तो तुम जारसे उत्पन्नहुए जाने जाओगे और यह खाट मैं तुमसे लेलूंगा यह नियम तुम स्वीकारकरो तो मैं अपूर्व्व वृत्तान्तकहूं मेरे वचन सुनकर उसने कहा कि कहो तब मैंनेकहा कि पूर्वसमयमें किसी राजाके राज्यमें दुर्भिक्षहुआ तो उसने शूकरकी प्रिया की पीठपर नागोंके वाहनों के जलसे आपही खेतीकी इससे बहुतसा अन्न उत्पन्नहुआ और दुर्भिक्ष शान्त होगया यह सुनकर उस बालकने हँसकर कहा कि नागोंके वाहन मेघहैं और शूकरकी प्रिया पृथ्वीहै क्योंकि वाराहरूप भगवान् की वहप्यारी कहलाती है इससे मेघोंके जलसे जो पृथ्वीमें अन्नहुआ तो क्या आश्चर्य्य है यह सुनके मुझे चकितहुआ देखकर उसने फिर कहा कि हे धूर्त्त अब मैं तुमसे अपूर्व बात कहताहूं जो तुम सुनकर तत्त्वसे उसे सत्य २ जानके उसपर विश्वासकरोगे तो मैं यह खाट तुमको देदूंगा और नहीं तो तुम मेरेदास होजाना मैंने कहा कि अच्छाकहो तब उसने कहा कि पूर्व्व समयमें एकऐसाबालक उत्पन्नहुआथा जिसने उत्पन्नहोतेही अपने पैरकेभारसे पृथ्वीको कँपादिया और उसी समय बढ़कर लोकान्तरमें पैररक्खा यह सुनकर तत्त्व न जानकर मैंने कहा कि यह बिलकुल मिथ्या है इसमे जराभी सत्यनहींहै तब उस बालकने कहा कि क्या वामनरूप विष्णुभगवान्के उत्पन्न होतेही उनके पैरके भारसे पृथ्वी नहींकांपी और उसीसमय बढ़कर क्या उन्होंने स्वर्गमें पैर नहीं रक्खा इससे मैंने तुमको जीतलियाहै अब तुम मेरेदासहोगये यहसम्पूर्ण बाजारकेलोग मेरे और तुम्हारे साक्षी हैं इससे मैं जहांजाऊं तहां तुम मेरेसाथ२ चलो यह कहके उस बालकने मेराहाथ पकड़लिया और वहां बैठेहुए सब लोगोनेकहा कि यहबालक बहुतठीककहताहै तबवह मुझे बांधकर पाटलिपुत्रमें अपनी माताके निकटलेगया वहां उसकी माताने मुझे उसकेसाथ देखकर मुझसेकहा कि हे आर्यपुत्र मैंने आज अपनीप्रतिज्ञा पूर्ण करली है क्योंकि तुम्हीं से उत्पन्नहुए पुत्रसे तुमको यहां पकड़ मँगवायाहै यह कहकर उसने सब

वृत्तान्त वर्णन करदिया तब उसके सब बान्धव बहुत प्रसन्नहुए और उसे निष्कलंक जानकेसबने बड़ा उत्सवकिया और मैंभी बहुत प्रसन्नहोके बहुतदिन उसके साथ रहकर यहाँ चला आया इसप्रकारसे हे स्वामी कुलीन स्त्रियां प्रायः पतिव्रता होती हैं यह नजानना चाहिये कि सब स्त्रियां कुलटाही होतीहैं मूलदेव से इस कथा को सुनकर महाराज विक्रमादित्य अपने मन्त्रियों सहित बहुत प्रसन्न हुआ इस प्रकार अनेक २ भांतकी कथाओंको सुनकर और अनेक प्रकारके आश्चर्य्यकारी कार्य्योंको करके महाराज विक्रमादित्यने सप्तद्वीपा पृथ्वीका राज्यभोगा राजा विक्रमादित्यकी इसअद्भुत कथाको कहकर कण्वमुनि ने मुझसे कहा कि हे नरवाहनदत्त इसप्रकारसे जीवोंके अचिन्त्य विरह और समागम होते हैं इससे शीघ्रही तुम भी अपनी प्रियाको पाओगे धैर्य्य धरो तुम अपनी प्रियाओं तथा मंत्रियों समेत बहुतकाल पर्य्यन्त विद्याधरों के चक्रवर्ती रहोगे कण्वमुनि के इसप्रकार समझाने से विरहको सहकर मैंने जैसे श्री शिवजीकी कृपासे अपनी प्रिया विद्या तथा विद्याधरों के चक्रवर्त्तीपने को पाया सो तो मैं आपलोगों से पहलेही वर्णन करचुकाहूं इसप्रकार कथा कहकर नरवाहनदत्त ने सम्पूर्ण मुनियों समेत अपने मामा गोपालकको कश्यपजी के आश्रममें बहुत प्रसन्नकिया फिर वहीं कश्यपजी के आश्रममें वर्षाऋतुको व्यतीत करके नरवाहनदत्त सम्पूर्ण ऋषियों से तथा अपने मातुल गोपालक से आज्ञा लेकर अपनी स्त्री मन्त्री तथा सेना समेत विमानपर चढ़के शीघ्रही अपने ऋषभक पर्व्वतपर पहुंचके मदनमंचुका तथा रत्नप्रभा आदिक रानियोंके साथ विद्याधरोंके चक्रवर्त्तीपने को सुख पूर्व्वक भोगनेलगा श्री पार्वतीजीकी प्रार्थना से यही बृहत्कथा श्रीशिवजीने कैलाश पर्व्वतपर कहीथी तदनन्तर शापसे पृथ्वी में उत्पन्न हुए कात्यायनादिक रूपधारी पुष्पदन्तादिक गणों ने उसे प्रसिद्ध किया श्री शिवजी ने यह कथा कहकर इसे यह वरदिया था कि मेरी कहीहुई इस कथाको जो पढ़ैगा जो आदर पूर्व्वक सुनेगा और जो इसको स्मरण रक्खेगा वह पापोंसे रहित होकर विद्याधर होकर मेरेही लोकमें चला आवेगा २५०॥

इतिश्रीकथासरित्सागरभाषायांविषमशीललम्बकेपंचमस्तरंगः ५॥

विषमशीलनामअठारहवांलम्बकसमाप्तहुआ॥

इति श्रीसरित्सागर भाषा समाप्तम्॥

इश्तहार रामायण आल्हा का ॥

देखहु ! देखहु ! यह देखहु अब, कीरति रघुपति परम उदार ॥

प्रकट हो कि इस यन्त्रालयाध्यक्ष ने सर्व भारत निवासियों की रुचि आजकल जैसी आल्हा में देखी ऐसी किसी विषय में नहीं फिरि वो कौन आल्हा कि जिसमें जौन ज्यहिका जानिपरै तौनही सो वनायकै गावै–जैसे लोग गातेहैं कि (भैंसि वियानी रे कनउजमाँ पड़वा गिरा महोवे जाय) अथवा (वनी रोसइयां ल्वनिआल्हा कै ज्यहिमाँ परी साठिमन हीग) ऐसेही सम्पूर्ण गाथा कि जो न किसी पुराण में लिखी न कोई देवताही का आराधन इसमें व्यर्थ समय व्यतीत करनेके सिवाय और क्या अर्थ सिद्धि होसक्ताहै इन सर्व वातोंको अल्पबुद्धी भी थोड़ेही विचारसे समझ सक्तेहैं और गाना तो वही है जिसमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ती हो और श्रेष्ठसे श्रेष्ठ देवताकी आराधनाहो जैसे (क्यहि खगेश रघुपति समलेखों । अस स्वभाव कहुँ सुनों न देखों) यह कागभुशुण्डिजी गरुड़जी से कहते हैं कि हे खगेश हम किसको श्रीरामचन्द्रजी के समान लेखाकरें ऐसा स्वभाव तो हम किसीको न देखते हैं न सुनते हैं–क्योंकि जो लङ्का रावण को वड़ी कठिन तपस्या से प्रसन्न हो श्रीशिवजी ने दी थी वो लङ्का सहजही में श्रीरामचन्द्रजी ने विभीषणजी को देदी–अथवा (उलटा नाम जपत जग जाना । वालमीकि भे ब्रह्म समाना) कि जिनके उलटे नाम के जापसे वाल्मीकिजी ब्रह्मके समान भये राम को उलटने से मरा होताहै–अथवा (वसन हीन नहिं सोह सुरारी । सव भूषण भूषित वरनारी) कि जैसे स्त्री को सम्पूर्ण जेवर पहनादी जाय लेकिन वस्त्र न हो तो क्या उसकी शोभा होसक्ती इसीतरह संपूर्ण राग विना ईश्वर के नाम व्यर्थ हैं जैसे (नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाववर्जितं नशोभतेज्ञानमलंनिरंजनं ॥ कुतः पुनःशश्वदभद्रमीश्वरे नचार्पितंकर्मयदप्यकारणं) ऐसेही अभिप्रायों को समझकर इस यंत्रालय ने वहुतसा धन देकर वर्त्तमान कवियोंमें श्रेष्ठ कविवर पं०वन्दीदीनजीसे सातोकाण्ड रामायणका आल्हा ऐसी सरल भाषा के मनोहर पदों से वनवाया है कि जिसको विना पढे लिखे भी मनुष्य अच्छी तरह से समझसक्ते हैं और जिनका कि भाषामें कुछ भी ज्ञान है वो तो इसके सम्पूर्ण तत्त्वों को समझके राम भक्ताधिकारी ही होजायँगे क्योंकि इसमें ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, शृंगार, युद्धादि जौन जहां है तौन तहां गान करने से उसके रूप को दर्शाही देते हैं क्योंकि सत् कवियों के काव्य का प्रभावही यह है–लङ्काकाण्ड के वीर वृत्तान्तों को सुनके कादरों के रोमांच होजाताहै भुजा ओष्ठ फरकने लगतेहैं वीरों की कथाही क्या इसीतरह राम वनगमन सुनने से कौन ऐसा पाषाण की मूर्त्तिहै कि जिसके अश्रुओं की धारा न चलनेलगे इसीतरह यह आल्हा रामायण वड़ीही विशाल इस यंत्रालयमें छपरही है जिसमें वालकाण्ड व आरण्यकाण्ड व किष्किन्धाकाण्ड और सुन्दरकाण्ड तो छपे तय्यार हैं और काण्ड ग्राहकों को फरमायश से शीघ्रही मिलसक्तेहैं और क़ीमत भी वहुतही सस्त रक्खीगई जिस में ग़रीब

अमीर सभीलोग इसके रसको पासक्तेहैं लेकिन जो शीघ्रता न करेंगे उनको पहिली आवृत्ति की छपी रामायण आल्हा मिलना दुष्कर होगा क्योंकि बहुत फरमायश इकट्ठा हैं ॥

श्रीगीतगोविन्दकाव्यम् ॥

वनमाली भट्ट कृत संजीविनी टीकोपेतम् ॥

यह गीतगोविन्द काव्य पण्डित जयदेव कृत वही है जो कि अतीव उत्तम होनेके कारण इस संसार में प्रसिद्ध है प्रायः पंडित लोग इसको अच्छी भांति जानते हैं संस्कृत पढ़नेवाले विद्यार्थियों को तो यह काव्य बहुतही लाभकारी है क्योंकि इसका तिलक वनमाली भट्टजी कृत जिसका कि संजीविनी नाम है अर्थात् इस तिलक का जैसा नामहै वैसाही गुण है जो विद्यार्थी थोड़ी भी व्याकरण जानते हैं इस तिलक के द्वारा पूर्ण अर्थ मूल का लगासक्ते हैं पण्डित लोगोंकी रुचि संस्कृत पुस्तकों में अक्सर बम्बई की छपी हुई में अधिक होती है क्योंकि उम्दा कागज़ और अधिक शुद्ध छपाई यह सब उन पुस्तकों में मिलती हैं यद्यपि वहां से यहांतक माल आनेमें खर्च महसूल आदि होनेके कारण वहां की पुस्तकों का मूल्य विशेष है तथापि दूसरे यंत्रालयमें वैसा न छपने के कारण लाचारहोके उन लोगों को लेना पड़ताहै इस यंत्रालयमें यह पुस्तक जो अब छपीहुई तैयारहै बम्बई से कोईकाम न्यून नहीं हुआ अर्थात् बहुत उम्दा कागज़ सफ़ेद पर बहुत उम्दा छपाई की गई है शुद्ध होने में तो हम कहसक्तेहैं कि बम्बई की छपीहुई पुस्तक में चाहे पांच छः गलती भी होवैं परन्तु यह पुस्तक ऐसे परिश्रम से शोधीगई है कि पण्डित लोगोंको परिश्रम करके ढूंढ़ने पर भी गलती नहीं मिलैगी और मूल्य इस पुस्तक का बम्बई से बहुत न्यून रक्खा गया है हम पूरेतौर से उम्मैद करते हैं कि हमारे देशके रहने वाले पण्डित लोग इस पुस्तक को देखके बम्बई की पुस्तक लेना छोड़ देवैंगे और इसे प्रसन्नता पूर्वक अंगीकार करैंगे जो लोग संस्कृत कुछ भी नहीं जानते केवल भाषाही मात्र जानते हैं उनके लिये भी यह काव्य भाषा टीका में बहुतही थोड़ी कीमत से मिलसक्ती है क्योंकि यह काव्य गानविद्या जानने वालों तथा रसिक पुरुषों और श्रीभगवद्भक्तों व संस्कृत विद्याके सीखनेवाले विद्यार्थियों आदि इन सब को प्रियहै इस हेतु दो प्रकार से इस यंत्रालय में यह पुस्तक छापीगई है एक तो भाषा टीका युक्त दूसरे संस्कृत टीका सम्मिलित ॥